सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशब्द भंडार

उन्निवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✻ तत्करा ✻

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
७ मग्घर शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार	धीर पुर	दिल्ली-६	०१
१५ मग्घर शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवर	धीरपुर	दिल्ली-६	०८
२१ मग्घर शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०
पहली पोह शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	११
७ पोह शहिनशाही सम्मत १	सुरिंदर सिंघ दे गृह	भुलर	अमृतसर	२२
७ पोह शहिनशाही सम्मत १	सुरिंदर सिंघ दे गृह	भुलर	अमृतसर	२४
७ पोह शहिनशाही सम्मत १	मंगल सिंघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	२६
७ पोह शहिनशाही सम्मत १	अवतार सिँघ, हजारा सिंघ दे गृह	कांओके		२६
८ पोह शहिनशाही सम्मत १	नराइण सिंघ दे गृह	गुमानपुरा	अमृतसर	३०
९ पोह शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३५
१० पोह शहिनशाही सम्मत १		खोण कैंप	जम्मू	३८
११ पोह शहिनशाही सम्मत १		खोण कैंप	जम्मू	४७
११ पोह शहिनशाही सम्मत १	देवा सिंघ दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	५२
११ पोह शहिनशाही सम्मत १	फुम्मण सिंघ दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	५३
११ पोह शहिनशाही सम्मत १	बचन सिंघ दे गृह	मनवाल कैंप	जम्मू	५४
११ पोह शहिनशाही सम्मत १		झज्जर कोटली कैंप	जम्मू	५५
१२ पोह शहिनशाही सम्मत १	प्रकाश चंद दे गृह	जम्मू	जम्मू	५७
१२ पोह शहिनशाही सम्मत १	बीबी राम कौर दे गृह	जम्मू	जम्मू	५९
१२ पोह शहिनशाही सम्मत १	चेला सिंघ दे घर	जम्मू	जम्मू	६२
१२ पोह शहिनशाही सम्मत १	अमरो देवी दे गृह	जम्मू	जम्मू	६३

१३ पोह	शहिनशाही सम्मत १	सेवा राम, दौलत राम	जम्मू मारकीट		जम्मू	७०
१७ पोह	शहिनशाही सम्मत १	सूबेदार सवरन सिंघ				७२
१७ पोह	शहिनशाही सम्मत १	बिशन सिंघ दे गृह, कुलदीप कौर, अमरजीत कौर दे सगन समें	गुड़गाउँ			७९
२६ पोह	शहिनशाही संगत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	८६
२६ पोह	शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	९५
२७ पोह	शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१२९
२८ पोह	शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१४२
२८ पोह	शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१४६
पहली माघ	शहिनशाही सम्मत १	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१४९
२ माघ	शहिनशाही सम्मत १	शंगारा सिंघ		खेड़ा	अमृतसर	१८३
४ माघ	शहिनशाही सम्मत १	ज्ञानी गुरमुख सिंघ दे गृह	भलाईपुर डोगरा			१८९
५ माघ	शहिनशाही सम्मत १	पाल सिंघ लांगरी दे घर	भलाई पुर डोगरां			१९८
५ माघ	शहिनशाही सम्मत १	डा० पाल सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरां			१९९
५ माघ	शहिनशाही सम्मत १	सरूप सिंघ दे नवित		मंगूपुर	कपूरथला	२०४
६ माघ	शहिनशाही संत १	सूबेदार मस्सा सिंघ दे नवित		कोटली थान	जलंधर	२१४
१२ माघ	शहिनशाही सम्मत १	सरदूल सिंघ दे गृह		बल सचंदर	अमृतसर	२२४
१६ माघ	शहिनशाही सम्मत १	जरनैल सिंघ दे गृह	मालवा संगत	शाहवाला	फिरोज़पुर	२३१
१७ माघ	शहिनशाही सम्मत १	करनैल सिंघ दे गृह	शाहवाला		फिरोज़पुर	२३५
१७ माघ	शहिनशाही सम्मत १	गुरदास सिंघ दे गृह	शाहवाला		फिरोज़पुर	२३६
१७ माघ	शहिनशाही सम्मत १	जगीर सिंघ दे गृह	शाहवाला		फिरोज़पुर	२३८
१७ माघ	शहिनशाही सम्मत १	अजीत सिंघ दे गृह	शाहवाला		फिरोज़पुर	२३९

१७ माघ शहिनशाही सम्मत १ करतार सिंघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	२४०
१७ माघ शहिनशाही सम्मत १ करनैल सिंघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	२४१
१७ माघ शहिनशाही सम्मत १ नछत्तर सिंघ दे गृह	शाहवाला	फ़िरोज़पुर	२४१
१७ माघ शहिनशाही सम्मत १ सोभा सिंघ दे गृह	वलूर	फ़िरोज़पुर	२४२
१७ माघ शहिनशाही सम्मत १ साधू सिंघ दे गृह	बसती तेगा सिंघ	फ़िरोज़पुर	२४३
१८ माघ शहिनशाही सम्मत १ कपूर सिंघ दे गृह	गुलाबी बाग	मोगा	२४८
२४ माघ शहिनशाही सम्मत १	कल्ला	अमृतसर	२५४
२५ माघ शहिनशाही सम्मत १ हरी सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	२७४
२५ माघ शहिनशाही सम्मत १ सरमुख सिँघ, गुरमुख सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	२७८
२५ माघ शहिनशाही सम्मत १ करनैल सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	२८३
२५ माघ शहिनशाहीआ सम्मत १ नरैण सिंघ दे गृह	कंग	अमृतसर	२८६
२६ माघ शहिनशाही सम्मत १ गुरनाम सिंघ दे गृह	कंग	अमृतसर	२८७
२६ माघ शहिनशाही सम्मत १ कुंदन सिंघ दे गृह	माल चक	अमृतसर	२८८
२६ माघ शहिनशाही सम्मत १ राधा स्वामी प्रताप सिंघ दे नाल	तरन तारन	अमृतसर	२९०
२६ माघ शहिनशाही सम्मत १ दीदार सिंघ दे घर	शफ़ीपुर	अमृतसर	२९२
२६ माघ शहिनशाही सम्मत १ दलीप सिंघ दे घर	जंडिआला गुरू	अमृतसर	२९४
पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	२९६
२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	३०३
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बलवंत सिंघ दे गृह	तलवंडी जलेखां	फ़िरोज़पुर	३०५
१४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सरदारा सिंघ दे गृह	मनावा	फ़िरोज़पुर	३०७
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ पूरन सिंघ दे गृह	मनावा	फ़िरोज़पुर	३१२
१५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरबचन सिंघ दे गृह	सद्दा सिंघ वाला	फ़िरोज़पुर	३१४

3 १६

१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	जोरा सिंघ दे गृह	सद्दा सिंघ वाला	फिरोज़पुर	३१५
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुरदयाल सिंघ दे गृह	सद्दा सिंघ वाला	फिरोज़पुर	३१७
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	पंजाब कौर दे गृह	सद्दा सिंघ वाला	फिरोज़पुर	३१८
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सीतल सिंघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	३२०
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	धंना सिंघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	३२२
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	मेला सिंघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	३२२
१५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सुरैण सिंघ दे गृह	निधां वाला	फिरोज़पुर	३२३
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हजूरा सिंघ दे गृह	सोसण	फिरोज़पुर	३२४
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	नंद सिंघ दे घर	थम्मण वाला	फिरोज़पुर	३२५
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	संपूरन सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३२७
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सुंदर सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३०
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	अमर सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३१
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	प्रीतम सिंघ दे घर	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३२
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	जगतार सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३२
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	आत्मा सिंघ तेजा सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३३
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	जगीर सिंघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	३३४
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	अरजन सिंघ दे गृह	बसती खलील	फिरोज़पुर	३३५
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हरी सिंघ दे गृह	बसती खलील	फिरोज़पुर	३३७
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	धरम सिंघ दे गृह	बसती दरिआ	फिरोज़पुर	३३८
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सुर्जन सिंघ दे गृह	फिरोज़पुर शहर	फिरोज़पुर	३४०
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	तारा सिंघ दे गृह	फिरोज़पुर छाउणी	फिरोज़पुर	३४२
१७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सूबेदार राम सिंघ दे गृह	गवाल टोली	फिरोज़पुर	३४३

4 १६

१८	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सुलक्खण सिंघ दे गृह	मूंगला	फिरोज़पुर	३४५
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुरदीप सिंघ दे गृह	तूत	फिरोज़पुर	३४६
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हजूरा सिंघ दे गृह	गोले वाला	फिरोज़पुर	३५०
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	कृपाल सिंघ दे गृह	गोले वाला	फिरोज़पुर	३५२
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुरदीप सिंघ दे गृह	गोले वाला	फिरोज़पुर	३५४
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	राज सिंघ अजैब सिंघ इकबाल सिंघ दे गृह	डोगर बसती	फरीदकोट	३५५
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	तेजा सिंघ दे गृह	सादक	फिरोज़पुर	३५७
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	अमर सिंघ दे गृह	मान सिंघ वाला	फिरोज़पुर	३६०
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	इंदर सिंघ दे गृह	कोटकपूरा	फिरोज़पुर	३६४
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	चरन दास दे गृह	कोटकपूरा	फिरोज़पुर	३६५
१६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुलज़ार सिंघ दे गृह	साहो के	फिरोज़पुर	३६६
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	चंनण सिंघ दे घर	वांदर		३६७
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	भाग सिंघ दे गृह	दबड़ी खाना	बठिंडा	३७०
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हरचंद सिंघ दे गृह	हरिराए पुर	बठिंडा	३७३
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	जगीर दास दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	३७४
२०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	बख्तावर सिंघ दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	३७६
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	मुकंद सिंघ दे गृह	मऱाज	बठिंडा	३७७
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	बधावा सिंघ दे गृह	मऱाज	बठिंडा	३८२
२१	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	लाभ सिंघ दे गृह	चक फतिह सिंघ	बठिंडा	३८६
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हरचरन सिंघ दे गृह	बठिंडा		३८७
२२	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	बुगर सिंघ दे गृह	बरगाड़ी	बठिंडा	३८८

5
१६

२२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुहावा सिंघ दे गृह पंज गराईआं बठिंडा ३६०
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बिशन सिंघ दे गृह पंज गराईआं बठिंडा ३६७
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ भगत सिंघ दे गृह पंज गराईआं बठिंडा ४००
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ प्रीतम सिंघ दे गृह समाल सर फिरोज़पुर ४०१
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ नाज़र सिंघ दे गृह माड़ी मुसतफा फिरोज़पुर ४०४
२३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जगीर सिँघ, ईशवर सिँघ,
गुरदयाल कौर दे गृह माड़ी मुसत्फा फरोज़पुर ४०५
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ भाग सिंघ दे गृह माड़ी मुसत्फा फिरोज़पुर ४०७
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ नरायण सिंघ दे गृह निहाल सिंघ वाला फिरोज़पुर ४०६
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सन्त कौर दे गृह निहाल सिंघ वाला फिरोज़पुर ४१२
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ तारा सिंघ दे गृह गाज़ीआणा फिरोज़पुर ४१३
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जसवंत सिंघ दे गृह राजेआणा फिरोज़पुर ४१६
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ साधू सिँघ, बावा सिंघ दे गृह रोडे फिरोज़पुर ४१६
२४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुदागर सिंघ दे गृह नाथे वाला फिरोज़पुर ४२२
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ करतार कौर, बलजीत कौर दे नवित
नाथेवाला फिरोज़पुर ४२४
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ इंदर सिंघ दे गृह नाथेवाला फिरोज़पुर ४२५
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ महिंदर सिंघ दे गृह नाथेवाला फिरोज़पुर ४२७
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ प्रीतम सिंघ दे गृह नाथेवाला फिरोज़पुर ४२८
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बलवंत सिंघ दे गृह नाथेवाला फिरोज़पुर ४२६
२५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जोगिंदर सिँघ, महिंदर सिंघ दे गृह
नाथेवाला फिरोज़पुर ४२६

6 १६

२५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	पूरन सिंघ दे गृह	नाथेवाला	फिरज़पुर	४३०
२५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुलज़ार सिंघ दे गृह	नाथेवाला	फिरोज़पुर	४३१
२५	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	बूड़ सिंघ दे गृह	नाथेवाला	फिरोज़पुर	४३२
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	करतार सिंघ दे गृह	चड़िक	फिरोज़पुर	४३३
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	महिंदर सिंघ दे गृह	चड़िक	फिरोज़पुर	४३६
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	गुरदयाल सिंघ दे गृह	रामू वाला	फिरोज़पुर	४३७
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	माधो सिंघ दे गृह	रामू वाला	फिरोज़पुर	४४०
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	दलीप सिंघ दे गृह	बदनी	फिरोज़पुर	४४१
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	कपूर सिंघ दे गृह	मोगा	फिरोज़पुर	४४४
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	अजमेर सिंघ दे गृह	मोगा	फिरोज़पुर	४४६
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सुरजीत कौर दे गृह	मनावा	फिरोज़पुर	४४६
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सविंदर कौर दे गृह	दुने वाला	फिरोज़पुर	४४७
२६	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	केहर सिंघ दे गृह	रजी आला	फिरोज़पुर	४४८
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	मल सिंघ दे गृह	रजी आला	फिरोज़पुर	४४६
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	इंदर सिंघ दे गृह	कादर वाला	फिरोज़पुर	४४६
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सोहण सिंघ दे गृह	मुंडी जमाल	फिरोज़पुर	४५१
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	बगीचा सिंघ दे गृह	मुंडी ज़माल	फिरोज़पुर	४५२
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	करतार सिंघ दे गृह	मुंडी ज़माल	फिरोज़पुर	४५३
२७	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	सोहण सिंघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	४५३
३०	फग्गण	शहिनशाही	सम्मत	१	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४५५
पहली	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	४५६
					सुरजीत सिंघ दी शादी वास्ते बेनती			४७४

7 १६

7 १६

५ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार किंगजवे कैंप धीरपुर दिल्ली–६				४७७
रात साढे नौं वजे				४८६
७ चेत शहिनशाही सम्मत २ भगत सिंघ दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	४६६
८ चेत शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिंघ दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	४६७
८ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरदित सिंघ दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	४६८
६ चेत शहिनशाही सम्मत २ जसवंत सिंघ दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	४६६
६ चेत शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिंघ दे गृह	ज़ातरी		मध्या प्रदेश	५००
६ चेत शहिनशाही सम्मत २ सविंदर सिंघ दे घर	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०२
१० चेत शहिनशाही सम्मत २ कृष्ना कांत त्वारी दे घर	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०३
१० चेत शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिंघ औरंगाबाद वाले दे नवित				
	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०४
१० चेत शहिनशाही सम्मत २ शंगारा सिंघ बंबई वाले दे नवित	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०५
१० चेत शहिनशाही सम्मत २ सदन मल, कौड़ा मल दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०५
१० चेत शहिनशाही सम्मत २ टोपनराम दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०६
११ चेत शहिनशाही सम्मत २ संत सिंघ दे गृह	इटारसी		मध्या प्रदेश	५०७
११ चेत शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिंघ दे गृह	भुपाल		मध्या प्रदेश	५०८
१२ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिंघ दे गृह	भुपाल		मध्या प्रदेश	५०६
१३ चेत शहिनशाही सम्मत २ किशन चंद नारंग दे नाल				
निरंकारी सटोर कोआपरेटिव			दिल्ली	५१०
१४ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिंघ दे गृह	रुड़का कलां		जलंधर	५११
१५ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरचरन सिंघ दे गृह	धीरपुर		दिल्ली	५१२
१६ चेत शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिंघ दे गृह	धीरपुर		दिल्ली	५१३

8
१६

१६	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदर्शन कौर सुखवंत कौर	महल्ला जट्टपुरा	कपूरथला	५१५
१६	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबचन सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५१६
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमुख सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५१७
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	फुमण सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५१८
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबचन कौर दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५१९
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५२०
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५२१
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	जुगिंदर सिंघ दे गृह	अहिमदपुर	कपूरथला	५२२
२०	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	सूरत सिंघ दे गृह	डाला	कपूरथला	५२३
२१	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	मक्खण सिंघ दे गृह	बाऊपुर	गुरदास पुर	५२५
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गंढा सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५२८
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	दर्शन कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५२९
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३०
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बलाका सिँघ, आसा सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३१
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	प्यारा सिंघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदास पुर	५३२
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	रवेल कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३३
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	हज़ारा सिंघ दे गृह	बाबू पुर	गुरदास पुर	५३४
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	संपूरन कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३६
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार कौर दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३७
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	दीदार सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५३८
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	हज़ारा सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५४०
२२	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	संत सिंघ दे गृह	बाबूपुर	गुरदास पुर	५४०

10
१६

२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ मुनशा सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४१
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ भाग सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४२
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बख़शीश सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४२
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४३
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी वीरो दे घर बाबूपुर गुरदास पुर ५४६
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४७
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ विरसा सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४७
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ वरखा सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४७
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ मुनसा सिँघ, मेला सिंघ दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४८
२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी सवरनी दे गृह बाबूपुर गुरदास पुर ५४८
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी लाजी दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५४९
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी बिसी दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५०
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी ध्यानो दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५१
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ अच्छर सिंघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५२
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ सरूप सिंघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५२
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ सांझी राम दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५३
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिंघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५३
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ गंडा सिंघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५४
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बंता सिंघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५४
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान चंद दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५४
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी धंनी दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५५
२३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बावा राम दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर ५५५

10
१६

२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन सिंघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर	५५६
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी चंनों दे गृह	अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर	५५६
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	वकील सिंघ दे गृह	अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर	५५६
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बचन सिंघ दे गृह	सिमल सकोर गुरदास पुर	५५७
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन सिंघ दे गृह	कठयाली गुरदास पुर	५५८
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी बचनी दे गृह	काणा कौंटा गुरदास पुर	५५६
२३	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	किशन सिंघ, बीबी पूरो दे गृह	अल्लड़ पिंडी गुरदास पुर	५६०
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन सिंघ दे गृह	अनतोर गुरदास पुर	५६१
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी छिंदो दे गृह	मधे पुर गुरदास पुर	५६३
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी चंनो दे घर	खुशीपुर गुरदास पुर	५६४
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी करतारी दे गृह	दुरांगला गुरदास पुर	५६६
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी वीरो दे गृह	दुरांगला गुरदास पुर	५६८
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	बूड़ सिंघ दे गृह	वज़ीरपुर गुरदास पुर	५६८
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर कौर दे गृह	वज़ीरपुर गुरदास पुर	५७०
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	सलविंदर कौर दे गृह	जीवण चक गुरदास पुर	५७०
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबख़श सिंघ दे गृह	नशैहरा गुरदास पुर	५७०
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	मुनशा सिंघ दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७१
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	तरलोक सिंघ दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७२
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिंघ दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७३
२४	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	दयाल सिंघ दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७४
२५	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	चंनण कौर दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७४
२५	चेत	शहिनशाही	सम्मत	२	अतर सिंघ दे गृह	ओगरा गुरदास पुर	५७५

11 १६

12

१६

२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ चतर सिंघ दे गृह	ओगरा	गुरदास पुर	५७६
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ उजागर सिंघ दे गृह	चोबे	गुरदास पुर	५७६
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ उजागर सिंघ दे गृह	मम्मीआं	गुरदास पुर	५७७
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ लक्खा सिंघ दे गृह	ओगरा	गुरदास पुर	५७८
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ देवराज दे गृह	भीम पुरा	गुरदास पुर	५७९
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ लाल सिंघ दे गृह	गुजरात	गुरदास पुर	५८१
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी महंती दे गृह	गुजरात	गुरदासपुर	५८२
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ कौशल्या देवी दे गृह	गुजरात	गुरदास पुर	५८३
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ कंस राज दे गृह	गुजरात	गुरदास पुर	५८४
२५ चेत शहिनशाही सम्मत २ जीत सिंघ दे गृह	कतोवाल	गुरदास पुर	५८४
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरचरन सिंघ दे गृह	कतोवाल	गुरदास पुर	५८६
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ जसवंत सिंघ दे गृह	नवां	गुरदास पुर	५८८
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी ज्ञानो दे गृह	नवां	गुरदास पुर	५८९
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी दुरगी दे गृह	नवां	गुरदास पुर	५८९
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ तेज कौर दे गृह	नवां	गुरदास पुर	५९०
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ चरन सिंघ दे गृह	नवां	गुरदास पुर	५९१
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ तारा सिंघ दे गृह	नवा	गुरदास पुर	५९१
२६ चेत शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिंघ दे गृह	नइआ शाला	गुरदास पुर	५९१
पहली विसाख शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	५९५
२ विसाख शहिनशाही सम्मत २ हरचरन सिंघ दे गृह	बठिंडा		६०३
४ विसाख शहिनशाही सम्मत २ मैहिंगा सिंघ दे गृह	हरी पुर	जलंधर	६०४
५ विसाख शहिनशाही सम्मत २ परगट सिंघ दे गृह	हरि भगत दवार धीर पुर	दिल्ली	६०६

12

१६

13 १६

५ विसाख शहिनशाही सम्मत २ रतन सिंघ नूर पुर (जलंधर) निवासी दे प्रशाद कराउँण ते,
हरि भगत दवार दिल्ली ६०७

६ विसाख शहिनशाही सम्मत २ तरलोक सिंघ सनाम निवासी दे प्रशाद कराउण ते,
हरि भगत दवार दिल्ली ६०९

६ विसाख शहिनशाही सम्मत २ लछमण सिंघ दे गृह हरि भगत दवार दिल्ली ६१०

७ विसाख शहिनशाही सम्मत २ अर्जन सिंघ दे गृह बलोचपुरा करनाल ६१२

१३ विसाख शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६१३

२१ विसाख शहिनशाही सम्मत २ इंदरजीत सिँघ, अजमेर सिंघ दे गृह
भलाई पुर डोगरा ६१४

२३ विसाख शहिनशाही सम्मत २ ऊधम सिंघ दे गृह जलालाबाद अमृतसर ६१७

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६१८

२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ६३०

६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ संगत दे नवित बाबूपुर गुरदास पुर ६३३

६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चेला सिंघ दे गृह वज़ारड रोड जम्मू ६३५

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ अमरो देवी दे गृह वजारत रोड जम्मू ६३६

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ सधरो देवी दवाणा जम्मू ६३८

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ केसरी देवी सतवारी रेलवे लाइन जम्मू ६३८

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी बंती देवी वजारत रोड जम्मू ६३९

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ अमरो देवी वजारत रोड जम्मू ६४०

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बाज सिंघ दे गृह मटू जम्मू ६४०

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश चंद वजारत रोड जम्मू ६४१

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी राम कौर दे गृह वजारत रोड जम्मू ६४२

13 १६

१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ सूबेदार तेज भान दे गृह शेख़सर जम्मू ६४४
१० जेठ शहिनशाही सम्मत २ राज सिंघ दे गृह (मट्राज गुरदास पुर वाला) जम्मू ६४७
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ केसर सिंघ दे गृह झमां जम्मू ६४८
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ जीवण सिंघ दे गृह मोयल जम्मू ६४६
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बसंती देवी दे घर अंबा राए जम्मू ६५०
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ईशर सिंघ के गृह दड़ जम्मू ६५१
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रताप सिंघ दे गृह दड़ जम्मू ६५२
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश सिंघ दे घर दड़ जम्मू ६५३
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ झण्डू राम दे गृह जिउड़ीआं जम्मू ६५३
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिव दे गृह जिउड़ीआं जम्मू ६५५
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भोला राम दे गृह जिउड़ीआं जम्मू ६५५
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ करमो देवी दे गृह करनगेल जम्मू ६५६
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी लीला देवी कर नमयाल जम्मू ६५७
११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चीफ इंनजीनिअर आर० अैल० शरमा करन नगर जम्मू ६५७
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ पदमनी दे गृह काली जनी जम्मू ६६१
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ करम चंद दे गृह जम्मू जम्मू ६६१
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लाल चंद दे घर वजारत रोड जम्मू ६६३
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह जम्मू जम्मू ६६४
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिंघ दे गृह कलोए जम्मू ६६४
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिंघ दे घर कलोए जम्मू ६६६
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रणीआ राम दे घर कलोए जम्मू ६६७
१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रणीआ राम दे गृह बदी पुर जम्मू ६६८

१२	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	चंनो देवी दे गृह	बदी पुर	जम्मू	६६९
१२	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरनाम सिंघ दे गृह	सीड़	जम्मू	६७०
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सरदारा सिंघ दे गृह	सीड़	जम्मू	६७२
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	जोगिंदर सिंघ दे गृह	सीड़	जम्मू	६७३
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	माई लछमी दे गृह	सीड़	जम्मू	६७४
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	मान कौर दे घर	सीड़	जम्मू	६७५
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	माया देवी दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६७७
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी शाहणी दे गृह	चक्क माजरा	जम्मू	६७८
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रकाशो देवी दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६७९
१३	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	देवी सिंघ दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६८०
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	हरी सिंघ दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६८२
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	वकील सिंघ दे गृह	हंसा	जम्मू	६८३
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	दौलत राम दे गृह	कोटली	जम्मू	६८५
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सुंदर सिंघ दे घर	मगोवाली	जम्मू	६८८
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	नंती देवी दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६८९
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	लच्छमी देवी दे गृह	मूसे चक्क	जम्मू	६९०
१४	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रकाश चंद दे गृह	मगोवाली	जम्मू	६९१
१५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सरदार चंद दे गृह	बालेवाल	जम्मू	६९२
१५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	खजान सिंघ दे घर	रणबीर सिंघ पुरा	जम्मू	६९२
१५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	जस कौर दे गृह	निहाल पुर सिंमल	जम्मू	६९६
१५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	भगत सिंघ दे गृह	कीर	जम्मू	६९८
१५	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सेवा सिंघ दे गृह	कीर	जम्मू	७००

१५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फरंगी राम दे गृह झण्डे झज्जर कोटली कैंप जम्मू ७०२
१५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह चक्क पंडत झज्जर कोटली कैंप जम्मू ७०३
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ साईं दास दे घर झण्डा कैंप झज्जर कोटली जम्मू ७०३
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमी देवी दे गृह झण्डा कैंप झज्जर कोटली जम्मू ७०४
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमी देवी दे गृह झण्डा कैंप झज्जर कोटली जम्मू ७०६
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बेला सिंघ दे गृह धंगाली कैंप झजर कोटली जम्मू ७०७
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेम सिंघ दे गृह सरदारी कैंप मुअतल जम्मू ७०६
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी भाईआं देवी धींगां वाली कैंप झजर कोटली जम्मू ७०६
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बंती देवी दे गृह छंब झजर कोटली कैंप जम्मू ७१०
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिवो देवी धींगा वाली झजर कोटली जम्मू ७११
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फतू राम दे गृह अंबा राए जम्मू ७११
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फुम्मण सिंघ दे गृह छंब कैंप मनवाल जम्मू ७१२
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बिशन सिंघ दे गृहधींगा वाली मनवाल कैंप जम्मू ७१४
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ इंदरो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७१७
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शाहणी देवी दे गृह छंब कैंप मनवाल जम्मू ७१८
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ इंदरो देवी दे गृह नगयाल मनवाल कैंप जम्मू ७१८
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लछमी देवी दे गृह नगयाल कैंप मनवाल जम्मू ७१६
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ करम सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२०
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२१
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मेला राम दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२२
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२२
१६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राजा सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२३

16 १६

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धरमो देवी दे गृह धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ७२३
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ महिंदर कौर दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ७२४
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्यारी देवी दे गृह खैरोवाल मनवाल कैंप जम्मू ७२५
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ कृष्ना देवी दे गृह खैरोवाल कैंप मनवाल जम्मू ७२६
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रसाल सिंघ दे गृह मनावर कैंप मनवाल जम्मू ७२६
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रवेला राम दे गृह सरदारी कैंप मनवाल जम्मू ७२७
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बचन सिंघ तूतां वाले दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ७२८
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देस राज दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ७२८
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धरमो देवी धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७२६

१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राजो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७३०
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरो दे गृह झण्डा कैंप मनवाल जम्मू ७३०
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमा देवी दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७३१
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चूड़ सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मनवाल जम्मू ७३२
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा राम दे गृह चक्क पंडत कैंप मनवाल जम्मू ७३३
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धरमो देवी दे गृह खैरोवाल मनवाल कैंप जम्मू ७३४
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देवा सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मानसर जम्मू ७३४
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लाल चंद दे गृह मोयल कैंप मानसर जम्मू ७३५
१७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप मानसर जम्मू ७३५

१८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ महिंगा राम दे गृह धींगा वाली कैंप मानसर जम्मू ७३६
१८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ संतो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप मानसर जम्मू ७३७
१८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह नगयाल कैंप मानसर जम्मू ७३८
१८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरदित सिंघ दे गृह छंब खूण कैंप जम्मू ७३८

17
१६

१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	संसार सिंघ दे गृह छंब कैंप खूण	जम्मू	७४०
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	खेमो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७४०
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	शंकर दास दे गृह मलक खूण कैंप	जम्मू	७४१
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन चंद दे गृह मलक खूण कैंप	जम्मू	७४२
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	अंगरेज़ सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७४३
१८	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	लछमण सिंघ दे गृह धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४४
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	वजीरो देवी दे गृह धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४५
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	चरन जीत सिंघ दे गृह धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४५
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	देवा सिंघ दे गृह धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४६
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	कुलवंत सिंघ धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४७
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बचन सिंघ दे गृह धींगा वाली खूण कैंप	जम्मू	७४९
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सरदार सिंघ सरदारी खूण कैंप	जम्मू	७४९
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	राम लाल दे गृह सरदारी कैंप खूण	जम्मू	७५१
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रेमो देवी खैरोवाल कैंप खूण	जम्मू	७५१
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	शिवो देवी बाले वाल कैंप खूण	जम्मू	७५२
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	नानक चंद दे गृह सरदारी कैंप खूण	जम्मू	७५३
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	खोजू राम दे गृह खैरोवाल खूण कैंप	जम्मू	७५३
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	ज्ञान चंद दे गृह खैरोवाल खूण कैंप	जम्मू	७५४
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	रोलू राम दे गृह खैरोवाल कैंप खूण	जम्मू	७५५
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	ज्ञान चंद दे गृह तूतां वाली कैंप खूण	जम्मू	७५५
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बेलू राम दे गृह सरदारी कैंप खूण	जम्मू	७५७
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरा राम दे गृह सरदारी कैंप खूण	जम्मू	७५७

18
१९

19
१९

१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	भाग सिंघ दे गृह मलक खूण कैंप	जम्मू	७५८
१९	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	वकील सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७५९
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	शिव सिंघ दे गृह शेखसर कैंप खूण	जम्मू	७६०
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बसो देवी दे गृह सरदारी कैंप खूण	जम्मू	७६१
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सधरो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७६१
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	गूड़ा राम दे गृह शेखसर कैंप खूण	जम्मू	७६२
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	इंदर सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७६३
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बाबू राम दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७६५
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	करमो देवी दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७६६
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	राम सिंघ दे गृह धींगा वाली कैंप खूण	जम्मू	७६७
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	हंसराज दे गृह बालेवाल खूण कैंप	जम्मू	७६८
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	वरिआम सिंघ दे गृह मलिक कैंप खूण	जम्मू	७६९
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	धरमो देवी छंब कैंप खूण	जम्मू	७७०
२०	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	कृपाल सिंघ तूतां वाले दे गृह कैंप खूण	जम्मू	७७०
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	राम चंद दे गृह देवा कैंप खूण	जम्मू	७७१
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	इंदरो देवी गृह दिउड़े कैंप मनवाल	जम्मू	७७२
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	भाईआ देवी मोयल कैंप मानसर	जम्मू	७७३
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	सोभा सिंघ दे गृह मोयल कैंप राम कोट	जम्मू	७७३
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	हरनामो देवी दे गृह मोयल कैंप राम कोट	जम्मू	७७४
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	जीत कौर धींगा वाली कैंप राम कोट	जम्मू	७७६
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	ढेरू राम दे गृह मनावर कैंप राम कोट	जम्मू	७७७
२१	जेठ	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी संतो देवी दे गृह नवां चक कैंप राम कोट	जम्मू	७७७

19
१९

२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	भोला राम दे गृह सरदारी कैंप राम कोट		जम्मू	७७७
२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	मलूका राम दे गृह देवा कैंप राम कोट		जम्मू	७७८
२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	बलवंत कौर दे गृह छंब कैंप राम कोट		जम्मू	७७६
२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	धरम चंद दे गृह छंब कैंप राम कोट		जम्मू	७८०
२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	धंना राम दे गृह अंबा राए कैंप राम कोट		जम्मू	७८०
२१ जेठ शहिनशाही सम्मत २	नंदू दे गृह	सरदारी कैंप छले	जम्मू	७८१
२२ जेठ शहिनशाही सम्मत २	वीरो देवी	धींगा वाली कैंप छले	जम्मू	७८२
२२ जेठ शहिनशाही सम्मत २	धंना सिंघ दे घर	खेरोवाल कैंप छले	जम्मू	७८२
२२ जेठ शहिनशाही सम्मत २	बुढो देवी दे घर	कैंप छले	जम्मू	७८३
पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७८३
११ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७८८
१३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	ठाकर सिंघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७६४
१४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	अमीर चंद गुलाटी दे गृह जेठूवाल		अमृतसर	७६६
१५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार जेठूवाल जम्मू संगत दी आमद विच			७६६
१५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	बीबी प्यारो दे गृह जेठूवाल		अमृतसर	७६७
१७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	७६८
१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८१६
	साढे नौं वजे दा विहार अठारां हाढ़		अमृतसर	८३८
१६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	८४८
२३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	ऊधम सिंघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	८४६
२४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २	ऊधम सिंघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	८६२
पहली सावण शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	८६७

20
१६

२	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	बटाला	गुरदास पुर ८७६
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	नज़ाम पुरा	अमृतसर ८८०
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	चंद सिंघ दे गृह	नज़ाम पुरा	अमृतसर ८८४
३	सावण	शीहनशाही	सम्मत	२	बीबी धनतो दे गृह	नज़ाम पुर	अमृतसर ८८५
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	इकबाल सिंघ दे गृह	नज़ाम पुरा	अमृतसर ८८५
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरभजन सिँघ, गुरबख्श सिँघ, गुरदयाल सिंघ दे गृह	मैणीआं	अमृतसर ८८६
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	वरिआम सिंघ दे गृह	तलवंडी	अमृतसर ८८७
३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अमरीक सिंघ दे गृह	रूपो वाली	अमृतसर ८६३
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरैण सिंघ दे गृह	जंडिआला	अमृतसर ८६५
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुलजार सिंघ दे गृह	जंडिआला	अमृतसर ८६८
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	संतोख सिंघ दे गृह	जंडिआला	अमृतसर ८६६
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६००
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरैण सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६०२
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुदागर सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६०४
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	किशन सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६०४
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	संगारा सिंघ दे गृह	पखोके	अमृतसर ६०५
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बलकार सिंघ दे गृह	ठठीआं	अमृतसर ६०८
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	तेजा सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६०६
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर ६१०
७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	टांगरा	अमृतसर ६११
७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	ज्ञान सिंघ दे गृह	भोरसी	अमृतसर ६१२

21 १६

७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	जागीर सिंघ दे गृह	भोरसी	अमृतसर	६१२
७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सोहण सिंघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	६१६
७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	उतम सिंघ दे गृह	वेरोवाल	अमृतसर	६१७
७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बूटा सिंघ दे गृह	एकलगंडा	अमृतसर	६२०
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	संत सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२३
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	शिव सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२५
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	किरपा सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२५
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बढ्ढा सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२६
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	करम सिंघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२७
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी संतो दे गृह	बंडाला	अमृतसर	६२७
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दीदार सिंघ दे गृह	शफी पूरा	अमृतसर	६२८
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरनाम सिंघ दे गृह	पिंडोरी	अमृतसर	६३१
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	करनैल सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६३३
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दारा सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६३५
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	मस्सा सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६३६
८	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	मक्खण सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	६३८
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी अजैब कौर दे गृह	बाठ	अंमिर्तसर	६४०
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	कुंदन सिंघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	६४३
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरनाम सिंघ दे गृह	कंग	अमृतसर	६४५
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	नरैण सिंघ दे गृह	कंग	अमृतसर	६४७
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबख़श सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५१
९	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	करम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५२

22
१६

६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमुख सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५३
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सरमुख सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५४
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरमुख सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५४
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	कुंदन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५५
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदयाल सिंघ हरदीप सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५६
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुखदेव राज दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५७
६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दर्शन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५८
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	जुगिंदर सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६५६
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६०
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	लाल सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६०
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	साधू सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६१
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिँघ, हरभजन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६२
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	नाजर सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६३
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६३
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरनाम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६३
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६४
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरी सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६५
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बुकण सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६५
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६६
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अरूड़ सिंघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	६६६
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	जागीर सिंघ दे गृह	मुगल चक्क	अमृतसर	६६७
१०	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	केशो राम दे गृह	सरहाली जंडो के	अमृतसर	६७०

23
१६

१०	सावण	शहिनशाही सम्मत २	उतम सिंघ दे गृह	शहाब पुर	अमृतसर	६७१
१०	सावण	शहिनशाही सम्मत २	बिधावा सिंघ दे गृह	शहाब पुर	अमृतसर	६७३
१०	सावण	शहिनशाही सम्मत २	गुरबचन सिंघ अरजन सिंघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	६७३
१०	सावण	शहिनशाही सम्मत २	पूरन सिंघ दे गृह	उसमा	अमृतसर	६७६
१०	सावण	शहिनशाही सम्मत २	दीदार सिंघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	६७७
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	भगवंत सिंघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	६७८
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	जुगिंदर सिंघ दे गृह	जट्टा	अमृतसर	६७६
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	निरंजण सिँघ, करतार सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८०
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	पूरन सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८२
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	चंनण सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८२
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	कुलवंत सिंघ दे गृह	चंबल	अंर्मतसर	६८३
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	तेजा सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८३
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	रतन सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८४
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	तारा सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८५
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	मोहण सिंघ दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८५
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	हीरा नंद दे गृह	चंबल	अमृतसर	६८७
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	फौजा सिंघ दे गृह	सरहाली कलां	अमृतसर	६८८
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	अजीत सिंघ दे गृह	चोला कल्ला	अमृतसर	६८६
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	बीबी गुरनाम कौर दे गृह	चोला खुरद	अमृतसर	६६२
११	सावण	शहिनशाही सम्मत २	अजीत सिंघ दे गृह	रतो के	अमृतसर	६६३
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत २	बली सिंघ दे गृह	कैरों	अमृतसर	६६६
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत २	जागीर सिंघ दे गृह	कैरों	अमृतसर	१०००

24
१६

१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी बीरो दे गृह	कैरों	अमृतसर	१००१
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी कंसो दे गृह	ठकर कौड़ा	अमृतसर	१००२
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बूड़ सिंघ दे गृह	बरनाला	अमृतसर	१००४
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	लछमण सिंघ दे गृह	भूरे	अमृतसर	१००७
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	गोपाल कौर दे गृह	भूरे	अमृतसर	१००८
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	हरदीप सिंघ दे गृह	डिबी पुरा	अमृतसर	१०१०
१२	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	मक्खण सिँघ, बख़शीश सिंघ दे गृह	भगवान पुरा		१०११
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	परताप सिंघ दे गृह	सुगा	अमृतसर	१०१३
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	गंडा सिंघ दे गृह	दराजके	अमृतसर	१०१४
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	तेजा सिंघ दे गृह	बासरके	अमृतसर	१०१५
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी जीतो दे गृह	बासरके	अमृतसर	१०१८
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	नारला	अमृतसर	१०१८
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	समुंद सिंघ दे गृह	माड़ी मेघा	अमृतसर	१०२०
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	मिलखा सिंघ दे गृह	माड़ी मेघा	अमृतसर	१०२२
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	मनी सिंघ दे गृह	सिधवा	अमृतसर	१०२३
१३	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	मोता सिँघ, दलीप सिंघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२४
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	सेवा सिंघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२६
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी सुरजीत कौर दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२७
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	बीबी बीरो दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२८
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	शाम सिंघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२६
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	प्रताप सिंघ फुंमण सिंघ दे गृह	कल्सीआं	अमृतसर	१०२६
१४	सावण	शहिनशाही सम्मत	२	गुलाब कौर गृह	डल	अमृतसर	१०३०

१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी पारो देवी गृह	खालड़ा	अमृतसर	१०३२
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरजन सिंघ दे गृह	भुच्चर खुरद	अमृतसर	१०३३
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर सिंघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०३३
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बचन सिंघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०३५
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	पूरन सिँघ, हरी सिंघ दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०३६
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदीप कौर दे गृह	सोहल	अमृतसर	१०३७
१४	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०३८
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरबख्श सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०३८
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	करम सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४०
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	उतम सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४१
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	जागीर सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४२
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	माई ईशर कौर दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४३
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	चंनण सिंघ दे गृह	गग्गोबूआ	अमृतसर	१०४४
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	नूर पूर	अमृतसर	१०४५
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	करतार सिंघ दे गृह	भोजीआं	अमृतसर	१०४८
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	परताप कौर दे गृह	भोजीआं	अमृतसर	१०४६
१५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सोहण सिंघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	१०५०
१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	दलीप सिंघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	१०५२
१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बसंत कौर दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	१०५३
१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अरजन सिंघ दे गृह	तरन तारन	अमृतसर	१०५४
१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	धरमवीर दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१०५४
१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बलवंत सिंघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१०५६

१६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	गुलज़ार सिंघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	१०५७
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	डा० पाल सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०५८
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर सिंघ दे गृह	भलाई पुर	अमृतसर	१०६०
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरभजन सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६१
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	महिंदर सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६२
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	शंगारा सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६३
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६४
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६५
१७	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अजमेर सिंघ दे गृह	भलाई पुर डोगरा	अमृतसर	१०६६
२१	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	माधा सिंघ जथेदार दे गृह	चीमा	अमृतसर	१०६६
२३	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरि भगत दवार	जेठूवाल	अमृतसर	१०६८
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	बलवंत कौर दे गृह		अमृतसर	१०७१
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	आंडलू	लुधियाणा	१०७४
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हरनाम सिंघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०७७
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सवरन सिंघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०७८
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	नाज़र सिंघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०७८
२५	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	नरैण सिंघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०८०
२६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	गुमान पुरा	अमृतसर	१०८३
२६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	हजारा सिंघ दे गृह	काउुंके	अमृतसर	१०८४
२६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	अवतार सिंघ दे गृह	काउँके	अमृतसर	१०८४
२६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	भाग सिंघ दे गृह	महावा	अमृतसर	१०८५
२६	सावण	शहिनशाही	सम्मत	२	सुमां सिंघ दे गृह	मोदे	अमृतसर	१०८७

27
१६

28 १६

२६	सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी छिंदो दे गृह	धनोए	अमृतसर	१०८८
२६	सावण शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिंघ दे गृह	सारंगड़ा	अमृतसर	१०६१
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिंघ दे गृह	लेलीआं	अमृतसर	१०६३
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी जागीर कौर दे गृह	लेलीआं	अमृतसर	१०६३
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ संत सिंघ दे गृह	लेलीआं	अमृतसर	१०६४
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिंघ दे गृह	लोपोके	अमृतसर	१०६४
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ सुविंदर सिंघ दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	१०६५
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ अनूप कौर दे गृह	भुल्लर	अमृतसर	१०६६
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिंघ दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१०६६
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरदित सिंघ दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१०६७
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ तारा सिंघ दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१०६७
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ लाभ सिंघ दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१०६८
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ भगवान कौर दे गृह	मानां वाला	अमृतसर	१०६८
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ चरन सिंघ दे गृह	मानां वाला	अंमेतसर	१०६६
२७	सावण शहिनशाही सम्मत २ हजारा सिंघ दे गृह	छीना	अमृतसर	१०६६
२८	सावण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिंघ दे गृह	बोपाराए	अमृतसर	११०१
२८	सावण शहिनाशाहीआ सम्मत २ जगमोहण सिंघ दे गृह	बोपाराए	अमृतसर	११०२
२८	सावण शहिनाशाही सम्मत २ भाग सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	११०२
२८	सावण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	११०३
२८	सावण शहिनशाही सम्मत २ बलवंत सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	११०५
२८	सावण शहिनशाही सम्मत २ बेला सिंघ दे गृह	माहल	अमृतसर	११०७
२६	सावण शहिनशाही सम्मत २ ठाकर सिंघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	११०८

28 १६

३० सावण शहिनशाही सम्मत २ संत कृपाल सिंघ दे डेरे
रुहानी सतिसंग सावण आर्श्म अमृतसर ११०८

३० सावण शहिनशाही सम्मत २ मस्सा सिंघ दे गृह बल गुरदास पुर १११२

३० सावण शहिनशाही सम्मत २ उमराओ सिंघ दे गृह बल गुरदास पुर १११४

३० सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिंघ दे गृह बल गुरदास पुर १११५

३० सावण शहिनशाही सम्मत २ बख़शीश सिंघ दे गृह कादराबाद अमृतसर १११६

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी पूरन कौर दे गृह कादराबाद अमृतसर १११८

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिंघ दे गृह कादराबाद अमृतसर १११६

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिंघ महिंदर सिंघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ११२०

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ करम सिंघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ११२०

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन कौर दे गृह कादराबाद अमृतसर ११२१

पहली भादरों शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर ११२१

२ भादरों शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिंघ दे गृह नया शाला गुरदास पुर ११२२

३ भादरों शहिनशाही सम्मत २ करम सिंघ दे गृह नया शाला गुरदास पुर ११२२

३ भादरों शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिंघ दे गृह नया शाला गुरदास पुर ११२४

४ भादरों शहिनशाही सम्मत २ लाभ सिंघ दे गृह चक्क फतिह सिंघ बठिंडा ११२५

१० भादरों शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिंघ दे गृह फतिह गड़्ह बठिंडा ११२६

१० भादरों शहिनशाही सम्मत २ हज़ूरा सिंघ दे गृह गोरायां जलंधर ११२८

१० सावण शहिनशाही सम्मत २ लाल सिंघ दे गृह डलेवाल जलंधर ११२६

११ भादरों शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिंघ दे गृह नवां जलंधर ११३२

११ भादरों शहिनशाही सम्मत २ लछमण सिंघ दे गृह धनौरी अंबाला ११३६

१२ भादरों शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिंघ दे गृह हरबंस पुरा ११३८

29
१६

१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदेव सिंघ दे गृह	घड़ूआं	अंबाला	११३६
१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	सुरजीत सिंघ दे गृह	घड़ूआं	अंबाला	११४०
१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी सुखजिंदर कौर दे गृह	घड़ूआं	अंबाला	११४१
१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरदेव सिंघ दे गृह	माणक पुर कल्लर	अंबाला	११४२
१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	संत सिंघ दे गृह	माणक पुर कल्लर	अंबाला	११४३
१२	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	वीर सिंघ दे गृह	बठलाणा	अंबाला	११४४
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	जेठा सिंघ दे गृह	बठलाणा	अंबाला	११४६
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	नत्था सिंघ दे गृह	बडहेड़ी	अंबाला	११४७
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बंना सिंघ दे गृह	करतार पुर	जलंधर	११४८
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	अमर चंद दे गृह	पंज कोहा	अंबाला	११४६
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	रौणक सिँघ, सेवा सिंघ दे गृह	रुड़की		११५०
१३	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	मेहर सिंघ दे गृह	शेख़ पुरा		११५२
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	हरभजन सिंघ दे गृह	शेख़पुरा	रोपड़	११५३
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	अजीत सिंघ दे गृह	गोसलां	रोपड़	११५४
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	राज़ो माजरा	रोपड़	११५५
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	सरजीतम सिंघ दे गृह	राजो माजरा	रोपड़	११५६
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	जरनैल कौर दे गृह	राजो माजरा		११५७
१४	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	जागीर सिंघ दे गृह	रंगील पुर	रोपड़	११५७
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बचन सिंघ दे गृह	ध्यानपुर		११५६
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	जसवंत सिंघ दे गृह	मुरिंडा	अंबाला	११६१
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	दरबारा सिंघ दे गृह	बाठ खुरद		११६२
१५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	मुखत्यार सिंघ दे गृह	मुंडीआं खुरद	लुधियाणा	११६४

30
१६

१५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	सरवण सिंघ दे गृह	रामपुर सरदारा	लुधियाणा	११६५
१५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	हरनेक सिंघ दे गृह	अजनौद	लुधियाणा	११६७
१५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	हरचरन सिंघ दे गृह	लुधियाणा		११६८
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	हरभजन सिंघ दे गृह	बसती गुजरां	लुधियाणा	११६९
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	महिंदर सिंघ दे गृह	लुधियाणा		११७०
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	हरबंस कौर दे गृह	लुधियाणा		११७१
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	मदन लाल दे गृह	लुधियाणा		११७२
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	गुरदेव सिंघ दे गृह	लुधियाणा		११७२
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	सुखवंत कौर दे गृह	लुधियाणा		११७५
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	लाल सिंघ दे गृह	लुधियाणा		११७७
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	भजन सिंघ दे गृह	उच्चा सनेत		११७८
१६ भादरों शहिनशाही सम्मत २	निरंजण सिंघ दे गृह	उच्ची अबादी	लुधियाणा	११७९
२३ भादरों शहिनशाही सम्मत २	मल सिंघ दे गृह	रज्जी वाला	फिरोज़पुर	११८०
२३ भादरों शहिनशाही सम्मत २	कपूर सिंघ बराड़ दे गृह	मोगा	फिरोज़पुर	११८३
२३ भादरों शहिनशाही सम्मत २	नाथेवाल मालवा संगत	फिरोज़पुर		११८५
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत २	बीबी हरबंस कौर दे गृह	सालब		११८७
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत २	प्रीतम सिंघ दे गृह	नाथे वाल	फ़िरोज़पुर	११८९
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत २	मेहर सिंघ दे गृह	जगराउँ	लुधियाणा	११९०
२४ भादरों शहिनशाही सम्मत २	करम सिंघ दे गृह	गुड़े	लुधियाणा	११९२
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	महिंदर सिंघ दे गृह	दाखे	लुधियाणा	११९३
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	नाहर सिंघ दे गृह	रकबा	लुधियाणा	११९४
२५ भादरों शहिनशाही सम्मत २	नाजर सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	११९५

31
१६

२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	मंगल सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	११९६
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	पाखर सिंघ दे गृह	मोही	लुधियाणा	११९७
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरनाम सिंघ दे गृह	बुढेल	लुधियाणा	१२०१
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	साधू सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	१२०२
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	हरजीत सिंघ दे गृह	लील	लुधियाणा	१२०४
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	भाग सिंघ दे गृह	बिसरावां	लुधियाणा	१२०४
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	सरवण सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	१२०६
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	करम सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	१२०६
२५	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	सरदारा सिंघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधियाणा	१२०७
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	भगवान कौर दे गृह	पखोवाल	लुधियाणा	१२०९
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	धंना सिंघ दे गृह	ढहि पई	लुधियाणा	१२११
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बलवंत सिंघ दे गृह	गुजरवाल	लुधियाणा	१२१२
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	हरी सिंघ दे गृह	महिमा सिंघ वाला	लुधियाणा	१२१३
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	जगीर सिंघ दे गृह	घुगराणा	लुधियाणा	१२१४
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	भजन सिंघ दे गृह	जीरख	लधिआणा	१२१६
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	श्री राम दे गृह	मकसूदड़ा	लुधियाणा	१२१७
२६	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	नछत्तर सिंघ दे गृह	दोराहा मंडी	लुधियाणा	१२१८
२७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बीबी बसंत कौर दे गृह	दोराहा	लुधियाणा	१२२०
२७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	गुरनाम कौर दे गृह	दोराहा मंडी	लुधियाणा	१२२१
२७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	गज्जन सिंघ दे गृह	दोराहा मंडी	लुधियाणा	१२२२
२७	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	बग्गा सिंघ दे गृह	नत्त	लुधियाणा	१२२४
२९	भादरों	शहिनशाही	सम्मत	२	प्रीतम सिंघ दे गृह	गोबिंद पुरा	जलंधर	१२२५

32
१६

३० भादरों	शहिनशाही सम्मत २	महिल सिंघ दे गृह		संगतपुरा	जलंधर	१२२८
३० भादरों	शहिनशाही सम्मत २	साधू सिंघ दे गृह		संगत पुरा	जलंधर	१२२६
पहली अस्सू	शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१२३१
२ अस्सू	शहिनशाही सम्मत २	हरि भगत दवार		जेठूवाल	अमृतसर	१२३६
३ अस्सू	शहिनशाही सम्मत २	राम धाम मंदर		अमृतसर शहर		१२३६
३ अस्सू	शहिनशाही सम्मत २	गऊ हत्या दे नवित समेलन स्वामी गंगेशवर				
				दुरज्ञाना मंदर	अमृतसर	१२४१

33
१६

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

७ मग्घर शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर धीर पुर दिल्ली-६

मग्घर कहे प्रभ दा वेखदा रिहा अदल, सचखण्ड निवासी जुग जुग हुक्म वरताईआ। नित नवित खेल करदा रिहा बदल, बदला चुकावे थाउँ थाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बर कट के गए मंज़ल, मंज़ल चढ़ के पन्ध मुकाईआ। भगत भगवान इक दूजे दी करदे वेखे कदर, कादर कुदरत रंग वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो कोटां विच्चों थोड़यां दी पूरी होई सधर, सदमे विच सर्ब लोकाईआ। मन विकारा पंच परपंच प्या ग़दर, सांतक सति ना कोए वरताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कोई ना लग्गा परमेश्वर मगर, दृष्ट इष्ट इक ना कोए मनाईआ। कूड़ कुड़यारा जाम प्याला पी के बेसबर, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। लख चुरासी वेखी मढ़ी गोर कबर, काअब्यां विच दुहाईआ। दो जहान मेहर करे ना कोए नज़र, नज़रीआ सके ना कोए बदलाईआ। सम्मत शहिनशाही बदल के मेरी आई फज़ल, फाज़ल आपणा भेव चुकाईआ। जिस ने ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल शब्दी कंडे कीता वज़न, वज़ा सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वरताईआ। मग्घर कहे मैं सचखण्ड दवारे हो के मौजूद, खेल तक्कया बेपरवाहीआ। जिस दी मंज़ल इक मकसूद, महबूब बेपरवाहीआ। चौदां लोक चौदां तबक समझ ना सके हदूद, हक हकीकत ना कोए दृढ़ाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अर्श कुर्श तों उपर जिस दा अरूज, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा ना कोई तत ना कलबूत, कलमा कलमयां वाली ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई तहिरीर ना लिख्त हरूफ़, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नित नवित जन भगतां अन्तर आत्म परमात्म हो मसरूफ़, मुसलसल आपणी कार कमाईआ। जिस दा हुक्म फ़रमान संदेश करे ना कोए मौकूफ़, फ़िकरयां विच ना कोए उडाईआ। मग्घर कहे ओस ने सृष्टी दी दृष्टी कीती बेवकूफ़, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। जिसदा गुर अवतार

पैगम्बर शब्दी धार देण सबूत, वाक् भविख्तां विच दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म गावे ना कोई सलोक, अक्खरां वाली सिफ्ती जगत पढ़ाईआ। निर्मल निरवैर नूर तक्के ना कोई जोत, सच सच ना कोए समाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कढ्ढे कोई ना खोट, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान कर कर थक्के पढ़ाईआ। हरि का भाणा सके ना कोई रोक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जुग चौकड़ी नाम संदेशे दे के गए कोटन कोटि, कोटी कोट ढोले गाईआ। कोई मिटा ना सक्या हरख़ सोग, चिन्ता ग़म ना कोए चुकाईआ। सति धर्म दा मिल्या ना किसे जोग, जुगीशर जुगत ना कोए धराईआ। हउमे हंगता माया ममता ना मिटया रोग, मन का मणका ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक वखाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल, निरगुण सरगुण रंग वखाईआ। बिन भगतां साचा होया किसे ना मेल, मिलणी जगदीश ना कोए कराईआ। बिन तेल बाती सति प्रकाश ना होया रंग नवेल, गृह मन्दिर अंदर ना कोए रुशनाईआ। इक्को रंग ना वेख्या गुरू चेल, चेला गुर रंग ना कोए वटाईआ। अन्त अख़ीरी सृष्टी होई फ़ेल, मज़मून हक ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आपणे हथ्थ वखाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या लेखा जगत जहां, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए बिआं, ब्याना आपणा नाम धराईआ। धुर दा ढोला रागां नादां विच गए सुणा, अनबोलत अक्खरां विच वड्याईआ। शब्द इशारयां विच कर के गए हां, हउमे ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। मग्घर कहे मैं वेंहदा रिहा परदयां अंदर लुक, नित नित आपणा वेस वटाईआ। साल बसाले पैंडे गए मुक, जुग चौकड़ी गई विहाईआ। सतिजुग सति सतिवादी प्या उठ, सच दवारे लई अंगड़ाईआ। पुरख अकाल धुर दा मालक गया तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। हुक्म संदेसा दे के सच सुच, सति दिता दृढ़ाईआ। जा के वेख भगत सुहेले अगम्मी सुत, जिन्हां दा पुरख अकाल इक्को पिता इक्को माईआ। बाहरों पंजां तत्तां वाले ख़ाकी बुत्त, अंदर वस्या बेपरवाहीआ। जगत विवहार वल्लों कोल नहीं कुछ, भगत भण्डार वलों भण्डारा बेपरवाहीआ। गोबिन्द कोलों जा के पुछ, जो संदेसा सच जणाईआ। जेहड़े ओस तों गए घुस, चार जुग ना कोए मिलाईआ। जिस दा भाणा कदे ना सके रुक, दो जहान ना कोए मिटाईआ। ओस दी सब तों वखरी निराली शब्द अगम्मी तुक, जो तुख्म ताअसीर दए बदलाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां देवे ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। जिस दा नूर नुराना अगम्मी जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ।

जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई कर ना सक्या सोच, अनुभव भेव ना कोए खुलाईआ। उस दी भगतां अंदर मौज, मौजूदा हो के मजलस रिहा वखाईआ। जो मालक हो के करे धुर संजोग, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा मुका के चौदां लोक, चरण कँवल दए सरनाईआ। मग्घर कहे मैनूं तक्क के आ गई होश, आपणा आप ल्या बदलाईआ। जो नव नौ चार बैठा रिहा ख़ामोश, अक्खरां वाली ना करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। मग्घर कहे मैं तक्कया निर्मल धार, निरवैर निराकार निरँकार नज़री आईआ। जिस दा सब तों वखरा विहार, विवहारी नूर खुदाईआ। जिस ने सूलीआं उत्ते दिते चाढ़, सूफ़ीआं सुरत भुलाईआ। सो भगतां दए दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द करे गुफ़तार, निरअक्खर नाल समझाईआ। मंज़ल चढ़ के सच मीनार,
३
१६
सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जिस दा कागज़ कलम शाही पाए ना पारावार, अन्त अन्त ना कोए जणाईआ। सो प्रीतम जन भगतां वसे ठांडे दरबार, दर दवारा इक सुहाईआ। घर ताकी खोल्ह किवाड़, परदा दए चुकाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेले आण, आप आपणे रंग रंगाईआ। माया ममता मोह मिटा निशान, शरअ दे बन्धन दए कटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दे के इक्को सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। साचे मन्दिर मिला के श्री भगवान, भगवन आपणा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दाता दया कमाईआ। मग्घर कहे मैं आ गया जग, जग जीवन दाते दिती वड्याईआ। मक्के काअबे वेखे हज्ज, धुर दा हज़रत ना कोए मनाईआ। फिर फिर वेखे तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवण मन्दिर मठ्ठ, गुरुदुआर देण दुहाईआ। मिले मेल ना पुरख समरथ, सच नूर ना कोए रुशनाईआ। निज नेत्र खोल्हे कोए ना अक्ख, परदा दूई ना कोए चुकाईआ। अनहद नाद ना वज्जे सट्ट, तूं ही तूं ही ना राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा दिता उठाईआ। मग्घर कहे मेरा लथ्था परदा, निरगुण हो के दयां जणाईआ। प्रभू ने खेल वखाया घर घर दा, लख चुरासी अंदर फराईआ। बिन भगतां साची मंज़ल वेख्या कोए ना चढ़दा, नरउ दरस कोए ना पाईआ। साध सन्त वेख्या सड़दा, त्रैगुण अग्नी रही तपाईआ। बिन गुरमुखां भाणा कोए ना जरदा, ज़रा ज़रा भेंट ना कोए कराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी खेल आपणा वक्खरा करदा, कदर भगतां रिहा पाईआ। चारों कुण्ट फिरे लभ्भदा, निरगुण वेखे थाउँ थाँईंआ। मैं नज़ारा वेख्या झब दा, पहली मग्घर रिहा दृढ़ाईआ। भगत भगवान इक्को सेजा साची सजदा, जित्थे सयदे दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत नेत्रां लभ्भयां किसे ना लभ्भदा, खोजां विच सर्ब लोकाईआ। जो सति दवारे अन्तर बह के फबदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। उसदा खेल अगम्मी नूरी

पुरख समरथ दा, समरथया आपणे हथ्थ रखाईआ। जो जुग जुग लेखा जाणे जगत रथ दा, रथवाही हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार सरनाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या हज़ूर, हाजर हो के ध्यान लगाईआ। जो जन भगतां दा बण मज़दूर, दिवस रैण सेव कमाईआ। प्रेम प्रीती अंदर हो मजबूर, मजबूरी भगतां रिहा कटाईआ। जुग जन्म दे बख्श के आप कसूर, कसर आपणी झोली पाईआ। माया ममता तोड़ के गढ़ ग़रूर, गुरबत रिहा मिटाईआ। आपणे प्रेम दा दे के नूर, सच नूर रिहा चमकाईआ। जुग चौकड़ी दा बदल के आप दस्तूर, दस्त बदस्त रिहा मिलाईआ। जगत कामना मेट के वांग काफ़ूर, कुफल दा लेखा दिता मुकाईआ। नाम खुमारी दे सरूर, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मग्घर कहे मैं वेख्या मीता, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जो भगतां अंदर खेल करे अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जिस दी सिफ्त करे अठारां ध्याए गीता, शब्द शब्दां नाल सालाहीआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर मन्नण नीकन नीका, निरवैर नज़र ना आईआ। सो भगत उधारन दा जग नवां बदल तरीका, तरां तरां रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता कार कमाईआ। मग्घर कहे मैं होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। किस बिध होया प्रभू मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। भगत सुहेले मेले आण, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। बिन पढ़यां दे के ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दिता मिटाईआ। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, बहुत्यां विच्चों थोड़े आपणी गोद उठाईआ। इक्को दे के सच निशान, निशाने कूड़े दिते भुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां नूं करना पए परवान, परवाना अवर ना कोए वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो जन भगतां दा बणया आप महिमान, भगत दवारे फेरा पाईआ। गुरमुखां दी आत्म सेजा करे आराम, दूजे सुख दी लोड़ रहे ना राईआ। प्रीती अंदर बण बण गुलाम, सेवक हो के सेव कमाईआ। भगतां दा आपणी झोली पाया एहसान, असल आपणा रंग वखाईआ। बिन पूजा पाठ तों कर कल्याण, कलमयां तों बाहर दिता कढाहीआ। योद्धे सूर बणा बलवान, कलयुग कूड़ा चरणां हेठ दिता दबाईआ। लख चुरासी चुका के काण, आवण जावण पैंडा दिता मुकाईआ। सच दवारे मेले आण, दर दरबारा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। मग्घर कहे मैं बोलणा सच जैकारा, सच दयां जणाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी देंदा आया लारा, इशारयां नाल इशारे आया समझाईआ। जिस दा लेखा अगम्म अपारा, अलख अगोचर ना कोए समझाईआ। जिस दा भाणा मन्न गुरू अवतारा, पैगम्बर गए सीस झुकाईआ। सो करन आया विहारा विवहारी वेस वटाईआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग

ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगत सुहाए इक दवारा, मन्दिर इक्को इक वखाईआ। जित्थे दिवस रैण दीआ दीपक इक्को उज्यारा, तेल बाती ना कोए वखाईआ। नाद शब्द धुन सच्ची धुन्कारा, अनुरागी राग अलाईआ। जिस दा खेल सब तों वक्खरा न्यारा, नर निरँकारा हो के आप कराईआ। सो सुहावणहारा जमन किनारा, जामन हो के वेख वखाईआ। दवारका निवासी तेरा उधारा, दोहरी वार दिती वड्याईआ। साचयां भगतां दे सहारा, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। जिन्नां दा लेखा इक तों दो दो तों चारा, चौकड़ दए गवाहीआ। जिन्नां ने सीस चुकणा इट्टां गारा, गहर गम्भीर विच समाईआ। अगले जन्म दा लेखा रिहा ना कोए संसारा, संसारीआं विच्चों बाहर कढाहीआ। हरि संगत तेरा रूप अपारा, अपरम्पर वेख वखाईआ। निक्के वड्डे दा इक्को जिहा विहारा, विवहारी आपणी कार कमाईआ। गुरमुखो तुहाडी सेवा लख करोड़ी ना गिणती विच हज़ारां, कीमतां वाला कीमत सके ना कोए जणाईआ। जित्थे झुकणा जगत सरकारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी सब नूं दए वखाईआ। मग्घर कहे मैं दोए जोड़ करां नमस्ते, निमस्कार डण्डावत विच बदलाईआ। जन भगतो तुसीं सेवा कीती हस्सदे हस्सदे, हस्ती आपणी लई बदलाईआ। तुहाडे घराणे रहिणे वसदे, अन्तिम उजड़े सर्ब लोकाईआ। शाह सुल्तान वेखणे नस्सदे, राजे राणे पिठ्ठ भवाईआ। इशारयां नाल इक दूजे नूं सारे दस्सदे, उंगलां उपर उठाईआ। बिना श्री भगवान कोए ना बचदे, बच्चयां वाले सर्ब कुरलाईआ। एह खेल उस अगम्मी इशारे अक्ख दे, जिस दी पलक ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवणहार वड्याईआ। मग्घर कहे मैनूं आई हासी, हस्स हस्स दयां सुणाईआ। जन भगतो तुहाडी कटी गई जम फाँसी, जमां दा भय ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण नूर मिल्या इक्को साथी, धुर दा संगी नज़री आईआ। लहिणा रिहा कोई ना बाकी, जो खुशीआं नाल सेव कमाईआ। जिस दवारे उत्ते आ के कोट तरने पापी, उस दी नींह भगतां कोलों रखाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करके आसी, तृष्ना दिती बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो तुहाडी सेवा दिवस रात, रैण दए गवाहीआ। चौवी घंटे कर इतफ़ाक, ढोला इक्को रहे सुणाईआ। सठ्ठ घड़ीआं बोल के वाक्, वाक्य आपणा रिहा दृढ़ाईआ। अठ्ठ पहर हो के दास, नेत्र नैण निवाईआ। अक्ख खोल्ह पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रहे सुणाईआ। वाहवा तेरी प्रीती पुरख अबिनाश, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आईआ। जेहड़े उठ वेले प्रभात, तेरी सेवा सच कमाईआ। पता नहीं किथों सिक्खी इन्नां ने जाच, कवण गया दृढ़ाईआ। अंदरों बाहरों हो गया पाक, पुनीत हो के खुशी वरताईआ। प्रेम प्यार दा वज्जदा रहे रबाब,

तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। कबीर फ़रीद करदे रहे हिसाब, बत्ती दिन बत्ती दन्दां वाला लेखा नाल जणाईआ। अन्त ओह वी दे के जुआब, सत्त मग्घर रहे जणाईआ। पता नहीं प्रभू तूं किवें इन्हां दे अंदर वसिउँ आप, जो आपा गए मिटाईआ। साचे प्रेम प्यार दा कर इतफ़ाक,वड्डे छोटे बाले नढ्ढे मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दिती वड्याईआ। श्री भगवान कहे सुण मग्घर बाले नढ्ढे, तैनूं दयां जणाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छो मैं आपणी जोती धारों कढ्ढे, मैं आपणे तत्तां नाल करी कुड़माईआ। जिन्हां नाल सच दवारे मिल के करां लड्डे, लाड उन्हां रिहा लडाईआ। जिन्हां दे अंदर धर्म निशाने गड्डे, सच सच दिता समझाईआ। जगत तृष्ना बुझा के अग्गे, आज्ञा आपणी विच रखाईआ। प्रेम प्रीती विच दे के मजे, कूड़ा मज़ा दिता मिटाईआ। उह नेत्र दर्शन कर कर रज्जे, अंदर भुक्ख रही ना राईआ। आपे फिरन भज्जे, अंदर बाहर वाहो दाहीआ। जिन्हां दे प्रीतम (ने) उन्हां नाल नहीं करने दग़े, कूड़ा याराना ना कोए रखाईआ। एथे ओथे आपणी गोदी चुक्के, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। सच दवारे जा के रखे, जित्थे वेखणवाला माई बाप भाई भैण नज़र कोए ना आईआ। सच प्रीती अंदर नस्से, शब्दी राग सुणाईआ। चरण कँवल कर के इक्ट्ठे, इक्को ढोला दए सुणाईआ। जन भगतो तुसीं आए मेरे प्रेम दे वट्टे, बदला लैणा चुकाईआ। भावें तुहाडे बाहरों चीथड़ फटे, अगे फट्टयां दा खैहड़ा दिता छुडाईआ। जे धन्ने नूं मिल्या विच्चों वट्टे, पत्थरां सोभा पाईआ। तुहानूं प्राप्त उस विच्चों मिट्टी घट्टे, जिस दा घाटा आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। मग्घर कहे सुणो सुनेहड़ा गुरमुख सज्जण, सच दयां सुणाईआ। हरि भगवान तुहानूं आया लभ्भण, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां आया सद्दण, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। सच दवारे आया रखण, जित्थे रक्ख्या करे चाँईं चाँईंआ। तुहाडे अंदर वड़ के आया वसण, वास्ता अन्तर अन्तर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल समझाईआ। मग्घर कहे एह खेल अनोखा, आकलां बेअकल कराईआ। सिध्धा सृष्टी नाल धोखा, गुरमुखां मिले वड्याईआ। जेहड़ा सच दवारे पहुंचा, पंजां तों लए बचाईआ। अन्तिम लैणा पए ना हउका, जमां तों ल्या छुडाईआ। सच प्रेम दी ला के चोटा, चोटी ते लए चढ़ाईआ। दर दवारे रहिण ना देवे कोई खोटा, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार शरन शरनाईआ। मग्घर कहे मैं शरन वेखे लगदे, जो लग मातर गए भुलाईआ। सच दवारे वेखे वधदे, भज्जण चाँईं चाँईंआ। नाते तोड़ के कूड़े जग दे, जग जीवन दाता वेख खुशी मनाईआ। निज नेत्र दर्शन कर कर रज्जदे, रजो तमो सतो दा लेखा गए मुकाईआ। भांबड़ बुज्झ गए कूड़ी अग्ग दे, माया ममता

दिती जलाईआ। जो भगत सच दवारे वसदे, वसल इक्को यार शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। मग्घर कहे मैं दस्सां अख़ीर, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। जिसदी नज़र ना आए कोई तस्वीर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी बेनज़ीर, नज़र अंदरों दए बदलाईआ। तुहाडा लहिणा देणा वेख कबीर, जुलाहा ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करमां दा लेखा रिहा चुकाईआ। कबीर कहे मैं भुल्ल गया करदा गिणती, अंक अंक बदलाईआ। मैं खेल वेखी सारे दिन दी, भगत दवारे बह के अक्ख खुल्ह्राईआ। सच प्यारी संगत प्रेम प्यार वेखी मिणदी, नाम पैमाने हथ्थ उठाईआ। मैं सिफ्त दस्सां किस किस दी, किस्मत सारे गए बदलाईआ। स्त्री पुरख इक्को रूप दिसदी, अंदरों अक्ख ना कोए भुआईआ। मैं सिफ्त करां जिस दी, उह मैनूं अग्गों सुणाईआ। सानूं लोड़ नहीं वड्याई वाली हिरस दी, हरस हवस गए मिटाईआ। सानूं लोड़ ओसे दे द्रृष्य दी, जिस दृष्टी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कबीर कहे मैनूं भुल्ल गया तणना बुणना, पहली कहाणी दयां बदलाईआ। मैं चाहुन्दा इक्को ढोला सुणना, जो गुरमुख कहे गाईआ। जित्थे फेर किसे नहीं बोलणा, सोहँ रूप समाईआ। उस दा तोल किसे की तोलणा, जो आपणा आप गए मिटाईआ। उथ्थे घोल किसे घुलणा, जो घोली घोल घुमा के आपणा आप भेंटा गए कराईआ। उथ्थे दवारा किसे की खोल्हणा, जित्थे धुर दरबारी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार ख़ुशी मनाईआ। कबीर कहे मेरा बदल गया शरीर, नाता तन नज़र ना आईआ। मैं चढ़ के चोटी अख़ीर, भगतां वेख वखाईआ। मैनूं नज़री आई इक तस्वीर, जिस नूं तसव्वर ना कोए कराईआ। उथ्थे मैं कोए ना तक्कया ग़रीब अमीर, गुरमुख इक्को रंग सोभा पाईआ। ना कोई तक्की दौलत धन जगीर, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। ना कोई गुर अवतार तक्कया पैगम्बर पीर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को करवट आपणी रिहा बदलाईआ। कबीर कहे मैं वेख्या बदलदा करवट, करामात ना कोए जणाईआ। जिस दे पिच्छे सृष्टी रही भरमत, भरमां विच लोकाईआ। उह कूड़ कुड़यारी जगत जहान वखा के अज़मत, आज़म रिहा हिलाईआ। जन भगतां दी बदल के अंदरों किस्मत, ज़िसम ज़मीर दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे नाल रखाईआ। मग्घर कहे मैं वेख दुआर दिल्ली, दिलां नूं खोज खुजाईआ। अर्श कुर्श दी जड़ हिल्ली, हलूणा दिता लगाईआ। मेरी ख़ुशी विच आण के हासी निकली खिल्ली, वेखी खली ख़लक ख़ुदाईआ। सारे दरबार विच तक्क इक सौ ग्यारां इट्ट लग्गी पिल्ली, इक इक्क दी

गिणती सच दिती जणाईआ। सब दी कमर कमरकसयां वाली होणी ढिल्ली, कमान अफ़सरां देणी सुटाईआ। बिलयां दे मगर मौत वैरागण लाउणी बिल्ली, लहिंदी दिशा खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दी ला के सिली, सिलसिला अगला दए बदलाईआ।

✪ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर धीरपुर दिल्ली-६ ✪

पंदरां मग्घर कहे मेरी नमस्ते पुरख अबिनाश, श्री भगवान तेरी शरनाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा वसें भगतां पास, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म विछड़यां पूरी करें आस, नित नवित वेखें थाउँ थाँईंआ। निरगुण निरवैर हो के देवें साथ, धुर दा संग बणाईआ। प्रेमीआं प्यारयां देवे शाबास, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां कारज करें ख़ास, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। मानस जन्म कर के रास, लख चुरासी फंद कटाईआ। चरण दवारे दे निवास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। पंदरां मग्घर कहे वाह मेरे भगवन्त, तेरी बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म साचे कन्त, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। मेल मिला के भगत सुहेले धुर दे सन्त, सच सति आपणा आप दृढ़ाईआ। नाम निधाना दे के मंत, सच मंत्र नाम दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेट गढ़ तोड़ हउमे हंगत, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नाता तोड़ बहिश्त जंनत, सचखण्ड दवारा बख़्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक सुहाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं होया खुशहाल, गीत अगम्मी ढोला गाईआ। खेल वेख्या दीन दयाल, श्री भगवान रिहा दृढ़ाईआ। हस्सदे वेखे (दो जहान), ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच तराना इक्को गाण, तूं ही तूं ही इक्को राग अल्हाईआ। भविख्तां वाला वेखणा ब्यान, बिना काग़ज़ किताब फोल फुलाईआ। संदेसा सुण अगम्मी फ़रमान, निउँ निउँ अक्ख उठाईआ। वक्त सुहञ्जणा होया विच जहान, सोहणी वज्जी वधाईआ। भगत भगवान मेला मिल्या आण, अंदर बाहर खुशी मनाईआ। भगत सुहेला रिहा ना कोए निधान, निज नेत्र करे रुशनाईआ। साचे नाम दा दे के ज्ञान, राम इक्को दिता वखाईआ। धुर दा मालक दस्स के काहन, बंसरी इक्को धुन सुणाईआ। पैगम्बरां वाला दे पैग़ाम, बिन अक्खरां करी पढ़ाईआ। सच दवारा वखा के धाम, धर्म दुआर वज्जी वधाईआ। मस्त खुमारी प्या के जाम, ज़ामन हो के होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं देवां सच फ़रमान, फ़ुरने विच्चों फ़ुरना इक जणाईआ।

जन भगतां सेवा सच महान, महिमा कथ कथ दृढ़ाईआ। प्रेम प्यार दा सच्चा ध्यान, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। ढोला गा के विष्नूं भगवान, सोहँ सो विच समाईआ। जगत कूड़ा छड्ड आराम, आत्म सुख वज्जे वधाईआ। मन वासना ना होए गुलाम, जगत ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। जलवा तक्क के इक अमाम, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं वेखे भगत सुहेले मीत मुरार, सज्जण धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां दा सब तों वक्खरा विवहार, विवहारी हो के सेव कमाईआ। खेल तक्क इक तों दो दो तों चार, चार कुण्ट गए भुलाईआ। दर्शन कर के दीद दीदार, दर्द आपणा गए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा चुकाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं वेखी अजब कहाणी, लेखा लिख्त ना कोए समझाईआ। जन भगतां अंदर सुणी अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। प्रेम प्यार दा चुक्क के पाणी, भज्जण वाहो दाहीआ। अचरज खेल वेख गुर अवतार पैगम्बर होए हैरानी, हैरत सब दे अंदर आईआ। नव जोबन नव जुग नव रंग दी वेख जुआनी, जोबनमत्ते खुशी मनाईआ। अंदर तक के नूर नुरानी लहर रुहानी, ज़िमीं असमान सीस झुकाईआ। नज़ारा तक्क के पद निरबानी, झगड़ा छड्ड के चारे बाणी, चारे खाणी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग वखाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं वेख के भगत दवार, दवारका वासी दयां वधाईआ। उठ वेख कृष्न मुरार, मुरारी मोहर रिहा लगाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी कार, करनी करता इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, अपरम्पर वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लए उबार, नित नवित जोड़ जुड़ाईआ। अंदर बाहर पावे सार, गुप्त ज़ाहर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। पंदरां मग्घर कहे मेरा अन्त अख़ीरी शब्दी बोल, संदेसा दयां जणाईआ। जन भगतो प्रभू वसे सदा तुहाडे कोल, परमात्म आत्म अन्तिम मिल के खुशी मनाईआ। जगत वड्याई उपर धौल, सचखण्ड दवारे साचा रंग वखाईआ। पूरब जन्म दा पूरा कर के कौल, करमां दा लहिणा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पंदरां मग्घर कहे मैं कहां सच अख़ीर, आख़र दयां जणाईआ। प्रभू दे हथ्थ भगतां दी तकदीर, जदों चाहे देवे बदलाईआ। अंदर रख आपणी तस्वीर, तसबीआं मणकयां तों दए छुडाईआ। सच दवारा वखा के इक अमृत जाम प्याए सीर, सुरत शब्द जोड़ जुड़ाईआ। जिस गृह वसे भगत कबीर, काअबा ओदूं अगला दए वखाईआ। जित्थे खेल बेनज़ीर, नजर निशान ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को दए वड्याईआ। पंदरां मग्घर कहे जगत भगत सज्जण साची कार, पारब्रह्म आप कमाईआ।

सच करे सति आप करे सति सतिवाद विवहार, वेला वक्त दए गवाहीआ। लेखा जाण दिल्ली दरबार, दुआर भगतां इक सुहाईआ। सेवकां सेवा वेख अपार, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। मंजल रहिण ना देवे कोए दुष्वार, मार्ग इक्को दए वखाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन दस्से सच प्यार, ज़ात पात दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग भगतां भगत दवारे विच रखाईआ।

✪ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

मग्घर कहे मैं धार वेखी धुर दी, सचखण्ड दुआर वज्जी वधाईआ। ओथे लोड़ नहीं ताल सुर दी, तम्बूर तार सतार ना कोए खिचाईआ। ओथे खेल नहीं अवतार गुर दी, पैगम्बर रूप ना कोए वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार धार इक्को उतरदी, शब्दी शब्द खेल खिलाईआ। प्रीती प्रीतम नाल जुड़दी, दूजा संग ना कोए वखाईआ। ओथे लोड़ नहीं* कोई शुकर दी, शाह पातशाह इक्को शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी पता नहीं किस तऱ्हां गुज़रदी, कोटन कोटि काल विहाईआ।
१० १६ एथे ओथे खेल नहीं किसे उजर दी, इक्को हुक्म बेपरवाहीआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द कोई कथा नहीं उच्चरदी, ढोला नाद गीत संगीत ना कोई समझाईआ। वेखी खेल कादर कुदर दी, जो कुदरत रिहा बणाईआ। कोई रमज़ नहीं ओहले पड़दे वाली लुकण दी, इक्को जोत नूर करे रुशनाईआ। कोई धार नहीं लंमी चौड़ी मुक्कण दी, मुकम्मल आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मग्घर कहे मैं वेख्या हज़रत हज़ूर, हाजर इक्को नज़री आईआ। जलवा तक्कया जोती नूर, नूर नूर नूर रुशनाईआ। सर्ब कला भरपूर, भरतम्बर बेपरवाहीआ। ओथे ना बरदा गुलाम कोई मज़दूर, सेवक रूप रंग ना कोई वटाईआ। ना कोई सच झूठ कुसूर, रूप रेख ना कोए बदलाईआ। ना कोई सूली चढ़दा दिसे मनसूर, फाँसी यसू ना कोई लटकाईआ। ना कोई नानक गोबिन्द हुन्दा दिसे मजबूर, ना कोई मुहम्मद चौदां तबक वड्याईआ। ना कोई चोटी दिसे कोहतूर, मूसा मूँह दे भार ना कोई सुटाईआ। इक इकल्ला वेख्या जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा मशहूर, मुश्कल सब दी हल कराईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निराकार खेल करे ज़रूर, सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। मग्घर कहे मैं वेख्या

सूरा सरबंगा, सर्ब दवारे सोभा पाईआ। जित्थे ना कोई तीर्थ तट, किनार गंगा, सरोवर सर ना कोई वखाईआ। राग नाद ना कोई ढोल मृदंगा, पूजा पाठ ना कोई समझाईआ। रवि ससि ना सूरया चन्दा, मण्डल मण्डप ना कोए प्रगटाईआ। प्रेम प्यार रस ना कोई अनन्दा, अनरस आपणा रूप वटाईआ। मीत मुरार सज्जण ना कोई संगा, सगला जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। पंज तत ख़ाकी तन ना कोई बन्दा, बन्दगी वाली ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई पंडा, अकलां वाली ना कोई लड़ाईआ। ढोल ताल ना कोई मृदंगा, सुरती सुरत ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे इक्को नज़री आईआ। मग्घर कहे मैं तक्कया हक निज़ाम, जो नौबत नाम वजाईआ। भगत उधारन जिस दा काम, जगत कामनी दए दुरकाईआ। कूड़ी क्रिया दिसे अन्धेरी शाम, शमां आपणी करे रुशनाईआ। धुर संदेसा देवे सच पैग़ाम, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। जिस नूं एथे ओथे दो जहान (गाण), इस्म आजम नूर खुदाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक नौजवान, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दी करे ना कोई पहचान, रूप रंग रेख ना कोए दृढ़ाईआ। सो भगतां दा भगवान हो के मेहरवान, वेस अवल्लड़ा इक इकल्ला रूप वटाईआ। सन्त सुहेले वेखे आण, गुर चेले देवे माण, गुरमुख कर परवान, गुरसिख वेखे आण, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सारे झुकदे वेखे ब्रह्मा शिव विष्न ढोला तूंही तूंही गाण, गहर गम्भीर बेनज़ीर दे रुशनाईआ। ओह नाउँ रख के महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म मीता बणया आण, आन आपणी विच रखाईआ। मग्घर कहे मगरले कर परवान, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। जिस दा सब तों वखरा शब्दी इक दीवान, दीवानखानयां करे सफ़ाईआ। धर रूप जगत भेख इन्सान, ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। रहमत विच रहमान, मुहब्बत विच महबूब अर्श अरूज सोभा पाईआ। जन भगतां देवण आया दान, दाता दानी धुर दा काहन, माया ममता हंगता तोड़ अभिमान, कमान आपणी विच रखाईआ।

११
१६

✪ पहली पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

पहली पोह कहे खेल होणा पिता पुत्त दा, पुरख अकाल गोबिन्द शब्द डंक वजाईआ। खेल वेखणा अबिनाशी अचुत दा, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। परदा ओहला चुक्कणा लुक दा, नकाब नज़र कोए ना आईआ। शब्द अगम्मी वेखणा उठदा, जिस दा पिता ना कोई माईआ। निरगुण धार वेखणा बुक्कदा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया

पैंडा वेख्या मुकदा, अगे अवर ना कोए वधाईआ। कूड़ी क्रिया वेखणा कुटदा, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। माया ममता वेखणा लुट्ट दा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। भगतां भगवान वेखणा पुछदा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कोई भेव ना जाणे उसदा, उसतत गुर अवतार पैगम्बर गए सुणाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा माया ममता दुःख दा, दर्दीआं होए सहाईआ। जिस दा निशाना अणयाला तीर कदे ना उकदा, उत्तम सृेष्ट आपणा बाण वखाईआ। झगड़ा मुकावे हउमे भुक्ख दा, नाम भण्डार इक वरताईआ। भाग वेखे धरनी दी कुक्ख दा, हरि करता शहिनशाहीआ। सन्त सुहेले गोदी चुकदा, फड़ बाहों गले लगाईआ। जिस दा लहिणा ना कदे नखुट्टदा, वेखणहार धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। पहली पोह कहे मैं वेख्या हकीकत हज्ज, हज़रतां दयां सुणाईआ। जुग चौकड़ी पैंडा मुक्कया भज्ज भज्ज, पाँधी नज़र कोए ना आईआ। साचे तख्त तख्त निवासी बैठा सज, सज्जण दाता धुर दरगाहीआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना लभ्भी हद्द, पार किनारा ना कोए दृढ़ाईआ। जिस नूं रागां नादां अंदर सीस झुका के रहे सद्द, सद्दे ढोले नाम सुणाईआ। जिस दे चरणां उत्ते सरगुण निरगुण धार रहे ढठ्ठ, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जिस दा सचखण्ड दवारा धुर दा हट्ट, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल इक समरथ, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत सुहेले वेखणे सच, सच सति नाल जुड़ाईआ। आत्म अन्तर जाणा रच, रुची अंदरों देणी बदलाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, काया कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मिल के पए हस्स, हस्ती वजूद ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। पहली पोह कहे मैं वेखणा अन्त अखीर, आखर दयां जणाईआ। धुर दरगाही तक्कणा इक पीर, पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। जिस दा नूर नुराना बेनज़ीर, जगत नेत्र ना कोए रुशनाईआ। खिच्ची जाए ना कोए तस्वीर, मुसव्वर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दा गृह मन्दिर गहर गम्भीर, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस नूं समझे ना कोए ज़मीर, बुद्धी शब्द ना कोए सुणाईआ। जिस नूं सजदा करदा गया कबीर, तन माटी ख़ाक मिलाईआ। सो कर के अगम्मी तदबीर, तबअ सब दी रिहा बदलाईआ। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, शरीअत इक्को रिहा दरसाईआ। झगड़ा चुक्के शाह हकीर, ऊँच नीच बख्शणहार सरनाईआ। लेखा जाणे सूफ़ी जगत फ़कीर, फ़िकरा कलमा इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। पहली पोह कहे मैं तक्कणा आलमीन, बिस्मिल आपणी खेल कराइंदा। जिस दा मुहम्मद गोबिन्द नालों बहुता कीता यकीन, यक्के बाद दीगरे धार चलाइंदा। जिस दी

समझे ना कोए तरमीम, वण्डण वण्ड ना कोए वखाइंदा। जिस दा मार्ग दो जहान महीन, जग नेत्र नज़र ना आइंदा। जिस दी सब तों वखरी तालीम, अलिफ़ ये ना कोए वखाइंदा। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर मस्कीन, हुक्मे अंदर हुक्म फिराइंदा। शब्दी करनहार तलकीन, तुलबा तालब आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। पहली पोह कहे मैं बोलणा ललकार, धुर दा जैकारा इक सुणाईआ। कल कल्की निरगुण धर आया अवतार, अवतरी बेपरवाहीआ। जो लख चुरासी वेखे जगत शिकार, शिकारी हो के फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी लए उठाल, हुक्मे हुक्म मनाईआ। उठो वेखो पूरब हाल, चारे जुग देण गवाहीआ। चार वरन होवण बेहाल, अठारां बरन ना कोए वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, अञ्जील कुरान रही कुरलाईआ। हकीकत समझे ना कोए हक हलाल, हालत बदली अन्त लोकाईआ। अगे दिसे ना कोए दलाल, पल्लू सारे गए छुडाईआ। जलवा तक्कया ना नूर जलाल, नूरो नूर ना कोए रुशनाईआ। पल्लू सक्या ना कोए संभाल, कन्नी गंढु ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। पहली पोह कहे मैं वेखणा अंदर वड़, लख चुरासी खोज खुजाईआ। बिन पौड़ी डण्डे जाणा चढ़, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। सच दवारे वेखणा खड़, सच सिंघासण सोभा पाईआ। जीव जंत साध सन्त कवण करनी रिहा कर, वेखणा थाउँ थाँईंआ। कवण जीवत रिहा मर, मन वासना रिहा मिटाईआ। कवण निरअक्खर रिहा पढ़, जिस नूं लिखे कोए ना कलम शाहीआ। कवण सरन सरनाई रिहा पड़, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर गए ध्याईआ। कवण खुल्ाउणा साचा दर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे रवि ससि कोई प्रकाश रिहा ना कर, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर आया चल, निहचल आपणा धाम सुहाईआ। जिस दा समझ सके ना कोई बल, वल छल धारी आपणी खेल वखाईआ। जिस दा कोटन कोटि युग बीतयां इक ना होवे पल, कोटन कोटि ब्रह्मा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पहली पोह कहे मैं देणा होका, हुक्म इक सुणाईआ। ख़बर सुणोणी चौदां लोका, लुकमा होणा जगत लोकाईआ। कोटां विच्चों पुरख अकाल दा बचणा इक्को पोता, जो गोबिन्द सुत गया बणाईआ। जो आयू उतर विच छोटा, दसवां साल हरि संगत उत्ते नज़री आईआ। जिन्हां विच रहिणा कोई ना खोटा, खोटयां खरे लैणा बणाईआ। कोई पढ़ावण वाला देणा नहीं तोता, तूं मैं लहिणा देणा मुकाईआ। मेहर नज़र नाल काया माटी अंदर फेर के पोचा, दुरमति मैल देणी धवाईआ। अग्गे पिच्छे दी रहिण नहीं देणी सोचा, लख चुरासी लेखा देणा मुकाईआ। गुरमुख लेखा देवे ना कोए निर्दोषा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। पहली पोह कहे मैं वेख्या लेखा लिखदा, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। नाता जोड़ के गोबिन्द गुरसिख दा, साख्यात होया सहाईआ। बिन भगतां किसे ना दिसदा, भरमे विच लोकाईआ। लहिणा देवे जिस जिस दा, जिस्म ज़मीर दोवें आपणे लेखे लाईआ। एह मौका नहीं किसे मुन रिख दा, मुकम्मल आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा चुकणा करवट वाली पिठ्ठ दा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। पैंडा रिहा ना सवा गिठ्ठ दा, अंदर दी रसाई दी लोड़ इक्को वार पूरी दए कराईआ। जन भगतां कारज आप नजिठदा, निज नेत्र दरस वखाईआ। जिस दा हुक्म सदा जित्त दा, हार विच वेखे सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, (पतित) पुनीत रिहा बणाईआ। पोह कहे मैं तक्कया परवरदिगार, जलवा नूर नूर खुदाईआ। जो आदि जुगादी सांझा यार, याराना इक्को इक दरसाईआ। जिस दा मुकामे हक हकीकत दा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओस दे उत्ते मैनूं इक एतबार, बाकी लारे ला के गए जणाईआ। जिस दे दवारे दर दरवेश मंगदे गए भिखार, अवतार पैगम्बर गुर झोलीआं डाहीआ। सो कुदरत दा कादर होया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। मुरीदां मुर्शद देवे दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। काया काअबा दए वखाल, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी देण अहिवाल, हालांकि ओहो गया आईआ। जिस दे अगे ना जवाब ते ना स्वाल, फ़िकरा सके ना कोए बदलाईआ। जिस दी घालणा गए घाल, घायल कर के फरज़ंद गए कटाईआ। जलवा देवण आया इक जमाल, ज़ामन हो के फेरा पाईआ। जन भगतां अंदर लुके रहिण ना देवे अरमान, आराम नाल सब कुछ दए वखाईआ। सब दी लेखे ला के सेवा निशकाम, जो कर कर खुशी मनाईआ। गुरमुख तेरा प्रेम कदे ना जाए हराम, कूड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भावें लख चुरासी सृष्टी डुब्बे तमाम, भगत सुहेले सचखण्ड दवारे दयां टिकाईआ। एह कोई गल्लां बातां वाली नहीं ज़बान, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। भगत भगवान दा इक ईमान, अमलां तों बाहर दयां समझाईआ। तुहाडयां चरणां हेठ दबा के ज़िमीं असमान, महिमान आपणे लवां बणाईआ। जिस नूं सारे मन्नदे श्री भगवान, ओह नूर तुहाडा नूर करां रुशनाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक हो के दो जहानां पकड़ी आप कमान, हुक्म धुर दा इक समझाईआ। फ़ुरनयां विच दे के फ़रमान, फरमाबरदार लवां उठाईआ। नित नवित वेखां मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जुग जन्म दे प्रभ दे कोल तुहाडे ब्यान, परदयां विच्चों पड़दे दए खुल्हाईआ। सच बाग़ीची दा मालक बाग़बान, बाग़ी करे सर्ब लोकाईआ। चार कुण्ट वेखे इक तुफ़ान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पहली पोह कहे पैं वेख्या नूरी इस्म, आज़म आहला नज़री आईआ। तन वजूद

वेख्या जिस्म, अन्तर अन्तर फेरा पाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी समझ सक्या ना कोए किस्म, किस्मत सब दी रिहा बदलाईआ। जिस दा नाम नगारा इक्को विसल, विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जिस नूं बिना अक्खां तों भगत सुहेले सारे दिसण, लख चुरासी परदा रिहा उठाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो ओस पुरख अकाल दा लाउणा मिशन, मिशनरीआं सारीआं देणीआं तुड़ाईआ। जिस दे कोलों सब ने आउणा सिक्खण, दो जहानां करे अगम्म पढ़ाईआ। जिस दे कोलों सब ने आउणा लिखण, प्रेम हरूफ़ दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पहली पोह कहे मैं बणना वड्डा निक्का, सर्ब दयां जणाईआ। मैं वेखणा पुरख अकाल धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा शब्दी गोबिन्द नाल हिता, प्रेम इक्को इक रखाईआ। जिस दा एथे ओथे दो जहान चले सिक्का, दूजा होर ना कोए वखाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी श्री भगवन्त धुर दा कन्त सच दवारे डिठ्ठा, अनडिठ बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। पहली पोह कहे मैं वेखणी ओस दी पलक, जो पल पल खेल खिलाईआ। जिस ने धार बदलनी ख़लक, ख़ालस गुरमुख दए वखाईआ। कूड़ी क्रिया लाहुणी अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह फेरा पाईआ। जिस ने खेल करना विच बलख, पूरब लेखा पूर कराईआ। कर प्रकाश उपर फ़लक, नूर ज़हूर दए दृढ़ाईआ। जोती धार चमका के चमक, चमत्कार आपणा दए वखाईआ। जन भगतां होण ना देवे हराम नमक, निमख निमख होए सहाईआ। साचे प्रेम दी बख़्श के हिम्मत, हौसले अगले दए बदलाईआ। सम्बल नगरी साची सिम्मत, चार कुण्ट दहि दिशा विच्चों वक्खरी आप उपाईआ। जित्थे बिना पुरख अकाल दे करनी पए अवर ना मिनत, विचोला लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। चित्रगुप्त राए धर्म वेले अन्त करन कोए ना इल्लत, लख चुरासी दए ना कोए सज़ाईआ। मात गर्भ फेर ना होवे ज़िल्लत, नौ अठारां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचे शब्द दी दे के खिल्लत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रेम प्यार दा ला के तिलक, तिलकणबाज़ी, तों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पहली पोह कहे मैं वेख्या शब्दी शेर, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जिस ने दो जहानां करना ज़ेर, सिर सके ना कोए उठाईआ। कूड़ी क्रिया मेटणा अन्धेर, सति सच करे रुशनाईआ। कलयुग अन्त चुकाउणा गेड़, गेड़ा गेड़े विच भवाईआ। लख करोड़ी छेड़नी छेड़, मन ममता विच फसाईआ। शब्द अगम्मी मारनी चपेड़, मूर्ख मुग्ध देणे दुरकाईआ। शाह सुल्तानां करना ढेर, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक उडाईआ। जग दा मार्ग लाउणा फेर, फिर फिर वेखे सर्ब लोकाईआ। कोटां विच्चों थोड़्यां उत्ते कर के मेहर, आपणी गोद लैणा टिकाईआ। जिन्हां दी सेवा करन नूं तड़प रिहा कुमेर,

नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द खण्डा फड़ हथ्थ शमशेर, चारों कुण्ट होए सहाईआ। जन भगतां मार्ग लग्गणा पहली वेर, वेरवा अवर रहे ना राईआ। पिछली करनी आपे देणी उधेड़, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। अगला लेखा हक नबेड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत करे कुड़माईआ। पहली पोह कहे मैं वेखणा उह समां, जिस नूं सारे गए वड्याईआ। जिस विच कोई समझ ना सके हरख़ सोग़ ग़मां, चिन्ता नचिन्ता ना कोए जणाईआ। कूड़ी क्रिया वेखणी तमअ, लालच लालस खोज खुजाईआ। दीन मज़्हब वेखणा बन्नां, ज़ात पात वण्ड वण्डाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखणा बिन छप्पर छन्नां, सति दवारे सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार वेखणा अन्न्हां, सिर पापां गंढु उठाईआ। किसे नूं याद नहीं रहिणा चौदां सौ तीस अंक दा पंना, पनघट उत्ते सोभा कोए ना पाईआ। जेहड़ा गोबिन्द इक्को ला के गया विच कन्ना, कायम करे ख़लक खुदाईआ। ओस दा साल होणा रवां, अरमान सब दे वेख वखाईआ। चार कुण्ट नज़र ना आउणी कोई शमां, दीवे गुल ख़लक खुदाईआ। नेत्र वेखणी रोंदी माई हव्वा, बावा आदम दए दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हो के जम्मां, प्रभू अगे सीस झुकाईआ। पहली पोह कहे मैं की वारता कहवां, कहिण दी लोड़ रही ना राईआ।
१६ मैं भज्जे आउँदे वेखां जुगां चौहां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। सब दे अगे मैं इक्को ढोला गवां, संदेसा १६
१९ सच सुणाईआ। आओ प्रभ दा मार्ग वेखो नवां, नव नौ चार रिहा समझाईआ। जिस दे दवारे सोभनीक हो के बहवां, सनमुख १९
दर्शन पाईआ। मैं इक्को दी चरणी ढहां, जित्थे ढोलक छैणे दी लोड़ रहे ना राईआ। ओसे दी सेजे सवां, जित्थे सुत्यां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। पहली पोह कहे मैं सुणाउण आया अगम्मी बात, बातन दयां जणाईआ। जन भगतो अगला बदलण वाला तमाश, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। खेलणहारा खेल हो के आप पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। जेहड़ा मेला मिलदा रिहा नाल इतफ़ाक, उस दा लेखा दए समझाईआ। छब्बी पोह तों गोबिन्द पिछला लेखा होणा बेबाक, लारयां वाला नाअरा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म दए सुणाईआ। पहली पोह कहे मैं होया हैराना, हरि जू अंदरे अंदर सुणाईआ। मैं दो जहानां बदल देणा ज़माना, ज़ामनी आपणी विच रखाईआ। शब्दी गोबिन्द हथ्थ देणी कमाना, चिल्ला तीर इक वखाईआ। पहला हुक्म सुणा उपर असमानां, इस्म इक्को देणा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां परदा खुल्हा के दो जहानां, दोहरा रूप लैणा प्रगटाईआ। सब ने मन्नणा इक्को भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल जाणी जाणा, लख चुरासी वेख वखाईआ। इक्को इक होणा बलवाना, बलधारी रूप वखाईआ। जिस दे कोल अगम्मी इक पैमाना, दो जहानां नाप

बणाईआ। जन भगतां अंदर रहिण ना देणा कोई बेगाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गल्लां वाला बणन नहीं देणा कोई अफ़साना, शब्दी हुक्म इक वरताईआ। प्रेमी प्यार अंदर करना दीवाना, नाम खुमारी इक वरताईआ। दरस वखा के रूप नाना, निरगुण निरवैर जोत करे रुशनाईआ। माया ममता मोह तोड़ अभिमाना, साची सिख्या दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा इक तराना, तुरीआ पद तों बाहर कढाहीआ। जिस दे नाल होवे कल्याणा, कलमा इक्को देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। पहली पोह कहे मैं सुण लई ओह गूंज, जो गुझी रमज़ रही लगाईआ। गुरमुख आत्म कुरलावे कोई ना कूंज, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्यार दी प्रभ ने बख्शणी आत्म स्वांती बूँद, तृष्ना तृखा देणी बुझाईआ। निज कँवल करना मूंध, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मंज़ल रहे ना कोई ढूँघ, साचे पौड़े देणा चढ़ाईआ। ग़फ़लत विच ना आवे ऊँघ, गुरमुख सवाधान कराईआ। जिधर वेखण ओधर मौजूद, मुफ्त आपे होए सहाईआ। भाग लगा के तत वजूद, वजह अगली दए समझाईआ। आओ वेखो तक्को जलवागर ओह महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा नाम कदे ना होवे नेस्तोनाबूद, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। सच दुआर दी दस्स के सच हदूद, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि देणी माण वड्याईआ। पहली पोह कहे मैं दस्सां अगम्मी कहाणी, कहावत जगत ना कोए बणाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखा पद निरबाणी, निरबाण पद मिले वड्याईआ। तुहाडी नव जोबन दी जवानी, चार कुण्ट वेख वखाईआ। तुहाडे प्रेम दी सच तुग्यानी, चारों कुण्ट लहर लहराईआ। तुहाडा अंदर नूर रूहानी, रहमत विच समाईआ। तुहाडी आत्मा रहिण नहीं देणी बेगानी, परमात्मा आपणे नाल जुड़ाईआ। दाता बण के आया दानी, गहर गम्भीर फेरा पाईआ। जन भगतो छब्बी पोह इक इक्क फुल्ल लै के आउणा निशानी, नशा धुर दा दयां चढ़ाईआ। तुहाडे अंदर प्रगटावे उह बाणी, जो बाण निराला दए चलाईआ। अमृत रस दे के ठंडा पाणी, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। नाता छुट्ट जाए दुनिया फ़ानी, फ़ैसला आपणे नाल कराईआ। अगे मार्ग मिले आसानी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। झगड़ा मुक जाए अदालत दीवानी, हुक्म इक्को वार सुणाईआ। तुसां पिच्छे गोबिन्द नाल दिती कुरबानी, अगे जमां तों ल्या बचाईआ। झगड़ा मुकाया चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ना कोए फिराईआ। साचे घर दी बणा के सच्ची राणी, दरगाह साची देणा बिठाईआ। जित्थे खेल नहीं जिस्मानी, बुत्तख़ाने वज्जे ना कोए वधाईआ। शान रहिण नहीं देणी पंजां तत्तां वाले प्राणी, वेदां पुराणां तों लैणा छुडाईआ। चढ़न ओस बबानी, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद

देवे माण वड्याईआ। पहली पोह कहे तुसां फूल ना समझणा फुल्ल, गुल गुलाब ना कोए सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा पैणा मुल्ल, मलकीअत पिछली गई विहाईआ। भगत भगवान दी बणनी कुल, कुल मालक खेल खिलाईआ। वेख्यो जगत वासना विच ना जायो डुल, अनडोलत लए बचाईआ। झूठे प्यार विच ना जायो भुल्ल, प्रेमी प्रीतम दए समझाईआ। माया विच ना जायो रुल, रुलदयां गले लगाईआ। तुहानूं सच दवारे आउण दी खुल्ल, अगे सके ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। फुल्ल कहे मैनूं कोई ना जाणयो गंदा, मैं आपणी गुलशन दयां जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द कोल गया सी बैरागी बन्दा, चरण गोदावरी कन्ढे टिकाईआ। उस दे हथ्थ विच सी सत्त रंग दा डण्डा, जो नज़र किसे ना आईआ। हौली हौली हथ्थां नाल पाए वण्डा, हिस्सा सके ना कोए समझाईआ। इशारा कर के उपर सूरज चन्दा, दोहां दिता हिलाईआ। चौदां तबक कर के नंगा, परदा दिता उठाईआ। म्यानों खिच्च के आपणा खण्डा, सहिज नाल चमकाईआ। पुरख अकाल नूं कह के चंगा, सीस दिता निवाईआ। दो हथ्थां दा वजा के मृदंगा, दो जहान ल्या उठाईआ। सीस चों कढ्ढ के आपणा कंघा, चरणां उत्ते ल्या छुहाईआ। आप खलो के इक टंगा, नेत्र नैण बन्द कराईआ। पुरख अकाल मैं कोई पहनीआं नहीं वंगां, वंगार के रिहा सुणाईआ। मैनूं लख चुरासी नबेड़न दा ढंगा, तेरी बेपरवाहीआ। दीन दयाल हस्स के किहा तू मालक पुरी अनन्दा, अनन्द तेरे विच भराईआ। तेरे कोल देवां ओह फंदा, जिसनूं वेखे ना कोए लोकाईआ। गोबिन्द तक्क के चार कुण्ट ब्रह्मण्डां, पुरख अकाल आपणे विच्चों नज़री पाईआ। हस्स के किहा तेरी मेरी पै गई गंढ्ढ, अगे होए ना कदे जुदाईआ। श्री भगवान किहा तूं गोबिन्द मेरा रूप ठंडा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। तेरा गुलशन वेखणा महकंदा, जिस दे अंदर सुगंधी तेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो लहिणा रिहा चुकाईआ। फूल कहे मैनूं गोबिन्द हथ्थ तोड़या, तुट्टया नालों डाल। मैं हुक्म मूल ना मोड़या, पुरख अकाल दा वेख के सच्चा लाल। मैं इक्को लै के साह हटकोरया, कीता इक स्वाल। जे तेरे विच कोई जोरया, मैनूं वखा दे दीन दयाल। जे तैथों वखरा कोई होर आ, फेर मैनूं ना रखीं संभाल। जे कोई तूं ठग्ग चोर यार आ, क्यों मैनूं दिता ज्वाल। गोबिन्द किहा मैनूं तेरी लोड़ आ, एह हुक्म मेरे भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेलया खेल इक महान। फुल्ल किहा क्यों तोड़या नालों डण्डी, मेरा नाता दिता तुड़ाईआ। तूं आयों गोदावरी कन्ढी, गोदी वाले फेरा पाईआ। मैं हो गया तेरे विच बन्द खानेबन्दी, मैनूं बन्दगी देणी दृढ़ाईआ। दरवेश हो के मंग मंगी, निउँ निउँ लागां पाईआ। गोबिन्द किहा मैं पुरख अकाल दा इक भुजंगी, निरगुण सरगुण वेस वखाईआ।

१८
१६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म आपणे विच छुपाईआ। फुल्ल किहा सुण मेरे गोबिन्द, बन्दना दयां जणाईआ। तूं मालक बणया हिन्द, हिन्दवायण तेरी शरनाईआ। मैं झुकदा वेख्या सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा लागे पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण बख्शिंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैनूं आपणी बणा लै ओह बिन्द, जित्थे जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। एथे ओथे होवे ना चिन्द, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले मेरा सम्बल नगर बणया पिण्ड, पत्थर इट्ट गारा ना कोए लगाईआ। कोई खेल न जाणे सागर सिन्ध, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। मैं उपजणा नहीं किसे लिंग, बूँद रक्त ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द आख दृढ़ाउँदा ए। शब्दी हुक्म सुणाउँदा ए। वाक् भविख्त अलाउँदा ए। बिन कलम शाही लेख बणाउँदा ए। मैं वसणा ओस देश, जित्थे दर्शन कोई ना पाउँदा ए। मैं रहिणा सदा हमेश, जन्म मरन दा गेड़ कटाउँदा ए। तेरा (बणा) नाल आपणे लेख, आपणा लेखा तेरे नाल बनाउँदा ए। भाग लगा के माझे देस, देस दसन्तर आप सुहाउँदा ए। निरगुण धार बदल के भेख, जोती ज़ाता जोड़ जुड़ाउँदा ए। चरण लगा के ब्रह्मा विष्न महेष, ब्रह्म आपणा हुक्म दसौंदा ए। तेरा लेखा फेर लवांगा वेख, वखरी वण्ड ना कोए वण्डाउँदा ए। सम्मत शहिनशाही विच होवे पेश, तेरी पेशी इक इक्क बणाउँदा ए। हुण मैनूं सारे कैहिंदे गुर दस दस्मेश, दहि दिशा तुरंग दुड़ाउँदा ए। वस्त्र कपड़े वेखदे खेस, खण्डा तन नाल लटकाउँदा ए। मैनूं थोड़े मन्नदे नरेश, बहुत्यां समझ कोए ना पाउँदा ए। मैं पंज तत छड्ड के जाणा ओह प्रभू दे देश, जित्थे दिशा वण्ड ना कोए वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप चुकाउँदा ए। गोबिन्द कहे सुण फुल्ल प्यारे मित्र, सज्जणा दयां जणाईआ। हुण बाज़ां कोलों तुड़ावां तित्तर, भरमां विच भुल्ले लोकाईआ। हुण गुजरी दी गोदों आया निक्कल, सुलखणी कुक्ख बणाईआ। फेर निरगुण धार हो के आउणा नित्तर, ना कोई पिता ना कोई माईआ। इक्को गुरमुखां दा होणा फ़िकर, ना कोई खंडयां वाली लड़ाईआ। हिरदयां अंदर वड़ के करना ज़िकर, अक्खरां वाली ना कोई पढ़ाईआ। गुरमुखां दा चरण दवारे चित्र के चित्तर, चलित्तर आपणा देणा समझाईआ। सच प्रेम दा करके इश्क, हकीकी मिजाजी दोवें देणे खपाईआ। हुण लारे ला के जाणा खिसक, भज्जणा वाहो दाहीआ। फेर पुरख अकाल दा नाल लै के आउणा इष्ट, अंदर वड़ के सोभा पाईआ। मेहर नज़र नाल सब दी खोल्ह्णी दृष्ट, जोग अभ्यास तप ना कोई समझाईआ। भगतां दी सेजा उत्ते मैं भोगणा गृहस्त, दूजा संग ना कोई रखाईआ। मेरा लहिणा देणा ना कोई टांक ना कोई जिसत, ना कोई जिस्म विच वड़्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा

मेला मेल मिलाईआ। फुल्ल कहे तूं गहर गम्भीर, सोहणा बांका नज़री आइंदा। तेरा तत्तां वाला सरीर, सनमुख मेरे सोभा पाइंदा। तेरी किस ने करी तामीर, मैनूं अंदरों ना कोए समझाइंदा। तेरी सोहणी खड़ग शमशीर, चमक दमक रूप बदलाइंदा। तूं वक्खरा पीरां दा पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी वण्ड ना कोई वखाइंदा। तेरा लेखा अमीर ग़रीब, राउ रंक ना कोए जणाइंदा। मैं हैरान तेरा खेल अजीब, निराला वेख खुशी मनाइंदा। तेरी सब तों वक्खरी तरतीब, ढंग अनोखा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा तेरे विच रखाइंदा। गोबिन्द कहे फुल्ल तैनूं समझाउँदा हां। फड़ के आपणे चरणां नाल छुहाउँदा हां। चरण छुहा के हथ्थ उपर टिकाउँदा हां। हथ्थ उपर टिका के, छाती नाल लगाउँदा हां। छाती नाल लगा के, एदूं उपर कमलापाती नाल मिलाउँदा हां। तेरा खेल दिवस राती, रुत आपणी नाल सुहाउँदा हां। जे तोड़या तैनूं नालों डाल पाती, पतण आपणा इक दरसौंदा हां। तैनूं प्रेमीआं प्यारयां दा बणाउणा साथी, गुरमुखां दी झोली पाउँदा हां। जिंनां चिर पुरख अकाल ना आवे मैं तेरी करां राखी, सत्त ज़िमी असमान चरणां हेठ दबाउँदा हां। तेरी ओहनां नाल चलणी साखी, जिन्हां नूं साख्यात नज़री आउँदा हां। लहिणा देणा चुकावां बाकी, हिसाब आपणे विच छुपाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक दृढ़ाउँदा हां। फुल्ल कहे मेरे गोबिन्द सज्जण,

२०
१६

सच दे जणाईआ। किस बिध आवें परदा कज्जण, गुरमुखां होएं सहाईआ। लख चुरासी विच्चों आएं लभ्भण, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। किस दवारे आवें सद्दण, कवण घर लएं बुलाईआ। कवण देवें सच अनन्दन, अनन्दपुर वासी दे समझाईआ। किस बिध तोड़ें जगत क्रिया बन्धन, बन्दगी इक्को दएं समझाईआ। गोबिन्द अग्गों लग्गा हस्सण, ताली हथ्थां नाल वजाईआ। फुल्ला, जे तूं मेरे प्रेम दा रस लग्गा चक्खण, तैनूं स्वाद दयां समझाईआ। मैं गुरमुख आपणे लख चुरासी विच्चों विरोलणे मक्खण, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। मैं फिरदा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, भज्जां थाउँ थाँईंआ। अन्त विछोड़ा आवां कटण, नाल लै के बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां गोदी आवां चुक्कण, फड़ बाहों गले लगाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां आवां पुच्छण, काया मन्दिर अंदरों लवां उठाईआ। ठग्गां चोरां यारां कोलों आवां नस्सण, कोल रह के दरस ना कोए दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा दोहां दा दए दृढ़ाईआ। फुल्ल कहे मैनूं कैहिंदे फुल्ल गुलाब, पंखड़ी पंखड़ी रही कुरलाईआ। गोबिन्द किहा उठ वेख आपणा बाप, तैनूं दयां मिलाईआ। जिस दे दर ते इक्को जाप, तू मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। फुल्ल तूं नहीं समझदा केहड़ा तेरा साक, कवण सज्जण सैण गुसाईआं। जिस वेले कँवल दा खुल्ल्या सी ताक, ब्रह्मा नैण उठाईआ। ओस वेले ओहदे अंदर आशा गई सी भाख,

प्रभ धार दिती प्रगटाईआ। जे प्रभ मेरे अंदर आपणे प्रेम दी उपजा देवें शाख़, जिस विच तेरा प्रेम सदा महकाईआ। गोबिन्द किहा उस आशा दा रूप फुल्ल गुलाब, तेरा गग्गा गोबिन्द गोबिन्द गाईआ। तैनूं वखावां इक महल ते इक महिराब, इक्को महबूब सोभा पाईआ। इक्को सजदा इक अदाब, इक्को बन्दना रिहा कराईआ। इक्को शाह इक नवाब, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जिस ने भगतां नाल तैनूं देणा ख़ताब, मुख़ातब कर के दोहां नूं दए मिलाईआ। बन्दे कारन तेरा होया मिलाप, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। अगे दस्स भविख्त वाक्, सम्मत शहिनशाही दिता समझाईआ। तेरा भगतां नाल साथ, वज्जे जगत वधाईआ। छब्बी पोह सोहणी आउणी प्रभात, प्रभ देणी माण वड्याईआ। नवें जुग दी तेरे उत्ते चरण रख के दस्सणी नवीं अरदास, नवां मार्ग देणा दृढ़ाईआ। नाले अंदरों लाह के शब्दी डण्डे नाल गिलाफ़, पड़दे देणे चुकाईआ। पापां नूं कर मुआफ़, बच्चे लैणे तराईआ। चुरासी विच्चों कढ्ढ के साफ़, सुथरे आपणे घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। फुल्ल कहे मेरी इक मंग अपार, गोबिन्द दयां जणाईआ। जिस वेले मेरा तेरा होवे विहार, मैनूं पहलों देणा समझाईआ। मैं आउणा केहड़े दवार, कवण सेज सुहाईआ। कवण होवे मेरा ख़रीददार, कीमत कवण मुल्ल पवाईआ। कवण करे मेरे तेरे उत्ते एतबार, कवण यकीन यकीन विच बदलाईआ। उस वेले सारयां भगतां नूं करीं ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पहुंचाईआ। किसे दे कोल मेरा रह ना जाए उधार, लेखा सब दी झोली पाईआ। जे कोई तेरा गुरसिख तैथों होण लग्गे फ़रार, शब्द डण्डे नाल परताईआ। तेरा गुरमुख कदे ना होवे ग़द्दार, गदागर हो के घर घर मंगण कदे ना जाईआ। जे मंगे ते तेरा दीदार, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। फुल्ल कहे मैं कहिणा वंगार, कूक कूक सुणाईआ। जे लभ्भणा ते लभ्भो पुरख अकाल, अकलां दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुखो तुसीं ना पुरख ते ना नार, स्त्री पुरुष ना कोए वड्याईआ। अंदर तक्को तुहाडा प्रीतम तुहाडा यार, याराना इक्को दए वखाईआ। रस्ते जांदयां करे प्यार, भुक्खे मरदयां लए उठाल, जल डुब्बयां करे भाल, कंगालां विच बण कंगाल, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। फुल्ल कहे ओ गुरमुखो मैनूं रखिउ संभाल, सम्भल के सम्बल नगरी ल्याउणा चाँई चाँईआ। अगे फेर सुणो अहिवाल, की खेल नाल सिँघ पाल, क्यों पूरन सिँघ बणया दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। गोबिन्द कहे सुण फुल्ल सुगंधी, सुख दाता दए वड्याईआ। गुरमुखां नाल मिला के तेरी तोड़ देवां पाबन्दी, हुक्म आपणा इक जणाईआ। सन्त सुहेले बणा के संगी, हरि संगत दयां वखाईआ। जिन्हां दी कंड कदे नहीं होणी नंगी, श्री भगवान दए वड्याईआ। मेरे नाम शब्द दी वेखणी इक्को चण्डी, जो चण्डे सर्ब लोकाईआ। रहिण देणा नहीं कोई पाखण्डी,

कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पार कराईआ। फुल्ल कहे की फेर फुल्ले फुलवाड़ी, फल अगला दए लगाईआ। गोबिन्द कहे जिस दा बूटा लगाया सतारां हाढ़ी, उह हाढ़ा कढु के तेरा संग निभाईआ। तेरी रहिण नहीं देणी कंडयां वाली वाड़ी, ख़ार रूप ना कोए बणाईआ। मैं जिधर जावां जावां तारी, तारनहार मेरा संग निभाईआ। जन भगतां दी कटां खुआरी, ख़ालस आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी तोड़ निभावे यारी, यार यारां विच रखाईआ। फुल्ल कहे मैं नहीं समझया यार, याराना सक्या ना कोए जणाईआ। मैनूं सारे खारीआं विच रहे उठाल, होके दे के गली गली सुणाईआ। राजयां दे बण के हार, राणीआं दी मैंढी दिती बदलाईआ। गोबिन्द मेरा सच्चा नहीं जाणयां किसे प्यार, प्रेमीआं वाला प्रेम ना कोए वखाईआ। दूजे दिन तन दे नालों उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे दिशा दिता सुटाईआ। गोबिन्द किहा अगे होण ना देवां खुआर, तेरी सुगंधी गुरमुखां अंदर देवां टकाईआ। कल कल्की लए अवतार, कला सब दी देवां भवाईआ। दुखियां दा बण के दिलदार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सम्मत शहिनशाही इक विच साचा खोल्ह के दस्सां अहिवाल, अवल तेरा खेल प्रगटाईआ। जन भगतां नूं दयां सखाल, जन भगतो फुल्ल गुलाब लै के आउणा चाँईं चाँईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दीन दयाल, दयानिध सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत १ सुरिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भुलर ज़िला अमृतसर ✪

पोह कहे मैं भगतां वेखी सुरती, सुरत शब्द होई कुड़माईआ। मेहर होई पूरे सतिगुर दी, जो गोर मढ़ी विच्चों बाहर कढाहीआ। धार मेली इक धुर दी, जोती जोत विच समाईआ। मनसा पूरी होई लोड़ दी, लोआं पुरीआं पैंडा दिता मुकाईआ। धाड़ रही ना किसे चोर दी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। रैण रही ना अन्धेर घोर दी, निर्मल नूर चन्द करे रुशनाईआ। खेल रही ना आवण जावण दौड़ दी, लख चुरासी पैंडा दिता मुकाईआ। वेल रही ना कूड़ी क्रिया कूड़ दी, अमृत रस दिता भराईआ। अगे लोड़ रही ना होर दी, पुरख अकाल दिती सरनाईआ। शब्द धार बख़्श घनघोर दी, अनहद नादी नाद सुणाईआ। याद आई गढ़ी चमकौर दी, गुरमुख हीरे लए चमकाईआ। जित्थे बुद्धी नहीं किसे दी बौहड़ दी, उथ्थे सन्त सुहेले लए उठाईआ। रुत्त ख़िज़ां गई औड़ दी, बसन्त रूप आप बदलाईआ। पदवी दे के आपणे कौर दी, कमलापति होए सहाईआ। छत्र छाया दे के अगम्मी चौर दी, चवर आपणा नाम झुलाईआ। खेल वखा के गवर गौर दी, गहर गम्भीर

परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। पोह कहे मैं भगतां वेखी उसतत, श्री भगवान ढोला गाईआ। जिन्हां नूं इक्को मिल गया मुर्शद, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। पढ़नी पई कोए ना पुस्तक, सुरती शब्द वज्जे वधाईआ। कूड़ी क्रिया नालों दे के फ़ुरसत, फ़ुरना आपणा इक जणाईआ। माया ममता मैल धो के दुरमति, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। साची दस्स दे इक्को गुरमति, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। श्री भगवान दी साची उलफत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाईआ। पोह कहे मैं भगतां वेख्या अनन्द, घर घर बैठे खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म चढ़या चन्द, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणया संग, धुर दा संग इक बणाईआ। शब्दी नाद वजाए मृदंग, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, परदा ओहला दिता उठाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, नाता कूड़ा दिता चुकाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, इक्को नूर करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया बेड़ा बन्नृ, बन्दगी इक्को रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवणहार सहाईआ। पोह कहे मैं भगतां वेख्या गीत, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द गाईआ। आत्म परमात्म जोड़ प्रीत, प्रीतम आपणा रहे मनाईआ। काया करके ठंडी सीत, अग्नी तत गए बुझाईआ। झगड़ा चुका के हस्त कीट, चार वरन अठारां बरन डेरा ढाहीआ। लेखा मुका के ऊँच नीच, राउ रंक ना कोए वखाईआ। पन्ध मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा खुशी मनाईआ। त्रैगुण माया नालों हो अतीत, त्रैभवन मंगण सरनाईआ। आप आपणा जगत तों जीत, जगजीवन दाता मिल के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। पोह कहे मैं जन भगतां वेख्या सोहणा मन्दिर, काया माटी सोभा पाईआ। जित्थे रिहा कोए ना जंदर, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। मन वासना भवे ना बन्दर, तृष्ना तामस ना करे कोए वड्याईआ। सच प्रेम दा मिले अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जम की फाँसी रही ना बन्धन, बन्दगी डण्डावत इक्को दिती समझाईआ। साचा रूप बणा के चन्दन, निमवास दिती कढाहीआ। धुर दा मालक बण के संगण, सगला साथ रिहा निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। पोह कहे मैं भगतां रखी तांघ, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ धारे स्वांग, भेखी आपणा वेस वटाईआ। सच प्रेम दी चाढ़े कांग, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। सोई सुरती जाए जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हँस बुद्धी रहे ना काग, कागों हँस बणाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पवित पुनीत दए वखाईआ। जगत विवहार बदल समाज, समग्री इक्को दए समझाईआ। धुरदरगाही बख्श के राज, रईयत आपणी दए वखाईआ। जित्थे अपच्छरां दा नज़र

ना आवे कोए नाच, नौ अठारां वज्जे ना कोए वधाईआ। तन माटी दिसे ना काच, पंज तत ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना करे कोए बात, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। सूरज चन्द मण्डल मण्डप ना कोए दिवस रात, घड़ी पल वण्ड ना कोए वखाईआ। ना कोए भोर ना प्रभात, संधया रंग ना कोए रंगाईआ। ना कोई दीन ना कोए ज़ात, मज़्हब रूप ना कोए समझाईआ। इक इकल्ला बैठा आप इकांत, एकँकारा सोभा पाईआ। जिस दी भगतां नाल जमात, ज़ामन हो के वेख वखाईआ। जित्थे कढ्ढुणा पवे ना कोए हिसाब, कलमां वाली ना कोए लिखाईआ। पढ़नी पए ना कोए किताब, कुतबख़ाने कीमत कोए ना पाईआ। इक्को सजदा दस्सया अदाब, सिर कलम ना कोए कराईआ। सच महिराबे बैठ आप, महबूब इक्को सोभा पाईआ। त्रैगुण कूड़ी क्रिया तोड़ के ताप, अग्नी तत दए बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को दस्स के जाप, जमां तों लए छुडाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पुनीत आपणे पत्तण लए टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्तां विच गए भाख, भाव सब दा खोज खुजाईआ। खेल करे हो के साख्यात, सच स्वामी आपणी दया कमाईआ। जिस दा निरअक्खर लभ्भे किसे ना विच्चों लुगात, लग मातर ना कोए दृढ़ाईआ। सो भगत सुहेला बण के बाप, सन्त सज्जण गोद उठाईआ। पोह कहे जिधर वेखां उधर साथ, भगतन मीता भगतां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, तन माटी बुत्त ना ख़ाक, जोती शब्द धार मिल्या नाल इतफ़ाक, निफ़ाक भगतां दए मिटाईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत १ चरण सिँघ दे गृह मानावाला ✪

पोह कहे मैं जुग चौकड़ी वेखां चारों दिशा, चार कुण्ट ध्यान लगाइंदा। नित नवित परम पुरख परमात्म भगवन हो के करे भगतां रच्छा, दो जहानां एथे उथ्थे सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नाम वस्त अमोलक काया तन माटी ख़ाकी पाए भिच्छा, वस्त अगम्मी अंदर मन्दिर आप रखाइंदा। सच प्रेम प्यार दा उत्तम सृष्ट देवे हिस्सा, ख़ाली भण्डारे आप भराइंदा। दीन दुनी जगत जहान कायनात दस्से मिथा, थिर घर साचा इक समझाइंदा। रसना जेहवा बत्ती दन्द कूड़ा रस फिका, अमृत रस अन्तर आत्म आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। पोह कहे मैं जुग चौकड़ी जगत जीव काया वेखी बदली, तन, माटी फोल फुलाईआ। भरमे भुल्ली सृष्टी वेखी सगली, सगला संग ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म धार दस्से ना कोई अगली, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। सन्यासी वैरागी त्यागी

जटा जूट फिरदे जंगलीं, तन भबूती ख़ाक रमाईआ। सच वस्त नाम अमोलक बिन भगतां किसे ना लभ्भ लई, खोज खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया किसे ना हद्द गई, हाज़र हज़ूर हज़रत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। पोह कहे मैं जुग चौकड़ी करदा रिहा ध्यान, बहुरूपी रूप वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी, सुणदा रिहा ज्ञान, रसना जेहवा बत्ती दन्द कलमयां वाली पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए ब्यान, सिफ्तां विच सोहले ढोले गाईआ। भुक्खे मरदे वेखे महीने विच रमज़ान, रमज़ इशारा ना कोए समझाईआ। नव नौ चार जुग जुगीशर धरदे गए ध्यान, मुनीशर मोन रूप वटाईआ। सहिज सुभाउ बिन भगतां किसे ना मिल्या आण, भगवन अभेव भेद ना कोए खुल्हाईआ। सच दवारे पावे कोए ना माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुख सहिज वेख वखाईआ। पोह कहे मैं जुग चौकड़ी वेखदा रिहा पदवी, उच्च अथाह अगम्म बेपरवाह नज़र उठाईआ। जगत जहान वेख्या विच मज़्हबी, मज़ा हरि ना कोए चखाईआ। मन वासना हुन्दी रही बेअदबी, अदब अदब हथ्थ ना कोए दृढ़ाईआ। सिर झुकया ना किसे कदमी, कदमबोसी कादर कुदरत ना लाए पाईआ। तशदद् मिटे ना किसे अदमी, मदद मिली ना नूर खुदाईआ। खेल वेखी जगत तमद्दनी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। पोह कहे मैं वेख्या जुग चौकड़ी परम पुरख परमात्म शब्दी घोड़े ज़ीना पाउँदा रिहा पाखर, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम खेल वेखण आया आख़र, अख़ीर आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द सूरा बणया साथन, सगला संग बणाईआ। गुरमुखां आया आखण, उठो नेत्र लोचन लवो खुल्हाईआ। कल वेला आया जागण, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एह लहिणा देणा पिछला कोई भागो भागण, भाग सब दी झोली पाईआ। मन आत्म दे वैरागण, वैरी मित्र शत्रु परदा रिहा उठाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द मारे आवाज़न, नाअरा जैकारा इक सुणाईआ। जित्थे ना कोए स्वाल ना जुआबन, जुआब तल्बी ना कोए वखाईआ। जन भगतां पूरी कर के आस मुरादन, मुरदे महबूब आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरनगति इक दृढ़ाईआ। पोह कहे मैं जुग चौकड़ी वेख्या घड़ी पल, पलक पलक नाल बदलाईआ। मैं खेल वेख्या जल थल, महीअल आपणा ध्यान टिकाईआ। पुरख अबिनाशी प्रगट हो के कलयुग कल, कल कल्की फेरा पाईआ। भगतां अंदर गया रल, जग नेत्र वेख ना कोए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी कर के अछल छल, विशेष वशिष्टी गुरमुख लए प्रगटाईआ। दर दवारे दे के महल अटल, उच्च प्रबल परम पुरख होया सहाईआ। सब दे जुग चौकड़ी दी मिसल विच्चों मसले कर देवे हल्ल, अगे मिसाल आपणे नाल रलाईआ।

✪ ७ पोह शहिनशाही सम्मत १ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगड़ा ✪

निरगुण निरवैर जोत पुरख समरथ, पतिपरमेश्वर बेपरवाह अखवाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चलावे रथ, माया तत खेल खिलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाम संदेसा दे के हक, हकीकत साची आप दृढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी नाद अनहद वजा नद, सुरती शब्दी राग अलाइंदा। जोती जाता जोत कर प्रकाश, अबिनाश आपणा खेल खिलाइंदा। भगत सुहेला इक अकेला साचे सन्तां नज़र आए साख्यात, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुलाइंदा। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द करे अगम्मी बात, निरअक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख सति स्वामी वेखे आप, नित नवित वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे विच छुपाइंदा। सो पुरख निरँजण धुर दा स्वामी, अजूनी रहत इक अख्वाईआ। आदि जुगादि अन्तरजामी, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी गाउँदे गए बाणी, ढोला रागां नादां विच सुणाईआ। जिस दी रचना विष्न ब्रह्मा शिव चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वज्जे वधाईआ। जिस दा सर सरोवर निरवैर निर्मल जल पाणी, धार इक्को इक वहाईआ। जिस दा खेल एथे ओथे दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल करे रुशनाईआ। जो आत्म परमात्म देवणहारा पद निरबानी, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिस दी खेल जगत महानी, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ। विद्या गाए ना कोए ज़बानी, चौदस चौदां दए दुहाईआ। जिन्हां उपर करे आप मेहरबानी, महबूब मुहब्बत अंदर महवख़ाना दए दरसाईआ। जलवा दे के जोत नुरानी, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सो पुरख साहिब सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह परदा दए उठाईआ। जिस दी सिफ्त कायनात विच लिखे ना नाल कलम कानी, काअब्यां विच बैठे सारे देण दुहाईआ। जिस ने पंज तत गुर अवतार पैगम्बर कीते फ़ानी, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर निराकार निरँकार वड्डी वड्याईआ। निरगुण जोत पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जित्थे ना कोई जुआब ना कोए स्वाल, कलमा नाम वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जित्थे ना कोई शिवदवाला मन्दिर मठ्ठ हाल, तत्व तत वेस ना कोए वटाइंदा। इक्को दाता दीन दयाल, दयानिध स्वामी सोभा पाइंदा। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर चार जुग देंदे गए अहिवाल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी सिफ्त सालाहइंदा। जिस नूं खा ना सके कोई काल, महाकाल नज़र कोए ना आइंदा। जिस दी कोटन कोटि साध सन्त तन ख़ाकी वजूद करदे भाल, सबूत हक ना कोए सुभाइंदा। सो पुरख बिधाता खेल करे आपणा आप, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर निराकार निरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण जोत पूरन प्रकाश, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि ना होए विनाश, अबिनाशी आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा के दासी दास, सेवक सेवा सच समझाईआ। निरगुण सरगुण पंजां तत्तां अंदर पावे रास, गोपी काहन आपणा रूप वटाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वज्जे वधाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, आहिस्ता आहिस्ता अंदरों परदा दए उठाईआ। लेखे ला के पवण स्वास, साह साह आपणा नाम जपाईआ। आत्म सेजा सुहा के खाट, सिँघासण इक्को दए वखाईआ। जित्थे ना कोए दिवस ना कोए रात, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। ना कोई दीन मज़्हब ज़ात पात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रूप ना कोए दरसाईआ। साहिब स्वामी इक्को बैठा कमलापात, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर नुराना नूर नूर चमकाईआ। निरगुण जोत जो जाए जाण, अन्जाणत रहिण मूल ना पाईआ। सचखण्ड भूमिका सुहाए अस्थान, थिर घर वज्जे नाम वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे ढोले गाण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी इक भगवान, भगवन मालक इक अख्वाईआ। कर किरपा जिस नूं देवे आपणा प्रीती दान, प्रीतम अंदरों नज़री आईआ। आत्म परमात्म करे परवान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप दरसाईआ। भेव अभेदा खोल्ह़े आण, परदा ओहला दए उठाईआ। नाम निधान सुणा धुनकान, नाद अनादी नाद वजाईआ। सुरती सुरत कर सवाधान, नेत्र लोचन अक्ख खुल्ह़ाईआ। जिन्ह़ां नूर निरगुण वेख्या इक मेहरवान, मेहर नज़र विच गए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। निरगुण जोत जो जाए बुज्झ, मन वासना रहिण ना पाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, साख्यात सति सरूपी दरस दिखाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द बोलण दा पैंडा जाए मुक, रमज़ नाल रमज़ लए मिलाईआ। सिध्धा परम पुरख परमात्म कोलों साचा लेखा लए पुछ, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जो कुझ है सो उसे दा बाकी लख चुरासी जीव जंत सृष्टी दिसे तुछ, तुख्म तासीर आपणी सके ना कोए बदलाईआ। जगत जहान नाता जुड़या पिता पुत्त, साक सैण कुटम्ब मिल मिल खुशी मनाईआ। जिन्ह़ां दे अंदर परम पुरख दी धार गई उठ, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। बिना नगारयों लग्गी चोट, चोटी चढ़ के दर्शन पावण सच्चे माहीआ। अन्त अख़ीरी इक्को पुरख अकाल दी ओट, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट, काया गढ़ बंक दुआर अंदर भज्जण थाउँ थाँईंआ। बिन हरि किरपा कृपाल उत्ते होए ना कोए मोहत, मुहब्बत सच ना कोए जणाईआ। जित्थे लेखा नहीं कोई चौदां लोक, चौदां तबक चौदां विद्या ना कोए समझाईआ। सो सन्त सुहेला गुरू चेला बिन नेत्र नैण अक्खां दर्शन करे रोज़, रोज़े

बांग दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतो प्रीतम नाल मिल के वेखो उस दी मौज, मजलस भगतां विच रखाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए खोज, लेखा लिख के कलम शाहीआ। उह दाता निर्मल जोत, तत्तां वाला रूप ना कोए वखाईआ। उस दा इक्को राग इक्को नाद इक सलोक, सोहले सब नूं रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण जोत बेशक मानस मनुक्ख, तत्तां अंदर तत नज़री आईआ। जे उस दा रूप हो जावे ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, आसा मन ना कोए वधाईआ। ना कोए रोग ना कोए दुःख, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। ना कोई धी ना कोए पुत्त, ना कोए सहुरयां घर जवाईआ। इक्को उस नूं मिल के अंदरों हो जाए चुप, चुप चुपीतयां घर बैठयां दर्शन पाईआ। फेर किसे नूं की लैणा पुच्छ, जे मिले धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्मल जोत जन भगतां दए दरसाईआ। निर्मल जोत निराकार जन भगत तक्क, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। हकीकत विच्चों मिल गया हक, हकूक पिछला झोली पाईआ। मिलयां पुरख अकाल तों बिना कदे दूर ना होया शक, शिकवे विच फिरे लोकाईआ। मंज़ल मंज़ल पाँधी राही सारे रहे नठ, मंज़ल चढ़ के घर स्वामी दर्शन कोए ना पाईआ। नाता जुड़या तत अठ्ठ, नौ दवारे माया ममता होई हल्काईआ। ईड़ा पिंगला सुखमना सब नूं रहे दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण दुहाईआ। कोई सहँस दल कँवल रहे फस, कोई इष्ट देव तत्तां वाला वेख खुशी मनाईआ। कोई अमृत रस थोड़ा थोड़ा रहे चख, निझर झिरना बेपरवाहीआ। कोई अंदरों निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, बिना अक्खरां करन पढ़ाईआ। कोई सेज पत्थर विछा के सथ, यारड़ा आपणा ल्या हंडाईआ। जन भगतां जिन्हां चरण मिले पुरख समरथ, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। एह खेल न्यारा सब तों वक्ख, जगत विद्या ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार इक्को इक अख्वाईआ। निरगुण जोत इक पुरख अगम्म, जो अगम्मढ़ी कार कमाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, जनणी कुक्ख ना कोए सुहाइंदा। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, रजो तमो सतो वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। ना कोई सोग ना कोई ग़म, दुःख सुख ना कोए प्रनाइंदा। ना कोई तन माटी ख़ाक चम्म, चम्म दृष्टी ना वेख वखाइंदा। ना कोई नूर नुराना चमके सूरज चन्न, मण्डल मण्डप वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। सो पुरख अकाल दीन दयाल इक्को जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण धन्न धन्न, जिस दी महिमा सिफ्त ना कोए सलाहइंदा।

७ पोह शहिनशाही सम्मत १ अवतार सिँघ, हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड कांओके

निरगुण रूप भगत दा भाओ, भाव आपणा दए दृढ़ाईआ। अन्तर आत्म साचा चाउ, चाउ घनेरा इक समझाईआ। साचा मार्ग दस्से राहो, रहबर हो के मेल मिलाईआ। नाम निधान जणा के नाउँ, नर निरँकार दए वखाईआ। भाग सुहञ्जणा करे गांउ, गांव खेड़ा इक्को इक वड्याईआ। जिस नूं गोबिन्द किहा वाहो वाहो, वाह वाह गोबिन्द वेख वखाईआ। शाह पातशाह बण के सच्चा शाहो, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। बेपरवाह अगम्म अथाहो, अकथ कहाणी रिहा दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म कर व्याहो, व्याह इक्को दए जणाईआ। धुर दा बण के पिता माउँ, सगन साचा रिहा मनाईआ। प्रेम प्यार पकड़े बाहों, धाम सुहञ्जणे रिहा टिकाईआ। अर्श फर्श दा करे न्याउँ, हुक्म अदालत इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जण सुहेला इक अख्वाईआ। निरगुण जोत सूरा सरबंगया, भगत वछल गिरधार। आदि जुगादी साचा संगया, सगला रूप करतार। देवे दान नाम अणमंगया, भिक्खक भिच्छया झोली भरे भण्डार। कूड़ कुड़यारां करे चंगया, बुराईआं कढ्ढे बाहर। प्रेम प्यार दे अनंदया, दुखड़ा जन्म दए निवार। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के गंदया, उज्जल साफ़ करे सिरजणहार। जगत वासना मेटे धंदया, धन्दूकार ना रहे गुबार। बिना बन्दगी बणा के बंदया, बन्धन तोड़े सर्ब संसार। दीन दयाल बण बख्शंदया, बख्शिश करे आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा विचार। निरगुण जोत जगत जहान, चुरासी चरण कँवल सरनाईआ। आत्म परमात्म सर्ब ध्यान, ब्रह्म ज्ञान विदित वड्याईआ। शब्द निधाना नाम निधान, बेपहचान दए समझाईआ। कल्मयों बाहर करे कल्याण, अमलां दए मिटाईआ। फ़ज़ल करे रहमान, अज़ल दा लेख मुकाईआ। गृह मन्दिर जगा के शमांदान, नूर ज़हूर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले रंग चढ़ाईआ। निरगुण जोत जन मेला सगल, सगली चिन्त मिटाईआ। गृह मन्दिर अंदर मंगल, मंगलाचार शनवाईआ। प्रभास लेखा चुका के जंगल, जागरत जोत डगमगाईआ। साची दस्स नमस्ते बन्दन, बन्दगी इक वखाईआ। प्रेम प्रीती दे के परमानंदन, सुखसागर विच समाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म करे ना कोई उलँघण, उंगलीआं उत्ते सब तों हिसाब गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। निरगुण जोत परम पुरख दी धार, पप्पा पूरन दए वड्याईआ। होड़ा निरगुण सरगुण खेल अपार, हाहा हरि जू रूप वटाईआ। अक्खरां बाहर करे गुफ़तार, शब्दी शब्द सुणाईआ। लहिणा देणा देण आया संसार, देवणहार वड्याईआ। ख़ाली भरी जाए भण्डार, भाण्डा भरम भउ मिटाईआ। भगत सुहेले सज्जण साहिब उठाल, उठ उठ

आपणा रंग रंगाईआ। सच घर गृह मन्दिर स्वामी बणा के सच्चे बाल, बाल उपदेश इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन सज्जण साचे भाल, भली भली तरां पार लँघाईआ।

✪ ८ पोह शहिनशाही सम्मत १ नरायण सिँघ दे गृह
पिण्ड गुमानपुरा ज़िला अमृतसर ✪

पोह कहे मैं परम पुरख दी तक्की पदवी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा सजदा सीस जगदीश इक्को अदबी, अल्ला तआला जलवा नूर नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झुकदे कदमी, चरण कँवल सरनाई सर्ब वखाईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि अदमी, अदल अदालत इक्को इक सुहाईआ। जुग चौकड़ी करनहारा बदली, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल हुक्में अंदर फिराईआ। निरगुण सरगुण धार पन्ध मुकावे मंज़लो मज़ली, मंज़ल आपणी चढ़ के खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता सेव कमाईआ। पोह कहे मैं वेख्या कुदरत दा कादर, गहर गम्भीर इक्को नज़री आईआ। योद्धा सूरबीर बहादर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा एथे ओथे इक्को आदल, इन्साफ़ इक्को दए समझाईआ। लहिणा जाणे मकतूल कातिल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। पोह कहे मैं वेख्या खेल अगम्म अथाह, बिन अक्खां नज़री आईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर सिफ्त करके गए सलाह, शास्त्र सिमरत वेद पुराणां अन्तर जस गाईआ। सो करनी दा करता निरगुण जोत करे रुशना, स्वच्छ सरूपी आपणा रूप प्रगटाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बणे मलाह, भगत भगवन्त लए उठाईआ। जिस दा ढोला भविख्तां विच गए गा, रागां नादां ताल वजाईआ। सजदयांविच सीस गए निवा, डण्डावत बन्दना चरण सरनाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता गया आ, आमद आपणी फेरा पाईआ। जिस दे अगे दोए जोड़ मंगदे गए दुआ, दोहरी धार रिहा वखाईआ। मन मति बुध जिस नूं समझ ना सके रा, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिस नूं लभ्भदे थाउँ थाँ, खोजणहार सर्ब लोकाईआ। सो साहिब समरथ शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह, सच दवारा इक सुहाईआ। जल थल महीअल छड्ड जगत अस्गाह, टिल्ले पर्बत आया तजाईआ। गृह मन्दिर इक वड्या, सम्बल आपणा चरण टिकाईआ। गोबिन्द लहिणा रिहा चुका, लेखा धुर दा आप वरताईआ। भगत सुहेले रिहा उठा, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा हिला, त्रै पंज निंद्रा दए खुल्हाईआ। वेला वक्त रिहा वड्या, वड वड्डा नूर

खुदाईआ। लेखा जाणे दो जहां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी रिहा दृढ़ाईआ। पोह कहे मैं वेख्या दूर दुराडा नेड़े, घर सज्जण नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी भगतां बन्ने बेड़े, सन्त सुहेले गोद उठाईआ। झगड़े चुकाए तेरे मेरे, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्को रंग रंगाए गुरू गुर चेरे, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला काया वस्या साढे तिन्न हथ्थ खेड़े, मन्दिर सोहणा इक समझाईआ। मन मति बुध रहिण ना देवे झूठे झेड़े, झगड़ा अवर ना कोए लड़ाईआ। भगतां देवे चाउ घनेरे, आसा मनसा पूर वखाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सज्जण थोड़े बथेरे, जो प्रभ नूं मिल के प्रभ दे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणी रिहा समझाईआ। पोह कहे मैं वेख्या परम पुरख दा रंग, बिन अक्खरां नज़री आईआ। जन भगतां बणया संग, सगला मीत सहिज सुखदाईआ। घर आत्म वजा मृदंग, धुंन अनादी नाद सुणाईआ। सेज सुहावणी कर पलँघ, गृह बैठा डेरा लाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द दे अनन्द, अनन्द आत्म रिहा वखाईआ। बिना सूरज चन्न चाढ़ के चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म नाता गंढु, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। धुर दा ढोला सुणा के छन्द, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। चारे खाणी चारे बाणी मुका के पन्ध, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। पोह कहे मैं वेख्या परम पुरख प्रभ गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़री आइंदा। जिस दा राह तक्कदे गुर अवतार पैगम्बर पीर, सो भगत भगवान खेल खिलाइंदा। जिस दी शरअ समझ ना सके कोए ज़ंजीर, शरीअत वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जिस दी मुसव्वर खिच ना सके कोए तस्वीर, तसबी माला ना गल लटकाइंदा। जिस नूं लभ्भदे शाह हकीर, पातशाह आपणा वेस वटाइंदा। जिस नूं सजदा करे कबीर, काया काअबा सोभा पाइंदा। जिस दी नाम अगम्मी सब तों वक्खरी तदबीर, तकरीर हको हक सुणाइंदा। जिस दी मंज़ल चोटी इक अखीर, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप खिलाइंदा। पोह कहे मैं आपणा दस्सां महीना पोह, परम पुरख दिती वड्याईआ। सम्मत शहिनशाह लग्गी लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां नैण नैण अक्ख खुल्हाईआ। परदा लाह के सोहँ सो, सोहणा हुक्म देणा सुणाईआ। हँ ब्रह्म करे ना कोई ध्रोह, ध्रू प्रहलाद देण दुहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जिस ने लैणी खोह, चार कुण्ट कर रुशनाईआ। जन भगतां देवे ढोआ ढो, नाम अमोला झोली पाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना देणा चो, रस इक्को इक वखाईआ। पंज तत कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढणा गरोह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। आत्म

परमात्म परमात्म आत्म जाणा छोह, मिल मिल आपणा रंग वखाईआ। हरि का खेल ना जाणे को, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार चलदी रहिणी दो, गुर अवतार पैगम्बर ढोला सोहला जगत सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त श्री भगवान इक्को जोत सरूपी आया हो, होका शब्दी नाम सुणाईआ। सब तों उत्तम सृेष्ट नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा अन्त अखीरी छब्बी पोह, जिस दी वदी सुदी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। पोह कहे मैं जुग चौकड़ी वेखदा आया सन्त, गुर अवतार पैगम्बर गए मनाईआ। पुरख अकाल अगे सारे करदे गए मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सिध्धी किसे ना कीती हिम्मत, फड़ बाहों साचे धाम दए बहाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात निक्की निक्की वण्डदे गए सिम्मत, समां भाणे विच बिताईआ। प्रभ दी याद विच किसे दी दूर ना होई चिन्नत, चिन्ता विच सारे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पोह कहे मैं वेख्या जुग चौकड़ी चार, चार चार धार खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्मे सेवादार, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखे पनहार, दर ठांडे सीस झुकाईआ। भिच्छया मंगदे वारो वार, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। डण्डौत बन्दना सयदे अगम्म अपार, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। नाम कलमा रसना जिह्वा बत्ती दन्द उच्चार, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। रागां नादां विच पाया ना किसे शुमार, अन्त कहिण विच अन्त ना कोए जणाईआ। करया खेल आप निरँकार, निरगुण सरगुण हुक्म वरताईआ। शब्द संदेसा दे विच संसार, लोकमात करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता अगम्म अथाह बेपरवाह शहिनशाह कुदरत दा कादर ख़लक दा ख़ालक धुर दा मालक बेनज़ीर, मुकामे हक नज़री आईआ। पोह कहे मैं वेख्या जन भगतां दा यार, मुबीन इक्को नज़री आइंदा। जिस दे पैगम्बर ख़िदमतगार, सेवा इक्को इक समझाइंदा। जिस दा दर सोहणा दरबार, दरवाज़ा नज़र किसे ना आइंदा। सो दाता दानी खेल करे अगम्म अपार, बेपरवाह अगम्म अथाह आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी नित नवित आए वेस वटा, भेखाधारी आपणा भेख आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। छब्बी पोह कहे मैं आउणा लोकमात जगत, जुग जुग जीवण दाता दए वड्याईआ। सन्त सुहेले उठाउणे भगत, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। माण दवा के धुर दी संगत, हरि सतिगुर विच समाईआ। लेखा चुका के लहिणा देणा अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। सच बणाउणे साचे सन्त, साचा मार्ग इक दृढ़ाईआ। सोई सुरत मिलाउणा कन्त, आत्म परमात्म

जोड़ जुड़ाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक वखाईआ। गुरमुख बणाउणा बोध अगाधा पंडत, बिन विद्या करे पढ़ाईआ। लेखा चुकाउणा पंज पंकज, परम पुरख बख़्शणी इक सरनाईआ। झगड़ा मुकणा बहिश्त जन्नत, स्वर्ग चरणां हेठ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी शब्द अनामी इक्को घर वखाईआ। पोह कहे मैं वेखी परम पुरख दी रीत, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जो बैठा सदा धाम अनडीठ, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। निरवैर हो रहे अतीत, त्रैगुण विच ना कोए समाईआ। वण्ड करे ना मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ ना कोए बणाईआ। जिसदा हुक्म फ़रमाना शब्द अनादी इक्को गीत, दो जहान करे पढ़ाईआ। सो भगतां तन माटी करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। प्रीतम हो के वसे चीत, मन चित वित ठगौरी कोए ना पाईआ। साची भिख्या झोली पावे भीख, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। धुर दा कलमा दस्से हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। जिस ने पिछला समां चुकाया बीस इकीस, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सो खेल करे जगदीश, जगत जुग दए वड्याईआ। जिस दे सीस ते सिर तों बिना झुलणा सीस, सीस बिन जगदीश सोभा पाईआ। जिस दी चार जुग करदे रहे तमहीद, सिफ्तां विच सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के गए उम्मीद, आसा विच ध्यान वधाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल आपणा खेल करे ठीक, ठाकर हो के फेरा पाईआ। जिस दी धार जगत बारीक, समझ सके कोए ना राईआ। चौदां विद्या चौदां लोक चौदां तबक जिस दी करन ताअरीफ़, तरानयां विच राग अल्लाईआ। सो पुरख अकाला जन भगतां कटणहारा तकलीफ़, मुर्शद मुरीदां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पोह कहे मैं सम्मत शहिनशाही विच आया पहली वार, वारता पिछली दयां जणाईआ। श्री भगवान दा तक्क दरबार, दर दवारे सारे गया भुलाईआ। हकीकत हक वेख्या यार, जो याराना आदि जुगादि जुग चौकड़ी तोड़ निभाईआ। भगतां सन्तां नाल करे सच प्यार, प्रीतम हो के प्रेम वखाईआ। बणत बणा के सर्ब संसार, घर घर बैठा मुख छुपाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यार, निरगुण निरवैर निराकार रिहा वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ज़िमीं असमान, जिस दी करे ना कोए विचार, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे सर्ब संसार, वड संसारी बेपरवाहीआ। कल कल्की लै अवतार, जोती जाता हो उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, सन्त सुहेला सहिज सुखदाईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा कर्ज़ा दए उतार, मकरूज़ आपणी सेव कमाईआ। बिन शब्द करे गुफ़तार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। सनमुख हो के दए दीदार, भगत सुहेले मेल मिलाईआ। जिस दा लेखा लिखण पढ़ण तों बाहर, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। सो साहिब

स्वामी अन्तरजामी भगतां मिल्या आण, आनन फ़ानन आपणा लेखा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी नज़री आईआ। पोह कहे मैं परम पुरख दा इक्को अक्खर पढ़या, पढ़ पढ़ वज्जी वधाईआ। मैं मंज़ल अगम्मी चढ़या, जित्थे दूजा नज़र कोए ना आईआ। दर्शन कर के मेरा मेरे विच्चों ठरया, अग्नी तत रिहा ना राईआ। सच सरनाई सरनी पड़या, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। परम पुरख परमात्म किरपा कर के आप आपणे जिहा करया, एका दूजा भउ चुकाईआ। मैं बिन नईआ नौका झूठा जहान पार करया, दो जहान अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। अगे जा के जन भगतां पल्लू फड़या, गंढु आपणे नाल पुआईआ। ना जीवत ना कदे मरया, जीवन मरन विच कदे ना आईआ। सचखण्ड दवारा वेख के साचा घरया, गृह मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जित्थे बिना तेल बाती दीपक बलया, जोती जोत करे रुशनाईआ। निहचल धाम दिसे अटलया, अछल अछल्ल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सरन सरनाईआ। पोह कहे मैं देवां सच संदेसा, सब नूं रिहा सुणाईआ। जिस उपजाए विष्न ब्रह्म महेषा, काया तत दिती वड्याईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा नर नरेशा, नर निरँकार सोभा पाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी लिखे लेखा, अञ्जील कुरान देण दुहाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर देंदे गए संदेसा, धुर दा राग अल्ह़ाईआ। सो धार के आया अगम्मी वेसा, वेस आपणा रिहा बदलाईआ। जो जुग चौकड़ी रहे हमेशा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जन भगतां खोल्ह के आपणा भेता, भेव आपणा दए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म बण के नेता, निज घर परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देवे लेखा, रिषीआं मुनीआं . . . .। पोह कहे मैं तक्क के नूर नुराना, आपणी ख़ुशी मनाईआ। ढोला गीत गावां इक तराना, तुरीआ दा लेखा दयां मिटाईआ। झुलावां इक निशाना, जो निशानयां ख़ाक मिलाईआ। वेखां इक राजाना, जो राजयां दए सज़ाईआ। वेखां इक भगवाना, जो भगतां रिहा वड्याईआ। वेखां इक मकाना, जिस नूं सचखण्ड कह के सारे रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाईआ। पोह कहे मैं तक्कया उह पारब्रह्म, ब्रह्मवेता नज़री आईआ। जिस दी ना कोए ज़ात पात ना धर्म, वरन बरन ना वण्ड वण्डाईआ। जिस नूं बख़्शे सद आपणी सरन, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी सेवा करन, सो स्वामी साहिब सुखदाईआ। सो करनी दा करता आपणी करनी आया करन, कुदरत दा कादर ख़लकत वेखे नूर अलाहीआ। जन भगतां दे के अगम्मी सरन, सरनगति इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले आया फड़न, फड़ बाहों बाहर कढाहीआ।

३४
१६

गोबिन्द दा पूरा करे प्रण, परम पुरख प्रभ आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदर आपणी मंज़ल आया चढ़न, मंज़ल पैंडा ना कोए वखाईआ।

✪ ६ पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

३५
१६
तुहाडे पोटयां नाल वज्ज के बोली सतार, सति असति दोवें राग अलाईआ। उच्ची कूक कहे पुकार, सद होका इक अलाईआ। वजावणहारे हो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर दयां जणाईआ। रंग वेख उस निरँकार, जो निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं मुरीद मुर्शद दोवें करदे निमस्कार, बिन काअब्यों सीस झुकाईआ। बुल्ला अनायत दोवें दर भिखार, ख़ाली झोली रहे भराईआ। जो देवणहार सर्ब संसार, आदि जुगादि होए सहाईआ। उस दी सुणी अगम्मी गुफ़तार, जो बिना तन्द सतार वजाईआ। मिल उस अनोखे यार, जो धोखा अवर ना कोए जणाईआ। जिस दी अलिफ़ ये अक्खर ना पावण सार, वण्डण वण्ड ना कोए वखाईआ। उह दिलबर वेख मीत मुरार, मन वासना दए झुकाईआ। बिना अक्खां तों दए दीदार, अक्खीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। घर मन्दिर करे उज्यार, काया माटी सोभा पाईआ। बिन दीवे बाती कर उज्यार, कमलापाती जोत करे रुशनाईआ। साथी बण के धुर दा यार, सच दवारा दए वखाईआ। मुर्शद मिले मुरदयां दए जुआल, मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। तसबी माला पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास तों रखे बाहर, तीर्थ तट इश्नान ना कोए कराईआ। जिधर तक्कां उधर नज़री आए ज़ाहर, ज़हूर नूर आपणा दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सतार रिहा दृढ़ाईआ। सतार कहे मेरी पोटे नाल मिले आवाज, उंगलीआं भज्जण वाहो दाहीआ। वजावण वाले आपणे मुर्शद कोलों सिख उह राग, जिस दा सबक अवर ना कोए पढ़ाईआ। लोड़ रहे ना वुज़ू नमाज़, सजदयां विच ना सीस झुकाईआ। रसना देणी पए ना बांग, कन्नां विच उंगलां ना कोए रखाईआ। कूड़ा करना पए ना स्वांग, भेख धार ना बणखण्ड लभ्भणा पए थाउँ थाँईआ। साख्यात देवे दरस साख्यात, बिन ईद दीद चन्द करे रुशनाईआ। सतार कहे जिस नूं बुल्ले मन्नया यार, ओसदा खुल्ला सदा दरबार, मुट्ठी ख़ाक वेखे ख़ाकसार, अनायत अनायत करे आप निरँकार, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। सतार कहे मेरा सुणदे सर्ब संदेश, गीत रसना नाल अलाईआ। वजावण वाले ज़रा सच्ची मुर्शद नाल करके वेख प्रीत, प्रीतम तेरे अंदरों नज़री आईआ। जिस दी कलमयां तों बाहर हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। सूफ़ीआं दस्से रीत, पैगम्बरां करे शनवाईआ। लेखा चुका के दन्द बतीस, जेहवा ज़बान कलाम ना कोए सखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सतार ढंडोरा रिहा लगाईआ। सतार कहे मैं उच्ची कूक कूक देवां होका, आप आपणा राग बदलाईआ। मुर्शद लभ्भे ना किसे विच्चों चौदां लोका, चौदां तबक देण दुहाईआ। जिन्हां नूं परवरदिगार सांझा यार परम पुरख परमात्म आत्म मिलण दा आप देवे मौका, मुकम्मल आपणी दया कमाईआ। ओह गुरमुख जगत विकार विच कदे ना खावे धोखा, कूड़ी क्रिया विच कदे ना आईआ। उस नूं धुर दा मालक मुर्शद मिल जाए सौखा, मुरीद आपणे लए बणाईआ। रहिण देवे जन्म करम दा ना कोए रोसा, रुसयां गोद उठाईआ। तन वजूद लेखे ला के जुस्सा, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। बुल्ल्हे वांग अंदरों मिटा के गुस्सा, गुसल करा के अंदर मुस्लिमानी विच्चों बाहर कढाहीआ। भेव रहे कोए ना दूजा, इक्को एक नज़री आईआ। जिस दा शब्द इशारा गुझा, रमज़ हक हक सुणाईआ। सतार कहे सतार वजाओण वाले उहनां दा पैंडा मुक्का, जिन्हां नूं मुकम्मल मुर्शद मिल्या बेपरवाहीआ। सतार कहे सुत्ता उठ, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जे मुर्शद तेरा तेरे उत्ते जाए तुठ, अणमंगी, दौलत झोली पाईआ। कोई परदा ओहला रहे ना लुक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अमृत आत्म जाम प्या के घुट, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। मन वासना जगत विकार अंदरों कढ्ढे कुट्ट, हुक्मे करे सफ़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अंदर सुहाए मौले साची रुत्त, पत्त डाली आप महकाईआ। सहिज सुभाउ बिन हथ्थां बाहां मुर्शद मुरीद लए चुक, गोर कबर विच्चों कढाहीआ। सतार कहे जे मालक हो जाए खुश, फेर तसबी माला दी लोड़ रहे ना राईआ। सतार कहे मैं उंगलां नाल रही वज्ज, वज्हा सब नूं रही बतलाईआ। कदमे मुर्शद मुरीदां हज्ज, मक्का काअबा हज्ज कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां दे अंदर आपणे नाम दी सच्ची दिती सद, ढोला तूं ही तूं ही गाईआ। ओह मंज़ल पार कर गए हद, लिखण पढ़न दा लेखा गए मुकाईआ। मुकामे हक दर्शन करन रज्ज, महबूब इक्को नज़री आईआ। सतार कहे बेशक बुल्ल्हे दे सारे गाउँदे छन्द, शहिनशाह मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। सतार कहे मैनूं खुशी होई अज्ज, कहाणी आपणी रही सुणाईआ। मेरी पुकार कहे रग रग, तार तार दए दुहाईआ। किल्ली मरोड़ा देवे नप्प नप्प, पासा रही बदलाईआ। अंदर ख़ाली खुशीआं नाल किहा हस्स, हस्ती आपणी रिहा बदलाईआ। सेवा करदे वेखे दोवें हथ्थ, उपर नीचे भज्जण वाहो दाहीआ। कल्ले नाल रही सज, सज्जण मिल के मिली वड्याईआ। मस्ती वेख खुमारी अक्ख, अक्खीआं गई बदलाईआ। सतार कहे जिंना चिर धुर दा मुर्शद अन्तर आत्म ना करावे आपणा हज्ज, हाजत पूर ना कोए कराईआ। मैं उहनां नूं रही सद्द, सद्दे देवां थाउँ थाँईंआ। जेहड़े बिरहों विछोड़े विच रहे दग़, आप आपणा गए मिटाईआ। लख चुरासी विच्चों उहनां लभ्भ, फड़ रही उठाईआ। उठो वेखो इक्ट्ठे हो के सब, सति इक्को दयां वखाईआ। जित्थे नाम प्याला

मिले धुर दी मद, मैख़ाने वज्जे वधाईआ। भगत सन्त सूफ़ी पीण रज्ज, साकी इक्को रिहा वरताईआ। बुल्ले वरगे चरणी रहे ढठ्ठ, सिर उपर ना कोए उठाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नद, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। निरगुण जोत दीपक रिहा जग, तेल बाती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिना चार दीवारी धुर दा हज्ज, महिराब अहिबाब ना कोए वखाईआ। जेहड़े मुर्शद तों होए अलग्ग, तिन्हां मिले कोए ना थाँईआ। जो चरणी गए ढठ्ठ, तिन्हां डिगयां गले लगाईआ। सतार कहे मैं हो के बेवस, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। गुरमुखो प्रभू दे प्यार अंदर जाओ फस, फाँसी गल दी लवो कटाईआ। मेरी फेर पूरी होवे आस, आहिस्ता आहिस्ता दयां सुणाईआ। जे वजावण वाले तैनूं जाए कुझ भास, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। फेर मेला हो जाए नाल पुरख अबिनाश, जन्म मरन दी लोड़ रहे ना जाईआ। क्यों तूं मेरा दिता साथ, मैं तेरी दयां गवाहीआ। उहनां तों सिख लै जाच, जो जाचक हो के प्रभ दी सेव कमाईआ। जिन्हां पढ़ी नहीं कोई किताब, कुतबख़ाने ना फोल फुलाईआ। इक्को वेख के हक जनाब, हुक्म विच चलण चाँईं चाँईआ। मैं ओस दी होवां सदा मुहताज, दर दवारे अलख जगाईआ। जिस गुर अवतार पैगम्बर दिते साज, कलमा नाम करे पढ़ाईआ। उस दा गृह इक आबाद, दुआर साचा नज़री आईआ। जिस दी बुल्ले शाह बिना बुल्लां तों करदा गया याद, अंदरे अंदर आस रखाईआ। सो मुर्शद साख्यात, सखीआं दा काहन सब दा मालक स्वामी खेल खिलाईआ। मेहर नज़र नाल मुहब्बत देवे दात, सोहबत जगत वड्याईआ। मन शिकवे दूर करे भरम भरांत, भय भउ देवे चुकाईआ। सतार कहे उसदे कोलों कुझ लै के जाईए सुगात, जो सुख सागर विच समाईआ। मैनूं सब तों वक्खरी नज़र आई प्रभात, सुबह सवेर वज्जी वधाईआ। मिल स्वामी सज्जण कमलापात, पत्तन वेख पत्रा दिता उलटाईआ। मैं तन्द सतार हो के पंजां तत्तां दे मालक तैनूं रही आख, मुर्शद ख़ालस ख़ालस इक्को नज़री आईआ। सतार कहे जिस वेले उंगली मैनूं लग्गे तुरत, नाता मेरे नाल जुड़ाईआ। मेरी खुल्ही अंदरों सुरत, सुती लई अंगड़ाईआ। नज़र आई अकाल मूर्त, मुर्शद बेपरवाहीआ। जिसदी दस्स ना सके कोए सूरत, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिसदा नाम निधान अगम्मी तूरत, तुरीआ दए दुहाईआ। सो सर्ब कला भरपूरत, शाह पातशाह शहिनशाहे शहिनशाहीआ। ना नेड़े ना दूरत, घर घर डेरा लाईआ। चरण चरणामत देवे सच्ची धूढ़त, धुर टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। चोली रंग चढ़ावे गूढ़त, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। लेखे लाए दर आए मूर्ख मूढ़त, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ। सतार कहे जिस मुर्शद कोलों पूरी होवे ज़रूरत, उह मुर्शद सच्चा बेपरवाहीआ। आपणे जन्म दी जन्म विच्चों करा लवां महूरत, घड़ी पल वेला वक्त सोहणा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा भगतां नूरत, नूर नुराना

घर गृह करे रुशनाईआ। बेपरवाह शिकवा कढ्ढे शकूक, शक रहिण कोए ना पाईआ। मुरीदां मुर्शद देवे हकूक, वस्त अमोलक आप वरताईआ। ज़रा आशक नाल बण के वेखो माशूक, मुश्कल सारी हल कराईआ। बिना अल्फ़ ये तों पढ़ावे उह हरूफ, जिस दी चौदां विद्या समझ ना कोए समझाईआ। इक प्रेम प्यार मुहब्बत विच करे मसरूफ़, दूजी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। भाग लगा के काया काअबे कलबूत, परदा ओहला दए उठाईआ। हरि स्वामी मिले महबूब, मुहब्बत आपणी इक जणाईआ। महल अटल दस्स उच्च अर्श अरूज, सच दवारा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह बेपरवाही विच मिलाईआ। बेपरवाह रहिण ना देवे शक, शकायत नज़र कोए ना आईआ। हकीकत विच्चों देवे हक, हिकमत आपणी नाल आपणा रंग चढ़ाईआ। आपणे मिलण दी खोल्हे उह अक्ख, जलवा नूर करे रुशनाईआ। जिस नाल मुरीद सदा मुर्शद नूं लए तक्क, बाहरों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। भठयारा बण के झोकणा पए ना भठ्ठ, जंगल जूह ना कोए फिराईआ। लेखा चुका के तत अठ्ठ, नौ दवारे डेरा देवे ढाहीआ। घर सज्जण स्वामी मिल के पए हस्स, हस्ती विच्चों हस्ती दए वखाईआ। जिस दा सुरंगी सितार उंगला मुख ज़बान नाल मिल के गावे जस, मन मति बुध सिफ्त सालाहीआ। उह मुर्शद मुरीदां अंदर सदा रिहा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। बेपरवाह आपणी बेपरवाही विच्चों लवे लभ्भ, नव सत्त खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जाणे सब के सुहब्ब, हबीब रकीब तबीब ज़जीब अजब अजूब अजे आपणी कार कमाईआ।

✪ १० पोह शहिनशाही सम्मत १ खूण कैंप जम्मू ✪

धरनी धरत धवल कहे मोहे खुशी महान, बिहबल हो के रही सुणाईआ। किरपा करी श्री भगवान, भगत वछल दया कमाईआ। प्रेमी प्यारे वेखे आण, सन्त सुहेले खोज खुजाईआ। अन्तर आत्म दे के ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक दृढ़ाईआ। नाता तोड़ के कूड़ जहान, आत्म परमात्म ल्या जुड़ाईआ। शब्द अनाद दे सच्ची धुन्कान, अनहद रागी राग सुणाईआ। निर्मल जोती जोत जगे महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अमृत रस ठांडा दिता पीण खाण, जगत तृष्ना अग्ग बुझाईआ। जुग चौकड़ी जर्म कर्म दे विछड़े मेले आण, लख चुरासी पन्ध रिहा मुकाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ा बबान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पार कराईआ। धुर दा दे के नाम निधान, तोला इक्को इक तुलाईआ। चौदां विद्या नैण शरमान, चौदां तबक सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची शरनाईआ। धरनी कहे मोहे चाउ

घनेरा, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले मेरा, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भाग लगाए साचे खेड़ा, बन्द किवाड़ी दए खुल्हाईआ। भरमा ढाए डेरा, भय भउ ना कोए दृढ़ाईआ। नज़री आवे नेरन नेरा, घर स्वामी सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता दुआपर विछोड़ा कट ल्या बथेरा, जुग जुग आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दयाल ठाकर कृपाल सच स्वामी आपणी करनी मेहरा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते हस्से तम्बू, खुशीआं नाल ढोला गाईआ। भाग लग्गा देश जम्बु, सत्त दीप वज्जी वधाईआ। किरपा करे दीनांबंधू, बन्धन भगतां रिहा तुड़ाईआ। मेहरवान मेहर नज़र करे सागर सिन्धू, गहर गम्भीर फेरा पाईआ। मन वासना मेटे चिन्दू, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जिस ने इक्को रंग रंगाउणा मुस्लिम सिख ईसाई हिन्दू, हिरदा हरि हरि वेख वखाईआ। जिस नाम निधान कोए ना निन्दू, चार वरन अठारां बरन करन पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। धरनी कहे मैं बोलां सच जैकारा, सति सतिवादी दिती वड्याईआ। जन भगतां मिल्या मीत मुरारा, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा सोहणा धुर दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सो निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लोकमात लए अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। जिस दे दर विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। तेई अवतार करन निमस्कारा, नमो नमो रहे जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बण भिखारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। गुर दस बोल जैकारा, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। चारे जुग नेत्र नैण शरमसारा, अक्ख प्रतख ना कोए उठाईआ। सो खेल करे अगम्म अपारा, अलख अगोचर शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकारा, अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए दुहाईआ। जो ठाकर स्वामी अन्तरजामी हर घट वस्या मीत मुरारा, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक फेरा पाईआ। धरनी कहे अज्ज मैनूं कहो धरत, धवल मिली वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सांझा यार आया परत, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जिस दा नूर किसे नज़र ना आए उत्ते अर्श, नैण नैण ना कोई मिलाईआ। सो निरवैर निराकार खेल करे उपर फ़र्श, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, दर घर साचे सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलया दर्दीआं दुःख वण्डे दर्द, दीनां अनाथां होए सहाईआ। जिस दे अगे गुर अवतार पैगम्बर बेनन्ती करदे गए अरज़, डण्डावतां विच सीस झुकाईआ। सो भगत सुहेला इक अकेला कलयुग अन्तिम पूरी करे ग़रज़, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। धरती कहे मेरा वक्त सुहजंणा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। मिल्या परम पुरख प्रभ आदि निरँजणा, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। भगतन मीता धुर दा सज्जणा, ठाकर हो के वेख वखाईआ। जिस इथे ओथे दो जहानां परदा कज्जणा, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। जिस दा इक्को सजदा इक्को बन्दना, नमस्ते इक्को रिहा सिखाईआ। साचा देवे अन्तर आत्म इक अनन्दना, कूड़े रस दी लोड़ रहे ना राईआ। सच प्रकाश चढ़ावे चन्दना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। गुरमुखां बन्न के साचे सगना, सगला संग रखाईआ। जन भगतां दूजा दर ना पए मंगणा, वस्त अमोलक काया गोलक इक्को नाम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। धरनी कहे मेरा वक्त सोहणा सुहावा, सोभावन्त जणाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा निरगुण सरगुण बन्न्हदे गए दाअवा, लोकमात लेख लिखाईआ। जिस दे दर दुआर इक्को शब्द इक्को नावां, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो खेल करन आया लोकमात बिन हथ्थां बाहवां, भुजां चार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। धरनी कहे मैं की दस्सां, पूरब लेखा रही जणाईआ। मैं सप्त ऋषी वेखे नाल अक्खां, बिन नेत्र नैण उठाईआ। जिन्हां दे पत्तल उत्ते हथ्थां, वस्त नज़र कोए ना आईआ। मिन्नता करन कोटन लखां, प्रभ नूं रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। धरनी कहे सप्त ऋषी लाया डेरा, डण्डौत इक्को इक जणाईआ। ना कोई गुरू ना कोई चेरा, चेला गुर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई नगर ना कोई खेड़ा, ग्राम पिण्ड ना कोए बणाईआ। ना कोए दूर ना कोए नेड़ा, घर मन्दिर ना कोए वखाईआ। ना कोए शेर ना कोए केहरा, ना कोए जम्बुक रूप दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धरनी कहे सप्त ऋषी करन अरदास, बेनन्ती हरि जणाईआ। कुछ वस्त नहीं साडे पास, भुक्खे देण दुहाईआ। उत्तों महीना पोह दी रात, रैण दए गवाहीआ। ना संधया ना कोए प्रभात, मध रूप ना कोए वखाईआ। ना कोए डाली ना कोए पात, भोजन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोए बरतन ना कोए भात, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। इक मन हो के बैठ एकांत, इक्को ध्यान लगाईआ। प्रभ तेरी ओट तेरी आस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। धरनी कहे सप्त ऋषीआं लग्ग गई अक्ख, निंद्रा आलस विच समाईआ। करया खेल पुरख समरथ, शब्दी बणत बणाईआ। आपणे भगत वखाए प्रतख, जो सांतक सति विच समाईआ। कोट पदार्थ उहनां अगे दिते रख, थाउँ थाँईं आप टिकाईआ। सहिज सुभाउ सप्त ऋषीआं ला के हथ्थ, सवाधान दिते

कराईआ। इशारे नाल दिता दस्स, अक्खीआं नाल अक्ख उठाईआ। भगत सुहेले इक्को रंग अंदर रहे रत, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। नाता तोड़ के पंज तत, प्रभ दे विच समाईआ। धुर आवाज आई जगत भण्डारा लवो छक, शहिनशाह सुणाईआ। तुहाडी झोली पावां हक, हकीकत आपणी दयां दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा सुणाईआ। सप्त ऋषी होए हैरान, अक्ख भगतां नाल उठाईआ। की एहनां आया ज्ञान, जो बैठे आपणा आप भुलाईआ। ना कुझ पीण ना कुझ खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए वधाईआ। ना कोई रसना जेहवा बत्ती दन्द देण ब्यान, ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। ना कुझ रसना जेहवा दस्सण ना कुछ सुणन कान, अक्ख प्रतख ना कोए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सप्त ऋषी आई आवाज़, धुर शब्दी आप सुणाईआ। अंदर वेखो अगम्मी राज़, रमज़ आपणी इक दृढ़ाईआ। एह मेरे विच विस्माद, दूजा रूप ना कोए बणाईआ। मैं भगत उधारां जुगादि आदि, एहो मेरी वड्याईआ। बिन तृष्ना भुक्ख मैनूं रहे अराध, एह प्रभ ने दिता जणाईआ। ढोला पढ़दे बोध अगाध, बिन अक्खरां रहे गाईआ। सच प्रीती विच गए लाग, लग मातर बाहर वाली भुलाईआ। धुंन आत्मक सुण के नाद, मस्त खुमारी वज्जी वधाईआ। सच प्रेम अंदर जावण जाग, जगत वलों नेत्र बन्द वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। धरनी कहे सप्त ऋषी जोड़ के हथ्थ, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, शाह पातशाह तेरी शरनाईआ। दर दवारे गए ढठ्ठ, माण अभिमान ना कोए बणाईआ। झूठा नाता तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। लेखे लग्गे तेरी तेरे रत्त, रतन अमोलक हीरे लै बणाईआ। भेव दस्स कमलापति, दर तेरे मंग मंगाईआ। पुरख अकाल प्या हस्स, खुशीआं राग सुणाईआ। जो मेरे हो गए वस्स, मैं ओनां अन्तर रिहा समाईआ। तृष्ना भुक्ख तों लवां रख, दुखियां दुःख मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के सच सुच देवां सति, सति सतिवादी हो के होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। सप्त ऋषी कहिण सुण ठाकर स्वामी, हरि सतिगुर दे जणाईआ। परम पुरख प्रभ अन्तरजामी तेरी ओट तकाईआ। कवण अगम्मी सुणदे बाणी, प्रभ की की राग सुणाईआ। केहड़ा अमृत पींदे पाणी, रस रसना ना कोए चखाईआ। केहड़ा नाद सच्चा धुनकानी, धुनी इक्को रिहा वजाईआ। किस बिध कीती प्रभू मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। सानूं भुख विच परेशानी, तृष्ना नाल कुरलाईआ। जलवा तेरा तक्कीए जोत रुहानी, नूरो नूर डगमगाईआ। तूं मालक पिता इक असमानी, ख़ाकी बन्दे दे समझाईआ। तूं दाता गुण निधानी, गहर गम्भीर अख्वाईआ। हम जीवत जीव प्राणी, बेपरवाह तेरी ओट

तकाईआ। एह जूह दिसे बेग़ानी, घर मन्दिर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दे जणाईआ। श्री भगवान कर इशारा, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। सप्त ऋषी वेखो नज़ारा, बिना नज़रां दयां वखाईआ। मेरा नाउँ नर निरँकारा, निरगुण जोत करां रुशनाईआ। मेरा खेल सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। मेरा रूप तेई अवतारा, पैगम्बर मेरा नूर रुशनाईआ। मेरी धार गुरू गुर धारा, धरनी धरत धवल दयां वड्याईआ। मेरा खेल विच संसारा, वड संसारी हो के आप कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादारा, नित नवित सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण मेरा जैकारा, सिफ्ती ढोले गाईआ। चारे खाणी मेरा वणजारा, चारे बाणी राग अलाईआ। चारे वरन मेरा पनहारा, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। चारे युग करां किनारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। नव नौ चार पिच्छो कल कल्की लै अवतारा, निहकलंक निरगुण जोत करां रुशनाईआ। फिर लहिणा देणा पूरब वेखां सारा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सप्त ऋषी चरणी लग्ग, बिन चरणां सीस निवाईआ। तूं साहिब सूरा सरबग्ग, शहिनशाह वड्याईआ। असीं आसा रखीए अज्ज, बैठे अक्ख खुलाईआ। तेरी सरनी बैठे सज, निउँ निउँ लागे पाईआ। पुरख अकाल पकड़ के हथ्थ, शब्द इशारे दिता हिलाईआ। तुहाडा उधार भगतां वथ, भगवन हो के दयां वरताईआ। त्रेता द्वापर कलयुग जाए लँघ, वेला वक्त अन्त सुहाईआ। भगतां बण के धुर दा संग, सगला संग वखाईआ। ना कोई सेजा ना पलँघ, बिस्तर सच ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सप्त रिख कहिण की प्रभू वक्त सुहावेंगा। जुग जुग आवें लहिणा देणा देण, निरगुण सरगुण वेस वटावेंगा। भगत सुहेला बणें साक सज्जण सैण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावेंगा। कूड़ा नाता तोड़ के भाई भैण, मीत मित्र इक दरसावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा की खुलावेंगा। पुरख अकाल शब्द जणाउँदा ए। धुर दा राग इक अलाउँदा ए। सप्त रिख आप सुणाउँदा ए। बिन अक्खरां लेखा लिख, लेखा आपणे विच छुपाउँदा ए। जग नेत्र किसे ना आए दिस, लइणा नाल ना कोए पढ़ाउँदा ए। सच प्रीती कर के हित, अगला भेव आप खुलाउँदा ए। कलयुग कूड़ी मेट के रेख, ऋषी मुनी नज़र ना कोए आउँदा ए। भाग लगा के साचे देस, सम्बल नगर इक सुहाउँदा ए। निरगुण नूर जोत कर प्रवेश, परमेश्वर आपणा रूप वटाउँदा ए। जो आदि जुगादि रहे हमेश, नित नवित आपणी कार कमाउँदा ए। तुहाडा लेखे ला के इक संदेश, सुनेहड़ा आपणे नाल रलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक फ़रमाउँदा ए। धुर दा हुक्म इक जणावांगा। सप्त ऋषी सच समाझावांगा।

धुर दी लिखी पूर करावांगा। वदी सुदी मिती सर्ब मिटावांगा। चार वरन अठारां बरन नवीं सिक्खी इक प्रगटावांगा। खेल करां अनडिठ्ठी, जग नेत्र नज़र ना आवांगा। जिस वेले खलक अंदरों बाहरों पिट्टी, नेत्र नैणां सर्ब रवावांगा। प्रभ दी धार किसे कूट ना दिस्सी, चार कुण्ट अन्धेरा छावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक वरतावांगा। धुर हुक्म इक वरताएगा। प्रभ आपणा खेल खिलाएगा। एह धरती एह भूमिका एह धरनी रंग रंगाएगा। एह लेखा धुर दे कानून दा, ना कोए मेटे मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कर वखाएगा। सप्त ऋषी सीस झुकाउँदे ने। दोए जोड़ वास्ता पाउँदे ने। दर ठांडे मंग मंगाउँदे ने। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाउँदे ने। गल पल्लू पा के झोली डाहुन्दे ने। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे अलख जगाउँदे ने। सप्त ऋषी कहिण प्रभ किरपा धार, किरपन हो के मंग मंगाईआ। किस बिध लेखा देवें विच संसार, लहिणा झोली पाईआ। साचे भगतां करें प्यार, भगवन हो के होएं सहाईआ। भुक्ख्यां दएं सहार, दुखियां दुःख मिटाईआ। जिन्हां पत्तलां तों भरे भण्डार, वतन बेवतनां दएं बणाईआ। साचे प्रेम दी खिड़ा के गुलज़ार, गुलशन आपणा गुल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दे जणाईआ। सप्त ऋषी कहिण प्रभू अगला दस्स हाल, बिन रसना जेहवा मंग मंगाईआ। किस बिध चलें अवल्लड़ी चाल, जुग चौकड़ी पार लँघाईआ। भगतां बणें दलाल, सेवक हो के सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों करें बहाल, फड़ बाहों बाहर कढाहीआ। लेखे लावें शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात ना कोए वखाईआ।सच्च दवारे आ के पुच्छें हाल, अहिवाल आपणा दएं दृढ़ाईआ। सरन सरनाई लएं बहाल, दर दवारा इक वखाईआ। समरथ पुरख ओस वेले जे सानूं रखें नाल, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। असीं तक्कीए सच दीदार, जो भगत सुहेले सोभा पाईआ। विच कूड़ी रहे ना कोए दीवार, परदा ओहला ना कोए जणाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, औखी घाटी ना कोए वखाईआ। सहिज सुभाउ करीं प्यार, प्रीतम हो के प्रेम कमाईआ। उस वेले चरण कँवल करीए निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साची थित दस्स जा वार, वारता आपणी दे दृढ़ाईआ। जिस दा इतहासां विच नहीं कोई शुमार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अन्त कहिण ना पाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, दीन दयाल दए वड्याईआ। जिस वेले जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। निरगुण जोत लवां अवतार, कोई ना जम्मे पिता माईआ। वसां नगर अगम्म अपार, जित्थे सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। मण्डल मण्डप ना कोए सतार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ला पर्बत नज़र कोए ना आईआ। ना कोए गुरू ना अवतार, पैगम्बर रूप ना कोए बदलाईआ। ना कोए शब्द नाद धुन्कार,

ढोले गीत ना कोए सुणाईआ। ना कोई काग़ज़ कलम कातब लिखे लखार, ना कोए अक्खरां वण्ड वण्डाईआ। इक इकल्ला हो के इक ओंकार, आपणी कला दयां वरताईआ। चारे बाणी ना पावे सार, बुद्धी विच विचार ना कोए रखाईआ। मेरे शहिनशाही सम्मत दा किसे नहीं आउणा शुमार, हिन्दसयां विच अंक ना कोए दृढ़ाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होणी गदार, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू लैण छुडाईआ। उस वेले लहिणा देणा दयां उधार, लेखा पूरब दयां चुकाईआ। पोह महीना होवे ठंडा ठार, रुत्त आपणी नाल रखाईआ। भगत सुहेले जगत दवारयों कढु के बाहर, साची धरनी देवां बहाईआ। प्रीती भोजन दयां खुआल, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। निरगुण हो के देवां दीदार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सप्त ऋषी वेखणा आण नाल, संदेसे नाल मिलाईआ। दूजा पावे कोए ना सार, तीजे चले ना कोए चतुराईआ। चौथे वणज ना कोए वपार, पंजवां रूप ना कोए वखाईआ। छेवें दर ना कोए दवार, सत्तवें सत ना कोए वखाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां वेखणी पैंदी मार, नौवें नौ दर होए हल्काईआ। दसवें दहि दिशा होए उज्यार, पोह दस वज्जे वधाईआ। सप्त ऋषी करन विचार, वेला उहो गया आईआ। जिस दा भविख्तां विच किसे नहीं दिता शुमार, शरअ सक्या ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले वेख वखाईआ। धरनी कहे उह वेला आया वक्त, मैं खुशीआं ढोले गाईआ। प्रभ ठाकर वेख्या विच जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। चरण कँवल बहा के गुरमुख भगत, भाग उहनां झोली पाईआ। जिन्हां कारन आया परत, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। पूरब लहिणा लाहवे कर्ज़, मकरूज लेखा रिहा चुकाईआ। जिस दा खेल कोए ना सके समझ, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। नाम दे इशारे ला के रमज़, सन्त सुहेले लए जगाईआ। बिना तबीब हकीम तों वेख के नब्ज, हरारत अंदरों दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता वेख वखाईआ। धरनी कहे मेरी भागां भरी रुत, रुतड़ी प्रभ महकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत्त, चिरां पिच्छो रिहा मिलाईआ। जन्म करम दी मेट के भुक्ख, तृष्ना रिहा गवाईआ। जिस ने अगला देणा सुख, सुख सागर इक्को रिहा सुहाईआ। भगतन मीता आपणी गोदी चुक्क, चारों कुण्ट रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। धरनी कहे मैं वेखे भगत सुहेले, जग वक्खरे नज़री आईआ। जो आत्म परमात्म कर के मेले, दूजी तृष्ना गए गवाईआ। जगत विहार तों हो के विहले, सम्मत शहिनशाही रिहा मिलाईआ। इक्को रंग हो के गुरू चेले, चेले गुरू रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाईआ। धरनी कहे मैं वेखे भगत प्यारे, जो परम पुरख रहे मनाईआ। जिन्हां दे पिछले पूरे होए लारे, अगला लहिणा दए समझाईआ।

४५
१६

पुरख अकाल आउण वाला विच अखाड़े, नव सत्त लए वखाईआ। चुरासी चब्बे आपणी दाढ़े, ना सके कोए बचाईआ। जग्गां विच नहीं सुहणे लाड़े, लाड़ी मैहन्दी हथ्थ ना कोए रंगाईआ। दर घर फिरने राजे राणे, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। अमीर वज़ीरां नहीं मिलणे खाणे, ख़ाकसार सर्ब लोकाईआ। जन भगतां गाउणे सोहँ गाणे, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। अगले साल सारे होण वाले बेगाने, मित्र यार ना कोए जणाईआ। विद्यावान होणे दीवाने, समझ समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार वड्याईआ। धरनी कहे जन भगतां वेख्या जोग, जिन्हां ने जुगती मैनूं दिती समझाईआ। अंदरों कढु के चिन्ता रोग, सोग सो कदमां हेठ दबाईआ। आत्म परमात्म कर के धुर संजोग, सज्जण मिल के खुशी वखाईआ। भावें ताहने देवण लोक, फिर वी सोहँ ढोला रहे गाईआ। आपणे घर दी मानण मौज, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। भावें दर्शन करन रोज़, निज घर बैठा नज़री आईआ। सप्त ऋषीआं पिच्छे करन आया चोज, धरनी धवल देवे गवाहीआ। जिस दी करदे सारे खोज, नेत्र लोचण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुहणा वक्त रिहा सुहाईआ। धरनी कहे जन भगतो एह ना जाणयो जंगल, जग्हा पिछली नज़री आईआ। जित्थे भगतां ऋषीआं वेख्या मंगल, मंगलाचार शब्द सुणाईआ। डण्डावत कर के बन्दन, बन्धन गए तुड़ाईआ। ओसे दे दवारे आए मंगण, फिर फिर फेरी पाईआ। सन्त सुहेले चढ़े चन्दन, नूर चन्द रुशनाईआ। परम पुरख बणया संगण, सगला संग निभाईआ। नाम भण्डारा आया वण्डण, वस्त अमोलक झोली पाईआ। टुट्टी आया गंढुण, आत्म परमात्म गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे जन भगत ना होयो उदास, उदास वेख्यो सर्ब लोकाईआ। जिन्हां दे कोल प्रभ दे नाम दी नहीं रास, रस्ते भुल्लणे पाँधी राईआ। एथे ओथे ना लभ्भणा साथ, दोवें जहान देण दुहाईआ। नाता तुटणा कूड़े साक, सज्जण सैण ना कोए बणाईआ। कूड़ी क्रिया रुलणा ख़ाक, धूढ़ी धूढ़ विच उडाईआ। बिन भगतां प्रभू मिलणा नहीं किसे बाप, पिता गोद ना कोए टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सोहँ करदे गए जाप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाधा तुहाडे नाल रखाईआ। इस दा भेव किसे नहीं पाया एसे करके बेअन्त किहा साफ़, सुफ़नयां विच सुणन कोए ना पाईआ। भावें निरगुण सरगुण रूप धरदा रिहा आप, फिर वी आपणा परदा आपणे विच लुकाईआ। खुशीआं नाल ढोले गीत गाउँदी अज्ज दी रात, रुत वेख खुशी मनाईआ। किस बिध नाल भगतां इक्ठी होई जमात, घर बार छड्ड के बैठे सोभा पाईआ। धन दौलत ना कोई पास, इक्को ओट रहे तकाईआ। घर दे करके बन्द कुफ़ल ताक, परदा अंदरों रहे चुकाईआ। बीस इकीसा कहे मैं पूरा करके पिछला वाक,

महीना चेत आया समझाईआ। शहिनशाही दा जो सम्मत चलणा कायनात, चार कुण्ट वेख वखाईआ। सब तों पहलों बदलणा तुहाडा हालात, कन्ढी वाले कंढिउँ आप उठाईआ। पंदरां दिवस दा पहला फ़साद, वाक् पिछला याद कराईआ। अगे लैणी पए ना किसे कोलों इमदाद, मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच दवारे कर आबाद, भगत सुहेले लैणे वसाईआ। जित्थे इक्को प्रीतम आवे याद, दूजा प्रेम ना कोए बणाईआ। पूरब जन्म सुण फ़रयाद, सप्त सरिख नाल मिलाईआ। अगे करयो ना कोए मजाज, मज़ा चार कुण्ट दए चखाईआ। जिस दे हुक्म अंदर देणा नहीं किसे जवाब, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। इक्को दे सीस उत्ते सुहणा ताज, ताजां वाले ख़ाक मिलाईआ। आत्म परमात्म साचे नाम दा चलाउणा रवाज, इक्को मार्ग देणा वखाईआ। ना कोई रोज़ा रहे नमाज़, बगलां विच कुरान ना कोए उठाईआ। ना कोई जगत वण्ड रहे समाज, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोए चतुराईआ। इक्को सब ने सुणना सच्चा राग, आत्म धुन वज्जे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी दा लेखा वेख वखाईआ। सुण धरनी तूं अन्तिम बात, सच दयां जणाईआ। प्रेम प्यार दा साचा भात, जन भगतां दिता खवाईआ। लेखे लग्गी अनोखी रात, रैण वज्जी वधाईआ। सप्त ऋषी आए मात, मथ्थे टेक सीस झुकाईआ। भगतां पूरा होया फ़ाक, फ़ाके विच ना कोए रखाईआ। पिछला लहिणा होया बेबाक, अगला हिसाब दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुण धरती इक बात अवल्ली, सहिजे दयां जणाईआ। तूं वेखीं इक इकल्ली, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। परम पुरख प्रभ आया योद्धा सूरबीर बली, बलधारी वेस वटाईआ। जिस नूं सजदा करदा मुहम्मद अली, अलाह कह के नाअरा लाईआ। जिस दे पिच्छे सीस धरदे गए तली, गोबिन्द बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। जिस दे कारन तूं फुली फली, पत्त डाली रही महकाईआ। प्रभ वेख वलीआं दा वली, जो वलीअहद अगे शब्द इक बणाईआ। जिस दे अगे पेश ना किसे चली, गुर अवतार पैगम्बर गए सीस झुकाईआ। ओस ने दो जहान मचाउणी तरथल्ली, जल थल रिहा कुरलाईआ। तूं होका दे दे गलीओ गली, नौ खण्ड सत्त दीप कुरलाईआ। हुक्मे अंदर हो जा पाग़ल झल्ली, आपणी मति दे गवाईआ। कबीर जुलाहा हथ्थों सुट के नली, नर नरायण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवणहारा थाउँ थाँईंआ। धरनी सुण देवां इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सोहे भूमिका अस्थान, वज्जे सच वधाईआ। भगतां मेल श्री भगवान, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। सब दा लेखे लग्गा पीण खाण, सप्त ऋषी हस्स हस्स देण गवाहीआ। एह कोई जगत वाला नहीं दीवान, रागां वाली ना कोए पढ़ाईआ। जुग जन्म चौकड़ी लहिणा आया चुकाण, चुकन्ने हो के आपणी

झोली लैणी भराईआ। बेशक जन भगतो तुसां आपणे घर बार छड्डे मकान, दवारा इक्को नज़री आईआ। तुहाडे दर दा उह महिमान, जिस नूं महबूब करके सारे सीस झुकाईआ। बिना कल्मयों बिना नाम तों तुहाडी करके जाए कल्याण, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। अगे सृष्टी ते वड्डा चढ़े तुफान, तोबा तोब लोकाईआ। तुहानूं इसे तरां मिलदा रहे आण, अंदर बाहर करे रुशनाईआ। शब्दी गुर नूं दे के कमान, कामल मुर्शद हुक्म सुणाईआ। किसे नूं लैण नहीं देणा अराम, हरामखोर वेख सृष्ट सबाईआ। झगड़यां विच झगड़े करके तमाम, तमा नाल तमा देणी टकराईआ। जित्थे जन भगतां दा झुलदा होवे निशान, उथ्थे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पतिपरमेश्वर होया मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला ओहला परदा पड़दे विच्चों बाहर कढाहीआ। धरनी कहे जन भगतो मेरी नमस्ते, नमो कह कह सुणाईआ। तुसीं परम पुरख दे दुआर उत्ते रहो वसदे, भावें उजड़े सर्ब लोकाईआ। तुहाडे अन्तर रहिण हस्सदे, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। जन भगत मंज़ल पौड़े चढ़दे कदे ना थक्कदे, भज्जण वाहो दाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहानूं इशारे दिते आपणी उस अक्ख दे, जिस अक्ख विच्चों प्रतख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे प्रेम विच रंग दए, जिस दा रंग उतर कदे ना जाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत १ खूण कैंप जम्मू ✪

ग्यारां पोह अमृत वेला साढे चार, चार जुग बैठे सीस झुकाईआ। खुशीआं विच गुर अवतार, ढोले गीत सुणाईआ। पीर पैगम्बर करन गुफ़तार, कलमा अगम्म अल्लाईआ। विष्न ब्रह्म शिव बोल जैकार, तूंही तूंही राग सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हो के ख़बरदार, दो जहान अक्ख उठाईआ। धरनी धरत धवल होई निहाल, मंगल गीत इक सुणाईआ। किरपा करी दीन दयाल, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। सच दुआर पहुंचया आण, दो जहान चरणां हेठ दबाईआ। भगत सुहेले कर पहचान, मुहब्बत विच्चों खोज खुजाईआ। जिन्नां दे अन्तर आत्म मिल्या इक्को दान, वस्त अमोलक नज़री आईआ। जगत विद्या छड्ड नादान, पासा दुनी वलों बदलाईआ। परमात्म मन्न के इक्को काहन, सखी सहेली रूप वखाईआ। धुर दा सज्जण जाण के राम, इष्ट दृष्ट नाल वड्याईआ। जगत सिँघासण छड्ड बिसराम, सुखआसन धरती सेज सुहाईआ। योद्धा सूरबीर नाल जवान, नव नौ चार वेख वखाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, पुरी लोअ लागण पाईआ। सो खेल करे महान, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा रिहा

जणाईआ। साढे चार कहिण जिस वेले गए वज्ज, वजूद नज़र कोए ना आईआ। इक्को वेख पुरख समरथ, दर ठांडे खुशी मनाईआ। दोए जोड़ के हथ्थ, सजदा सीस झुकाईआ। जिस दवारे भगत सुहेले रहे वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। हकीकत विच्चों पछाण के हक, हुक्म मन्नण थाउँ थाँईंआ। सच्चे मार्ग ना जावण थक्क, पन्ध जगत वाला चुकाईआ। इक्को वल्ल रहे तक्क, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार अंदर कर के इक्वु, सोहणा वक्त ल्या सुहाईआ। खुशीआं अंदर रहे नठ्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। इक दूजे नूं रहे दस्स, सोहँ ढोला गाउणा साचे माहीआ। जिस दा वेद पुराण करदे जस, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल आपे रिहा लभ्भ, हरिजन खोजे थाउँ थाँईंआ। शहादत देवे डाली पत्त, घास फूस काना काही दभ्भ, नेड़े हो हो रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल धुर दा रिहा वखाईआ। साढे चार कहिण जिस वेले होया वक्त, व्यक्ति इक्को नज़री आईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल भगत, भगवन आपणी खेल खिलाईआ। नाता तोड़ कुटम्ब जगत, आत्म अन्तर मेल मिलाईआ। सच प्रीती दे के शक्त, शख्सीअत अगली दए समझाईआ। जिस दा पहला चढ़या बरस, वरख मास रुत्त ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों कर के परख, भगत सुहेले लए उठाईआ। खुशीआं नाल कर के उहनां दरस, दर्शन आपणे विच समाईआ। खेल वखा के उपर अर्श, फर्श वज्जे वधाईआ। करनी दा करता लेखा जाणे आप असचरज, अचरज लीला आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को दए वखाईआ। साढे चार कहिण जिस वेले धुर दा वज्जा घड़याल, घंटा नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख प्रभ तक्कया दीन दयाल, दीनां होए सहाईआ। भगत वछल कृपाल, कृपानिध बेपरवाहीआ। साचा दवारा वेख सच्ची धर्मसाल, गुरमुखां अंदर डेरा लाईआ। जित्थे ना कोए शाह ना कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। ना कोए माया तत जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ना कोए विद्या दा अहिवाल, ना कोए अक्खरां करे पढ़ाईआ। ना कोए तीर्थ तट इश्नान, जल धारा ना कोए वहाईआ। ना कोए रसना जेहवा बत्ती दन्द ज्ञान, बुध मति मन ना कोए चतुराईआ। ना कोए पीण ना कोए खाण, ना कोए तृष्ना भुक्ख वधाईआ। ना ज़िमीं ना कोए असमान, मन्दिर मकान ना कोए जणाईआ। ना कोए राग ना गाण तरान, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। ना कोए जाण ना पहिचाण, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। ना कोए जंगल बीआबान, टिल्ला पर्बत नज़र कोए ना आईआ। सो महल्ला इक इकल्ला पुरख अबिनाशी वेखे आण, जन भगतां अंदर खोज खुजाईआ। जित्थे दीआ बाती जगे महान, कमलापाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा जणाईआ। साढे चार कहिण साडी वज्जी वधाई जग,

जग जीवण दाता नज़री आईआ। जो भगतां अंदर बिना काअब्यों करे हज्ज, हाजत सब दी वेख वखाईआ। बिना शिवदवाले मन्दिर गुरूदवारा जाए सज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया कर के पार हद्द, धाम इक्को इक वड्याईआ। जित्थे मन वासना जाए कोए ना रच, तृष्ना ताम ना कोए बणाईआ। इक्को हुक्म मिले सच, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को वेखण वाली अक्ख, निज नेत्र नज़री आईआ। इक्को मेल पुरख समरथ, दूजा नाता सर्ब तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साढे चार कहिण मेरे कोल आए इट्टां पत्थर, खुशीआं नाल रहे सुणाईआ। असीं उहनां दा वेख्या सत्थर, जो बैठे सेज हंढाहीआ। जिन्हां पढ़या कोई नहीं अक्खर, विद्या वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ओह चढ़ के चोटी सिखर, पुरख अबिनाशी दर्शन पाईआ। तम्बूआं विच रह के कोए नहीं फ़िकर, फ़िकरा इक्को ढोला गाईआ। करनी विच्चों गए निकल, करता मिल्या बेपरवाहीआ। दो जहानां धुर दा मित्र, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जिस दा वेदां विच जिकर, पुराणां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। साढे चार कहिण मैनूं दस्सण पत्त डाल, बनास्पत रही हाल सुणाईआ। जिस दी घालणा रहे घाल, सो आया सज्जण माहीआ। जिस दे नाल सुत दुलारा लाल, गोबिन्द जोड़ जुड़ाईआ। जिस दे चरणां हेठां काल महाकाल, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी कर कर थक्के भाल, सनमुख हो के दरस कोए ना पाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए अहिवाल, भविख्तां विच समझाईआ। सो खेल करे कमाल, कोझे कमले गोद उठाईआ। लेखे ला के पिछली घाल, पूरब लहिणा रिहा चुकाईआ। अगे करे मालो माल, नाम धन झोली पाईआ। ठाकर हो के बणे दलाल, शब्द विचोला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। साढे चार कहिण मेरे कोल आए सूत्र वट्टे रस्से, रस्ता आपणा रहे जणाईआ। खुशीआं विच सारे हस्से, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। बहुत्यां विच्चों थोड़े प्रभ दी प्रीती अंदर फसे, जो फैसला हक रहे कराईआ। असां तक्कया उस अक्खे, जेहड़ी अक्ख जगत नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दे पड़दे आप ढके, सिर ओढन इक टिकाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे, जम दी फाँसी गलों लाहीआ। सच दवारे दे दे के पते, पता आपणा दए समझाईआ। सन्त सुहेले बणा के बच्चे, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे संग निभाईआ। साढे चार कहिण खुशीआं नाल बोले मिती, ठंढी ठार दए गवाहीआ। मैं वेखी धार चिट्टी, जन भगतां अंदर आईआ। जगत वेखण वास्ते निक्की, श्री भगवान वड्डी बणाईआ। इस तों परे होर नहीं कोए सिक्खी, जो साख्यात प्रभ दा दर्शन पाईआ। गोबिन्द वेला चुक्कया

५०
१६

सम्मत इक्की, एकँकार आपणी आप आपे दए गवाहीआ। चार जुग दो जहान किसे कोल नहीं कोए चिट्ठी, जो धुर दा हुक्म पढ़ के दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार वड्डी वड्याईआ। साढे चार कहिण मैं वेख्या वखरा जोग, जोगी जोगीशर देण दुहाईआ। बिना प्रभू दी किरपा किसे ना होया संजोग, मिल्या मेल ना शहिनशाहीआ। साची चुगी कोए ना चोग, नाम रस अमृत फल कोए ना खाईआ। जन्म मरन दा लग्गा सब नूं रोग, लख चुरासी विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। आत्म सेजा कोए ना सके भोग, साचा रस नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बेड़ा रिहा बंधाईआ। साढे चार कहिण असां वेखे जगत हकीर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। राह तक्कदे वेखे फ़कीर, फ़िकरयां विच ढोले गाईआ। दर्शन पाउँदे वेखे पीर, पैगम्बर देण दुहाईआ। जुग चौकड़ी हुन्दे वेखे तामीर, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। योद्धे सूरबीर बण के फड़दे वेखे शमशीर, हुक्मे अंदर हुक्म फराईआ। अज्जे तक्क तक्कया नहीं गहर गम्भीर, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। जिस दे हथ्थ सब दी तकदीर, आपणी तदबीर आपणे विच छुपाईआ। जिस झगड़ा चुकाउणा अमीर ग़रीब, ऊँचां नीचां रंग वखाईआ। उसे दी चरणी झुकदा रिहा कबीर, जो सहिज सुभाउ गुरमुखां नज़री आईआ , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर हिरदा वेख वखाईआ। साढे चार कहे मैं वेख्या फिरदा, बिना तत्तां फेरी पाईआ। जन भगतां जाणे हिरदा, जो अक्खां तों उपर दिता टिकाईआ। जित्थे इक्को झिरना झिरदा, निझर धार वहाईआ। किरना किरना किरदा, रूप रंग ना कोए समझाईआ। एह खेल अगम्मी पिर दा, पीआ प्रीतम आप बणाईआ। जो भगत सुहेला विछड़या चिर दा, चेतन हो के जोड़ जुड़ाईआ। धुर दा गुंचा इक्को खिड़दा, फल फूल आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। साढे चार कहे मैं वेख्या सेवादार, पुरख अबिनाशी नज़री आईआ। जो सुत्यां करे प्यार, अंदर वड़ के खुशी बणाईआ। साचा दस्स इक जैकार, ढोला आपणा नाम शनवाईआ। दृष्टी इष्टी विच्चों कढु के बाहर, प्यार इक्को नाल बंधाईआ। नाता जोड़ के पुरख अकाल, नर नरायण दए समझाईआ। जिस दा झगड़ा रिहा जुग चार, फ़ैसला अन्त ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर वण्डां वण्डदे गए संसार, प्रभ दा हिस्सा ना कोए समझाईआ। नाम सिफ्त जगत गए विचार, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। निरगुण सरगुण दस्सदे गए धार, सरगुण हो के सीस झुकाईआ। बिना परम पुरख दे किसे ना बोलया इक जैकार, जै जैकार ना कोए दृढ़ाईआ। अन्तिम सारे गए हार, हरि जू भेव कोए ना पाईआ। आसा ओट रख के देंदे गए विचार, भविख्तां विच समझाईआ। कल कल्की लए अवतार, जिस दा पिता ना कोए माईआ। जगत वक्खरा

करे विवहार, विहार आपणे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। साढे चार कहिण मैं वेखी मंजी चारपाई खाट, खटका नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां पिच्छे मार के आया वाट, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। चार जुग नालों चंगी उहनां दी करे इक्को रात, प्रभाती आपणी खुशी वखाईआ। सच प्रेम दी दे के जावे दात, दाते धुर दे दए बणाईआ। जेहड़ी किसे दवारयों हथ्थ नहीं आउणी सौगात, सो वस्त अमोलक झोली पाईआ। सुत्तयां जागदयां गुरमुख इक्को ढोला लैण आख, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। साढे चार कहिण असां वेख्या हाल बिना अक्खां, अक्खरां विच ना कोए समझाईआ। सो कहाणी सच दस्सां, जो प्रभ ने दिती वखाईआ। कोटां विच्चों करोड़ां विच्चों लखां विच्चों भगत सुहेला विरला लभ्भा, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिन्हां दा इक्को पिता ते इक्को अब्बा, इक्को इक जणेंदी माईआ। जिस दे नाम नूं लग्गे कोए ना धब्बा, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। लहिणा देणा चुका के हब्बा, हब्ब किछ आपे रिहा वरताईआ। अगे ना किसे दा दब्बा, भय भउ विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगतो तुहाडा वधदा रहे अग्गा, कुल सके ना कोए बदलाईआ। तुहाडा नाम रहे जग्गा जग्गा, जग जीवण दाता होए सहाईआ। तुहाडा निरगुण सरगुण धार मेल रहे सदा, सद आपणे घर वसाईआ। साचे नाम दा चखाउँदा रहे मज़ा, मजलस अगम्मी इक वड्याईआ। तुहानूं अन्त किसे नहीं देणी सज़ा, सिध्धा जमां तों लैणा छुडाईआ। तुहाडे विच्चों बहुत खुशी सिँघ फग्गा, जो अगे हो के सीस निवाईआ। किसे नाल करना नहीं कोई दग़ा, दाग़ दुरमति देणी धवाईआ। प्रभ तारन दी कोई समझ ना सक्या वज़्हा, वजद वजूदां वाले गए सीस निवाईआ। जो हरि सरनाई लग्गा, लग्न इक्को इक रखाईआ। साढे चार कहे मैं प्रभ नूं वेख्या उहनां दे प्यार अंदर बज्झा, उठ उठ घर घर दर दर वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। साढे चार वेला वक्त अज्ज दा, अज़ल तों लए बचाईआ। लख चुरासी विछोड़ा होवे जग दा, जुगती नाल जम तों लए छुडाईआ। जो प्रेम अंदर तुहाडे अंदर वसदा, वसीअत अगली दए लिखाईआ। नाता बणया रिहा सदा पुरख समरथ दा, एथे ओथे कदे ना होए जुदाईआ। तुहाडा लेखा हिसाब विच्चों वख दा, वखरी गंढु बंधाईआ। भगत खेड़ा सदा रहे वसदा, जित्थे वसे शहिनशाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा भुक्खा तुहाडे प्रेम रस दा, जो रस रसना दे पिच्छे दए रखाईआ। साढे चार कहे मैं भगतां दी वेखी धुन, धुनकी अंदरे अंदर वजाईआ। अट्ठे पहर गाउँदे गुण, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। प्रभू साडी पुकार सुण, दरस दिखा थाउँ थाँईंआ। जे ना बहुड़यों हुण, की तेरी वड्याईआ। भावें खाण नूं रुक्खा मिस्सा

लभ्भदा लूण, निमक तेरा रंग चढ़ाईआ। साडा किसे नाल नहीं बोलण कूण, इक्को तेरा राह तकाईआ। क्यों तूं सानूं दस्सया उह मज़मून, जिस दी अक्खरां विच्चों बाहर पढ़ाईआ। भगत भगवान दा निराला कानून, कलमयां तों लेखा दिता छुडाईआ। असीं तेरे बच्चे मासूम, बाल्याँ विच्चों बाल नज़री आईआ। तेरे कोल लख चुरासी दा वड्डा हज़ूम, गिणती बहु गिणती विच रखाईआ। तेरे दर तों ना रहीए महिरूम, ख़ाली झोली देणी भराईआ। पुरख अकाल कहे गुरमुखो तुहानूं नहीं कोई मालूम, मैं मुल्ल तुहाडा रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साढे चार वेला कहे मैं वेख्या वलीअल्ला, अल्लावली नज़री आईआ। जिस दा इक्को वखरा महल्ला, महिराब मुहब्बत रिहा बणाईआ। मुर्शद मुरीदां फड़ा के पल्ला, आपणी गंढु पवाईआ। पार कर के जला थला, दर दवारा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत रहिण ना देवे कोई इकल्ला, भगतां अंदर भगवन मिल के भगत भगवान रूप वटाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत १ देवा सिँघ दे गृह मनवाल कैंप ✪

नेत्र नीर बिरहों वैराग, बिरहा खुशी मनाईआ। सोई आत्म गई जाग, जुग दी मिली वड्याईआ। सुलखणी होई वडभाग, भाग हिस्सा रही वण्डाईआ। प्रभ मालक मिल्या आदि, मेहरवान दया कमाईआ। जो बेड़े चाढ़े जहाज़, पतण इक लगाईआ। जित्थे भगतां भगवन मिलण दा रिवाज, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन साध, सन्त देण दुहाईआ। सो पूरे करे काज, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। बिरहों कहे मेरा पूरा होए वैराग, प्रभ लोचण दर्शन पाईआ। लेखे लग्गे नैणां वाला नीर आब, आबरू दए बणाईआ। जिस जगह दा कदी आया नहीं सी ख्वाब, ओस दर मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। अथरू नीर कहे मैं वगया रूप पाणी, पवण पाउण दए गवाहीआ। लभ्भ लभ्भ थक्का धुर दा हाणी, जुग जुग सेव कमाईआ। सिफ्तां विच सुणदा रिहा उस दी बाणी, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। सनमुख मिल्या मेहरवान हो के इक्को हाणी, हान लाभ ना कोए तकाईआ। लेखा छड्ड के चारे खाणी, भगत सुहेले रिहा उठाईआ। देवणहारा पद निरबाणी, घर साचा इक सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दी मुश्कल करे आसानी, आसा गुरमुखां पूर वखाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत १ फुमण सिँघ दे गृह मनवाल कैंप ✪

जन भगत कदे ना मन्नण तंगी, तंगी तंगदस्त रूप ना कोए वखाईआ। इक्को प्रेम प्रीती नाम भण्डारा रहे मंगी, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल मिले धुर दा संगी, सतिगुर सच्चा शहिनशाहीआ। काया माटी चोली जाए रंगी, रंग धुर दा इक रंगाईआ। जगत जहान पिठ ना होवे नंगी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जम की फाँसी रहे ना फंदी, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। निज नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, लोइन सच करे रुशनाईआ। माया ममता रहे ना कोए पाबन्दी, कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। सच दवारे आवे लँघी, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। अनहद शब्द अनाद वजाए मृदंगी, धुर दा ढोला इक्को गाईआ। हक मुहब्बत देवे चंगी, बुरयाईआं चंग्यारीआं विच छुपाईआ। आपणी खेल दस्से बहुरंगी, जिस विच्चों साख्यात नज़री आईआ। मार्ग औझड़ रहे ना डण्डी, धुर दा रस्ता दए वखाईआ। परमानंद दे के अनन्दी, अनन्द आत्मा विच्चों प्रगटाईआ। सुरती होण ना देवे रंडी, शब्द हाणी जोड़ जुड़ाईआ। माया ममता मोह मेट घमंडी, सति सच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला हो के होए सहाईआ। जन भगत कोए ना जाणे दुःख, दुखी रूप ना कोए बणाईआ। प्रभ प्रीती जाण के सुख, चरण कँवल मिले सरनाईआ। साची सोभावन्त होए रुत, श्री भगवान दया कमाईआ। उज्जल करे मुख, दुरमति मैल धवाईआ। सच भाग कदे ना जाए निखुट्ट, निहकरमण करमण दए बणाईआ। समरथ पुरख दे के ओट, ओड़क आपे होए सहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। परदा लाह के लोक परलोक, सनमुख हो के नज़री आईआ। जित्थे कोई ना सके पहुंच, भगत सुहेले दए टिकाईआ। अगला खेल जम्बु तों बाद करौच, पुष्कर अपणा राह तकाईआ। जिस दी सोच ना सके कोई सोच, बुद्धिवान बुध ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित आपणी खेल वखाईआ। जन भगत कदे ना मारे हाह, ठंडा सास ना कोए रखाईआ। इक्को नेत्र लए उठा, अक्ख प्रतख मिले गुसांईआ। भाणा मन्ने चले रजा, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। ग़मी खुशी भुगते ना कोए सज़ा, इक्को रंग वखाईआ। साचा मेला होवे सहिज सुभा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। जन भगत कदे ना भरन हौका, दुखी रूप ना कोए बणाईआ। इक सहारा लै के सच्चे नाउँ का, नौका चढ़न चाँईं चाँईंआ। जित्थे लेखा नहीं तूं हउँ का, इक्को प्रभू मिले सरनाईआ। लेखा मुके कूड़ी क्रिया काउँ का, हँस माणक मोती चोग चुगाईआ। खेल वेखे सच न्याउँ का, सच अदालत बेपरवाहीआ। भाण्डा भज्जे भरम भउ का, भय विच ना कोए दरसाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखाईआ। जन भगत कदे ना डरदा, चिन्ता रोग ना कोए जणाईआ। मंज़ल साचे पौड़े चढ़दा, अन्तर अन्तर पन्ध मुकाईआ। सच दवारे जा के खड़दा, जित्थे वसे हरि रघुराईआ। इक्को सोहँ ढोला पढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजी वण्ड ना कोए वखाईआ। दर्शन कर नरायण नर दा, नर हरि इक्को इक मनाईआ। प्रेम प्रीती अंदर भाणा जरदा, दु:ख सुख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन परदा दए उठाईआ। जन भगत कदे ना होवे डरपोक, लोक लज्जया ना कोए रखाईआ। पन्ध मुका के चौदां लोक, पुरख अकाल इक ध्याईआ। साहिब स्वामी रख के ओट, आसरा इक वखाईआ। धुर दा ढोला पढ़े सलोक, सच्चा राग अल्ाईआ। ठांडे दर माण मौज, मजलस भगतां नाल बणाईआ। प्रभ दा दर्शन करे रोज़, नित नवित वेख वखाईआ। सृष्टी वलों रहे ख़ामोश, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे कोना गोश, गोष्ट आपणी दए समझाईआ। जन भगतां सदा सदा सद भरोसा, भगवन इक्को इक जणाईआ। वक्त कोए ना होवे औखा, औखी घाटी ना कोए चढ़ाईआ। मानस जन्म विच गुरमुख विरले मिलदा मौका, जो प्रभ दा खेल वेख ख़ुशी मनाईआ। हुक्में अंदर गोबिन्द छड्ड के पटना पौंटा, पुरी अनन्द गया तजाईआ। जिस दा इक्को ढईआ इक्को ढौंका, डंका ढोला आपे रिहा सुणाईआ। नाम निधान लै के नौका, नव नौ चार अन्तर वेख वखाईआ। लेखा जाणे भावनी भाओ का, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचे शाहो का, शहिनशाह हो के शहिनशाही रिहा बदलाईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत १ बचन सिंघ दे गृह मनवाल कैंप जम्मू ✪

सदा सुहेला अनाथां नाथ, दीनन दीन दया कमाइंदा। भगत वछल प्रभ भगतां साथ, नित नवित वेस वटाइंदा। आत्म परमात्म जोड़ के साक, सज्जण मालक इक अखवाइंदा। काया मन्दिर बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, परदा ओहला आप उठाइंदा। नाम शब्द सुणा के नाद, सोई सुरती आप जगाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर आप मिटाइंदा। श्री भगवान वस के साथ, सगला संग आप निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले रंग चढ़ाइंदा। भगतन मीता हरि भगवन्त, निरगुण सरगुण दया कमाइंदा। खेले खेल आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। नाउँ निरँकारा दस्स के मणीआं मंत, मंत्र इक्को इक समझाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, सन्त

सुहेले आप मिलाइंदा। कलयुग अग्नी अग्ग बुझाए बसन्तर, अमृत मेघ नाम बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सतिगुर सोभा पाइंदा। घर सतिगुर गृह मन्दिर वसे, काया माटी सोभा पाईआ। बोध अगाधा शब्दी नाम दस्से, करे अगम्म पढ़ाईआ। दरस दिखाए निज नेत्र लोचन दीद अक्खे, दोए नैण ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार सरनाईआ। जन भगतां देवे सरनगति, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। प्रेम प्रीती ब्रह्म मत, विद्या सच सच पढ़ाइंदा। नाड़ी नाड़ी ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए जलाइंदा। अमृत निझर झिरना दे के रस, रस आत्मक इक वखाइंदा। साचे प्रेम अंदर हो के वस्स, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। भगत भगवन्त इक दूजे नाल बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द रहे हस्स, सोहँ हँसा इक्को रूप नज़री आईआ। दुःख रोग कटे संताप, सति आपणा दए समझाईआ। जन्म जन्म दा मेट के पाप, दुरमति मैल धवाईआ। धुर दा नाम दे के जाप, ज़ामन हो के लए छुडाईआ। आत्म परमात्म बण के साक, बन्धन इक्को इक वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस वखा के साख्यात, सुखन पिछले पूर कराईआ।

✪ ११ पोह शहिनशाही सम्मत १ झज्जर कोटली कैंप जम्मू ✪

जन भगत जग मिले माण, मानस जन्म लेखे लाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, सज्जण सुहेले बाहर कढाइंदा। सच प्रीती दे के दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। नाम निधाना दे के ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। निरगुण सरगुण दरस देवे आण, परदा ओहला दूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां प्रभ सदा उधारी, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। फड़ फड़ पैज रिहा संवारी, जन्म जन्म दी मैल गवाईआ। धुर दी प्रीती बख्श के इक निरँकारी, निरगुण जोत रिहा मिलाईआ। चिन्ता दुःख मिटा के बीमारी, सुख सागर विच समाईआ। अगली दूर करे खुआरी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। जन भगतां प्रभ सदा दास, सेवक सेवक सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, तृष्ना जगत कूड़ी बुझाइंदा। घट भीतर मिले आप, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। इक इकल्ला दस्से के जाप, सोहँ सोहला सच सुणाइंदा। जन्म करम दा मेट के पाप, पतित पुनीत रूप वटाइंदा। सिर रखे दे कर हाथ, समरथ आपणी दया कमाइंदा। पिछली मेटे आप वाट, अगला पन्ध आप समझाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटण वाली अन्धेरी रात, साचा चन्द चमकाइंदा।

५६
१९

जन भगतां पुछे हरि जू वात, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। सच प्रीती बन्ने नात, साक सज्जण इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां कोई लोड़ नहीं चारपाई खाट, तकिया लेफ नज़र कोए ना आईआ। जिन्नां दी दिवस रैण इक्को याद, ढोला गाउण बेपरवाहीआ। पतिपरमेश्वर सुण फ़रयाद, घर घर वेखे चाँईं चाँईंआ। उजड़यां फेर करे आबाद, आप आपणा रंग वखाईआ। लोकमात रखे लाज, दूई द्वैत ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो तुहाडी बणन वाली वखरी नगरी, नगर सोहणा दए वखाईआ। जित्थे वस्त अमोलक होवे समग्री, पुरख अबिनाशी आप वरताईआ। धरती होवे पध्धरी, पहाड़ां विच ना कोए रुलाईआ। फिरना पए ना विच जंगलीं, उजाड़ां विच ना कोए भवाईआ। खेल सुख दी वखाए अगली, पिछला लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत कोई ना जाणे दुखड़ा, दुक्खां दारू रिहा बणाईआ। सतिगुर उज्जल करे मुखड़ा, मुखां मुख सालाहीआ। उलटा लेखा कटे रुखड़ा, नौ अठारां ना कोए तपाईआ। सन्त सुहेला उठा के सुतड़ा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरमुख गोद उठाए वांग पुत्तरा, पिता पूत आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत अंदर कोई ना मारे धाह, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। श्री भगवान खेल रिहा करा, ख़ालक ख़लक रिहा उठाईआ। पहलां हुक्म दिता वरता, वारता पिछली दिती दुहराईआ। सहिज सुभाउ बाहर कढा, घर ठांडे रिहा बहाईआ। जिस गृह मन्दिर दए वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। मरीज़ बण के खाणी ना पए कोई दवा, आत्म परमात्म आपणा संग रखाईआ। बेशक तुसीं आपणा जगत लेखा आए गवा, गवाह दो जहान नज़री आईआ। अगला खेल होण वाला रवां, रहबर हो के रिहा समझाईआ। जिस दा मार्ग लग्गणा नवां, नव सत्त पए सरनाईआ। तुहाडा हरख़ सोग़ चिन्ता मिटावे ग़मां, दुखियां दुःख मिटाईआ। बुज्झा दीपक फेर जगाए शमां, घर घर करे रुशनाईआ। हुक्में अंदर बदल के समां, समान बहुता झोली पाईआ। कारज लाए आपणे कम्मां, करनी करता इक दृढ़ाईआ। झूठी तोड़ के तृष्ना तमअ, तामस अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक वरताईआ। जन भगत हुक्म अंदर ना जाणा डोल, दिल दलील ना कोए बदलाईआ। साहिब सतिगुर वसे कोल, घर बैठा सोभा पाईआ। नाभी कँवली रिहा मौल, पत्त डाली आप महकाईआ। जिस दा खेल वखरा होणा उपर धौल, धरनी धरत सीस निवाईआ। पूरा करन आया धुर दा कौल, कीता कौल ना कोए भुलाईआ। जिसदा लेखा कोई ना जाणे पंडत पांधा रैल, दूजी विद्या

विच ना कोए वड्याईआ। सो सच दवारा रिहा खोल्ह, भगत सुहेला आप उठाईआ। जिन्हां इक्को ढोला लैणा बोल, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सद करनी कार कमाईआ। जन भगत कदे ना रुलदा, अबिनाशी करता दए वड्याईआ। साचा भगत कदे ना भुल्लदा, भरम विच ना कोए भरमाईआ। उह मालक बण के सच्ची कुल दा, कुल मालक वेख वखाईआ। जिस दा बूटा दो जहान फुलदा, लोकमात वज्जे वधाईआ। जिस ने भोजन छकया तुहाडी चुल्ह दा, चार युग दा लेखा लहिणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वक्त ल्यावे सुहञ्जणा भगत प्रीती मुल्ल दा, मुल्ला शेख़ मुसायक सारे देण दुहाईआ। जन भगत तेरे नाल ना करे कोई दग़ा, फ़रेबां वाला रूप ना कोए वटाईआ। तेरा रूप शेर बग्गा, बग बप्पड़ा नेड़ कोए ना आईआ। तूं इक सरनाई लग्गा, पतिपरमेश्वर रिहा मनाईआ। तेरा वधदा रहे अग्गा, आगमन करे ख़लक खुदाईआ। तेरे प्रेम दा प्रीतम बध्धा, लोकमात फिरे वाहो दाहीआ। छेती सब नूं देवणहारा सद्दा, तम्बूआं कनातां विच्चों लए उठाईआ। सोहणी वेख रिहा जग्ग, धाम सुथरा दए बणाईआ। अजे पहला सम्मत लग्गा, साढे तिन्न साल चढ़ाईआ। जिसदी समझे कोई ना वजह, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहानूं प्रेम प्रीती दा देवे साचा मज़ा, जिस दा रस रसना जेहवा ना कोए चखाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत १ प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ✪

रैण सबाई कदमां विच झुकदे रहे सूफ़ी, सफ़ा फूड़ी बग़लां विच उठाईआ। ऐ मालक साडा नाम सिफ्तां विच हरफ़ी, गीतां विच शनवाईआ। क्यों इके हुक्म अंदर सब कुछ कीता मनसूखी, मुसन्नफ़ मुनसफ़ भेव कोए ना पाईआ। मंज़ल तेरी अगम्म मकसूदी, डांवांडोल वेखी लोकाईआ। समझे हक ना कोए बहिबूदी, नेस्तोनाबूद जगत लोकाईआ। हज़रत मिल्या ना किसे मौज़ूदी, मज़ा आबे हयात ना कोए चखाईआ। लेखा चुकया ना शरकन ज़नूबी, शरअ सके ना कोए बदलाईआ। कायनात होई बेहूदी, धुर दा ख़ावंद ना कोए हंढाहीआ। तेरा कुछ लहिणा खटक मसूदी, हजारा दरूदी दए गवाहीआ। तेरी कुशंजरी वाली खुशनूदी, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। सब नूं इलम दा कहे अलूदी, हुक्में अंदर भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म आपणा इक दृढ़ाईआ। सूफ़ी कहिण रैण सबाई असां कोई तक्कया नहीं सुफना, ख्वाबां वाला ख्वाब ना कोए जणाईआ। वेखदे रहे अन्त सब दा पैंडा मुक्कणा, मुक्के जगत लोकाईआ। नूर खुदाए इक्को

उठणा, उह इक्को नूर करे रुशनाईआ। सानूं अग्गों किसे नहीं पुछणा, मकबरयां उत्ते सीस ना कोए निवाईआ। तकीआं विच ना पए लुकणा, अमानत कढु ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सर वेखे थाउँ थाँईंआ। सूफ़ी कहिण असीं सदा किहा हक, हुक्म सच रज़ाईआ। तेरा खेल रहे तक्क, तकवा ओट रखाईआ। अन्त अख़ीरी हुन्दी दिसे बस्स, बस्ते सब दे रिहा बंधाईआ। इधर उधर सके ना कोई नठ्ठ, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सूफ़ी कहिण साडा तरिपनां दा होया इक्ट्ठ, पंज तिन्न जोड़ जुड़ाईआ। मुर्शद सतारां नाल रहे वस, सतरां रंग रंगाईआ। तेरी धारों नज़र नहीं कोई वक्ख, फ़ज़ल रहमत नज़री आईआ। बोलण नाअरा सर्ब अलख, ढोला इक जणाईआ। बिन तेरे कीमत किसे दी कौडी नहीं कक्ख, कलमयां विच ना कोए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक मनाईआ। सूफ़ी कहिण असां वेखी अललसुबह, सुबहान अल्ला कह के ख़ुशी मनाईआ। अद्धे रो पए नैण नीर वहा के भुब्बा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। महबूब तेरा समझया नहीं किसे मुद्दा, मुतालया कर ना कोए दृढ़ाईआ। सिफ्तां वाला सारे बन्नृ के गए गुड्डा, रसना जेहवा संग रखाईआ। असां वेख्या कलयुग नाल मुहम्मद होया बुड्ढा, बुढेपा अन्तिम गया आईआ। उस नूं लग्गण वाला इक्को ठुड्डा, जो मूँह दे भार सुटाईआ। तुध बिन अवर ना दिसे कोई दूजा, जो हुक्म वरताईआ। बलहीण तों हीण होया तेईआं अवतार बुधा, बल आपणा ना कोए रखाईआ। गुर पीर कहिण साडा ख़ाली होया झुग्गा, झुग्गी वस्त ना कोए टिकाईआ। नेत्र रोंदा वेख्या कलयुग चौथा जुगा, जुगत अगे ना कोए समझाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ रोंदे वेखे साडा कोई ना लए भुग्गा, पीरां वाली नयाज वण्ड ना कोए वण्डाईआ। परवरदिगार सांझा यार हथ्थ विच फड़ के इक चुग्घा, चौहां कुण्टां रिहा डराईआ। सृष्टी दा अन्तर वेख्या राहों घुथ्था, औझड़ राह पई लोकाईआ। शरअ शैतानी सबक पढ़या पुट्ठा, बेईमानी इन्सानी हैवानी रूप वटाईआ। सूफ़ी कहिण साडा ख़ाली हुन्दा दिसे ठूठा, ठोकर तेरी नज़री आईआ। ऐउँ दिसदा तूं छब्बी पोह सब दा सज्जे हथ्थ दा लवा के अंगूठा, दसख्तां दा लेखा देणा मुकाईआ। वरन बरन पैणी लूटा, सति सच ना कोए समझाईआ। अबलीस घर घर वड़ना शैतान टूटा, टकोर सब नूं दए लगाईआ। बिन तेरयां भगतां साबत रहे ना कोई बूटा, बूटी जड़ी दए उखड़ाईआ। असीं प्रेम दा मंगदे इक हूटा, हटकोरयां तों लैणा छुडाईआ। तेरा नज़री आवे इक खूटा, जिस नूं खूंडा कहे लोकाईआ। तेरा दवारा मूल ना रहे जूठा, झूठा पैंडा देणा मुकाईआ। इक वखाउणा आपणा अगम्म रूपा, रुपा सोना कम्म किसे ना आईआ। सब दा मालक नज़री आए भूपा, भूपत भूप तेरी सरनाईआ। सजदा कर कर थक्के मुहम्मद ईसा मूसा, मुश्कल विच देण दुहाईआ। जलवा तेरा उच्च अर्श अरूजा,

फर्श तेरी सरनाईआ। तेरा हुक्म शब्दी हथियार मलबूसा, बकतर इक्को रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सूफ़ी कहिण असीं कट के आए सफ़र, सिफ़रा वेखी जगत लोकाईआ। जिस दे पिच्छे घालदे रहे ज़फ़र, बिना रसतिउँ नैण उठाईआ। जिसदी छत्र छाया हेठ कीता बसर, बिस्तरे आराम नाल हंढाहीआ। पता नहीं उस ने की सृष्टी दा करना हशर, हाशीए विच बन्द कीती लोकाईआ। दीन दुनी उडाउणी नाल इशारीए कसर, अंक सके ना कोए समझाईआ। कोटां विच्चों थोड़यां उत्ते होणा असर, असल आपणा रंग रंगाईआ। सच दुआर वखा के जशन, जग्गा विच्चों जग्गा दए बदलाईआ। अगे हरि के नाम का लए ना कोए कमिशन, हिस्सयां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को चले प्रभ दा मिशन, मुशाहिद निउँ निउँ सीस निवाईआ। डण्डावत करन ब्रह्मा शिव विष्न, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। डण्डावत करन राम कृष्न, किशत सब दी पूरी दए कराईआ। भगत सुहेले विरले लोकमात दिसण, बहुत्यां विच्चों थोड़े नज़री आईआ। सूफ़ी कहिण जे प्रभू लेखा आयों लिखण, धुर दा हुक्म नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी इक सरनाईआ। सूफ़ी कहिण असीं जगत विच सफ़ीर, बन्दोबस्त जगत बणाईआ। नाल रलया वेखो कबीर, काअब्यां परे दए दुहाईआ। हुक्म इक अख़ीर, मंज़ल चढ़ के रिहा सुणाईआ। सारे शरअ दे कट दयो ज़ंजीर, शहिनशाह मिल के वज्जे वधाईआ। अंदरों बदल लओ ज़मीर, बाहरों पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। अलिफ़ ये खिचणी ना पए लकीर, बग़ल कुरान ना कोए उठाईआ। खिच्चणी पए ना कोए तस्वीर, इनडैकस वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिना कल्मयों आ जाए धीर, परवरदिगार दरे दरबार दर्शन पाईआ। सूफ़ी कहिण असीं तेरी नवीं वेखी आ के तामीर, सिर कदमां विच टिकाईआ। हस्स के रो प्या बदरे मुनीर, बदौलत दौलत अवर ना कोए जणाईआ। किरपा कर ख़ालक रहीम, ग़नीम ग़म दए मिटाईआ। तेरे बरदे सब अधीन, आहला दिता सीस झुकाईआ। अन्तर रहे ना कोई ग़मगीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्सणहारा सच तालीम, तुआरफ़ आरफ़ बिन सफ़ारश मेला रिहा मिलाईआ।

५६ १६

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत १ बीबी राम कौर दे गृह ✪

सूफ़ी कहिण सफ़ैद होए मूए मुबारक, मुबारकबाद देण इक ख़ुदाया। हरफ़ां वाली लिखी होई पूरी होई अबारत, कामल मुर्शद बेपरवाहया। अगे करे ना कोए सफ़ारश, वाहिद कलमा हक ना कोए पढ़ाया। पिछली पुराणी होई इमारत, मुकामे हक ना कोए जणाया। . . . . .सजदा सीस ना कोए निवाया। आपणी वेख आप अमानत, पैगम्बर पीर देण दुहाया।

साडी देवे ना कोए ज़मानत, अगे हो ना कोए बचाया। मेरा कलमा शब्द सब नूं करदा जाए ममानत, तूं दाता बेपरवाहया। बिन तेरे हरि मिले ना सच नयामत, तोहफ़ा यकतरफ़ ना कोए अख्वाया। आलम उल्मा होए अनजानत, भेव अभेदा ना कोए समझाया। थोड़े बैठे विच दयानत, दयावान तेरी तक्क सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। मूए मुबारक होए सफ़ैद, सफ़ा अगली दए उलटाईआ। पैगम्बरां वाला पूरा करके अहिद, अहिदनामा पिछला दए समझाईआ। वक्त ओह आ गया शायद, जिस नूं शरीअत वाले गए समझाईआ। इक्को हुक्म कर राइज़, राज राजाना शाह सुल्ताना आप सुणाईआ। चौदां लोक वेख नुमाइश, चौदां तबक फेरा पाईआ। सूफ़ीआं सन्तां कर अज़माइश, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। तेरी ज़रूरत अन्त निहायत, नज़रे नज़र उठाईआ। साडे नाल कर रयायत, रवादारी इक समझाईआ। दर बांधे तेरे तुआइफ़, तुआरफ़ विच ढोले गाईआ। नज़रे कर्म नाल कर पैमाइश, पेशवा हो के वेख वखाईआ। पैगम्बरां दी रहे ना कोई फ़रमाइश, फ़रमांबरदार आपणे लै बणाईआ। साचे घर दी दस्स रिहाइश, आरामगाह इक्को इक समझाईआ। जित्थे कलमयां तों परे इक हदायत, अनायत वरगे सीस झुकाईआ। पट्टी पढ़नी ना पए कोए जमायत, माईनस जमां ना कोए सिखलाईआ। करनी पए ना सजदयां वाली कवायत, काअबा राह ना कोए वखाईआ। करनी पए ना कोए समायत, समां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आप आपणे बणा लायक, लाअनत कूड़ी परे हटाईआ। भरमे भुल्ले मुल्ला शेख़ मुसायक, मसला मुसलसल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा वेख वखाईआ। मूए मुबारक कहे हो गई मुद्दत, सदीआं पन्ध लँघाईआ। तेरा लेखा कोई ना जाणे कुदरत, कादर तेरी बेपरवाहीआ। सूफ़ीआं वास्ते तेरे कोल नहीं फुरसत, क्यों बैठा मुख भवाईआ। नित ढोले गाईए तेरी उल्फ़त, महिमा बेपरवाहीआ। तूं मालक ख़ालक इक्को मुर्शद, मुरीदां लै तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला संग बणाईआ। मूए मुबारक कहे असीं हुण नहीं रहे काले स्याह, बुढेपा अन्तिम गया आईआ। पैगम्बर साडे बणे गवाह, शहादत देण भुगताईआ। पीर मुरीद देण सलाह, आशा इक बदलाईआ। वेला वक्त गया आ, बेवक्त ना होए जुदाईआ। शफकत आपणी इक समझा, शबेरोज़ होवे रुशनाईआ। मुहब्बत आपणी इक जणा, जनाज़ा कढे ना कोए लोकाईआ। ख़िदमतगार इक बणा, खादम हो के सेव कमाईआ। साची दरगाह परदा लाह, जलवा नूर कर रुशनाईआ। परवरदिगार सच ख़ुदा, ख़ुदी तकब्बर दए मिटाईआ। तेरे नालों ना होईए जुदा, जुज़ अंग ना कोए वड्याईआ। आपणा अगला दस मुद्दा, मुदई मुदाअलैह बण के भेव दए खुल्हाईआ। नेत्र रोंदा वेख्या बुधा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। तेरा होण वाला अगम्मी युद्धा, युधिष्टर करन

सीस निवाईआ। कलयुग कर्म होया बुड्ढा, बुढापा अन्त रिहा कुरलाईआ। लत्तों लंगड़ा लक्कों कुब्बा डुड्डा पैरां रिहा वखाईआ। आपणा भेव दस्स गुज्झा, रमज़ इशारा इक रखाईआ। लेखा रहे कोई ना दूजा, अवर ना अवरा देणा मिटाईआ। कूड़ी क्रिया पैंडा मुका, मुकम्मल लेखा दे समझाईआ। सूफ़ी कहिण साडे कोलों जगत नशे वाला छुटया हुक्का, हुक्म मन्नीए चाँईं चाँईंआ। धूआँधार ना कोई धुखा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तन वजूद हरस रहे जुस्सा, जिस्म ज़मीर गया बदलाईआ। माण रिहा ना दाढ़ी मुच्छा, मुश्कल हल ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट चढ़या गुस्सा, गुस्से विच सर्ब लोकाईआ। प्रेम प्यार होया रुक्खा, रुख सृष्ट गई बदलाईआ। सब दे अन्तर लग्गा दुक्खा, जगत कलेश ना कोए मिटाईआ। माया ममता कीता भुक्खा, तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाईआ। तेरा भेव रहे ना कोई लुका, लुकमा होवे सर्ब लुकाईआ। तेरा निशाना कदे ना होवे उका, दो जहान देण दुहाईआ। सूफ़ी कहिण परवरदिगार कदे ना रुस्सा, रुसयां लए मनाईआ। प्रेमीआं फड़ बाहों कहे आ मेरया पुत्ता, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। आवण जावण लेखा जाए चुक्का, चुकन्ने हो के प्रभ दा दर्शन पाईआ। तिन्हां खाणा पए ना कुट्ठा, हलाली झटका ना कोए वड्याईआ। उन्हां नूं टुक्कर चंगा सुक्का, जो सुखमन तों बाहर बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्ती सब दी खोज खुजाईआ। मूए मुबारक कहे आपणा हुक्म कर मुअत्तल, मुतल्ला सब नूं दे कराईआ। कूड़ी क्रिया कर कतल, मकतूल घर घर दे वखाईआ। परदा लाह आपणे वतन, बेवतनां वतन जणाईआ। कलयुग कर कर थक्के बहुता यतन, यथार्थ तेरा दरस कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले वेख अमोलक रतन, रुती राती रंग चढ़ाईआ। जो आया तेरे पत्तन, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। तूं मालक सब नूं आया रखण, रच्छया करे थाउँ थाँईंआ। हर हिरदे आयों वसण, तेरी बेपरवाहीआ। बिन अक्खां आयों तक्कण, खोजे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। मूए मुबारक कहे मैं किसे सीस नहीं चढ़ना मुल्ला, मालक लैणा मनाईआ। जिस दे सीस उत्ते ना कोई पगड़ी ना कोई कुल्ला, ना कोई कलमा ढोला गाईआ। जित्थे काफीआ गाए कोई ना बुल्ला, बुल्लीआं वाला रस ना कोए वखाईआ। ना कोई परदा रहे ना ओहला, साख्यात दर्शन पाईआ। बेपरवाह बण विचोला, परदा ओहला दए उठाईआ। तूं मालक ठाकर मौला, मेल मिल्या सहिज सुभाईआ। तेरा पूरा होवे कौला, इकरार वेला गया आईआ। लेखा वेख धरनी धौला, धर्म दी धार दए दुहाईआ। तेरा क्यों नहीं परवरदिगार फरकया डौला, डोलत वेख जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। मूए मुबारक कहे मैं दब्बे रहिणा नहीं किसे थल्ले हैट, हाईट आपणी लैणी बणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे करने कैट रैट,

६१
१६

राईट तेरा हुक्म सुणाईआ। शब्द नाम डण्डा फड़ के बैट, बाल अगे लैणा बुलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख अन्धेरी नाईट, निकटवरती तेरा राह तकाईआ। हुक्में अंदर करनी फाईट, फ़ैसला इक्को हक सुणाईआ। जिन्हां चिर सफ़ैद वाल कहे सूफ़ी सन्त ना कीते वाईट, कवाईट आपणा हुक्म वरताईआ। बिना चशमे नूर कर दे लाईट, नूर नूर रुशनाईआ। आपणी सिम्मत वेख साईड, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। साचे अस्व हो राईड, रैड गरीन दे समझाईआ। जन भगतां आपणे प्रेम दी बख़्श साची डाईट, ज़ैड यू ना कोए वखाईआ। इक्को तेरी मंगदे हमायत, हम मुश्कल दे कटाईआ। मनी सिँघ कहे मैं तेरी वेखणी ओह वलैत, जित्थे वलवला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सूफ़ीआं सफ़र दे मिटाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत १ चेला सिँघ दे घर जम्मू ✪

सूफ़ी कहिण सुहा दे समां, सम्मन पिछले दे पड़वाईआ। आपणा मार्ग राह रहबर हो के दस्स नवां, नाम निधान इक जणाईआ। असां कोई गोद नहीं वेखणी होर अम्मां, अमाम इक्को नज़री आईआ। शरीअत शरअ दा तोड़ के बन्ना, बन्धन अवर ना कोए पाईआ। तेरा मुरीद बिन दीद रहे ना अन्न्हां, अनक कलधारी आपे हो सहाईआ। बच्चा वेख निक्का नंन्हा, फड़ बाहों गले लगाईआ। हुक्म नाल मन नूं कर दे मनहा, मनसा कूड़ी बाहर कढाहीआ। चिन्ता रोग रहे ना ग़मा, ग़फ्लत तों खैहड़ा देणा छुडाईआ। तन वजूद रंग दे चम्मा, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। तेरा वेला वक्त रहे ना अगे लम्मा, जुग चौकड़ी गए विहाईआ। निरगुण जोत जगा शमां, शम्मस तबरेज सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। सूफ़ी कहिण केहड़ा दईए सबूत, मसाल नज़र कोए ना आईआ। तेरे हवाले साडा वजूद, वसल कर बेपरवाहीआ। काया तत तेरा कलबूत, कलमा दे सुणाईआ। साचे हुजरे रहो मौजूद, मुफ़लसां झोली दे भराईआ। तेरा नूर ना होवे ग़रूब, ग़रबन शरकन इक्को चन्द चमकाईआ। सिक्खणा पए ना कोई हजारा दरूद, रंगत हरि जी नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना कोए नमरूद, हुक्म आपणा इक समझाईआ। तेरे दर तों ना रहीए महिरूम, ख़ाली भाण्डे दे भराईआ। नन्न्हे बच्चे रो रहे मासूम, मुश्कल विच्चों लैणे कढाहीआ। आपणा सच दस्स कानून, काइदा देणा दृढ़ाईआ। जिस दा सब तों वक्खरा मज़मून, आत्म करे ना कोए लिखाईआ। नुकता रहे कोए ना नून, नग़मा नाम देणा जणाईआ। परवरदिगार तूं केहड़ी बेचणी परचून, तोले माशे रती वण्ड वण्डाईआ। आपणे नाम प्रेम दा ला के इक

साबून, साफ़ सुथरे देणे बणाईआ। नाअरा दस्स के इक मअकूल, महौल देणा बदलाईआ। तेरा कलमा सद कबूल, काया काअबे सीस झुकाईआ। मुहब्बत विच रख मशगूल, मश्वरा इक जणाईआ। तेरा हुक्म ना जाईए भूल, भुलयां मार्ग देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कदम कदम देणी शरनाईआ। सूफ़ी कहिण तेरा मस्तक लग्गे कदम, कदीम मिले वड्याईआ। बुत्त ख़ाकी सोहे बदन, बदला देणा चुकाईआ। कुछ लेखा दिसे विच अदन, आहला आदने रहे कुरलाईआ। तूं दूर दुराडा आया तक्कण, बिन अक्खां वेख वखाईआ। हकीकत जाणें हकन, हकूक देवें थाउँ थाँईंआ। तेरा दवारा आए मंगण, मांगत हो के सीस झुकाईआ। सजदा करीए सच डण्डावत बन्दन, बन्दगी बन्धन दे तुड़ाईआ। तूं दीन दयाल सदा बख्शंदन, बख्शिश रहमत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा देणा परमानंदन, प्रेम प्रेम विच समाईआ।

✪ १२ पोह शहिनशाही सम्मत १ अमरो देवी दे गृह जम्मू ✪

जम्बु दीप कहे जन भगत वेखे मन्नदे, श्री भगवान ओट तकाईआ। नाते तोड़ के छप्पर छन्न दे, शहिनशाह इक्को रहे ध्याईआ। छड्ड प्रकाश सूरज चन्न दे, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। राग छड्ड जगत कन्न दे, आत्म धुन वज्जी वधाईआ। लालच छड्ड के कूड़े धन दे, नाम पदार्थ झोली पाईआ। रूप बणा के सच्चे जन दे, सन्त सुहेले नज़री आईआ। अन्धेर गवा के कूड़े अन्न्ह दे, अज्ञान अन्धेर रहे मिटाईआ। आपणा बेड़ा कलयुग अन्तिम बन्न्ह्दे, बन्दगी इक्को सीस निवाईआ। धुर दे मार्ग वेखे चलदे, भज्जण वाहो दाहीआ। लख चुरासी विच मूल ना रलदे, सोहँ ढोला रहे गाईआ। प्रेम प्रीती इक्को झल्लदे, छड्डी सर्ब लोकाईआ। खेल वेखण अछल अछल्ल दे, जो वल छल धारी रिहा जणाईआ। सच दवारा इक्को मलदे, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। विछोड़े सहिण ना घड़ी पल दे, पलक अक्ख ना कोए बदलाईआ। बिन रुत्त बहारों फुलदे फलदे, जोबन रतड़े रंग रंगाईआ। रंग मानण सतिगुर चरण महल दे, अटल बैठे नज़री आईआ। लेखे मुका के दूई द्वैती सल दे, चार वरन होई कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जम्बु दीप कहे मैं भगतां वेख्या जोग, जुगीशर सके ना कोए समझाईआ। नाता छड्ड के चौदां लोक, ब्रह्मण्ड खण्ड नाता गए तुड़ाईआ। परम पुरख दी मानण इक्को मौज, मजलस भगतां नाल वधाईआ। मन मति करे कोए ना सोच, बुद्धी जगत ना कोए चतुराईआ। प्रभ दा दर्शन कर के रोज़, नित नवित वेख वखाईआ। जंगलां विच करनी पई ना खोज, पर्बतां

उत्ते डेरा कोए ना लाईआ। माया ममता मेट के झूठा रोग, हंगता गए गवाईआ। आत्म परमात्म चुग के चोग, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए समझाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख्या इक प्यार, प्रेमी प्रेमका इक्को रूप नज़री आईआ। पुरख अबिनाशी धुर दा यार, परवरदिगार दया कमाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, गृह गृह करे रुशनाईआ। भगत सुहेले मात उठाल, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। नाता तोड़ के काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच दुआर जणा सच्ची धर्मसाल, जमां तों ल्या बचाईआ। नाम भण्डारा दे के धुर दा माल, धन धनाढ दिते वखाईआ। पूरब जन्म दा दस्स अहिवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाईआ। जम्बु दीप कहे मैं कलयुग कूड़ वेख्या जलाद, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जिस दा साचा खेड़ा ना कोए अबाद, मन्दिर वज्जे ना कोए वधाईआ। धुर दी देवे ना कोए दात, दौलत सच ना कोए वरताईआ। मन मति वेखी नार कमज़ात, घर घर भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ी मेटे कोए ना रात, सच्चा चन्द ना कोए चमकाईआ। सुहञ्जणी होवे ना कोए प्रभात, अमृत वेला ना कोए सुहाईआ। आत्म परमात्म गाए कोए ना गाथ, सिफ्तां वाली जगत पढ़ाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द लैण स्वाद, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। संख धुन सुणदे नाद, आत्मक राग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखी इक जमात, जजमान इक्को नज़री आईआ। पतिपरमेश्वर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर अंदर बह के पावे रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। जन भगतां पूरी कर के आस, आशा तृष्ना रिहा गवाईआ। जन्म जन्म दा कर के बन्द ख़लास, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। सदा सुहेला वसे पास, जगत जुदाई ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखे धुर दे जाचक, यकीन इक्को उपर रखाईआ। जिन्हां दी अन्तर धार आस्तिक, इक्को मन्नण सच्चा माहीआ। नाता जोड़या प्रेमी वास्तवक, कूड़ कुड़यार दिते तजाईआ। जो इथे उथ्थे दो जहानां करे हिफ़ाज़त, हम साजण हो के फेरा पाईआ। करनी करे आपणे मुताबक, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साची दस्स के इक इबादत, नाम अगम्मा दिता सुणाईआ। आत्म परमात्म इक तआकब, दूजा राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख्या हक यकीन, हकीकत सच्ची नज़री आईआ। जन भगतां मिली अगम्मी तालीम, तुआरफ़ होया बेपरवाहीआ। जिन्हां दी करे ना कोए तकसीम, जगत

वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को इक कहिण आमीन, कामल मुर्शद मिल्या बेपरवाहीआ। मैं उहनां नूं कहां आफ़रीन, जो आफ्त तों पल्लू गए छुडाईआ। झगड़ा चुका के नर मदीन, इक्को रंग समाईआ। धुर दा हुक्म कर तसलीम, सिर सके ना कोए उठाईआ। पारब्रह्म दे हो अधीन, आहला अदना लेखा दए गवाईआ। सेवा विच बण मस्कीन, मुश्कल आपणी हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लहिणा रिहा समझाईआ। जम्बु दीप कहे मैं की देवां जवाब, समझ विच ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल जिन्हां बणया अहिबाब, मुहब्बत विच मेल मिलाईआ। उह सजदयां तों बाहर करन आदाब, डण्डावत इक्को इक वखाईआ। मन्दिर सुहा के सच महिराब, महबूब मिल के खुशी मनाईआ। उहनां दे अंदर इक वैराग, वैरी सारे दिते कढाहीआ। सच प्यार दा जगे चराग़, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया धो के दाग़, दुरमति दूर कराईआ। लख चुरासी विच्चों वण्ड के आपणा भाग, भगवन मिल के खुशी मनाईआ। धुर दा मेला नाल कन्त सुहाग, सेज सुहञ्जणी रहे हंढाहीआ। जित्थे खेड़ा सदा रहे आबाद, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी वेख वखाईआ। जम्बु दीप कहे मैं दस्सां की सलाह, सिफ्त विच ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाला एकँकार गया आ, जोती जाता पुरख विधाता वेस वटाईआ। जो भगतां बणया आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। रहबर बण के दस्से राह, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। कोट जन्म दे बख़्श गुनाह, पतित पापी लए तराईआ। लख चुरासी विच्चों फड़ के बांह, आप आपणी गोद उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को नाँ, आत्म परामात्म सोहला गाईआ। दो जहानां बण के पिता माँ, मेहर नज़र नाल तराईआ। सन्त सुहेले वेख के चढ़या चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। बिन रसना जेहवा कहां वाह वा, वाहिगुरू तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखी अगम्म जोत, जोती जाता करे रुशनाईआ। जिस दा ना कोए वरन ना कोई गोत, तत्तां वाला वजूद ना कोए वखाईआ। ना कोई किला ना कोए कोट, दर दुआर ना कोए सुहाईआ। ना नगारा ना कोए चोट, डंका मात ना कोए सुणाईआ। मेहर नज़र नाल जन भगतां अंदरों कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया साफ़ कराईआ। झगड़ा चुका के लोक परलोक, बख़्शे सरन सच्ची सरनाईआ। जित्थे कदे ना आवे मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। रहे समझ कोए ना सोच, मदहोश आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा आपणा रिहा वरताईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखी भगतां यद्द, याददाशत समझ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारी पार करके हद्द, हाज़र हो के दर्शन पाईआ। नाता तोड़ के कूड़ा जग, जग जीवन दाता रहे मिलाईआ। प्रेम

प्रीती अंदर सद्द, ढोले सुणन थाउँ थाँईंआ। विछोड़े विच रह ना सकण अलग्ग, वखरा धाम ना कोए बणाईआ। मिल के मेल सूरे सरबग्ग, घर मन्दिर रहे सुहाईआ। खुशीआं अंदर रहे दग़, दग़ा कूड़ ना कोए कमाईआ। जगत कुटम्बी सारे छड्ड, भगतां भगतां नाल करी कुड़माईआ। नाता देही छोड़ के हो गए अड्ड, मन मति चले ना कोए चतुराईआ। साची मंज़ल वल रहे वध, कदम कदम नाल बदलाईआ। लेखा जाण उपर शाह रग, रघुपत इक्को रहे मनाईआ। जिस दा मेला होया अज्ज, अगे लेखा आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा इक दृढ़ाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। जिन्हां नूं मिल्या श्री भगवान, भागां भरे बैठे चाँईं चाँईंआ। बाहरों तत्तां वाले इन्सान, अंदर मेला बेपरवाहीआ। इक्को ढोला गाउँदे नाम, नाउँ निरँकारा इक ध्याईआ। जिन्हां दी आसा मनसा निशकाम, कूड़ा लालच ना कोए वधाईआ। पत्थर माटी इट्टां वाले छड्ड के मकान, काया मन्दिर अंदर बह के सोभा पाईआ। जित्थे वसे धुर दा राम, आगमन आपणा दए समझाईआ। सुनेहुड़यां विच दए पैग़ाम, धुर फ़रमाना आप अल्हाईआ। पूरा कर के धुर दा काम, निहकर्मी होए सहाईआ। अगली मुश्कल करे आसान, एहसान आपणा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख्या सिदक भरोसा, अंदर वड़ वड़ खोज खुजाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर तक्कया कोठा, नौ दर फोले चाँईं चाँईंआ। जन भगत कोई ना निकलया थोथा, जो सुख़न गया भुलाईआ। पढ़ना प्या कोए ना पोथा, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, इक्को बहुत चोखा, जो चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। मार्ग रस्ता दस्स के सौखा, गुरमुख सज्जण रस्ते रिहा पाईआ। जन भगतां नाल कदे कोई करे ना धोखा, धूआँधार विच्चों बाहर कढाहीआ। मन्दिर वड़ के देवे होका, हुक्म नाल लए उठाईआ। सन्त सुहेला रहे कोए ना सोता, सोई सुरती आप जगाईआ। सब दी पूरी करे लोचा, लोचन नैण दरस कराईआ। कलयुग अन्तिम दे के मौका, मुफ्त आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक प्रगटाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख्या अगम्म नज़ारा, नज़र आपणी लई बदलाईआ। भगतां मेल नर निरँकारा, निरगुण सरगुण वज्जी वधाईआ। इक्को मंगण धुर दरबारा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। चरण प्रीती सच सहारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्तिम सतिजुग विवहारा, विवहारी आपणा खेल वरताईआ। साचे नाम दा वणज वपारा, जन भगतां हट्ट दए खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा करदा आया उधारा, नित नित आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप समझाईआ। जम्बु दीप

कहे मैं रह ना सकां ख़ामोश, नेत्र वेख खुशी मनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तत्तां वाला पहन के पोश, वेस अनेका रूप धराईआ। जिस नूं समझ सके कोए ना कोश, विद्यावान ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। जम्बु दीप कहे मैनूं आई उसे दी याद, जिस दी उसतत चार जुग नज़री आईआ। जन भगतां सुणन आया फ़रयाद, फ़रेबी हो के वेस वटाईआ। जिस नूं समझे ना कोए दिमाग़, बुद्धी भेव ना कोए खुल्हाईआ। सो भगतां देवण आया दाद, नाम भण्डारा झोली पाईआ। खुशीआं वाला कर मज़ाज़, तबअ अंदरों दिती बदलाईआ। ममता वाला धो के दाग़, दगयां तों ल्या छुडाईआ। सच बेड़े चढ़ा के जहाज, पत्तन आपणा रिहा वखाईआ। जित्थे इक्को साचे नाम दी पैंदी आवाज़, दूजी करे ना कोए शनवाईआ। गुरमुखां होणा पए ना किसे दा मुहताज, ख़ाली झोली ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। जम्बु दीप कहे मैं कुछ कहां जलदी, वेला नेड़े गया आईआ। किसे नूं ख़बर नहीं इक पल दी, पलक सके ना कोए बदलाईआ। एह खेल वखरी अछल अछल्ल दी, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। जिस दी खेल कदे ना टल्दी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। उह कलयुग सृष्टी वेखे बलदी, अग्नी तत रही तपाईआ। धारा जाणे अगम्मी दल दी, जो दलिद्रीआं करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा वेख वखाईआ। जम्बु दीप कहे मैं की कुछ दस्सां छेती, छत्रधारी नज़र कोए ना आइंदा। लख चुरासी खुभी विच बरेती, बिन पुरख अकाल पार ना कोए कराइंदा। भगतां बणया कोए ना भेती, अंदर वड़ मन्दिर चढ़ सुरती शब्दी डंक ना कोए सुणाइंदा। सारे रसना जेहवा गाउँदे वेखो वेखी, वखरा रूप अनूप ना कोए दरसाइंदा। कलयुग जीव सारे लोकमात दे देसी, परदेसी जन भगत जो पिछला राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा जाणे लेखी, अलेख आपणी कार कमाइंदा। जम्बु दीप कहे मैथों होण लग्गी जुआब तल्बी, ताब्यादार हो के सीस निवाईआ। मेरे विच झगड़ा ज़ात पात दीन मज़्बी, मज़ा सच ना कोए चखाईआ। श्री भगवान दी सारे करदे बेअदबी, अदब आदाब नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त कोई दिसे ना मददी, आपणी मुद्दत मुका के बैठे मुख छुपाईआ। जगत धार बणी सूकर दी, सांतक सति ना कोए कराईआ। साची प्रीत कितों ना लब्भदी, काया हट्ट ख़ाली रहे कुरलाईआ। जिन्हां दी मुहब्बत इक्को नाल लग्गदी, एथे उथ्थे ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल लेखा पूर कराईआ। जम्बु दीप कहे मैं देख्या जलवा नूर, निराला नज़री आईआ। जिस ने करना मजबूर, मजबूरी विच लोकाईआ। नौ सत्त मचाउणा फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। कूड़ा गढ़ जणा ग़रूर, ग़ैरां दी ग़ैरां नाल करे

लड़ाईआ। जन भगतां मिले ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। नाम भण्डारा कर भरपूर, भरम भुलेखे दए कढाहीआ। अगला दस्स के सच दस्तूर, दस्त बदस्त दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया कर के चूरो चूर, चरण कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग आपणा दए रंगाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखी रंगत, नव नवीन नज़री आईआ। प्रेम प्रीती अंदर हरि संगत, सोहणा रूप रही प्रगटाईआ। नाता तोड़ के स्वर्ग जन्नत, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जित्थे दूजे दा होणा पए ना मंगत, तृष्ना अवर ना कोए वखाईआ। लभ्भणा पए ना कोए पंडत, इक्को करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपन आपणे घर वसाईआ। मैं करना उह योद्ध, जो योद्धा सूरबीर समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं आप कराया बोध, बुद्धिवान दिते भुलाईआ। अन्त अख़ीरी सब दा पा के भोग, भोगी देणे सेज सवाईआ। जन भगत दस्स के आपणे नाम दा जोग, तपस्सया इक्को देणी दृढ़ाईआ। जिस दा कदे ना होवे विजोग, धुर दा मेला देणा मिलाईआ। लेखा मुका के चिन्त सोग, सोचां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रिहा उठाईआ। जम्बु दीप कहे मैं भगतां वेखी आस, आसमान उत्ते ध्यान लगाईआ। जिन्हां दी गुर पैगम्बर आपणी हथ्थीं पेश करनी दरख़ास, गोबिन्द हथ्थों हथ्थ फड़ाईआ। उन्हां दो जहान कहिण शाबाश, वाहवा कह के रहे सुणाईआ। मेला मिल्या सर्ब गुणतास, गुणवन्ता दए वड्याईआ। सहिज सुभाउ सुत्यां मिले हन्हेरी रात, घर घर आपणा फेरा पाईआ। झगड़ा मुका के पूजा पाठ, नमाज़ निवाज़िश विच पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करमकांड दए मुकाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखे जोबनमते, मस्त जवानी रहे हंढाहीआ। कूड़ी क्रिया विच मूल ना फसे, फ़ैसला आपणा गए मुकाईआ। आत्म परमात्म मिल के हस्से, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सन्त सुहेले हो इक्ट्ठे, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जिन्हां जम की फास मेटे रट्टे, रटन इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दवारे आए प्रेम दे वट्टे, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ। जम्बु दीप कहे मैं लगदा पिण्डे वेख्या वटणा, रूप अनूप बदलाईआ। जिस दी कोए ना जाणे घटना, घाटे विच जगत लोकाईआ। जिस दा खेल होया पटना, सो पाटल वेख वखाईआ। घर वसा के आपणा वतना, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जन भगतां वेखे साची रचना, रुची आपणे नाल लगाईआ। दर दरबार सुहा के पत्तना, बेड़े आपणे लए चढ़ाईआ। संदेसा देवे इक्को सच नाँ, सति सतिवादी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्को पाईआ। जम्बु दीप कहे मेरे अन्तर आई ख़ुशहाली, वज्जी हक वधाईआ। जन भगतां देणी पए ना किसे दलाली, विचोला

६८
१९

विच ना कोए बणाईआ। मार्ग दस्स के इक आसानी, असल भेव दिता खुलाईआ। गुरमुखो देणी पए ना कोए कुरबानी, कतलगाह ना कोए वड्याईआ। सोहँ नाम सच निशानी, निशाना तुहाडे अंदर दिता लगाईआ। सतिगुर नाल करयो कदे ना कोए बेईमानी, बेवा रूप ना कोए बणाईआ। तुहाडा मेल उपर असमानी, अगे होए ना कदे जुदाईआ। कलयुग जीव समझे खेल ना कोए रुहानी, ऐवें रौला रहे पाईआ। एह काया तत सरीर बेगानी, अमीर ग़रीब ना कोए बचाईआ। गुरमुखो तुहाडी यारी जुगां पुराणी, वेद पुराण देण गवाहीआ। शहादत देवे साची बाणी, ख़ालस हुक्म इक सुणाईआ। आत्म सदा चढ़ी रहे जवानी, बुढेपा रूप ना कोए बदलाईआ। लख चुरासी जिस्म सदा फ़ानी, लोकमात रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि वेख वखाईआ। जम्बु दीप कहे मैथों नहीं हुन्दा सबर, बेसबरा हो के दयां सुणाईआ। पुरख अकाल आया जाबर जबर, बलधारी फेरा पाईआ। शब्दी धार चला के शेर बब्बर, बब्बर ठीकर दए भन्नाईआ। जन भगत पूरी कर के सध्धर, सद्दा दे के लए तराईआ। लख चुरसी पा के ग़दर, गदागर सारे दए वखाईआ। गुरमुखां करे आप कदर, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। जेहड़ा गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी घल्लदा रिहा बदल बदल, नित नवित हुक्म सुणाईआ। सो कलयुग अन्तिम करन आया अदल, अदालत इक्को इक वखाईआ। जित्थे कदे करे ना कोई कतल, छुरी कटार ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नूर खुदाईआ। जम्बु दीप कहे कुछ मैनूं लग्गा पता, पत्तन आया धुर दा माहीआ। जिस दा भेव समझे कोए ना रता, रतन अमोलक हीरे गुरमुख रिहा बणाईआ। आत्म परमात्म बण के सका, सज्जण हो के जोड़ जुड़ाईआ। भगत सुहेले वेखे तक्के बिना अक्खां, आख़र आपणी गंढु पवाईआ। जम्बु दीप कहे मैं सिफ्तां कर कर थक्का, लेखा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। चरण कँवल ओस दे ढठ्ठां, मंगां इक सरनाईआ। नाम ओसे दा रट्टां, जो रट्टयां विच्चों बाहर रखाईआ। प्रेम रस ओसे दा चट्टां, जो अमृत जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेख्या जलवागर, ग़रीब निमाणयां रिहा तराईआ। जिस नूं सारे मन्नदे हरी हरि, हरयावली करे लोकाईआ। जो जन भगतां आया घर, मन्दिर दवारा इक वड्याईआ। जित्थे कीमत पए कोई ना ज़र, वण्डी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। रूप धर नरायण नर, निराकार वेस वटाईआ। सिध्धा जगत नाल छल, वल छल आपणा रिहा वखाईआ। जन भगतां प्रेम प्रीती दे के बल, बलवान सूरे रिहा वखाईआ। विछोड़ा कट के घड़ी पल, पलक दे अंदर पलक रिहा जुड़ाईआ। आत्म परमात्म अन्तर रल, मिल्या मेल सहिज सुभाईआ। गुरमुखां पूरब जन्म दा देण आया फल, वस्त इक्को नाम वरताईआ।

दूर दुराडा आया चल, बण के पाँधी राहीआ। भगत भगवान बैठण रल, साची सिख्या इक समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडा विछोड़ा रहिण ना देवे विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वड्डी झल्ल, झलक नाल पलक लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडा जन्म जन्म दा मसला करे हल्ल, मिसल आपणे नाल रखाईआ।

✪ १३ पोह शहिनशाही सम्मत १ सेवा राम, दौलत राम जम्मू मारकीट ✪

७० जम्बु दीप कहे मैं खेल वेख्या उपर धरती, सचखण्ड दुआर नज़री आईआ। पुरख अकाल जोती जामा वेस वटाया शरती, शर्तीया गया आईआ। खेल खेले अगम्म फ़र्शी, प्रीतम अर्शी दए वड्याईआ। जिस दी खुशीआं वाली चले बरसी, रुत्त माह वज्जे वधाईआ। मालक बण के इक्को निध प्रती, प्रीतम आपणी दया कमाईआ। नाता तोड़ के गर्मी सर्दी, सद्दा नाम इक सुणाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां सुण के अर्ज़ी, आजज़ वेखे थाउँ थाँईंआ। अगे करे आपणी मर्ज़ी, मरीज़ वेख जगत लोकाईआ। जिस दा खेल नहीं कोई फ़र्ज़ी, कूड़ी धार ना कोए बंधाईआ। लख चुरासी जिस तों डरदी, भय विच सीस निवाईआ। सब दी आत्म जिस दा नाम पढ़दी, दीनां मज़्हबां वण्ड वण्डाईआ। उस दी इक्को कल वेखी चढ़दी, कल कल्की नज़री आईआ। उस पौड़ी ला के हरि दी, हिरदे अंदर हरि जू दिता मिलाईआ। प्रेमीआं प्यारयां दा बण के दर्दी, दर्दीआं दुःख गवाईआ। मन पाटा सीवण आया बण के दरज़ी, नाम निधाना गंढु पवाईआ। खेल वखावे साचे घर दी, घराना इक्को दए जणाईआ। जित्थे अमृत धार वर्ह्दी, झिरना बेपरवाहीआ। इक्को आवाज़ दए शब्दी नाद धुन दी, राग अनुराग सुणाईआ। सुरत रहे ना किसे तन दी, वजूद वजद ना कोए समझाईआ। आशा रहे ना किसे कन्न दी, सरवन भेव ना कोए खुल्हाईआ। इक्को खेल श्री भगवन दी, भगतां मिले वड्याईआ। जोत चमके नूरी चन्न दी, सीतलता आपणी (दए) वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार शरनाईआ। जम्बु कहे मैं वेख्या उपर ज़मीन, ज़ामन हो के दया कमाईआ। जिस दा मार्ग जगत महीन, नेत्र आपणा अक्ख ना कोए तकाईआ। ख़ालक ख़लक बण करीम, काया कुरह खोज खुजाईआ। इक्को दे के हक यकीन, हकीकत दए समझाईआ। हुक्मे अंदर कर तलकीन, तबअ दए बदलाईआ। जिस नूं सारे कहिण आमीन, आमद विच आपणी खुशी मनाईआ। सजदयांविच करन तसलीम, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। जम्बु दीप कहे मैं

वेखी अगम्मी जुगती, जुग चौकड़ी ना किसे समझाईआ। सच प्रीती दे के चरण दुआर मुक्ती, मुक्ती तों परे दिते कराईआ। जित्थे सृष्टी दी मंज़ल मुकदी, भगतां दा मार्ग अगे दिता लाईआ। जिन्हां नूं लोड़ रही इक्को तुक्क दी, साचा ढोला रहे गाईआ। खेल नहीं कोई लुक दी, लोक परलोक रिहा सुणाईआ। प्रगट धार अबिनाशी अचुत दी, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जिस नूं दीन दुनी सदा पुछदी, शास्त्र सिमरत फोल फुलाईआ। ओह खेल अगम्मी करे पिता पुत्त दी, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। फुलवाड़ी वेखे सुहञ्जणी रुत दी, रुतड़ी आप महकाईआ। जिस दे कोल बेशक कुछ नहीं, सब दा मालक उहो नज़री आईआ। कदमां उत्ते जगत सृष्टी झुकदी, झुकयां लए तराईआ। भगतां कहाणी मेटे दुःख दी, दुःख सुख विच बदलाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस देह मिली मनुक्ख दी, मानव आपणा घर समझाईआ। हुण घड़ी नहीं ख़ामोश चुप दी, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। खेल वेखणी इक्को उस दी, जिस दी उसतत सारे गए गाईआ। मंज़ल वेखणीसच्याई खुश दी, जो खुशकिस्मत रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वेख खुशी मनाईआ। जम्बु दीप कहे मैं वेखे कलयुग जीव जम्बुक, शेर भबक इक लगाईआ। दूर दुराडे सारे रहे तब्क, धीरज धीर ना कोए बंधाईआ। सुण के नाम अगम्मी सबक, बहु संख्या वाले संथा गए भुलाईआ। भगत उधारे बहुत्यां विच्चों अधिक, आहला अदना रंग रंगाईआ। नाम भरोसा दे के सिदक, सदमे तों लए बचाईआ। दवारे रहे कोए ना निन्दक, कूड़ कुड़यारां बाहर कढाहीआ। भगत सुहेला बण के पंडत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। गुरमुख उबार के सन्त, सूफ़ी सफ़ा दए बदलाईआ। हरख़ सोग मेट के चिन्त, ग़मी ग़मखार ना कोए वखाईआ। जन भगतां साची दे के हिम्मत, हौसले दए वधाईआ। इक्को सम्बल नगरी साची याद रखणी सिम्मत, जिस दी सीमा समझ किसे ना आईआ। प्रेम प्यार विच रखणी मिल्लत, मैल दुरमति देणी धुआईआ। खुआरी होए मूल ना ज़िल्लत, ज़ाहर ज़हूर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे सयदे दी मन्न के मिन्नत, मिल मिल आपणा मेल मिलाईआ। जम्बु दीप कहे असीं वेखी अगम्मी जगह, धाम सोहणा नज़री आईआ। जित्थे इक्को नाम दा वज्जे डग्गा, डिगयां ढठ्ठयां गले लगाईआ। भगत भगवान दा मिलणी वाला अड्डा, अडम्बर सारे दए गवाईआ। पार कर के कूड़ी हद्दा, हदूद आपणी इक समझाईआ। नाम खुमारी जाम दे के मधा, मधुर धुन राग अलाईआ। आपणे मिलण दी दस्स के वजह, वजूद विच्चों दए कराईआ। कूड़ी क्रिया कर के ज़िबहा, छुरी शरीअत दए फराईआ। जन भगतां रंग चढ़ा के हब्बा, हम साजन लए बणाईआ। इक्को पिता पुरख अकाल बण के अब्बा, अम्बर उत्ते मेला अमर रूप वखाईआ। कूड़ी किरया सफा मलेछ उठा के सभा, साबत आपणा नूर दरसाईआ। झगड़ा रहिण ना

७१
१६

देवे कोई विच गभ्भा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। नाम निधान दा दे के मज़ा, मजलस साची दए वखाईआ। जित्थे कूके कोए ना कज़ा, काज़ीआं तों लए बचाईआ। सद चलाए आपदी रज़ा, राज़क रहीम हो सहाईआ। जम्बु दीप कहे जन भगतां अगे भुगतणी नहीं कोई सज़ा, साहिब नाल मिल के साहिब विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्रीती अंदर बध्धा, बध्धयां लए छुडाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत १ सूबेदार सवरन सिँघ ✪

सतिजुग कहे प्रभ तेरा सहारा, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी शरनाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुट्टे कूड़ संसारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। भगत भगवान बणे सच प्यारा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। एका शब्द नाम तेरा जैकारा, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। एका धाम सोहे न्यारा, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। एका नूर होए उज्यारा, दूजा चन्द ना कोए चमकाईआ। एका मन्दिर वसे दवारा, गृह इक्को सोभा पाईआ। इक्को सृष्टी दृष्टी होए विहारा, विवहार आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिजुग कहे श्री भगवान, भगवन तेरी आस रखाईआ। त्रेता कलयुग बीतया विच जहान, अन्तिम अन्त लई अंगड़ाईआ। किरपा कर मर्द मर्दान, नौजवान तेरी शरनाईआ। साचा दे सति ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। लख चुरासी तुट्टे माण, अभिमाण मोह दे खपाईआ। साचा मार्ग दरस चार वरन करे परवान, धर्म संदेसा इक समझाईआ। ऊँच नीच राउ रंक वरन बरन नाता तुट्टे जीव जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे साहिब सच जगदीश, जगदीशर तेरी आस रखाईआ। तेरे चरण कँवल मेरा सीस, नमस्ते डण्डावत बन्दना सजदा इक्को इक समझाईआ। तेरा ढोला नाम नामा आदि जुगादी साचा गीत, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। आत्म परमात्म पंज तत काया अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर साची दरस रीत, रीतीवान तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा चुके मन्दिर मसीत, काया काअबे वज्जे वधाईआ। मन वासना गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत सुहेला जाए जीत, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। तेरी सरन होए अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। झगड़ा चुक जाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। सच प्रेम प्रीतम प्रभ बख्शी इक प्रीत, परम पुरख तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी कर के गए वसीअत, सो वेला वक्त दए दृढ़ाईआ। जीव जंत साध सन्त कर नसीअत, धुर फ़रमान इक सुणाईआ। आत्म अन्तर बदल के जिस्मानी तबीअत, असमानी नूर

कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादि प्रितपालक ख़ालक परवरदिगार तेरी सच सच वलदीअत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा हक मुकाम सच दुआर जित्थे दूसर होर ना कोई हैसीअत, अवल इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति मार्ग दे दृढ़ाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरी इक्को सरन, दूजा नज़र कोई ना आईआ। झगड़ा मुका वरन बरन, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। इक्को पूजा होए निरगुण तेरा चरण, जो जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। चारे खाणी तेरा ढोला पढ़न, तूंही तूंही राग अलाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़न, पैंडा आपणा हक चुकाईआ। बिन अक्खां नैण दरस करन, जोती जोत जोत जोत रुशनाईआ। सच दवारे धुर दे वड़न, जित्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तूं साहिब गुणवन्त, गुण निधान दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा लेखा आदि अन्त, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। तेरी माया दो जहान बेअन्त, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो आकाश तेरी शरनाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा कन्त, आत्म परमात्म रिहा बंधाईआ। चारे खाणी तेरी बणत, उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज आपणा खेल वखाईआ। लेखा जाण जीव जंत, साध सन्त करी पढ़ाईआ। गढ़ बणा के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आपणे विच छुपाईआ। बोध अगाध बण के पंडत, साची सिख्या दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मेरी तेरे चरण कँवल अरदास, बेनन्ती इक्को इक सुणाईआ। वस्त अमोलक मंगां ख़ास, ख़ालस हो के देणा समझाईआ। साचे मण्डल पाउणी रास, बिन गोपी काहन खेल वखाईआ। निरगुण हो के वसणा पास, सच देणी माण वड्याईआ। तूं दाता दानी गहर गम्भीर सर्ब गुणतास, बेअन्त तेरी सरनाईआ। कलयुग लहिणा देणा मुक्के अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। झगड़ा चुक जाए ज़ात पात, दीन मज़ूब राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा बण जाए सच्चा साथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दे वखाईआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब स्वामी पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। दीना बंधप दीन दयाल, ठाकर स्वामी तेरे हत्थ वड्याईआ। परवरदिगार सांझे यार, जलवागर तेरी रुशनाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा हाल अहिवाल, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे जंजाल, काल नगारा दए वजाईआ। साची सिख्या सर्ब सिखाल, गुरमति इक्को इक दृढ़ाईआ। सृष्टी अंदर वखा इष्ट काया मन्दिर इक धर्मसाल, जिस गृह अंदर गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। तेरी नित नवित सदा अवल्लड़ी चाल, चाल निराली दे समझाईआ। जो भगत सुहेले गुरू गुर अवतार तेरी घालण आए घाल, कीती घाल लेखे

पाईआ। मन्न बेनन्ती इक स्वाल, अगम्म अथाह तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साची मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगां मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सति सच दे अनन्द, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। तेरा प्रेम वज्जे मृदंग, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा गीत सुहागी छन्द, इक्को ढोला दे सुणाईआ। तेरा नूर अगम्मी चन्द, इक्को जोत कर रुशनाईआ। तेरा रूप हँ ब्रह्म, आत्म परमात्म परदा लाहीआ। तेरा खेल पवण स्वास दम, पवण पवणां राह जणाईआ। तेरा हुक्म बुध मति मन, पंज तत वण्ड वण्डाईआ। सच संदेश नर नरेश नर निरँकार इक्को घल्ल, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग कहे मेरे सति सतिवाद, सति स्वामी आपणी दया दे कमाईआ। तेरा खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी वज्जे वधाईआ। तेरा शब्द धुन्कार नाद, अगम्म अथाह करे शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए अराध, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। तेरी सदा सदा सद सब तों वखरी याद, याददाशत लए बणाईआ। सतिजुग कहे मेरा खेड़ा कर आबाद, कूड़ी क्रिया पार कराईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी शाह पातशाह महाराज, महिमा अकथ सुणाईआ। जगत समाज बदल रिवाज, रवादार कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे वखाईआ। सतिजुग कहे मेरी नमस्ते, नमो नमो कह सुणाईआ। साचा राह इक्को दस्स दे, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। पड़दे लाह आपणी अक्ख दे, निज नेत्र होए रुशनाईआ। प्रेम दे अगम्मी रस दे, निझर झिरना इक झिराईआ। खैहड़ा चुके कूड़े भठ्ठ दे, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कर प्रकाश लट्ट लट्ट दे, निरगुण नूर होए रुशनाईआ। भण्डारे खोल साचे हट्ट दे, वस्त अमोलक इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी खाणी बाणी अंदर महिमा दस्सदे, सिफ्तां नाल सालाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ढोले जिस दे गाउँदे जस दे, अक्खरां नाल वण्ड वण्डाईआ। लेखे ला वास्ते जोड़े हथ्थ दे, दो हथ्थां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल दस्से पुरख समरथ दे, सति सतिवादी आप जणाईआ। श्री भगवान कहे सुण सतिजुग, सति सतिवाद दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया औध रही पुग्ग, लेखा लोकमात मुकाईआ। मन वासना चंचल कीती बुध, जगत ज्ञान ना कोए चतुराईआ। हरि का भेव कोए ना सके बुझ, चौदां विद्या होई हल्काईआ। रमज़ इशारा ना लाए कोई गुज्झ, आत्म परमात्म ना कोए मिलाईआ। भेव होया दुतीआ दुज, दूई द्वैत ना कोए मिटाईआ। प्रेम प्रीती साची रीती जाणे कोए ना सुच्च, सुच्चम सके ना कोए वखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणी धारों पए उठ, जिस नूं जन्मे ना कोए पिता माईआ। शब्द अगम्मी शेर हो के पए बुक्क,

दो जहानां लए समझाईआ। जिस दा निशाना कदे ना जावे उक, गोबिन्द तीर अणयाला इक चलाईआ। उस दे गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले साचे सुत, सज्जण आपणे लए बणाईआ। जगत रीती अन्तर उन्हां लए पुछ, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कूड़ कुड़यारा पैंडा कल जाए मुक, मार्ग अगला दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे सुण सतिजुग बच्चे, सति सतिवाद दयां समझाईआ। कूड़ी क्रिया काया माटी सब दे दिसे कच्चे, बिन भगतां कंचन रूप ना कोए बणाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले थोड़े अच्छे, अच्छी तरा दयां वखाईआ। जिन्हां दा चार जुग सृष्टी गाउणा जस्से, रसना जेहवा लाल पढ़ाईआ। उह अन्तर अन्तर अन्तर आत्म परमात्म नाल मिल के हस्से, हस्ती हस्ती विच छुपाईआ। दर्शन करन अगम्मी अक्खे, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। उह सच दुआर वसे, जेहड़ा खेड़ा कोए ना सके उजड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। श्री भगवान कहे सुण सज्जण मेरे मित्र, छोटे तैनूं दयां समझाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख मेरे आवण निक्कल, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। सवर्न सिँघ रहिण नहीं देणा पित्तल, पीत पीतम्बर आपणा दयां वखाईआ। अंदर बाहर आपणा दस्स चलित्र, चतुराई कूड़ी दयां गवाईआ। मन्दिर चाढ़ के चोटी सिखर, साख्यात इक्को दरस वखाईआ। जन्म मरन दा लेखा हुण मुका के फ़िकर, फ़िकरा इक्को दयां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा संग दयां वखाईआ। सतिजुग तेरा निभावां संग साथ, सगला आप जणाईआ। भगत सुहेला इक्को होवे दासन दास, दास दासण नज़री आईआ। जिस दे अन्तर मेरा वास, निरंतर प्रेम जणाईआ। जोत नूर प्रकाश, शब्द नाद सुणाईआ। लेखा पवन स्वास, साह साह वड्याईआ। झगड़ा मुका के पृथ्मी आकाश, धरनी धरत धवल वड्याईआ। मानस जन्म कर के रास, रस्ता इक्को दयां वखाईआ। जन्म जन्म दा कट बनवास, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा माण दए वधाईआ। सतिजुग साचे दया कमावांगा। मार्ग तेरा इक वखावांगा। सन्त सुहेला नाल मिलावांगा। गुर चेला जोड़ जुड़ावांगा। आत्म परमात्म गंढु पवावांगा। धीरज यति इक प्रगटावांगा। सति प्रकाश चन्द चमकावांगा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढु, पल्लू आपणे नाल बंधावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा इक वखावांगा। खेल साचा इक वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। जगत रिवाज समाज आप बदलाएगा। भगत सुहेले मात उठाएगा। आत्म परमात्म कर के मेले, तत सरीर वण्ड वण्डाएगा। जिस दी महिमा सिफ्त कर के गया कबीर, काअब्यां आप भुलाएगा। शरअ दा तोड़ जंजीर, शरीअत इक्को इक वखाएगा। मालक बण के इक पीर, परा पसन्ती मद्धम

बैखरी खोज खुजाएगा। आपणे हथ्थ रख तदबीर, तेरी तकदीर बणाएगा। वड दाता गुणी गहीर, गहर गवर वेख वखाएगा। पिछली उत्ते फेर लकीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। समरथ हो के खेल खिलावांगा। नाअरा (बोल अलख), अलख इक जगावांगा। मार्ग धुर दा इक दस्स, भगत धुर दे नाल मिलावांगा। आत्म देवे इक रस, नाता जगत नाल बंधावांगा। मेहरवान हो के करां पक्ख, पिठ्ठ उत्ते आपणा हथ्थ टिकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। साची सिख्या इक दृढ़ाएगा। जगत विहार नाल वड्याएगा। भगत भगवान सोभा पाएगा। गुण निधान रंग चढ़ाएगा। जीव निधान समझ ना पाएगा। शरअ शैतान नेड़ ना आएगा। मेहरवान हुक्म सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह इक्को इक वखाएगा। सतिजुग साचा अगों गया झुक, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। अबिनाशी करते तूं इक्को देणा सुख, दूजा दुःख ना कोए वखाईआ। जिस नाल पूरब पैंडा जाए मुक, मुकम्मल आपणा राह वखाईआ। परदा ओहला चुक, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। जन भगतां बदल के धुर दा रुख, अन्तर अन्तर आपणे नाल मिलाईआ। खेल तेरा अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दिती कराईआ। भाग लगा के पंज तत काया बुत्त, बुत्तख़ाने वज्जे वधाईआ। सति सुहञ्जणी होवे रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस गृह इक्को वज्जे वधाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरी इक गल्ल, बिन अक्खरां दयां समझाईआ। धाम वखावां निहचल अटल, जित्थे वजदी रहे वधाईआ। दीपक जोत रिहा बल, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। दूई द्वैती ना कोई सल, कूड़ी वण्ड ना कोए वखाईआ। निरगुण निरगुण अंदर बैठा रल, सरगुण रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरी वेखी निरगुण धार, निरवैर नज़री आईआ। मैं मंगां मंग दातार, दरवेश हो के अलख जगाईआ। सरगुण तेरा खेल अपार, अपरम्पर दए वखाईआ। जुग चौकड़ी आवे वारो वार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के गए उधार, लहिणा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। सो मार्ग सच सिखाल, सिख्या सर्ब लोकाईआ। झगड़ा चुक्क जाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। दूजा रहे ना कोई दलाल, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। सच वखा सच्ची धर्मसाल, दर दुआर इक्को इक दृढ़ाईआ। आपणे भगतां कर संभाल, गुरमुख गुरसिख लै उठाईआ। पूरब जन्म दस्स अहिवाल, परदा ओहला ओहला परदा देणा लाहीआ। तेरे नाम दा वज्जे ताल, दूजी धार ना कोए बदलाईआ। भाग लग्गे काया माटी खाल, ख़ालक ख़लक दे समझाईआ। सच बेनन्ती मन्न स्वाल, निउँ

निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। श्री भगवान कहे मैं दस्सां धुर दा खेल, इक्को वार दृढ़ाईआ। पहला भगत भगवान दा मेल, नाता कूड़ नाल तुड़ाईआ। भगत भगत दा सज्जण सुहेल, जगत जुग वज्जे वधाईआ। सृष्टी नालों दृष्टी कर के विहल, वेला वक्त इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार शरनाईआ। सच सरनाई इक जणावांगा। सतिजुग तेरा राह चलावांगा। भगत भगत जोड़ जुड़ावांगा। नाता जगत नालों तुड़ावांगा। मुक्त इक्को इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठावांगा। सतिजुग कहे प्रभू की तेरी मेहर नज़र, नज़र आपणी दे समझाईआ। किस बिध जीवन होवे बसर, बशरते लेखा दे मुकाईआ। सच विहार विच रहे ना कोए कसर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। तेरी धार दा होवे असर, असलीअत आपणी देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होणा अन्त सहाईआ। अबिनाशी करता कहे मेरा असल असूल, असलीअत दयां समझाईआ। जिस दा हुक्म सदा माकूल, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। दीन दुनी रकबा अरज़ ना कोई तूल, गोल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कोए ना रहे भूल, अभुल्ल दए समझाईआ। जन भगतां लहिणा देणा पूरब करना वसूल, वसूली सब दे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सच करनी कार कमावांगा। भगत सुहेले जोड़ जुड़ावांगा। नेरन नेरे हो के दरस वखावांगा। भाग लगा के काया वेहड़े, भाण्डा भरम भउ भन्नावांगा। दूई द्वैत मुका के झेड़े, झगड़ा इक्को नाल जणावांगा। जन्म जन्म दे कट के गेड़े, घर इक्को इक वसावांगा। जित्थे बहुत्यां नालों गुरमुख थोड़े बथेरे, कोटां विच्चों सन्त सुहेले आप जगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावांगा। सतिजुग कहे प्रभू तेरी करनी की, समझ कोए ना आईआ। मैं लख चुरासी वेखी जंत जीअ, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। किसे दा प्रेम प्यार मात पित वेख्या ना पुत्तर धी, भैण भाई पई लड़ाईआ। साचा रस तेरा प्रेम कोई ना सके पी, जल थल सृष्टी होई हल्काईआ। झगड़ा चुके ना साढे तिन्न हथ्थ सींअ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। गोबिन्द लेखा कोई ना जाणे इकीह बीह, बीस इकीस ना कोए वखाईआ। पतिपरमेश्वर आपणी धार धार बदल दे लीह, लायक नालायक वक्खो वक्ख कराईआ। तेरे विच इक तौफ़ीक, तोहफ़े घर घर दे पुचाईआ। तेरी सिफ्तां वाली करनी की तमीज़, तमअ विच जगत लोकाईआ। मैनूं इक्को आसा उम्मीद, आमद तेरी वज्जे वधाईआ। साचे जुग दी जगत दे तरतीब, तरां तरां नाल दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं दूर दुराडा नेरन नेरा करीब, बिन अक्खां नज़री आईआ। जन भगतां साचे सन्तां बदल देणा नसीब,

किस्म विच्चों किस्म आपणी बदलाईआ। इक्को कलमा इक्को नाम दस्स हदीस, हज़रत इक्को दयां समझाईआ। जगत जहान बदल के रीत, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सुनेहड़ा सुण लै एक, सतिजुग सच दयां समझाईआ। साचयां भगतां दे के टेक, टिक्का मस्तक दयां लगाईआ। कूड़ी क्रिया मिटा के भेख, भरम भउ दयां चुकाईआ। धुर दा दस्स इक संदेश, आत्म परमात्म देवां पढ़ाईआ। मार्ग वक्खरा दस्स विशेष, वासना इक्को नाल बणाईआ। लेखा रहे विष्न ब्रह्म ना गणेश, शंकर शरअ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। सच सरनाई दस्से आप, आपणी दया कमाइंदा। रूह बुत्त दोवें करके पाक, पवित्त आपणा आप समझाइंदा। बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, परदा ओहला आप उठाइंदा। जन भगतो आत्म परमात्म तुहाडा साथ, पंज तत नाता तत नाल जुड़ाइंदा। सतिगुर हुक्म शब्द इतफ़ाक, शब्द संदेशे नाल बंधाइंदा। गोबिन्द लेखा भविख्त वाक्, वाक्यात खोज खुजाइंदा। लेखा रहे ना ज़ात पात, झगड़ा मूल ना कोए वधाइंदा। जग जीवन दाता मेटणहारा दुरमति दाग़, पापां मैल आप धवाइंदा। सच फुलवाड़ी टहिके महके उह अगम्मा बाग़, जिस दा माली इक्को इक अखवाइंदा। जगत नाता जिज्ञासूआं वाला साक, उत्तम आपणा रंग रंगाइंदा। सतिजुग तेरा दस्से खेल तमाश, रीती भगतां नाल वखाइंदा। तेरी सुणे इक अरदास, सिर तेरे हत्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपन देवे धुर दा साथ, सगला संग निभाइंदा। शहिनशाही सम्मत कहे मैं भगतां चाढ़ां रंग लाल, गुरमुख वेख वखाईआ। जिन्हां दा सब तों वक्खरा वज्जणा ताल, ताल तलवाड़ा इक्को दयां समझाईआ। जिन्हां दे नेड़ नहीं आउणा काल, महाकाल भय ना कोए वखाईआ। सच दुआर मिलणा सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड बह के खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सर्ब करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। लाल रंग कहे मैं रंग रंगीला, जुग चौकड़ी वज्जदी आई वधाईआ। कलयुग अन्तिम भगतां बणया वसीला, वास्ता इक्को नाल बणाईआ। गुरमुखो तुहाडा गुरमुखां नाल रहे कबीला, कामल मुर्शद रिहा सुणाईआ। जित्थे मन मति बुध चले ना कोए वसीला, हुक्मी हुक्म ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। लाल रंग कहे मैं भगतां दुआर आया मंगण, अरज़ोई इक्को इक सुणाईआ। सच प्रेम दा तुहानूं लग्गा, सगन, सज्जण सज्जण वेख खुशी मनाईआ। तुहाडे अंदर द्वैत रहे ना अग्न, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। इक्को प्रीती अंदर होणा मग्न, एथे ओथे ना होए जुदाईआ। पुरख अकाल शब्दी हुक्म तुहानूं आवे सद्दण, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। सति नगारे

७८
१९

तुहाडे वज्जण, ढोलक छैणे दी लोड़ रहे ना राईआ। नूर नुराने दीपक जगण, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। साहिब समरथ जुग जन्म दे विछड़े कलयुग अन्तिम आया लभ्भण, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग सब दा रिहा बणाईआ। लाल रंग कहे मैनूं मिलणा उह लाभ, जेहड़ा लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। पुरख अकाल नज़री आए सब दा बाप, जो आदि जुगादि बणे पिता माईआ। जिस दे कोल दो जहानां हिसाब, जन्म जन्म दा लेखा वेख वखाईआ। बिन अक्खरां वाली फोल किताब, शब्दी शब्द दए समझाईआ। त्रेते जुग दा लहिणा जन्म जन्म दा साक, नाता कर्म कर्म तुड़ाईआ। पूरा करके लहिणा बेबाक, अगले लेखे विच समझाईआ। जिस रिश्ते नूं कोई फ़रिश्ता समझ ना सके जाण ना सके वाक्, वाकिफ़कार नज़र कोए ना आईआ। लाल रंग कहे सगन विच सगली सिखणी जाच, जाचक इक्को रिहा बणाईआ। शहिनशाह सच्चा समें समें सब दी पूरब पूरब जन्म दी कहाणी दस्सी जाए उह बात, जिस नूं मुनी रिषी रिषीआं दा रिषी बाल्मीक साढे तिन्न सौ अंक विच गया गाईआ।

✪ १७ पोह शहिनशाही सम्मत १ बिशन सिँघ दे गृह, कुलदीप कौर, अमरजीत कौर दे सगन समें गुड़गाउँ ✪

७६ १६

सतिजुग कहे मंगां प्रभ इक्को मंग, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द शब्द अलाइंदा। भगत सुहेला सज्जण बणा धुर दा पन्ध, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। प्रेम प्रीती आत्म परमात्म दे अनन्द, पारब्रह्म ब्रह्म आसा इक वखाइंदा। निरगुण नूर जोती जोत चमके चन्द, रवि ससि नैण शरमाइंदा। सच दवारे पवे ठंड, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाइंदा। बन्दगी अंदर खुशी होवे बन्द बन्द, डण्डावत इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाइंदा। सतिजुग कहे प्रभ मेरे ठाकर स्वामी, निरगुण निरवैर निराकार तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, जुग चौकड़ी तेरी खेल बेपरवाहीआ। शब्द अनाद बोध अगाध तेरी अगम्मी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान तेरा ढोला जस गाईआ। अमृत रस निझर धार तेरा ठंडा पाणी, कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता तृष्ना गढ़ तुड़ाईआ। तूं आत्म परमात्म निज घर जाण जाणी, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी सदा लासानी, आसानी आपणी दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब आदि निरँजण, निज घर वासी तेरी ओट तकाईआ। तूं दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। निज नेत्र लोचन पा आपणा अंजण, नाम निधाना इक वखाईआ।

चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को नज़री आवे सज्जण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर तेरे भगत सुहेले होवण मग्न, मगरला लेखा दे चुकाईआ। सति दवारे इक्को होवे अदल, इन्साफ़ इक्को देणा दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देणी बदल, सतिजुग निउँ निउँ लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस गृह मन्दिर तेरी वज्जे वधाईआ। सतिजुग कहे मेरे धुर दे ठाकर, ठोकर आपणी दे लगाईआ। कूड़ी क्रिया पार कर कलयुग सागर, संसा अवर दे मिटाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दे कादर, कुदरत आपणा हुक्म दे समझाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। तेरा नाउँ योद्धा सूरबीर बहादर, खण्डा खड़ग इक वखाईआ। दर दुआर जन भगतां दे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। सतिजुग कहे परम पुरख गहर गम्भीर, शाह सुल्तान तेरी आस रखाईआ। तूं दो जहानां बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी तेरे हुक्मे अंदर घत्त के गए वहीर, बण बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। तेरी समझ ना सक्या कोई तस्वीर, मुसव्वर रूप ना कोए प्रगटाईआ। तेरे कदमां अंदर झुकदे गए पैगम्बर पीर, सजदयां विच सीस निवाईआ। गुर अवतार समझ सक्या ना तेरा कोई अख़ीर, आख़र बेअन्त बेअन्त गए दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी तेरी शरअ वाली ज़ंजीर, दीन दुनी रही फसाईआ। कलयुग अन्त झगड़ा वेख ग़रीब अमीर, चार वरन अठारां बरन परदा लाहीआ। जूठ झूठ बदले ना कोई तकदीर, तदबीर हक ना कोए समझाईआ। साचा अमृत निझर रस मिले ना ठंडा सीर, अग्नी तत ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। सतिजुग कहे मैं मंगां इक्को दान, दाते दानी अगे झोली डाहीआ। धुर दा बख्श इक ज्ञान, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे कूड़ जहान, जूठ झूठ रहे ना राईआ। बिन अक्खरां दे ज्ञान, निरअक्खर इक समझाईआ। घर स्वामी मिलणा आण, ठाकर हो के ठोकर नाल उठाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले लख चुरासी विच्चों कर पहचान, बेनज़ीर आपणी अक्ख उठाईआ। साचा मार्ग दस्स जहान, चार वरन इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रहबर इक अख्वाईआ। सतिजुग कहे धुर दरगाही परवरदिगार, नूर नुराने तेरी इक रुशनाईआ। तेरी आमद विच होया ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। हकीकत जाण सच हलाल, हुक्म आपणा दे दृढ़ाईआ। जलवा नूरी तक्क जलाल, जमाल आपणा दे वखाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख आमाल, अमल सब दे खोज खुजाईआ। गुरू अवतार पैगम्बर तेरा दे के गए अहिवाल, भविख्तां विच शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट कूके काल, कर्म

कांड रिहा तपाईआ। साचा दिसे ना कोए दलाल, विचोला रूप ना कोए बणाईआ। बिन तेरी किरपा काया मन्दिर अंदर साची दिसे ना किसे धर्मसाल, नौ दवारे सृष्ट दृष्ट हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, गृह मन्दिर परदा देणा उठाईआ। सतिजुग कहे मेरे प्रभू सति सरूप, सति सतिवादी तेरा हुक्म शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी महिमा गा ना सके कोए अनूप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द चौदां विद्या ना कोए चतुराईआ। तेरा नाउँ डंका शब्द अगम्मी धुर दा कलमा वज्जे चारे कूट, कायनात इक्को हुक्म दए सुणाईआ। लहिणा देणा लेखा झगड़ा मुक जाए जूठ झूठ, माया ममता लोभ मोह हँकार हउमे हंगता गढ़ दे तुड़ाईआ। भगत सुहेला हरिजन गुरमुख गुरसिख उठा आपणा पूत, पिता पूत गोद उठाईआ। शब्द अगम्मी भेज आपणा दूत, दुतीआ भाउ दे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर धुर दी धार इक दृढ़ाईआ। सतिजुग कहे श्री भगवान मैं वेख होया लाचार, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। सच मुहब्बत करे ना कोए प्यार, प्रेमी प्रेमिका रंग ना कोए रंगाईआ। दहि दिशा दिसे विभचार, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढाहीआ। नाता तुट्टा पुरख नार, आत्म परमात्म सेज ना कोए हंढाहीआ। शब्द अगम्मी सुणे ना कोई धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए अलाईआ। बिन रसना जेहवा करे ना कोई गुफ़तार, गुफ़त शनीद ना कोए शनवाईआ। बिना आफ्ताब साचा नूर दिसे ना किसे उज्यार, जोती जोत ना कोए चमकाईआ। साचा मन्दिर सुहाए ना बंक दवार, आत्म परमात्म वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दरवेश हो के झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभू मैं वेखे गुरू पैगम्बर अवतार, पूरब लहिणा नज़री आईआ। खेल वेख्या जुग चौकड़ी चार, त्रेता द्वापर कलयुग परदा रिहा उठाईआ। विवहारी तेरा वक्खरा बिना अक्खरां तों विहार, शब्दी शब्द शब्द हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्में अंदर सेवादार, दर ठांडे सेव कमाईआ। माया तत खेल अपार, अपरम्पर तेरा भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी भर भण्डार, धुर दा हिस्सा जगत वण्ड ब्रह्मण्ड खण्ड आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जित्थे परदा ओहला रहे ना राईआ। सतिजुग कहे मैं मांगत दर दरवेश, भिखारी आपणा रूप बदलाईआ। तूं स्वामी रहें हमेश, आदि जुगादि तेरी वड्याईआ। तूं सचखण्ड निवासी नर नरेश, नर निरँकार नज़री आईआ। तेरे कलमयां सजदा इक आदेस, नमस्ते कह के निउँ निउँ लागां पाईआ। साचा वेख लोकमात दा देस, दिशा आपणी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक समझाईआ। सतिजुग कहे प्रभ उठ वेख लोकमात, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हनेरी रात, साचा

चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन दुनी करे लड़ाईआ। साचा देवे ना कोए साथ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। माया ममता बणाया नात, मोह मनसा नाल मिलाईआ। तेरी महिमा सिफ्त गाउँदे अक्खरां विच साची पट्टी पढ़े ना कोए जमात, जुमला हक ना कोए जणाईआ। अलिफ़ ये कातब लिखदे नाल कलम दवात, निरअक्खर अक्खर ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे जणाईआ। सतिजुग कहे उठ वेख मार ध्यान, हरि ठाकर बेपरवाहीआ। सति धर्म दिसे ना कोए निशान, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। कलयुग विद्या होई प्रधान, अन्तर अन्तर बसन्तर ना कोए बुझाईआ। जगत ढोले नाल सुणदे कान, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। काया धरती होई सुंञ मसाण, अमृत रस रस ना कोए चखाईआ। मन वासना जीव जंत होए अंञाण, बुद्धी बिबेक रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह दे वखाईआ। सतिजुग कहे सच्चा मार्ग दस्स राह, रहबर इक्को नज़री आईआ। तूं साहिब स्वामी जलवागर खुदा, खुदी तकब्बर दे मिटाईआ। जो तेरे नालों होए जुदा, जुज़ अंग वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मुहब्बत विच आपणे कदम कर फ़िदा, फ़ैसला इक्को हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ ओहला लाह परदा, दूई रहिण कोए ना पाईआ। जगत जहान वेख रिहा सड़दा, अग्नी तत रिहा तपाईआ। तेरी मंज़ल कोए ना चढ़दा, अद्धवाटे वेखी सर्ब लोकाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द जीव जंत सर्ब पढ़दा, आत्म परमात्म मिल के दरस कोए ना पाईआ। सज्जण स्वामी अन्तरजामी कोई ना वरदा, नार दुहागण जगत सृष्टी रूप वखाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल नर नरायण हरि दा, नर हरि तेरी शरनाईआ। मैं दर दवारे तेरे डरदा डरदा, भय विच झोली रिहा वखाईआ। नेत्र नैणां चरण परदा, अक्ख प्रतख ना कोए बदलाईआ। सति दवारे हाढ़े कढ्ढदा, मस्तक टिक्का धूढ़ी इक छुहाईआ। तेरा खेल अगम्मी छिन्न दा, छिन्न भंगर हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। श्री भगवान प्या हस्स, खुशीआं नाल आप जणाईआ। सतिजुग तेरा मार्ग देवां दस्स, परदा ओहला आप उठाईआ। हकीकत विच्चों दे के हक, धुर दी वस्त झोली पाईआ। भगत सुहेले तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। इक्को पूजा दस्स के पाठ, इक्को सगन दयां समझाईआ। इक्को किनारा तीर्थ ताट, सर सरोवर इक नहाईआ। इक्को मंज़ल इक्को वाट, पैंडा इक्को वार चुकाईआ। इक्को सेजा इक्को खाट, इक्को बिस्तर दयां विछाईआ। इक्को वस्त इक्को दात, इके वार झोली पाईआ। गुरमुखां नाल तेरी बणे जमात, दूजा संग ना कोए ल्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म आप समझाउँदा हां। भेव अभेदा आप खुलाउँदा हां। अछल अछेदा परदा लाहाउँदा हां। चार वेदां संग रलाउँदा हां। पुराण अठारां रंग चढ़ाउँदा हां। छे शास्त्र आपणी गंढ पवाउँदा हां। गीता ज्ञान नाता इक धराउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक प्रगटाउँदा हां। सच्चा मार्ग इक प्रगटावांगा। सच्चा राह तेरा दरसावांगा। भगत सुहेले नाल मिलावांगा। गुर चेले रंग चढ़ावांगा। धाम नवेले आप बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर स्वामी ठाकर हो के नज़री आवांगा। घर स्वामी ठाकर नज़री आएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। सतिजुग तेरा मार्ग लाएगा। भगत भगवान आप वखाएगा। लख चुरासी विच्चों बाहर कढाएगा। जम की फाँसी आप तुड़ाएगा। मण्डल रासी आप रचाएगा। निज घर वासी परदा ओहला आप चुकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहबर हो के सेव कमाएगा। रहबर हो के सेव कमावांगा। भगत सुहेले आप जगावांगा। दर ठांडे संग निभावांगा। नाम निधाना नाद वजावांगा। ब्रह्माद ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड खोज खुजावांगा। नौ दवारे पार कर के हद्द, दसवें आपणा रंग चढ़ावांगा। सतिजुग साची ला के धुर दी यद्द, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखावांगा। सृष्टी नालों कर अलग, सूरे सरबग नाल जोड़ जुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन दे के उपर शाहरग, रघुपत आपणे रंग समावांगा। आपणे रंग आप समावेगा। साचा संग आप बणावेगा। नाम मृदंग इक वजावेगा। परमानंद विच रखावेगा। हँ ब्रह्म परदा लाहवेगा। पारब्रह्म नज़री आवेगा। जन्म जन्म दा लेख चुकावेगा। भाण्डा भरम भउ भन्नावेगा। इष्ट देव इक समझावेगा। निहचल निहकेव निहकर्मी आपणी कार कमावेगा। जिस दी सिफ्त कर ना सके कोई रसना जेहव, बत्ती दन्द ना कोई वड्यावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप समझावेगा। साचा लेखा आप समझावेगा। भरम भुलेखा दूर करावेगा। भेव अभेदा आप दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा राह, शब्द सरूपी बण मलाह, पुरख अबिनाशी बेपरवाह, लोकमात आपणा हुक्म वरतावेगा। लोकमात देवे फ़रमान, फ़ुरना अपणा दए समझाईआ। चार वरन इक ज्ञान, इक्को इक करे पढ़ाईआ। भगत सुहेले कर परवान, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। जगत विचोला बणे गुण निधान, गुणवन्ता सेव कमाईआ। जिस नूं समझ ना सके कोई अंञाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा दस्सां रसमो रिवाज, हुक्म इक्को वार समझाईआ। जन भगतां होणा नहीं किसे दा मुहताज, मुहब्बत प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। जिन्हां दे अंदरों शब्दी

फ़ुरने अंदर स्वाल जवाब, बाहरों मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिना सिर सजदा होए अदाब, बिना कल्मयों होए पढ़ाईआ। बिना तत्तां तों मिले अहिबाब, महबूब घर नूर करे रुशनाईआ। बिना तन्द सतार वज्जे रबाब, धुन आत्मक राग अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रस्ता दए वखाईआ। सतिजुग तेरा सुखाला दस्सां रस्ता, राह इक्को इक जणाईआ। जन भगतां पुस्तकां वाला बन्ह्णा पए ना बस्ता, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। घर स्वामी मिले हस्सदा हस्सदा, हस्ती विच्चों हस्ती दए बदलाईआ। इशारा दे के आपणी अगम्मी अक्ख दा, निज नेत्र दए खुल्ाईआ। घर वखाए धुर दा वसदा, जित्थे बिना सूरज चन्द होवे रुशनाईआ। ढोला सुणावे आपणे जस दा, नाम निधाना गीत अल्ाईआ। जो जुग चौकड़ी जन भगतां पैज रखदा, नित नवित आपणा वेस वटाईआ। ओह खेल करे अलखणा अलख दा, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लख चुरासी अंदर वसदा, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। कूड़ा झगड़ा चुकावे कलयुग कुड़यारे भठ्ठ दा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म नाल बदलाईआ। सतिजुग सुण धुर दी धार, धर्म तेरा इक दृढ़ाईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे चरण कँवल गुर अवतार पैगम्बर जाण बलिहार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओस खेल करना अगम्म अपार, अलख अगोचर दए वरताईआ। भगतां नाल भगतां कर प्यार, नाता जगत देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खुशी इक बणाईआ। धुर दी खुशी दिसे खुशहाल, खुशख़बरी इक सुणाईआ। भगत भगवन्त बणा के साचे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। पूरब जन्म दी लेखे पाए घाल, त्रेता जुग दए गवाहीआ। बाल्मीक जिस दा लिख्या अहिवाल, अंक अंक नाल जुड़ाईआ। वेला वक्त पहुंचया आण, थित वार वज्जी वधाईआ। अगला लेखा जाणे श्री भगवान, दूसर समझ किसे ना आईआ। जिस दा अक्खरां तों बाहर ब्यान, सतरां गणत ना कोए गिणाईआ। जो गुप्त ज़ाहर दाता राम, रमईआ हर घट रिहा समाईआ। आत्म सेजा करे बिसराम, सीता सुरत सद प्रनाईआ। जिस नूं करे ब्रह्म प्रणाम, पारब्रह्म शरनाईआ। जिस दा मिलणा मुश्कल ना असान, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत फिरदा जगत जहान, समुंद सागर तारीआं लाईआ। सो खेल करे आप महान, महबूब मुहब्बत विच आपणी तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सतिजुग वेख भगत भगवान निशान, निशाना इक्को दयां जणाईआ। कोई खेल समझे ना छुहारा गिरी बदाम, बदन तत भेद ना कोए दृढ़ाईआ। विचोला बण के धुर

दा राम, रमईआ आपणा खेल खिलाईआ। नाम भण्डारा दे के जाम, ज़ामनी आपणी इक समझाईआ। पूरा कर के सृष्टी काम, कामना सब दी वेख वखाईआ। भगत सुहेले लभ्भे आण, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच परदा रिहा उठाईआ। सतिजुग परदा लाहवां ओहला, ओड़क इक्को दयां जणाईआ। तेरी धार प्रभ ने भगतां अंदर बणना विचोला, दूजा संग ना कोए रलाईआ। सति प्रेम दा दस्स के ढोला, ढोलक छैणे तों देणा छुडाईआ। मन वासना रहे ना रौला, मन का मणका देणा भवाईआ। भाग लगा के काया चोला, चोली आपणी देणी पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण दे के उपर धरनी धौला, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। सतिजुग अगों निउँ के रिहा झुक, कदमां सीस निवाईआ। मैं दर तेरे होया खुश, आपणी खुशी वखाईआ। धन्न भाग जे भगत सुहेले बणाए आपणे सुत, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। लोकमात उज्जल करे मुख, दुरमति मैल धवाईआ। जगत मुहब्बत विच्चों देवे सुख, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे ल्या बहाईआ। सतिजुग कहे मेरे मालक दुनी दीन, दयावान तेरी बेपरवाहीआ। तेरा मार्ग सदा महीन, जिज्ञासू जग समझ किसे ना आईआ। राह तक्कदे गए लोक तीन, चौदां चौदां अक्ख उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी समाजां विच होई तकसीम, राजां विच वण्ड वण्डाईआ। आत्म परमात्म होया ना कोए अधीन, नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। कलमयां विच कैहिंदे रहे आमीन, अमल सच ना कोए कमाईआ। झगड़ा रिहा उत्ते ज़मीन, अर्श फर्श रिहा कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे हुक्मे अंदर तेरे नाम दी करदे गए तरमीम, नित नवित नाद वजाईआ। तेरा भेव अभेदा शान दिस्या इक अज़ीम, अल्लातअला इक्को नज़री आईआ। तेरा भविख्तां वाला हुक्म कदीम, कुदरत कादर दए वखाईआ। सच्चा मालक बण करीम, करमां तों लैणा छुडाईआ। तेरा खेल नवां नवीन, सतिजुग साचा वेख वखाईआ। जन भगत रहे ना कोए ग़मगीन, ग़मी खुशी विच बदलाईआ। शब्दी हुक्म दे यकीन, भरोसा इक्को दे वखाईआ। सब तों वक्खरी दस्स ताअलीम, तुलबे आपणे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग कहे मैं भगतां संग जोड़ां नाता, नातवां कलयुग रहिण ना पाईआ। इक्को मिले पुरख बिधाता, बिध अवर ना कोए रखाईआ। गुरमुखां संग होवे साथा, नाता सृष्ट कूड़ तुड़ाईआ। दोवें मिल के गाउण इक्को गाथा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म ब्रह्म होवे पछाता, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। घर मन्दिर दिसे धुर दा हाटा, चौदां लोक डेरा ढाहीआ। अगली मंज़ल मुके वाटा, पाँधी पन्ध ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमात्म गुरमुखां जोड़े आपणा नाता, साक सज्जण इक्को लए बणाईआ।

बन्द किवाड़ी खोलॣ के ताका, परदा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे मेरी आसा पुन्नी, पूरन ब्रह्म दृढ़ाया। जन भगतां सिर ओढण दे के चुन्नी, चरण कँवल जोड़ जुड़ाया। सन्त सुहेले धुर दे गुण गुणी, गुणवन्त वेख वखाया। पूरब जन्म दे ऋषी मुनी, मनसा आपणी नाल तराया। आत्म मेली चिरी विछुन्नी, विछोड़ा पन्ध गंवाया। वसेरा वखाए साढे तिन्न हथ्थ काया कुल्ली, काया काअबा इक समझाया। दौलत दे नाम अनमुल्ली, वस्त भण्डारा इक वरताया। प्रभ आपणी प्रीती जुग चौकड़ी कदे ना भुल्ली, अनभुल सद सद वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बन्धन इक्को पाया। साचा बन्धन तन सरीर, तत्व तत वड्याईआ। प्रेम प्यार हक ज़ंजीर, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुख गुरमुख कदे ना होवे दिलगीर, चिन्ता ग़म नेड़ ना कोए आईआ। अमृत ठांडा बख्श के नीर, नीर रस नेत्र दए वखाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा वेख तकदीर, तदबीर आपणी जोड़ जुड़ाईआ। भगत नाता पातशाह वज़ीर, ज़मीर अंदरों दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही संगत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

पुरख अकाल कहे सच जैकारे दी सोहणी गूंज, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। खुशीआं नाल भगतां दे प्रेम आसू लवां पूंझ, नाम रुमाल हथ्थ उठाईआ। प्यार मुहब्बत अंदर काया बस्ती अंदरों देवां हूंझ, मुहब्बत विच करां सफ़ाईआ। मेहरवान हो के चुकावां एका दूज, दुतीआ भाउ ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी दस्सां सूझ, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाईआ। मंज़ल चुकावां सच मकसूद, महिफल आपणी दयां वखाईआ। महल अटल उच्च अरूज, अर्श फर्श इक मनाईआ। कूड़ी क्रिया कर मौकूफ़, मुकम्मल आपणा राह समझाईआ। गुरमुख रहे ना कोई बेवकूफ़, बेवा जगत ना कोए अख्वाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए सबूत, सो स्वामी हो के गोद उठाईआ। आदि जुगादी बण के इक महबूब, सच दवारा दयां वखाईआ। होए प्रकाश अगम्मी कूट, चार कुण्ट ना कोए जणाईआ। झगड़ा रहे ना जूठ झूठ, सति सच इक समझाईआ। अमृत रस दे के घूट, निझर झिरना दयां झिराईआ। तन नगारे ला के चोट, सोई सुरती दयां उठाईआ। बंक सुहा के किला कोट, काया गढ़ वज्जे वधाईआ। भगत दवारे आपे पहुंच, पैंडा सब दा दयां मुकाईआ। कोई रहिण ना देवां सोच, समझ आपणी विच समाईआ। जिस दे दर्शन रहे लोच, सो लोचण आपणा रंग चढ़ाईआ। साहिब स्वामी

कर के खोज, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। अगे दर्शन देवे रोज़, घर घर आपणा परदा लाहीआ। साची दे के धुर दी खोज, मौजूदा हो के वेख वखाईआ। जन्म कर्म दा रहिण ना देवे रोग, प्रेम प्रीती इक बणाईआ। आत्म परमात्म कर के धुर संजोग, विछड़यां मेला लए कराईआ। झगड़ा चुका के चौदां लोक, चौदां तबक चरणां हेठ दबाईआ। तराना दस्स के सच सलोक, सोहला इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। श्री भगवान कहे जैकारा सुणया सचखण्ड, धर्म दुआर वज्जी वधाईआ। खुशी होए कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर सुण के छन्द, तत आपणे रहे सालाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए अनन्द, करोड़ तेतीसा राग अल्ह़ाईआ। नच्चे टप्पे रवि ससि सूर्या चन्द, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। भगतां फरकण अंग अंग, अंगण लाया बेपरवाहीआ। रसना बोल ना सके बत्ती दन्द, अंदरे अंदर दए समझाईआ। पंजां मेटे कूड़ा जंग, जगत झेड़ा ममता दए मिटाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी लए गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी दया कमाईआ। गुप्त ज़ाहर रहे संग, सगला संग बणाईआ। भेव चुका के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म लए मिलाईआ। जन भगतां श्री भगवान दे गृह पैणा जम्म, नाता तुट्टणा पिता माईआ। कूड़ी करया नाता छुट्टणा जगत कम्म, निहकर्मी आपणा कर्म दए समझाईआ। झगड़ा रहे ना वासना मन, मुहब्बत इक्को इक लगाईआ। नेत्र रहे कोई ना अन्न्ह़, ज्ञान नेत्र दए खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सुणी अन्तर आत्म आवाज, जो ढोला अगम्म सुणाईआ। जिस दे अन्तर अनोखा राज़, चौदां विद्या ना कोए समझाईआ। प्रेम प्रीती वाली वेखी ख़ाहिश, आशा नूर इलाहीआ। बिन गोपी काहन सोहणी वेखी रास, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहिण प्रभ परम पुरख सद वसणा पास, तेरी ना होए जुदाईआ। झगड़ा मुके पृथ्मी आकाश, प्रकाश तेरा नूर इलाहीआ। काया मन्दिर अंदर करना वास, भूमिका इक्को इक वड्याईआ। बालक सेवक तेरे दास, याचक आपणे लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे जैकारा कहे मेरा जैकार, जै जैकार समझ किसे ना आईआ। मैं वेखदा रिहा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाहीआ। संदेशे सुणदा रिहा गुरू अवतार, पैगम्बर कलमा नाल खुदाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां विच्चों समझदा रिहा विचार, खाणी बाणी खोज खुजाईआ। रिषी मुनी सन्त फ़कीर सूफ़ी तेरा करदे गए इशार, शायर शायरां नाल गाईआ। भेव अभेद खुल्ल्ह़या आदि अन्त ना कोए निरँकार, निरवैर तेरी बेपरवाहीआ। किरपा करी अगम्म अपार, अलख अगोचर दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आप कमाईआ। लोकमात लए अवतार, निरगुण

८७
१६

जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसार, विद्यावान रहे कुरलाईआ। भगतां उत्ते हो के मेहरवान, सन्त सुहेले लए उठाईआ। शब्द अगम्मी दे के दान, सच झोली दिती भराईआ। सच दवारे सद्द महिमान, महबूब मुहब्बत सेव कमाईआ। पूरब जन्म दा लेख महान, महिमा अकथ दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होए हैरान, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जैकारा कहे मैं लग्गा जग, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। दो जहानां कर के पार हद्द, हदूद इक्को वेख वखाईआ। जित्थे ढोला ना कोई गीत सद्द, सदमा रूप ना कोए प्रगटाईआ। ना कोई शब्द नाद धुंन नद, रागी राग अलाईआ। ना कोई मुरीद मुर्शद करे हज्ज, कदमां सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई ताल नगारा रिहा वज्ज, वुज़ू नमाज़ ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई सज्जण चोर यार ठग्ग, ठगौरी मन ना कोए रखाईआ। ना कोई त्रैगुण माया ममता अग्ग, तत्व तत ना कोए समझाईआ। ना कोई मंज़ल उपर शाहरग, नव नौ ना कोए जणाईआ। ना कोई खुमारी ना कोई मध, जाम प्याला हथ्थ फड़ाईआ। जिस गृह इक्को पुरख अकाल बहे समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उस दा खेल निराला वक्ख, वक्खरी धार ना कोए समझाईआ। जन भगतां खोल्ह के अक्ख, आपणा दरस रिहा कराईआ। हकीकत विच्चों दे के हक, झोली सब दी रिहा भराईआ। जो लारे जुग चौकड़ी देंदा रिहा जग, दो जहान समझ किसे ना आईआ। ओस लहिणा देणा भगतां देणा अज्ज, आजिज़ आपणे नाल मिलाईआ। मेहर नज़र नाल जन्म कर्म दी क्रिया देणी दब्ब, सिर सके ना कोए उठाईआ। हुक्मे अंदर कर के बन्द, बन्दना इक्को देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। जैकारा कहे मैं सुणया होर जैकार, जो आपणी आवाज़ सुणाईआ। गुलशन विच हाहाकार, डाली डाली दए दुहाईआ। जिस दी सुणे ना कोए पुकार, बनास्पत समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारीआं नाल खेल रचाईआ। धुर दा मालक मिल्या ना अगम्मी यार, जो याराने तोड़ निभाईआ। दुखियां बणया ना कोए दिलदार, दिलबर हो ना गले लगाईआ। जो एथे ओथे देवे पैज संवार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस नूं गाउंदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर सिफ्तां नाल सालाहीआ। नव नौ चार पिच्छो जिस दी आउँदी वार, वारता विच ना कोए लिखाईआ। जिस दा वक्खरा निराला सब तों इज़हार, विवहारी आपणी कार कमाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर करे ना कोए तकरार, तकरीर तहिरीर ना कोए समझाईआ। फ़रमान अंदर करे ना कोए इनकार, सिर अगे ना कोए उठाईआ। उस दा सुण अगम्मी जैकार, चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। जिस दी सच प्रेम दी महकी इक बहार, अंदर बाहर खुशी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी

कार कमाईआ। जैकारा कहे मैं सुणया इक इशारा, जो बिन अक्खां हथ्थां दिता लाईआ। नज़री आया भगत दवारा, भगवन दए वड्याईआ। जिस दा सम्मत चढ़या विच संसारा, समां पिछला दए बदलाईआ। सच नाम वजाए नगारा, डंका इक्को इक सुणाईआ। जिस ने गोबिन्द सुत कीता प्यारा, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। उस दी खेल वेखी गुलज़ारा, महक नूर अलाहीआ। उस दा वक्खरा होणा विहारा, दो जहान अक्ख उठाईआ। जिस दा मार्ग आत्म परमात्म इक न्यारा, निराकार निराकार विच समाईआ। उस गोबिन्द दा पूरब लहिणा देणा देणा उधारा, लेखा सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला सर्ब उठाईआ। जैकारा कहे मैनूं खुशी होई जगत, जागरत जोत करी रुशनाईआ। मैं अंदर वड़या गुरमुख भगत, दूसर संग ना कोए रलाईआ। अंदर रहे कोई ना फ़र्क, अंदरों फ़ासला देणा मुकाईआ। जगत जहान कर के तरक, गुरमुख तुरत लैणे मिलाईआ। गोबिन्द नाल जो लग्गी शर्त, सो वेला वक्त दए गवाहीआ। सो अगम्मी धार आया परत, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस नूं ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। गुरमुखां उत्ते कर के तरस, सन्त सुहेले नाल जुड़ाईआ। सनमुख हो के देवे दरस, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। खेल वखाउणा उत्ते फर्श, अर्श वज्जे वधाईआ। जन भगतो तुहाडा सब तों वक्खरा चर्च, जित्थे चर्चा रहे ना राईआ। जित्थे पैसा धेला ना कोए खर्च, ना कोई करनी पए पढ़ाईआ। ना कोई आसा मनसा हरस, हवस पिछली दए मिटाईआ। ना कोई पूजा पाठ खाणी बाणी वाला देणा पए कर्ज़, मकरूज रूप ना कोए बणाईआ। साचा खेल दसणा असचरज, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर वेख खुशी मनाईआ। तुहाडे विछोड़े दी दूर करन आया दर्द, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। तुहाडे पिच्छे इक फुल्ल गुलाब कीता अरज़, आरज़ू सब दी लेखे पाईआ। योद्धे सूरबीर बणाए मर्दाने मर्द, मदद आपणी नाल तराईआ। नाम खण्डा तुहाडे अंदर फेर के छुरी करद, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। बेशक छब्बी पोह महीना सर्द, सदीआं दे विछड़े मेल मिलाईआ। तुहाडी पुठ्ठी कर नरद, नारद तुहाडा दरस कर कर खुशी मनाईआ। अज्ज पूरी करनी लिख्त पढ़त, गुर अवतार पैगम्बर गवाह देणे भुगताईआ। तुहाडा लहिणा देणा तुसां लैणा निधड़क, मिन्नता तरले कढ्ढुण दी लोड़ रहे ना राईआ। सिधे मार्ग पा के आपणी सड़क, पगडण्डीआं तों परे दए कराईआ। जित्थे कोई ना होवे अटक, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। जन भगतो तुसां फेर नहीं आउणा परत, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए जलाईआ। इक्को वार तुहाडे कूड़ कुड़यार कर्म देणे वरज, अग्नी देणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा इक दरसाईआ। जैकारा कहे मैं सुणी आवाज फुल्ल, जो फुल फुल खुशी मनाईआ। धन्न वड्याई मैं वेखी भगतां कुल्ल, कुलवन्त दया कमाईआ। जित्थे

कीमत पैणा मुल्ल, अमुल्ल दए सरनाईआ। जुग चौकड़ी जगत रिहा रुल, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। अज्ज इक्को मालक मिलणा सुल्हकुल, सुल्तान शाह पीर खुदाईआ। जो आदि जुगादि सदा अनभुल, भुलयां मार्ग रिहा वखाईआ। जिस दा दवारा गया खुल्ल्ह, ख़ालक ख़लक आपणा नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे बेशक मेरी सारे लैंदे सुगंदी, सुगंध खा के दयां सुणाईआ। मैनूं तोड़ के नालों डण्डी, डण्डीआं उत्ते लैण उठाईआ। सब तों ज़िआदा श्रृंगार करे दुहागण रंडी, रूप अनूप बदलाईआ। शीशा फड़ के कंघी, पट्टी लए बणाईआ। मेरे कोलों कदे ना संगी, कूड़ी क्रिया विच समाईआ। जगत नेत्र हो के अन्धी, विषयां वहण वगाईआ। चार जुग मैनूं लभ्भया कोए ना संगी, मैं रो रो दिती दुहाईआ। जिस वेले गोबिन्द गया गोदावरी कन्ढी, गोदी वाला फेरा गया पाईआ। ओहदी सज्जे हथ्थ दी उंगली मैनूं लग्गी, सहिज नाल दिती छुहाईआ। मेरी पिछली कटी गई तंगी, अगे वज्जी वधाईआ। दोए जोड़ इक्को मंग मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी हालत वेखो मंदी, मंदभाग दिती सुणाईआ। मेरी कीमत पए ना कोए विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड ना कोए शनवाईआ। मैनूं करीर अते जंडी, इट्टां पत्थरां उत्ते सुटाईआ। मेरा श्रृंगार करदे कूड़ पाखण्डी, जगत विकारी तन छुहाईआ। हे प्रभू मेरे उत्ते ला इक पाबन्दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द किहा सुण मेरे नन्न्हे बच्चे, सच दयां सुणाईआ। तेरे पत डाल्ही पंखड़ीआं वाले पत्ते कच्चे, सच्चा रूप ना कोए जणाईआ। जगत विकारी तैनूं लग्गदे अच्छे, कूड़यां च सोभा पाईआ। माछूआड़े तैनूं किसे ना दिते पते, जिस वेले सूलां सेज हंढाहीआ। घास फूस तिनके बण गए इक दूजे दे सके, नाता आपणे नाल बंधाईआ। गोबिन्द उन्न्हां दी पत रखे, जो अन्तर आत्म सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग इक रखाईआ। फुल्ल कहे मेरी इक अरजोई, नमस्ते कह जणाईआ। मैनूं जग मिले ना कोई ढोई, ढोआ लै दे के खुशी बणाईआ। मेरी किस्मत जागी सोई, सिध्धा गोबिन्द दर्शन पाईआ। जे मैनूं तोड़दा होर कोई, कलमा कलाम ना कोए सुणाईआ। मेरी आशा अंदरों रोई, तृष्ना दए दुहाईआ। मेरी डण्डी पखण्डी मोई, गुलशन विच्चों होई जुदाईआ। इक्को तेरे नाम दी दरोही, दोहरा आपणा दे समझाईआ। मेरी महक तेरी दरदण होई, दूजा दर्द ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा सुण गुलाल, भेव दयां सुणाईआ। तूं वेख आपणा जलवा होइउँ हलाल, सिर कलम दिता कराईआ। अगे लभ्भणा पए दलाल, विचोला बेपरवाहीआ। जो तेरी करे संभाल, जगत चों लए छुडाईआ। सच दवारा वखा के धर्मसाल, धुर दा नाता लए बन्न्हाईआ। तेरी लेखे लावे घाल,

सेवा सहिज समझाईआ। फेर बज्झणा ना पए विच किसे रुमाल, उंगलां गंढु ना कोए पवाईआ। इक्को लेखा होवे बिरध बाल, जोबनवन्ता दए बणाईआ। जगत क्रिया विच्चों कर बहाल, कलयुग कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। साचा मंत्र दए सखाल, इक्को करे पढ़ाईआ। चार जुग दा दस्स अहिवाल, तेरा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फुल्ल कहे मेरा इक सहारा, साहिब तेरी शरनाईआ। दर दुआर मिल्या धुर किनारा, दूजी आसा दिती मिटाईआ। तूं गोबिन्द कर के सच इशारा, शब्दी रमज़ लगाईआ। जिस वेले मैं आवां दूजी वारा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। पुरख अकाल साथ पिता होवे हमारा, जिस नूं वेखे ना कोए लोकाईआ। उस दा बणना इक दवारा, भगतन आपणा रंग चढ़ाईआ। जिस दा सम्मत शहिनशाही चलणा विच संसारा, शाह पातशाह ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां दए अधारा, अन्तर आत्म परदा लाहीआ। तेरा नाता जोड़े आप करतारा, कुदरत कादर वेख वखाईआ। तेरी गुलशन सच बहारा, सच दवारे दए लगाईआ। जित्थे इक्को नाम इक्को राम इक्को शब्द इक्को सच जैकारा, हक हकीकत इक्को इक वखाईआ। इक्को मन्दिर इक्को मठ्ठ इक्को शिवदवाला इक्को गुरूदवारा, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को नार इक्को कन्त भतारा, अवर सेज ना कोए हंढाहीआ। इक्को साजन इक्को मीत मुरारा, शत्रु रूप ना कोए वखाईआ। इक्को हुक्म सच्ची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। इक्को दर इक दरबारा, दरे दरबार इक्को सोभा पाईआ। इक्को शाह इक्को सिक्दारा, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। इक्को नर नरायण लए अवतारा, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस नूं गाउँदे सदा जुग चारा, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ। जिस दा लेखा सब तों बाहरा, शास्त्र सिमरत समझ किसे ना आईआ। सो खेल करे अपरम्पर अपर अपारा, भेव अभेदा आपणे हथ्थ वखाईआ। जन भगतां देवे आप अधारा, दूजी ओट ना कोए समझाईआ। पोह छब्बी करे विहारा, सम्मत समें नाल बदलाईआ। जन भगतां तक्कणा तेरा नज़ारा, नज़र अक्ख नज़रीआ इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेख बणाईआ। फुल्ल कहे मैं होया खुशहाल, बन्दना सीस निवाईआ। तूं बणया रहिणा दयाल, दीनां होएं सहाईआ। वेला वक्त लैणा संभाल, अभुल्ल तेरी वड्याईआ। मैं वेखां ओह सच्ची धर्मसाल, जित्थे भगत सुहेले सोभा पाईआ। श्री भगवान होवे तेरे नाल, जोत शब्द वज्जे वधाईआ। इक्को नाम ताल कोए ना होए बेताल, दूजा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। फुल्ल कहे मैं रखां तेरी उडीक, आसा विच लँघाईआ। सच दस्स तारीख़, तारीक दे मिटाईआ। सच दस्स हदीस, कलमा की पढ़ाईआ। मित्र बण रफ़ीक, फ़रीक ना होए जुदाईआ। हक होवे तौफ़ीक, तुआरफ़ समझे

ना कोए लोकाईआ। मैनूं होवे उम्मीद, अंदर वज्जे वधाईआ। साचे भगतां करां दीद, दरे दरबार दर्शन पाईआ। बिन अक्खरां कट के दे रसीद, दर ठांडे मंग मंगाईआ। गोबिन्द अगों करे ताकीद, सहिज नाल समझाईआ। मेरी मेटे ना कोए वसीअत, लेखा रिहा बिन कलम शाहीआ। तूं मेरी मन्नणी इक नसीअत, सहिजे दयां समझाईआ। भगतां विच तेरे प्यार दी रखां ऐहमीअत, आमद आपणे नाल जणाईआ। सम्मत शहिनशाही इक छब्बी पोह सब दी खुशी करां तबीअत, अंदरों तबअ दयां बदलाईआ। परदा खोलू सर्ब असलीअत, असल वसल दयां कराईआ। जन भगतां दे हथ्थ फड़ावां अगली पिछली मलकीअत, मलकलमौत तों दयां छुडाईआ। सब दी इक्को बणा के वलदीअत, वलद वालदा इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। फुल्ल कहे मेरा किस बिध जुड़ना नाता, भगतां नाल कुड़माईआ। गोबिन्द किहा एह मेरा जुग चौकड़ी साका, पुछण दी लोड़ रहे ना राईआ। नित नवित मेलण दी मैनूं बहुती जाचा, जाचक आपणे नाल मिलाईआ। जिन्हां मेरा मन्नया आखा, आख़र पुरख अकाल विच समाईआ। मैं सम्मत शहिनशाही खोलूणा ताका, तकदीर सब दी देणी बदलाईआ। जन भगतां इक्को मालक दस्स के आका, अकलां वाले देणे भुलाईआ। जिन्हां दे अंदर आपणे प्रेम दा खिच के ख़ाका, ख़ाक विच्चों बाहर कढाहीआ। उहनां दे लेखे लाउणी इक्को राता, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जुग लहिणा बहुता झोली पाईआ। पिच्छो चार जुग करदा रहे जगत बाता, वातावरन ना कोए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेखण आउणा पूरीआं हुन्दीआं आसा, आसरा इक्को देणा वखाईआ। कोई होण नहीं देणा निरासा, निरासा आसा विच बदलाईआ। जगत सृष्टी दा बदल के पासा, सार पाशा आपणा आपणे हथ्थ वखाईआ। भगत विहार प्रभू दा खासा, खासिउँ अगे दए दुहाईआ। तेरी मन्ज़ूर होवे दरख़ासा, फ़ाइल सके ना कोए छुपाईआ। मंज़ल पन्ध मुका के वाटा, नेरन नेरा हो के नज़री आईआ। पिच्छे रहे कोए ना घाटा, वाधा सब दे हथ्थ फड़ाईआ। फुल्ल किहा की उस वेले अमृत प्यावें सानूं विच बाटा, जगत रीती विच जणाईआ। गोबिन्द किहा नहीं आत्म परमात्म दा बण के पिता माता, मतरेआं दा लेखा देवां चुकाईआ। जित्थे ना कोए ज़ात ना कोए पाता, ना कोए पिता भैण भाईआ। ना कोए माँ पुत्त दा साका, ना कोए नार कन्त हंडाईआ। ना कोए पूजा ना कोए पाठा, सिमरन जोग अभ्यास ना कोए वखाईआ। ओथे वेखणा खेल तमाशा, आप आपणा परदा लाहीआ। जन भगत बणा के तेरा साथा, सगला साथ देणा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सहिज सुभाउ रिहा समझाईआ। फुल्ल कहे की भगत जन भगत दवारे आवणगे ? गोबिन्द कहे हां, गुरमुख सच्चे निरगुण सरगुण दर्शन पावणगे। फुल्ल कहे, की भगत सुहेले

मैनूं नाल मिलावणगे ? गोबिन्द कहे हां, मेरे हुक्मे अंदर सारे आपणा सीस झुकावणगे। फुल्ल कहे की भगत सुहेले मेरा जोड़ जुड़ावणगे ? गोबिन्द कहे हां, तैनूं फड़ के आपणे सीस टिकावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावणगे। फुल्ल कहे मैं खुशीआं नाल आवांगा। जुग जन्म दीआं लुकीआं सधरां, सदीआं तों विछड़ीआं रूहां नूं आप सुणावांगा। सच दुआर दा वेख के अदला, अदालत अगे आपणा आप पेश करावांगा। जिस दे अगे पिच्छे गोबिन्द शब्दी मारीआं मंज़लां, मंज़ल उस दी चढ़ के दर्शन पावांगा। जित्थे इक्को महबूब दीआं गाईआं जाण ग़ज़लां, ग़रज़ इक्को नाल वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक दृढ़ावांगा। फुल्ल कहे उह वक्त वेखां सुहाउणा, सोहणी रुत बणाईआ। जिस वेले छब्बी पोह आउणा, सम्मत शहिनशाही वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई पैणा रोणा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जन भगत दवारे तेरा ढोला गाउणा, वज्जणी नाम वधाईआ। उन्हां दा मैं वी दर्शन पाउणा, पाउणे पंज वक्त समझाईआ। सारी रात मैं नहीं सौणा, गुरमुख सौण कोए ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो परम पुरख परमात्म दा दर्शन पाउणा, गोबिन्द शब्दी राग सुणाईआ। सारयां ने फुल्ल कहे मैनूं रखणा आपणी उपर धौणा, पिच्छे गर्दन उत्ते टिकाईआ। अग्गों मथ्थे दा ताल वजाओणा, वाजब अगला हुक्म जणाईआ। जन भगतो आपणा वक्त ना ऐवें गवाउणा, रैण फेर कदे ना आईआ। इक्कीयां फुल्लां दा जुगिंदर सिँघ ने वछाउणा विछाउणा, जिस नूं जमां तों ल्या छुडाईआ। सुरजीत सिँघ ने चरणां हेठ सज्जा हथ्थ डाहुणा, एह वी गोबिन्द पिछली आसा पूर कराईआ। जन भगतो बड़ा प्रेम वाला तुहाडा विहार वखाउणा, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो कुछ कहिणा सो देणा मन भाउणा, भुक्ख्यां लए रजाईआ। अगे पए किसे ना रोणा, हन्झूआं धार ना कोए वहाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां साढे बारां तुहाडा दर्शन पाउणा, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तुहाडा नूर ज़हूर मजबूर हो के चमकाउणा, मजलस इक्को देणी वखाईआ। दो जहानां पन्ध मुकाउणा, मुकम्मल आपणे अगे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक बंधाईआ। फुल्ल कहे मेरे अंदर सब ने वेखणी खुशबू, खुशख़बरी दयां सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा ढोले गाउण वाला तक्क के मूँह, मुहब्बत मेरे अंदर आईआ। बिना बन्दगी तों तुहाडी बख्शी जाणी रूह, रहमत हरि जू आप कमाईआ। जिस दी किसे नूं शास्त्रां सिमरतां वेदां पुराणां विच्चों नहीं मिली सूह, सो स्वामी तुहाडे साहमणे बैठ के दरस दिखाईआ। तुहाडा खुशी करना साढे तिन्न करोड़ लूं लूं, लहिणा देणा पिछला झोली पाईआ। तुहानूं नज़री आउणा हुबहू, जोती जाता नूर खुदाईआ। तुहानूं लटकणा नहीं पैणा विच किसे खूह, तुहाडी काया जूह, अंदर आपणा डेरा लाईआ। कोई लभ्भणा नहीं पैणा गुरू, गुरुआं

दा गुरदेव नज़री आईआ। जिस दे कोलों आदि दी धार होवे शुरु, उह शरअ सब दी दए बदलाईआ। जिस दा मंत्र इक्को नाम निधाना फुरू, फुरने सब दे बन्द कराईआ। उह दातार दाता आपणी करनी करन तों कदे ना मुड़ू, जो मुड़ मुड़ नित नवित जुग चौकड़ी आपणा निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फुल्ल कहे जन भगत मैनूं सज्जे हथ्थ विच लै के अंदर आउणगे। साढे दस आपणी गर्दन पिच्छे टिकाउणगे। एस वेले पूरन अंदर पूरन जोत गई सी वस, जोत जोत विच समाउणगे। सचखण्ड विच जाण हस्स हस्स, हस्तीआं हस्तीआं विच्चों बदलाउणगे। इक्को यार नाल मिला के अक्ख, याराने जगत नालों तड़ाउणगे। प्रभू दे प्रेम अंदर डट, डाकू चोर अंदरों बाहर कढाउणगे। साचे नाम दा वेख के हट्ट, हटवाणे हो के ख़ाली झोलीआं सर्ब भराउणगे। जिसदे पिच्छे जुग चौकड़ी चार कुण्ट दहि दिशा रहे नठ्ठ, घर उसे दा दर्शन पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान मिल के ख़ुशी मनाउणगे। फुल्ल कहे मेरे अंदरों आवे महक, खुशबू रही समझाईआ। जन भगतो मैं तुहाडे नाल मिल के गया टहिक, टहणी नालों करी जुदाईआ। विछोड़े अंदर रिहा सहिक, साह साह रिहा ध्याईआ। मेरा पूरा होया अहिद, वेला वक्त गया आईआ। पता नहीं फेर मिले कि ना शायद, शहिनशाह बेपरवाहीआ। मैं आपणा पूरा करन आया फ़राइज़, फ़ैसला तुहाडे नाल रखाईआ। वेख्यो कोई भुल्ल के समझ ना जाणा एह फुल्ल दी नुमाइश, अज़माइश विच मन ना कोए लगाईआ। एह गोबिन्द दी हदायत, हुक्मे अंदर आया चाँईं चाँईंआ। इस तों पिच्छों मैं जाणा उस वलायत, जित्थे वलवले मुकण सर्ब लोकाईआ। इक निक्की जेही तुहाडी करनी फ़रमाइश, फ़रमांबरदार हो के सीस निवाईआ। जन भगतो भगतां नाल मिल के कदी ना आयो विच तैश, तमअ देणी मिटाईआ। तुहाडी उस धाम रहाइश, जित्थे रहबर इक्को सोभा पाईआ। सारे लै के जाइउ ख़रायत, ख़ैरख़ाह बण के झोली रिहा भराईआ। तुसीं मेरी मैं तुहाडी करनी हमायत, हमसाजन हो के घर सज्जण लैणा मिलाईआ। छब्बी पोह कहे इन शमा दी करनी अनायत, दीपक अंदरों देणा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग रिहा वखाईआ। फुल्ल कहे मैं नहीं जाणदा कौण फलाणा फलाणा, नावां वाली लिस्ट ना कोए रखाईआ। मैं इक्को जाणा जो गावे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान दा गाणा, उह भगत भगवान नज़री आईआ। मैं ना समझां कोए राजा राणा, तख्त निवासी धक्के नाल परे हटाईआ। जो मेरे साहिब अगे होया निमाणा, पुरख अकाल इक्को रिहा मनाईआ। मैं उस नूं समझां सुघड़ सुचज्जा स्याणा, जिस आत्म विद्या भरपूर मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा सम्मत दे सुहाईआ। फुल्ल

कहे जन भगतो मेरी बेनन्ती इक, एकँकार अगे सुणाईआ। भगत दुआर लँघण लग्गयां मैनूं उपर लाउणा छाती हिक, हिकमत प्रभ दिती जणाईआ। अंदर वड़ के ब्रह्मा आपे तूं मेरा मैं तेरा देवे लिख, अगे लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। मुक्खों कहिणा मैं प्रभू तेरा भगत प्यारा सिख, सिख्या दूजी ना कोए रखाईआ। फेर आपे श्री भगवान तुहाडा कर्म जरम दा लहिणा लए नजिठ्ठ, चिन्ता ग़म रहिण कोए ना पाईआ। सदा रखे साया हेठ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। ग्यारां वज्जे फेर मैनूं उपर छुहाउणा पेट, नाभी उत्ते छुहाईआ। अगे तुहानूं आपे बणा देवे अमृत नाम दे सेठ, तृष्ना जगत रहे ना राईआ। फेर सारी रैण आपणे कोल रखणा लपेट, लंमें पैण वालयां मैं आपे दयां उठाईआ। जिस वेले मेरा प्रभू साडी वेख लवे खेड, फेर हुक्मे अंदर आपे दए सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दी इक्ठी लै के भेंट, भेटा आपणी दए चढ़ाईआ।

✪ २६ पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

फुल्ल कहे जन भगतो सुणो खुशख़बरी, पोह छब्बी वज्जे वधाईआ। डंका सुणो उपर अम्बरी, अगम्म नाद शनवाईआ। लेखा जाणे शब्दी शेर बब्बरी, भब्बक इक लगाईआ। जिस कलयुग अन्तिम करनी बदली, बदला रिहा चुकाईआ। मालक धुर दा अदली, अदालत इक वखाईआ। हरिजन पहुंचे मज़लो मज़ली, मंज़ल देवे बेपरवाहीआ। जिस कारन संगत सद्द लई, सदमे दए गवाईआ। भगत भगवान दी अद्धविचकार कोई ना हद्द रही, हदूद इक्को रिहा जणाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रंग लई, रंग आपणा इक वखाईआ। वस्त अमोल पिछली मंग लई, जगत उधारा रिहा गवाईआ। लोकमात कोई ना संग रही, परदा रिहा उठाईआ। सृष्टी दृष्टी दुनी दंग रही, समझ विच ना कोए समझाईआ। इक आया तुहाडे अनन्द लई, दूजी हवस ना कोए वखाईआ। जिस बेनन्ती पिछली मन्न लई, अगे चले रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची शरनाईआ। फुल्ल कहे मैं होया खुशहाल, खुशीआं नाल जणाईआ। दर्शन तक्क के दीन दयाल, दीन दुनी दिती मिटाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदा रिहा भाल, सो साहिब स्वामी मिल्या बेपरवाहीआ। मेरी लेखे लावे घाल, सेवा सच कमाईआ। आपणे वखावे अगम्मे लाल, जो लालण आपणे विच्चों कढाहीआ। जेहड़े किसे माता दे जन्मे नहीं बाल, गुर शब्दी धार प्रगटाईआ। जिन्हां दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण दे ना सकण अहिवाल, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। जिन्हां नूं खा ना सके काल, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जो वसण सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, हक मुकामे

डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। छब्बी पोह कहे मैं देणा इक ब्यान, फ़रमाना धुर जणाईआ। हुक्म सुणना श्री भगवान, दूजा राग ना कोए अलाईआ। करना इक ध्यान, दृष्टी इष्ट ना कोए मनाईआ। वेखणा इक जहान, परदा ओहला मिटाईआ। मिलणा इक श्री भगवान, जो सब दा पिता माईआ। जिस दी कलमयां तों बाहर कलाम, अक्खरां तों बाहर पढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे सर्ब अमाम, सजदयां विच सीस निवाईआ। जिहनूं लभ्भणा नहीं आसान, मुश्कल विच लोकाईआ। जिस दा खेल दो जहान, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जिस दा अनोखा वक्खरा बाण, अणयाला तीर चलाईआ। जिस दा अमृत गोबिन्द कीता पाण, कृपान खड़ग ना कोए खड़काईआ। जेहड़ा दे के कदे ना करे एहसान, प्रेमीआं प्रेम वधाईआ। जिस दा भगतां उत्ते माण, अभिमाण दए गवाईआ। जिस ने जंगलां विच फिराया राम, चार कुण्ट दुहाईआ। जिस ने भेज के कृष्ना काहन, बंसरी इक सुणाईआ। जिस ने दे अगम्म पैग़ाम, पैगम्बरां करी पढ़ाईआ। जिस सतिगुरू दे के दान, निरगुण नानक करी पढ़ाईआ। जिस गोबिन्द कर ब्यान, परदा ओहला दिता उठाईआ। जो भगतां देवणहारा दान, दाता बेपरवाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड अक्ख ना कोए उठाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला एकँकारा सहिजे मिल्या आण, लभ्भण दी लोड़ रही ना राईआ। जन भगत वेखे आपणे उह महिमन, जो जुग चौकड़ी नाता गए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे मैं वेखणी अजब बहार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मेरे साहिब दी खिड़ी गुलज़ार, गुलशन बेपरवाहीआ। जिन्हां दे अंदर इक प्यार, दूजी धार ना कोए वखाईआ। जिन्हां दा मालक इक्को कल कल्की अवतार, गुर अवतार सीस निवाईआ। जिस दा दो जहानां इक दरबार, दर दरवाज़ा चरणां विच रखाईआ। सो पड़दे ओहले देवे पाड़, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सच धर्म दा लाए अखाड़, डंका शब्द नाम वजाईआ। सुत्यां करन आया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पहुंचाईआ। मैं धुर दा तुहाडा यार, पिछली कटां जुदाईआ। जिस नूं नानक मंनयां पुरख अकाल, सो चल के आया माहीआ। बिन अक्खां देवां दीदार, रातीं सुत्यां लवां उठाईआ। जिस नूं कैहिंदे कन्त भतार, आत्म परमात्म सेज हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। फुल्ल कहे मैं देवां साची ख़बर, संदेश इक सुणाईआ। गुरमुखो तुहाडा पूरा करे सबर, बेसबरी दए गवाईआ। जिस मेहर नज़र कर के तारने सब दे टब्बर, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुका के मढ़ी कबर, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। जेहड़े पिच्छे रह गए मगर, उह अगे लए लगाईआ। आत्म परमात्म रच सुअम्बर, लेखा आपणे नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आपणी धार रिहा बदलाईआ। फुल्ल कहे बदल दे धार, धर्म दवारा तेरा नज़री आईआ। तैनूं सारे कह के गए यार, यारी किसे ना तोड़ निभाईआ। गुर अवतार तूं कीते मात खुआर, जंगलां विच भवाईआ। तेरे उत्ते किसे ना कीता एतबार, दरोही नाम खुदाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी चार, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। तेरा वेख्या भगत दवार, तूं भगवन बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले लै उठाल, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। वेख मुरीदां हाल, मुर्शद नज़र उठाईआ। तोड़ माया जंजाल, जागरत जोत होए रुशनाईआ। तेरा सचखण्ड दवारा सच्ची धर्मसाल, जन भगत बैठे डेरा लाईआ। लेखा जगत चुक्के चुरासी आण, जम दी फाँसी दे तुड़ाईआ। वाअदा कर श्री भगवान, जन भगत तैनूं रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो मैं वेखी तुहाडी फुलवाड़ी, फली भूत नज़री आईआ। मैनूं याद आई सतारां हाढ़ी, इक सत्त वज्जी वधाईआ। प्रकाश वेख बहत्तर नाड़ी, जोती जोत डगमगाईआ। जिन्हां दे अंदर प्रीती सब तों वक्खरी गाड़ी, रंग वक्खरा रही रंगाईआ। उन्हां दे नेड़े आउणी नहीं मौत लाड़ी, शब्द डण्डा रिहा डराईआ। किसे नूं जाणा ना पए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, घर बैठयां आत्म परमात्म लए मिलाईआ। तुहाडी लेखे लाउणी अज्ज दी दिहाढ़ी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा लेखा रिहा चुकाईआ। तुहानूं सचखण्ड दी बख्शणी उह सरदारी, जित्थे सदा मिले बेपरवाहीआ। कोई आत्मा परमात्मा बिना ना रहे कँवारी, रंडेपा पिछला देणा कटाईआ। जिन्हां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलया जैकारी, नाअरा दो जहान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे आ गया छब्बी पोह, नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी वक्त लँघाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो निर्मोह, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। भगतां दी आत्मा नाल गया छोह, शहिनशाह आपणा रंग वखाईआ। गुरमुखां वरगा हो, विच फिरे बेपरवाहीआ। सहिजे सहिजे इके वार सब दे अंदर कर दए लो, दीवे बत्ती दी लोड़ रहे ना राईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया क्रोध विकारा तुहाडा लवे खोह, आपणे चरणां हेठ दबाईआ। गोबिन्द वाला अमृत रस निझर झिरना देवे चो, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अज्ज तों तुसीं मेरे मैं तुहाडा गया हो, विछोड़े दा लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतो तुहाडे पिच्छे फड़ ल्या डण्डा, डण्डावत दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडा अन्त अख़ीरी कन्ढा, चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। दीन दयाल बण बख्शंदा, बख्शिश रहमत आपणी झोली पाईआ। बेशक मैं बाहरों नज़री आवां तत्तां वाला बन्दा, अंदर जलवा नूर खुदाईआ। वेख्यो गुरसिख कोए ना रिहो अन्धा, अज्ञान अन्धेरा दयां मिटाईआ। हरि संगत विच कोए रहिण नहीं देणा गंदा, गुरमुख इक्को रंग रंगाईआ। तुसीं

मेरे मैं तुहाडा गावां छन्दा, ढोला इक्को शहिनशाहीआ। तुहाडा मेरा बण गया संगा, सगला लेखा लैणा मुकाईआ। मेरा तुहाडे अंदर लग्गणा पंजा, पंजां चोरां बाहर कढाहीआ। जरा वेक्ख्यो पूरे सतिगुर दा किस तर्हां पैंदा फंदा, फंदी चुरासी वाली देणी कटाईआ। तुहाडे तोड़ के जंदा, अंदर वड़ना चाँईं चाँईंआ। तुहाडा तन मन करना ठंडा, अग्नी अग्ग बुझाईआ। तुहानूं पता नहीं लग्गणा किस बिध नाल गोबिन्द तुहाडे अंदर फेरना रंदा, दुरमति मैल देवे धवाईआ। आपणे नाल लगा के अंगा, अंगीकार दिते कराईआ। नव नवीन चढ़ा के रंगा, रंग रतड़े दिते वखाईआ। मैनूं दो जहानां नालों इक्को गुरमुख चंगा, जो प्रभ दे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ।छब्बी पोह कहे शाबाश, गुरमुखां सिफ्त सालाहीआ। जिन्हां दी पूरी होई आस, निराशा रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां दे अंदर उह प्रकाश, जित्थे जोत होए रुशनाईआ। मैं सदा तुहाडे पास, कटां मात जुदाईआ। गुरमुख होए ना कोए बदमाश, मन मति देणी कढाहीआ। तुहाडा मन्दिर मेरी रास, बिन गोपी काहन वखाईआ। कट के जाएगा फास, आपणे घर बहाईआ। मैं देवां धुर दरख़ास, दो जहानां आपणी गोद आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा रिहा चुकाईआ। फुल्ल कहे मैं सुणयां फ़रमान, फरमाबरदारो तुहानूं दयां जणाईआ। अन्तिम छड्डणा पैणा सब नूं जहान, दीन दुनी दोवें देणे मुकाईआ। अक्खरां वाला कोई ना ल्यो ज्ञान, सतरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। इक्को दर्शन मंगो श्री भगवान, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल चढ़ो उह महान, जित्थे जलवा नूर ख़ुदाईआ। मिले धुर दा काहन, गोपी लए प्रनाईआ। जे तुसीं मैनूं नहीं मिले आण, मैं तुहानूं खोजां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। छब्बी पोह कहे मैं सब नूं कहां सुणो सज्जण मीत, मित्रो दयां दुहाईआ। जे इक वेरां एहो सुण लवो गीत, गोबिन्द दा विछोड़ा रहे ना राईआ। तुहाडा झगड़ा छुट जाए मन्दिर मसीत, काया काअबे वज्जे वधाईआ। फेर बैठे रहो अतीत, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। आपे तुहाडी बदल देवे नीत, नीतीवान शहिनशाहीआ। अंदर वड़ जाए चीत, चित वित ठगौरी कोई ना पाईआ। अजे ते पहला साल नहीं गया बीत, चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। थोड़ी होर वट्ट लवो कसीस, पहली चेत आपणा रंग दए चढ़ाईआ। शाह सुल्तानां तख्तां तों लए घसीट, जंगलां विच भवाईआ। जन भगतां रातीं सुत्यां दिने जागदयां रंग चाढ़ देवे मजीठ, दो जहान उतर कदे न जाईआ। तुहाडी केहड़ा करे रीस, जिन्हां नूं मिल्या बेपरवाहीआ। मेरा इश्क बेपरवाहीआ। मेरा इश्क मेरा प्यार धुर दी हदीस, कलमा इक समझाईआ। अन्त छत्र झुलणा ना किसे सीस, बिन गोबिन्द दूसर नज़र कोए ना आईआ। ना कोई सज्जण ना कोए मीत, जगत जहान

होणी जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। छब्बी पोह कहे मैनूं कोई थल्लयों आई आवाज़, उह धरनी दिती लगाईआ। मैं पढ़दे वेखे नमाज़, मुल्ला शेख़ रहे कुरलाईआ। मैं झगड़े वेखे ज़ात पात, दीन दुनी दए दुहाईआ। मैं करदे वेखे पाठ, रसना ढोले गाईआ। मैं कन्नां विच सुणदे वेखे बात, इशारयां नाल जणाईआ। जन भगतो प्रभ नूं मिलण दी किसे नूं नहीं लभ्भी जाच, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जित्थे इक्को हुक्म मिले साफ़, इन्साफ़ दए समझाईआ। कोट जन्म दे उतार के पाप, दुरमति मैल धवाईआ। रूह बुत्त दोवें करके पाक, पाकीज़ा आपणा रंग चढ़ाईआ। इथे उथ्थे पत लए राख, सतिगुरू इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा अंदरों खोले ताक, परदा अंदरों दए उठाईआ। करे जोत प्रकाश, शब्द नाद शनवाईआ। लेखा जाण पवन स्वास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। फुल कहे मैं दस्सां अनोखी गल्ल, गलवकड़ी भगतां नाल पाईआ। जो तुहाडी ख़ातर आया चल, उह मालक बेपरवाहीआ। तुहाडे अंदर जिस ने जाणा रल, जोती शब्दी रूप वटाईआ। विछोड़ा सहि ना सके पल, पलकां दे ओहले कर के रंग रंगाईआ। वेक्ख्यो वेला फेर नहीं मिलणा कल्ल, कलमयां वाल्लयो कलमे देणे तजाईआ। जिस दा लेखा जल थल, सो तुहाडा लेखा रिहा मुकाईआ। प्रकाश हो के तुहाडे अंदर जाए बल, नूर नूर रुशनाईआ। जेहड़ा किसे तों स्वाल नहीं होया हल्ल, उह सहिजे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या भगतां अंदर वड़, काया काअबे फेरा पाईआ। इक्को सोहँ ढोला रहे पढ़, तू ही तू ही राग अलाईआ। बिन पौड़ी मंज़ल रहे चढ़, राह विच ना कोए अटकाईआ। सनमुख सतिगुर रहे खड़्ह, परदा ओहला दूर कराईआ। दर्शन कर नरायण नर, नारी रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। फुल्ल कहे मेरा आउँदा जांदा वक्त, व्यक्ति दए बणाईआ। मैं परखण आया भगत, भगवन नाल मिलाईआ। मेरी गोबिन्द नाल शर्त, संसे देवे चुकाईआ। उहनां नूं देणा दरस, जिन्हां दे चार जुग लारयां विच लँघाईआ। मंज़ल चढ़दयां कोए ना जाए अटक, सचखण्ड दुआर देणे बहाईआ। प्रभ दर्शन नूं कोई ना रहे भटक, घर मिले शहिनशाहीआ। तुहाडे मन दी करके हत्तक, हत्या पूरी दए कराईआ। आपणा हुक्म दे के सख्त, अंदरों चोरां दए भजाईआ। तुहानूं बणा के जिगरे लख़त, लिख्त आपणे नाल कराईआ। इक दूजे नाल करयो ना कोए हसद, दूई द्वैती दए गवाईआ। नाम ख़ुमारी विच रहिणा मस्त, मस्ताने आपणे वरगे लए कराईआ। तुहाडा दरजा कोई नहीं रहिणा थरड, सैकंड फ़सट इष्ट इक्को दए बणाईआ। तुहानूं किसे नहीं करना अरैसट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। तुहाडा लेखा सदा बैसट, कुऐसचन होर

ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा जणाईआ। छब्बी पोह कहे मैं आ गया मुड़ के, मुड़ मुड़ फेरी पाईआ। लख चुरासी खेल वेखदा रिहा चेला गुर के, नित नित अक्ख खुल्हाईआ। रंग तक्कदा रिहा देवत सुर के, विष्न ब्रह्मा शिव पर्दा लाहीआ। लेख वेखदा रिहा ठग चोर दे, शोर विच लोकाईआ। अज्ज खेल एथे प्रभू अगम्मड़े होर दे, जो होका दे के रिहा सुणाईआ। जिस दे भाणे सदा ज़ोर दे, विच जहान ना कोए मिटाईआ। जिस ने झगड़े मुकाउणे कलयुग अन्ध घोर दे, साजन सच करे रुशनाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर लोड़ दे, सिफ्तां विच सालाहीआ। उस ने जगत भाग करने मथोर दे, मिथ्या दस्से लोकाईआ। जिन्हां दे लँघ गया कोल दे, कलमा इक्को देणा समझाईआ। दुनिया नूं मार्ग दस्स मख़ौल दे, भगतां नूं अंदरों ल्या जगाईआ। वेले पूरे होए इकरार कौल दे, कीमत आपे लए पाईआ। नाले भाग जागे इस धरती धौल दे, जित्थे राम दे के गया दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। छब्बी पोह कहे मेरी पूरी होण वाली शर्त, प्रभ ने शरीअत देणी बदलाईआ। जो निरगुण हो के आया परत, सरगुण आपणा आप आपणे विच छुपाईआ। करना खेल उत्ते धरत, धरनी धवल वज्जे वधाईआ। जिस दा लेखा सब तों ठंडा सर्द, सदीआं दी सदी दए मुकाईआ। भगतां दी मन्न के पिछली अरज़, आरज़ू आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। फुल्ल कहे मैं भगतां नूं दस्सां अंदर दा भेत, सहिज नाल जणाईआ। तुहानूं नहीं पता मेरा किस दे नाल हेत, हितकारी कवण नज़री आईआ। मैं हुण ते उगदा विच खेत, कदे विष्नू दी नाभी बह के ख़ुशी मनाईआ। मैनूं किसे नहीं ल्या चेत, चेतन सुरती ना कोए वड्याईआ। जगत जहान बणा के खेड, खिलाड़ी हो के फेरा पाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छो मैं भगतां दे राहीं भगवान दे हुन्दा भेंट, दूजिआं दी वथ ना कोए बणाईआ। मैं उस सेजा उत्ते जावां लेट, जित्थे शहिनशाह आपणा चरण टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत कहिण सुण फुल्ल गुलाब, आरजू इक प्रगटाईआ। तेरा केहड़ा बीज ते केहड़ी दाब, कवण रंग रंगाईआ। केहड़ा जल ते केहड़ा आब, कवण करे रसाईआ। केहड़ा मीत ते कवण साथ, कवण जोड़ जुड़ाईआ। केहड़ा दाता तेरा रघुनाथ, कवण होवे सहाईआ। केहड़ी डाली अते केहड़ा पात, केहड़ा खण्डा कार बणाईआ। केहड़ा वरन ते केहड़ी ज़ात, सानूं दे समझाईआ। केहड़ी वस्त केहड़ी दात, कवण रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फुल्ल कहे मेरा भेव अनोखा, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। भगतो तुहाडे नाल नहीं करना धोखा, आपणा परदा दयां उठाईआ। जुग चौकड़ी

पिच्छो मैनूं मिलणा मौका, मैं आपणा हाल सुणाईआ। मेरा लभ्भणा नहीं सौखा, सृष्टी समझ ना सके राईआ। मेरा कोई जड़ां वाला नहीं पौदा, पद इक्को नज़री आईआ। जित्थे भगत भगवान दे प्रेम दा होवे सौदा, उथ्थे मेरी रहिनुमाईआ। मेरी इक्को पदवी इक औहदा, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैनूं समझ सके ना लोक चौदा, चौदां तबक भेव ना आईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि खेल भगवन कराउँदा, करतब आपणा नाल बणाईआ। नित नवित मैनूं नाल ल्याउँदा, लहरां विच भवाईआ। मैं ओसे दे ढोले गाउँदा, जिस मेरी बणत बणाईआ। ओसे दी सेजे सौंदा, जित्थे कदे ना होवे जुदाईआ। ओसे दे तीर्थ नहाउँदा, जित्थे तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। फुल्ल कहे मेरी कोए ना समझयो पत्ती, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। मेरे अंदर उह सुगंधी रती, जिस दी रतन अमोलक कीमत कोए ना पाईआ। मेरे अंदर जगी इक्को बती, जिस दा जोत नूर रुशनाईआ। मेरे अंदर अगम्मी हट्टी, जित्थे वणजारा शहिनशाहीआ। मैं जुग चौकड़ी खट्टी एहो खट्टी, घाटा नज़र कोए ना आईआ भगतां संग मेरी बात पक्की, पक्की तरा़ं दयां जणाईआ। जित्थे लाड़ी मौत कदे ना नच्ची, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। इक्को कथा कहाणी सच्ची, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। आत्म परमात्म बणे बच्ची, पिता पूत गोद उठाईआ। प्रेमी हो के प्रेमका हस्सी, हस्ती विच्चों हस्ती लए बदलाईआ। दो जहानां फिरे नस्सी, ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघाईआ। मेरी हकीकत वाली गल्ल हकी, हुक्मे हुक्म नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा रिहा उठाईआ। फुल्ल कहे मैं गुरमुखो तुहाडी वेखणी नाड़ नाड़, नाड़ी नाड़ी खोज खुजाईआ। भावें मेला नहीं होया जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर गए विहाईआ। मैनूं लभ्भदे गए तेई अवतार, ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख उठाईआ। नानक गोबिन्द वेंहदा गया गुलज़ार, गुलशन शहिनशाहीआ। भगत बणदे गए भिखार, फ़कीर सूफ़ी झोलीआं डाहीआ। मैं किसे दा नहीं बणया यार, यराना तोड़ ना कोए निभाईआ। मैं लभ्भां इक्को पुरख अकाल, जिस दी आदि जुगादि कदे मिटे ना शहिनशाहीआ। फेर भावां उस दे नाल, जो बैठे डेरा लाईआ। मैं चुरासी विच्चों करां भाल, भज्जां थाउँ थाँईंआ। मेरा खेल बेमिसाल, जिस दी मिसल ना किसे बणाईआ। मैं चलां अवल्लड़ी चाल, चारों कुण्ट करां कुड़माईआ। एह वी खेल कमाल, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो मेरा वेला गया आईआ। आओ वेखीए उस दे लाल, फुल्ल कहे मैं फुलदा फलदा, फल सच्चा दयां जणाईआ। जिस वेले भगतां नाल रलदा, आपणा आप मिटाईआ। उस मार्ग ते चलदा, जित्थे कदे ना होवे जुदाईआ। झगड़ा छड्ड के कुड़यारी दुनिया दल दा, दलदल विच्चों आपणा आप बाहर कढाहीआ। मसला स्वाल वेख हल्ल दा, आपणी हालत लवां बदलाईआ। इक्को

दवारा मल्लदा, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। फेर मैनूं आसरा नहीं किसे पाणी जल दा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतो सच मन्नयों श्री भगवान दा भाणा कदे ना टल्दा, टालमटोल विच वक्त ना कोए गवाईआ। कलयुग अन्त आपणी अग्नी अंदर बलदा, बलदी वेखे लोकाईआ। झगड़ा किसे नहीं चुकाउणा दूई द्वैती सल दा, तीर अणयाला आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। छब्बी पोह कहे मैं सुणन आया हदायत, जो हज़ूर हज़रतां रिहा सुणाईआ। जिस ने किसे नाल करनी नहीं कोई रयायत, रवादारी ना किसे समझाईआ। जां तक्कां वेखां इक्को भगतां उत्ते करे अनायत, मेहर नजर उठाईआ। अगे आपणे हुक्म दी करे समायत, समां दए बदलाईआ। जन भगत भावें किस तरां कर लवो अज़माइश, परदा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। फुल्ल कहे सुण मेरे जगदीश, जगजीवण दाते मंग मंगाईआ। इक्को छत्र सोहे तेरे सीस, कल कल्की नूर अलाहीआ। लहिणा देणा मुक्कया बीस इकीस, निरगुण सरगुण पन्ध मुकाईआ। अगे साची दस्स रीत, रीतीवान दया कमाईआ। तेरा खेल वेखीए अतीत, त्रैगुण लेखा देणा चुकाईआ। जाणा पए ना किसे मन्दिर मसीत, काया काअबा देणा खुल्हाईआ। आत्म परमात्म मिल के गाए गीत, शिवदवाले मठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुक जाए ऊँच नीच, ज़ात पात होवे सफ़ाईआ। इक्को लग्गे सर्ब प्रीत, प्रीतम मिले शहिनशाहीआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक तेरे बणीए अज़ीज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। हुक्में अंदर दस्स तमीज़, अंदरों तमअ दे मिटाईआ। तेरे विच सच तौफ़ीक, तोबा तोबा करे खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा देणा दे चुकाईआ। लेखा चुकावे लोकमात, सरगुण रहिण कोए ना पाईआ। परम पुरख प्रभ दे दे दात, तेरी बेपरवाहीआ। लेखे ला लै आयां दी रात, जो आए पन्ध मुकाईआ। चार वरन बणा दे इक्को जमात, इक्को कर पढ़ाईआ। धुर दा दे साथ, पिछली कट जुदाईआ। नाम निधाना सुणा गाथ, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नाम ना कोए शनवाईआ। पूरी कर दे ख्वाहिश, तृष्ना मेट मिटाईआ। लेखे ला लै स्वास, साह साह समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत कहिण असीं तेरे बरदे, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। असीं मालक तेरे घर दे, अंदरों कुण्डा दे खुल्हाईआ। बिना तेरी सेजा होर सेज कदे ना चढ़दे, दूजा रूप ना कोए बणाईआ। असीं किसे कोलों नहीं डरदे, गुर पीर अवतार पैगम्बर सारे दर ते वेखे सीस निवाईआ। खेल वखा आपणे थिर घर दे, जित्थे वज्जे सच वधाईआ। नित नवित तेरा भाणा जरदे, आप आपणा गए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे वखाईआ। जन भगतो प्रभ देवे इक संदेश,

धुर दी धार जणाईआ। तुसीं होए उस दे पेश, जो पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। जो मालक इक नरेश, नर नरायण धुर दरगाहीआ। तुहानूं सदा रखे आपणे कोल हमेश, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। तुहाडे चरण चुंमे विष्नूं दी सेज वाला शेष, सांगोपांग तुहाडे चरणां हेठ दबाईआ। तुहाडा सब तों वक्खरा देश, सचखण्ड दवारा दिता बणाईआ। जिस दी ना कोई मेट सके रेख, नौ दुआर ना कोए वड्याईआ। तुहाडे अंदर वड़ के दस्सणा भेत, बाहरों करनी नहीं कोई पढ़ाईआ। तुहानूं नज़री आउणा नेतन नेत, निज नेत्र करां रुशनाईआ। ज़रा आ लैण दयो पहली चेत, चार कुण्ट पए दुहाईआ। एह वी प्रभ दी खेड, खिडारी हो के लए खिडाईआ। क्यों तुसां सत्त रंग दा डण्डा कीता उस दी भेंट, जिस सत्तां दीपां दी करनी सफ़ाईआ। जिस दा लख चुरासी खा के कदे ना भरया पेट, भुक्खे दी भुक्ख ना कदे गवाईआ। जे कदी खुशी आवे ते तुहाडे अंदर जावे लेट, आत्म हो के परमात्म हो के आपणी सेज हंढाहीआ। सहिज सुभाउ तुहाडे बदल देवे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कोई नहीं जाणदा प्रभू दा जोत सरूप केहड़ा भेख, बिना गोबिन्द सार कोए ना पाईआ। जो बच्चयां कर के भेंट, भाण्डा भरम गया भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। जन भगत कहिण भगवन वेखीं किते करीं ना दिलगीर, तेरी बेपरवाहीआ। तूं तेग़ बहादर दा कटा के सीस (नाल शमशीर,) दिल्ली विच दिता लटकाईआ। तूं रोल रोल के मारया कबीर, फ़रीद दए दुहाईआ। तैनूं अजे तक्क कदी नहीं लभ्भया किसे अमीर, ग़रीबां दे अंदर वड़ के आपणा झट लँघाईआ। सच मकान कर दे तामीर, मंज़ल आपणी दे वखाईआ। जित्थे नाता तुटे तत सरीर, इक्को जोत होवे रुशनाईआ। भावें तेरा मार्ग महीन, जग नेत्र नज़र कदे ना आईआ। जे तूं साडे अंदर देवें यकीन, यकीनन यक तरफ़ा हो के फ़ैसला देवें सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगतो जलवा नूर, नूर दयां वखाईआ। जुगां पिच्छो प्रभ दा इक्को बेड़ा ते इक्को भरया पूर, पूरन हो के पूर कराईआ। बेशक तुसीं समझदार . . . . .मैं नेरन नेरा हो के तुहाडे अंदर डेरा लाईआ। चतुर सुघड़ बणाउणा मुरख मूढ़, जो चल आए सरनाईआ। तुहाडी याद रह जाए अज्ज दी मस्तक लग्गी चरणां दी धूढ़, ख़ाकी ख़ाक विच्चों बाहर कढाहीआ। जुग चौकड़ी दे बख़्श देवां कसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। नाम खुमारी दे इक सरूर, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। जिधर वेखो उधर हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के मुरीद मुर्शद गले लवां मिलाईआ। तुहाडे मन दा कदे पैण ना देवां फ़तूर, फ़तवा ला के बन्दीख़ाने विच देवां भवाईआ। नेड़े आउण ना देवां ग़रूर, गुरबत सब दी देवां मिटाईआ। सच पुछो पहली चेत दे पिच्छो तुहानूं मिलदा रहां ज़रूर, जिमेंवारी आपणे कंध उठाईआ।

फिर वी तुहाडा होवां मशकूर, जगत विच मुश्कल हल कराईआ। मैं तुहाडा जन्म जन्म दा कन्त कन्तूहल, नाता आपणे नाल रखाईआ। तुहाडी अज्ज दी रात जाण नहीं देंदा फ़ज़ूल, फ़ज़ल कर के रहमत कर के फैसला हक देवां सुणाईआ। इक्को कलमा नाम माकूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए रंगाईआ। जन भगत कहिण वेखीं प्रभू किते दे के ना जावीं लारा, लारयां नाल वक्त लँघाईआ। तेरा जुग चौकड़ी समझया नहीं किसे इशारा, भेव सक्या ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं दा अन्त किनारा, मुहम्मद रिहा कुरलाईआ। कूड़ी क्रिया धूआँधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। भगतां दा वेख के भगती वाड़ा, भगवन आया बेपरवाहीआ। एसे करके कढुदे हाढ़ा, हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहिण सुण साडे भगवन्त, बेनन्ती इक सुणाईआ। तैनूं लभ्भदे कोटन कोटि सन्त, सहिसयां विच लोकाईआ। गुर अवतार तेरा पा ना सके अन्त, बेअन्त कह के सारे रहे गाईआ। हथ्थ ना आया किसे जीव जंत, लख चुरासी दए दुहाईआ। धन्न भाग जे भगतां नाता जुड़या नार कन्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। इक्को नाम दस्सया मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत,

हँ ब्रह्म दिता समझाईआ। नाता जोड़ के साची संगत, सगला लेखा दिता मुकाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बिन
१०४ १६
विद्या करे पढ़ाईआ। आपणे प्रेम दी दे के हिम्मत, जगत जुगतों ल्या छुडाईआ। मन करे कोई ना इल्लत, कूड़ी वासना ना कोए बणाईआ। अन्त अख़ीरी इक्को मिन्नत, चरण कँवल मिले सरनाईआ। ग़मी रहे कोई ना चिन्नत, चिखा कूड़ ना कोए जलाईआ। साची दस्सदे धुर दी सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जित्थे तेरी होवे मिल्लत, अवर ना कोए जुदाईआ। विछोड़े वाली रहे ना किल्लत, कलमा कलाम ना कोए सुणाईआ। नज़री आए ना कोई निन्दक, दुष्ट रूप ना कोए प्रगटाईआ। इक्को शब्दी दे दे खिल्लत, ख़ता सारी मुआफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत सुहेले मेरे, महबूब दे वड्याईआ। मैं वस्या तुहाडे खेड़े, घर घर विच डेरा लाईआ। मैं अक्खां तों दूर प्रेम तों नेड़े, सच घर बैठा सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया छड्ड के झेड़े, झगड़े माया वाले मिटाईआ। चरण रख तुहाडे डेरे, डेरा आपणा ल्या बदलाईआ। हुण आ गया भगतां वेहड़े, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। जित्थे होणे हक निबेड़े, हकीकत दए गवाहीआ। किसे तों सुणने पैण ना कोई झेड़े, दूजी आस ना कोए रखाईआ। जेहड़े भगत बण गए मेरे, प्रभ दे रूप विच समाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े सदा बथेरे, बहुत्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। जेहड़े आ गए शब्दी घेरे, चारों कुण्ट पहरेदार अख्वाईआ। फड़ के बाहों चाढ़ने बेड़े, पत्तन

आपणे लए लगाईआ। जन्म मरन दे नहीं झेड़े, आवण जावण ना कोए वखाईआ। राए धर्म मूल ना घेरे, चित्रगुप्त ना हिसाब जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरा सच सिँघासण चंगा, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। लोड़ रहे ना नहावण दी गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती चरणां हेठ दबाईआ। बिना बन्दगीउँ बणाए बन्दा, बन्धन अगले दए तुड़ाईआ। बिना सूरज चन्द चढ़ाए चन्दा, जलवा नूर कर रुशनाईआ। तेरे हथ्थ सत्त रंग दा डण्डा, सति भूमिका कर सफ़ाईआ। जित्थे तेरा दवारा सचखण्डा, ओह घर देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे तुसीं मेरे सज्जण सुहेल, सोहणे नज़री आईआ। चाढ़ां रंग नवेल, इक्को वार रंगाईआ। अन्तिम लवां मेल, होवे ना कोए जुदाईआ। भाग लगा के गुरू गुर चेल, चेला गुर बणत बणाईआ। जोत जगा के बिन बाती तेल, इक्को नूर करां रुशनाईआ। आपणा वखावां अगम्मी खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जन भगतो जायो जाग, जागण वेला आया। घर मिले कन्त सुहाग, ठाकर बेपरवाहया। जिस दा सब तों वक्खरा राग, अनुरागी आप सुणाया। दुरमति

१०५
१९

मैल धोवे दाग़, अमृत जाम प्याया। शब्द वजाए नाद, धुन आत्मक राग अलाया। धुर दा बणे बाप, पतिपरमेश्वर बेपरवाहया। कोट जन्म दे उतारे पाप, काया खेड़ा वेख वखाया। घर घर नज़री आवे आप, भगतां लए उठाया। गुरमुखां दए शाबाश, जो चल आए सरनाया। अज्ज दी रात वेला ख़ास, ख़सूसीअत तुहाडी दए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाया। जन भगत कहे भगवन तूं बड़ा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। किसे ने तैनूं किहा खुदा, कोई खुदी विच नचाईआ। कोई बण के तेरा गवाह, शहादत नाम वाली भुगताईआ। कोई झगड़ा गया पा, दीनां मज़्बां वण्ड वण्डाईआ। कोई सजदयां विच सीस झुका, डण्डावत कर के नमो नमो सुणाईआ। कोई धूढ़ी ख़ाक रमा, चिमटे रिहा वजाईआ। कोई मन्दिर मठ बणा, टल्लां रिहा खड़काईआ। कोई मस्जिद मसीत रिहा सुहा, महिराब करे रुशनाईआ। कोई ठाकर स्वामी रिहा मना, मुनादी नाल वज्जे वधाईआ। जन भगतां इक्को तेरा दर मंगया आ, जगत नाते दिते गवाईआ। तूं पातशाहां दा पातशाह, शहिनशाह अख्वाईआ। आपणे रस्ते लैणा ला, परदा देणा उठाईआ। फिर वी प्रभू तेरा नहीं वसाह, किस वेले करें जुदाईआ। जे शब्दी गोबिन्द नाल दएं मिला, उह विछोड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां दा लेखा दे वखाईआ। श्री भगवान कहे भगतो मेरे उत्ते रक्ख्यो भरोसा, सच दयां जणाईआ।अगे रहिण ना देवां जन्म जन्म दा रोसा, रुस्सयां लवां मिलाईआ। तुहाडा वसावां साढे तिन्न हथ्थ दा कोठा, मन्दिर अंदर डेरा

लाईआ। तुहानूं पढ़ना पैणा नहीं कोई पोथा, अक्खर इक्को देणा समझाईआ। राह दस्स के मंज़ल तों परे सौखा, पैंडा देणा मुकाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना चौदां लोका, चौदां विद्या ना कोए जणाईआ। ओथे इक्को शब्द गुरू दा होका, दूजा हुक्म ना कोए मनाईआ। अगे दी रहे कोई ना सोचा, सोचां विच ना किसे भवाईआ। तुहाडी पूरी करां लोचा, लोचन अंदरों दयां खुल्हाईआ। लुक्कया रहे ना कोई लोकमात गोशा, फड़ बाहों लवां जगाईआ। पिछलयां साधां वरगा करना पए ना कोए महोछा, मुश्कल आपे हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहानूं दस्से इक सलोका, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगत कहिण प्रभू वेखीं कच्ची ना पाईं गंढु, गंढुणहार तेरी वड्याईआ। असीं हैरान परेशान दंग, दंगा पैणा विच लोकाईआ। चार कुण्ट नहीं दिसणी ठंढ, अग्नी तत तपाईआ। सृष्टी होणी रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाहीआ। वेखीं आपणयां भगतां नूं कदी ना देवीं कंड, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। जुगां पिच्छो तेरी आउँदे विच वण्ड, वण्ड जगत नालों कराईआ। किसे नूं कदी ना देवीं दंड, मेहर नज़र नाल तराईआ। सब दा खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी आपणी देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला देणा उठाईआ।

१०६ जन भगतो मेरे उत्ते करयो विश्वास, श्री भगवान सदा समझाइंदा। भगतां दा सदा दास, सेवक सेवादार अखवाइंदा। उन्हां १०६

१६ दे वसां पास, जेहड़ा अंदरे अंदर मेरा राह तकाइंदा। प्रभू जानणहारा सब दी ख़ाहिश, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। मेहरवान १६

हो के तुहाडे अंदर करां वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा। तुहाडा वेखां घर गृह मन्दिर थान निवास, जित्थे दीवा बाती कमलापाती आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जन भगत कहिण प्रभू तेरा झगड़ा सदा कदीम, पूरब नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे मुनीम, लिख लिख लेखा गए कलम शाहीआ। किसे नूं अलिफ़ सिखाई किसे नूं मीम, किसे नूं नुकतयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जुग चौकड़ी करदा रिहों तरमीम, आपणी बणत बणाईआ। किसे नूं अक्ख प्रतख वखाए सीन, समझ रमज़ विच मिलाईआ। किसे नूं नर बणाया किसे नूं मदीन, आप परदयां विच आपणा आप छुपाईआ। तेरे उत्ते किस तरां आवे यकीन, जो यके बाद दीगरे सारयां नूं रिहा भवाईआ। असीं तेरे भगत नहीं कोई कमीन, भुक्खे नंगे मंगते नज़र कोए ना आईआ। क्यों, साडा ना कोई मज़्हब ना कोई दीन, ज़ात पात वण्ड ना कोए वखाईआ। असीं पैरां हेठां देणे लोक तीन, चौदां लोक चौदां तबक ठेडयां नाल उडाईआ। असीं नहीं मन्नणी तेरी तकसीम, इक्को रंग लैणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण असीं कोई भुक्खे नंगे नहीं भिखारी, धुर दा ढोला दईए सुणाईआ। बेशक तूं निरगुण जोत निरँकारी, नूर

तेरा साडा नूर नज़री आईआ। साडी तन माटी नहीं बेकारी, ख़ाली रूप ना कोए वखाईआ। असीं कच्ची कदी नहीं लाई यारी, जन भगत रहे सुणाईआ। जे साडी आत्मा रह जाए कुँवारी, तैनूं ख़ावंद ना कोए बणाईआ। जे तूं करें ना साडी तरफ़दारी, असां झगड़ा लैणा पाईआ। सानूं तेरे मिलण दी बीमारी, रोग सके ना कोए हटाईआ। तेरयां चरणां उत्ते तेरयां भगतां दी सदा घसदी रही दाढ़ी, आप आपणा गए मिटाईआ। तैनूं लभ्भण जाईए विच्चों जंगल ते पहाड़ी, तूं बैठा रहें घर घर डेरा लाईआ। क्यों कटीए खआरी ? तूं साडा असीं तेरे बिना तेरे दूजी ओट ना कोए तकाईआ। ओ प्रभू तूं साडा बण पुजारी, जन भगत रहे सुणाईआ। तूं आयों साडे दवारी, दवारका वासी तेरे अंदर सेव कमाईआ। तैनूं नहीं पता एह जट्ट फड़ के आउण सांघे ते कुहाढ़ी, डांगां हथ्थां विच फड़ाईआ। वट मुच्छां नूं रहे चाढ़ी, बल आपणा रहे वधाईआ। जिन्हां दी गोबिन्द पैज संवारी, तूं उन्हां दी कटणी जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। जन भगतो मेरे नाल ना पायो झगड़ा, सब नूं दयां सुणाईआ। मैं साथ देवां तुहाडा सगला, दो जहानां संग मिलाईआ। मैथों अहिवाल सुण लओ अगला, पड़दे ओहले दयां उठाईआ। तुहानूं फिरन नहीं देंदा विच जंगलां, घर घर करां रुशनाईआ। आपणे नाम दा कर के चार मंगला, धुंन नाद करां शनवाईआ। तुहानूं बन्हौणा नहीं किसे शरअ वाले संगला, ज़ंजीरां विच्चों बाहर कढाहीआ। सचखण्ड दवारा देवां बंगला, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ओह गुरमुख ओथे कोई रहे ना गंदला, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। तुसां नूं इक्को दस्सणी बन्दना, बन्दगी देणी जणाईआ। जन भगत जो कुछ मंगणा मंग ला, देवणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर अपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहे प्रभू तूं की देणा सूमां, सूमां दा सूम नज़री आईआ। असीं कुछ नहीं मंगदे इक्को दर्शन करना चाहुन्दे नैणां, निज नेत्र अक्ख दे खुल्हाईआ। तेरे जगत वहण विच कदी नहीं वहणा, माया विच ना कोए रुढ़ाईआ। असीं नाता छड्ड के भाई भैणां, झगड़े दिते मुकाईआ। तेरे नाम दा पा के गहिणा, घूँगट परदा दिता उठाईआ। इक्को तेरा भाणा सहिणा, दूजे दी लोड़ रही ना राईआ। जे तूं ना मन्नया कहिणा, असीं जाणा मुख भवाईआ। फेर तैनूं प्रभू प्रभू किसे नहीं कहिणा, तैनूं मथ्थे ना कोई घसाईआ। असीं भगतीउँ बिना आपणा लहिणा लैणा, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। ख़ाली हथ्थ कदे नहीं बहणा, झोलीआं भर के घरां नूं जाईए चाँईं चाँईंआ। ओए प्रभू असां की करनी तेरी कामधेना, ऐराप्त हाथी कम्म किस आईआ। इक्को तेरे प्रेम अंदर रहिणा, होवे ना कदे जुदाईआ। जे तूं समझें तरफ़ैणा, करवट लएं बदलाईआ। फेर ना कोई ऐन ते ना कोई ग़ैना, ना कोई नुकता मुक्ता करे पढ़ाईआ। ना कोई रसन ना कोई शब्द नाम रसैणा, ना

कोई ढोले गीत अलाईआ। ओ प्रभू बिना भगतां किहदे घर बणे पराहुणा, किस दे घर वड़ के खुशी मनाईआ। तैनूं किते ना आवे चैना, असां नहीं सुणनी तेरी सिफ्त सालाहीआ। बिना भगतां तों मनमुख तैंना, धक्कया नाल बाहर देण कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर दे वखाईआ। जन भगत कहिण तैनूं कैहिंदे ठाकरां दा ठाकर, परवरदिगार नज़री आईआ। तेरा नाम कैहिंदे डूँग्घा सागर, वहणां विच रुढ़ाईआ। असीं कैहिंदे साडे निर्मल कर्म कर उजागर, करमां दा लेखा आए मुकाईआ। सानूं मिल गया शब्दी गुर सूरा बहादर, सूरबीर बेपरवाहीआ। जिंनां चिर दर आयां नूं ना देवें आदर, आपणा दरस ना दएं वखाईआ। असीं किसे नहीं कहिणा करीम कादर, कुदरत नालों नाता लैणा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा पासा लैणा बदलाईआ। जन भगतो मेरी मन्न लओ इक गल्ल, गलवकड़ी लवां पाईआ। विछोड़ा होवे कदी ना पल, पलक ना होए जुदाईआ। तुहाडी प्रीती दा देवां फल, फुलवाड़ी इक महकाईआ। तुहाडी ख़ातर आया चल, चलित्र दयां बणाईआ। जगत जवानी सब दी जाणी ढल, ढोलीआं ढोले रागां नादां विच गाईआ। तुसीं मेरे अंदर गए रल, रल मिल इक्ठे झट लँघाईआ। कोई करना नहीं वल छल, छल दा वेला दिता मुकाईआ। दूई द्वैत दा मेटया सल, आपणा तीर लगाईआ। पहलों तुहानूं दिता घल्ल, फेर आपणा फेरा पाईआ। प्रभू सदा भगतां वल्ल, वलवले अंदरों दए कढाहीआ। दस्स के निहचल धाम अटल, घराना पिछला दयां वखाईआ। जित्थे इक्को जोत रही बल, तेल बाती दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे रंग रंगाईआ। प्रभू विछोड़े वाला ना देवीं सदमा, सदीआं दे राह तकाईआ। असीं थोड़े विच्चों पदमा, अर्बां विच्चों नज़री आईआ। जेहड़े झुकदे सदा तेरे कदमां, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। जे तूं सानूं सच दवारे सद्दणा, सचखण्ड देणी माण वड्याईआ। फेर असां तैनूं होर किते नहीं लभ्भणा, घर बैठयां नज़री आईआ। असां तेरे नाल नाद हो के वज्जणा, धुन नाल शनवाईआ। तेरे प्रकाश नाल जगणा, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। ओ गोबिन्द प्यारे सज्जणा, एथे ओथे कट जुदाईआ। तेरा कोई ना जाणे उच्चा लभ्मा कद्दणा, कुदरत दे मालक बेपरवाहीआ। तेरी प्रीती अंदर बज्झणा, बचन इक्को देणा सुणाईआ। श्री भगवान तैनूं भगतां दा परदा पैणा कज्जणा, कलयुग तों लैणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं की कुझ सुणया बचन बिलास, बिन कन्नां कन्न सुणाईआ। मैं अक्खीं वेखी भगत भगवान दी पैंदी रास, बिन गोपी काहन वज्जी वधाईआ। आत्म परमात्म दा बणया साथ, सोहणा संग जणाईआ। उत्तों झुकदे मण्डल आकाश, थल्यों धरती खुशी मनाईआ। झगड़ा रहे ना कोई प्रभास, बनबास ना कोए फिराईआ। गुरमुखो

जिधर जाओ तुहाडी पूरी करां आस, निरास्ता रूप ना कोए वटाईआ। वेख्यो तुसीं कदी ना बणयो बदमाश, यारी गुंडयां नाल लगाईआ। तुहाडे अंदर लाउणी उह जाग, जेहड़ी सुत्यां लए उठाईआ। नाम दा देणा वैराग, नेत्र नीर ना कोए वगाईआ। प्रेम दी लाउणी आग, अग्नी तत बुझाईआ। जे नहीं जगया ते जगा देणा चराग़, एहो मेरी वड्याईआ। बिना साबण तों तुहाडा धो देणा दाग़, अंदरों करनी सफ़ाईआ। जे मैथों जाओ भाज, शब्द डण्डे नाल मोड़ के आपणे चरणां विच सुटाईआ। बेशक हुण हथ्थां उत्ते नहीं बाज़, बाज़ां वाला ओहो धुर दा माहीआ। जिस नूं समझे ना कोए दिमाग़, अकलां वालयां ना कोए चतुराईआ। रातीं सुत्यां बिन कन्नां सुणो मेरी आवाज़, जो अंदरों राज़ दए खुल्हाईआ। फेर वी तुहाडा मुहताज, सेवकां दा सेवक नज़री आईआ। एह कोई गाणा नहीं नाच, नटुआ ना वेख वखाईआ। सब तों अनोखी खुशीआं वाली रात, रुतड़ी रही महकाईआ। जेहड़ी किसे लभ्भी नहीं लोकमात, माता पिता बच्चयां रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ। फुल्ल कहे मैं वेखी भगतां दी बहार, फ़सल सोहणी नज़री आईआ। जिन्हां दे अंदर नाम बूटा असल, आपणा रंग बदलाईआ। उह खा के सच्ची कसम, किस्मत रहे बदलाईआ। यार दा कर के वसल, सेज रहे हंढाहीआ। उन्हां दे फरके मसल, मुसरत विच पेशानी रूप बदलाईआ। जिन्हां दी गुर अवतारां पैगम्बरां नाल रह गई कसर, लेखा ओहनां दा झोली पाईआ। जन भगतो भगवन नाल मिल के आराम नाल करना बसर, बिस्तरयां दी लोड़ रहे ना राईआ। अगे कोई ना जायो पछड़, पिछलयां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। फुल्ल कहे मैं गुरमुखां वल कीती दीद, सब नूं वेख वखाईआ। वेख्यो किसे दे उत्ते गलबा पा ना जावे नींद, आलस विच सुआईआ। एह मालक वेखो अजीब, जन्म जन्म देवे कटाईआ। तुहाडे अंदर रहे करीब, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ओ तुसां केहड़ी पढ़नी कुरान मजीद, कलमयां विच सीस झुकाईआ। तुहाडी अज्ज तों पूरी कीती उम्मीद, आमद विच खुशी मनाईआ। अक्खरां वाली तुहाडी कट दिती रसीद, रस्ते विच ना कोए अटकाईआ। जिधर जाओ विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर तुहाडी करन दीद, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं भगतां वल्ल रिहा तक्क, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कोई बैठा ते नहीं गया थक्क, मन वासना होई हल्काईआ। कोई सुणदा ते नहीं गया अक्क, सरवण बन्द कराईआ। मैं वेखणे सारे अनझक्क, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। जे कोई भज्जण लग्गे तां शब्द डण्डे नाल लैणे डक्क, हुक्म नाल लैणे डराईआ। तुहाडे अंदर वाड़ के आपणी मत, मनमति बाहर कढाहीआ। तुहाडी वेख के हकीकत

हक, हुक्म रिहा सुणाईआ। छेती छेती तुहाडी अंदरों खोल्ह देणी अक्ख, कट देणी जुदाईआ। फेर आपे समझ जाओगे सच, एह मालक धुर दा माहीआ। जिस दे कोलों कोई ना सके बच, तीर अणयाला दए चलाईआ। दर आयां नूं साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। छब्बी पोह कहे मैं अंदरों कुछ निम्ही निम्ही सुणी धुन, जो धुणकी रही वजाईआ। कोई ना जाणे प्रभ दे गुण, गुणवन्त ना कोए दृढ़ाईआ। किसे नूं पता नहीं की खेल होणा हुण, अगे की वज्जे वधाईआ। ब्रह्मा कहे मेरी सृष्टी विच्चों थोड़े लए चुण, विष्नूं कहे विश्व विच्चों गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। शंकर कहे एह लख चुरासी विच्चों चक्खण वाला लूण, भगत सुहेले आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगे होर ना देवे किसे नूं कूण, जेहवा रसना बन्द कराईआ। जन भगत कहिण छब्बी पोह कैहिंदा की, सानूं रिहा सुणाईआ। फुल्ल कहे एह जी आया नूं कैहिंदा जी, जीवण गया बदलाईआ। अगे इक्को दे बण जाओ पुत्तर धी, इक्को पिता माईआ। झगड़ा चुक जाए साढे तिन्न हथ्थ सीं, घर साचे दए बहाईआ। ओथे गिणनी पए ना कोई इक्की वीह, बीस इकीस आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

११० हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता आपणे नाल रखाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेखणे भगत . . . . नरायण ११०

१६ आपणे नाल मिलाईआ। केहड़ी आत्मा जित्ती ते केहड़ी हारी, केहड़ी हिरदे हरि वसाईआ। केहड़ी बणी कुलखणी नारी, कमज़ात १६

रूप वटाईआ। केहड़ी बंधाए सच्ची यारी, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। कवण बोले सच जैकारी, नाअरा हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला दए जणाईआ। लेखा कहे मैनूं सारे कैहिंदे लिख्त, अक्खरां नाल वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मेरा दस्सया भविख्त, शब्दां विच शनवाईआ। कोई समझया ना विच सृष्ट, विद्या ना कोए वड्याईआ। खुल्ही ना किसे दृष्ट, मिल्या ना बेपरवाहीआ। कोई लभ्भदा स्वर्ग ते कोई लभ्भदा बहिश्त, सन्त सुहेले स्वर्ग बहिश्त पैरां नाल परे सुटाईआ। जिन्हां प्रभ दे नाल भोगणा गृहस्त, सुंञी सेज ना कोए बणाईआ। एह रमज़ राम नूं दस्सी इक वशिष्ट, विशेष दिता दृढ़ाईआ। जिस नूं मिलयां ना कोई सोग ना कोई हरख़, दुःख रोग नेड़ कोए ना आईआ। जन भगत कहिण अज्ज ओसे दी करनी परख, जो पारखू बण के वेखे जगत लोकाईआ। नाले प्रेम प्यार ते नाले करना दरस, नेत्र लोचन आपणा आपणे नाल जुड़ाईआ। नाले अगला लैणा खर्च, पले गंढु लैणी बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को राह देणा वखाईआ। जन भगतो केहड़ा लभ्भो राह, रहबर दए वखाईआ। जन भगत कहिण जिस नूं सारे रहे गा, सिफ्तां विच सालाहीआ। जो आदि जुगादि बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ।

ओस नाल दए मिला, तूं ओहो नज़री आईआ। जे मुकरयों साडा गोबिन्द सदा गवाह, शहादत इक्को दए भुगताईआ। जिन्ह गुरमुखां दी पकड़ के बांह, बच्चे नीआं हेठ दबाईआ। ओहदे अगे की करू खुदा, जो कट देवे जुदाईआ। उन्ह बदल देणी फ़िज़ा, मेहर नज़र उठाईआ। साचयां भगतां नूं केहड़ा दऊ सज़ा, जो इक्को ओट तकाईआ। असीं कोई मंगते नहीं गदागर नहीं जो करदे रहीए तेरे अगे दुआ, बौहड़ी बौहड़ी कर के हाल सुणाईआ। ओ प्रभू बिना भगतां तों तैनूं किथे आउणा मज़ा, सानूं दे समझाईआ। तेरा किसे कम्म नहीं आउणा काअब्यां वाला हज्जा, हाजत पूर ना कोए वखाईआ। जे साडे नाल कीता दग़ा, दुनिया दए दुहाईआ। हे भगवान पारब्रह्म ओए परवरदिगार, बिना भगतां तेरा किस तरां वधू अग्गा, बिना पुत्त प्यो ना मिले वड्याईआ। तेरा किसे नहीं पढ़ना कक्का खक्खा गग्गा, घग्घे दा घड़याल ना कोए खड़काईआ। जे धन्ना ना हुन्दा ते केहदा वाहुन्दा ढग्गा, डण्डा हथ्थ विच उठाईआ। बिना कबीर तों किस तरां करदों जल ठंडा, गंगा लहर फेरा पाईआ। किस दा वरताउँदा मंडा मंडा, आपणी सेव कमाईआ। फेर तैनूं भगतां अगे आपे बणना पए बन्दा, तन वजूद वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे बणाईआ। जन भगतो मेरी मन्नो आखी, बिन अक्खरां दयां सुणाईआ। जन भगत कहिण असां नहीं पढ़नी तेरी तेरे अक्खरां वाली साखी, जिनां चिर साख्यात हो के नज़र ना आईआ। असां हुण हौली हौली बजर कपाटी दी खोल्हणी नहीं ताकी, नौवां दवारयां दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बणा के छोटा जिहा साकी, प्याला माटी हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। असीं तेरे बणन नहीं आए कोई पाठी, सतरां दी उंगलां नाल ना करीए पढ़ाईआ। असीं कोई नहीं पापी, दुष्ट दुराचार ना रूप वखाईआ। असीं तेरी आत्म तूं परमात्म धुर दा साथी, सगला संग निभाईआ। जे प्रभू भगतां नाल करें गुस्ताख़ी, इक्ठे हो के तैनूं घेर के आपणे विच लैणा बहाईआ। हन्होरे नाल दईए डांटी, कूक कूक सुणाईआ। फेर तैनूं आउणा पवे सुत्यां कोल रातीं, जोती शब्दी फेरा पाईआ। हे भगवान, असीं कोई नहीं बणाउणी मंमी मासी, ताई फूफी ना वण्ड वण्डाईआ। असीं कोई पंडत हां ? तैनूं लभ्भण जाईए विच्चों काशी, जनेऊ कन्नां उत्ते लटकाईआ। असीं कोई गाउण वाले नहीं ढाडी, छैणे मन्दिरां विच खड़काईआ। ओ परमात्मा मैं आत्मा तेरा गवांढी, कदे ना होवे जुदाईआ। एह काया मेरी ठांढी, जो तेरी आस पुजाईआ। सानूं पता तूं आदि जुगादि स्वांगी जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा रंगाईआ। जन भगतो प्रभू सदा रंग रंगीला, अनमुलड़े रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी बणे तुहाडा वसीला, विछड़यां नूं लए मिलाईआ। धन्न भाग जे अन्तिम प्रभ दा बणया इक कबीला, कामल गुरमुख नज़री आईआ। तुहाडी शब्द गुरू कराउण आया तामीला, संदेसा इक

१११
१६

सुणाईआ। जुग जन्म दे विछड़यो कर लओ अन्तिम हीला, वेला अन्तिम दए गवाहीआ। एह वस्त्र ना समझयो पीला, पलां विच पार कराईआ। जन भगतो तुहाडा प्रभ दे चरण जीणा, बाकी जीवन दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुखो कोई ना बणयो हीणा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। तुहानूं मिल गया इक्को दाता दाना बीना, मालक ख़लक खुदाईआ। जिस ने ठंडा करना सीना, सुत्यां लए उठाईआ। झगड़ा चुकाउणा लोक तीनां, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। तुसां ओसे दे दवारे तों अमृत रस पीणा, जो अमृत धार रिहा वहाईआ। तुसीं कोई पाणी वाली नहीं मीना, जल विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। जन भगत कहिण ऐवें सानूं ना जाईं वड्या, वड्डे तेरी वड वड्याईआ। असीं तेरा लग्गण नहीं देणा दाअ, दग़ा सके ना कोए कमाईआ। सानूं इक्को शब्द गुरू रिहा समझा, हुक्म इशारा इक दृढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडे बिना किसे कम्म नहीं आउणा खुदा, ख़ालक ख़ैर मुहब्बत ना कोए पाईआ। तुसीं झल्लयो कोई ना दब्बा, दब्बे विच ना सीस निवाईआ। जिंनां चिर परवरदिगार सांझा यार वाहिद तुहाडा बणे ना अब्बा, अवल आहला करे ना रुशनाईआ। लेखा चुकाए ना पिछला हब्भा, हकीकत दए दृढ़ाईआ। दुरमति मैल ना धोवे धब्बा, पापां करे सफ़ाईआ। तुहाडा अन्तर करे ना बग्गा, चिट्टी धार दए चढ़ाईआ। अंदर वड़ दिने रात वजावे ना अगम्मी डग्गा, धुन आपणी इक सुणवाईआ। ओनां चिर परमात्मा नूं कदे ना कहओ हच्छा, निउँ निउँ ना सीस निवाईआ। उह खेल करदा रिहा कच्छां मच्छां, जलां विच डेरा लाईआ। तुहानूं कलयुग अन्त मिल गया मसां, रैण अन्धेरी मस्या लैणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा समझाईआ। जन भगत कहिण असीं हुण नहीं कोई बच्चे छोटे, नन्न्हे निक्के ना नज़री आईआ। असीं सूरबीर बण के बन्न्हे लंगोटे, बल आपणा रहे प्रगटाईआ। ओह जिस भगवान दे पिच्छे आपणे मन दे कराउँदे रहे टोटे, टुकड़े टुकड़े वखाईआ। ओसदे प्यार दे वहण विच लाउँदे गए गोते, समुंद सागर गए तजाईआ। खाणीआं बाणीआं विच सुणदे रहे होके, हुक्मां नाल जणाईआ। हुण सानूं प्रभ मिलण तों केहड़ा रोके, रुकावट रहिण देणी ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। श्री भगवान कहे मैं हौली हौली नेत्र रिहा खोल्ह, खुल्ला राह वखाईआ। आत्म नाल परमात्म हो के रिहा बोल, अनबोलत राग अल्हाईआ। जे भगतो तुसीं नहीं पुज्जे मैं अर्शां तों फ़र्शां उत्ते आया तुहाडे कोल, कौल आपणा पूर कराईआ। प्रेम प्रीती अंदर गया मौल, एसे कर के मौला कहे खुदाईआ। तुहानूं सुत्ता रहिण नहीं देणा कोई अनभोल, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेखणी जगदी शमां, शमशान भूमी

होए लोकाईआ। भगतां दी मिटदी वेखणी तमअ, तामस रहे ना राईआ। गुरमुखां दा वेखणा गमा, खुशी लए अंगड़ाईआ। हुण थोड़ा विच्चों गुर अवतारां पैगम्बरां नूं देणा समां, सचखण्ड बैठे ध्यान लगाईआ। फेर हुक्म चलणा नवां, नवीं करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। ज़ीरो कहे इक नाल मिल के होई दस, दस्म वज्जी वधाईआ। खुशीआं विच पई हस्स, ग़मी दिती गवाईआ। खोल्ह के आपणी अक्ख, नज़र दिती बदलाईआ। भगत भगवान वल रहे तक्क, आपणा प्रेम वधाईआ। श्री भगवान रिहा सद्द, हुक्मी शब्द अल्हाईआ। हिस्सा दे के अद्ध, धुर दी वण्ड वण्डाईआ। नाम घड़याल कहे भगत भगवान मिल के साढे दस गए वज्ज, वज्हा सके ना कोए समझाईआ। प्रगट होए जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी मिटी हद्द, झगड़ा गया मुकाईआ। विछोड़ा चुक्कया अलग, अगे होए ना कोए जुदाईआ। प्रेम दा बज्झा तग, सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला रिहा मिलाईआ। साढे दस कहिण भगतां दी वेखी भगती, भगवन दया कमाईआ। आत्म दी वेखी शक्ती, जो शकल नूर अलाहीआ। प्रेम दी वेखी हस्ती, जो हस्स हस्स खुशी मनाईआ। धार वेखी अलख दी, जो ढोले रही सुणाईआ। सतार वेखी सच दी, जो तूं ही तूं ही अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। साढे दस कहिण जन भगतां प्यार होया मरदन, मदद बेपरवाहीआ। गुलाब आया पिच्छे गिच्ची गर्दन, आपणा राह तकाईआ। कंठ दुआर दी लँघ के सरदल, परदा परे हटाईआ। मिले यार प्यारा हर दिल, अज़ीज़ां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले लग्गा नाल गिच्ची, अन्तर आत्म रही सुणाईआ। वेख गोबिन्द दी धार लिखी, बिन अक्खरां नज़री आईआ। जिस दी मंज़ल तों परे सिक्खी, सिख्या ना कोए पढ़ाईआ। खण्डे दी धारों तिक्खी, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। पंडयां तों परे इक्की, एकँकार रिहा जणाईआ। याद आ गई पुराणी चिट्ठी, चिट्ठी रसैण हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जेहड़ी जगत किसे नहीं डिट्ठी, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। उस दे विच धार लभ्भे मिठ्ठी, मिठास रही बणाईआ। मैनूं जाणे ना कोए मुनी ऋषी, ऋषीशर मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव रिहा चुकाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले लग्गा भगतां दी धौण, थल्लयों धवल दए गवाहीआ। मैं वेखी सेवा करदी उणंजा पाउण, दर दर फेरा पाईआ। पता नहीं इन्हां दे अंदर वड़या कौण, जिस दी कौम ना कोए समझाईआ। जो भगत दवारे आया बहाउण, सोहणा धाम सुहाईआ। रुसयां नूं आया मनाउण, फड़ बाहों गले लगाईआ। मुरदयां नूं आया जवाउण, अमृत जाम शृंगार। भुलेखा आया चुकाउण, ख़ाली भाण्डे दए भराईआ। मनमुखां नूं आया तरसाउण,

११४
१६

कोल रैहन्दयां नज़र ना आईआ। गुरसिखां नूं प्यार विच आया भरमाउण, इशारे रिहा लगाईआ। आपणा लेखा आया जणाउण, परदा रिहा उठाईआ। उजड़यो तुहानूं आया वसाउण, जगत बिस्तरे सेज तजाईआ। तुहाडा लहिणा आया दवाउण, दुक्खां तों लैणा छुडाईआ। हँकारी बुरज आया ढाउण, कूड़ी क्रिया परे हटाईआ। नवीं अटारी आया बणाउण, महल अटल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग सब दा वेख वखाईआ। फुल्ल कहे मैं लग्गा नाल चम्म, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, इक्को रंग गया समाईआ। मारू डण्ड ज्ञान कोई ना देण आवे दम, आत्म परमात्म दए वड्याईआ। जन भगत भगवान दे घर पए जम्म, नंनी इक्को गोद उठाईआ। जिस ने लेखे लाउणा तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले मैं लग्गा नाल चमड़ी, आपणा आप जणाईआ। मैनूं माटी देह दिसी नकम्मड़ी, विच्चों नज़री आया नूर खुदाईआ। जिस दी कीमत नहीं कोई दमड़ी, जगत माया मुल्ल ना कोए पवाईआ। ओस दी हालत भगत दवारे वेखी मंदड़ी, भगवन हो के सेव कमाईआ। गुरमुखां दे अंदरों दुरमति मैल कढ्ढे चन्द्री, अन्तर साफ़ कराईआ। मन रहे ना अंदर कलंदरी, वासना बन्दर ना कोए नचाईआ। अक्ख रहे ना कोए अन्धली, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुरमुखो इक्को सिख लओ तूं मेरा मैं तेरा धुर दी बन्दगी, बन्धन दए तुड़ाईआ। कोई लोड़ नहीं किताबां दी चुक्कणी पंडणी, पान्धआं कोल पढ़न कोए ना जाईआ। जे आया ते तुहाडे संग लई, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रस्ता रिहा वखाईआ। फुल्ल कहे मैं अंदरों सुणी आवाज़ शाह रग, जो रघुपत नाम ध्याईआ। जिस दा इक्को सब तों वक्खरा पद, पदमां विच्चों बाहर कढाहीआ। जो भगत भगवान दी दस्से यद्द, कुलवन्ता दए मिलाईआ। जगत जहान छुडा के हद्द, घर धुर दा दए वखाईआ। जित्थे लग्गे कोई ना अग्ग, तत्व तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तन कहे जिस वेले फुल्ल मेरे नाल कीता प्यार, आपणा रंग रंगाईआ। मेरा आत्म होया ख़बरदार, लई इक अंगड़ाईआ। उठ वेख मीत मुरार, घर सज्जण बेपरवाहीआ। बिन अक्खां कर दीदार, लोचन दर्शन पाईआ। वेख सच्ची गुलज़ार, गुलशन रिहा महकाईआ। मिल महबूब अहिबाब, मुहब्बत विच समाईआ। प्रेम वजाए रबाब, तन्द सतार हिलाईआ। अंदरों आया जवाब, जलवा नूर अलाहीआ। हथ्थ रखे शताब, मस्तक देणी वड्याईआ। तेरा पूरब लेखा चुक्कया आज, अगला दिता बणाईआ। फेर जन भगत नहीं आउणा लोकमात, जनणी गोद ना कोए उठाईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल ना आवे आप, भगत सुहेले आपणी जोत विच रखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाता रिहा बणाईआ। मस्तक कहे जिस वेले मेरे उत्ते गुरमुख दा लग्गा हथ्थ, उंगलीआं वज्जी वधाईआ। मैं वेख्या तक्कया पुरख समरथ, जो शमां रिहा जगाईआ। अंदर कहाणी सुणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। कूड़ अन्धेरा मेटे मस, चन्द नूर करे रुशनाईआ। शब्दी गावे जस, ढोला इक सुणाईआ। भण्डारा खोल्ह के हट्ट, भगतां रिहा वरताईआ। दूई द्वैती मेट के फट्ट, पट्टी नाम बंधाईआ। जिस नूं कैहिंदे तत्तां वाला जट्ट, जटा जूट रिहा सुहाईआ। नूर नुराना जगे लट लट, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। मस्तक कहे जिस वेले मैनूं लग्गी ठोकर, ठाकर नज़री आईआ। मेरी मुश्कल हो गई औकड़, दुःख दिता गवाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोट कोटन, मिल्या बेपरवाहीआ। जित्थे सन्त मूल ना पहुंचण, चढ़े ना हक चढ़ाईआ। उह सुणावे सच सलोकन, करे नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणा दए वखाईआ। फुल्ल कहे मैं गिच्ची उत्तों आया नाभी, कँवल नाभ वड्याईआ। भगतां नाल मिल के होया वडभागी, भगवन होए सहाईआ। मेरी पुश्त दर पुश्त धुर दी आदी, आदि पुरख दिती बणाईआ। जिसदा खेल होणा जुगादी, जुग जुग वेस वटाईआ। उह साजण रिहा साजी, सज्जण शहिनशाहीआ। जन भगतां करन, आया राज़ी, विगड़े
११५ रिहा मनाईआ। मानस जन्म दी पूरी कर जाए बाज़ी, बाज़ां वाला वेख वखाईआ। जिसदा शब्द अस्व इक्को ताजी, ताजां ११५
१६ वाले ख़ाक मिलाईआ। वण्डां वाला रहे ना कोए समाजी, समां सब दा दए बदलाईआ। गुरमुख रहे कोई ना दाग़ी, कूड़ी १६
क्रिया परे हटाईआ। झगड़ा करे ना कोए नमाज़ी, कलमयां तों लए छुडाईआ। किसे दा मन रहिण ना देवे बाग़ी, बस्ते बग़लां विच्चों परे सुटाईआ। आत्म परमात्म इक्ठे बणन इतहादी, इतफ़ाकी जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतो सच पुछो परमात्मा तुहाडे पिच्छे करन आया मनादी, हुक्म संदेसा इक सुणाईआ। भगत भगवान दा खेल बुनयादी, जिस दी जड़्ह ना कोए उखड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दे सदा लागी, सद्दे जगत रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी थोड़्ही रखे आबादी, गुरमुख विरले विच टिकाईआ। फुल्ल कहे मैं लग्गया उत्ते धुंनी, धुन दयां जणाईआ। मेरी समझ आई ना किसे ऋषी मुनी, मुनीशर गए मुख भवाईआ। मैनूं जाणे कोए ना गुणी, गुणवान रहे कुरलाईआ। मेरा थोड़्हा इशारा होया विच सम्मत उन्नी, इक नौ वज्जी वधाईआ। जोत अकालण मुख तों लाही चुन्नी, परदा दिता उठाईआ। भाग लगा के काया कुल्ली, कलमा दिता पढ़ाईआ। दौलत दे अनमुल्ली, गुरसिख लए मनाईआ। जन्म जन्म दी विछड़ी भुल्ली, आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस दी फुलवाड़ी कदे ना हुल्ली, ओसे विच मिल के आपणा रंग बदलाईआ। बेशक गुरमुखो

तुसीं गाउँदे नाल बुल्लीं, बुल्ले नालों परे, तुहाडे काया मन्दिर वड़े, बिन पौड़ी डण्डे चढ़े, सच दवारे आपे खड़े, घर इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण रिहा रंगाईआ। फुल्ल कहे मैं थोड़ा थोड़ा छोहया नाल पेट, ताणा पेटा वेख वखाईआ। जेहड़ा आया पंचम जेठ, छब्बी पोह डंक वजाईआ। जो हर घट अंदर रिहा लेट, सिँघासण इक सुहाईआ। जिस दा नाम लिख्या जाए ना उत्ते किसे सलेट, सिल पत्थर तों अगे आपणा अक्खर दए बणाईआ। जिस दे दर ते भगत होणे भेंट, भटकणा दए गवाईआ। बण के धुर दा खेवट खेट, बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। मालक इक नरेश, नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जो सदा रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। जिस दा पुत्त बणया गुर दस्मेश, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करमां तों लए बचाईआ। फुल्ल कहे मैं लग्गा नाल तन शरीर, अंदर बाहर वेख वखाईआ। जन भगतां अंदर हिजर दी पीड़, हज़रत रिहा लगाईआ। जगत वलों दिलगीर, ग़मी रहे वखाईआ। शरअ दी टप्प लकीर, कलमे गए भुलाईआ। शाह बण फ़कीर, दर ते अलख जगाईआ। प्रभू बदल दे तकदीर, तदबीर दे समझाईआ। विछोड़े विच रहे ना कोए ज़मीर, ज़ामन हो के लै तराईआ।
११६ हुण हो गई अन्त अख़ीर, आखर लै मिलाईआ। संदेसा दे के गया जुलाहा कबीर, कूक कूक सुणाईआ। जिस वेले आउणा ११६
१९ बेनज़ीर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच प्रेम दी दए तस्वीर, अमृत आत्म जाम प्याईआ। नाम खण्डा फड़ शमशीर, दग़ा १९
फरेब दए मिटाईआ। जन भगत बणाए वज़ीर, शहिनशाह आप अख्वाईआ। झगड़ा चुका अमीर ग़रीब, इक्को रंग रंगाईआ। चार वरनां दे तरतीब, साचा मार्ग दए वखाईआ। आपणा खेल करे अजीब, निराला रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता कार कमाईआ। फुल्ल कहे मेरी हस्स के कहे पत्ती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जन भगतां अंदर वेखी उह रती, जिस दी रतन अमोलक कीमत कोए ना पाईआ। बिन अक्खरां वेखी पट्टी, पटने वाला करे पढ़ाईआ। बिना वपारों खट्टण खट्टी, खटका अगे रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। फुल्ल कहे मेरा दे उधार, आसावंद मंग मंगाईआ। लारा ला के गए गुरू अवतार, पैगम्बर इशारयां विच समझाईआ। जिस वेले आवे कल कल्की अवतार, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। विष्नूं सुत्ता लए उठाल, ब्रह्मा नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। शंकर वेख जटा जूट बाल, बल आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल सन्त कुमार, ब्रह्मा बेटा नज़री आईआ। जेहड़ा कर के गया उधार, नौ दिन आपणे पास रखाईआ। जिस दा लेखा लिख्या ना किसे लिखार, अक्खरां विच ना वण्ड वण्डाईआ।

बिना रसना होया तकरार, झगड़ा ना कोए मुकाईआ। मैं कर के बैठा रिहा एतबार, चार जुग ध्यान लगाईआ। अन्तिम वेला पहुंचया आण, लोकमात वज्जी वधाईआ। प्रगट होया श्री भगवान, जिस दी ज़ामनी विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए मुकाईआ। फुल कहे मेरा लहिणा नाल बराह, पूरब रिहा जणाईआ। जिस दा बणया ना कोए मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। उस ने तैथों लई सलाह, सहिजे सहिजे भार उठाईआ। मैं अन्तर अन्तर दिता बतला, मुहब्बत विच दृढ़ाईआ। मेरा लेखा नाल बेपरवाह, जो परदयां विच होए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी देणी इक सलाहीआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल यगे पुरुष, पुरख पुरखोतम दयां जणाईआ। मेरा लहिणा मुका तुरत, लेखा दए मिटाईआ। मैनूं पिछली कहाणी याद विच सुरत, धुर शब्द करे शनवाईआ। मैं वेखणी अकाल मूर्त, जो मुताला करे खलक खुदाईआ। आसा मनसा होवे पूरत, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कलयुग अन्त देवे सहूलत, सहिजे दए मिलाईआ। मेरा लहिणा देणा चुकावे मूलत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। मेरा लहिणा नाल हाव गरीव, गहर गम्भीर दयां जणाईआ। जेहड़ा होया अन्त दिलगीर, धीरज रिहा मिटाईआ। मैं ओस दी वण्डी दर्द पीड़, दुखियां दुःख वण्डाईआ। ओस ने खिच्ची चिट्टे उत्ते लकीर, काली कलम शाहीआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्त अखीर, वेला अन्त दए दुहाईआ। तेरी बदल दए तकदीर, तदबीर इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा वेख वखाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल नरायण, नारी नर समझ किसे ना आईआ। सो वेला पहुंचया ऐन, वेला वक्त दए गवाहीआ। तूं मालक बण सज्जण सैण, सगला संग निभाईआ। मैं दर ते आया कहिण, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। तेरा भाणा आया सहिण, हुक्मे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा पड़दे विच्चों बाहर कढाहीआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल कपल मुन, याददाशत ना कोए भुलाईआ। मैं उस दे नाल कीता गुण, उस दी माता दिती वड्याईआ। उस दा लेखा लहिणा हुण, दर तेरे मंग मंगाईआ। प्रभू तूं ना जाईं भुल्ल, अभुल्ल तेरी शरनाईआ। तूं पाउणा कीमत मुल, लेखा देणा गुआईआ। तूं मालक सुल्हकुल, शहिनशाह अख्वाईआ। तेरे दर ना जावां रुल, रुलदयां लैणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा दत्तात्रे, त्रैगुण समझ किसे ना आईआ। मेरा रूप उहो है, हवा रूप ना सकी बदलाईआ। जो सतिजुग आया कह, सो कलयुग अन्तिम मंग मंगाईआ। तेरे दर ते गया ढह, चरण कँवल मिली सरनाईआ। कूड़ा वहण मूल ना वहै, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जेहड़ा तेरे

दवारे बहै, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। कोटन वार सृष्टी होई लैअ, तेरा इष्ट ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल रिखव देव, आपणा रिहा जणाईआ। मैं ओहदी तिन्न दिन कीती सेव, जिस वेले बैठा आसण लाईआ। तूं विचोला अलख अभेव, भेत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं वसें निहचल धाम निहकेव, सचखण्ड दवारे डेरा लाईआ। तेरी महिमा गाए ना रसना जेहव, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। तूं अमृत रस देणा मेव, मिहनत मेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फुल्ल कहे मेरा हिसाब नाल पृथू, प्रथम दयां जणाईआ। तेरे कोलों केहड़ा खिसकू, भज्जयां राह नज़र कोए ना आईआ। जिस ने मेरे उत्ते आसण ला के वेख्या तेरा इष्टू, इष्ट आपणा दिता समझाईआ। उहनूं समझे ना कोई गृहस्तू, जो जगत नाता गए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा मुकाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल मत्स, समुंद सागर देण गवाहीआ। जिस ने तक्कया मेरा अकस, जलवा नूर खुदाईआ। ढाई घंटे मैनूं बन्द कर के विच बकस, उत्ते बैठा चाँईं चाँईंआ। प्रभ तूं केहड़ा बन्दा शख़श, की तैनूं कोई समझाईआ। तेरा हुक्म इक्को सख्त, जो जुग जुग रिहा मनाईआ। हुण वेला आया वक्त, मेरा लहिणा देणा दवाईआ। तूं आयों विच जगत, जागरत जोत करनी रुशनाईआ। नाल रलाए आपणे भगत, भगवन दया कमाईआ। मेरी निक्की जेही मंग फ़कत, फैसला देणा सुणाईआ। तूं मालक फर्श अर्श, अर्शी प्रीतम शहिनशाहीआ। लहिणा मुकादे पिछला कर्ज़, मकरूज कर सफ़ाईआ। आपणा खेल दस्स असचरज, अचरज दए वखाईआ। तेरे कोल सब दी फ़रद, लेखा पिछला लै फुलाईआ। मेरे उत्ते कर तरस, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तेरे सम्मत दा पहला बरस, बरसी रिहा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फुल्ल कहे मेरा हिसाब नाल कच्छ, कसम खा के दयां जणाईआ। बिन रसना बोलां सच, सच दयां जणाईआ। जिस वेले मन्दिराचल चाड़्या वट, बिन हथ्थां हथ्थ भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा मुकाईआ। फुल्ल कहे मेरा लहिणा नाल धनंतर, धनी धनाढ दयां जणाईआ। मेरे बिना किसे जड़ी बूटी दा चलया नहीं कोई मंत्र, दारू रोग ना कोए बणाईआ। मैं सवा पहर सड़या उत्ते बसन्तर, अग्नी अग्ग जलाईआ। मैं इक्को वेख्या तेरा रूप निरंतर, निराकार तेरी शरनाईआ। तूं वसें उपर गगन गगनंतर, गहर गम्भीर डेरा लाईआ। तूं बणावणहारा बणतर, घड़न भन्नणहारा अख्वाईआ। तेरी सरनी आया अन्तिम, अन्तश्करन रिहा वखाईआ। तूं भगत उधारें सन्तन, क्यों मैनूं करें जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर देणी शरनाईआ।

फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल बावन, राजे बल सेव कमाईआ। जिस ने रख्या विच दामन, परदयां विच छुपाईआ। मैनूं बणाया ज़ामन, विचोलयां वाली वड्याईआ। पूरी मनसा कर के कामन, कर्म दिता जणाईआ। जिस वेले दर ते आया सी ब्राह्मण, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। ओस वेले लग्गा सी मैनूं सांभण, तकीए हेठ दबाईआ। मैनूं याद आया तेरा नामन, इक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा माण देणा बणाईआ। फुल्ल कहे मेरा रिश्ता नाल मोहणी, मोह ममता गया मिटाईआ। जिस वेले तक्की नूर नुरानी सूरत सोहणी, जलवा इक रुशनाईआ। ओस वेले मेरी इक ग़रीब ने कीती बोहणी, तिन्न दिन दा भुक्खा तोड़ के भेंट चढ़ाईआ। मेरे नैणां आई रोणी, हन्झूआं धार वहाईआ। तेरी आवाज़ आई अनहोणी, मैनूं सहिजे दिता समझाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्तिम जोत प्रगटाउणी, निराकार वेस वटाईआ। जिस ने सब दी पिछली कीती ढाउणी, साचा राह इक वखाईआ। तेरी सुणे हाल पुकार कुरलाउणी, दुखियां दुःख मिटाईआ। जिस ने आपणे सम्मत दी रुत्त सहाउणी, सोहणयां सोहणे लए बणाईआ। जिस दी भगतां सेव कमाउणी, कमलयां लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल हँस, माणक मोती चोग रिहा चुगाईआ। मैं छड्डे नाते कोट सहँस, सहँसरां दिता तजाईआ। तेरे भगतां दा जाण सच्चा सरबंस, नाता

११६
१६

ल्या जुड़ाईआ। आत्म परमात्म तेरी अंस, इक्को नूर होवे रुशनाईआ। लेख लहिणा मुका अन्त, होवे ना कदे जुदाईआ। खोज खोज तैनूं थक्के साध सन्त, साची सतह ना कोए समझाईआ। तूं प्रभू बेअन्त, बेअन्त अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे चुकाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल हरी, हरदम ध्यान लगाईआ। जिस ने सब दी आत्म वरी, परमात्म कन्त अख्वाईआ। जिस तों रूह बुत्त रहे डरी, भय विच लोकाईआ। उसदी सोहणी वार थित आई घड़ी, घड़याल रिहा खड़काईआ। जिस दी विद्या भगतां पढ़ी, मूर्खां हथ्थ किसे ना आईआ। जो दो जहानां करे बरी, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जित्थे मज़ृब रहे ना शरई, शरअ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दी धार सदा जगत नई, नाम नौका दए चढ़ाईआ। जिस दी बिना अक्खरां तों वही, वाअदा आपणे नाल रखाईआ। सो पावण आया सही, सहिज सुभाओ वेस वटाईआ। फुल्ल कहे मेरा जोड़ा नाल नरसिंघ, बिना नारद वेखण कोए ना पाईआ। जिस दा खेल होया इंज, परदा दयां उठाईआ। जिस वेले भगत भगवान दी बणया बिन्द, प्रहलाद वज्जी वधाईआ। धार वही सागर सिन्ध, गहर गम्भीर दया कमाईआ। फुल्ल कहे ओस वेले मेरी बरखा कीती सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा नाल रलाईआ। मैनूं प्रगट होई चिन्द, चिन्ता विच दिता सुणाईआ। मैं पत्ती पत्ती हो के गया खिण्ड, पंखड़ीआं नाता गईआं तुड़ाईआ। पुरख

अकाल ने किहा मैं तैनूं अगला दस्सां इक्को पिण्ड, घराना दयां समझाईआ। जित्थे ना कोई ग़मी ना कोई चिन्द, चिन्ता अग्न ना कोए तपाईआ। इक्को दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर डेरा लाईआ। मालक हो बख़्शिंद, रहमत दए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा दए मिटाईआ। फुल्ल कहे मेरा प्रेम ओसे नाल इक नरायण, जो बच्चयां दए वड्याईआ। जिस दे कोल नाम रसायण, ख़ाकी माटी दए तराईआ। जिस दे प्रेम सागर दा वहण, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। उह दरस दिखावे ऐन, बिना ख़ुशामद आमद विच नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा झगड़ा देणा चुकाईआ। फुल्ल कहे मेरा नाता नाल राम परस, परस राम दयां जणाईआ। जिस वेले शतरीआं उत्ते खाधा तरस, फुल्ल कहे ओस वेले मैनूं तोड़ के आपणे कन्न दे विच टिकाईआ। मैं लुक्कया रिहा विच सवा बरस, आपणा आप छुपाईआ। इक दिन वक्खी भार सुत्ता उत्ते फर्श, उंगली नाल हलूणा दिता लगाईआ। मैं बाहर आया निधड़क, धरनी उत्ते डिग्ग के दिती हाल दुहाईआ। जे प्रभू तूं मुड़ के आवें परत, मेरा पत्ता पत्ता लैणा तराईआ। मैं तिन्न जुग बैठा रहिणा रख के वरत, मुख नाल ना कुछ छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१२० मैनूं आपणा लैणा बणाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले राम गया वशिष्ट कोल, गुरू गुरदेव सेव कमाईआ। वशिष्ट ने मेरा रूप १२०
१९ वेख के गोल, ओस नूं दिता फड़ाईआ। राम ने पंजां उंगलां विच ल्या तोल, पुट्ठे तों सिध्धा दिता कराईआ। मैं अग्गों १९
प्या बोल, कूक कूक सुणाईआ। जे राम तेरा राम उपर आवे धौल, किस बिध उसदी सेव कमाईआ। ओस किहा सुण रहीं ना अनभोल, सहिजे दयां जणाईआ। जिस वेले मेरा राम आवे उसदे नाम दे वज्ज जाणे ढोल, डंके दो जहान खड़काईआ। ओन सब दे ख़ाली करने खोल, खोखे देणे बणाईआ। गुरमुख भगत कढ्ढणे निरोल, निरपक्ख देणे वखाईआ। ओस वेले फुल्ला तैनूं कोई ना देवे मधोल, गुरमुख वेखण चाँईं चाँईंआ। मेरा तेरे नाल कौल, इकरारनामा दिता लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फुल्ल कहे मैनूं नौ वार सुंघिआ वेद व्यास, नासिकां ढाई इंच परे हटाईआ। इक दिन मैं ओस नूं पुछया ख़ास, सहिज नाल बुलाईआ। मैनूं इक दे मिलण दी आस, जो टुट्टयां लए जुड़ाईआ। ओस ने भर के पाणी दा इक ग्लिास, सहिजे मैनूं दिता टिकाईआ। जिस वेले तेरा ते मेरा आवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता फेरा पाईआ। भगतां दा होवे साथ, गुरमुखां संग जुड़ाईआ। तैनूं दरस दिखाए साख्यात, विछोड़ा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले कृष्न दा मेल होया नाल सुदामे, सद्दा मिल्या धुर दरगाहीआ। मैं राह विच जांदयां ब्रह्मण दे लुक गया विच पजामे, गिटे तों

पंज उंगलां उत्ते डेरा लाईआ। मैनूं इक्को तक्कया कृष्न शामे, नज़र अक्ख उठाईआ। मख़ौल नाल किहा उठ गुलदाने, तेरा गुलशन देणा सुहाईआ। मैं होया बहुत हैराने, हैरानी मेरे अंदर आईआ। जिंनां चिर मेरी बेनन्ती ना मानें, आपणा हुक्म वरताईआ। मैं अन्त जाणा ओस निशाने, जिस दा निशाना सारे रहे तकाईआ। मैं मिलणा ओस भगवाने, जो भगतां दए वड्याईआ। कृष्न किहा ओस दे त्रैलोकी चों परे टिकाणे, जित्थे टिक्के ना कोए वखाईआ। उस ने कलयुग अन्तिम पहरने बाणे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तेरे उपर होवे मेहरवाने, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा गया सुणाईआ। फुल्ल कहे जिस वेले मूसा डिग्गा कोहतूर, कर्म कांड दा लेखा रिहा ना राईआ। मैं ओहदे थल्ले आया जरूर, मस्तक मेरे नाल छुहाईआ। मैं तक्कया छोटा जिहा नूर, जो झलक विच रुशनाईआ। सुण अगम्मी तूर, संदेशे रही सुणाईआ। मेरे नाम नूं करना मशहूर, कलमयां विच गाईआ। मैं अन्तिम आवां बण महबूब, मुहब्बत नूर खुदाईआ। फुल्ल किहा मैं ओहदे थल्ले रगड़ के गया झूज, आपणा आप मिटाईआ। मैनूं अगली आई सूझ, परदा दिता उठाईआ। मैं दवारा वेख्या डूँघ, जिस दा पैमाना नाप ना कोए बणाईआ। ओस वेले हुक्म मिल्या फुल्ला वेखीं तेरे नाल मिल के कोई भगत ना जावे ऊंघ, सुत्यां लैणा उठाईआ। फेर मैं आपे लवां ढूंड, लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम दी पावे गूंज, गुंजाइश अवर ना कोए रखाईआ। फुल्ल कहे मेरी याद ईसा नाल पिछली, पिच्छा दए गवाहीआ। जिस वेले मैनूं फड़ के मारया शिबली, सिम्मत दिती बदलाईआ। ओस वेले सत्तां पत्तयां वाली कोल उगी होई सी पिपली, फ़ुट इक्को नज़री आईआ। उस दे अंदर खेल सी विचली, जेहड़ी विच्चों रही जणाईआ। जेहड़ी फाँसी ईसा नूं पाई उत्ते गिच्ची, पिच्छे अगे दिती बंधाईआ। ओस वेले ओस किहा मेरे नालों मेरे पुरख अकाल दी चंगी होणी सिक्खी, जिस ने इक्को करनी पढ़ाईआ। ओस वेले कलम ने शाही नाल धार नहीं लिखी, शब्दी शब्द दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। फुल्ल कहे जिस वेले मुहम्मद ने याद कीता अली, अली मदद कह के गाईआ। ओस वेले मेरी ढाईआं करमां दी लग्गी सी इक पैली, लंमी नौ कर्म अख्वाईआ। उस दे बाहर सी इक गैली, फ़ुट ढाई वण्ड वण्डाईआ। फुल्ल कहे मुहम्मद मैनूं तोड़या मैं पीड़ दर्द सहि लई, दुःख विच दिती दुहाईआ। इक गल अगम्मी कह लई, इशारा दिता लगाईआ। मुहम्मद किहा फुल्ला सदी चौधवीं मेरी उम्मत आपे वहणी, वैहन्दी धार वगाईआ। तूं वेखीं आपणी नैणी, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तेरा सज्जण बणना इक्को सैणी, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर लेखा वेख वखाईआ। फुल्ल

कहे मेरा लेखा नाल सतिगुर नानक, तिन्ने देण गवाहीआ। जिस वेले भुक्खे सन्त मिले सी अचानक, ख़ैर ख़ैरीअत दिती वरताईआ। उह वेला सी बड़ा भयानक, बच्चे नूं कहिण शुदाईआ। उन्हां ने नानक नूं दिती अमानत, फुल्ल गुलाब दा भेंट चढ़ाईआ। नानक किहा एह रहे सही सलामत, कलयुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। एहनूं मिलणी भगतां दे प्रेम दी नयामत, नेम इक्को नाल रखाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं दी आउणी क्यामत, कलमयां तों लैणे छुडाईआ। मन नहीं करनी बग़ावत, झगड़ा ना करे लोकाईआ। ओस वेले एस ने भगतां दी मेटणी अदावत, भगत दवारे आ के दए सफ़ाईआ। गुरमुखो सदा करनी शराफत, शरईआं तों लए बचाईआ। प्रभ दा नाम भावें हकीकी समझो भावें मारफ़त, महबूब तों होवे ना कदे जुदाईआ। जिस नूं समझे कोए ना आरफ़, अलिफ़ ये ना परदा उठाईआ। नानक किहा निरगुण निरवैर निराकार करे तुआरफ़, सफ़ारश दी लोड़ रहे ना राईआ। ओस वेले किसे नहीं लिखी इबारत, नानक बचन ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दा लेख चुकाईआ। फुल कहे जिस वेले अंगद आया देवी दा पुजारी, देवतयां वाला इष्ट मनाईआ। ओस नूं दिसी जोत निरँकारी, जोत ललाट होए रुशनाईआ। ओस वेले इक मालण फुल्ल लई आउँदी सी विच पटारी, खारी सीस उत्ते टिकाईआ। उह सोलां सालां दी कुँवारी, अंगी अंग ना कोए छुहाईआ। उसनूं रमज़ लग्गी अपारी, किसे अंदरों दिता उठाईआ। उसने फड़ के फुल्ल अंगद दी भेंटा दिते चाढ़ी, अंगद नानक दयां चरणां उत्ते टिकाईआ। फुल्ल ने किहा मैं वक्खरी वेखी सब तों यारी, गुर चेले वज्जे वधाईआ। नानक किहा नानक नहीं शब्द दे होणा पुजारी, जोती जोत सीस झुकाईआ। एहदा लेखा लहिणा अगे अगाड़ी, कलयुग अन्तिम नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म आपणा इक समझाईआ। फुल्ल कहे मेरा लेखा नाल गुर दास अमर, अमलां विच जणाईआ। उह जल चुक्कण लग्गयां मैनूं रखदा सी विच कमर, कमरकसे विच टिकाईआ। मैं वेख के ओहदा सबर, प्रभ दे अगे वास्ता दिता पाईआ। तेरा हुक्म बड़ा जबर, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। तूं मालक गहर गवर, तेरी बेपरवाहीआ। तूं वसें उत्ते अम्बर, नूरो नूर रुशनाईआ। सर्ब कला भरतम्बर, घट घट रिहा समाईआ। जे अंगद दा अमरदास नाल हो जाए सुअम्बर, अमलां दी लोड़ रहे ना राईआ। फुल्ल कहे मैं प्रीती विच हो के मग्न, इक ध्यान ल्या लगाईआ। आत्म परमात्म दा पैंदा वेख्या सगन, अमरू दे घर वज्जी वधाईआ। दीपक जोत लग्गा जगण, होई सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा हिस्सा देणा वखाईआ। फुल्ल किहा मेरा प्रेम नाल रामदास, जो राम राम ध्याईआ। जो छाबड़ी चुक्कण लग्गा मैनूं सिर उत्ते रखदा सी ख़ास, डेढ इंच विच टिकाईआ। जित्थे सुणदी स्वास दी अवाज़, राज़ अगला

दए जणाईआ। मैं तक्कदा रिहा प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। मैं जोड़ के दोवें हाथ, सीस दिता निवाईआ। ओस किहा तेरा मेला नाल पुरख अबिनाश, कलयुग अन्तिम वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे मैनूं पंज वार गुर अर्जन किहा फुल्ल गुलाब, इशारा गुरमुखां वल कराईआ। जिस वेले इकावन बावन कीता हिसाब, पंज इक ते पंज दो वज्जी वधाईआ। गुरू ग्रन्थ लिखण लग्गा वक्खरी किताब, तोड़ के सतिनाम दी भेंटा दिता कराईआ। नाल दस्सया इक्को पुरख अकाल सब दा बाप, पिता इक अख्वाईआ। जिस दा इक्को चलणा जाप, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। ओस कलयुग अन्तिम आउणा आप, आपणा फेरा पाईआ। भगतां नाल जोड़े तेरा साथ, गुरमुख सज्जण लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल कहे जिस वेले हरि गोबिन्द पहनी मीरी पीरी, पीरां दा पीर नज़री आईआ। मैनूं टंगया विच ज़ंजीरी, दसवें कुण्डे विच फसाईआ। मेरी दूर होई दिलगीरी, ग़मी दिती गवाईआ। ओस हथ्थ लाया मैनूं तकदीरी, पत्ती पत्ती दिती तुड़ाईआ। चरणां नाल छोह के मैनूं मिली उह अमीरी, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२३ १६ कर, मेरा खेल वेख्या फिर कश्मीरी, चशमे उपर आपणा रंग चमकाईआ। फुल्ल कहे मेरा प्रेम नाल हरिराए, हर हिरदे दयां जणाईआ। नहाउण तों पहलों मैनूं चौकी दे पावे हेठ टिकाए, उत्ते आपणा भार रखाईआ। इक दिन मेरे अंदरों निकली हाए हाए, हउका लै के दिता सुणाईआ। ओस खुशी नाल किहा तेरे उत्ते प्रभू दया कमाए, मेहर नज़र नाल तराईआ। तैनूं भगतां नाल रलाए, लोकमात मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सगला संग बणाईआ। फुल्ल कहे मेरा हरिकृष्न नाल नाता, अठ्ठां तत्तां दयां जणाईआ। जिस वेले हरिकृष्न दर्शन करदा सी पिता माता, माता पिता दी मैनूं भेंट चढ़ाईआ। सब तों वड्डी समझ सुगाता, वक्खरा रंग वखाईआ। इक दिन मैं टेक के अगों माथा, साल सत्तवें मंग मंगाईआ। मैं वेखणा उह बापा, जिस नूं पुरख अकाल कह के सारे गाईआ। ओस ने किहा गुर तेग़ बहादर तेरा बदलणा साका, साखी आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी दए जणाईआ। फुल्ल कहे मेरा गुर तेग़ बहादर नाल जोड़, नाता धुर दा नज़री आईआ। जिस वेले दिल्ली नूं जाण लग्गयां गोबिन्द नूं दिता सी मोड़, इक्को फुल्ल हथ्थ फड़ाईआ। गोबिन्द मैं नहीं तेरा पिता होर, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। ओस दा बच्चा कौर, शहिज़ादा शहिनशाह अख्वाईआ। मैं सेवा करन आया बतौर, पल्लू रिहा छुडाईआ। फुल्ल कहे मेरी गोबिन्द हथ्थ दे के डोर, तन्द तार दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेद अभेदा दए

खुल्हाईआ। फुल्ल कहे मेरा गोबिन्द नाल प्रेम, प्रेमीआं दयां समझाईआ। दुष्ट दमन वाला नेम, गोदावरी वज्जे वधाईआ। सब नूं आया कहिण, घर घर रिहा सुणाईआ। जिस वेले माधो दास दे दवारे कटी रैण, रेण मस्तक धूढ़ी दिती छुहाईआ। मैनूं हथ्थीं आया लैण, पत्त डाली वण्ड वण्डाईआ। मेरे नीर छलकया नैण, नेत्रां दिता वहाईआ। मैनूं मूल ना आया चैन, चारों कुंट ल्या कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्म विच फिराईआ। फुल्ल कहे गोबिन्द तोड़या नाल हथ्थ, हथेली उत्ते टिकाईआ। मैं अगों किहा हस्स, तेरी बेपरवाहीआ। कोई मार्ग सच्चा दस्स, आपणे नाल मिलाईआ। ओस गुरमुखां वल कर के अक्ख, इशारा दिता जणाईआ। इक्को ढईआ रख हठ्ठ, फेर मिले वड्याईआ। जिस तरां मेरा ते मेरे पुरख अकाल दा होणा इक्ठ, एसे तरां तैनूं भगतां नाल जुड़ाईआ। सच दवारा खोल्हणा हट्ट, नाम भण्डारा देणा वरताईआ। हुण मैनूं वेख्या गोदावरी तट, फेर भगतां दे हथ्थ विच सोभा पाईआ। जित्थे होणी इक्को मत, इक्को इक पढ़ाईआ। भगत वेखण हक, हुक्म शहिनशाहीआ। जे कोई ज़रा वी पै गया शक, शकायत दिती सुणाईआ। मैं दवारयों देवां धक्क, एहो बेपरवाहीआ। फुल रगड़ के आपणा मथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१२४ मेहरवान दया कमाईआ। फुल्ल कहे मैं लै के वड्डा हौका, हा दिती सुणाईआ। किस वेले आवे गोबिन्द तेरा मौका, मुकम्मल १२४
१६ दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं इक्को ढईए दा ला लैण दे ढौंका, फिर डंका ज़ाहर दयां खड़काईआ। मैनूं वी भगतां १६
नूं प्रभ दे नाल मिलाउण दा शौका, आशा सब दी पूर कराईआ। मैं गुरमुखां सच चलावां रौंसा, घर घर फेरा पाईआ। झगड़ा मुकावां मैं हउँ का, सति ब्रह्म दयां जणाईआ। भेव खुलावां अगम्मी नाउँ का, पतिपरेश्वर दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। फुल्ल कहे तेरा केहड़ा वेला होवे सुहावणा, सच दे समझाईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले भगत भगवान इक्को ढोला गावणा, तेरा मेरा रहिण ना पाईआ। ओस वेले मैं शब्दी धार आवणा, जोत जोत विच समाईआ। भगत दवारा इक बणावणा, शिवदवाला मठ्ठ तजाईआ। दोहां दा पकड़ना दामना, दामनगीर अख्वाईआ। सब दी पूरी करां कामना, करमां तों लवां बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दए चुकाईआ। फुल्ल कहे मैनूं इक्को दस्स दे अन्त अख़ीर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। तूं दिसें धुर दा पीर, पैगम्बर धुर दरगाहीआ। गोबिन्द किहा जिस वेले सम्मत शहिनशाही दी होणी तामीर, लोकमात जड़् लगाईआ। ओस वेले भगत भगवान पातशाह ते बणे वज़ीर, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फुल्ल कहे अज्ज उह आ गया वेला, वेहला हो के दयां सुणाईआ। इक्को रंग नज़री

आए गुरू चेला, चेला गुरू विच समाईआ। पिछला तूं वी जो कुछ लैणा लै, देंदयां तोट रहे ना राईआ। सच्चयां भगतां दी गोदी विच बह लै, जो नाभी नाल रहे छुहाईआ। जे होर वी कुछ कहिणा ई ते कह लै, समां तेरी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाईआ। फुल्ल कहे मैं देण आया शहादत, सदीआं दे पिच्छो फेरा पाईआ। जन भगतो सिख लओ इक अबादत, इक्को नाम ध्याईआ। तुहाडी जिस ने दिती ज़मानत, अन्तिम ओहो लए छुडाईआ। तुहाडे विछोड़े दी रहे ना कोई अलामत, इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब कुछ वेख वखाईआ। फुल्ल कहे मैं तेरयां भगतां दी बैठा विच गोदी, अंदर बाहर वेख वखाईआ। जिन्हां नूं तेरे मिलण दी आई सोझी, अंदरे अंदर रहे गाईआ। उहनां नूं इक्को रूप नज़री आया वेदी सोढी, वण्डण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। फुल्ल कहे मैं बन्द सां विच डोडी, आपणा आप छुपाईआ। अज्ज गुरमुख मिल गए मौजी, जो हथ्थां उत्ते रहे नचाईआ। जिन्हां दे विच्चों अध्धयां विच्चों अद्धे फ़ौजी, फ़ौजां दा मालक वेख खुशी मनाईआ। जिन्हां दी आत्म एसे जोगी, जोगी बण के बैठे डेरा लाईआ। अगे चिन्त रहे ना सोगी, साचा सगन रहे मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
१२५ आप आपणी किरपा कर, झोली सब दी फोल फुलाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो मैनूं फड़ लओ सज्जे हथ्थ, उच्ची बांह १२५
१६ देणी वखाईआ। तुहाडी पत लए रख, दर आया धुर दा माहीआ। तुसां मेरा करना पक्ख, मैं तुहाडी दयां गवाहीआ। १६
प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर जाणा रच, रोम रोम खुशी मनाईआ। देही माटी समझो कच्च, कंचन गढ़ लैणा सुहाईआ। ओह रल मिल के दर्शन करीए रज्ज, रुची आपणी लैणी बदलाईआ। भावें ताअने देवे जग, प्रभ दे नालों ना होवे जुदाईआ। तुसीं पैंडा मुकाया घरां तों भज्ज भज्ज, मैं दूर दुराडा आया नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत आपणी रिहा कमाईआ। फुल्ल कहे मैनूं लै लओ हथ्थ खब्बे, बदली बदले विच्चों चुकाईआ। एथे ओथे तुहाडे नाल होणे नहीं दगे, जगत फ़रेब ना कोए बणाईआ। जन भगतो तुसां प्रभ दे बहणा अग्गे, अग्गे पिच्छे पहरेदार होए सहाईआ। राह विच वेख्यो किस तरां विष्न ब्रह्मा शिव फिरदे भज्जे, थाउँ थाँईं सीस निवाईआ। एह मेरे निक्के निक्के अड्डे, जो अड्डीआं नाल गोडे देणे रगड़ाईआ। भावें तुसीं घर विच वाहुन्दे गड्डे, तुहानूं शब्द बबाणे देणा चढ़ाईआ। फुल्ल कहे साडे नाते हो गए पक्के, दोवें हथ्थ देण दुहाईआ। सब ने प्रेम नाल बद्धे, बन्दना बेपरवाहीआ। झुक जाओ सिध्धे अगे, सीस इके नूं निवाईआ। तुहाडे साफ़ हो गए अगे, प्रभ ने करी सफ़ाईआ। जन भगतो अगले साल वेख्यो मज़े, मिजाज नाल चलो चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल सब तों अगे वधे, बिन कदमां कदम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, खेल अगली अगे दए वरताईआ। फुल्ल कहे मैं गुरमुख वेखे उठे, पैरां भार नज़री आईआ। जिन्हां दे उत्ते मालक तुट्ठे, मेहर नज़र उठाईआ। मैं वेख्या कोई सुत्ता रह ना जावे किसे गुठ्ठे, लुकयां लवां जगाईआ। जे कोई घरदयां नाल हो के आया गुस्से, उहनूं लवां मनाईआ। श्री भगवान कहे जे कोई मैनूं पुच्छे, मैं भगत दवारे अंदर भगत दयां वखाईआ। जिन्हां दे फुल्ल नाल बण गए गुच्छे, हथ्थ हथ्थ नाल जुड़ाईआ। तुहाडे बूटे कदे ना सुक्के, गोबिन्द पाणी रिहा लगाईआ। तुहाडा मालक शेर अगम्मी बुक्के, गुरमुखो आपणी बुक्कल दयो खुल्हाईआ। तुसीं हुण मातलोक रहिणा नहीं सुत्ते, सुगंध खा के तुहानूं लवां जगाईआ। बिना दीन दयाल प्रेमी प्यारयां कोई ना पुच्छे, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तुसीं बज्झ जाओ इके मुठ्ठे, दीन मज़्हब ज़ात पात लेखा दयो चुकाईआ। ऊँच नीच सारे बण जाओ सुच्चे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता तुहाडे नाल रखाईआ। फुल कहे मैं जन भगत वेखां खलोते, सोहणे सुहञ्जणे नज़री आईआ। जेहड़े पुरख अकाल दे पोते, गोबिन्द पुत्तर गया बणाईआ। पंजां नालों हुण बण गए चोखे, सोहणी वज्जी वधाईआ। इक्को गाउण नाम सलोके, सोहँ ढोला रहे सुणाईआ। भथ्थे तीर दे गए मौके, शब्दी हुक्म सच लड़ाईआ। गुरमुखो तुहानूं फड़ने पैण ना सोटे, पुरख अकाल दया कमाईआ। कलयुग भँवर ना खायो गोते, फड़ के बाहों पार लँघाईआ। रखणे पैण मूल ना रोज़े, बरतां विच ना भुक्ख रखाईआ। तुहाडे पिछले दिन लँघ गए औखे, अगे समां दए बदलाईआ। तुहाडी सोच आपे सोचे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक हकीकत रिहा दृढ़ाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो मैनूं याद आया तुहाडा पिछला रिश्ता, रिश्तेदारी दए जुड़ाईआ। जिस वेले मुहम्मद कोल कोई संदेसा लै के आया सी फ़रिश्ता, आहिस्ता आहिस्ता हदायत दिती सुणाईआ। मैनूं मुहम्मद ने तक्कया खुदानखासता, इक्को पलक उत्तों उठाईआ। मैं कुछ आ के बेनन्ती कीती दरख़ासता, आपणी बेनन्ती दिती समझाईआ। मेरा सूफ़ीआं नाल होवे वास्ता, बाकी मुर्शदां तों पैंडा ल्या मुकाईआ। मुहम्मद किहा उस दी करनी नहीं किसे शनाख़ता, अमामां दा अमाम फेरा पाईआ। जिस ने सिध्धा भगतां नाल करना वास्ता, वास्तव आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा वखाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो साडी सांझी हो गई यद्द, इक्को मिली वड्याईआ। दीन दुनी दी छड्ड दयो हद्द, पैंडा लओ मुकाईआ। सारे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दे जैकारे गाओ गज्ज, ग़ज़ल इक्को ढोला गाईआ। फुल्ल कहे सब नूं वड्डी खुशी होई अज्ज, सम्मत शहिनशाही खुशी मनाईआ। अगे होणा नहीं कदे अलग, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। जे याद करो ते आप दर्शन दए तुहानूं उपर शाहरग, जगत दुआर दा लेखा दए

१२७
१६

मुकाईआ। वेख्यो हँस ना बणयो कग्ग, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। जन भगत कहिण असीं प्रभ तों सुणनी इक अरदास, जो सब नूं पार लँघाईआ। जिस वेले सद्दीए उसे वेले आवे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। रातीं सुत्यां दे सरहाणयो पी जाए पाणी दा ग्लास, आपणे आउण दी निशानी दए वखाईआ। आत्म सेजा सुत्ता रहे सारी रात, सुखआसण डेरा लाईआ। जाण लग्गा जे प्रेम विच दस्स जाए आपणी इक निक्की जेही बात, बातन परदा इक उठाईआ। सच प्रेम दी दे के जाए इक सुगात, सुगंधी अंदर इक भराईआ। फेर पक्का रिश्ता समझयो नाल फुल्ल गुलाब, बेआब ना कोए तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महिराब दए समझाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो जाओ बहि, खुशीआं नाल आसण लाईआ। तुहाडे अंदर इक्को दी लै, लायक बच्चे लए बणाईआ। जो मंगो सोई दए, देवणहार अख्वाईआ। जो चरण कँवलां ढहे, फड़ बाहों गले लगाईआ। तुहाडा भगत दवारा वसदा रहे, जुग चार चार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ। जन भगतो तुहाडा सचखण्ड दवार, थिर घर आसण इक वखाईआ। जित्थे शब्द दी गुंजार, नाम दी वज्जे वधाईआ। जोत दा उज्यार, नूर नूर रुशनाईआ। सदा चलदा रहे विहार, विवहारी दए वड्याईआ। भरया रहे भण्डार, अतोट अतुट्ट रखाईआ। सृष्टी ने होणा खुआर, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। जे तुसां परम पुरख़ ते रख्या एतबार, जित्थे होवो ओथे होवां सहाईआ। तुहाडा इन्हां अंकड़यां विच करां शुमार, दुलैंकड़यां विच जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। जन भगत कहिण असां प्रभ की करनी तेरी भगती, अक्खीं मीट ध्यान ना कोए लगाईआ। असां तैनूं मिलणा शरती, सिध्धा नाता तेरे नाल रखाईआ। तूं मालक धुर दा अर्शी, प्रीतम बेपरवाहीआ। सानूं कोई नहीं लग्गदी छब्बी पोह दी सर्दी, सिर दर्द ना कोए जणाईआ। तूं साडी आपणे नाल जोड़ मर्ज़ी, मर्ज़ी जगत वाली देणी गवाईआ। जे तूं नर नरायण सच्चा हरिजी, हिरदे अंदर डेरा लाईआ। जन भगत कहिण अज्ज तों साडी आत्मा तैनूं वरदी, दूजा ख़सम ना कोए हंढाहीआ। सोभावन्त होवे तेरे घर दी, दोहागण रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला आपणा लैणा मिलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडे कमलापति, पत पतवन्ते बेपरवाहीआ। क्यों बहुते साथों जुड़ाउँदा हथ्थ, सीस चरणां नाल रगड़ाईआ। अंदरों खोल्ह दे अक्ख, अठ्ठे पहर तेरा दर्शन पाईआ। असीं कदी नहीं कहिणी बस्स, भावें भर भर के उत्तों दी दे रुढ़ाईआ। जे तूं साडा गावें जस, श्री भगवान सेव कमाईआ। फेर खुशीआं नाल जाईए हस्स, मुस्कराहट बुल्लां वाली रखाईआ। श्री भगवान किहा मैं तुहाडे

कोल जावां वस, डेरा नेड़े हो लगाईआ। तुसां कीता प्रेम दा इक्खु, इक्खुयां दिता सुणाईआ। हुण मैं किधर जावां नठ्ठ, चारे रस्ते बन्द नज़री आईआ। तुहाडे प्रेम अंदर जावां ढठ्ठ, आपणा आप तुहाडी भेंट चढ़ाईआ। जन भगतो कदे ना समझयो वक्ख, वक्खरा डेरा ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता देवणहार गुसाँईंआ। जन भगतो वेखो भूमिका अस्थान, अस्थिल रिहा वखाईआ। जित्थे बणया भगतां दा मकान, बेमुकाम आसण लाईआ। एथे बाल्मीक दा क्याम, सुन्न समाधी विच समाईआ। हरि गोबिन्द दा एहसान, तुहाडे सिर चढ़ाईआ। नानक दा निशान, झण्डा रिहा लहराईआ। कृष्न दा पैग़ाम, बंसरी नाम सुणाईआ। मुहम्मद दा अमाम, निरगुण फेरा पाईआ। जिसनूं सजदा करदे सलाम, सही सलामत आपणा खेल वखाईआ। रैण कहे मेरी बेनन्ती प्रभू भगतां नूं कर लैण दे आराम, बिसराम चरणां विच रखाईआ। भगतां नूं फ़िकर पै गया सानूं हो ना जाए जुकाम, हथ्थ मथ्थे उत्ते घसाईआ। थोड़े कहिण सौं के हो ना जाईए बदनाम, अंदरे अंदर देण दुहाईआ। दस वीह कहिण असां सवेरे करना काम, साडी करे ना कोए रिहाईआ। तरेंठ कहिण ऐवें विच फसे आण, बिना सुत्यां रात गवाईआ। रैण कहे मैं भिन्नड़ी सब नूं देवां माण, जो चल आए सरनाईआ। एह बख्शणहार भगवान, भगतां दा संग निभाईआ। सब नूं देवे इक्को जिहा दान, जो भगत दवारे दे अंदर बह के पिओ दादे दी याद लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। रैण कहे मैं बेशक भिन्नी, भिन्नड़ी नज़री आईआ। कई घड़ीआं वल्ल वेंहदे बीत गई किन्नी, कवण घड़याल रिहा खड़काईआ। जिस दी रहमत जाए ना गिणी, गिणतीआं विच गणत ना कोए गिणाईआ। जन भगतो तुहानूं दात देणी इंनी, जो अन्नुयां तों सुजाखे दए बणाईआ। तुहाडे अंदर धार प्रेम रखणी निम्मी, निम्मा निम्मा रंग चमकाईआ। एह कोई साधू फ़कीर नहीं डिंभी, डंभ जगत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा हो सहाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं भगतां दी बणां सकी, सखी प्रभ दी नज़री आईआ। बात करां हकी, हकीकत दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां तेरे विछोड़े विच पिच्छे जुग चौकड़ी कटी, अगे ना कोए जुदाईआ। आपणे नाम दी पढ़ा के घल्लणा पट्टी, ढोला इक सुणाईआ। रंग चढ़ाउणा इक्को री, रतन अमोलक हीरे लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखीं आपणी वेले अख़ीर होए सहाईआ। फुल्ल कहे जन भगतो दोहां दा मिल के बणया गुलदस्ता, गुलदान सतिगुर नज़री आईआ। नाम खुमारी विच करे मस्ता, मस्ती इक्को इक रखाईआ। तुहानूं बन्नणा पए कोई ना बस्ता, इक्को अक्खर दिता पढ़ाईआ। इस तों होर नाम नहीं कोई सस्ता, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। तुहाडा हाल होवे ना ख़सता, खुशीआं रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को

रिश्ता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां पैज रखदा, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। भिन्नड़ी रैण कहे प्रभ मेरी मन्नी पूरी करीं मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। प्रेमीआं भगतां सौण दे निशंग, सुत्तयां दे अंदर प्रेम देणा टिकाईआ। तेरे कोल अनोखा ढंग, तरीका देणा समझाईआ। अन्त अख़ीर इक्की वार गा लैण दे तेरा छन्द, सोहला सिफ्तां विच वड्याईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्धन दे तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सूरे सरबंग सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो भिन्नड़ी रैण कहे एहनां दे दे छुट्टी, छुटकारा दे कराईआ। वेखो कोई ना वड़ जायो त्रिकुटी, सुखमन टेडी बंक विच फेरा कोए ना पाईआ। ईड़ा पिंगल दी हट्टी गई लुट्टी, ख़ाली देण दुहाईआ। तुहानूं चाड़्या चोटी उच्ची, मंज़ल दिती मुकाईआ। जे आत्मा कर लओ सुच्ची, फिर परमात्मा दी ना होए जुदाईआ। तुहाडी सोंहदी रहे रुत्ती, रुतड़ी आपणे नाल* महकाईआ। तुहाडी हुण पैंडयां विच घसण नहीं देणी जुत्ती, रविदास चमारा दए गवाहीआ। तुहाडी मैंढी रहिण नहीं देणी खुथ्थी, कन्त सुहागी दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत सवाणी उठाए सुत्ती, आलस निंद्रा दए गवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दात देवे रुक्खी रुक्खी, पड़दे विच परदा रिहा वखाईआ।

✪ २७ पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

सतिगुर शब्द कहे ना करयो जलदी, मन वासना ना कोए भटकाईआ। जन भगतो तुहाडी बाकी रैहन्दी कल्ह दी, निहकर्मी कर्म रिहा कमाईआ। कोई खेल नहीं कपट छल दी, अछल छलधारी दया कमाईआ। तुसां अजे कुशती वेखणी ओस मल्ल दी, जो मालक धुर दरगाहीआ। जिस दी धार अगम्मी चलदी, चार जुग वड्याईआ। जो खेल जाणे जल थल दी, लख चुरासी रिहा समाईआ। जिस कीमत पाउणी आपणे फुल्ल दी, कंडा धुर दा हथ्थ उठाईआ। जगत संख्या मुक्कणी कूड़े धन दी, नव सत्त लेख चुकाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं अगले पल दी, घड़ी वण्ड ना कोए समझाईआ। जोत अकालण इक्को बण के मालण प्रेम सुगंधी फुल्ल घल्लदी, पत्त टहणी नाल महकाईआ। गुरमुखो वेदां पुराणां शास्त्रां विच्चों समझ नहीं आई इक गल्ल दी, रमज़ हक ना कोए लगाईआ। जोबन जवानी सब दी ढलदी, थिर रहिण कोए ना पाईआ। हुक्में अंदर अग्नी वेखो बलदी, तत्तां दए जलाईआ। प्रभ दे अगे पेश ना किसे दी चलदी, सिर सके ना कोए उठाईआ। भावी किसे तों नहीं टल्दी, भाणे विच लोकाईआ। किसे ने ताकत नहीं समझी प्रभ दे बल दी, बलधारी बल बावन छल वखाईआ।

हुण खेल नहीं किसे तन दी, शब्दी डंक सुणाईआ। जिसनूं जननी कोई ना जणदी, सीर मुख ना कोए लगाईआ। जिस दी आवाज़ नहीं कोई कन्न दी, रसना ना राग अल्लाईआ। जिस दी दौलत नहीं माया धन दी, टकयां टकसाल ना कोए बणाईआ। जिस दी रोशनी नहीं किसे चन्द दी, सूर्या रूप ना कोए वटाईआ। जिहदी नज़र नहीं नेत्र अन्न्ह दी, दूर नेड़ा वेख वखाईआ। जिस दी समझ नहीं किसे मन दी, बुद्धी नाल लड़ाईआ। उह दात देवे जन भगतां इक्को भल दी, भाल भाल के जोड़ जुड़ाईआ। खेड मुकावे कूड़ी झल्ल दी, झलक आपणी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे ना करो छेती, छत्ती जुग नानक थोड़े गया जणाईआ। प्रभू आदि अन्त दा भेती, भेव पड़दे दए उठाईआ। जुग चौकड़ी तुसीं मेरे नाल करदे रहे नेकी, वड्डउँ निक्के रूप बणाईआ। जगत वलों बणदे रहे बिबेकी, वासना कूड़ बाहर कढाहीआ। चरण कँवल रखदे रहे टेकी, धूढ़ी मस्तक टिक्के नाल छुहाईआ। रूप धरदे रहे बेटा बेटी, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। जगत मुहाणे बणदे रहे खेवट खेटी, मार्ग भगत भगवान लगाईआ। वेख्यो कोई चरणीं ना झुकिओ वेखा वेखी, ठग्गां दी लोड़ रही ना राईआ। जिस ने जुग चौकड़ी वेखी, उह परखणहारा धुर दरगाहीआ। जिस ने नानक दे मोढ्यां उत्ते धरा के खेसी, जंगलां विच दिता भवाईआ। उह जगत वास्ते परदेसी, तुहाडे अंदर दा मालक नज़री आईआ। श्री भगवान भगतां कारन आपणे शब्द दी करे शेख़ी, शाख़ आपणी इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे ना बणयो काहले, कालख अंदरों देणी गवाईआ। माण विच ना समझयो असीं भगत हो गए बाहले, बिन किरपा चरण कँवल कोए ना आईआ। चार जुग तुहाडे सब ने दिंदयां रहिणा हवाले, मैं नवें शास्त्र जाणा बणाईआ। बिन हथ्थां तों वजदे रहिणे ताले, धार इक्को इक बंधाईआ। तुसीं हो गए प्रभू दे हवाले, तुहाडी हवालात देणी कटाईआ। तुसीं कृष्न नाल खेडण वाले नहीं गवाले, गऊआं दी सेव कमाईआ। तुसीं प्रभू दे सच्चे बाले, तुहाडा पिता इक्को नज़री आईआ। तुहानूं शब्द गोदी विच पाले, अमृत धुर दा जाम प्याईआ। तुहाडे पिच्छे घालणा घाले, पंज तत अंदर आपणा रूप छुपाईआ। तुसीं हुण समझदे नहीं प्रभू दे केहड़े वक्खरे चाले, चलाकी नाल सब नूं रिहा भुलाईआ। मैनूं दिसदा तुसीं बह गए मेरे दवाले, दाअवेदार अख्वाईआ। हुण तदबीर नाल तुहाडे उत्तों तुहाडी तकदीर टाले, टालमटोल ना कोए जणाईआ। परख परख के वेख वेख के पेख पेख के वरनां बरनां चुरासी विच्चों थोड़े उठाले, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। तुहाडे हल्ल करे स्वाले, स्वाल आपणा दए सुणाईआ। अगे चलणा तुहाडे नाले, नालायक रहिण कोए ना पाईआ। एथे ओथे करे प्रितपाले, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। जोती

१३०
१६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे ना अंदरों होवो कूड़े, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। तुहाडे रंग वेखणे गूढ़े, गोबिन्द आपणे रंग रंगाईआ। नाम वजा के साची तूरे, तुरत परदा दए खुल्हाईआ। चार जुग तुहानूं करे मशहूरे, ढोले धुर दे नाल वड्याईआ। तुसीं ओस घर दे बणे मज़दूरे, जिथ्थों नाम भण्डारा मिले चाँईं चाँईंआ। तुहाडा साहिब तुहानूं कबूले, मालक गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे अंदर कोई ना करयो घुस घुस, मन घममान ना कोए बणाईआ। दर ते आ के बहिओ ना रुस्स रुस्स, रुस्से रिहा मनाईआ। ओस तों बहुता नहीं ते थोड़ा लै के जायो कुछ कुछ, जिस दी कच्छप दए गवाहीआ। हँकारी जायो झुक झुक, विकारी रूप ना कोए वखाईआ। इक्को सिख के जायो आपणे नाम दी तुक, जो तुख्म तासीर दए बदलाईआ। जगत वासना उत्ते जायो थुक्क, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। तुहाडे लैण दा वेला आया ढुक्क, देवणहार देवे बेपरवाहीआ। कोई परदा रहिणा नहीं लुक, सब दा काया चोला देणा बदलाईआ। जे नहीं बणे हुण बण जाओ उस प्रभू दे पुत्त, जो पत्तन इक्को दए वखाईआ। वेख्यो बिना प्रेम दे ख़ाली रहिण ना देवे काया बुत्त, पंज तत कम्म किसे ना आईआ। एहो जही ओ भगतो कदी नहीं मिली किसे नूं लुट्ट, बिना भगती भगतो दात ना किसे वरताईआ। कोई ना जाणे क्यों प्या तुठ्ठ, तुटयां रिहा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर अक्ख खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे ऐवें ना करयो हूं हूं, होके नाल सुणाईआ। जिंनां चिर मैं विच ना मिले तूं तूं, मैं तूं विच समाईआ। तुहाडा खुशी ना होवे लूं लूं, घर वज्जे ना सच वधाईआ। ओनां चिर प्रभ दे दवारे दी कदे ना भुल्लयो जूह, अगे पिच्छे कदम ना कोए टिकाईआ। जे मथ्थे टेकणे ते कोटन कोटि बाहर वेख्यो गुरू, घर घर बैठे डेरे लाईआ। जे आत्म हो के परमात्म नाल जाओ छूह, फिर शर्म हया रहे ना राईआ। आपणे घर दी तुहानूं आपे दस्स दए सूह, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी कार कमाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू कुछ मैनूं दे सलाह, लोकमात सति जणाईआ। मैं वेखणा सब दे अंदर उह राह, जो अन्धेरे विच बैठे आपणा आप छुपाईआ। जो चोरां वांग दाअ रहे ला, ठग्गां वाला रूप वटाईआ। की तैनूं पता नहीं दस माह तपणा पए अग्नी कुक्ख माँ, सके ना कोए बचाईआ। मतलब वास्ते कोई ना करयो हां, बेग़रज़ देणे बणाईआ। कच्ची यारी लाउण दा मैनूं कदी नहीं आया चाअ, झूठा नाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी हुक्म वरताईआ। शब्द गुरू कहे मैं फिरदा सदा अनभोल, जीवां नाल चोरी चोरी खेल खिलाईआ। जुगां पिच्छों आवां उत्ते धौल, धरनी उत्ते फेरा पाईआ। लख चुरासी देवां मधोल,

ख़ाक विच मिलाईआ। भगतां वसां कोल, नेरन नेर नज़री आईआ। जेहड़े मेरे नाल मारन आवण रोल, जुग चौकड़ी देवां सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। शब्द गुरू कहे मैं वेखण आया मर्द स्त्री, सारे खोज खुजाईआ। कदे मैनूं कैहिंदे सी जगत दा मुशतरी, मिशन ना सके समझाईआ। हुण मैं करन आया मुख़बरी, होका रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा जणाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू मेरी अज्ज तक्क कीती नहीं किसे पहिचाण, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। ऐवें तैनूं मन्नदे रहे भगवान, तूं साख्यात नज़र किसे ना आईआ। हुक्म नाम तेरा संदेसा देंदे रहे महान, काग़ज़ां उत्ते वड्याईआ। सच दस्स नौ सौ चुरानवे चौकड़ी कदी आया विच मैदान, सूरबीर हो के फेरा पाईआ। ऐवें टिल्लयां पर्बतां उत्ते धरन तेरा ध्यान, मूर्ती बणा के तैनूं शरमिंदा रहे कराईआ। उंगलीआं नाल तेरा साज वजा के रसना नाल गाउँदे गान, साहमणे हो के दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा करदे रहे ब्यान, रसना जेहवा ढोलयां विच गाईआ। तेरा दस्सदे रहे नाम, किसे नज़र ना आया अमाम, जोती जलवा कर रुशनाईआ। सुण सुण तेरा पैग़ाम, बगल कुरान विच टिकाईआ। जिंनां चिर प्यावें ना इक्को जाम, जामन हो के लएं छुडाईआ। ओनां चिर झगड़े नहीं मुक्कणे तमाम, तम्हां तों लै छुडाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू तूं
१३२ १६ अगे सचखण्ड करदा रिहों आराम, हुक्म नाल पैगम्बर गुरू बणाईआ। किसे नूं बणा दिता गोपीआं वाला काहन, किसे नूं १३२ १६
बणा के सीता ते राम, जंगलां विच भवाईआ। छोटा छोटा कर के एहसान, हस्तीआं कोट दितीआं बदलाईआ। पीर पैगम्बर कर के ग़ुलाम, बरदे दिते वखाईआ। आपणा दस्सया नहीं किसे नूं सच मकान, धाम आपणा ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक मनाईआ। शब्द गुरू कहे सुण मेरे भगवन्त, तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरा किसे कोलों सुणना नहीं मंत, रसना वाली गल्ल मोहे ना भाईआ। जे कदी नहीं मिल्या हुण वेख्या अन्त, अन्तर ध्यान लगाईआ। प्रभू तेरे एह दरवेश नहीं सन्त, एह हमेशी नज़री आईआ। जिन्हां दे चरणां हेठां रुलदा जन्नत, बहिश्त रिहा कुरलाईआ। इन्हां दा लेखा की जाणे ब्रह्मा पंडत, जो वेदां दी करे पढ़ाईआ। तेई अवतार तेरा कोई समझ ना सके सम्मत, सच दा हाल ना कोए दृढ़ाईआ। जे किसे नूं इशारा दिता ते उहनूं बोलण दी नहीं दिती हिम्मत, भविख्त विच ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई सिफ्ती बणया ना कोई बणया निन्दक, दोहां उत्ते परदा दिता पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी करदे गए मिन्नत, सीस कदमां उत्ते टिकाईआ। दीनां मज़्बां दी पा के चिन्नत, हुक्में विच भवाईआ। किसे नूं दस्सया काअबे वाली सिम्मत, किसे नाल कर के इल्लत, किसे नूं दे के तन खताबी खिल्लत, किसे नाल अंदरों कर के मिलत,

किसे नूं दे के जगत दी ज़िल्लत, आप आपणा बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी सच दी कार कमाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू मैं नहीं सुणने तेरे पोथीआं वाले छन्द, जो शंकयां विच नज़री आईआ। मैं तेरे ताज नूं तेरे उत्ते देणा टंग, राज दी लोड़ रही ना राईआ। जो कुछ सो तेरयां भगतां देणा वण्ड, बण के बेपरवाहीआ। एस तों अगे रहिण नहीं देणा भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया देणी कढाहीआ। भगतो तुसीं ना होयो हैरान ते दंग, एह दंगा जगत नूं रिहा वखाईआ। तुसीं ते मेरे लाडले चन्द, खुशी नाल दयां चमकाईआ। जे कितों नहीं मिल्या अज्ज देणा उह अनन्द, अनन्द आत्मा विच रखाईआ। तुसीं नहीं जाणदे तुहाडे प्रेम वाले रंग, एह डण्डा रिहा प्रगटाईआ। जिस ने तुहाडी सेवा करनी पिच्छे हो के कंड, कंडयां विच्चों बाहर कढाहीआ। हुण की समझोगे प्रभू कि मलंग, कि लंगड़ा लूल्हा फेरा पाईआ। किधरे समझ ना ल्यो एहनूं हो गया अधरंग, लत्त बांह हिले ना राईआ। हुण मैं वसां तुहाडे संग, सगला संग निभाईआ। अज्ज दी रैण सब हुक्म घल देणे बेरंग, मोहर आपणी ना कोए वखाईआ। कुछ लहिणा देणा ओस सूरे सरबंग, जिस सीस ताज दिता टिकाईआ। अज्ज गोबिन्द दी वण्ड, गुरमुखां झोली पाईआ। जन भगतो गा लओ अगे बापू दा छन्द, बख्शंद मलंग बण के सेव कमाईआ। शब्द गुरू कहे बापू किते हो ते नहीं गया बुड्ढा, बुढापा दए वखाईआ। कोटन कोटि जुगां पिच्छो चलदा चलदा हो ते नहीं गया डुड्डा, चरण पैर ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरीआं सिफ्तां दा बन्न्हदे गए गुड्डा, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं बेपरवाह सब तों भेत रख्या गुज्झा, गुंझल विच सर्ब फसाईआ। बेपरवाह तूं किसे नहीं समझाया आपणा मुद्दा, मुद्दतां तों तेरी आदत ना किसे बदलाईआ। कलयुग अन्त भगवन्त हो के उग्घा, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जन भगत कोई ना रहे डुब्बा, मँझधार विच्चों पार कढाहीआ। गुरमुखो तुहाडा कोई नहीं लैणा भुग्गा, भगवन हो के दया कमाईआ। तुहाडा वसदा रहे झुग्गा, हुन्दी रहे रुशनाईआ। तुहाडी ख़ातर धुर दा लै के आया पंजाबी बोली वाला चुग्गा, चुग्गते सारे दए भजाईआ। तुहाडे विछोड़े दा मैनूं दुक्खा, दूजा दुःख ना कोए समझाईआ। मैं वेंहदा रिहा जेहड़ा गुरमुख आपणी माँ दे पेट विच लटकया रिहा पुट्ठा, बिना साह साह ध्याईआ। मैं बेफ़िकर हो के रिहा सुत्ता, आपणी ना लई अंगड़ाईआ। जिस वेले तुहाडा वेला ढुक्का, निरगुण हो के आया जोती जामा कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ। शब्द गुरू कहे पुरख अकाल तूं सदा चलण वाला टेडा, सिध्धी धार ना कोए समझाईआ। वेखीं किते तैनूं चलदयां लग्ग ना जाए ठेडा, राह विच ना कोए अटकाईआ। मैनूं पता जिस वेले ब्रह्मे नूं इशारा दिता चार वेदा, विद्या आपणी फेर ना कोए पढ़ाईआ। ओहदा आपणी चरण दी धूढ़ी नाल बणा

के मेदा, मध विच हद्द दिती रखाईआ। तैनूं उपर कदे ना वेंहदा, चरणां विच आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी कार कमाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू अज्जे ताईं तेरे घर सुत नहीं जम्मया कदे जोड़ा, सज्जे खब्बे ना कोए लगाईआ। मैं हैरान होया तूं किस तरां सस्से उपर लाया होड़ा, होड़े दा मतलब जाणया किसे ना राईआ। गुरू गोबिन्द माछूआड़े तेरा गाउण लग्गा सी दोहरा, फड़ के कन्नों चारों कुण्ट दिता भवाईआ। तूं अज्जे मेरा निक्का जिहा छोहरा, शहिनशाह हो के तैनूं लवां उठाईआ। गोबिन्द हस्स के दिता मरोड़ा, प्रभू तेरा खेल बेपरवाहीआ। श्री भगवान कहे ओ नहीं मैनूं तेरी पैणी लोड़ा, लोहड़ा पए जगत लोकाईआ। ओस वेले तेरे कोल होणा नहीं कोई बाज़ घोड़ा, घोड़ा शब्दी दयां बणाईआ। तेरे सिर उत्ते कोई झुलदा नहीं दिसणा चौरा, चारों कुण्ट मेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। जेहड़ा नानक तुहाडे अंदर रख के गया मोहरा, मोहर आपणी इक लगाईआ। ओहदे पिच्छे भगत दवारे दब्बणा काग़ज़ कोरा, खून आपणे नाल रंगाईआ। फिर बणना भगत भगवान दा जोड़ा, वज्जणी सच वधाईआ। क्यों तेरा ओहनां दे अंदर होणा पौड़ा, पउड़ी गउड़ी राग ना कोए सुणाईआ। जे तूं गोबिन्द होयो कमज़ोरा, नक्क नाल लकीरां दयां खिचाईआ। तूं मेरे उत्ते वारया अजीत जुझार फ़तिह सिँघ जोरा, मात पित दी लोड़ रही ना राईआ। एह वी दुनिया विच तेरी निशानी डोरा, बिना पुरख अकाल हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होया घनघोरा, रैण अन्धेरी छाईआ। तेरा होणा भाग मथोरा, मिथ्या दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। शब्द गुरू कहे ओ गोबिन्द तैनूं किसे बन्नूणे नहीं सिर ते फुल्ल छब्बे, छब्बी पोह दए गवाहीआ। तेरा नाता जुड़ना ओस नाल शेर बग्गे, जिस दी बग़ल विच लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस ने आपणे चरणां दे हेठों कढ्ढे, लोकमात प्रगटाईआ। हुक्में अंदर फिरन बद्धे, बन्दना सीस झुकाईआ। ओस वेले पता लग्गे तेरी ते परमात्मा दी प्रीती लग्गे, इक्को नूर नज़री आईआ। तेरा पुरख अकाल तेरे विच्चों कोई ना कढ्ढे, दोवें रल के खुशीआं लओ मनाईआ। इक्को नूर इक्को दीपक जोत जगे, इक्को शब्द होए शनवाईआ। फेर भगतां नूं आउणे मज़े, ओहनां खाणी छड्डुणी मठिआईआ। तेरा पैर सिर वेख के नंगे, नंगयां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दाता वेख वखाईआ। शब्द किहा मैं शब्दी काफ़ोर, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जुग चौकड़ी रिहा होर, कलयुग होर रूप बदलाईआ। जद वेखो नवां नकोर, बिरध बाल ना रूप जणाईआ। मेरा किसे दे नाल नहीं कोई खोर, भगतां दा खोजी बण के फेरा पाईआ। गुरमुखो कोई प्रभू तुहाडे वरगा नहीं कठोर, जो दर आयां नूं देवे दुरकाईआ। जे सच समझो तुहाडे अंदर वसां तुसां फेर वी नहीं जाणी लोड़, लोड़ां जगत

पूर कराईआ। जदों वड़ां ते वड़ां बण के चोर, राती सुत्यां दे अंदर डाका आवां पाईआ। तुहाडा ख़ज़ाना तुसीं नहीं समझे ते ना कोई जाणे लख करोड़, असंखां वाली गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं की कुछ जाता, की कीती प्रभ जणाईआ। की समझी रमज़ इशारे वाली बाता, बातन होई पढ़ाईआ। की दस्सी बिन अक्खरां तों गाथा, बिन सतरां सतर समझाईआ। पुरख अकाल ने मेरे हथ्थ मार के उपर माथा, मस्तक दिता बदलाईआ। जिधर वेखां ते वेखां पुरख समराथा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख बाला चुक्कया ढाका, सज्जे खब्बे रिहा लटकाईआ। मैनूं सतिगुर मिल गया डाहढा, जिस लक्क विच डण्डे दिते टिकाईआ। ओहने केहड़े कारन अमृत प्याया विच बाटा, जो तैनूं गए भुलाईआ। कोई पूजे देवी वाली लाटा, निरगुण जोत दरस कोए ना पाईआ। एसे कारन सब नूं आया घाटा, घाटे विच लोकाईआ। पुरख अकाल नालों तुट्टया नाता, नातवां हो के देण दुहाईआ। तन माटी पहन के वस्त्र ख़ाका, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। किसे मिल्या नहीं धुर दा आका, अकल चली ना कोए चतुराईआ। जे सच समझो पुरख अकाल सब दा निक्का काका, जो तुहाडे अंदर वड़ के आसण लाईआ। जे उस दे नाम दा सुणो कलाका, टिक टिक आवाज़ सुणाईआ। उह बख्शे साचीआं दातां, दयावान होए सहाईआ। गुरमुखो तुहाडीआं बिरथीआं जाण नहीं देणीआं दोवें रातां, जुग जन्म दी ज़िंदगी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे अलख जगाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू जगा दे इक अलख, सोहँ ढोला गाईआ। श्री भगवान कहे मेरी तोबा मैं गोबिन्द नालों कदी ना होणा वक्ख, वक्खरा धाम ना कोए बणाईआ। जन भगतो तुहानूं दे देणी उह अक्ख, जिस नाल साख्यात नज़री आईआ। मैं अज्ज तांई किसे नूं भेत नहीं दिता दस्स, बौहड़ी तुहानूं देणा समझाईआ। क्यों जुग चौकड़ी गुर अवतार मेरे जोगा हिस्सा गए छड्ड, भविख्तां विच गाईआ। मैं होया गद गद, खुशीआं छन्द अल्हाईआ। तुसीं मेरे लाल हीरे नग, लोकमात करो रुशनाईआ। तुहाडे अंदर प्रेम दी अग्ग, जो कूड़ी क्रिया रही जलाईआ। जिस कारन लए सद्द, हुक्म रिहा सुणाईआ। सोहणे रहे फब, आसण रहे जमाईआ। किते समझ ना ल्यो एह बंदयां वाला कोई फिरदा कद्द, बुड्ढा नढ्ढा आपणी धार बदलाईआ। मैं कोई भेडां दे चारन वाला नहीं वग, सांहसी डूम ना नज़री आईआ। मैं कोई ब्राह्मणां दा बन्न्हण वाला नहीं तग, जनेऊ गल दे विच पाईआ। एह वी कोई जरनैल सिँघ दा (शकग्ग), जेहड़ा राजा बण के रविदास दी भेंट कराईआ। रविदास ने बोलया हक, हुक्म दिता जणाईआ। एहनूं पहने पुरख समरथ, जिस दे अगे सीस दिता निवाईआ। तूं सांभ के छड्डीं रख, ख़ज़ाने धुर दे विच लुकाईआ। जिसनूं किसे नहीं लाउणा हथ्थ, कलयुग

अन्तिम लए मिलाईआ। जन भगतो किसे नूं ना होवे शक, पिछला लहिणा रिहा चुकाईआ। एस तों बहुती होर दे के वथ, प्रेम प्रीती चरणां नाल बंधाईआ। क्यों इसने गोबिन्द चुक्कया कंधे उत्ते विच्चों ढक्क, उच्च दा पीर सीस उठाईआ। अंदर लग्गा हिज़र दा फट्ट, फ़िकर दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं किधर पै गया खहिड़े, रविदास कहे मेरा बाकी लहिणा नज़री आईआ। अगे होर बथेरे दुनिया दे पैणे झेड़े, झगड़े विच रहिणा लोकाईआ। कोटां जुगां पिच्छो श्री भगवान आया भगतां दे खेड़े, खिड़े मथ्थे सब नूं वेख वखाईआ। जन भगतो चढ़ जाओ मेरे बेड़े, बेड़ीआं दा नाता देणा तुड़ाईआ। वेख्यो वड्डे रक्ख्यो जेरे, जेरज अंड फेर ना मिले सज़ाईआ। जे एथे दुःख ते एथे सुख एथे चाउ घनेरे, घनघोर रैण रहिण ना पाईआ। तुहाडा मालक बण गया सिँघ शेरे, शरअ दा लेखा दए चुकाईआ। तुसीं आ गए ओस दे घेरे, जो चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। भावें तुसीं आपणे काया दे चीथड़ लबेड़े, प्रेम प्यार नाल धो के साफ़ दए कराईआ। एहो बख्शिश एहो मेहरे, मेहरवान आप समझाईआ। हुण गोबिन्द दे तबेलयां विच नहीं लुकदे वछेरे, शब्द तुरंग भज्जे चाँईं चाँईंआ। नाले वेखे मेरे प्रेमी केहड़े केहड़े, किथे बैठे डेरा लाईआ। ओह पुरख अकाल तूं रहीं ना किते विच अन्धेरे, तेरीआं अक्खीआं दयां खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा मैं सब तों दूर सब तों नेड़े, नेरन नेरा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग रिहा चमकाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू तूं भगतां दा खाधा निमक, निमक हराम ना कोए अख्वाईआ। प्रकाश हो के दास हो के अबिनाश हो के चमक, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। इन्हां दी बणा दे बणत, जो आए पन्ध मुकाईआ। सभनां दा बण कन्त, दुहागण नज़र कोए ना आईआ। एह सब तों वड्डे सन्त, जो सतिगुर मिल के खुशी मनाईआ। माया मोह तोड़ के ममत, ममता गए भुलाईआ। तेरी आ गए अनोखी सिम्मत, समां जाण बदलाईआ। श्री भगवान पिछले विछोड़े दी इन्हां अगे कर मिन्नत, क्यों दिती जुदाईआ। लख चुरासी विच्चों एह तेरी थोड़ी जही जिनस, जिस दा वपारी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द कहे मैं देणा कुछ जवाब, जन भगतां मंग मंगाईआ। तरतालीआं सालां विच मेरा इक वेरां नीले उत्ते चढ़न लग्गयां चरण तिलकया सी विच्चों रकाब, बिना रकाब रमज़ समझ किसे ना आईआ। इस दा हरिकृष्न नूं दिता ख्वाब, जो पहले गया सुणाईआ। तेग़ बहादर गा के राग, तिन्नां अक्खरां वण्ड वण्डाईआ। पुरख अकाल ने किहा मैं तेरा वेखणा ओह बाग़, जो बग़ीचा शहिनशाहीआ। एह सुण के मुहम्मद दी तबीअत होई ख़राब, सचखण्ड बैठा हौके रिहा सुणाईआ। गोबिन्द किहा तुहानूं करना पए इक नूं आदाब, अदब नाल

दृढ़ाईआ। किसे दी ना किंग वजणी ना रबाब, रब्बी नूर नज़री आईआ। उसने कोई पुन्न वेखणा ना सवाब, सभा भगतां दी लए बणाईआ। आप बण के शहिनशाह नवाब, नौबत हक दए वजाईआ। जिन्हां कलमा पढ़ के खाधा कबाब, पुश्तयां दे पुश्ते दए वखाईआ। अन्त करे बरबाद, हुक्मीं हुक्म वरताईआ। लाग्यों ईसा प्या जाग, हाए हाए एह किस आवाज़ सुणाईआ। मूसा कहे मेरी कौण करे इमदाद, साथी नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द कहे उह जिस ने इक बणाउणी जमात, जम्हां तफरीक रहिण कोए ना पाईआ। जिस दे झलक दी झल ना सके कोई ताब, बेताब होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं अक्खरां वाले कैहिंदे गोबिन्द, गग्गा बब्बा दद्दा नाल वड्याईआ। जे होड़े दी बण जांदे बिन्द, फिर पुरख अकाल आपे नज़री आईआ। झगड़ा छुट्ट जांदा उसतत निन्द, कूड़ी क्रिया ना कोए सुणाईआ। अमृत मिलदा सागर सिन्ध, जो पंजां दे मुख चुआईआ। एसे करके सारे गए खिण्ड, काया खण्डर ल्या बणाईआ। नाले मैनूं कैहिंदे वाली हिन्द, नाले झगड़ा हिन्दूआं नाल बणाईआ। मैं सारे देणे पिंज, ताड़ा वज्जे थाउँ थाँईंआ। मैं मूँह दे भार सुटणे इंज, सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतां देणा निग्घ, आपणी छाती लाईआ। कदी किसे नहीं समझया वेद रिग, जो रघुपत दी करे वड्याईआ। नानक दी गोदी विच्चों सारे गए डिग्ग, डिगयां ना कोए उठाईआ। पापां दी उत्ते पै गई ढिग्ग, भार नाल दबाईआ। गोबिन्द कहे मेरे बिना किसे नहीं डाहुणी अगे हिक, बाहू बल ना कोए वखाईआ। सब नूं पता लग गया गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे हो गए छिप, प्रभ सिँघासण दे थल्ले बैठे सीस निवाईआ। कोई ना रिहा किसे दा मित, मित्रां कीती जुदाईआ। इक्को परम पुरख अकाल पित, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा खेल दिसे अनडिठ, परदा सके ना कोए उठाईआ। जन भगतो तुहानूं कदे नहीं देणी पिठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। तुसीं भावें याद ना करो चित, मैं आपणा चित्र तुहाडे अंदर देणा लुकाईआ। प्रेम नाल लैणा खिच्च, ज़ंजीर आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करमां दा लेख मुकाईआ। गोबिन्द किहा ए अगे अगे ना डर, भज्जया किथे जाएंगा वड़, घेरा सब नूं आपे पाइंदा। एधरों ओधरों सब नूं लए फड़, साहमणे फिर वी दरस दिखाइंदा। तुहाडी चोटी ते तुहाडी जड़्ह, तुहाडे पिच्छे अग्नी च गया सड़, तुहानूं रुढ़ा के पहलों विच सरसे दे सर, मरवा के गढ़ी चमकौर दे गढ़, खेल खतराणे वाला कर, अन्तिम आपे लए वर, आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतो तुहाडा अनोखा खोल्हणा सर, सरोवर इक्को इक वखाइंदा। जित्थे नहावण नारी नर, कूड़ी वण्ड ना कोए बणाईआ। एह मेरा नहीं तुहाडा घर, मैं ते मुसाफ़र बण के जुग जुगां दा

बुड्ढा गठड़ी कंध उठा के, पिठ टिका के, बगल विच दी बदला के, छाती नाल ला के, सीस उत्ते टिका के, हक आवाज़ लगाईआ। हौली हौली समझा के, चुरासी विच्चों उठा के, उंगलीआं नाल ला के, शब्दी पुत्त बणा के, सोहँ ढोला पढ़ा के, अंदर जोत जगा के, जगत दा राज मुका के, लोक परलोक दिती वड्याईआ। आपणी मौज वखा के, परदा पड़्हां हटा के, भगतां गले लगा के, इक्को रंग दिता चढ़ाईआ। ख़बरां दितीआं तम्बे चुक्को दर्शन पाओ जा के, एह बावन वाली पिछली याद नज़री आईआ। भगतां दे दवारे पुट्टे डिग्गे आ के, पत्री खोल्ह बणा के, सतरीं पढ़े निगाह टिका के, रब्बी जोत नूर जगा के, नज़र किसे ना आईआ। धन्ने दा हल्ल वाह के, हेठले उतले नूं हिला के, मोड़ उत्तों भार टिका के, हथ्थ पिठ उत्ते रखा के, कलयुग सतिजुग दोवें रिहा भजाईआ। गुरमुखो तुहाडे पिच्छे आपणा आप तजा के, शेर सिँघ दा नाम पूरन जोड़ जुड़ा के, गोबिन्द दा रंग रंगा के, गुरसिखां दा जोग कमा के, भस्म हो के कसम खा के, इस्म आपणा रिहा वखाईआ। तूं की कहिणा ओए फ़रीद, फ़रदर दे समझाईआ। फ़रीद कहे मैं प्रभू दा अज़ीज़, बच्चा नज़री आईआ। मेरे तन नहीं कमीज़, पटका सीस ना कोए टिकाईआ। मैं सिखणी भगतां तों तमीज़, जो सुत्ते प्रभ नूं रहे पाईआ। जेहड़े जगत वलों ग़रीब, नाम वलों मिली शहिनशाहीआ। मेहर दी होई बख्शीश, रहमत सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। गोबिन्द कहे कुछ आवाज आई वलों चढ़दे, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। इशारे कीते अगले हड़ दे, जिस ने हड़ देणा वहाईआ। पड़दे खुल्ले अगम्मे घर दे, जित्थे वज्जे सच वधाईआ। जेहड़े भगत बैठे बाहर दर दे, दर्शन उहनां आउणा वखाईआ। किते सवेरे दूजिआं नाल रहिण ना लड़दे, सानूं बाहर मिल्या ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभू ओह तूं कौण क्षत्री, कि छत्रधारी नज़री आईआ। कि ब्राह्मण बणयो फोलण वाला पत्री, कुण्डलीआं विच हिस्से रिहों पाईआ। कि मंत्र पढ़ें गायत्री, बारां अकशर नाल मिलाईआ। कि दस्सें लगां मातरी, सिहारी बिहारी वण्ड वण्डाईआ। श्री भगवान किहा नहीं ओए मैं भगतां नूं कदे दिने मिलां कदे रार्ती, निरगुण हो के खेल खिलाईआ। मेरा जलवा नूर बातनी, ज़ाहर करां रुशनाईआ। वेख्यो कोई ना समझयो एह कोई करामातनी, करमां दा लेखा रिहा मुकाईआ। जन भगतो तुसां केहड़ी पट्टी लिख के पोचणी नाल गाचनी, सतिगुर दा अक्खर ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। शब्द गुरू कहे ओ ब्रह्मे तेरी वेखी निक्की जेही कलम, जो अगे पिच्छे रही लिखाईआ। पर तैनूं प्रभ दा नहीं आया इलम, कानून सक्या ना कोए समझाईआ। ओ शिव तेरे पुजारी सुलफ़िआं वाली पींदे चिलम,

सूटे खिच्च के बाहर कढाहीआ। तुसीं मेरी नहीं समझी किस्म, प्रभ दा नाता ना कोए जुड़ाईआ। तुसीं पूजा कराउँदे रहे पंज तत जिस्म, शब्द दी सार किसे ना आईआ। एह भगवान, विष्नूं कहे तेरी समझे नहीं रसम, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। ब्रह्मा कहे मैं कन्न फड़ के खावां कसम, समझ कुछ ना आईआ। जे तेरा गुरू ना हुंदा दस्म, तेरा परदा ना कोए उठाईआ। ओह मुला बण के दाढ़ीआं नूं ला के गए वसम, उसतरयां नाल घसाईआ। जगत माया वेख के हस्सण, मुरीदां नाल मुर्शदां दी वज्जदी रही वधाईआ। जगत नारीआं नाल वसण, सेजा मात हंढाहीआ। जे प्रभू तूं आयों सारे लग्गे नस्सण, भज्जे थाउँ थाँईंआ। श्री भगवान कहे मैं एसे कर के आया दस्सण, सूरबीर नांउ धराईआ। बिना भगतो तुहाडे हुक्म तों अगे मूल ना लँघण, एह मेरी वड्याईआ। एह ना समझयो कोई डहा पलँघण, सचखण्ड दवारा रिहा बणाईआ। मैं कोई छल्ले छापां नहीं पहनणे कंगण, अष्टभुज वाले लाल वस्त्र ना कोए वखाईआ। मेरा इक्को मुतहिरा इक्को मृदंगण, सब दे ठीकर रिहा भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म आपणा रिहा वरताईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैनूं जापदा तेरा कोई रेड़का, तूं रिड़कें सर्ब लोकाईआ। ओ गोबिन्द नहीं, एह मेरा विहार शब्दी खेड दा, पिछलीआं खिड़कीआं सारीआं बन्द कराईआ। अगे हुण मेरयां भगतां नूं कोई नहीं छेड़दा, सत्त रंगा सत्तां लोकां करे सफ़ाईआ। एह लेखा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी गेड़ दा, गेड़े विच भवाईआ। एह लहिणा गोबिन्द दी मेहर दा, मुहब्बत दा मूल चुकाईआ। एह फेरा प्रभू शेर दा, शरीअत दए बदलाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों नखेड़दा, निखड़यां जोड़ जुड़ाईआ। अगे नज़ारा वेख्यो अगम्मी केहर दा, जो कबरां विच्चों सुत्ते लए उठाईआ। कुछ लेखा शरीफ अजमेर दा, आपणे नाल बणाईआ। कुछ झगड़ा गोबिन्द दा गोदावरी वाले डेर दा, डेरयां वाले दए हिलाईआ। नंगी पैरीं फ़रंगी वेख्यो घेर दा, पिठ नंगी दए वखाईआ। जंगी छेड़ां आपे छेड़दा, जंगजू बहादर फेरा पाईआ। रंग वेख्यो प्रभू दी सवेर दा, जो सुबह दी सुबह दए बदलाईआ। सत्त रंगा कहे मैनूं क्यों बणाया डण्डा, डण्डौत सच ना कोए समझाईआ। मेरा लेखा गोदावरी कन्ढा, गोबिन्द राह तकाईआ। गुलाब कहे मेरा लेखा नाल बन्दा, बन्धन दए तुड़ाईआ। पुरख अकाल किहा तूं बच्चू सब नालों चंगा, जो कलयुग कूड़ीआं वंगां दएं भन्नाईआ। तूं की लभ्भणा ओह जेहड़ा भगत शमां ते जा के कदी सड़या नहीं वांग पतंगा, शमां दे विच समाईआ। लक्कों कुबी रोवे भुब्बीं उह ब्राह्मणों तुहाडी माई गंगा, गोदावरी मैंढी खोल्ह दए दुहाईआ। हाए प्रभू क्यों फिरदा पैरीं नंगा, तेरी बेपरवाहीआ। सानूं दिसदा किसे तीर्थ विच पाणी रहिण नहीं दिता चंगा, चंगयां तों मंदे दिते बणाईआ। साधू कलयुग कर के रंडा, रंडयां दा वेहड़ा दिता वसाईआ। शाहरग उत्ते मार के डण्डा, उत्तों हेठां दिते लाहीआ। ऐवें

कैहिंदे सानूं दिसदा सूरज चन्दा, हाए हाए मिल्या ना पुरख अकाल धुर दा माहीआ। अगे पिच्छे सज्जे खब्बे वेखण कोई होर वी हैगा साडे वरगा गंदा, जो प्रभ नाल दग़ा कमाईआ। वेसवा वांग डाह के मंजा, पगड़ीआं टोपीआं सांभ के मूँह उत्ते हथ्थ फिराईआ। प्रभू ने किहा तुहाडा एथों फड़ के परदा करना नंगा, गुस्से वाली गुंजाइश ना कोए रखाईआ। मुरीदां दे पिच्छो ईदां दे मगरों तकरीरां दे बाद अंदर वड़ के तोबा कर के चरणी पड़ के कहिण चंगा, जिवें तेरी रज़ाईआ। श्री भगवान किहा मैं की करां गोबिन्द मैथों छब्बी पोह तों फेर मंग ल्या खण्डा, जिसनूं मुट्ठी पिच्छे नहीं कोई डण्डा, डण्डौत सब नूं दए सिखाईआ। वेख्यो पूरन नूं कोई ना कहओ बन्दा, बन्दयो बन्दयो बन्दयो दीना बंधू नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। प्रभू तेरा खेल किथे, गोबिन्द कहे मैनूं दे जणाईआ। पुरख अकाल कहे भगत वसण जित्थे, मैं ओथे फेरा पाईआ। ओहनां दे कर्म जन्म पाप संताप चुक के इक्ट्ठे, उठा के आपणे कदमां उत्ते टिकाईआ। एह सुण के दुर्गा अष्टभुज पिट्टे, हाए हाए हाए शेर ने सब दी कीती सफ़ाईआ। मेरे लाल वस्त्रां नालों गुरमुखां दे चंगे कीते वस्त्र चिट्टे, चिट्टी धारों अगे लए लँघाईआ। हैं ! सारे तारे वड्डे निक्के, मैंढी खोल्ह के वेण पाईआ। गोबिन्द किहा मैं केहड़े लुके रहिण देणे किसे गुठे, विथां विच्चों बाहर कढाहीआ। अन्तिम बन्न्हणे इक्को मुठे, मुठी आपणी रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे मैनूं कुछ गया चुभ, तीर दिता लगाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे दिशां वज्जे भुब्ब, रो रो सुणाईआ। दीन दुनी दा निकल गया कुब्ब, विंग सके ना कोए कढाहीआ। गोबिन्द शब्दी मारया गुभ, सारे दिते सुटाईआ। श्री भगवान ने हुण वेखणा चढ़ के उत्ते लकड़ी दे मुढ्ढ, सोहणा आसण लाईआ। एहो जिहा कदी नहीं सी बदलया जुग, भगत उधारे ते दुष्टां दी करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दए वड्याईआ। गोबिन्द कहे मैनूं अजे चढ़न लग्गी जवानी सम्मत पहला नज़री आईआ। मैं पहली वार भगतां दी खाधी महिमानी, बल आपणा ल्या वधाईआ। मैं छड्ड दिते भथ्थे तीर कानी, शब्दी चिल्ला इक उठाईआ। कोई रहिण नहीं देणा अभिमानी, कूड़ी क्रिया देणी गवाईआ। पुरख अकाल दी भगतां नाल रहिणी निशानी, निशाने सारे देणे चुकाईआ। जिन्हां पिच्छे बच्चयां दी कीती कुरबानी, आपणी दिती ज़िंदगानी, सृष्टी दस्सी फ़ानी, माया दी कीमत नहीं पाई दवानी, सरसे विच सुटाईआ। एसे कारन करे मेहरबानी, गुरमुखो तुहाडे हथ्थ लाए उत्ते पेशानी, हैरानी अंदरों दए गवाईआ। तुहाडा मेरा लहिणा नहीं कोई ज़बानी कलामी, मैं तुहाडे पिच्छे करन आया गुलामी, जे फेर पुछो मालक धुर इनामी, बदनामी तुहाडी आपणी झोली पाईआ। ओ वेख्यो किते ओह

जूह ना समझयो बेगानी, एथे गुरुआं अवतारां पैगम्बरां दा मुकद्दमा दीवानी, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। तुहाडी अजे सुरत
अंञाणी, गोबिन्द मिलणा सच्चा हाणी, जिस जुझार नूं दिता नहीं पाणी, तुहानूं अमृत प्याले दए प्याईआ। नाले आउणा
विच मैदानी, दुनिया वेखणी जगत नादानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरत धवल दए सुहाईआ।
धरनी कहे मेरे उत्ते ऐथे प्या धमाका, राम नौ वेरां सीस झुकाईआ। मथ्था टेकया आपणे बापा, राम दा राम मनाईआ। मैं
तेरा निक्का जिहा काका, दसरथ दा बेटा अख्वाईआ। पुरख अकाल किहा एह फेर करांगा बाता, कलयुग अन्तिम रिहा
समझाईआ। शहिनशाही सम्मत दीआं आउण राता, छब्बी पोह वज्जे वधाईआ। जिस वेले भाग लग्गे सृष्टी दी धरती माता,
प्रभू दे चरणां दी धूढ़ नजरी आईआ। मेरी कोई ज़ात नहीं क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हमासा,, वण्डां विच हिस्सा ना कोए पाईआ।
जद आवां वेखण जगत तमाशा, तमाशगीर हो के फेरा पाईआ। सच पुछो तां मैनूं ख़ुशीआं विच आवे हासा, गुरमुखां मिल
के खुशी मनाईआ। सब ने जाणया गोबिन्द दा पंज तत काया चोला पाटा, बाज़ घोड़े होए जुदाईआ। कोई ना जाणे उह
शब्दी धुर दा आका, अकलां तों बाहर डेरा लाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां ज़ातां पातां दा तोड़ना नाका, सिध्धा वहण देणा
१४१ वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। राम किहा मैं चारों कुण्ट वेखी १४१
१६ इक हस्ती, जिस दा हिसाब ना कोए आईआ। फेर वेख्या ते ओहदी भगतां अंदर मस्ती, मस्ताने रिहा बणाईआ। त्रेते १६
तों अगे द्वापर तों परे कलयुग अन्त जिन गुरमुखां दी बणाउणी बस्ती, बिस्तरे सब दे गोल कराईआ। आपणी प्रीती करनी
सस्ती, मेहर नज़र इक उठाईआ। पहरेदार बण के चार कुण्ट फिरना गशती, अंदर वड़ वड़ वेख वखाईआ। केहड़ी आत्मा
मेरे नाल वसदी, गलवकड़ी बैठी पाईआ। प्यार विच कदे ना नस्सदी, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। जे कदी सुणी ते
कहाणी ओसे दे सच दी, जो सुच्चे गुरमुख रिहा बणाईआ। जन भगतो जोत अकालण तुहाडे पिच्छे नच्चदी, आपणा रंग
रही चढ़ाईआ। एह कीमत पाई गोबिन्द दे बचन सवा लख दी, लखां दा सेवादार लख्मी नरायण दिता बणाईआ। मैं खेल
करां तुहाडे पक्ख दी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। अगे रीती बदल देणी जग दी, जुगत नाल दृढ़ाईआ। तुहाडी बुद्धी
रहिण नहीं देणी कग दी, हँस देणे वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे सूरे सरबग दी, समरथ आपणा
रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहब्बत वेखी भगतां दी रत दी, रती रत रंग विच रंगाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

हरि शब्द कहे सति साची धार, जुग चौकड़ी गए राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बण के सेवादार, नित नवित सेव कमाईआ। धुर दा नाद शब्द जैकार, नाअरा कलमा जगत कायनात सुणाईआ। पंज तत काया बुत्त झुकदे रहे विच संसार, निरगुण निउँ निउँ लागण पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कर के गए इज़हार, अक्खरां विच ढोले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार अगे कर के गए पुकार, तन माटी ख़ाकी दोए जोड़ वास्ता पाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द किसे ना पाई सार, लख चुरासी जीव जंत हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग धुर दा इक प्रगटाईआ। हरि शब्द कहे जुग चौकड़ी खेल श्री भगवान, निरगुण सरगुण गया जणाईआ। थोड़ा थोड़ा दे के नाम दान, सोई सुरती जगत उठाईआ। तत्तां वाली रीती दस्स के राम काहन, बंसरी उंगलां नाल वजाईआ। सजदयां विच कर सलाम, ईसा मूसा मुहम्मद गए सीस झुकाईआ। नानक गोबिन्द कर प्रणाम, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह कह रहे गाईआ। बिना अक्खरां तों वक्खरा वसे भगवान, जिस दी समझ किसे ना पाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रिहा विधान, लोकमात खेल खिलाईआ। ऋषीआं मुनीआं ब्रह्मवेता दए ज्ञान, निरंतर अन्तर मंत्र इक समझाईआ। धुर दा कलमा सच कलाम, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। मुहब्बत विच कर एहसान, महबूब दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देवण आया ब्यान, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार धुर दा राम होया मेहरवान, महबूब अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख्या अक्खरां वाला ज्ञान, रसना जेहवा ढोला गाईआ। साचा मिले ना किसे मन्दिर मकान, महल अटल सोभा कोए ना पाईआ। तत्तां वाला देंदे रहे दान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश भेंट चढ़ाईआ। आत्म परमात्म मिल्या कोई ना माण, नाता हक ना कोए रखाईआ। चौथा जुग होया वैरान, हैरानी सब दे उपर छाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होए परेशान, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जगत विद्या लाउँदे रहे दीवान, निरअक्खर ना कोए पढ़ाईआ। पढ़दे रहे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, चारे खाणी चारे बाणी ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देणा इक संदेसा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जुग जुग वटाउँदे रहे वेसा, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। आदि जुगादी कोई जाण ना सक्या लेखा, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। दीनां मज़्बां वाला पा भुलेखा, ज़ाती पाती वण्ड वण्डाईआ।

दीन दुनी दा दे के ठेका, ठेकेदार दिते बणाईआ। आत्म परमात्म किसे ना दस्सया एका, एकँकार भेव ना कोए खुल्हाईआ। ब्रह्मा समझ ना सक्या वेता, विष्नूं अलख ना कोए जगाईआ। शंकर खांदा रिहा ठेडा, नेत्र अक्ख ना कोए वड्याईआ। चार युग बदलदा रिहा भेखा, भेखाधारी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या लोकमात जग, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां लग्गी अग्ग, अक्खरां करन पढ़ाईआ। दूई द्वैत कूड़ी क्रिया कोई ना सके अंदरों कढ्ढ, माया ममता मोह ना कोए मिटाईआ। बिन हरि प्यार ख़ाली दिसण हड्ड, नारी कन्त जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मार्ग रहे दस्स, दस्म दवारी मेल ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े कोई ना सच, कीमत रतीआं रहे पाईआ। साचा दसाए ना कोए तीर्थ तट, अमृत सर सरोवर ना कोए बणाईआ। पढ़ पढ़ सारे गए थक्क, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं जुग चौकड़ी वेंहदा रिहा व्याह, नारी पुरख राह तकाईआ। किसे दा विचोला बणया ना बेपरवाह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नाई ब्राह्मण जजमानां घर जांदे आ, विचोले वाधू फेरा पाईआ। धीआं पुत्तां वालयां दोहां घरां तों लैंदे खा, भोजन रसना नाल छुहाईआ। निरगुण नूर कहे मैं गुर अवतार पैगम्बर बणाए गवाह, शहादत सारे देण भुगताईआ। किसे नूं प्रभ दे उत्ते विश्वास ना आया वसाह, विसरी सर्ब लोकाईआ। धर्म दवारे बैठ के जग नीती कूड़ी क्रिया रहे तका, निज नैण ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखदा रिहा चौकड़ी जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणाउँदे गए प्रभू दी तुक, परवरदिगार नाम सालाहीआ। कलयुग अन्त सृष्टी दृष्टी निशानओं गई उक, तीर गुणी गहीर ना कोए चलाईआ। माया ममता कूड़ी तृष्ना घर घर लग्गी भुक्ख, ताअनयां विच लोकाईआ। पुत्रां वाले धीआं वालयां नूं रहे लुट्ट, लुटेरे बण के फेरा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगत सुहेले बणा के आपणे पुत्त, मेहर नज़र इक उठाईआ। अगे सृष्टी दा बदलणा रुख़, चार वरन देणे समझाईआ। ना कोई परदा ना कोई लुक, भरम भुलेखा देणा कढाहीआ। भावें स्त्री होवे भावें मनुक्ख, दोहां दा इक्को हक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेंहदा रिहा जगत रीती, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। कोई मन्दिर वड़े मसीती, गुरदुआर फेरीआं पाईआ। साहिब सतिगुर नाल करे ना कोए प्रीती, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गोबिन्द सोहणी ला के गया बग़ीची, फुल्ल फुलवाड़ी मात महकाईआ। नानक दस्स के गया हदीसी,

धुर दी कर पढ़ाईआ। गुरमुखो गुरसिक्खी दी धार नीकी, निक्कयां तों वड्डे दए बणाईआ। जिंनां चिर जाणो ना आपणी कीती, करमां दा रोग कटाईआ। काया होणी नहीं ठंडी सीती, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। झगड़ा मुक्कणा नहीं ऊँच नीची, राउ रंक ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे नानक गुर अर्जन गा के गया लांव चार, चार वरन चार जुग गया समझाईआ। सुरती शब्द करो प्यार, तत्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडी आत्म होवे नार, परमात्म कन्त बेपरवाहीआ। जिंनां चिर मिल्या ना अबिनाशी यार, यराना हक ना कोए वखाईआ। बिना पूरन भगतां तों कदे ना पूरा होवे विहार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। ग्रन्थी पन्थी किसे ना पाई सार, भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द बोल गया ललकार, ढोला इक जणाईआ। फ़तिह सच डंका विच संसार, शब्दी नाम सुणाईआ। खेल पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सृष्ट होवे बेहाल, चार कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सणा मार्ग सच, सतिजुग साचा आप उठाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, भगत सुहेले भेव खुल्हाईआ। लूं लूं अंदर प्रेम प्रीती रच, रचना धुर दी देणी वखाईआ। मनुआ मन ना पए नच्च, कूड़ कुड़यार ना कोए हल्काईआ। मार्ग दस्स पुरख समरथ, राह इक्को देणा वखाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी गाउँदे रहे नाल गथ, ढोलयां विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग कहे मैं उठया जाग, परम पुरख प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओह वेख कलयुग काग, जेहवा काग वांग कुरलाईआ। पुरख अकाल कहे मैं देणा इक वैराग, जन भगत देणा समझाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत देणा वखाईआ। घर दीपक जोत जगा चराग़, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। चार वरन दा अठारां बरन दा सृष्टी उत्ते बदल देणा रिवाज, पिछली रीती रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने रचना रची आदि, उह वेखे विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन याद, सूफ़ी सन्त फ़कीर वजावण नाद, ढोले धुर दे इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग साचा दए वखाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मार्ग ला मात, मनुखता दे वड्याईआ। भेव खुल्हा सज्जण साध, सन्त सुहेले गोद उठाईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को तेरी होवे याद, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। दीनां मज़्हबां दा झगड़ा चुक्के फ़साद, प्रेम रंग विच समाईआ। तेरे नाम दी सुणन आवाज़, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मेरा दस्स दे राह जगत, इक्को वार दृढ़ाईआ। भरम रहे ना किसे भगत, भगवन परदा देणा

उठाईआ। तेरे सम्मत दा सोहणा वक्त, जुग जुग रिहा बदलाईआ। तेरी गोबिन्द नाल शर्त, शब्दी हुक्म सुणाईआ। खेल करना अर्श ते फर्श, फ़ैसला हक सुणाईआ। ग़रीबां उत्ते करना तरस, निमाणयां गोद उठाईआ। ज़ात पात दा मेट के हरख़, दीन दुनी देणी वड्याईआ। जन भगतां कोलों किसे नूं लैण नहीं देणा धड़त, वढ्ढी खोर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग सुण तैनूं समझावांगा। तेरा मार्ग मात लगावांगा। सन्त सुहेला तेरा साक बणावांगा। गुर चेला रंग रंगावांगा। भगतां मेला विच रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमावांगा। सच करनी कार कमाएगा। पुरख अबिनाशी दया कमाएगा। पुरख अकाला वेख वखाएगा। दीन दयाला फेरा पाएगा। साची धर्मसाला इक बणाएगा। चार वरनां फड़ बहाएगा। धुर दी सरन इक जणाएगा। मरन डरन भउ मिटाएगा। नेत्र हरना फरना इक आप खुल्हाएगा। किसे गुरमुख नूं जगत विहार विच फड़ना पए ना प्रना, शब्द डोरी नाल रखाएगा। घर विच जा के फेर पए ना लड़ना, नाता जगत ना कोए तुड़ाएगा। गुरमुखां मंज़ल ओसे चढ़ना, जित्थे इक्को नूर नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाएगा। सतिजुग कहे प्रभू किस बिध भगतां करे शादी, शादयाना सच वजाईआ। पुरख अकाल किहा एह मैनूं धुर दी वादी, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। कलयुग अन्त होणी बरबादी, कलयुग कूड़ रहिण ना पाईआ। करना खेल पुरख अबिनाशी, दूजा संग ना कोए रखाईआ। झगड़ा मुकणा पंडत काशी, काअबे कुरान ना कोए सुणाईआ। गुरूदवारे रहिण नहीं देणी कोई बदमाशी, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। इक्को मण्डल वेखणी रासी, गोपी काहन देणे समझाईआ। जन भगतां दा श्री भगवान बणना साथी, जगत सज्जणां दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ा नाता तुट्ट जाए मात पित भाई भैण फुफी मासी, ताई चाची कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम सब नूं मन्नणी पैणी आखी, धुर दा हुक्म ना कोए उलटाईआ। जिस दा थोड़ा समां बाकी, सम्मत साल दए गवाहीआ। चार कुण्ट रहिणा कोए ना आकी, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। भगतां अंदर खोल्ह के धुर दी ताकी, परदा ओहला देणा उठाईआ। नाम प्याला पिआउणा बण के साकी, साख्यात नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मैं वेखणा सच संजोग, जोड़ी सच्ची नज़री आईआ। जिन्हां होवे ना तेरा विजोग, विछोड़ा रूप ना कोए वखाईआ। माया ममता रहे ना रोग, आसा तृष्ना ना कूड़ बणाईआ। भाग लग्गे काया कोट, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। शब्द अगम्मी लग्गे चोट, सुरती सुरत उठाईआ। प्रकाश होवे निर्मल जोत, नूर नूर रुशनाईआ। पत पत्नी दी आत्म परमात्म इक्को गोत, परदा ओहला

देणा उठाईआ। अगे झगड़ा रहे ना रोग, रोज़े नमाज़ तों लैणे छुडाईआ। जन भगतां दा श्री भगवान तेरे अगे इक्को वार पैणा भोग, दूजी अवर ना कोए सिखलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा बणाईआ। सतिजुग कहे प्रभू मैं की आखां व्याह, विवाह समझ कोए ना आईआ। की मैं कहवां नकाह, नकाबां मुख लुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह आत्म परमात्म तन वजूद पंज तत दी पकड़े बांह, दो जहान दी लोड़ ना कोए रखाईआ। भगत भगत नाल कर लैण हां, विचोलयां नूं धक्के मार के घरों देण कढाहीआ। एस तत दा नहीं वसाह, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर शब्द जन भगतो गुरमुखो गुरसिखो तुहाडा सदा गवाह, शहादत एथे ओथे दए भुगताईआ। धर्म रीती दा इक्को सच्चा राह, दूजी तारीख ना कोए बदलाईआ। अजे पहला सम्मत पुरख अकाल दा होया रवां, रवादारी सारी दए मुकाईआ। अज्ज तुहानूं जापदा एह रिवाज नवां, अन्त सृष्ट सबाई लैणा अपनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निराकार निरवैर धार चलाईआ।

✪ २८ पोह शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

१४६
१६

कोटां विच्चों गुरमुख विरला राणा आए विच रण, रणभूमी काया अंदर दए वखाईआ। सतिगुर पूरा प्रेम प्यार अंदर बन्ने मन, ममता शब्दी गुर जुड़ाईआ। भाग लगा के ख़ाकी तन, वजूद दए वड्याईआ। निरगुण नूर जोत जगा के चन्न, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। नाम भण्डारा दे के धन, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चरण धूढ़ी दे के बणावे जन, जन जननी लेखे लाईआ। सति जैकारा सुणाए कन्न, कलमा हक हक अलाईआ। जगत जहान बेड़ा देवे बन्न, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। एथे ओथे करे ना छल, वल छल ना कोए वखाईआ। किरपा करे पलक दे पिच्छे पहले पल, ख़लक पलक फ़लक उत्ते ज़िंदगी जीवण दा स्वाल होवे हल, हालत दए बदलाईआ। जो प्रेम प्रीती अंदर आवे चल, निहचल धाम दए वखाईआ। जित्थे इक्को दीपक रिहा बल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई तलवार ना कोई ढाल, रण आपणे हथ्थ वखाईआ। शब्द गुरू फिरे विच बल, सूरबीर नज़री आईआ। जिस दे चरणां हेठां जल थल, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा रगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची शरनाईआ। रणभूमी फिरे इक्को राणा, शाह सुल्तान बेपरवाहीआ। वेखे खेल दो जहानां, पुरी लोअ आकाश पाताल वज्जे वधाईआ। हुक्म संदेसा देवे धुर फ़रमाना, धुर दी धार जणाईआ। जन भगतां दे के नाम निधाना, ख़ाली झोली दए भराईआ। भाग लगा के साढे तिन्न हथ्थ काया मकाना,

मुकामे हक दए दृढ़ाईआ। इक्को राग शब्द सुणाए तराना, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। इक्को बख्शे सच ध्याना, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मुहब्बत विच होवे मेहरवाना, महबूब बेपरवाह मस्ती विच करे दीवाना, दूहरा आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रण कहे मैं वेखां राउ रंक, चुरासी खोज खुजाईआ। वज्जदे वेखां डंक, चार कुण्ट शनवाईआ। फिरदे वेखे सन्त, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ देण दुहाईआ। बिना हरि किरपा किसे ना मिल्या भगवन्त, गृह मन्दिर ना वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रण कहे राणे दा वज्जे नगारा रणजीत, रजो तमो सतो रहिण कोए ना पाईआ। भगतां करे अतीत, पंजां करे सफ़ाईआ। अंदरों बदल के नीत, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। इक सुणा के गीत, परदा ओहला दए उठाईआ। घर स्वामी नज़री आए मीत, मित्र प्यारा धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रण कहे रणभूमी वेख्या इक नज़ारा, बेनज़ीर नज़र बदलाईआ। नाता तोड़ सर्ब संसारा, गुरमुखां दए वड्याईआ। साचा मन्दिर दस्स दवारा, दर दरबारा इक वखाईआ। इक्को नाद शब्द धुन्कारा, अगम्मी राग सुणाईआ। इक्को नूर जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। इक्को करे सच प्यारा, आत्म परमात्म मिल के खुशी वखाईआ। देवणहारा सच सहारा, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। मन रहिण ना देवे गवारा, हँकार अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म लैण ना देवे दोबारा, जो चल आए सरनाईआ। रण कहे मैं वेखां रंग रंगील, रंगत इक्को नज़री आईआ। मेरी अंदरों बदल देवे दलील, दिलबर बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा आपे बंधावे यकीन, यक दम परदा दए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां तों बाहर सतिगुर दी तालीम, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। महल अटल वखाए अज़ीम, आलीशान नज़री आईआ। पहला घर वखाए कदीम, जिस दवारे तों होई जुदाईआ। तेरां लख तरेसठ हज़ार दफ़ा बणया मर्द मीन, नार संसार विच नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। रण कह रणे विच हस्सदा, राणा इक्को नज़री आईआ। जिस दे हथ्थ नगारा जस दा, डंका दए वजाईआ। जिस दा इशारा अगम्मी अक्ख दा, प्रतख दए प्रगटाईआ। पूरब लहिणा देणा हक दा, हकीकत दए जणाईआ। लहिणा सच दा, पूरब वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। मेहर नज़र कहे मैं वेखां उह राणा, पूरब लेखा याद आईआ। जेहड़ा रैहन्दा सी मस्ताना, चीथड़ लीरो लीर बणाईआ। इक गाउँदा सी गाणा, गोबिन्द गोबिन्द माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे पिछला नज़री आए हिसाब,

हिस्सा धुर दरगाहीआ। पूरबले जन्म दा जवान अवस्था दा नवाब, कोटलयां विच्चों नज़री आईआ। जिस ढाई सैंकिंड गोबिन्द नूं कीता सी आदाब, तोबा तोबा कर के सीस झुकाईआ। ओस दिता इक ख़िताब, शब्दी हुक्म जणाईआ। जिस वेले आवे मेरा पुरख अकाल बाप, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। तेरी पूरी करे आस, आसा मनसा वेख वखाईआ। मैं उस दे होणा साथ, शब्दी धारा वण्ड वण्डाईआ। तेरा बुत्त करना पाक, रूह आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए चुकाईआ। लेखा कहे कोई ना जाणे लिख्त, तवारीख ना कोए समझाईआ। एह गोबिन्द दा भविख्त, जिस नूं समझे कोई ना राईआ। गुरमुखां खोल्ह के दृष्ट, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पार उतारे विच्चों गृहस्त, वड्डे छोटे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा झोली पाईआ। पूरब लेखा कहे मैं लेखा आया लैण, लख लख शुकर मनाईआ। दर्शन कर के नैन, नैन गया बदलाईआ। बण के सज्जण सैण, नाता ल्या जुड़ाईआ। राणे तेरा बाल्मीक ने लेखा थोड़ा जिहा लिख्या विच रमायण, ढाई साल राम नाल गंढु पवाईआ। ओस वेले तेरी ज़ाती सी उजैन, उजैनीआं विच्चों तरफ़ैण ल्या बणाईआ। तेरा कुटम्ब तिन्न भाई ते पंज भैण, प्यो दा भ्रा

१४८
१६
नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दा लहिणा दए मुकाईआ। जन्म कहे मेरा जुग जुग लहिणा मुक्कदा, मानस जन्म मिले वड्याईआ। आत्म हो के परमात्म दा राह रिहा पुछदा, मन मति बुध नाल रलाईआ। मैनूं सारे इशारा करदे गए इक तुक दा, जित्थे वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नाता जुड़ जाए पिता पुत्त दा, अगे होए ना कोए जुदाईआ। जन्म जन्म दा पैंडा मुक्कदा, पन्ध विच ना कोए फिराईआ। राए धर्म मूल ना पुछदा, चित्रगुप्त ना हिसाब जणाईआ। लेखा मुक्क जाए जननी दी कुक्ख दा, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। झगड़ा मुक जाए कूड़े दुःख दा, सहिंसा रोग रहे ना राईआ। जन्म फेर मिले मनुक्ख दा, पंज तत वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल समें अनुसार आपे ढुकदा, दूर दुराडा फेरा पाईआ। गुरमुखां गोदी चुकदा, भगतां लए उठाईआ। रस दे के अमृत दुद्ध दा, सीर साचा दए प्याईआ। झगड़ा मुका के विद्या बुध दा, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रणभूमी वेख वखाईआ। रण अंदर वेखो डंक नगारे, ढोल ढमक्के नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लग्गे अखाड़े, मन मनसा नाच कराईआ। कोटन कोटि चमकदे सूरज चन्द सतारे, आपणा आप करन रुशनाईआ। निम्मे्ह निम्मे्ह झिरदे अमृत फुहारे, बूँद बूँद टपकाईआ। कँवल खिड़ी रहे गुलज़ारे, सहँस दल परदा लाहीआ। दस्म दवारी तक्क दे रहिण नज़ारे, कोटां विच्चों दो चार नज़री आईआ। बिना पुरख अकाल सचखण्ड दवारे चढ़े ना कोए चुबारे, मंज़ल

मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोगी जती सती सन्यासी वैरागी त्यागी हारे, फ़कीर फ़क्कर ढोलयां विच गाईआ। बहुते खड़े सुखमन बंक दे किनारे, ईड़ा पिंगल दर पार ना कोए कराईआ। बहुते कलयुग फड़े बेगारे, अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। बहुते वेखदे रहे इशारे, इश्क हकीकी ना कोए कमाईआ। राणे तेरा जोड़ गोबिन्द नाल जुड़या दरबारे, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। प्रेम प्रीती अंदर वाजां मारे, सोई सुरती लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे सब दे दए चुकाईआ।

✪ पहली माघ शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

छब्बी पोह कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आई मेरी वार, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जी वधाईआ। खुशी होई सचखण्ड साचे दरबार, मुकामे हक खेल अगम्म अथाहीआ। इक्को तक्कया नर निरँकार, निरगुण निरवैर निराकार नज़री आईआ। जोती जाता अगम्म अपार, अलख अगोचर शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बिन तेल बाती होए उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सति सतिवादी नजरी आए धुर सिक्दार, राजन भूप बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर करे ख़बरदार, शब्दी
१४६
१६
शब्द जणाईआ। बिन कदमां झुकदे वेखे गुर अवतार, पैगम्बर सीस जगदीश झुकाईआ। दर दरवेश विष्न ब्रह्मा शिव भिखार, ख़ाली झोली रहे डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निउँ निउँ चरणां धूढ़ी मंगदे छार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। छब्बी पोह कहे नव नौ चार वेखी खेल अपारी, अलख अगोचर अगम्म अथाह दिती वड्याईआ। इक्को जोत जगे नरायण निरँकारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्द नाद सच्चा धुन्कारी, अनाद अनादी रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कारी, सजदयां विच सीस झुकाईआ। भगत सुहेले बण भिखारी, सूफ़ी मंगण चाँई चाँईआ। जलवागर नूर उज्यारी, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या सति सतिवादी खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। जिस दा भेव ना पाया किसे जुग चारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ किसे ना आईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह के गए गुर अवतारा, पैगम्बर तोबा तोबा कह सुणाईआ। कागद कलम शाही कोए ना लिखणहारा, कागज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोटन कोटि रसना जेहवा बत्ती दन्द करदे गए पुकारा, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। नाद धुंन शब्द राग गाउँदे गए वारा, ढोले सोहले गीत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या पुरख अकाल, अकल कलधारी नज़री आईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, थिर घर चरण कँवल सरनाईआ। नित नवित भगत सुहेला इक इकेला पुछणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा भविख्तां विच दे के गए अहिवाल, बिन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी एथे ओथे दो जहानां नित नवित अवल्लड़ी चाल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया पंज तत मेटणहारा जगत जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी खेल करे कमाल, बेमिसाल आपणी कार कमाईआ। जोती जलवा नूरी कर जमाल, ज़ाहर ज़हूर बेनज़ीर नज़र आपणी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक नूर खुदाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या जलवागर, लासानी इक्को नज़री आईआ। अबिनाशी करता धुर दा हरि, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर जिस दा अगम्मड़ा घर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। बिन पौड़ी डण्डे जाए चढ़, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी खेल कर, करनी करता आप समझाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतर, पैगम्बर सेव कमाईआ। लेखा जाण नारी नर, लख चुरासी खोज खुजाईआ। निरभउ भय जणाए डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या धुर दा मालक, परवरदिगार नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां ख़ालक सब दा पालक, प्रितपालक बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बण के आया सालस, साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना फेरी पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले गुरमुख कढ्ढे ख़ालस, ज़ात पात वरन गोत क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमै हंगता रहिण ना देवे निंद्रा आलस, जगजीवण दाता जागरत जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले वेखे धुर दे बालक, शब्द शब्दी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन कूड़ी क्रिया मेटणहारा नालिश, नर नरायण दया कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या परवरदिगार, जलवा नूर नूर अलाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा सांझा यार, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मुकामे हक हो उज्यार, हकीकत आपणी रिहा दृढ़ाईआ। नूरो नूर कर उज्यार, उजाला इक्को रिहा वखाईआ। करे खेल अपर अपार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर पा ना सके सार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। भय विच करदे गए निसमकार, डण्डावत विच आपणा आप मिटाईआ। काग़ज़ कलम शाही नाल करदे गए इज़हार, रागां नादां शब्दां विच गाईआ। लिखदे गए वारो वार, कलम शाही काग़ज़

जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। छब्बी पोह कहे मैं तक्कया अगम्म नज़ारा, बेनज़ीर बिन नज़र दया कमाईआ। जिस नूं समझे कोई ना विच संसारा, लख चुरासी भेव ना कोए खुल्हाईआ। बिन भगतां देवे ना किसे दीदारा, ईद चन्द ना कोए रुशनाईआ। परदा खोल्हे ना अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहर रंग ना कोए रंगाईआ। निर्मल जोत होए ना कोए उज्यारा, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस परम पुरख दा दे के गए इशारा, संदेसा धुर दा मात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी खेल वखाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख्या हुक्म एक, एकँकार रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी धर के भेख, नित नवित वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अंदर वड़ के देवे भेत, शब्दी नाद धुंन शनवाईआ। हुक्म संदेशे लिखे लेख, धुर दी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे मैं करां अन्त निमस्कार, नमो नमो सीस झुकाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए जुग चार, चौकड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। संदेसा दे के गए गुर अवतार, पैगम्बर कलमयां विच जणाईआ। सो खेल करे करनेहार, करता पुरख सहिज सुखदाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, निरवैर वेस वटाईआ। शब्दी डंका इक संसार, चार कुण्ट रिहा सुणाईआ। सम्मत शहिनशाही दो जहानां करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परखणहार, घट भीतर वेख वखाईआ। हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बरां दए हुलार, सवाधान लए कराईआ। उठो वेखो तको लोकमात कलयुग जीव करन की की कार, कर्म कांड सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे पुरख अकाल दिता इक संदेसा, सति सतिवादी आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा होण वाला लेखा, लिख्त भविख्त दए गवाहीआ। झगड़ा चुकणा पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ा, मुसायक रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मुकणा ठेका, अन्त अख़ीरी देवे गवाहीआ। चार वरन अठारां बरन करनी बुध बिबेका, मनमति कूड़ी बाहर कढाहीआ। त्रैगुण माया मूल ना लावे सेका, पंज तत ना करे लड़ाईआ। गोबिन्द शब्द कराउणा चेता, चेतन सुरती आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात करो ख़िआल, पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार रिहा जणाईआ। धरती उत्ते वेखो तक्को आपणे लाल, मुरीद मुर्शद अक्ख उठाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वेखो धर्मसाल, गुरूदवारा कौण सुहाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी इष्टी होई बेहाल, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। माया ममता हउमै हंगता

कूड़ी क्रिया वज्जे ताल, कूड़ कुड़यारा नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। आत्म परमात्म वसे किसे ना नाल, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। त्रैगुण माया प्या जाल, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जो मंत्र अन्तर निरंतर आए सिखाल, सिख्या जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर लओ तक्क, मातलोक ध्यान लगाईआ। कवण जाणे हकीकत हक, कवण चले सच रज़ाईआ। सति धर्म सारे गए छड्ड, कलमा हक ना कोए गाईआ। परमात्म नालों आत्म कर के अड्ड, मन वासना वज्जी वधाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, धुंन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया रहे दग, अग्नी तत तपाईआ। किसे कम्म ना आया काअब्यां वाला हज्ज, हज़रत मिल्या ना बेपरवाहीआ। साची रीती नीती गए तज, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पुरख अकाल कहे तेई अवतार करो ध्यान, शब्द संदेशे नाल जणाईआ। साचा दिसे ना कोए ज्ञान, अन्तर मंत्र ना कोए समझाईआ। निज नेत्र दरस करे कोए ना आण, घर मिले बेपरवाहीआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ होए वैरान, अमृत धारा मेघ ना कोए बरसाईआ। सुरत सवाणी मिले किसे ना काहन, बंसरी नाम ना कोए सुणाईआ। साची सीआ मिले ना अगम्मा राम, काया बन खोजण कोए ना जाईआ। भाग लग्गा ना किसे नगर खेड़ा ग्राम, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाए कोई ना नाम, घर स्वामी मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल वाली दो जहान, निरगुण निरवैर खेल खिलाईआ। पुरख अकाल कहे ईसा मूसा मुहम्मद तक्को ख़िआल, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। हकीकत दिसे ना हक हलाल, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। चौदां तबक सर्ब कुरलाण, ज़िमीं असमान देण दुहाईआ। किसे कम्म ना आई पढ़ी कुरान, काया काअबे खोज ना कोए खुजाईआ। साची बस्ती होई वैरान, वैरी सके ना कोए मिटाईआ। मुहम्मद दे के गया ब्यान, अलिफ़ ये वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे हुक्म सुणो गुरू दस, दहि दिशा दयां जणाईआ। साचा मिल्या किस किस अमृत रस, लेखा दयो बताईआ। चार वरन करके आए इक्ठ, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ। धुर दा मार्ग आए दस्स, पुरख अकाल इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेखे गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे, दर ठांडे सीस निवाईआ। चरण कँवल धुर दे ढठ्ठे, बन्दना डण्डावत इक दृढ़ाईआ। तेरे हुक्म अंदर बद्धे, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। सच दवारे आए

सद्दे, पंज तत नाता जगत तुड़ाईआ। तेरे फ़रमाने दे के अद्धे, अधिआत्मक करी पढ़ाईआ। तेरे नूर अंदर जगे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दीन मज़्ब पा के हद्दे, हद्दां वण्ड वण्डाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर कलयुग जीव साडे आखे मूल ना लग्गे, आख़र गए भुलाईआ। माया ममता मोह विकार अंदर बज्झे, हँकार आपणा गढ़ जणाईआ। कूड़ी क्रिया तृष्ना अंदर लग्गे, अग्नी तत जलाईआ। तेरा दर्शन पावे कोई ना उपर शाह रगे, नौ दवारे पन्ध ना कोए चुकाईआ। हँस रूप बण गए कग्गे, काग हँस रूप ना कोए बदलाईआ। तेरे अगे प्रभ सब ने हथ्थ बद्धे, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झुक झुक करन सलाम, नमों नमों सीस निवाईआ। तूं दाता मालक मेहरवान, महबूब तेरी सरनाईआ। कलयुग जीव भुल्ले जगत जहान, तेरी ओट ना कोए तकाईआ। अन्त अख़ीरी होए असीं हैरान, चारों कुण्ट हैरानी छाईआ। मन्दिर मस्जिद शिव दवाला मठ्ठ बणी दुकान, दाअवेदार नज़र कोए ना आईआ। हिरदे वसे ना किसे राम, काहन कृष्न ना कोए जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद साचा दए ना कोए पैग़ाम, पैगम्बर हक ना कोए पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द मिले किसे ना आण, घर मन्दिर ना वज्जे वधाईआ। धूढ़ी मिले ना कोए इश्नान, चरण चरणोदक मुख ना कोए चुआईआ। मन वासना फिरन सवान, भज्जण थाउँ थाँईंआ। बुद्धी दा करन ज्ञान, भेव अभेद ना कोए खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म देणा वरताईआ। पुरख अकाल कहे मैं देणा धुर फ़रमाना, सम्मत पहला दए गवाहीआ। गुर अवतार पैग़बंरां मन्नणा पए भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणना पए निमाणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी चार जुग दा बदलणा पए गाणा, इक्को नाम दए समझाईआ। दो जहान श्री भगवान शाहो भूप बिन रंग रूप मन्नणा पए राणा, रईयत नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। छब्बी पोह कहे मैं वेख के होया खुश, खुशहाली मेरे उत्ते आईआ। पुरख अकाल गुर अवतार पैगम्बरां ल्या पुछ, जुग चौकड़ी की की हुक्म सुणाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम होया अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या पिता पुत्त, कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। अमृत जाम मिले किसे ना घुट, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ रहे कुरलाईआ। सति धर्म दा बूटा गया सुक, पत्त डाली ना कोए महकाईआ। साची मौली कोई ना रुत्त, खिजां बसन्त गई बदलाईआ। किसे दे कोल नहीं कुछ, साध सन्त ख़ाली झोलीआं रहे वखाईआ। साची मंज़ल दा पैंडा ना जावे मुक, मुकामे हक ना कोए रसाईआ। आवण जावण लख चुरासी जाए किसे ना छुट्ट, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म धार

गई दुट्ट, ब्रह्म पारब्रह्म विच ना कोए समाईआ। करया खेल अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक वरताईआ। छब्बी पोह कहे मेरा समां बदल के आई प्रभ दी पहली माघी, मग्न भगतां रही कराईआ। सृष्टी दृष्टी दुनी वेखी दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। गुर के शब्द कोए ना जागी, जगत विहारां विच कुरलाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द बणे रहे रागी, अनहद नाद ना कोए वजाईआ। मिल्या मेल ना मोहन माधव माधी, मधुर धुंन ना कोए सुणाईआ। बाणी पढ़ी ना बोध अगाधी, अक्खर वेख वेख ख़ुशी मनाईआ। साची मंज़ल बणे ना पाँधी, रहबर राह ना कोए वखाईआ। बिन मक्के काअब्यों बणे ना सच्चे हाजी, हुजरा हक ना कोए दृढ़ाईआ। बिना सजदिउँ कोई पढ़े ना सच निवाज़ी, नवाज़िस विच वेखे ना कोए लोकाईआ। करोड़ां अरबां दी वधदी वेखी आबादी, भगत भगवन्त दा रूप ना कोए बणाईआ। अन्त अख़ीर सब ने हारनी बाज़ी, बाजां वाला दए गवाहीआ। जिस दा इक्को अस्व घोड़ा ताजी, ताजां तख़्तां वालयां दए उलटाईआ। किसे दी शहिनशाही ना रहे नवाबी, नौबत इक्को नाम सुणाईआ। सोलवें साल तक नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप प्रगट करनी पंजाबी, पंचम पंच पंच देणा समझाईआ। मन वासना कोई रहिण नहीं देणा बाग़ी, शब्द खण्डा इक चमकाईआ। जो परम पुरख नूं रहे अराधी, तिन्हां होणा आप सहाईआ। झगड़ा मुकणा पंडत काज़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए दृढ़ाईआ। माघी कहे मैं हो गई मग्न, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जन भगतां आई सद्दण, गुरमुख मात उठाईआ। परम पुरख परमात्म करन आया अगम्मी अदल, जिस ने दो जहान अदालत इक लगाईआ। जिस ने ब्रह्मण्ड खण्ड देणे बदल, विष्न ब्रह्मा शिव दए बदलाईआ। जिस ने लेखा जाणना मकतूल कातिल कतल, चुरासी फाँसी वण्ड वण्डाईआ। उस दा इक्को दर ते इक्को पत्तन, इक्को नईआ नौका रिहा जणाईआ। जन भगतां वखाए आपणा पिछला वतन, जिस घर विच्चों होई जुदाईआ। पैज अन्तिम आया रखण, राखा हो के बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों विरोले मक्खण, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। शब्द गुरू निवासी पटण, पाटल आपणी दया कमाईआ। सच दवारा खोल्ह के हट्टण, नाम भण्डारा दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी कार इक कमाईआ। माघी कहे मैं प्रभ दर होई मन्ज़ूर, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जलवा तक्क अगम्मी नूर, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। जिस नूं कैहिंदे दूरन दूर, नेरन नेरा नज़री आईआ। मेहरवान मुहब्बत विच हाज़र हज़ूर, महबूब शहिनशाहीआ। भगतां मिलदा वेखणा ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर फेरा पाईआ। जन्म जन्म दे कट कसूर, कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। सच दवारे बणा के सच मज़दूर, कीती घाल झोली पाईआ। मानस जन्म जाण ना देवे फ़ज़ूल, फ़ज़ल रहमत नाल तराईआ।

आत्म परमात्म दा दस्सके वक्खरा मजमून, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। जिस दा समझ सके ना कोए कानून, काइदा आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। माघी कहे मैं वेख होई अनन्द, अनन्द इक्को नज़री आईआ। चौथे जुग लेखा मुक्कया पन्ध, पैंडा बाकी रिहा ना राईआ। गुर अवतार पैगम्बर खुशीआं विच गावण छन्द, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। भगवन होया भगतां संग, सगला संग बणाईआ। निज आत्म देवे ठंड, परमानंद समाईआ। नाम भण्डारा देवे वण्ड, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सति चढ़ा के अनोखा रंग, मजीठी दए वखाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। कोई रहे ना भागां मंद, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। परदा लाह के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म रिहा वखाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना तृष्ना तम, तामस मोह ना कोए जणाईआ। चिन्ता मेट के जगत ग़म, खुशी अंदर दए प्रगटाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वासी दम, पवण उनन्जा सेव कमाईआ। जगत जन्म दयां विछड़यां बेड़ा बन्नू, धुर दा संग दए जणाईआ। इक्को राग सुणा के कन्न, नाद अगम्मी दए वजाईआ। मन का मणका फेर के मन, मनसा मनसा विच्चों भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखो शहिनशाही माघ चढ़या, दो जहान वज्जे वधाईआ। भगत भगवान ने मिल के अगम्मा अक्खर पढ़या, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना जन्मे ना कदे मरया, गेड़ विच ना कदे रखाईआ। जो करना सो आपे करया, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। निरभओ भय विच कदे ना डरया, अकाल मूर्त नज़री आईआ। धुर दरगाह सचखण्ड दवारे खड़या, जित्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। अग्नी अग्ग कदे ना सड़या, गोर विच ना कोए दबाईआ। मेहरवान हो के आपणी किरपा करया, महबूब नूर खुदाईआ। लोकमात कलयुग अन्त साढे तिन्न हथ्थ वसा के साचा घरया, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परमात्म आत्म हो के वरया, नार कन्त अंग जुड़ाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं होया उजागर, पुरख अकाल दिती सरनाईआ। मैं बणना सच सौदागर, चार कुण्ट फेरा पाईआ। भगतां निर्मल कर्म करना उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। सन्त सुहेले बणाउणे वड बहादर, शब्दी बल प्रगटाईआ। मेल मिलाउणा नाल धुर दे कादर, करते विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी दए समझाईआ। माघ कहे मैं भागांवन्त, गुरमुखां दयां बणाईआ। विछड़यां मेला धुर दा कन्त, सज्जण शहिनशाहीआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दयां समझाईआ।

बोध अगाध बण के पंडत, इक्को करां पढ़ाईआ। जुग जन्म दी पूरब वेखां सनद, सन्त सुहेले खोज खुजाईआ। प्रेमीआं प्यारयां अन्तर दे के हिम्मत, हौसला दयां वधाईआ। जन भगतो श्री भगवान तुहाडे अंदर सिमत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं भगतां दस्सणा सच, सहिज सहिज जणाईआ। गुरमुखो परदा लाह के वेखो काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। तुहाडे अन्तर बैठा पुरख समरथ, घर विच आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूँह नहीं हथ्थ, तत्व तत ना कोए प्रगटाईआ। हकीकत विच सच, सति दए समझाईआ। साढे तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो अंदर मार के वेखो झाकी, परदा पड़दे विच्चों उठाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्ह के वेखो ताकी, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। घर सज्जण बैठा साकी, जाम प्याला रिहा प्याईआ। लेखा जाणे माटी ख़ाकी, ख़ालस आपणा रूप दए समझाईआ। मनुआ मन रहे ना आकी, ममता मोह दए चुकाईआ।आत्म परमात्म दस्से ज़ात अजाती, इक्को नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावे गाथी, करे सच पढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण के साथी, सगला संग निभाईआ। चौदां लोक करे राखी, फड़ फड़ अगे लए लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव दे के गए संदेसे पाती, लोकमात मात जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो पहले सम्मत दी आउणी ओह अगम्मी राती, जिस रैण दी रेणिका हथ्थ किसे ना आईआ। माघ कहे मैं आया लोकमात, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। सतिजुग दा जगणा बण चराग़, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया बदल के राज, कलयुग सफ़ा देणी उठाईआ। हुक्म दे के धुर महाराज, संदेसा देणा सुणाईआ। इक्को कलमा इक्को नाम इक्को करना पए आदाब, इक्को सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्में अंदर हुक्म मनाईआ। माघ कहे मैं दस्सणा लोकमात, प्रभ दा हुक्म बेपरवाहीआ। कलयुग मिटणी अन्धेरी रात, कूड़ी रैण रहिण ना पाईआ। सतिजुग साची प्रगट होणी प्रभात, प्रभाती ढोले गाईआ। झगड़ा मुक्कणा ज़ात पात, दीन दुनी इक्को नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन बणनी इक जमात, इक्को करे सच पढ़ाईआ। लहिणा देणा सब दा चुकावे मस्तक माथ, पूरब करमा निहकर्मी वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी दा बदल देणा समाज, समें अगे चले ना कोए चतुराईआ। प्रभ दा खेल समझे ना कोए दिमाग़, चौदां विद्या कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप प्रगटाईआ। माघ कहे मैं प्रभ दा हुक्म सुणना हो के मौजूद, जो मुफलिसां रिहा अपणाईआ। जुग जुग बदलदा गया अरूज, अर्श फर्श वेख वखाईआ। कलयुग

रहे ना अखीरी हदूद, हज़रत दए गवाहीआ। करनी नेस्तोनाबूद, कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। नानक गोबिन्द दे के गया सबूत, अक्खर अक्खरां वण्ड वण्डाईआ। कोई खेल ना समझे पंज तत काया कलबूत, अन्तर अन्तर परदा कोए ना लाहीआ। अक्खरां विच्चों पत्थरां विच्चों सत्थरां विच्चों लभदे महबूब, जगत नेत्रां चार कुण्ट अक्ख उठाईआ। भेद समझ के एका दूज, दूआ एका जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। अन्तिम सब ने कर के जाणा कूच, कूचा गली रहिण कोए ना पाईआ। बिन भगतां किसे नहीं आउणी साची सूझ, समझ नाल रमज़ ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। माघ कहे मैं वेखणा खेल हकीकी, हाकम इक्को नज़री आईआ। जिस कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी तारीकी, तारा चन्द दए दुहाईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां तौफ़ीकी, तोबा तोबा करे लोकाईआ। जो आदि जुगादि सब दा रफ़ीकी, फ़िरकादारी दए गवाईआ। जिस दे चरणां हेठां जुग चौकड़ी कोटन वार बीती, गुर अवतार पैगम्बर गए सेव कमाईआ। उह लख चुरासी जानणहारा नीती, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। पुरख अकाल दी इक साल दी बरसी अजे नहीं बीती, कोटां बरसां दे झगड़े दए मुकाईआ। जन भगतो थोड़ी तों बहुती वटो कचीची, बहुती तों थोड़ी कर के दए वखाईआ। बिना गोबिन्द तों वसदी रहे ना कोए बगीची, बहार नज़र कोए ना आईआ। प्रभ दी खेल सब तों नीकी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त सब ने भरनी आपणी कीती, गुर अवतार पैगम्बर अगे हो ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैं उठा उठा वेखां अक्ख, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। निरगुण रूप प्रभू प्रतख, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। लख चुरासी काया माटी भाण्डे वेखे सक्ख, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो मार्ग गए दस्स, जीव जंत गए भुलाईआ। सति धर्म धीरज छड्ड के हठ्ठ, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। मन वासना रहे नठ्ठ, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले कर इक्ठ्ठ, जगत स्यासत करन लड़ाईआ। हिरदे नाम लए कोई ना रट, रट्टा प्या सर्ब लोकाईआ। निर्मल जोत जगे ना लट लट, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। शब्द अगम्मी लग्गे मूल ना सट्ट, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। प्रेम रंगण रंगे कोई ना रत्त, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। धीरज रिहा कोई ना सति, सन्तोख बैठा मूँह छुपाईआ। साध सन्त धीआं भैणां रहे तक्क, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सब दा खैहड़ा गए छड्ड, लोकमात कर जुदाईआ। सरगुण कोलों हो के अड्ड, निरगुण अगे देण दुहाईआ। प्रभू तेरे बिना भगत भगवान दी चले कोए ना यद्द, पिता पूत नाता ना कोए जुड़ाईआ। कलयुग जीव बुद्धी होई कग्ग, हँस बैठे रंग बदलाईआ।

सारे ला के झूठे पज्ज, पाठशाला विच देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पीर पैगम्बरो हाज़र करो लिख्त, हुक्मी हुक्म जणाईआ। तुहाडा पूरा होया भविख्त, बीस इकीसा पन्ध चुकाईआ। अगे सब दा पुरख अकाल होणा इष्ट, दूजा गुर ना कोए मनाईआ। ना कोई राम ते ना कोई वशिष्ट, विषयां वाला सतिगुरू कम्म किसे ना आईआ। सतिगुरू पूरा पुरख अकाल पंज तत भोगे ना कदे गृहस्त, जोत शब्द करे कुड़माईआ। ना कोई आसा रखे स्वर्ग बहिश्त, सचखण्ड सच इक समझाईआ। आदि जुगादि ना होवे निष्ट, ठीकर भन्न ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना होए भृष्ट, भरमां विच ना कोए भरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा कर दयो इकबाल, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। साडा वेला अन्त पहुंचयां आण, सदी चौधवीं पन्ध रही मुकाईआ। तुहाडा हल होवे स्वाल, नाता तोड़े जगत लोकाईआ। पुरख अकाल सब नूं आपे लए संभाल, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर काल महाकाल, सिर सके ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव घालणा रहे घाल, भज्जण वाहो दाहीआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, तलवाड़ा शहिनशाहीआ। त्रैगुण माया पंज तत खेल करे कमाल, निरगुण सरगुण नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर छेती कर लओ तुसीं सलाह, साहिब स्वामी आप जणाईआ। वेला वक्त गया आ, सम्मत पहला दए दृढ़ाईआ। तुहाडा शहादत देण वाला केहड़ा गवाह, वुकला नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे इक्को अरज़ लओ सुणा, आरज़ू विच्चों बाहर कढाहीआ। हुक्म देवे वाहिगुरू आप खुदा, खुदी दा लेखा देणा चुकाईआ। जिस दे नालों होए जुदा, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। धुर दा मार्ग कर के सिधा, दो जहानां दए समझाईआ। प्रेम प्यार दी दस्स के बिधा, बन्धन दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रीतम साडी अरजोई, बेनन्ती सच सुणाईआ। तेरे अगे उजर ना कोई, सिर सके ना कोए उठाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे साडी दरोही, दरोही दरोही हाल दुहाईआ। गुर अवतार कहिण तेरे चरण बिना मिले कोई ना ढोई, दवारा नज़र कोए ना आईआ। कोटां अरबां विच्चों सन्त सुहेला लोकमात रह गया कोई कोई, साडी सिख्या सारे गए भुलाईआ। कलयुग कूड़े कूड़ी वासना हर घट अंदर बोई, मन वासना बूटा दिता महकाईआ। गुरमति कलमयां तों बाहर हो के रोई, बिन अक्खां नीर वहाईआ। सोई सुरत ना उठे नवीं नरोई, निरगुण निरवैर निराकार दरस कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म नाल कोई ना छोही, परदा दूई ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मेरे जगदीश, तेरी सच्ची सच्ची शहिनशाहीआ। बिन चरणां झुक जाए हुक्मे वाला सीस, तत नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाम कलमा इक हदीस, हक हक पढ़ाईआ। असीं आ गए लँघ तेरी दहलीज़, दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। साडी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद विच वज्जे वधाईआ। लोकमात तेरे हुक्म दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी विच कर के आए ताईद, तुआरफ़ विच समाईआ। मार्ग दस्स के धर्म कर्म कलमयां विच ईद, आदत सच्ची सच वखाईआ। भाणा मन्नणा दस्स के आए नसीहत, हुक्मी हुक्म समझाईआ। तेरा भविख्त दे के आए विच वसीअत, वसीह जगत समझाईआ। प्रभू तेरे बिना तेरी समझया ना कोए असलीअत, असल वसल यार ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं साडी ख़राब होई तबीअत, तुध बिन तबीब नज़र कोए ना आईआ। भगवन्त कन्त असीं दस्स के आए पुरख अकाल सब दी सांझी वलदीअत, वालद वालदा होर ना कोए बणाईआ। साडी आसा मनसा तेरी अहमीअत, अहिब मुश्कल हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल कहे लिख दयो नाल हथ्थ कलम शाही, उंगली दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग जीव होए गुमराही, भय भउ ना कोए मनाईआ। जगत पाँधी भुल्ले राही, मंज़ल हक कोए ना पाईआ। मिल्या मेल ना धुर दे माही, सज्जण सच ना कोए मनाईआ। मन वासना होए तबाही, कामल मुर्शद जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सचखण्ड दवारे दे दयो इक्को वार गवाही, दूजी शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं गोबिन्द शब्दी सुत उठाउणा जिस ने चार जुग दे इक्ठे कीते छींबे नाई, नौका नाम ना कोए चलाईआ। किसे नहीं जाणया क्यों गोबिन्द पुट्टया बूटा काही, कायनात भेव ना आईआ। क्यों ढोला इक्को गया गाई, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। क्यों पुत्रां भेंट चढ़ाई, मात पित होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झुक के सरन, सरनगति इक्को ओट तकाईआ। प्रभू जगत दा छड्डुया जीवण मरन, लोकमात आए तजाईआ। तेरे प्रेम दा साचा कर के प्रण, प्रणाम इक्को इक दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका दे वरन बरन, ज़ात पात रहे ना राईआ। आत्म परमात्म ढोला सारे पढ़न, वाहिगुरू राम खुदा गॉड दे समझाईआ। तेरी मंज़ल साची चढ़न, अधवाटे होर ना कोए अटकाईआ। तूं सब नूं आयों वरन, धुर दा कन्त शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म दे वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी सलाम, बिन सजदे सीस झुकाईआ। तूं मालक इक अमाम, कामल नज़री आईआ। लोक परलोक बदल दे निज़ाम, चौदां तबकां अक्ख बदलाईआ। साचा कलमा दस्स कलाम, इक्को कर पढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी राम, रहमत

१५६
१६

विच समाईआ। तूं निरगुण नूर काहन, बंसरी नाम वजाईआ। तूं सतिगुर साचा वाली दो जहान, नानक ढोला गाईआ। तेरा शब्द अनोखा बाण, पुरीआं लोआं डेरा ढाहीआ। तेरा सचखण्ड दवारा सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। तेरा दीवा बाती जगे महान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तेरे सिँघासण सच आराम, बिसराम इक्को दए वखाईआ। तेरा हुक्म इक फ़रमान, एथे ओथे ना कोए उलटाईआ। अन्त अख़ीरी सब दा इक ब्यान, बेज़बान रहे जणाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन आपे हो सहाईआ। असीं तेरे दर दे दरवेश, मंगते भिखारी प्रेम विच महिमान, मुहब्बत विच महबूब सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीनां मज़्हबां दी मेट दे दुकान, दूआ एके नाल मिलाईआ। तूं लख चुरासी बाग़बान, बूटी कली कली तेरी महक महकाईआ। तेरी मेहर नज़र लख चुरासी हो जाए सवाधान, सोया रहिण कोए ना पाईआ। तेरे हुक्मे अंदर मूर्ख मूढ़ होण चतुर सुघड़ सुजान, बुध बिबेक दे कराईआ। तेरा इक्को डंका वज्जे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे लगाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभू चार जुग दी साथों लै लै फ़ुरसत, फ़रिसत्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। असीं भोग के तेरे हुक्म दा गर्हिसत, तज आए जगत लोकाईआ। पंज तत काया माटी कर के नष्ट, निशाना तेरा आए जणाईआ। बिन अक्खां ला के शिष्त, निशाने तीर रहे वखाईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गुर अवतार पैगम्बर तेरी दस्स ना सक्या कोई हैसीअत, हिसाब किताब ना कोए जणाईआ। तेरी जाणे ना कोई असलीअत, आसा विच सारे बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग दे दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण आह लै आपणी चार जुग दी वस्त, वस्तू तेरी झोली पाईआ। साडे खाली वेख हसत, दोए हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। तेरी प्रेम खुमारी अंदर मस्त, मसला अवर ना कोए जणाईआ। असीं छड्ड के धरती फर्श, अर्श तेरे चरणां धूढ़ टिक्के लाईआ। प्रभू सानूं तेरी सृष्टी दी नहीं कोई ग़रज़, अरज आपणी रहे जणाईआ। इक्को प्रेमी प्यारयां दी लग्गी दर्द, जो दिवस रैण तेरा नाम ध्याईआ। उन्हां दी झोली पा दे पूरब लहिणे दा कर्ज़, मकरूज लेखा दे मुकाईआ। लख चुरासी विच्चों तेई अवतार ईसा मूसा मुहम्मद दस गुर अठारां भगत रहिण सिर्फ़ दुनिया उत्ते यारां लख दी फ़रद, बाकी सृष्टी कम्म किसे ना आईआ। अगले सम्मत नाम छुरी फड़े करद, कतलगाह दए बणाईआ। जो तेरे नाम दा लैंदे रहे धड़त, सफ़ा उन्हां दी दे उठाईआ। पुरख अकाल तेरे नाल साडी पक्की हो जाए लिख्त पढ़त, जिस नूं वसीका ना कोए बदलाईआ। अगे आउण ना देवें फ़र्क, फ़रीक रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दी पिछली कीती सब दी कर दे तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। असां दीन दी छड्डी

हरस, मज़्बां दा लेखा दिता मुकाईआ। जिउँ भावे तिउँ पुट्ठी सिध्धी कर लै नरद, नर नरायण तेरी वड्याईआ। तेरे अगे कोई ना सके अटक, चार जुग नेत्र रो रो नीर वहाईआ। तेरा हुक्म अगम्मा सख्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार कहिण कलयुग अन्तिम सब दे उत्ते पैण वाला बख़त, वक्त समझ किसे ना आईआ। सिरफ भगतां नूं चढ़ना खुशीआं दा बरस, बरसी आपणी लए मनाईआ। आत्म परमात्म कर के दरस, कूड़ी हवस देण गवाईआ। जिस नूं लभ्भदे उत्ते अर्श, उह मालक बण के फर्श, घट घट नूर करे रुशनाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। गोबिन्द सूरा हाज़र हजूरा शब्दी पूरा आया परत, प्रतिनिध हो के हुक्म वरताईआ। जिस दी गुरमुखां नाल शर्त, कलयुग अन्तिम होवां सहाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्दाना मर्द, कल कल्की फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। माघी कहे अगे आउण वाला वेला, वेले नाल दयां समझाईआ। किसे लभ्भणा नहीं गुरू गुर चेला, चेला गुर नज़र कोए ना आईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां फिरना विच जंगल बेला, बेली बेली संग ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नौ खण्ड पृथ्मी थाँ करना वेहला, बहुत्यां विच्चों थोड़े लए तराईआ। जिन्हां दा बण के सज्जण सुहेला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धाम जणा के इक नवेला, नर निरँकार अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छब्बी पोह कहे प्रभ करन वाला तबदीली, तबा सब दी दए बदलाईआ। हुक्म देणा इक आमीनी, आलम समझ सके ना राईआ। जो करना सो करना यकीनी, यके बाद दीगरे खेल ना कोए वखाईआ। सृष्टी अन्त होणी ग़मगीनी, खुशीआं रंग ना कोए चढ़ाईआ। जिन्हां दी बुद्धी होई कमीनी, चार कुण्ट देण दुहाईआ। जन भगतां मेल जिउँ जल मीनी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बहु कुझ सुणयां, जुग जुग अवतार गए सुणाईआ। मैं दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पूरी आकाश पुणयां, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। विद्या बुध बोध वेख्या गुणीआं, परदा ओहला अन्तर उठाईआ। शब्द राग धुन सुणदा रिहा धुनीआं, अनादी नाद बेपरवाहीआ। आसा मनसा वेंहदा रिहा रिषीआं मुनीआं, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरमे विच भरम भुलाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखां आपणा साल, जुग चौकड़ी पिच्छे दिती बिताईआ। भगत सुहेले करां खुशहाल, खुशीआं रंग रंगाईआ। अमृत आत्म जाम देवां प्याल, निझर रस चुआईआ। दीआ बाती देवां बाल, कमलापाती हो करां रुशनाईआ। साचा मन्दिर वखावां अगम्मी धर्मसाल, सच सिँघासण वज्जे वधाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर चलां नाल, नालश

१६१ १६

जगत रहे ना राईआ। झगड़ा मुका के काल महाकाल, चरण कँवल दयां सरनाईआ। दीनां बंधप हो के दीन दयाल, दीनन आपणी गोद उठाईआ। जुग जन्म जो घालदे आए घाल, लेखे लावां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपन आपणे रंग रंगाईआ। माघ कहे मैं वेखणा खेल अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। प्रभू करवट बदल लै आपणी पीठ, पुश्त पुश्त नाल बदलाईआ। जुग चौकड़ी तेरी रीत, नित नवित वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गा के गए गीत, ढोले हुक्मे अंदर सुणाईआ। शिवदवाले मठ बणा मसीत, तेरा राह गए दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, चार वरन इक समझाईआ। आत्म परमात्म दस प्रीत, प्रीतम अंदरे गए समझाईआ। लहिणा देणा छड्ड के हस्त कीट, निवण सु अक्खर इक दृढ़ाईआ। कलमयां विच दस्स हदीस, हज़रत कर पढ़ाईआ। हे प्रभ, सब दा लहिणा देणा पूरा होया विच बीस इकीस, अगे लेखा रिहा ना राईआ। नवें जुग दी नवीं दे तरतीब, तऱा तऱा समझाईआ। तेरा खेल सदा अजीब, अजब निराला दे वखाईआ। जन भगतां वस करीब, भावें दूर होवे खुदाईआ। तेरे प्रेमीआं केहड़ी पढ़नी कुरान मजीद, काया काअबा दे सुहाईआ। तेरे उत्ते एहो उम्मीद, कामल मुर्शद लै मिलाईआ। बिना अक्खां करीए दीद, दीदा दानिस्ता नजरी आईआ। तेरी अक्खरां विच अगे सुणनी नहीं तमहीद, पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दे वखाईआ। साचे घर दा खोल्ह परदा, ओहला दे उठाईआ। राह दस्स गुरमुख किस बिध पौड़े चढ़दा, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। पैंडा मुके नौ घर दा, सुखमन टेडी बंक ना कोए अटकाईआ। ईड़ा पिंगल मूल ना अगे खड़दा, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। सहँस दल ना कोई अड़दा, दस्म दवारी अन्त ना कोए बणाईआ। तेरा भगत पहला कदम तेरे दवारे धरदा, जित्थे कर्म धर्म जन्म नज़र कोए ना आईआ। बिन रसना जिह्वा सुरती ढोला परदा, शब्दी नाद वजाईआ। बण के गोला तेरे घर दा, सोहला नानक इक्को गाईआ। झगड़ा मुक जाए चोटी जड़्ह दा, चेतन आपणी खेल वखाईआ। रंग वखा दे अगम्मी गढ़्ह दा, गढ़्ही चमकौर छड्ड के डेरा लाईआ। उत्थे गुरमुख गुरसिख तेरा कदे ना डरदा, भय भवजल नज़र कोए ना आईआ। ना जीउंदा ना कदे मर्दा, इक्को विच समाईआ। नित दर्शन करे हरि दा, जो हरि हर अंदर डेरा लाईआ। झगड़ा मुका दे कलयुग कल दा, कलेश रहिण कोए ना पाईआ। परभाव दस्स दे आपणे बल दा, बलधारी हो सहाईआ। लेखा वेख जल थल दा, महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। आसण जणा निहचल धाम अटल दा, सिँघासण सोभा पाईआ। जित्थे तेरा इक्को दीपक बलदा, आदि जुगादि ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर दे खुल्हाईआ। जन भगत कहे प्रभ खोल्ह दे आपणी गंढ, दौलत

१६३
१९

नाम वरताईआ। क्यों आत्म कीती रंड, परमात्म मुख छुपाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। घर स्वामी दे अनन्द, निजानंद प्रगटाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, नूरो नूर डगमगाईआ। कूड़ी क्रिया कर खण्ड खण्ड, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। सदा सुहेले दे संग, सगला संग बणाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर प्रभू तेरा गाउँदे सोहँ छन्द, दूजा राग ना कोए अल़ाईआ। इक्को दवारा रहे मंग, घर घर फेरी कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे लोकमात पराहुणे बण के खा के गए डंग, भण्डारा जगत वस्त समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सूरे सरबंग, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखां कलयुग अन्त अख़ीर, आख़र आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के हकीर, दर बैठे सीस निवाईआ। मैं शरअ तोड़ ज़ंजीर, शरीअत देणी बदलाईआ। नेत्र रो कहे कबीर, जुलाहा रिहा कुरलाईआ। प्रभू अंदरों बदल सर्ब ज़मीर, ज़ामन हो के लै छुडाईआ। तूं पातशाह ते भगत तेरे वज़ीर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां दे अंदर तेरी तस्वीर, बिन तसबी माला मन का मणका दे भवाईआ। उन्हां दे मन्दिर अंदर आपणे प्रेम नूं कर ताअमीर, तमअ कूड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। माघ कहे मैं वेखणी प्रभ दी सच तौफ़ीक, वाहद की जणाईआ। कवण सज्जण कवण रफ़ीक, फ़रीक कवण रूप बदलाईआ। कवण समझे धार बारीक, कवण नीत रिहा जणाईआ। कवण वेखे हक हकीकत, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे, अन्त कल वेख वखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सरनी ढहे, फड़ बाहों गले लगावांगा। चार कुण्ट दहि दिशा जो भगत सुहेला भाणा सहे, परदा ओहला आप उठावांगा। जो हरि सरनाई सतिगुर चरणी बहे, फड़ बाहों गले लगावांगा। झगड़ा चुका के तूं ते मैं, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ावांगा। प्रेम प्रीती अंदर कर के लै, मस्त खुमारी इक वखावांगा। सतिगुर पूरा शब्द इक्को है, पंज तत नाता जगत तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मार्ग इक लगावांगा। सच मार्ग इक लगाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। कल कल्की हुक्म वरताएगा। निरगुण जोती जोत डगमगाएगा। शब्द अगम्मी चोट लगाएगा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, सच सुच इक समझाएगा। परदा लाह के चौदां लोक, दो जहानां वेख वखाएगा। लख चुरासी दस्स के इक सलोक, साचा ढोला इक पढ़ाएगा। आत्म परमात्म दे के मौज, मजलस भगतां विच रखाएगा। जन भगतां दी आपे करे खोज, गुरमुख लभ्भण कोए ना आएगा। माया ममता कट के रोग, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाएगा। चिन्ता ग़म ना रहे सोग, भाण्डा भरम भउ भनाएगा। कर प्रकाश निर्मल जोत,

जोती जोत जोत रुशनाएगा। दर्शन देवे रोज़, रातीं सुत्यां दिने जागदयां बिन अक्खां नज़री आएगा। मंज़ल कोई ना रहे औखं, आपणी घाटी पार कराएगा। पढ़ना पए ना कोई पोथ, निरअक्खर जाप जपाएगा। नाम खुमारी अंदर कर मदहोश, मधुर धुन राग सुणाएगा। भाग लगा के काया माटी पोश, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले मेल मिलाएगा। जन भगतां मेल मिलावेगा। सज्जण सुहेल दया कमावेगा। रंग नवेल इक चढ़ावेगा। गुर चेल परदा लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावेगा। सच करनी कार करेगा। सन्त सुहेले गुरमुख वरेगा। आत्म परमात्म सेजा चढ़ेगा। सच दवारे आपे खड़ेगा। निरभओ भय विच कदे ना डरेगा। जीवत रूप कदे ना मरेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आपे करेगा। साची खेल खिलावांगा। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलावांगा। कर्म कर्म दा रोग कटावांगा। जन्म जन्म दा लहिणा झोली पावांगा। वरन बरन पन्ध चुकावांगा। साची सरन इक दृढ़ावांगा। जो गुरमुख सोहँ ढोला पढ़न, तिन्हां दा आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग वखावांगा। नेत्र खोल्ह के हरन फरन, निज लोचण अक्ख खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक प्रगटावांगा। साचा मन्दिर इक प्रगटावेगा। काया अंदरे अंदर जोड़ जुड़ावेगा।
डूँघी अन्धेरी कंदर पार लँघावेगा। मन मनुआ बन्न्ह के बन्दर, शब्दी डोरी तन्द उठावेगा। लेखा चुका के सूर्या चन्द्र, निरगुण नूर जोत रुशनावेगा। साचे नाम दी दस्स के बन्दन, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ावेगा। साचा दे के परमानंदन, निजानंद विच समावेगा। जो आया टुट्टी गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी गंढु पवावेगा। दीन दयाल सदा बख़्शंदन, बख़्शिश रहमत आप कमावेगा। जो दर दवारे आवे मंगण, वस्त अमोलक झोली पावेगा। चरण धूढ़ी दे के मजन, दुरमति मैल पाप धुआवेगा। सतिजुग साचा लग्गा लग्गण, पहली माघ खुशी मनावेगा। सतिगुर दीपक लग्गा जगण, चारों कुण्ट नूर रुशनावेगा। वज्जे वधाई उत्ते गगन, ब्रह्मण्ड खण्ड उठावेगा। जन भगतां भाग लगावे काया बदन, बदीआं तों आप बचावेगा। शब्दी हुक्म अंदर लग्गा सद्दण, कोटां सदीआं दे विछड़े जोड़ जुड़ावेगा। खेल वेखे मास नाड़ी हड्डुण, परदयां विच्चों पड़दे आप खुल्हावेगा। सच प्रीती अंदर रख के मग्न, पिछला लहिणा देणा मुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखावेगा। सिर आपणा हथ्थ रखावांगा। समरथ पुरख अख्वावांगा। बोध अगाधा नाम शब्द अकथ, अकथ कथ दृढ़ावांगा। इक्को दस्स के साचा जस, सिफ्त सालाही पन्ध मुकावांगा। जन भगतां अन्तर आत्म कर के वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ावांगा। झगड़ा मुक जावे रवि ससि, जलवा जोत नूर रुशनावांगा। लेखा मुक्का के तत अठ्ठ, नौ दर डेरा आपे ढावांगा। अमृत

आत्म धुर दा झट्ट, झिरना इक झिरावांगा। शब्द अगम्मी वज्जे नद, अनहद नादी नाद सुणावांगा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवावांगा। बिन गोपी काहन वखा के रास, मण्डल मण्डप राग वड्यावांगा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा चन्द चमकावांगा। चार वरन अठारां बरन बणा के इक जमात, अक्खर इक्को नाम पढ़ावांगा। भगत सुहेले कर के मेले वसां पास, दूर दुराडा पन्ध मुकावांगा। लेखे ला के पवण स्वास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह प्रगटावांगा। अगला राह आप जणाएगा। सो पुरख निरँजण दया कमाएगा। हरि पुरख निरँजण भेव खुल्लाएगा। एकँकार परदा लाहेगा। आदि निरँजण जोत रुशनाएगा। अबिनाशी करता वेख वखाएगा। श्री भगवान हुक्म वरताएगा। पारब्रह्म ब्रह्म समझाएगा। विष्नूं विश्व सेव कमाएगा। ब्रह्मा निउँ निउँ सीस झुकाएगा। शंकर धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाएगा। करोड़ तेतीसा भिक्खक, दर दरवेशा झोली डाहेगा। गुर अवतार पैगम्बर वखावे आपणी लिख्त, कलम शाही फेरा पाएगा। दीन दुनी वेख के इष्ट, सृष्ट सबाई खोज खुजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाएगा। कलयुग अन्तिम वेख वखावांगा। गुरमुख सन्त सुहेले बणा के साची बणत, बन्धन दूई द्वैत मिटावांगा। दे वड्याई विच्चों जीव जंत, जागरत जोत नूर रुशनावांगा। अन्तर आत्म बणा के बणत, बण खण्ड पैंडा पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखावांगा। साचा राह इक वखाएगा। त्रैगुण माया डेरा ढाएगा। पंज तत ना कोए वड्याएगा। प्रकृती बन्धन ना कोए रखाएगा। रिद्ध सिद्ध ना कोए भटकाएगा। मन वासना ना कोए हलकाएगा। मति मतवाली ना कोए बणाएगा। बुध बिबेक ना वण्ड वण्डाएगा। दूजी टेक ना कोए रखाएगा। अग्नी सेक ना कोए लगाएगा। अंदर भेत ना कोए समझाएगा। कूड़ा वेस ना कोए वटाएगा। लेखा लिख के गया गुरू दस दस्मेश, बिन पुरख अकाल दूजा नज़र कोए ना आएगा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, हम साजण जोड़ जुड़ाएगा। जिस दे अगे कलयुग अन्त गुर अवतार पैगम्बर होए पेश, पेशीनगोई अगली आपणे हथ्थ रखावेगा। बीस इकीसा कर के पूरा लेख, सदी चौधवीं पन्ध चुकावेगा। झगड़ा रहे ना कोई गणपति गणेश, दुर्गा इष्ट ना कोए समझावेगा। पूजा रहे ना शंकर शेष, शमांदान ना कोए जगावेगा। सजदा होए ना मुल्ला शेख़, बगल कुरान ना कोए उठावेगा। इक्को कलमा इक्को आदेस, सजदा इक्को इक जणावेगा। अबिनाशी करता सब दी बदल देवे रेख, ऋषीआं मुनीआं पन्ध मुकावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अन्तिम सब ने होणा धारी केस, धर्म दा धर्म इक बणावेगा। हुक्मे अंदर सारे लैणे लपेट, शब्दी गुरू खेल खिलावेगा। निरगुण बण के खेवट खेट, नईआ नौका नाम चलावेगा। कूड़ कुड़यारे राए धर्म दे कोल देवे भेज,

१६६
१९

अगे हो ना कोए बचावेगा। गुरमुख मानण सतिगुर साची सेज, जित्थे सुत्यां ना कोए उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप वरतावेगा। साची कल आप वरताएगा। अछल अछल्ल खेल खिलाएगा। कलयुग रहे कोई ना बल, बलहीण सर्ब बणाएगा। प्रभ दा भाणा ना जाए टल, मन्दिर टल्लीआं ना कोए खड़काएगा। कूड़ी क्रिया लूण वांग जाणा खर, हुक्मी हुक्म वखाएगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक बणाउणा सच्चा सर, सर अमृत आप सुहाएगा। सतिगुर चरण गुरू का घर, गुरदुआरा नज़र कोए ना आएगा। जिस मन्दिर गुरमुख जाए वड़, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढाएगा। इक्को नाम लए पढ़, कलमा इक्को इक जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाएगा। मेहर नज़र इक उठावांगा। दुनिया इशारीए कसर नाल उडावांगा। कूड़ी क्रिया कर के हशर, हैसीअत सब दी आप बदलावांगा। जन भगत ज़िंदगी करन बसर, बिस्तरे प्रेम हेठ विछावांगा। ओहनां दा नाम कर के नशर, नसीअत दो जहान जणावांगा। जिस दा चार जुग रहे असर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग इक्को हुक्म मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार इक कमावांगा। धुर दी कार कमावांगा। नर निरँकार अख्वावांगा। जोती जोत रुशनावांगा। शब्द चोट लगावांगा। कोटन कोटि खपावांगा। सोचन सोच सर्ब मिटावांगा। जो प्रभ दर्शन नूं रहे लोच, तिन्नां निज नेत्र इक खुल्हावांगा। परदा लाह के लोक परलोक, सलोक इक्को इक समझावांगा। जन भगतो किसे कम्म नहीं आउणी मोख, मुक्ती चरणां हेठ दबावांगा। नाता जोड़ के इक्को जोत, पुरख अकाल मिलावांगा। जिस दी ना कोई वरन ना कोई गोत, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधावांगा। सच दवारा साचा कोट, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ वण्ड ना कोए वण्डावांगा। हउमें रहे कोई ना रोग, दूई द्वैत डेरा ढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल इक वरतावांगा। साचा खेल इक वरतेगा। पुरख अकाल निरगुण परतेगा। गोबिन्द लहिणा लेखा देवे सरसे दा। लख चुरासी जीव जंत परखेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जवाब देवे ना कोई प्रभू दे परचे दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा पूरा करे पिछले अगले अरसे दा। पिछला अगला अरसा आप लँघावेगा। जो कीता कौल इकरार कन्ढे सरसा, सालस हो के पूर करावेगा। पुरख अकाल दा पहला आ गया बरसा, बारी कुण्डा लाहवेगा। वेखे खेल दो जहान घर घर का, ब्रह्मण्ड खण्ड परदा आप उठावेगा। जगत जहान वेखे सड़दा, अग्नी तत तपावेगा। गुरमुख भगत मंज़ल वेखे चढ़दा, चढ़दीआं कलां आप जणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठावेगा। मेहर नज़र आप उठाएगा। सतिजुग सुहञ्जणी वेख के फ़सल, फ़ज़ल रहमत आप कमाएगा।

चार कुण्ट सब दे सिर ते कूके अज़ल, उज्जल मुख ना कोए रखाएगा। जीव जहान माया ममता दज्जण, अमृत मेघ ना कोए बरसाएगा। अगले साल सारे उठ उठ भज्जण, भज्जयां फड़ ना कोए बहाएगा। पुत्रां माँ जाए कोई ना सद्दण, पिता पूत ना गोद उठाएगा। शाह सुल्तानां फेरे नग्न, ओढण सीस ना कोए टिकाएगा। लेखा जाणे पहलां अदन, अदालत आपणी होर लगाएगा। उस तों अगला होर पत्तन, नौ सौ मील वण्ड वण्डाएगा। स्यासत दा चले कोई ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म सुणाएगा। सुखीं लोकमात ना वसण, विसल धुर दा नाम वजाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी साची कार कमाएगा। माघ कहे मैं होया मंगत, दर दरवेश फेरा पाईआ। प्रभू किस बिध करना अन्त, अन्तिम दे जणाईआ। कवण उधारें साचे सन्त, सतिगुर दे सरनाईआ। कवण नाम संदेसा मंत, मंत्र दे दृढ़ाईआ। कवण उत्तम सृष्ट विच जीव जंत, बिबेक नज़री आईआ। कवण बोध अगाधा दिसे पंडत, जो करे सच पढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं वेखां भगतां संगत, जो आत्म परमात्म संग निभाईआ। नाता तोड़ के स्वर्ग जन्नत, ओट इक्को इक तकाईआ। सृष्टी विच्चों कर के हिम्मत, पुरख अकाल रहे मनाईआ। मन वासना रहे कोई ना इल्लत, कूड़ा रंग ना कोए चढ़ाईआ। मानस जन्म होए ना जिल्लत, खुआरी दए मिटाईआ। साचे शब्द नाम दी दे के खिल्लत, पोशाक प्रेम प्यार पहनाईआ। होण देवे ना हराम निमक, नमस्ते इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा दए उठाईआ। माघ कहे मैं अग्गा वेख्या हो के नेड़े, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। सृष्टी विच पैण वाले झेड़े, झगड़ा होए लोकाईआ। प्रभू देण वाला उलटे गेड़े, लट्ठ गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे भवाईआ। कूड़यां साधां दे रहिणे नहीं डेरे, झूठा गुरू ना कोए अख्वाईआ। सब दे फड़ के डोबणे बेड़े, हुक्मे अंदर दए रुढ़ाईआ। शब्दी हुक्म अंदर आ गए घेरे, अगे सके ना कोए छुडाईआ। धर्म राज दे अगे ढह ढह होणे ढेरे, डेरी अवर ना कोए लगाईआ। जे पुछे कोई केहड़े केहड़े, जो बिना पुरख अकाल दे इष्ट रहे मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्म दे के गए बथेरे, जुग चौकड़ी नित नवित फेरीआं पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग काया देणी बदलाईआ। कलयुग काया बदलणी कूड़ा कपड़, लोकमात रहिण ना पाईआ। तीर्थ तट नज़री आउणे छप्पड़, अमृत रस ना कोए वखाईआ। कलयुग जीव होए बगले बप्पड़, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। कूड़ कुड़यार विकार डड्डां रहे पकड़, मन वासना चुंझ वधाईआ। मन वासना भरे चिक्कड़, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। पुरख अकाल दा करे कोई ना ज़िकर, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। धुर दे मालक दा आया किसे ना फ़िकर, फ़िकरे सिफ्तां वाले गाईआ। कलयुग अन्त गोबिन्द दा

१६८
१९

लभ्भदे फिरदे बाज तित्तर, गोबिन्द दी आस ना किसे रखाईआ। मन वासना विच गए विच्छड़, विछड़यां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। हउमे हंगता कीते भिट्टड़, एका रंग ना कोए समाईआ। तीर्थ तटां जांदयां थल्लयों घस गए छित्तर, टुट्टे जुत्ते कम्म किसे ना आईआ। वैरागी त्यागी बैरागी हो के घरों गए निकल, बणखण्ड फेरीआं पाईआ। जां तक्कया ते पित्तल दा पित्तल, पारस रंग ना कोए छुहाईआ। जगत पूजा पाठ नाम सिमरन जोग अभ्यास कर के काया माटी बाहरों करदे सिकल, अन्तर रंग ना कोए चढ़ाईआ। सील सडोल छैल छबीले बण के बणदे बांके चित्तर, चित वित ठगौरी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वरदाता इक्को नज़री आईआ। माघ कहे मैं वेखां अगला हाल, हालत दिसे लोकाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलमयां वालयां ना कोए बचाईआ। कूड़ा वज्जणा ताल, तलवाड़ा दए दुहाईआ। धर्म राए लेखा रिहा वखाल, चित्रगुप्त वरका वरका उलटाईआ। लाड़ी मौत पावे धमाल, नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। वाहवा मेरा अगला आउण वाला साल, प्रभ सालम हुक्म देणा वरताईआ। मैं कूड़ कुड़यारे लैणे भाल, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। जो गुरू बाणी दे बणदे रहे दलाल, विचोले जगत अख्वाईआ। जो झटका खांदे रहे हलाली कर हलाल, हलवा सब दा देणा बणाईआ। कोई ना पुजे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, अगे गोबिन्द खण्डे नाल डराईआ। हुक्म मन्ने पुरख अकाल, देवणहार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर वेख वखाईआ। माघ कहे मैनूं दिसदा होर खटका, भय भउ नज़री आईआ। किसे लहिणा समझया ना पूरे सतिगुर दा, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। मार्ग उत्ते कोई ना तुरदा, छत्ती राग गा गा ऐवें जन्म रहे गवाईआ। बिना मुर्शद दे मुरीद मुर्दा, माता दा जन्म कम्म किसे ना आईआ। सदी चौधवीं चौदां लोक दिसे रुढ़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। साचे प्यार अंदर मुहब्बत विच कोई ना जुड़दा, मन वासना सारे रहे गाईआ। किसे नूं हथ्थ ना आया वासी अनन्दपुर दा, जो शब्दी गोबिन्द रूप वटाईआ। जिस ने खेल करना कलयुग सतिजुग चक्की पुड़ दा, पीसे सर्ब लोकाईआ। फेर राखी करनी नहीं किसे दुर्गा, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए सहाईआ। तेई अवतार नाल कोई ना तुरदा, सारे बैठे सीस झुकाईआ। अगे वेख्यो हाल शुरु दा, जो शरीअत दए बदलाईआ। हुक्म चलणा इक्को गोबिन्द सच्चे सतिगुरू दा, दूजी वण्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। माघ कहे मैं वेख्या हरि निरँकार, जोती जाता नज़री आईआ। जिस दा शब्द गुरू सिक्दार, शहिनशाह अख्वाईआ। नाम खण्डा कटार, लुहार तरखाण ना किसे घड़ाईआ। हुक्म चले सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग आ गई अन्तिम वार, वारता सब दी दए सुणाईआ।

कूड़ी क्रिया कर नाकार, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। पतिपरमेश्वर हो तैयार, त्रैगुण अतीता फेरी पाईआ। परवरदिगार सांझा यार, याराना इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। साचा रहबर दस्से राह, रास्ता बरास्ता रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द होए मलाह, बेड़ा इक्को दए वखाईआ। इक्को संदेसा देवे धुर दा नाँ, नर निरँकारा दए जणाईआ। इक्को दस्से पिता माँ, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। एथे ओथे दो जहानां पकड़े बांह, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। साचा मार्ग देवे ला, समुंद सागर खोज खुजाईआ। लेखा जाणे थल अस्गाह, ब्रह्मण्ड खण्ड परदा लाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर करन वाह वाह, वाहिगुरू तेरी सरनाईआ। सोहँ रूप ल्या प्रगटा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा ला, विश्व हुक्म दिता वरताईआ। जिस नूं समझया कोई ना रा, रारा मम्मां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं गा ना सकी कोई कलाम, कलमयां विच ना कोए शनवाईआ। जिस दा दे ना सक्या कोई पैग़ाम, हुक्मी हुक्म सीस निवाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, परवरदिगारा नूर खुदाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, आप आपणा वेस वटाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी फेरा पाईआ। जिस दा सम्मत होया रवां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा सुणो दो जहां, परम पुरुख रिहा दृढ़ाईआ। हेठां उपर उपर हेठां करो धिआं, बिना अक्ख अक्ख मिलाईआ। आपणा घर छड्डो गराँ, गिरहा बन्द ना कोए बंधाईआ। अगला हुक्म सुणो नवां, नव नौ चार चार पन्ध चुकाईआ। धुर फ़रमाना शब्दी कहां, रसना जेहवा ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हुक्म सुणाईआ। हुक्मे अंदर साची रीत, रीतीवान आप दृढ़ाईआ। पुरख अकाल करो प्रीत, प्रीतम मिले बेपरवाहीआ। जो वसे धाम अनडीठ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा इक्को ढोला गीत, इक्को करे पढ़ाईआ। जिस ने लेखा मुकाउणा मन्दिर मसीत, मसला हक दए समझाईआ। मुरीदां अंदर भर तौफ़ीक, मुर्शद दए मिलाईआ। इक्को छत्र वखावे सीस, छत्रधारी रहिण कोए ना पाईआ। नज़री आए हरि जगदीश, करता करतार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भावी भउ विच जणाईआ। माघ कहे मैनूं दूरों दिसदी भावी, भज्जे वाहो दाहीआ। गुर गुर अर्जन लेखा दिसे उत्ते रावी, राउ रंक दए दुहाईआ। सारी दृष्टी होणी बावी, बौरी रूप वटाईआ। ना कोई जित्ती ते ना कोई हारी, हार जित्त समझ किसे ना आईआ। अगले साल इक दूजे दी सब ने हथ्थ विच फड़नी दाढ़ी, दाअ हथ्थ ना किसे वखाईआ। जगत स्यासी मन दे वगारी, बुद्धी वाली करन चतुराईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के झाती किसे ना मारी, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। छत्रधारी अन्तिम बाज़ी गए हारी, सच

सरदारी ना कोए दवाईआ। आत्म परमात्म बिना रही कुँवारी, जगत वासना वेसवा रूप वटाईआ। कोटन कोटि मन्दिरां दे बैठे पुजारी, जो कागां वांग विष्टे रहे फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैज रिहा संवारी, जुग जुग आपणी दया कमाईआ। माघ कहे मैनूं थोड़ी दिसदी अग्ग, अग्गा नज़र कोए ना आईआ। तृखा लग्गी कूड़ी जग, तृष्ना सके ना कोए मिटाईआ। हाजीआं भुल्लणे काअबे वाले हज्ज, मदीने मदद कोए ना आईआ। जिधर वेखो हाए तोबा रब्ब, याआमीन तेरी सरनाईआ। मस्जिदां अंदर रोणे सब, मठ्ठ देण दुहाईआ। मन्दिर जाणे ढठ्ठ, इट्ट नाल इट्ट ना कोए जुड़ाईआ। लेखा मुक्कणा अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। लाटां वाली जोत जगणी ना लट लट, पत्थरां दे सत्थर देणे बणाईआ। शाह सुल्तानां विछाउणे मिलणे नहीं सेज पट्ट, पटने वाले देणे मिटाईआ। जो भगत सुहेले प्रभ मिलण दा कर के बैठे हठ्ठ, फड़ बाहों लैणे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। माघ कहे मैनूं पैंडा दिसदा नहीं दुराडा, बौहड़ी बौहड़ी दयां दुहाईआ। सतिगरु नज़री आए डाहढा, जो डंका रिहा वजाईआ। जन भगतां नूं मिलणा पुरख अकाल दादा, गोबिन्द पिता बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म जुड़ना साका, साख्यात होए सहाईआ। कलयुग अग्नी होवे राखा, तत्ती वा ना लागे राईआ। देवे नाम सच सुगाता, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। काया मन्दिर अंदर करे वासा, वासना कूड़ी दए कढाहीआ। जन भगतो श्री भगवान उत्ते रखयो सच विश्वासा, विषयां तों लए बचाईआ। कलयुग अन्तिम उलटण वाला पासा, पासा सके ना कोए बदलाईआ। जिस कारन जुझार नूं दिता नहीं सी पाणी ग्लासा, उह ग्लास हथ्थ किसे ना आईआ। एह खेल होणा ख़ासा, ख़ास दए समझाईआ। कुछ आसा रख के गया दुरबाशा, कृष्न नाल सलाह पकाईआ। कुछ राम हणवन्त नाल करदा रिहा बाता, कलयुग अन्त अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा जगत तमाशा, निरगुण निरवैर निराकार नज़री आईआ। माघ कहे मैनूं दिसदा अगे अन्ध, अन्धेरा नज़री आईआ। कलयुग मुक्कण वाला पन्ध, पाँधी बैठे ढेरीआं ढाहीआ। झगड़ा मुक्कणा सूरज चन्द, तारा मण्डल ना कोए समझाईआ। साथीआं देणा नहीं कोई संग, संगल शरअ देणे तुड़ाईआ। कलयुग जीव दर दर फिरने मलंग, मंगतयां ख़ैर कोए ना पाईआ। सिर ते चुक पापां दी पंड, भज्जण थाउँ थाँईआ। टुट्टी कोई ना सके गंढ, गोबिन्द नालों होई जुदाईआ। चोरां यारां ठग्गां डाकूआं नाल लै के चढ़दे जंञ, आत्म परमात्म दे बदले फेरे माया ममता वाले लै के करन जगत कुड़माईआ। विषयां विच्चों लभ्भदे फिरदे किथे वासी पुरी अनन्द, किस्सयां विच्चों गा गा खुशी मनाईआ। दया सिँघ वांग चढ़या किसे ना रंग, दीन दयाल सीस ना कोए निवाईआ। माया ममता कारन

बणया ढंग, तरीकयां नाल जगत रहे भरमाईआ। अन्तिम सब दी नंगी होणी कंड, वेला नेड़े हो हो रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मरजीवत रूप ना कोए वखाईआ। माघ कहे मैनूं आउँदा वड्डा हौका, हाए हाए सुणाईआ। कलयुग डुब्बण वाली नौका, खेवट खेटे पल्लू गए छुडाईआ। जन भगतां प्रभ मिलण दा चाउका, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परम पुरख भेव खुल्हाईआ। छब्बी पोह कहे माघ तूं की दिती दलील, दलावर हो के दिता सुणाईआ। पुरख अकाल ने किसे दी सुणनी नहीं अपील, हुक्म सके ना कोए बदलाईआ। पैगम्बर रहिण नहीं दिता वकील, जो शरअ दी करे लड़ाईआ। शब्दी कर के हुक्म ताअमील, दर दुआर लए बुलाईआ। दीन मज़्हब दी रहिण नहीं देणी फ़सील, फ़ैसला हक सुणाईआ। चार जुग दी दस्स रिहा तफ़सील, परदयां ओहलयां विच्चों कढाहीआ। कलयुग अन्त करना तबदील, सतिजुग सच लए अंगड़ाईआ। सति धर्म प्रगटाउणा उत्ते ज़मीन, ज़ामन हो के वेख वखाईआ। चाढ़ना रंग नवीन, नव नौ चार खोज खुजाईआ। हुक्म दे के नर मदीन, मुद्दा देणा समझाईआ। भगतां दे यकीन, यक हुक्म लैणा मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर सच वेख वखाईआ। छब्बी पोह कहे बोल ना देवीं बोल कौड़ा, पहली माघ दयां जणाईआ। पहली माघ कहे मैं पुरख अकाल गोबिन्द दा इक्को तक्कया जोड़ा, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। जिस सस्से उपर ला के होड़ा, निरगुण सरगुण दिता मिलाईआ। हँ ब्रह्म आपे बौहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। गुरू गोबिन्द दा किसे ने समझया नहीं दोहरा, जो तीर भथ्था गया समझाईआ। घर विच फिरदे वांग चोरा, चोरी चोरी संन्ह लगाईआ। सिफ्तां करदे नीला घोड़ा, पशूआं लिद हटाईआ। गोबिन्द रूप बिना तत्ता तों नवां नकोरा, जन्म मरन विच ना आईआ। पुरख अकाल दा बांका छोहरा, जवानी बुढेपा बाल ना कोए प्रगटाईआ। पिच्छे होर ते अगे होरा, होर दा होर रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा वरताईआ। माघ कहे छब्बी पोह ना हो हैरान, सच दयां दृढ़ाईआ। मैं तक्कया उह भगवान, जिस नूं जलवा नूर कहे खुदाईआ। जिस दा इक्को इक ईमान, अवरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दरगाह साची सच मकान, मकबरयां विच फेरा कोए ना पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा निक्का जिहा निशान, इशारयां नाल पढ़ाईआ। तत्तां उत्ते कर एहसान, असल वसल दिता कराईआ। चार जुग विच गुर अवतार पैगम्बर थोड़ी जही मीज़ान, जिन्हां नूं मज़ा आपणा दिता चखाईआ। बाकी दे अंदर भर के हँकार गुमान, ग़मी दे नश्यां विच डुबाईआ। थोड़े भगत कर बलवान, अठारां दिती वड्याईआ। निरगुण सरगुण जामा धर के आउँदा रिहा इन्सान, पंजां तत्तां वण्ड वण्डाईआ। नाम कलमे दे फ़रमान, फ़रमांबरदार हो के सेव

कमाईआ। भविख्त संदेसा दे के जगत जहान, परदा मात उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट हो गुण निधान, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुदरत दा कादर वेख वखाईआ। माघ कहे वेखीं पोह किते बचन ना कढ्ढीं बेहूदा, बहिबूदी दयां जणाईआ। गुर अवतार इक्ठे हो के आपणा घड़न मनसूबा, इशारा इशारे नाल मिलाईआ। वेखो की खेल करे पुरख अकाल मौजूदा, निरगुण निरवैर शहिनशाहीआ। जिस दा कलमा पढ़दे रहे हज़ारा दरूदा, सिफ्तां नाल सालहीआ। उह खेल करे हकीकत वाला महबूबा, महिज़ आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खिलाईआ। छब्बी पोह कहे माघ वेखीं की होणा ग़ज़ब, ग़रज जगत रही ना राईआ। प्रभ दा भुल्लणा अदब, बेअदबी विच लोकाईआ। झगड़ा दीन मज़्ब, शरअ करे लड़ाईआ। प्रभ दे छोहे कोई ना कदम, कदमबोसी ना कोए कराईआ। मुहब्बत उपजे ना किसे बदन, प्यार प्यार ना वण्ड वण्डाईआ। अंदर शमां होई मधम, नूर चिराग़ ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म दे वरताईआ। माघ कहे ना दुनी करीं मज़ाक, मश्वरे नाल जणाईआ। किसे दा रिहा नहीं इखलाक, आखर दए दुहाईआ। मुरीद मुर्शद ना कोए इतफ़ाक, जगत मुलाणे रहे कुरलाईआ। ताअवीज़ लिखदे कलम दवात, दाअवयां नाल जणाईआ। सजदे करदे विच जमात, अंदर समझ किसे ना आईआ। बग़लीं रखण किताब, कुतबख़ाने परदा ना कोए उठाईआ। रसना जिह्वा लैण स्वाद, निज नग़मा कोए ना गाईआ। मुर्शद तों हो के लाजवाब, यादगार आपणी रहे बणाईआ। वेखो की खेल हुन्दा विच बग़दाद, बग़लीआं गलां विच लटकाईआ। तिन्न सौ तरेठ मील ते होर फ़साद, लहिंदी दिशा वज्जे वधाईआ। एह वी प्रभू थोड़ा थोड़ा देण लग्गा प्रशाद, मूर्ख मूर्खां नाल टकराईआ। जन भगत कोई ना जाए गुआच, सूफ़ी सन्त फ़कीर उठाईआ। ईसा वेखण लग्गा आपणी घड़ी कलाक वाच, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर कार कमाईआ। छब्बी पोह कहे मैनूं नज़र आया जलवा, जलवागर करे रुशनाईआ। जिन्हां ने छुरी हलाली खाधा हलवा, हाल हाल कर कुरलाईआ। मन वासना दा होण वाला बलवा, बालू रेत रिहा तपाईआ। मदीने कोल होणा जलवा, मुद्दत पिच्छो बारी आईआ। मक्के भुल्लणा कलमा, कुल्ल देण दुहाईआ। नज़र आए कोई ना उल्मा, इलम तालीम ना कोए वड्याईआ। माटी ख़ाक सब ने रुलणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। अन्त कीमत पैणी कोई ना मुलना, मुला शेख़ मुलम्मा दए बदलाईआ। आब लग्गे किसे ना बुल्लां, बेआब रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म धुर दा दए वरताईआ। माघ कहे मैनूं दिसदा दक्खण पच्छिम पूरब उत्तर, चारे कुण्ट नज़री आईआ। माँ ख़ाली गोद करे

पुत्तर, पिता पूत ना संग निभाईआ। किसे हथ्थ नहीं आउणा टुक्कर, टुकड़े मंगे ख़लक खुदाईआ। भाई भाईआं ताईं लुट्टण, कन्त नार जाण तजाईआ। जगत कूड़े नाते छुट्टण, प्रेमी प्रेम ना कोए बणाईआ। संगी साथी मूल ना पुछण, उंगली हथ्थ ना कोए मिलाईआ। माँ पुत्त इक दूजे तों रुस्सण, धी जवाई ना कोए कुड़माईआ। थाँ मिले कोई ना लुकण, लोक परलोक दए दुहाईआ। नेत्र नीर रो रो फुट्टण, कूक कूक सुणाईआ। क्यों प्रभू सब दी जड़ आयों पुट्टण, पटने वाला नाल मिलाईआ। शेर हो के आयों बुक्कण, नाम शब्दी भबक लगाईआ। सन्त सुहेले आयों गोदी चुक्कण, फड़ बाहों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। माघ कहे मैं वेख्या पिच्छा मगर, पूरब लहिणा नज़री आईआ। गोबिन्द गोदावरी कन्ढे पाया सी सगण, पुरख अकाल अगे सीस निवाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम लग्गों बदलण, मेरी तेरे नाल होवे कुड़माईआ। जिस वेले ब्रह्मण्ड खण्ड लग्गों लँघण, मेरा आपणे आप विच लैणा मिलाईआ। मैं वजावां तेरे नाम दा मृदंगण, दो जहान करन शनवाईआ। वेखां खेल विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया मेटां पखण्डण, माया ममता मोह मिटाईआ। भगतां देवां इक अनन्दन, आत्म परमात्म रस वखाईआ। धूढ़ी टिक्का लावां चन्दन, दुरमति मैल धवाईआ। परम पुरख तेरी दस्सां बन्दन, बन्दना इक समझाईआ। जिस नूं समझे ना कोए ब्रह्मा ब्राह्मण, पारब्रह्म तेरा अन्त कोए ना आईआ। जुग चोकड़ी कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर भावें क्यों ना जम्मण, बिना गोबिन्द पुरख अकाल पुत्त ना किसे बणाईआ। जो बेड़ा गुरमुखां आया बन्नृण, फड़ आपणे कंध उठाईआ। एह लेखा पिछला दुष्ट दमन, दमदमे दे के गया गवाहीआ। गोबिन्द मुड़ के माता घर ना आवे जम्मण, शब्द गुरू बेपरवाहीआ। बिना सतिगुरू किरपा कदे ना हुन्दा अमन, सांतक सति ना कोए कराईआ। भाणे अंदर सारे कम्बण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार रिहा प्रगटाईआ। माघ कहे मैं गया जाग, दीन दयाल दया कमाईआ। घर वेख्या कन्त सुहाग, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जिस दी इक अगम्मी आवाज़, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म खोल्हे राज़, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। धुर संजोग करे काज, विजोग लेखा दए मुकाईआ। आपे सौहरा भईआ बण दामाद, आपे आप करे कुड़माईआ। आपे स्वाल आपे जवाब, जवाबतलबी आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी रच रच काज, करनी दा करता वेख वखाईआ। आपे सर्ब व्यापी आपे होए वाहद, आपे घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी कार कमाईआ। माघ कहे मैं वेख्या परम पुरख निहकर्मी, कर्म कांड नज़र कोए ना आईआ। जिस दी धार कदे ना जन्मी, जोती जोत करे रुशनाईआ। वासा करे ना वरनी बरनी, वण्ड

हिस्सा ना कोए रखाईआ। जिस ने तुक कदे कोई नहीं पढ़नी, ढोला नाम ना कोए गाईआ। जो बख्शीश करदा सच प्रीती इक्को चरणी, चरण सरन दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल करनी वेख वखाईआ। छब्बी पोह कहे मैं मुकदा वेख्या कलयुग कलेश, वक्त सुहञ्जणा नेड़े आईआ। शब्दी गुरू प्रगट हो के दस दस्मेश, दहि दिशा फोल फुलाईआ। जिस दे अगे कोई चलणी नहीं पेश, पेशवा सारे देणे मिटाईआ। उस वसणा गुरमुखां दे देश, जिस दी कूट नज़र किसे ना आईआ। सदा घर रहे हमेश, हमसाजण लए बणाईआ। खुशी होवे पेख पेख, नेत्र नैण अक्ख मिलाईआ। बिना कलम शाही तों बदल देवे रेख, रेख भेख दए गवाईआ। जिधर तक्कण ओधर नज़री आवे एक, एकँकार नूर अलाहीआ। मालक धुर दा नर नरेश, शहिनशाह भूप अख्वाईआ। उह कलयुग अन्तिम देस छड्ड के लोकमात आया परदेस, परदेसी गुरमुख लै के देस विच वसाईआ। जित्थे नज़र ना आवे विष्नूं सांगोपांग सुता शेष, ब्रह्मावेता ब्रह्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। छब्बी पोह कहे माघ वेखीं करीं ना जलदी, मैं सच दयां दृढ़ाईआ। मैं उत्तर वेखां अग्ग बलदी, बलीदान देवे लोकाईआ। जोत अकालण हुक्म सुनेहड़ा घलदी, घड़ी पल हुक्म मनाईआ। खेल होणी जल विच जल दी, थल विच थल देण दुहाईआ। सज़ा मिलणी सब नूं कीते फल दी, प्रभू दग़ा ना कोए कमाईआ। कीती करनी ना किसे तों टल्दी, गुर अवतार पैगम्बर बचया रहिण कोए ना पाईआ। की हालत होई बल दी, नौ सत्त भेंट चढ़ाईआ। एह खेल अछल अछल्ल दी, जो राम बणां विच फिराईआ। एह धार ओस प्रबल दी, जो काहन गोपीआं विच नचाईआ। एह धार ओस अटल दी, जो मूसा मूँह दे भार सुटाईआ। एह खेल ओस मल्ल दी, जो ईसा फट्टयां उत्ते दिता लटकाईआ। एह धार ओस सलल्ल दी, जो मुहम्मद कलमा गया दृढ़ाईआ। एह विचार ओस अटल दी, जो नानक निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। एह शुमार ओस मल्ल दी, जो गोबिन्द खण्डा गया खड़काईआ। अगे खेल वेखणी जगत दल दी, जगत दलिद्रीआं दए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोजणहारा थाउँ थाँईंआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बलिहारी सदके, सद सद वार खुशी मनाईआ। प्रेम प्रीती दस्सां गुरमुख सज्जण लभ्भ के, रीती नीती विच्चों बदलाईआ। बाहों पकड़ां भज्ज भज्ज के, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। माण देवां उत्ते जग दे, जागरत जोत कर रुशनाईआ। झगड़े मुका के जनेऊ तग दे, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। लेखे मुका के सड़नी अग्ग दे, जलधारा तों लवां बचाईआ। जो हरि सरनाई लगदे, लगां मातर पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। उह हँस बण गए रूप कग्ग दे, सोहँ ढोला गाईआ। बिन कदमां तों अगे वधदे, पन्ध विच ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कमाईआ। माघ कहे प्रभ करन लग्गा मेहरवानी, मेहरवान नज़र उठाईआ। लहिणा देण लग्गा गोबिन्द दी कुरबानी, करबले वाले परे हटाईआ। सति दवारे खवाउण लग्गा महिमानी, नाम भण्डारा इक वरताईआ। चार जुग दा झगड़ा मेटण लग्गा दीवानी, फ़ैसला हक देवे सुणाईआ। जन भगतां दी आत्म रहे ना कोए बेगानी, बेवा रूप ना कोए वखाईआ। लहिणा देणा चुकावे सुत भानी, अर्जन अरज़ इक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ठाकर मेरे स्वामी, समां देणा बदलाईआ। गुरमुखां दी झोली पाउणी नेकनामी, निक्कयां तों वड्डे देणे बणाईआ। बेशक तेरी सृष्टी सदा फ़ानी, लासानी तेरी मेहर नज़री आईआ। साचयां भगतां दी लेखे लाउणी लोकमात जवानी, जमां तों लैणा छुडाईआ। नाता जोड़ के सांझा बाहमी, इतमीनान देणा कराईआ। तेरा भगत प्रभू किसे दी कटे ना कदे गुलामी, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। तूं पुरख अकाल धुर दा अनामी, अनाम एहनां दी झोली देणा पाईआ। बिना गुरसिखां सतिगुर दी सारे करदे बदनामी, जो पढ़ के सुण के रस्ता जाण भुलाईआ। ओह गुरमुख नहीं गुरू घर दे हरामी, नादी सुत ना कोई अख्वाईआ। भावें पंडत होवे भावें होवे ज्ञानी, इश्नानी सार कोए ना आईआ। भावें धोती बन्ने तहिमत भावें पावे पजामी, पैंट हैट कम्म किसे ना आईआ। तूं मालक ख़ालक सब दा अन्तरजामी, लख चुरासी वेखें चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्त अन्धेरी शामी, शमशान भूमी दिसे लोकाईआ। तूं प्रभू भगतां नूं मिलें नाल आसानी, मिल के एहसान ना कोए चढ़ाईआ। क्यों एहनां गोबिन्द पिच्छे दिती कुरबानी, आप आपा वार वखाईआ। सेवा करी महानी, सीस जगदीश भेंट कराईआ। झूजे विच मैदानी, मुद्दा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। माघ कहे दुनीदारो मैं कोई करदा नहीं मख़ौल, मसख़रयां वाला रूप ना कोई बदलाईआ। गोबिन्द वाला पूरा होया कौल, इकरारनामा वेख वखाईआ। पुरख अकाल निरगुण जोत प्रगट हो के उपर धौल, धरत धर्म दोवें वेख वखाईआ। सृष्टी रही डोल, डांवाडोल लुकाईआ। ममता दा प्या घोल, माया रही लड़ाईआ। रंग चढ़या ना किसे काया चोल, चोले विच्चों चोली ना कोए बदलाईआ। सब दा निकलणवाला पोल, पोपां दे पड़दे दए उठाईआ। कोई ग्रन्थी पन्थी मुल्ला शेख़ पंडत रहिण ना देवे गोल, गोलक ख़ाली दए कराईआ। शब्दी कलमा शरारतां नूं मारे धौल, धक्का धमाके वाला लगाईआ। कूड़ी क्रिया विच देवे रोल, रोल नम्बर सब दे दए भुलाईआ। प्रीती रहिण ना देवे चन्द चकोर, जो मस्सया वाली रैण दए दुहाईआ। थोड़ा जिहा हलूणा देणा कोल पशौर, पेशावर पेशतर दए समझाईआ। अद्धो अद्ध कर के कमज़ोर, एहदा लेखा अगे दए दृढ़ाईआ। चार कुण्ट अन्धेरा घनघोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रभ दी किसे नाल नहीं कोई खोर, करमां दी दए सज़ाईआ। जन

भगतां दी सदा लोड़, जुग जुग वेख वखाईआ। अन्तिम वेले जाए बौहड़, ध्रू प्रहलाद रिहा समझाईआ। आत्म परमात्म नाता लए जोड़, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे कौड़, मिठ्ठा रस अमृत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। माघ कहे मैं कुछ दस्सण वाला कहाणी, कहावत अगली दयां जणाईआ। डूँग्घी धार दा उबलण लग्गा पाणी, अग्नी अग्ग लगाईआ। खेल होणी घमसाणी, सोहणा रंग चढ़ाईआ। चार कुण्ट बेआरामी, आरामगाह ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। माघ कहे मैं वेखणा खेल रोज़े शब, शबाबे शबूर अज़ीमुल शान नज़री आईआ। मुहम्मद हुजरे हबाब किहा हब्ब, महबूब महिराब बेमिसाल नज़री आईआ। कदमे कदीम जिस दा अदब, जलवा जलाल ज़ाहर ज़हूर ज़र्रे ज़र्रे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दानशीन परदा दए उठाईआ। माघ कहे कुछ हुक्म देवे राम, न्यारा सब तों रिहा जणाईआ। जिस खेल करना तमाम, तारा मण्डल दए दुहाईआ। कलयुग करनी करनी नाकाम, नकारा कूड़ देणा बणाईआ। सब दे उत्ते ला के अलज़ाम, फतवा इक्को देणा समझाईआ। तसीं भुल्ल गए पैगम्बरां दा पैग़ाम, कलमे वाली कलाम समझ किसे ना आईआ। अन्त होणा पैणा बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। राए धर्म दे बणना पैणा गुलाम, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ। अन्त अख़ीरी भावें वुज़ू कर लओ भावें इश्नान, बुधू सारे नज़री आईआ। रोणा पए विच बीआबान, सिर छत्र ना कोए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सवाधान दए कराईआ। छब्बी पोह कहे प्रभ रहिण नहीं देणी पगडण्डी, मार्ग इक्को दए लगाईआ। सति धर्म दी पावे कोई ना वण्डी, सच सच दए समझाईआ। मन वासना रहे ना कोए पखण्डी, ममता मोह ना कोए वधाईआ। भेव खुल्ह के चन्द नौ चन्दी, नव नौ चार दए समझाईआ। वासना रहिण ना देवे गंदी, सुगंधी इक्को दए भराईआ। दीन मज़्हब दी तोड़ के पाबन्दी, कामल मुर्शद दए मिलाईआ। नेत्र नैण अक्ख रहिण ना देवे अन्धी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। परम पुरख परमात्मा आदि जुगादि जुग चौकड़ी बड़ा ढंगी, आपणा तरीका ना किसे समझाईआ। गोबिन्द बणा दे इक भुयंगी, बिना भुजां तों दए लड़ाईआ। सूरबीर बलवान बण के जंगी, जंग जगत जहान दए वखाईआ। अगला सम्मत कहे मैं हिला देणे फ़रंगी, फ़ार विच ना कोई लगाईआ। धारा रहिण नहीं देणी दो रंगी, हुक्म देणा इक्को सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। माघ कहे मैनूं नज़र आवे बेनज़ीर, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जिस दी वेखी नहीं किसे तस्वीर, मसव्वर तसव्वर ना कोई करवाईआ। चोटी चढ़या नहीं कोई अख़ीर, नानक कबीर चरणां विच बह के शुकर मनाईआ। ओस दी

१७७
१९

सब तों वक्खरी निराली तदबीर, जुगती जुगत विच बणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पैगम्बरां दा पैगम्बर पीरां दा पीर, दस्तगीरां दा दस्तगीर नज़री आईआ। जिस दी तिक्खी धार प्रेम प्यार वाली शमशीर, आर पार आपणा आप कराईआ। ओह खेल करे गहर गम्भीर, गुणी गहीर दया कमाईआ। जिस दी दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर जागीर, जगह बजगह नज़री आईआ। ओस लेखा मुकाउणा शाह हकीर, सृष्टी दी करनी नवीं ताअमीर, घर इक्को देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहुता लेखा रख विच कश्मीर, किशना शुक्ला दोवें पक्ख देणे उठाईआ। माघ कहे मैं वेखां की, कीमत कहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग दी साची रखण लग्गा नींह, नीहां दे हेठों बाले गोबिन्द लए उठाईआ। जिन्हां अमृत जाम ल्या पी, प्याले मदिर गए सुटाईआ। किसे ने गोबिन्द दी समझी नहीं इक्की वीह, वीह इक्की सार किसे ना पाईआ। पुरख अकाल दी जाणी नहीं किसे लीह, रस्ता राह ना कोए समझाईआ। लालच दे के पुत्तर धी, नाता जगत विच फसाईआ। बिना रविदास किसे पुकार नहीं कीती साढे तिन्न हथ्थ सीं, भुक्खा रह के झट्ट ना कोए लँघाईआ। जन भगतो तुहाडा नवें जुग दा बीजणा बी, बूटा गुरमुख लैणा लाईआ। तुहानूं एथे ओथे दो जहानां कर के फ़्री, फ़ैसला हक दिता सुणाईआ। तुहाडी कोई रुत नहीं आउँदी जुमांदी उलसानी रबी, रहमत रैहम खुदाईआ। जेहड़ा गुर अवतार पैगम्बरां दा बणया कभी, तुख्म तासीर देणी मिटाईआ। परवरदिगार सांझा यार नबीआं दा नबी, रसूलां माअकूल हुक्म सुणाईआ। जिस दे हुक्म अंदर दीन दुनी बद्धी, बदला रिहा चुकाईआ। नानक गोबिन्द इक्को जोत जगी, नूरो नूर होवे रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारां सिर उत्ते चुक्क के पापां दी डग्गी, भज्जणा वाहो दाहीआ। किसे नूं रोटी गुल्ली खाण नूं नहीं लभ्भणी अद्धी, अधवाटे देणा रुलाईआ। जन भगतो जुगां पिच्छो एह समां आउँदा कदी कदी, कदीम तों प्रभ दी रीती चली आईआ। किसे नूं इशारा दे दिता नूह नदी, किसे नूं क्यामत दिती वखाईआ। किसे नूं पैगम्बरां वाली दे के गद्दी, सिर ते छत्र दिता झुलाईआ। किसे तों ताणा उणा के विच खड्डी, खटका दिता मुकाईआ। जन भगतो एह पुरख अकाल दी पहली सदी, सदमे तुहाडे दए चुकाईआ। जिन्हां दी प्रीत इक्को नाल लग्गी, लागी लागण होर ना कोए बणाईआ। तुहाडी इक्को अक्ख ना कोई सज्जी ते ना कोई खब्बी, जिस नेत्र विच्चों नूर नज़री आईआ। तुहाडे अंदर इक निक्की जेही डब्बी, जो घर विच घर दिता बणाईआ। उस विच तुहाडी वस्त अमोलक दब्बी, उह आपे तुहाडी आत्मा नूं लग्गे चंगी, मन दी वासना ना कोए वधाईआ। तुसां केहड़ा नहाउण जाणा किसे गंगी, जमना सुरस्ती गोदावरी तुहाडे चरण चुम्मे चाँईं चाँईआ। तुहाडा झगड़ा मुक गया सुदी वदी, इक्को रुत काया बुत्त दए वखाईआ। तुहाडी वासना

अंदरों रिहा कढ्ढी, दुर्गन्धी दिती तजाईआ। तुसां केहड़ी खाणी मच्छी डड्डी, डण्डौत इक्को दिती समझाईआ। धृग गुरसिख जो खावे हड्डी, एह गोबिन्द गया समझाईआ। गोबिन्द दी कृपान धार किसे बक्करे दी गर्दन नहीं वढ्ढी, प्रेम रत नाल खण्डा दिता रंगाईआ। गोदावरी कन्ढे माधो नाल कीती नहीं कोई ठग्गी, बन्दे दा लहिणा झोली पाईआ। कृपान म्यान विच्चों नहीं कढ्ढी, ना बक्करयां कोए झटकाईआ। सोलवें साल विच सारे हुक्म कर देणे रद्दी, नवां लेखा देण बणाईआ। चार वरन सिक्खी आवे भज्जी, नौ खण्ड पृथ्मी नेत्र नैणां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे शब्दी गोबिन्द कुछ दस्स, आपणा हुक्म मनाईआ। पुरख अकाल प्या हस्स, हस्ती दए समझाईआ। चार जुग जिस दा गाउँदे आए जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ओसे दा ढोला गाईआ। अज्ज होया उह प्रतख, जो सब दा पिता माईआ। ओहदा जैकारा नाअरा इक अलख, अलख अगोचर दए समझाईआ। सच सुच दा खोलॢ के हट्ट, हटवाणे गुरमुख लए बणाईआ। दूई द्वैत दा मेट के फट्ट, पट्टी आपणा नाम बंधाईआ। शब्द अगम्मी ला के सट्ट, सोई सुरती लए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान इक्को ढोला लैणा रट, रट्टा जगत देणा पाईआ। जन भगतो थोड़ा जेहा समां होर लओ कट, कट्टे वच्छे खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी डोरी सब नूं पावे नथ्थ, नाम किल्ले नाल बंधाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं हभ कुछ वेख्या, अनडिठ नज़री आईआ। पुरख अकाल लैण आया प्रीख्या, प्रशन आपणा रिहा जणाईआ। चौथे जुग अन्त कोई ना समझया बीस इकीस्या, वीह इक्की सार किसे ना आईआ। सतिगुर नाम बुद्धी विच घसीटया, अनुभव परदा ना कोए उठाईआ। अगे विचारां दा समां बीतया, सतिगुर हुक्म ना कोए बदलाईआ। किसे नूं पता नहीं की फ़रमान कीता गोबिन्द बह के विच अंगीठया, नंदेड़ उधेड़ ना परदा कोए लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गहर गम्भीर खेल खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे कोई ना समझे गोबिन्द धार, विद्वानां विद्या विच दिती रुलाईआ। क्यों शहीद कराया अजीत जुझार, सिर धड़ वण्ड वण्डाईआ। क्यों नीहां हेठ रख दिते उसार, इट्ट इट्ट नाल जुड़ाईआ। क्यों कर के सरसा पार, सर्दी सर्द वेख वखाईआ। छड्ड के घरबार, नाता मोह जगत तुड़ाईआ। माछूवाड़े पैर पसार, निगाह निगाहबान विच टिकाईआ। तूं मेरा दिलदार, दूजा रिहा ना कोए प्यार, बेशुमार तेरा नूर नज़री आईआ। अग्गों हस्स के किहा अकाल, तूं मेरा बच्चा लाल, कलयुग अन्त होणा दलाल, तेरी लेखे लावां घाल, घायल होवे सर्ब लोकाईआ। वेख मुरीदां हाल, खेल होवे कमाल, कामल आमल बिना

१७८
१९

इलमों इलम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पकड़नहारा सच्चा दामन, दामनगीर मेल मिलाईआ। शब्द सतिगुर कहे उह वेला आ गया शायद, शदीद नज़री आईआ। पूरा होया अहिद, औहदा बख़्शे बेपरवाहीआ। गोबिन्द ने केहड़ी सिखणी कितों कवाइद, मास्टर टीचर उस्ताद ना कोए बणाईआ। जिस दा हुक्म ओसे दा राज होणा राइज, रईयत इक्को लए बणाईआ। इक्को कलमा इक्को दस्से आयत, इक्को नाम शब्द शनवाईआ। सच करनहार हमायत, हमसाजण दया कमाईआ। मुहब्बत करनहार अनायत, दयावान अख्वाईआ। साचे घर दस्से रहाइश, मुकाम इक्को इक जणाईआ। जिस दी किसे ने कीती नहीं पैमाइश, पैमाना वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो कलयुग अन्तिम गोबिन्द पूरी करन आया ख़ाहिश, ख़सूसीअत वेख जगत लोकाईआ। जिस दी कर ना सके कोए अज़माइश, समझ चले ना कोए चतुराईआ। सो देवणहारा सच हदायत, हुक्म इक्को इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महबूब बेपरवाहीआ। माघ कहे मैं मंगां इक्को मदद, जन भगतां होईं सहाईआ। कूड़ी क्रिया मेट तशदद्, ममता मोह चुकाईआ। कोटां विच्चों थोड़े गिणती अदद, लख करोड़ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपाल हो सहाईआ। कृपाल कहे मैं कर्म कमावांगा। जन्म जन्म दा लेख चुकावांगा। भाण्डा भरम भउ भनावांगा। साचा धर्म इक समझावांगा। झगड़ा मेट के वरन बरन, ज़ात पात डेरा ढावांगा। मालक हो के तरनी तरन, पार किनारा इक वखावांगा। धुर दी दस्स के साची सरन, सरनगति इक वड्यावांगा। साचे पौड़े दस्सां चढ़न, बिन डंडिउँ आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर हट्ट खुल्हावांगा। गृह मन्दिर हट खुल्हावेगा। समरथ पुरख परदा लाहवेगा। महिमा अकथ कथ जणावेगा। भगत भगवान दा इक्को जस, दूजी वण्ड ना कोए वण्डावेगा। अमृत आत्म मिले रश, निझर झिरना आप झिरावेगा। निज खोल्ह के अक्ख, प्रतख दरस वखावेगा। पंज विकारे कर के सख, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटावेगा। आत्म सेज सुहञ्जणी पट, पतिपरमेश्वर आप हंढावेगा। गृह दे के दर्शन खट, खटीआ सेजा आप सुहावेगा। जन भगतो तुहानूं करना पए कोई ना तप, तपदे हिरदे शांत करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखावेगा। सिर इक्को हथ्थ रखावांगा। सति सच मेल मिलावांगा। रती रंग रत्त रंगावांगा। धुर दी दे के साची मत, गुरमति आप दृढ़ावांगा। घर स्वामी मिल के कमलापति, पतिपरमेश्वर दरस वखावांगा। बिन रसना जिह्वा गा के जस, जस वेद पुराणां सिफ्त सालाह पन्ध मुकावांगा। काया खेड़ा होण ना देवे भट्ठ, भठियाला अग्न ना कोए लगावांगा। सतिगरु शब्द अगम्मा जट्ट, लहिणा धन्ने वाला फड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करीम अज़ीम धाम जणावांगा। माघ कहे मैं कढ्ढां इक्को हाढ़ा, बेनन्ती सच सुणाईआ। गोबिन्द तेरा लेखा माछूवाड़ा, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण बण के धुर दा लाड़ा, निरवैर वेख वखाईआ। साचीआं सखियां वेख अखाड़ा, गुरमुख नच्चण चाँईं चाँईंआ। तेरा सोहणा लग्गे नौ उंगल दा दाढ़ा, रूप अनूप रिहा बदलाईआ। कुछ लेखा बाकी नज़र आया दारा, चिल्ला कमान दए गवाहीआ। ओस दा अगले साल काबुल विच देणा इशारा, औरंगे दा बेटा नंगा हो के नज़री आईआ। इक दूजे दा मल्लणा पए दवारा, सांझा संग निभाईआ। जिस दा मज़मून छपणा नहीं विच अख़बारा, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। छब्बी पोह कहे मैनूं पैंदा होर भुलेखा, भरम विच भरमाईआ। चढ़दी दिशा वाला लेखा, लिख्त रिहा समझाईआ। पिछला चुकणा ठेका, ठोकर नाल हटाईआ। पंजां मुल्कां होणा एका, जैपन विच करे कुड़माईआ। भुक्ख्यां भरना मूल ना पेटा, पिटे सर्ब लोकाईआ। इक प्रधान दा मरना बेटा, जो कलयुग कला दए वरताईआ। फेर सब नूं आउणा चेता, कौण जड़ रिहा उखड़ाईआ। शाह सुल्तानां लै के भज्जणा भेंटा, दमां दमड़यां दी लोड़ ना कोए वखाईआ। शब्द गुरू ने मारना ऐसा पेचा, पच्छिम दक्खण सारे लैणे बन्हाईआ। जगत रीती दा छुडा देणा पेशा, पिच्छो हौली हौली सारे एहो ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हुक्म सुणाईआ। माघ कहे अगला साल चढ़न वाला मनहूस, मुश्कल मुश्कल नज़री आईआ। कुछ धक्का लग्गणा रूस, रुसतम सारे लैणे उठाईआ। इशारा दे के मन नूं विच कलबूत, कलमे देणे भुलाईआ। दीन दुनी नूं कर के नेस्तोनाबूद, नवां जुग देणा लगाईआ। एस दा शब्द गोबिन्द आपे दए सबूत, शहादत दी लोड़ ना कोए वखाईआ। जिधर वेखो उधर मौजूद, मुफ़लिसां दे अंदर वड़ के आपणा आसण लाईआ। जन भगतो तुहानूं सदा रखे महिफ़ूज़, मेहर नज़र इक उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत करे कलाबूस, हथ्थ हथ्थ नाल बंधाईआ। पुरख अकाल दा सब तों वक्खरा निराला दूत, जो दो जहानां भज्जे थाउँ थाँईंआ। चार कुण्ट प्यार विच पावे फूट, फुटकल विच लोकाईआ। जेहड़े मसीह दे सीउदे बूट, बटन उन्हां दे दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। माघ कहे मैं वी लग्गा सब दे पिच्छे, हौली हौली कदम उठाईआ। जिंनां चिर कूड़ी क्रिया दा कूड़ ना छिपे, छयानवें करोड़ रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल इक्को ना दिसे, दहि दिशा नज़री आईआ। भगतां दी पूरी होवे ना इच्छे, इच्छया जगत चुकाईआ। नाम भण्डार देवे ना हिस्से, वस्त अमोलक इक वरताईआ। ग़रीब निमाणयां ना चुक्के पिट्ठे, भुक्खे नंगयां ना गले लगाईआ। माया राणी ना रो रो पिट्टे, ममता होए हल्काईआ। आपणे हुक्म दे अन्त अख़ीरी

१८१
१९

ना कढ्ढे सिट्टे, सिट्टा जगत नाल लगाईआ। पत्थरां नाल ना लड़ावे इट्टे, इट्ट नाल इट्ट ना खड़काईआ। जन भगतां दे पाप दुरमति मैल धो अंदर ना करे चिट्टे, चिट्टी धार विच समाईआ। इक्को रंग रंगे वड्डे निक्के, बिरध बाल ना कोए वखाईआ। दीन दुनी दे बदले सिक्के, सिक्कम विच रौला देवे पाईआ। खेल वेखे नक्क फीने निक्के, फिक्के सारे दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी सल्ल लावे हिके, हिकमत आपणी ना किसे जणाईआ। माघ कहे सच प्रभू सब तों वक्खरा हकीम, हुक्म वाला नज़री आईआ। जेहड़ा आपणे नाम दी दुआ विच करदा रिहा तरमीम, राम अल्ला वाहिगुरू अक्खर दिते पढ़ाईआ। जिस वेले जलवा नूर दस्से सीन, फेर सारे इक्को रहे गाईआ। भरोसे विच दे यकीन, कलमे दिते समझाईआ। अल्ला राणी नहीं कोई मदीन, मुद्दा इक्को दिता समझाईआ। पैगम्बर कहिण आफ़रीन, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। नानक गोबिन्द कीता तसलीम, पुरख अकाल इक्को शहिनशाहीआ। जिस दी कलयुग अन्त होणी वक्खरी तालीम, कुनबे गुरमुख लैणे बणाईआ। मकतब जणा के इक अज़ीम, आला अदनयां करे पढ़ाईआ। सच स्कूल विच रहे ना कोए ग़मगीन, भुक्ख्यां नंगयां इक्को रंग रंगाईआ। किसे नूं कदे ना करे बेदीन, वेद शास्त्रां तों बाहर आपणी दस्से पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं वेख्या प्रभू करता, करतार निरँकार परवरदिगार नज़री आईआ। ना कदे जम्मदा ते ना कदे मर्दा, मदद वाली मंग ना कोए मंगाईआ। ना कदे जित्तदा ते ना कदे हरदा, हार जित्त ना कोए वखाईआ। उह मालक घर घर दा, गृह गृह डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो गुरमुख विरला उहनूं वरदा, वर वरयाम हो के आपणा आप मिलाईआ। एह खेल अगम्मा हरि दा, जो हिरदे विच्चों हिरदा दए बदलाईआ। इश्नान करा के साचे सर दा, सरोवर इक्को दए वखाईआ। जित्थे काग हँस बणदा, बग बप्पड़े होए सफ़ाईआ। मंज़ल इक्को चढ़दा, कदम कदम ना कोए बदलाईआ। तूं मेरा तेरा तेरा सोहँ ढोला पढ़दा, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। नित नवित निज नेत्र दरस प्रभू दा करदा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। बिना हथ्थां दे बन्दना करदा, बिना सीस दे सीस झुकाईआ। बदोबदी जोती जोत विच वड़दा, आप आपणा आप मिटाईआ। जन लेखा चुकया भय डर दा, भयानक विच भावी ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्वामी मेल मिलाईआ। माघ कहे जन भगतो की तुसीं चाहुन्दे स्वामी मिलाप ? अट्ठे पहर विछड़ कदे ना जाईआ। तुहानूं पुछे आपणा आप, आपणे विच्चों नज़री आईआ। तुहाडे अंदरों प्रगट होवे उह जाप, जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण राग रहे गाईआ। ना कोई जन्म कर्म ना रहे पाप, दुरमति मैल दए धुआईआ। आत्म परमात्म बण जाए साक, सज्जण इक्को वेख वखाईआ। एह

वी सतिगुर दी किरपा नाल होवे इतफ़ाक, बिना किरपा मिलण कोए ना पाईआ। क्यों उह मन वड्डा सूरबीर चलाक, रिद्धीआं सिद्धीआं विच लए भरमाईआ। मोहणी रूप बण के किसे नूं रहिण ना देवे पाक, साध सन्त ऋषी मुनी काम विच हल्काईआ। बदोबदी चुक्क के आपणी ढाक, मुख घूँगट दए उठाईआ। बाहर दा दे स्वाद, राजे राणे दए जणाईआ। नवाबां दा दे के ख़िताब, चकलयां विच भवाईआ। वेसवा दा बणा अहिबाब, मित्रां विच वड्याईआ। सीखां ते भुन्न कबाब, काअबे नूं दए भुलाईआ। अन्त अख़ीरी सब नूं कोरा जवाब, मुकामे हक ना कोए पहुंचाईआ। मानस जन्म दी लेखे लग्गी ना सलाम अदाब, अलैकम कह के ऐवें झट लँघाईआ। बिना मुर्शद तों कोई ना धोवे दाग़, दुरमति मैल साफ ना कोए कराईआ। घर घर तेल बत्ती दे जगदे वेखो चराग़, बिना सतिगुर तों आत्म जोत ना कोए रुशनाईआ। जंगलां विच गयां नहीं आउँदा वैराग, बंस छड्डयां नहीं हुन्दा त्याग, पुठ्ठे लटकयां नहीं आउँदी जाग, जलधारा वहायां नहीं बुझदी प्यास, नच्चयां टप्पयां नहीं पैंदी रास, जिंनां चिर नज़र ना आवे साख्यात, सनमुख हो के दरस ना दए दिखाईआ। ओनां चिर किसे कम्म नहीं आउणी ना पट्टी ना कलम दवात, जमात जुमलयां वाली ना कोए जणाईआ। कोट जन्म भावें फोलदे रहो लुगात, अक्खरां विच्चों

१८२ अक्खर होर कढाहीआ। सारी उमर पढ़दे रहो किताब, वरका वरके नाल उलटाईआ। पंडतां कोलों जन्म पत्रीआं दा लाउँदे १८२

१६ रहो हिसाब, गृह नछत्र वेख वखाईआ। जिंनां चिर सतिगुर शब्द किरपा करे ना आप, आपणा आप मिलण कोए ना पाईआ। १६

लख सुंदरीआं कोटन मोहनीआं पहन के वंगां छल्ले छाप, भगतां नूं कदे ना सकण भरमाईआ। क्यों उनां दा प्रभू उनां दे साथ, अंदर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण वेख वखाईआ। माघ कहे जन भगतो अजे तक समझया नहीं कोई नानक दा मज्जन, सच इश्नान ना कोए कराईआ। बिना पुरख अकाल तों सच्चा नहीं कोई सज्जण, सगला संग ना कोए निभाईआ। मैं सब नूं आया दस्सण, दहि दिशा हुक्म मनाईआ। गुरमुखो जिंनां चिर सतिगुर ना वेख्यो आपणी अंदरली अक्खण, जगत अक्खां वाले गुरू कम्म किसे ना आईआ। उह एथे ओथे भाण्डे सक्खण, मल मूत्र वाली देह रहे वधाईआ। तालां विच कुद्दण नच्चण टप्पण, टप्पा अगला ना कोए समझाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कूक कूक बकण, बगल विच्चों घुंड ना कोए खुल्हाईआ। कुछ लहिणा कुछ देणा जो तेग़ बहादर नाल मक्खण, कूड़ कुड़यारे दिते तजाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां श्री भगवन्त पत आए रखण, राखा हो के सेव कमाईआ। आत्म परमात्म हो के आए वस्सण, सिँघासण आसण इक्को दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी आउँदी जांदी वारी, वारता पिछली नाल मिलाईआ। जन भगतां आत्म रहिण

नहीं देणी कँवारी, काया कंदर वेख वखाईआ। नाम निधान दे खुमारी, ग़मख़ार लैणा बणाईआ। श्री भगवन्त दी कदे नहीं कच्ची यारी, कच्चयां तों पक्के लए बणाईआ। तुहाडी दूर करावे बेएतबारी, एतबार आपणा लए बंधाईआ। निरगुण जोत करे ज़ाहरी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तुहाडी नवें जुग दी आउण वाली हाढ़ी, हाढ़े कढ्ढुण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं पैणा उठ, वेला वक्त दए वड्याईआ। गुर शब्दी जाणा तुठ, दया दृष्ट खुल्हाईआ। गोबिन्द शब्द गुरमुख वेखणे नादी सुत, सुत्यां लैणा जगाईआ। सोहणी मौले रुत, पत्त डाली फुल फुल्ल महक महकाईआ। ना कोई परदा रहिणा लुक, ओहला देणा चुकाईआ। जो हिरदिउँ दलीलों मन दी वासना तों परे हो के गया झुक, उस नूं गोदी लैणा चुक्क, जमां तों लैणा छुडाईआ। शेर हो के शब्द अगम्मी पैणा बुक, बक्करे कसाई सारे देणे तजाईआ। दीन दुनी विच इक्को गाउणी सब ने तुक, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै जैकार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल कुछ दा कुछ, हुक्म आपणा इक वरताईआ।

१८३
१६

१८३
१६

✪ २ माघ शहिनशाही सम्मत १ श्रृंगारा सिँघ पिण्ड खेड़ा जिला अमृतसर ✪

हरि शब्द कहे मैं वेख्या नव खण्ड, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म गावे कोई ना छन्द, हरि हरि नाम ना कोए ध्याईआ। कूड़ी क्रिया भेख पखण्ड, माया ममता मोह हल्काईआ। आत्म जोती चढ़या कोई ना चन्द, दीवा बाती सच ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई नंग, परदा ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। फिरी दरोही विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। शब्द गुरू कहे मैं वेख्या जगत जग, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। दीन मज़्हब बज्झी हद्द, ज़ात पात रही कुरलाईआ। दरस करे ना कोई उपर शाहरग, घर स्वामी ठाकर नज़र किसे ना आईआ। नाद अगम्मी तन ना सके वज्ज, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। धुर दा प्रेम सृष्टी गई छड्ड, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। कूड़ निशाने सारे रहे गड्ड, सति धर्म ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग काया दे बदलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखी कलयुग काया कूड़, कुण्ट चार रही कुरलाईआ। मन वासना मूर्ख होए मूढ़, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। साची मिले ना साहिब प्रीती धूढ़, मस्तक टिक्का चरण ना कोए लगाईआ। निरंतर उपजे ना कोए नूर, बसन्तर अग्ग ना

कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी वेख वखाईआ। लख चुरासी वेख निरँकार, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। चार कुण्ट अन्ध अंध्यार, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। मुहब्बत हक ना मिले प्यार, महबूब दरस ना कोए दिखाईआ। रोंदे वेखे नर नार, नर नरायण रंग ना कोए रंगाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर सुंञे दिसण घरबार, बंक दुआर ना कोए सुहाईआ। हँस रले कागां डार, सोहँ माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भुल्लया आत्म परमात्म सांझा यार, याराने कूड़े रहे हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा दे मुकाईआ। शब्द गुरू कहे प्रभ वेख कलयुग अन्तिम नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। बीस इकीसा गया बीत, पड़दे विच दिते लुकाईआ। ठाकर स्वामी वसे किसे ना चीत, चित वित ठगौरी रिहा वखाईआ। काया चोली चढ़े ना रंग मजीठ, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सतिगुर मिले ना किसे सच प्रीत, प्रीतम दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट घट अन्तर परदा दे उठाईआ। पुरख अकाल कहे सुण सतिगुर शब्दी सति, सति दयां दृढ़ाईआ। निरगुण नूर कर प्रगट, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दो जहानां वेखां हट्ट, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले लवां रख, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, निरगुण दरस नूर रुशनाईआ।
१८४ १६ नाम अगम्मी ला के सट्ट, सोई सुरती दयां उठाईआ। अमृत जाम प्यावां झट्ट, मन दा झटका दयां कराईआ। दूई द्वैती मेटां फट्ट, मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखे लावां पंज तत काया माटी कच्च, रतन अमोलक हीरे दयां बणाईआ। आपणी समझावां मित गत, गतमित इक्को देणी दृढ़ाईआ। अन्तर रहिण ना देवां वक्ख, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जग सृष्टी खेड़ा होणा भठ्ठ, चार कुण्ट दुहाईआ। बाकी महीने रैहन्दे दिसण अठ्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्दी सुत दुलारे, दुल्हा तैनूं दयां बणाईआ। दो जहानां वज्जणे हक नगारे, नौबत इक्को नाम सुणाईआ। चरणी झुकणे गुरू अवतारे, पैगम्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। कलयुग कूड़े रंगणे काले, काग हँस देणे बणाईआ। करे खेल बेमिसाले मिसल जगत ना कोए समझाईआ। जिस दे सिमरत शास्त्र वेद पुराण देण अहिवाले, खाणी बाणी राग अलाईआ। सो सति दवारा खोल्ह सच्ची धर्मसाले, धर्म दवारा इक्को दए बणाईआ। जित्थे पुछे मुरीदां मुर्शद हाले, अहिवाल अगला दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गुर शब्द कहे परम पुरख तूं दाता मेहरवान, महबूब इक्को नज़री आईआ। मुकामे हक तेरा मकान, लाशरीक तेरी शरनाईआ। धुर दा कलमा दे के दान, तौफ़ीक बेपरवाहीआ। हुक्म वरते विच दो जहान, दीन दुनी दे समझाईआ।

तैनूं सके ना कोए पहिचाण, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मैं वेख होया हैरान, कायनात रही कुरलाईआ। पैगम्बर दे के गए ब्यान, ईसा मूसा मुहम्मद ढोला गाईआ। चार कुण्ट कूड़ तूफान, तोबा तोबा करे लोकाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए श्री भगवान, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। सृष्टी सुती विच बीआबान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दे समझाईआ। साचा खेल दस्स प्रभ आप, शब्दी सुत मंग मंगाइंदा। त्रैगुण माया मेट ताप, तत्व तत तत सर्ब सुणाइंदा। माया मोह ना लग्गे संताप, झगड़ा कूड़ तेरी झोली पाइंदा। रूह बुत्त करके पाक, पतित पुनीत तेरी आस रखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चार वरनां अठारां बरनां इक्को दस्स दे जाप, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। लेखे ला दे तन माटी ख़ाक, ख़ालस रूप तेरा नज़री आइंदा। जन भगतां अन्तर आत्म करके साफ़, दुरमति मैल ना कोए वखाइंदा। जन्म जन्म कर्म कर्म दा पाप कर मुआफ़, मेहर नज़र नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। पुरख अकाल कहे मैं बेपरवाह, आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बरां देवां राह, धुर संदेसा नाम सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मार्ग दिते ला, इशारयां नाल चलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दिते बणा, खाणी बाणी वण्ड बणाईआ। ढोले सोहले राग गीत दिते सुणा, कलमा कायनात जणाईआ। पंज तत काया माटी अमाम दिते बणा, आमद आपणी ना कोए जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दिते रचा, रचना आपणी नाल वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप दिते वसा, लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज वण्ड वण्डाईआ। नित नवित निरगुण सरगुण आवे वेस वटा, जोती जाता पुरख बिधाता फेरा पाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा परवरदिगारा रिहा सुहा, साहिब सुल्तान निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे जगदीश, जगदीशर तेरी इक शरनाईआ। तेरे कदमां उपर सीस, निउँ निउँ लागां पाईआ। लेखा मुक गया बीस इकीस, जो गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, मुहम्मद नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग बदलण वाली रीत, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। झगड़ा मुके मन्दिर मसीत, काअबा वण्ड ना कोए वखाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल तेरी होवे प्रीत, प्रीतम अवर ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग रंग दे हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्दी मेरे लाल, लालन दयां समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होणा काल, काल नगारा डंक वजाईआ। भगत सुहेले लवां भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। नाम अगम्मा

देवां सिखाल, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। सद नुहावां साचे ताल, सरोवर इक्को देणा बणाईआ। जोत जगा के बेमिसाल, जलवा नूर करां रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहान करां प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग घालण आए घाल, नर हरि नरायण साची सेव कमाईआ। फल लगे ना काया माटी डाल, तन वजूद दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं मंगां मंग एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। दूजी रहे ना कोई टेक, टिक्का मस्तक अवर ना कोए लगाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर बुध कर बिबेक, बिबेकी कर वखाईआ। जिधर तक्कां तैनूं लैण वेख, सनमुख हो के नज़री आईआ। आत्म परमात्म खोल्ह भेत, भजन बन्दगी दी लोड़ दे समझाईआ। तूं मालक ख़ालक जुग चौकड़ी खेवट खेट, मलाह इक्को शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दे जणाईआ। सच्चा मार्ग दस्स पुरख अकाल, सतिजुग सच्चा राह चलाईआ। शब्दी गुर बणे दलाल, जगत विचोला रहिण ना पाईआ। कलयुग सृष्टी होई बेहाल, बिहबल हो के दए दुहाईआ। किसे करे ना कोए संभाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए पल्लू छुडाईआ। जलवा दिसे ना कोए जलाल, नूरो नूर ना कोए रुशनाईआ। शब्दी वज्जे ना कोए ताल, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। काया माटी साचा दीपक सके ना कोई बाल, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मिले सति तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दीनां बन्धन, आदि जुगादि अख्वाईआ। जन भगतां देवां परमानंदन, निजानंद करां रसाईआ। धूढ़ी टिक्का लावां अगम्मा चन्दन, शब्दी महक इक महकाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पंडन, पंडत पांधा भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी तोड़ बन्धन, राए धर्म ना दए सजाईआ। आत्म परमात्म नाता आया गंढुण, जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्डन, माया ममता मोह दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वेख अन्त ब्रह्मण्डन, वरभण्ड दए दुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या तेरा नूर नीकन नीका, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। प्रभ परदा खोल्ह जीव जीअ का, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सतिजुग आपणे मिलण दा वक्खरा दस्स तरीका, बिन अक्खों अक्ख खुल्हाईआ। अमृत रस रहे ना फीका, निझर झिरना दे झिराईआ। गुर अवतार पैगम्बर चार जुग तेरीआं करदे गए उडीकां, भविक्खतां विच ध्यान लगाईआ। तूं सब दा सांझा मीता, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। ना कोई उलटावे तेरा कीता, चार जुग सरनाईआ। लख चुरासी परख नीता, दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं वेखणहारा सृष्टी, घट घट अंदर डेरा लाईआ।

खोल्लणहारा भगतां दृष्टी, दिब नेत्र कर रुशनाईआ। मार्ग दस्सां इक्को इष्टी, इष्ट देव समझाईआ। सन्त सुहेले तारां फड़के गृहस्ती, गहर गम्भीर नाल मिलाईआ। नाता तोड़ स्वर्ग बहिश्ती, सचखण्ड दयां वसाईआ। जित्थे जन्म मरन दी रहे कोए ना हिरसी, हवस अवर ना कोए वधाईआ। आत्म परमात्म रिहा परखी, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। धरनी धवल वेखे धर्म दा अर्शी, शहिनशाह वेस वटाईआ। सतिजुग साची बदल देवे मर्ज़ी, मरीज़ रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेर गर्दी, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। जन भगतां बणे दर्दी, गुरमुखां गोद उठाईआ। जेहड़ी आत्म परमात्म ढोला पढ़दी, तिस दा परदा दए उठाईआ। ख़बर देवे आपणे घर दी, घर विच घर करे रुशनाईआ। एह खेल अगम्मे हरि दी, जो हर हिरदा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरू कहे मेरे देव स्वामी, साहिब तेरी सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सिफ्तां वाली गाई बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। अठसठ तीर्थ माण दिता पाणी, पनघट उत्ते वेखी लोकाईआ। तेरी रचन अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खाणी, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दी दृष्टी होई निमाणी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती
१८७ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दे दृढ़ाईआ। साचा खेल दस्स भगवन्त, इक्को इक अरज़ोईआ। १८७
१९ आत्म परमात्म मेला कर दे नाल कन्त, घर सहिजे मिले ढोईआ। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, दूजे रंग दी लोड़ रहे ना १९
राईआ। गढ़ तुटे हउमे हंगत, उठे सुरती सोईआ। बोध अगाधा बण पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बख्श इक सरनाईआ। सच सरनाई दे दे चरण, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, निज नैण सदा रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए वरन बरन, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। मरन तों पहलों दे मरन, जीवण जीवन विच्चों बदलाईआ। गुरमुख तेरा ढोला पढ़न, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। तेरी मंगण सरन, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक तरनी तरन, तारनहार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग दे जणाईआ। सच मार्ग दस्स भगवान, सतिजुग सच्चा राह जणाईआ। लेखा कूड़ मिटे जहान, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। घर स्वामी दिसे काहन, सखी सहेली वज्जे वधाईआ। प्रेम प्रीती बख्श दान, दयावान तेरी ओट तकाईआ। सीता सुरती मिले राम, रमईआ आपणा फेरा पाईआ। (हक) पैगम्बर दे पैग़ाम, कलमा नग़मा नाम सुणाईआ। नानक निरगुण मंत्र दे सतिनाम, गोबिन्द फ़तिह डंका इक वजाईआ। साचे मन्दिर होवे विसराम, बिस्तर इक्को देणा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरनी देणी सरनाईआ। साची सरन दे दे इक, एकँकार मंग मंगाईआ।

चारों कुण्ट आवें दिस्स, दहि दिशा तेरी रुशनाईआ। करवट लै बदल लै पिठ्ठ, कलयुग अन्तिम सतिजुग लए अंगड़ाईआ। भगत सुहेले कर हित, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। तेरा दर्शन करन नित, निज घर मिल के खुशी मनाईआ। तूं मालक सब दा पित, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। निहकर्मी हो के आपणा लेखा लिख, करमां तों लै छुडाईआ। पूजणा पए ना कोई पत्थर इट्ट, काया काअबा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच मेल मिलाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां खोल्लां भेत, अभेद दयां जणाईआ। नज़री आवां नेतन नेत, निज नैण करां रुशनाईआ। आत्म परमात्म करां हेत, मन वासना दयां मिटाईआ। रुत्त बसन्ती मौले चेत, चेतन सुरती दयां कराईआ। निरगुण सरगुण दस्सां खेड, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला सहिजे लए मिलाईआ। जन भगतां मेला होए मिलाप, सच शब्द शनवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को जाप, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। अंदर बाहर कर के साफ़, पतित पुनीत लए बणाईआ। शब्द अगम्मी दे के वाक्, वाकिफ़ आपणा लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे वेख, आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दी बदल के रेख, कर्म कांड दए गवाईआ। चरण कँवल कँवल चरण बख्श के साची टेक, टिक्का मस्तक दए लगाईआ। कूड़ी क्रिया तों कर के नेक, निक्कयां तों वड्डे दए बणाईआ। नाम निधान दे के धुर संदेश, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। हरिजन तेरा सतिगुर घर वसेरा, दवारा इक्को इक समझाईआ। नज़रीं आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ओथे कदे ना होए अन्धेरा, बिन तेल बाती जोती जोत जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी कटे गेड़ा, मात गर्भ ना कोए फिराईआ। मानस जन्म बन्ने बेड़ा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ढोला दस्स के तूं मेरा मैं तेरा, नाम निधाना दए समझाईआ। मुहब्बत विच मेहरवान महबूब करे मेहरा, श्री भगवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक्को नज़री आईआ। श्री भगवान तूं आदि जुगादी दीन दयाल, दयानिध अखवाइंदा। भाग लगा काया सच्ची धर्मसाल, दूजा बंक ना कोए वड्याइंदा। दीप जोत जगे बेमिसाल, नूरो नूर रुशनाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे धुनकान, धुन आत्मक राग अलाइंदा। अमृत मिले आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए वधाइंदा। तूं साहिब स्वामी धुर दा काहन, राम इक्को सोभा पाइंदा। दवारा सुहाउणा साढे तिन्न हथ्थ मकान, मुकाम इक्को नज़री आइंदा। आत्म सेजा कर आराम, सुख आसण इक सुहाइंदा। चरण प्रीती बख्श सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेर रहिण कोए ना पाइंदा। धूढ़ी होवे इश्नान, तीर्थ तट वण्ड ना कोए वण्डाइंदा।

प्रेम प्यार प्रीती अंदर परम पुरख मिले आण, सतिगुर शब्द तेरा रूप अनूप नज़री आइंदा। तूं आदि जुगादी सदा दयावान, दीन दुनी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन भान तेरा नूर चमकाइंदा।

✪ ४ माघ शहिनशाही सम्मत १ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

माघ कहे मैं गुरमुख वेखां मंगदे, मांगत हो के झोली डाहीआ। अन्तर आत्म तन वजूद रंगदे, काया माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। दुरमति मैल पाप धो के चम्म दे, चम्म दृष्टी जाण बदलाईआ। भेव मुका के हँ ब्रह्म, दे, पारब्रह्म प्रभ पतिपरमेश्वर दर्शन पाईआ। पुरख अकाल दे गृह जम्मदे, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। मानस जन्म बेड़ा बन्न्दे, नाता जगत वाला तुड़ाईआ। झगड़े मुका के खुशी ग़म दे, इक्को रंग रहे समाईआ। लेखे मुका के ममता मम दे, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि देवणहार सरनाईआ। माघ कहे मंगतयां विच्चों नज़री आई मंगती, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। जिस नूं समझे ना कोई पंडती, वेद शास्त्र पुराण ना कोए दृढ़ाईआ। भेव जाणे धार ना कोई मन दी, बुद्धी परदा ना कोए उठाईआ। खेल नहीं किसे पंज तत काया तन दी, तत्व तत ना कोए वड्याईआ। चाल अवल्लड़ी श्री भगवन दी, पारब्रह्म प्रभ खेल खिलाईआ। वस्त पिछली बल वाले अन्न दी, हुक्मे अंदर लई मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। माघ कहे मैं मंगते वेखे जग, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर प्रभ नूं रहे लभ्भ, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले रहे भज्ज, भज्जण वाहो दाहीआ। नाम संदेश्यां विच रहे सद्द, नाअरे कलमयां विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं वेखां पूरब लहिणा, लेखा लेखे विच्चों प्रगटाईआ। सतिजुग खेल कीता नर नरायणा, नर हरि दया कमाईआ। पुरख अकाल अगम्मी शब्दी ढोला कहिणा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। थोड़ा लेखा बाल्मीक लिख्या विच रमायणा, सतरां साढे तिन्न वण्ड वण्डाईआ। रविदास चमार नेत्र लोचण तक्क के आपणे नैणां, अक्ख प्रतख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं की दस्सां कार, सोच समझ रही ना राईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। संदेशे दे के गए गुरू अवतार, पैगम्बर कलमा कायनात पढ़ाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा खोल्हे ना

कोए किवाड़, परदा परदा ना कोए चुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा फिरी दरोही जंगल विच उजाड़, पहाड़ रहे कुरलाईआ। सदमा होया पुरख नार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा कहे मेरी किसे ना लिखी लिख्त, कलम शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। समझ आई ना दुनी दृष्ट, सृष्ट जीव ना कोए वड्याईआ। थोड़ा इशारा कीता राम वशिष्ट, वासना शब्दी इक जणाईआ। कूड़ी क्रिया अन्तिम होवे निष्ट, नष्ट करे बेपरवाहीआ। जिस दे कोल आदि जुगादि फ़रिसत, निहकर्मी करमां खोज खुजाईआ। भेव जाणे वैरागी त्यागी बैरागी गृहस्त, कन्त सुहागी खोज खुजाईआ। झगड़ा मुकावे टांक जिसत, इक्को एका दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे की दसां बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादी दाता दानी गुणी गहीर, गहर गवर वड वड्याईआ। जिस दी अकस विच नहीं तस्वीर, रूप रंग ना कोई प्रगटाईआ। दो जहानां मालक ख़ालक वड्डा पीर, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैनूं आई याद, बल दवारा नज़री आईआ। शब्द अगम्मी वज्जी आवाज़, हुक्म रही सुणाईआ। मंगते मंगतयां दा खोल्ह राज़, परदा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दे समझाईआ। परदा कहे मैं रखणा ओहला, सति सति देणा जणाईआ। शब्दी हुक्म बणे विचोला, गुप्त ज़ाहर खेल खिलाईआ। कूड़ा पाए कोई ना रौला, सति सच दए समझाईआ। याद कराए धुर दा बोला, अनबोलत राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। माघ कहे मोहे आई वीचार, सतिजुग पिछला याद आईआ। पुरख अबिनाशी बण भिखार, मंगण जाए चाँईं चाँईंआ। बावन रूप आपणा धार, दर ठांडे आसण लाईआ। भेखी हो के नर निरँकार, माला मणके रिहा वखाईआ। पाटे चीथड़ चोली अपर अपार, बहत्तर कन्नीआं गंढु पवाईआ। सत्त रंग दी बन्न्ह दस्तार, लीरो लीर लीर वखाईआ। टुट्टा जूता कर त्यार, अद्धा खब्बा चरण नंगा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं मांगत वेख्या दरवेश, पुरख अकाला नज़री आईआ। जो वेस वटाए नित हमेश, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। बल दवारे करे आदेश, डण्डौत इक्को इक जणाईआ। नाल लै के पंज रेठ, पंजां उंगलीआं हेठ दबाईआ। जिस दा समझे कोई ना भेत, अमीर वज़ीर रहे कुरलाईआ। सब तों वक्खरी कर के खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं वेख्या करतार, बवला बौरा रूप वटाईआ। बिरध अवस्था विच संसार, बणयां पाँधी राहीआ। इक्को ढोला गावे अपर अपार, तूं ही तूं

ही राग अलाईआ। भुक्ख्यां बीत गए जुग चार, ब्राह्मण पेट ना कोए भराईआ। ख़ाली दिसदे सर्ब दवार, भण्डारा सच ना कोए वरताईआ। ग़रीबां करे ना कोए प्यार, मुहब्बत सति ना कोए कमाईआ। नाले रोवे धाहां मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं नहीं वेख्या राज दरबार, दर दरबार ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। खेल कहे मैं वेख्या खिलारी, हरि करता बेपरवाहीआ। रूप धार अगम्म अपारी, निरगुण सरगुण आसण लाईआ। समझ सके ना जीव गवारी, दर दरबान भेव किसे ना पाईआ। साढे तिन्न उच्ची कूक कीती पुकारी, होका दे के दिता सुणाईआ। उठ के चलया बुड्ढा भिखारी, ब्राह्मण वेता फेरा पाईआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारी, नैणां नीर वहाईआ। लंमी वाहवा हिल्ले दाढ़ी, ढाई हथ्थ नज़री आईआ। तिन्न दफा दोवां हथ्थां नाल झाड़ी, दो जहान रहे शरमाईआ। कूक पुकारे सच्ची नहीं कोई सरदारी, छत्रधारी पूरी आस ना कोए कराईआ। बिना पुरख अकाल चंगी नहीं कोई यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। ओधरों आ गई तेरां साल दी कन्यां कुँवारी, जिस दा पिता यशीम नज़री आईआ। ओहदा दादा सी परशोतम बड़ा उपकारी, नित ब्राह्मण सेव कमाईआ। उह नंन्ही बच्ची जा डिग्गी चरण दवारी, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। चलो पिता मैं सेव करां तुमहारी, घर भोजन देवां छकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिरध कहे तूं अजे बाली बच्ची, सच दयां समझाईआ। पहलां दयां प्रेम दी रत्ती, नाम खुमारी दयां चढ़ाईआ। फेर पढ़ा के अगम्मी पट्टी, निर अक्खर दयां समझाईआ। फिर वखावां साची हट्टी, मैथों वस्त ख़रीदणी चाँईं चाँईंआ। निरगुण जोत दी देवां सच्ची बत्ती, अग्नी अग्ग लए जलाईआ। तेरी प्रीत समझ के हकी, हकीकत दयां दृढ़ाईआ। उह कन्यां झट रो पई अक्खीं, नेत्र नीर रही वखाईआ। उस दे कोल सी इक पक्खी, हौली हौली झल्ल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिरध कहे मैं ब्राह्मण बुड्ढा, कदम कदम ना कोए उठाईआ। मैं की दस्सां भेव गुज्झा, किस नूं दयां समझाईआ। सतिजुग पैंडा दिसदा मुका, अन्त रिहा बदलाईआ। मैनूं टुक्कर दे दे सुक्का, खा के खुशी मनाईआ। कन्यां रो पई मार के भुब्बां, उच्ची दए दुहाईआ। मैनूं बख़्श साची बुधा, भेव दे खुलाईआ। मेरा पिता इक लत्त तों डुड्डा, लंगड़ा नज़री आईआ। ओहदा राजे दे घर हुद्दा, होका दे के सद्दे लोकाईआ। साडा नेड़े वसदा झुग्गा, विच मेरी बुढ्ढी माईआ। जिस दीआं चार धीआं ते इक्को मुंडा, नरायण नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कन्यां कहे सुण वड्डे बाबे, बाबल दयां जणाईआ। तेरे वस्त्र वेखे सादे, ग़रीब निमाणा नज़री आईआ। मैनूं साफ़ दिसदे इरादे, अंदरों अंदर सफ़ाईआ। तूं वस पै ग्यों डाढ़े, राज

दुआर डेरा लाईआ। मेरी इच्छया तैनूं भोजन छकावां आपणे हांडे, हाण्डी मेरी माता बणाईआ। नन्हे निके बाल मिल के खांदे, पंजे भैण भाई खुशी मनाईआ। पुरख अकाल दे गीत गांदे, अठ्ठे पहर ध्यान रखाईआ। तेरे गोडे दिसदे थक्के मांदे, पैर छाले रहे वखाईआ। तेरे गिट्टे दिसण नांगे, धोती उपर लई टिकाईआ। साडे गृह चरण पा जा जांदे जांदे, एहो मंग मंगाईआ। बिरध किहा मैं वेखां आंढे गवांढे, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल उठ के गया बैठ, पिठ्ठ दुआर नाल लगाईआ। बैठ के गया लेट, बाजू हेठां रखाईआ। लेट के होया मूंधे पेट, हथ्थ गर्दन उत्ते टिकाईआ। हस्स के किहा बेट, बेटी कह के ल्या बुलाईआ। मैनूं तेरा आया हेत, प्रेम नाल समझाईआ। तूं अच्छे घराने दी नेक, नंन्ही नज़री आईआ। तूं मैनूं ल्या वेख, मैं तैनूं दयां वड्याईआ। घर नूं देवां भेज, सहिज नाल समझाईआ। जो पक्कया ल्यावीं लपेट, बुक्कल विच छुपाईआ। खुशीआं नाल लवीं खेड, हौली जही दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ। कन्यां कर के निमस्कार, भज्जी चाँईं चाँईंआ। रस्ते विच डिग्गी वारी दो चार, आपणी सुरत भुलाईआ। खुशीआं नाल लंघिआं बार, कदम अगे दिता वधाईआ। आवाज़ माँ नूं लई मार, माता कह के ल्या बुलाईआ। भुक्खा ब्राह्मण वेख्या दर दरबार, बल दवारे दए दुहाईआ। मैनूं ओस दा आया प्यार, प्रीती विच जणाईआ। ओस ने करना आहार, भुक्खे भुक्ख गवाईआ। मैनूं दुपड़ां दे दे दो चार, छे सत्त जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। माँ किहा सुण बच्ची भोली भाली, सच दयां समझाईआ। तूं नढ्ढी अजे बाली, समझ कोए ना आईआ। पातशाहां दे दर जो मिलदा सो लै के जावे डाली, ख़ाली हथ्थ ना कोए आईआ। पता नहीं उह केहो जेहा स्वाली, जिस दी आस पूरी ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ। बच्ची किहा दे दे जो रिद्दा पक्का, निउँ निउँ लागे पाईआ। ओधरों आ गया भईआ सका, खुशी नाल दृढ़ाईआ। मैं वी बुढ्ढा वेख्या ढठ्ठा, हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। छोटीआं भैणां पा ल्या रट्टा, कूक कूक सुणाईआ। बिरध नूं ताप वेख्या चढ़या मठ्ठा मठ्ठा, अक्खां लाल रिहा जणाईआ। वड्डी भैण ने फड़या पक्खा, सोहणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। कन्यां कहे सुण माँ प्यारी, ममता विच दयां जणाईआ। मैनूं अंदरों आवाज़ आए इक न्यारी, हौली हौली रही सुणाईआ। छेती छेती करो त्यारी, बुढ्ढा भुक्खा दए दुहाईआ। चारे भैणां चलो इक्को वारी, वस्त वक्खो वक्ख उठाईआ। कोई वेख ना लए राज दरबारी, दर दवारे निगाह उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, धुर दी कार आप भुगताईआ। खुशी नाल माता दिता भत्ता, इक दूजे उत्ते दिता टिकाईआ। नाल बचन कीता सच्चा, सुखन दिता सुणाईआ। पहलों जा के टेकिओ मथ्था, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। फिर बोल बोल्यो कट्ठा, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। थोड़ा नमक दिता मठ्ठा, हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। बिना चखिउँ पाया खट्टा, रस स्वाद ना कोए वड्याईआ। उत्ते दे के हथ्थां नाल दोपट्टा, पटका दिता टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा आप वरताईआ। ओधर बुढ्ढा ब्राह्मण रिहा तक्क, अक्ख आपणी आप उठाईआ। खेल करां हो समरथ, परदा जगत जग जणाईआ। मेल मिलाउणा एन्हां सच, जो साची सेव कमाईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, करनी इक पढ़ाईआ। अमृत देणा रस, रस्ता देणा समझाईआ। जिन्हां गाउणा मेरा जस, प्रभ दी सिफ्त सालाहीआ। एन्हां अन्तर जाणा वस, नाता प्रेम प्यार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। ओधरों कन्यां रल के भैणां चार, आईआं चाँईं चाँईंआ। खुशीआं नाल बोल जैकार, गीत इक्को दिता गाईआ। बापू तेरे नाल प्यार, सरन दे सरनाईआ। जो चुक्क के लयांदा भार, अगे दिता टिकाईआ। ओस हस्स के किहा हो खुशहाल, खुशीआं विच जणाईआ। किथ्थे तुहाडा वीर पंजवां लाल, मैनूं दयो वखाईआ। उह पिच्छे पिच्छे करदा आवे हाल हाल, बौहड़ी बौहड़ी सुणाईआ। मैं वी कन्या हुन्दा मैनूं ल्याउँदीआं नाल, आप आपणा संग बणाईआ। अबिनाशी करते किहा मैं वी तेरी करां संभाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जे तूं पिच्छो मिल्यों आण, तैनूं निक्का दयां बणाईआ। जे कन्यां बणन दा ध्यान, एह वी आसा पूर वखाईआ। पंजां इक्ठे कर करां कल्याण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अज्ज तुहाडा बणया मैं महिमान, मेहरवान हो के फेरा पाईआ। परदा लाह के उत्तों पकवान, तिन्न वेरां चख के ल्या खाईआ। तिन्न जुग दा लहिणा कर परवान, परवाना शब्दी हथ्थ फड़ाईआ। हुक्म दे के धुर फ़रमान, धुर संदेसा इक जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त निरगुण हो के आवां विच जहान, निरवैर हो के फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकावां लख चुरासी विच्चों कर पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ। ओसे दा लेखा मुक्कया आण, लहिणा रिहा दिवाईआ। शब्द संदेसा दे श्री भगवान, हुक्मी हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल थोड़ा जिहा पकवान छक, शहिनशाह दिता जणाईआ। बच्चयो उपर वेखो मेरी अक्ख, अक्ख चों अक्ख पार दिती लँघाईआ। पहलों देवां तुहाडा हक, लहिणा जुग जुग झोली पाईआ। तिन्न जुग परदा रखां ढक्क, चौथे जुग करां रुशनाईआ। प्रेम प्रीती दे के सति, सति सतवन्ते लवां बणाईआ। नाम रंगण चाढ़ के रत, रतन अमोलक हीरे लवां बणाईआ। एथे ओथे रखां पत, पतिपरमेश्वर हो के दया कमाईआ। अमृत

जाम दा देवां रस, रस्ता इक्को दयां वखाईआ। सहिज सभाओ करां इक्ठ, मेला आपणा लवां मिलाईआ। मात पिता घर जन्म होवे अड्ड अड्ड, नाता जगत वाला जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंजे रो पए बाले नढ्ढे, वैराग अंदरे अंदर आईआ। हुण किस बिध सानूं छड्डें, झल्ली ना जाए जुदाईआ। नाता जुड़या मास नाड़ी हड्डे, पंज तत वज्जी वधाईआ। दीन दुनी विच्चों केहड़ा कढ्ढे, बाहर लए कढाहीआ। पुरख अकाल बहा के सज्जे खब्बे, बुड्ढा रूप आपणे उत्ते लए टिकाईआ। मेरे प्रेम प्यार विच रिहो बद्धे, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। जिस वेले आया उपर जग जगे, कल कल्की फेरा पाईआ। तत्ती वाउ इक्को वगे, चार कुण्ट दए जलाईआ। तुहाडा प्रेम प्यार इक्को दर लभ्भे, दूजा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं वेखी उह कन्या, जो बावन सीस निवाईआ। जिस उत्ते हरि जू मन्नया, मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्नया, जन्म जन्म दा लहिणा देवे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। माघ कहे मैं वेखां उह नज़ारा, बिन अक्खां नज़री आईआ। बलख दिसे बल दवारा, बाहर वज्जे वधाईआ। बिरध बालां दा प्यारा, सोहणा रूप नज़री आईआ। शब्दी होए हुश्यिारा, कलयुग अन्त रिहा जणाईआ। तुहाडा लेखा चुकावां विच संसारा, संसार सागर विच्चों पार लँघाईआ। चौहां नूं जन्म दवावां दुबारा, इक नूं सिह बार रूप बदलाईआ। हाज़र हो के करां विवहारा, हज़ूर हो के होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। बच्चयां किहा तूं बहुत बिरध उत्ते दिसे बुड़ापा, डंगोरी सहारा नज़री आईआ। तेरा साडे नाल जुड़ गया साका, मेहरवान हो के दया कमाईआ। सानूं अगला दस्स ख़ाका, परदा दे उठाईआ। भावें तूं बच्चयां नाल चंगीआं कीतीआं बातां, प्रेम नाल जणाईआ। कुछ अगलीआं बख्श दातां, दर तेरे मंग मंगाईआ। प्रभू किहा मैं मंगता तुहाडा, बच्चयो तुहाथों खा के खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम होवे खेल तमाशा, ख़ालक हो के दयां दृढ़ाईआ। तुहाडी पूरी करां आसा, तृष्ना दयां बुझाईआ। तुहाडा प्यार ना कदे गवाचा, तुहाडे विच्चों लवां प्रगटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दा बणा के ढांचा, माणस जन्म दयां दवाईआ। पंजां दा बणा के साथा, सगला संग जुड़ाईआ। तुसीं हुण मेरा मंनिओ आखा, घरां नूं जाणा चाँईं चाँईंआ। मेरीआं हुण कुछ बल नाल बातां, आपणा आप लैणा बदलाईआ। कन्यां किहा उह राजा सब दा पिता माता, रईयत खुशी रिहा वसाईआ। बावन किहा फेर वी तुहाडा रखावां साथा, कलयुग अन्तिम जोड़ जुड़ाईआ। दासां दा होवे दासी दासा, सेवकां दा सेवक रूप धराईआ। मेरे उत्ते करयो भरवासा, शाबाश कहे लोकाईआ। हुण पाताल विच देणा वासा, सितल

लोक राह तकाईआ। जिस दवारे तों मैं नहीं कुछ पीता ते नहीं कुछ खाधा, राज भोज रसना ना कुछ लगाईआ। एह वी इशारा दे के गया बल दा दादा, दयावान हो के पूरा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कन्यां किहा तेरा किस बिध होवे दर्शन, दीदार समझ कोए ना आईआ। मन वासना मिटे हरसन, हवस रहे ना राईआ। लोचन दीद परसन, परस तेरी ख़ुशी मनाईआ। मन वैरागी हो के करे तड़पन, कूक कूक सुणाईआ। किस बिध तेरा होवे लोकमात परतन, पतिपरमेश्वर दे समझाईआ। कवण दुआर लँघें सरदल, दर दहिलीज़ चरण टिकाईआ। कवण करे तेरी अरदल, शाहो भूप किस बिध अख्वाईआ। पुरख अकाल किहा मैं जोती शब्दी धार होवां मरदन, मर्द मर्दाना वेस वटाईआ। सब दी जगत आसा पूरी करां अरज़न, मनसा सब दी वेख वखाईआ। मैं सब दा लहिणा देणा देवां करजन, मकरूज हो के दयां चुकाईआ। मैनूं पता बाले नढ्ढे बच्चे किस तरां परचन, ओसे तरां लवां परचाईआ। खुशीआं नाल`खेडण हस्सण, हँसीआं विच्चों हँसीआं दयां वटाईआ। नाले तुहाडा जन्म कर्म आवां दस्सण, परदा ओहला मात उठाईआ। बच्ची नढ्ढी कन्या कँवारी ओस वेले विहारी तेरा नाम होवे गुरदर्शन, दर्शन दा दर्शन दासां दा दास नूरो नूर चन्द दा चन्द चन्द
१६५ निरगुण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कन्या कहे, प्रभू की १६५
१६ ! मैं केहड़ा थाल परोसां, सेवा सच ना कोए कमाईआ। तिन्ने भैणां कहिण सानूं एस उत्ते रोसा, क्यों नहीं सानूं पहलों १६
दिता समझाईआ। भावें साडे पिउ दा निक्का जिहा कोठा, चौदां हथ्थां वाला ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान किहा मैनूं समझो ना बिरध ब्राह्मण, ब्राह्मण ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। मैं तुहाडा अगे बणना ज़ामन, ज़ामनी आपणी विच रखाईआ। शब्दी धार पकड़ाउणा दामन, दमां दा लेखा आपणे विच लटकाईआ। साचा दे के अगम्मी नामन, नाम रंग लैणा रंगाईआ। आप होए पतित पावन, दुरमति मैल देणी धुआईआ। जगत तृष्ना रहे कोई ना कामन, कूड़ी क्रिया तों लैणा बचाईआ। नेत्र लोचण बिना दरस तों दरस पावण, अठ्ठे पहर नज़री आईआ। अमृत मेघ बरसदा रहे अगम्मी सावण, जिस दी थित वार ना किसे बदलाईआ। चरण धूढ़ी मिले धुर दा नहावण, सर सरोवर नाता दए तुड़ाईआ। भाग लगा के काया ग्रामन, घर गृह देणा वखाईआ। हुण मेरा रूप बल दवारे बावन, बल्ल दवारे वल छल सृष्टी नूं छल के, भगतां अंदर रल के, सच दवारे घल्ल के, खलकत तों बाहर लैणा कढाहीआ। बच्चयो आप आवां चल के, निरगुण निरगुण जोत बल के, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। तुसीं मेरा पकवान ल्याउणा रल के, भैणां भैणां नाता दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कन्या किहा आह

फड़ इक ग्लास, जो कलस वाला नज़री आईआ। बावन किहा मेरी खुशी नाल बुझ गई प्यास, तृष्ना रही ना राईआ। निक्के बच्चे अगे हो गए पास, नेड़े हो के रहे सुणाईआ। सानूं प्याउण दी बुढ्ढयां नूं चंगी जाच, छाती उत्ते चढ़ के मूँह विच दईए उलटाईआ। नाल करन हास बिलास, खुशीआं नाल सुणाईआ। बावन किहा सुणो बात, तुहानूं दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं आवां तुहाडे पास, निरगुण वेस वटाईआ। किसे लभ्भां ना उत्ते आकाश, पृथमी ना अक्ख खुल्हाईआ। शब्द संदेसा दे के दस्सां तुहानूं जाच, राह दयां वखाईआ। तुसां आटा गुंन्हणा विच परात, पाणी विच छुहाईआ। तुहाडी चवां दी जमात, सहिजे दयां रलाईआ। एसे कारन कर के जगजीत सुखवन्त कश्मीर कठ्ठीआं होईआं आज, पंजवां भाई दविंदर निक्की नंन्ही बच्ची नज़री आईआ। तुहाडा खाणा बच्चयो खाधा नाल स्वाद, एह वी रविदास दी वड्याईआ। पिछला बाल्मीक दा लिहाज, जो नाता रिहा जुड़ाईआ। हुण बुढ्ढा नहीं अपाहज, राज दरबार ना कोए वखाईआ। नवीं साजन साज, भगवन भगत रिहा बणाईआ। नवें जुग दा साजन साज, सतिजुग बूटे रिहा लगाईआ। किसे कारन पूरब लेखे विच्चों चौथे जुग रात, रैण भिन्नड़ी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडी वेख के अगम्मी सौग़ात, आपणी झोली पाईआ। चार माघ कहे मैं वेख्या अज्ज दा भोजन, भजन बन्दगी वालयां हथ्थ किसे ना आईआ। नानक नूं मिल्या उपर करोड़ां ते कोटां जोजन, प्रभ चरण मिली सरनाईआ। जित्थे भगत भगवान इक दूजे नूं लोचन, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मन बुध मिटे सोचन, आत्म परमात्म राह तकाईआ। ओथे गुर अवतार पैगम्बर मूल ना रोकण, विष्न ब्रह्मा शिव ना सिर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भोजन कहे मेरी निक्की सोहणी इक दुपड़, विच नमक दिता लगाईआ। उत्तों दिता चोपड़, घृत नाल वड्याईआ। असीं ओथे गए उपड़, जित्थे पिच्छे ना कोए परताईआ। जां वेख्या भगत भगवान दा नाता पिता पुत्तर, दूजा रंग ना कोए रंगाईआ। जिस नूं नानक किहा आपणी धारों आए उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। ओस दा सारे करदे शुकर, शुकराने विच ढोले रहे गाईआ। ओह कौल इकरार तों कदे ना जाए मुक्कर, जुग जुग लहिणे रिहा चुकाईआ। ग़रीबां दा खा के टुक्कड़, एहसान आपणे सिर रखाईआ। अगे भण्डारा ना देवे मुक्कण, भुक्ख्यां दए रजाईआ। गोदी आया चुक्कण, फड़ बाहों गले लगाईआ। विछड़यां नूं आया पुछण, सहिजे लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। टुक्कड़ा कहे टुकड़े दा बणया प्रसाद, प्रसाद नाल प्रसादा ल्या बणाईआ। जिस ने पिछली कराई याद, याद याद विच्चों प्रगटाईआ। श्री भगवान दे के जावे दाद, वस्त अमोलक

इक वरताईआ। जन भगतो तुहाडा भगत भण्डारा देंदा रहे स्वाद, अनरस रस रस विच भराईआ। हुण कोई बल्ल वाला नहीं राज, राजयां दे राजे गुरमुख रिहा बणाईआ। तुहाडे पिच्छे आया भाज, पैंडा पन्ध मुकाईआ। शब्दी दे के आवाज़, सुत्यां ल्या उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। प्रसादा कहे मैं चढ़ गया उस दी भेंट, जिसदी भेंटा होवे लोकाईआ। मैं भरया ओस दा पेट, जो पटने वाला नाल मिलाईआ। प्रेमीआं करे हेत, गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। पूरब लहिणा वेख, विछड़यां ल्या मिलाईआ। पिछला दस्स के भेत, परदा दिता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मंगती कहे मैं मंगणी सच प्रीत, प्रीतम अगे झोली डाहीआ। प्रीतम कहे मैं दस्सणी साची रीत, संदेसा सच सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाणा इक्को गीत, इक्को राग अलाईआ। काया होवे ठांडी सीत, अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। साफ़ पवित्र रखणी नीत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। रहिणा सदा अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपे वसे बीच, परदा दए उठाईआ। सच भण्डारे दी सति धर्म दी चलण लग्गी रीत, रीती देणी बदलाईआ। चौदां महीने गुरमुख सिँघ पहलों लगवाउणा करना भोग ठीक, ठाकर अगे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। प्रशादा कहे मैनूं फिर लग्गण लग्गा भोग, ग्यारां सालां पिच्छो वारी आईआ। भगतां वाला बदलण लग्गा जोग, जुगती दए गवाहीआ। कटण लग्गा रोग, हउमें दए मिटाईआ। मिलण लग्गा धुर संजोग, विछड़यां लए जुड़ाईआ। शब्दी शब्द करे चोज, सुत्यां लए उठाईआ। आत्म परमात्म दी देवे मौज, मनसा मोह मन दए मिटाईआ। किसे दवारे रहिण ना देवे तोट, अतुट दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक जणाईआ। भोग कहे किसे ना जाणया एह क्यों लगदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण कोए ना पाईआ। श्री भगवान आदि जुगादि कदे ना रज्जदा, तृष्ना सके ना कोए मिटाईआ। भगतां दे प्रेम प्यार अंदर इन्हां दा भण्डारा चखदा, रसना जिह्वा नाल छुहाईआ। अगे लहिणा देवे हक दा, हकीकत झोली पाईआ। इशारा दे के अक्ख दा, अक्खीआं दए बदलाईआ। सदा अंदर होवे वसदा, विछोड़ा कटे जुदाईआ। नाम संदेसा देवे जस दा, सिफ्तां विच सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सब दा लेखे लावे दिन अज्ज दा, जो चल आए सरनाईआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत १ पाल सिंघ लांगरी दे घर पिण्ड भलाई पुर डोगराँ ✪

माघ कहे धुर फ़रमाना हुक्म दरुसत, टेडी धार ना कोए बणाईआ। जन भगत सुहेले करे चुस्त, आलस निंद्रा कूड़ मिटाईआ। नाम भण्डारा वण्डे मुफ्त, अनडिठड़ी दौलत झोली पाईआ। भेव खुल्हा के इक अंगुशत, बालिशत लेखा दए मुकाईआ। नज़र दरसाए धुर दा उरस, अर्श अज़ीम दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। माघ कहे मैं सुणां फरमाण अनोखा, फ़ुरनयां तों बाहर जणाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, धूआँधार तों लए बचाईआ। चरण प्रीती बख्शे इक्को ओटा, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। सन्त सुहेले लभ्भे विच्चों कोटा, कोटी कोट खोज खुजाईआ। शब्द दमामे मारे चोटा, चोटी चढ़ के चोट लगाईआ। सच प्रकाश करे निर्मल जोता, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतां मेटे पिछली अगली सोचा, सच सच दए जणाईआ। नाम संदेसा दे के होका, हुक्म इक मनाईआ। हरि का भाणा किसे ना रोका, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ढोला गाया सच सलोका, वज्जे सच वधाईआ। मार्ग रहे कोई ना औखा, मंज़ल इक्को दए चढ़ाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, बग़ल कुरान ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैं सुणदा सदा ख़ुशजंरी, खुशीआं विच जणाईआ। पुरख अकाला शेर बब्बरी, भबक आपणा नाम सुणाईआ। फिरे दरोही उपर अम्बरी, ज़िमीं ज़मां रिहा कुरलाईआ। जिस ने भगतां भरती कीती जबरी, नाम पैमानां आपणे हथ्थ उठाईआ। आसा कहे आसा रहे ना कोई बेसबरी, सांतक सति रिहा वरताईआ। कूड़ कुड़यारी कर के पधरी, हमवार आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैं सुणया सच संदेसा, सदीआं दे पिच्छो आवाज़ सुणाईआ। दो जहान मुकणा ठेका, ठेकेदारी रहिण कोए ना पाईआ। भगत भगवान करना एका, एकँकार इक्को रंग चढ़ाईआ। नव नौ चार पूरब कराउणा चेता, भेव अभेदा अन्त खुल्हाईआ। दो जहानां बणना धुर दा नेता, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। मेहरवान रहे हमेशा, सदा सद आपणी दया कमाईआ। जन्म कर्म चुकाए लेखा, लिख्त भविख्त दए समझाईआ। शब्दी धार उपजा के बेटा, पेट आपणा करे सफ़ाईआ। सन्त सुहेला बण के खेवट खेटा, नईआ नौका नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैं सुणां आवाज अगम्म, बिना सरवन ख़ुशी मनाईआ। लेखा चुका के माटी चम्म, श्री भगवान फेरा पाईआ। हरख़ सोग मेट के ग़म, चिन्ता चिखा दिती तजाईआ। पवन स्वास छड्ड के दम, घट घट रिहा समाईआ। धुर दा संदेसा नाम, नर निरँकारा आप वरताईआ। भाग लगा के खेड़ा ग्राम, गुरमुखां

दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे प्रभ दी नहीं कोई करामात, निहकर्मी कर्म कमाईआ। लेखा लिखे नाल कलम दवात, कलमा कलाम हक सुणाईआ। आपणी दस्से वक्खरी ज़ात, अजाती डेरा ढाहीआ। कलयुग मेटे कूड़ी अन्धेरी रात, सति चन्द करे रुशनाईआ। सच उजाला होए प्रभात, धुँदूकारा दए गुआईआ। भगतां पूरी होवे आस, गुरमुखां जोड़ जुड़ाईआ। चित आवे स्वास स्वास, चेतन सुरती दए कराईआ। अंदर बाहर वसे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मंज़ल वखा के अगम्मी घाट, पत्तन इक्को दए समझाईआ। भगत सुहेले मेले आप, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां दा बण के माई बाप, पाप कोट जन्म काया कुटीआ विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन सद्दयां देवे साथ, साथी हो के सगला संग निभाईआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत १ डा० पाल सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगराँ ✪

माघ कहे मेरा मेटया भरम, सहिंसा नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी मेहर नज़र कर करे कर्म, निहकर्मी वेख वखाइंदा। जन भगतां लेखे लाए जन्म, जरम आपणे घर जणाइंदा। झगड़ा मुका के जगत मरन, मरन तों पहले मुरीद मुर्शद विच टिकाइंदा। बख्शीश विच बख्श के सरन, सरनगति इक्को इक दरसाइंदा। जुग चौकड़ी पूरा करन आया प्रन, प्रणाम बन्दना डण्डावत इक दसाइंदा। जुग विछड़े जग आया फड़न, पाँधी हो के पन्ध चुकाइंदा। नवीं घाड़न आया घड़न, ठठयार हो के ठोकर नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे गृह वसाइंदा। माघ कहे मेरा भुलेखा होया दूर, भरम रिहा ना राईआ। भगत भगवान तक्कया हाज़र हज़ूर, हुजरयां दा लेखा दिता मिटाईआ। जुग चौकड़ी जो मज़दूरी नाम करदे रहे मज़दूर, लेखा ओहनां झोली पाईआ। देवणहारा देण देवे ज़रूर, ज़रूरत आपे पूर कराईआ। मैं होवां बड़ा मशकूर, खुशीआं वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं बिन रुत्ती होवां खुशहाल, थित वार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को जलवा नूर तक्कां पुरख अकाल, चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आईआ। शब्द अगम्मी सुणां ताल, अनहद नादी नाद शनवाईआ। जिस दा शास्त्र वेद पुराण देण अहिवाल, अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्त सालाह ढोले गाईआ। उह ठाकर स्वामी करनी करता दयानिध दीन दयाल, दयावान अख्वाईआ। भगत सुहेला इक इकेला आत्म अन्तर निरंतर मिले आण, निरगुण सरगुण आपणा रंग

चढ़ाईआ। जगत नेत्र चार कुण्ट दहि दिशा नज़र ना आवे जीव जहान, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सहिज सुआमी अन्तरजामी परवरदिगार बेपरवाहीआ। माघ कहे मैं तक्कां चार कुण्ट दहि दिशा खोल्ह अक्ख, बिन अक्खां अक्ख वखाईआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ भाण्डे दिसण सक्ख, हरि हिरदे नाम ना कोए वसाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द जगत विद्या पढ़ पढ़ गए थक्क, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। भेव खुल्ल्ह्या ना हकीकत हक, लाशरीक शिरक्त ना कोए मिटाईआ। शब्दी नाद ना सुणया सच, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। नाम रंगण रंगे कोई ना रत्त, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढाहीआ। सच सुआमी अन्तरजामी दर्शन पाए ना कोए पुरख समरथ, निज लोचण नैण नेत्र ज्ञान खुल्हाईआ। माया ममता हउमें हंगता सृष्टी दृष्टी कीती वक्ख, इष्टी एकँकार ना कोए जणाईआ। स्वर्ग बहिश्ती रहे लभ्भ, चौदां लोक चौदां तबक फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। माघ कहे मैं वेख्या दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नव नौ चार दिसे वैरां, पत्त डाली फल फुलवाड़ी हक ना कोए महकाईआ। बिना रसना जेहवा बत्ती दन्द जपे कोई ना नाँ, अजपा जाप समझ किसे ना आईआ। सच टिकाणा उच्च महल अटल दिसे ना किसे निशां, निशाना जगत गया भुलाईआ। हँस बुद्धी होई काँ, मन वासना काग वांग कुरलाईआ। साचा खेड़ा नगर ना दिसे गराँ, गृह मन्दिर अंदर बजर कपाटी परदा ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अबिनाशी करता परवरदिगार सांझा यार लभ्भदे थाँ थाँ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ टिल्ले पर्बत डूँग्घी कंदर समुंद सागर फोल फुलाईआ। काया अंदर मारे ना कोई ध्यान, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। माघ कहे मैं वेख्या चार कुण्ट जग, जग जीवन दाता अचरज खेल वरताईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता तृष्ना लग्गी अग्ग, तन वजूद पंज तत काया माटी रिहा जलाईआ। हक हकीकत किसे नज़र ना आया सच महबूब विच ना कोए समाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात हिस्सयां वाली हदूद, विश्व धार ना कोए प्रगटाईआ। भगत सुहेला इक इकेला श्री भगवान एथे ओथे दो जहान जाणे मौजूद, ख़ाली बुत्तख़ाना नज़र कोए ना आईआ। जिस दा महल अटल उच्च मुनारा अर्श कुर्श अरूज, महिफ़ूज़ बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। माघ कहे मैं जगत सदी चौधवीं मास्टर पैगम्बर वेखे उस्ताद, जगत इलम करन पढ़ाईआ। अन्तर आत्म परमात्म खोल्हे कोई ना राज़, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। मनुआ फड़े ना कोए गुस्ताख़, मन का मणका ना

२०० १६

कोए भुआईआ। साचे स्वाल दा हल्ल करे ना कोए जुआब, जमअ तफरीक सारे रहे समझाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए ना कोए नाल इतफ़ाक, दूई द्वैत बाहर ना कोए कढाहीआ। बलैक बोरडां उत्ते लिख के नाल चाक, काले उत्ते चिट्टा पा के काली धार मेट ना कोए मिटाईआ। कुतबख़ान्यां विच्चों लै किताब, सतरां वाली करन पढ़ाईआ। धुर दा मेल मिलाए ना कोई नाल वाहद, वाकिफ़कार नज़र कोए ना आईआ। साची चढ़े ना कोई जमात, विद्यार्थी विद्या समझ किसे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी कार कमाईआ। माघ कहे मैं वेखे विद्यावान बहु पंडती, ज्ञान ध्यान रहे दृढ़ाईआ। गढ़ तुट्टा ना हउमें हंगती, हँ ब्रह्म ना कोए जणाईआ। जगत वासना भुक्खी नंगती, वाहवा घर घर अलख रही जगाईआ। एह खेल सारी मन दी, बुध बिबेक ना कोए वड्याईआ। जिस नूं समझ नहीं आई आपणे तन दी, साढे तिन्न हथ्थ अंदर परदा ओहला ना सक्या उठाईआ। समझ आई ना आपणे कन्न दी, जो धुर शब्द अगम्मी सुणे चाँईं चाँईंआ। कलयुग खेल अन्त हैरान दी, हैरानी विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। माघ कहे मैं कोटन कोटि वेखे पढ़दे, तालीम मकतब पाठशालयां विच पाईआ। साची मंज़ल कोई ना चढ़दे, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। दर्शन पाउण ना निरगुण निरवैर नर हरि दे, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ।
२०१
१६
सच सरनाई बेपरवाही पतिपरमेश्वर मूल ना पड़दे, धूढ़ी टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। जगत किताबां वरके रहे उथलदे, मन दा पत्रा ना कोए परताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कहे मैं वेखी जगत दात, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जगत विद्या लेखा नाल कलम दवात, काग़ज़ काले रहे कराईआ। आपणी समझीं किसे ना ज़ात, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। हकीकत विच्चों खोल्हे कोई ना राज़, राम राम ना कोए मिलाईआ। पिछली करदे याद, पूरब रहे सुणाईआ। आपणा खेड़ा करे ना कोए आबाद, काया मन्दिर ना वज्जे वधाईआ। हिस्सयां वाला समझे कोई ना बाब, इबारत इक ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। माघ कहे मैं वेख्या भगतां अंदर रंग, ललारी नज़र कोए ना आईआ। सुणया अगम्मी छन्द, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला रहे गाईआ। वेख्या अनोखा पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म परमात्म बिन अक्खां तक्कया संग, सगला संग निभाईआ। बिन सूरज चन्द चाढ़ के चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरख़ सोग मेट के ग़म, खुशी खुशी विच्चों बदलाईआ। नाता तोड़ के हड्ड मास नाड़ी चम्म, चम्म दृष्टी दए गवाईआ। खेल करे श्री भगवन, भगत सुहेले लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह

मन्दिर वेख वखाईआ। माघ कहे मैं भगतां अंदर मारी झाकी, परदा अंदरों दिता उठाईआ। ओनां दी खुली वेखी ताकी, तकवा इक्को उपर रखाईआ। गृह मन्दिर अंदर बैठा पुरख अबिनाशी, परवरदिगार सांझा यार जलवा नूर खुदाईआ। बिन गोपी काहन सुहावे मण्डल रासी, खेल आपणा आप जणाईआ। इक्को नूर जोत जोत प्रकाशी, रूप रंग रेख ना कोए दरसाईआ। एथे ओथे दो जहान अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आत्म परमात्म बण साथी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ। जन भगतां औखी मंज़ल चाढ़ के घाटी, सचखण्ड दवारा एकँकारा नर निरँकारा दए वखाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसी, आसा तृष्ना इक्को वार मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। माघ कहे मैं भगतां अंदर सहिजे ल्या तक्क, इक ध्यान लगाईआ। उह सब कुछ बैठे छड्ड, दीन दुनी गए मुकाईआ। सृष्टी तों हो के अड्ड, दृष्टी प्रभ दे विच टिकाईआ। पुरख अकाल दी बण के यद, इक्को नाता रहे जुड़ाईआ। नौ दुआर पार कर के हद्द, सुखमन टेडी बंक पन्ध मुकाईआ। शब्द अगम्मी नाद गावण इक्को छन्द, छन्द इक्को रहे सुणाईआ। निज आत्म परमात्म लै के अनन्द, परमानंद विच समाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म मिल के खुशी वखाईआ। सच दवारे चढ़ के चन्न, जोती जोत करन रुशनाईआ। पुरख अकाल सर्ब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां कहे धन्न, धन्न धन्न धन्न जगत वड्याईआ। माघ कहे मैं भगतां तक्कयां इशारा, बिन अक्खां रहे लगाईआ। जोत नूर इक उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द अगम्म वज्जे नगारा, सोई सुरत रिहा उठाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, वेद कतेब अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सब तों वक्खरा सब तों न्यारा, निरवैर निरँकार आपणी कार कमाईआ। साची सख़ियां मिल के लावे सति अखाड़ा, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। जिस गृह वसे तेई अवतारा, ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सजदयां विच सीस झुकाईआ। गुर दस कर निमस्कारा, भगत अठारां चरण धूढ़ ख़ाक रमाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी वेखे विगसे वेखणहारा, दीन दयाल दयानिध आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। माघ कहे मैं भगत भगवान दा वेख्या मिलाप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे जाप, अनबोलत राग सुणाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर बिन नैणां नीर तों वैराग, वैरागी हो के रहे जणाईआ। इक दूजे नूं मिल के नाता जुड़े नार कन्त सुहाग, घर ठांडे वज्जे वधाईआ। सच दवारे सचखण्ड मुकामे हक होण विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दुनी बदल देण समाज, साचा हुक्म इक प्रगटाईआ। माघ कहे भगत भगवान जोड़ा वेख्या जुड़दा, कलयुग अन्त वज्जे वधाईआ। जीव जहान वेख्या रुढ़दा,

माया ममता धक्का रही लाईआ। कोई भेव ना जाणे शब्दी सतिगुर दा, जो सति सतिवादी नादी ब्रह्मादी वेख वखाईआ। कोई रस ना माणे धुर दे ताल सुर दा, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। अन्तर आत्म निरंतर फुरना किसे ना फ़ुरदा, मन वासना सारे रहे गाईआ। जो दिने जागदयां रातीं सुत्यां दर्शन पावे निरगुण जोत पुरख अकाल दा, प्रकाश प्रकाश विच समाईआ। नज़ारा तक्के काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल दा, बंक दवारा सोभा पाईआ। झगड़ा मुक्के काल महाकाल दा, राए धर्म ना दए सजाईआ। जलवा तक्के नूर जमाल दा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के त्रैगुण जंजाल दा, जागरत जोत होए रुशनाईआ। जन भगतां श्री भगवान आपे सुरत संभालदा, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। लेखा मुका के शाह कंगाल, दा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पदार्थ देवे नाम साचे धन माल दा, भण्डारा इक्को इक वरताईआ। झगड़ा चुकावे आवण जाण दा, लख चुरासी पैंडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गुर चेले धुर दे रंग लए रंगाईआ। माघ कहे मैं तक्कयां एकँकार, इक इकल्ला नज़री आईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। जो भविख्तां करे विचार, गुर अवतार पैगम्बरां लेखा पूर कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, वेस अनेका रूप वटाईआ। लख चुरासी सुणे पुकार, गृह गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। भगतां दए दीदार, निज नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाईआ। सूफीआं करे उज्यार, नूर उजाला इक रुशनाईआ। सच वखा के बहार, गुलशन इक्को दए महकाईआ। झगड़ा मुका के कूड़ कुड़यार, सति सच दए दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म दस्स प्यार, दीन मज़्हब ज़ात पात लेखा दए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी सर्ब निवासी जोत प्रकाशी परवरदिगार सब दा यार, अकल कलधारी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख़्शिश रहमत आपणा नाम वरताईआ। माघ कहे मैं चार कुण्ट वेखी मण्डप माढ़ी, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। मैं लख चुरासी मानव ज़ाती तक्की नर नारी, घट घट अंदर खोज खुजाईआ। मन वासना तक्की दुराचारी, दुर्गन्ध विच समाईआ। मनुआ होया हँकारी, बंक गढ़ रिहा बणाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां इक्को लाई प्रभ नाल यारी, याराने कूड़े गए तजाईआ। इक्को मेल जोत निरँकारी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस दे कोलों गुर अवतार पैगम्बर लै के आए सरदारी, सदीआं दे पिच्छो भज्जे वाहो दाहीआ। ढोला गाउँदे गए वारो वारी, सिफ्तां विच सालाहीआ। कातब बणे लिखारी, कलम शाही वण्ड वण्डाईआ। अन्तिम कर के चरण कँवल निमस्कारी, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह के पल्लू गए छुडाईआ। कलयुग अन्त ओसे दी वारी, वारता अगली दए दृढ़ाईआ। भगत सुहेला शाह पातशाह शहिनशाह खेल करे न्यारी, निरगुण निराकार आपणी

कार कमाईआ। चार वरन अठारां बरन ऊँच नीच राउ रंक इक्को गृह वसे दरबारी, दर दरबारा इक्को दए वखाईआ। भगत भगवान प्रेम प्यार मुहब्बत विच लावण जैकारी, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सच्चा गाईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसारी, जगत विद्या परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्तान सदा मेहरवान, महबूब मुहब्बत अंदर मेहर नज़र बेनज़ीर आपणी इक उठाईआ।

✪ ५ माघ शहिनशाही सम्मत १ सरूप सिँघ दे नवित मंगूपुर ज़िला कपूरथला ✪

भगत आत्मा कहे मैं खुशी मनाउँदी, परम पुरख प्रभ तेरा ढोला गाईआ। जुग चौकड़ी अबिनाशी करते तेरी सेव कमाउँदी, हुक्मे अंदर नित नवित वेस वटाईआ। पंज तत काया माटी तन हंढाउँदी, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द तूंही तूंही राग अलाउँदी, अन्तर अन्तर तेरा ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंडाउँदी, बिरध बाल जवान रूप ना कोए वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरा दर्शन पाउँदी, सति सरूपी शाहो भूपी साख्यात नज़री आईआ। सेज सुहञ्जणी प्यार मुहब्बत नाल बहाउँदी, सिँघासण आसण इक बणाईआ। चरण प्रीती साची रीती धुर दी सेव कमाउँदी, चाकर ख़ाक रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाता इक बणाईआ। भगत आत्मा कहे मैं जुग जुग दासी, सेवक सेवा विच समाईआ। तेरा मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जिस दा खेल ब्रह्मण्ड खण्ड मण्डल रासी, दो जहानां सोभा पाईआ। सदा सुहेला इक इकेला पूरी करे आसी, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। भगत आत्मा कहे मैं वेखां खेल न्यारा, निरगुण निरवैर रिहा वखाईआ। जिस दी पावे कोई ना सारा, भेद सके ना कोए खुल्हाईआ। झुकदे वेखे सदा जुग चारा, चारे वेद सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर भिखारा, गुर अवतार पैगम्बर सेव कमाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड धाम न्यारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। उस दा हुक्मी इक इशारा, शब्द नाल जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत आत्मा कहे मैं बड़ी सोहणी सुचज्जी, जुग चौकड़ी मिले वड्याईआ। हुक्मे अंदर बद्धी, भज्जां चाँईं चाँईंआ। दवारे आवां सद्दी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। प्रीत इक्को लग्गी, ना सके कोए तुड़ाईआ। वधाई इक्को वज्जी, दो जहान करी शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत आत्मा कहे मैं सदा रवां हमेश, जन्म मरन विच

ना आईआ। मेरा नाता नाल शब्दी गुर दस्मेश, जो दहि दिशा रिहा समाईआ। मैं मन्नया मालक पुरख अकाल एक, एकँकार सीस निवाईआ। जगत जहान छड्ड के टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी खाक रमाईआ। मुहब्बत विच कर के हेत, प्रेमी प्रेमका रूप बणाईआ। बिन अक्खां लवां वेख, बिन नेत्र दर्शन पाईआ। बिन रसना खुल्ले भेत, बिन सरवन करे शनवाईआ। बिन कलम लिखे लेख, बिन शाही जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप भुगताईआ। भगत आत्मा कहे मैं सदा सदा खुशहाल, खुशीआं विच समाईआ। लोकमात आवां प्रभ दा बण के बाल, गुरमुख साचा नाउँ धराईआ। काया मन्दिर सोहवे सोहवे मेरी धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता होवे नाल, निरगुण दाता नज़री आईआ। मार्ग दस्से अगम्मढ़ी चाल, रहबर हो के नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत आत्मा कहे मेरा आदि जुगादी जोड़ा, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं याद पिछला लेखा थोड़ा, सहिजे दयां सुणाईआ। गोबिन्द जिस दिन पहले दिन चढ़या घोड़ा, पुरी अनन्द वज्जी वधाईआ। मेरा पंज तत शरीर पिछला ज़ात दा रोड़ा, क्षत्री बंस दयां समझाईआ। मेरा हथ्थ हुन्दा सी कोढ़ा, उंगली पंज ना कोए चतुराईआ। मैनूं गोबिन्द वेख के आया रोणा, हौका दे के दिता सुणाईआ। ओस तक्कया नाल लोयणा, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तूं किड्डा जवान बांका सोहणा, सूरबीर नज़री आईआ। ओस किहा मेरा हथ्थ किसे नहीं धौणा, दुःख दुःख रिहा सताईआ। गोबिन्द किहा तैनूं तुरकां नाल डाहुणा, बलधारी दयां वखाईआ। उस ने किहा मैं हथ्थ लपेटया विच पोणा, पुरी अनन्द वाले तेरे अग्गे सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा मैं अमृत रस चोणा, दुःख दलिद्र दयां मिटाईआ। ओधरों ओहदा बाप आ गया जिस दा नाम सी सौणा, सौण मल्ल कह के सारे जगत सुणाईआ। ओन लफ्फड़ मारया उत्ते धौणा, बाला घर नूं ल्या भजाईआ। गोबिन्द किहा मेरे कोलों नहीं किसे बचाउणा, लहिणे दा देणा झोली दयां पाईआ। बाले किहा मैं तेरे चरणी सीस निवाउणा, दूजा नज़र ना कोए रखाईआ। गोबिन्द किहा मैं शब्दी जामा जोती वेस वटाउणा, पुरख अकाल मेरा पिता माईआ। लोकमात फेर मुड़ के आउणा, दो जहानां डंक वजाईआ। बच्चे किहा मैं वी तेरा दर्शन चाहुन्दा पाउणा, नेत्र नैण तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं याद आया पिछला तत शरीर, पंज तत माटी नज़री आईआ। गोबिन्द मिलके कटी गई पीड़, दुःख दर्द रिहा ना राईआ। मैं नक्क नाल कढ्ढी लकीर, दोए जोड़ वास्ता दिता पाईआ। मेरी बदल दिती तकदीर, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। मैं बेनन्ती कीती अखीर, पल्लू गल विच इक रखाईआ। जिस वेले बण के आवें दो जहानां पीर, पैगम्बर बेपरवाहीआ। मैनूं

नज़रीं आवे तेरी एहो तस्वीर, तसबी माला गल ना कोए लटकाईआ। तेरे नाम दी फड़ां हथ्थ शमशीर, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। गोबिन्द किहा मेरे हथ्थ अगम्मी तदबीर, जुग चौकड़ी किसे समझ ना आईआ। जिस वेले वेला वक्त आया अख़ीर, तेरा लेखा दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बाले किहा मैं होवां शस्त्रधारी, तेरा पूत नज़री आईआ। गोबिन्द कहे मैं देवां नाम कटारी, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। तेरी वेखणी खेल न्यारी, निरँकार नाल जुड़ाईआ। तेरी आसा विच संसारी, मनसा पूर कराईआ। साचे सम्मत आए वारी, शहिनशाह दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। भगत आत्मा कहे मैं कदे ना भुल्लदी, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। तत्तां विच कदे ना रुलदी, अलोप हो के झट लँघाईआ। जिस वेले मेरे प्रभू दी अक्ख खुल्लदी, मैं बिन अक्खां दर्शन पाईआ। प्रीती अंदर घोल घुलदी, आप आपा मेट मिटाईआ। इक्को दे कंडे तुलदी, दूजा तराज़ू नज़र ना कोए रखाईआ। वड्याई लवां भगतां दी कुल दी, कुल मालक होए सहाईआ। लोकमात सदा फलदी फुलदी, प्रेम मुहब्बत विच महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं दे के गई संदेसा, मंगूपुर तजाईआ। मनजीत नूं किहा तेरा मेरा कुछ मुक्कण वाला लेखा, सहिज सहिज समझाईआ। ओस समझया मूल ना भेता, परदा ना कोए उठाईआ। मैनूं गोबिन्द अंदरों दिता संदेसा, सहिजे दिता सुणाईआ। मैनूं पिछला आया चेता, याददाशत दए गवाहीआ। हुण मैं किसे दा नहीं बेटा, पिता इक्को इक मनाईआ। जिस दी धार उत्ते लेटा, खटीआ रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत आत्मा कहे किसे ना आई समझ, समझ कोए ना पाईआ। पंज सतम्बर मार के गया रमज़, अरबी फ़ारसी विच छुपाईआ। करया खेल नूरानी चमक, दमक दिती वड्याईआ। वक्त सुहा के आपणे सम्मत, समां दिता बदलाईआ। अन्तर अन्तर बख़्श के हिम्मत, हौसला दिता वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फ़ारसी कहे प्रभ दा समझे ना कोए फ़ारमूला, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। शब्दी गुर ना बदले असूला, असलीअत आपणी धार चलाईआ। इक्को हुक्म देवे माकूला, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं मिल्या हुक्म अकाल, गोबिन्द दिती माण वड्याईआ। मैं तक्कया नूर जलाल, जलवा इक रुशनाईआ। वेख्या दवारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जित्थे छप्पर छन्न ना कोए सुहाईआ। सच सिँघासण बैठा दीन दयाल, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। भगत आत्मा रिहा संभाल, जोती जोत विच मिलाईआ। ओथे पोह

ना सके काल, महाकाल ना कोए चतुराईआ। मेरा हल्ल कर स्वाल, साचा मार्ग दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ। भगत आत्मा कहे मैं वेख्या सिँघ पाल, जो ब्रह्मा रिहा बदलाईआ। जगदीश वेख्या खुशहाल, जो शंकर डेरा ढाहीआ। मनजीत दए अहिवाल, जो इन्द्र करे सफ़ाईआ। चेत सिँघ दा लाल, प्रभ दवारे बह के खुशी मनाईआ। गुरदयाल सिँघ दा हाल, चौथे जुग खुशी मनाईआ। मैं मिल्या उहनां नाल, गलवकड़ी लई पाईआ। मेरी पूरी होई घाल, लेखा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। भगत आत्मा कहे मेरा होया छुटकारा, छुट्टी जगत वलों पाईआ। मिल्या मीत हरि निरँकारा, निरगुण दाता सहिज सुखदाईआ। जिस दा इक्को इक चमत्कारा, चमन वेखे सर्ब लुकाईआ। गुरमुखां करे प्यारा, भगतां गोद उठाईआ। मैं जा के सुणया बिन रसना जेहवा जैकारा, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। मैनूं भुल्ल गया संसारा, पिछली याद रही ना राईआ। दोए जोड़ करी निमस्कारा, दर ठांडे सीस निवाईआ। शब्दी गोबिन्द कर इशारा, मेरी पलक दिती बदलाईआ। कुछ मंग लै मंग बण भिखारा, दर ठांडे झोली डाहीआ। भगत आत्मा कहे मैं कर के गिरयाज़ारा, बिन नैणां नीर दिता वहाईआ। किरपा कर मेरे गिरधारा, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। मेहरवान होया पुरख अकाला, दीन दयाला दया कमाईआ। फड़ के वखाया सचखण्ड सच्चा धर्मसाला, चारों कुण्ट दिता भवाईआ। सच्चयां भगतां दा दे के हवाला, कबीर जुलाहा दिता मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं हो गई मंगती, मांगत रूप वटाईआ। परम पुरख परमात्म पा के इक्को कन्ती, घर साचे खुशी मनाईआ। दीन दयाल मैं तेरा लेखा वेखणा विच संगती, सज्जण हो के हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत आत्मा कहे मैं मंगी मंग अपार, अपरम्पर अगे झोली डाहीआ। किरपा कीती आप निरँकार, निरगुण सहिज ल्या मिलाईआ। तेरा बेअन्त बेअन्त भरया भण्डार, बेपरवाह अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख संसार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सज्जण दिसे ना कोए मीत मुरार, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। सौहरे पईए करे ना कोए सच विहार, माया ममता मोह हल्काईआ। तेरा दर देवे ना कोए दवार, दरगाह साची ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे चुकाईआ। भगत आत्मा कहे मैं बेनन्ती कर अरदास, सीस दिता झुकाईआ। मैं आ गई तेरे पास, प्रभ तेरे विच समाईआ। मेरी होर अगम्मी आस, तृष्ना दयां जणाईआ। जिन्हां नाल मेरा साथ, ओन्हां लैणा तराईआ। लख चुरासी कटणा फास, जम ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना करे घात, राए धर्म ना लेख वखाईआ। मेरे

वांगूं लेखे लाउणी रात, भिन्नड़ी रैण वज्जे वधाईआ। मैं वेखां हो के दास, मेहर नज़र तेरी उठाईआ। तूं मैनूं कहीं शाबाश, वाहवा तेरी वड्याईआ। मैं खुशीआं नाल सब नूं देवां आख, पुरख अकाल धुर दा पिता माईआ। जिस दा इक्को पतण किनारा घाट, इक्को मन्दिर रिहा वसाईआ। जित्थे झगड़ा नहीं कोई ज़ात पात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं वस्त मंगण दा चा, प्रभ अगे झोली डाहीआ। तूं दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो ग्यों आ, निरगुण निरवैर हो के फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे गवाह, गोबिन्द शहादत रिहा भुगताईआ। तूं भगतां बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। नईआ नौका नाम चढ़ा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। साचा रस्ता दे वखा, रहबर हो के नूर खुदाईआ। मैनूं गोबिन्द पहलों लारा ला के गया सुणा, कलयुग अन्तिम आपणा हुक्म जणाईआ। मैं तत्तां वाला नाता आया तजा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सचखण्ड वेख्या धुर दा थाँ, सति सुहञ्जणा सोभा पाईआ। जित्थे ना कोई पिता ना कोई माँ, भाई भैण संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं मंगी मंग ज़रूर, खाली रहिण मूल ना पाईआ। तूं आदि जुगादी आसा मनसा पूर, भरपूर बेपरवाहीआ। भगत सुहेले तेरे नाम दे सदा मज़दूर, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। नाता तोड़ दे कूड़ो कूड़, काया कपट बाहर कढाहीआ। नज़र आ हाज़र हज़ूर, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जन्म जन्म दा कट कसूर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शां सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मेरी आत्म अनन्ती, अन्तिम दयां जणाईआ। तेरी परवान करां बेनन्ती, विनय आपणी झोली पाईआ। तेरी बहार करां बसन्ती, धुर दी रुत्त महकाईआ। खेल मुका के कूड़े मन की, ममता दयां गवाईआ। धार बणा के आपणे चन्न दी, चन्द करां रुशनाईआ। कोटां विच्चों माता भगत सुहेला जम्मदी, अरबां विच्चों मिले पिता वड्याईआ। एह खेल है सच धर्म दी, गोबिन्द आपणे हत्थ रखाईआ। ना कोई कार जाणे करन दी, निहकर्मी परदा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा झोली पाईआ। भगत आत्मा कहे मैं कदे ना सौंदी, आलस निंद्रा विच ना आईआ। कोटन कोटि तत बुरज मैं ढाहुन्दी, आपणा आप ना कदे मिटाईआ। सदा सदा सद तेरा ढोला गाउँदी, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। नेत्र अक्ख ना कदे शरमाउँदी, नैण तेरे विच मिलाईआ। आदि जुगादि तेरा दर्शन पाउँदी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सिफ्तां करां तेरे नाउँ दी, आपणा आप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। भगत आत्मा कहे मैं आई तेरे दवारे, भगतां वेख ख़ुशी मनाईआ। थोड़े बैठे तेरे चुबारे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। कोटन कोटि लभ्भण धर्म राए दवारे, अठारां दस रहे कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कढ्ढुण हाढ़े, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े पहुंचे विच अखाड़े, जो आया तेरी भेंट चढ़ाईआ। वेखीं हुण ना देवीं लारे, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरे शब्दी इक इशारे, ऐशो इशर्त देणी गवाईआ। कारज करने प्रभू हमारे, हमसाजण हो के मेल मिलाईआ। असीं कोई भगत नहीं दो चारे, चार जुग दे मिल के रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणी इक सरनाईआ। भगत आत्मा कहे मैं करनी सच प्रीत, प्रीतम तेरी ओट तकाईआ। मैं रखां की उडीक, मैनूं दे समझाईआ। किस बिध अगे चलावें रीत, सन्त सुहेले लएं मिलाईआ। तेरा दवारा लँघण दहिलीज़, बिन कदमां कदम टिकाईआ। तेरी उडीक रखण उम्मीद, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। तूं हथ्थ रखणा सीस, सिर सिर दया कमाईआ। तूं मालक इक जगदीश, जगदीशर बेपरवाहीआ। तेरा पहला सम्मत ना जाए बीत, एसे अंदर झोली डाहीआ। मेहरवान करनी बख़्शीश, बख़्शिश दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। मेहर नज़र कर दे कादर, कुदरत दे मालक मंग मंगाईआ। मैं तेरी आत्मा सदा बहादर, जुग चौकड़ी ख़ुशी मनाईआ। तेरे दवारयों वणज करां बण सौदागर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। धुर दा करे इक्को आदल, अदालत आपणी इक वखाईआ। तेरा रूप ना मकतूल ते ना कातिल, कतलगाह विच फेरा कोए ना पाईआ। मैं जलवा तक्कां बातन, नूर नुराना नज़री आईआ। मैं मल्लया तेरा पातन, दर ठांडे सोभा पाईआ। मैं कुछ भगतां जाणा आखण, लोकमात करां शनवाईआ। एह इक्को सब दा बापन, पिता पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दे समझाईआ। भगत आत्मा कहे मैं नहीं इकलौती, इकल्ली रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल तेरे शब्द दी धी ते तेरी पोती, तेरा पुत्तर गोबिन्द दए वड्याईआ। मैं कदी खाधी नहीं कोई जग विच रोटी, अन्न दाणे दी आस ना कोए रखाईआ। अन्तिम चढ़के तेरी चोटी, धुर दी भिच्छया मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी सच सरनाईआ। पुरख अकाल कहे दस्स मंगें की, परदा दे खुल्हाईआ। भगत आत्मा कहे मैं तेरा पुत्तर ते तेरी धी, दूजा अवर ना कोए मनाईआ। कलयुग अन्तिम नाता छड्डया साढे तिन्न हथ्थ सीं, सीने चढ़ के तेरे ख़ुशी मनाईआ। झगड़ा पिछला मुकया इकीह वीह, बीस इकीस पन्ध मुकाईआ। अगे लाउणी सतिजुग नींह, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र उठा दे स्वामी,

दर ठांडे मंग मंगाईआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, घट भीतर वेख वखाईआ। तूं भगत सुहेला जाण जाणी, परदा दे चुकाईआ। तेरा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। मैनूं दे दे भगतां वास्ते इक निशानी, निशाने सारे देणे गवाईआ। मैं सब नूं दस्सणा एह दीन दुनी फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो लोकमात कूड़ महिमानी, तृष्ना जगत ना कोए मिटाईआ। प्रभ नूं मिलणा नाल आसानी, असल राह दयां वखाईआ। गोबिन्द चिल्ला फड़े ना तीर कमानी, शब्द भथ्था इक वखाईआ। जगत सृष्टी समझयो बेगानी, आपणा घर ना कोए बणाईआ। कूड़ी क्रिया चढ़े तुग्यानी, माया ममता लहर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। भगत आत्मा की लै के जाएं संदेसा, सदा की सुणाईआ। की बिन कलम शाही समझया लेखा, बिन अक्खरां की पढ़ाईआ। आत्म कहे मैं भगतां कहिणा पुरख अकाल दा बण जाओ हेता, नाता कूड़ जगत तुड़ाईआ। राह विच जांदयां दो जहान लग्गे कोई ना ठेडा, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा कराईआ। भगत आत्मा कहे मेरे मालक हक, हकीकत दे जणाईआ। मैं लोकमात जावां नठ, खुशीआं फेरा पाईआ। पिछलयां कढ्ढां शक, सहिंसा दयां गवाईआ। भगत सुहेले तक्कां सख, जो तेरा नाम ध्याईआ। दुनिया नालों वक्ख, सोहणे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दे दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे तूं आत्म छेती उठ, दयां माण वड्याईआ। आ पी अमृत घुट, जाम रिहा चखाईआ। तैनूं नज़रीं आवे सब कुछ, तैनूं वेखण कोए ना पाईआ। थित वार तों बाहर तेरी सुहावां रुत्त, माघ पंज वज्जे वधाईआ। ओथे इकट्ठे होए गुरमुख पुत्त, पिता पूत इक मनाईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को साची तुक, सोहँ ढोला रहे गाईआ। भगत आत्मा कहे मैं की उन्हां उत्तों देवां सुट्ट, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा तूं नेड़े जा के खुशीआं विच रोवीं फुट्ट फुट्ट, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। मैं आवां बदल के रुख़, निरगुण निराकार वेस वटाईआ। तूं इक्को वार जाणा झुक, निरगुण सीस सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। आत्मा कहे प्रभू क्यों दस्सया पंज माघ, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा आदि सब तों पहलों भगत भगवान दा जगया सी चिराग़, एहो दिवस देवे वड्याईआ। दुरमति मैल धोया सी दाग़, पापां मूल चुकाईआ। सुरत गई सी जाग, निज नैण अक्ख खुल्हाईआ। तृष्ना बुझी सी आग, ममता मोह मिटाईआ। ध्रू नूं एसे दिन दिता सी राज, सच दुआर खुशी मनाईआ। अगे सतिजुग दा चलणा होर रिवाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे नाल वरताईआ। भगत आत्मा कहे मैं सुणाउण आई बात, जन भगतो दयां जणाईआ।

हुक्म दिता धुर दे बाप, परम पुरख होया सहाईआ। अगे लेखा चुकाए बण के सच्चा साक, सज्जण शहिनशाहीआ। जन भगतां देवे साथ, सगला संग निभाईआ। गुरमुख रुले कोई ना ख़ाक, मिट्टी ढेर ना कोए भवाईआ। एह गोबिन्द दा वाक्, वाक्य साहमणे दिता वखाईआ। अगला खेल तमाश, सर्ब रिहा समझाईआ। हौली हौली जे तुसां आउणा मेरे पास, लोकमात पन्ध मुकाईआ। सोहँ ढोला गाउणा स्वास स्वास, रसना जिह्वा जोड़ जुड़ाईआ। रूह बुत्त दोवें होवण पाक, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए गवाईआ। भगत आत्मा कहे मैं दस्सण आई अख़ीर, बिन अक्खरां रही जणाईआ। जन भगतो बदल लओ तकदीर, तदबीर रही दृढ़ाईआ। वेख्या धाम जित्थे ना कोई पातशाह वज़ीर, गुणी गहीर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत विच कबीर, पाल पल पल दरस दिखाईआ। मैनूं लभ्भा नहीं ओथे कोई फ़कीर, फ़िकरयां वाला ढोला ना कोए सुणाईआ। राह विच सारे बैठे दिलगीर, अद्धवाटे बैठे पाँधी राहीआ। तुहाडा नवां महल्ल अगे होण लग्गा तामीर, पुरख अकाल सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। भगत आत्मा कहे मैं संदेश देवण आई सच्चा, सच दयां जणाईआ। वेख्यो गुरमुख रहे कोई ना कच्चा, भावें टुट्ट जाए लोकाईआ। माई बाप भैण भाई किसे दा नहीं कोई सका, अन्त होवे सर्ब जुदाईआ। माया कारन मेलदे अक्खां, अन्तर आत्म प्रेम ना कोए बणाईआ। अन्तिम साड़ के आउण विच कक्खां, अग्नी अग्ग भेंट कराईआ। जन भगत प्रगट होवे कोटां विच्चों लखां, लख्मी नरायण दए सरनाईआ। मैं बणया ओस दा बच्चा, जो बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। प्रीती अंदर होवे पक्का, पक्की यारी तोड़ निभाईआ। तुहाडे कारन आया नट्ठा, पंज पोह फेरा पाईआ। भगत दवारे भगतां होया इक्ट्ठा, इक्ठ्ठ सोहणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। धुर दा हुक्म सुणावां इक, एकँकार रिहा जणाईआ। गुरमुखो प्रभ सरन आ के बण जाओ उह सिख, जो साख्यात प्रभ दा दर्शन पाईआ। जगत दुनी वखा दयो पिठ्ठ, करवट आपे लए बदलाईआ। साचे भगत कोई ना लवे पिट्ट, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। सीस निवाउणा नहीं किसे पत्थर इट्ट, इष्ट इक्को इक जणाईआ। जिधर वेखो ओधर पए दिस, दहि दिशा रिहा समाईआ। जे होर जाणो ते वसे तुहाडे विच, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत आत्मा कहे मेरा तत्तां वाला नहीं कोई सरूप, सरूप सिँघ रहिण कोए ना पाईआ। मैं ओस दा बणया पूत, जिस नूं पतिपरमेश्वर कह के सारे रहे गाईआ। मैं फिरना दहि दिशा चारे कूट, गुरमुख वेखां थाउँ थाँईआ। प्रेम प्यालयां विच पीणा दूध, अमृत

रस मुख वखाईआ। वेख्यो जगत वासना बदल ना ल्यो बुध, मन ममता विच फसाईआ। अगे किसे नूं कोई ना रिहा पुच्छ, राए धर्म दए सज़ाईआ। जिस वेले प्रभ ने गोदी आंदा चुक्क, चित्रगुप्त निउँ निउँ सीस निवाईआ। वेख्यो एस निशान्यौं ना जायो उक, उका फ़ैसला लैणा कराईआ। मंज़ल चढ़िओ जायो ना घुथ्थ, पाँधी हो के चलणा चाँईं चाँईंआ। भावें माता पिता साक जावे छुट्ट, प्रभ दे नालों ना होए जुदाईआ। भगतां पिछला नाता जावे तुट्ट, सौहरा पईआ ना कोए सुहाईआ। फिर वी ओस अकाल दे बणयो सुत, जो आदि जुगादि गोदी रिहा उठाईआ। सद भाणे विच रहिणा खुश, चिन्ता ग़म ना कोए वधाईआ। मैनूं एथे नहीं कोई दुःख, तुहानूं दुःख ना कोए सताईआ। मैं चाहुन्दी जिवें होया मेरा उज्जल मुख, एह सब नूं मिले वड्याईआ। मैं लोकमात दा बूटा पुट्ट, सचखण्ड दवारे जड़ देणी लगाईआ। मेरी सदा मौली रहे बसन्ती रुत्त, खिज़ां रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंज माघ कहे क्यों मेरी आई रुत्त, दिवस रैण वज्जी वधाईआ। मैं सब नूं रिहा पुछ, जो सनमुख बैठे सोभा पाईआ। की तुसीं रहोगे इके दे पुत्त, कि वण्डां जग वखाईआ। जाओगे ओस नूं झुक्क, जो सिर सिर रिज़क सबाईआ। पढ़ोगे इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। वेख्यो हँकार विच कदे ना जायो रुठ, नाता विकार नाल जुड़ाईआ। अन्तिम काया बूटा सब दा जाणा सुक्क, पत्त डाली रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों मनाईआ। माघ कहे उह दर सर्ब खुशहाल, पंच परवान रहे सुणाईआ। प्रधान हो के बणे लाल, सचखण्ड मिली वड्याईआ। साचे दर सोहे राजान, रईयत दो जहान अख्वाईआ। मुकामे हक पाया माण, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। मैं देवण आया धुर फ़रमान, संदेसा सति सति सुणाईआ। वेख्यो जन भगतो किसे भगत दी कदे लाहुण ना जायो मुकाण, जगत रीती ना वण्ड वण्डाईआ। गुरमुखां दा मालक श्री भगवान, ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधा मुल्ला शेख़ ना कोए छुडाईआ। सब दा नाता पीण खाण, वस्त्र ओढण लै के खुशी मनाईआ। माघ कहे कैं होया हैरान, गोबिन्द फ़रमान भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रीत रिहा बदलाईआ। भगत आत्मा कहे तुहाडा मार्ग लगणा मात, मता रिहा जणाईआ। मेरी ऐवें ना समझयो बात, फ़रमाना धुर दा इक दृढ़ाईआ। सुगंध खा के जायो अज्ज दी रात, अन्तर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल सब ने मन्नणा बाप, ओट इक्को इक तकाईआ। आत्मा कहे मैं ओसदी ज़ात, अन्तिम ओसे विच समाईआ। मुहब्बत वाला नात, प्रेम विच बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे जन भगतो कर लओ इक्को प्रण, प्रणाम इक जणाईआ। जीवण नालों चंगा समझयो मरन,

जिस मरन तों पिच्छो प्रभ दे विच समाईआ। साची मंज़ल पौड़ी सिख्यो चढ़न, आपणा बल वधाईआ। जे कोई मन वासना तुहाडे नाल आवे लड़न, ओहदे वल्ल ना अक्ख उठाईआ। जे कोई तुहाडा धर्म सति आवे हरन, उस दा मुखड़ा दयो भवाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को बख्श साची सरन, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख आशा कहे जन भगतो भगतां नूं कोई ना किहो सुहागण रंडी, विधवा रूप ना कोए बणाईआ। आत्मा दा परमात्मा सदा संगी, जो विछड़यां रिहा जुड़ाईआ। कोई ना किहो होई सिरों नंगी, ओढण सीस ना कोई टिकाईआ। जिस दा मालक सूरा सरबंगी, हर थाँ देवे माण वड्याईआ। गुरमुखो भाणे विच ना कटयो तंगी, दुःख सुख विच लैणा बदलाईआ। एस धरती नालों प्रभ दी चरण प्रीती चंगी, जो चन्द वांग रुशनाईआ। तुहाडे उत्ते समाज दी रहे ना कोए पाबन्दी, कलयुग पागल दिसे लोकाईआ। गुरमुख हड्डीआं पायो कोई ना विच गंगी, जमना सुरस्ती गोदावरी गुरमुखां दे चरणां हेठां सीस दबाईआ। इक्को ढोला गाउणा छन्दी, मेरा तेरा राग सुणाईआ। गुरसिख नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, निज लोचण दए खुल्हाईआ। भगत आत्मा तुहाडे कोलों रही मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। वेख्यो धार रक्ख्यो ना कोए दुरंगी, जूठा झूठा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत आत्मा कहे मैं वेखां खुशीआं नैण, निगाह निगाहबान टिकाईआ। नाता जोड़ लओ भाई भैण, दूजी अक्ख ना कोए बदलाईआ। तुहानूं मिल गई चरण प्रीती इक रसैण, जो कंचन सोना दए वखाईआ। ढाई सतरां दा लेखा सरूप सिँघ दा विच रमायण, बाल्मीक गया लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। भगत आत्मा कहे मैं भगतां दा वेख इक्ठ, आई वाहो दाहीआ। गुरमुखो रखयो हठ, झल्लणी जगत जुदाईआ। तुहाडा वक्खरा खुल्हणा हट्ट, भण्डारा लैणा चाँईं चाँईंआ। की होया जे साथी साथ गया छड्ड, अगे बैठा राह तकाईआ। तुहाडे नालों होण नहीं देणा अड्ड, वक्खरे थाँ ना कोए बहाईआ। नाता छुट्टया नाड़ मास हड्ड, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सच दवारे रिहा गज्ज, ढोला इक्को रिहा सुणाईआ। की होया जे ठीकर गया भज्ज, तत्तां कीती जुदाईआ। मैं तुहाडे विच हाज़र अज्ज, पंज माघ करी रुशनाईआ। दर्शन कर के गया रज, तुसां दिती माण वड्याईआ। प्रीती अंदर गया बज्झ, मुहब्बत विच शरमाईआ। मैं नीवां हो के झुकावां मथ्थ, हौली हौली पलक उठाईआ। मनजीत नूं रिहा दस्स, सहिज सहिज समझाईआ। पुरख अकाल दी रखणी पत, की होया अन्त होई जुदाईआ। धीरज रखणा सति, धर्म ना जाणा डुलाईआ। छेती होवण वाला इक्ठ, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। बेशक भैण भ्रा सज्जण साक सारे जाण नठ्ठ, गुरमुख वीर तेरे

नज़री आईआ। अगे नूं एह मार्ग चलणा सच, सच दयां समझाईआ। सब ने इक दूजे नाल मिला के चलणा हथ्थ, दो हथ्थां ताली देणी वजाईआ। प्रेम प्यार अंदर बह के इक्ठ्ठयां लैणा छक, शक होर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं सोहणा लग्गा दिहाड़ा, त्योहार खुशीआं नाल मनाईआ। मेरा मन्ज़ूर होया हाढ़ा, बेनन्ती लेखे लाईआ। गुरमुखां रंग वेख्या गाड़्हा, रूप आपणा रिहा बदलाईआ। जन भगतो प्रभ दे हुक्म अगे किसे दा नहीं कोई चारा, चार जुग रोंदे देंदे गए दुहाईआ। सच फ़रमान दा समझयो इक इशारा, जो अंदरे अंदर रिहा वखाईआ। गुरमुख भगत श्री भगवान दा सच्चा लाड़ा, जिसनूं खुशीआं नाल लै के जाए चाँईं चाँईंआ। ओथे ना कोई पुरख ते ना कोई नारा, नार पुरख जगत वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतो तुहाडी लेखे लाउणी भगती, भाग हिस्सा झोली पाईआ। भाणा मन्नण दी देणी शक्ती, शख्सीअत देणी बदलाईआ। तुहाडी धार रखणी दोहरफ़ी, पढ़नी अवर ना कोए पढ़ाईआ। गुरमुख आत्म कदे ना हरदी, जो हिरदे हरि रिहा वसाईआ। दीन दयाल ओस दा दर्दी, दुखियां दा दुःख झोली रिहा पाईआ। सदा धार रखे चढ़दी, चढ़दा लैहन्दा दक्खण पहाड़ खोज खुजाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण प्रीत बख्शे आपणी लै दी, नालायक लायक आपे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, परमात्म आत्म आत्म परमात्म अन्तर अन्त अन्तिम अन्तरीव आपणे विच मिलाईआ।

✪ ६ माघ शहिनशाही सम्मत १ सूबेदार मस्सा सिँघ दे नवित पिण्ड कोटली थान ज़िला जलन्धर ✪

भगत आत्मा कहे मैं प्रेम प्यार दी भुक्खी, आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को दरस ध्यान लगाईआ। लोकमात छड्ड के सचखण्ड दुआर सदा सुखी, चिन्ता ग़म नज़र कोए ना आईआ। मैं दो जहानां विच्चों हो गई उच्ची, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दिते तजाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार दी गोद विच सुत्ती, जिथ्थों सके ना कोए उठाईआ। बिन तत शरीर मन वासना मेरी लग्गी रुची, आत्म परमात्म विच समाईआ। मेरी औध कदे ना मुकी, जन्म मरन ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। भगत आत्मा कहे मैं होई सदा खुशहाल, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। सचखण्ड दवारा तक्क सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची सोभा पाईआ। पतिपरमेश्वर मिल्या दीन दयाल, दीना बंधप होए सहाईआ। कूड़ा नाता तुटया विच जहान, माया ममता मोह दिता मिटाईआ। निरगुण निरवैर

निराकार दरस पाया श्री भगवान, उत्ते अर्श वज्जी वधाईआ। सच दवारे ठांडे दरबार मिल्या माण, चरण कँवल कँवल चरण सरनाईआ। सुख सांतक पाया इक आराम, दु:ख दर्द नेड़ ना आईआ। मैं भगतां देवां सच पैग़ाम, सच संदेसा हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ...। भगत आत्मा कहे मैनूं आवे अगम्मड़ा हासा, पुरख अकाल दीन दयाल मेरी हस्ती दिती मिटाईआ। मैं वेख्या दीन दुनी जगत तमाशा, मानस मानुख मानव तन हंढाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ चलदा रिहा राथा, पंज तत भज्जया वाहो दाहीआ। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण नार कन्त वेख्या नाता, नेत्र नैण वेख वखाईआ। अन्त किरपा करी श्री भगवन्त दरस दिखाया पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं याद आया पिछला पूरब जन्म दा साका, साख्यात दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द नीहां हेठ दबाया निक्का काका, छोटा बाला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं पिछली आई याद, पूरब लहिणा नज़री आईआ। नेत्र वेख्या खेल तमाश, परदा ओहला ना कोए जणाईआ। सुणी अगम्मी आवाज़, शब्द नाद शनवाईआ। परदा खुल्ल्हया राज़, मन का मणका दिता भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सच करनी कहे कवण खेल जाणे करतार, दो जहान समझ कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कूक कूक करन पुकार, सोहले ढोले राग अल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी बदलदे रहे वारो वार, नित नवित आपणा फेरा पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण सरगुण लए अवतार, लख चुरासी जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत सुहेला गुरू गुर चेला शब्द अगम्मी धुन आत्मक बोल इक जैकार, नाअरा हक हक सुणाईआ। सच तौफ़ीक परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। भगत आत्मा कहे लेखा जुग चौकड़ी साख्यात, लोकमात खेल खिलाईआ। पंज तत काया माटी देवां साथ, त्रैगुण नाता सहिज सुभाईआ। मन मति बुध करां प्रकाश, भेव अभेद खुल्हाईआ। निरगुण निरवैर करां याद, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। माटी खेड़ा करां आबाद, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। शब्द वजा सच्चा धुन नाद, अनरागी राग अल्हाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द छड्ड स्वाद, रस इक्को इक चखाईआ। दीन दुनी सुहावा बाग़, चार कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा वखाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं नज़री आए ओह लिख्त, जिस दा हरफ़ हरूफ़ ना कोए समझाईआ। जिस दा कोई ना जाणे भविख्त, बुद्धिवान ना कोए वड्याईआ। परदा लाहे ना कोए दृष्ट, दृष्टांत विच ना कोए समझाईआ। मेरा आदि जुगादी इक्को इष्ट, आत्म परमात्म विच समाईआ।

थोड़ा इशारा राम नाल वशिष्ट, विशेषता नाल गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं आदि जुगादी, नित नित वेस वटाईआ। हुक्मे विच खेल करां ब्रह्मादी, ब्रह्मांड खोज खुजाईआ। मैं कोटां विच्चों गुरमुखां दी थोड़ी रखां आबादी, जिन्हां अबादत इक्को दयां समझाईआ। मंत्र सुणावां धुन अनादी, बिन रसना जेहवा गाईआ। बिन मक्के काअबे बणावां हाजी, हुजरा हक हक दरसाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत तों करां आज़ादी, घर गृह इक्को दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत आत्मा कहे मेरा पुरख अकाल नाल समाज, दूजा संग ना कोए रखाईआ। नित नवित ओस दी रखां आस, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। प्रेम प्रीत विच प्यास, तृष्ना कूड़ मिटाईआ। बिन गोपी काहन पावां रास, मण्डल मण्डप वज्जे वधाईआ। जोती दिसे नूर तक्कां प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ। एथे ओथे दो जहानां साचा देवे साथ, सगला संग निभाईआ। मैनूं पिछली आई याद, त्रेता दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म सदा वरताईआ। धुर दा हुक्म सदा वरतंत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी खेल भगत भगवन्त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी ढोले गाईआ। धन्न वड्याई गुरमुख साचे सन्त, जिन्हां सज्जण मिल्या बेपरवाहीआ। उन्हां अन्तर आत्म निरंतर इक्को मंत, बसन्तर कूड़ी गए बुझाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक्को नज़री आईआ। लेखा मुका के बहिश्त जन्नत, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। सदा खुल्ही रहे दृष्ट, बुद्धी दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आए इष्ट, ईश्वर आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। आत्मा कहे मैं सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। मेरी परम पुरख नाल प्रीत, पतिपरमेश्वर संग निभाईआ। मेरा झगड़ा नहीं कोई मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ्ठ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेरा रौला नहीं ऊँच नीच, घट घट अंदर डेरा लाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दस्सां प्रभ दा साचा गाउंदे गीत, निरअक्खर अक्खर अक्खर कर पढ़ाईआ। चरण प्रीती दस्सां धुर दी रीत, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, इक्को रंग दयां चढ़ाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी जिस उपर आपणी आप करे बख़्शीश, रहमत रहीम रहमान कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ। भगत आत्मा कहे मैं नहीं तक्कया कोई लोक, लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड भज्जी ना वाहो दाहीआ। परम पुरख परमात्म निरगुण निरवैर निराकार आदि निरँजण मैनूं दस्सया सच सलोक, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला दिता समझाईआ। मैं तक्क के ओस दी ओट, ओड़क नाते झूठे

दिते तुड़ाईआ। मैं दर्शन करां रोज़, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सच दवारे मिली मौज, मजलस भगतां विच लगाईआ। जिस दी कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर सृष्टी दृष्टी इष्टी अंदर करदे खोज, चार कुण्ट दहि दिशा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। भगत आत्मा कहे मैं प्रेम प्रीती अंदर बज्झी, नाते कूड़े गई तुड़ाईआ। मैं सच दवारे आई सद्दी, सद्दा दिता धुरदरगाहीआ। मेरी आयू कोई ना समझयो अद्धी, जुग जन्म मरन रूप ना कोए वटाईआ। मेरा तन वजूद मूल ना समझयो हड्डी, हड्ड मास रंग ना कोए रखाईआ। मैं जुग जुग लोकमात आवां कदी कदी, कदीम तों रीती प्रभ बणाईआ। मेरा लेखा नहीं विच सुदी वदी, नछत्रां विच ना कोए गिणाईआ। मेरी जोत निर्मल निरालम जगी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हुक्म सुणाईआ। आत्मा कहे मेरा पूरब कोई लेखा, पिछला नज़री आईआ। मैं जिस सरहन्द ल्या सी ठेका, बच्चयां नीहां हेठ दबाईआ। मेरा ओस दे नाल थोड़ा जिहा हिस्सा, हिस्सेदार दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब परदा दए उठाईआ। आत्मा कहे मैं पिछली दस्सां बात, सहिज सच सुणाईआ। जिस वेले इट्टां लाउण लग्गा राज, हुक्म शहिनशाहीआ। मेरे अंदरों निकली इक आवाज, प्रभू दिता दृढ़ाईआ। क्यों डोबण लग्गों बेड़ा भर जहाज़, जहालत विच लोकाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी वुज़ूआं वाली नमाज़, काअब्यां वाला सीस ना कोए सुहाईआ। कूड़ी क्रिया लाउण लग्गों दाग़, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। एह गोबिन्द दे चिराग़, जो चरागाहां विच करन रुशनाईआ। जिन्हां दा खेड़ा होणा आबाद, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। एह ओसे विच विस्माद, जिस दा रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। आत्मा कहे मेरा नाम ओस वक्त सी दास, दास कह के सारे गाईआ। मैं अंदर बाहर तक्कया गोबिन्द खड़ा पास, सनमुख हो के रिहा वखाईआ। मैं दोए जोड़ बेनन्ती कीती अरदास, निउँ के सीस निवाईआ। एह बाले नढ्ढे तेरी शाख़, लोकमात लहर लहराईआ। ओस शब्दी दे आवाज़, मेरा खोल्ह दिता राज़, परदा दिता उठाईआ। एह हुक्म पुरख अकाल, करनी दा करता खेल करे कमाल, जग जीव समझ कोए ना आईआ। गोबिन्द किहा बेशक एह मेरे लाल, जगत दा बणां दलाल, अहिवाल इन्हां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। दास कहे मैं अगे कीता दस्त, कदमां वल्ल ध्यान लगाईआ। मेरी आत्मा हो गई मस्त, खुमारी विच लई अंगड़ाईआ। मेरी कूड़ कुड़यारी वासना होई नष्ट, सुगंधी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। दास कहे मैं वेख्या दस्तगीर, शाह पातशाह

२१८ ‍ १६

नज़री आईआ। दो जहानां वाली इक्को पीर, पैगम्बर बेपरवाहीआ। जलवागर नूर बेनज़ीर, नेत्र अक्ख ना कोए तकाईआ। कर बेनन्ती किहा बदल दे तकदीर, हुक्मे विच रज़ाईआ। गोबिन्द किहा एह वेला अन्त अख़ीर, ख़बर दयां समझाईआ। शब्दी खण्डे खिच्च इक लकीर, निशाना धुर दा दिता वखाईआ। करे खेल गुणी गहीर, गहर गम्भीर गवर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख आत्मा कहे मैं रखी इक उम्मीद, आशा गोबिन्द दिती जणाईआ। इन्नां नाल मैनूं कर शहीद, शहादत आपणी दे भुगताईआ। मैं वेख के तेरी दीद, दामन फड़ां चाँईं चाँईंआ। तूं वस्या सदा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तूं ठाकर स्वामी ठीक, ठोकर आपणी दे लगाईआ। कलयुग अन्धेरा होया तारीक, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत शरअ होई शरीक, शिरक्त विच लोकाईआ। तेरे विच वड तौफ़ीक, ताबेदारी दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा एह हुक्म पुरख अकाल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस कारन नीहां हेठ दब्बे बाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कलयुग अन्त सृष्टी दृष्टी होणी बेहाल, चार वरन दए दुहाईआ। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया वज्जणा ताल, गुरू अवतार पीर पैगम्बर नेड़े हो ना कोए छुडाईआ। तेरा मन्न ल्या स्वाल, तेरी पूरी करां घाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। दास रो के कीता हाल हाल, तूं शहिनशाह मैं कंगाल, तेरा खेल बेमिसाल, दो जहान खेल ना कोए बताईआ। गोबिन्द किहा मैं गुरमुखां दे सदा नाल, नाता तोड़ां काल महाकाल, सेवा करां हो के दीन दयाल, रकशक पालक प्रितपालक फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुरसिख आत्मा कहे मैं बेनन्ती कर के किहा तेरी दासी, दास्तान दिती सुणाईआ। मेरी मनसा पूरी करनी आसी, आसरा तेरा इक तकाईआ। गल पए ना जम की फाँसी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मंज़ल चाढ़ीं इक्को अनोखी घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। देवीं दरस मेरे कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो के नज़री आईआ। तूं सचखण्ड दा वासी, निवास अस्थान आपणा देणा वखाईआ। जित्थे इक्को जोत प्रकाशी, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिवस ना कोए राती, घड़ी पल ना वण्ड वण्डाईआ। ना कोई संधया ना प्रभाती, इक्को रंग रिहा रंगाईआ। मेरी भुल्ल ना जाईं यादी, नेत्र रो के दयां दुहाईआ। गोबिन्द किहा तेरी पुरख अकाल बणावे साची साखी, साख्यात हो के दया कमाईआ। जन्म कर्म दी बन्द किवाड़ी खोल्हे ताकी, परदा अंदरों दए उठाईआ। नाम प्याला देवे बण के धुर दा साकी, इक्को रस दए चखाईआ। मनुआ मन ना रहे आकी, मति मतवाली दए मिटाईआ। साख्यात दरस दिखावे कमलापाती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ।

तेरे जीवण विच्चों तेरी बदल देवे हयाती, हरि हरि आपणा रंग चढ़ाईआ। जुग चौकड़ी तेरा जस शब्द अगम्मा गावे गाथी, नित नित सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दास कहे मैं किहा गोबिन्द शब्दी सूर, सूरबीर तेरी सरनाईआ। तूं आसा मनसा पूर, तृष्ना भुक्ख दे मिटाईआ। चरण प्रीती बख्श साची धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, मेहर नज़र इक उठाईआ। तेरा भाणा तेरा हुक्म तेरा फ़रमाना सानूं मन्ज़ूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। गोबिन्द किहा तेरा लेखा लहिणा कलयुग अन्त चुकावां जरूर, जरूरत पिछली वेख वखाईआ। मन मनसा मेट देवां वांग काफ़ूर, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। जिधर तक्कें हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी गुणवन्ता दया कमाईआ। भगत आत्मा कहे मैं वेख के खेल अगम्मा, खुशीआं विच खुशी मनाईआ। पुरख अकाल इक्को मन्ना, मेहरवान होए सहाईआ। नाता छड्डुया पिछला माटी काया चम्मा, तत जगत विच तजाईआ। हुक्मे अंदर आया भन्ना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाम निधाना सुणया कन्नां, अनरागी राग ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दे चुकाईआ। आत्मा कहे मैं सुणया पिछला गीत, गोबिन्द अगम्म गाईआ। मैनूं होई दीद, दर्शन पाया शहिनशाहीआ। मैं आस उम्मीद, तृष्ना दिती मिटाईआ। पूरी कर रीझ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला ल्या मिलाईआ। भगत आत्मा कहे मैं धन्न होया होया मिलाप, मेला हरि जू आप कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जगजीवण दाते परदा दिता उठाईआ। कोटन जन्म दे मेट के पिछले पाप, दुरमति मैल दिती धवाईआ। आत्म परमात्म बण के सच्चा साक, ब्रह्म पारब्रह्म मेला ल्या कराईआ। भाग लगा के काया माटी तन वजूद ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। एथे ओथे दो जहानां श्री भगवाना दे के साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। भगत आत्मा कहे मेरे उत्ते होया मेहरवान, प्रभ बेपरवाहीआ। जिस विछड़ी मेली आण, आनन फ़ानन लेखा दिता मुकाईआ। घर जोती मिल्या काहन, बंसरी नाम दिती सुणाईआ। साची सीता मिल्या राम, सीता सुरती आप प्रनाईआ। सच पैगम्बर दे पैग़ाम, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। मंत्र दस्स के साचा सतिनाम, नानक निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। गोबिन्द खेल करे महान, शब्दी शब्द वेस वटाईआ। बिन नेत्र नैणां अक्खां मार ध्यान, लख चुरासी विच्चों परदा दिता चुकाईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशण दे के इक आराम, आरामगाह दिती वखाईआ। जित्थे ना कोई सजदा ना सलाम, डण्डावत वाला रूप ना कोए बदलाईआ। ना कोई रसना जिह्वा बत्ती

दन्द सिफ्ती करे कलाम, ढोले राग ना कोए सुणाईआ। ना कोई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई मुहम्मद ना कोई काहन, तत्तां वाला रूप ना कोए वखाईआ। इक्को जोती जाता पुरख बिधाता जलवागर नूर नुरान, इन्सान नज़र कोए ना आईआ। भगत आत्मा कहे मैं वेख होई हैरान, ना कोई बिरध ना बाल जवान, बुढेपा रूप ना कोए बदलाईआ। ना कोई मन्दिर ना मकान, ना कोई तेल बाती दीआ जगे महान, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा झोली पाईआ। पूरब लेखा वेख्या चुकदा, दर घर साचे मिली वड्याईआ। गोबिन्द निशाना कदे ना उकदा, अणयाला तीर चलाईआ। जन भगतां शब्दी धार पुछदा, गुरमुखां गुर गुर गोद उठाईआ। भाग सुलखणा करे माता दी कुक्ख दा, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सच्चे मेल मिलाईआ। हरिजन सच्चा कहे मेरा स्वामी इक, एकँकार नज़री आईआ। दूसर कोई ना आवे दिस, दहि दिशा ना कोए वड्याईआ। जिस मनसा पूरी कीती इच्छ, इश्क आपणा ल्या लगाईआ। जगत वासना विच्चों ल्या खिच्च, सहिज सभाओ मेल मिलाईआ। अगे दर्शन देवे नित, आवण जावण पैंडा दिता छुडाईआ। मालक बण के धुर दा पित, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। सचखण्ड दवारे करे साचा हित, हितकारी इक्को नूर खुदाईआ। निहकर्मी हो के कर्म कांड दा लेखा दिता नजिठ्ठ, निरवैर हो के दया कमाईआ। स्वामी हो के ना देवे पिठ्ठ, करवट बदले थाउँ थाँईंआ। सन्त सुहेले रखे साया हेठ, मस्त खुमारी नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत आत्मा कहे मैं खुशीआं नाल हस्सां, ढोला धुर दा इक्को गाईआ। प्रेमीआं प्यारयां दीआं अक्खां, लोकमात ध्यान लगाईआ। गुरमुख वेखां सच्चा, जो प्रभ नूं रिहा ध्याईआ। कलयुग भाण्डा वेखां कच्चा, जगत वासना विच हल्काईआ। प्रेम प्रीती नाता वेखां पक्का, कवण गुरमुख रिहा हंढाहीआ। छड्ड मदीना मक्का, काया काअबा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख कहे मैं खुशीआं विच हस्सया, चाउ घनेरा नज़री आईआ। जगत अन्धेरी वेखी मस्सया, मस्सा सिंघ रिहा सुणाईआ। मेरे घर दा खेड़ा वस्या, जित्थे भगत सुहेले सोभा पाईआ। जिन्हां नाल रहिणा सदा इक्ठ्ठया, एथे ओथे ना होए जुदाईआ। मेरा साढे तिन्न हथ्थ बुरज वजूद कूड़ा ढठ्ठया, आत्म परमात्म सदा सदा सद इक्को रंग समाईआ। पुरख अकाल दा बण के बच्चया, बचपन आपणा ल्या बदलाईआ। इक्को ढोला नाम रटया, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। मानस जन्म विच्चों हरि का नाम लाहा खट्टया, कूड़ कुड़यारा दिता तजाईआ। मैं खुशीआं नाल सचखण्ड दवारे गया नट्ठया, भज्जया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दिती वखाईआ।

भगत कहे मैं वेख्या दवारा, सति सति नज़री आईआ। जित्थे भगत भगवान दा इक जैकारा, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। बिन अक्खां होए इशारा, बिन सैनत लए समझाईआ। बिन तेल बाती होए उज्यारा, नूरो नूर होए रुशनाईआ। बिन सखियां लग्गे अखाड़ा, बिन गोपी काहन रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मस्सा सिँघ कहे मैं होया मस्त, मस्त खुमारी नज़री आईआ। मैं चढ़ के वेख्या उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम बेपरवाहीआ। जिस दा एथे ओथे इक्को दरस, दर्शन दे के खुशी मनाईआ। जन्म जन्म दी मेट के हरस, हवस दिती गवाईआ। मेरे उत्ते करके तरस, विछड़यां ल्या जुड़ाईआ। एह खेल वड्डा असचरज, अचरज लीला रिहा वरताईआ। कलयुग कूड़ा वेख अन्धेरा गर्द, धूआँधार विच लोकाईआ। गुरमुख विरला प्रभ दा प्रेमी बणे मर्द, मर्द मर्दाना रूप वटाईआ। पंज तत काया माटी करके हर्ज, हुजरे सच दे बह के खुशी मनाईआ। जगत वासना कूड़ी छड्ड के गरज, ओट इक्को इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। गुरमुख आत्मा कहे मेरी लैणी इक सलाह, सर्ब दयां समझाईआ। प्रभ दा नाउँ भुल्लयो कोई ना, नव नौ चार ना कोए वड्याईआ। बिना हरि सरन नहीं कोई थाँ, ब्रह्मण्ड
२२१ खण्ड रहे कुरलाईआ। अन्तिम नाता तुट्टे पिता माँ, भैण भाई संग ना कोए निभाईआ। बिना सतिगुर शब्दी कोई ना देवे २२१
१६ ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जन भगतां प्रभ ने सिधा दस्सया राह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। १६
विष्न ब्रह्मा शिव सीस रहे झुका, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दवारे चरण कँवल मिले सरना, सरनगति इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए जुड़ाईआ। गुरमुख आत्मा कहे मैं दस्सां अनौखी गल्ल, गलवकड़ी सब नूं पाईआ। जेहड़ा लेखा होया अज्ज ते कल्ल, कलमयां तों बाहर रिहा दृढ़ाईआ। शब्दी गोबिन्द देवे फल, फलीभूत देवे कराईआ। चुरासी विच्चों स्वाल होया हल्ल, हालत आपणी लई बदलाईआ। जिस ने हुक्में अंदर दिता घल्ल, अन्तिम ओह गोद उठाईआ। विछोड़ा होवे ना घड़ी पल, जुदा होण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। सरनगति देवे पुरख अकाल, अकल कलधारी दया कमाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वखाईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। जन भगतां पोह ना सके काल, लाड़ी मौत ना वण्ड वण्डाईआ। जन्म जन्म दी लेखे पाई घाल, घाल पिछली वेख वखाईआ। जन भगतो मैं तुहाडा बणां दलाल, विचोला धुर दा नज़री आईआ। तुसां सहिजे मिलणा आण, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान श्री भगवान, भगतां देवणहार सरनाईआ। लोकमात पीओ हकीकी जाम, कूड़ा रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे लए बहाईआ। दर ठांडा वेखो सच दरबार, दरगाह साची नज़री आईआ। जित्थे वसे एका एकँकार, निरगुण निरवैर सोभा पाईआ। लख चुरासी जिस दा अधार, सरगुण वज्जे वधाईआ। उह भगत सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। नाता तोड़ के शाह कंगाल, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। चुरासी विच्चों करे बहाल, बिहबल नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। मस्सा सिँघ कहे मेरा कोमल समझयो ना कोए सरीर मलूक, मालक देवणहार वड्याईआ। जन भगतो चार वरन रक्ख्यो सलूक, दीन मज़्हब करे ना कोए लड़ाईआ। सब दा पंज तत काया कलबूत, अंदर नूर नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल सदा मौजूद, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीत अंदर करे मसरूफ़, मसनिफ हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो जे आए भगत दी ख़ातर, ख़तरा दयो मिटाईआ। बणयो धर्म प्यार दे चातर, चातृक रूप सर्ब वटाईआ। दर्शन करयो बातन, निज नेत्र नूर रुशनाईआ। मैं आया तुहानूं आखण, दूर दुराडा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। जन भगत कहे मैं दस्सण आया कहाणी, कहावत नाल रलाईआ। जन भगतो प्रभू दी भुल्लयो कदे ना बाणी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग चढ़ाईआ। सति धर्म दी रखयो याद निशानी, कूड़ अपराध ना कोए कमाईआ। तुहाडा आत्म जोत नुरानी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। खेल वेखणा दो जहानी, लोक परलोक खुशी मनाईआ। अमृत जल पीणा ठंडा पाणी, निज आत्म रस चखाईआ। तुहाडी सतिगुरू दवारे मन्ज़ूर सदा कुरबानी, जे मन दी मनसा दयो मिटाईआ। तुहाडी चढ़दी सदा जवानी, बुढेपा परत कोए ना आईआ। मिले वड्याई विच चार खाणी, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तराईआ। मैं देवां संदेसा इक कौर भजन, फ़रमाना धुर सुणाईआ। पुरख अकाल धुर दा सज्जण, सगला संग निभाईआ। धूढ़ी चरण मज्जन, दुरमति मैल धवाईआ। जो घड़े ठीकर सो भज्जण, थिर रहिण कोए ना पाईआ। प्यार अंदर रहिणा मग्न, हिरदे हरि वसाईआ। पुरख अकाल दी लग्गे लग्न, कूड़ी क्रिया देणी तजाईआ। सीस होवे ना कदे नग्न, समरथ हथ्थ टिकाईआ। किसे दवारे ना जाणा मंगण, ख़ाली भण्डारे दए भराईआ। सति धर्म ना पार करनी उलँघण, नेत्र अक्ख ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत आत्मा कहे झूठा नाता नार कन्त, तत्तां वाली वड्याईआ। जिन्नां मिल्या श्री भगवन्त, ओह भगवन विच गए समाईआ। अन्तर आत्मा नाम मंत, ढोला इक्को गाईआ। उह परम पुरख दे सन्त, अन्त सतिगुर विच समाईआ। कोई समझ ना सके पांधा पंडत, मुल्ला शेख़ ना कोए

समझाईआ। गुरमुख तेरी सब तों वड्डी हिम्मत, हौसला इक जणाईआ। तेरे नेड़ ना आवे कामना वाली इल्लत, दुर्गन्धी अंदरों देणी कढाहीआ। किसे दा बणना नहीं कदे वी निन्दक, निंदया मुख ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। भगत आत्मा कहे तूं आत्म बणी रहीं सच्ची, सच विच समाईआ। पुरख अकाल बणावणहारा साची बच्ची, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। नाम पदार्थ रंगण दे के रती, रतन अमोलक हीरे माण दए वड्याईआ। तेरा सदा जीउदा पती, पतण बह के खुशी मनाईआ। की होया जे जगत विच्चों बुझ गई बत्ती, अगे निरगुण जोत विच समाईआ। वक्त नाल आ के वेखीं बिना अक्खीं, आख़र उहो नज़री आईआ। खुशीआं नाल हस्सीं, गीत गोबिन्द अल्हाईआ। कलयुग कूड़ी तपण वाली भट्ठी, चारों कुण्ट अग्नी इक जलाईआ। धन्न भाग जे भगतां संगत होई इक्ट्ठी, गुरमुख मिल के सोभा पाईआ। जिन्हां पढ़ी इक्को पट्टी, बिन अक्खरां करन लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। भगत आत्मा कहे रखणा सच्चा सति, सति सतिवादी दया कमाईआ। किसे वल वेखणा नहीं बेगानी अक्ख, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। जगत वासना देणी छड्ड, हड्डां दी रहे ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म मेला करना सच, सच विच समाईआ। नाम निधाना साढे तिन्न करोड़ जावे रच, रचना अगली दए वखाईआ। पुरख अकाल दी इक्को मत, मते अवर ना कोए जणाईआ। धीरज विच रखणा हठ, सति सति विच टिकाईआ। मानस जन्म काया खेड़ा ना होवे भठ्ठ, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र पार लँघाईआ। मस्सा सिंघ कहे मेरा हल्ल होया मसला, प्रभू मिसल दिती बणाईआ। मेरा रूप प्रगट होया असला, असलीअत दिती जणाईआ। मैं सचखण्ड दवारे वसणा, बस्ती सोहणी नज़री आईआ। जित्थे वसे वासी पटणा, शब्दी धारा इक प्रगटाईआ। जन भगतो लोकमात मानस जन्म दी इक्को वार घटना, फिर घाटयां विच्चों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए वड्याईआ। भगत आत्मा कहे मेरी आसा पुन्नी, पुनह पुनह सरनाईआ। गुरमुख वेखे वड्डे गुणी, गहर गम्भीर दिती सरनाईआ। जिन्हां दे हिरदे अंदर इक्को आवाज़ सुणी, तूंही तूंही ढोला गाईआ। उह भगत सुहागण भैण नूं देवण आए प्रेम प्यार दी चुन्नी, ओढण सोहणा सीस टिकाईआ। किसे पासिउँ ना रहे ऊणी, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। सब दे विच्चों प्यारा दिसे मुनी, लाल लाल रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग सब दा झोली पाईआ। भाग कहे मैं भागां वाला, भगवन होए सहाईआ। जन भगतां वेखां घर सच्ची धर्मसाला, जित्थे गुरमुख बह के खुशी मनाईआ। इक्को मृदंग इक्को वज्जे ताला, तलवाड़ा राग इक्को इक गाईआ। इक्को

राह रहबर दस्से सुखाला, सुख सागर विच समाईआ। इक्को नूर होए उजाला, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मिलाईआ। जन भगत कहे मैं वेख के अन्त मुड़दा, आप आपणा रुख़ बदलाईआ। संदेसा सुनेहड़ा दे के धुर दा, धरनी धरत गया सुणाईआ। लेखा वेखो पूरे सतिगुर दा, शब्दी शब्द दया कमाईआ। जो मालक अनन्दपुर दा, पुरीआं लोआं तों बाहर डेरा लाईआ। जिस दा कीता कौल इकरार कदे ना थुड़दा, बहुत्यां विच्चों थोड़े रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपाल हो के वेख वखाईआ। भगत आसा कहे मैं देंदी जावां असीस, अर्शीवाद जणाईआ। पुरख अकाल करे बख़्शीश, बख़्शिश बेपरवाहीआ। साचा कलमा हक हदीस, नग़मा नाम इक दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले रहिण अतीत, त्रैगुण कूड़ा पन्ध मुकाईआ। धुर दा ढोला गावण गीत, गहर गम्भीर गोबिन्द सालाहीआ। पुरख अकाल नाल लग्गे सच प्रीत, प्रेमी हो के तोड़ निभाईआ। जन भगतां जुग जुग चलदी रहे रीत, रीतीवान रिहा वखाईआ। हरि संगत हरि हर हिरदे वसे चीत, चेतन सब नूं दए कराईआ। शब्द विचोला सतिगुर सब दे बीच, विचाले हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लेखे ला के हस्त कीट, दर घर साचे सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ।

✪ १२ माघ शहिनशाही सम्मत १ सरदूल सिँघ दे गृह पिण्ड बल सचन्द्र ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे मैं कलयुग बदल देणी रीत, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दो जहान इक्को रंग वखाईआ। जन भगतां दस्सणी सच प्रीत, लोकमात मार झात आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। काया माटी पंज तत करना ठांडा सीत, त्रैगुण अग्नी तत रहिण ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणाउणा धुर दा अगम्मी गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर गोबिन्द देणा मिलाईआ। झगड़ा मुका के जगत वासना मन्दिर मसीत, काया काअबा हुजरा हक देणा वखाईआ। सन्त सुहेला कर अतीत, कूड़ी क्रिया बन्धन देणा तुड़ाईआ। लेखा मुका के हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात दीन मज़्ह्ब खैहड़ा लैणा छुडाईआ। सच दुआर दे कर वसनीक, दरगाह साची सचखण्ड धाम दवारा देणा वखाईआ। बीस इकीसा रिहा बीत, हरि जगदीसा जलवा नूर करे रुशनाईआ। नाम निधाना मर्द मर्दाना शाह सुल्ताना करे बख़्शीश, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेले खोज खुजाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग लहिणा देणा देणा गवा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्को दस्सणा राह,

बोध अगाधी चार वरन अठारां बरन इक पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म दस्सणी इक सलाह, सच संदेसा नर नरेशा धुर फ़रमाना इक जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दस्सणा इक मलाह, ठाकर स्वामी बेपरवाह बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। नईआ नौका नाम ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहानां देणी इक चला, चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे सच वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता जन भगतां देणा मिला, दूई द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। शरअ शरायती बन्धन देणा तुड़ा, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी निज नेत्र देणा दरसा, दोए लोचन पन्ध देणा मुकाईआ। शब्द अनादी अगम्मी ढोला बिन अक्खरां देणा पढ़ा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बैठी सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दस्सदे गए राह, सिफ्ती ढोले रसना बत्ती दन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर वेख वखाईआ। सतिजुग कहे कलयुग कूड़ी क्रिया होणी वैरान अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। किरपा करनहार श्री भगवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा खेल आदि अन्त, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वेस वटाईआ। बोध अगाधा दो जहानां बण के पंडत, निरअक्खर वक्खर करे सच पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म इक्को दए समझाईआ। लेख मुका के बहिश्त जन्नत, स्वर्ग लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म मेला करे साचा कन्त, जुग जन्म विछोड़ा दए मुकाईआ। सतिजुग कहे धन्न वड्याई आ शहिनशाही चलया सम्मत, समें दा लेखा लेखे विच रखाईआ। गुर शब्दी मेहरवान साची करे हिम्मत, हौसला भगतां दए वधाईआ। झगड़ा दिसे उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट चारे सिम्मत, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोए धराईआ। मक्का काअबा हाहाकार होए अलाही उम्मत, ईसा मूसा मुहम्मद दए गवाहीआ। सतिजुग कहे मैं सति सतिवादी दस्सणा इक्को ढोला, नाम संदेसा जगत सुणाईआ। शब्द गुरू आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा विचोला, रहबर एथे ओथे इक्को नज़री आईआ। सच दुआर धुर दरबार नाम भण्डार जिस ने खोल्हा, ऊँचां नीचां राउ रंकां आदि जुगादि सति वरताईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर घट भीतर निज नेत्र सदा वसे कोला, निजानंद परमानंद विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा निरंतर मंत्र सुणाए अगम्मी ढोला, रसना जेहवा बत्ती दन्द कोए ना गाईआ। सति भण्डार देवे जगत वस्त अनमोला, अमृत रस निझर धारा मुख चुआईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी भार करे हौला, हिरदे हरि जू दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्तिम देणा बदल, धरनी धरत धवल रहिण कोए ना पाईआ। श्री भगवान शाह सुल्तान करनहारा

साचा अदल, अदल अदालत इक्को इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता हउमें हंगता कर के कतल, कुदरत कादर लेखा दए समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नव नौ चार वेखे पत्तन, जगत जगदीशा आपणा फेरा पाईआ। कोटन कोटि कोटां विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले आए रखण, भगत भगवन्त आपणा जोड़ जुड़ाईआ। धुर दा मार्ग अगम्म अथाह सति सतिवादी आए दस्सण, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग बदल देणी धार, धर्म इक्को देणा वखाईआ। जिस दा राह तक्कदे गए गुर अवतार, पैगम्बर अक्ख उठाईआ। सो मनाउणा हरि निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, चौकड़ आपणे हुक्म भवाईआ। जिस दर ते विष्न ब्रह्मा शिव भिखार, करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। रवि ससि ना कोए चमत्कार, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। कागत कलम ना लिखणहार, अलिफ़ ये ना कोए पढ़ाईआ। वस्त्र तन ना कोए श्रृंगार, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। मंज़ल होए ना कोए दुष्वार, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। इक्को जोत नूर निरँकार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे धर्म दवार, दर दरवाज़ा वेखण कोए ना पाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह के गए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सो खेल करे करतार, कल कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी राह वखाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग बदल देणा जैकार, नाअरा इक्को नाम सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड सिर सके ना कोए उठाल, शाह सुल्तान बल ना कोए वधाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। शब्द विचोला बणा गुरू दलाल, गहर गम्भीर बेनज़ीर देणा मिलाईआ। खाणी बाणी देवे जिस दा अहिवाल, परम पुरख परमात्म ओहो देणा मिलाईआ। जिस दी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत डूँघे सागर करदे भाल, समुंद खाई खोज खुजाईआ। जो अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर वसे नाल, जग नेत्र लोचण नैण नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां पूरी करे घाल, जुग जन्म दे विछड़े वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया अंदर वखाए सच्ची धर्मसाल, परदा ओहला दए उठाल, दीवा बाती कमलापाती इक्को देवे बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अमृत आत्म सुहाए ताल, निझर रस इक चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दुआर दए वखाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्तिम देणा इक संदेसा, धुर फ़रमाना श्री भगवान जणाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर आदि जुगादी इक नरेशा, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी बदले वेसा, वेस अनेका रूप वटाईआ। नाम शब्द कलमा कलाम दए संदेसा, नग़मा कायनात जणाईआ। खेले

२२७
१६

खेल देस परदेसा, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। लख चुरासी देवे ठेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जन भगतां करे बुध बिबेका, दुरमति मैल धवाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के आपणा दस्से भेता, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। दर दवारे बण के खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। लहिणा देणा चुका के दस दस्मेसा, दहि दिशा इक्को नूर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा इक घर, बन्द ताकी दए खुल्ह्हाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग बदल देवां रिवाज, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। शाह सुल्तानां सीस नहीं रहिणा ताज, दर दर मंगण थाउँ थाँईंआ। कूड़ी क्रिया रहे ना नाच, माया ममता मोह ना कोए हल्काईआ। सति धर्म जणाउणा साच, सति सतिवाद देणा वखाईआ। गढ़ हँकारी कर बरबाद, नाम डंका देणा वजाईआ। दीनां मज़्बां तों कर आज़ाद, आत्म परमात्म नाता देणा जुड़ाईआ। धुन आत्मक सुणा के आवाज़, अनहद नादी नाद देणा अल्ह्हाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रच के काज, गृह मन्दिर देणा सुहाईआ। सोई सुरती आवे जाग, शब्द मिलावा सहिज सुभाईआ। इक्को जोत होवे प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। भगत भगवान वसण इक दूजे दे पास, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुके पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म मिले साथ, नाता जगत वाला तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग रहे ना अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्तां विच गए आख, आख़र सब दा लहिणा देणा झोली पाईआ। साचे सन्तां इक्को पट्टी पढ़नी इक्को चढ़नी जमात, जुमला अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा मुकावे कलम दवात, कातब लिखे नाल कोए ना शाहीआ। फुरने अंदर स्वाल जवाब, हुक्मे अंदर करे शनवाईआ। सच दवारा खोल्ह महिराब, महबूब इक्को दए वखाईआ। जिस दी बिना अक्खरां वाली किताब, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच देणा दृढ़ाईआ। सतिजुग कहे मैं लाउणा लोकमात सति, सति दवारा वज्जे वधाईआ। मानस मानुख मानव देणी ब्रह्म मत, विद्या इक्को देणी जणाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। ज्ञान नेत्र खुल्ल्हे अक्ख, निज नेत्र होए रुशनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नज़री आवे सच, नाता कूड़ दए तुड़ाईआ। हकीकत विच्चों लभ्भे हक, शिकवा शक ना कोए जणाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, महिमा अकथ अकथ दृढ़ाईआ। दृष्टी सृष्टी नालों हो जाए वक्ख, इष्टी इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्तिम देणा होका, लोक परलोक देणा सुणाईआ। साचे नाम दा इक सलोका, चौदां विद्या दए दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म साचा मौका, मुकम्मल प्रभ दे नाल मिलाईआ।

मंज़ल चढ़ना नहीं औखा, सतिगुर शब्द होए सहाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। सो तन नगारे मारे चोटा, सोई सुरती रिहा उठाईआ। जन भगत रहिण ना देवे कोई खोटा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। करे प्रकाश निर्मल जोता, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। सतिजुग कहे मैं भगत भगवान मिलाउणा विच जग, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। दरस दिखाउणा उपर शाह रग, सन्त सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। हँस रूप बणाउणा कग, कलमा इक्को इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढ, माया ममता देणी मिटाईआ। सच दवारे धुर दे सद्द, सदमा पिछला देणा चुकाईआ। इक सरनाई जाओ लग्ग, पुरख अकाल इक्को इष्ट मनाईआ। जिस दवारे पूरा होवे हज्ज, काया काअबा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिजुग कहे भगत भगवान वेखणा मिलदा, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। एह खेल अगम्मी पिर दा, पीआ प्रीतम दए वड्याईआ। जो गुरमुख विछुन्ना चिर दा, कर किरपा होए सहाईआ। श्री भगवान नित नवित भगतां पिच्छे फिरदा, चार कुण्ट दहि दिशा फिरे थाउँ थाँईंआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया गेड़ा गिड़दा, सतिजुग साची लठ्ठ भवाईआ। लहिणा देणा सब निबड़दा, लेखा मुके ख़लक ख़ुदाईआ। जगत वासना भरया कूड़ चिक्कड़ दा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेला नितरदा, जो निरवैर पुरख अकाल इक्को इक मनाईआ। उह मालक बणे चोटी सिख़र दा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। एह खेल नहीं जगत वाले इश्क दा, मुहब्बत इक्को विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए मुकाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग बदल देणी भगती, भगवन इक्को देणा समझाईआ। जो आदि जुगादी सच व्यक्ति, विषयां विच कदे ना आईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर शक्ती, शमां दीप जोत रुशनाईआ। उह मालक अर्शी फ़र्शी, दो जहानां खेल खिलाईआ। उह भगत भगवान प्रीआ प्रीतम वरदी, दीनां अनाथां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्त देणा इक्को धक्का, बल धुर दा देणा समझाईआ। लेखा मुक्कणा मदीना मक्का, चार कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। झगड़ा पैणा बूरा कक्का, कूड़ी क्रिया होए हल्काईआ। खेल होणा उत्तर दिशा, पूरब सार कोए ना आईआ। दक्खण थोड़ा आउणा हिस्सा, हस्ती सब दी देणी गवाईआ। समझेकोई ना वड्डा निका, बुद्धिवान ना कोए दृढ़ाईआ। शाह सुल्तान ना रहिणा टिका, रईयत रंग ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अन्त अखीरी कढ्ढुण वाला सिट्टा, सट्टेबाजी सब दी उलटाईआ। इट्ट नाल रहे ना इट्टा, पाथर पाहन रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग कहे धुर दा हुक्म वरते श्री भगवान, भगवन आपणा खेल खिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे सवाधान, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उठाए नौजवान, शब्दी शब्दी कार कमाईआ। लोकमात वेखो खेल महान, नौ खण्ड सत्त दीप रिहा कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत भुल्ला वेद पुराण, खाणी बाणी अञ्जील कुरान कलमा हक ना कोए दृढ़ाईआ। धीरज सति ना रिहा ईमान, धर्म दृढ़ ना कोए बणाईआ। पंज तत होया शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। नौ दवारे सर्ब कुरलाण, सांतक सति ना कोए वरताईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां जो दिता मात ज्ञान, जगत ज्ञान गया गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिजुग कहे कलयुग अन्त प्रभ देवणहारा फ़रमाना, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। लहिणा देणा वेखे सीता रामा, रामा, कृष्ना कान्हा खोज खुजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे के गए पैग़ामा, हज़रत हुजरयां विच कर पढ़ाईआ। कायनात वेखे मार ध्याना, महबूब बेपरवाहीआ। नानक निरगुण गा के गया तराना, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। गोबिन्द चिला फड़ तीर कमाना, कमंद इक्को इक खिचाईआ। सारे लिख के गए परवाना, वेद व्यासा परदा लाहीआ। कलयुग अन्त होए वैराना, वैरी घर घर नज़री आईआ। पिता पूत होए बेगाना, नार कन्त ना कोए सुहाईआ। साचा मिले ना कोए टिकाणा, चार कुण्ट होए हल्काईआ। पुरख अकाल पहरे बाणा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सतिजुग कहे कलयुग अन्त होए हैरानी, हाहाकार करे लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी होई नादानी, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अठ्ठ सठ्ठ सार पाए कोई ना पाणी, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। भरमें भुल्ली चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सति धर्म ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा राग अल्हाईआ। बिना भगतां मिले ना पद निरबानी, सच दुआर ना कोए बिठाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया मति मतवाली करे बेईमानी, बुध बिबेक ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार वरन झगड़ा चलया दीवानी, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। सतिजुग कहे मैं लोकमात जन भगतां देणी इक निशानी, नाम निधाना हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दए जणाईआ। सतिजुग कहे मैं कलयुग अन्तिम मार्ग देणा दस्स, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। जन भगतां अंदर वस, वास्ता इके नाल रखाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर के आस, तृष्ना देणी बुझाईआ। बिन गोपी काहन वखा के रास, मण्डल मण्डप डेरा देणा ढाहीआ। हउमें हंगता कर के नास, स्वास स्वास इक्को देणा समझाईआ। जो साहिब सुहेला सदा वसे पास, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जाता सद

प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। मन वासना रहिण ना देवे बदमाश, सच सुच दए दृढ़ाईआ। जिस दा तत्तां वाला नहीं लबास, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, रजो तमो सतो रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब सुहेला इक्को नज़री आईआ। सतिजुग कहे मैं भगतां करना मिलाप, भगवन जोड़ जुड़ाईआ। दोहां दा इक्को होवे जाप, सोहँ ढोला सच सुणाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना पाप, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म बणे साक, सज्जण इक्को नूर खुदाईआ। घर दीआ बाती होए प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। अमृत मिले आबे हयात, हयाती विच्चों हयाती दए बदलाईआ। महल्ल वेखे इक महिराब, महबूब बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक दरसाईआ। सतिजुग कहे मैं भगतां दस्सणा सच दवार, दवारका वासी दी लोड़ रहे ना राईआ। जित्थे वस्या हरि निरँकार, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। छप्पर छन्न ना कोए दीवार, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर नूर अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपे रिहा वखाईआ। ना कोई दूसर मीत मुरार, सज्जण संग ना कोए बणाईआ। ना कोई पंज तत आकार, ना शब्द नाद शनवाईआ। ना पैगम्बर गुर अवतार, ना ढोले गीत पढ़ाईआ। ना कागद कलम लिखार, ना शाही वण्ड वण्डाईआ। ना सखि़यां मंगलाचार, ना मण्डल रास रचाईआ। ना शस्त्र वस्त्र धार, कमरकसा कसाईआ। ना खड़ग खण्डा कटार, ना तीर तलवार बणाईआ। इक्को खेल अपर अपार, पतिपरमेश्वर आपणा आप रचाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर डगमगाईआ। साचे भगतां करे प्यार, प्रीतम हो के प्रेमी लए बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। नव नौ चार खेल करे करतार, करनी दा करता दया कमाईआ। सतिजुग कहे मैं कर्ज़ा लाहुणा उधार, पूरब झोली पाईआ। खेल वेख विच संसार, सगला संग देणा बणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सांझा यार, नाता कूड़ देणा छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी हो के कर्म कमाईआ। सतिजुग कहे भगवन भगतां देणी दात, दयावान झोली पाईआ। आप मिला के आपणी ज़ात, अज़ाती रूप देणा गवाईआ। सच सुहञ्जणी दस्स प्रभात, नाम निधाना देणा पढ़ाईआ। इक्को सुण अगम्मी आवाज़, सुरत शब्द लैणा मिलाईआ। मेहर नज़र खोल्ह राज़, परदा अंदरों देणा उठाईआ। पूरब लेखा कर बेबाक, हिसाब देणा चुकाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह ताक, जलवा नूर देणा वखाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के ख़ाहिश, कर्म कर्म दा लेखा देणा मुकाईआ। झगड़ा मुका के मात गर्भ दस दस मास, लख चुरासी फंद कटाईआ। एथे ओथे दो जहान जन भगतां मिले प्रभू चरण निवास, निवास अस्थान इक्को इक वखाईआ। जेहड़ा होवे कदे ना नास, शाह सुल्तान सके ना

कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवन्त नार कन्त, नाम मंत रुत्त बसन्त, पत्त डाली फुल्ल फुलवाड़ी, महक महबूब उच्च अरूज, अर्श फर्श दो जहान सच निशान मेहरवान इक्को इक वखाईआ।

१६ माघ शहिनशाही सम्मत १ जरनैल सिँघ दे गृह मालवा संगत पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर

गोबिन्द कहे जिस वेले बणया उच्च दा पीर, उच्च अगम्म अथाह दिती वड्याईआ। मेरी तक्क ना सक्या कोई तस्वीर, शाह हकीर समझ कोए ना पाईआ। मेरा मैं ना होया दिलगीर, खुशी अंदर खुशी वज्जी वधाईआ। मैं तक्क के वेख्या अख़ीर, आख़र इक्को नज़री आईआ। जिस दे हुक्म दी तामीर, तअमील अंदर अगे सेव कमाईआ। चले ना कोए दलील, वासना वण्ड ना कोए वण्डाईआ। किसे ना जाणया वस्त्र नील, भरम प्या तहसीलां ठाणयां। पुरख अकाल अगे कीती अपील, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द कर कल्याणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखानया। पुरख अकाल अगम्मी कीती तदबीर, अचरज खेल रचाईआ। सति धर्म दी दे के धीर, सच सच दिता समझाईआ। बिना कलम शाही दस्सी लकीर, धार धार विच्चों बदलाईआ। नज़री आया पैगम्बरां दा पीर, पीरां दा पीर शाह हकीर धुरदरगाहीआ। मैं तक्कया नाल नीझ, बेनज़ीर नूर खुदाईआ। जिस दी मेरे अंदर तासीर, तसबी माला ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वखाईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले मैं चढ़या उपर खाट, खटका रिहा ना राईआ। दो जहानां मुक गई वाट, पाँधी पन्ध ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमेश्वर तक्कया साथ, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। शब्द अगम्मी सुणाए बात, नाम निधाना ढोला गाईआ। गोबिन्द तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ात, शाह फ़कीर इक्को रंग वखाईआ। तेरा मेरा लेखा बिना कलम दवात, कागज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नेत्र खोल्ह बिन अक्खां झाक, परदा पलक उठाईआ। चौंह दी दिसी जमात, कलमा हक हक सुणाईआ। सच दी वेख महिराब, महबूब सीस निवाईआ। सजदयां विच अदाब, नैणां नीर चलाईआ। आई अगम्मी आवाज़ शब्द करी शनवाईआ। संदेसा देवे पैगम्बरां दा बाप, नूर नुराना नूर अलाहीआ। गोबिन्द दा साक, सज्जणां जोड़ जुड़ाईआ। भविख्तां दा वाक्, मुहम्मद दए गवाहीआ। गोबिन्द साख्यात, सेजा रिहा सुहाईआ। ग़रूब होण वाला आफ्ताब, आपणा रंग बदलाईआ। सोहण वाली अन्धेरी रात, शबे शबाब रही शादयाना गाईआ। मिलणा इक अहिबाब, मुहब्बत विच समाईआ। अगम्मी आवाज़ आई कलमे वाल्लयो खाणा

नहीं कबाब, काअबा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले मैं सिँघासण चढ़या, सिँघ रूप बदलाईआ। पंज तत दी गुफ़ा अंदर वड़या, पड़दे अंदर नूर खुदाईआ। बिना अक्खरां तों कलमा पढ़या, हरफ़ हरूफ़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेरा निरंतर अन्तर ठरया, मंत्र सुणया शहिनशाहीआ। खुश वेख्या गगन गगनंतर दो जहान हरया, रूप अनूप बदलाईआ। सति दवारे पुरख निरँजण खड़या, परवरदिगार सोभा पाईआ। बिना हथ्थां मेरे मस्तक हथ्थ धरया, दस्सया हुक्म अलाहीआ। गोबिन्द तूं मैनूं मैं तैनूं वरया, वरयां दी गंढु दिती पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले सेजे सुत्ता, बिन तकीए सीस टिकाईआ। बदली वेखी दो जहान रुत्ता, ब्रह्मण्ड खण्ड रूप वटाईआ। पुरख अकाल किहा वाह मेरया पुत्ता, वाहिगुरू कह के वाह वाह गुरू मैनूं दिता समझाईआ। नाले आख्या थोड़ा जिहा तेरे उत्ते गुस्सा, इशारे नाल दृढ़ाईआ। हुण गुरमुखां दे कंधे चढ़ के होवीं उच्चा, फेर गुरमुखां दे अंदर देणा सुआईआ। जिथ्थों किसे नूं लभ्भें ना लुका, खोजयां फड़न कोए ना पाईआ। कलमें वालयां किहा असीं अज्ज तों छड्ड दिता पीणा हुक्का, हुक्म मंनयां बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा मैं तुहानूं सुणावां इक तुका, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। इक कोल सी टुक्कर सुक्का, ओस कन्नी गंढु खोल्ह के अगे दिता टिकाईआ। गोबिन्द पंजां उंगलीआं नाल चुक्का, भन्न के भोर के ओसे दी झोली दिता टिकाईआ। बचन दिता एह सुच्चे दा सुच्चा, सच दी दए गवाहीआ। हुण मैं गोबिन्द तत्तां वाला मनुक्खा, काया चोला रिहा हंढाहीआ। जिस वेले शब्दी धार हो के उठा, निरगुण निरवैर हो के फेरा पाईआ। बेपरवाह पुरख अकाल मेरा तुठ्ठा, दीन दयाल दया कमाईआ। लोकमात लख चुरासी विच्चों फेर तैनूं फड़ उठावां आपणे हथ्थ गुट्टा, नाम हलूणा इक लगाईआ। मेरा प्यार दो जहान कदे ना तुट्टा, एथे ओथे तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेलणहारा जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द कहे मैं सेजे चढ़ के हथ्थ रख्या आपणी उपर छाती, दस्त दस्त नाल दबाईआ। जलवागर तक्कया कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी साची, सति सति रिहा वरताईआ। ओस मैनूं हौली जही किहा हुण तेरी काया माटी काची, तत्तां वाली नज़री आईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्त अन्धेरी राती, तेरा रूप दयां बदलाईआ। खेलां खेल बहु बिध भांती, बिध आपणी ना किसे समझाईआ। कोई ना जाणे जोत दी धार जाती, जोती जाता आपणे हथ्थ रखाईआ। मंज़ल औखी रखां घाटी, बिन मेरे चढ़न कोए ना पाईआ। गोबिन्द किहा ओह साहिब पुरख अबिनाशी, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल मण्डल रासी, दो जहान वज्जे वधाईआ। मेरी इक्को इच्छया इक्को आसी, आशा आपणी दयां

दृढ़ाईआ। मेरे गुरमुख मेरे सदा होवण साथी, सगला संग निभाईआ। मंज़ल पूरी करां उहनां दी वाटी, पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सची सरनाईआ। गोबिन्द कहे मैं लेट के अक्खां मीटीआं झब, पलक पलक नाल दबाईआ। मैनूं हुक्म होया हब्ब, हम साजण दिता दृढ़ाईआ। गुरमुख प्रेमी आपणे लभ्भ, निज नेत्र लोचण कर रुशनाईआ। शब्दी धार नाल सद्द, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, प्रेम प्रीती इक बंधाईआ। गोबिन्द कहे मैं पुरख अकाल आख्या, मैनूं तत्तां नालों हो लैण दे अड्ड, काया माटी दे तजाईआ। फिर सन्त सुहेले आपणी बणा के यद, घर साचे लवां जुड़ाईआ। इक्को पदवी इक्को मार्ग इके दे के पद, पतित पावन तेरे विच समाईआ। मैं नज़र ना आवां दीन दुनी विच जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। गुरमुखां दे अंदर वड़ के उपर शाहरग, शाह पातशाह हुक्म दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं सहिज बदलया पासा, तन वजूद बदलाईआ। वेख्या दो जहान तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड दुहाईआ। मैनूं आया हासा, खुशीआं विच ढोला दिता गाईआ। वाह वाह तेरा खेल पुरख अबिनाशा, तेरी बेपरवाहीआ। श्री भगवान झट खोल्ह के आपणा खाता, बिना ख़तूतां तों मैनूं दिता जणाईआ। गोबिन्द तैनूं बणाउणा उह दाता, जो दो जहान देवणहार अख्वाईआ। जन भगतां पूरा करें घाटा, लेखा पिछला झोली पाईआ। हुण तूं अमृत प्याया नाल बाटा, फेर गुरमुखां दे अन्तर निझर झिरना देणा झिराईआ। आत्मा दा बण के आका, परमात्मा हो के हुक्म सुणाईआ। हुण तेरा मुसव्वर खिचके ख़ाका, कल्गी तोड़ा बाज़ रहे जणाईआ। मात पिता दा दस्सदे नाता, पटने ढोले रहे गाईआ। फेर तेरा ओथे रखां वासा, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। तेरा मेरा नूर होवे प्रकाशा, शब्दी डंका थाउँ थाँईंआ। दोहां दा होवे इक भरवासा, दूजी धार ना कोए बदलाईआ। तूं मेरा खोल्हणा खुलासा, मैं तेरी करां पढ़ाईआ। गुरमुखां पूरी करां आसा, आहिस्ता आहिस्ता लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले होया शब्दी फ़ुरना, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कहारो अगे हुण तुरना, तुरत लैणा उठाईआ। इक प्रीती अंदर जुड़ना, तूंही तूंही राग अल्हाईआ। इक कहार किहा कुछ तेरे कोलों सुणना, सानूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा मैं फेर लोकमात विच मुड़ना, निरगुण हो के वेस वटाईआ। ओस किहा मैनूं कदे ना भुल्लणा, सलामालेकम कह के सजदा सीस दिता झुकाईआ। गोबिन्द किहा, तुहाडा दवारा फेर खुल्हणा, ख़ालस ख़ालसे दयां बणाईआ। तुसां जन्म जन्म जन्म विच नहीं रुलणा, माणस दे माणस आपणे नाल मिलाईआ। तुहाडे नाल मिल के गोबिन्द फलणा फुलणा, पत्त डाली नाल महकाईआ। भाग लगणा साची कुलना, कुलवन्त

होए सहाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार अन्धेर झुलणा, सति सच मुख छुपाईआ। वाहिगुरू जाप सारयां करना उत्ते बुल्लणां, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख मेरे कंडे तुलणा, नाम कंडा लवां उठाईआ। कूड़ी क्रिया बूटा हुलणा, अमृत रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कहार किहा मैं सजदा करां काअबा, किबल इक्को नज़री आईआ। गोबिन्द किहा कदी तक्कया ई आपणा बाबा, जिस नूं मुहम्मद अब्बा कह के सीस निवाईआ। जिस नूं उच्ची उच्ची पुकारो नाल बांगां, उंगलां कन्नां विच पाईआ। उह स्वामी वरतया स्वांगा, खुदा खुद आपणा वेस वटाईआ। कहार किहा सानूं अगे होर तांघां, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। गोबिन्द किहा ज़रा पहली पुट्टो उलांघा, कदम अगे लैणा उठाईआ। उन्हां नूं मुहम्मद दिस्या नांगा, रो रो रिहा कुरलाईआ। परवरदिगार धुरदरगाही सब दा सांझा, कलमयां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोक परलोक तबकां विच आउँदा जांदा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जिस नूं वेख ना सके कोई पंडत पांधा, मुल्ला शेख़ नज़र ना कोए टिकाईआ। ना उह सूर खाए ना उह खाए ढांडा, ना उह मित्र सज्जण ना उह वसे आंढ गवांढा, लख चुरासी अंदर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे जिस वेले कहारां कदम चुक्कया अगे, धुर दी सेव कमाईआ। हुक्म दिता सूरे सरबग्गे, शहिनशाह करी जणाईआ। गोबिन्द तेरे नाल मिल के इन्हां दी जोत जगे, जगत होवे रुशनाईआ। पुरख अकाल आपणी धारों कढ्ढे, देवे माण वड्याईआ। हुक्में अंदर हाकम हो के सद्दे, संदेसा इक जणाईआ। सच दवारे आवण भज्जे, भजन बन्दगी दए समझाईआ। बिना रसना तों देवे मज़े, मज़ाक मुके जगत खुदाईआ। जे कोई पुछे की वजह, वजह सके ना कोए समझाईआ। जिस तों विछड़े ओसे ने लभ्भे, ओहो दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे चलदयां चलदयां वैराग अंदर जरनैल सिँघ तेरा अक्खां चों निक्कल गया नीर, नीवां हो के ज़िमीं वल ध्यान लगाईआ। ओस वेले हस्स के किहा कबीर, काअब्यां दा पैंडा देणा मुकाईआ। शरअ दी तोड़ ज़ंजीर, शहिनशाह लैणा मिलाईआ। मैं तैनूं दस्सां तदबीर, सहिज सहिज समझाईआ। इस तों परे नहीं अख़ीर, आख़र एहो धुर दा माहीआ। होवीं ना दिलगीर, आस निरास ना कोए बणाईआ। हथ्थों सुट्ट के शमशीर, बण के उच्च दा पीर, आसण तुहाडे उत्ते रखाईआ। जिस नूं समझे ना कोए ग़रीब अमीर, शाह सुल्तान ना कोए दृढ़ाईआ। इसने पिछले उत्ते फेर के लकीर, अगला लेखा देणा बणाईआ। एहदा साथी गहर गम्भीर, नर निरँकारा नज़री आईआ। जिस ने सुहाया इस दा सरीर, तत दिती वड्याईआ। तुहाडी बदल देवे ज़मीर, ज़ामन हो के

दया कमाईआ। उन्हां किहा या आमीन, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कबीर किहा मैं जुलाहयां घर कमीन, कमलापति मिल के कामल मुर्शद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक वेख वखाईआ। कहार किहा की मालक चल्यों आख, आपणा आप छुपाईआ। ओस किहा मैं दस्सया साफ़, सहिज दिता जणाईआ। अन्त तुहाडा होणा साथ, एसे नाल वड्याईआ। खेल वेखणा पुरख अबिनाश, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तुहाडा मेला होणा साख्यात, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। प्रेम प्रीती बज्झे नात, नाता इक्को इक समझाईआ। हुण लेखा नहीं नाल कलम दवात, फेर शब्दां विच वड्याईआ। शहिनशाही सम्मत विच तुहाडे जन्म दी तुहानूं वी मिलणी दात, कर्म दी कामना पूर कराईआ। सो सुहञ्जणी आ गई रात, भिन्नड़ी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच सरनाईआ। भिन्नड़ी रैण कहे मैं भागां भरी, सोहणी सुहञ्जणी नज़री आईआ। जिस विच गोबिन्द गुरमुखां उपर किरपा करी, शब्दी शब्द दिती वड्याईआ। सुलखणी होई घड़ी, पल पल दए गवाहीआ। जन भगतो तुहाडी प्रेम प्रीती सेवा बड़ी, बहुत्यां तों बहुती नज़री आईआ। रविदास वाली पिछली बज्झी लड़ी, लड़ सक्या ना कोए छुडाईआ। अगे आवण जावण तों साफ़ होया बरी, ब्रह्मा विष्न शिव सीस निवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां उत्ते किरपा करी, कृपाल हो के करमां तों ल्या छुडाईआ।

२३५
१६

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

शब्द कहे मैनूं जगत कहे आवाज़, शब्द गोबिन्द समझ किसे ना आया। निरअक्खर समझे ना कोए राज़, अक्खर अक्खर मिल मिल ढोला गाया। बिना तन वजूदों मेरा साजण ल्या साज, सतिगुरू मेरा नाम प्रगटाया। शाह पातशाह राजन राज, नवाब इक्को इक अख्वाया। निराकार निरँकार इक्को मेरा साथ, मात पित किसे ना जाया। आदि जुगादि वेखे खेल तमाश, जुग चौकड़ी हुक्म मन्नाया। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी निक्की जेही दस्स के गाथ, कलाम कलमयां नाल सालाहया काया हुजरे वखा के महिराब, महबूब नूर ज़हूर चमक चमकाया। मेरा कोई ना जाणे आकार, आपणा भेव ना कोए खुल्हाया। ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान समझे कोए ना लाख, बेअन्त बेअन्त बेअन्त गुर अवतार पैगम्बर गाया। नित नवित मेरा प्रताप, परम पुरख प्रभ रंग चढ़ाया। निर्मल धारा सदा साफ़, पतित रूप ना कोए जणाया। सच दुआर सच्चा इन्साफ़, हुक्मी हुक्म इक सुणाया। बिन भगतां कदे ना करां किसे मुआफ़, लख चुरासी हथ्थ किसे ना आया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप प्रगटाया। शब्द कहे मैनूं जगत विद्या कहे बोल, रागां नादां वाला जणाईआ। मेरा परदा किसे नहीं वेख्या खोल्ह, जुग चौकड़ी भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैं आदि जुगादि सदा निरमोल, निरवैर निराकार सोभा पाईआ। जुग जुग सति भण्डारा देवां खोल्ह, वस्त अनमुलड़ी आप वरताईआ। पंज तत अंदर वड़ के वजावां ढोल, गुर अवतार पैगम्बर लवां उठाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत रौल, शास्त्र सिमरत करां लिखाईआ। दो जहानां तोल के तोल, बिना तराज़ूउँ हथ्थ उठाईआ। संदेश्यां वाले पूरे करां कौल, इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। शब्द कहे मैनूं सारे कैहिंदे गुरू, गुरदेव मन्न के सीस निवाईआ। किसे नहीं दस्सया किस वेले होया शुरु, शरअ आपणी आप जणाईआ। किसे नहीं पता आपणी धार किस बिध मुड़ू, बिन पाँधी पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण, फ़ुरनयां अंदर फुरू, सुरती सुरत उठाईआ। किसे नहीं दस्सया केहड़ी मंज़ल तुरू, चले वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ। शब्द गुरू कहे मेरे हुक्म संदेशे रहे पढ़दे, मन मति बुध ध्यान लगाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दर्शन रहे करदे, विष्न ब्रह्मा शिव मनाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां सजदे रहे करदे, कलमयां विच गाईआ। चरण कँवलां उपर सीस रहे धरदे, मस्तक टिक्के धूढ़ी खाक रमाईआ। बिना वजूदों मैनूं मूल ना मिलदे, मिल के आपणा हाल सुणाईआ। खेल समझे नहीं असल दे, असलीअत परदा ना कोए उठाईआ। रस माणे नहीं अगम्मी वसल दे, विषयां विच लोकाईआ। कोटां विच्चों जन भगत विरले मेरी नसल दे, जिन्हां दा इक्को पिता माईआ। ओह प्रेम प्यार अंदर मिल के हस्सणगे, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। बिना गुरुआं तों गुरू इक्को दस्सणगे, जो गोबिन्द धार शब्दी बेपरवाहीआ। सच दुआर ओसे वसणगे, जित्थे इक्को सेज सुहाईआ। गुरू देव स्वामी अन्तरजामी इक्को मन्नणगे, बिना सीस सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुरमुख आपणा बेड़ा बन्न्हणगे, दूसर कंध भार ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर दाता इक सरनाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ गुरदास सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर सरन जो जावे आ, चारे खाणी दया कमाइंदा। सतिगुर दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाइंदा। पूरब लेखा वेखे थाउँ थाँ, जुग चौकड़ी खोज खुजाइंदा। लक्कड़ी काठ जिस दा नाँ, बाडी सोहणी बणत बणाइंदा। कुण्डी कुण्डीआं

२३६
१६

नाल जुड़ा, रंग रूप सोभा पाइंदा। पिछला लेखा रिहा समझा, धुर संदेश सुणाइंदा। जिस वेले बल्ल दवारे फेरा गया पा, ब्राह्मण जगत रूप वटाइंदा। पुरख अकाल लक्कड़ी सहारा ल्या तका, समरथ हथ्थ विच उठाइंदा। लक्कड़ी किहा मेरे बख्शे गए गुनाह, जन्म कर्म नज़र कोए ना आइंदा। चलदयां चलदयां इक वार चरणी लग्गी आ, ठोकर सज्जे चरण नाल लगाइंदा, ओस रो के मारी धाह, नेत्र नैणां छहबर इक वखाइंदा। तूं पातशाहां दा पातशाह, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। मैं कोई सेव ना सकी कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। लक्कड़ी कहे जिस वेले मैं लग्गी बावन चरण, चरण मिली सरनाईआ। मैनूं भुल्ल गया अगला मरन, पिछला जीवण दिता तजाईआ। मेरा खुल्ह गया हरन फरन, नेत्र नैण रुशनाईआ। मैं लग्गी बहुती डरन, रो रो हाल दुहाईआ। अंदर कीता प्रण, सुगंद इक्को खाईआ। ढोला लग्गी पढ़न, तूंही तूंही राग अलाहीआ। बिरहों अंदर लग्गी सड़न, विछोड़ा दिसे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। लक्कड़ी कहे जिस वेले मैं चरण कँवल गई लग्ग, मस्तक सीस निवाईआ। मेरी प्यास बुझी अग्ग, सांतक सति रूप वटाईआ। मैं दर्शन कीता रज्ज, खुशीआं ढोला गाईआ।

हस्स के किहा किते मैनूं ना जावीं छड्ड, होए ना कदी जुदाईआ। बावन किहा मैं तत्तां तों होणा अलग्ग, जोती जोत जोत समाईआ। जिस वेले पुरख अकाल हो के आवां समरथ, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। फेर देवां तेरा हक, पूरब लेखा झोली पाईआ। लक्कड़ी किहा मैनूं थोड़ा जिहा शक, सच देणा समझाईआ। मेरी वेखण वाली नहीं अक्ख, किस बिध तेरा दर्शन पाईआ। बनास्पत विच्चों किवें होवां वक्ख, आपणा रूप वटाईआ। पुरख अकाल किहा मैं तेरा खेल करां प्रतख, परदा ओहला ना कोए दिसाईआ। तेरा माण बणावां सच, सति नाल मिलाईआ। जिन्हां सत्तां रंगां विच बल्ल समग्री बद्धी वक्ख वक्ख, अड्ड अड्ड टिकाईआ। उन्हां दा करां इक्ठ, सत्त रंग निशाना दयां सुहाईआ। जोती नूर लट लट, जोत सति रुशनाईआ। खोल्ह सच दुआर हट्ट, भगतां वणज कराईआ। आपणे कर के वस्स, नाता दयां बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। लक्कड़ी किहा की खेल तेरा सत्त रंग, बली बावन दे जणाईआ। ओस किहा कुछ लेखा मंग, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। लक्कड़ी किहा मैनूं मिले अनन्द, अग्नी तत ना लागे राईआ। बावन किहा मैं बख्शां सदा संग, सगला संग बणाईआ। तूं तक्कीं मेरे गुरमुख लाल चन्द, गोबिन्द नाल कुड़माईआ। शाह सुल्तानां दी तेरी मुकणी वण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड वधाईआ। तेरा खुशी होणा बन्द बन्द, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द छड्डे पुरी अनन्द, साढे तिन्न हथ्थ लक्कड़ी तेरी धार सरसा विच रुढ़ाईआ। सत्तरां दी मंग, सिँघ वीर उंगली इक

छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों बुझाईआ। लक्कड़ी कहे मेरी अरजोई अरदास इक, बेनन्ती इक सच सुणाईआ। कुछ मेरा लेखा लिख, प्रभू मिले सरनाईआ। बावन कहे जिस वेले सरगुण तों निरगुण होके आवां इक, इक अकल्ला फेरा पाईआ। भगत सुहेले गुरमुख प्रेमी होवण सिख, सज्जण धुर दे जोड़ जुड़ाईआ। तेरे नाल करां हित्त, नाता आपणे नाल रखाईआ। लकड़ी किहा मैनूं कुछ लिख के दे दे चिट्ट, चिठी हथ्थ फड़ाईआ। बावन किहा आह वेख मेरी गिठ्ठ, जो साढे तिन्न हथ्थ कलयुग अन्तिम आपणा रूप बदलाईआ। तेरा लहिणा देणा दए नजिठ, नेरन नेरे हो के दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा चुकाईआ। लकड़ी कहे मैनूं वेख्यो ना छड़ी, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। मेरी इक दिन दी प्रीती बड़ी, जो सतिजुग दी धार सतिजुग फेर वखाईआ। मैं मंज़ल ओस चढ़ी जित्थे वसे बेपरवाहीआ। मैं ओस दवारे खड़ी, जित्थे भगत भगवान होवे कुड़माईआ। मैं भाग लगावां घर घरी, सत्त रंग निशाना उपर झुलाईआ। मैं गुरमुखां कराउणा बरी, अगे देवे ना कोए सज़ाईआ। सब नूं याद कराउणा इक्को इष्ट मन्नणा प्रभ हरी, हरि हर हिरदे सोभा पाईआ। लकड़ी कहे जिस मेरे उत्ते किरपा करी, उह सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी लेखे लावे पल घड़ी, जो चल आयण सरनाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

लकड़ी कहे मैनूं याद आई भोइ तलवण्डी, तल्ब पिछली दयां समझाईआ। नानक तोड़या ढाब कन्ढी, जिस दी वण्ड चौदां चवी कर्म कर्म समझाईआ। फेर छिल लाही नाल दन्दी, बाल अवस्था खुशी मनाईआ। मैं रो के किहा एह गल्ल नहीं चंगी, दुखियां रिहा सताईआ। नानक किहा मैं तैनूं कढु के विच्चों बेले झंगी, साचे दर दयां बहाईआ। जिस वेले भारत विच्चों जाण फ़रंगी, तैनूं मिले माण वड्याईआ। तेरी धार होवे सत्त रंगी, पीर पैगम्बर वेख खुशी मनाईआ। पुरख अकाल होवे संगी, सगला संग निभाईआ। ग़रीब निमाणयां कटे तंगी, दुखियां दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। वस्त अमोलक झोली पाए मंगी, आसा तृष्ना पूर वखाईआ। सच सिँघासण रहीं टंगीं, सोहणा रूप बदलाईआ। वासना वेखीं इक ठंडी, बिन पवणां पवण जणाईआ। तेरी प्रीती टाहणी नालों तोड़ के ओस नाल गंढी, जेहड़ा हाणी कदे ना करे जुदाईआ। मैं शब्दी लिख्त देवां संधी, सनद हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले परम पुरख भगतां उत्तों सब दी तोड़ पाबन्दी, इक्को हुक्म देणा सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी वेख वखाईआ। लक्कड़ी कहे मैं जावां बलिहार, बलिहारी सीस निवाईआ। मेरा लेखा लग्गे विच संसार, भुलेखा रहे ना राईआ। मैं टुट्ट गई नालों डाल, होई तन जुदाईआ। मेरा सुणया किसे हाल, फरयाद विच कुरलाईआ। नानक साची सिख्या दिती सिखाल, साहिब कर पढ़ाईआ। जिस वेले मेरा आवे दीन दयाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सच दवारे तैनूं लए उठाल, देवे माण वड्याईआ। लहिणा चुकाए शाह कंगाल, लेखा पूर कराईआ। देवे माण विच जहान, दो जहान वज्जे वधाईआ। तेरे उत्ते झुलणा उह निशान, जिस दी गुर अवतार पैगम्बर बैठे आस तकाईआ। कल कल्की होणा मेहरवान, महबूब नूर खुदाईआ। सच दवारे मिलणा माण, ममता मोह मिटाईआ। लक्कड़ी किहा मैं सीस निवा के कीता परवान, बहु खुशी खुशी मनाईआ। गुरू नानक दिता दान, सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भावना सब दी पूर कराईआ।

२३६
१६

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

लक्कड़ी कहे मेरे अंदर वस्त अग्ग, जो सब नूं रही जलाईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर सूरा सरबग्ग, पुरख अकाल सोभा पाईआ। कदे ना होवे अलग्ग, वक्खरा घर ना कोए वसाईआ। बैठा रहे उपर शाहरग, सच सिँघासण डेरा लाईआ। सद दर्शन करो रज्ज, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मैनूं चेता आउँदा जद, पिछला लहिणा पूरब इक दृढ़ाईआ। फ़रीद दे ख़ाली दिसण हड्ड, मास माटी सोभा कोए ना पाईआ। पुठ्ठा लट्टकया विच खड्ड, नेत्र नैण तसाईआ। जिस नाल गया सी बज्झ, उह वी लकड़ी काठ मेरा रूप नज़री आईआ। जिस दे कारन मिली वड्याई जग, जागरत जोत होई रुशनाईआ। बिना मक्के काअब्यों महबूब दा कीता हज्ज, मुहब्बत विच समाईआ। ओस नालों मैनूं समां चंगा लग्गे अज्ज, कहाणी नहीं कहावत रही दुहराईआ। निरगुण धार शब्दी रूप आया भज्ज, सति सतिवादी फेरा पाईआ। जिस दे नाल मिल के वी रही सज, साजण हो के सज्जरा रंग चढ़ाईआ। तुहानूं रही सद्द, मिन्नतां नाल मनाईआ। जन भगतो हुण वक्खरा रहिणा नहीं अड्ड, विछोड़ा मुक्कया कटी जाए जुदाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस वेले सुणावे आपणा छद, छन्द सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वारस हो के विरसा झोली पाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

लक्कड़ी कहे मेरी परवान होई डण्डौत, डण्डावत इका नज़री आईआ। मैनूं जुग चौकड़ी बीते बहुत, जुग जुग वेखां जगत लोकाईआ। बिना भगतां दे सारी सृष्टी गई औंत, बूटा जड़ ना कोए लगाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक रलाया मौत, सचखण्ड दुआर ना कोए बहाईआ। नाता जुड़या रिहा ना नार खौंत, खसम भस्म विच मिलाईआ। मैं कलयुग अन्तिम गई चौंक, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। जग वासना रही भौंक, कूकर वांग कुरलाईआ। प्रभ मिलण दा थोड़यां मिल्या शौंक, जो शाकर हो के इक्को सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया मनमुखता जगत गल विच प्या तौंक, तबअ सके ना कोए बदलाईआ। हिरस हवस विच रहे हौंक, दमा दम ना कोए ध्याईआ। साची मंज़ल मूल ना सके पहुंच, राह खैहड़ा ना कोए वखाईआ। जगत रीती कूड़ी वेख के रौंस, रस्ते बिखड़े नज़री आईआ। बिना पुरख अकाल दे दो जहानां किसे दी नहीं कोई धौंस, हुक्म हक ना कोए सुणाईआ। सिर चुक्के ना कोई गुर अवतार पैगम्बर मुल्ला काजी गौंस, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार वड्याईआ। लक्कड़ी कहे मैनूं कोई ना समझे लक्कड़ी लक्कड़हारा, बनखण्ड भेव कोए ना पाईआ। मेरा आदि जुगादी इक्को नाल प्यारा, प्रीतम इक्को रही मनाईआ। जिस वेले राम गया जंगलां विच उजाड़ा, फिरया थाउँ थाँईंआ। पंचवटी निशान खिचया एका वारा, लकीर तकदीर दिती समझाईआ। ओस वेले मैं कढ्या हाढ़ा, हौका इक सुणाईआ। जिस सीता दा तूं लाड़ा, नूर नुराना नज़री आईआ। ओस दा औखा दिसे दिहाढ़ा, वाड़ कंडयां ना कोए बचाईआ। राम किहा मेरे राम दा खेल न्यारा, राम राम रिहा जणाईआ। लक्कड़ी किहा मैं करना सच्चा वणज लभ्भणा इक वणजारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। राम किहा जिस वेले कल कल्की लए अवतारा, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। मेरा पूरा करे इशारा, ऐशोइशर्त मेटे जगत गुनाहीआ। धुर दा बोल इक जैकारा, गुर अवतार पैगम्बर दए समझाईआ। तैनूं बख्शे चरण चरण सहारा, सरन देवे सरनाईआ। तेरा लहिणा होवे उज्यारा, उजरत झोली पाईआ। भगतां दा बण रखवाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओस वेले तेरा देवे सच अहिवाला, हालत दए बदलाईआ। कलयुग अन्तिम बदल के चाला, सतिजुग साचा दए वखाईआ। तेरी पूरी करे घाला, सेवा वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा नूर अजब निराला, नेत्र अक्ख ना कोए तकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक हो के मेहर नज़र नाल तराईआ।

⭐ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ⭐

लक्कड़ी कहे श्री भगवान दा शब्दी वेखो डण्डा, डर भय भउ आपणा इक रखाईआ। जुग जुग कूड़ी क्रिया मेटे दंगा, ममता मोह करे सफ़ाईआ। बिना बन्दगीउँ बणावे धुर दा बन्दा, बन्धन झूठे दए तुड़ाईआ। अमृत रस प्याए जाम ठंडा, अग्नी अग्ग गवाईआ। सच सरोवर दा दस्से कन्ढा, जित्थे अठ्ठ सठ्ठ बैठे रूप छुपाईआ। सच रबाब वजाए मृदंगा, तन नगारे चोट लगाईआ। परदा लाह के हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म दए मिलाईआ। जन भगतां खिच ल्याए सतिगुर कदमां, चारों कुण्ट लए उठाईआ। दो चार लभ्भे विच्चों पदमां, अरब खरब गणत ना कोए गणाईआ। लहिणा वेखे खाणी बाणी जेरज अण्डज होए कोई ना सदमा, सद्दा दए धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। लकड़ी कहे मैं किसे खण्डे दा नहीं दस्ता, मुठ्ठी बन्द ना कोए कराईआ। मैं भगतां दस्सां रस्ता, मार्ग इक समझाईआ। गुरमुखो प्रभ नूं मिल के बन्नूणा पए कोई ना बस्ता, पुस्तक सीस ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो तुहानूं नाम मिल्या सस्ता, बिन कीमत रिहा वरताईआ। जिस नाल तुहाडा घराणा रहे वसदा, उजड़े जगत लोकाईआ। तुहाडा आत्म रहे हस्सदा, परमात्म विच समाईआ। ढोला बणया रहे स्वामी दे जस दा, सिफ्तां विच सालाहीआ। मेल हुन्दा रहे अगम्मी अक्ख दा, विछोड़ा मिटे जगत जुदाईआ। जो जुग जुग जन भगतां दी पैज रखदा, ओह मालक तुहाडा होए सहाईआ। जो दवारा देवे सच दा, साचे धाम बहाईआ। लूं लूं अंदर रचदा, घर घर रिहा समाईआ। जिस वेले काया माटी भाण्डा भन्ने कच्च दा, जोत जोत विच मिलाईआ। अगे झगड़ा मुक जाए वक्ख दा, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एह विहार पुरख समरथ दा, जो समें दा समाज दए बदलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मेल मिलाया भगतां दे इक्खु दा, इक इक्क नाल बंधाईआ।

२४१
१६

⭐ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ नछत्र सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ⭐

लक्कड़ी कहे मेरे विच्चों निकले ओह लाट, जो ललाट करे रुशनाईआ। मेरी मंज़ल मुक गई वाट, बैठी पन्ध चुकाईआ। किनारा मिल्या घाट, पत्तन धुरदरगाहीआ। जित्थे मिली शाबाश, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पूरी होई आस, तृष्ना दिती मिटाईआ। पुज्ज गई ओस पास, जो पासा रिहा उलटाईआ। मैं हो के दासी दास, सेवा सच कमाईआ। सत्त रंग निशाना साख्यात, सब नूं रही वखाईआ। इक्को मन्नणा बाप, पुरख अकाल इक ध्याईआ। जिस दा सारे करदे गए जाप, अक्खरां

विच पढ़ाईआ। ओह प्रगट होया आप, जोती जाता शहिनशाहीआ। जन भगतो प्रेम प्रीतां अंदर बण जाओ साक, सज्जण इक्को इक मनाईआ। एह गोबिन्द दा भविख्त वाक्, वेला वक्त दए गवाहीआ। जिस वेले नंदेड़ विच लक्कड़ी कहे मैं तन कीता ख़ाक, सुआह दिती बणाईआ। ना वस्त्र रिहा ना पोशाक, पोशीदा सब कुझ दिता छुपाईआ। ओस वेले आई इक आवाज़, जिस मैनूं दिता उठाईआ। मेरी बिन अक्खां खुल्ह गई जाग, बिन तन लई अंगड़ाईआ। थोड़ी जेही सुलगदी सी आग, ढाई पा नज़री आईआ। ओस दे विच सी इक वैराग, हाए हाए कर सुणाईआ। कोई ना कहो गोबिन्द दा बुझया चिराग़, दो जहानां होई रुशनाईआ। जिस ने नवां साजण लैणा साज, वक्खरी नवीं बणत बणाईआ। नाल लै के सतिगुरू महाराज, पुरख अकाल फेरा पाईआ। कल्गी दा बणा के ताज, लोकमात होवे सहाईआ। जन भगत रहिण ना देवे किसे दे मुहताज, नाम भण्डारा इक खवाईआ। एथे ओथे दो जहानां रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लक्कड़ी कहे गोबिन्द हथ्थ सड़या नहीं जिस उत्ते सोहया बाज़, बाजां वाला बाजी जाए उलटाईआ। धार टुट्टी नहीं जिस हथ्थ विच पकड़े वाग, नीले वाला शाह अस्वार बेपरवाहीआ। फेर ओस किसे कोलों मंगणी नहीं इमदाद, इक इकल्ला हो के हुक्म वरताईआ। जिस नूं समझे ना कोए दिमाग़, बुद्धिवान ना कोए समझाईआ। जन भगतां अंदर देवे इक वैराग, वैरी दुश्मण अंदरों दए भजाईआ। लक्कड़ी कहे मेरे फेर होणे वड वडभाग, भाग हिस्सा भगवन मेरी झोली पाईआ। दुनिया मेरे नाल उडावे काग, गुरमुख मेरे नाल निशाना लैण झुलाईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा होया विच महीना माघ, सम्मत शहिनशाही समझाईआ। अगला होर बदल देणा रिवाज, नवां नवीन हुक्म मनाईआ। गुरमुख लंगड़ा लूल्हा रहे ना कोए अपाहज, मंज़ल पौड़ी देणा चढ़ाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, सदा सुहेला साथ, समरथ आपणी दया कमाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ सोभा सिंघ दे गृह पिण्ड वलूर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

दयावान हरि दातार, नाथ अनाथां वेख वखाइंदा। लख चुरासी पावे सार, चारे खाणी फोल फुलाइंदा। आसा मनसा पूरी करे विच संसार, सच प्रीती इक समझाइंदा। भगत सुहेले दए उधार, गुर चेले रंग रंगाइंदा। घट घट अन्तर पावे सार, गृह मन्दिर अंदर परदा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। मेहर नज़र करे श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। जींवदयां जग दए निशान, लोकमात वड्याईआ। मानस जन्म करे कल्याण, अन्त कन्त होए सहाईआ। वस्त अमोलक देवे दान, ख़ाली झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सच प्रीती बख्शे इक जहान, अन्तर आत्म मेल मिलाईआ। दयावान गहर गम्भीर, पुरख अकाल इक अखवाइंदा। भाग लगाए काया माटी तन सरीर, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाइंदा। दौलत नाम ख़ज़ाना देवे सच जागीर, पिता पूत रंग रंगाइंदा। हुक्मे अंदर बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। मेहरवान हरि भगवन्त, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। माण रखाए हरिजन साचे सन्त, गुरमुख मेले चाँईं चाँईंआ। नाम निधान दे के मणीआं मंत, मस्त खुमारी दए चढ़ाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, निवण सु अक्खर करे पढ़ाईआ। मानस जन्म बणाए बणत, घड़न भन्नणहार होए सहाईआ। नाता जोड़ के धुर दी संगत, सगला संग दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनां नाथा दया कमाईआ। दीनां नाथा दयानिध सागर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकार इक्को नज़री आइंदा। वेखणहारा दीन दुनी डूँघा सागर, लोक परलोक खोज खुजाइंदा। ग़रीब निमाणयां जन भगतां सच दवारे देवे आदर, आदश इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। विछड़यां मेलणहारा नाल संसार, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। दुखियां दुःख दए निवार, दलिद्रीआं दलिद्र दए मुकाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देवे भण्डार, अतोट अतुट झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शिश विच बख्शीश रहमत आप कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म कर्म कर्म दी मेटे जहिमत, दुःख सुख विच बदलाईआ।

✪ १७ माघ शहिनशाही सम्मत १ साधू सिँघ दे गृह बस्ती तेगा सिँघ ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

माघ कहे नव नौ चार पिच्छो मेरी आई माघी, जन भगतां दुरमति मैल धुआईआ। साचे सन्तां सोई सुरत मन्दिर अंदर काया जागी, आलस निंद्रा ना कोए वखाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया बणो त्यागी, लोभ हँकार ना कोए हल्काईआ। सच प्रेम दे बणो वैरागी, इष्ट इक्को इक मनाईआ। काया कपड़ धोवो दाग़ी, पतित पुनीत रूप वटाईआ। शब्द सुणो अगम्मी नादी, धुन आत्मक राग अलाहीआ। अमृत रस पीओ अनडिठ स्वादी, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। शाह पातशाह मिलो इक नवाबी, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। महल अटल सोहवो सच महिराबी, महबूब हुजरा इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सरन कहे मैं भगतां दस्सां ओट, ओड़क इक्को

इक जणाईआ। जिस दा नाम निधाना दो जहानां लावे चोट, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल उठाईआ। लख चुरासी विच्चों कूड़ी क्रिया माया ममता कढ्ढे खोट, सति सति दए समझाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। सच सुणाए नाम सलोक, सोहला इक दृढ़ाईआ। धुरदरबार जणाके मौज, मजलस भगतां विच रखाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सदे आए खोज, शास्त्र वेद पुराण सिमरत ढोले गाईआ। ओस दा दर्शन बिना अक्खां करो रोज़, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सच मुहब्बत देवे जोग, जोगीशर आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक होए सहाईआ। धुर दा मालक तक्को एक, एकँकारा नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी जिस दी सारे रखदे टेक, विष्न ब्रह्मा शिव सिर ना कोए उठाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो बदलणहारा भेख, नित नवित आपणा वेस वटाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लिखणहारा लेख, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा मालक इक नरेश, नर नरायण सोभा पाइंदा। पुरख बिधाता सदा वसे भगतां देस, महल अटल उच्च मिनार इक वड्याइंदा। निरगुण हो के सरगुण खेडे खेड, जगत खिलारी दो धारी चाल चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप समझाइंदा। धुर फ़रमान कहे मैं आवां जुग जुग, संदेसा लोकमात सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखां लुक लुक, दो जहानां खोज खुजाईआ। लख चुरासी विच्चों भगतां लवां पुछ, गुरमुख गुर गुर नाल जुड़ाईआ। अन्तर आत्म दे के सच सुच, संजम नेम इक्को दयां वखाईआ। उज्जल करां मात मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। आत्म परमात्म वखावां सच्चा सुख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह कहे नव नौ चार पिच्छो आया माघ, मग्न भगतां आप रखाईआ। पुरख अकाल हथ्थ फड़ावे वाग, डोरी तन्द नज़र किसे ना आईआ। धुर दा मेला मेल मिलाए कन्त सुहाग, साहिब स्वामी अन्तरजामी जोड़ जुड़ाईआ। शब्द अनादी बोध अगाधी मारे इक आवाज़, बिन अक्खरां आप सुणाईआ। बन्द कवाड़ी परदा खोल्ह के राज़, राम रहीम जलवा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप प्रगटाईआ। धुर फ़रमान कहे मैं होवां प्रगट, लोक परलोक हुक्म सुणाईआ। मैं लेखा जाणा लख चुरासी हर घट, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज वेख वखाईआ। नाड़ बहत्तर माटी ख़ाक लेखा रत्त, नाड़ी नाड़ी परदा दयां उठाईआ। जगत विद्या वेखां मन मत, बुद्धी खोजां सहिज सुभाईआ। हुक्म संदेसा देवां पुरख समरथ, धुर दी धार आप जणाईआ। जन भगतां झोली पा अगम्मी वथ, नाम भण्डारा दयां वरताईआ। सच हकीकत लेखे ला के हक, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। गुरमुखां खोल्ह अक्ख, आख़र

इक्को नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। लक्कड़ी कहे मैं गुरमुखां हथ्थों हुन्दी रही इक्ट्ठी, बिखड़ी बिखड़ी जोड़ जुड़ाईआ। एह लहिणा अर्जन दी भठ्ठी, चन्नाब कन्ढ्ठा दए गवाहीआ। ओस ब्राह्मण दी हट्टी, जेहड़ा हटवाणा हो के हट्ट चलाईआ। जिस दा जीवण प्या नट्टी, सार पाशा खेल ना कोए समझाईआ। ओस दी बुझण वाली बत्ती, बत्ती दन्द देण गवाहीआ। जिस दा लेखा अवर ना कोए रती, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। भगतां दा लेखा कदे ना होया कक्खीं, काठ मिले ना कोए चतुराईआ। खेल वेख्या जो नेत्र नैण अक्खीं, आख़र ओहो रिहा भुगताईआ। जे साथ ना हुन्दा कमलापती, बिन पत्तयां टहणी देणी जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिनका तिनका वेख वखाईआ। लक्कड़ी कहे मेरे हुन्दे रहे टोटे, टुकड़यां विच वण्ड वण्डाईआ। इक्ट्ठे करदे रहे वड्डे छोटे, बिरध बाल नाल मिलाईआ। मेरे सोहणे बणदे रहे सोटे, सूरबीरां नाल लड़ाईआ। छप्पर छन्न छुहाए कोठे, मण्डप रंग रंगाईआ। मेरी धार कोई ना सोचे, बनास्पत रो के दए दुहाईआ। जिस वेले लालो पाए मोछे, नानक सेव कमाईआ। किसे नहीं तक्कया कौण वेखे ओहले गोशे, आपणा आप छुपाईआ। चार युग मेरे नाल हुन्दे रहे धोखे, धुंआंधार करे लोकाईआ। नव नौ चार पिच्छो मैनूं मिले मौके, भगतां नाल होई कुड़माईआ। मैं भावें कहिण आई मुड़ के भौं के, बण के पाँधी पन्ध मुकाईआ। जन भगत जो सेवा करनी निंद्रा विच सौं के, सोवत जागत रूप बदलाईआ। एह खेल अगम्म अथाहो के, भेद अभेद ना कोए जणाईआ। जगत दिहाढ़ खुशीआं चाउ के, चाउ घनेरा रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। लक्कड़ी कहे मैनूं याद आया राम वशिष्ट दा वेला, त्रेता युग दए गवाहीआ। इक्को धार वेखे गुरू चेला, इक्को रंग समाईआ। आसण लाया विच जंगल बेला, दिन तिन्न चारों कुण्ट नज़री आईआ। ओस वेले कोल आया छैल छबीला, बाला नढ्ढा खुशी मनाईआ। जिस दे कोल सी इक तीला, सहिज नाल वशिष्ट दे चरणां उत्ते टिकाईआ। वशिष्ट किहा तैनूं इस लक्कड़ी दा बणावां वसीला, विचोला विचे विच जणाईआ। जिस वेले भगत भगवान दा इक्ठ्ठा होया कबीला, कलयुग अन्त लोकमात वज्जे वधाईआ। खुशीआं विच हस्से रैण विच अम्बर नीला, नीलेवाला नीली धार पार कराईआ। लहिणा देणा नबेड़े उपर ज़मीना, ज़ामन हो के दए गवाहीआ। कलमा कोई ना जाणे आलमीना, कामल मुर्शद आपणी खेल खिलाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख विरला निकले नगीना, नर निरँकारा कीमत आपे पाईआ। नव नौ चार पिच्छो सुहञ्जणा होए जीणा, जीवण मुक्त वखाईआ। किरपा करे प्रभ दाना बीना, बेअन्त होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए लोक तीना, त्रैगुण लेखा देवे चुकाईआ। जिस ने आत्म परमात्म रंग चढ़ाया भीना, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ।

गुरमुखां ठांडा करे सीना, अग्नी तत बुझाईआ। माघ होवे महीना, सोहणी रुत्त सुहाईआ। लक्कड़ी कहे ओस वेले मैनूं कोई हथ्थ ना लावे कमीना, बिन भगतां छूह सके कोए ना राईआ। मैं इक्को नूर तक्कां नर मदीना, नाता तत्तां वाला तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। लक्कड़ी कहे क्यों राज नरैण लाउँदा रिहा हथ्थ, होका गुरमुखां आप सुणाईआ। एह खेल पुरख समरथ, परदा ओहला रिहा चुकाईआ। गोबिन्द सहिज सुभाओ घर जा के आया दस्स, हुक्मी हुक्म बेपरवाहीआ। चुल्हे विच्चों कढ्ढ के कक्ख, अग्नी चरणां नाल बुझाईआ। उह तिन्नके पए हस्स, खुशीआं ढोले गाईआ। पटने वाले दस्स सच, निउँ के सीस झुकाईआ। हुण किथे देवें रख, आसण सिँघासण कवण टिकाईआ। गोबिन्द किहा मैं गुरमुखां दे करां वस, भगतां नाल मिलाईआ। जिस वेले आवे कथना अकथ, अगम्म अथाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप बणाईआ। लक्कड़ी कहे मेरी पैंदी रही रैण सबाई वण्ड, मण्डल मण्डप वेख खुशी मनाईआ। हैरान होए कोट ब्रह्मण्ड, परेशानी विच लोकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रह गए दंग, करोड़ तेतीसा नैण नैण अक्ख शरमाईआ। की करया खेल सूरे सरबंग, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतां चाढ़ के भगती रंग, चरण कँवल देवे सरनाईआ। ढोला सुणा के नाम छन्द, परदा ओहला दिता मुकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के गंद, गहर गम्भीर करी रुशनाईआ। आत्म परमात्म दे के अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। लक्कड़ी कहे मैं रैण सबाई नहीं दिता सौण, समें विच्चों समां ल्या बदलाईआ। एस भेव नूं जाणे कौण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी परदा ना कोए उठाईआ। संदेसा देवे ना उनन्जा पाउण, पवण पाणी ना कोए चतुराईआ। हिसाब लग्गे ना अवण गवण, बिना दुष्ट दमन समझ किसे ना आईआ। थोड़ा लेखा नाल बल बावन, नानक निरगुण दए गवाहीआ। लक्कड़ी कहे मैं गुरमुखां दर वेखण आई उह चमन, पत्त डाल्ही फल फुल्ल खुशीआं विच महकाईआ। अमृत मेघ बरसदा वेख्या सवण, बूँद स्वांती कमलापाती मुख चुआईआ। अन्तर अन्तर मन हँकारी करे अमन, विकारी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दए दृढ़ाईआ। लक्कड़ी कहे मैं चार जुग रही बिखरी, विछड़ी मेल ना कोए मिलाईआ। जिस वेले तिनका मारया सी शिबली, दु:ख विच्चों दु:ख प्रगटाईआ। मैं ओस दी धार दे विच्चों बाहर निकली, नर नरायण मंगी सरनाईआ। एह लक्कड़ी कहे वीह सौ बिक्रमी छब्बी पोह पहला समां खेल होया विच इटली, इटलस सके ना कोए जणाईआ। जिस दी कथा कहाणी दो जहान ना किसे लिख

लई, कागज शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एह बख्शिश रहमत इक्को गुरसिख लई, गुरमुखां झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अथाह वेख वखाईआ। लक्कड़ी कहे क्यों राज नरैण रातीं रिहा चुणदा, सेवक हो के सेव कमाईआ। एह लेखा बहु वड्डे गुण दा, गहर गम्भीर दए दृढ़ाईआ। जिस वेले भाग उच्चा होया भगतां दी कुल्ल दा, गुरमुखां मिले माण वड्याईआ। आउणा होवे लोकमात सुल्हकुल दा, कुल्ल मालक नूर खुदाईआ। उह लहिणा देणा चुकावे कीमत मुल्ल दा, हिसाब किताब खाता पिछला वेख वखाईआ। टहणी नालों औखा जुदा होणा फुल्ल दा, अलग्ग हो के जीवत रहे ना राईआ। बिन सतिगुर तों जगत जहान सारा भुल्लदा, अनभुल्ल नजर कोए ना आईआ। नव नौ चार पिच्छो सच दवारा खुल्हदा, श्री भगवान फेरा पाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला कंडे तुलदा, तराजू छड्डे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी कर्म कमाईआ। लक्कड़ी कहे मैनूं कोई ना समझयो बालण, लख चुरासी दए जलाईआ। मैं वी ओस दर दी स्वालण, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर झोली डाहीआ। साचा मार्ग जन भगतां आई सिखालण, सुख सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। हुक्म दिता जोत अकालण, अकल कलधारी खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। लक्कड़ी कहे मैं भगतां कहिण आई इक्ट्ठे हो जाओ इक थाँ, विछड़या रहिण कोई ना पाईआ। पुरख अकाल सब दा पिता माँ, गोद सुहञ्जणी लए सुहाईआ। ओस दा इक्को जपो नाँ, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। हँस बणो काँ, मनमति देणी तजाईआ। ओस दे हथ्थ फड़ावां बांह, जिथ्थों सके ना कोए छुडाईआ। ना कोई सूर खाओ ना खाओ गाँ, दोहां दा मालक इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल दा नवां साल होया रवां, रवानगी सब दी देवे कराईआ। अगे हुक्म चलणा नवां, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। सच दवारे जन भगतां कोल बहवां, कूड़ा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। लक्कड़ी कहे रात रात बदल लओ आपणी रुतड़ी, रतन अमोलक हीरे नज़री आईआ। मैं जुग चार कीते कौल इकरार कदे ना मुकरी, मुकम्मल आपणी सेव कमाईआ। कलयुग अन्त ना होई नाशुकरी, शुकरीआ कह के खुशी मनाईआ। हुण लोड़ पैणी किसे गुरमुख सूरे पुत्तर दी, गोबिन्द आपणी भेंट चढ़ाईआ। खेचल करनी ना किसे उठण दी, नेत्र अक्ख बदलाईआ। एह कहाणी नहीं कोई दुक्खण दी, सुख सागर विच समाईआ। सलाह नहीं किसे कोलों पुछण दी, आत्मा दी परमात्मा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सलाह देवे शब्द अगम्मी धार उठण दी, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। लक्कड़ कहे रैण रही भज्जी, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। तक्क के जलवा नूर रब्बी, नेत्र नैण खुशी मनाईआ।

२४७
१६

मैं कुक सुणावां सभी, दयां हक दुहाईआ। जेहड़ी धार नव नौ चार पिच्छो मैनूं लभ्भी, नूर नुरानी नज़री आईआ। ओसे दे हुक्मे अंदर बद्धी, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। दर्शन कर मूल ना रज्जी, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। गुरमुखो सुनेहड़े विच सब नूं रही सद्दी, भगतां रही जगाईआ। पुरख अकाल दी पहली लग्गी सदी, सदमें सब दे दए गवाईआ। होए सहाई पतित पुनीत करे यदी, यदप आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों रिहा कढ्ढी, फड़ बाहों पार कराईआ। ब्राह्मण अज्ज फेर चढ़न वाला सी गड्डी, ब्राह्मण कोलों ब्राह्मण ल्या तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार बदल के संसार वाली जगी, विवहार आपणे विच रखाईआ।

✪ १८ माघ शहिनशाही सम्मत १ कपूर सिँघ दे गृह मोगा गुलाबी बाग़ ✪

फुल्ल कहिण साडी मौली बहार, बसन्त आपणा रंग बदलाईआ। खुशीआं विच होए त्यार, पत्त डाली मात महकाईआ। सोहणी खिड़ी गुलज़ार, महक विच्चों प्रगटाईआ। इक इक्क जुड़ के बणया सोहणा हार, हर हिरदा वेख वखाईआ। असीं दस्सण आए कूक पुकार, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। जन भगतो सांझा करना सच प्यार, नाता कूड़ ना रहे जुदाईआ। पुरख अकाल मनाउणा इक्को धुर दा यार, परवरदिगार हक गुसाँईंआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवे तार, नित नवित होए सहाईआ। जिस दा एथे ओथे दो जहान ठांडा दरबार, धर्मसाल इक्को इक उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फुल्ल कहिण साडा मेल होया नाल कच्चे तन्द, नाता नाते नाल जुड़ाईआ। खुशी वेख्या बन्द बन्द, बन्दगी इक्को ढोला गाईआ। मिल के पाया परमानंद, अनन्द वज्जी वधाईआ। गाया ढोला छन्द, मेरा तेरा इक्को नज़री आईआ। जगत दुर्गन्धी रही ना कोई गंद, सुगंध विच्चों नज़री आईआ। प्रेम प्रीती अंदर हो पाबन्द, बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हार कहे तुसीं वेख्यो हरया, हरयावल नज़री आईआ। प्रेम प्रीती अंदर भरया, सिफ्त विच वड्याईआ। लोकमात मूल ना डरया, भय भउ ना कोए जणाईआ। सच दवारे बैठा चढ़या, जित्थे मिले माण वड्याईआ। परम पुरख परमात्म दर्शन करया, निज नैण लोचण अक्ख खुलाईआ। धुर दा ढोला इक्को पढ़या, इक्को नाम जणाईआ। मैं आदि जुगादि जीउदा कदे ना मरया, मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। हार कहे मेरी सोहणी वेखो लड़ी, लड़ीवान दयां जणाईआ। कलयुग विच बदल के आई सतिजुग सुहञ्जणी घड़ी, गुर अवतार पैगम्बर जिस दी देण

गवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच प्रेम दी लाई झड़ी, भगवन भगतां रंग रंगाईआ। नाम निधाना पोशाक दे के ज़री, वस्त्र इक्को रिहा सुहाईआ। कृपाल हो के नर हरी, नरायण देवे वड्याईआ। साची मंज़ल बिन पौड़ी डण्डे चढ़ी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फुल्ल कहिण जन भगतो गुरमुख बण जायो बच्चे फुल्ल, दो जहानां आपणा आप बदलाईआ। भगवन घर तुहाडी उपजे कुल, कुल मालक बणे पिता माईआ। सचखण्ड दवारे कीमत पाए मुल्ल, बेअन्त होए सहाईआ। सच प्रीती अंदर जाणा घुल, आप आपणा देणा मिटाईआ। सच दवारा गया खुल्ह, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवदहारा साचा वर, परदा ओहला आप उठाईआ। फुल्ल कहे मेरी बदल गई रुत, रुतड़ी प्रभ रिहा महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, सति सतिवादी दया कमाईआ। भगत सुहेले भगवन दे बणे अनादी सुत, कूड़ी क्रिया नाता तोड़ तुड़ाईआ। परम पुरख परमात्म निरगुण धार आत्म लए चुक्क, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सच दवारयों सच निरँकार निरवैर धार पए उठ, जोती जोत रुशनाईआ। शब्द अगम्मी नाद अनहद लाए चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया काया मन्दिर अंदरों कढ्ढे खोट, दुरमति मैल आप धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। फुल्ल किहा हुक्म इक निरँकार, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। सतिजुग बदल रही बहार, दो जहान वज्जे वधाईआ। कल कल्की लै अवतार, चार वरन करे पढ़ाईआ। नाम खण्डा अगम्म अपार, दो जहानां रिहा चमकाईआ। सोहँ छन्दा सच जैकार, लख चुरासी चारे खाणी चारे बाणी रिहा पढ़ाईआ। साचा मन्दिर इक दवार, धर्म दवारा रिहा वखाईआ। जोत जगे अगम्म अपार, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। शब्द अगम्मी नाद सच्ची धुन्कार, अनरागी राग अल्हाईआ। गुरमुख सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द जणाईआ। साची करनी करे आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। जिस दा राह तक्कदे गए गुर अवतार, पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। भविख्तां विच करदे गए इज़हार, लेखा लिख के कलम शाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी प्रगट होए विच संसार, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। फुल्ल कहिण असीं वेख्या दर दरवाज़ा, लोकमात खुशी मनाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित ग़रीब निवाज़ा, लख चुरासी वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस नूं सजदे करदे मुल्ला शेख़ मुसायक सन्त साधा, भगत भगवन्त कह के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। फुल्ल कहिण असीं

तक्कणा उह नज़ारा, जो बेनज़ीर रिहा वखाईआ। कलयुग अन्त अन्त दिसे किनारा, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। कूड़ नाता चार वरन अठारां बरन दिसे संसारा, सच प्रीत हक ना कोए कमाईआ। परदा ओहला चुक्के ना दूर होवे गुबारा, सच चन्द ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म लग्गे कोई ना नाअरा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले रहे गाईआ। दीन दुनी जगत वेख्या अखाड़ा, मजलसां विच लोकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण निरवैर निराकारा, निरँकार नज़र ना आया धुर दा लाड़ा, लाड़ी मौत सब नूं रही प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। फुल्ल कहिण असीं दस्सण आए भेत, परदा ओहला रहे चुकाईआ। जन भगतो परम पुरख दा साचा हेत, जिस दी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। रुत्त बदलण वाली अगे महीना चेत, चेतन सब नूं दए कराईआ। जगत करसाणा सुंञा होणा खेत, दहि दिशा पए दुहाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख थोड़े परम पुरख दी होए भेंट, आप आपणा झोली पाईआ। तिन्हां एथे ओथे दो जहानां साची सेजा लैणा लेट, सोहणी सेज रहे सुहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बणना खेवट खेट, बेड़ा दो जहानां पार कराईआ। इक्को मालक ख़ालक प्रितपालक सदा एक, एकँकार दए सरनाईआ। सचखण्ड दवारे बख़्शे धुर दी टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए चुकाईआ। फुल्ल कहिण साडा धरत उत्ते ना वेख्यो फर्श, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। मेहरवान कर के तरस, नज़रे कर्म रिहा उठाईआ। की खेल उपर अर्श, सूरज चन्द सीस निवाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा भटक, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र अक्ख ना कोए तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे तरस, आदि जुगादि ध्यान लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां उत्ते साचा मेघ देवे बरस, बरखा फूलन इक्को लाईआ। जित्थे ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जिस दी समझ ना सके कोई लिख्त पढ़त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव ना कोए खुल्हाईआ। सो सूरबीर योद्धा मर्दाना मर्द, नर निरँकारा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप बंधाईआ। धुर दी धार कहे मैं वेखणा दो जहानां धर्म, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। लख चुरासी जानणा कर्म, निहकर्मी हुक्म दिता वरताईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर परदा लाहुणा चार वरन अठारां बरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लुक्कया रहिण कोए ना पाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले लोकमात विच्चों आई फड़न, चार कुण्ट दहि दिशा लैणे उठाईआ। नेत्र खोल्हणा निज नैण हरन फरन, दोए लोचण लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा मार्ग इक समझाईआ। फुल्ल कहिण असीं सोहे उत्ते धरती ख़ाक, धरनी

२५० १६

धवल रही वड्याईआ। साडा बणया सांझा साक, सज्जण मिल्या बेपरवाहीआ। उच्ची कूक सारे रहे आख, कूक कूक सुणाईआ। जन भगतो पुरख अकाल इक्को मन्नणा बाप, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां लए राख, फड़ बाहों गोद बिठाईआ। जिधर तक्को ओधर नज़री आवे साख्यात, स्वच्छ सरूपी सोभा पाईआ। करे खेल अगम्म अथाह पुरख अबिनाशी आप, आप आपणी कार कमाईआ। जिस दा आत्म परमात्म सोहँ ढोला धुर दा जाप, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खोल्हणहारा ताक, परदा ओहला रिहा उठाईआ। फुल्ल कहे मेरा वेखो खेल अगम्मा, अगम्मड़ा आप जणाईआ। मैं कीमत विच नकम्मा, टकयां मुल्ल रखाईआ। कंडे खार जम्मा, पत्त टहणी लटकाईआ। जुग चौकड़ी बदल के प्रभ मिलण नूं मेरा आ गया समां, नव नौ चार पन्ध चुकाईआ। अगे ओस दी सेजे सवां, जिथ्थों सुत्यां ना कोए उठाईआ। धुर संदेसा इक्को कहवां, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। जन भगतो तुहाडा जोबन एथे ओथे रहे सदा नवां, बिरध बाल बुढ़ापा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कूड़ी क्रिया करयो कोई ना तमअ, सच प्रीती सतिगुरू चरण सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस करनी तों कर के गए मन्न्हां, उह हुक्म देणा भुगताईआ। कलयुग जीव जंत रहिण नहीं देणा अन्न्हां, अक्ख प्रतख परदा दए उठाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात राउ रंक ऊँच नीच रहिण नहीं देणा बन्ना, आत्म परमात्मा इक्को देणा समझाईआ। नाम संदेसा सुण लओ दो दो कन्नां, दो जहानां वाली आप दृढ़ाईआ। तुहाडा खेल भगत भगवन्त वाग धन्ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फुल्ल कहे मैं आपणा आप रिहा फोल, परदयां विच्चों परदा रिहा खुल्हाईआ। सच संदेसा देवां बोल, नाअरा हक जणाईआ। जन भगतो श्री भगवान सदा वसे तुहाडे कोल, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। सतिगुर प्रीती बजर कपाटी कुण्डा लओ खोल्ह, गृह मन्दिर अंदर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। फुल्ल कहिण मैं वेखणा हर हिरदा, घट घट खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी रिहा फिरदा, शाह सुल्तानां वेख वखाईआ। मैं नज़ारा तक्कया थिर घर दा, जित्थे वज्जे सच वधाईआ। मैं विछुन्ना नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चिर दा, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। धन्न भाग दर्शन पाया अगम्मी पिर दा, मिल के खुशी मनाईआ। एसे कारन गुंचयां विच्चों पत्त पत्त हो खिड़दा, बन्द खिड़की आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक चढ़ाईआ। धुर दा रंग चढ़ाए हरि रंगीला, अनडिठड़ा आप रंगाईआ। जन भगतो बणां तुहाडा इक वसीला, मेला धुर दरगाहीआ। चार वरन सोहणा लग्गे सच कबीला, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को रूप नज़रीं आए नर

मदीना, आत्म अन्तर सोभा पाईआ। जगत विछोड़ा थोड़ा जल मीना, भगत भगवान कदे ना होवे जुदाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ठांडा रखे सीना, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तुहाडा सोहणा सम्मत अगे बदलण वाला चेत महीना, मेहरवान खेल खिलाईआ। गुरमुख रहे ना कोए कमीना, कमलापति लए उठाईआ। माण दे के उपर ज़मीना, हज्जां तों लए छुडाईआ। चौथे जुग दी कर तरमीमा, सोहणी अगली वण्ड समझाईआ। खैहड़ा छुडा दए कोलों हकीमां, तबीबां दी लोड़ रहे ना राईआ। लेखा मुके जगत ग्रन्थ मुनीमां, इक्को शब्द करे शनवाईआ। धुर दा हुक्म सब नूं करना पए तसलीमा, सिर सके ना कोए उठाईआ। खेल करे आहला आप अज़ीमा, आलीशान आपणा रंग बदलाईआ। जुग चौकड़ी पूरब लिख्या वेखे ज़मीमा, अक्खर अक्खर खोज खुजाईआ। गुरमुख हरिजन भगत सुहेला लख चुरासी विच्चों बणावे उह नगीना, जिस दी कीमत ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, घट घट खोज खुजाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, भेव अभेदा परदा लाहीआ। नाम नज़ारा देवे मंत्र, निरंतर करे सुणाईआ। पावे सार हरिजन साचे सन्तन, सति सतिवादी होए सहाईआ। माणस जन्म साढे तिन्न हथ्थ काया माटी पंज तत बणाए बणतन, घाड़न घड़नहार स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग आप निभाईआ। सगला संग प्रभू निभावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। रुत रुतड़ी आप महकावेगा। गुरमुख गुरसिख सज्जण सोई सुरत आप उठावेगा। चरण धूढ़ी करा के इक्को मज्जन, दुरमति मैल धुआवेगा। सच सरनाई जो जन लग्गण, तिन्हां दी लागत कीमत झोली पावेगा। एथे ओथे दो जहानां करे अदल, इन्साफ़ इक्को इक दृढ़ावेगा। जन्म विच्चों जन्म देवे बदल, बदला पूरब लहिणा आप मुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमावेगा। सच करनी कार कमाएगा। दीन दयाल वेख वखाएगा। गुरमुख गुर गुर आप उठाएगा। मस्तक लेखा लहिणा जाण के धुर, धूढ़ी टिक्का आप लगाएगा। साचा मंत्र अन्तर जाए फुर, मन मनसा मेट मिटाएगा। मेल मिलावे निवासी वासी अनन्दपुर, पुरीआं लोआं पार कराएगा। शब्द अगम्मी सुणा के सुर, सुरती सच विच समाएगा। निरगुण सरगुण बन्ह्र डोर, डोरी आपणा तन्द जुड़ाएगा। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, जोती जोत जोत रुशनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह्राएगा। फुल्ल करे मेरी आउण वाली रुतड़ी चेत, सब नूं दयां कराईआ। पुरख अकाल नज़री आउणा नेतन नेत, हरिजन साचे नैण खुल्ह्राईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी कोट केत, जुग चौकड़ी बण के पाँधी राहीआ। सो साहिब स्वामी घट भीतर लैणा वेख, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी मुच्छ दाढ़ी ना केस, ना कोए

मूंड मुंडाईआ। जिस दा सुत दस दस्मेश, दहि दिशा करे रुशनाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जिस दे हुक्में अंदर विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, करोड़ तेतीस सीस झुकाईआ। सो बख्शणहारा साची टेक, टिक्के मस्तक दए लगाईआ। गुरमुखां बुद्धी कर बिबेक, कूड़ी क्रिया दए कढाहीआ। अन्तिम दस्स के एको एक, एकँकार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार दया कमाईआ। फुल्ल कहिण साडी रही रुतड़ी मौल, मौला दया कमाईआ। चार जुग दा पूरा कर के कौल, गुर अवतार पैगम्बरां दए वखाईआ। नवें जुग दी धार दस्स के उपर धौल, धरनी दए वड्याईआ। जन भगतां अन्तर आत्म दे के इक्को पाहुल, निझर रस दए चखाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सदा वसे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाम संदेसा वजाउँदा रहे ढोल, शब्दी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। बख्शे सरन सच स्वामी, समां दए गवाहीआ। जन भगतां सुणा अगम्मी बाणी, बिन अक्खरां आप पढ़ाईआ। पद देवे इक निरबानी, निरवैर होए सहाईआ। खेले खेल हर घट जाण जाणी, जानणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप दरसाईआ। फुल्ल कहिण असीं इक दूजे नाल गए जुड़, सोहणा जोड़ बणाईआ। लग्गी प्रीती निभ जाए तोड़, अद्ध विचकार ना कोए अटकाईआ। इक प्रभू दी साची लोड़, कूड़े नाते दिते मुकाईआ। जो आपणे नाल सदा लए तोर, तुरत आपणे घर वसाईआ। जित्थे नहीं कोई ठग्ग चोर, यार कूड़ कुड़यार ना कोए दिसाईआ। झगड़ा रहे ना कोई अन्धघोर, इक्को नूर सच रुशनाईआ। लेखा मुके मोर तोर, सोहँ रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। हार कहे तुसीं वेखो मेरा मिलाप, सोहणा नज़रीं आईआ। सो प्रभू दा जाप, हँ विच समाईआ। त्रैगुण मेटे ताप, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। रूह बुत्त होवे पाक, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। नाता तुट्टे कूड़ा साक, दीन दुनी दए दुहाईआ। आत्म परमात्म होए इतफ़ाक, हरि साचे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी शाख़, सो शनाख़त आपणी दए कराईआ। जुग जुग दा पूरा कर भविख्त वाक्, वाक्य अगला दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। हार कहे मेरा वेखो फुल्लां नाल इक्ठ, सोहणा नज़री आईआ। इक्को मार्ग देवां दस्स, करां सच पढ़ाईआ। जिस कारन गुरमुखो आए नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां मिलणा हस्स हस्स, आपणी हस्ती देणी मिटाईआ। प्रेम प्रीती मानणा रस, कूड़ी क्रिया ना कोए दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह रिहा जणाईआ। हार कहे मैं दस्सण आया तमाम, कूड़ी तमअ देणी गवाईआ। इक्को जपणा धुर दा नाम, नाम

निधाना इक समझाईआ। पूरन होवण सगले काम, निहकर्मी कर्म कमाईआ। भाग लग्गे नगर खेड़ा काया ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। अमृत आत्म पीणा जाम, निझर झिरना रस झिराईआ। जोत प्रकाश करना भान, अन्ध अन्धेरा अन्ध मिटाईआ। सतिगुर शब्द सुणना ज्ञान, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इक्को ब्रह्म होवे ध्यान, पारब्रह्म नज़री आईआ। सोहणा मन्दिर सोहे मकान, काया माटी रंग रंगाईआ। जित्थे पुरख अकाला दीन दयाला करे क्याम, सच सिँघासण डेरा लाईआ। ठाकर स्वामी मिलणा होवे आसान, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जन भगतो कोट जन्म भावें लाउँदे रहो दीवान, बिना प्रभ दरस लेखा मात ना कोए मुकाईआ। हरि के नाम पिच्छे भावें हो जाओ बदनाम, बदी नेकी आपणा रूप दए बदलाईआ। तुहाडे अंदर रहे ना अन्धेरी शाम, सति सच चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को रिहा दिसाईआ। हार कहे मैं करां हाल हाल, सब नूं रिहा जणाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, अन्त नगारा रिहा वजाईआ। लाड़ी मौत वजावे ताल, घूँगट मुख ना कोए रखाईआ। बिन सतिगुर पूरे करे ना कोए संभाल, साक सज्जण सैण कम्म कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं करदा आया भाल, खोजत खोजत पन्ध मुकाईआ। धन्न भाग जे नव नौ चार पिच्छो शहिनशाही सम्मत दा मिल्या साल, रुत्तड़ी रुत्त नाल बदलाईआ। भगत सुहेले तक्के नढ्ढे बाल, गुरमुख गुर गुर रूप बदलाईआ। जिन्हां दे अंदर नाम ख़ज़ाना माल, अतोट अतुट दिसाईआ। उह इक्को मन्नदे पुरख अकाल, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। उन्हां दे गल विच एथे ओथे परम पुरख दे सोंहदे हार, तन्द तन्द नाल बंधाईआ। लेखे लग्ग गए मूर्ख मुग्ध गवार, जो जन आए सरनाईआ। नेत्र लोचण नैण दरस दीदार, अन्तर आत्म वज्जे वधाईआ। अन्तिम अन्त ना होण खुआर, खुआरी कूड़ी दिती कटाईआ। सच दवारा दे के धर्मसाल, धुर धाम आप बहाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल भय ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महारज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा बख्शे इक प्यार, विवहार विवहारी आपणे नाल रखाईआ।

२५४
१६

२५४
१६

✪ २४ माघ शहिनशाही सम्मत १ पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड दवारे हुक्म निरँकार, निरगुण निरवैर निराकार आप चलाईआ। महल अटल सुहाए उच्च मीनार, सति सतिवादी सोभा पाईआ। निरगुण जोत होए उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मुकामे हक परवरदिगार, लाशरीक डेरा लाईआ। खेले

खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कराईआ। दूसर ना कोए मीत मुरार, सगला संग ना कोए जणाईआ। सच संदेसा देवे इक्को वार, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होवो बेदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे ख़बरदार, भय भउ इक समझाईआ। चारे जुग वेखो नैण उग्घाड़, करनी करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। सचखण्ड दवारे सति फ़रमान, हरि करता आप जणाइंदा। दरगाह साची खेल महान, आदि पुरख अबिनाशी करता आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव होए सवाधान, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पैगम्बर करन ध्यान, सीस जगदीश इक झुकाइंदा। जुग चौकड़ी वेखो एका हुक्म देवे ब्यान, महिमा अकथ कथ समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाइंदा। धुर दा खेल दस्से भगवन्त, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। साचा सुणो अगम्मी मंत, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। नर नरायण जाणो इक्को कन्त, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जिस दी आदि जुगादि महिमा अगणत, विद्या विच ना कोए दृढ़ाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां बणे बोध अगाधा पंडत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को वार सुणाईआ। सचखण्ड दवारे खेल श्री भगवान, हरि करता आप जणाइंदा। सतिवादी वेखो इक निशान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। इक्को मन्दिर सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। इक्को दीप जगे महान, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। इक्को तख्त निवासी नौजवान, बिन रंग रूप सोभा पाइंदा। जो आदि जुगादी साचा काहन, बिन सख़ियां रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वखाइंदा। धुर दी खेल करे हरि करता, करनी आपणी दए जणाईआ। आदि जुगादि धुर दा भरता, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। साची मंज़ल अगम्म अथाह उच्च मीनार आपे चढ़दा, मंज़ल हक ना कोए समझाईआ। निरअक्खर वक्खर ढोला आपे पढ़दा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। निरवैर हो के आपणी कार करदा, निरँकार हो के साची कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर वेख वखाईआ। साचा घर वेख सचखण्ड, सति सतिवादी खुशी मनाइंदा। परदा लाह के कोट ब्रह्मण्ड, भेव अभेदा आप जणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दवारे सद्द, सद्दा इक्को नाम अलाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर वेखो धुर दी हद्द, हदूद वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। परम पुरख दी सारे यद, शब्दी धार आप प्रगटाइंदा। जुग चौकड़ी गए लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाइंदा। साची सेजा वेखो सुहञ्जणा पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। बोध अगाध शब्द अनाद

बिन राग ताल रिहा वज्ज, वजह सच ना कोए समझाइंदा। चवी माघ कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा होया अज्ज, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुकाइंदा। शब्द संदेसा देणा गज्ज, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आप सुणाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल आप समरथ, दूजा संग ना कोए जणाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खाणी बाणी वेखणहारा हक, हकीकत परदा आपे लाहइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा भेव रहे दस्स, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहइंदा। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता घट भीतर रिहा वस, गृह गृह आपणा डेरा लाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवणहारा अगम्मा रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। चवी माघ कहे मैनूं आ गई याद, पूरब लहिणा नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे गए दाद, दर दरवेश हो के अगे झोली डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे गए फ़रयाद, सचखण्ड दवारे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं रचना रची आदि, अन्त वेखे थाउँ थाँईंआ। तूं वाहिगुरू राम कृष्न अल्ला गॉड, लाशरीक तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नाम खण्डा इक्को दिसे राड, डंका सच सच वजाईआ। बिन अक्खरां बिना लेखा लिख्त तेरा राग, जुग चौकड़ी करे शनवाईआ। साचा खोल्हे कोई ना राज़, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। चवी माघ कहे तेरा वेख्या सचखण्ड दवार, सच दुआर वज्जी वधाईआ। घर बैठ गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, ख़ाली झोली डाहीआ। तूं दाता दानी देवणहार, दयावान अख्वाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, लोकमात आपणा पन्ध मुकाईआ। भविख्तां विच तेरा इज़हार, काग़ज़ कलम शाही दए गवाहीआ। चारे खाणी दएं अधार, चारे बाणी सिफ्त सालाहीआ। धन्न वड्याई तेरी परवरदिगार, लाशरीक तेरी सच सरनाईआ। तेरा वेख ठांडा दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। हउँ बालक सेवक ख़िदमतगार, दर घर साचे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दे समझाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो पैगम्बर गुर अवतार, शब्द संदेसा दयां सुणाईआ। जुग चौकड़ी खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण हुक्म वरताईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा बण लिखार, कातब हो के कलम चलाईआ। चार वरन अठारां बरन लख चुरासी खोल्ह किवाड़, वरन बरन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मारो लोकमात झाक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, सच चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन दुनी लड़ाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए इतफ़ाक, मन वासना होई हल्काईआ। सतिगुर शब्द ना दिसे

किसे साथ, अगम्मी नाद ना कोए वजाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। निरंतर सेजा सोए कोए ना खाट, सुहञ्जणी सेज ना कोए हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात लओ तक्क, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आप जणाइंदा। साचा मिले किसे ना हक, हकीकत परदा ना कोए उठाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ सारे गए थक्क, संसा रोग ना कोए मिटाइंदा। नाम भण्डारा गृह मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ खोल्हे कोई ना हट्ट, वणजारा वणज ना कोए कराइंदा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता तत विकारा खेल बाज़ीगर नट, सच स्वांग ना कोए वखाइंदा। लग्गी अग्ग अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध सांतक सति ना कोए कराइंदा। चार वरन अठारां बरन कोई याद ना करे तुध, सजदा सीस ना कोए झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप दृढ़ाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात करो ध्यान, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। सिदक सबूरी रिहा ना कोए ईमान, अमलां विच ना कोए लोकाईआ। कूड़ी क्रिया चढ़या तूफ़ान, मानस मानव रिहा रुढ़ाईआ। साचा नाद सुणे कोई ना कान, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। निरगुण जोत प्रकाश होवे ना अगम्मी भान, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। मन्दिर सोहे ना सच मकान, काया माटी ना कोए रुशनाईआ। मन वासना जगत फिरे सुआन, भज्जे वाहो दाहीआ। मंज़ल हक हकीकी चढ़े कोए ना आण, नौ दवारे पन्ध ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पैगम्बरां रिहा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लोकमात करो इशारा, शब्दी शब्द जणाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए प्यारा, कूड़ी क्रिया नाल कुड़माईआ। झगड़ा प्या पुरख नारा, नर नरायण ना कोए मनाईआ। हउमें हंगता लग्गा अखाड़ा, चार कुण्ट दए दुहाईआ। साची मंज़ल पार करे ना कोए किनारा, नईआ नौका सच ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख समरथ, एह तेरी बेपरवाहीआ। जो निरगुण सरगुण लोकमात आए दस्स, लेखा लिख के कलम शाहीआ। तेरा नाउँ निरँकारा दस्स के आए सच, सति सतिवादी हुक्म जणाईआ। निज नेत्र नैण खोल्ह के आए अक्ख, लोयण इक्को इक समझाईआ। सति धर्म दा प्रगट करके आए हट्ट, गुरमुख गुर गुर आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। पैगम्बर कहिण प्रभू दर सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। एह खेल अगम्मा हरि दा, हैरानी सब दे उत्ते छाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा खेल करदा, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। बिन तेरे भय कोई ना डरदा, भउ अवर ना कोए जणाईआ।

कलयुग अन्तिम लेखा सब दा जाए हरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखो अन्त अख़ीर, आख़र दयां समझाईआ। सदी चौधवीं बदलण वाली तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम कटणा शरअ वाला ज़ंजीर, शरीअत इक्को देणी दरसाईआ। आत्म परमात्म खेल दस्सणा बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़ के बैठा कबीर, सच दवारे डेरा लाईआ। ओस दी धुर दी होई ताअमीर, बाडी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लेखा मुक्के शाह हकीर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। पैगम्बर कहिण प्रभ साचे परवरदिगार, जलवा तेरा नूर खुदाईआ। हउँ तेरे खिदमतगार, बैठे सीस झुकाईआ। चौदां तबक करन पुकार, तोबा तोबा कर दुहाईआ। अगला लेखा समझ ना आवे विच संसार, अन्त अख़ीरी वण्ड ना कोए कोए वण्डाईआ। सजदे करन वारो वार, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं भेव अगला दस्सदा हां, पैगम्बर हुक्म जणाईआ। हर घट अंदर वसदा हां, लख चुरासी डेरा लाईआ। कोटां विच्चों भगत सन्त सुहेले रखदा हां, सूफ़ी आपणे रंग रंगाईआ। परमात्म हो के आत्म नाल हस्सदा हां, निज नेत्र कर रुशनाईआ। मार्ग इक्को सच दा दस्सदा हां, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। कूड़ी क्रिया शौह दरयाए सटदा हां, नित नवित वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं देण आया फ़रमान, इक्को इक जणाईआ। परम पुरख होणा प्रधान, दो जहान वज्जे वधाईआ। सच झुलणा सच निशान, नव सत्त सोभा पाईआ। चार वरनां देणा इक ज्ञान, बरन अठारां हक पढ़ाईआ। शब्द खण्डा निकलणा विच्चों म्यान ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। शरअ मेटे कूड़ शैतान, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। सब नूं जणाए इक्को राम, सीता सुरती आप उठाईआ। कृष्न वखाए धुर दा काहन, जिस दा ना कोई पिता ना कोई माईआ। इक्को पुत्तर होए बलवान, परवरदिगार नूर खुदाईआ। पुरख अकाला उठे नौजवान, बिरध बाल ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे विच्चों जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा देवे दान, सति सतिवादी आप वरताईआ। इक्को नूर करे भान, सच सच रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दे के गए ब्यान, भविख्तां विच परदा दए उठाईआ। सो सूरबीरा हाज़र हज़ूरा करनहारा सर्ब कल्याण, कलमा कायनात जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म वरते जग, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मक्के काअबे रहे ना हज्ज, हुजरा जग ना कोए सुहाईआ। शाह सुल्तान

तख्त ताज जाण तज्ज, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सज्जण साथी जाण भज्ज, अगला संग ना कोए बणाईआ। माया ममता लग्गे अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग काग बुद्धी होई कग, हँस रूप ना कोए वटाईआ। चौवी माघ कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो मेरा वक्त सुहञ्जणा होया अज्ज, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक उपाईआ। धुर फ़रमान कहे मैं धुर दा मालक, हुक्म आदि जुगादि सुणाईआ। लोकमात बण के आवां सालस, दो जहानां देवां सफ़ाईआ। मेरा सब तों वक्खरा अनोखा कालज, बिना कलमयां करां पढ़ाईआ। मेरी समझ सके कोई ना नालज, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखे नन्हे बालक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेवा गए कमाईआ। जो सजदयां विच मंगदे गए इक्को अदालत, अदली होवे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। हुक्म कहे मैं धुर संदेसा, कलयुग अन्तिम रिहा सुणाईआ। पुरख अकाल दस्सां हरि नरेशा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जिस दो जहान बदल देणा पेशा, पेशतर पहले रिहा फ़ुरमाईआ। झगड़ा मुकणा विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, करोड़ तेतीसा ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चुकणा ठेका, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। अन्तिम प्रगट होणा परम पुरख प्रभ एका, एकँकार इक्को नूर खुदाईआ। दो जहानां बख्शे टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। लख चुरासी विच्चों माण वड्याई देवे जन भगत जिन्हे त्रैगुण माया लग्गे ना सेका, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निरगुण सरगुण दस्से भेता, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक उपाईआ। हुक्म कहे मैं आउँदा जांदा, जुग जुग वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखां थक्का मांदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। सच भण्डार देवां इक्को नाउँ दा, नर निरँकारा आप जणाईआ। वसणा दस्सां साचे गाउँ दा, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। भेव चुकावां पिता माउँ दा, पुरख अकाल सर्ब समझाईआ। मस्तक टिक्का लावां धुर दे पाउँ दा, चरण कँवल सरनाईआ। गृह वखावां सच न्याउँ दा, हक हकीकत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हुक्म कहे मैं आवां आदि जुगादि, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखां साध, सन्त सूफ़ी फ़कीर खोज खुजाईआ। नाम संदेसा देवां इक्को नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। वरन बरन चुका इक समाज, ज़ात पात परदा लाहीआ। धुन सुणा जगत राग, ताल तलवाड़ा करां शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धुर हुक्म कहे मैं दस्स गया तेई अवतार, तरहां तरहां समझाईआ। सब ने रहिणा ख़बरदार, बेख़बरां

ख़बर पहुंचाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच संसार, अन्तिम वज्जे इक वधाईआ। प्रगट होणा नर निरँकार, निराकार फेरा पाईआ। जिस नूं सदा करो निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस दी जोत जगत अधार, जोती जाता बेपरवाहीआ। ओह आवे आपणी धार, ना कोए जन्मे पिता माईआ। निरगुण नूर होए उज्यार, रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सिफ्तां विच ना कोए इज़हार, ढोलयां विच ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। धुर हुक्म मैं दस्सया पीर पैगम्बर, ईसा मूसा मुहम्मद शब्दी नाद वजाईआ। परवरदिगार सांझे यार करना इक सुअम्बर, लोकमात वेस वटाईआ। सदी चौधवीं मेटणा अन्त अडम्बर, एका चौका खोज खुजाईआ। सर्ब कला होवे भरतम्बर, बेपरवाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं दस्सया मूसे, मुसलसल हाल सुणाईआ। भेव रिहा ना कोए दूजे, एका एक सुणाईआ। पड़दे खोल्हे सब दे गूझे, ऐन गैन ना कोए पढ़ाईआ। काया माटी भाण्डे करे मूधे, तन ख़ाकी खोज खुजाईआ। साचा लाहा किसे ना सूझे, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक उपाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं दस्सया हक ईसा, इष्ट इक्को इक जणाईआ। खेल करे जगत जगदीशा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। झगड़ा मुका के बीस इकीसा, एकँकार करे रुशनाईआ। साचा हुक्म हक हदीसा, इक्को करे पढ़ाईआ। पिछला लेखा जाणे बीता, चार जुग फोल फुलाईआ। अगे सतिजुग लावे रीता, मार्ग आपणा दए समझाईआ। लख चुरासी परखे नीता, चारे खाणी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हुक्म कहे मैं दस्सया मुहम्मद गुलाम, ग़मी खुशी विच्चों बाहर कढाहीआ। तेरा मंत्रां वाला सलाम, तब़ां तब़ां विच वण्डाईआ। जिस वेले आवे आप अमाम, अमलां दा मालक नूर खुदाईआ। देवे सच पैग़ाम, हकीकत इक समझाईआ। खोजे उपर असमान, ज़िमीं असमान परदा लाहीआ। वखा के इक निशान, तारा चन्द नूर रुशनाईआ। लए हल्फ़ीआ ब्यान, बिना इबारत कर पढ़ाईआ। दस्स अगम्मी कलाम, कलमयां करे वड्याईआ। तूं बालक इक निधान, हुक्मे विच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं शब्द संदेसा दिता दस गुरू, इष्ट देव स्वामी इक्को इक समझाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल हुन्दा शुरु, शहिनशाह दाता बेपरवाहीआ। जिस दा भाणा दो जहान कदे ना मुड़्हू, सति समुंदर सार कोए ना पाईआ। जिसदा इक्को मंत्र नाम ढोला शब्दी फुरू, फ़ुरने मेटे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

२६० १६

निहकर्मी कर्म कमाईआ। संदेसा कहे मैं दस्सदा रिहा भगत, भगवान भेव खुल्हाईआ। प्रभ आउणा लोकमात जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दा बिना गोबिन्द तों कोई ना समझे वक्त, चारे खाणी सार कोए ना पाईआ। जिस दा हुक्म होणा नाम सख्त, देवे अन्त सज़ाईआ। चार जुग गुर अवतार पैगम्बर इक्त्रा कर के वफ़द, सचखण्ड खेल वरताईआ। ना कोई शिवदवाला मठ्ठ मन्दिर होवे मस्जिद, चार दुआर ना कोए जणाईआ। ना कोई खाण पीण पहनण होवे रसद, रस्ता दीन दुनी ना कोए वड्याईआ। ना कोई ज़ात पात दीन मज़्हब करे हसद, ना कोई झगड़यां वाली लोकाईआ। ना कोई पंडत पांधा मुल्ला शेख़ मुसायक होवे सईयद, अक्खरां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को एकँकार जोती धार होवे मस्त, मतवाले गुर अवतार पैगम्बर लए बणाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होवे नष्ट, निसचे नाल आपणा हुक्म वरताईआ। सच मुनारे एकँकार इक्को दस्से आपणा दरस, द्रृष्य इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं दस्सदा आया सन्त, सज्जण सच जणाईआ। परम पुरख परमात्म इक भगवन्त, भगवन बेपरवाहीआ। लख चुरासी जिस दा जीव जंत, घट घट डेरा लाईआ। कलयुग प्रगट होणा अन्त, अख़ीरी वेस वटाईआ। जिसदा इक्को नाम इक्को मंत, इक्को करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत बणाए थोड़े संगत, सगला साथी आप हो जाईआ। झगड़ा पए मण्डल मण्डप, पुरी लोअ कुरलाईआ। होए दुहाई जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज सार कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप भुगताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं दस्सया फ़कीर सूफ़ी, सुफ़नयां विच समझाईआ। जगत परमात्मा नूं लभ्भणा विच्चों हरूफ़ी, बिना हरफ़ आरफ़ समझे कोए ना राईआ। भेव अभेद समझ पावे कोई ना सोझी, परदयां विच्चों परदा ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल धार रहिण नहीं देणी दूजी, एकँकार इक्को रंग रंगाईआ। ज़ात रहे ना मैं तूं दी, तूंही तूंही सारे गाईआ। खेल वेखणी बुत्त रूह दी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। कार करनी शब्दी गोबिन्द हूबहू दी, होका हक हक जणाईआ। वड्याई वेखणी साढे तिन्न करोड़ लूं लूं दी, गुरमुख लेखा रहिण कोए ना पाईआ। बन्दगी मुकणी रसना जेहवा बत्ती दन्द मूँह दी, अजपा जाप दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रमाना राणा इक समझाईआ। हुक्म कहे मैं सद्दे देंदा रिहा वारो वार, वारता जगत सुणाईआ। कलयुग अन्तिम आउणा कल कल्की अवतार, कलमा वेखे ख़लक खुदाईआ। अमाम अमामां दा सरदार, सदीआं दा मालक बेपरवाहीआ। जोती दा जाता होवे उज्यार, नूर नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा सांझा यार, परवरदिगार फेरा पाईआ। सचखण्ड

दवारा खोल्ह किवाड़, धाम इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। हुक्म संदेसा कहे गुर अवतार पैगम्बर खोल्ह के वेखो अक्ख, बिन अक्खरां दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत तक्को प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साख्यात नज़री आईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गाउँदी चार जुग दे जस, सिफ्तां वाले ढोले मात सुणाईआ। जिस दी महिमा गाउँदे आए सच, सति सति सति दृढ़ाईआ। जेहड़ा कदे हथ्थ ना आया विच्चों हड्ड मास नाड़ी रत्त, रतीआं वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस ने लख चुरासी जीव जंत बणाया पंज तत, विष्न ब्रह्मा शिव लए उपजाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां वाली हकीकत हक, हुक्मरान इक अख्वाईआ। घड़न भन्नृणहार सदा सदा अणथक, थकावट जगत मात ना कोए बणाईआ। सो सच दवारा खोल्ह के हट्ट, भगत सुहेले गुरमुख चेले सन्त सज्जण रिहा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म कहे जो रिहा दस्सदा, दहि दिशा हुक्म सुणाईआ। जिस दवारे रिहा वसदा, सचखण्ड सोभा पाईआ। जिस प्रेमी नाल रिहा हस्सदा, प्रीतम तक्कया बेपरवाहीआ। जिस दा खेल वेख्या जुग चौकड़ी रथ दा, रथवाही हो के सेव कमाईआ। सो वेस वटाए दया कमाए रूप प्रगटाए पुरख समरथ दा, समां समें विच्चों बदलाईआ। जो भगत सुहेले सद्दा, सन्तन रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के शाहरग दा, शहिनशाह आपणा घर दए समझाईआ। जित्थे इक्को दीपक जगदा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए काअबे वाले हज्ज दा, शिवदवाला मन्दिर मठ्ठ सीस ना कोए झुकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को सजदा, सजदयां दा लेखा दए मुकाईआ। नूर नुराना हो के दगदा, दग़ेबाज़ी दए गवाईआ। जो सब नूं घट घट भीतर हो के तक्कदा, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। ओह खेल करे जग सच दा, साचे दी साची सच वड्याईआ। सचखण्ड दवारा कहे मैं ओसे पुरख अकाल नाल वसदा, जो मेरे अंदर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरण दवारे सद्दा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कोई लेख ना जाणे अज्ज दा, कलकाती कर्म कांड ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रमान आपणा रिहा सुणाईआ। सुणो फ़रमाना हरि गोबिन्द, पुरख अकाल जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी बिन्द, मात पित ना कोए वड्याईआ। तुहाडा मालक गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेटे चिन्द, चिन्ता दए मिटाईआ। सो पुरख अबिनाशी घट घट वासी, निरगुण निरवैर निराकार सदा बख्शिंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जो अमृत धार देवे सागर सिन्ध, अतोट अतुट वरताईआ। जो मालक जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। की उस दी करो निन्द,

निंदया विच जगत लोकाईआ। जिस दी तार सितार समझे कोई ना किंग, मृदंग अनरंग आप सुणाईआ। जो लेखा जाणे सुरप्त इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे मेरी अन्तिम आ गई वारी, वारता पिछली देणी बदलाईआ। चौथे जुग दी कर खुआरी, खाह मखाह देणा मिटाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात अन्तिम जाणी हारी, जो हरि जू आपणा हुक्म सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखणी उजाड़ी, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। सब ने याद रखणी चौवी माघ दी दिहाढ़ी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छो मात आईआ। उठण लग्गी मौत लाड़ी, राए धर्म दवारे लए अंगड़ाईआ। मैं फिरना जंगल जूह पहाड़ीं, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रही कुँवारी, मैनूं जीवत अन्त ना कोए प्रनाईआ। मैं लख चुरासी विच्चों लभ्भण चली नारी, सदी चौधवीं फेरा पाईआ। मेरे सीस अगम्मी खारी, जिस दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हुक्म कहे मेरा आ गया अन्तिम वेला, वेले सिर दयां समझाईआ। अगले साल नाता तुट्टणा गुरू चेला, चेला गुरू सीस ना कोए निवाईआ। लाड़ी मौत घर घर चाढ़न आउणा तेला, सगन आपणा रही वखाईआ। पुरख अकाल ने करना खेल नवेला, निराकार आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चौवी माघ कहे मैं गया जाग, जागण वेला दयां दृढ़ाईआ। सृष्टी दा बुझण वाला चिराग़, इष्टी नूर ना कोए रुशनाईआ। अगे हो ना पकड़े कोई वाग, सहारा सच ना कोए जणाईआ। हँस बुद्धी होई काग, माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। दुरमति मैल ना धोवे कोए दाग़, पापां पुनीत पवित ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट पैणी भाज, भाण्डा भज्जे जगत लोकाईआ। माता पुत्त रहे ना सांझ, नार कन्त ना कोए हंढाहीआ। शहिनशाही ना रहे राज, रईयत दए दुहाईआ। किसे सिर नहीं रहिणा ताज, तख्तां वाले दए उलटाईआ। प्रभ ने आपणा करना काज, सचखण्ड दवारे हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे भाज, भज्जण वाहो दाहीआ। लोकमात किस नूं दईए इमदाद, नेड़े हो के अन्त छुडाईआ। सब नूं सांझी पुरख अकाल दी आ गई आवाज़, सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी जगत दी पढ़ी नमाज़, हुजरयां विच ना कोए सफ़ाईआ। राम नाम कोई ना बणया साक, सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल ना मन्नया सब ने बाप, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। अन्तिम ख़ाकी होणा ख़ाक, ख़ालक नज़र ना कोए टिकाईआ। आउणा जाणा रहे आण बाट, मात गर्भ फंद ना कोए कटाईआ। कोटां विच्चों थोड़यां मुकणी वाट, जो इक्को रहे मनाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत जन अंदरों बाहरों दिसण पाक, रूह बुत्त होई सफ़ाईआ। काया काअबा

सोही इक महिराब, महबूब इक्को नज़री आईआ। जिस दे उत्ते ना कोई तन ना पोशाक, ना कोई वस्त्र रिहा हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। माघ कहे मेरी किड्डी सोहणी आई दिहाढ़ी, दिवस नालों रैण वज्जी वधाईआ। अज्ज सगनां नाल उठण लग्गी मौत लाड़ी, आपणा घूँगट अक्ख खुल्हाईआ। मैं तेरी वेखणी चार यारी, याराने सारे देणे तुड़ाईआ। चार जुग मैं बणी रही बेएतबारी, अगे एतबार देणा जमाईआ। चार कुण्ट फेरदी जावां बहारी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मुल्ला शेखां रत्तड़ी कीती दाढ़ी, दाओ आपणा लैणा लगाईआ। अग्ग लगा के नाड़ी नाड़ी, अंग अंग देणा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। चौव्ही माघ कहे मेरा होण लग्गा वाधा, वधीआ हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल सब दा दादा, दयावान बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा गाउँदे रागा, नादां विच सुणाईआ। ओह करन वाला खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। गोपी काहन वाली मुक्कणी रासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दुनी हद्द बदल देवे पासा, सार पाशा आपणे हथ्थ वखाईआ। चौवी माघ कहे विष्न ब्रह्मा शिव सुणो सति, सति दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम सब नूं भुल्ली ब्रह्म मत, पारब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। मिल्या मेल ना कमलापति, कन्त कन्तूहल सेज ना कोए हंढाहीआ। एसे कारन कलयुग अन्तिम सके कोई ना रख, राखा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर भुल्लयां कीमत पए किसे ना कक्ख, कौडी हट्ट ना कोए विकाईआ। भावें मणका मणका मन दा नाम रहे रट्ट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सब दे बुरज मुनारे जाणे ढठ्ठ, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए चतुराईआ। मुस्लिम सुन्नी अगे करन लग्गे इक्ठ्ठ, महीने थोड़े बाकी नज़री आईआ। पुरख अकाल हुक्म देणा झट, कलमा कलमे विच्चों अल्हाईआ। दीन दुनी वज्जण वाली सट्ट, दीन मज़्हब रहे कुरलाईआ। हुक्म कहे मेरे उत्ते करयो कोई ना शक, मैं जुग जुग हुक्म रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। चव्ही माघ कहे मेरा लेखा कुझ कुझ, जुग चार सेव कमाईआ। भगत सुहेले उठावां जुग जुग, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। प्रभ दा दरस करावां लुक लुक, परदयां अंदरों परदा लाहीआ। नाम संदेसा देवां रुक रुक, हौली हौली जणाईआ। मनमुखां कोलों रुस्स रुस्स, पल्ला लवां छुडाईआ। गुरमुखां कोलों पुच्छ पुछ, पिछला लेखा दयां मुकाईआ। पुरख अकाल दे बणा के पुत्त पुत्त, पिता पूत दयां जुड़ाईआ। ओन्हां दा आवण जावण लख चुरासी लेखा जाए छुट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिगुर शब्द सुहेला फड़ के अगम्मी गुट्ट, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दए सफ़ाईआ। चव्ही माघ कहे मैं भगतां जोगा, जोगी जुगीशर गए

जणाईआ। मेरा नाम संदेसा सदा होका, हुक्म बेपरवाहीआ। डंका वजावां चौदां लोका, चौदां तबक शनवाईआ। गुरमुखां देवां अगम्मी मौजा, मजलस प्रभ दे नाल बणाईआ। नव नौ चार पिच्छो मिल्या मौका, मुकम्मल परदा दयां उठाईआ। गुरमुखो तुहाडे नाल होवे कदे ना धोखा, सच सच सच समझाईआ। तुहाडा मार्ग दस्सया सौखा, लिखण पढ़न दी लोड़ रही ना राईआ। तुहाडे चरणां हेठां फिरे मुक्ती मोखा, मुफ्त सेव कमाईआ। साचे नाम दी लगदी रहे चोटा, चोटी चढ़ के करे शनवाईआ। जन भगत सच दवारे जगदी रहे जोता, दीवा बाती ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे हुक्म पार लँघाईआ। चव्ही माघ कहे मैं जागरत होया, दो जहानां वज्जी वधाईआ। भगत सुहेला कदे ना सोया, सुत्यां लवां उठाईआ। नाम निधान लै के आया धुर दा ढोआ, सोहँ सो झोली पाईआ। बिन सतिगुर नानक अवर ना जाणे कोआ, भरमें भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जां गोबिन्द जाणे नवां नरोआ, जो अन्तिम गया जणाईआ। आत्म परमात्म प्रभ ने आपणा बीज बोआ, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। आपे आत्म आपे परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपे होआ, पंज तत काया माटी रिहा हंढाहीआ। सच प्रकाश निर्मल जोत करे लोआ, निज लोचन कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

२६५ आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे एहो हुक्म निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आदि २६५

१६ जुगादि जुग चौकड़ी वरते विच संसार, दो जहान सीस झुकाईआ। लिख लिख लेखा गए गुरू अवतार, भविख्तां विच जणाईआ। १६

कलयुग अन्तिम निहकलंक लए अवतार, जिस दा पिता ना कोई माईआ। महाबली उतरे आपणी धार, नूरो नूर कर रुशनाईआ। पीर पैगम्बरां दा सरदार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम पावे सार, महासार्थी वेस वटाईआ। करनी दा करता हो के ख़बरदार, बेख़बरां दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमान दए दृढ़ाईआ। चव्ही माघ कहे मैं लाहया परदा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल जिस मन्दिर अंदर वड़दा, ओहो तन माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर ओहो बणदा, जित्थे निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओहो जणदा, जिसदा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बेड़ा ओहो बन्न्हदा, खेवट खेटा शाह पातशाह इक अख्वाईआ। उह लेखा जाणे काची माटी तन दा, तत्व तत खोज खुजाईआ। उह झगड़ा मुकावे तारा चन्द दा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। जो हुक्म संदेशे घल्लदा, सुनेहड़े सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। चौवी माघ कहे मैं जुग चौकड़ी आया चलदा, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। सच सुनेहड़े आया घल्लदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिखाईआ। भेव दस्सदा आया जल थल दा, परदा महीअल आप

उठाईआ। सच दवारा आया मल्लदा, प्रभ चरण मिली सरनाईआ। खेल वेखदा रिहा घड़ी पल दा, पलक पलक विच्चों बदलाईआ। भगतां दे अंदर रिहा रलदा, बिन तत वजूद सोभा पाईआ। प्रेम मुहब्बत अंदर रिहा फलदा, फुल्ल फुलवाड़ी इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग रिहा बदलाईआ। चौवी माघ कहे मेरी होण वाली बदली, बदला चुक्के सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे पुज्जे मज़लो मज़ली, मंज़ल आपणी पूर कराईआ। पुरख अकाल बण के अदली, अदालत इक्को इक जणाईआ। जिस दी वेल अगे वध गई, वाधा भगतां विच बणाईआ। जो करया सो आपणी यद लई, याददाशत पिछली रिहा दुहराईआ। गोबिन्द बिन अक्खरां उह किताब कढ्ढ लई, जिसदी सत्तां सतरां विच लिखाईआ। अगे पुरख अकाल नालों रहिणा अड्ड नहीं, जोत शब्द होवे कुड़माईआ। सच प्रीती इक्को बज्झ गई, डोरी तन्द ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकर्मी आपणा हुक्म वरताईआ। चवी माघ कहे मैं वेख्या चार कुण्ट, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। थर थर कम्ब रिहा बैकुण्ठ, स्वर्ग रिहा कुरलाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े दिसे मुख, जो भगत भगवन्त विच समाईआ। इक्को रख के ओट, ओड़क इक्को रहे मनाईआ। तन नगारे नाम दी ला के चोट, पंजां रहे मिटाईआ। ममता दा कढ्ढ के खोट, हंगता दूर कराईआ। सच मिलण दी सोच, इक्को इक पढ़ाईआ। दर्शन कर के नेत्र लोच, लोचण रंग चढ़ाईआ। जन्म जन्म दी पूरी होवे खोज, अगे लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मिल के मानण मौज, मौजूदा प्रभ दा दर्शन पाईआ। ना हरख़ रिहा ना सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। भावें ताअने देवण लोक, निंदयां विच लोकाईआ। फेर वी तूं मेरा मैं तेरा सोहँ गांदे सलोक, सुल्हकुल इक्को रहे मनाईआ। जिस दा रूप निर्मल जोत, नूर नूर विच रुशनाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़्हब ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म प्रगटाईआ। हुक्म कहे मैं हुक्मी धन्दा, आदि जुगादि जणाईआ। गुरमुख लभ्भां धुर दा बन्दा, बन्दगी इक्को इक समझाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी वेख के कन्ढ्ढा, कंडयां विच्चों बाहर कढाहीआ। परदा लाह के ब्रह्मण्डां, मण्डल मण्डप दिता बदलाईआ। ओस गोबिन्द नूं मिलो जिस दा शब्द अगम्मी खण्डा, लुहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। लख चुरासी मारदयां कदे पवे ना दन्दा, साण उत्ते ना कोए रगड़ाईआ। धोणा पए ना विच जल गंगा, नीर दी धार ना कोए वखाईआ। बिना म्यानों कदे ना होवे नंगा, जग नेत्र दरस कोए ना पाईआ। ओस गोबिन्द दा वेखो कंघा, जो दुरमति मैल रिहा धवाईआ। नाल नेज़े दा सोहणा डण्डा, जो ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा हिलाईआ। साची ढाल दी इक्को वण्डा, जो पापां तों परे लए कराईआ। उह शस्त्र कदे ना होवे गंदा, रगड़ दे

नाल रगड़ ना कोए रगड़ाईआ। उहनूं खोह सके ना कोई बन्दा, बन्दीख़ाने ना कोए छुपाईआ। उह दो जहानां आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सदा करदा रहे दंगा, डंका सच वजाईआ। उह परखणहारा मंदा चंगा, लख चुरासी वेख वखाईआ। बिना नेत्रां कदी ना होवे अन्धा, वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान अक्ख खुल्हाईआ। माघ कहे मैं वेखणा उह महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। जिस दी हद्द ना होवे कदे महिदूद, वण्डां विच ना कोए वण्डाईआ। अर्शां तों उत्ते जिस दा उच्च अरूज, शहिनशाह अख्वाईआ। ना तन वजूद, कलबूत ना कोई प्रगटाईआ। जो मंज़ल वसे इक मकसूद, महिफ़ल सच समझाईआ। जित्थे चढ़ के पढ़ना पए ना हज़ारा दरूद, हज़रतां दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए प्रगटाईआ। हुक्म कहे मैं वेखे शाह हकीर, नव सत्त खोज खुजाईआ। मैं तक्कणे जगत फ़कीर, जो फ़िकरयां विच ढोले गाईआ। मैं वेखणे मात अमीर, जो ममता रहे हंढाहीआ। मैं वेखणे काअब्यां वाले पीर, जो पैर रहे रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। हुक्म कहे मैं हुक्मी आया, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। मैं वेखणी त्रैगुण जगत माया, ममता मोह खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया वेखणी छाया, जो जगत शहिनशाह रहे लगाईआ। मैं चार वरन अठारां बरन वेखणा जो दिवस रैण रिहा कुरलाया, कूक कूक कूक सुणाईआ। मैं चौवी माघ वेखणा जो लोकमात आपणा नाउँ प्रगटाया, वदी सुदी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गृह नछत्र ना संग रलाया, घड़ी पल ना कोए जणाईआ। इक्को एक सीस झुकाया, जगदीश मिली शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा नाम दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होवो सवाधान, सांझा यार हुक्म सुणाईआ। सारे सुणो इक कलाम, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। इक्को इष्ट कर दो जहान, दृष्ट सच खुल्हाईआ। प्रभ चरण बणे महिमान, निरगुण अगे निरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा माण, निशान इक्को रिहा वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तक्को निशाना, निशा सब दी दए कराईआ। जिस दा लेखा आत्म परमात्म विष्नूं भगवाना, पारब्रह्म प्रभ फेरा पाईआ। जो एथे ओथे दो जहान होवे प्रधाना, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ हुक्म सुणाईआ। जिस दा राग शब्द नाद धुन कलामा, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस दा वजणा सच दमामा, डंका इक्को इक सुणाईआ। जो कल कल्की पहर के बाणा, बावन लेखा पूर कराईआ। जो बण के वड अमामा, ईसा मूसा मुहम्मद लेखा दए समझाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी शामा, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जन भगतां बख्शे उह माणा, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

उपर ज़िमीं असमाना, आशा सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी पूरब आसा, आहिस्ता आहिस्ता सारे रहे जणाईआ। जुग चौकड़ी प्रभू तेरा दे के गए भरवासा, भाग इक्को इक समझाईआ। लेखा लिख के गए ख़ुलासा, ख़ालस तेरा रंग रंगाईआ। दस्स के गए जोग अभ्यासा, नाम नग़मा इक सुणाईआ। निरगुण जोत तेरी अगम्मी शिनाखा, तत्व तत ना कोए रखाईआ। तेरा गृह पुरख अबिनाशा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित आपणे नाम दी दस्स के भाषा, भाख्या दिती जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दस्सदा रिहा बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। अंदरे अंदर दृष्टी खोल्ही, ख़ालक ख़लक दिती वड्याईआ। मनुआ मन ना पावे रौली, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग मौली, मौला आपणा परदा आप उठाईआ। कोई करे ना बौहड़ी बौहड़ी, कूक कूक ना कोए सुणाईआ। मंज़ल नज़र ना आए लंमी चौड़ी, सफ़री सफ़र ना कोए चुकाईआ। कोई समझया राग ना गउड़ी, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जगत वासना हो गई बउरी, बावली होई लोकाईआ। सतिगुर अक्खर कोई ना जाणे धुरी, धुरां दा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। ज्ञान ध्यान विच हरि जोत किसे ना औड़ी, बिन अक्खां दरस कोए ना पाईआ। समझ आई ना सलोक पौड़ी, छत्ती राग रहे कुरलाईआ। मानस देही किसे ना सौरी, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मंत्र सुणे कोए ना फौरी, फ़ुरना मन ना कोए चुकाईआ। जन भगतां जुग जुग प्रभ आपणे नाल जावे तोरी, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। सृष्टी नालों दरस देवे चोरी, कोल बैठयां नज़र किसे ना आईआ। एसे कारन किहा दरस दे जा भोरी, काया भोरे अंदर फेरा पाईआ। प्रीती जुड़ जाए तोरी मोरी, मुहरे हो के कर रुशनाईआ। मैं तेरी सदा उडीक रखी लोड़ी, लोड़ींदा साजण नज़री आईआ। प्रभू बिना भगत भगवान दे निरगुण सरगुण कदे ना सोंहदी जोड़ी, नार कन्त रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग अन्त मुनयाद रह गई थोड़ी, सदीआं दे साल सालां दे महीने महीनयां दे दिन देण गवाहीआ। कलयुग जीवां करना बौहड़ी बौहड़ी, भईआ बेबा मेल ना कोए मिलाईआ। चुल्हे चढ़न वाली तौड़ी, हाण्डी सब दी देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर शब्दी बण के घोरी, घोर अन्धेरे विच वेखे लोकाईआ। घोर अन्धेरा कहे पुरख अकाल गया छुप्प, सदी चौधवीं नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां मिल्या उह कर गए चुप्प, नाता जगत वाला तुड़ाईआ। इक्को भगवान दे बण गए पुत्त, मात पिता दी याद ना कोए सताईआ। गोबिन्द दे बण के सुत, गोदी सौं के ख़ुशी मनाईआ। जोत अकालण दी सफ़ल करके कुक्ख, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। उज्जल करके मुख, दुरमति मैल धुआईआ। दु:ख विच रैहन्दयां मानण सुख, सुख विच मिल्या बेपरवाहीआ। ओह बाहरों तत्तां

वाले मनुक्ख, अंदर जलवा नूर खुदाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। जन भगतां मौली रुत, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। भावें दुनिया कहे कुछ, उह इक्को दा ढोला रहे सुणाईआ। अगे रहिण नहीं देणा परदा ओहला लुक, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप डंका देणा वजाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड निवासी कह के रहे झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सो पुरख अकाल आपणी धारों आया उठ, निरवैर हो के फेरा पाईआ। जन भगतां उत्ते रिहा तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। शब्द अगम्मी शेर हो के रिहा बुक्क, भबक इक्को नाम लगाईआ। जिन्हां ने सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गा लई तुक, विष्न ब्रह्मा शिव अगे सीस निवाईआ। उह सचखण्ड दवारे जाण तों कदे ना जाण रुक, गुर अवतार सारे होण सहाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पंडत पांधे मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी भावें सारे करन दु:ख, गुरमुख गुर गुर विच समाईआ। उन्हां मात गर्भ फेर लटकणा नहीं उलटा रुक्ख, जमां वाली ना कोए सज़ाईआ। जिस ने भेजया ओस ने गोदी लैणा चुक्क, चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां भावें लोकमात विच खाण नूं मिले ना रजवां टुक्क, अगे भुक्ख्यां दी भुक्ख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। चौवी माघ कहे मैं पावण आया सगन, सगल सृष्टी वेख वखाईआ। जन भगतो तुहानूं इक्को दी लग्गे लग्न, लग मातर दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाउणा भजन, जो भाण्डा भरम भन्नाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर एथे ओथे दो जहानां बणे सज्जण, सगला संग निभाईआ। चरण प्रीती विच रखे मग्न, माधो आपणा रंग चढ़ाईआ। तुहाडा पंज तत लेखे लाए ख़ाकी बदन, बदला पिछला दए चुकाईआ। शहिनशाही सम्मत तों तुसीं हुण अगे लग्गे वधण, पिछला पैंडा मुकाईआ। दीपक हो के लग्गे जगण, चार वरन रुशनाईआ। सच दवारे लग्गे वसण, हरि सरन सरनाईआ। गीत गोबिन्द गा के लग्गे हस्सण, हस्ती विच्चों हस्ती लई बदलाईआ। दर्शन करके नेत्र लोचण अक्खण, आख़र मेला मिल्या सहिज सुभाईआ। लख चुरासी विच्चों वरोल के मक्खण, नाम मधाणे लए हिलाईआ। जिन्हां ने पुरख अकाल दा अन्त अख़ीरी मन्नया बचन, बच्चयां वांग गोद उठाईआ। सोहणा रूप हीरे बण गए कंचन, कच्चयां तों पक्के रिहा बणाईआ। तुहाडा मन रहिण ना देवे चंचल, चित वित ठगोरी कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की करे परवरदिगार, वेखो लोकमात अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे ओह सांझा यार, सगला हुक्म वरताईआ। मूसा कहे मैं करां की इज़हार, लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। ईसा कहे मैं दे के आया इशतयार, हुक्मे हुक्मे हुक्मे अंदर सुणाईआ। मेरा बाप परवरदिगार, प्रताप

इक जणाईआ। गुस्ताख़ वेखे विच संसार, मुशताक मुहब्बत विच रलाईआ। नाल इतफ़ाक दए दीदार, साख्यात कर रुशनाईआ। शाह नवाब बण दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेखा कहे मैं वेखी पिछली लिख्त, बिन अक्खां नज़री आईआ। जगत नूं थोड़ा दस्सया भविख्त, इशारे इशारे नाल दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दी बन्दन विच फ़रिसत, यके बाद दीगरे सेव कमाईआ। मन्नदे गए इष्ट, हक हकीकत जगत जणाईआ। कुछ परदा रख्या राम वशिष्ट, उंगलां पंज चुकाईआ। पुरख अकाल भगतां नाल भोगणा गृहस्त, आत्म परमात्म सेज हंढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी नष्ट, निसचे नाल फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा कहे मैनूं कोई ना लिखदा, कातब नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले नाता जुड़या गोबिन्द नाल सिख दा, शब्द इशारे नाल गया समझाईआ। बिन नेत्र नैणां नूर नुराना दिसदा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओस वेले नज़ारा तक्कया एकँकार इक दा, इक्को वज्जी वधाईआ। ना कोई हारदा ते ना कोई जित्तदा, ना कोई करे लड़ाईआ। घर सोहे पुरख अकाल अगम्मे पित दा, पतिपरमेश्वर डेरा लाईआ। अवल्लड़ा धाम सदा अनडिठ दा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। कुछ लेखा ओस निराली चिट दा, जो चिट्ठी गोबिन्द बिन अक्खरां कोल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता खोज खुजाईआ। सचखण्ड दवारा कहे गुर अवतार पैगम्बर मेरे वसनीक, जुग चौकड़ी बह बह ढोले गाईआ। बिन अक्खरां सारे वेखदे रहे तरीक, तारीख रहे समझाईआ। हिरस हवस विच करदे रहे उडीक, आशा आसा विच बदलाईआ। तेरे विच सच तौफ़ीक, दर ठांडे सीस निवाईआ। तूं सज्जण साहिब रफ़ीक, इक्को बेपरवाहीआ। तेरे उत्ते उम्मीद, अमलां विच सुणाईआ। कलमे तेरी तौहीद, अक्खर तेरी वड्याईआ। फ़िदा होए शहीद, शहादत गए भुगताईआ। मंग के दरस दीद, चन्द नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं सब ने आपणी कढ्ढणी रसीद, जो पुरख अकाल जुग जुग हथ्थ फड़ाईआ। हुक्म नाल करी ताईद, भय विच समझाईआ। जिस वेले दीन मज़्हब दी मेटणी लीक, लायक सारे लैणे बणाईआ। लोकमात बिरहों विछोड़े दी वज्जणी चीक, तोबा तोबा सुणाईआ। तुसां मेरे दर तों मंगणी इक्को भीख, बण भिखारी झोली डाहीआ। विच्चों गोबिन्द करे तस्दीक, शहादत दए भुगताईआ। प्रभू चार जुग दी साडी गई काबलीअत, काअबे कलयुग रहे कुरलाईआ। इक्को तेरे हथ्थ अहमीअत, आमद विच हो सहाईआ। सब दी बदल दे तबीअत, तमअ दे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्में अंदर सर्ब भवाईआ। हुक्म कहे मैनूं याद आई आदि शक्ति भवानी, जो भावनी विच फेरा पाईआ। सिँघ पीठ दिती निशानी,

निशाना इक जणाईआ। नेत्र तक्क उपर असमानी, इस्म इक्को इक वखाईआ। जिस दे पिच्छे सब ने देणी कुरबानी, गुर अवतार पैगम्बर बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस दी धार प्रगट होणी सरगुण रूप इन्सानी, जिस्मानी कार कमाईआ। ओस दी खेल होणी रूहानी, रूपोश हो के डेरा लाईआ। जिस ने वेखणी जूह बेगानी, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। जिस दी आदि जुगादि इक्को जेही रहे जवानी, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां जिस दी गाणी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी आपणा राग अलाईआ। जिस दा निझर रस अमृत पीणा ठंडा पाणी, सरोवर इक्को इक सुहाईआ। जो दाता दानी होणा दो जहानी, अतोट अतुट आप वरताईआ। जो नाम संदेशे दए पैग़ामी, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। जिस दे हुक्में अंदर खेले खेल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वज्जे वधाईआ। जिस दुनिया करनी फ़ानी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। ओह कलयुग अन्त सदी चौधवीं लोकमात रहिण ना देवे बेईमानी, बेवा वेखे जगत लोकाईआ। झगड़ा मुका के अञ्जील कुरानी, इक्को नग़मा दए सुणाईआ। जन भगतां उपर करे मेहरवानी, महबूब हो के आपणा दरस कराईआ। अगे मंज़ल दस्से आसानी, एहसान सिर ना कोए उठाईआ। पन्ध मुका के आवण जाणी, जानशीन आपणे लए बणाईआ। लेखा मुका के तीर कमानी, चिल्ला इक्को दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कांड दए गवाईआ। कर्म कांड कहे साडा कोई ना रहिणा झगड़ा, प्रकृती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाल मार्ग दस्सणा सगला, सच्चा राह वखाईआ। गुरमुखो भउणा पए ना विच जंगलां, टिल्ले पर्बत ना कोए जाईआ। कोई दवारा पए ना मंगणा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। कोई तट किनारा पए ना लँघणा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ना कोए वड्याईआ। प्रभ दवारयों पए ना मंगणा, सब कुछ आपे झोली पाईआ। फिरना पए ना पैरीं नंगणा, तन भबूत ना कोए रमाईआ। छुहाउणा पए ना कोए कंगणा, दाढ़ी मुच्छ ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। चवी माघ कहे मैं वेखे भगत मीत, मित्र प्यारे नज़री आईआ। जो पन्ध मुका के मन्दिर मसीत, मिशन आपणा रहे बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के धुर दा गीत, गोबिन्द रहे सुणाईआ। पारब्रह्म तेरी अचरज वेखी रीत, कलयुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। इक्को नाम कर बख्शीश, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। इक्को कलमा दस्स हदीस, हक करी पढ़ाईआ। तेरी रखीए सदा उडीक, नित लोचन राह तकाईआ। चवी माघ कहे उह सुहञ्जणी आ गई तारीक, तरीका पिछला दए बदलाईआ। जन भगतो तुहाडी आसा पूरी होवे उम्मीद, निराशा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ उठाईआ। सिर हथ्थ रखे प्रभ स्वामी, समां समें विच्चों

बदलाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। साची दस्स के अगम्मी बाणी, अगम्म करे पढ़ाईआ। अमृत दे के ठंडा पाणी, अग्नी तत बुझाईआ। आत्म बणा के साची राणी, सचखण्ड दवारे दए टिकाईआ। जित्थे इक्को मिले हाणी, दूजा नज़र ना कोए टिकाईआ। झगड़ा मुक जाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज ना कोए भवाईआ। तुहाडा मिलणा होया आसानी, असल रूप दिता वखाईआ। भावें कलम नाल लिखो भावें नाल कानी, भावें शाही दए गवाहीआ। गुरमुखां उत्ते होई धुरों मेहरबानी, लोकमात ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भाण्डा भरम कहे मैं सतिगुर बिना ना भज्जदा, भय भउ ना कोए चुकाईआ। सुभाग दिहाढ़ा होया अज्ज दा, वज्जी सच वधाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला सज्जदा, दर ठांडे सोभा पाईआ। नाम प्याला पीता मध दा, खुमारी इक चढ़ाईआ। झगड़ा मुक्कया नौ दवारे हद्द दा, सुखमन टेडी बंक ना कोए सुहाईआ। ईड़ा पिंगल कोए ना डक्कदा, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को दीपक जगदा, नूर जोत होवे रुशनाईआ। नाद वज्जे अनहद नद दा, आत्मक धुन शनवाईआ। हँस रूप बणया गुरमुख कग्ग दा, कागों हँस बणाईआ। दर्शन मिल्या उपर शाहरग दा, घर

२७२ १९ साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां जुग जुग प्रभू लभ्भदा, भगत सुहेला बाहर खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप २७२ १९

हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। सरन कहे मैं आ गई दवारे, थक्की मांदी फेरा पाईआ। हरिजन वेखणे भगत प्यारे, प्रेमी प्रीतम खोज खुजाईआ। जेहड़े मन्नदे इक्को इष्ट निरँकारे, दृष्ट रहे भुलाईआ। मंज़ल चढ़े ओस चुबारे, जिथ्थों फेर ना कोए कढाहीआ। मिल्या मीत सच मुरारे, मिल के मित्र ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा हक नज़ारे हकीकत आपणी वेख वखाईआ। चौवी माघ कहे मैं होया ख़ुश, ख़ुशहाली दयां जणाईआ। सन्त सुहेले वेखे अनादी सुत, जो सुत्ते प्रभ ने लए उठाईआ। कलयुग अन्तिम ओहनां मौली रुत, जो मौला विच समाईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के रिहा पुछ, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए रुस, अन्त अख़ीरी लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। मिली वड्याई भगत जन, धन्न जणेंदी माईआ। भाग लग्गा काया माटी तन, तन्द सतार हिलाईआ। कूड़ वासना बध्धा मन, ममता मोह चुकाईआ। जोती नूर चाढ़ के चन्न, अन्ध अन्धेर दिता गवाईआ। जो सतिगुर शब्द सुणदे सरवण आपणे कन्न, करनी दा मालक करता होए सहाईआ। कर वसेरा बिन छप्परी छन्न, सच दवारे दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक वड्याईआ। वड्याई कहे मैं गुरमुख वेखे वड्डे, सोहणे सुच्चजे नज़री आईआ। जो

आत्म परमात्म प्रीती बज्झे, तन्द सतार ना कोए तुड़ाईआ। प्रकाश हो के दीपक जगे, जागरत जोत रुशनाईआ। लोकमात जन्म मिले अजे, वाधा होर दए वखाईआ। अबिनाशी करता परदा कज्जे, श्री भगवान होए सहाईआ। जो प्रेम प्यार प्रीती अंदर दूर नेड़यों आए भज्जे, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। हरि संगत विच बह के सजे, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। उन्हां दे आवण जावण लेखे लग्गे, ख़ाली हत्थ ना कोए मुड़ाईआ। सब नूं दर्शन होए उपर शाहरगे, रातीं सुत्यां लए उठाईआ। प्रेम प्यार दे देवे मज़े, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। चौवी माघ कहे मैं गावां धुर दा ढोला, बिन ढोलक छैणे राग अलाहीआ। सतिगुर शब्द बणया जिन्हां विचोला, दो जहानां पार कराईआ। परदा अंदरों चुक्कया ओहला, अन्धेर रिहा ना राईआ। घर सज्जण मिल्या मौला, मलकुलमौत ना दए सज़ाईआ। उलटा होया नाभ कँवला, अमृत झिरना रिहा झिराईआ। नूरी नज़री आया अवल्ला, नूरो नूर रुशनाईआ। जन भगत जगत वास्ते सदा बणया रहे कमला, कमला कहे लोकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखणहारा सब दे अमला, कामल मुर्शद फेरा पाईआ। जन भगतो तुसां केहड़ा नहावण जाणा उपर जमना, गोदावरी सुरस्ती गंगा फेरा पाईआ। तीर्थां उपर मूल ना भवणा, अठ्ठ सठ्ठ ना खोज खुजाईआ। जंगलां विच मूल ना लभ्भणा, टिल्ले पर्बत ना पन्ध मुकाईआ। तुहाडे अंदर दीपक हो के जगणा, गृह गृह होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को रिहा सुणाईआ। हुक्म कहे मेरी तालीम, तुलबे गुरमुख नज़री आईआ। सबक दस्सां इक अज़ीम, आहला अदने नाल मिलाईआ। जो कोई समझे डण्डा मीम, मात पिता होवे जुदाईआ। जे कोई अक्ख खोल्ह के वेखे सीन, समां दए गवाहीआ। जे मुर्शद उत्ते करे यकीन, यका यक आपणा नूर करे रुशनाईआ। साची सिख्या विच करे मस्कीन, मसला इक्को इक समझाईआ। नेत्र रहे ना कोए नाबीन, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। बिना सजदिउँ कहे आमीन, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। एह मार्ग धार जगत महीन, महिरम नज़र कोए ना आईआ। बिना शब्द तों प्रभ दा नहीं कोई जानशीन, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। सतिगुर रूप ना नर ते ना मदीन, नारी पुरख नज़र कोए ना आईआ। ना चिन्ता ना ग़मगीन, खुशी ग़मी ना कोए रखाईआ। दर आयां सब नूं करे तसलीम, बिन तसबी माला पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नबीआं दा नबी रसूलां दा रसूल, रसम आपणी दए समझाईआ। हुक्म कहे मैं दस्सणी आपणी अगम्मी रसम, रस्ता इक समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खाधी कसम, सुगंद नाल वड्याईआ। गोबिन्द वड्याई दिती आपणी भस्म, ख़ाकी ख़ाक ना कोए उठाईआ। नाता झूठा छड्डके जिस्म, ममता दिती मुकाईआ। पुरख अकाल दा इक्को इस्म, इशारे नाल समझाईआ। दीद वेखो चशम,

नूर नूर रुशनाईआ। अगे लेखा कुछ होण वाला विच पच्छिम, पश्चाताप करे लोकाईआ। लाड़ी मौत लग्गे हस्सण, हस्तीआं देणीआं मिटाईआ। पंज चेत नूं मेरा लोकमात होणा जशन, खुशीआं विच सालाहीआ। जिस वेले दिल्ली दरबारे मेरा मेरा लग्गे रखण, मेरी मेरी देणी उलटाईआ। शाह सुल्तान सुख नाल नहीं देणे वस्सण, वसदे देणे हिलाईआ। भज्जयां नहीं देणे भज्जण, भवजल विच लोकाईआ। सज्जणां दे बणे रहिण नहीं देणे सज्जण, मित्रां नालों मित्र तुड़ाईआ। हौली हौली लगा के अग्न, चार कुण्ट खेह देणी उडाईआ। कुछ झगड़ा पैणा अदन, अध्धयां नूं लए जगाईआ। फेर अगे जाए सद्दण, सुत्यां दए उठाईआ। उत्तर डंके फेर वज्जण, डौरू नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा खेल दए प्रगटाईआ। खेल कहे मैं प्रगट होणा, होणी नाल मिलाईआ। घर घर सब नूं पए रोणा, खुशीआं रंग ना कोए रंगाईआ। दर दर सब नूं पए भाउणा, बिस्तर सेज ना कोए हंढाहीआ। पुरख अकाल हुक्म वरताउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जन भगतां इक्को ढोला गाउणा, गा गा खुशी वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम ध्याउणा, ध्यान इके विच रखाईआ। चौवी माघ कहे मैं मज़ा सच चखाउणा, अमृत धार वहाईआ। जन भगत दवारा इक सुहाउणा, जित्थे वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार सांझा यार नर निरँकार आपणा हुक्म आप वरताउणा, वारता पिछली वेख वखाईआ।

२७४
१६

✪ २५ माघ शहिनशाही सम्मत १ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

धुर हुक्म कहे मैं संदेसा देवां सच्चा नामा, नाउँ निरँकार इक जणाईआ। मुकामे हक सुणावां सच पैग़ामा, कलमा अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। अबिनाशी करते पहरया जामा, निरवैर निराकार निरँकार वेस वटाईआ। जिस दा दो जहानां वज्जणा इक दमामा, दामनगीर होवे लोकाईआ। जिस नूं सीस निवाउँदे कृष्ना रामा, आदि जुगादि निउँ निउँ लागण पाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद करन सलामा, सीस सजदयां विच झुकाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द करे प्रणामा, नमस्ते कह के धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। जिस दा नित नवित अवल्लड़ा बाणा, पंज तत वेखे थाउँ थाँईंआ। जो सति पुरख निरँजण गुण निधाना, गहर गंभीर वड्डी वड्याईआ। जिस दा सति धर्म सच निशाना, नव नौ चार आप खुल्हाईआ। जिस दा समझ ना सके कोई पैमाना, पैमाइश आपणे हथ्थ रखाईआ। जो देवणहारा निरगुण सरगुण धुर दा दाना, वस्त अमोलक काया

गोलक झोली पाईआ। जो योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, बलधारी नज़री आईआ। जिस दा सचखण्ड दवारा इक्को नगर ग्रामा, मुकामे हक डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं देवण आया सच दलील, दहि दिशा आप जणाईआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी लख चुरासी इक वकील, वाक्य सब दा खोज खुजाईआ। दूसर अवर ना कोए अपील, हकीकत हक ना कोए दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त सब दी करन आया तातील, कूड़ी तमअ वेख वखाईआ। भगत सुहेले वेखे जगत मस्कीन, लख चुरासी परदा लाहीआ। हुक्मे अंदर करे तलकीन, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। अगे दीन मज़्हब ज़ात पात रहिण नहीं देणी कोई तकसीम, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कुदरत दा कादर इक रहीम, रहमत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। हुक्म कहे नाम सुनेहड़ा देवां सद्दा, सद सद मात सुणाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म फिरे भज्जा, भजन बन्दगी इक दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नूर समझाए इक्को सच्चा, ज़हूर ज़ाहर करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ रहे ना कच्चा, पुरख अबिनाशी डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा उपजे बच्चा, पुरख अकाल गोदी इक सुहाईआ। जो आत्म परमात्म संदेसा देवे पता, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। मन वासना करे हता, हत्या कूड़ी मेटे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कादर कुदरत वेख वखाईआ। हुक्म कहे मैं बणना नाम वणजारा, वाजा अनहद राग सुणाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हणा ताला, ताअलीम इक्को देणी पढ़ाईआ। सच खुदाए दस्सणा आहला, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। लेखा मुके जोत ज्वाला, जागरत नूर होवे रुशनाईआ। सजदा होवे हक तुआला, तालब तुलबा बणे लोकाईआ। करे खेल पुरख अकाला, अकल कलधारी कार कमाईआ। सच प्रगटाए सच्ची धर्मसाला, चार वरन अठारां बरन सरनाईआ। लेखे लाए सब दी घाला, जो दिवस रैण रहे ध्याईआ। नाम पाए अगम्मी माला, मन का मणका दए भवाईआ। गुरमुख वेखे सच्चा बाला, बाली बुध लए उठाईआ। कलयुग अन्धेरा मेटे काला, सतिजुग सति करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, तत्व तत करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। धुर हुक्म कहे मैं बणना रंग रंगीला, रंगत आपणी देणी वखाईआ। भगत बणाउणे सच कबीला, कामल मुर्शद मेल मिलाईआ। मार्ग दस्सणा नवां नवीना, नाम इक्को इक पढ़ाईआ। जो सब नूं करना पए तसलीमा, तसबी माला ना कोए लटकाईआ। धाम वखाउणा इक अज़ीमा, आलीशान दए वड्याईआ। खेल वेखणा उत्ते ज़मीना, ज़ामनी भरनी सर्ब लोकाईआ। राह तक्कदा चेत महीना, चातर सारे देण दुहाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख लभ्भया आप नगीना, कीमत करता आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे मक्का मदीना, मकबरयां अंदर फोल फुलाईआ। हुक्म कहे मैं देवण आया इतलाह, सच संदेसा सर्ब जणाईआ। करना खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं मंनयां नूर खुदा, खुदी वेखे थाउँ थाँईंआ। जिस दे नालों होए जुदा, पल्लू रिहा छुडाईआ। उस ने मार्ग लाउणा सिधा, साधक सिध देण दुहाईआ। झगड़ा मुकाउणा नौ निधा, अठारां सिधां ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म मिलण दी दरसणी बिधा, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करके खेल वेख वखाईआ। धुर हुक्म कहे मैं दरसणहारा सच सलाह, सही सलामत रिहा जणाईआ। पुरख अबिनाशी इक मलाह, गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं सीस झुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणे हक मलाह, नईआ नौका पार लँघाईआ। रहबर हो के दस्से राह, रास्ता बरास्ता इक्को दए समझाईआ। कोट जन्म दे कटे गुनाह, मेहर नज़र नाल तराईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक देवे ला, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। दो जहानां बख्शे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। एथे ओथे बणे पिता माँ, बालक गुरमुख गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होणहार सहाईआ। हुक्म कहे मैं दस्सया नाम इलाही अल्ला, आलम उल्मा कर पढ़ाईआ। दरगाह साची सच महल्ला, हुक्मे हक नूर रुशनाईआ। कलमा कायनात घल्ला, अनायत कीती धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म फड़ के पल्ला, पलक पलक विच्चों बदलाईआ। दर दवारा इक्को मल्ला, नव नौ नाता दिता तुड़ाईआ। घर वखाया निहचल धाम अटला, जित्थे इक्को नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरि नाम कहे मैं वसां हर हर हिरदे, घट घट आपणा डेरा लाईआ। कोटन कोटि मैनूं लभ्भदे फिरदे, भज्जण वाहो दाहीआ। जो भगत विछुन्ने चिर दे, कलयुग सहिजे रिहा मिलाईआ। नाते जोड़ के धुर दे पिर दे, पतिपरमेश्वर दयां मिलाईआ। नज़ारे वखा के घर थिर दे, सचखण्ड साचे दयां बहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गेड़े वेखो गिड़दे, लख चुरासी रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हुक्म कहे मैं जुग जुग आवां जग, नित नित वेस वटाईआ। लेखा जाणा उपर शाह रग, पर्दा परदा परदयां विच्चों चुकाईआ। धुर दा करावां अगम्मी हज्ज, हुजरा इक्को दयां वखाईआ। जित्थे मन वासना सारे जाण तज, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। सच दवारे बहणा सज, सज्जण मिले बेपरवाहीआ। दर्शन करन रज्ज, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। खुशीआं अंदर होवण गद गद, गदागर बणन दी लोड़ रहे ना राईआ। जन्म जन्म दी करनी कीती हो जाए रद्द, समरथ देवे माण वड्याईआ। पिछली पिच्छे मुके हद्द, अगे मार्ग इक दरसाईआ। जित्थे नाम नगारा रिहा वज्ज, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। इक्को बोल जैकारा अलख, अलख अगोचर

दए वड्याईआ। सति सरूप हो प्रतख, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म करके वस्स, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। अमृत अंमिउँ दे के रस, जाम अगम्मी दए पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मन्दिर इक खुल्हाईआ। धुर हुक्म कहे मैं दस्सणा इक्को मन्दिर, चार दीवारी नज़र कोए ना आईआ। जिस दा समझे कोए ना जंदर, त्रैगुण वेस ना कोए बणाईआ। मन वासना रहे ना बन्दर, दहि दिशा ना कोए भवाईआ। सोहणा सुहञ्जणा दिसे अंदर, इक्को इक सोभा पाईआ। ना कोई सूर्या ना कोई चन्द्र, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। ना कोई महल अटल मुनारा दिसे कंदर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई सीस डण्डावत करे बन्दन, सिर कदम ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ना कोई मस्तक टिक्का लाए ललाटी चन्दन, रंगण कूड़ ना कोए रंगाईआ। धुर शब्द कहे मैं मेटण वाला हंगता, हँ ब्रह्म दयां समझाईआ। बोध अगाधा बण के आवां पंडता, पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। जन भगतां देवां साची संथा, सिख्या इक्को इक समझाईआ। लेखा मुका के मंज़ल कंठा, परदा अगला दयां खुल्हाईआ। लेखा चुक जावे आवाज़ सुणन दा संखा, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। पवण उनन्जा करे कोई ना पंखा, सांतक सति दयां कराईआ। काग रूप बणा के हँसा, सोहँ जाप दयां जणाईआ। मन हँकार रहे ना कंसा, काहन कृष्ना नज़री आईआ। दे वड्याई विच्चों सहँसा, जागरत जोत करां रुशनाईआ। इक्को पुरख अकाल दी करां मन्नता, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां बणावे बणता, पंज तत करे रुशनाईआ। सो दया कमाए गुरमुख साचे सन्ता, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। अंदर बाहर रंग चढ़े बसन्ता, एथे ओथे दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेल धुर दी संगता, संग आपणा नाल रखाईआ। धुर शब्द कहे मैं संगत वसां संग, सगला संग आप बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी होवे मंग, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। नाम निधान वज्जे मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड शनवाईआ। गुरमुखां मिले आनंद, आत्म रस चखाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सजदे करन सूरज चन्द, मण्डल मण्डप सीस झुकाईआ। जिन्हां दा मालक सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। उह जगत मंज़ल पैंडा गए लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा दए वखाईआ। घर ठांडा इक्को ठंडा ठार, अग्नी तत नज़र ना आईआ। जित्थे वसे पुरख अकाल, हरि निरँकार सोभा पाईआ। चरण बहण गुरू अवतार, पैगम्बर

कदमबोसी करके खुशी मनाईआ। बिन रसना जिह्वा कलमा रहे उच्चार, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। बिन दीवा बाती वेखण उज्यार, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। बिन रसना जिह्वा सुण धुन्कार, अगम्मी नाम करे शनवाईआ। बिन कातब लिखदा रहे लिखार, अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सद भरया रहे भण्डार, अतोट अतुट आप जणाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण पाउँदा रहे सार, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। जोती जलवा कर उज्यार, शब्दी डंका इक सुणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख वेखे आण, आनन फ़ानन लेखा दए मुकाईआ। मेहरवान मुहब्बत विच महबूब करे प्यार, महवख़ाना इक्को इक समझाईआ। मस्त खुमारी चाढ़े अपर अपार, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। सच प्रीती बख्शे इक प्यार, पीआ प्रीतम परम पुरख परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर बण के हाकम, हाकम हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। हुक्म कहे मैं आदि जुगादी वड्डा, गुर अवतार पैगम्बरां सेवा लाईआ। दो जहान हुक्मे अंदर बध्धा, विष्न ब्रह्मा शिव सिर ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी देंदा रिहा सद्दा, सुनेहड़ा सुनेहड़े विच्चों सुणाईआ। करदा रिहा खेल चारे जुग लैंदा रिहा मज़ा, मजलस वेख बेपरवाहीआ। मन्नदा रिहा इक्को रज़ा, राज़क रहीम होए सहाईआ। कलयुग अन्त कूड़ कुड़यारां देणी उह सज़ा, जिस तों सके कोए बचाईआ। सब दे सिर ते कूकदी कज़ा, कसम खा के रिहा सुणाईआ। जिसदी समझे ना कोए वजह, वज़ाहत विच ना कोए दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किसे नाल करना नहीं कोई दग़ा, निहकर्मी करमां दी देणी सजाईआ। उह वेखणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन मण्डल ज़िमीं असमान जगह जगह, कोना कोना गोशा गोशा किनारा वेख वखाईआ। बिन भगतां लोकमात वधे ना किसे दा अग्गा, अगला लेखा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती अन्तर अन्तर अन्तर आपे लग्गा, लागत संग ना कोए रखाईआ।

✪ २५ माघ शहिनशाही सम्मत १ सरमुख सिँघ, गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

धुर हुक्म कहे मेरा लिखे कोई ना लेख, जुग चौकड़ी भेव ना कोए खुल्लाइंदा। नज़र ना आए किसे रंग रूप रेख, काग़ज़ शाही वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। नित नवित सदा देवणहारा एक, एकँकार आप जणाइंदा। जन भगतां दस्स के अगम्मड़ा हेत, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों लए वेख, दहि दिशा खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाइंदा। धुर हुक्म कहे मेरा मालक इक जगदीश, जगदीशर बेपरवाहीआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जो नित नवित बदलणहारा रीत, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्सणहारा हक प्रीत, मुहब्बत इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी परखे नीत, घट भीतर वेख वखाईआ। गुरमुखां बख्शणहारा नाम भण्डारा वड बख्शीश, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। पैगम्बरां दस्सणहार हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। लेखा चुका के बीस इकीस, सम्मत शहिनशाही प्रगटाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी होवे भय भीत, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप समझाईआ। धुर दा खेल कहे मैं अगम्म अथाह, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ किसे ना आईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक दाता बेपरवाह, बेअन्त बेऐब परवरदिगार नूर खुदाईआ। जो जलां थलां रिहा समा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस रहे झुका, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। पैगम्बरां किहा नूरी खुदा, जलवागर नूर रुशनाईआ। भगतां किहा मेहरवां, महबूब इक गुसाँईंआ। जिस दा झुल्ले सच निशां, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप दृढ़ाईआ। धुर दा खेल करे समरथ, शाह पातशाह रिहा सुणाईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गए दस्स, दहि दिशा करे शनवाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले खोल्ह के अक्ख, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। सति सरूप हो प्रतख, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाम निधान सुणाए अनहद, नादी धुंन आप उपजाईआ। भेव खुल्हा के उपर शाहरग, परदा ओहला रिहा उठाईआ। नाम प्याला दे के अनरस, मधुर रस खुमारी इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि रघुराईआ। खेले खेल करता पुरख, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। जन भगतां खोल्ह के अंदरों सुरत, सुत्ती आत्म आप उठाइंदा। नज़री आए अकाल मूर्त, अकल कलधारी आपणा राह जणाइंदा। नाद वजावे शब्दी तूरत, तुरीआ पद पन्ध मुकाइंदा। चतुर सुघड़ बणावे मूर्ख मूढ़त, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगतां चरण धूढ़ी दे के धूढ़त, धुर दा टिक्का आप वखाइंदा। काया चोली चाढ़ के रंग गूढ़त, दुरमति मैल धुआइंदा। आसा मनसा कर के पूरत, पूरब इच्छया वेख वखाइंदा। लेखा जाणे उत्तर पच्छिम दक्खण पूरब, दहि दिशा परदा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक खुल्हाइंदा। चार कुण्ट कहे असां वेख्या कलयुग कूड़, दहि दिशा नज़री आईआ। मन ममता होई भरपूर, आसा तृष्ना वज्जी वधाईआ। हउमें हंगता बणया गढ़ गरूर, निवण सु अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। त्रैगुण तपे वांग तन्दूर, अमृत मेघ

ना कोए बरसाईआ। सतिगुर स्वामी दिसे ना किसे हज़ूर, हज़रत दरस किसे ना पाईआ। नाद सुणे ना कोए कोहतूर, शब्दी डंक ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पैंडा मुका के नेड़े दूर, घर मन्दिर परदा लाहीआ। जन भगतां पैंडा जाए मुक, मुकम्मल अगला पन्ध मुकाईआ। जिन्हां इक्को ढोला गाया धुर दी तुक, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। आत्म परमात्म देवे सुख, घर सज्जण ख़ुशी वखाईआ। बिन बाहों लए घुट्ट, गोदी आपणी आप टिकाईआ। मेहरवान हो के अबिनाशी अचुत, चातृक वेखे थाउँ थाँईंआ। रुत्त बसन्ती मौले सन्त सुहेला होवे ख़ुश, पत्त डाली आप महकाईआ। लख चुरासी नालों बदल के रुख़, हरिजन साचे लए उठाईआ। भाग लगा के जनणी कुक्ख, देवणहार दए सच्ची सरनाईआ। उज्जल करे मात मुख, दुरमति मैल मैल धवाईआ। जो चरण दवारे गए पुज्ज, पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास दी लोड़ रहे ना राईआ। सब कुछ अगला गया सुझ, पिछला पन्ध मुकाईआ। महल अटल सचखण्ड दुआर मिले उच्च, ऊँचो ऊँच होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सरनाई कहे जो प्रभ दी आया सरन, समें समें मिली वड्याईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन पूजा पाठ धुर दी मंज़ल चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। निज नेत्र इक्को दर्शन करन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। झगड़ा मुक जाए जन्म मरन, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। नाता रहे ना वरन बरन, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। इक्को परसे सतिगुर चरण, धूढ़ी अवर ना ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत कहे मेरा अन्तर होया पाक, पवित दिता बणाईआ। हरि सतिगुर खोल्हया ताक, परदा रिहा ना राईआ। अन्तर अन्तर आत्म परमात्म जुड़या साक, जगत सज्जण गए तजाईआ। नज़री आया साख्यात, जोत सरूपी जोत रुशनाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद मन्नया बाप, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उस ने इक्को दस्स के आपणा जाप, जीवण जगत जुगत दिती बदलाईआ। एथे ओथे दो जहानां बदल के आपणा साथ, सगला संग बणाईआ। जो भविख्तां विच गए आख, सो लिख्तां वेखे थाउँ थाँईंआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी सच चन्द करे रुशनाईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, इक्को ब्रह्म दए समझाईआ। सतिगुर शब्द कोई ना सक्या वाच, खोजत खोज ना कोए खुजाईआ। तन माटी पुतले वेखे ख़ाक, ख़ालक रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन साचा जाए उठ, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जाए तुठ, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। अमृत जाम प्याए अगम्मी घुट, अठसठ दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत वासना जाए छुट, आत्म परमात्म

नाल जुड़ाईआ। घर बसन्ती मौले रुत्त, पत्त डाली आप महकाईआ। गुरमुख बूटा कदे ना जावे सुक्क, गोबिन्द सूरा होए सहाईआ। जिस दा रूप अगम्मी जोत, शब्दी डंक वजाईआ। बुद्धी सके कोई ना सोच, विद्या वड ना कोए वड्याईआ। जिस नूं लभ्भदे चौदां लोक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। उस दा इक्को निराला अक्खर सलोक, सोलां कलधारी सीस ना सके उठाईआ। जन भगत ओस दा दर्शन करन रोज़, काया मन्दिर अंदर मिले बेपरवाहीआ। बिना गुरमुखां तों किसे हथ्थ ना आवे मौज, ख़ाली दिसे लोकाईआ। गुर शब्दी करे निराला चोज, चोजी प्रीतम फेरा पाईआ। गुरमुखां जन्म जन्म दा कट विछोड़ा रोग, विछड़यां ल्या मिलाईआ। मिटा के हरख़ चिन्ता सोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। वड्याई कहे मैं वेख्या वड्डा, दाता इक्को नज़री आईआ। जिस दा सचखण्ड दवारे सच निशाना गड्डा, सति सतिवादी आप लहराईआ। जिस दा रूप बिरध बाल ना बच्चा नढ्ढा, जोबन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव बध्धा, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। उस दा खेल जाणे ना कोई समझे ना वजह, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण दाता पुरख बिधाता पतिपरमेश्वर भगत सुहेला लोकमात जावे भज्जा, निरगुण सरुगण फेरा पाईआ। भगतां नाल करे कदे ना दग़ा, फ़रेबां विच रखे लोकाईआ। आपणे नाल प्रेम दा आत्म दे के मज़ा, मिज़ाज पिछला दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए जगाईआ। भगत सुहेला जावे जाग, जुगती सतिगुर आप जणाइंदा। अन्तर आत्म दे वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढाइंदा। दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत रूप वटाइंदा। झगड़ा मेट जगत समाज, दीनां मज़्हबां बाहर कराइंदा। धुन आत्मक सुणाए राग, छत्ती रागां पन्ध चुकाइंदा। हँस बणाए काग, माणक मोती चोग चुगाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। गुप्त ज़ाहर होवे साथ, सगला संग निभाइंदा। इक्को दस्स के पूजा पाठ, सिमरन जोग अभ्यास रखाइंदा। इक्को मण्डल दस्स के रास, गोपी काहन नाच नचाइंदा। इक्को सीता राम दस्स बनवास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ इक वखाइंदा। इक्को ईसा मूसा मुहम्मद मार आवाज़, सोए सोए आप उठाइंदा। नानक गोबिन्द खोल्ह के राज़, राज़क रिज़क रहीम वेख वखाइंदा। नूर नुराना लख चुरासी दस्से प्रभ दी ज़ात, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादी साक, सज्जण पुरख अकाल इक अखवाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बण के धुर दा कन्त जन भगतां देवण आया दाद, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र नाल पार लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जन भगत कहिण साडी पौह फुट्टी, जोती नूर नज़री आईआ। लख

चुरासी विच्चों मिली छुट्टी, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। मंज़ल कटणी पए ना कोए त्रैकुटी, सुखमन टेडी बंक ना कोए फिराईआ। विकारां दी करनी पए ना बुत्ती, बुत्तख़ाने वज्जे वधाईआ। आत्म उठाए सुत्ती, सुत्तयां ल्या जगाईआ। मेहरवान मेहर नज़र नाल कीती सुच्ची, दुरमति मैल रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। आत्म कहे मैनूं मिल्या शब्द इशारा, हरि जू हरि हरि आप दवाईआ। मैं मन दा छड्ड सहारा, उठी नाल चतुराईआ। कीता जगत किनारा, नाता कूड़ तुड़ाईआ। पाया दरस अगम्म अपारा, घर सज्जण बेपरवाहीआ। दीवा बाती होया उज्यारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सुहञ्जणा शब्द नगारा, नौबत इक्को हक वजाईआ। ठाकर बणया परवरदिगारा, सांझा यार नूर खुदाईआ। मुकामे हक कर पसारा, पिछला लेखा दिता चुकाईआ। सचखण्ड वस्या सच दवारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। मिल्या एका एक एकँकारा, अकल कलधारी आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। आत्मा कहे मैं सुणया इक्को छन्दी, ढोला बेपरवाहीआ। दीनां मज़्बां दी रही ना कोई पाबन्दी, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मन वासना रही ना गंदी, आसा तृष्ना ना कोए हल्काईआ। हत्थ फड़नी पई ना चण्डी, खण्डा खड़ग ना कोए खड़काईआ। मुनयाद मुक गई रहिण दी रंडी, कन्त सुहागी इक हंढाहीआ। मैं मंदिउँ बण गई चंगी, चारे कुण्ट वज्जी वधाईआ। प्रभ दर्शन दी अगे रहे ना तंगी, तंगदस्त ना कोए वखाईआ। मैं अन्तर गई रंगी, बाहरों नज़र कोए ना आईआ। घर ठाकर स्वामी मिल्या संगी, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर दए वखाईआ। घर मन्दिर वखाए स्वामी सोहणा, हरि करता परदा लाहीआ। जित्थे भगत सुहेला गुरमुख सोहणा, आलस निंद्रा रूप ना कोए वटाईआ। नेत्र अक्ख पए कदे ना रोणा, चिन्ता ग़म ना कोए प्रगटाईआ। दुरमति मैल पए ना धोणा, इक्को रंग रिहा रंगाईआ। लोकमात फिर पए ना रोणा, मात गर्भ ना कोए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच रखाईआ। आत्म कहे मैं पाया इक अबिनाशी, परम पुरख नज़री आईआ। ओस दी रहिणा बण के दासी, सेवक बण के सेव कमाईआ। जित्थे खुशीआं वाली हासी, हस्ती अवर ना कोए वखाईआ। उह सचखण्ड दा निवासी, दूजे घर कदे ना जाईआ। जित्थे निर्मल जोत प्रकाशी, नूर नूर रुशनाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साथी, दूजी वण्ड ना कोए बणाईआ। ना कोई मंज़ल ना कोई घाटी, ना कोई पौड़ी डण्डा चढ़ाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राती, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई संधया ना प्रभाती, घड़ी पल ना कोए वखाईआ। इक्को जोत सदा इकांती, इक अकल्ला नज़री आईआ। जो देवे सच्ची दाती, दयावान वरताईआ।

आत्म कहे मैं ओसे दी ज़ाती, अन्तिम ओसे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल उठाईआ। आत्म कहे मैं वेख्या सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों आईआ। मेरा खुशी बन्द बन्द, बन्दगी इक्को ढोला गाईआ। वडभागण होई मिटया पन्ध, मंज़ल रही ना राईआ। झगड़ा मुक्कया सूरज चन्द, मण्डल मण्डप गई पार कराईआ। मैं नहीं रही हँ ब्रह्म, पारब्रह्म विच समाईआ। मुड़ के फेर नहीं पैणा जम्म, जनणी गोद ना कोए उठाईआ। मेरा पूरा होया कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। सच दवारे खड़या बन्न्, डोरी तन्दी तन्द रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सद सरनाईआ। आत्म कहे मेरा होया मिलाप, कूड़ा नाता दिता तुड़ाईआ। जिस दा जपया साचा जाप, मिल्या धुर दा माहीआ। विछोड़े विच कटणी औखी हो गई रात, रैण नैण नीर वहाईआ। अगे बणया सच्चा साथ, सगला जोड़ जुड़ाईआ। लेखा मुका के पूजा पाठ, पूरन ब्रह्म दिता दृढ़ाईआ। आपणे नाल कर इतफ़ाक, नफ़ाक बाहर दिता कराईआ। पूरा कर भविख्त वाक्, वाकिफ़ हो के जोड़ जुड़ाईआ। दर्शन दे के साख्यात, सति जोत करे रुशनाईआ। करे खेल बहु बिध भांत, भाओ आपणा दए दृढ़ाईआ। जन भगतां मेला कर के साच, सच आपणे विच मिलाईआ। धुर दा मालक बण के बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ विछोड़ा दिता मुकाईआ। कूड़ विछोड़ा मुक्कया नाता, नातवां रही ना राईआ। घर स्वामी पाया आका, अकल बुध ना कोए चतुराईआ। जो होए सहाई नाथ अनाथा, दीनां दए वड्याईआ। सन्तां जोड़ के साचा नाता, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। पूरब जन्म दीआं पूरीआं कर के आसां, आशा आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला रिहा मिलाईआ। आत्म कहे मेरा होया मिलाप, मिल्या धुरदरगाहीआ। सच सुणावां बात, कहाणी इक बणाईआ। गुरमुख नार बणे ना कोई कमज़ात, कुलखणी रूप ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के साक, घर सज्जण लैणा मिलाईआ। अमृत देवे बूँद सवांत, निझर रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेला इक अकेला, एकँकार हरि निरँकार दीन दयाल, भगत सुहेले वेखे आपणे नाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ।

✪ २५ माघ शहिनशाही सम्मत १ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर हुक्म साचा जोग, जुगीशर बैठे ध्यान लगाईआ। राह तक्कण चौदां लोक, चौदां तबक अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मानण मौज, सन्त सुहेले खुशी वखाईआ। सदा खुल्ला रहे लोचण लोच, नेत्र नैण होवे रुशनाईआ।

बुद्धी रहे कोई ना सोच, शब्दी नाद धुंन शनवाईआ। याद आए धुर सलोक, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। मंज़ल सके कोई ना रोक, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। पुरख अकाल साची ओट, ओड़क आपणे रंग रंगाईआ। तन नगारे लावे चोट, डंका इक्को इक सुणाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचे तारनहारा, करता पुरख बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म बख्शणहार सहारा, सोई सुरती आप उठाईआ। पन्ध मुकावे कूड़ दवारा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। नाद सुणाए अपर अपारा, धुन आत्मक राग अलाईआ। काया माटी हाटी अंदर करे उज्यारा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। ब्रह्म निरंतर करे प्यारा, अन्तर आपणा रंग रंगाईआ। सेज सुहञ्जणी सहाए सच दवारा, महल अटल वज्जे वधाईआ। बेनज़ीर नज़र आए मीत मुरारा, लातस्वीर आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर शब्द कहे मैं दस्से नाम एका टेक, आदि जुगादी नज़री आईआ। जुग चौकड़ी धारे भेख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। अक्खरां वाले लिखे लेख, नाता सतरां विच जुड़ाईआ। आत्म परमात्म खोल्हे भेत, अनुभव आपणा राग अलाईआ। नज़रीं आए नेतन नेत, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सन्त सुहेले करे हेत, प्रेम प्रीती तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के मुला शेख़ मुसायक, मुसम्मम इक्को रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा रंग अवल्ला, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां रंगे अवल्लड़ा पल्ला, पल्लू आपणे नाल गंढुाईआ। दूई द्वैती मेट के सल्ला, सालस इक्को दए वखाईआ। घर वखा के निहचल धाम अटला, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। दूई द्वैती मेट के सल्ला, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार दर्शन देवे इक इकल्ला, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित वेख वखाईआ। नित नवित वेखणहारा, वाहवा सति नूर खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लोकमात फेरा पाइंदा। शब्द अनादी धुन जैकारा, नाअरा इक्को इक सुणाइंदा। सति धर्म दा खोल्ह दवारा, परदा आप उठाइंदा। प्रेम प्रीती सच प्यारा, पतिपरमेश्वर आप समझाइंदा। भगत भगवन्त नाता जोड़ कन्त भतारा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। ढोला गीत सुणाए अगम्म अपारा, सोहला आपणा राग अलाइंदा। मौला हो के मउले मउलणहारा, महक आपणी इक उपजाइंदा। तोला हो के तोले तोलणहारा, शब्द तराज़ू हथ्थ उठाइंदा। जुग चौकड़ी खेल करे अपार अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणी कार कमाइंदा। कलयुग अन्त लए अवतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। हरि शब्द कहे मेरा खेल लोकमात, मता इक्को नाल पकाईआ।

कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। हक दिसे ना किसे ज़ात, अजाती दीन दुनी दए दुहाईआ। धर्म दवारा नज़र ना आए हाट, लुटेरे बैठे थाउँ थाँईंआ। दुरमति मैल सके ना कोए काट, काया कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। झगड़ा मुकाए ना कोए आण बाट, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खिलाईआ। हरि शब्द कहे मैं वेख्या खेल ख़ालक, मख़लूक खोज खुजाईआ। पुरख अकाला बण के सालस, दो जहानां देवे सिफ्त सालाहीआ। कूड़ी क्रिया रहे ना कलयुग आलस, लोचण नैण दए खुल्हाईआ। मेल मिलाए धुर दा मालक, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। होए सहाई सदा प्रितपालक, पारब्रह्म प्रभ नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे लए मिलाईआ। साचे घर होवे मेला, वज्जे सच वधाईआ। इक्को रंग रवे गुर चेला, चेला गुरू विच समाईआ। नाता जोड़े सज्जण सुहेला, अगला संग ना कोए तुड़ाईआ। लोकमात वक्त ना होए दुहेला, दुबिधा विच्चों दए कढाहीआ। धाम वखा के इक नवेला, बख्शणहार बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। परदा ओहला चुक्के तन, अन्धेरा अन्ध रहे ना राईआ। मन वासना बज्झे मन, ममता मोह तजाईआ। गुरमुख गुर बणाए साचा जन, जनणी दए वड्याईआ। पंच विकारा देवे डंन, डंका शब्द नाम शनवाईआ। साचा राग सुणावे कन्न, अगम्मी आवाज़ अलाहीआ। मानस जन्म बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। घर प्रकाश वखाए अगम्मी चन्न, जोती चन्द दए चमकाईआ। लेखा मुका के खुशी ग़म, इक्को रंग दए वखाईआ। लेखे ला के पवण स्वास दम, दामन आपणा लए फड़ाईआ। भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए तजाईआ। मेल मिला के गृह मन्दिर साजण हम, हँ ब्रह्म इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा नाम, निरअक्खर दए पढ़ाईआ। नाम कहे मेरा रूप सदा निरअक्खर, अक्खर मेरी सिफ्त सालाहीआ। मैं सब नूं दस्सां वक्खर, वखरा घर बणाईआ। जित्थे ना कोई सिला ना कोई पत्थर, ना कोई कलम शाहीआ। चोटी चढ़ के सिखर, बैठा डेरा लाईआ। इक्को प्रभ दी याद दा फ़िकर, दूजा फ़िकरा ना कोए गाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो निरगुण धारों आया निंकल, निरवैर हो के सेव कमाईआ। भगत उधारना मैनूं इश्क, आशक माशूक दोवें रंग वटाईआ। अंदरों खोल्ह के दृष्ट, दृष्टी गया बदलाईआ। नाता तोड़ के स्वर्ग बहिश्त, सचखण्ड दवारा दयां समझाईआ। जित्थे इक्को पुरख अकाल दा इष्ट, दूजा गुरू ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या सति सति सतिवाद, जुग जुग फेरा पाईआ। बिन भगतां मिले ना किसे दाद, नानक दादक सारे देण दुहाईआ।

आत्म होए ना किसे आज़ाद, मन का मणका ना कोए भवाईआ। काया माटी खेड़े हुंदे वेखे बरबाद, साढे तिन्न हथ्थ अग्नी तत जलाईआ। सतिगुर शब्द सुणे ना कोए आवाज़, पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। सजदयां विच पढ़न नमाज़, रोज़यां विच झट लँघाईआ। जिंनां चिर मिले ना परवरदिगार आप, आपणा परदा लाहीआ। ओना चिर किसे दा पूरा होया नहीं जाप, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। जिन्हां दे वस गया अन्तर आत्म साथ, सगला संग बणाईआ। उहनां दी पूरी होई आस, ज़िमीं असमान दोवें गए तजाईआ। इक्को तक्क के जोत प्रकाश, प्रकाश विच आपणा डेरा लाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादि सदा अबिनाश, अबिनाशी आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रखे आपणे पास, पुश्त दर पुश्त आपणा हुक्म मनाईआ।

✪ २५ माघ शहिनशाहीआ सम्मत १ नरैण सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

२८६ १६ सुणो सतिगुर ढोला नवां, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। जो खैहड़ा छुड़ावे कोलों जमां, ज़ामन हो के दए सफ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे तमअ, तमन्ना पिछली दए गवाईआ। लेखा चुका के हरख सोग़ ग़मां, चिन्ता चिखा परे हटाईआ। लेखे लावे पवण स्वास दमां, दामनगीर पल्लू इक फड़ाईआ। जन भगत रहिण ना देवे कोई निकम्मा, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। २८६ १६

निरगुण नूर चाढ़े चन्ना, चन्द चांदनी इक रुशनाईआ। हरिजन दिसे कोई ना अन्न्हा, निज लोइण परदा लाहीआ। जिन्हां धुर दा हुक्म मन्ना, मन वासना दए बुझाईआ। जो सतिगुर शब्द सुणन कन्नां, सरवण वज्जे वधाईआ। किसे नहीं वेख्या गुरू ग्रन्थ दा तेरां सौ दस पंना, पारब्रह्म प्रभ की की खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर हुक्म नवां निरोल, जुग जुग फेरा पाईआ। संदेसा देवे अनमोल, अनमुलड़ी खेल कराईआ। नाद वजावे ढोल, डंका इक शनवाईआ। दवारा देवे खोल्ह, परदा ओहला उठाईआ। तोले पूरा तोल, नाम कंडा इक जणाईआ। जन भगतां वसे सदा कोल, घर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। शब्द कहे मेरा वेखणा नवां जुग, नवीं मिली वड्याईआ। भगत सुहेले गुरमुख चेले चुण चुण, इक्को रंग वखाईआ। परदा लाह के अंदर लुक, लायक सारे देणे बणाईआ। कीमत पाउणी धुर दी तुक, तूं मैं रहे ना राईआ। उन्हां लैणा पुछ, जो पिछले जन्म आए गाईआ। अगला लहिणा कुछ, देवे थाउँ थाँईंआ। सतिगुर दवारे बख्शे धुर दा सुख, दुःख दर्द रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारों आया उठ, निरगुण निरवैर वेस

वटाईआ। नवां युग कहे मैं सदा नवीन, बहुरंगा नज़री आईआ। थोड़यां विच्चों थोड़यां देवां यकीन, बहुत्यां विच्चों बहुते दयां भुलाईआ। परम पुरख दी वक्खरी निराली तालीम, अक्खर वक्खर वक्खर अक्खर विच समझाईआ। जिस दा हरफ़ हरूफ़ बड़ा महीन, कलम सेव ना कोए कमाईआ। उह करता कादर करनी दा करीम, कराइम जराइम सब दे वेख वखाईआ। गुरमुख रहिण ना देवे ग़मगीन, ग़मी खुदी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नवें जुग दी नवीं गिणती, हथ्थो हथ्थ भगतां दए समझाईआ। गुरमुखो तुहाडे चरण चुम्मे घुंडी लोड़े मुक्ती, रो रो लागे पाईआ। तुहाडे जन्म कर्म विच कीती आप दरुसती, लेखे दा लेखा दिता बणाईआ। वेख्यो प्रभ मिलण तों करयो ना कोए सुसती, जगत आलस कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे पुसत दर पुश्ती, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। नवां जुग कहे मेरा नवां नवां संदेश, नवयां नवयां मात सुणाईआ। मेरा लेखा आदि जुगादि सदा नाल दस्मेश, दहि दिशा वज्जदी रहे वधाईआ। नेडे आ के मेरे हो के परदा लाह के लओ वेख, पलक पलक विच्चों बदलाईआ। जोती शब्दी धर के भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। मालक बण के धुर नरेश, नर नरायण रिहा समझाईआ। आदि जुगादि भगत भगवन्त एके दा एक, एका इक नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बणे दरवेश, दर्दी हो के दर्द मंग मंगाईआ।

२८७
१६

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत १ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

आत्म परमात्म सच्चा नाम, सति सति सति दए गवाहीआ। बिना बनां तों मिले राम, हठ तप ना कोए वखाईआ। नज़री आवे धुर दा काहन, बंसरी अगम्म अथाह वजाईआ। हज़रत हो के देवे पैग़ाम, पैगम्बर हो के करे पढ़ाईआ। सतिगुर हो के देवे जाम, नाम खुमारी इक रखाईआ। कूड़ी क्रिया झगड़े मेटे तमाम, तमअ ममता रहे ना राईआ। सच मार्ग जणा के इक आसान, राह इक्को सोभा पाईआ। जिस मंज़ल उत्ते मिले भगवान, घर भगतां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। मेलणहारा आपे मिलदा, जुग जुग वेस वटाईआ। लेखा जाणे घड़ी पल छिन्न दा, अछल छलधारी फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकावे आदि जुगादि जुग चौकड़ी घड़ी पल दिन दा, जन्म कर्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान बेपवराहीआ। मेहरवान सदा महबूब, मुहब्बत विच्च समाइंदा। गुरमुखां कढ्ढ के एका दूज, एका दूजा रंग चढ़ाइंदा। सच दवारा जाए सूझ, नाता कूड़ो कूड़

मिटाइंदा। भाग लगा के काया पंज तत भूत, भूत भविख्त काल आप समझाइंदा। नाम संदेसा दे के शब्दी दूत, हुक्म इक्को इक दृढ़ाइंदा। चारों कुण्ट दिसे मौजूद, घर साचे सोभा पाइंदा। कर्म कर्म दा लेखा करे मौकूफ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नर निरँकारा निरगुण आपणा दस्से उह हरूफ़, जिसदी हरफ़ हरफ़ सिफ्त सालाहइंदा। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा रहे मसरूफ़, वेला वक्त ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवाद शब्द अनाद बोध अगाध, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह शाह पातशाह आपणी दया कमाइंदा।

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत १ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड माल चक ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं मेटणा कलयुग कूड़, लख चुरासी काया कपड़ खोज खुजाईआ। सुघड़ स्याणे बणाउणे मनमुख मुग्ध मूढ़, अमृत आत्म अन्तर रस चुआईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साची बख्शणी इक धूढ़, मस्तक टिक्का धुर दा इक वखाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण रंग चाढ़ना गूढ़, सरगुण काया माटी पंज तत वज्जे वधाईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी बोध अगाधी बख्शणी तूर, नाद अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सति प्रकाश देणा नूर, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। दाता योद्धा दस्सणा इक सूरबीर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा नाम अणयाला दो जहानां तीर, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी गहर गम्भीर, बेनज़ीर देणा मिलाईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे शमशीर, शमशान भूमी करे सर्ब लोकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। जो लहिणा देणा लेखा जाणे शाह हकीर, वरन बरन ज़ात पात तत वजूद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए कराईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दीन दुनी नूं दस्सणा जोग, जुगीशर इक्को इक समझाईआ। माया ममता हउमें हंगता कटणा रोग, हँ ब्रह्म कर पढ़ाईआ। सतिगुर नाम दी दस्सणी खोज, चौदां विद्या डेरा ढाहीआ। सच उपजाओणा इक सलोक, सोहला तूंही तूंही राग अलाईआ। भाग लगा के काया मन्दिर साचे कोट, कोट जन्म दे पाप देणे मिटाईआ। नाम नगारे ला के चोट, सोई सुरत देणी उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अज्ञान देणा गवाईआ। सच दवारे दस्सणी मौज, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दए बदलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणे जगत संसार, लख चुरासी परदा लाहीआ। नव नौ चार मेटणा धूआँधार, ब्रह्मण्ड खण्ड कर रुशनाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पाउणी सार, चारे खाणी चारे बाणी शब्द शनवाईआ।

भगत सुहेले सन्त सज्जण लैणे उठाल, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। शब्द अगम्मी वजाओणा ताल, धुन आत्मक राग सुणाईआ। झगड़ा मकाउणा शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को देणा वखाईआ। जिस दा सच दवारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, शिवदवाला मठ्ठ मन्दिर मस्जिद वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नित नवित निरगुण सरगुण पुच्छे मुरीदां हाल, हरि मुर्शद बेपरवाहीआ। मानव मानुख मानस विच्चों करे बहाल, तत्व तत खोज खुजाईआ। सति सतिवादी हो के आप दलाल, दीन दुनी दा मालक फेरा पाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर देंदे गए अहिवाल, वाक् भविख्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता कार कमाईआ। हरि शब्द कहे मैं बदल देणा समाज, चार वरन अठारां बरन देणा समझाईआ। आत्म अन्तर दे के दात, दाता दानी देणा मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के रात, सति चन्द कर रुशनाईआ। नाम निधाना दस्स के बोध अगाध, अक्खर वक्खर इक समझाईआ। भगत सुहेले वेख के साध, सज्जण लैणे जगाईआ। जो अबिनाशी करता रहे अराध, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मन आत्मा होए विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। झगड़ा कूड़ ना रहे फ़साद, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। सुरती शब्दी कर इमदाद, कामल मुर्शद देणा मिलाईआ। बिन अक्खों जावण जाग, निज नेत्र होए रुशनाईआ। त्रैगुण माया पंज तत बुझे आग, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। हँस बुद्धी ना रहे काग, काग हँस रूप वखाईआ। घर मिलाउणा कन्त सुहाग, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां वाग, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। शब्द नाद सुणाए धुर दी आवाज़, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के घर विच घर खोल्ह राज़, परदा ओहला दए उठाईआ। झगड़ा चुक्के वुज़ू नमाज़, मुर्शद इक्को दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर दा हुक्म इक समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणा दीन दुनी, कायनात फोल फुलाईआ। परदा लाहुणा ऋषी मुनी, सूफ़ी सन्त फ़कीर उठाईआ। सज्जण वेखणे धुर दे गुणी, गहर गम्भीर होए सहाईआ। सृष्टी सारी छाणी पुणी, पुरख अकाला सेव कमाईआ। याद आउणी कृष्न वाली अठारां खूहणी, चार कुण्ट पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पुकार रिहा सुणी, घट भीतर वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सणा इक्को बोल, एकँकार देणा जणाईआ। जो सब दे वसे कोल, घट घट डेरा लाईआ। जो तत्तां अंदर गया मौल, मौला नूर खुदाईआ। जो अमृत झिरे नाभ कौल, कौल इकरार पिछला पूर कराईआ। जो लेखा जाणे धरनी धरत धौल, धवला भार वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा देणा कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, जगत विद्या समझ किसे ना आईआ। सच दवारा हरि निरँकारा निरगुण सरगुण देवे खोल्ह, चार वरन अठारां बरन इक सरनाईआ। नाम

नाद अनाद वजावे ढोल, ढमक्का इक्को दए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता कढ्ढे पोल, परदा ओहला दए चुकाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुरमुख सज्जण लए विरोल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा दए समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सणी सतिजुग धारा, सति सतिवादी खेल कराइंदा। सृष्ट सबाई मन्नो इक निरँकारा, निरगुण सरगुण सोभा पाइंदा। जिस दा अगम्म अथाह जैकारा, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए सालाहइंदा। जो आदि जुगादी परवरदिगारा, यार सांझा इक अखवाइंदा। जिस दा मुकामे हक दवारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जिस दा शब्दी सुत दुलारा, गोबिन्द आपणी कार कमाइंदा। जिस दा नाम खण्डा दो धारा, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाइंदा। जो निरगुण सरगुण खेल करे अपर अपारा, अगम्म अगोचर आपणा वेस वटाइंदा। सो लेखा जाणे कलयुग अन्तिम वारा, वारता पिछली फोल फुलाइंदा। नवें जुग दा नवां विहारा, विवहारी हो के आप कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अंजील कुरान खाणी बाणी जिस दा दे के गए इशारा, सो साहिब स्वामी अन्तरजामी परदा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ कुड़यारा वेखे दर दर नव सत्त ब्रह्म मति बिन तत्व तत, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, सति स्वामी अन्तरजामी गृह भीतर मन्दिर वेख वखाइंदा।

२६० १६

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत १ राधा स्वामी प्रताप सिँघ दे नाल तरन तारन ज़िला अमृतसर ✪

रूह कहे मेरा धाम सचखण्ड, सति सति इक्को नज़री आईआ। जित्थे दूई द्वैत नहीं कोई वण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन ना कोए वखाईआ। ढोला गीत नहीं कोई छन्द, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। रसना जेहवा नहीं बत्ती दन्द, तन वजूद ना बणत बणाईआ। इक्को नूर नुराना सगला संग, संगी साथी बेपरवाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। धुर दी डोरी बन्नृ नाल कमंद, कामल हो के आपणा अमल जणाईआ। ना कोई लहिणा देणा लेखा सूर्या चन्द, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। ना कोई वण्ड हैं ब्रह्म, तत्व तत ना कोए दरसाईआ। ना कोई जन्म कर्म भरम, वरन बरन ना कोए दरसाईआ। इक्को इक अगम्मी सरन, सरनगति सहिज सुखदाईआ। जित्थे ना कोई जन्म मरन, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। ना कोई नेत्र हरन फरन, नैण अक्ख ना कोए बदलाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहीर इक्को करनी करन, करता पुरख दए वड्याईआ। जिस दी मंज़ल आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म हो के चढ़न, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। अग्नी तत कदे ना सड़न, माया ममता ना मोह हल्काईआ। बिन वेक्खयां बिन जाणयां बुझिआं सूझ आवे

उह चरण, जिस चरण दा चरणामित चरणोदक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच दर, दरगाह साची हक मुकाम सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को घर बणाईआ। रूह कहे मेरा सच वसेरा, बिस्तर सेज ना कोए हंढाहीआ। किशना शुक्ला पक्ख ना कोए अन्धेरा, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। दूई द्वैत ना कोए झेड़ा, झगड़ा ब्रह्म ना कोए समझाईआ। चार दीवारी छप्पर छन्न ना कोए खेड़ा, महल अटल सोभा पाईआ। जित्थे साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण निरवैर निराकार वसे सज्जण मेरा, पीआ प्रीतम बेपरवाहीआ। सच सरनाई बेपरवाही दस्से इक वसेरा, विश्व आपणा रंग रंगाईआ। इस तों अगला भेव जाणे जेहड़ा, बिन पूरन सन्तां समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। रूह कहे मैं वसां धाम अथाह, सच दवारे सोभा पाईआ। जित्थे वस्या शहिनशाह, शाह पातशाह नूर खुदाईआ। जो हुक्में अंदर हुक्म रिहा चला, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जिस दी धार अपार रूप रंग रेख ना सके कोई जणा, समझ विच समझ ना कोए टिकाईआ। उह लहिणा जाणे सहिज सुभा, सति स्वामी अन्तरजामी आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा नूर ज़हूर देवे वण्ड वण्डा, मेहरवान आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणी रिहा खिलाईआ। रूह कहे मेरा मालक इक, एकँकार नज़री आईआ। जो बिन अक्खरां तों लेखा देवे लिख, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। बिन अक्खां तों आवे दिस, साख्यात सोभा पाईआ। बिना मनसा तों पूरी करे इच्छ, भावना आपणे विच टिकाईआ। जिस दा जगत निराला द्रृष्य, दृष्टी इष्टी दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दए समझाईआ। रूह कहे मेरा मन्दिर अपार, हरि प्रीतम स्वामी दया कमाईआ। जित्थे सदा होए उज्यार, दीवा बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन सखियां मंगलाचार, गीत अगम्म रिहा सुणाईआ। संदेसा देवे वारो वार, बिन तन्द सितार हिलाईआ। सदा सदा सद रहे खुशहाल, ग़मी रंग ना कोए बदलाईआ। जित्थे इक्को शब्दी लाल, दुलारा दूल्हा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे बह के आपणी कार कमाईआ। रूह कहे मैं वेख्या स्वामी सच, सति सतिवादी वेख वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द रिहा हस्स, खुशी भगतां नाल बणाईआ। आपणी धार करके आपणे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। अगला मार्ग निरगुण हो के निरगुण दस्स, निरवैर आपणी कार कमाईआ। तुहाडे ढोले सिफ्ती गावे जस, बिन अक्खरां राग अलाईआ। जिस दी कोई ना समझे हद्द, हदूद विच हदूद सबूत आपणा नाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूह दा मालक आपणा आप प्रगटाईआ। रूह कहे मैं वेख्या उह बाप, जिस

नूं जन्मे कोए ना माईआ। जिस दा एथे ओथे सदा प्रताप, प्रताप सिँघ प्रताप ना कोए जणाईआ। जिस दा निरगुण नाल निरगुण साक, साक सज्जण बेपरवाहीआ। सब दा लहिणा देणा करे बेबाक, हिस्सा वण्ड झोली दए भराईआ। जिस वेले सचखण्ड दा खोल्हे ताक, ताकतवर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, विष्न ब्रह्मा शिव आसा सब दी पूर कराईआ।

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत १ दीदार सिँघ दे घर पिण्ड शफ़ीपुर ज़िला अमृतसर ✪

दर दवारे जो आया रुपईआ, माया मोह रिहा जणाईआ। जिन्हां मिल गया सतिगुर शब्द धुर दा सईआ, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। उह चढ़ गए अगम्मी नईआ, जो दो जहानां पार कराईआ। अबिनाशी करता पकड़े बहीआ, सगला संग बणाईआ। राए धर्म कढ्ढे ना वहीआ, चित्रगुप्त ना हिसाब जणाईआ। गोबिन्द दा पूरा होया ढईआ, सुत्ती उठे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रुपया कहे मैं होया पेश, आपणा आप जणाईआ।
२६२ जिस माया नूं सरसे सुट्ट के गया सतिगुर दस्मेश, जल धारा विच वहाईआ। ज्ञान दे के गया इक नरेश, नर नरायण सच समझाईआ। धुर दा नाम रहे सदा कोल हमेश, खा ख़र्च तोट ना आईआ। वधाई वज्जदी रहे लोकमात देश, सचखण्ड साचे मिले वड्याईआ। ममता मोह मिटा के रेख, चिन्ता ग़म गया चुकाईआ। गुरमुखो इक्को पुरख अकाल दी रखणी टेक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मन वासना बुद्धी करनी बिबेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लावे सेक, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। गुरमुख दरगाह साची दा सदा सेठ, टकयां दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धीरज धीर दए धराईआ। रुपया कहे मैं वेखी दुनिया ममता, माया ममता विच लोकाईआ। जन भगतां तोड़ां गढ़ हंगता, हँ ब्रह्म समझाईआ। मैं भरम भुलावां जगत पंडतां, पान्धआं दयां रुलाईआ। भुलेखे विच रखां जीव जँतां, जिज्ञासू तत्तां दयां लड़ाईआ। गुरमुख विरले बणावां बणता, नाता कूड़ कूड़ छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रुपईआ कहे मेरा रूप अनोखा, दीन दुनी विच नजरी आईआ। शाह सुल्तानां नाल करदा धोखा, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। जेहड़ा सन्त फ़कीर धुर दी मंज़ल पहुंचा, उस दे दर कदे ना भाईआ। जगत वासना मुक जाए सोचा, समझ रहे ना राईआ। पूरी हो जाए लोचा, निज लोचन दर्शन पाईआ। इक्को पुरख अकाल दी रखदे ओटा, ओड़क ओहो होए सहाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटा, लख चुरासी रही कुरलाईआ।

जिस दा प्रकाश निर्मल जोता, घट घट रिहा समाईआ। उस दा नाम भण्डारा इक्को बहुता, जो इक्को वार झोली दए भराईआ। झगड़ा मुक जाए चौदां लोकां, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रुपया कहे मैं वेख्या जगत जुग, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। हिरस हवस विच लग्गी सर्ब अग्ग, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। गुरमुख विरले मंज़ल चढ़ के उपर शाह रग, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जित्थे अनहद अगम्मी नाद रिहा वज्ज, अनरागी राग सुणाईआ। नाम भण्डारा मिले अमृत धुर दी मध, मधुर धुन नाल शनवाईआ। बिन मक्के काअब्यों साचे हुजरे महबूब दा हो जाए हज्ज, हाज़र हज़ूर दरस दिखाईआ। उह लालच दुनिया दीन जाए छड्ड, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। वासना नालों हो के अड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। रुपया कहे मेरा सोहणा सोहजंणा रूप, बणत सोहणी नज़री आईआ। मैं भरम भुला के वड्डे वड्डे भूप, रईयत राउ रंक दिते रुलाईआ। मैं झगड़ा पाया चारे कूट, दहि दिशा होए लड़ाईआ। पिता पूत बणाई फूट, माँ धी रही कुरलाईआ। गुरमुखां दे अंदरों मौली रुत, रुत रुतड़ी नाल मिलाईआ। पुरख अकाल दे बण गए सुत, अबिनाशी करता इक्को रहे ध्याईआ। साची धारों गए उठ, जित्थे जन्मे कोए ना माईआ। नाम ख़ज़ाना मिल्या अतुट, दीन दयाल दया कमाईआ। जिस नूं ठग्ग चोर यार सके कोई ना लुट्ट, पल्लउँ गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। रुपया कहे मैं रूपवन्त, सुचज्जा नज़री आईआ। मैं भरम भुलाए कोटी कोट कलयुग काया सन्त, भुलेखे विच लोकाईआ। जिन्हां नूं परम पुरख दा मिल गया इक्को अन्तर आत्म मंत, ढोला इक्को रहे गाईआ। ओन्हां दे अगे मेरी सदा मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अगे जाण दी नहीं हिम्मत, हौसला दिता ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां नाम शब्द साची दिती ख़िल्लत, ख़ालक हो के आपणे रंग रंगाईआ। रुपया कहे मैं सतिगुर किरपा सदा मन्जूर, पुरख अकाल दया कमाइंदा। साची सेवा कर के हज़ूर, हज़रत आपणा रंग रंगाइंदा। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, मार्ग सच इक समझाइंदा। सच प्रीती करनी बण मज़दूर, सेवक सेवा इक रखाइंदा। आसा मनसा मनसा विच्चों पूर, पूरन ब्रह्म दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाम भण्डारा देवे सदा भरपूर, पारब्रह्म पतिरमेश्वर प्रभ आपणा रंग रंगाइंदा।

✪ २६ माघ शहिनशाही सम्मत १ दलीप सिँघ दे घर जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

चरण कँवल विच रहे मज़ा, सरन बख्शे सच सरनाईआ। जन भगत चलाए आपणी रज़ा, भाणे अंदर खेल खिलाईआ। कूड़ी क्रिया करन ना देवे दग़ा, कलयुग फरेब दए मिटाईआ। दरस दिखा के उपर शाह रगा, शहादत आपणा नाम भुगताईआ। सदा वधाउँदा रहे अग्गा, जुग चौकड़ी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो जन शरनाई लग्गा, फड़ बाहों पार कराईआ। प्यार मुहब्बत विच रहे बध्धा, बदी अंदरों देवे कढाहीआ। कूड़ा लालच रहिण ना देवे लबा, हँकार विकार देवे खपाईआ। आवण जावण लेख मुका के सबा, सभनी थाँईं होए सहाईआ। दे के निरबाण धुर दा पदा, पतिपरमेश्वर रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवे माण वड्याईआ। चरण कँवल सदा लग्गी रहे प्रीत, पीआ प्रीतम मेल मिलाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रहे रीत, जन भगतां इक्को रंग चढ़ाईआ। सिफ्ती ढोले सुणाउँदा रहे गीत, गुरमुखां इक्को नाम पढ़ाईआ। शिवदवाले मठ बणाउँदा रहे मसीत, सन्त फ़कीरां काया काअबा दए समझाईआ। जगत वासना कुनी काया कपड़ करदा रहे पलीत, हरिजन अन्तर आत्म ब्रह्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। चरण कँवल जुड़या रहे नाता, अगे जुदाई ना कोए वखाइंदा। घर स्वामी मिलदा रहे दाता, दीन दयाल परदा लाहइंदा। मातलोक बणया रहे राखा, निरगुण हो के सेव कमाइंदा। पूरी करदा रहे आसा, तृष्ना कूड़ बुझाइंदा। चरण कँवल बख्शदा रहे भरवासा, सिर समरथ आपणा हथ्थ टिकाइंदा। लहिणा देणा मुकाउँदा रहे पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर चरणां हेठ दबाइंदा। सचखण्ड दवारे दसदा रहे वासा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे रंग रंगाइंदा। चरण कँवल जुड़या रहे जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। भगत भगवान दी सांझी लोड़, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जुग चौकड़ी जावे बौहड़, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकावे दौड़ दौड़, पाँधी हो के फेरा पाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखे मिठ्ठा कौड़, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जिन्हां गुरमुखां परम पुरख दे मिलण दी लग्गी औड़, अमृत मेघ दए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश अन्धेरे घोर, सच नूर करे रुशनाईआ। चरण प्रीत कहे मैं भगतां सदा बणदी, बन खोजण कोए ना जाईआ। दुरमति मैल धोवां तन दी, अंदरों बाहरों करां सफ़ाईआ। वासना बन्न्हां मन दी, दहि दिशा ना कोए भवाईआ। धार प्रगटावां जोती चन्न दी, नूर नूर रुशनाईआ। आवाज़ सुणावां शब्दी धन्न धन्न दी, अगम्मी राग अल्हाईआ। भूमिका वखावां बिना छप्पर छन्न दी, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। खेल वखावां हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म नाल

२६४
१६

मिलाईआ। जिस दी धार कदे ना जम्मदी, मरन विच कदे ना आईआ। जुग जुग जन भगतां बेड़ा बन्न्हदी, फड़ बाहों कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। चरण प्रीत कहे मेरा भगतां नाल संजोग, जुग विछड़यां मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दा कट विजोग, बिरहों इक दयां वखाईआ। माया ममता कट के रोग, सुख सांतक सति दयां वरताईआ। झगड़ा चुका के लोक परलोक, सच दवारा देणा समझाईआ। जित्थे इक्को नाम ढोला सोहला सलोक, नाम निधान सच्ची शनवाईआ। होए प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर डगमगाईआ। सचखण्ड दुआर नज़री आए अगम्मा कोट, कुटीआ कुटम्ब नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक वखाईआ। चरण प्रीती कहे मैं जुग जुग भगतां नाल लगदी, गुरमुखां रंग रंगाईआ। तृष्ना बुझावां ममता वाली अग्ग दी, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। रीती बदलावां संसार वाले जग दी, जागरत जोत करां रुशनाईआ। हद्द मुकावां जगत हद्द दी, हज़रत हज़ूर इक्को दयां समझाईआ। जोत प्रगटावां लट लट दी, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। खेल जणावां पुरख समरथ दी, जो दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वखाए धुर दे हक दी, हकीकत विच्चों परदा लाहीआ। चरण प्रीत कहे मैं सदा भगतां जोगी, जोगीआं हथ्थ कदे ना आईआ। मैं प्रेम रस दी भोगी, आत्म परमात्म मिल के सोभा पाईआ। बिन सतिगुर किरपा मेरा बणदा कोए ना खोजी, लख चुरासी जीव जंत हल्काईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को चोजी, चोज निराले रिहा वखाईआ। जिस नूं झुकदे गए वेदी सोढी, नमस्ते कह कह सीस निवाईआ। जिस दा नाम निधाना इक सलोकी, ढोला राग इक अलाईआ। उह मंज़ल दस्से सौखी, राह विच ना कोए अटकाईआ। पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक हथ्थ ना कोए वखाईआ। इक्को रमज़ इशारे वाली बहुती, दूजा झगड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मेला लए मिलाईआ। चरण प्रीत कहे मैं वसदी सदा पुरख अकाल दे चरण, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जन भगतां खोल्ह के नेत्र हरन फरन, फ़ुरना इक्को दयां दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात वरन बरन, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। सुरत सवाणी आवां फड़न, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। बिन पौड़े डण्डे मंज़ल आवां चढ़न, चढ़ां चाँईं चाँईंआ। निरभउ चुकाया मेरा मरन डरन, भय अवर ना कोए रखाईआ। मैं भगतां आउँदी सदा वरन, वर आपणा खोज खुजाईआ। मेरा दरगाह साची दा सच्चा प्रण, कौल इकरार कीता तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण प्रीत कहे मैं आवां जुग जुग, आपणा फेरा पाईआ। भगत सुहेले लभ्भां चुग चुग, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सृष्टी औध गई

मुक्क मुक्क, कोटन कोटि हाल बताईआ। बिना सतिगुर किरपा मिले किसे ना सुख, सांतक सति ना कोए वरताईआ। जन भगतां प्रभ चरण आ के मरन दा रहे ना दु:ख, दुखियां दर्द लवां वण्डाईआ। मात गर्भ होण ना देवां उलटा रुख, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। माणस विच्चों माणस जामा मिले मनुक्ख, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणी गंढु रखाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच देवे वड्याई अबिनाशी अचुत, चेतन सता सुरत शब्द शब्द सुरत सूरत आपणी विच लुकाईआ।

✪ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

२६६ फलगुण कहे मैं आया जगत, फल आपणा नाल ल्याईआ। परम पुरख दे वेख के भगत, भगवन समझ के सीस निवाईआ। वेला सुहञ्जणा जाण के वक्त, वाक्य वेख्या चाँईं चाँईंआ। जिस दा दो जहानां हुक्म सख्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। निवासी वासी उपर अर्श, फर्श करे रुशनाईआ। निरगुण हो के देवे दरस, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे मेरी आई बहार, सम्मत साहिब मिले वड्याईआ। जिस दी सोहणी खिली गुलज़ार, गुरमुख बूटे रहे महकाईआ। वेखणहारा सांझा यार, जलवागर नूर खुदाईआ। सच दवारे ला दरबार, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी दा लेखा जाणे जानणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खोज खुजाईआ। लहिणा देणा नाल चम्यार, रविदासे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ। फलगुण कहे मैं आ गया अन्त, लोकमात वेस वटाईआ। जिस दा लेखा लिख के गए गुर अवतार पैगम्बर सन्त, गुर गुर लेख जणाईआ। सो अन्तरजामी वेक्खयां कन्त, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी मौली रुत्त बसन्त, दो जहान वज्जी वधाईआ। उह जन्म जन्म दे पापी तारे पंडत, पांधे वेख वखाईआ। किरपा नाल मेल के संगत, जन्म विच्चों जन्म दिता बदलाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दिता समझाईआ। भिखारी बण के आए संगत, झोली धुर दी अगे वखाईआ। लहिणा देणा मुका भुक्ख नंगत, वस्त अमोलक इक वरताईआ। झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नत, जगह जगह दए वड्याईआ। मन मनुआ मेट के दंत, दुष्ट दुराचारी दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ। फलगुण कहे मैं वेखण आया भिखारी, भिख्या मंगण चाँईं चाँईंआ। तख्त निवासी तक्कया इक दरबारी, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दी आदि अन्त इक्को यारी, याराना भगतां नाल रखाईआ। गुरमुख आत्म रहिण ना देवे कुँवारी, कन्त कन्तूहल आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जेहड़े मंगते दर ते आए वपारी, वस्त इक्को दए वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। फलगुण कहे मैं वेखां मंगदे, मंगते आपणा राह तकाईआ। जुग चौकड़ी वेखां लँघदे, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले कोटां विच्चों चोली रंगदे, नाम अगम्मा रंग चढ़ाईआ। डूम नाई कदे ना संगदे, प्रीती मंगण थाउँ थाँईंआ। झगड़े मुका के गोदावरी गंग दे, गंगा सागर हथ्थों दिता सुटाईआ। लेखे मुका के जलधार तरंग दे, तुरत आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ मंगो की, सच दयो जणाईआ। जिस ने तुहानूं बणा ल्या आपणा पुत्तर धी, दूजा नाता ना कोए रखाईआ। सति धर्म दा मार्ग ला के लीह, राह इक्को रिहा दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका के इकीह वीह, सम्मत शहिनशाही वज्जी वधाईआ। सतिजुग साची रख के नींह, निवण सु अक्खर दिता पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ मंग लओ आपणा दान, दाता दानी झोली पाईआ। इस तों परे होर नहीं भगवान, भागां वाल्लयो भाग ना कोए जणाईआ। इस तों उपर नहीं कोई काहन, गोपी काहन एसे दी सेव कमाईआ। इस तों वड्डा नहीं राम, सीता राम बन खण्ड देण दुहाईआ। इस तों परे नहीं अमाम, ईसा मूसा मुहम्मद सीस निवाईआ। इस तों दूर नहीं कोए निरगुण निरवैर निरँकार सच निशान, नानक गोबिन्द गए समझाईआ। जो वसे सच भूमिका अगम्मी अस्थान, अस्थिल आपणा डेरा लाईआ। सो परत के आया वाली दो जहान, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी शाम, शमां गुरमुख दए जगाईआ। दर आयां नूं आत्म परमात्म देवे आराम, दीन दुनी दे दुःख दए गवाईआ। प्रेम प्रीती प्याए जाम, जमां तों लए छुडाईआ। अमृत रस कराए पान, निझर झिरना आप झिराईआ। सति सच दवाए तुआम, कूड़ी तमअ दए गवाईआ। लेखा मुका के जन्म जन्म दा गुलाम, फाँसी अवर कोए ना पाईआ। जन भगत रहे ना कोए हराम, शब्द अनादी सुत लए उपजाईआ। लेखे लाए सेवा निशकाम, जो चल आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ डाह लओ झोली, झूले वाला आपणी झलक वखाईआ। जिस दी चार जुग तों वक्खरी बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। जिस दी बिना कहारां तों अगम्मी डोली, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। जो आपणे प्रेम प्यार दी खिलाए साची होली, बिन रंगण रंग चढ़ाईआ। जो निरगुण धार बण के तुहाडी बणी डोली, विचले पड़दे दए उठाईआ। मंगत्ओ जे मंगणा सोहँ शब्द दी पा लओ रौली, रौणक आपणी नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए वरताईआ। फलगुण कहे वेखो मंगत्ओ ना जायो थक्क, थकावट जगत ना कोए वखाईआ। मंगदे मंगदे ना जायो अक्क,

जुग चौकड़ी गए विहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला स्वामी इक समरथ, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। जिस दा सिफ्ती गाउँदे रहे जस, वेद पुराण दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत नालों वक्खरी खोल्ह लओ अक्ख, तक्को प्रतख रूप गुसाँईंआ। दर्दी हो के आवो नठ्ठ, भज्जो वाहो दाहीआ। सच दवारे कर इक्ठ्ठ, इक्को बोली दयो सुणाईआ। जे प्रभ देणा ते दे धीरज यति, सति हठ सन्तोख आपणा नाम झोली पाईआ। मानस जन्म ना होवे भठ्ठ, खेड़ा धुर दा देणा वसाईआ। असीं मंगते ब्राह्मण तूं देण वाला सिध्धा जिहा जट्ट, हाण लाभ ना कोए रखाईआ। भावें रोड़ी गंना दे भावें उलट दे मट्ट, काया मटकी दे भराईआ। जो तेरे दवारे आवे सो जाए खट्ट, खटका रहे ना राईआ। ब्राह्मण कहे साडी रीती खा पी के झट, ठूठा बग़ल विच छुपाईआ। दवानी चवानी लै के जाईए नठ्ठ, पिच्छा फेर ना कोए बदलाईआ। जे कोई झोली दाणे देवे सट्ट, गठड़ी भार सीस चुकाईआ। जे कोई खुल्ला वेखीए हट्ट, सस्ते दामां दईए लुटाईआ। नाले कहीए जजमानां दी मारी गई मत, खा के साडा शुकर मनाईआ। नाले वेखीए चोरी अक्ख, हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहरवान कहे मंगत्ओ मंगण दी सिख लओ जाच, याचक हो के दयां समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आई तुहाडी रात, भगत भगवान वज्जे वधाईआ। निक्की जेही समझ लओ बात, बातन परदा दयां खुल्हाईआ। मन मति रखयो ना कोई नार कमज़ात, कुलखणी अंदरों देणी कढाहीआ। आपणी आत्म परमात्म दी समझ लओ ज़ात, दूजी वण्ड ना कोए वखाईआ। उह तुहाडा तुहाडे वसे पास, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जिधर वेखो तक्को सदा साथ, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वड्याईआ। फलगुण कहे धन्न भाग जे मंगण आए मंगते, घर साचे वज्जी वधाईआ। जो मंज़ल अगली लँघदे, पिछला पन्ध चुकाईआ। झगड़े मुका के कूड़े संग दे, इक्को कन्त हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ कर लओ फुरती, चेतन चलाक आपणा आप लैणा बणाईआ। सतिगुर शब्द दान पाओ झोली सुरती, सुती लए अंगड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया चोली दी सोहे कुड़ती, अंगी इक्को वेख वखाईआ। जे कुछ होर नहीं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो प्रभू दे नाम दी लै के जायो गुड़ती, अगे दाईआं दी लोड़ रहे ना राईआ। खेल मुक जाए देवत सुर दी, सुत्यां लए उठाईआ। एह वड्याई पूरे सतिगुर दी, जो गोदी आपणी लए टिकाईआ। मंगत्ओ तुहाडी मनसा रहे ना झुरदी, हिरस हवस दए मिटाईआ। तुहाडी वस्त दिती कदे ना खुरदी, खुद मालक होए सहाईआ। कुछ दात बाकी अनन्दपुर दी, जो पुरीआं लोआं तों बाहर तुहाडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

२६८
१६

कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ तुहाडा देवणवाला दाता, दानी हो के फेरा पाईआ। उस नूं दस्सो आपणी गाथा, तन मन दा हाल जणाईआ। अन्धेरा मुक्के ना अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। लेखा मुके ना बिधना माता, सतरां ढाई ना कोए गवाईआ। चित्रगुप्त दा चुके ना खाता, हिसाब किताब ना कोए कढाहीआ। लाड़ी मौत दा मिटे ना हासा, कोटन हस्तीआं गई मिटाईआ। धर्म राए दा तुटा ना साका, सज्जण साहिब ना कोए मिलाईआ। जन भगतो तुहाडा मेल होया इतफ़ाका, इतमीनान नाल दए समझाईआ। तुहानूं पिछला दान देणा खासा, थोड़यों बहुता दए वरताईआ। आत्म परमात्म जोड़ के नाता, नातवां जोबन दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फलगुण कहे मंगत्ओ झोली लओ अड्ड, अडरा राह वखाईआ। जुग चौकड़ी जिस नूं आए छड्ड, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। उह पार करके दो जहानां हद्द, हाज़र हो के रिहा समझाईआ। जन भगतो इक्को वार तुहानूं बणा ल्या आपणी यद, पिच्छे होर ना कुछ रखाईआ। आपणे नाल सांझा बणा के छन्द, सोहँ ढोला दिता दृढ़ाईआ। छड्ड के पुरी अनन्द, अनन्द तुहाडे अंदर दिता प्रगटाईआ। अगे जाणा पए ना कोल गंग, मईआ सीस ना कोए निवाईआ। दान लवो भावें निशंग, निशाना आपणा दए लगाईआ। जेहड़े भगत दवारा आए लँघ, उह प्रभू नूं आपणे अन्तर गए समाईआ। श्री भगवान तुहाडे दवारयों खावण वाला डंग डंग, टुकड़ा टुकड़ा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल दए समझाईआ। फलगुण कहे मैं वेखे फलदे फुलदे, पत्त टहणी नाल महकाईआ। जोबन वेखे गुंचे गुल दे, गुलशन रहे महकाईआ। भा वेखे जगत मुल्ल दे, कीमत टकयां वाली समझाईआ। जिस वेले श्री भगवान दे सच दवारे खुल्हदे, लोकमात वज्जी वधाईआ। जेहड़े मंगते प्रभू दी कुल दे, उह कुल्ल मालक आपणे नाल रलाईआ। भगतो तुसीं मंगण वाली वस्तू अजे भुलदे, भुल्लयां दए समझाईआ। जिन्हां दे अन्तर मेरे प्रेम प्यार दे हन्झू डुल्हदे, बिन अक्खां नीर रहे वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। फलगुण कहे जन भगतो तुहाडे अंदर सति सन्तोख, सन्तुशट दए कराईआ। तुसीं दयो प्रभू नूं मोख, आपणे पाप इस दी झोली पाईआ। झगड़ा मुका लओ लोक परलोक, आवण जावण रहे ना राईआ। मन दी कूड़ी छड्ड दयो सोच, समझ बुध ना कोए वड्याईआ। झगड़ा मुक जाए हरख़ सोग, चिन्ता ग़म ना कोए वखाईआ। जिस ने तुहानूं आपणे नाम दी दिती चोग, तृष्ना भुक्ख दिती मिटाईआ। दर्शन दे के इक अमोघ, अमरापद दिता जणाईआ। पन्ध मुका के जगत विजोग, धुर संजोग ल्या जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। भगतो तुसीं ब्राह्मण के डूंम, ढोल ढमक्का

नज़र कोए ना आईआ। जिस प्रभू नूं पिच्छे सारे समझदे रहे सूंम, कंजूसां दा कंजूस दए जणाईआ। तुहाडे साहमणे चार जुग दा बदल के कानून, कायम कर के तुहानूं दिता वखाईआ। इक्को दस्स के अगम्मा मज़मून, शास्त्र सिमरत वेद पुराण दिते भुलाईआ। धुर दा मार्ग दस्स असूल, असलीअत इक्को दिती दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फलगुण कहे मैं वेख्या तक्कया जाणया जग, जगदी जोत नज़री आईआ। मैनूं खुशी होई अज्ज, मिली सच वड्याईआ। जो दो जहानां श्री भगवाना आया तज, निरवैर आपणा वेस वटाईआ। सच सिँघासण बैठा सज, सज्जण गुरमुख नाल मिलाईआ। बिना काअब्यों करा के हज्ज, हाज़र हो के दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा दूर कराईआ। फलगुण कहे की मंगण पंडत पांधे, मंग मंग थक्के विच लोकाईआ। गऊ नूं कह के गऊ माता चराउँदे रहे ढांडे, सीर जगत मुख चुआईआ। गंगा गोदावरी रहे नहांदे, जञ्ञू बोदी कर सफ़ाईआ। सूरज नूं पाणी रहे चढ़ांदे, चुलीआं नाल भराईआ। नौ नौ टुभीआं रहे लांदे, नेत्र नैण बन्द वखाईआ। प्रभू दा दरस मूल ना पांदे, त्रसूल मथ्थे उत्ते घसाईआ। अग्गा पिच्छा तक्कण आउँदे जांदे, करमण्डल हथ्थां विच खड़काईआ। खीरां वाले तक्कण भाण्डे, सूकर डंडयां नाल हटाईआ। मूर्ख मति नाल रहे खांदे, गुरमति ना कोए जणाईआ। पुत्रां जंम्यां तों घर घर रहे जांदे, ओअँ तत सति सुणाईआ। प्रभ चरणां तों रहे वांझे, दरगाह मिली ना कोए सरनाईआ। अन्त हथ्थ गए नांगे, परदा ओढण ना कोए टिकाईआ। होई सहाई ना माई गांगे, गुंगी हो के बैठी ज़बान दबाईआ। नाते बणे ना सच्चे सांझे, सज्जण यार ना कोए हंढाहीआ। अन्तिम रो रो नीर वहांदे, हन्झूआं हार बणाईआ। बिन साहिब स्वामी पछतांदे, पिच्छा अगे ना कोए छुडाईआ। सो कलयुग अन्तिम मंगण आए ना मूल शरमांदे, मांगत हो के झोली डाहीआ। जो दर आ गए झक्खड़ मींह झांजे, आपणा पन्ध मुकाईआ। उह बह गए घर ठांडे, जित्थे अग्न ना कोए तपाईआ। एसे करके चौल पक्के विच हांडे, ब्राह्मण देणे खवाईआ। जिन्नां दी पूरी करनी तांघे, तृष्ना देणी मिटाईआ। ख़ाली भरने भाण्डे, ऊणता रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। जन भगतो प्रभ दा ना कोई पुत्त ना कोई पोतरा, पिता सब दा नज़री आईआ। उह खुशीआं विच किसे दा सगणां वाला चुक्के ना टोकरा, भार गठड़ी हथ्थ ना कोए उठाईआ। ना कोई धी ते ना कोई दोहतरा, ना कोई बणे जवाईआ। ना जावे कदे प्रभ औंतरा, सद वजदी रहे वधाईआ। पंडतो अगे तुहानूं किसे नहीं बहाउणा साफ़ कर के चौंतरा, गऊ गोबर ना कोए फिराईआ। तुहानूं बहणा पए ना मार के चौंकड़ा, हथ्थ टिंडा उत्ते टिकाईआ। तुहाडे अगे किसे गुरमुख नहीं रखणी रोकड़ा, दच्छणां दान

३००
१६

ना कोए वरताईआ। तुहाडा वेहड़ा रहिणा नहीं मोकला, भीड़ी गली देणी समझाईआ। डूँग्घा दस्सणा कोठड़ा, दरवाज़ा दर ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे जन भगतो तुहानूं सदा वधाई, वाधा तुहाडे विच बणाईआ। भगतां विच भगत मिल के बणया भाई, वड्डा छोटा ना कोए वखाईआ। जिस दा पिछला लेखा लहिणा देणा नानक दस्स के गया राही, रहबर हो के आप जणाईआ। दाता दानी देवणहार बेपरवाही, बेपरवाह आपणा रंग चढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी, परदा ओहला रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फलगुण कहे भगतो दस्सां साख्यात, सहिज सहिज समझाईआ। वेद व्यासा लिख के गया नाल कलम दवात, पुराण भविख विच दृढ़ाईआ। जो शेरा वाली ज़ात, शहिनशाह सरनाईआ। जिस वेले कल आवे अन्धेरी रात, कलमा भुल्ले लोकाईआ। खेल होवे चार कुण्ट दहि दिशा समझे कोई ना बात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए दृढ़ाईआ। फलगुण कहे वधान नहीं एह वाधा, वज़्हा नाल जणाईआ। जे पूरन सिँघ समझयो दादा, एह वी भुल्ल वखाईआ। जिस दा प्रेम सब नाल सांझा, हिस्सयां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमाना सुणो अज़ीज़, बच्चयो दयां समझाईआ। साची दस्स तमीज़, तमअ दयां गवाईआ। तक्को ला के नीझ, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। तुहानूं चाअ ते तुसीं करो रीझ, रीझ दे अगे प्रभ नूं लओ मनाईआ। जो प्रेम प्यार प्रीती अंदर जाए पतीज, इक्को पिता इक्को माईआ। जे गुर प्रनाली दी समझ लओ तरतीब, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। जन भगतो तुसीं पातशाह मैं मंगता तुहाडा ग़रीब, तुहाडे गुनाहां दा मालक जनांह विच्चों लवां बचाईआ। तुसीं मंगते नहीं मैं मंगता तुहाडी लँघ के आया दहिलीज़, सचखण्ड निवासी हो के लोकमात फेरा पाईआ। किसे गया नहीं मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ्ठ राह ना कोए तकाईआ। जुग चौकड़ी दी तुहाडी लग्गी प्रीत, प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ। तुहाडे नालों मैनूं तुहाडी बहुती उडीक, तुसीं बीते दिन गिणो मैं घड़ी घड़ी तुहाडा राह तकाईआ। सच पुछो मैं तुहाडे अंदर सदा नज़दीक, दूर नेड़ा ना कोए वखाईआ। तुहानूं चिर लगदा बदलण लगयां कमीज़, मैं इस तों पहलों कोटन चोले दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। मंगत्ओ तुहानूं होई खुशी, अमरजीत होया घर पुत्तर, वज्जी इक वधाईआ। मैं अर्शां तों आवां उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण आपणी धार चलाईआ। तुसीं मेरा थोड़ा करो ते मैं तुहाडा बहुता करां शुकर, शायद तुसीं नहीं समझे मैं दयां समझाईआ। दस्सो मैं किहनूं ना चुकां कुच्छड़, सारे इक्को जिहे नज़री आईआ। मैं ना किसे दा

चाचा ताया ना किसे दा फुफड़, भैण भाई वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। फलगुण कहे जन भगतो मैं वेखां उह फुल्ल, जिस दी डोडी बिन गोडी सोभा पाईआ। जो कदी ना जावे रुल, आपणा रूप ना सके बदलाईआ। तुहाडे कोल पवाउण आ गया मुल्ल, कीमत तुसां देणी चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। फलगुण कहे मैं फलया, रस आपणा ल्या बणाईआ। लोकमात ओहनां विच रलया, जो रंग रलीआं प्रभ दे नाल रहे मनाईआ। उस ढांचे विच ढलया, जिथ्थों बाहर ना कोए कढाहीआ। उह दवारा मल्लया, जित्थे वजदी रहे वधाईआ। जन भगतो तुहानूं सुनेहड़ा प्रभ ने इक घलया, अगे घलूघार होवे लड़ाईआ। तुसीं आपणे आप नूं कदी ना समझयो इकल्लया, जिधर वेखो उधर नज़री आईआ। प्रीतम हो के फड़या पल्लया पल पल दी कटे जुदाईआ। तुहाडा बिरहों ना जावे झल्लया, झलक देवे नूर खुदाईआ। मेरा ज़ख़म अजे अलया, अल्ला दी सौंह सौह अल्ला राणी अन्त आपणे नाल प्रनाईआ। किसे चोणा नहीं मकबरयां उत्ते तेल पलीआ, दीवा चराग़ ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म नाल हुक्म दए बदलाईआ। हुक्म कहे मैं दस्सणा सब दा इक हकीम, जन्म कर्म दा रोगी रहिण कोए ना पाईआ। दूजा रहिण नहीं देणा नीम, ख़तरा जान ना कोए जणाईआ। इक दा इक नूं दे के यकीन, इक दा एकँकार देणा वखाईआ। धुर दी दस्स तालीम, तुलबा देणे पढ़ाईआ। महल्ल दस्स अज़ीम, आज़म देणा मिलाईआ। वड्याई दे के उत्ते जमीन, जामन हो के अगे लैणा छुडाईआ। सब ने कहिणा यामबीन, याअमीन तेरी इक सरनाईआ। जन भगतो तुसां बणना नहीं किसे दे कमीन, इक्को घर दे मंगते इक्को देवणहार अख्वाईआ। रहिणा नहीं ग़मगीन, ग़मां तों लए छुडाईआ। तुसां मेरी दिती होई दात करनी तसलीम, तम्हां जगत रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग अगला दए वखाईआ। फलगुण कहे जन भगतो मैं चलया मुक, चढ़के खुशी वखाईआ। अगे बदल देणा रुख़, पासा देणा उलटाईआ। किसे घर रहिण नहीं देणा सुख, सुखी वसे ना कोए लोकाईआ। बिना भगतां भाग लग्गे ना किसे कुक्ख, जणेंदी माँ ना कोए वड्याईआ। गुरमुखो तुहाडी भुखयां दी मिटा के भुक्ख, झोली इक्को देणी भराईआ। तुसीं जदों आओ मेरे नाल मानस जन्म विच मुक्ख, मुखीए आपणे जगत दयां वखाईआ। भगवान नूं सदा भगत दे विछोड़े दा दुःख, विछड़यां लए जुड़ाईआ। जिस वेले मैथों जाओ रुठ, मैं लोकमात कदे ना आवां निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। जिस वेले सांझा वेला जावे ढुक्क, समां दयां बदलाईआ। तुहाडा इक्को पिता ते तुसीं इके दे पुत्त, इक्को जम्मण वाली माईआ। धुर दी धार दे के साचे सुत, सुत्यां लवां उठाईआ।

फलगुण वाली मौले रुत, बसन्त रही महकाईआ। जेहड़े मंगते मन रसना तों बैठे चुप, हक सब दा वेख वखाईआ। जिन्हां सोहँ गा लई तुक, उह तुरत आपणे विच समाईआ। जो प्रेम नाल गया झुक, अनझक हो के पैंडा दयां चुकाईआ। जो लोक लज्जया विच गए रुक, लख चुरासी विच दयां भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। मंगत्ओ मंगण दा वेला, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। इक्को रूप हो जाओ गुरू चेला, चिल्लयां दी लोड़ रहे ना राईआ। ओस नाल हो जाए मेला, जिसदे मिलयां ना होए जुदाईआ। गुरमुख कदे ना रहे अकेला, अकल कलधारी आपणा साथ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान माहर गुरमुख लए बणाईआ। फलगुण कहे मैं तक्की सच फुलवाड़ी, रस अगम्मा नज़री आईआ। जिस दी याद आवे सौणी हाढ़ी, हाढ़ा कढ्ढे लोकाईआ। उह मंगतयां दी लेखे लावे चरण छुहाई दाढ़ी, वस्त अमोलक नाम दान झोली पाईआ। सदा रहे पिच्छे अगे अगाड़ी, एथे ओथे संग बणाईआ। सब दी लेखे लावे दिहाढ़ी दयोहाढ़ी सदवार, होड़ा जोड़ा जोड़ा दए वखाईआ। जेहड़े मंगते जुग जन्म दे उम्मीदवार, मंगदे मंगदे दवारे पहुंचे आण, तिन्हां दे ख़ाली भरे भण्डार, भुक्ख्यां दए रजाईआ। ब्राह्मण गुरसिखां नूं अगे कोई ना कहे चंगा नहीं शनिचरवार, शंके सारे दए मिटाईआ। जन भगतो फलगुण कहे तुहाडी जन्म तों लै के अन्त तक अन्त तों लै के कन्त तक सदा इक्को जेही बहार, बहार विच मिले यार, यार विच निरँकार निरँकार विच आपणा दीदार दए दखाईआ। तुसीं किसे दर ते बणयो ना भिखार, मांगत हो के मंगण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, स्वालीआं दे मन्ने सारे स्वाल, ज़वाल तुहाडा दिता चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भवगान, झगड़ा मुका के जगत काल, महाकाल तों परे आपणे विच समाईआ।

✪ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

करे खेल प्रभ अगम्मी हस्ती, हरि सतिगुर दया कमाईआ। मार्ग दस्से धुर दा अर्शी, फ़र्शी हुक्म सुणाईआ। जन भगतां नाम खुमारी देके मस्ती, मस्तुआणा सतिगुर चरण धाम प्रगटाईआ। जो आत्मा जुग जन्म आई नसदी, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। जोत अकालण अकलां वालयां सच दस्सदी, दहि दिशा दए समझाईआ। एह खेल नहीं किसे दे वस्स दी, धुर दा हुक्म हरि करता आप प्रगटाईआ। जेहड़ी पिछले जन्म दी राणी इस जन्म दी सुरस्ती, सुत्तयां ल्या उठाईआ। उस दी भावना अंदर दी अक्ख दी, भाणे विच समाईआ। अगे वास्ते उह भगतां नूं तिलक लावे हस्सदी हस्सदी, मंगणी व्याह

विच मस्तक रंग चढ़ाईआ। हरि संगत भरी होवे जस दी, ढोले साहिब स्वामी गाईआ। प्रीती वेखणी सज्जे हथ्थ दी, जिस नाल गोबिन्द फड़ के गोदी विच टिकाईआ। कथा कहाणी नहीं अज्ज दी, जुग जन्म दी चली आईआ। जन भगतो तुहाडी रीती नहीं जग दी, जागदी जोत दए वड्याईआ। खेल मुकी वरनां बरनां वाली हद्द दी, घर इक्को दिता समझाईआ। आवाज़ सुण लओ ओस अगम्मी नद्द दी, जो धुन आत्मक करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोड़ी उह बणाए जो एथे ओथे सजदी, सज्जणां नाल सज्जण लए मिलाईआ। तिलक कहे मैं लग्गां ओस उंगली, जो पंजां विच्चों वड्डी नज़री आईआ। खोल्हां अंदर गुंझली, परदा दयां उठाईआ। अगे गुरमुख गुरमुख दी करे कोई ना चुगली, निंदया वाला मुख ना कोए वखाईआ। एह रीती प्रभ ने फेर प्रगटाई मुढली, जो विष्नूं ब्रह्मे दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। उंगली कहे नव नौ चार पिच्छो मैं वड्डी तों होई वड्डी, पुरख अकाल वड्डी दिती वड्याईआ। मैं पिछली रीती छड्डी, आपणी लई अंगड़ाईआ। दो जहानां दी बदल के गद्दी, गाईड गॉड दिता वखाईआ। परम पुरख दी जणा के पहली सदी, बरसी पहली रही मनाईआ। धन्न वड्याई जे भगतां दी वेल वधी, वाधा हरि सतिगुर रिहा वखाईआ। प्रीती प्रीतम नाल लग्गी, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए भुगताईआ। उंगली कहे जिस वेले मैं लग्गणा नाल संधूर, सनद साची देणी बणाईआ। गुरमुख साफ़ कर के वांग काफ़ूर, कामल मुर्शद देणा मिलाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। अगे भगतां दा दस्स के सच दस्तूर, दस्त नाल दस्त देणा मिलाईआ। बेड़ा भर के साचा पूर, पारब्रह्म दा चप्पू देणा वखाईआ। लहिणा देणा झोली पा के हाज़र हज़ूर, हाज़र हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर आपणी नाल तराईआ। उंगल कहे मेरी किसे नहीं पाई सार, वड्डी तों वड्डी ना कोए बणाईआ। जुग चौकड़ी बीते चार, चारज गुरू अवतार पैगम्बर आपणे हथ्थ विच टिकाईआ। कोटां विच्चों भगत लभ्भे दो चार, चार वरन रो रो मारे धाईआ। पुरख अबिनाशी आया आपणी वार, वारता आपणी दए जणाईआ। भगत सुहेले कर के ख़बरदार, बेख़बरी विच्चों उठाईआ। जुग जन्म दा कर्म विचार, धर्म दी धार बणाईआ। दस्स के सांझा प्यार घर इक्को रिहा वखाईआ। हक दे के पुरख नार, समरथ बख्शणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रीती विच्चों नीती दए बदलाईआ। उंगली कहे जिस वेले मैं लग्गणा भगतां दे नाल मस्तक, मस्त खुमारी देणी चढ़ाईआ। गुरमुख रहे कोई ना नास्तिक, कूड़ी करया बाहर कढाहीआ। नाता जोड़ के इक्को वास्तवक, विश्व रूप देणा समझाईआ। जिन्हां नूं पढ़ना

पए ना कोई शास्त्र, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर वसाईआ। मस्तक कहे जिस वेले मैं सुरस्ती दा तक्कणा हथ्थ, बल दी मासी नज़री आईआ। जिस दा लेखा गुरदयाल सिँघ हौली जेही गया सी दस्स, वीह सौ चौदां विच समझाईआ। ओस दा पूरा मिलण लग्गा हक, हकीकत दए गवाहीआ। अगे रहे कोई ना शक, शकायत करन कोए ना आईआ। हुक्म देवे पुरख समरथ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। जिस दे नक्क सुहाग दी नथ्थ, मीढी सीस सच गुंदाईआ। उह गुरमुखां तक्के इक अक्ख, अक्ख विच्चों अक्ख ना कोए बदलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए हस्स हस्स, गुरमुख हस्ती आपणी मस्ती विच रखाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बलवन्त सिँघ दे गृह तलवण्डी जुलेखां ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

फलगुण कहे मेरा आ गया वक्त सुभागा, सभा सच दी वेख खुशी मनाईआ। गुरमुखां गोबिन्द पिता पुरख अकाल मिल्या दादा, दाअवेदार आपणे रिहा बणाईआ। जिन्हां दे अन्तर आत्म अमिउँ रस दिता स्वादा, अनडिठ आप चखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के रागा, नाता ल्या जुड़ाईआ। तन्दी डोर फड़ के वागा, वाकिफ़ आपणे रिहा बणाईआ। मेल मिला के कन्त सुहागा, जगत विछोड़ा रिहा कटाईआ। दीपक जोत जगा चिरागा, चार वरन दए सरनाईआ। सति प्रेम दा सन्तोखीआं कोलों खा प्रशादा, प्रशाद आपणा सब नूं दए वरताईआ। लेखा लिख के गया बिन कलमों इशारे विच बुढ्ढा बाबा, नानक निरगुण निरवैर ध्यान रखाईआ। आसा विच आसावंद रिहा नाल कृष्न राधा, राह तक्क नैण उठाईआ। राम सीता भोजन खाधा सादा, बनबास पंचबटी डेरा लाईआ। बल ब्राह्मण बुढ्ढे नूं मारदा रिहा आवाज़ा, बावन अक्ख ना कोए पुटाईआ। शब्द अगम्मी खोल्ह दे राजा, राज़क रिज़क रहीम रिहा जणाईआ। मुहम्मद आस रखी विच नमाज़ा, माशाअल्ला नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। फलगुण कहे मैनूं याद आ गया भविख्त, धुर दी भाख्या दए गवाहीआ। जिस वेले ईसा लिखण लग्गा सी लिख्त, इष्ट आपणा इक मनाईआ। खुल्ही अंदरों दृष्ट, दहि दिशा सुणी शनवाईआ। लेखा मुक्कया बहिश्त, जलवा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फलगुण कहे जिस वेले ईसा ने कीता सलाम, सीस सजदयां विच झुकाईआ। आई अगम्मी कलाम, कलमा इक जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम बदले निज़ाम, नौबत वज्जे बेपरवाहीआ। प्रगट होवे इक अमाम, कामल मुर्शद फेरा पाईआ। झगड़ा मुकावे तमाम, तमअ कूड़ी दए गवाईआ। प्रेमीआं प्यारयां दए आराम, सच दुआर सच

सरनाईआ। हुक्में अंदर इक पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। साचा दस्स के धुर निशान, निशाने पिछले दए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया दस्स के खेल हराम, मेहर नज़र नाल उठाईआ। झगड़े मुका के तमाम, तामस दए रुढ़ाईआ। सति प्रेम दा पका के इक पकवान, पक्के आपणे नाल रलाईआ। ईसा किहा उह केहड़ा दान, कवण झोली दए भराईआ। परवरदिगार किहा मैं आप होवां मेहरवान, महबूब हो के मुहब्बत विच्चों प्रगटाईआ। तूं बाला नढ्ढा अंञाण, समझ अगे ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। फलगुण कहे मेरी बदलदी आई रुत्त, रुतड़ी वेस वटाईआ। नव नौ चार पिच्छो होया खुश, खुशीआं विच सुणाईआ। नाता वेख के पिता पुत्त, गुरमुख गुर गुर वज्जी वधाईआ। जो अंदर बैठा लुक, सो बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दे नाम दी इक्को तुक्क, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। सो गुरमुखां दवारे प्रीती अंदर प्रेम दा मंगे टुक्क, टुकड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम दा दे के सुख, दु:ख दलिद्र दए गवाईआ। फलगुण कहे मेरे उत्ते आई हैरानी, अन्तर दए गवाहीआ। पुरख अकाल कर के मेहरवानी, महबूब फेरा पाईआ। जन भगतां मंज़ल दे के जाए आसानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द दी लेखे लाए कुरबानी, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। बख्शिश करे गुण निधानी, रहमत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फलगुण कहे मैं वेख्या घर प्रेम प्यार दा फुलका, खुशीआं नाल बणाईआ। भाग उज्जल होवे साची कुल दा, जो कुल्ल मालक मिल के खुशी मनाईआ। लहिणा मुक्कणा साची चुल्ह दा, सम्मत सोलां पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लहिणा देणा कदे ना भुल्लदा, मग्घर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। फुलका कहे मैं आदि जुगादि रिहा पकदा, अग्नी तत तपाईआ। मेरा लहिणा देणा मुकया ना सज्जण सच दा, साचे हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मैं अधार बणया रिहा माटी भाण्डे कच्च दा, मन वासना जगत फिराईआ। नव नौ चार पिच्छो मेरा सुभाग दिहाढ़ा होया अज्ज दा, प्रभ प्रीती रीती विच्चों बदलाईआ। खेल निराला भगतां विच जग दा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुक गया हज्ज दा, हाजत सब दी पूर कराईआ। जिन्हां दवारयों पुरख अकाल खा खा के आप रजदा, भण्डारे उन्हां दे दए भराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हक किसे दा आदि जुगादि ना रखदा, जुग चौकड़ी खुशीआं नाल झोलीआं दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले साजण सद्दा, सिध्धे सादे सधरां विच रखाईआ।

✪ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

चौदां फलगुण कहे मैं जलवा तक्कया निरगुण जोत, नूर नुराना नूर नज़री आईआ। दर दरबार वेख्या सचखण्ड दवारा अगम्मी कोट, छप्पर छन्न चार दिवार नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणे गाउँदे इक सलोक, तूं मेरा मैं तेरा धुर दा राग इक अलाईआ। सीस झुकाउँदे वेखे विष्न ब्रह्मा शिव चौदां लोक, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी सारे मंगण प्रभू तेरी इक्को ओट, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तेरा भाणा लोकमात सके कोई ना रोक, निरगुण सरगुण मेटे ना कोए मिटाईआ। तेरा हुक्म फ़रमाना संदेसा धुर दा बहुत, ज़िमीं असमान रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी देणी दृढ़ाईआ। साची करनी दस्स श्री भगवन्त, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरी महिमा कह के गए बेअन्त, सिफ्त सालाही ढोले गाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा खोजदे कोटन सन्त, सच स्वामी नैण उठाईआ। भेव अभेदे अछल अछेदे दस्स आपणा मंत, मंत्र इक्को इक जणाईआ। सच दवारे हरि निरँकारे मेला होवे आत्म परमात्म नार कन्त, सेज सुहञ्जणी जोत निरँजणी वज्जे वधाईआ। झगड़ा चुक्के लख चुरासी माया ममता हउमें हंगत, जीव जंत करे रुशनाईआ। दर भिखारी दर दरवेश बैठे धुर दे मंगत, मन वासना दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दए सरनाईआ। चरण कँवल प्रभ देदे सरन, दर ठांडे मंग मंगाईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नैण होवे रुशनाईआ। झगड़ा चुका दे मरन डरन, भय भउ ना कोए जणाईआ। तेरा ढोला तेरे गीत तेरे गुरमुख इक्को पढ़न, चौदां विद्या लोड़ रहे ना राईआ। साची मंज़ल पाँधी बण के चढ़न, अन्त अख़ीरी कदम उठाईआ। त्रैगुण अग्नी माया तत विच ना सड़न, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। झगड़ा मुक जाए वरन बरन, अठ्ठ दस ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं दाता तरनी तरन, तारनहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र उठा श्री भगवान, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। आत्म सेजा कर बिसराम, विष्न ब्रह्मा शिव वेखण चाँईं चाँईंआ। ढोला सुणा अगम्मी नाम, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। कलमा दे अगम्मी कलाम, कायनात विच्चों बाहर पढ़ाईआ। सच वखा इक निशान, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवन्त, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख लभ्भे विच्चों जीव जंत, घट भीतर खोज खुजाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हिरदे हरि दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार सच्ची सरनाईआ। देवणहार सच्ची सरनगति, चरण कँवल इक दृढ़ाइंदा।

३०८
१६

आत्म परमात्म धुर दी मत, मनमति ना कोए रखाइंदा। सति सन्तोखी धीरज जत्त, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। मन वासना नालों कर के वक्ख, बोध अगाध आप समझाइंदा। हकीकत विच्चों दे के हक, निज अक्ख आप खुल्हाइंदा। अमृत अंमिउँ दे के रस, अग्नी तत बुझाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाउणा जस, धुर दा ढोला आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाइंदा। चौदां फलगुण कहे मेरी आ गई लोकमात रात, भिन्नड़ी रैण वज्जी वधाईआ। मैं वेखणा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रिहा वरताईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो पूरी होण लग्गी आस, नूर नुराना कर रुशनाईआ। जन भगतां हो के साथ, सगला संग बणाईआ। निरअक्खर वक्खर दस्स के गाथ, निहकर्मी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणे देणे वेख वखाईआ। लहिणा देणा वेखणहारा, देवत सुर खोज खुजाईआ। कलयुग खेल करे अपारा, निरवैर वेस वटाईआ। भगतां खोल्ह के बन्द किवाड़ा, ताकी कुण्डा देवे लाहीआ। दीपक दीआ कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, गृह गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा चुकाईआ। फलगुण कहे मेरी आसा होई पूरी, आहिस्ता आहिस्ता दयां जणाईआ। सुणया नाद अगम्मी तूरी, तुरीआ तों अगे गया जणाईआ। जित्थे वस्त नहीं कोई कूड़ी, सति सच वज्जे वधाईआ। पंज तत चरण ना कोई धूढ़ी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिधर तक्को हाज़र हज़ूरी, हज़रत मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर कहे मैं जावां सदके, बलिहार मिली सरनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दर्शन करां रज्ज के, तृष्ना भुक्ख ना अवर वधाईआ। काया अन्तर आपणी लभ्भ के, खोजत खोजत वेख वखाईआ। झगड़े मुका के नौ दवारे हद्द दे, सुखमन टेडी बंक पन्ध चुकाईआ। नाद अगम्मी वेखां वजदे, धुन आत्मक होए शनवाईआ। दीपक वेखां जगदे, घर विच घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। परदा ओहला देवे चुक्क, चाकर हो के सेव कमाईआ। दूई द्वैत मेट के दुःख, सुख आत्म दए उपजाईआ। घर स्वामी सज्जण जो बैठा लुक, नकाब परे दए सुटाईआ। गली भीड़ी मंज़ल पैंडा जाए मुक, घर मिले बेपरवाहीआ। परमात्म हो के आत्म लए पुछ, जन्म जन्म दी कटे आप जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार आप वड्याईआ। आत्म परमात्म करे मिलाप, मिलणी जगदीश कराइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को जाप, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। निरगुण सरगुण कर के पाक, पतित पुनीत दया कमाइंदा। निज घर दर्शन देवे साख्यात, जोती जाता डगमगाइंदा। नाम संदेसा देवे बिना कलम दवात, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता जोड़ के धुर दा साक, सज्जण इक्को सोभा पाइंदा। सज्जण मिले साहिब स्वामी, आत्म अन्तर वज्जे वधाईआ। बोध अगाध दस्से इक्को बाणी, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। भेव अभेदा खोले शाह सुल्तानी, शहिनशाह आप समझाईआ। सन्त सुहेला बणा के ब्रह्म ज्ञानी, विद्या आपणी दए पढ़ाईआ। झगड़ा मुका के अठ्ठसठ्ठ पाणी, अमृत झिरना दए झिराईआ। शब्द अगम्मी मार के तीर कानी, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। तत वजूद लेखा चुक्के सृष्टी दृष्टी फ़ानी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। जन भगतां उत्ते कर के आप मेहरवानी, महबूब आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित वेख वखाईआ। फलगुण कहे मैं की दस्सां, रसना जेहवा नज़र कोए ना आईआ। जगत नेत्र ना कोई अक्खा, नैण नैण ना कोए बदलाईआ। इक्को हुक्मे अंदर वस्सां, भाणे विच समाईआ। सेव करां बिन हथ्थां, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। वणज करां बिन हट्टां, भज्जां चाँईं चाँईंआ। साचा लाहा इक्को खट्टां, सहिजे सहिज दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वेस वटा के वांग नटां, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। जिस नूं समझ ना सकण कोटन मतां, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। जगत जहान रह जाए हका बक्का, हकीकत हक ना कोए दरसाईआ। बिना भगतां श्री भगवान दा मिले किसे ना पता, पतिपरमेश्वर जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी वासना प्या रट्टा, झगड़े विच लोकाईआ। गढ़ हँकार बुरज ना ढठ्ठा, दूई द्वैत ना कोए गवाईआ। साचा भोजन किसे ना चक्खा, अमृत रस कोए ना खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्ची सरनाईआ। फलगुण कहे घर घर पके पकवान, नव नौ सत्त पेट भराईआ। स्वामी मिले ना कोए भगवान, भागां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जगत बुद्धी होई अन्जाण, अनुभव परदा ना कोए खुल्हाईआ। सृष्टी दृष्टी होई वैरान, वैरी हो के देण दुहाईआ। सति धर्म गया निशान, निशाने सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार बेपरवाहीआ। पकवान कहे मैनूं सारे कैहिंदे रोटी, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। मैनूं खा के सब दी वासना होई खोटी, कूड़ा कर्म कमाईआ। जीवां जंतां खा के बोटी, मेरा स्वाद रहे वधाईआ। मैं वेखण आया जेहड़े गुरमुख चढ़े मंज़ल चोटी, पैंडा आपणा रहे मुकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अन्धेर दए चुकाईआ। भावें ताअने देवण लोकी, इक्को पुरख अकाल रहे मनाईआ। उन्हां पढ़नी पए ना पोथी, बगल कुरान ना कोए टिकाईआ। उन्हां दी सोच श्री भगवान रिहा सोची, समझ आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म रिहा वरताईआ। पकवान कहे मैं रिहा पक्कदा, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। मेरा लहिणा मिल्या ना हक दा, हकीकत झोली

कोए ना पाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां आया दस्सदा, रो रो दयां दुहाईआ। मालक मिलाउणा इक्को सच दा, जो शाह पातशाह शहिनशाह अख्वाईआ। जो लख चुरासी भाण्डा घड़े कच्च दा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। जो मार्ग दस्से निज नेत्र लोचन अक्ख दा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जो पैंडा मुकाए हकीकत हक दा, मंज़ल इक चढ़ाईआ। जो मुकामे हक वसदा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा भण्डारा सिफ्ती जस दा, जुग चौकड़ी रही सालाहीआ। उह भगतां पैज रखदा, नित नवित दया कमाईआ। दर्शन करना सूरे सरबग दा, चरण कँवल मिले सरनाईआ। नाता तुट्ट जाए कूड़े जग दा, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। पैंडा मुक जाए शाह रग दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फलगुण कहे मैं वेख्या जुग चौकड़ी चार, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। भगत भगवान वेख्या प्यार, प्रेमी प्रेमिका रूप बदलाईआ। आत्म परमात्म वेख्या अधार, तृष्ना मोह ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण खेल वेख्या संसार, जीवण जीवण रंग रंगाईआ। सो वेला वक्त रिहा विचार, घड़ी पल थित वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप समझाईआ। धुर दी करनी करे प्रभ आप, आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां दे के साथ, सगला संग बणाइंदा। पढ़ा अगम्मी गाथ, गहर गम्भीर रंग रंगाइंदा। मंत्र दस्स के साच, सति सच विच मिलाइंदा। शब्द चढ़ा के राक, पुरीआं लोआं बाहर कढाइंदा। आत्म परमात्म कर इतफ़ाक, परदा ओहला दूर कराइंदा। पूरा कर भविख्त वाक्, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे जग, पारब्रह्म दया कमाईआ। चारों कुण्ट वेखे लग्गी अग्ग, अग्नी तत रही जलाईआ। साचा करे कोई ना हज्ज, हुजरा हक ना कोए सुहाईआ। आत्म परमात्म नालों होई अलग, मन वासना करी जुदाईआ। सच सिँघासण मेल ना होया सज, सज्जण मीत जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। बिन अक्खां दरस ना कीता रज्ज, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे एक, एकँकार दया कमाईआ। जन भगतां दे के धुर दी टेक, टिक्के मस्तक दए लगाईआ। त्रैगुण माया ना लागे सेक, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। सचखण्ड दवारा वखा के आपणा देस, इक्को नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत जोत प्रवेश, तत वजूद ना कोए बणाईआ। ना कोई विष्न ब्रह्मा महेष, गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार बैठे सीस निवाईआ। इक्को कलमा इक्को नाम इक्को ढोला इक्को सोहला इक्को करन आदेस, इक्को नाद रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दरस्सणहार प्रीत, आत्म परमात्म परमात्म आत्म रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म रंगे रंग, भगत भगवन्त

वज्जे वधाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, सच स्वामी सोभा पाईआ। शब्द अनाद वज्जे मृदंग, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। बिन रसना जेहवा आवे उह अनन्द, जो अनन्दपुरी वाला आपणे विच छुपाईआ। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। ना कोई बन्दगी अंदर करे बन्द, ना कोई कलमे रिहा पढ़ाईआ। ना कोई ढोला गीत छन्द, सोहला राग ना कोए सुणाईआ। इक दीन दयाल साहिब कृपाल बैठा बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां सदा संग, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वड्याईआ। वड्याई कहे मैं सिफ्त करां की भगत, भगवन अन्तर नज़री आईआ। मैं नमस्ते कर कर थक्कां विच जगत, निउँ निउँ लागां पाईआ। जिन्हां दा मेल नाल इक्को होया फ़कत, फ़िकरा इक्को ढोला गाईआ। ओहनां दा एथे ओथे सुहञ्जणा वक्त, निरगुण निरगुण ना होए जुदाईआ। नाता छड्ड के बूँद रक्त, जोती जोत विच समाईआ। ना कोई दूई द्वैती रहे हसद, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा राह इक वखाईआ। धुर दा राह दस्से ग़रीब निवाज़, कलयुग अन्तिम दया कमाईआ। सतिजुग साचा होवे प्रकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, आसा आपणे विच समाईआ। परम पुरख दे करके दास, दस्त बदस्त सीस झुकाईआ। मन वासना कर के अनाथां अनाथ, गढ़ हँकारी दए तुड़ाईआ। शिवजी तक्के उपर कैलाश, ब्रह्मा नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। विष्नूं चले साथ साथ, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला बेपरवाहीआ। भगत सुहेला बेपरवाह, बेपरवाही विच समाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा लोकमात चलाइंदा। कलयुग अन्तिम दया कमा, दीनां अनाथां आप उठाइंदा। जन्म जन्म दा लेखा झोली रिहा पा, पूरब विछड़े जोड़ जुड़ाइंदा। जन्म कर्म दे कट गुनाह, गहर गम्भीर रंग रगाइंदा। सच दवारा इक वखा, परदा ओहला आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाइंदा। धुर दा हुक्म कहे सब नूं मन्नणा पए भाणा, भाणे विच लोकाईआ। आत्म परमात्म साचा नाम सब ने गाणा, गावत गा गा खुशी मनाईआ। पुरख अकाल इक्को मन्नणा सब ने राणा, रईयत दो जहान नज़री आईआ। जिस दा रूप अनूप शाह शहाना, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दे के गए ब्याना, हुक्म संदेशे मात सुणाईआ। उह प्रगट होवे वाली दो जहानां, नौजवानां मर्द मर्दाना वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब स्वामी होए सहाईआ। साहिब स्वामी पुरख समरथ, भगवन मीता नज़री आइंदा। जिस दी महिमा सदा अकथ, सिफ्तां विच ना कोए सालाहइंदा। उह कलयुग सतिजुग

लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथ्थ, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। सन्त भगत गुरमुख गुरसिख कर के वक्ख, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। वस्त अमोलक दे के हक, हकीकत आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करनेहारा, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। कल कल्की निरगुण लए अवतारा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, बंक सुहेला डेरा लाईआ। नाम शब्द इक जैकारा, दो जहानां आप सुणाईआ। भगत वछल कर प्यारा, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। नाम खण्डा प्रचण्ड दो धारा, विच संसारा आप फिराईआ। बुद्धी करे ना कोई विचारा, सोच समझ ना कोए जणाईआ। जिस दा लेखा शास्त्र सिमरत वेद पुराणां बाहरा, अनुभव आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। गृह मन्दिर साचे वस्या, वसनीक इक्को नज़री आईआ। निरगुण हो के आत्म नाल हस्सया, परमात्म भेव खुल्हाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे नस्सया, बिन कदमां कदम टिकाईआ। ढोले गीत सुणा के जस्या, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ा मेटे रट्टया, सति सच लए उपजाईआ। मन ममता कर के हत्या, शब्द खण्डा खड़ग खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग ला के सच्चया, सति सच इक वखाईआ। सति सच दा मार्ग एक, इक्को दए वखाईआ। कलयुग अन्तिम धुर दी टेक, टिक्के मस्तक दए लगाईआ। झगड़ा मुकणा मुल्ला शेख़, काज़ी मुसायक रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुखां खोल्ह के अन्तर भेत, परदा देणा उठाईआ। अगले साल दी रुत बदलण वाली चेत, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। पुरख अकाल दी वेखो खेड, जो चार कुण्ट खण्डे दए खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तरदा वेखणा मात, तारनहार दया कमाईआ। सोहणी दस्से इक प्रभात, अन्ध अन्धेरा दूर कराईआ। निरगुण हो के पुछे वात, सरगुण गोद उठाईआ। जन भगतां घर दी खा के सोहणी भात, भरम भुलेखा दूर कराईआ। चार जुग दी मंग पूरी कर के आज, सतिजुग नींह रिहा वखाईआ। भगत भगवान दा भोग लग्गण दा सदा रिवाज, सतिजुग साचा दए गवाहीआ। गुरमुख दो जहान तुहानूं देण शाबाश, ख़ुशीआं विच सारे ढोले गाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण हो के तुहाडा देवे साथ, साथी हो के सगला संग बणाईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

भगत भगवान दा इक्को भोजन, भजन बन्दगी सच वड्याईआ। जिसनूं नानक मिल्या चढ़ के उपर कोटन योजन,

जुज़ आपणा ओसे विच मिलाईआ। नाम संदेसा लै के आया अगाध बोधन, भेव अभेदा अगम्म खुल्हाईआ। सो भगतां देवण आया साची मौजण, मौजूदा हो के होया सहाईआ। जन्म जन्म दा कटे रोगण, चिन्ता ग़म रिहा गवाईआ। नाम दुशाला देवे ओढण, सीस जगदीश हथ्थ रखाईआ। जिस नूं सोचे कोई ना सोचण, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जग वेखे कोई ना लोचन, नैण अक्ख शरमाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोटन, भज्जण थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। भगत भगवान दा सांझा रिश्ता, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जो खेले खेल जुग चौकड़ी आहिस्ता आहिस्ता, हौली हौली भेव खुल्हाईआ। गुरमुखां नज़री आए दीदा दानिस्ता, दास्तान पिछली रिहा दुहराईआ। लेखा मुका के दोज़ख़ बहिश्ता, साचा दर इक सुहाईआ। जित्थे लेखा मंगे कोई ना फ़रिश्ता, अर्श फर्श पैंडा दए चुकाईआ। लहिणा देणा जाणणहारा राम वशिष्टा, विश्व आपणा हुक्म वरताईआ। निंद्रा विच खोल्ह के दृष्टा, द्रृष्य आपणा दए जणाईआ। जुग चौकड़ी पिछली वेख फरिस्ता, गुरमुख गोद लए उठाईआ। सच प्रीती दे के निसचा, नीती अंदरों दए बदलाईआ। पूरब लेखा जिस जिस दा, दर दर घर घर जा चुकाईआ। जन्म जन्म दा काज नजिठदा, तन माटी वेख वखाईआ। अगे वेला नहीं करवट वाली पिठ्ठ दा, सनमुख हो के नज़री आईआ। झगड़ा मुक्क गया हार जित्त दा, रंग इक्को दए रंगाईआ। दर्शन बख्श के सदा नित दा, निज आत्म मेल मिलाईआ। प्यार कर अगम्मी पित दा, गुरमुख पूत गोद उठाईआ। लेखा मुका के जन्मां दी सिक दा, सिख़र चोटी दए चढ़ाईआ। नव नौ चार पिच्छो विहार होया एकँकार इक दा, इक इकल्ला बेपरवाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर लेखा गया लिखदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। सो मालक बणया गुरमुख पूरे सिख दा, जगत सिख्या विच्चों बाहर कढाहीआ। दीन दुनी किसे ना दिसदा, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत भगवान सदा मीत, मित्रां विच्चों मित्र नज़री आईआ। जुग चौकड़ी बदलदे रहिण रीत, नित नवित वेस वटाईआ। सांझा गाउँदे रहिण गीत, धुर दा नाम पढ़ाईआ। झगड़ा छड्ड के मन्दिर मसीत, काया काअबे सोभा पाईआ। मेला मिल के हरि जगदीश, जगत वजाऔंदे रहिण वधाईआ। वक्खरी निराली कर प्रीत, प्रीतम प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। बैठे रहिण सदा अतीत, त्रैगुण नेड़ कोए ना आईआ। जिस दी करदे रहिण उडीक, अक्खरां विच ध्यान रखाईआ। सो साहिब आया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। जन भगत दवारयों मंगे भीख, भिखारी हो के झोली डाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करे आप तस्दीक, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ।

३१४
१६

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगतां अंदरों चुकणा परदा, दूई रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुल्हाउणा साचे घर दा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। लेखा चुकाउणा भय डर दा, भयानक रूप ना कोए दरसाईआ। मेल मिलाउणा नरायण नर दा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। घर वखाउणा थिर घर दा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकाउणा जग, हरिजन साचे लए जगाईआ। त्रैगुण माया मेट के अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। काया काअबे करा के हज्ज, हुजरा इक्को दए वखाईआ। शब्द अगम्मी सुणा के नद, अनहद नादी ताल वजाईआ। दया कमा के उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। सच दवारे बहे सज, सज्जण हो के सोभा पाईआ। नाम प्याला देवे मदि, अमृत रस रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। जन भगतां देणा नाम अमोला, बिन रसना जिह्वा आप जणाईआ। धुर दा सुणाउणा अगम्मी सोहला, तूं मेरा मैं तेरा दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मन मनुआ पाए ना रौला, मति मतवाली ना कोए कुरलाईआ। परदा चुकाउणा अन्ध अन्धेर ओहला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सहिज सुभाओ सतिगुर शब्द बणे विचोला, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। जन भगतां दस्सणी अगम्मी रीत, निरगुण निरवैर करे पढ़ाईआ। झगड़ा मुक्के मन्दिर मसीत, सच दवारा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म गाए इक्को गीत, गहर गम्भीर करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे उडीक, सो स्वामी वेख वखाईआ। इक्को कलमा दस्से हदीस, इक्को हज़रत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। परदा ओहला चुक्के आप, देवणहार सच्ची सरनाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, गृह मन्दिर होवे रुशनाईआ। रूह बुत्त करे पाक, पतित पुनीत दए जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म धुर दा देवे साथ, सगला संग बणाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी वजाए नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। पूरब लहिणा देणा करे बेबाक, लेखा पिछला रहे ना राईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक दरसाईआ। जन भगतां सच दवारा वखाए दरस, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जन्म मरन दी मेट के हरस, हवस अगली दए गवाईआ। कर्म कर्म दी मेटे भटक, भरम भरम दा गढ़ तुड़ाईआ। नाता तोड़ के कूड़ा जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। रीती दस्स के भगवान भगत, भगवन आपणा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। भगत भगवान सदा संग, जुग जुग खेल खिलाइंदा। अन्तर आत्म चाढ़े रंग, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। नाम सति सति वजाए मृदंग, नाद अनादी राग अलाइंदा। नाम सेजा सुहा पलँघ, सिँघासण आसण इक वड्याइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत डगगाइंदा। गुरमुखां दे के अगम्मी अनन्द, अनन्द आपणे विच समाइंदा। दीन दयाल हो बख्शंद, रहीम रहमत झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल सूरा सरबंग, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान आपणी कार कमाइंदा।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जोरा सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ खोल्ह परदा, बेऐब नज़री आईआ। दर्शन करां तेरे सच्चे घर दा, जित्थे जलवा नूर इक रुशनाईआ। दर दरवेश बणा बरदा, बन्दीख़ाना रहे ना राईआ। जल वेखां साचे सर दा, अमृत इक्को नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना भय डर दा, भवजल विच ना कोए भवाईआ। मंज़ल जावां आपणी चढ़दा, राह विच ना कोए अटकाईआ। दर्शन करां नरायण नर दा, नर निरँकार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी आस, तृष्ना जगत ना कोए जणाईआ। तेरे प्रेम दी सच प्यास, बिलप करे कुरलाईआ। सद वसां तेरे पास, होवे ना कदे जुदाईआ। निज घर कर वास, निवास अस्थान दे समझाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरी बेपरवाहीआ। झगड़ा मुक जाए धरती आकाश, गगन पाताल दी लोड़ रहे ना राईआ। परम पुरख परमात्म आत्म तेरी ज़ात, क्यों नाता बैठा तुड़ाईआ। तेरा लेखा सदा बाहर कलम दवात, अक्खर सके ना कोए समझाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। साचा मिले ना कोई अहिबाब, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। निरगुण वजाए ना कोई रबाब, हक आवाज़ ना कोए शनवाईआ। लख चुरासी विच्चों करे ना कोई आज़ाद, बन्धन बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। दीन दुनी हुन्दी वेखी बरबाद, उजड़या घर ना कोए वसाईआ। राए धर्म दए अज़ाब, जूनी जून विच रखाईआ। बिन अक्खरां वाली दस्स दे आपणी अगम्मी किताब, जिस दी लुग़ात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं शहिनशाह पातशाह नवाब, नौबत इक्को दे सुणाईआ। मेरा सजदा तैनूं आदाब, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। महल अटल वखा महिराब, महबूब इक्को नज़री आईआ। लहिणा देणा देदे हो के दस्तयाब, दरे दरबार

मंग मंगाईआ। तेरी मंज़ल मिले सच ख़ताब, ख़ता रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सन्त सुहेले इक्को मंगण तेरी इमदाद, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तेरे प्रेम दी वज्जे खिच, मन सुरती दे बदलाईआ। प्रगट हो जा काया विच, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिना अक्खां आवें दिस, निज नेत्र कर रुशनाईआ। धन्न वड्याई गुरमुख प्रगटा आपणे सिख, गोबिन्द साचे हो सहाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादि दो जहानां पित, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। तूं साहिब स्वामी इक, एकँकार तेरी इक्को वड्याईआ। करवट दे बदल लै पिठ, सनमुख हो के सोभा पाईआ। साची धार दा दे के हित्त, नित नवित आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साख्यात परदा दे उठाईआ। जन भगत कहिण क्यों लुक्यों ओहले, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। असां तक्कणां तैनूं काया चोले, साढे तिन्न हथ्थ तेरी वज्जे इक वधाईआ। तेरे प्रेम दे गाउणे ढोले, सोहला सच सच सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अगे बणदे रहे विचोले, अगे तेरी ओट रखाईआ। जेहड़ा इक्को कंडा सच तराज़ू तोले, धड़ी वट्टा हथ्थ ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म हो के मौले, मौला आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी आवण जावण जन्म मरन दे चुकण रौले, मात गर्भ ना कोए फिराईआ। सच स्वामी अन्तरजामी अन्तर आत्म हो के बोले, अनबोलत राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी वेखी बेदर्दी, दरदवंद रहे कुरलाईआ। आत्म बणा लै आपणी बरदी, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। साची मंज़ल जावे चढ़दी, राह विच ना कोए अटकाईआ। नित दर्शन रहे करदी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मालक बणे तेरे घर दी, दूजा दर ना कोए फिराईआ। विछोड़े अंदर रहे ना सड़दी, आदि अन्त दी कट जुदाईआ। तेरा नाम रहे पढ़दी, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। मुहब्बत प्यार अंदर रहे मरदी, मुरदे मुरीद गुफ़त शनीद मुर्शद तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को देणा रंगाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरे ठाकर, ठोकर आपणी दे लगाईआ। तूं गहर गम्भीर डूँग्घा सागर, तेरी बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां जुग जन्म दयां विछड़यां दे आदर, आदश आपणा दे वखाईआ। तूं परवरदिगार सांझा यार धुर दा कादर, कुदरत दा मालक नज़री आईआ। सच दवारे करीं सच्चा आदल, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा तक्कीए जलवा नूर बातन, बैतुलमुक्दस इक्को नज़री आईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे जन भगत तेरा प्रेम सच्चा, सति सच मिले वड्याईआ। मैं निरगुण धार हो के तेरे लूं लूं अंदर रचा, साढे तिन्न करोड़ देवे गवाहीआ। शब्दी गुरू बणाया बच्चा, पिता पूत वेख खुशी मनाईआ। दर्शन देवे निज नेत्र लोचन अक्खा, आख़र आपणा घर दरसाईआ। धुर धाम दा दे के पता, पतिपरमेश्वर परदा दए उठाईआ। नाता तोड़ के कूड़ा कच्चा, काया काची माटी रंग दए रंगाईआ। अमृत रस देवे निझर रसा, झिरना इक झिराईआ। मन्दिर अंदर रहे वसा, साढे तिन्न हथ्थ अंदर डेरा लाईआ। प्रेम प्यार दा नाता कर के पक्का, पारब्रह्म देवणहार सच्ची शरनाईआ। हुक्म विच फ़र्क पवे ना रता, रतन अमोलक गुरमुखां हीरे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सन्तोख धीरज देवणहारा हठा, तप इक्को इक दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत सुहेले सज्जण, धुर दा हुक्म दयां दृढ़ाईआ। हरि चरण प्रीती अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ नालों चंगा मजन, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दा इक्को भजन, भजन बन्दगी सीस निवाईआ। जन्म जन्म दी पूरी होवे मज़ल, मंज़ल देवे बेपवराहीआ। गीत ढोला गाउणा नाम गज़ल, ग़रज़ पूरी दए कराईआ। साचे कंडे तोल के वज़न, कीमत करता लए पाईआ। लेखे ला के साढे तिन्न हथ्थ माटी बदन, बदौलत प्रेम जन्म मरन दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत मीत, मित्र प्यारा हो के दया कमाईआ। लख चुरासी नालों तेरी वक्खरी प्रीत, प्रीतम हो के दए समझाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी रिहा बीत, बातन परदा दए खुल्हाईआ। लेखा मुकावणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। साचा कलमा दे हदीस, हज़रत हो के करे हक पढ़ाईआ। तेरे अन्तर बख्शे इक तौफ़ीक, तोहफ़ा आपणा दए वरताईआ। नाम निधाना गाउणा गीत, गहर गम्भीर इक्को करे पढ़ाईआ। परम पुरख दा बणया रहिणा अज़ीज़, अज़ल तों लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दए दरसाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत तेरा सदा संग, लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। दोहां दा मिल के वज्जदा रहे मृदंग, नाम सतार तन्द इक हिलाईआ। सच दवारे बणया रहे अनन्द, कूड़ी क्रिया ना कोए वड्याईआ। चढ़या रहे अगम्मी चन्द, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। तेरा मेरा ढोला सोहँ छन्द, शाह पातशाह शहिनशाह करे शनवाईआ। परदा ओहला चुक्के हँ, ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। लेखे लावे पवण स्वास दम, दमां आपणे लेखे पाईआ। भाग लगा के साढे तिन्न हथ्थ काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। झगड़ा मुका के हरख़ सोग़ ग़म, चिन्ता अंदर खुशी दए वखाईआ। मानस जन्म बेड़ा देवे

बन्नु, कूड़ी क्रिया ना सके रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दे के माण, मनुआ मन दए समझाईआ। जन भगत तेरा सच सहारा, साहिब सतिगुर स्वामी राह तकाईआ। कलयुग अन्तिम वेख किनारा, नईआ नौका तेरे हथ्थ फड़ाईआ। चार कुण्ट अन्ध अंध्यारा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद चारा, शास्त्र सिमरत ढोले रहे गाईआ। साचा मन्दिर गृह तक्कया ना किसे गुरदवारा, मिल मालक खुशी ना कोए मनाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शाही नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जिन्हां परम पुरख परमात्म आत्म मिल गया इक निरँकार एकँकारा, इक्को रंग चढ़ाईआ। जन भगत कदे मंगण ना जाए दूजे दवारा, दवारका वासी बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच्ची सरकारा, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को इक देवणहार दया कमाईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ पंजाब कौर दे गृह पिण्ड सद्दा सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

आदि जुगादि हरि किरपा सच्चे सतिगुर दी, गुरमुख गुरसिख लए प्रगटाईआ। वस्त अमोलक नाम निधान देवे धुर दी, पूरब लहिणा झोली पाईआ। खेल मुका के देवत सुर दी, सुरती आपणे नाल जुड़ाईआ। नगरी वखा के अगम्मी अनन्दपुर दी, पुरीआं लोआं विच्चों बाहर कढाहीआ। लोड़ रहे ना प्रीत चन्द चकोर दी, रंग इक्को दए वखाईआ। चिन्ता मुका के ग़म हरख़ सोग़ दी, ग़मी खुशी विच बदलाईआ। वस्त दे के नाम भण्डारे चोग दी, चोजी प्रीतम मेल मिलाईआ। सहायता दस्स के इक्को ओट दी, ओड़क इक्को दए वखाईआ। हद्द पार कर के पंज तत काया कोट दी, मुकामे हक दए समझाईआ। जिस नूं बुद्धी विद्या विच कदे ना सोचदी, सोच समझ दए समझाईआ। एह किरपा पुरख अकाल ओस दी, जिस दी उसतत करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। सतिगुर पूरा दया निध, दीन दयाल दया कमाइंदा। जन भगतां आपणे मिलण दी दस्स के बिध, अन्तर आत्म आप समझाइंदा। कर प्रकाश गृह घर निझ, धूआँधार सर्ब मिटाइंदा। आत्म परमात्म कारज कर के सिद्व, सिध्धा आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। कलयुग तेरा अन्त अख़ीरी लेखा बहुता लिख्या विच वेद रिग, अथर्बण इशारयां नाल दृढ़ाइंदा। कोई समझ ना सके रिद्ध सिद्ध, शास्त्र परदा ना कोए उठाइंदा। करे खेल अबिनाशी करता एक ओंकारा इक, इक इकल्ला आपणी कार कमाइंदा। जगत नेत्र दोए लोचन किसे ना सके दिस, निज अक्ख प्रतख गुरमुख आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

घर आप सुहाइंदा। सतिगुर शब्द सर्ब स्वामी, मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी अन्तर आत्म अन्तरजामी, घट भीतर वेखे थाउँ थाँईंआ। शब्द नाद बोध अगाध सुणाए धुर दी बाणी, आत्म परमात्म परदा दए उठाईआ। झगड़ा मुकाए अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी, ख़ालस सालस हो के इक्को दए वखाईआ। उँतम सृष्ट निरालम आलम इक्को दस्से अमृत जल पाणी, आबेहयात हज़रत दए पिलाईआ। मंज़ल महबूब दस्से सच रुहानी, मालक मिलाए उपर असमानी, प्रकाश प्रकाश विच छुपाईआ। जन भगतां देवे अगम्म निशानी, निशाना इक्को दए वखाईआ। चरण प्रीती साची रीती जग तों वक्खरी कुरबानी, काया कतलगाह ना कोए फिराईआ। निरगुण निरवैर निराकार हो के गुरमुखां रखे करे मेहरवानी, नज़रे कर्म आप उठाईआ। सुरती सुरत अकाल मूर्त मुरदी करे सावधानी, सालस हो के आप उठाईआ। मंज़ल दिसे हक इक लासानी, लाशरीक दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह परदा दए उठाईआ। सतिगुर शब्द देवे सुख अन्तर, अन्तश्करन वेख वखाईआ। धुर दा नाम दस्से सच मंत्र, मतलब अवर ना कोए कढाहीआ। निरगुण रूप ब्रह्म दिसे निरंतर, निरवैर परदा लाहीआ। कलयुग अग्नी अग्ग मेटे बसन्तर, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जन भगतां लहिणा देणा देवे जुगा जुगन्तर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खोज खुजाईआ। अगे बणावे साची बणतर, घड़न भन्नणहार समरथ स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पावे सार ब्रह्मा मनवन्तर, मनू सिमरती खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका गगन गगनंतर, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। सर्ब कला हो भरतम्बर, भरम भुलेखा दए कढाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला, आत्म परमात्म जुग चौकड़ी जन भगतां रचदा आया सुअम्बर, सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी इक्को करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी वड भण्डारी, नाम निधाना जगत वरताइंदा। मेरा खेल बाहर जगत संसारी, सहिंसयां विच कदे ना आइंदा। मेरा रूप जोत निरँकारी, निरवैर कार कमाइंदा। मैं वसां सच दरबारी, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जित्थे झुकदे गुर अवतारी, पैगम्बर सिर ना कोए उठाइंदा। भगत सन्त मंगण वारो वारी, दरवेश सीस निवाइंदा। सो कुदरत कादर खेल करे न्यारी, परवरदिगार सांझा यार आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे विगसे करे विचारी, लख चुरासी जीव जंत खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द कहे मैं मेलां ओह महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा सब तों उच्च अरूज, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। साची मंज़ल सच मकसूद, सच दवारे डेरा लाईआ। जित्थे दीन मज़्हब नहीं हदूद, लाशरीक जलवा नूर रुशनाईआ। ना कोई

तत ना वजूद, काया बुत्त ना कोए वखाईआ। ना कोई रूप प्रगटाए पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल ना कोए खिलाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर संदेसयां विच दे के गए सबूत, निरअक्खर अक्खरां विच बदलाईआ। जिधर वेखण ओधर सदा मौजूद, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जिस दी सिफ्तां विच्चों सिफ्त भरी हज़ारा दरूद, हज़रतां इक्को ढोला गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर दाता गहर गम्भीर, गुर इक्को इक अखवाइंदा। जिस दी नज़र ना आए तस्वीर, नूर नुराना डगमगाइंदा। जिस दा खेल बेनज़ीर, नज़र विच ना कोए टिकाइंदा। जो मंज़ल चोटी चढ़े अख़ीर, हक मुकामे डेरा लाइंदा। सचखण्ड साचे बहे पीरां दा पीर, पुरख अकाला सोभा पाइंदा। सो आदि अन्त जुगा जुगन्त बणाउँदा रहे तदबीर, तकदीर दीन दुनी मेट मिटाइंदा। जिस दा नाम खण्डा तिक्खी धार शमशीर, शमां लख चुरासी गुल्ल कराइंदा। जिस दा राह तक्कदा गया कबीर, काया काअबा वेख खुशी मनाइंदा। सो जन भगतां प्यावण हारा नाम सच्चा सीर, शीरख़ार बच्चे आपणी गोद उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि एथे ओथे दो जहानां दस्तगीर, आत्म परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाइंदा।

३२०
१६

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सीतल सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

छत्ती भोजन खावण छत्रधारी, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रसन लगाईआ। मन वासना भरदे रहिण पटारी, खुशी जगत विच वधाईआ। भगत भगवान दी वक्खरी खेल न्यारी, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो जन भगतां दी आई वारी, लोकमात मिले वड्याईआ। किरपा करे आप निरँकारी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाम खुमारी जावे चाढ़ी, रंग इक्को इक रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रस दए वखाईआ। छत्ती भोजन जगत पकवान, रसना जिह्वा रस वखाईआ। भगतां वस्त अमोलक देवे श्री भगवान, सति सच सति दृढ़ाईआ। जिन्हां घर स्वामी मिल्या आण, अन्तरजामी वेख वखाईआ। एथे ओथे दो जहानां मिले माण, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे पीण खाण, अंदर अधार इक रखाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला परम पुरख दा मंगे दान, नाम निधाना आस रखाईआ। जिस नूं साहिब सतिगुर करे परवान, मेहरवान दया कमाईआ। तिन्हां काया माटी गृह मन्दिर अंदर मिले आण, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म रस अनडिठा भोग लगाए आण, गुणवान दया कमाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। जन भगत कदे ना होवे ग़रीब, मिलख जागीर धन दौलत कम्म किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी लोकमात गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। भगत भगवान दी चलदी आई रीत, धू प्रहलाद कबीर जुलाहा आपणा संग बणाईआ। रविदास चमारा दे के गया इक नसीहत, धुर संदेसा इक दृढ़ाईआ। सच प्रीती जन भगतां मिली वसीअत, विश्व इक्को इक दरसाईआ। जिन्हां दे अन्तर सच्चे प्रेम प्यार दी असलीअत, असल वसल वेखे जलवा नूर खुदाईआ। धुर दरबार सच दुआर मुकामे हक उहनां मिले अहिमीअत, मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। जन भगत लोकमात होवे ना मंगता, दर भिखारी ना रूप वटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तोड़नहारा गढ़ अन्तर हउमें हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। मेल मिला के साची संगता, सज्जण इक्को इक वखाईआ। नाम निधाना बोध अगाधा दस्से बण के पंडता, अक्खर वक्खर आप समझाईआ। झगड़ा मुका के बहिश्त जंनता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। माण वड्याई दे के साचे सन्ता, सहिज सुभाओ अन्तर परदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार अंदर जन भगतां काया चोली रंगदा, जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। जन भगत कदे ना होवे भुक्खा, जगत तृष्ना ना कोए वधाईआ। जिन्हां दा अन्तर आत्म हो गया सुच्चा, कूड़ मैल रहे ना राईआ। उन्हां दा भण्डारा कदे ना मुकदा, देवणहार दया कमाईआ। भगत भगवान दा सदा टुक्कर सुक्का, शाह पातशाह घर फेरा कदे ना पाईआ। जिन्हां दा जीवण प्रभू दी प्रीती अंदर उच्चा, उह नीचों ऊँच कर कर देवे वड्याईआ। श्री भगवान उत्ते चले किसे दा ना कोई गुस्सा, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला लोकमात आप उठाए सुत्ता, सोई सुरती आप जगाईआ। जन भगत जगत वासना ना बणे भिखारी, माया ममता मोह वधाईआ। जिस दे अंदर निरगुण नूर जोत निरँकारी, जलवागर सोभा पाईआ। देवणहार वड दातारी, दयावान झोली दए भराईआ। मातलोक जन भगतां नेड़ ना आवे खुआरी, ख़ालस इक्को रंग रंगाईआ। जिन्हां दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। जुग चौकड़ी पिच्छो लोकमात पंज तत काया अंदर साचे मन्दिर उन्हां दी आए वारी, वारता ढोले जस गीत रसना जिह्वा बत्ती दन्द बुद्धी नाल सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगतां अन्तर सदा लगदा रैहन्दा भोग, पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्तर रस चख चख खुशी मनाईआ। जगत विछड़यां हुन्दा रहे संजोग, जन्म जन्म दा लहिणा देणा झोली देवे पाईआ। कर्म कर्म दा कटदा रहे रोग, चिन्ता

सोग़ दए गवाईआ। खुशीआं अंदर आपणे नाम दी देंदा रहे चोग, चुगली निंदया अंदरों बाहर कढाहीआ। चरण प्रीती बख्शदा रहे जोग, जगत जगदीशर आप समझाईआ। भाग लगा के काया माटी साचे कोट, कूड़ कुटम्ब दए मिटाईआ। साहिब सुहेला इक अकेला पुरख अबिनाशी जन भगतां निरगुण हो के चुक्के आपणी गोद, बिन भुजां फड़ बाहों आपणी गोद बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर्शन देवे रोज़, बिन अक्खां प्रतख नज़री आईआ। जन भगत सदा माणदा मौज, मजलस प्रभ दे नाल रखाईआ। साचे प्रीतम दा अगम्मी चोज, निराला आपणा गृह दृढ़ाईआ। इक्को नाम निधाना श्री भगवाना दस्स सलोक, सोहला सच दए समझाईआ। झगड़ा चुक जाए लोक परलोक, दो जहानां डेरा ढाहीआ। चरण प्रीती साची रीती दस्स के धुर दी ओट, ओड़क आपणे विच मिलाईआ। जन भगत तेरा रूप निर्मल जोत, अन्त जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत तेरा सच पदार्थ, धरनी धरत धवल दए गवाहीआ। प्रभ दा खा के सौरे स्वार्थ, सांतक सति वज्जे वधाईआ। गुरमुखां बणयां रहे परमारथ, प्रेम प्रीती रंग चढ़ाईआ। मानस जन्म ना जाए आकारथ, लेखा लेखे विच्चों बदलाईआ। ग़रीबां पिच्छे आउणा प्या यथार्थ, साजण हो के साची सेव कमाईआ। प्रीती प्रेम दी लिख के जाए इबारत, जुग चौकड़ी ना कोए मिटाईआ। पार कराए बिना सफ़ारश, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। भगत घर सदा भोग लग्गदा, लग्न प्रभ दी चली आईआ। जगत विहार छड्ड जग दा, जग्गू जग्गू लए उठाईआ। कूड़ा लालच तुड़ा माया ममता अग्ग दा, सति धर्म इक वखाईआ। जो साहिब सरनाई लग्गदा, लग मातर दए बदलाईआ। शहादत देवे वेला वक्त अज्ज दा, जुग चौकड़ी कार भुगताईआ। वेख्या खेल पूरे पुरख समरथ दा, जो भगतां होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम बख्श के जाए सच दा, काया कच्च मिले वड्याईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ मेला सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कहे प्रभू धन्न, धन्न धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जिस वासना बदल के मनुआ मन, ममता कूड़ दिती गवाईआ।

भाग लगा के काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दिती बदलाईआ। घर चाढ़ के साचा चन्न, सति सति कीती रुशनाईआ। नेत्रहीण रिहा ना अन्न्ह, नैण इक्को दिता खुल्हाईआ। तेरा नाउँ सुण के जस सरवण कन्न, मिली माण वड्याईआ। लोकमात बेड़ा दिता बन्न्ह, गुण निधान हो के आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह रिहा वखाईआ। जन भगत कहे तूं प्रभू आदि जुगादी खोजी, जन भगतां लएं जगाईआ। किसे हथ्थ ना आवें अभ्यासी जोगी, जुगतीआं विच मरे लोकाईआ। गुरमुखां दे के आपणी सोझी, सोई सुरती लएं उठाईआ। आत्म रस रहे भोगी, जगत दुक्खड़ा ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजण बण के धुर दा मौजी, मेला रिहा कराईआ। जन भगत कहे मैं झलक निराली तक्की बांकी, निरवैर निराकार नज़री आईआ। मेरी अंदरों खुल्ह गई ताकी, भेव रिहा ना राईआ। प्रभ मिल्या अंदर दा साकी, जाम प्याला इक प्याईआ। मनुआ मन रिहा ना आकी, मनमति दिती गवाईआ। सुणया नाम अगम्मा अनादी, नाद धुंन रिहा वजाईआ। हंगता गढ़ होई बरबादी, गृह मन्दिर दए वसाईआ। आत्म परमात्म होया विस्मादी, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण हो के भगतां करे आप वैरागी, वैरागीआं हथ्थ किसे ना आईआ।

✪ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुरैण सिँघ दे गृह पिण्ड निधां वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे मैं करता कुदरत, कादर धुर दा बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मालक बण के धुर दा मुर्शद, मुरीदां मुद्दा रिहा समझाईआ। लख चुरासी नालों वेहला हो के पा के फ़ुरसत, हरिजन आपणे नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के गुरबत, गहर गम्भीर दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को रिहा वखाईआ। श्री भगवान कहे मेरा भगतां अन्तर निवास, भूमिका इक्को इक जणाईआ। जोती नूर कर प्रकाश, अन्ध अज्ञान गवाईआ। परमात्म आत्म दे के साथ, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के दस दस मास, मस्त खुमारी विच रखाईआ। सच दवारे दे निवास, अस्थिल इक्को घर प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे दए वड्याईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां हितकारी, निरगुण हो के दया कमाईआ। निर्मल नूर जोत कर उज्यारी, उजाला करां थाउँ थाँईंआ। सच प्रेम दा बण भिखारी, दर दर घर घर वेखां चाँईं चाँईंआ। पवित्र भोजन बण अहारी, हरिजन साचे लवां उठाईआ।

३२४
१६

सच दुआर दी बख़्शां इक सरदारी, सरन अवर रहे ना राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत बणया आप जुआरी, सन्त सुहेले रिहा उभारी, गुर चेले चरण दवारी, दर दवारा इक्को इक सुहाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हजूरा सिँघ दे गृह पिण्ड सोसण ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे मेरे जागे भाग, मिट्टी ख़ाक वज्जी वधाईआ। घर स्वामी पाया परमेश्वर आप, आपणे रंग विच समाईआ। गुरमुख दीपक जगाए अगम्मे चिराग, जोती नूर कर रुशनाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। मेल मिला के कन्त सहाग, सुहञ्जणी रुत रिहा वखाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम खोजे चाँईं चाँईंआ। जिस दा लहिणा होणा जुगादि, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। सो बदल के जगत समाज, समां आपणा दए पलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लालच छड्ड स्वाद, रस प्रेम विच समाईआ। धरनी कहे मैं होई सोभावन्त, दर ठांडे वज्जी वधाईआ। घर पाया स्वामी कन्त, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। जो ढोला गावे सोहँ छंत, करे सच पढ़ाईआ। भगतां दा लहिणा देणा वेखणहार अन्त, अन्तश्करन फोल फुलाईआ। रुत्त सुहञ्जणी करे बसन्त, फलगुण देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा रिहा उठाईआ। धरनी कहे मैं सुत्ती जागी, आलस निंद्रा रिहा ना राईआ। बिरहों विछोड़े होए वैरागी, वैराग विच कुरलाईआ। जलवा तक्कया पुरख अबिनाशी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो जुग चौकड़ी भगतां बणे साथी, गुरमुखां संग निभाईआ। जिन्हां ने ओस दी मन्नी आखी, आख़र आपणे विच समाईआ। एथे ओथे शब्दी धार करे राखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देवे बाकी, पूरब लेखा रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मेरा अन्तर होया खुशहाल, खुशीआं विच ढोले गाईआ। प्रभ किरपा कीती दीन दयाल, साहिब स्वामी फेरा पाईआ। भगत सुहेले वेखे आपणे लाल, लोकमात विच्चों बाहर कढाहीआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, इक्को रंग रिहा रंगाईआ। साचा गृह घर बणा के सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। धरनी कहे मैनूं बहुता आवे हासा, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी खेल तमाशा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सो भगतां पूरी करे आसा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। चरण प्रीती दे भरवासा, भाव आपणा दए समझाईआ। ओन्हां दा लेखे लावे तोलयां रतीआं वाला आटा, माश्यां विच मिसाल अगली दए बणाईआ। जन

भगतां कदे ना आवे घाटा, नाम भण्डारे नाल भराईआ। अगली मंजल चुका के वाटा, चुरासी गेड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख समराथा, सच सहायक इक्को नज़री आईआ।

✪ १६ फग्घण शहिनशाही सम्मत १ नंद सिँघ दे घर पिण्ड थम्मण वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे मेरा भगत सति, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति सति विच समाइंदा। जिस दे अन्तर आत्म ब्रह्म मत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। निर्मल जोत जगे लट लट, नूर नुराना शाह सुल्ताना एकँकारा डगमगाइंदा। शब्द अगम्मी नाद वज्जे सट्ट, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। आत्म परमात्म जोड़ के नत्त, नाता बिधाता इक अखवाइंदा। मिल्या रहे मेल सदा पुरख समरथ, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। निज नेत्र खुल्ही रहे अक्ख, प्रतख गुसाँई इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लहिणा देणा रंग चढ़ाइंदा। श्री भगवान कहे जन भगतां अन्तर आत्म सदा अनन्द, गृह मन्दिर घर ठांडे वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुक जाए गाउणा रसना जिह्वा बत्ती दन्द, निरगुण निरवैर निरँकार निरअक्खर दए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावण ढोला छन्द, नग़मा नाम कलमा काया काअबा इक सुणाईआ। जलवागर साचा नूर जोत प्रकाश चाढ़े चन्द, सूरज चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। आवण जावण लख चुरासी जन्म जन्म दा मिटे पन्ध, राए धर्म देवे ना कोए सज़ाईआ। अन्त वसेरा होवे दरगाह साची मुकामे हक दवारे सचखण्ड, दर ठांडे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित, सन्त सुहेले गुरमुख मेले, भगत भगवान आपणे विच मिलाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां देवां अन्तर आत्म इक्को सुख, जगत वासना कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। जन्म मरन कर्म कर्म दा रहे ना कोई दुःख, अग्नी तत तृष्ना मोह ना कोए दृढ़ाईआ। अमृत जाम निझर रस दे के मिटावां भुक्ख, सांतक सति दयां कराईआ। सुफ़ल करा के जनणी कुक्ख, उज्जल करां मात मुख, दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर धवाईआ। बिन हथ्थां बाहवां शब्द अनादी गोदी लवां चुक्क, खण्डां ब्रह्मण्डां पुरीआं लोआं बाहर धाम आपणा इक वखाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को होवे ढोला गीत छन्द, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक इकेला हो के वसां सदा संग, आत्म परमात्म नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा लँघ, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप किसे नज़र ना आए सूरा

सरबंग, शाह पातशाह पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां चाढ़ां नाम रंग, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। नाम सेजा सच पलँघ, सिँघासण आसण इक वड्याईआ। शब्द अगम्मी गा के छन्द, बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। नाम निधान वजा मृदंग, सोई सुरती लवां उठाईआ। दूई द्वैती भरमां ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म विच समाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दरस्सां सति धर्म, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लेखे ला के मानस जन्म, जरम आपणी झोली पाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां नाल जो करदा रिहा प्रन, कोल इकरार जुग जुग आप जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां बख्शे आपणी सरन, सरनगति इक्को नज़री आईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज लोचण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां अंदर देणा इक संदेसा, आलस निंद्रा देणी गवाईआ। झगड़ा मुके गणपति गणेशा, शिव शंकर विष्न ब्रह्मा दी लोड़ रहे ना राईआ। जिन्हां मिल गया पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रतख इक नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। उह सन्त सुहेले सदा वसदे सचखण्ड दवारे
३२६ देसा, मुकामे हक डेरा लाईआ। जित्थे वसे एकँकार एका, पुरख अकाल सोभा पाईआ। जन भगतां देवणहारा साची टेका, ३२६
१६ टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मन वासना बुध करे बिबेका, निर्मल निरवैर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, १६
आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त कन्त भगवन्त आपणे रंग रंगाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां सदा सुहेला, सज्जण धुर दा नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण खेल करां इक इकेला, दूजा संग ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म काया मन्दिर अंदर कर के धुर दा मेला, परदा ओहला दयां उठाईआ। इक्को घर बहा के गुरू चेला, चेला गुर आपणे रंग रंगाईआ। नव नौ चार पिच्छो कर के वक्त सुहेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता ठांडा सीता, साची रीता आप दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगत जन वेखां लोकमात, मातर भूमी खोज खुजाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जो इक्को ढोला गाउँदे गाथ, धुर दी करन पढ़ाईआ। उन्हां बख्शां आपणी दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, दीनां मज़्हबां विच्चों बाहर कढाहीआ। मेल मिला के पुरख अबिनाश, आत्म ब्रह्म दयां समझाईआ। मन मनुआ कर के घात, सोई सुरती दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पुछणहारा वात, वास्तविक नाता आपणे नाल रखाईआ। श्री भगवान कहे जुग चौकड़ी बीतदे गए विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ।

शब्द संदेशे दे के गए गुरू अवतार, पैगम्बर कलमयां विच जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल होणा अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी खेल खिलाईआ। भविख्तां विच कर के गए इज़हार, शब्दी ढोले लोकमात सुणाईआ। कल कल्की आवे अवतार, निहकलंक फेरा पाईआ। अमामां दा अमाम वड सिक्दार, जलवागर नूर खुदाईआ। लेखा जाणे दृष्ट इष्ट दीन दुनी कायनात, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। कोटां विच्चों जन भगतां देवे धुर दी दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बदल देवे समाज, सति सन्तोख अन्तर आत्म मोख मुफ्त आपणी दया कमाईआ। ऊँच नीच राउ रंक बणा के इक जमात, ज़ामन हो के इक्को घर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। श्री भगवान कहे मैं जुग चौकड़ी देंदा लहिणा, पूरब जन्मां वेख वखाईआ। गुरमुख विरले दरस दिखावां निज नेत्र लोचन नैणां, लख चुरासी दोए अक्खां दिस किसे ना आईआ। आत्म परमात्म बण के साक सज्जण सैणा, पारब्रह्म ब्रह्म नाता दयां जुड़ाईआ। शब्द अगम्मी हुक्म संदेसा इक्को कहिणा, फ़रमान धुर दा आप दृढ़ाईआ। हरिजन साचे हरि चरण दवारे सचखण्ड सच्चे घर बाहरे प्रेम प्रीती अंदर बहणा, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, दर दर घर घर जन भगतां झोली रिहा भराईआ।

३२७
१६

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ संपूरन सिँघ दे गृह पिण्ड फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मेरा होया अन्त न्याँ, अदल हरि जू रिहा कमाईआ। मैं वेख्या चाँईं चा, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। निरगुण नूर होया रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। भगत वछल दया कमा, दीनां अनाथां रिहा उठाईआ। लहिणा पृथू वाला चुका, लेखा सब दी झोली पाईआ। हुक्म धुर दा इक सुणा, मार्ग अगला रिहा लगाईआ। निरवैर हो के फेरा पा, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। दर दर घर घर खुशीआं रिहा मना, दुखियां दर्द गवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी करदे गए दुआ, हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। उह मेहरवान महबूब जलवागर खुदा, जलाल आपणा रिहा वखाईआ। जन भगत दवारे गया आ, आमद विच आदमी बाहरों नज़री आईआ। सच पकवान भगवान रिहा बणा, कच्चे पक्के दए वड्याईआ। गृह गृह भोग रिहा लगा, मनसा नामे पूर कराईआ। धन्ना सीस रिहा झुका, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। जो सन्त सुहेले रिहा तरा, तारनहार आप अख्वाईआ। वड्डे छोटे इक्को जिहे रिहा बणा, अमीर ग़रीब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं वेखण दो

जहां, ब्रह्मांड खुशी बणाईआ। उह गुरमुखां प्रगटाउँदा जाए नाँ, नर निरँकारा दया कमाईआ। पाँधी बण बण तक्के राह, रहबर हो के वेख वखाईआ। बिना बेड़यों बण मलाह, आप आपणे कंध उठाईआ। तिनका तिनका बणे गवाह, शहादत आपणी इक भुगताईआ। तेरी खेल शहिनशाह, पारब्रह्म समझ किसे ना आईआ। गोबिन्द इशारे नाल गया जणा, लकीर ज़िमीं उत्ते खिचाईआ। पुरख अकाल जन भगतां दए जगा, गुरमुखां आप उठाईआ। लख चुरासी नाल करके दग़ा, फ़रेब विच रखे लोकाईआ। सन्त फ़कीरां बण के धुर दा अब्बा, गोदी आपणी लए टिकाईआ। नाम भण्डारे दा देवे मज़ा, मजलस आपणे नाल बणाईआ। अगे देवे ना कोई सज़ा, जमां तों लए छुडाईआ। जेहड़ा चार जुग कदे ना रज्जा, भुक्खे भुक्ख ना कोए गवाईआ। उह गुरमुखां दवारे देवे आपणी सद्दा, होका हक सुणाईआ। प्रेम प्यार अंदर आवे भज्जा, चले वाहो दाहीआ। उह रुक्खा सुखा टुक्कर खा के अद्धा, अदनयां तों आहला दए बणाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना धब्बा, दुरमति मैल धवाईआ। लेखा चुका के पूरब हब्बा, हमसाजण लए जुड़ाईआ। नाम निधान सुणा के नद्दा, नादी सुत लए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। अन्न कहे मैं वेख्या हुन्दा अदल, इन्साफ़ प्रभ रिहा कमाईआ। जुग चौकड़ी धारा बदल, बदला भगतां रिहा चुकाईआ। दूर दुराडा पहुंचे मार के मज़ल, मंज़ल आपणी दए समझाईआ। नाम निगाहबान सुणा इक ग़ज़ल, ग़रज़ सब दी वेख वखाईआ। अन्तिम पोह ना सके अज़ल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दा वज़न, वजह आपणी दए समझाईआ। अन्न कहे मैं तुलदा रिहा तकड़ी विच तराज़ू, सेरां मणां वण्ड वण्डाईआ। महिसूस हुन्दा रिहा बाज़ू, कंधे ताईं जणाईआ। मेरी सार ना पाई किसे साधू, सन्त लेख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बहुते वेखे आगू, जगत कर कर गए पढ़ाईआ। कुछ लहिणा देणा दस्सया गोबिन्द थोड़ा दादू, धीरज धीर नाल जणाईआ। जिस वेले भगतां दा भगवान बण के आया बापू, बाबल हो के फेरा पाईआ। उन्हां दी कर्म कांड दी क्रिया आपे सांभू, साधना सच्ची इक जणाईआ। दादू ने इक चोली नूं ला के लांबू, अग्नी भेंट कराईआ। स्वाह करके कहे मैं हुण की तैथों मांगू, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द किहा मैं एसे चोली दी रखूं तांघू, चोली काया कपड़ रूप वटाईआ। जिस वेले मेरा भगवान मेरे नाल भगतां दा बणया आगू, अगला लेखा आपणे नाल रखाईआ। दयोहरे मन्दिर मसीत मठ जगत त्यागू, करे खेल बेपरवाहीआ। ओधरों ओस दा इक चेला आ गया भागू, हथ्थ लक्कड़ी टेडी उठाईआ। हस्स के कहे चुरासी विच्चों केहड़ा काढू, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द किहा जिस दे हथ्थ शब्द वड्डा डांगू, दो जहानां रिहा डराईआ। उह इक इकल्ला आपणी धार विच्चों जागू, निंद्रा अक्ख

ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप कराईआ। अन्न कहे दादू कोल सी दाणे नौं, गोबिन्द चरणां उत्ते सुटाईआ। आप मथ्था रगड़ के भौं, नेत्र रोया मार के धाईंआ। पुट्ठा हो के गया सौं, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ। की भगवान नूं भगत मिलण दा गौं, मैनूं दे जणाईआ। गोबिन्द किहा परत के आवां हउँ, हउमें दे रोग गवाईआ। वक्खरा धर के नाउँ, नर निरँकारा संग बणाईआ। गुरमुखां देवां ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आवां भौं, कोटां विच्चों थोड़े लवां उठाईआ। जन भगतां मिलण दा सदा मैनूं चाउ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। मैं वेखां थाँईं थाउँ, थान थनंतर परदा लाहीआ। सन्त सुहेले फड़ के बाहों, पुरख अकाल नाल जुड़ाईआ। इक्को दस्स के पिता माउँ, साची गोदी दयां टिकाईआ। सहिजे नाल पुछां, की तुसीं मैनूं खवाउँ, सति सच साची भेंट चढ़ाईआ ? नौ दाणे हस्स के कहिण असीं बलि बलि तैथों जाउँ, जानणहार तेरी सरनाईआ। जिस वेले आयों करन सच्चा न्याउँ, नयामत हो के तैनूं आपणा रस दईए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नौ दाणे कहिण तेरी चरण लग्गे, मिट्टी ख़ाक मिल के खुशी मनाईआ। कुछ अगला भेव दिसे अगे, आगमन विच राह तक्कीए चाँईं चाँईंआ। जिस वेले निरगुण धार जोत जगे, ब्रह्मण्ड खण्ड होए रुशनाईआ। साडी माण वड्याई वधे, वाधा दिसे विच लोकाईआ। भगत सुहेले नाल साडे फबे, सोहणे सुहञ्जणे नज़री आईआ। सच दवारे आवीं सद्दे, नाम संदेसा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। दाणा दाणा कहे साडे उत्ते ला दे मोहर, गोबिन्द तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं हुण होर फेर बण के आवीं होर, अवर दा अवरा रूप वटाईआ। कलयुग होवे अन्धेरा घोर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। माया ममता पावे शोर, वासना मन करे लड़ाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले दिसणे थोड़, गुरमुख सच्चे नज़री आईआ। उन्हां आपणे नाल लैणा जोड़, मेला धुर दा सच मिलाईआ। निरगुण हो के जाणा बौहड़, सरगुण लेखा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। दाणा दाणा कहे असीं वेख्या तेरा स्वाद, छैल छबीला नज़री आईआ। फेर रखणी तेरी तांघ, ध्यान विच्चों ध्यान बदलाईआ। मेहर मुहब्बत विच जाणा जाग, जग जीवण दाते अक्ख खुल्हाईआ। तेरा बदलदा वेखणा समाज, समग्री होवे बेपरवाहीआ। तेरा जलवा तक्कणा ताज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। तेरे भगतां लए ना कोए ख़राज, दाअवेदार ना कोए बणाईआ। तेरा बेड़ा वेखणा जहाज़, नाम निधाना इक प्रगटाईआ। चार वरन दा तक्कणा समाज, रीती नीती इक प्रगटाईआ। भगत दवारे भगतां गृह तेरे प्रेम दा वेखणा स्वाद, रस भोग इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा लेखा देणा बणाईआ। दाणा कहे मैं नहीं रहिणा दुनियादार, दुनी वाली मंग ना कोए मंगाईआ। मैं वेखणे तेरे सन्त सुहेले यार, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। जिन्हां अन्तर होवे तेरा प्यार, बाहर करीं रुशनाईआ। उह तेरे ख़िदमतगार, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं चल आवीं दवार, दर दर फेरा पाईआ। खेल करीं कमाल, कामल मुर्शद तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरा रस तैनूं रसां विच देणा खवाल, अनरस तेरे विच समाईआ। उन्हां दा जन्म जन्म दा कट के जाईं काल, तृष्ना भुक्ख गवाईआ। दूजे दवारे करना ना पए स्वाल, मांगत हो ना झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देणा सच्चा दान, दान इक्को इक वरताईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुंदर सिँघ दे गृह फिरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मैं हुन्दा रिहा हैरान, हैरानी अंदर झट लँघाईआ। मैनूं दुनिया कैहिंदी रही भगवान, श्री भगवान दी समझ किसे ना पाईआ। जगत मंगतयां नूं मेरा दिन्दे रहे दान, भुक्ख्यां दी भुक्ख नाल रलाईआ। मेरा लहिणा याद कीता नौ वार सीता राम, वन विच भुक्खे रह के झट्ट लँघाईआ। तिन्न दिन हुक्म मन्नदा रिहा कृष्न काहन, राधा तों बिना आपणा आप बदलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुणदे रहे पैग़ाम, बिन कन्नां होई शनवाईआ। नानक उत्ते होया प्रभू थोड़ा मेहरवान, भाग भोग लालो घर लगाईआ। ओस वेले अबिनाशी करते किहा मैं सब दा लेखा देवां विच जहान, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तरख़ाण दे प्रेम विच्चों बणा तरख़ाण, तृखा सब दी दयां बुझाईआ। अर्जन मारया इक ध्यान, पुरख अकाल राह तकाईआ। तत्ती लोह दिसे वैरान, मीत वैरी रूप बणाईआ। गोबिन्द हो के मेहरवान, गोबिन्द गोबिन्द दिता जणाईआ। जिस वेले पंजां प्यारयां अमृत लग्गा सी प्याण, खण्डा जल विच फिराईआ। ओस वेले किरपा कीती श्री भगवान, रस धुर दा दिता वखाईआ। सच दवारे पकदा वेख्या पकवान, चार जुग दे भगत सेव कमाईआ। नाल झुलदा वेख्या निशान, निशाना दिस्या बेपरवाहीआ। हस्स के कीती प्रणाम, दीन हो के सीस झुकाईआ। खुश हो के निगाहबान, हुक्म दिता सुणाईआ। जिस वेले कठ्ठे हो के मिल के आए विच जहान, जहालत दिसे सर्ब लोकाईआ। ओस वेले भगतां कोलों लैणा दान, दर दर घर घर मंग मंगाईआ। तेरा अमृत मेरा पकवान, दोहां दा कठ्ठा पीण खाण, वक्त सुहेला वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म सुणया सच जगदीश, दहि दिशा वज्जी वधाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू ठीक, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। श्री भगवान किहा रखणी उडीक, आसा आसा

विच वधाईआ। मेरे सम्मत दी सोहणी होवे तारीख, तवारीख दए बदलाईआ। जन भगत दवारयों मंगणा भीख, भिखारी हो के भेख वटाईआ। नाल शब्द दी पाउणी तस्दीक, शहादत तेरी देणी भुगताईआ। सब दी खुश करदे जाणा तबीअत, दुखीआ रहिण कोए ना पाईआ। मेरी तेरे नाल वसीअत, विरसा तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा लेखा दरस जाए असलीअत, असल असल विच्चों प्रगटाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ अमर सिँघ दे गृह फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मैं बिन अक्खां रिहा अन्ना, नर नरायण दरस कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी रिहा भन्ना, साल बसाला आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले ठाकर भोग लगाया धन्ना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। इक संदेसा दिता बिना कन्नां, सहिज गया समझाईआ। कलयुग अन्त निरगुण जोत धुर दा चढ़ना चन्ना, सच करे रुशनाईआ। पिछला मेटणा बन्नां, अगला राह वखाईआ। बाल्मीक जो लिख्या लेख उपर तिन्न सौ तरेठ पंना, उह शहादत नज़री आईआ। पुरख अकाल जन भगतां
३३१ १६ देणा साचा धना, धन पदार्थ झोली पाईआ। लेखा मुकणा नामा छन्ना, दुद्ध कटोरी लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत ३३१ १६
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। अन्न कहे मैनूं याद आई गाथा, कहाणी दयां सुणाईआ। सतिजुग दा साका, कलयुग अन्तिम भेव खुल्हाईआ। पिरथू कटदा सी फ़ाका, फ़िकरां विच झट्ट लँघाईआ। हुक्म दिता धुर दे आका, अकल अकल विच्चों बदलाईआ। चरण कँवल प्रीती कर बण के दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। अगला दस्सां भेव खुलासा, परदा दयां उठाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होणा पुरख अबिनाशा, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। जन भगतां देणा साथा सगला संग निभाईआ। चरण कँवल देवे भरवासा, दृढ़ निशचा आप बंधाईआ। इक्को वारी सब दा लेखे ला जाए कीता होया अरदासा, अगे अरज़ दी लोड़ रहे ना राईआ। जेहड़ा पकवान पक्का होया ज़ाहर हो के किसे नहीं खाधा, घर घर आपणा भोग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे वड वड भागा, साचा भाग हिस्सा भगतां झोली पाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मैं वेखे भुक्खे नंगे, जुग जुग मांगत रूप वटाईआ। दर दर मंगदे वेखे पंडे, तिलक संधूर मात चमकाईआ। सुथरे खड़काउँदे वेखे डण्डे, मन वासना देण दुहाईआ। साधू बैठे तीर्थां कन्ढे, झोलीआं रहे डाहीआ। तरसदे वेखे तटां उत्ते गंगे, गोदावरी जमना सुरस्ती धीर ना कोए धराईआ। इक दूजे नूं मारदे वेखे बन्दे, बन्दगी गए भुलाईआ। विकारी हो गए गंदे, सति धर्म ना कोए समझाईआ। मंज़ल चढ़े मूल ना डण्डे, साचे घर ना वज्जी वधाईआ। कूड़ी क्रिया करदे दंगे, घर घर करन लड़ाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख थोड़े लग्गे चंगे, जेहड़े प्रभू नूं रहे मनाईआ। राह तक्कण सूरे सरबंगे, रस्ता दूजा गए भुलाईआ। कवण वेला हरि लावे आपणे अंगे, अंगीकार इक अख्वाईआ। चुके धुर दे कंधे, फड़ बाहों लए उठाईआ। आत्म परमात्म देवे इक अनन्दे, रस आपणा दए चखाईआ। सच भण्डारा धुर दा वण्डे, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए दृढ़ाईआ। अन्न कहे मैं वेख्या खेल अनादी, अन्तर सब नूं दयां जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर खेल करे विस्मादी, बिस्मिल आपणी धार प्रगटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां बण के आया इमदादी, इतहास पिछला दए बदलाईआ। नवीं साजणा रिहा साजी, साजन हो के होवे सहाईआ। भगत सुहेले कर के जाए राज़ी, राजन राज दए वड्याईआ। जिन्हां जन्म दी जित्त लई बाज़ी, माणस मानव लेखे पाईआ। प्रेम प्यार दी खा के भाजी, भजन बन्दगी इक्को वार लेखे पाईआ। देवे वस्त जो जन्म जन्म दी गवाची, घर विच ठाकर दए मिलाईआ। इक्को धार दस्से साची, पारब्रह्म ब्रह्म मेला रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाण के काया माटी काची, कंचन गढ़ दए सुहाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जगतार सिँघ दे गृह पिण्ड फिरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे कोटन कोटि खांदे गए आपणी मर्ज़ी, मज़े रसना जेहवा वाले जगत बणाईआ। वशिष्ट ने पुरख अकाल कोल दिती अर्ज़ी, बिन अक्खरां इबारत जणाईआ। तुध बिन सच्चा दिसे कोए ना दर्दी, दुखियां दुःख वण्डाईआ। तूं मालक अगम्म अथाह अर्शी, प्रीतम शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा दीन दुनी गर्दी, गुबार परदा लाहीआ। श्री भगवान तेरी प्यार धार किसे ना वरली, सद्दा दे ना कोए बुलाईआ। सार पाई ना किसे आपणे घर दी, सौहरे पईए घर घर फेरे

जगत पाईआ। आत्म सति सच तैनूं कोई ना वरदी, कन्त ख़ाकी तन हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा देणा मुकाईआ। अन्न कहे तैनूं किसे ना दिता नेंदा, स्वामी साचे घर ना कोए बुलाईआ। झगड़ा प्या क्यों क्यों दा, हउँ हउँ रही सताईआ। जुड़या जोड़ ना पिता प्यो दा, भगत भगवान ना रंग समाईआ। भाग होया ना चंगा घृत घिउ दा, चार जुग देण दुहाईआ। नाता तोड़ निभया ना जगत निहों दा, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। विछोड़ा लग्गा ना तेरी बिरहों दा, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। रस मिल्या ना अमृत मेहों दा, बूँद स्वांती ना कोए चुआईआ। घर पाया ना साचे देउ दा, देवत सुर रहे मनाईआ। दर्शन कीता ना अलख अभेउ दा, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अन्न कहे मैं वेख्या जुग चौकड़ी बीतया विच संसार, कलयुग अन्तिम गया आईआ। मैनूं खा खा लख चुरासी गई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैं डर डर रोवां ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी दरोही खुदाए परवरदिगार, यामबीन तेरी सरनाईआ। नाता जोड़ कर प्यार, प्रेम प्रीती विच रखाईआ। निगाहबान बण मददगार, तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां दे आधार, सूफ़ीआं सुख दे उपजाईआ। साचे प्रेम दा कर आहार, भोग इक्को वार लगाईआ। गुरमुखां दा सदा लेखा रह जाए जुग चार, चौकड़ी सके ना कोए बदलाईआ। तेरा भरया रहे भण्डार, देवणहार तेरी वड्याईआ। ग़रीब निमाणे जाईं तार, कोझे कमलयां गोद उठाईआ। तेरा नाउँ सच्चा निरँकार , निरवैर हो के वेख वखाईआ। घर ठांडा बणा सच्चा दरबार, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा करया विहार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

३३३
१६

१६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ आत्मा सिँघ तेजा सिँघ दे गृह फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर

अन्न कहे जन भगतो शाबाश, खुशीआं विच वज्जे वधाईआ। तक्कया पुरख अबिनाश, जो अबगतां पार लँघाईआ। सब दी पूरी करी जाए आस, तृष्ना अगली रिहा बुझाईआ। कूड़ कुकरमां कर के नास, सच धर्मा इक समझाईआ। सज्जण हो के वसे पास, सगला संग निभाईआ। गुरमुख रहे ना कोए उदास, चिन्ता ग़म दए गवाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। धीरज सन्तोख देवे विश्वास, कूड़े विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। आवण जावण फंद कटा के दस दस मास, लख चुरासी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चढ़ाईआ।

रंग कहे मैं चढ़ना अन्तर आत्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेल मिलाउणा परम पुरख परमात्म, विछोड़ा रहे ना राईआ। जलवा देणा बातन, निज नूर कर रुशनाईआ। साची सेज सुहाउणा आसण, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाशण, दर दवारा इक्को देणा समझाईआ। जित्थे वसे पुरख अबिनाशण, जोती जाता डेरा लाईआ। मंज़ल दस्से के इक्को घाटण, घाटा पिछला पूर कराईआ। साहिब स्वामी मिल जाए साथण, समरथ पुरख नज़री आईआ। शाहो भूप वड राज राजन, रईयत आपणी लए बणाईआ। एथे ओथे दो जहानां पूरे करे काजण, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। मुरदे आया ज्वालण गुरमुख संभालण, सन्त सुहेले अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा करे दीन दयालण, दीनां अनाथां वेख वखाईआ। अनाथ कहिण असां तक्कया नाथ, धुरदरगाही बेपरवाहीआ। जिस नूं कैहिंदे पुरख समराथ, मालक धुर दा इक अख्वाईआ। जिस दी गा के सच्ची गाथ, आपणा आप ल्या बदलाईआ। इक्को सिमरन इक्को पाठ, इक्को अक्खर दिता पढ़ाईआ। मंज़ल पिछली अगली मुक गई वाट, पैंडा अवर रिहा ना राईआ। झगड़ा मुक गया तीर्थ ताट, अमृत जाम दिता प्याईआ। सच प्रीती जोड़ के नात, साथ सगला ल्या बणाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। लेखे ला के जगत स्वास, पवण पवणां विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस जन्म कर के रास, रस्ता धुरदा दिता वखाईआ।

३३४
१६

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जगीर सिँघ दे गृह फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

हरि नाम शब्द जगत नेता, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी संग निभाइंदा। तन माटी ख़ाकी अन्तर आत्म करे ठांडा सीता, कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता अग्नी तत बुझाइंदा। सच सुच सति धर्म निरगुण सरगुण दस्से अगम्मी रीता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर घर स्वामी सज्जण मेल मिलाइंदा। महल अटल उच्च मनार गृह मन्दिर वखाए इक अनडीठा, चार दुआर छप्पर छन्न नज़र कोए ना आइंदा। साचा कलमा धुर दा नग़मा दस्से इक हदीसा, हज़रत हो के आप पढ़ाइंदा। निरवैर पुरख निरँकार धुर दी दस्से इक प्रीता, प्रीतम हो के आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नित नवित कर कर हित, सन्त सुहेले गुरमुख आपणे विच मिलाइंदा। सतिगुर शब्द सच स्वामी आदि अन्त इक्को नज़री आईआ। गुप्त ज़ाहर अंदर बाहर घट भीतर अन्तरजामी काया माटी हाटी खोज खुजाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद अगम्मी सुणाए बाणी, निरअक्खर अक्खरां विच प्रगटाईआ। अंमिउँ रस अमृत जाम निझर धार देवे

ठंडा पाणी, अग्नी तत तत्व विच्चों बुझाईआ। शब्द नाद धुंन बिन कन्नां सुणाए महानी, अनरागी आपणा राग अलाईआ। निरगुण जोत प्रकाश करे अन्ध अन्धेर ना रहे निशानी, घर विच घर करे रुशनाईआ। जन भगतां साचे सन्तां देवे पद इक निरबानी, मंज़ल पैंडा पन्ध जगत दुआर मुकाईआ। परम पुरख दा मिलणा होवे सच आसानी, राह विच ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। शब्द गुरू गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। मंज़ल चोटी चढ़ के कहे अख़ीर, उपर शाहरग डेरा लाइंदा। मेहरवान हो के कोझयां कमलयां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाइंदा। दीन मज़्ब शरअ कट ज़ंजीर, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जिस दे ढोले गाउँदे फ़िकरयां विच फ़कीर, सिफ्तां विच शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सालाहइंदा। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां कदे होण ना देवे दिलगीर, मन वासना कूड़ी क्रिया माया ममता बाहर कढाइंदा। दूई द्वैती बजर कपाटी परदा देवे चीर, चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाइंदा। लेखा जाणे शाह पातशाह हकीर, ग़रीब निमाणे आहला अदने इक्को घर बहाइंदा। जिस दी मंज़ल चढ़के सच दवारे खड़्के कह के गया कबीर, काया काअबा हक हकूक घर ठांडा इक दरसाइंदा। उह लेखा जाणे पंजां तत्तां वाला शरीर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्तर आत्म देवे ठंडा सीर, निझर झिरना इक झिराइंदा। शब्द गुरू धुर दा सुल्तान, मुकामे हक डेरा लाईआ। सचखण्ड बहे दाता बण श्री भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतारां पैगम्बरां देंदा रहे दान, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। भगत सुहेले लोकमात जुग चौकड़ी लभ्भे आण, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। नाम पदार्थ देवे दान, शब्द अगम्मा झोली पाईआ। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। साची मंज़ल दे हक मुकाम, मुकामे हक जलवा नूर करे रुशनाईआ। घर विच घर ठाकर स्वामी पारब्रह्म प्रभ मिले आण, अनन्द आत्म इक जणाईआ। भगतां दा बणया भगत वछल भगवान, भाग सब दा जुग जुग झोली रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म दा मेला दस्से आसान, मुश्कल अगली हल्ल कराईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ अर्जन सिँघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मैनूं खाधा जीव जंत, मानव उदर अधार बणाईआ। खिटा भरदे रहे सन्त, रसन स्वाद वखाईआ। छकदे

रहे पंडत, जजमानां घर फेरा पाईआ। बहिंदे रहे बण के पंगत, पंज सत्त जोड़ जुड़ाईआ। इक्को अख्वाउँदे रहे गुर की संगत, गुर धार ना कोए दरसाईआ। दर भिखारी वेखे मंगत, मंगण थाउँ थाँईआ। झगड़दे रहे जेरज अण्डज, सांतक सति ना कोए कराईआ। मैनूं होए हैरानी रंजश, ग़मी रही सताईआ। लेखा मुकया ना किसे करन अन्तश, हक हक ना कोए समझाईआ। जगत वासना रही बन्दश, बन्दगी प्रभ ना कोए वड्याईआ। तृष्ना मिटी किसे ना तमस, तामस दए दुहाईआ। याद आई कूक मारी शम्मस, हौके नाल सुणाईआ। परवरदिगार तेरी रमज़, इशारयां विच वखाईआ। बुद्धी ना आवे समझ, विद्या ना कोए दृढ़ाईआ। बिना अन्न तों चले कोई ना नब्ज, नबीआं नूं रही सताईआ। दुःख होवे ग़ज़ब, गर्ज रही भड़काईआ। मिले ना माण अदब, वड्याई वड ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप वरताईआ। अन्न कहे मैनूं खांदी रही दुनिया, दाअवेदार अख्वाईआ। सहारा दिता ऋषीआं मुनीआं, ज़िदगी ज़िंदगी नाल मिलाईआ। भण्डारा बख्श्या गुण गुणीआं, गहर गम्भीर समझाईआ। किसे लेखा नहीं जाणया सम्मत उन्नीआं, एका नाया परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा रंग आप रंगाईआ। दाणा कहे मैनूं खांदा रिहा जग, जगदीशर समझ किसे ना आईआ। मेरा लेखा बणदा रिहा विच हज्ज, हज़रत गए अपनाईआ। गुर अवतार स्वाद लैंदे गए रज्ज रज्ज, रसना (जिह्वा) बत्ती दन्द मेरा संग बणाईआ। मैं जुग चौकड़ी वेंहदा रिहा सब, पैगम्बरां ध्यान लगाईआ। मैनूं खा के सारे शुकरीआ करन इक्को रब्ब, वाहिगुरू नाम सिफ्त सालाहीआ। सच दवारे पुरख अकाल कोल किसे ना खड़या सद, आपणा वक्त गए लँघाईआ। मैं पालदा रिहा सब, हड्ड मास नाड़ी नाल रलाईआ। बौहड़ी मैनूं सारे गए छड्ड, साचा यार ना कोए मिलाईआ। अन्त अख़ीरी सब दी मुकी हद्द, पैंडा रिहा ना राईआ। मैं कूक पुकार कीती गज्ज, होका दिता सुणाईआ। जन भगतो मैं तुहानूं लैणा लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाईआ। तुहाडे कारन प्रभू नाल मिलण दा बणे सबब, सभा वेख साची खुशी मनाईआ। जिस ने प्रेम प्रीती अंदर भोग लगाउणा जग, भाग मेरा दए बणाईआ। मैं चरण कँवल झुकणा वध, वाधा अगला लैणा बणाईआ। दर्शन करना रज्ज, नेत्र नैण रिझाईआ। सुनेहड़ा दस्सणा सच, सति देणा समझाईआ। प्रभू जन भगतां सिर ते रखणा हथ्थ, समरथ तेरी सरनाईआ। मैनूं भेंट कीता एहनां समझ के चंगी वथ, वस्त अमोलक दे बणाईआ। तेरे प्रेम प्यार दा चार जुग मिलदा रहे रस, रस्ता इक्को दे वखाईआ। भगत भगवान दा संग वेखदा रहां हस्स हस्स, खुशीआं विच आपणी खुशी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा रहे ना वक्ख, विछड़े लए मिलाईआ।

३३६
१६

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरी सिँघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

भगत लेख कहे मैनूं देंदे गए सहारा, सृष्टी विच सति सच सच समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बोलदे गए जैकारा, इक्को प्रभ दा नाम ध्याईआ। सांझा रूप प्रगट होया ना विच संसारा, सगला संग ना कोए बणाईआ। भविख्तां विच दे के गए इशारा, संदेश्या विच समझाईआ। परम पुरख लए अवतारा, कल अन्तिम वेस वटाईआ। जोती नूर करे उज्यारा, ज़हूर विच समाईआ। भगतां सुहा के दवारा, दवारका वासी दी लोड़ रहे ना राईआ। देवे अगम्म भण्डारा, अथाह आप वरताईआ। सज्जण बण के प्यारा, प्रीतम आप अख्वाईआ। मेट के अन्ध अंध्यारा, साचा चन्द दए चमकाईआ। सतिजुग साचा कर प्यारा, धर्म इक दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म कहे मैं वेख्या हाकम, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को नगर खेड़ा साकन, दूजा घर ना कोए बणाईआ। पैगम्बर अवतार जिस दी सिफ्त आखण, कलमयां विच सालाहीआ। जिस दा जलवा तक्कण बातन, ज़ाहर करे रुशनाईआ। सो सच सुनेहड़ा आया आखण, गुरमुखां हक पढ़ाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रातन, सतिजुग सच होवे रुशनाईआ। भाग लग्गे काया माटन, मटकी मिट्टी सोभा पाईआ। सच दवारा दस्से बातन, माही मिल मिल खुशी इक वखाईआ। लेखा जाण पुरख अबिनाशण, परदा ओहला रिहा उठाईआ। जन भगतां कोट जन्म दे कट के पापण, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। आत्म परमात्म दस्स के महातम, महिमा इक्को इक समझाईआ। साचा धर्म इक सनातम, आत्म दरसी दए दरसाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोई कातब, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल सिर्फ़ आया भगतां बाबत, बाद मेल ना कोए मिलाईआ। प्रेमीआं पूरी करे हाजत, तृष्ना जगत मिटाईआ। निंद्रा लाह के आलस, असल दए समझाईआ। सच दा बण के सालस, सदमा दए गवाईआ। गुरमुख कर के खालस, आपणा रंग चढ़ाईआ। जोड़ जुड़ा के धुर दा मालक, मेला इक्को लए कराईआ। गुरमुख वेखे नंनां बालक, बचपन आपणी गोद सुहाईआ। प्रेमी प्यारा बणा के याचक, यथार्थ देवे इक सरनाईआ। गुरमुख रसना जेहवा रौला पावे ना कोई जाचक, पिछला परदा दए उठाईआ। मन मनुआ रहे ना कोई राकश, बुद्धी बिबेक दए कराईआ। चुग़ली निंदया करे कोई ना सांतक, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। हरिजन रहे कोई ना नास्तिक, स्वारथ सब दा दए बणाईआ। साचा नाम देवे किरपा कर के धुर दी आप विरासत, विरसा इक्को झोली पाईआ। निरगुण हो के करे सफ़ारश, हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। खुशीआं नाल लिखदा जाए इबारत, अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। निउँ निउँ कदम चुम्मे भारत, भावनी सब दी वेखे थाउँ थाँईंआ। सूफ़ीआं कराए सच ज़िआरत, ज़ेर ज़बर

ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया बदल वज़ारत, हुक्म इक्को इक समझाईआ। सचखण्ड दवारे ला अदालत, अदल इन्साफ़ आप कराईआ। जगत करे ना कोई वकालत, वुकला विद्या वाला कम्म किसे ना आईआ। हंगता गढ़ ना रहे बग़ावत, बग़लगीर नूर खुदाईआ। सच भण्डारा करे सख़ावत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तृष्ना रहे ना कोए अदावत, रंग इक्को दए रंगाईआ। कूड़ी रखे ना कोए बनावट, गुरमुख सति सच नाल प्रनाईआ। तन माटी बाहरों करे ना कोए सजावट, अंदरों निर्मल रूप दए वखाईआ। जन भगतां प्रभ मिलण दी करे ना कोई रुकावट, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। गुरमुखां मंज़ल चढ़दयां आवे ना कोई थकावट, भज्जण चाँईं चाँईंआ। सचखण्ड दवारे पहुंचण सही सलामत, आत्म परमात्म मिल के खुशी मनाईआ। गुरमुखो सच्चा प्रेम जुग जुग दी तुहाडी रखी अमानत, कलयुग अन्तिम तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। साचा पीर गुणी गहीर बेनज़ीर हर घट जाणी जाणत, अन्जाणत लए उठाईआ। जे तुहानूं मेरी नहीं स्याणत, सुफ़नयां विच बिन नेत्रां आपणा दरस रिहा कराईआ। सदा सुहेला बण के प्रितपालक, काया पालकी विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जन्म मरन दी रहिण ना देवे कोई इलामत, बिन इलमों आलम दए बणाईआ।

३३८
१६

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ धर्म सिँघ दे गृह बस्ती दरया ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत आसा कहे मेरा लेखा लग्गा, बाकी रिहा चुकाईआ। पुरख अकाल दे के सद्दा, सदभावना पूर कराईआ। लख चुरासी नाल करके दग़ा, गुरमुख कूड़े दंगे विच्चों बाहर कढाहीआ। लेखे ला के भुक्खा नंगा, नाम ओढण सीस रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दए सरनाईआ। आसा कहे मैं अगे नहीं जाणा बिछरत, विछोड़ा रहे ना राईआ। जग वासना छड्डुया ऐसो-इशर्त, राह इक्को इक तकाईआ। आसा मनसा पूरी होवे हसरत, असूल इक्को दए समझाईआ। जिस दी साया हेठ जुग चौकड़ी कीते बसरत, बिसवेदारी दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची नईआ दए चढ़ाईआ। आसा कहे मैं वेख्या मालक असली, असल रिहा जणाईआ। आत्म परमात्म वसली, महबूब नूर खुदाईआ। माण तोड़ के जल मछली, प्रीती धुर दी रिहा बणाईआ। खेल मुका के कच्छ मच्छ दी, इक्को रंग रंगाईआ। धार जणा के धुर दी अक्ख दी, अक्खीआं रिहा बदलाईआ। जेहड़ी काया कीमत नहीं कक्ख दी, कंचन रूप रिहा जणाईआ। कूड़ी रीती छुडा के जग दी, जागरत जोत रिहा जगाईआ। जन भगतां वेल रहे

वधदी, वाधा आपणे नाल पवाईआ। खेल मुके अज्ज पज्ज दी, भुलेखा भरम ना कोए भुलाईआ। बस्ती रहे ना अगे अड्ड दी, बसेरा इक्को घर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक टिकाईआ। आसा कहे मैं ओस दवारे टिकदी, जित्थे टिक्का इक्को नज़री आईआ। सिफ्त होवे इक दी, इक्को ढोला गाईआ। वड्याई होवे पित दी, पिता परमेश्वर बेपरवाहीआ। मैं प्यासी सदा साचे हित दी, हितकारी वेख वखाईआ। खेल मुका के नित दी, निज घर बैठा चाँईं चाँईंआ। मेरी बाज़ी हो जावे जित्त दी, हार नजर कोए ना आईआ। वड्याई मिल जाए भगतां वाली थित दी, घड़ी पल सोभा पाईआ। जिस दी रेख कदे ना मिटदी, मेटणहार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भावना पूर कराईआ। आसा कहे मैं धुर दी आसावंद, ध्यान इक लगाईआ। वेखणा धुर दा चन्द, जोत नूर रुशनाईआ। मानणा इक अनन्द, जो अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गाउणा इक्को छन्द, जो आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सिक्खणा इक्को ढंग, तरीका शहिनशाहीआ। कूड़ी ढाउणी कंध, भाण्डा भरम भन्नाईआ। मिलणा सूरे सरबंग, घर प्रीतम नज़री आईआ। सुणना इक मृदंग, अगम्मी नाद वजाईआ। सच दुआर वेखणा लँघ, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। सिर रहे ना पापां पंड, कूड़ गठड़ी देणी सुटाईआ। धुर दा बणाउणा इक्को संग, संगी साथी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर लेखा दए चुकाईआ। आसा कहे मैं जुग चौकड़ी रही तक्कदी, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। किस वेले कीमत पवे हक दी, सच मिले वड्याईआ। तृष्ना रहे ना कोई शक दी, संसे दए गवाईआ। धार रहे ना मनमति दी, गुरमति करे कुड़माईआ। सूरत नज़री आवे कमलापति दी, पतिपरमेश्वर परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। आसा कहे मैं रखदी रही आस, आशा विच ध्यान लगाईआ। तक्कदी रही उपर आकाश, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। वेंहदी रही गोपी वाली रास, मुख घूँगट इक उठाईआ। गुर अवतारां वसी पास, पैगम्बरां नाल कुड़माईआ। सुणदी रही रबाब, जो तूं ही तूं ही गाईआ। आउँदी रही आवाज़, गोबिन्द बेपरवाहीआ। जाणदी रही नमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। पुछणी रही राज़, घर घर फेरा पाईआ। बिन भगतां प्रभ मिलण दी किसे ना दस्सी जाच, तत इष्ट सारे रहे मनाईआ। इक्को चंगी लग्गी बात, हभ कुछ पिछला गई भुलाईआ। मिलणा कमलापात, घर स्वामी नज़री आईआ। उह देवे दात, चरण प्रीती धुर दी झोली पाईआ। अन्तिम पुछे वात, कदे ना होवे जुदाईआ। सेवा विच कहे शाबाश, मेहर नज़र उठाईआ। प्रेम प्यार दी खा के भात, भोजन आपणा लए बणाईआ। दे वड्याई मात, मतलब अगला हल कराईआ। अमृत बूँद बख्श सवांत, अग्नी

तत गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगला पिछला जाणे सर्ब हालात, लेख लिखावे नाल कलम दवात, दाअवेदार गुरमुख साचे घर दए बणाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुरजन सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर शहर ✪

अन्न कहे मैं वेखे अनन्त, अरबां खरबां फोल फुलाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेला लभ्भे सन्त, गुरमुख सूफ़ी नूर खुदाईआ। जिस दे अन्तर इक्को मंत, ढोला धुर दा गाईआ। सगली मेट चिन्त, दुखड़ा रिहा मिटाईआ। चुरासी विच्चों कर के हिम्मत, हौसला रिहा वधाईआ। सच दुआर दी चढ़ के सिम्मत, साहिब स्वामी अन्तरजामी दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। अन्न कहे मैं वेखे अनेक, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। जो खा के रहे लेट, आलस निंद्रा जन्म गवाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले रहे चेत, चेतन सुरती आप कराईआ। निज स्वामी करन हेत, प्रीतम आपणा आप मनाईआ। मन मनसा कर के भेंट, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। निज नेत्र आपणे वेख, पेख खुशी मनाईआ। वेख अवल्लड़ा वेस, गीत गावण चाँईं चाँईंआ। समझ के धुर दा देस, दस्सण थाउँ थाँईंआ। धुर दी रख के टेक, पिच्छा जाण भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। अन्न कहे मैं वेखे मानुख मानुश मानव आदम, ममता विच लोकाईआ। बहुत्यां विच्चों थोड़े ख़ादम, ख़िदमतगार, हो के सेव कमाईआ। किसे लेखा नहीं जाणया कृष्न नाल यादव, युधिष्टर समझ रता ना आईआ। क्यों दर्योधन होया पाग़ल, बुद्धी मति गवाईआ। क्यों कृष्न बणया कातिल, कतलगाह वड्याईआ। क्यों मुहम्मद जलवा वेख्या बैतुल, मुक्दस नूर खुदाईआ। क्यों पुरख अकाल बणया आदल, अदालत इक्को इक प्रगटाईआ। सन्त सुहेले भगत जन जागण, जगावणहार आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप भुगताईआ। अन्न कहे मैनूं कैहिंदे रहे अनाज, रसना नाल वड्याईआ। मैनूं खांदे रहे लंगड़े लूले अपहाज, रोगी सोगी आपणे मुख लगाईआ। मैं भेंटा हुन्दा रिहा राजन राज, शाह सुल्तान मिल के खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेरी देंदे गए दात, लोकमात जीव जंत वरताईआ। मेरा सति सुच ना वेख्या किसे स्वाद, रस रसैण ना कोए बणाईआ। लहिणा देणा चुकाया ना मात, मितीआं गए समझाईआ। शब्दी ढोले गाए गाथ, भविक्ख्त गए दृढ़ाईआ। लहिणा देणा फड़ा के हथ्थ पुरख अबिनाश, आपणा पल्लू गए छुडाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त आवे अन्धेरी रात, नव नौ चार दए दुहाईआ। अबिनाशी करता घट घट वासी जन भगतां होवे

दास, दास दासी होके फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारे दए वड्याईआ। अन्न कहे मेरी सब ने मंगी मंग, विष्नूं प्रभ दे अगे झोली डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे दंग, हैरानी विच ध्याईआ। सरगुण दा बख्शीं साचा संग, साहिब तेरी सरनाईआ। अधार दे वरभण्ड, ब्रह्मण्ड तेरी वड्याईआ। जिस धारों उपज्या जेरज अंड, उत्भुज उत्पत दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अन्न कहे मेरा नाता अनादी, नादी सुत बणाईआ। जोत अकालण मेरी दादी, माता धरती सेव कमाईआ। जगत प्यार नाल होई शादी, विश्व नाल कुड़माईआ। निरगुण सरगुण प्रभ दा रूप आबादी, नर नरायण वेख वखाईआ। पृथू कहे आशा इक्को जागी, अन्तर अन्तर मिली वधाईआ। पुरख अकाल ने दिती धुर दी भाजी, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जिस दी जड़ लोकमात लागी, जुग चौकड़ी धार दिती बंधाईआ। ओसदा पुरख अकाल बणया भागी, विभाग पिछला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। विभाग कहे मेरा हिस्सा भाग कोई ना जाणे वण्ड, चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जन भगत होए दंग, हैरानी सब दे अंदर आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए लँघ, जुग चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे गए मंग, करोड़ तेतीसा झोलीआं डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जन भगतां ला आपणे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। नव नौ चार दा लहिणा मुका दे विच इक डंग, डंका आपणा नाम सुणाईआ। हरिजन रहे ना कोई भागांमंद, मंदभागी दे तराईआ। झूठा भेख पाखण्ड ना रहे वेख डम्ब, डिम्ब अवर ना कोए वखाईआ। परम पुरख परमात्म तूं केहड़ा उडणा ला के खम्ब, जोत सरूप शब्दी धार जोती जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्त अख़ीरी गए हंभ, बल तेरे चरणां विच रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जगत विकार रिहा कम्ब, धरत धवल ना कोए सहाईआ। दर दरवेश दर दवारे रहे मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्श इक अनन्द, दु:ख सुख विच बदलाईआ। अन्न करे मैं की दस्सां हाल, हालत बदली सर्ब लोकाईआ। मैनूं खाण वालयां नूं खा गया काल, अन्त सक्या ना कोए बचाईआ। राज राजान शाह सुल्तान होए बेहाल, बिहबल होए देण दुहाईआ। सुरत सक्या ना कोए संभाल, सूरत मूर्त नूर नूर ना कोए प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी मैं करदा रिहा भाल, पुछदा रिहा थाउँ थाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बर बणो दलाल, होकयां नाल जणाईआ। मेल मिलाया नाल श्री भगवान, भाग मेरा मेरी झोली देवे टिकाईआ। सारे दे के गए ज्ञान, अक्खर वक्खर लेख जणाईआ। बिना भगतां दे प्रभ दा मिले ना किसे

निशान, दो जहानां नज़र कोए ना आईआ। ओनह्नां उपर होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। तेरा लेखे लावे पकवान, पाक पाकीज़ा दए बणाईआ। दर घर बणे महमान, महबूब साहिब गुसाँईंआ। तेरा लेखा चुकाए आण, अनक कलधारी दया कमाईआ। साचे नाम दा दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए गवाईआ। भगतां नाल तेरी करे कल्याण, कलमयां दा लेखा दए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे परवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पत तेरी लए रखाईआ।

✪ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ तारा सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ✪

अन्न कहे मैनूं कोटन खा खा हो गए मुरदे, मुर्दा मुरीद विच ना कोए समाईआ। शाह कंगाल जगत जहान गए तुरदे, बण के पाँधी अन्तिम पन्ध ना कोए चुकाईआ। शौह दरयाए गए रुढ़दे, वहणां विच्चों मुहार ना कोए बदलाईआ। गुरमुख विरले भेव पाए पूरे सतिगुर दे, ध्यान चरण कँवल लगाईआ। सुरती अंदर मिल के जुड़दे, शब्दी वज्जे वधाईआ। राग सुण के अगम्मी सुर दे, सुत्यां लई अंगड़ाईआ। लेखे ला के भाग धुर दे, मस्तक रेखा लई बदलाईआ। वासी बण के सच्चे अनन्द पुर दे, पुरी इक्को इक वड्याईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा साचे मंत्र फुरदे, फ़ुरना मन ना कोए वखाईआ। झगड़े मुका के अन्ध घोर दे, सच नूर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्न कहे मैनूं जुग चौकड़ी खा खा गए लुक, कोटन कोटां विच्चों कोए रहिण ना पाईआ। मानस मानव बूटे गए सुक्क, पत्त टहणी फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। असंख जननीआं गोद उठा के गईआं सुत, सुत्यां रैण जगत विहाईआ। सहारा बणया रिहा पंज तत काया माटी बुत्त, तन वजूद खुशी मनाईआ। सिध्धा किसे मिल्या ना अबिनाशी अचुत, चातृक तृखा ना कोए बुझाईआ। नव नौ चार पिच्छो आई सुहञ्जणी रुत्त, रुतड़ी आपणा रूप बदलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निरगुण धार गया उठ, निरवैर निराकार दया कमाईआ। मेहरवान हो के गुरमुखां उत्ते रिहा तुठ, दयावान हो के आप जगाईआ। सच प्रेम दा जाम देवे घुट, कूड़ी तृष्ना अग्ग बुझाईआ। घर घर दर दर जा के लए पुछ, पश्चाताप दए वड्याईआ। साची दस्से इक्को तुक, सोहँ ढोला शहिनशाहीआ। उज्जल करे मात मुख, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्तिम अन्त अंदरों निकलण ना देवे हाए उफ़, उल्फ़त विच लै के जाए चाँईं चाँईंआ। अन्न कहे मैनूं खा खा अनक अनेक थक्के, थकावट विच लोकाईआ। मैं फिर फिर वेखे मदीने

मक्के, काअबे रहे कुरलाईआ। नौ अठारां मिलदे धक्के, रिद्ध सिद्ध ना कोए वड्याईआ। कोटां विच्चों गुरमुख थोड़े मिलदे सच्चे, जो सच सुच रहे अपनाईआ। सिध्धे पुरख अकाल दे बण के बच्चे, चाचयां कोलों पल्ले गए छुडाईआ। उन्हां दे लूं लूं अंदर रचे, रचना आपणी रिहा वखाईआ। उन्हां लोड़ ना रहे पढ़न दी कक्के खक्खे, ख़ालस आपणे विच समाईआ। लोकमात वेखे आपणी अक्खे, आख़र आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रहबर इक हो आईआ। अन्न कहे मैनूं खा खा वधदी गई जगत दी ख़ुदी, तकब्बर दए दुहाईआ। सुध्ध ना रही बुद्धि, भृष्टी विच लोकाईआ। निर्मल जोत ना होई उग्घी, घर मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ ना वसी झुग्गी, महल अटल देण दुहाईआ। मैं झगड़ा वेख्या चौंह जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फ़ैसला ना कोए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को निरगुण धार उठी, निरँकार आपणी कल वरताईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लभ्भे इक्को मुट्ठी, गुरमुख थोड़े दए वड्याईआ। सति आत्मा रहे कदे ना रुठ्ठी, रुसयां लए मनाईआ। मन वासना जाए कुठ्ठी, शब्द खण्डा हथ्थ चमकाईआ। जन भगतां गंढुदा जाए तुट्टी, गंढुणहार स्वामी आपणी दया कमाईआ। सुहाउँदा जाए सुहञ्जणी रुत्ती, रुत्त धुर दी इक महकाईआ। दर दरवेश हो के जन भगतां दवारे कटे बुत्ती, बुत्तखानयां करदा जाए सफ़ाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां रिहा पुच्छी, बिन सद्दयां लए उठाईआ। गुरमुखो तुहाडे विछोड़े दी औध मुकी, वक्खरा राह ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन गोदी रिहा चुक्की, चुक चुक आपणी ख़ुशी मनाईआ।

३४३
१६

१७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सूबेदार राम सिँघ दे गृह गवाल टोली फ़िरोज़पुर

अन्न कहे मैं बदलदी वेखी रुत्त, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। खेल तक्कदा रिहा अबिनाशी अचुत, की वरते बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर बदलदे रहे रुख़, नित नवित वेस वटाईआ। तक्कदा रिहा अन्धेरा घुप, दीन दुनी खोज खुजाईआ। बैठा रिहा ओहले लुक, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। दुनीदारां तृष्ना लग्गी रही भुक्ख, ममता विच लोकाईआ। बिन भगतां साचा मिल्या किसे ना सुख, तृष्ना अग्न ना कोए बुझाईआ। सुफ़ल होई ना जननी कुक्ख, गेड़ा लख चुरासी ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर परदा रिहा उठाईआ। अन्न कहे मैं वेखे कोटन कोटि अनक, अनक कलधारी जुग जुग खेल खिलाईआ। धार वेंहदा रिहा जनक, चारों कुण्ट परदा लाहीआ। तक्कदा

रिहा सज्जण सन्त, जो साहिब रहे मनाईआ। वेखदा रिहा पुरख अबिनाशी कन्त, कन्त कन्तूहल बेपरवाहीआ। जिस दी सब तों वक्खरी निराली रंगत, रंग अगम्मा दए चढ़ाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निरअक्खर अक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणाए साची बणत, घड़न भन्नणहार समरथ स्वामी अन्तरजामी मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं भगतां सदा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध ना कोए रखाईआ। मेल मिलावां लाशरीक, शिरक्त कूड़ी दयां गवाईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रत इक्को एकँकार दयां मिलाईआ। महल अटल मन्दिर मनारा दस्सां ठीक, ठाकर स्वामी घर घर नज़री आईआ। जिस दी जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला पतिपरमेश्वर पारब्रह्म परवरदिगार सांझा यार दस्से इक प्रीत, रीती नीती अंदरों दए बदलाईआ। वसणहारा सच दुआर इक इकल्ला काया करे ठांडी सीत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन आत्मक राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी अन्तश्करन हर घट खोज खुजाईआ। खोज कहे मेरी किसे ना कीती खोज, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़दे रोज़, रोज़यां विच आपणा आप मिटाईआ। निर्मल नूर ना तक्कया किसे जोत, दीआ बाती कमलापाती काया माटी करे ना कोए रुशनाईआ। मन वासना दीन दुनी करदी रही सोच, बुद्धी समझ नाल चतुराईआ। निज नेत्र किसे ना खोल्ह्या लोचण लोच, आसा मनसा मानव सक्या ना कोए बदलाईआ। अबिनाशी करता जन भगतां दस्से आपणा निराला चोज, चोजी प्रीतम हो के जोग इक्को इक समझाईआ। झगड़ा मुका के लोक परलोक, आवण जावण डेरा ढाहीआ। नाम सुणा के सच सलोक, अन्तर मोख चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के हरख़ सोग़, चिन्ता ग़म जन भगतां दए मुकाईआ। चिन्ता ग़म कहे मैं जगत प्यारी, घर घर बैठी डेरा लाईआ। माया ममता नाल सरदारी, कूड़ कुटम्ब रही बणाईआ। काम क्रोध नाल यारी, याराने घर घर रही वखाईआ। जगत विद्या कर ख़ुआरी, चारों कुण्ट करी हल्काईआ। दर दरवेश, बणे भिखारी, जीव जंत मंगण थाउँ थाँईंआ। बिन भगतां साची मिली ना किसे ख़ुमारी, ख़्वाहिश पूर ना कोए बणाईआ। जगी जोत गृह ना इक निरँकारी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम दुनिया वेखी सारी, सृष्टी खोजी थाउँ थाँईंआ। महल अटल सोहे ना कोए दवारी देहुरे, धाम रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा चरण कँवल धूढ़ सच्ची छारी, शरअ विच्चों शरअ दए बदलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल धुर दरबारी, दरे दरबार आपणा हुक्म मनाईआ।

✪ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुलखण सिँघ दे गृह पिण्ड मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

अन्न कहे मैनूं जुग चौकड़ी रहे खांदे, सरगुण खुशीआं नाल पकाईआ। रंग माणदे रहे पंडत पांधे, काज़ीआं विच दुहाईआ। साधू खा खा फिरन नांगे, भबूती ख़ाक रमाईआ। विद्या वाले विद्यार्थी रहे गांदे, कूक कूक सुणाईआ। फ़कीर शाहां घर रहे जांदे, आपणा पन्ध मुकाईआ। भेंटा चढ़दी रही माता गांगे, गंगा जल विच समाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मैनूं हौली हौली रहे आंहदे, आख आख दृढ़ाईआ। तेरा लेखा मुकावांगे अन्त मालक कोल धुरां दे, धुर दा खेल वखाईआ। मैं सुण के बचन तत्तां वाले गुरां दे, गोर विच आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल धुर दा रिहा बणाईआ। मैनूं खांदे रहे हज़रत हकीर वड्डे हाजी, आपणी खुशी बणाईआ। रस लैंदे रहे पैगम्बर बण नमाज़ी, आहला अदना इक्को रंग वखाईआ। मेरी रखी किसे ना लाजी, जवाब दे के सारे पल्लू गए छुडाईआ। मैं आपणी हारदी वेख के बाज़ी, बाजां वाले अगे दिती दुहाईआ। जिस वेले गुजरी स्वास छड्डण लग्गी सी बुढ्ढी दादी, ध्यान इक नाल लगाईआ। भुक्खी हो के मारी आवाज़ी, दुखी हो सुणाईआ। पुरख अकाल तेरा खेल अनादी, जुग चौकड़ी ना कोए बदलाईआ। मैं खुशीआं वाली वेखी कोई ना शादी, शादयाना ना कोए वजाईआ। सुणया ढोला ना कोई अगम्मी रागी, ताल वजया ना थाउँ थाँईंआ। तेरा पकवान मिल्या ना अमृत रूप स्वादी, हावे अन्न दिती दुहाईआ। श्री भवगान किहा मैं भाणे विच राज़ी, खुशीआं विच समाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम होण लगी बरबादी, घर बाहर देण दुहाईआ। ओस वेले नवीं साजण लवां साजी, धुर दा सज्जण हो के फेरा पाईआ। प्रेमीआं प्यारयां भगतां दा बणां इमदादी, आमद विच खुशी प्रगटाईआ। खेल अगम्मी करां सांझी, आत्म परमात्म परदा लाहीआ। गुरमुख धार रहे ना वांझी, वञ्झ मुहाणा इक्को दयां जणाईआ। मनुआ रहे कोई ना बाग़ी, बग़ावत भगतां अंदरों दयां कढाहीआ। सच प्रेम बणा वैरागी, वैरी कूड़े दयां खपाईआ। सच दवारा करां वड भागी, भाग उनां दी झोली पाईआ। दर दर घर घर फिरां स्वांगी, वेस अवेसा रूप वटाईआ। प्रेम पदार्थ बणां स्वादी, गृह गृह आपणी खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा कहे मैं वेखी लिख्त, लेख नौ साल पहले नज़री आईआ। मेरी अंदरों खुल्ह गई दृष्ट, दिशा वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल दा आपणा इक भविख्त, जिस दी भाषा समझ किसे ना आईआ। सोचदा रिहा राम वशिष्ट, नुकता गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जिस अन्तर नव नौ चार दी लिस्ट, अक्खर लीक ना कोए वण्डाईआ। चौथे जुग दी अख़ीरी किशत, हिस्सा सोहणा दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। खेल कहे

मैं जुग जुग वरतां, वर्तमान दयां जणाईआ। जिस वेले राम तों विछड़या भरता, अयुध्या पई दुहाईआ। उस हाल सुणाया घर दा, अंदरों दिती दुहाईआ। राम किहा एह खेल अगम्मे हरि दा, जो हुक्म रिहा वरताईआ। भरत किहा जेहड़ा भोग तैनूं सी लगदा, भुक्ख भोज रूप बदलाईआ। जिस नूं खा के मैं सां रज्जदा, अंदरों दु:ख मिटाईआ। राम किहा मैं हुक्में अंदर सब कुछ तजदा, भाणे विच समाईआ। तैनूं सब कुछ दस्सदा, सच दयां दृढ़ाईआ। बचन याद रखीं अज्ज दा, भुल रहे ना राईआ। त्रेता दआपर जावे भज्जदा कलयुग अन्त करे रुशनाईआ। खेल होया जगत काअब्यां वाले हज्ज दा, मन्दिर मठ्ठ वण्ड वण्डाईआ। हुक्म मिलणा पुरख समरथ दा, अकथ करे पढ़ाईआ। नूर उपजणा जोत प्रकाश दा, प्रकाशवान खुदाईआ। लेखा मुकणा तेरी आस दा, आहिस्ता आहिस्ता दयां दृढ़ाईआ। मेरा वसेरा होणा जंगल प्रभास दा, भाणे विच रखाईआ। अगला लेखा ऐउँ जापदा, जिस दी लिख्त ना कोए दृढ़ाईआ। साल चढ़ना पुरख अकाल दा, सम्मत साचा सोभा पाईआ। विहार होणा फुल्ल गुलाब दा, गुरमुख महक दए महकाईआ। नाम दस्सणा आपणे जाप दा, अवर ना कोए पढ़ाईआ। रिश्ता जुड़ना पिता पुत बाप दा, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। मेला वेखणा इक्को साक दा, दर सज्जण नूर खुदाईआ। झगड़ा मुकणा बुद्धी काग दा, गुरमुख हँस दए बणाईआ। कोटां विच्चों विरला जागदा, जिस दी अक्ख आप खुल्हाईआ। महीना होणा माघ दा, रविदास मिले वड्याईआ। लेखा मुकणा बिदर साग दा, साहिब देवे शरनाईआ। जन भगतां सुणना हुक्म अगम्मी आवाज़ दा, शब्दी शब्द जणाईआ। अबिनाशी करते रस लैणा ओस स्वाद दा, जो रस हथ्थ किसे ना आईआ। जन भगत दवारयों लेखा पूरा करना खाज दा, दूजी आस ना कोए बणाईआ। मार्ग लाउणा अगले रिवाज दा, भगत भगवान मिल के खुशी मनाईआ। राम किहा भरत हुण अगे कोई वेला नहीं स्वाल जवाब दा, चुप कर के सीस देणा निवाईआ। सो लेखा पूरा होणा ओस अहिबाब दा, जो शत्रु मित्र बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दख़ल देवे धुर दरगाही सच नवाब दा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड तूत ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति कहे शाह पातशाह मेरे हज़ूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार अरज़ कर मन्ज़ूर, दो जहानां वाली तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जूठ झूठ कूड़ी क्रिया कढ्ढ कूड़, लोकमात धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। चतुर सुघड़ बणा मनमुख मूर्ख मुग्ध मूढ़, ज्ञान नेत्र निज लोचन कर रुशनाईआ।

सच प्रीती धुर सरनाई बख्श अगम्मी चरण धूढ़, मस्तक टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। माया ममता हउमें हंगता जगत तृष्ना कढ्ढ ग़रूर, गहर गम्भीर बेनज़ीर गुणवन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। जगत वासना पंचम पंच कर चूरो चूर, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को नूर कर रुशनाईआ। मानव मानुख मानस अन्तर आत्म आपणा जोती बख्श नूर, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को रंग दे वखाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। मनमुख जीव जो तैथों विछड़ होए मफ़रूर, काया काअबे साचे हुजरे अंदर फड़ बाहों लै मिलाईआ। शब्द अगम्मी नाद अनादी निज गृह दे आपणी तूर, तुरत सुरत अकाल मूर्त नाल मिलाईआ। जगत तृष्ना मनुआ मन ना पावे फ़तूर, फ़तवा इक्को वार ला के लख चुरासी जीव जंत लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा धर्म दे उपजाईआ। सति कहे प्रभ कलयुग मेट दे कूड़ा धन्दा, चार वरन अठारां बरन रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म तेरा नूर अलाही बन्दा, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। जलवागर नूरी जोत चाढ़ चन्दा, जोती जोत कर रुशनाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना शब्द अगम्मी दे खण्डा, खड़ग इक्को इक चमकाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीर रहे कोई ना गंदा, जगत तृष्ना अंदरों बाहर कढाहीआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल तेरे नाम शब्द दा वजदा रहे सुरंगा, धुंन आत्मक अनरागी आपणा राग सुणाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख अकाला दीन दयाला दो जहानां वाली योद्धा सूरबीर सूरा सरबंगा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जमना सुरस्ती गोदावरी वखा अगम्मी गंगा, निझर झिरना अमृत रस बूँद स्वांती इक चुआईआ। परदा लाह दे निज आत्म परमात्म भेव खुल्हा दे हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म तेरा रूप इक्को नज़री आईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती ज़ात पात मिटा दे भरमा, कूड़ी क्रिया गढ़ तुड़ाईआ। लेखे ला दे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ चर्मा, चानण निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया दे बदलाईआ। सति कहे श्री भगवान कलयुग कूड़ा दे बदल, माबदौलत तेरी इक सरनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दो जहानां कर इक्को अदल, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां गुरमुखां साची इक्को दस्स मंज़ल, दूजा राह ना कोए तकाईआ। धुरदा ढोला सच नग़मा दस्स अगम्मी ग़ज़ल, ग़रज़ सब दी पूर कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर सारे तैनूं लभ्भण, वरन बरन खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेखा दे मुकाईआ। सति कहे प्रभ वेख अन्धेरा अन्ध, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जगत पाँधीआं मुकया किसे

ना पन्ध, मंज़ल मंज़ल तेरा दरस कोए ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द निजानंद, निज ताल ना कोए वजाईआ। खुशीआं मनाउँदे रवि ससि वेख के तारा चन्द, घर जोत प्रकाश साढे तिन्न हथ्थ करे ना कोए रुशनाईआ। जगत जिज्ञासू जगत वस्तू सारे रहे मंग, आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा मेला हक ना कोए मिलाईआ। नाम निधाना इक्को वण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी ओट तकाईआ। . . . . सति कहे प्रभू मैं वेखणा चाहुन्दा तेरा इक अगम्मी दरबार, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जित्थे दर दरवेश खड़े गुर पैगम्बर अवतार, विष्न ब्रह्मा सीस निवाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार निरँकार, जोती जाता पुरख बिधाता सच सिँघासण सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती तेरा जगे अगम्म अपार, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सके ना कोए बुझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लख चुरासी जीव जंत कर ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दे सुणाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया तजो हँकार, बुध बिबेक लओ बणाईआ। काग़ज़ कलम लिख लिख गए हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। बिन साहिब सतिगुर पुरख अकाल साचे मन्दिर चढ़े ना कोए दवार, दरगाह साची हक मुकामे सचखण्ड सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ वेख कलयुग काली रात, राती रुत्ती रुत्तड़ी हक ना कोए महकाईआ। साची वस्त ना किसे कोल दात, ख़ाली भाण्डे काया माटी नज़री आईआ। अंदर वड़ मन्दिर चढ़ ना वेखे कोई झाक, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। अमृत पीवे ना कोए बूँद स्वांत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा परम पुरख परमात्म आत्म गावे कोई ना गाथ, सिफ्ती ढोले गा गा थक्की जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्तां विच गए आख, शब्द संदेशे लोकमात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, कलयुग अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। सति कहे मेरे अन्तरजामी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। तूं सर्ब कला समरथ महिमा अकथ अगम्मी तेरी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम चार कुण्ट दहि दिशा रोवे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। राह तक्के तेरा अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पाणी, शिवदवाले मन्दिर मस्जिद मठ दए दुहाईआ। किरपा कर परम पुरख शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। सदी चौधवीं सब नूं होई हैरानी, बेईमानी अंदर मन्दिर बैठी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को बख्श पद निरबानी, आपणी दया कमाईआ। सति कहे प्रभू बख्श सति सतिवाद, सति धर्म दे लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बरबाद, जड़ लोकमात उखड़ाईआ। हर हिरदे अंदर आपणी दे दे उह याद, जिस दी याददाशत ना कोए भुलाईआ। काया खेड़ा कर दे आबाद,

गृह गृह आत्म बूटा दे महकाईआ। धुन आत्मक सुणा आपणा नाद, अगम्मी राग अल्हाईआ। बिन रसना दे स्वाद, रस आपणा इक चखाईआ। सोई सुरती जावे जाग, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। सृष्टी बुद्धी ना रहे काग, हँस बंस दे बणाईआ। साची प्रीती दा बख्श इक वैराग, वैरी दुश्मण इक्को रंग रंगाईआ। दुरमति मैल दुराचारीआं धो दाग़, पतित पुनीत दे कराईआ। जगत तृष्ना कूड़ी बुज्झे आग, अमृत मेघ बरसाईआ। फल फुलवाड़ी तेरी मौले रुत सुहञ्जणी गुरमुख बूटा सोहणा दिसे बाग़, चार कुण्ट इक्को महक दे महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त अख़ीरी बदल दे रिवाज, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सति कहे पुरख अकाल लोकमात ला दे सति धर्म, सति सन्तोख दे जणाईआ। निहकर्मी हो के दस्स आपणा कर्म, कर्म कांड दे गवाईआ। कूड़ी क्रिया किसे दे अंदर रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। इक्को इक दस्स ठाकर स्वामी आपणी सरन, सरनगति इक्को दे जणाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले तैनूं वरन, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा चुक्के जन्म मरन, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। साची मंज़ल बिन पौड़े डण्डे चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सच दवारे तेरे खड़न, सचखण्ड निवासी ठांडे घर वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला पढ़न, दूजा गीत ना कोए सुणाईआ। तूं करनी दा करता कारन करन, करते पुरख तेरी बेपरवाहीआ। प्रेमीआं प्यारयां निज नेत्र खोल्हदे हरन फरन, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इष्ट दृष्ट सृष्ट वेख वखाईआ। सति कहे प्रभू दे दे धुर दा जोग, जोगीशर तेरा ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया कढु दे रोग, रंगत आपणी दे रंगाईआ। चिन्ता ग़म रहे ना सोग़, दुःख दर्द ना लागे राईआ। आत्म परमात्म मिल के माणे मौज, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। नित नवित तक्कण तेरा दरस लोचन लोच, अक्ख प्रतख मिले गुसाँईंआ। मन वासना रहे कोई ना सोच, मति मतवाली ना दए दुहाईआ। नाम खुमारी अंदर कर मदहोश, जगत मदि नाता दे तुड़ाईआ। झगड़ा चुका दे लोक परलोक, सलोक इक्को देणा सुणाईआ। चरणां हेठां रोंदी फिरदी मुक्ती मोख, जन भगत तेरा नूर तेरे विच आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म साची दस्स दे खोज, परदा ओहला दे चुकाईआ। सति कहे प्रभू मेरे धन्नवन्त, धन्न तेरी वड्याईआ। तूं लख चुरासी कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी सरनाईआ। गढ़ु तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बोध अगाधा बण पंडत, चार वरन दे जणाईआ। गुरमुख वेख धुर दे सन्त, सज्जण मीत लै उठाईआ। नाम निधाना दस्स मंत, मंतव सब दा हल कराईआ। सतिजुग सच बणा बणत, कलयुग कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। जुग चौकड़ी बीते लोकमात अनन्त, कलयुग लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साचा मार्ग दे प्रगटाईआ। सति कहे परम पुरख तेरी करदे रहे उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दस्स के गए ठीक, ठाकर स्वामी आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग चला के अवल्लड़ी रीत, मन्दिर मसीत लेखा दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला दस्स के इक्को गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन सुणाईआ। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान हकीर फ़कीर इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि जगदीश, जुग जगत आपणा हुक्म वरताईआ। सति कहे प्रभू दे दे फ़रमान, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। तूं आदि जुगादी परम पुरख सुल्तान, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। तैनूं झुकदे दो जहान, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। तूं लख चुरासी सच्चा काहन, नाम बंसरी धुन वजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट शैतान, शरअ दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को ढोला तेरा गीत गाण, गोबिन्द तेरी सच सरनाईआ। काया माटी भाग लग्गे साढे तिन्न हथ्थ मकान, झूठे मकबरयां विच्चों बाहर कढाहीआ। आपणा मिलणा कर आसान, मुश्कल अगली हल कराईआ। तूं रहमतां दा रहमान, रहीम करीम इक्को इक अख्वाईआ। तेरा कलमा सच कलाम, नग़मा नूर खुदाईआ। तूं जलवागर अमाम, ईसा मूसा मुहम्मद तेरे दर ते सीस निवाईआ। सच बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरा सहारा बैठे रखाईआ। कलयुग जूठ झूठ मेट मात निशान, निशाना धर्म दे उपजाईआ। मानव बख्श आपणा ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे चुकाईआ। तूं सब दा सांझा श्री भगवान, हिस्सयां वाली वण्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर दुआर महान, महिमा अकथ ना कोए सुणाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हजूरा सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति कहे प्रभ वेख खेल कलयुग कल दी, कायनात रही कुरलाईआ। मंज़ल सब नूं भुली तेरे निहचल धाम अटल दी, सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना आईआ। कूड़ कुड़यारी अग्नी बलदी, बलधारी योद्धा सूरबीर सके ना कोए बुझाईआ। माया ममता कूड़ कुड़यारी खेल वेखी अछल अछल्ल दी, शांती सति सन्तोख धर्म ना कोए वड्याईआ। मन वासना दुनियादारी अंदर रलदी, काग हँस रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ा झगड़ा दे खपाईआ। सति कहे प्रभ कलयुग अन्तिम कर छेती, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। आत्म परमात्म बण भेसी, पारब्रह्म ब्रह्म परदा

दे उठाईआ। जन भगतां आत्म रहे ना कोए परदेसी, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। निज नेत्र लोचन नैण आपणे पेखी, काया मन्दिर अंदर मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा रंगाईआ। सति कहे प्रभ कलयुग मेट दे निंद्रा आलस, असल वसल आपणा दे कराईआ। पुरख अकाल बण सालस, झगड़ा कूड़ रहे ना राईआ। मिटे रैण अन्धेरी अमावस, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। गुरमुख सज्जण बणा ख़ालस, ख़ालस आपणा दरस दिखाईआ। मन विकारा रहे ना कोए नालिश, कूड़ कुड़यार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दो जहान तेरी इक्को दिसे अदालत, लोकमात वज्जे वधाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक दी रहे ना कोए बग़ावत, बग़लगीर बणना आप गुसाँईंआ। आत्मा तेरी अमानत, परमात्म आपणे लेखे लैणी लाईआ। तूं आदि जुगादी सही सलामत, साहिब सुल्तान तेरी शरनाईआ। तेरी महिमा सिफ्त महानत, नाद शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ दे मिटाईआ। कलयुग कूड़ मिटा दे अन्धेरी रैण, अंधिआं मार्ग दे वखाईआ। खोलू दे निज नेत्र नैण, लोचन अक्ख कर रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन नाता जोड़ दे भाई भैण, द्वैत विच करे ना कोए लड़ाईआ। मालक प्रितपालक सब दा बण साक सज्जण सैण, सुहेला इक्को इक अख्वाईआ। जन भगतां दे दे लहिणा देण, देवणहार तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी सिफ्त कहिण, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। तेरा नाम निधाना इक रसैण, लोहा कंचन दे बणाईआ। तूं सचखण्ड निवासी नर नरायण, मुकामे हक तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दे वखाईआ। सति कहे प्रभू तेरे उत्ते इक्को ओट, ओड़क आस रखाईआ। जगत वासना कढु दे कूड़ा खोट, मन दी मनसा रहे ना राईआ। सोई सुरती ला दे चोट, शब्द नगारे दे उठाईआ। भाग लग्गे साढे तिन्न हथ्थ काया कोट, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। होए प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाम संदेसा पवणा देवे चौदां लोक, चौदां तबक अक्ख प्रतख खुलाईआ। जन भगतां बख्श के आपणी मौज, मौजूदा हो के नज़री आईआ। अंदर वड़ के दस्स दे खोज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सच कहे प्रभ चाढ़ दे आपणा रंग, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। नाम निधाना वजा मृदंग, जगत तम्बूर ना कोए खड़काईआ। प्रेम प्रीती दे अनन्द, पुरी अनन्द इक्को नज़री आईआ। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। सेज सुहञ्जणी सोहे सच पलँघ, पावा चूल नजर कोए ना आईआ। अमृत वहावे निझर धारा गंग, गहर गम्भीर आपणा मेघ बरसाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दे के सच्चा संग, सज्जण हो के स्वामी नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग

अन्तिम लेखा दे चुकाईआ। अनक बिधी दा तेरा ढंग, बुद्धी समझ सके ना राईआ। दरे दरबार दर दरवेश दर्दी हो के मंगी मंग, अरज़ इक्को इक जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान बेपरवाह परम पुरख बख्शंद, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्श धुर दा संग, पिछला लेखा दे चुकाईआ। सति कहे प्रभू मार अगम्मी आवाज़, शब्द धुंन सुणाईआ। कलयुग जीव जावण जाग, सुत्यां लै उठाईआ। कर दे वड वडभाग, भुक्ख्यां दे रजाईआ। जोत जगा चिराग़, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। बदल दे समाज, चार वरन मंगे इक सरनाईआ। बख्श अगम्मी दात, नाम ख़ज़ाना झोली पाईआ। मिटे अन्धेरी रात, अन्ध गुबार ना कोए वखाईआ। तूं वसें भगतां साथ, परदा ओहला देणा उठाईआ। इक्को सिमरन इक्को पूजा पाठ, इक्को इष्ट देव देणा जणाईआ। इक्को मंज़ल इक्को पौड़ा चढ़े घाट, दवारा इक्को सोभा पाईआ। जिस घर वसें पुरख अबिनाश, सो भगतां देणा वखाईआ। लेखा मुक जाए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर उपर डेरा लाईआ। अन्त अख़ीरी इक रखी आस, आशा पूर देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। सति कहे प्रभ दे दे हुक्म संदेसा, सदा आपदा नाम जणाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक नर नरेशा, दो जहान तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पूरा कर दे दुनीदार दा ठेका, ठाकर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां भगतां कर लै चेता, कौल इकरार विच संसार पूरा दे कराईआ। सन्त उबारना तेरा पेशा, गुरमुख गुरसिख दे वड्याईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आया हमेशा, विष्न ब्रह्मा शिव सक्या ना कोए उलटाईआ। जो लेखा लिख के गया दस दस्मेसा, दहि दिशा दए भवाईआ। नज़री आए पुरख अकाल एका, एकँकार तेरा नूर होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, कलयुग कूड़ कुड़यार रहे ना विच संसार, माया अग्नी अग्ग ना लग्गे अंग्यार, अमृत मेघ आपणा नाम घर घर देणा बरसाईआ।

३५२ १६

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ कृपाल सिँघ दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति कहे किरपा कर पुरख समरथ, साहिब सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। हकीकत विच्चों दे दे हक, मेहरवान दया कमाईआ। निज नेत्र लोचन खोल्ह आपणी अक्ख, आखर आपणा परदा दे उठाईआ। नाम भण्डारे भर सख, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। सच प्रीती दे जस, जिस्म ज़मीर दे बदलाईआ। धुर दरगाही जुड़े नत, साक सज्जण इक अख्वाईआ। तेरा मेला होवे हस्स हस्स, गुर चेला मिल के वज्जे वधाईआ। घट भीतर गृह मन्दिर निज दुआर वसे प्रतख, वक्खरा धाम

ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाणा धुर दा घर, घर स्वामी परदा देणा लाहीआ। सति कहे प्रभू आपणे नाम दा सच दे सबूत, हुक्म धुर दा इक जणाईआ। भाग लगा काया काअबे सच कलबूत, कलमा इक्को इक दृढ़ाईआ। मुहब्बत विच मिल आप महबूब, महव इक्को रंग रंगाईआ। लेखे लग्गे तत काया पंज भूत, जग सूत रहे ना राईआ। जलवा नूर दिसे चारे कूट, गृह भीतर होवे रुशनाईआ। जगत रहे ना जूठ झूठ, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। अर्श फर्श इक्को दिसे अरूज, आख़र अख़ीर तूंही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा धुर दा घर, दर दरवाज़ा देणा खुल्हाईआ। सति कहे पुरख अकाल दीन दयाल घर मिल साचे सज्जण, साजण तेरी ओट तकाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, निरअक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। प्रेम धूढ़ी दे अगम्मी मज्जन, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। पतित पुनीत कर पाक माटी बदन, बदला पूरब दे चुकाईआ। ढोल सुणा जगत अनादी नदन, अनाहद आपणा राग अलाईआ। जोती दीपक जन भगतां अंदर जगण, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। नाम अमोला अनमोला अनतोला ला सगण, समुंद सागर लेखा रहे ना राईआ। तेरा दरस होवे उपर गगन, काया गागर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा धुर दा घर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। सति कहे मैं तक्कणा साख्यात, सनमुख हो के नज़री आईआ। अमृत देवे अगम्मी आबेहयात, हयाती विच्चों हयाती दए बदलाईआ। महल अटल वखाए इक महिराब, महबूब बैठा सोभा पाईआ। डण्डौत बन्दना सजदा दिसे इक आदाब, बिन कदमां सीस निवाईआ। आत्म परमात्म खोल्ह के राज़, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल वज्जदी रहे आवाज़, धुन आत्मक बन्द ना कोए कराईआ। जन भगतां तेरे मिलण दी ख़ाहिश, गहर गम्भीर मिलणा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देणा इक ख़ताब, ख़ता पिछली मुआफ़ कराईआ। सति कहे जन भगत उठा सुत्ते, आलस लिंदरा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेहरवान अबिनाशी अचुते, चातृकां बूँद स्वांती दे चुआईआ। तेरी मौले सुहञ्जणी रुत्ते, आपणा रंग बदलाईआ। तेरी धार निरँकार निरवैर हो के उठे, ब्रह्मण्ड खण्ड फिरे चाँईं चाँईंआ। दीनां अनाथां भगतां सन्तां फ़कीरां फ़िकरयां विच पुच्छे, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वखाउणा धुर दा दर, दरवाज़ा अंदरों देणा खुल्हाईआ। सति कहे प्रभू तेरा शब्द अगम्मी बोल, अनबोलत वज्जे वधाईआ। नाद अनादी ढोल, ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा उठाईआ। भगतां अंदर जावें मौल, मौला हो के नज़री आईआ। अन्तर परदा देवीं खोल्ह, ख़ालक ख़लक तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं प्रगट हो के उपर धौल, धवला लेख देणा मुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी कौल, कँवल नैण बिन नैणां वेख वखाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरदीप सिँघ दे गृह गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द प्यारा मीता, सज्जण धुर दा इक अखवाइंदा। गुरमुख काया करे ठांडा सीता, कूड़ी क्रिया अग्नी तत बुझाइंदा। मन वासना डूँग्घी भँवरी लख चुरासी जाणे रीता, माटी हाटी फोल फुलाइंदा। धुर दा नाम अंमिउँ रस देवे अमृत जाम मीठा, कूड़ कुड़यारा क्रोध हँकार रहिण ना पाइंदा। धाम अवल्लड़ा सचखण्ड वखाए अनडीठा, निज नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाइंदा। साचा मन्दिर घर विच घर वखाए अगम्मी मसीता, हुजरा हक हक सालाहइंदा। जित्थे इक्को कलमा नाम सिफ़्त सालाही हदीसा, पुरख अकाला दीन दयाला इक्को सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाइंदा। सतिगुर शब्द सद गहर गम्भीर, डूँग्घा सागर भँवर आपणा नाम वखाइंदा। नित नवित जुग चौकड़ी बदलदा रहे तदबीर, तकदीर शाह सुल्तान हकीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेखदा रहे शाह फ़कीर, अमीर ग़रीब दीन दुनी खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। शब्द गुरू कहे मेरा हुक्म बलवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। झुकदे रहे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगदे रहे दान, झोलीआं खाली अगे डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे रहे परवान, धुर दी धार विच बंधाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द निरगुण सरगुण करदे रहे कल्याण, कलमा नग़मा नाम ढोला गीत संगीत अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरू कहे मेरा हुक्म एका, एकँकार दिती वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म रखणा टेका, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर करां बुध बिबेका, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। सच दवारा वखावां धुर दा देसा, जित्थे वसे पातशाह बेपरवाहीआ। ओथे जन भगतां जन्म जन्म दा मुके लेखा, कर्म कर्म दा रोग रहे ना राईआ। त्रैगुण माया लाए कोई ना सेका, तत्व तत ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर अंदर काया माटी परदा ओहला दए चुकाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सूरबीर सुल्तान, दो जहानां वाली नज़री आईआ। मैं वेखे राम काहन, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाईआ। कलयुग खेल कीता महान, वरन बरन जगत

रीती विच फसाईआ। अवतारां पैगम्बरां गुरुआं दे के दान, दाता हो के आपणी दया कमाईआ। भविख्तां विच कर के गए कल्याण, काअब्यां विच कूक कूक सुणाईआ। हर घट विच वस्से श्री भगवान, लाशरीक जलवा नूर खुदाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, सच दवारे वज्जी इक वधाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले हरिजन वेखे आण, आनन फ़ानन पूरब लेखा दए मुकाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक धुर दी दात देवे दान, अनमंगी दौलत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे दो जहानां सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ राज सिँघ अजैब सिँघ इकबाल सिँघ दे गृह डोगर बस्ती फ़रीदकोट ✪

सति कहे प्रभ शब्द अगम्मी वजा डंका, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे शनवाईआ। सवाधान करा राउ रंका, लख चुरासी चारे खाणी परदा दे उठाईआ। सच दुआर वखा इक्को बंका, गृह मन्दिर धुर दरबार इक्को नज़री आईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमें हंगता मेट शंका, आत्म ब्रह्म सर्ब दे समझाईआ। नाम निधान जोती नूर दे आपणा कणका, किणका अंदर दे प्रगटाईआ। भाग मथोर होवे गुरमुख सज्जण जन का, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच फेर दे अन्तर मन का मणका, जोग अभ्यास दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुका दे हरख सोग चिन्ता ग़म का, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी दया कमाईआ। मन्दिर सुहा दे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ चम्म का, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। भय भउ चुका दे राए धर्म जन का, ज़ामन हो के अगे लै छुडाईआ। जगत खेल तेरे पवण स्वास दम का, दामनगीर हो के आपणा मेल लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह देणा प्रगटाईआ। सति कहे मेरे साहिब पुरख समरथ, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश (पाताल) हुक्में अंदर भवाईआ। जन भगतां शब्द अगम्मी दे वथ, दाता दानी हो के आप वरताईआ। ज्ञान नेत्र निज लोचन खोल अक्ख प्रतख, साख्यात आपणा दरस वखाईआ। क्यों विछोड़े विच बैठा वक्ख, पड़दे विच्चों परदा दे चुकाईआ। तेरा देण दा आदि जुगादी हक, हकीकत आपणी दे समझाईआ। तूं पुरख अकाला साहिब स्वामी सच, सति तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा रस्ता दे बणाईआ। सति कहे परम पुरख निरँकार, निरवैर तेरी आस रखाईआ। मैं मंगदा रिहा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी झोली डाहीआ। दर दरवेश नर नरेश बणया रिहा भिखार, दर ठांडे अलख जगाईआ। कुदरत दे कादर जलवागर

खुदाई यार, बेपरवाह तेरी आस रखाईआ। जन भगतां इक्को बख्श सच प्यार, आत्म परमात्म मेला मिले सहिज सुभाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना होए ना कोए ख़आर, कूड़ी क्रिया बाहर देणी कढाहीआ। तूं साजण मीता धुर दरबार, महिमा अकथ अकथ सिफ्तां विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, रंग आपणा देणा रंगाईआ। सति कहे मैं सदके वारी जावां तैथों घोली, निउँ निउँ लागां पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चार वरन अठारां बरन आपणी दस्स अगम्मी बोली, अनबोलत आपणा राग जणाईआ। सच दवारा जाणा खोल्ही, ख़ालक ख़लक मख़लूक मालक हो के देणा जणाईआ। सतिगुर शब्द तेरा अगम्मी नाद बणे दो जहानां ढोली, ढोला सोहला बण विचोला इक्को इक जणाईआ। तेरी आत्मा परमात्मा सदा बणी रहे गोली, रीती नीती अंदर साची सेव कमाईआ। मनुआ मन जगत वासना पाए ना रौली, रहबर हो के दे वड्याईआ। मति मतवाली रहे मूल ना बौरी, बवरी बाबल दे समझाईआ। तेरी खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बेख़बरी, बिन भगतां समझ किसे ना आईआ। कलयुग दीन दुनी सृष्टी दृष्टी होई बेसबरी, नाम प्याला शब्दी जाम रस देणा प्याईआ। साची धुन गाए कोए ना मधुरी, रसना जिह्वा ढोले गा के मन रहे बहिलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां अदली, अदालत वकालत इक्को दे समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरत धवल उत्तों कर बदली, बादल अन्धेरा अन्ध रहिण कोए ना पाईआ। कायनात जगत विकार विच रहे ना कोए पग़ली, सगली चिन्ता देणी मिटाईआ। तैनूं लभ्भण कोए ना जाए जंगलीं, गुरमुखां दे अंदर डेरा देणा वखाईआ। जित्थे इशारा करे कोए ना उंगली, हथ्थां दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन तेरी किरपा मंज़ल किसे दी कदे ना मुक गई, मुकम्मल दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले आ के पुच्छ लईं, पछोताओ रहे ना राईआ। सति कहे प्रभ प्रगट करदे सति सति सतिवाद, सति धर्म इक्को नज़री आईआ। घट घट अन्तर तेरी होवे याद, बिन रसना जिह्वा ढोले आत्म ब्रह्म पढ़ाईआ। अनरस दे आपणा अगम्मी स्वाद, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। नाम निधाना दस्स बोध अगाध, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। निज गृह परदयां दे अन्तर खोल्ह राज़, नमाज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेहरवान मुहब्बत विच महबूब कर इशायत, आशर्म इक्को दे समझाईआ। जित्थे तेरा धाम अवल्ला ते निरगुण रूप रिहाइश, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर ना सके पैमाइश, अन्त कह कोए ना गाईआ। जुग चौकड़ी आई ना विच किसे अज़माइश, इलम आलम दए दुहाईआ। तेरा खेल अनोखा नहायत, कलयुग अन्त ज़रूरी नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन बणा इक जमायत, तुलबिआं इक्को कर पढ़ाईआ। भगतां नाल मेहर नज़र करीं

रयायत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह इक्को देणा वखाईआ। सति कहे प्रभू सति सच कर प्रगट, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। तूं वसण वाला हर घट, घट घट रिहा समाईआ। तेरे हुक्में अंदर गुर अवतार पैगम्बर रहे नठ, जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाहीआ। सेवा करन अठ्ठ सठ्ठ, जलधारा निउँ निउँ लागे पाईआ। अग्नी बले लट लट, नूर नूर रुशनाईआ। धुन शनवाई कथ अकथ, कातब लिख लिख देण गवाहीआ। तेरा नाम निधाना इक्को सच, सति दए समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी कच्च, गुरमुख कंचन गढ़ दए सुहाईआ। लूं लूं अंदर जाणा रच, रचना आपणी देणी वखाईआ। मनुआ मन ना जावे नच्च, नाटक चेटक दोवें देणे गवाईआ। साची जोत जगे लट्ट लट्ट, लाटां वाली निउँ निउँ लागे पाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान मेटदे फट्ट, पट्टी आपणा नाम बंधाईआ। नाड़ बहत्तर कूड़ी क्रिया उबले कोई ना रत, रती रत आपणा रंग दे रंगाईआ। सति सन्तोख धीरज नाम दे जत्त, यथार्थ आपणी दया कमाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले सूफ़ी सन्त फ़कीर कर आपणे वस्स, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ख़ुशीआं विच हस्स, आकाश प्रकाश तेरी वजदी रहे वधाईआ। भगत उधारने तेरा धुर दा हक, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाउँ रखणा अलखक्णा अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी ओट तकाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड सादक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ सुणा अगम्मी राग, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। सोई सुरती जाए जाग, आलस निंद्रा मोह विकारा ममता रहे ना राईआ। मन वासना कूड़ रहे ना काग, हँस आपणा रूप दे समझाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत दे बणाईआ। गृह मन्दिर निर्मल जोत होए प्रकाश, अबिनाशी करते आपणी दया कमाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वसीं सदा साथ, सगला संग बणाईआ। निरगुण तेरी सरगुण धार अंदर वेखीए रास, गोपी काहन दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन अक्खां नज़री आवें साख्यात, नेत्र ज्ञान कर रुशनाईआ। चरण चरणोदक अमृत रस दे आबेहयात, हयाती विच्चों हयाती दे बदलाईआ। तन वजूद वजा अगम्मी रबाब, अहिबाब हो के ढोला दे सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त इक्को तेरी मंगी इमदाद, नाते सारे दिते तुड़ाईआ। घट भीतर खोल्ह राज़, परदा ओहला रहे ना राईआ। झगड़ा

मिट जाए जगत नमाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दवारा दे खुल्हाईआ। जन भगत कहे प्रभू आपणा पूरा कर फ़र्ज़, फ़ैसला हक दे सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दी सुण अरज़, ख़ाहिश तेरे अगे टिकाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, मेहर नज़र इक टिकाईआ। पूरब जन्म दा करनी दे करते लाह कर्ज़, लेखा धुर दा फोल फुलाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अंदर भगवन हो के वण्ड दर्द, दुखी मज़लूम रहे कुरलाईआ। शरअ छुरी चले कोई ना करद, कायनात कातिल रहिण कोए ना पाईआ। नाम निधान श्री भगवान बिन अक्खरां कर पढ़त, कलम शाही काग़ज़ लहिणा दे मुकाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार हो के वेख उपर धरत, धौल धवल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुका फर्श अर्शां दे मालक आपणा फेरा पाईआ। जन भगत कहे परम पुरख परमात्म आत्म दे वस नेड़े, दूर नेड़ा रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी चुका दे झेड़े, झगड़ा अवर ना कोए रखाईआ। भाग लगा दे साढे तिन्न हथ्थ काया माटी खेड़े, बन्द किवाड़ी खिड़की दे खुल्हाईआ। झगड़े चुक जाण तेरे मेरे, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नूर नज़री आईआ। इक्को रंग रंगा सञ्झ सवेरे, कलयुग काली रैण जगत अन्धेरा दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा खोल्ह घर, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। जन भगत कहे प्रभ किरपा निधान, दयानिध तेरी सरनाईआ। बिन अक्खरां दे दे उह ज्ञान, जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सिफ्त रहे सालाहीआ। धर्म वखा सचखण्ड निशान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी इक्को नज़री आए शहिनशाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा डंका वज्जे दो जहान, नाउँ निरँकारा सच जैकारा करे शनवाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेट निशान, हराम नज़र कोए ना आईआ। परम पुरख परमात्म आत्म आपणी दस्स सच्ची पछाण, बजर कपाटी काया माटी परदा देणा उठाईआ। हर घट रविआ नज़री आ अगम्मे राम, जिस नूं आदि अन्त जुगा जुगन्त जन्मे कोए ना माईआ। मन मनुआ जगत विकारा रहे ना कोई शैतान, शैतानां दी शरअ दे गवाईआ। मानस मानुख मानव तेरे प्रेम अंदर बणन इन्सान, इन्सानीअत इक्को दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्श इक प्रणाम, डण्डउत सजदा इक्को दे दरसाईआ। जन भगत कहे प्रभ आपणा वेख कौल इकरार, पूरब लहिणा रिहा जणाईआ। लिख के गए गुर अवतार, पैगम्बर संदेश्यां विच सुणाईआ। कल कल्की आवे अन्त अवतार, निरगुण निरवैर दाता फेरा पाईआ। रूप रंग रेख तों वसे बाहर, पंज तत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बेख़बरां करे ख़बरदार, शब्द संदेसा नाम कलमा इक्को नग़मा करे शनवाईआ। मुकामे हक दा सांझा यार, जलवागर बेऐब वेस वटाईआ। सचखण्ड सुहाए महल्ल अटार, उच्च अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ।

रहबर बणे संसार, चारे खाणी पावे सार, बाणी आपणा नाम ढोला गीत सुणाईआ। आत्म परमात्म देवे सच अधार, उदर अग्न ना कोए तपाईआ। मंज़ल चढ़ के खोल्हे बन्द किवाड़, पौड़ी डण्डा ब्रह्मण्डां खण्डां उपर आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ पूरी कर दे आस, आसा तृष्ना दे मिटाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेट प्यास, अमृत मेघ इक बरसाईआ। तूं दाता दानी साहिब सर्ब गुणतास, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरे अगे कीती इक्को इक अरदास, बेनन्ती हक हक सुणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिवस रैण घड़ी पल वसीं पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। सच किनारा पार करा दे घाट, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। जन्म जन्म दी अगे मुक जाए वाट, लख चुरासी ना कोए भुआईआ। तूं इक्को दाता इक्को तेरा नाम सौग़ात, ख़ाली भण्डारे दे भराईआ। कलयुग अन्त वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुरमुखां सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीरां जन भगतां अन्तर आत्म अन्तश्करन पुच्छ वात, निजानंद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। जन भगत कहिण पुरख अकाल दीन दयाल क्यों फिरें लुकदा, आपणा परदा पाईआ। बिन तेरी किरपा किसे दा पैंडा नहीं मुक्कदा, चार जुग लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मेहरवान हो के नाता जोड़ शब्दी धार सुत दा, अबिनाशी अचुत तेरी इक सरनाईआ। कलयुग वेला होवे सुहञ्जणा अगम्मी रुत दा, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भाग अनोखा करदे काया माटी बुत्त दा, पंज तत वज्जे वधाईआ। तेरा विछोड़ा सब तों वड्डा दुख दा, पारब्रह्म झल्ले ना तेरी जुदाईआ। तेरी मंज़ल चढ़ हद्द तेरा भगत कदे ना रुकदा, रुकावट अगे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को सहारा दस्स निर्मल जोत दा, जोती जोत होवे रुशनाईआ। जन भगत कहे मैं तेरा तक्कणा नूर, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कट सर्ब कसूर, कसर अशारीए नाल उडाईआ। तूं दाता दानी सर्ब कला भरपूर, देवणहार इक अख्वाईआ। पैंडा मुका दे नेड़े दूर, घर विच बैठा घर ही नज़री आईआ। तेरा मिलणा आत्म दा परमात्म सदा ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। निवण सु अक्खर दस्स के सूझ गढ़ तोड़ ग़रूर, हंगता अंदरों दे कढाहीआ। जिधर तक्कां ओधर हाज़र हज़ूर, हर घट बैठा सोभा पाईआ। सच बेनन्ती परम पुरख परमात्म आत्म करनी मन्ज़ूर, मनसा अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा निधान किरपन आपणे गले लगाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ अमर सिँघ दे गृह पिण्ड मान सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति कहे प्रभ वेख कलयुग अन्त अख़ीर, चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड निरगुण आपणा ध्यान लगाईआ। सांतक सति पंज तत चोली मिले किसे ना धीर, मन वासना कूड़ कुड़यार सृष्टी दृष्टी होए हल्काईआ। अमृत आत्म निझर झिरना कोए ना झिरे धुर दा सीर, चार वरन अठारां बरन रहे कुरलाईआ। हउमें हंगता माया ममता कटे कोई ना भीड़, दूई द्वैती शरअ शरायती बाहर ना कोए कढाहीआ। प्रेम प्याला आबे हयात देवे कोए ना सीर, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। झगड़ा प्या शाहो भूप राउ रंक फ़कीर, ज़ात पात दीन मज़ूब करे लड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धुर दा दिसे कोई ना पीर, सन्त सतिगुर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लोकमात वेख वखाईआ। सति कहे प्रभ लोकमात वेख आपणी धरत, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। साचा नूर किसे नज़र ना आए उपर अर्श फर्श, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। तेरे मिलण दी जीव जंत रखे कोए ना ग़रज़, मन वासना देण दुहाईआ। सच अरदास पूरी होवे ना किसे अरज़, ख़ाहिश मिटे ना ख़लक ख़ुदाईआ। बिन नाम पड़दे ओढण दीन दुनी होई नापड़द, सीस जगदीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कूड़ी क्रिया चार वरन फड़ी शरअ छुरी करद, सति सन्तोख धीरज जत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेख श्री भगवान, पारब्रह्म प्रभ तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा दे के गए ब्यान, भविख्तां विच संदेश जगत सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए ज्ञान, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। तेरा नूर नुराना शाह सुल्ताना नज़र ना आवे किसे विच जहान, जहालत दूर ना कोए कराईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी धुर दा मिले किसे ना राम, गोपी काहन आत्म सेजा सच ना कोए हंढाहीआ। तीर अणयाला लाए कोए ना बाण, शब्दी गोबिन्द चिल्ला सक्या ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई हैरान, हरि का मन्दिर काया साढे तिन्न हथ्थ वज्जे ना कोए वधाईआ। बिन कन्नां सुणे ना कोए तेरा नाम, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेखा दे चुकाईआ। सति कहे प्रभ तेरी उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। नव नौ चार बदल दे तारीख़, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। दर ठांडे दरे दरबार सचखण्ड दवारे मुकामे हक मंगदे भीख, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। निरगुण सरगुण कर धुर तस्दीक, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बण रफ़ीक, फ़रीक रहिण कोए ना पाईआ। दूर दुराडा नज़र आवें नज़दीक, गृह

मन्दिर कर रुशनाईआ। मन ममता ठगौरी पाए कोए ना चीत, चेतन सुरती दे कराईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला दस्स गीत, निरअक्खर वक्खर सच पढ़ाईआ। झगड़ा चुक्के जगत मन्दिर मसीत, गृह गृह अन्तर निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। सति कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ कुड़यारा, चारों कुण्ट डंक रिहा वजाईआ। साचा रिहा ना कोए मीत मुरारा, शत्रु बणी सर्ब लोकाईआ। नाता तोड़ के कूड़ कुड़यारा, सचखण्ड दवारे बैठण कोए ना आसण लाईआ। हक सुणाए ना कोई नाअरा, हकीकत सके ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। मेहरवान मेरे महबूब, मुहब्बत तेरी बेपरवाहीआ। साचे नाम दा दे सबूत, भगत सुहेले मात उठाईआ। भाग लगा के काया सच कलबूत, तन माटी कर रुशनाईआ। महल अटल सुहा इक अरूज, अर्श फर्श तेरी वज्जे वधाईआ। मन्दिर इक्को दस्स मंज़ले मकसूद, गृह इक्को सोभा पाईआ। जित्थे रहे ना कोए दूज, त्रैगुण लेख ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म भेव चुका दे पंज तत तन वजूद, वाज़िह करके दे समझाईआ। नौ दुआर जगत वासना पार कर हदूद, शाहरग उपर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेखा देणा चुकाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा दे चुका, पतिपरमेश्वर तेरे हत्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं लेखा जाए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा निशाना बिन तीर कदे ना उका, अज्ञान अन्धेरा दे खपाईआ। गुरमुख निरवैर निरँकार आत्म बोध कर सुच्चा, अगाध बोध कर पढ़ाईआ। तेरा भेव अभेदा अछल अछेदा अचरज रहे कोई ना लुका, लोक परलोक इक्को सोहला सच सलोक देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, कलयुग कूड़ी क्रिया दे चुकाईआ। कलयुग कूड़ा मेट जग, दीन दुनी (चों) दे कढाहीआ। तूं साहिब सदा समरथ, शाह पातशाह तेरी इक सरनाईआ। भगत सुहेले कर के वख, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। गुरसिखां निरगुण खोल्ह अक्ख, निज नेत्र होए रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को नाम धुर दा दस्स, जिस दी बदली अगे ना कोए कराईआ। तेरे हत्थ हकीकत हक, लाशरीक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति कहे मैं दर दवारे बणया मंगता, मांगत हो के सीस निवाईआ। पुरख अकाल मातलोक कढु कूड़ी हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बण अगम्मी पडंता, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। जोत जगा शब्द नाद सुणा गुरमुख साचे सन्ता, सति सतिवाद इक दृढ़ाईआ। सतिजुग साची बणा बणता, लोकमात होए रुशनाईआ। चार कुण्ट दीन दुखी दिसे जंता, सांतक सति ना कोए कराईआ। कोटन कोटि तेरे

नाम रंग धार तेरी संगता, इक्को इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह दे वखाईआ। सति कहे प्रभ कर दे शांत, शांतक सति सति इक्को नज़री आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक प्रांत, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा मुका दे ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच गए आख, शब्द संदेशे जगत सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे पुरख अबिनाश, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। करे खेल सर्ब गुणतास, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां खोज खुजाईआ। नवें जुग दी धार कर प्रकाश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आप सुणाईआ। जन भगतां दे अंदर अन्तर आत्म वस पास, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी विछोड़े दी तृष्ना वाली बुझा दे प्यास, मनसा पूरन पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच घर, जिस घर इक्को तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। सति कहे पुरख अबिनाशी दे हुलारा, शब्द अगम्मी धार प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होवे पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सति होए वरतारा, वारता आपणी दे समझाईआ। इक्को हुक्म तेरा चले विच संसारा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार तेरे नाम दा होए जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। तूं वाहिद सर्ब गुणतास आदि अन्त परवरदिगारा, जलवा नूर तेरा खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ा लेखा दे चुकाईआ। कलयुग कूड़ा लेखा चुका दे लोकमात, मातर भूमी दे सुहाईआ। जन भगतां दे उह अगम्मी दात, जेहड़ी लोकमात जगत वणजारयां कोलों हथ्थ किसे ना आईआ। बिन अक्खां तेरा दरस करन दिवस रात, निज नेत्र आपणी दे रुशनाईआ। अमृत बूँद दे सवांत, निझर झिरना इक झिराईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। जिधर वेखण उधर नज़री आवें साथ, सगला संग आपणा आप बणाईआ। आत्म परमात्म तेरी इक्को ज़ात, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण प्रीती साचा जोड़ना नात, रिश्ता अवर ना कोए वखाईआ। सति कहे प्रभ शब्द अगम्मी ला चोट, सुत्यां दे उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती ज़ाते तेरी बेपरवाहीआ। भाग लगा दे जन भगतां दे किला काया कोट, बन खण्ड ढूंडण कोए ना जाईआ। तेरा दर्शन करन रोज़, नित नवित तेरी खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म नाल मिल के माण लए मौज, जेहड़ी मजलस कबीर जुलाहे वरगे गए समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी चम्म पोश, चम्म दृष्टी अंदरों दे बदलाईआ। गुरमुखां दी जन्म मरन दी मुक जाए सोच, लख चुरासी दा गेड़ा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक सुणा धुर दा

सलोक, जिसनूं सुणदयां तेरी कदे ना होवे जुदाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां मीता, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा। नित नवित जणावां आपणी रीता, राती रुत्ती थिती आप समझाइंदा। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले रखां त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी आपणे रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्त काया माटी कर के ठांडी सीता, अग्नी तत बुझाइंदा। लेखा जाणां जीव जी का, लख चुरसी खोज खुजाइंदा। गुरमुखां झगड़ा मुका के साढे तिन्न हथ्थ सीं का, आवण जावण फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आत्म परमात्म साची दस्से प्रीता, प्रीतीवान हो के प्रीतम आपणे विच समाइंदा। दया करे प्रभ धुर दा ठाकर, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगावे काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल दए धवाईआ। दर आयां दर्दीआं देवे आदर, अदल अदालत इक्को इक समझाईआ। झगड़ा चुक जाए मकतूल कातिल, कतलगाह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दया करे प्रभ सर्ब गुणवन्त, हरिजन वेख वखाईआ। नाता जोड़ के आत्म परमात्म नारी कन्त, सेज सुहञ्जणी दए सुहाईआ। मौले रुत्त अगम्मी बसन्त, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जन्म विच मरन तों बाद किसे दी कढ्ढणी ना पए मिन्नत, सिध्धा सचखण्ड दए पुचाईआ। लोड़ रहे ना किसे बहिश्त जन्नत, स्वर्गां दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक वखाईआ। जिस जन दर्शन दी अन्तर आत्म लोड़, आसा आसा नाल वधाईआ। उह आत्म उह रूह विछड़ी लए जोड़, जोड़ी शब्द नाल कराईआ। मन वासना जगत क्रिया वलों लए मोड़, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। सतिगुर आपणे हुक्म अंदर गुरमुखां नूं लए तोर, ठग्ग चोर यार साध सन्त लए बणाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, पंजां तों खैहड़ा दए छुडाईआ। लग्गी प्रीती आत्म परमात्म दी निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। मानस जन्म जाए सौर, लख चुरासी पन्ध रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अन्तिम समें अन्तश्करन विच जाए बौहड़, आत्म दा मालक परमात्म हो के आपणे विच मिलाईआ। बिमारी तेरी जाए नठ्ठ, तन वजूद रहिण ना पाईआ। हौली जेही मार के प्रेम वाली सट्ट, प्रीती आपणे नाल जुड़ाईआ। जन्म जन्म दा रोग जावे कट, कष्टां विच ना डेरा लाईआ। साचे नाम दा वखा के हट्ट, वस्त अमोलक काया गोलक थोड़ी जही देवे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा रस, रस्ता बिन रसतिउँ दए समझाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ इन्द्र सिँघ दे गृह कोटकपूरा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगतां प्रभ किरपा करदा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित देवणहार वड्याईआ। मार्ग समझावे अगले घर दा, मंज़ल मंज़ल अगला पिछला पूरब पन्ध मुकाईआ। इश्नान कराए अमृत आत्म सरोवर साचे सरदा, दुरमति पापां मैल रहिण ना पाईआ। जोत प्रकाश नुराना इक्को नूर करदा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। सच दवारे सचखण्ड ब्रह्मण्डां उपर आपे खड़्हदा, दर दवारा दए वड्याईआ। परमात्म हो के आत्म घर स्वामी सज्जण वरदा, कन्त कन्तूहल जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा ढोला इक्को पढ़दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अल्ह्राईआ। जन भगतां प्रभ देवे आपणी मत, मनमति रहिण कोए ना पाईआ। सति सन्तोख धीरज दे यत, यथारथ आपणा रंग चढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह के तत्व तत, तत्वेता इक्को देवे माण वड्याईआ। नाड़ी नाड़ उबले कोए ना रत्त, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। नाम निधाना दे के वस्तू सच, कूड़ कुड़यारा अंदरों दए कढाहीआ। लूं लूं अंदर जावे रच, धुंन अनादी आत्मक आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक अतीता, ठांडा सीता मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतां प्रभ सहारा देवे चरण कँवल, सरन मिले सच सरनाईआ। लेखा चुका के धरनी धरत धवल, धाम इक्को दए वखाईआ। जित्थे जोत सरूपी रिहा मवल, नूरो नूर डगमगाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे कउल, कमलापति आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सच प्रीती दस्स के धुर दा हवन, आहूती इक्को प्रेम प्यार मस्ती विच रखाईआ। जन भगतां प्रभ जुग जुग बणदा रिहा सहारा, अबिनाशी करता श्री भगवान आदि निरँजण आपणी दया कमाईआ। नईआ नौका लाउँदा रिहा किनारा, बण मलाह खेवट खेटा आपणी सेव कमाईआ। निज नेत्र लोचण नैण देंदा रिहा दीदारा, ज्ञान अक्ख प्रतख आप खुल्हाईआ। राग नाद शब्द धुंन सुणाउँदा रिहा जैकारा, अनहद अगम्मी आवाज़ अल्हाईआ। महल अटल सुहाउँदा रिहा काया काअबा उच्च मनारा, चार दीवार छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए उठाईआ। जन भगत जुग चौकड़ी लोकमात उठदा, परम पुरख परमात्म आत्म दए जगाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल हो के तुठदा, वस्त अमोलक काया गोलक नाम निधाना दए टिकाईआ। भेव जणा के सुन्न समाध चुप दा, चातरिक अमृत मेघ बूँद स्वांती मुख दए चखाईआ। झगड़ा चुकाए अन्धेरे घुप दा, गृह मन्दिर घट भीतर तन वजूद करे रुशनाईआ। आउणा जाणा लेखा मुका के मात गर्भ उलटे रुख़ दा, लख चुरसी जम की फाँसी फंदन दए कटाईआ। एथे ओथे दो जहान नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, सुरती

३६४
१६

शब्दी आपणी गंढु पवाईआ। संदेसा दे के इक अगम्मे सलोक दा, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ करे सच पढ़ाईआ। जन भगतां मंज़ल चढ़दयां अगे कोई ना रोकदा, गुर अवतार पैगम्बर मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वर बख्श के आपणी ओट दा, ओड़क आपणे विच टिकाईआ। जन भगत सदा मंगे मंग इक, एकँकार अगे झोली डाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा आवें दिस, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ प्रेम प्यार दी अन्तर ला सिक, सिख़र चोटी चढ़ के परदा दे उठाईआ। बिन अक्खरां निहकर्मी हो के सच्चा लेखा दे लिख, कर्म कांड दा रोग दे गवाईआ। नाम संदेशे विच अगला दस्स भविश, भविख इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर मांगत सन्त सुहेला झोली डाहीआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा साचा जोग, जोगीशर आपणा रंग रंगाईआ। जन्म कर्म दा हउमें हंगता कट के रोग, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता परदा ओहला दए उठाईआ। झगड़ा मुका के वरन गोत, काया सुहा के बंक किला कोट, दुआर इक्को इक वखाईआ। परम पुरख परमात्म प्रीतम निज आत्म निज नैण दस्से आपणा चोज, चोजी हो के आपणी खेल खिलाईआ। परदा ओहला भेव चुकावे गोझ, दूई द्वैती बज़र कपाटी काया माटी हाटी अंदर रहिण कोए ना पाईआ। लेखा रहे ना चिन्ता सोग, ग़मी खुशी विच बदलाईआ। मेहरवान हो के महबूब मुहब्बत विच देवे दरस अमोघ, जागत सोवत इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावणहारा धुर दा दर, जित्थे जगत दरबान सके ना कोए अटकाईआ। जन भगतो तुहाडा इक्को दर दरवाज़ा, अबिनाशी करता आप जणाईआ। जिस घर वसे ग़रीब निवाजा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। तुहाडी सदा सदा जुग चौकड़ी करदा रहे इमदादा, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम जणाउँदा रहे बोध अगाधा, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। सुरती अंदर मारदा रहे आवाज़ा, सोई आप उठाईआ। देंदा रहे सच वैरागा, वैरी दुश्मन अंदरों दए कढाहीआ। हँस बणाउँदा रहे कागा, काग हँस रूप बदलाईआ। मिलदा रहे मेल बण के कन्त सुहागा, आत्म परमात्म नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। दुरमति मैल धोंदा रहे दाग़ा, पतित पुनीत हरिजन दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को दाता, दयावान दया कमाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ चरण दास दे गृह कोट कपूरा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे जन भगत तेरे प्यार दी भुक्ख, तृष्ना जगत ना कोए वखाईआ। मिल के तेरा जन्म जन्म दा मेटां

दुख, दलिद्र दयां गवाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों चुक, सच दुआर इक समझाईआ। अगला दे के धुर दा सुख, चिन्ता ग़म दयां मिटाईआ। सुफल कर के जननी कुक्ख, मुख उज्जल दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद देवणहार सरनाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत तेरे अन्तर लावां खिच्च, शब्दी तार सतार हिलाईआ। दर्शन दे के निज, नैण दयां खुल्हाईआ। फेर नज़री आवां विच्च, होए ना कदे जुदाईआ। सतिगुर मिलयां पंज तत काया माटी पुतला फेर बणदा सिख, शिश आपणा रूप वटाईआ। अगे मेला नाल इक, एकँकार रंग चढ़ाईआ। मानस जन्म बाज़ी लई जित्त, हार चरणां हेठ दबाईआ। सच प्रेम प्यार दा मिल्या हित्त, हितकारी होया आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कर्म दा लेखा देवे लिख, लिख्त ललाट दए बदलाईआ।

✪ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुलज़ार सिँघ दे गृह साहो के ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे मैं गुरमुख सूफ़ी सन्त तक्कां फ़कीर, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया मेट देवां लकीर, माया ममता मोह रहिण ना पाईआ। लख चुरासी जीव जंत दस्स सच तदबीर, गुर गुर शब्द करां पढ़ाईआ। शरअ शरीअत रहिण ना देवां कोए जंजीर, ज़ाहर ज़हूर नूर करां रुशनाईआ। जन भगतां बणां मददगीर, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति धर्म दा मार्ग कर तामीर, तमअ तमाचा दयां लगाईआ। नाम खण्डा हथ्थ फड़ शमशीर, शमां कूड़ी दयां बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे मैं भगतां देणा इक संदेशा, जुग जन्म दा सदमा देणा चुकाईआ। पुरख अकाल मेल मिलाउणा एकँकार एका, इक इकल्ला घर घर नज़री आईआ। मन वासना विच्चों करनी बुध बिबेका, परदा ओहला देणा उठाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम पूरा होणा ठेका, ईसा मूसा मुहम्मद बह बह सीस झुकाईआ। दो जहानां परम पुरख परमात्म बणना धुर दा नेता, निरवैर निराकार आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म दस्सणा साचा हेता, सुरती शब्द वज्जे वधाईआ। कर्म कुकर्म दृष्टी इष्टी चुकणा लेखा, भविख्त अगली दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। पुरख अकाल कहे मैं देणा नाम अनमोल, अनमुलड़ी वस्त जन भगतां लोकमात वरताईआ। शब्द तराज़ू कंडे लैणा तोल, दो जहान हुलारा इक वखाईआ। जन भगतां अन्तर अन्तर परदा देणा खोल्ह, जगत बसन्तर देणी बुझाईआ।

३६६
१६

साहिब स्वामी अन्तरजामी हो के वसणा कोल, कलमा कायनात नग़मा इक सुणाईआ। सति सतिवादी हो के जाणा मौल, कौल इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। लहिणा देणा लेख चुकाउणा धरनी धरत धौल, धवला आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप समझाईआ। श्री भगवान कहे मैं जन भगतां देणी सोझी, सुत्यां लैणा उठाईआ। आलस निंद्रा दा रहे कोई ना रोगी, पतित पुनीत देणा बणाईआ। किसे नूं मंगणा पए ना बण के जोगी, दर दर अलख ना कोए जगाईआ। फड़ के चाढ़ना अगम्मी चोटी, चोट इक्को देणी लगाईआ। अंदरों कढ्ढ के वासना खोटी, कूड़े करमां डेरा देणा ढाहीआ। ठाकर मिला के इक्को मौजी, महबूब इक्को देणा समझाईआ। अन्तिम चुक्कणा धुर दी गोदी, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां देवां वण्ड, नाम अगम्मा झोली पाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भंड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के छन्द, संसा रोग देणा चुकाईआ। निज आत्म दे के अनन्द, अनन्द परमानंद विच समाईआ। सच सरोवर नुहा के अगम्मी गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तों पल्लू देणा छुडाईआ। नाम निधान वजा के मृदंग, धुन आत्मक राग अलाईआ। खुशी करा के बन्द बन्द, बन्दना इक्को देणी समझाईआ। निरगुण जोत चाढ़ के चन्द, मन्दिर करनी सच रुशनाईआ। मंज़ल मुका के पैंडा पन्ध, मेहरवान देणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंग, हुक्म धुर दा आप चलाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां वड़ना अंदर, अन्तश्करन वेख वखाईआ। माया ममता तोड़ के जंदर, ज़िंदगी अंदरों देणी बदलाईआ। मन वासना भवे ना कोई बन्दर, दहि दिशा ना कोए फिराईआ। भाग लगा के काया मन्दिर,* इक्को काअबा देणा समझाईआ। डण्डउत दस्स के अगम्मी बन्दन, बन्दा बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। चरण धूढ़ लगा के टिक्का मस्तक चन्दन, चन्द सूरज दा लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां धुर दा बण के सज्जण, सहिज सुभाउ सच घर साचा दए वखाईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ चन्नण सिंघ दे घर पिण्ड वांदर ✪

भगत भगवान दा नाता अगम्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। आत्म परमात्म परदा देवे भन्न, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाइंदा। नाम भण्डारा देवे धुर दा धन वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा। निरगुण नूर जोत चाढ़े चन्न, जोती जाता जलवा नूर डगमगाइंदा। पारब्रह्म भेव खुलावे हँ ब्रह्म, परदा ओहला काया माटी रहिण कोए ना पाइंदा।

३६७
१६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी भगतां वेख वखाइंदा। भगत भगवान दा नाता एक, एकँकार दए वड्याईआ। सच प्रीती बख्श धुर दी टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अन्तर अन्तर बुद्धी करे बिबेक, मन वासना लेखा दए मुकाईआ। जन्म कर्म दी बदल देवे रेख, समरथ स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दवारा दस्से अगम्मड़ा देस, थिर घर वज्जे इक वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला नज़री आवे इक नरेश, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे वेस, काया माटी पंज तत चोला जगत प्रगटाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना सच अगम्मा दए संदेश, खाणी बाणी हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जन भगतां लिखे बिन कलम शाही लेख, लिख्त भविख्त आप दृढ़ाईआ। सेव लगा के विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, सिर सके ना कोए उठाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा लहिणा देणा देवणहारा गुर दस्मेश, दहि दिशा चार कुण्ट वेखे चाँईं चाँईंआ। गुरमुख हरिजन सन्त प्यारे अंदर वड़ के देवे भेत, परदा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। साजण मीता ठांडा सीता नज़री आवे नेतन नेत, निज नेत्र करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले गुरमुख चेले लए पेख, लोकमात दहि दिशा वेख वखाईआ। भगत भगवान दा नाता आदि जुगादि, जुग चौकड़ी रहे हमेश, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। नाउँ निरँकारा सुणाउँदा रहे नाद, आत्मक धुन अगम्मी आप प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्सदा रहे याद, भरम विच भरम ना कोए रखाईआ। अक्खर वक्खर दस्सदा रहे बोध अगाध, कलमा हक हक सुणाईआ। सोई सुरती काया माटी हाटी अंदर जावे जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। त्रैगुण माया डस्सणी मूल ना डस्से नाग, पंच विकारा काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हल्काईआ। सच भण्डारा नाम अमोलक देवे धुर दी दाद, दाता दानी दया कमाईआ। इक दूजे नूं भगत भगवान सदा रहे अराध, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। अमृत रस धुर दा लैंदे रहिण स्वाद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा राग, साचा सोहला इक सुणाईआ। भगत भगवान बणदा रिहा संग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए गवाहीआ। नाम निधान वज्जदा रिहा मृदंग, ताल तलवाड़े दी लोड़ रही ना राईआ। सोहँ तूं मेरा मैं तेरा बणदा रिहा छन्द, निरगुण निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। काया माटी चढ़दा रिहा रंग, साहिब स्वामी रंगण इक वखाईआ। आत्म परमात्म देंदा रिहा निजानंद, अन्तश्करन परमानंद विच समाईआ। खुशी विच वेखदा रिहा बन्दगी वाला बन्द बन्द, बन्धन लख चुरासी मात तुड़ाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी रहिण ना देवे रंड, घर सुहञ्जणा जोत निरँजणा वज्जदी रहे वधाईआ। सच दुआर एकँकार घर स्वामी ठाकर जाए

लँघ, हक मुकामे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत आप वरताईआ। भगत भगवान दा सच्चा जामा, ज़ामन इक्को नज़री आईआ। इक संदेश इक नरेश इक्को नामा, निरँकारा नाउँ इक्को गाईआ। इक्को करनी इक्को कामा, इक्को करता पुरख रिहा वखाईआ। इक्को अमृत इक्को जामा, आबेहयात प्याला इक्को हथ्थ उठाईआ। इक्को सुणावणहारा धुन आत्मक साचा गाणा, ढोला गहर गम्भीर अल्लाईआ। इक्को सुहावणहारा सच मकाना, काया माटी होए रुशनाईआ। इक्को बण के बीना दाना, दीनां अनाथां लए उठाईआ। भगत भगवान निरगुण निरगुण सति सतवादी करे पहचाना, सच सच आपणा जोड़ मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। भगत भगवान जुड़दा रिहा जोड़, जुग चौकड़ी वज्जदी रही वधाईआ। इक दूजे दी सांझी लोड़, हिस्सा वण्ड ना कोए वखाईआ। नाम अगम्मा पावे डोर, आत्म परमात्म आपणी गंढु जणाईआ। कूड़ी क्रिया गृह मन्दिर अंदर रहिण ना देवे चोर, ठग्गी ठग्ग ना कोए कमाईआ। मन वासना पावे ना कोई शोर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जगत शरअ ना कोए चलाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, सच चन्द करे रुशनाईआ। परमात्म आत्म वसे सदा कोल, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए मुकाईआ। शब्द अनादा बोध अगाधा वजावे डंका धुर दा ढोल, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। लख चुरासी नाम मधाणे लए वरोल, कोटां विच्चों गुरमुख विरले बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवाद इक दरसाईआ। भगत भगवान हुन्दा रिहा मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। अन्तर आत्म देंदा रिहा जाप, अजपा जाप आप समझाइंदा। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया मेटदा रिहा पाप, त्रैगुण अग्नी अग्ग ना कोए तपाइंदा। निरगुण हो के सरगुण देंदा रिहा साथ, लोकमात फेरा पाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ काया चलाउँदा रिहा राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। साची मंज़ल चढ़ाउँदा रिहा घाट, दूर दुराडा पन्ध आप मुकाइंदा। कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी शब्द अनादी इक्को राग अल्लाइंदा। भगत सुहेलयां पुच्छे वात, गुरमुख गुर गुर खोज खुजाइंदा। झगड़ा मुका के ज़ात पात, दीन मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। नाम पदार्थ देवणहारा सच्ची सौग़ात, अनमुलड़ी दौलत झोली पाइंदा। मन वासना कूड़ी क्रिया घर रहे ना नार कमज़ात, गुरमुख गुर गुर हँस रूप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। भगत भगवान गाउँदा रिहा इक सलोक, सोहला ढोला आपणा नाम जणाईआ। लेखा चुक्कदा रिहा चौदां लोक, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। चरणां हेठ दबाउँदा रिहा मुक्ती मोख, निरबाण पद इक समझाईआ। घर ठाकर स्वामी जगाउँदा रिहा जोत, अन्ध अन्धेर आप

मिटाईआ। शब्द नगारे लाउँदा रिहा चोट, सोई सुरत लए जगाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के खोट, सच वस्तू दए टिकाईआ। आत्म परमात्म साचे धाम दस्से अगम्मी मौज, मजलस भगतां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण करे चोज, चोले अंदर ओहला दए मिटाईआ। भगत भगवान रिहा तक्कदा, निज नैण वेख वखाईआ। लहिणा देणा देवे हकीकत हक दा, हाकम हो के बेपरवाहीआ। झगड़ा मुका के कूड़े शक दा, संसा दए गवाईआ। भेव खुल्ला के पुरख समरथ दा, परदा दए उठाईआ। झगड़ा मुका के रहिणा वक्ख दा, इक्को घर दए वसाईआ। जित्थे दीपक जोती जगदा, जलवा नूर करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जदा, नाद धुन शनवाईआ। अमृत झिरना रिसदा, रस्ता रिहा वखाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दिसदा, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी भगत सुहेला इक इकेला नित नवित भगतां लेखा लिखदा, लोकमात दए वड्याईआ। नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। उतम जन्म स्रेष्ट जामा पूरन गुरसिख दा, जो सिख सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुकावे जिस जिस दा, चार वरन अठारां बरन वेखणहारा थाउँ थाँईंआ।

२० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड दबड़ी ख़ाना ज़िला बठिंडा

परम पुरख दा सर्ब परवार, लख चुरासी इक्को नूर नज़री आईआ। पुरख अकाल किसे तों नहीं बाहर, घट घट मन्दिर रिहा समाईआ। जिस चारे खाणी महल्ल ल्या उसार, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज डेरा लाईआ। सो जुग चौकड़ी खेल करे अपर अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव लगा के सेवादार, नित नवित होए सहाईआ। संदेशे देवे बण गुरू अवतार, पैगम्बर हो के कलमा हक जणाईआ। मानस मानुख कर के ख़बरदार, जगत निंद्रा सुत्यां लए उठाईआ। अमृत बख्श के ठंडा ठार, अग्नी तत दए बुझाईआ। धुर दा नाम सुणा के शब्द सच्ची धुनकान, नाद अनादी आप वजाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, घर घर काया मन्दिर अंदर करे रुशनाईआ। सर्ब जीआं प्रभ पावणहारा, सार, लुक्कया रहिण कोए ना पाईआ। करे खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। सिख्या दे के सिक्खां करे प्यार, गुरमुखां मुख उज्जल आप वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के सच जैकार, नाअरा इक्को दए समझाईआ। कागद कलम शाही बण लिखार, सृष्टी ढोले दए प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो जिस वेले आवे आप निरँकार, निरगुण हो के वेस वटाईआ। प्रेमी प्रीतम लए उठाल, जीव जंत विच्चों खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल,

इक्को रंग दए रंगाईआ। जिन्हां बणा लए आपणे लाल, लालन देवे माण वड्याईआ। अन्तिम पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साचा मन्दिर दए वखाल, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। दीवा बले बेमिसाल, जोती जोत होवे रुशनाईआ। महल अटल सुहाए धर्मसाल, दवारा इक्को इक वखाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां चले नाल नाल, अंदर बाहर आपणा साथ बणाईआ। जन्म मरन दा लेखा कर बहाल, लख चुरासी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। परम पुरख दा दो जहान वड बंस, सरबंस आपणा वेख वखाईआ। आत्म परमात्म नूर नुराना अंस, अन्तश्करन दए समझाईआ। काग लेखा जाणे हँस, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। मानस जन्म बणाए बणत, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। हउमे गढ़ ना रहे हंगत, माया ममता मोह मिटाईआ। कर किरपा जिन्हां मेले आपणी संगत, सो गुरमुख सोभा पाईआ। झगड़ा चुका के स्वर्ग जन्नत, सचखण्ड दवारा इक वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। भगत सुहेले प्रभ दा सच्चा परवार, पारावार कहिण कोए ना पाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए आपणी वार, वारता अक्खरां वाली जणाईआ। जिन्हां दा मालक इक निरँकार, निरगुण निरवैर नज़री आईआ। उह करे प्रेम अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर वेख वखाईआ। निज नेत्र देवे दीदार, दरस आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। पुरख अकाल दा सब दे नाल संग, विछड़या नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी चलावे नाल ढंग, हुक्मे विच भवाईआ। गुरमुखां अंदर चाढ़ के आपणा रंग, दुरमति मैल दए धवाईआ। सन्त सुहेले मंगण साची मंग, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। किरपा करे सूरा सरबंग, नाम भण्डारा दए वरताईआ। भाग रहिण ना पाए मंद, मंद वासना दए कढाहीआ। घर वखा के धुर दा चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए जेरज अंड, उत्भुज सेहतज लेखा ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म निज घर देवे सच्चा अनन्द, सुखआसण सिँघासण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान दा जगत सर्ब संसार, साथी गुरमुख लए बणाईआ। अन्तर अन्तर दे के हुलार, सुत्यां लए जगाईआ। नेत्र अक्ख उग्घाड़, दर्शन दए कराईआ। खुशी करा के नाड़ नाड़, पंज तत वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। बंस सरबंस दा राखा इक, इक इकल्ला एकँकार नज़री आईआ। जिन्हां गुरमुखां सिख लई साची सिख, सिख हो के सिख्या विच समाईआ। ओन्हां दा अगला लेखा देवे लिख, पिछली कटे जुदाईआ। नाम भण्डारा पा के भिक्ख, बहिश्तां तों परे आपणे चरणा विच रखाईआ। आत्म दी पूरी

करे सिक्क, सिखर चोटी दए चढ़ाईआ। जिधर वेखण ओधर आवे दिस्स, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां दा बण के धुर दा मित, मित्र प्यारा देवे माण वड्याईआ। सच प्रीती करे हित, हरि सज्जण आप अख्वाईआ। दर्शन देवे नित, साख्यात सोभा पाईआ। ठगोरी मन ना पाए चित, चेतन सुरती दए कराईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक प्रभू पित, पिता पूत वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। श्री भगवान कहे दुनिया दा झूठा जाणो रिश्ता, सगला संग ना कोए बणाईआ। सब ने कूच करना आहिस्ता आहिस्ता, अगे पिच्छे भज्जण वाहो दाहीआ। इक अकाल उत्ते कर लओ सच्चा निसचा, जो नेहचल धाम दए पुचाईआ। परम पुरख दा मन्नो इष्टा, गुरदेव इक्को सोभा पाईआ। जो अंदरों खोल्हे दृष्टा, दृष्टी दए बदलाईआ। झगड़ा मुका के दीन दुनी सृष्टा, सृष्ट आपणा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए चुकाईआ। परम पुरख दा बहु वड्डा परवार, बच्चयां दा मालक इक्को नज़री आईआ। जो नाता तोड़े ना कदे विच संसार, संसारीआं वाली कार ना कोए कमाईआ। मावां दे घर पुत्त जम्मदे दो चार, अबिनाशी करता लख चुरासी जून रिहा उपाईआ। हुक्में अंदर कर के ख़बरदार, शब्द संदेशे जुग जुग सुणाईआ। सेवा ला के गुरू अवतार, पैगम्बरां करी पढ़ाईआ। कलयुग अन्त सृष्टी होई बेहाल, भुल्ली नाम खुदाईआ। जो साहिब सतिगुर दा गुरमुख हो के बण गया साचा लाल, सच सुच विच समाईआ। उस नूं पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साहिब सतिगुर चले नाल नाल, हुक्में अंदर आप भवाईआ। जन्म जन्म दी लेखे लावे कीती घाल, घायल होण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपे रिहा संभाल, सुबह शाम वेख वखाईआ। अबिनाशी करता कहे जन भगतां सदा वड्डा वड्ड भाग, भागां वाला दयां बणाईआ। जो सच सरनाई गया लाग, लग्न इक्को दयां वखाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, दग़ा फ़रेब दयां छुडाईआ। अंदर खोल्ह के आपणा राज़, परदा देवां लाहीआ। नाम जणा के नाद, सोई सुरत लवां उठाईआ। मेट अन्धेरी रात, सच चन्द करां रुशनाईआ। नाम भण्डार दे के दात, भुक्ख्यां देवां रजाईआ। दर्शन दे के बहु भात, बिध आपणी दयां समझाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, दीन दुनी तों बरी दयां कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे शाह नवाब, नईआ नौका इक्को नाम वखाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां सदा सदा सद सहारा, साहिब इक्को इक अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया करां पार किनारा, जगत वहण ना कोए वहाईआ। कलयुग अन्तिम हो उज्यारा, जागरत जोत करां रुशनाईआ। साचा बंस सरबंस कर त्यारा, त्रैगुण तों पल्लू दयां छुडाईआ। इक्को एकँकारा वखा के सच दवारा,

दूजा लेखा दयां मुकाईआ। जो जन साचे दर सच्चा सच करे निमस्कारा, सीस जगदीश भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। लेखा कहे मैनूं जुग जुग सतिगुर लिखदा, दूजी कलम ना कोए चतुराईआ। जिस वेले जीव रूप धरे साचे सिख दा, गुरमुख आपणा आप प्रगटाईआ। चाउ घनेरा होवे अगम्मी पित दा, पतिपरमेश्वर वेख खुशी मनाईआ। उह मानस जन्म बाज़ी जित्तदा, लख चुरासी मंज़ल तैअ कराईआ। उह प्रेमी प्यारा हो जाए एकँकार इक दा, इक्को विच समाईआ। जन भगतां श्री भगवान जुग जुग आपणे अंदर दिसदा, बाहरों लभ्भण कोए ना जाईआ। झगड़ा मुका के ओहले विच दा, विच्चों आपणा आप प्रगटाईआ। लेखा वखाए घर ठाकर निज दा, निज नेत्र करे रुशनाईआ। मेल मिलावा आपणे शब्दी नाम बिध दा, तरीका इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा जाणे सच्चे प्रेम प्यार वाली सिक दा, साची सिक बिन भगतां हथ्थ किसे ना आईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरचन्द सिँघ दे गृह हरिराए पुर ज़िला बठिंडा ✪

आदि जुगादि खेल अगम्मी शब्द सतिगुर दा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म सुरती धार हो के जुड़ दा, विछोड़ा अन्तर बाहर दए कढाहीआ। नाद अनाद वजाए बेपरवाह आपणे ताल सुर दा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। सरजीवत रूप करे जन भगत गुरमुख मुर्दा, गृह मन्दिर साचे वज्जे वधाईआ। भगतां दे अंदर फ़ुरना हो के फुरदा, मन वासना दए खपाईआ। लेखा जणावे पिछला अगला धुर दा, पूरब झोली पाईआ। पन्ध मुकावे विछोड़े वाला अनन्दपुर दा, पुरी अनन्द इक्को दए वखाईआ। जित्थे सूरज चन्द कदे ना चढ़दा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा ढोला पढ़दा, सोहँ सो वज्जे वधाईआ। परदा लहि जावे सचखण्ड साचे घर दा, थिर घर मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। भगत भगवान सद वसण पास, पासा सके ना कोए बदलाईआ। जगत वासना कदे ना करे उदास, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। सदा सदा सद प्रभ मिलण दी रखे आस, आशा अवर ना कोए वधाईआ। गाउँदा रहे बिन रसना जेहवा स्वास स्वास, साह साह ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस जन्म करनहारा रास, रस्ता आपणा दए वखाईआ। भगत भगवान आदि जुगादी इक्को राह, दूजी धार ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म मिल के करन सच्ची सलाह, झूठी वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

शब्दी गुरू विचोला होवे विच मलाह, नाता धुर दा दए बंधाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां लए मिला, फड़ बाहों गोद उठाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया दए मिटा, सति सच इक दृढ़ाईआ। धीरज धर्म धरवास दए वखा, निहकर्मी कर्म बणाईआ। घर सज्जण स्वामी जाए आ, ठाकर हो के फेरा पाईआ। जन्म जन्म दा लेखा दए मुका, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। मेहरवान हो के दरस दए दिखा, प्रीख्या जगत ना कोए जणाईआ। ग़रीब निमाणे आपणे रंग लए रंगा, रंगत इक्को इक चढ़ाईआ। दर दरवेशां दर्द लए वण्डा, दीनां अनाथां होए सहाईआ। गृह गृह घर घर मन्दिर अंदर वेखे थाउँ थाँ, घट भीतर सोभा पाईआ। प्रेम पदार्थ परम पुरख लए खा, निरगुण हो के सरगुण खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दवारे भावना दा भोग दए लगा, भाणा आपणा लए मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण हो के आप सहा, दूजी सहायता दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जगीर दास दे गृह ख्याली वाला जिला बठिंडा ✪

जुग जुग खेल हरि निरँकार दा, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। लेखा वेख जगत संसार दा, भगत सुहेले लए उठाईआ। प्रेम रस दे के आपणी धार दा, परदा ओहला दए उठाईआ। जलवा दे के नूरी चमत्कार दा, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। मेला करा के साचे यार दा, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकावे रोग सोग चिन्ता कुड़यार दा, सति सति दए समझाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगता हँकार दा, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। दर वखावे सचखण्ड निवासी सच दरबार दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। श्री भगवान जन भगतां जुग जुग दिन्दा रहे दलासा, सन्तोख सति झोली पाईआ। इष्ट देव बणया रहे भरवासा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। गृह मण्डल अंदर वखाउँदा रहे रासा, सुरती शब्दी काहन नचाईआ। निज गृह करदा रहे वासा, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अंदर आपणा नूर करे रुशनाईआ। भेव खुल्ाउँदा रहे बण के दासी दासा, सेवक सेव देवणहार वड्याईआ। जन्म जन्म दीआं पूरीआं करे आसां, तृष्ना कूड़ी दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दलिद्र दए मिटाईआ। जन भगतां मेटणहार प्रभू प्रभ दुःख, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। घर स्वामी देवे सुख, सुख सागर रूप प्रगटाईआ। चिन्ता ग़म दा पैंडा जाए मुक, मकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। निझर धारों अमृत सोमा पए फुट्ट फुटकल रहिण कोए ना पाईआ। हरिजन बणाए आपणे सुत, अबिनाशी अचुत दया कमाईआ। सोहणी मौले संसार विच रुत्त, पत्त टहणी आप महकाईआ।

भाग लगा के काया माटी बुत्त, बुत्तख़ाने विच्चों अन्तिम बाहर कढाहीआ। धुर दी गोदी लए चुक्क, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार सरनाईआ। जन भगतां प्रभ देवे सरन सरनगति, सहारा इक वखाइंदा। निहकर्मी दे के धुर दी मत, मनमति कूड़ी परे हटाइंदा। नाअरा सुणा के अलखणा अलख, जैकारा इक्को इक जणाइंदा। आत्म परमात्म कदे ना होवे वक्ख, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जन भगतां अन्तर दे के धुर दा सच, सति आपणा नाम समझाइंदा। काया माटी भाग लगा के कच्च, कंचन गढ़ वेख वखाइंदा। मनुआ मन ना जाए नच्च, नटूआं स्वांग ना कोए बणाइंदा। नाड़ी नाड़ ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए वखाइंदा। सच दवारे लए सद्द, हुक्म संदेसा इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावणहारा धुर दा घर, घर ठाकर नज़री आइंदा। जन भगतां प्रभ मेटणहार दुक्खड़ा, दूर दुराडा नेरन नेरा दया कमाईआ। उज्जल लोकमात करे मुखड़ा, दुरमति मैल आप धवाईआ। लेखा चुकावे मात गर्भ कुक्खड़ा, कुक्ख सुहञ्जणी दए वखाईआ। उलटा फेर ना होवे रुख़ड़ा, चरण कँवल देवे सरनाईआ। मेहरवान महबूब अबिनाशी अचुतड़ा, चेतन सुरती दए बणाईआ। जिस दी
३७५ धारों शब्द अगम्मी धुर दा उठड़ा, निरगुण निरवैर लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन ३७५
१६ भगतां परदा दए उठाईआ। श्री भगवान जन भगतां परदा चुक्के अन्तर अक्ख, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। नज़री १६
आए साख्यात प्रतख, सच दवारे सोभा पाईआ। जगत कूड़ी क्रिया करे भठ्ठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सच भण्डारा खोल्ह के हट्ट, वस्तू इक्को इक वरताईआ। बिन अक्खरां दे के ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या दए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भेव खुल्हा के सच, सच साजण होए सहाईआ। मार्ग रस्ता धुर दा दस्स, दहि दिशा करे रुशनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा सांझा कर के जस, यथार्थ आपणा रंग चढ़ाईआ। अगे रहिण ना देवे वक्ख, घर विच घर मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए रख, रक्ख्या करे चाँई चाँईआ। श्री भगवान जन भगतां होए साजण मीता, मित्र प्यारा इक अखवाइंदा। जुग जुग दी प्रगट कर के रीता, रीतीवान राह चलाइंदा। सच दवारा दस्स के ठांडा सीता, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। जुग चौकड़ी करनहारा खेल अनडीठा, अनडिठड़ी कार आप कमाइंदा। गुरमुखां काया चोली चाढ़ के रंग मजीठा, सति सतिवादी वेख खुशी मनाइंदा। मन मनुआ कूड़ी वासना विच रहे ना रीठा, अमृत फल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक वर, जन्म मरन दा दु:ख रोग संताप, लख चुरासी विच्चों कढ्ढे आप, कोट जन्म दे मेटे पाप, तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जीवण जुगत

जगत दए बदलाईआ। रूह बुत्त काया माटी ख़ाकी अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कर के पाक, पतित पावन अमृत मेघ बरसे सावन, मन मनुआ हँकारी मारे रावण, सीता सुरती धुर दा राम, माटी काची चाम, चम्म दृष्टी विच्चों इष्टी आपणा इष्ट देव समझाईआ। जन भगत मीता ठांडा सीता वैरागी त्यागी बैरागी भावें हो जाए गृहस्ती, नाता तोड़ के जगत बहिश्ती, पार किनारा करके विच्चों सृष्टी, साहिब सुल्तान श्री भगवान हो मेहरवान दे के दान, चरण कँवल बख़्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा इक वर, जन्म जन्म दा लेखा पूरब लहिणा देवणहारा काया माटी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा बख़्श के तन वजूद गहिणा, गहर गम्भीर बेनज़ीर लातस्वीर आपणा दरस दए कराईआ।

२० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बख़तावर सिँघ दे गृह पिण्ड ख्याली वाला ज़िला बठिंडा

श्री भगवान कहे मैं जन भगतां जन्म जन्म दे मेटां पन्ध, जगत पाँधी रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया हउमें हंगता माया ममता शरअ शरायती ढाह के कंध, परदा ओहला बण विचोला अंदरों दयां चुकाईआ। नाम अनडीठा स्वामी हो के चाढ़ां रंग, जग नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। बोध अगाधी शब्द अनादी सुणावां अगम्मी छन्द, ढोला सोहला गीत नग़मा इक्को नाम खुदाईआ। झगड़ा चुकावां रसना जिह्वा बत्ती दन्द, बन्दना डण्डउत बख़्शां इक सरनाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर आत्म परमात्म देवां संग, सगला संग अगला दयां बणाईआ। निरगुण जोत सच प्रकाश चाढ़ के चन्द, रवि ससि खैहड़ा दयां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घट भीतर गृह परदा दए उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं देणा भगतां भण्डारा एक, धुरदरगाही हो के आप वरताइंदा। चरण कँवल सच सहारा बख़्श के टेक, चरण धूढ़ी टिक्का मस्तक नाम ख़ाक रमाइंदा। खुशी होवां बिना नेत्रां अक्खां पेख पेख, लोचन नैण धार ना कोए बणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणा के साक सज्जण सैण, सच दवारा एकँकारा इक्को इक सुहाइंदा। नित नवित करे हित पतिपरमेश्वर चुकावणहारा लहिणा देण, दीन दयाल हो कृपाल वस्त अमोलक काया गोलक सच दवारे आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। श्री भगवान जन भगतां खोल्ह देवे दर दरवाज़ा, दर्दी हो के दर्द वण्डाईआ। नज़री आए नर नरायण शाह नवाबा, भूपत भूप बेपरवाहीआ। झगड़ा मुक जाए मक्का मदीना जगत काअबा, हुजरे हक महबूब दए वखाईआ। धुर नाम दी मारे इक आवाज़ा, थिर घर

वासी दया कमाईआ। सच दवारे खोल्हे राज़ा, सचखण्ड दवारा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दाता, दयावान आप वरताईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां देवां अंमिउँ रस, बिन रसना जिह्वा आप चुआईआ। आत्म परमात्म कर के वस्स, वास्तक आपणे घर वसाईआ। जन्म जन्म दा पूरब लेखा दस्स, बिन शास्त्र सिमरत करां पढ़ाईआ। बिन अक्खां खोल्ह के अक्ख, दो जहानां दयां वखाईआ। बिन तत्तां हो प्रतख, जलवा नूर करां रुशनाईआ। लहिणा देणा चुका के हथ्थ, नाभ कँवल दयां उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दवारा पार कर के हद्द, हदूद इक्को दए वखाईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां देणी शब्द दलील, जगत विद्या वाली ना कोए पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत बणाउणा ना पए कोई वकील, विचोला रहिण कोए ना पाईआ। साचे दर कर के मन्ज़ूर अपील, अपरम्पर स्वामी हो के होवां सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर देणी तबदील, तब्हा सब दी वेख वखाईआ। शब्दी धार खेल करना आर पार अम्बर नील, निरवैर हो के आपणी कार कमाईआ। योद्धा सरबीर बण के छैल छबील, शबे रोज़ आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर अधीन, दीन मज़्हब खैहड़ा देणा छुडाईआ। जन भगत सुहेला रहे ना कोए कमीन, कमले कोझे आपणे गले लगाईआ। चार वरन अठारां बरन मार्ग रस्ता दस्स महीन, मार्ग इक्को देणा वखाईआ। गुरमुख रहे ना कोए ग़मग़ीन, ग़मां दा रोग देणा मिटाईआ। आत्म परमात्म सब नूं देणी तालीम, तुलबे गुरमुख देणे बणाईआ। महल अटल वखा के इक अज़ीम, आलीशान देणा समझाईआ। जिस दा नकशा नज़र ना आए किसे उत्ते ज़मीन, ज़ाहर ज़हूर अंदरों परदा दए उठाईआ। जन भगतां शाबाश कहे आफ़रीन, जो पुरख अकाला दीन दयाला इक्को रहे मनाईआ। कलयुग अन्त सति सति दा दस्स के दीन, धर्म दा धर्म दवारा दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक बण के आप रहीम, रहमत विच सहिमत करे लोकाईआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ मुकन्द सिँघ दे गृह पिण्ड मरहाज ज़िला बठिंडा ✪

भगत भगवान आदि जुगादी लेखा धुर दा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दुनी वेख वखाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा लेखा चुकावे पूरे गुर दा, गहर गम्भीर बेनज़ीर लातस्वीर अंदरे अंदर जलवा नूर नज़री आईआ। भगत सुहेला गुरू गुर चेला साहिब स्वामी अन्तरजामी होण ना देवे मुर्दा, मुरीद मुर्शद महबूब मुहब्बत आपणी विच जणाईआ। शब्द अनाद बोध अगाध ताल सुणावे अगम्मी सुर दा, तत शब्द आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। साचा चमत्कार देवे

३७८
१९

आपणे नूर नुराने नूर दा, अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर इक्को रंग दए वखाईआ। आसा मनसा जुग जन्म विछड़यां पुरख अकाल पूरदा, पूरन ब्रह्म सच धर्म इक्को दए वखाईआ। नाता तोड़ के हउमे हंगता गढ़ ग़रूर दा, गुरबत कूड़ी अंदरों दए कढाहीआ। इशारा दे के नाम खुमारी सरूर दा, शरअ शरीअत अंदरों दए बदलाईआ। पन्ध मुका के मन मनूए मफ़रूर दा, हुक्में अंदर आपणे बन्द कराईआ। निज आत्म निज गृह साचे घर दर्शन पावे सचखण्ड हज़ूर दा, मुकामे हक इक्को जलवा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। भगत भगवान हुन्दा रिहा मिलाप, आदि अन्त जुगा जुगन्त वजदी रही वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को रिहा दोहां दा जाप, जगत विद्या दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दीआ बाती कमलापाती करदा रिहा जोत प्रकाश, जलवागर ज़ाहर ज़हूर इक्को नज़री आईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा मेटदा रिहा पाप, पतित पुनीत हो के दुरमति मैल अंदरों आप धवाईआ। तन्द सतार वजाउँदा रिहा रबाब, अहिबाब प्यारा मित्र हो के आपणी खुशी वखाईआ। डण्डावत बन्दना सजदयां विच दस्सदा रिहा अदाब, सिर सर साहिब सीस निवाईआ। जन भगतां मुआफ़ कर के देंदा रिहा ख़ताब, ख़तूत ख़त चिठ्ठी ना कोए पढ़ाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के उपर शाहरग खोल्हदा रिहा राज़, घर विच घर परदा रिहा उठाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना बिन अक्खरां देंदा रिहा दात, काग़ज़ कलम दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक कर अनायत, हदायत इक्को इक समझाईआ। जन भगत हुन्दा रिहा इक्ठ, आत्म परमात्म मिल के वजदी रही वधाईआ। शब्द अगम्मी लाउँदा रिहा सट्ट, सोई सुरती आप उठाईआ। देंदा रिहा सन्तोख धीरज जत, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। बोध अगाध शब्द अनाद सुणाउँदा रिहा गाथ, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप पढ़ाईआ। घर स्वामी अन्तरजामी हो के करदा रिहा वास, वासना कूड़ी बाहर कढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा मिल के साच, मंज़ल पौड़ा धुर दा आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक अकेला निरगुण निरवैर निराकार आपणा हुक्म वरताईआ। भगत भगवान इक दूजे नूं रहे तक्कदे, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। लेखे मिलदे रहे हकीकत हक दे, शरअ शरीअत ना कोए वखाईआ। नाते जुड़दे रहे धुरदरगाही सच दे, सच सुच विच समाईआ। भण्डारे खुल्हदे रहे अगम्मी हट्ट दे, जगत वणजारा नज़र कोए ना आईआ। दोवें धिरां लाहा रहे खटदे, भगत भगवान मिल के खुशी आईआ। खेल हुन्दे रहे पुरख समरथ दे, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। काया मन्दिर अंदर मिल के रहे वसदे, वसल यार इक्को इक जणाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द रहे हस्सदे, खुशीआं अंदर ढोले गीत अगम्मी नाद करदे रहे शनवाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इशारे देवणहारा आपणी अक्ख दे, ज्ञान नेत्र परदा दए उठाईआ। भगत भगवान देंदे रहे होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नाअरा लाउँदे रहे चौदां लोका, चौदां तबक देण दुहाईआ। लख चुरासी विच्चों माणस मानुख मानव मिलदा इक मौका, जो मुकम्मल प्रभ दे नाल मिलाईआ। मंज़ल राह पैंडा खैहड़ा रहे कोई ना औखा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ भगतां दा अगम्मी कोठा, गृह परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। प्रभ मिलयां रखणा पए ना कोए रोज़ा, नमाज़ां विच सीस ना कोए झुकाईआ। अन्तर अन्तर भेव खोल्हे गोझा, गहर गवर आपणा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार नाम बोधा, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। भगत भगवान बोलदे रहे इक जैकारा, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। वरन बरन तों हो के बाहरा, ज़ात पात लेखा जाण चुकाईआ। इक्को नूर नज़री आए दीआ बाती कमलापाती करे उज्यारा, अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर दए मिटाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान कहिण कोए ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सद वसणहारा सचखण्ड ठांडे दरबारा, मुकामे हक आसण सिँघासण इक सुहाईआ। हुक्में अंदर भेज गुर अवतारा, पैगम्बर कलमे नग़मे दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर इक्को इक वड्याईआ। भगत भगवान चढ़दा रिहा महल अटल उच्च मनारे, मंज़ल मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। पुछदा रिहा श्री भगवान चरण दवारे, दवारकावासी जित्थे बैठे सीस निवाईआ। जगमग जोत जगे अपारे, अपरम्पर स्वामी निरगुण नूर करे रुशनाईआ। दूजा ना कोई मीत मुरारे, सज्जण साचा संग ना कोए बणाईआ। ना कोई ढोला गीत ना तन्द सितारे, राग रागनी सिफ्त ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे इक घर, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। भगत भगवान तक्कदा रिहा मन्दिर, महबूब हो के वेख वखाईआ। तन माटी ख़ाक खोल्हदा रिहा जंदर, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। मन मनुआ वस कर के बन्दर, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। लेखा चुका के सूर्या चन्द्र, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सूरा सरबंगण, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। भगत भगवान चुकदा रिहा गोद, बिन हथ्थां आप उठाईआ। सति धर्म दा देंदा रिहा जोग, जोगीशरां तों बाहर पढ़ाईआ। तक्कदा रिहा हउमें रोग, हँ ब्रह्म समझाईआ। प्रकाश करदा रिहा निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। मेटदा रिहा कूड़ी सोच, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। चरण प्रीती साची रीती दसदा रिहा मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित कर कर हित भगतां करदा रिहा खोज, काया माटी अंदर परदा दए उठाईआ। झगड़ा

३७६
१६

मुका के लोक परलोक, सच सलोक दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा कर के दरस, दीदार इक्को इक वेख वखाईआ। मेरी जन्म जन्म दी मिट गई हरस, हवस रही ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कीता तरस, रहमत आपणी कार कमाईआ। माण वड्याई दे के उपर फर्श, धरनी धरत धवल लेखा लेखे रिहा लगाईआ। पूरब जन्म दे के कर्ज़ मकरूज हो के झोली रिहा पाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दी मन्न के अरज़, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ताल बदल देवे तर्ज, ढोला गीत इक्को आपणा नाम सुणाईआ। करे खेल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार इक असचरज, अचरज लीला आपणी इक वरताईआ। शब्द खण्डां ब्रह्मण्डां खण्डां दो जहानां फिरे तिक्खी धार छुरी करद, कतलगाह वेखे लोकाईआ। जूठ झूठ कूड़ अपराध मेट देवे मन वासना गर्द, बुद्धी बिबेक दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, दूजी मदद मंग ना कोए मंगाईआ। जन भगत कहिण खुशी होई वेख के सच महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा आहला अर्शां तों परे इक अरूज, सच दवारे सोभा पाईआ। जो मेहरवान हो के जन भगतां रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चाढ़ के मंज़ल साची मकसूद, मसला सब दा वेख वखाईआ। लोड़ रहिण ना देवे हज़ारा दरूद, हज़रत आपणे रंग रंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिधर वेखण ओधर मौजूद, हर घट बैठा सोभा पाईआ। काया मन्दिर अंदर वसे साची कूट, कुटीआ इक्को दए सुहाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए सबूत, साबत हो के अपणा भेव दए खुल्हाईआ। काया काअबा दस्स के हक कलबूत, मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर इक्को दए वखाईआ। जिस दा किला कोट चार कुण्ट मज़बूत, जगत शस्त्र पोह सके कोए ना राईआ। हुक्म देवणहारा शब्द अगम्मा धुर दा दूत, दुतीआ लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर नज़र आपणी लए बदलाईआ। भगत कहे मैं प्रभ दी वेखी नज़र (तबदील), तबदीली सब दी रिहा कराईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सुणे ना किसे दी अपील, अपरम्पर स्वामी धुरदरगाही बैठा सोभा पाईआ। चार जुग दा पिछला रहिण ना देवे कोई वकील, वुकले सारे दए मुकाईआ। अगे होण ना देवे तअतील, तह्रां तह्रां हुक्म दए सुणाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग रहिण ना देवे कमीन, काया कपड़ लख चुरासी वेख वखाईआ। साची सिख्या आत्म परमात्म देवे इक तालीम, चार वरन अठारां बरन तुलबा करे इक पढ़ाईआ। निरअक्खर दस्स के बिना नुकते मीम, अलिफ़ तों ये हरफ़ इक्को दए समझाईआ। जिस दी सारे करदे गए ताअज़ीम, तनज़ीम विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वड्याईआ। जन भगत कहे मैं मुर्शद दा बणया मरीज़, गुरमुख पूरा नज़री आईआ। बिन अक्खां कीती दीद, नूर नूर विच समाईआ। जिस दा हुक्म करे ताईद, फ़रमाना इक सुणाईआ। अगला लेखा दस्से करीब, करबलयां विच पए दुहाईआ। एह खेल होणा अजीब, जिस नूं सके ना कोए जणाईआ। बग़ल रहे ना कुरान मजीद, मुल्ला शेख़ मुसायक सारे रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तर करनी तरतीब, बसन्तर जगत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पूरी करे उम्मीद, आप आपणे विच छुपाईआ। जन भगत कहे मैं वेख होया खुशहाल, अबिनाशी करता नज़री आईआ। तूं आदि जुगादी दीन दयाल, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां करें प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेखे थाउँ थाँईंआ। सुणें मुरीदां हाल, ठाकर स्वामी शहिनशाहीआ। झगड़ा मुकावे शाह कंगाल, आत्म परमात्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख वेखें आपणे लाल, लालन आपणे विच टिकाईआ। गोदी चुके नन्न्हे बाल, बचपन अगला दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी लेखा दए मुकाईआ। जन भगत कहे कूड़ कुड़यार खेल वेख मुकदा, खुशी अंदरे अंदर आईआ। नग़ारा सुणना इके तुक दा, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। विहार वेखणा शब्द अनादी सुत दा, जो भगतां लए उठाईआ। वक्त वेखणा अबिनाशी अचुत दा, जो चार कुण्ट खोज खुजाईआ। जिस दा भाणा कदे ना रुकदा, गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण हो के आपणी धारों उठदा, जोती जोत डगमगाईआ। जन भगतां उपर तुठ्ठदा, रुठयां रिहा मनाईआ। नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, गोबिन्द धार विच समाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा ओहले लुक दा, साख्यात हो के सबक देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। जन भगत कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आई परम पुरख दी वारी, चार जुग कहिण किछ ना पाईआ। निर्मल जोत जगे इक निरँकारी, निरवैर हो के हुक्म सुणाईआ। शब्द अंदर करे ख़बरदारी, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। कलयुग कूड़ी रहिण नहीं देणी सिक्दारी, सिक्का पिछला लैणा बदलाईआ। नवीं रुत्त उपजे बहारी, पत्त डाली आप महकाईआ। जन भगतां खिले फुलवाड़ी, चार वरन मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर हुक्म ना कोए सुणाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा हुक्म सुणदा, बिन कन्नां रिहा सुणाईआ। भेव खुल्हावे आपणे अगम्मी गुण दा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले थोड़े चुणदा, नव नौ चार वेख वखाईआ।

नाद सुणा के आपणी अगम्मी धुन दा, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। परदा लाह के अगम्मी सुन्न दा, सुत्यां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाता जोड़ के आपणे खून दा, मज़मून आपणा लए पढ़ाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा पढ़ना मज़मून, कुतबख़ान्यां विच्चों किताब ना कोए वखाईआ। जिस दा दो जहानां तों वक्खरा कानून, जुग चौकड़ी धार ना कोए बदलाईआ। जिस दा जलवा जलाल तों वखरा जनूंन, ज़ावीए विच सके ना कोए समझाईआ। ओस कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया जगत विकार मन मति बुध कर फ़ज़ूल, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। दो जहानां हुक्म करना पए कबूल, सिर सके ना कोए उठाईआ। सति धर्म दा मार्ग दस्सणा असूल, असलीअत इक समझाईआ। प्रभ दे नाम दा अगे लए ना कोए मसूल, दीन मज़्हब ज़ात पात चुंगीख़ाने देणे मिटाईआ। जन भगतां सिध्धी बख़्शे चरण कँवल सच्ची धूल, चरण धूढ़ी टिक्का मस्तक आप रमाईआ। सच सिँघासण आत्म सेजा सुहाए जिस दी ना पावा ना कोए चूल, बिन तेल बाती दीपक जोत होवे रुशनाईआ। जिस गृह हुक्म संदेसा देंदा रहे माअकूल, मुकम्मल आपणा नाम जणाईआ। ओथे झगड़ा मुका के कातिल मकतूल, मेहर नज़र इक उठाईआ। सो धाम मुकाम क्याम जन भगतां होणा वसूल, सति सच मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण रूप सदा अभूल, भुल्लयां रस्ते दए लगाईआ।

★ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बधावा सिँघ दे गृह पिण्ड मराज ज़िला बठिंडा ★

जुग चौकड़ी प्रभ भगत सुहेला, सच साजण इक अखवाइंदा। वसणहारा धाम नवेला, सति सतिवादी वेस वटाइंदा। करे खेल अगम्म अथाह इक अकेला, एकँकार आपणी दया कमाइंदा। सन्त गुरमुख कर कर मेला, जन्म जन्म दा विछोड़ा पन्ध चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। जन भगतां प्रभ खोल्हे परदा, पड़दे अंदर करे रुशनाईआ। दरवाज़ा खोल्ह के आपणे दर दा, दरे दरबार दए वखाईआ। जित्थे नाद अगम्मी शब्द वज्जदा, जगत सतार ना कोए सुणाईआ। अमृत झिरना झिरदा, बूँद रिसक रिसक टपकाईआ। साफ़ होवे हिरदा, हिरदे हरि जू नज़री आईआ। मिलाप होवे पतिपरमेश्वर पिर दा, प्रीतम हो के गोद उठाईआ। दवारा वखावे घर थिर दा, जित्थे सन्त सुहेला बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। जन भगतां वखाए घर इक, एकँकारा नज़री आईआ। बिन अक्खां आवे दिस, दहि दिशा होवे रुशनाईआ। जिस मंज़ल उत्ते चढ़

के शब्दी धार बणदा सिख, सिख्या मन्ने बेपरवाहीआ। गोबिन्द ओसे दा लेखा गया लिख, जिस दा लेख ना कोए बदलाईआ। सो समरथ हो के हथ्थ रखे पिठ, पुश्त पनाह आप टिकाईआ। सुहेला बणे नवित नित, निज नेत्र दरस दिखाईआ। बिरहों वैरागी लाए सिक्क, सिख़र चोटी दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत मिलदा साचे ताट, तट इक्को दए वखाईआ। जित्थे अगली मंज़ल रहे ना वाट, पैंडा पन्ध मुकाईआ। अन्धेरी रहे ना रात, सच नूर रुशनाईआ। कूड़यां दी रहे ना जमात, भगतां विच मिल के खुशी मनाईआ। अमृत मिले बूँद सवांत, अग्नी अग्ग बुझाईआ। दरस देवे इक इकांत, घर बैठा नज़री आईआ। बन्द किवाड़ी खुल्ह जाए ताक, ओहला रहे ना राईआ। घर स्वामी साहिब सतिगुर मिले आप, आप आपा विच्चों प्रगटाईआ। बिन अक्खरां वाली दस्से उह अगम्मी बात, जो बातन परदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नज़री आए साख्यात, सखा सुहेला इक्को इक अख्वाईआ। जन भगत कहिण प्रभ मन्न साडी अरदास, अरज़ इक्को वार सुणाईआ। सद रख आपणे पास, पासा लै बदलाईआ। निज आत्म होवे वास, निज घर वज्जे वधाईआ। मन ममता होए नास, कूड़ी क्रिया ना कोए हल्काईआ। साचे मण्डल पवे रास, बिन गोपी काहन दे वखाईआ। तेरे विछोड़े विच होवे ना कदे उदास, चिन्ता अंदरों दे कढाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी पूरी करनी आस, आकाश पाताल लेखा देणा मुकाईआ। सच भूमिका दस्स अस्थान निवास, अस्थिल इक्को नज़री आईआ। जित्थे जोत जोत प्रकाश, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मुहब्बत विच रखाईआ। जन भगत कहे प्रभू तेरे मिलण दा सदा चाउ, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी आप पकड़ बाहों, लख चुरासी विच्चों लै उठाईआ। तेरे हथ्थ अदल इन्साफ़ न्याउँ, आदल इक्को नज़री आईआ। मेहरवान हो के सिर दे ठंडी छाउँ, अग्नी तत ना लागे राईआ। निव निव लागां तेरे पाउँ, चरण सरन मिले सरनाईआ। हउँ बालक तूं धुर दा पिता माउँ, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरे उत्तों सद सद बलि बलि जाउँ, सद सद तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँस रूप बणा काउँ, काग बुद्धी रहिण ना पाईआ। जन भगत कहे प्रभू हँस बणा लै काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, कूड़ी क्रिया दे खपाईआ। अन्तर उपजा आपणा राग, शब्द अगम्मी धुन सुणाईआ। सोई सुरती जावे जाग, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। तेरी इक्को सुण आवाज़, लख चुरासी नाता जाईए तुड़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे राज़, राज़क रिज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। झगड़ा मुक जाए शरअ नमाज़, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। काया खेड़ा कर आबाद, उजड़ी

नगरी दे वसाईआ। जिस विच सदा तेरी रहे याद, याददाशत इक्को दे बंधाईआ। इश्क रहे ना कोई दूजा हकीकी मजाज़, मज़लस आपणी दे वखाईआ। लख चुरासी विच्चों कर आज़ाद, जम की फाँसी दे तुड़ाईआ। बिन तेरे दूसरे डण्डौत ना होवे अदाब, अदब इक्को दे समझाईआ। सचखण्ड दवारे चरण प्रीती सच दा दे ख़िताब, शाह नवाब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा मन्दिर महल अटल अचल उच्च वेखां महिराब, महबूब सोहणा नज़री आईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव होए लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दे सरनाईआ। साचे घर प्रभू दे दे सरन, कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण कोए ना पाईआ। आपणे लेखे ला लै जन्म मरन, मरजीवत रूप वटाईआ। तूं साहिब स्वामी तारन तरन, तारनहार तेरी ओट तकाईआ। नेत्र खुल्ह जाए हरन फरन, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ। झगड़ा चुक जाए वरन बरन, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। राए धर्म ना आवे फड़न, चित्रगुप्त लेखा ना कोए प्रगटाईआ। तेरे भगत तेरी मंज़ल चढ़न, अद्धविचकार सके ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला पढ़न, बाकी दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन पौड़ीउँ डंडिउँ सचखण्ड दवारे वड़न, निरगुण हो के निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाल पूरा कौल इकरार कर प्रन, प्रतिनिध हो के आपे वेख वखाईआ। जन भगत कहिण प्रभू वेख कलयुग अन्त आपणा समाज, सच समग्री नज़र कोए न आईआ। शौह दरयाए डुब्बण वाला जहाज़, बेड़ा सके ना कोए उठाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया घर घर करे नाच, मुख घूँगट रही वखाईआ। साचा सजदा पढ़े ना कोई नमाज़, वुज़ू हक ना कोए कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण मेट ना सके अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। दीन दुनी नार होए कमज़ात, हरि कन्त ना कोए हंढाहीआ। झगड़े झगड़न सन्त साध, साधना सच ना कोए समझाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर होया ना कोए विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा आप मिटाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे अगे कीती सच अरदास, फ़रमाबरदार हो के अरज़ दिती सुणाईआ। माया ममता कलयुग कूड़ी क्रिया कर बरबाद, नेस्तोनाबूद कर के दे वखाईआ। तेरयां भगतां दा गुलशन महके अगम्मा बाग़, बाग़बान इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणी कार कमाईआ। जन भगत कहे प्रभू आत्म परमात्म दा विछोड़ा कर दे तरक, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। तेरा मेरा रहे कोई ना फ़र्क, फ़ैसला हक दे कराईआ। गोबिन्द नाल तेरी शर्त, शर्तीया दए गवाहीआ। मैं निरगुण हो के आवां लोकमात परत, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। जोती जाता होवां उपर धरत, धरनी धरत धौल दयां वड्याईआ। जन भगतां लहिणा देणा चुकावां उपर अर्श, अज़ीम करीम बेनज़ीर नज़म नग़मा नामा नाम सुणाईआ। जन्म

ੳ

जन्म दी कर्म कर्म दी मेटां हरस, हैसीअत असलीअत इक्को दयां वखाईआ। भगतां प्रेमीआं प्यारयां उपर कर के तरस, रहमत मेघ इक बरसाईआ। जो बिरहों विछोड़े विच रहे तड़प, फड़ बाहों गले लगाईआ। पूरी करां लिख्त पढ़त, कीता कौल इकरार ना कदे भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल कर मर्दाने मर्द, जन भगत तेरी इक्को मंग मंगाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों लुकदा काया ओहले, परदा ओहला दे चुकाईआ। तेरे दर दे जुग चौकड़ी बणे रहे गोले, नानक निरगुण सरगुण गया समझाईआ। आपणे नाम दे बिन अक्खरां वाले दस्से ढोले, ढोलक छैणे दी लोड़ रहे ना राईआ। चार जुग गुर अवतार पैगम्बर तेरे बणे रहे विचोले, लोकमात नाते गए जुड़ाईआ। जन भगत तेरे प्रेम प्यार अंदर मौले, मौला हो के दरस दिखाईआ। मंज़ल पैंडा पन्ध मुका दे हौले हौले, आहिस्ता आहिस्ता आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल उपर धवले, धवल ढह पई सरनाईआ। जन भगत कहिण प्रभू वेख खेल उपर धरती, धरनी रही कुरलाईआ। ग़रीब निमाणयां सुण अर्ज़ी, आरज़ू रहे जणाईआ। मेहरवान महबूब बण दर्दी, दुखियां दुःख वण्डाईआ। लख चुरासी माणस जन्म जाए हरदी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। समझ ना आई पुरख अकाल तेरे घर दी, घट भीतर खोज खुशी ना कोए मनाईआ। चौदां विद्या जगत बुद्धी पढ़दी, तेरे नाम दी पट्टी ना किसे लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा मालक क्यों खेल करे फ़र्ज़ी, फ़ैसला हक दे दृढ़ाईआ। जन भगत कहिण प्रभू फ़ैसला दे विच्चों हक हकीकत, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। तेरी शरअ लाशरीकत, लासानी तेरा नूर नज़री आईआ। तेरे उत्ते वड अहिमीअत, आमद विच बैठी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बदल दे तबीअत, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेखीं अन्त ना देवीं पिच्छा, पिछली कहाणी याद कराईआ। साचे सन्तां पूरी करनी इच्छा, आसा मनसा नाल मिलाईआ। कलयुग अन्त करनी रिच्छा, रच्छक हो के होएं सहाईआ। नाम पदार्थ पाउणी भिच्छा, भिखक हो के झोली रहे डाहीआ। जिन्हां गुरमुखां सिख लई तेरी साची सिक्खा, सिख़र चोटी देणे चढ़ाईआ। नाम निधाना हथ्थ फड़ाउणा तीर तिक्खा, अणयाला आप प्रगटाईआ। जो रहिण ना देवे अद्ध विच्चा, पार किनारे दए लगाईआ। तूं मालक प्रितपालक सृष्ट सबाई ख़ालक पिता, पारब्रह्म प्रभ तेरी आस रखाईआ। जन भगत उधारी वड्डा निक्का, बुढा नढ्ढा फ़र्क ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग लेखा मुकावां तेरा हिसा, हिसेदारी पिछली देणी गवाईआ।

✪ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ लाभ सिंघ दे गृह पिण्ड चक फ़तिह सिंघ ज़िला बठिंडा ✪

धरनी कहे जो मेरे उपर बैठे अज्ज, धाम आसण सिंघासण टिकाईआ। धार वेखी अंदर वासना रूप जग, ख़ाहिश ख़ास रही दृढ़ाईआ। दुनी विहारां विच रहे भज्ज, भज्जण चाँईं चाँईंआ। घर स्वामी सज्जण मिल्या ना सद, सदके वारी ना घोल घुमाईआ। निज नेत्र दर्शन कीता ना रज्ज, रजो तमो सतो पन्ध ना कोए मुकाईआ। नाम प्याला पीता ना धुर दी मदि, सच खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख आपणी ख़लक खुदाईआ। धरनी कहे मैनूं आवे हासा, हस्ती विच्चों हस्ती वेख वखाईआ। साचा जलवा नज़र ना आए जोत प्रकाशा, ज़हूर रूप ना कोए बदलाईआ। जगत वासना विच तमाशा, भेव अभेद परदा ना कोए उठाईआ। धुर दा हुक्म समझे ना कोई आखा, आख़र मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। जगत इतहास जानण साका, अनुभव परदा ना कोए उठाईआ। ठाकर स्वामी सज्जण मिल्या ना पतिपरमेश्वर आका, अकल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। सच समझया ना जोती जाता, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। जगत विद्या बोध ज्ञाता, आलम इलम ना अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव दे जणाईआ। धरनी कहे मेरे अंदरों बदल गई रुची, रचना वेख खुशी मनाईआ। अंगड़ाई लई सुत्ती, करवट लई बदलाईआ। झगड़ा वेख्या काया बुत्ती, बुत्तखाने रहे कुरलाईआ। मंज़ल महबूब चढ़ वेखी ना उच्ची, महल अटल सोभा कोए ना पाईआ। सच कहाणी अगम्म अथाह बेपरवाह कोलों किसे ना पुच्छी, रमज़ राज़ विच समझाईआ। जिस दी वधाई वज्जदी रही आदि जुगादि चौंह जुगी, जुग चौकड़ी खेल वरताईआ। उह सब दी वेखण परखणहारा बिबेक बुद्धी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे मैं वेख्या सतिसंग, गुरमुख गुरमुख ढोले गाईआ। प्रेम प्यार दा वेख्या तरंग, तुरीआ पद वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म तक्कया संग, सोहणा रूप वखाईआ। सच गृह आया अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती नूर तक्कया चन्द, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। खुशी होया बन्द बन्द, बिन तन वजूद वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। धरनी कहे मैं वेखे गुरमुख सज्जण मीत, सुहेले धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां दी अंदरों बदली नीत, नीतीवान सोहणे सोभा पाईआ। इक्को परम पुरख परमात्म दा गाउँदे गीत, गहर गम्भीर रहे ध्याईआ। ठगौरी मूल ना पाए मनुआ चीत, चेतन सुरती दए कराईआ। झगड़ा छड्ड जाए हस्त कीट, ऊँच नीच बैठे पन्ध मुकाईआ। परम पुरख नाल कर के सच प्रीत, प्रीतम इक्को रहे मनाईआ। जो काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

३८६
१६

किरपा कर, वेला वक्त सुहञ्जणा दए सुहाईआ। धरनी कहे मैं होई खुशहाल, खुशीआं विच नच्चां टप्पां कुद्दां चाँईं चाँईंआ। गुरमुख वेखे सोहणे लाल, सज्जण सुहेले सोभा पाईआ। जिन्हां दे अंदर प्रीतम सदा नाल, पारब्रह्म प्रभ आपणा संग निभाईआ। नाता तोड़ के काल महाकाल, धर्मसाल सचखण्ड इक्को दए वखाईआ। दर्शन कर गुरमुखां दा होई मैं निहाल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। धरनी कहे मैं वेख्या अजब नज़ारा, बिन अक्खां नज़री आईआ। हरिजन हरि हरि साची धार विच लग्गे प्यारा, विवहार इक्को इक दृढ़ाईआ। गुरमुखां नूं शब्द अगम्मी अनादी धुन दा बिन रमज़, लग्गे इशारा, ऐशो इशर्त दोवें देण गवाईआ। महल्ल मिले अटल उच्च मुनारा, घर विच घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित कर कर हित, साचा करदा रहे प्रेम प्यारा, परम पुरख पतिपरमेश्वर मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ।

३८७
१६

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरचरण सिँघ दे गृह बठिंडा ✪

३८७
१६

जन भगतां लहिणा देणा देवे दीन दयाल, दयाल आपणी दया कमाईआ। जुग जन्म दा लेखा रख्या संभाल, सहिज सहिज दए वरताईआ। शाह बणा के कंगाल, नाम भण्डारा झोली पाईआ। मिसल बणा के बेमिसाल, मसरत खुशी इक प्रगटाईआ। विछड़यां कर संभाल, रुठड़यां लए मनाईआ। गोदी चुक के बाल, गोबिन्द होए सहाईआ। सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा वरताईआ। जन भगत सदा रिहा जाग, जागणहार आप जगाईआ। सुणदा रहे अगम्मी आवाज़, धुनी ख़ाहिश धुनी विच प्रगटाईआ। सदा वेखदा रहे साथ, संगी साथी इक्को नज़री आईआ। जो पूरी करदा रहे आस, मेहर नज़र इक उठाईआ। दरस विछोड़े दी बुझा के प्यास, तरस आपणा इक कमाईआ। बहुता दुःख आउणा सी तिन्न वसाख, उसदा लेखा रिहा चुकाईआ। सज्जे अंग वलों होणा सी पश्चाताप, लत्त टुट्टी लई जुड़ाईआ। सहायता करे बण के बाप, पिता हो के अंग लगाईआ। दुखियां दे मेट रोग संताप, सुख दए उपजाईआ। गुरमुख बूटा वेख के विच्चों बाग़, रुत्ती रुत्त दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। मेहर नज़र कहे मैं करां कर्म, कर्म भगतां दयां बदलाईआ। गुरमुख दा नवां बणावां जन्म, मिले जगत वड्याईआ। अग्नी दुःख विच नहीं दिता सड़न, होया आप सहाईआ। चिन्ता विच नहीं

दिता वड़न, ग़मां तों ल्या बचाईआ। बख्श के आपणी शरन, होया साहिब सहाईआ। करनी आया करन, करता ख़ैरख़ाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर अपाणा हथ्थ रखाईआ। विसाख कहे मेरी अंदरों निकल गई धाह, तिन्नां लोकां रिहा सुणाईआ। की कीता बेपरवाह, निरगुण हो के फेरा पाईआ। भगत सुहेला ल्या बचा, करनी दा करन दिता भुगताईआ। हुक्में अंदर ल्या छुडा, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल होया सहाईआ। वसाख कहे मेरे उत्ते आई हैरानी, हिरदे विच बूझ बुझाईआ। बहुती होई परेशानी, सुध्ध बुध भुलाईआ। क्यों प्रभू करदा भगतां उत्ते मेहरवानी, मेहरवान हो के फेरा पाईआ। किरपा कर के मैनूं ओस दिन थोड़ी जेही ला लैण देवे निशानी, तीर इक्को इक चलाईआ। मैनूं बहुता दुःख क्यों बख्श दिती ज़िंदगानी, चरण मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दे मुकाईआ। पिछला लेखा कहे मैं मंगां कर इक अरदास, सहिजे सीस निवाईआ। तूं प्रभू साहिब गुणतास, सच तेरी सरनाईआ। सद वसें भगतां पास, होएं मात सहाईआ। वेखीं किते मिन्नत मन्न ना लईं तिन्न वसाख, ढेरी हो के दाअ ना कोए लगाईआ। तेरे कोल अछल अछल्ल दी बहुती जाच, वल छल कर के देणा वक्त लँघाईआ। अगला देणा सच्चा साथ, संगी हो के नज़री आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर आ के दर आ के पत जाए राख, पितर हो के जन्म देणा बदलाईआ।

३८८
१६

२२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बुगर सिँघ दे गृह पिण्ड बरगाड़ी ज़िला बठिंडा

जन भगत कहे प्रभू किसे हथ्थ ना रही तेरी कुंजी, मन्दिर कुफ़ल ना कोए खुलाईआ। जगत वासना लुटा बैठे पूंजी, कलयुग सन्त रहे कुरलाईआ। कोई रमज़ ना दिसे गुझी, शब्दी धुन ना कोए शनवाईआ। धार तेरे तों रख के दूजी, बुध मति करन पढ़ाईआ। एह खेल नहीं हुण लुकी, ओहला परदा रिहा ना राईआ। अन्तिम औध सब दी मुकी, वेला वक्त दए गवाहीआ। घराना दिसे कोए ना सुखी, नेत्र रोवे जगत लेकाईआ। झगड़ा प्या पिता पुत्तीं, साची गोद ना कोए सुहाईआ। आत्म परमात्म सुहाए कोए ना रुत्ती, रुतड़ी तन ना कोए महकाईआ। मन वासना जगत तृष्ना भुक्खी, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। तेरी मंज़ल श्री भगवन्त नज़र ना आए किसे उच्ची, उच्च अगम्म अथाह तेरा दरस कोए ना पाईआ। तेरी धार आत्म हो के तेरे नालों रुठ्ठी, सनमुख दरस कोए ना पाईआ। किरपा निधान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगतां गंढु पा टुट्टी, नाम डोरी जोड़ जुड़ाईआ। वस्त अमोलक दे जेहड़ी गृह ना जावे लुट्टी, ठग्ग चोर यार सके ना कोए

चुराईआ। जुग चौकड़ी नाम भण्डारा वरताउँदा रिहों भुक्ख विच दुखी, हौली हौली आपणी गंढु खुल्हाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रेमी प्यारयां अन्तर आत्म कर दे सुच्ची, संजम इक्को दे जणाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल तेरे नाल लग्गी रहे रुची, रचना वेखणी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेल लए मिलाईआ। जन भगत कहिण किसे कोल ना दिसे चाबी, चार वरन रिहा कुरलाईआ। किरपा कर प्रभू शताबी, वेला वक्त दए गवाहीआ। कलयुग जीव होए बाग़ी, मन वासना नाल हल्काईआ। कूड़ी क्रिया कीते दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, जागरत जोत कर रुशनाईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब समाजी, ज़ात पात करे लड़ाईआ। अन्तिम सब दी उलटी कर दे बाज़ी, बाज़ीगर हो के स्वामी आपणा डंक वजाईआ। तेरे प्रेम प्यार सच दा रिहा कोए ना रागी, बिन तन्द सतार सुर ना कोए बणाईआ। कोटन विच्चों गुरमुख विरला जगत तृष्ना त्यागी, वैरागी हो के तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बणा लै आधी, हिस्सा धुर दा झोली पाईआ। जन भगत कहिण चार कुण्ट दहि दिशा दिसे ख़ाली, ख़ालक ख़लक दए दुहाईआ। सति वस्त नज़र ना आए कितों भाली, कूड़ी क्रिया भांबड़ मच्चे लोकाईआ। चारों कुण्ट मन्दिर अंदर दिसे रैण काली, निरगुण जोत चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म बणया कोए ना वाली, तुध बिन मालक संग ना कोए निभाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दर तेरे स्वाली, सारे बैठे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ चार कुण्ट अन्धेरा दिसे घुप, काया मन्दिर अंदर होवे ना किसे रुशनाईआ। क्यों स्वामी हो के बैठों लुक, ठाकर हो के परदा दे उठाईआ। तेरी सिफ्त तेरे कोलों लईए पुछ, बाहरों पुछण दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म निज गृह साचे मन्दिर दे अगम्मा सुख, जिस विच दुःख ना लागे राईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म मिल्या मनुक्ख, माया ममता मोह दे मिटाईआ। साख्यात हो के सन्त सुहेले जन भगत आपणे बणा लै सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। भाग लगा दे काया माटी बुत्त, साढे तिन्न हथ्थ वज्जदी रहे वधाईआ। तेरे कोल सब कुछ, क्यों बैठा परदा पाईआ। उज्जल कर मात मुख, जो तेरा नाम बिन रसना जिह्वा रहे गाईआ। साचे मार्ग जांदयां जाण मूल ना घुस, रस्ता इक्को देणा दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग देणा चढ़ाईआ। जन भगत कहे प्रभ अंदर खुल्ला वेख्या ना कोए जंदर, ज़िंदगी सके ना कोए बदलाईआ। लग्गा भाग ना काया माटी मन्दिर, मंद वासना ना कोए कढाहीआ। चुरासी तोड़े ना कोए बन्धन, बन्दगी हक ना कोए सुणाईआ। दर मिले ना परमानंदन,

निजानंद ना कोए रसाईआ। चार वरन अठारां बरन टुट्टी आए कोई ना गंढुण, सुरती शब्दी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। ब्रह्म विद्या दा रिहा ना कोई ब्राह्मण, भरमें भरी लोकाईआ। तेरे नाम दा बिन अक्खरां तों करे कोई ना वरनण, जगत विद्या वाली करन पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगला संग रखाईआ। जन भगत कहिण प्रभू जन भगतां खोलू खिड़की, खड़खड़ाहट रहिण कोए ना पाईआ। आसा लग्गी पूरब जन्म चिर की, चिरी विछुन्ने लै मिलाईआ। एहो खेल आदि जुगादी सच्चे पिर दी, प्रीतम हो के आपणी गोद उठाईआ। निगाह बदल दे आपणी मेहर दी, महबूब हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। हुण खेल नहीं बहुती देर दी, अगला पन्ध दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लै टिकाईआ। जन भगत कहिण प्रभ सदा खुली रख बजर कपाटी, कपट रहिण कोए ना पाईआ। वस्त दे घर दी हाटी, बाहर वणज ना कोए कराईआ। भाग लग्गे कंचन धार माटी, मटकी अंदर होए रुशनाईआ। बूँद दे अगम्म स्वांती, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा मेट जगत वाली ज़ाती, आत्म ब्रह्म दे दरसाईआ। तूं साहिब कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जन भगत तेरे हुक्म दी मन्नण आखी, अक्खरां वाली छड्डुण पढ़ाईआ। वस्त अमोलक दे दाती, दाता हो दे दया कमाईआ। तेरे विछोड़े विच प्रभू लँघे कोए ना राती, रातीं सुत्यां दिने जागदयां अंदर बह बह खुशी मनाईआ। क्यों तूं साहिब पुरख अबिनाशी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सदा सचखण्ड निवासी, मुकामे हक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगली मंज़ल मेट वाटी, पन्ध पिछला रहे ना राईआ।

✪ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुहावा सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईआं ज़िला बठिंडा ✪

धन्न वड्याई दर आई संगत, संगी धुर दा दए मिलाईआ। काया चोली चाढ़ अगम्मी रंगत, रंग इक्को दए वखाईआ। शब्द अनादी देवे बोध अगाधा बण के पंडत, निरवैर निराकार निरँकार निरअक्खर करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह गढ़ तोड़े हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आप जणाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला एथे ओथे दो जहानां दूसर करे किसे ना मिन्नत, सच दवारे एकँकारे इक्को घर बहाईआ। लहिणा देणा झगड़ा मुकावे बहिश्त जन्नत, स्वर्ग दा लेखा दए मुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आत्म परमात्म नाता जोड़े नार कन्त, सेज सुहञ्जणी साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर आप सुहाईआ। मानस जन्म लख चुरासी विच्चों धुरदरगाही बणत, घड़न भन्नणहार समरथ स्वामी दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले वेख वखाईआ। धन्न वड्याई संगत पाया हरि का दवार, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। सच प्रीती देवणहार दाता एकँकार, अकल कलधारी प्रभू आपणी दया कमाईआ। लेखा मुका के नौ दवार, अन्ध अंध्यार कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। अमृत दे के बूँद सवांत ठांडी ठार, निझर झिरना दए झिराईआ। शब्द अनादी धुन आत्मक सुणाए आपणी धार, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। दीवा बाती कमलापाती जोती जाता करे उज्यार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। महल अटल उच्च मिनार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। धन्न वड्याई जो चल के आई संगत दर, काया मन्दिर अंदर दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। जन्म मरन दा चुकाए डर, लख चुरासी गेड़ा दए मुकाईआ। अमृत आत्म सच नुहाए इक्को सर, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। बजर कपाटी तोड़ घर विच वखा के आपणा घर, ठाकर स्वामी बिन अक्खां नज़री आईआ। लेखे लगा के सीस धड़, आत्म परमात्म परमात्म आत्म परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी सन्त सुहेले सज्जण वेख वखाईआ। धन्न वड्याई हरि संगत होया मेल, प्रभ आपणी दया कमाईआ। नाता तोड़ गुरू गुर चेल, चेला गुर इक्को रंग वखाईआ। आत्म परमात्म बण के सज्जण सुहेल, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए चुकाईआ। निरगुण निरवैर करे प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर वेख वखाईआ। हरि संगत तेरा वेला वक्त सुहञ्जणा, पुरख अकाल देवणहार वड्याईआ। घर साजण मिल्या आदि पुरख निरँजणा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चरण धूढ़ कराए मजना, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ लोड़ रहे ना राईआ। शब्द अनादी इक्को इक वज्जणा, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। सच प्रकाश काया मन्दिर अंदरे अंदर जगणा, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आत्म सेजा दर्शन कर कर रज्जणा, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच खुमारी विच मघणा, इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। हरि संगत तेरा परम पुरख नाल होए मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। दोहां दा सांझा इक्को जाप, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अल्हाइंदा। रूह बुत्त तन माटी ख़ाक करे पवित पाक, पतित पुनीत आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त अन्धेरी मेटे रात, चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोज खुजाइंदा। अमृत आत्म देवे ठंडा ठार बूँद सवांत, निझर झिरना आप झिराइंदा। दरस दिखावे इक अकेला इकांत, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। वेस वटा के जुग चौकड़ी बहु भांत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। जन भगतां बख्शणहारा दात, पूरब लहिणा

वेख वखाइंदा। नाम पदार्थ देवणहारा दात, धुरदरगाही ख़ाली झोली आप भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत खुशीआं बख्शे आज, अगे अज़ल तों आप बचाइंदा। हरि संगत तेरा आउणा जावे लेखे लग्ग, कदम कदम दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें बुझाए अग्नी अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हँस बुध बणाए कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। दरस देवे उपर शाह रग, नौ दवारे लेखा रहे ना राईआ। घर सुहञ्जणा दरस कराए आत्म परमात्म बिन काअबे धुर दा हज्ज, मुकामे हक इक्को कर रुशनाईआ। जुग जन्म दे विछड़े शब्दी हुक्म लए सद्द, होका सदा नाम घट भीतर आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग वासना दूई द्वैती शरअ शरायती मेट के हद्द, दीन मज़्हब ज़ात पात विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि संगत बख्शणहार सरनाईआ। हरि संगत तेरा लेखे लावे अन्तर आत्म ध्यान, घट घट वासी वेख वखाईआ। सोहला ढोला गाया करे परवान, परम पुरख दए सरनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी सांझी होवे पहिचाण, दोहां दा भेव रहे ना राईआ। भाग लग्गे साढे तिन्न हथ्थ माटी काया उच्च मकान, मकबरयां विच्चों काअबे दए वखाईआ। गुरसिख सन्त सुहेला साहिब सतिगुर जुग चौकड़ी नित नवित गोदी चुक्के आण, बिन हथ्थां बाहां आपणे आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना मेहरवाना महबूब मुहब्बत विच समाईआ। हरि संगत तेरा लेखा जावे लग्ग, लग मातर दा फ़र्क रहे ना राईआ। गुरमुखो तुहानूं रहिण ना देवे अलग्ग, विछोड़ा जन्म जन्म कटाईआ। शब्द डोरी अगम्मे तन्द लए बन्ह, बन्धन इक्को दए समझाईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निज आत्म देवे आपणा परमानंद, परमानंद विच समाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, साढे तिन्न करोड़ शहादत दए भुगताईआ। जन्म कर्म दा भार सिर चुक्कणी पवे ना पंड, मेहर नज़र कर के लेखा दए मुकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे गंद, सुगंधी आपणा नाम भराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के भेख पखण्ड, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी बेपरवाहीआ। हरि संगत तेरा वक्त सुहावा, सुहावा सिँघ मिले वड्याईआ। प्रभ मिलण दा तुहाडा पूरा होवे दाअवा, पिछली मिसल ख़ारज दए कराईआ। सचखण्ड दवारा बिन अक्खरां ला देवे नावां, दो जहान सके ना कोए मिटाईआ। धन्न जणेदीआं मावां, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। एथे ओथे रखे ठंडीआं छांवां, कलयुग अग्नी तत ना लागे राईआ। नित नवित जन भगतां प्रभ दा ढोला मिल के साचा गावां, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। अन्त अख़ीर लख चुरासी भरे कोई ना हावा, हउकयां विच्चों बाहर

कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा दए चुकाईआ। हरि संगत तेरा पुरख अकाल इक्को सज्जण मीता, पारब्रह्म परम पुरख दाता नज़री आईआ। जो देवणहारा अनडीठा धाम त्रैगुण अतीता, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। काया माटी ठांडी करे सीता, सज्जण हो के दर्दी दुःख वण्डाईआ। धुर दा रंग चाढ़े इक मजीठा, मजलस आपणे नाल बणाईआ। आत्म परमात्म जणा के सच प्रीता, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सतिजुग साची चलावणहारा रीता, कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। हरि संगत तेरा सोहणा होया वक्त, घड़ी पल थित वार खुशी मनाईआ। सुफ़ल होया मानस जन्म आउणा जगत, जीवण जुगत मिली वड्याईआ। मालक ख़ालक दर्शन पाया उत्ते अर्श, फर्श वज्जी वधाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर के तरस, रहमत हक कमाईआ। मेघ न्यारा देवे बरस, आबेहयात मुख चुआईआ। दीनां अनाथां वण्डे दर्द, दुखियां दुःख मिटाईआ। शरअ छुरी चले कोई ना करद, कतलगाह विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। हरि संगत तेरा अन्तर आत्म सोहणा रूप, तन माटी खाकी परदा उपर पाईआ। जिस दा मालक शहिनशाह शाहो भूप, सुल्तान इक अख्वाईआ। जो वसे चारों कूट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। झगड़ा मुका के जूठ झूठ, सच सुच दए दृढ़ाईआ। मेहरवान हो के जावे तुठ, रुठयां लए मनाईआ। पंच विकारा देवे कुठ, शब्दी खण्डा इक खड़काईआ। प्रेम प्यार सुहञ्जणी मौले रुत, पत्तझड़ नज़र कोए ना आईआ। देवे वड्याई अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। मात गर्भ आउणा पए ना उलटा रुक्ख, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। चरण कँवल सरनाई देवे सुख, सुख आत्म इक उपजाईआ। उज्जल करे मात मुख, दुरमति मैल रहे ना राईआ। भगत भगवान बणाए आपणे सुत, धुर दी बणे जणेंदी माईआ। शब्दी धार गोदी चुक, दो जहानां पार टिकाईआ। भाग लगा के साचे कोट, सचखण्ड साचा दए सुहाईआ। जित्थे जगे निर्मल जोत, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान देवे सरनाईआ। हरि संगत तेरा महल अटल उच्च मुनारा, महबूब मुहब्बत विच सुहाईआ। जो लहिणा देणा चुकावे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिछला पूर करे विहारा, विवहारी अगला लेखा दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम नईआ आई अन्त किनारा, दो जहान डोले थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल करे खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सद्द दवारा, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। चारों कुण्ट वेखो हाहाकारा, बिलप करे लोकाईआ। साचा लग्गे किसे ना नाम प्यारा, निरगुण नूर गए भुलाईआ। मन वासना होया हँकारा, जगत विद्या नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, हरि संगत वेखे चाँईं चाँईंआ। हरि संगत तेरा मेला अन्त अख़ीरी पुरख अकाल, अकल कलधारी दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारा जिस दी सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे नन्ने नढ्ढे बाल, नित नवित जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करे कमाल, कायनात वेख वखाईआ। हुक्म संदेशे दे के गुर अवतार, पैगम्बरां नग़मे दिते पढ़ाईआ। भविख्तां विच कर इज़हार, संदेशे लोकमात सुणाईआ। कल कल्की अन्त इक अवतार, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाशां गगन गगनंतरां पावे सार, महासार्थी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले लए उठाल, घट भीतर खोज खुजाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लेखा मुका के शाह कंगाल, चार वरन इक्को सरन, नेत्र खोल्ह हरन फरन, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। झगड़ा चुका के डरन मरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहार सच घर, गृह गृह अन्तर कर रुशनाईआ। हरि संगत तेरा अंदर बाहर एक, इक्को रूप नज़री आईआ। अबिनाशी करते रखणी टेक, जो जुग जुग टिक्के मस्तक भगतां रिहा लगाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आवे करके भेख, वेस अवेसा रूप वटाईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे रेख, रंग रूप ना कोए समझाईआ। तिस दा नवां संदेसा मिलणा पहली चेत, चातृक गुरमुख लए बणाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निज आत्म खोल्हे भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़री आवे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। हरि संगत जो प्रेम प्यार अंदर मार के आई पन्ध, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। ढोला गा के इक छन्द, संसे अंदरों दए कढाहीआ। लेखे ला के बत्ती दन्द, बन्दना इक्को इक समझाईआ। जोती चाढ़ के नूरी चन्द, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। भेव रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म लेखा दए चुकाईआ। माणस जन्म पूरा करे कम्म, निहकर्मी आपणी दया कमाईआ। जींवदयां जग बेड़ा देवे बन्न्ह, अन्त राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा अगला दए बणाईआ। हरि संगत तेरा लेखा सोहणा अगे, आगमन विच जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार हक मुकामे सद्दे, सचखण्ड दए वड्याईआ। शब्दी धार कर प्यार आत्म अन्तर अन्तर जाणा बज्झे, तन वजूद ख़ाकी माटी लोकमात तजाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा होवे पिच्छे अगे सज्जे खब्बे, एथे ओथे दो जहानां सेव कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदे जादा भज्जे, जस वेद पुराण दी लोड़ रहे ना राईआ। सच स्वामी नाल मिल के अमृत रस दे लैणे मज़े, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। सचखण्ड दवारा जित्थे इक्को दीपक जगे, नूर नूर विच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, गुरमुखां लहिणा दए मुकाईआ। हरि संगत तेरा मेला इक भगवन्त, जो मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दा नज़री आईआ। एथे ओथे सदा सहाई गुरमुख सज्जण सन्त, मनमुखां अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया ग़मी मेट के चिन्त, सुख सुख विच्चों उपजाईआ। सच दवारे जाण दी दे के हिम्मत, शब्दी हौसला दए वधाईआ। गुरमुखो तुहाडे अंदर मन करे ना इल्लत, शरअ शरायत ना कोए लड़ाईआ। ख्वारी अन्त होवे ना ज़िल्लत, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हणहारा, हरि सज्जण इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम पावे सारा, सदी चौधवीं फोल फुलाईआ। लेखा जाण गुर अवतारा, पैगम्बरां परदा लाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे खेल न्यारा, निरगुण निराकार आपणी कार कमाईआ। कागद कलम लेख ना लिखणहारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दी करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दी करनी करने योग, हरि करता इक अखवाइंदा। जन भगतां मेला कर धुर संजोग, आत्म परमात्म नाता इक जुड़ाइंदा। जगत तृष्ना रहिण ना देवे रोग, कूड़ कपट बाहर कढाइंदा। साचे नाम दी दे के चोग, चुग़ली निंदया कोलों पल्लू छुडाइंदा। घर दे के दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वक्त सुहेला इक सुहाइंदा। वक्त सुहेला होया सुहञ्जणी होई रुत्त, घर वज्जी नाम वधाईआ। जन भगतो गुरमुखो हरि संगते जो कुछ लैणा सो लैणा पुच्छ, भरम भरम रहे ना राईआ। एथे ओथे देवणहारा दो जहानां सुख, सदा सदा सद सुख सागर विच समाईआ। जिस दा भाणा आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि शब्दी हुक्म कदे ना जावे रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओस दा ढोला सोहला गीत नग़मा नाम कलाम अगम्मी तुक, जिस दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त बदल के आ गया आपणा रुख, निरगुण हो के जोती जाता पुरख बिधाता वेस वटाईआ। जिस दी समझ समझे कोई ना कुछ, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। हरि संगत गुरमुख दर आए जाणा राज़ी, दुःख सतिगुर झोली पाईआ। माणस जन्म जित्त के जाणा बाज़ी, हार रहिण कोए ना पाईआ। अन्तर रहे कोए ना दाग़ी, दुरमति मैल जाणी धवाईआ। मनुआ रहे मूल ना बाग़ी, बग़ावत अंदरों लैणी कढाहीआ। सतिगुर शब्द मिलणा साकी, जो जाम प्याला मधर दए प्याईआ। अंदरों खोल्ह के किरपा नाल ताकी, तख्ता कूड़ा दए उलटाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ा के राकी, घर विच्चों बाहर कढाहीआ। जित्थे मिले इक्को बूँद स्वांती, अमृत मेघ आप बरसाईआ। जोत जगे कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। ओथे लेखे लग्गे

अज्ज दी राती, रैण भिन्नड़ी खुशी मनाईआ। मिले मेल सचखण्ड निवासी, अस्थान भूमिका इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार धर्म वड्याईआ। हरि संगत तेरा सति सच दा धर्म, मानस ज़ाती इक्को नज़री आईआ। प्रेम प्यार प्रीती दा सच्चा कर्म, दूजा कांड ना कोए बणाईआ। आत्म ब्रह्म अगम्मी वरन, जिस दी ज़ात ना कोए समझाईआ। पुरख अकाल सच्ची सरन, जिस दी ओट ना कोए छुडाईआ। धुर दा ढोला नाम पढ़न, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिख्या इक समझाईआ। सच सुण लओ साची सिख्या, सतिजुग सच्ची धार जणाईआ। जो नानक गोबिन्द लेखा लिख्या, कलयुग अन्त सके ना कोए मिटाईआ। जन भगतां पैणी नाम दी भिच्छया, कूड़े कूड़ कूड़ कुरलाईआ। मनमुख मन दे हट्ट विकया, अगे चले ना कोए चतुराईआ। जिन्हां सतिगुर शब्द चितविआ, वज्जदी रहे वधाईआ। माण इक्को जिहा वड्डयां निक्कयां, जो प्रभ नूं रहे ध्याईआ। जिन्हां दे अंदर अंदर दिस्या, निज नैण होई रुशनाईआ। करवट बदल के बदलया पिछया, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी सरन इक वखाईआ। धुर दी सरन सच्ची सरनागत, साध सन्त ध्यान लगाईआ। गुरसिक्खो इक्को सिखणी ब्रह्म मत, मनमति देणी तजाईआ। अंदर रखणी धीरज जत, सति सन्तेख नाल कुड़माईआ। संगत विच कदी बदलो ना आपणी अक्ख, सब जाणो भैण माईआ। पुरख अकाल नूं मिलणा तुहाडा हक, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जे सतिगुर उत्ते मन वासना पै जाए शक, सहिंसा शब्दी लओ चुकाईआ। आत्म परमात्म कदे ना होवे वक्ख, घर साचे बह के खुशी मनाईआ। सब दी रखणहारा पत, पतिपरमेशवर होवे आप सहाईआ। हरि संगत तेरा सोहणा सच्चा धाम, धरनी धरत धवल खुशी मनाईआ। जित्थे मिलदा इक्को राम, रहमत विच दया कमाईआ। दस्सदा धुर दा नाम, बिन अक्खरां अक्ख खुल्हाईआ। देवे सच पैग़ाम, करे हक पढ़ाईआ। चरण प्रीती इक बिसराम, विश्व आसण दए जणाईआ। जित्थे कोटन कोटि बैठे काहन, बंसरीआं वाली धुन अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार आपणी कार कमाईआ। हरि संगत तेरा सति सच जैकारा, प्रीती प्रीतम नाल बणाईआ। नाता जगत कूड़ कुड़यारा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। सब चलदे आपणी वारा, वारता वेखो जगत लोकाईआ। लिख लिख गए गुरू अवतारा, पैगम्बर कलमयां विच सुणाईआ। मिलो इक एकँकारा, जो अकल कलधारी नज़री आईआ। जिस दा सति सति पसारा, चारे खाणी चारे बाणी हुक्म मनाईआ। दर दरवेश हो के मंगो बण भिखारा, भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ। उह देवणहार दातारा, दयानिध बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पावणहारा सारा,

बचया रहिण कोए ना पाईआ। हरि संगत तेरा जन्म कर्म अनमुल्ल, कीमत कहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर कंडे जाणा तुल, शब्दी वज़न आप समझाईआ। श्री भगवान दी बणना कुल, पुश्त पुनाह हथ्थ टिकाईआ। सच प्रीती जाणा घुल, साची सिख्या इक समझाईआ। लोकमात ना जाणा रुल, माया ममता मोह हल्काईआ। आत्म परमात्म नाता जाणा ना भुल्ल, भुल्लयां होए जुदाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि सदा सुल्हकुल, कुल मालक आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगत तेरी लेखे लग्गी उम्मीद, आमद खुशी मनाईआ। नेत्र कर लै दीद, दर्शन बेपरवाहीआ। शब्द दी सुण ताईद, हुक्मी हुक्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार धर्म वड्याईआ। हरि संगत तक्के भिन्नड़ी रैण, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धन्न वड्याई जे मिल्या सच्चा सैण, सज्जण नूर खुदाईआ। जो चुकावणहारा लहिणा देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। नाम निधाना दे रसैण, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। लेखा मुका के ऐन ग़ैन, अलिफ़ ये तों दिता छुडाईआ। दरस करा के निज नैण, मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाता तोड़ के भाई भैण, सज्जण इक्को इक समझाईआ। करे खेल नर नरायण, नर हरि आपणी धार बदलाईआ। लेखा जाण पंच पंचैण, पंचम रंग दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा घर, गृह मन्दिर अंदर परदा लाहीआ। गृह मन्दिर परदा जाए लथ, गुरमुख ओहला रहिण कोए ना पाईआ। मिलणा मेल पुरख समरथ, समां शहादत दए गवाहीआ। झोली पैणी हकीकत हक, हाकम धुर दा होए सहाईआ। जो मंज़ल उत्ते पाँधी बण के लए नठ्ठ, भज्जे चाँईं चाँईंआ। हरि संगत मिल के करया इक इक्ठ, प्रेम प्रीती विच समाईआ। सति सन्तोख धीरज लै के हठ्ठ, गृह जाणा चाँईं चाँईंआ। तन माटी खुल्ल्या रहे हट, वस्त देवे बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला लैणा रट, रट्टा रहे ना जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा पूरब लेखा देवे कट, अगला मार्ग इक्को दए वखाईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईंआं ✪

कलयुग अन्तिम कूड़ डंका, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ। झगड़ा प्या राउ रंका, दु:ख भुक्ख विच लोकाईआ। सच दवारा सोहे कोई ना बंका, काया माटी साढे तिन्न हथ्थ अन्त वज्जे ना कोए वधाईआ। गढ़ तुटे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म भेव ना कोए चुकाईआ। मन वासना दीन दुनी होया मंगता, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। बोध अगाधा

शब्द अनादा दिसे कोई ना पंडता, चार वरन अठारां बरन चौदां विद्या रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ पसारा, नव नौ चार नज़री आइंदा। साचा मिले ना मीत मुरारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अंग ना कोए लगाइंदा। सृष्टी दृष्टी रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरला सन्त भगवन्त भगत करे प्यारा, जगत वासना माया ममता मोह चुकाइंदा। तन माटी ख़ाकी वजूद सुहाए इक दवारा, काया काअबा वेख ख़ुशी मनाइंदा। नाद धुन शब्द सुणे अगम्मी वारा, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। अमृत रस निझर झिरना पी लए ठंडा ठारा, जगत तृष्ना तृखा रहे ना राईआ। घर दीआ बाती जोती जोत वेखे उज्यारा, अन्ध अन्धेरा बाहर कढाहीआ। सगला साथी कमलापाती पतिपरमेश्वर मिले मीत मुरारा, घर सज्जण सोभा पाईआ। रोग सोग चिन्ता दु:ख तों वसे बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा रिहा खिलाईआ। कलयुग वेख जगत अन्ध, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साची मंज़ल पूरा करे कोई ना पन्ध, अधवाटे दिसी लोकाईआ। जगत क्रिया मन वासना जूठ झूठ गंद, गृह गृह नज़री आईआ। परम पुरख आत्म ब्रह्म निरगुण धार गावे कोई ना छन्द, सरगुण हो के सगण ना कोए मनाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती हँकारी ढाए कोई ना कंध, बजर कपाटी साची हाटी परदा ना कोए उठाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर तन वजूद साचा नाम चढ़ाए कोई ना रंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल करनी वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ा चार कुण्ट रिहा चमक, नव सत्त आपणा बल धराईआ। दीन दुनी दी सृष्टी कीती अहिमक, मुहब्बत विच ना कोए लोकाईआ। आत्म परमात्म निज घर होए कोए ना सहिमत, पारब्रह्म ब्रह्म दरस कोए ना पाईआ। जन भगतां परम पुरख साहिब स्वामी दीन दयाला करे आप रहमत, बख़्शिश नाम निधाना झोली पाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी कट के ज़हिमत, जगत जहालत विच्चों बाहर कढाहीआ। साचे नाम दी दे के नेअमत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। कलयुग वेख तमाशा, चार कुण्ट दहि दिशा सदी चौधवीं हैरानी गई छाईआ। साचा नूर होए ना कोए प्रकाशा, अन्ध अंध्यार ना कोए मिटाईआ। सुरती शब्दी गोपी काहन मिल के पावे कोई ना रासा, नाम बंसरी हक ना कोए सुणाईआ। आत्म परमात्म सेवक सेवा करे ना बण के दासी दासा, दास्तान पिछली गए भुलाईआ। मिले मेल ना पुरख अबिनाशा, घर सज्जण दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकया ना ज़ात पाता, दीन मज़्ह्ब करन लड़ाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार घट भीतर नज़र ना आया साख्याता, जोत सरूपी जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँईआ। कलयुग वेख जगत

३६८
१६

नादानी, विद्वानी भरम ना कोए तुड़ाईआ। सति सच दी रही ना कोई निशानी, सच निशाना सारे गए भुलाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म मिल्या ना कोई ज्ञानी, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। मंज़ल चढ़ी ना किसे रुहानी, ज़िमीं असमान पैंड़ा ना कोए मुकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढी ना किसे तुग्यानी, जीवां जंतां रही रुढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल घर सद्द के काया मन्दिर अंदर प्रेम प्यार दी दिती ना किसे महिमानी, सति सच दा भोज भोजन ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। कलयुग कूड़ होया प्रधान, चारों कुण्ट डंका रिहा वजाईआ। जिस बुद्धी वाले भुला दिते इन्सान, सुधी सुध रहिण कोए ना पाईआ। जगत वासना विच फिरदे बीआबान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ भज्जण वाहो दाहीआ। धुर दा मिल्या ना अगम्मी राम, सुरती शब्द ना कोए कुड़माईआ। मंज़ल अगली होई ना आसान, पिछला पन्ध ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ वेख पसारा जगत, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन विच्चों सन्त सुहेले लभ्भ के भगत, भगवान आपणा रंग रंगाईआ। आत्म शब्दी सति सच दे के फ़कत, फ़िकरा इक्को दिता पढ़ाईआ। अन्त सुहेला होए वक्त, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाम खुमारी अंदर कर के मस्त, मस्ताने धुर दे दिते बणाईआ। लेखा चुका के कीट हसत, हस्ती विच्चों दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़े वेख जन भगतां मिले अगम्मा नाम, शब्द भण्डारा झोली पाईआ। मेला होए धुर दे राम, अगला पिछला विछोड़ा दए चुकाईआ। नाम भण्डारा अमृत रस निझर झिरना देवे जाम, अंमिउँ रस इक्को मुख चुआईआ। कर्म धर्म सफ़ल होवे काम, मरन पिच्छो जन्म सतिगुर लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा जुग चौकड़ी सदा उधरे, श्री भगवान दया कमाईआ। मानस जन्म जिस दा सुधरे, वदी सुदी दा लेखा जाए मुकाईआ। पूरब लहिणा देणा उतरे, देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। नव नौ चार जुग खोज विच गुज़रे, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। हरिजन तेरा सदा जोड़ जुड़दा, जोड़ी हरि जू आप बणाईआ। संग बणा के पुरख अकाल अगम्मी धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। नाम निधान सुणा के आपणी सुर दा, सोई सुरती लए उठाईआ। गुरमुख जीवत रूप होए कदे ना मुर्दा, मुरीद मुर्शद होए सहाईआ। जिन्हां दे अन्तर शब्दी फुरना होवे फुरदा, जगत वासना दए गवाईआ। एहो लहिणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी पूरे सतिगुर दा, जो भगतां लए उठाईआ। दे प्रकाश आपणे नूर दा, जोती जोत

करे रुशनाईआ। दरस करा हाज़र हज़ूर दा, हज़रत धुर दा दए मिलाईआ। आसा मनसा ग़रीब निमाणयां पूरदा, पूरन ब्रह्म इक दृढ़ाईआ। गढ़ तुड़ा के हउमे हँकार ग़रूर दा, गुरबत अंदरों करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुका के नेड़ दूर दा, घर विच्चों घर गुरमुखां दए वखाईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ भगत सिँघ दे गृह पिण्ड पंज गराईआं ज़िला बठिंडा ✪

कलयुग कहे मैनूं डर इक भगवान, भउ बाकी दिते चुकाईआ। सति सच दा मेट निशान, कूड़ कुड़यारे दिती वड्याईआ। मन वासना कर सवान, चारों कुण्ट भरमाईआ। मूर्ख मुग्ध कर अंञाण, चतुर सुघड़ दिते रुलाईआ। नाम कलमा भुला कलाम, कायनात दिती हिलाईआ। साध सन्त कर बदनाम, धीरज जत दिता तुड़ाईआ। जगत मदि दे के जाम, जमां दे हथ्थ दिता फड़ाईआ। सच्चा मिलण नहीं दिता किसे नूं राम, अक्खरां वाले राम नाल नाते दिते कराईआ। वरन बरन दिसे हराम, साची सरन ना कोए तकाईआ। अन्तिम मिले ना किसे अराम, दीन दुनी होए दुखदाईआ। सब दी करनी करके नाकाम, निकम्मे जीव दिते वखाईआ। गृह गृह अंदर कर क्याम, किस्मत सब दी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी साची सेव कमाईआ। कलयुग कहे श्री भगवान नाल मेरा नहीं कोई युद्ध, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। विद्या दी मार के बुध, बुद्धिवान दिते भुलाईआ। किसे कोल रहिण नहीं दिता कुझ, ख़ाली अंदरों दिते कराईआ। परदा रिहा ना लुक, लुकमा कीती लोकाईआ। एसे कारन गुर अवतारां पैगम्बरां पुरख अकाल ल्या पुछ, हुक्म दे के धुरदरगाहीआ। क्यों मानव बूटा रिहा सुक, हरयावल नज़र कोए ना आईआ। सारे गए झुक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सब दा लेखा गया मुक, मुकम्मल तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाल हो के ख़ुश, थपकी पुश्त पनाह लगाईआ। तुसीं वेखो करके चुप, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। मैं गुरमुखां नूं लख चुरासी विच्चों आपे लवां पुछ, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। काया मन्दिर अंदर जावां घुस्स, आउँदा जांदा वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कहे मैं इक श्री भगवान कोलों डरदा, डण्डाउत विच सीस निवाईआ। बाकी सृष्ट सबाई हरदा, हद आपणी दिती वखाईआ। जो मर्ज़ी सो करदा, कुदरत कादर तों दिती भुलाईआ। जन भगतां चरणी परदा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। भगत दवारे बाहर खड़दा, अगे कदम ना सकां टिकाईआ। जो सोहँ ढोला पढ़दा,

श्री भगवान रिहा मनाईआ। मैं उन्हां दे दर दा बरदा, दरवेश हो के अलख जगाईआ। दस्त जोड़ वस्त मंगदा, बेनन्ती इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां काया चोली आप रंग दा, रंगत पिछली रिहा बदलाईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ प्रीतम सिंघ दे गृह समाल सर ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सच्च बेनन्ती सुण अरदास, अबिनाशी करता दया कमाइंदा। जन भगतां वसे सदा पास, निरगुण निरवैर निराकार आसण लाइंदा। जुग जन्म दी पूरब पूरी करे आस, तृष्ना अवर ना कोए वधाइंदा। काया मन्दिर अंदर निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा कूड़ चुकाइंदा। निझर झिरना अमृत देवे बूँद सवांत, अग्नी तत सर्ब बुझाइंदा। मंज़ल चढ़ा के आपणे घाट, महल अटल इक वखाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला आप कराइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, सोहँ ढोला सच सुणाइंदा। झगड़ा मुका के ज़ात पात, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। जन भगतां प्रभ सुण बेनन्ती, दीन दयाल दया कमाईआ। शब्द नाद सुणा के बोध अगाध भेव चुका के परा पसन्ती, मद्धम बैखरी लेखा रिहा मुकाईआ। नाता रहे किसे ना पंडती, मुल्ला शेख़ मुसायक सज्जण ना कोए अख्वाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगती, हँ ब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। कूड़ी ममता मेट के मन दी, ममता मोह चुकाईआ। दुरमति मैल धो के तन दी, पतित पुनीत रिहा वखाईआ। खेल मुका के नेत्र अन्न्ह दी, निज नैण करे रुशनाईआ। झोली भर के नाम धन दी, भण्डारा इक्को इक वखाईआ। सज़ा रहे ना राए धर्म डंन दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगतां प्रभ सुण के अरज़, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। मेहरवान हो के महबूब करे तरस, रहमत रहीम आप कमाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी विछोड़े वाली मेटे हरस, धुर दा नाता लए जुड़ाईआ। दीनां दुखियां वण्डे दर्द, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। शरअ छुरी कोहे किसे ना करद, कतलगाह ना कोए वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्दाना मर्द, मदद करे थाउँ थाँईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हो के पूरा करे फ़र्ज़, फ़राइज़ आपणा आप निभाईआ। नाम निधाना सुणाए आपणी तरज़, चार जुग दा लेखा दए चुकाईआ। मालक मकरूज़ होके कर्ज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा दए चुकाईआ। जन भगतां प्रभ वेख के अन्तर आत्म ख़ास, ख़ालस हो के दया कमाईआ। निज आत्म होण ना देवे उदास, मन चिन्ता दए गवाईआ। भाग लगा के काया प्रभास, साची रुतड़ी रुत महकाईआ। लेखा

लिख के बिन कलम दवात, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग चन्न करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो गए आख, शब्द संदेसयां विच सुणाईआ। सो पूरा करे भविख्त वाक्, वातावरन दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जन भगत जिस दी करदे गए उडीक, नित नवित ध्यान लगाईआ। सो नज़री आए काया माटी अंदर नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। बेड़ा बन्नू दया करे लाशरीक, शरक्त कूड़ी अंदरों बाहर कढाहीआ। मुहब्बत विच दए तौफ़ीक, ताब्यादारी दए जणाईआ। जन्म जन्म दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। जन भगतां प्रभ आदि जुगादी रिहा जोड़, जोड़ी आपणे नाल मिलाईआ। निरगुण हो के सरगुण जावे बौहड़, नित नवित वेस वटाईआ। शब्दी सुरती बन्नू के डोर, बन्धन इक्को दए वखाईआ। लेखा चुका के काया माटी गोर, ज़ोर आपणा इक प्रगटाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, सच चांदनी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। जन भगतां प्रभ पूरी करे ख़ाहिश, लख चुरासी विच्चों वेख वखाइंदा। जुग जन्म दयां विछड़यां करे तलाश, घर आपणे बह बह डेरा लाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाम रंगाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे साथ, संगी इक्को इक अखवाइंदा। लहिणा देणा चुका के मस्तक माथ, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। आत्म ब्रह्म दस्स के साची ज़ात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जन्म जन्म दे अन्तर बदल देवे हालात, जीवण विच जीवण आपणा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी करनहारा आस, आसा मनसा सब दी पूर कराइंदा। जन भगत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जो रहे तक्क, तकवा इक्को उपर रखाईआ। हकीकत झोली पाए हक, हाकम हो के धुरदरगाहीआ। सच दवारे लए सद्द, नाम सुनेहड़ा इक सुणाईआ। लोकमात कूड़ी क्रिया देणी छड्ड, जूठ झूठ नाता दए तुड़ाईआ। नौ दवारे पार कर के हद्द, सुखमन टेडी बंक पैंडा दए मुकाईआ। ईड़ा पिंगल जाए ढठ्ठ, मनुआ मन ना कोए चतुराईआ। झगड़ा मुका के तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, अमृत सच सरोवर दए नुहाईआ। शब्द सुणाए नाद धुन आत्मक अनहद, अक्खरां वाली ना कोई पढ़ाईआ। साची जोत जगा के लट लट, नूरो नूर करे रुशनाईआ। धर्म दवारा खोल्ह के हट्ट, वस्त अमोलक इक वरताईआ। धुरदरगाही दे के ब्रह्म मत, विद्या आपणी दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान सांझा बण जाए जस, वेद पुराण शास्त्र सिमरत जिस दा ढोला गाईआ। दोए लोचन बन्द कर के अन्तर खोल्हे अक्ख, आख़र आपणा मन्दिर दए वखाईआ। जिस घर स्वामी ठाकर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार निरगुण

जोत बिन वरन गोत पुरख अकाला दीन दयाला रिहा दिस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दे के साचा आपणा रस, रस्ता इक्को दए दृढ़ाईआ। जन भगत जिस दा वेखदे रहे रस्ता, ज़िमीं असमानां ध्यान लगाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल काया अंदर मन्दिर मिले हस्सदा, वड शान वाली हस्ती नज़री आईआ। भरया भण्डारा देवे धुर दे जस दा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। तीर निशाना कर के अगम्मी अक्ख दा, आख़र आपणे नाल मिलाईआ। लख चुरासी विच्चों रखदा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग दस्स के सच दा, सच्चा रस्ता इक वखाईआ। जन भगतां जिस दी सदा सदा सद रखी ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। मन वासना कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी ला के चोट, सोई सुरती लए उठाईआ। हउमें हंगता रहे ना रोग, संजोगी धुर दा मेल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दे के साची चोग, चुग़ली निंदयां तों बाहर कढाहीआ। झगड़ा चुका के लोक परलोक, सच सलोक इक सुणाईआ। दीन दुनी दा रहे ना हरख़ सोग, चिन्ता ग़म दए मुकाईआ। चरण प्रीती बख़्श के साची खोज, मुफ्त आपणा दरस दिखाईआ। अन्तर आत्म कर के बोध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। साचे नाम दा दे के जोग, जगत जोगीआं तों लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। जन भगत जिस दी करदा रिहा खिच्च, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। सो पुरख अकाल निरगुण रूप रहे सदा विच्च, विचला भेव दए खुल्हाईआ। अमृत मेघ बरस काया देवे सिंच, हरयावल आपणी दए प्रगटाईआ। फल फुल्ल फुलवाड़ी मौले नित, महक महक विच्चों प्रगटाईआ। ठगोरी मूल ना पाए चित, चेतन सुरती दए कराईआ। निरगुण निरगुण बणया रहे हित, आत्म परमात्म वजदी रहे वधाईआ। सदा बसन्ती रहे थित, घड़ी पल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पूरी कर के इच्छ, आसा दए बुझाईआ। वस्त अमोलक पा के भिच्छ, भिक्खक दए वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा स्वामी आए दिस्स, अन्धा नज़र कोए ना आईआ। मालक हो के ख़ालक हो के प्रितपालक हो के पती पतवन्ता मिले इक्क, एकँकारा बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा दए नजिठ्ठ, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। घर वखा आपणा अनडिठ्ठ, सच दवारे दए टिकाईआ। जित्थे कदी ना बदले पिठ्ठ, करवट वाली खेल ना कोए खिलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां दर्शन देवे नित्त, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। गुरमुख गोद उठा लए पित, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर साची धार हरि निरँकार बिन अक्खरां बिन पत्थरां बिन सथरां बिन कलम शाही काग़ज़ गुरमुखां लेखा देवे लिख, जिस दा लेख ना कोए बदलाईआ।

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी मुसतफा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान जो लेखा काया झुग्गी, झुग्गा आपणा दे वखाईआ। जिस दा खेल सदा चौंहु जुगीं, जुग जुग वज्जदी रहे वधाईआ। ओह जन भगतां अंदरों बदल देवे बुद्धी, बुध बिबेक आप कराईआ। नाम भण्डारा देवे रुग्गीं, मुट्ठां नाल ना कोए वरताईआ। तुसां फिरना लोकमात अड्डी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह देवे सरनाईआ। तुहाडी आत्म कर के सुच्ची, संजम इक्को देणा समझाईआ। सदा लग्गी रहे अन्तर रुची, रचना आपणी दए वखाईआ। दूजे दी करनी पए ना बुत्ती, दर दुआर मंगणा पए ना थाउँ थाँईंआ। सुरत उठावे सुत्ती, आलस निंद्रा दए गवाईआ। पहले सम्मत हुण बदलण लग्गा रुत्ती, फुल्ल बहार अगली लए प्रगटाईआ। तुसीं ताअ देणा मुच्छीं, मुश्कल सब दी हल कराईआ। गुरमुख सवाणी रसतिउँ रहे कोए ना घुथ्थी, मार्ग इक्को दए जणाईआ। विछोड़े विच ना रुठ्ठी, रुठयां लए मनाईआ। तुसां केहड़ी सज़ा लैणी लटक के पुठ्ठी, पुठयां तों सिध्धे दए कराईआ। जगत अन्धेरे दी औध रही मुक्की, मुकम्मल आपणा दरस दिखाईआ। तुहाडे घरां तों खा के रुक्खी सुक्की, सुख तुहानूं दए उपजाईआ। सदा सुहेला इक अकेला गोदी रिहा चुक्की, चुकन्ना हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल जो काया अंदर सदा सदा रिहा लुक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। देवण लग्गा थोड़ा कुछ, ख़ाहमख़ाह आपणी दया कमाईआ। पंडत किते खाण पीण तों ना जाईं रुस, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सब दे अन्तर बख्श के इक्को ओट, सहारा इक्को दए वखाईआ। होवे प्रकाश बिन तेल बाती जोत, कमलापाती करे रुशनाईआ। अगे चिन्ता करन दी लोड़ रहे ना सोच, सच आपणा रंग चढ़ाईआ। जेहड़ा तुहाडे काया माटी भाण्डे रिहा पोच, वस्त आपे दए टिकाईआ। तुसां केहड़ा पैंडा मारना जोजना वाला कोस, दूर दुराडा आपे होए सहाईआ। दया कमाए तुहाडे बह के काया कोने गोश, गोष्ट आपणी दए सुणाईआ। परम पुरख अगे रहे ना कदे ख़ामोश, खुशख़बरी आपणी दए दृढ़ाईआ। जो चार जुग होया रिहा रूपोश, पेश हो के पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वड्याईआ। श्री भगवान जो अंदर लुक्कया रिहा चुप्प, बचन बिलास ना कोए जणाईआ। वड़या रहे अन्धेरे घुप्प, आपणा आप छुपाईआ। विछोड़े दा देंदा रिहा दुःख, बिरहों विच सताईआ। ओसदा अगला पैंडा रिहा मुक, मुकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण भगत भगवान गृह आपणे लै जाए चुक्क, गिरह आपणी विच टिकाईआ। जिन्हां गा लई इक तुक, धुर दे तग़मे देवे शहिनशाहीआ। सतिगुर बचन कोई मुखीं भरया नहीं थुक्क, लाअनत वाला रूप ना कोए बणाईआ। नाता जोड़ के पिता

पुत्त, वसीअत सच दी दए लिखाईआ। जिन्हां चिर गुरमुख ना होवण खुश, खुशी मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काया झुग्गी कहे मैं परदा देणा पाड़, कफ्नी रहिण कोए ना पाईआ। प्रभू नूं लुक्कया नहीं रहिण देणा विच किसे झाड़, मन बिरख ना कोए छुपाईआ। पड़दे वाली रहिण नहीं देणी आड़, अड़िक्के नाल बाहर देणा कढाहीआ। जिंनां चिर प्रकाश करे ना नाड़ नाड़, अनाड़ी इस दा नाँ देणा प्रगटाईआ। फिर सन्त सुहेले वेखे वारो वार, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। बेएतबारां नूं ज़रूर देवे एतबार, बेपरतीतयां नूं परतीत वाले बणाईआ। ग़मीआं विच होवे ग़मख़ार, खुशीआं विच खुशी रंग वखाईआ। जन भगतो प्रभ दी वेखदे जाओ बहार, रुत्त आपे दए महकाईआ। सदीआं दे विछड़े मेले विच संसार, जुगां दे लहिणे रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार करे बेदार, बेपरवाह आपणा परदा लाहीआ।

४०५
१६

४०५
१६

✪ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जगीर सिँघ, ईश्वर सिँघ, गुरदयाल कौर दे गृह पिण्ड माढ़ी मुसतफा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ अगे ना रहे विछोड़ा, विछड़यां मेल मिलाईआ। बिना भगत भगवान कदे ना सोहे जोड़ा, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। पुरख अकाल किहा जन भगतो हुण सस्से उपर ला के होड़ा, निरगुण सरगुण खेल दिता वखाईआ। भगत प्रेम पारब्रह्म हो के बौहड़ा, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। लख चुरासी जवाब दे के कोरा, काफ़र दस्सी लोकाईआ। गुरमुख उठा के बांका छोहरा, जोबन धुर दा रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार कट के अन्ध घोरा, सच नूर दिता चमकाईआ। झगड़ा मुकाए जगत वासना चोरा, चुरासी बन्धन रहे ना राईआ। शब्द अगम्मी दे के तोड़ा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघाईआ। हरिजन कर के भाग मथोरा, मिथ्या सृष्टी विच्चों आप कढाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार गाया दोहरा, दोहरी धार बण के आपणा खेल वखाईआ। जगत सृष्टी बिन सार पाशे बदल देवे मोहरा, मोहर आपणा नाम लगाईआ। खेल कर के होर दा होरा, होका दे के दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जन भगत कहे प्रभू तेरी कदी ना रहवे याद, यादगार ना कोए बणाईआ। साचा खेड़ा ना होवे आबाद, अबादत समझे ना कोए लोकाईआ। बिन भगतां लोकमात हो जावें बरबाद, निशाना रहिण कोए ना पाईआ। किसे

कम्म ना आवे तेरे सचखण्ड दा राज, जिंनां चिर गुरमुख रईयत ना लएं बणाईआ। कलयुग अन्तिम सानूं दे जवाब, धुर दे मालक धुर दी मंग मंगाईआ। श्री भगवान कहे गुरमुखो मेरी सुणो अगम्मी आवाज़, नाम संदेशे विच जणाईआ। वरन बरन ज़ात पात जगत समाज तों कर के आज़ाद, सिध्धा आपणे नाल मिलाईआ। भेव खुल्हा के बोध अगाध, धुर शब्द करां पढ़ाईआ। गुरमुख फुलवाड़ी दा मौले बाग़, माली हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। निरगुण जोत जगा चिराग़, अन्ध अन्धेरा दयां गवाईआ। कलयुग कूड़ी तृष्ना मेट के आग, कपट कुटम्ब दयां खपाईआ। शाहो भूप बण के राजन राज, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। सच दवारे दे के धर्म ख़ताब, मुख़ातब हो के आपणा हुक्म मनाईआ। लेखे ला के तुहाडा अदाब, अदब नाल सच दवारे दयां टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां लेखा दए मुकाईआ। जन भगत कहे प्रभ तैनूं जाणे कौण, लोकमात तेरा रंग रूप नज़र किसे ना आईआ। भगत सुहेले तेरे प्रेम प्यार दे ढोले गाउण, गुण गावत खुशी मनाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर आत्म अन्तर ध्याउण, ध्यान तेरे विच टिकाईआ। आत्मा तेरे प्रेम प्यार विच परचाउण, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ। धुर दे हुक्में अंदर कलयुग अन्त गुरमुख सन्त तैनूं तेरा पकवान आए खवाउण, खुल्ल्हा भण्डारा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। चार जुग दे भुक्ख्या तैनूं आए रजाउण, रज़ा विच चल के सच दवारा मल्ल के बल आपणा आप धराईआ। तेरा वाधा आए वधाउण, तेरा नाम आए जपाउण, तूं मेरा मैं तेरा ढोले गा गा खुशी मनाईआ। सोई दुनिया आए उठाउण, सति सरूप तेरा रूप आए प्रगटाउण, जोती ज़ाते पुरख बिधाते तेरी धार विच आपणी धार मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, चार जुग सतिगुर सति सतिवाद देणा दृढ़ाईआ। जन भगत कहे प्रभू तेरी बिना भगतां किस दे नाल यारी, याराना हक ना कोए लगाईआ। लख चुरासी होई बेएतबारी, बेएतबारा तैनूं रहे बणाईआ। तूं नज़र ना आवें किसे जगत अक्ख संसारी, दोए लोचण वेखण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन नेत्र नैण नीर वहावण धारी, धरनी धर्म रहिण कोए ना पाईआ। ठाकर स्वामी धुर दे दाते मन वासना तेरी दुनिया बणी तेरी पुजारी, आत्म परमात्म तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। तेरी जोत अकालण बिन भगतां सदा रहे कुँवारी, सज्जण मीत मित्र ना कोए बणाईआ। उठ वेख कलयुग अन्त रैण दिसे अंध्यारी, साचा चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। जन भगत तेरा राह तक्कण रैण दिवस दिहाढ़ी, पल पल पलक पलक बदलाईआ। तूं देवणहारा दीन दयाल दरस दीदारी, दयावान दया दे कमाईआ। वेखीं भगतां नाल ना करीं ग़द्दारी, गदागर हो के घर घर फेरा लैणा पाईआ। तेरे चरण कँवल सदा नमसकारी, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

इक्को दे नाम खुमारी, खुशामद अवर रहे ना राईआ। जन भगत कहिण प्रभू तेरा केहड़ा संगी, चार कुण्ट दहि दिशा नज़र कोए ना आईआ। प्यार मुहब्बत तैनूं देवे कोई ना मंगी, ख़ाली फिरें थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल किहा मैं भगतो बड़ा ढंगी, तौर तरीका आपणे हथ्थ रखाईआ। सारी दुनिया नालों मैनूं थोड़ी सिक्खी चंगी, जो सिख्या विच रखाईआ। नाता तोड़ के ख़ानाबन्दी, बन्दगी वाले बन्दे लवां उपजाईआ। जिन्हां दे अन्तर कूड़ वासना रहे ना गंदी, सुगंधी नाम दयां भराईआ। माण दे के विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी करां रुशनाईआ। पन्ध मुका के जेरज अंडी, उत्भुज सेहतज खैहड़ा दयां छुडाईआ। सच प्रेम दा दे के इक अनन्दी, अनन्द अनन्द विच टिकाईआ। साचा सोहला दस्स के छन्दी, अगम्म अथाह करां पढ़ाईआ। भगत सुहेले बणा के आप भुयंगी, भुजां तों लवां उठाईआ। सिध्धा मार्ग दस के डण्डी, डण्डोत इक्को दयां जणाईआ। जन भगतो तुहाडी आत्मा कदे रहे ना रंडी, परमात्म हो के कन्त सुहागी लए प्रनाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि दीन दयाल सदा बख्शंदी, बख्शश रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, वस्त अमोलक देवे बिना मूँहों मंगी, अनडिठड़ी दौलत आप वरताईआ।

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ भाग सिंघ दे गृह पिण्ड माढ़ी मुसतफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

दुरबाशे किहा सुण नाथ त्रलोकी, कृष्न दयां जणाईआ। किस बिध बिना भगती भगतां अंदर जगे जोती, प्रकाश करे रुशनाईआ। सुरती उठे सोती, नाम शब्द वज्जे शनवाईआ। चढ़न मंज़ल चोटी, अन्तर पन्ध मुकाईआ। वासना निकले खोटी, सुगंध नज़री आईआ। जन्म कर्म रहे ना रोगी, दुखड़ा दर्द मिटाईआ। मिले मेल संजोगी, विछोड़ा दए चुकाईआ। बणना पए ना जोगी, बनखण्ड फेरा पाईआ। बिन पढ़यां आवे सोझी, समझ मिले चतुराईआ। ठाकर मिले मौजी, मिल के रंग चढ़ाईआ। नाम निधान देवे बोधी, बुद्धी तों परे समझाईआ। चुक्की रखे गोदी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। श्री भगवान किहा ओ दुरबाशे एह भाव जाणे कोए ना लोकी, परलोक दए दुहाईआ। जिस उपर मेहरवान हो के श्री भगवान निरगुण धार सरगुण बण के खा जावे रोटी, रट्टे दो जहानां दए मुकाईआ। ओन्हां पढ़नी पए ना पोथी, पुस्तक बगल ना कोए उठाईआ। बुद्धी होए ना थोथी, स्वच्छ दए कराईआ। भाग लग्गे काया लोथी, चम्म दृष्टी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। कृष्न किहा सुण दुरबाशा ऋषी, रखीशर दयां जणाईआ। श्री भगवान दी धार तिक्खी, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। बहु बारीक निक्की नेत्र नैण ना कोए तकाईआ। जो

जुग चौकड़ी देवणहार अगम्मी चिट्ठी, शब्दी वण्ड ना कोए कराईआ। करे खेल अनडिट्ठी, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रहे मिती, साल बसाला दए खपाईआ। लेखा जाणे आपणी थिती, वारता धुर दी आप वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरे वरगे भगत बणाउणी आपणी सिक्खी, साख्यात आपणी दया कमाईआ। ओन्हां दी धार जाणी लिखी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गोबिन्द दी धार होणी बीस इकी, वीह इकीह पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी दात किसे नहीं दिती, सो पुरख अकाल देणी वरताईआ। वेखीं तूं वी करीं कोई ना छेती, छत्ती राग ना कोए वड्याईआ। मेरे बचन दी समझीं नेकी, निराकार हो के दयां समझाईआ। साहिब सुल्तान दी इक टेकी, टिकटिकी इक्को विच लगाईआ। लहिणा चुकणा सोढी बेदी, वेद शास्त्र देण गवाहीआ। पुरख अकाल आउणा धुर दा भेदी, भेव आपणा दए खुल्हाईआ। भगतां बणना हेती, गुरमुख लए जगाईआ। सारी सृष्टी रहे वेंहदी, बुद्धी समझ ना कोए समझाईआ। रीती बणाए धुर दे नेहों दी, नाता आपणे नाल रखाईआ। धार बख्श अमृत मेहों दी, अग्नी तत दए बुझाईआ। मुहब्बत पा पिता पिउ दी, पूत सपूते गोद उठाईआ। शरीणी दे के धुर दे घिउ दी, घृत साचा लए उपजाईआ। एह खेल अगम्मी देउ दी, जिस नूं देवत सुर सीस निवाईआ। एह धार नहीं क्यों दी, किस्मत जन भगतां दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार वड्याईआ। दुरबाशे किहा प्रभू की उह गुरमुख होवन सन्त भगत, भगवान दे जणाईआ। श्री भगवान किहा ओन्हां दे अन्तर देवां इक्को मंत, मंतव सब दा हल्ल कराईआ। दुरबाशे किहा की पछाण होवे विच जीव जंत, किस बिध करें रुशनाईआ। कृष्न किहा ओन्हां दा मेला अन्त होवे श्री भगवन्त, नाता पुरख अकाल जुड़ाईआ। किसे दवारे करन ना मिन्नत, सीस अवर ना कोए झुकाईआ। जन्म जन्म दी मेट के चिन्नत, दुःख दर्द देण गवाईआ। सिध्धे सचखण्ड दी जाण सिम्मत, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओन्हां देवे माण वड्याईआ। दुरबाशे किहा की उह जपण तेरा नाम, कृष्न कह कह खुशी मनाईआ। कृष्न किहा नहीं उह सिमरन श्री भगवान, जो मेरा पिता माईआ। मैं तत्तां वाला निशान, थिर रहिण कोए ना पाईआ। अक्खरां वाला दे के ज्ञान, गीता गुण जाणा समझाईआ। जिस नूं पढ़ के मिले मेहरवान, मुहब्बत मेल मिलाईआ। उह दाता दानी देवणहारा दान, जन भगतां दया कमाईआ। मैं बिदर दा खाधा पकवान, उह दलिद्री सारे पार कराईआ। जन्म जन्म दी मेट के काण, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। चरण भूमिका दे के सच अस्थान, सच दवारे दए टिकाईआ। जित्थे दुरबाशा कोटन कोटि कृष्न बैठे सीस निवाण, गोपीआं वाली रास ना कोए वखाईआ। ना जमना इश्नान, गोकल बिन्दराबन ना कोए वड्याईआ। ना बंसरी धुनकान, ना मधुर

धुंन सुणाईआ। ना गऊआं दा चरवाहा गऊआं जाए चरवान, ना बछड़े मोड़ मुड़ाईआ। ना चिल्ला तीर कमान, ना रथ बणे रथवाहीआ। ना अर्जन भीम नौजवान, ना दर्योंध्न ज़ुल्म कमाईआ। ना दुरबाशे वरगे फिरन विच बीआबान, ना कोई पट्टी पेट बंधाईआ। ना कोई मन दिसे शैतान, ना शरअ दिसे लड़ाईआ। ना विद्या वाला ज्ञान, ना अक्खरां वाली पढ़ाईआ। ना कोई लैण देण वाला इमतयान, पाठशाला ना कोए वखाईआ। ना कोई बिरध बाल जवान, ना कोई सूरबीर चतुराईआ। ना कोई तत्तां वाला भगवान, दुरबाश्या निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। सो सहिज सुभाउ कर किरपा भगतां मिले माण, मिलणी जगदीश आपणे नाल कराईआ। दुखियां दा दुःख वण्डा के खा जाए पकवान, पाक पवित्र दो जहान दए कराईआ। दुरबाशे किहा की ओस वेले ओस दा होवे नाम, मैनूं दे समझाईआ। कृष्न किहा उह आत्म परमात्म हो के ढोला गाए आपणा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग सब दे झोली पाईआ। सब दा बदल देवे विधान, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कर जाए कल्याण, इक इकल्ला कल्ला कल्ला लेखे लए लगाईआ।

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ नरायण सिँघ दे गृह निहाल सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

४०६
१६

जन भगत कलयुग अन्तिम चुक्के लेखा, परम पुरख परमात्म आत्म लहिणा देणा दए चुकाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा मेटे भरम भुलेखा, पतिपरमेश्वर बेपरवाह जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को बण के धुर दा नेता, नर नरायण नर हरि आपणी गोद उठाईआ। त्रैगुण माया अग्नी तत पंज तत ना लाए सेका, अमृत मेघ निझर झिरना अनरस आपणा दए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां लहिणा देणा चुके लोकमात, निरगुण सरगुण दए चुकाईआ। नाम भण्डारा अगम्मी वस्त धुर दी देवे दात, दयावान आपणी दया कमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमें हंगता मेटे अन्धेरी रात, निज नेत्र ज्ञान लोचण सति जोत करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स अगम्मी गाथ, बोध अगाधा शब्द अनादा धुन आत्मक करे शनवाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़ाए आपणे घाट, नौ दुआर जगत वासना मन मति बुध लेखा दए मुकाईआ। मेल मिलाए दया कमाए परम पुरख अबिनाश, शाह सुल्तान वाली दो जहान चरण कँवल दए सरनाईआ। गृह माटी हाटी साढे तिन्न हाथ, काया बंक अंदर खोल्ह़ बजर कपाटी ताक, परदा ओहला दूई द्वैती शरअ शरायती दए गवाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नज़री आए साख्यात, बिन अक्खां प्रतख रूप गुसाईआ। जन भगतां अंदर सच दवारे कर के आपणा

वास, निज आत्म निजानंद परमानंद आपणा दए वखाईआ। बिन तेल बाती निरगुण जोत कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां होए सहाईआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा माण, चरण कँवल दए सरनाईआ। नाता तोड़ कूड़ी क्रिया जहान, मन वासना बाहर कढाहीआ। बुद्धी दा रहिण ना देवे ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या कर हैरान, हरफ़ आपणा दए समझाईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी ढोले गाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर दे के दान, वस्त अमोलक गोपी काहन झोली पाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी सन्त सुहेले निरगुण सरगुण वेखे आण, लख चुरासी विच्चों जन भगत प्यारे आपणे रंग रंगाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया हउमे हंगता तोड़ माण अभिमान, प्रेम प्रीती साची नीती सच महबूब मुहब्बत विच समझाईआ। धुर दा शब्द नाम निधान सुणा सच्ची धुनकान, सोई सुरती आलस निंद्रा ग़फ्लत विच्चों बाहर कढाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां उत्ते होए मेहरवान, दयावान हो के आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द दस्स के साचा गान, सीता राम गोपी काहन इक्को रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करनहारा पहचान, लख चुरासी कोटन कोटि जीव जंत घट भीतर काया मन्दिर अंदर वेख वखाईआ। जन भगतां प्रभू जुग जुग वरदा, नाता आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। भेव खुल्ावे आपणे घर दा, घर घर विच्चों आपणा परदा दए चुकाईआ। इश्नान करा के साचे सर दा, दुरमति मैल दए धवाईआ। जिस गृह इक्को दीपक बलदा, सो मन्दिर दए सुहाईआ। लेखा मुका के जल थल दा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। माण दवा के निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड दवारा इक वखाईआ। जन भगत अन्तिम अन्त श्री भगवन्त जोती जोत रलदा, दूजा हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी प्रभू देवणहार लहिणा, देवणहारा इक अख्वाईआ। दरस कराए आपणे नैणां, दोए लोचन समझ किसे ना आईआ। नाता तोड़ के जगत वासना मात पित भाई भैणा, साक सज्जण सैण आप इक्को इक अख्वाईआ। तन वजूद काया माटी ख़ाकी नाम भूषन पाए साचा गहिणा, प्रेम रंगण रंग रंगाईआ। साचे धाम अगम्म भूमिका हरि सरनाई दस्से बहणा, कूड़ी मजलस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन सन्त सुहेले गुरमुख सन्त फ़कीर सूफ़ी सुरती शब्द नाल उठाईआ। जन भगतां प्रभ करनहारा जन्म जन्म दा पूरा जोग, जुगती जगत जगदीशर आप जणाईआ। आत्म दरसी देवणहारा दरस अमोघ, घर मन्दिर साचे अंदर करे रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी

साचे कोट, कूड़ कुटम्ब अंदरों बाहर कढाहीआ। शब्द अनादी ला के चोट, चेतन सुरती दए कराईआ। प्रेम प्यार प्रीती अंदर दस्से आपणी खोज, परदा ओहला दए उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़ के वरन गोत, इक्को ब्रह्म दए समझाईआ। नाम खुमारी अंदर कर के मदहोश, जगत नश्यां तों दए बचाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह मन्दिर आत्म परमात्म दर्शन देवे रोज़, नित नवित नर नरायण इक्को नज़री आईआ। भाग लगा के पंज तत चोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेले गुर चेले आपणी गोद उठाईआ। जन भगतां प्रभू देवणहारा राह, रहबर हो के दया कमाईआ। मंज़ल इक्को दए वखा, पाँधी हरिजन लए बणाईआ। नाम निधाना दे के आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा दए दृढ़ाईआ। पार कराए जल थल अस्गाह, ब्रह्मण्डां खण्डां उपर दए चढ़ाईआ। जित्थे सूरज चन्द ना कोए रुशना, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी चार वरन अठारां बरन दिसे कोई ना नाँ, हिस्सयां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सचखण्ड दुआर हक मुकामे दस्तगीर परवरदिगार नूर खुदा इक्को सोभा रिहा पा, जलवागर नूर नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां नालों कदे ना होवे जुदा, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार हो के मिल्या आ, आप आपणा परदा रिहा उठाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बणया मलाह, नईआ नौका नाम बेड़ा आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा सदा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां कलयुग अन्तिम हकीकत विच्चों देवे हक, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जो मंज़ल मंज़ल पाँधी बण के गए थक्क, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चले वाहो दाहीआ। जगत विद्या पढ़ पढ़ गए अक्क, अकल बुद्धी चली ना कोई चतुराईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ तट, अठसठ भज्जे वाहो दाहीआ। खोजदे रहे जगत दवारे मठ, मसीतां विच्चों मसला हल्ल ना कोए कराईआ। जां वेख्या तक्कया बुझया पुरख अबिनाशी घट घट वासी काया मन्दिर अंदर वसे समरथ, घट भीतर बैठा सोभा पाईआ। जिस दा आत्मा ने गाउणा जस, मन दी लोड़ रहे ना राईआ। सो साहिब स्वामी भगतां हो के वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी नींद विच्चों खोलू जावे अक्ख, आलस रहिण कोए ना पाईआ। साख्यात दरस दिखावे प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परदा दए उठाईआ। लख चुरासी विच्चों लए रख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चरण प्रीती साची नीती धुर दा मार्ग दस्स, दहि दिशा चार कुण्ट दा लेखा दए मुकाईआ। पारब्रह्म मेल मिलाए हस्स हस्स, हस्ती विच्चों हस्सती दए बदलाईआ। जन भगतां गुरमुखां प्रेमीआं नाल रंग के अंदरों रत, रतन अमोलक हीरे रूप दए वखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दयावान इक समरथ, अलख घर घर दए जगाईआ।

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सन्त कौर दे गृह पिण्ड निहाल सिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान जन भगतां आत्म करे प्यारी, अन्तर अन्तर वेख वखाइंदा। धर्म रखे ना कोए नर नारी, तन वजूद आपणे हुक्म चलाइंदा। चरण प्रीती धुर दी नीती सच दस्सी खुमारी, ख़ालस आपणा रंग रंगाइंदा। कूड़ी क्रिया माया हउमे हंगता दुरमति मैल देवे उतारी, उत्तम सृष्ट आपणा नाम जपाइंदा। साचे दर सन्त सुहेले नाम वणज दे कर वपारी, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाइंदा। निरगुण जोत जगा निरँकारी, अन्ध अन्धेरा दूर कराइंदा। शब्द अनाद दे सच्ची धुन्कारी, बोध अगाधा भेव खुल्हाइंदा। अगे मंज़ल रहे ना कोए दुष्वारी, दूर दुराडा पन्ध चुकाइंदा। महल अटल देवे उच्च मनारी, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। जित्थे वसे आप नर नरायण निरँकारी, सो भगतां दर सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगत कोई भेव ना जाणे मदीन नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जिन्हां वखाए आपणा घर, गृह कूड़ा दए तजाईआ। जन्म जन्म दा मेट के डर, भय भयानक विच्चों बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म जोड़ के लड़, नाता दो जहान वखाईआ। सो गुरमुख सन्त सुहेला साची मंज़ल पौड़ी जाए चढ़, जित्थे गुर अवतार पैगम्बर प्रभू दवारे बैठे सीस निवाईआ। साचे धाम उपर दे राम पास जावे खड़्ह, चरण कँवल मिले इक सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना जन्मे ना जावे मर, भगत सुहेला इक अकेला मर जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्ला रखे धुर दा दर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परदा भगतां दए उठाईआ। जन भगत कोई ना होवे वड्डा निक्का, निकम्मा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल जिन्हां दा पिता, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। चरण प्रीती धर्म नीती काया अतीती झोली पाए धुर दा हिस्सा, हस्ती विच्चों हस्ती दए बदलाईआ। याद रहिण ना देवे कर्म कुकर्म दा पिच्छा, पसचाताप दए गवाईआ। नित नवित करदा आया रच्छा, रच्छक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम भण्डारा पावे भिच्छा, ख़ाली भण्डारे दए भराईआ। मस्तक जोत ललाटी लावे टिक्का, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नज़री आवे दहि दिशा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण इक्को जलवा नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां प्रभ चाढ़नहारा अगम्मी रंग, काया माटी चोली आप रंगाईआ। निज आत्म

दे के सच अनन्द, दीन दुनिया विच्चों बाहर कढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के धुर ढोला छन्द, सहिंसे कूड़े दए मिटाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को दए समझाईआ। लोकमात चाढ़ के नूरी चन्द, जुग चौकड़ी करे रुशनाईआ। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, दर दवारे आपणे लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां प्रभ रहिण ना देवे अंदर परदा ओहला, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सतिगुर शब्द बणे विचोला, जुग जन्म दयां रुठयां ल्या मनाईआ। मनुआ मन ना पावे रौला, बुद्धी बल ना कोए धराईआ। मेहर नज़र नाल उलटा करे नाभ कँवला, अमृत झिरना निझर रस दए चुआईआ। नज़री आए नूर खुदाई अवला, आलमीन बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा जाणे उपर धरनी धवला, धरत वेख खुशी मनाईआ। जन भगतां लहिणा देणा देवे जुग चार, चार कुण्ट विच्चों आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म दे के सच प्यार, पीआ प्रीतम प्रीती इक्को दए सिखाईआ। जिस नूं लभ्भदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत चोटी समुंद सागर खोज खुजाईआ। सो खेल करे निराकार साकार, साकार निराकार आपणा परदा पाईआ। जिस उपर किरपा करे मेहरवान हो करतार, कुदरत दा कादर करनी दा करता करमां दा लेखा दए मुकाईआ। घर मन्दिर विच्चों निकले बाहर, जोती जाता पुरख बिधाता जलवागर ज़हूर नज़री आईआ। जन भगतां नज़री आए साख्याता, लख चुरासी जीव जंत जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। गुरमुखां पूरी करे आसा, तृष्ना जगत दए बुझाईआ। जीवण विच जीवण दा दे के भरवासा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी दए बदलाईआ। घर ठाकर मिले पुरख समराथा, जगत समाज विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान झगड़ा मुका के ज़ात पाता, दीन दुनी दाअवेदार कूड़ा रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड गाज़ीआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत तेरा लहिणा गया चुक, लोकमात लख चुरासी जून रहिण ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आत्म परमात्म हो के तुठ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर निराकार आपणी दया कमाईआ। अमृत जाम निझर झिरना देवे अगम्मी घुट, माया ममता हउमें हंगता कूड़ी तृष्ना दए बुझाईआ। तन माटी ख़ाकी काया मन्दिर अंदर मौले बसन्ती रुत, रुतड़ी आपणे नाम नाल महकाईआ। किरपा करे साहिब स्वामी अन्तरजामी अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती आप कराईआ।

परदा ओहला चुकावे अन्तर रहे कोई ना लुक, जोती जोत डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा शब्द अनाद अगम्मी सुणा के तुक, धुंन आत्मक करे शनवाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा पैंडा गया मुक, आवण जावण लेखा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुहेला इक अकेला हरि सज्जण मेल मिलाईआ। जन भगत लहिणा देणा पावे तेरी अन्तर आत्म झोली, साढे तिन्न हथ्थ घर मन्दिर सोभा पाईआ। बिन अक्खरां सुणावे आपणी अगम्मी बोली, जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्त कर कर खुशी मनाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत विच पाए ना रौली, राम रहीम करीम आपणा नग़मा नाम दए सुणाईआ। उलटी कर के नाभ कँवली, अमृत झिरना धुर दा रस बूँद स्वांती देवे मुख चुआईआ। माण वड्याई उपर धौली, सचखण्ड दवारे मिल मिल वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरि भगत तेरा लेखा लग्गा अपार, मस्तक पूरब वेख वखाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। नाम संदेसा दे के आपणी धार, धर्म इक्को इक दृढ़ाईआ। चारे खाणी विच्चों कढ्ढ के बाहर, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। चारे वरनां कर खुआर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाता गए तुड़ाईआ। साचा मन्दिर गृह घर इक वखाल, साढे तिन्न हथ्थ परदा ओहला दए उठाईआ। दीआ बाती कमलापाती जगाए बेमिसाल, जिस दी मिसल गुर अवतार पैगम्बर सिफ्तां विच सालाहीआ। घर स्वामी मिले दीन दयाल, ठाकर हो के ठोकर आपणा नाम लगाईआ। लेखा चुका के शाह कंगाल, शाह पातशाह शहिनशाह उपर शाह रग आपणा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म वसे सदा नाल, जगत विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत तेरी अन्तर आत्म हरि हरि वेख, घर ठांडे खुशी मनाईआ। मानस जन्म बदल देवे रेख, पिछला अगला लेखा दए चुकाईआ। नाम सुनेहड़ा दे के संदेश, सोई सुरती दए उठाईआ। परदा लाह के एकँकारा एक, इक इकल्ला दया कमाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया लाए मूल ना सेक, पंचम पंच ना कोए वड्याईआ। श्री भगवान दस्स के साची टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निरवैर निरँकार धार के आपणा भेस, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लोकमात आपणा खेल खिलाईआ। जन भगत सुहेले वेखे आपणे देस, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहारा साचा हेत, गृह गृह मेला रिहा मिलाईआ। जन भगत तेरी आसा मनसा पूर, मुहब्बत इक्को नाल लगाईआ। पन्ध मुका के नेड़े दूर, घर घर विच करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर स्वामी हाज़र हज़ूर, काया काअबे हज़रत दए वखाईआ। जन्म जन्म दी भगती कर मन्ज़ूर, मानस जन्म

दए वड्याईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जाता देवे नूर, चन्द सूरज दी लोड़ रहे ना राईआ। शब्द नाद धुंन सुणाए अगम्मी तूर, तुरीआ पद विच्चों बाहर कढाहीआ। जिधर तक्कें हाज़र हज़ूर, सनमुख हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवणहारा धुर दा घर, सचखण्ड दवारा इक वखाईआ। जन भगत तेरा दवारा सचखण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड दी लोड़ रहे ना राईआ। जित्थे वसे सूरा सरबंग, शाह पातशाह डेरा लाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दूसर अवर ना कोए संग, एकँकारा इक इकल्ला सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव कोटन दर दरवेश रहे मंग, भिखक्क हो के झोली अगे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत सुहेले गुरमुख सन्त घट भीतर खोज खुजाईआ। जन भगत तेरा जन्म कर्म मुआफ़, मुफ्त आपणी दया कमाइंदा। अबिनाशी करता आत्म ब्रह्म खोल्ह के परदा ताक, दूई द्वैती डेरा ढाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा सति सतिवादी दस्स के जाप, सुत नादी आप बणाइंदा। कूड़ी क्रिया रहे ना कोए रोग संताप, जूठ झूठ नाता मात तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाइंदा। जन भगतां अन्तर आत्म दर दरवाज़ा देवे खोल्ह, परदा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। बिन अक्खरां शब्द अगम्मी दस्से बोल, धुन अनादी नाद जणाईआ। निरगुण होके वसे कोल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। परमात्म हो के जावे मौल, मौला आपणी खेल खिलाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा लेखा पूरा करे कौल, कुदरत दा कादर बेपरवाहीआ। जन भगतां माण वड्याई दे के उपर धरनी धरत धौल, धर्म इक्को इक दए समझाईआ। जिस नूं समझ ना सके विद्या वाला कोई पंडत पांधा रौल, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेले घर ठांडे लए मिलाईआ। जन भगत तेरा दवारा एक, दूजी टेक ना कोए रखाईआ। निज नेत्र लोचण नैण लैणा वेख, ज्ञान अक्ख इक खुल्हाईआ। जित्थे दूसर अवर ना कोए भेख, एकँकारा इक अकल्ला सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमान कहे मैं संदेसा देवां धुर दा, जुग चौकड़ी लोकमात सेव कमाईआ। भगतां अंदर फ़ुरना हो के फुरदा, फ़रमाबरदार हो के सेव कमाईआ। नाता जोड़ां आत्म परमात्म शब्द अगम्मी सुर दा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। रस देवां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच दवारे अनन्दपुर दा, पुरी अनन्द इक्को दयां वखाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी बेड़ा कदे ना रुढ़दा, विछोड़ा रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को दरस बिन अक्खां हुन्दा रहे प्रभू

सतिगुर दा, जो सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा नाउँ जणाईआ। भय भउ रहे ना ठग्ग चोर दा, कूड़ कुड़यारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन भगत तेरा मन्दिर उच्च सुहञ्जणा, सचखण्ड इक्को नज़री आईआ। जित्थे जगे जोत निरँजणा, दीआ बाती लोड़ रहे ना राईआ। बिन चरण धूढ़ी होवे साचा मजना, दुरमति मैल ना कोए रखाईआ। बिन हत्थां मस्तक होवे बन्दना, सीस जगदीस झुकाईआ। बिन नाम पदार्थ अवर पए कुछ ना मंगणा, वस्त अमोलक झोली दए भराईआ। बिन सूरज चन्द होए प्रकाश धुर दे चन्दना, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सन्त साजण गुरमुख मीत आत्म ब्रह्म दस्स प्रीत, सतिजुग बख्शे धुर दी रीत, काया काअबा वखाए मन्दिर मसीत, असला मसला जन भगतां हल्ल कराईआ। काया काअबा खोल्ह के हुजरा हक, हकीकत दे दृढ़ाईआ। भगत सुहेले कर के वक्ख, वास्ता इक्को नाल कराईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, दोए लोचण नैण दए वखाईआ। काया माटी प्रगटा के धुर दा हट्ट, नाम अमोलक दए वरताईआ। शब्दी शब्द लगा के सट्ट, सोई सुरत अकाल मूर्त तुरत दए उठाईआ। अंमिउँ रस अमृत आपणा दे के झट्ट, झटका कूड़ क्रिया कर वखाईआ। कर प्रकाश जोती नूर लट लट, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, जन भगतां बख्शे इक सरनाईआ। एथे ओथे दो जहान रहिण ना देवे वक्ख, आत्म परमात्म नाता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे रिहा वस, सति सतिवादी सति संदेश नर नरेश जुग चौकड़ी नित नवित लोकमात मार झात लख चुरासी घट भीतर मानव मानुख मानस आपणा हुक्म वरताईआ।

४१६
१६

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जसवन्त सिँघ दे गृह राजेआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जसवन्त तेरा शब्दी धार जस, अबिनाशी करता पुरख बिधाता दए वड्याईआ। श्री भगवान अन्तरजामी साहिब सुल्तान कीता वस, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर नज़री आईआ। मेहरवान दयावान निज नेत्र खोल्हे अक्ख, प्रतख नज़री आए धुर गुसाँईंआ। अमृत आत्म निझर झिरना देवे झट्ट, अंमिउँ रस आपणा आप बरसाईआ। शब्द अनादी धुन लगावे आपणी सट्ट, सोई सुरती मात उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा दस्स के छन्द, संसा रोग दए गवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिला के आपणा अनन्द, निजानंद करे रसाईआ। दूई द्वैती भरम रहे कोई ना कंध, साची मंज़ल दए चढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेला इक इकेला एकँकार आपणा परदा दए उठाईआ। जन भगत तेरा जस करन चार वेद, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल अंदर वड़ मन्दिर चढ़ काया हाटी खोल्हे आपणा भेद, कूड़ी माटी परदा रहे ना राईआ। आत्म सुहावे सुहञ्जणी सेज, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा डेरा लाईआ। जोती जलवा अगम्म अथाह बेपरवाह नूर नुराना देवे तेज, अन्ध अन्धेरा अंदरों दए कढाहीआ। जिस कारन लोकमात जन्म दे के दिता भेज, सो भजन बन्दगी बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द दए समझाईआ। बिन अक्खां साहिब सतिगुर हो के लए वेख, जगत लोचण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा बदल देवे लेख, रेखा पिछली दए मिटाईआ। आत्म परमात्म करे सच्चा हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन नज़री आवे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हरि भगत तेरी सिफ्त सलाह, महिमा चार जुग जस गाईआ। तेरा एकँकारा इक मलाह, धुरदरगाही नज़री आईआ। जिस दा नित नवित जुग चौकड़ी सच्चा नाँ, नाउँ निरँकारा कह के सारे रहे गाईआ। सो साहिब सुहेला जन भगतां बणे पिता माँ, पूत सपूते गोद उठाईआ। हँस बुद्धी बणाए काँ, काग हँस रूप वटाईआ। महबूब मुहब्बत विच देवे सिर ठंडी छाँ, कलयुग अग्नी तत ना लागे राईआ। साचा मन्दिर महल अटल घर ठाकर दए वखा, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी दए तुड़ा, पतित पावन पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। अमृत मेघ निझर झिरना बूँद स्वांती बख्शे सावण, जगत जग तृष्ना दए मिटाईआ। मन हँकारी कूड़ा मारे रावण, नाम खण्डा ब्रह्मण्डां विच आपणा इक उठाईआ। सन्त सुहेला हो के पकड़े दामन, दामनगीर बेनज़ीर इक्को नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण निरगुण होवे ज़ामन, पंजां तत्तां लेखा दए मुकाईआ। जन भगत इक्को रंग रंगाए भेव ना जाणे क्षत्री शूद्र वैश ब्राह्मण, ब्रह्मवेता ब्रह्म नेता पारब्रह्म ब्रह्म इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुहेला सति सति इक्को इक दृढ़ाईआ। जन भगत तेरी आदि जुगादि महिमा जग, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी वस्या उपर शाह रग, नौ दवारे बैठा पन्ध मुकाईआ। बिन मक्के काअबे कराए साचा हज्ज, मन्दिर मसीत शिवदवाले मठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। घर सज्जण स्वामी मिले भज्ज, पुरख अकाला दीन दयाला निज नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा दर, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। जन भगत तेरी महिमा जगत अथाह, कलम शाही कातब लिखण कोए ना पाईआ। तेरा मालक बेपरवाह, सद बेपरवाही विच रखाईआ। इक्को दृढ़ा के आपणा नाँ, कूड़े नाते दए तुड़ाईआ।

४१७
१६

सचखण्ड दवारा एकँकारा दरगाह साची वखावे अगम्मा थाँ, जित्थे ना कोई पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा उच्च घर, जिस घर दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगत तेरा वेला कलयुग अन्त होए ना अख़ीर, आख़र दए समझाईआ। शरअ शरायती जगत बन्धन तोड़ के आप ज़ंजीर, इक्को रंग दए रंगाईआ। भाग लगा के काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सरीर, शीर धुर दा अमृत दए प्याईआ। मेहरवान मुहब्बत विच मिल के पीरन पीर, पैगम्बरां दा मालक सालस हो के समुंद सागर पार कराईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी धर्म धर्म दी बदल देवे तकदीर, वरन वरन दा बरन बरन दा लेखा दए मुकाईआ। झगड़ा मुका के शाह फ़कीर हकीर अमीर, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को दर दए सुहाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक काया गोलक दे के धुर दी जागीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। बिन अक्खां निरगुण जोत नज़री आए बेनज़ीर, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मस्तक लेखा रिहा चुकाईआ। जन भगत तेरी महिमा अकथ, सदी चौधवीं खुशी मनाईआ। मिल्या मेल परम पुरख समरथ, जिस दी वज्जदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा भविख्त गए दस्स, चार जुग वण्ड वण्डाईआ। निरगुण तकदे रहे खोल्ह अगम्मी अक्ख, दो जहानां परे ध्यान लगाईआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला वसणहारा घट घट, लख चुरासी रिहा समाईआ। सो आपणी धार एकँकार निरगुण हो के आया नठ्ठ, जोती जाता पुरख बिधाता जगत नेत्र कलयुग जीव नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दवारा वेख के साचा हट्ट, बण हटवाणा फेरा पाईआ। जन भगत तेरी महिमा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। तेरा मेल इक करतार, दूजा रिश्ता ना कोए वखाईआ। इक्को दरस मंगे दीदार, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। इक्को घर वसे घरबार, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। इक्को जोत होए उज्यार, निरगुण नूर रुशनाईआ। इक्को नाद शब्द धुन्कार, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। इक्को अमृत ठंडा ठार, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ लभ्भण कोए ना जाईआ। तेरा काया मन्दिर सोहणा उच्च मनार, घर विच घर मिले बेपरवाहीआ। जिस दी मंज़ल जगत विद्या तों बाहर, चौदां लोक चौदां तबक सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दा नाम निधान आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक सलोक, गुर अवतार पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। उह जन्म जन्म दी मेटे तेरी सोच, बुद्धी समझ दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान हो के दर्शन देवे साचे लोच, लोइन इक्को दए खुल्हाईआ। राती सुत्यां दिने जागदयां आपणे प्रेम दी अन्तर आत्म परमात्म देवे मौज, खुशी धुर दी दए वखाईआ। दूजा करना पए कोई ना जोग, जगत दी जुगती विच्चों बाहर कढाहीआ। आवण जावण लख चुरासी

मात गर्भ दा कट के रोग, बन्दना इक्को दए समझाईआ। धुर मेला सच दुआर कर संजोग, नाता इक्को एकँकार आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेट के हरख़ सोग, चिन्ता ग़म अंदरों बाहर कढाहीआ। जन भगत तेरा देवे ना कोई सच सबूत, दीन दुनी समझ कोए ना आईआ। तेरा अक्खां तों ओहले महबूब, मन्दिरां विच्चों बाहर डेरा लाईआ। महलां तों दूर जिस दा अरूज, अर्श तों उत्ते सोभा पाईआ। जिस दी सिफ्तां वाले कोटन कोटि कलमे हज़ारा दरूद, हज़रत करन पढ़ाईआ। उह जिधर वेखे सदा ओधर दिसे मौजूद, घट घट विच रिहा समाईआ। अन्तिम अन्त कर महिफ़ूज़, जन्म मरन तों लए छुडाईआ। तेरा प्रेम धुर दा प्यार कर कबूल, कामल मुर्शद दया कमाईआ। सतिजुग धार सच धर्म सति सतिवाद ला के असूल, असलीअत दो जहानां देणी वखाईआ। इक्को नाम इक्को ढोला, इक्को गीत इक्को सोहला, इक्को नग़मा इक्को नाम दस्सणा माकूल, जिस नूं दीन दुनीदार सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बख्शणहारा चरण कँवल धुर दी साची धूल, धर्म दवारा इक्को दए वखाईआ।

४१६ १६ ✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ साधू सिँघ, बावा सिँघ दे गृह पिण्ड रोडे ज़िला फ़िरोज़पुर ✪ ४१६ १६

साधू सिँघ आपणी साध लैणी साध, सद भावना इक्को दए दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को रखणा याद, याददाशत पूरब जन्म दी दए कराईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे वाद विवाद, विख रहिण कोए ना पाईआ। नाम भण्डारा देवे धुर दी दाद, वस्त अमोलक आप वरताईआ। शब्द अगम्मी वजा के नाद, बोध अगाध करे शनवाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाए राग, नग़मा इक्को इक अलाईआ। झगड़ा मुका के जगत ज़ात, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी रैण मेट अन्धेरी रात, नेत्र अन्ध करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर लावे भाग, भाग मथोर लए बणाईआ। धुर दा दीआ जागावे चराग़, चारों कुण्ट नज़री आईआ। लेखे लावे दिवस आज, घड़ी पल खुशी बणाईआ। नाम बेड़े चाढ़ जहाज़, जहालत विचो बाहर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि चरण मिले सरनाईआ। सच्चा साध मिले सन्त, सति सतिवादी दया कमाईआ। घर ठाकर स्वामी मेला होवे कन्त, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। गढ़ रहे ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। लोड़ रहे ना किसे पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, इक्को इक समझाईआ। साचा सन्त मिले सहिज सहिज गुर सति, सति सति सति विच समाईआ।

नाता तोड़ के पंज तत, तत्व इक्को इक दरसाईआ। दूर करा के मन मत, ब्रह्म मति दए जणाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख मिले गुसाईआ। पूरब जन्म दा देवे हक, हकीकत विच्चों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दे सच सति, सति आपणा राह वखाईआ। साचे साध तेरा राह एक, एकँकार देवे वड्याईआ। बिन पुरख अबिनाशी दूजी रखणी ना कोए टेक, टिक्का मस्तक धुर दा दए छुहाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म अंदर वड़ के खोल्हे भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सच दवारा वखावे आपणा देश, जित्थे वसे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जन भगत तेरी साधना सच, सतिगुर मिल के मिले वड्याईआ। भाग लग्गे काया माटी कच, कूड़ कपट अंदर रहिण ना पाईआ। अमृत धार देवे रस, निझर झिरना आप झिराईआ। तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी पाड़ वखाईआ। पंच विकारा करे सथ, सिर सके ना कोए उठाईआ। नाम जैकारा बोल अलख, अलख निरँजण देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद रखणहारा दे कर हथ्थ, मेहर नज़र आप उठाईआ। जन भगत तेरा सहारा इक्को ओट, पुरख अकाल नज़री आईआ। तेरा मेला निरगुण जोत, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा मुकाम धुर दा किला कोट, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तैनूं सके कोई ना रोक, गुर अवतार पैगम्बर मिल के खुशी मनाईआ। तेरा ढोला सोहला इक्को सलोक, सो पुरख निरँजण आप समझाईआ। जन्म जन्म दी रहे कोई ना सोच, सोच समझ विच्चों बाहर लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारा एकँकारा बख्शणहारा धुरदरगाहीआ। जन भगत तेरा सहायक पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो गुरमुख बणाए आपणे लाल, आपणी गोद उठाईआ। लख चुरासी विच्चों करे बहाल, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। नेड़ ना आए काल, महाकाल बैठा सिर निवाईआ। जुग चौकड़ी लोकमात निरगुण हो के सरगुण करे भाल, गुरमुख वेखे थाउँ थाँईंआ। जुग चौकड़ी नित नवित परम पुरख दी वक्खरी चाल, जगत विद्या समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम सब दे सिर ते कूड़ा डंका वज्जे काल, चार कुण्ट नौ खण्ड सत्त दीप धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए सच सच सति सच्ची धर्मसाल, काया मन्दिर अंदर परम पुरख परमात्म बैठा डेरा लाईआ। साचे सन्त तेरा अगम्मा रंग, जगत ललारी रंगण कोए ना पाईआ। तेरा सब तों वक्खरा मृदंग, ढोलक छैणा समझे कोए ना राईआ। तेरा सब तों निराला अनन्द, रसना जिह्वा विच कदे ना आईआ। तेरा उच्च महल अटल सुहावे पलँघ, जिस दा पावा चूल ना किसे बणाईआ। जित्थे

मिले साहिब सूरा सरबंग, निरगुण नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। सुरत सवाणी मुके पन्ध, शब्द हाणी पल्लू लए फड़ाईआ। दोहां मिल के तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाउणा छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दीन दयाल बणे जन भगतां बख्शंद, बख्शिश रहमत आपणी आप वरताईआ। जन भगत तेरा लेखा दिवस दिहाढ़ा, फलगुण रुत्त मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी पावणहारा सारा, घट भीतर खोज खुजाईआ। जन्म जन्म दा लेखा रिहा निवारा, नविरती प्रकृती परम पुरख आपणे अंदर लए छुपाईआ। साचा दे के इक सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों नईआ करे पारा, सईआ हो के आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा अगम्म अथाह बेपरवाह बिन अक्खरां तों नाम भण्डारा, जिस दी अक्खर रागां नादां विच करन सिफ्त सालाहीआ। जन भगत तेरा नाम सदा निरअक्खर, कलम शाही लिख कोए ना पाईआ। जिस नूं कोटां विच्चों सन्त फ़कीर जाणे फ़क्कर, जो फ़िकरयां तों खैहड़ा गया छुडाईआ। उह लख चुरासी आवण जावण तोड़ के चक्कर, चार वरन अठारां बरन विच्चों बाहर कढाहीआ। चोटी चाढ़ के धुर दी सिखर, सिख्या धुर दी दए समझाईआ। जन भगतो प्रभ नाल मिल के दूजा रहे कोए ना फ़िकर, फ़ाका दिसे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दाता दानी दया कमाईआ। जन भगत वेख आपणा हक मुकाम, महबूब बैठा सोभा पाईआ। जो सब तों वक्खरा राम, उह तेरा मालक अख्वाईआ। जो लख चुरासी काहन, उह गुरमुख गोपी गोद उठाईआ। जो पैगम्बरां देवे पैग़ाम, कलमयां करे शनवाईआ। जो गुरुआं देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जो भगतां दस्से प्रणाम, सूफ़ीआं सलाम रिहा समझाईआ। उस दा तुहाडे अंदर क्याम, क्यामत तों दए बचाईआ। गुरमुखो तुहाडी ज़िंदगी होण ना देवे बदनाम, बदीआं तों बाहर कढाहीआ। सति धर्म दा गुरमुखो तुहाडे दर झुला के निशान, निशाना आपणा दए वखाईआ। जित्थे मिलणा होवे आसान, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। राए धर्म दे होण ना देवे ग़ुलाम, कुम्भी नर्क ना कोए भवाईआ। जन्म जन्म दे तुहाडे मेट देवे लग्गे इलज़ाम, इस्म आज़म आपणा इक दए वखाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा देवणहार आराम, चरण कँवल कँवल बख्श सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदरों मेट के अन्धेरी शाम, सच प्या के अमृत जाम, जमां तों पल्ला दए छुडाईआ।

४२१
१६

✪ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सौदागर सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नीली धारों परे आया मुड़ के, गुरमुख गुरसिख लए जगाईआ। शब्दी धार जोत नाल जुड़ के, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। कदमां नाल नहीं मुकाया पैंडा तुर के, अगम्मी खेल इक वखाईआ। भेव खुल्हा के पूरे सतिगुर दे, सुत्ते लए जगाईआ। भय रहे ना ठग्ग चोर दे, कूड़े याराने दिते तुड़ाईआ। झगड़े मुका के अन्ध घोर दे, सच चन्द कीते रुशनाईआ। लहिणे देणे मुका के तोर मोर दे, मोह मुहब्बत इक्को नाल रखाईआ। जो गुरमुख दर्शन धुर दा लोड़दे, बिन अक्खां दर दर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नीली धारों परे आया उतर, उत्तर दक्खण पूरब पच्छिम आपणी करे रुशनाईआ। पुरख अकाल दा कर के शुकर, शुकराने विच खुशी मनाईआ। बन्दना विच लग्गा पुछण, आस इक वधाईआ। किस बिध मैनूं बणाया पुतण, पिता पूत दे समझाईआ। क्यों ना भगतां आवें चुक्कण, जो तेरा राह तकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अंदरों खोल्हदे आपणी बुक्कल, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नीली धार तों परे गया आ, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। गुरमुखां प्रेमी प्यारयां बणे मलाह, नईआ नौका आपणे कंध उठाईआ। इबादत विच शहादत गुर अवतार देण भुगता, तसलीम कर के पैगम्बर देण सुणाईआ। जन भगतां सिध्धा दस्स के मार्ग राह, रहबर इक्को इक वखाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोई ना, कागद कलम शाह लेखणी मिले ना कोए वड्याईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण रूप जोत सरूप शब्दी धार जन भगतां पकड़े बांह, बिन हथ्थां आप उठाईआ। सच दवारा एकँकारा अगम्मी दे के थाँ, कँवल चरण बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। नीली धार तों परे आया चल के, चलित आपणे रिहा वखाईआ। जोती जोत आया बल के, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां अंदर सिँघासण मल्ल के, बैठा डेरा लाईआ। आत्म परमात्म रल के, सोहणा वक्त सुहाईआ। लोकमात पहलों घल्ल के, फेर नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। लख चुरासी सृष्टी दृष्टी छल के, अचरज खेल रिहा वखाईआ। सुहा के दुआर दवारे वाले बल दे, बावन दा बावन फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़े मुका देवे गुरमुखां दे मन दे, ममता विच्चों बाहर कढाहीआ। नीली धार तों परे रहिण वाला आ गया थल्ले, जलां थलां वेख वखाईआ। जन भगतो तुहानूं रहिण ना देवे अकल्ले, इक इक्क हो के इक इक्क नज़री आईआ। सदा वसे तुहाडे काया सच महल्ले, महव महिराब महबूब इक्को इक सुहाईआ। धाम वखा के निहचल इक अटले, अटल पदवी देवे माण वड्याईआ। जिस

दी जोत नाल तुहाडे दीपक बले, उह घर घर करे रुशनाईआ। जिस गोबिन्द दे दर्दां वाले जख़म अज्जे अल्ले, उह आलम दा मालक हो के आपणा फेरा पाईआ। कुछ लहिणा देणा चुकावे डल्ले, धुर दा लेखा रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतो तुहाडा विछोड़ा कदे ला झल्ले, झलक आपणी दए वखाईआ। नीले दे उपर नीले तों परे जेहड़ा अस्वार, शाह सवारा फेरा पाईआ। जिस दा नाउँ आदि जुगादी निरँकार, निरगुण हो के खेल खिलाईआ। जन भगत सुहेले लए उभार, लख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। निरगुण हो के आत्म परमात्म दस्से सच प्यार, प्रीतम प्रीती आपणी दए समझाईआ। गुरमुखो तुहानूं जन्म जन्म विच होण ना देवे खुआर, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। नित नवित दिन्दा रहे दरस दीदार, दीद ईद चन्द कर रुशनाईआ। हुक्में अंदर करदा रहे ख़बरदार, शब्द संदेशे नाल जगाईआ। क्यों एह बल दा सोहणा दवार, बावन हो के पतित पावन वेस वटाईआ। गुरदयाल दा उधार कुल दा सुधार, भगतां दा श्रृंगार, गुरमुखां दा यार हो के याराना तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अर्श दा मालक फर्श उत्ते आपणा फ़र्ज रिहा निभाईआ। नीले अम्बर तों परे जिस दा टिकाणा, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी नवें तों नवां बाणा, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। शाहो भूप बण के राणा, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा प्रभू दे नाल सांझा हो गया गाणा, गा गा इक दूजे दी खुशी विच समाईआ। करनी करके सब दा लहिणा चुकाणा, पिछला लेखा झोली पाईआ। मेहर निगाह नाल तक्के विच जहाना, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। गुरमुखो तुहाडे प्रेम प्यार दा रिश्ता रिषीआं नालों महाना, जुग चौकड़ी रखीशरां जोगीशरां तपीशरां मुनीशरां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल होए मेहरवाना, मेहर नज़र इक उठाईआ। नीले वाला कहे मैं कलयुग अन्तिम कर देणा नीलाम, कौडी कीमत साचे दर कोए ना पाईआ। भगतो तुहानूं रहिण नहीं देणा गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। कूड़ी क्रिया वड़न नहीं देणा विच दुकान, नाम भण्डारा झोली पाईआ। तुसीं ज़िंदगी विच इन्सान अगे मेरे महिमान, मेला होवे नाल श्री भगवान, शाह सुल्तान आपणे घर बहाईआ। मेरे हथ्थ दो जहान कमान, हुक्म देवां फ़रमान, शरअ मेटां शैतान, गुरमुखां लभ्भां आण, लख चुरासी वेख वखाईआ। सचखण्ड दवारे करां परवान, जित्थे झुलदा इक निशान, खेड़ा वसे भगत भगवान, दूजा नज़र किसे ना आईआ। जन भगतो क्यों तुसीं होए हैरान, तुहाडा मालक इक्को धुर दा काहन, जिसनूं कोटन कोटि, सजदे करदे मन्न के इक अमाम, डण्डौत बन्दना विच राम बैठे सीस झुकाईआ। सो संदेसा देवण आया पैग़ाम, उठो योद्धे सूरबीर नौजवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नीली धार तों परे आपणा मार्ग दस्से आसान, मुश्कल विच्चों मुश्कल बाहर कढाहीआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ करतार कौर, बलजीत कौर दे नवित पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कदे ना मर्दा, मुरदयां विच्चों मुरीद मुर्शद बाहर कढाहीआ। मानस जन्म लख चुरासी तरनी बैतरनी तरदा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मेल मिलावा होवे अगम्मी धुर दे हरि दा, जो हिरदे अंदर वस के आपणा नाम जपाईआ। भय भउ चुकावे अगले पिछले डर दा, भयानक रहिण कोए ना पाईआ। इश्नान करा के अमृत सरोवर साचे सर दा, सुरती हँस दए बणाईआ। परदा ओहला लाह के धुर धाम साचे घर दा, खैहड़ा पिछला दए छुडाईआ। आत्म परमात्म हो के वरदा, पंजां तत्तां अग्नी भेंट चढ़ाईआ। जन भगत परमात्म मिल के इक्को ढोला पढ़दा, सोहँ सोहला गाईआ। दर्शन कर नरायण नर दा, निज खुशीआं विच टिकाईआ। मंज़ल अगम्मी चढ़दा, बिन पौड़े डण्डे पन्ध मुकाईआ। सच दवारे खड़दा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कदे ना होवे मुर्दा, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। नाता जुड़ गया पुरख अकाल पूरे सतिगुर दा, जो गोर मढ़ी विच्चों बाहर कढाहीआ। जिस दा नाम फुरना मंत्र अंदरे अंदर फुरदा, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। उह जन भगतां लेखा मुका के कूड़े लोक दा, परलोक दए वड्याईआ। जन भगतो एहो मुल्ल पैंदा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाए सलोक दा, जो सुलह नाल गुरमुख आपणे घर रखाईआ। मेल मिलावा कर के निरगुण जोत दा, जोती जोत विच समाईआ। आवण जावण लख चुरासी मात गर्भ सड़ना लेखा मुक जाए रोज़ दा, जून अजून ना कोए भवाईआ। जन भगतां कारन श्री भगवान आप सोचदा, उन्हां सोचण दी लोड़ रहे ना राईआ। जो मानस जन्म विच इक्को आस लोचदा, आशा तृष्ना कूड़ मिटाईआ। उस दा खैहड़ा छुट जावे मुक्ती मोख दा, अबिनाशी करता आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत तेरा लहिणा एहो जग, जगजीवण दाता दए जणाईआ। तन माटी ख़ाकी भेंट होवे अग्नी अग्ग, आत्म परमात्म आपणे विच समाईआ। कूड़ कुटम्ब साक सज्जण सैण मित्र मात पित भाई भैण नार कन्त नाते सब ने जाणे छड्ड, सगला संग ना कोए रखाईआ। जग वेंहदयां इक दूजे तों हो जांदे अड्ड, बन्धन बन्न्ह ना कोए वखाईआ। जिन्हां भगतां मिल्या पुरख समरथ, दाता दानी धुरदरगाहीआ। उह ताली वजाउँदे दो हथ्थ, खुशीआं वाले

ढोले गाईआ। उन्हां ओस दवारे जाणा वस, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। चरण कँवल पहुंचणा नस्स, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सच प्रीत दा लैणा रस, प्रीतम धुर दा झोली पाईआ। अगे रहिणा नहीं कदी वक्ख, विछोड़े विच ना कोए जुदाईआ। भगत उधारने प्रभ दा हक, हकीकत रिहा समझाईआ। क्यों जन भगत गावे ओस दा जस, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जो गुरमुख अंदर अंदर करदे रहिण आस, ध्यान ध्यान विच्चों बदलाईआ। उन्हां दा लेखे ला के पवण स्वास, साहिब स्वामी बख्शे इक सरनाईआ। झगड़ा मुका के पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल उपर डेरा दए जणाईआ। जित्थे निरगुण जोत प्रकाश, नूर नूर रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब स्वामी अन्तरजामी दिसे माई बाप, मालक हो के आपणी गोद उठाईआ। जन भगत नाता छड्ड तत शरीर, शिरक्त जगत जाए मुकाईआ। मंज़ल चढ़ चोटी अख़ीर, आख़र मिले बेपरवाहीआ। जिस दी नज़र ना आवे तस्वीर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सच दवारा लँघ दहिलीज़, मंज़ल पिछली पन्ध चुकाईआ। प्रेमी प्यारा बण अज़ीज़, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी जिन्हां लोकमात दिती तमीज़, तामीर आपणा आप गए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया चोला बदल देवे कमीज़, आत्म परमात्म आपणे विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रख तौफ़ीक, हरिजन हरिभगत हरि आपणे विच समाईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ सरन मिली ठंडी छाँ, शाम अन्धेरी रैण रही ना राईआ। शांती आई बिन पिता माँ, गोद सुहञ्जणी वज्जी वधाईआ। गा के सोहणा नाँ, नाम आपणा ल्या प्रगटाईआ। नाता छड्ड के सूर गाँ, गहर गम्भीर मिल के ख़ुशी मनाईआ। सिर्फ़ करनी पई हां विच हां, कठन तपस्या ना कोए कराईआ। भगतां मिलण नूं जिस दा चाअ, चाउ घनेरा रिहा वखाईआ। तूं छड्ड के थल अस्गाह, समुंद सरोवर परे हटाईआ। गुरमुखां प्रेमी प्यारयां दा तक्क के राह, रहबर हो के फेरा पाईआ। आत्म परमात्म कर के जाए सुलह, सुाहकुल आपणी दया कमाईआ। भाग लगा के जाए जन भगत साचे कुला, कुलवन्त दए बणाईआ। जिन्हां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गाया नाल बुल्लां, जल बुलबुले तरंग वांग उन्हां सके ना कोए मिटाईआ। गुरमुख लाल अमोलक हीरा लोकमात कदे ना रुला, माणक मोती आपणे लए प्रगटाईआ। जो चरण प्रीती साची घोल घुला, तिस देवे माण वड्याईआ। दया कमावे जो दर ते आवे भुल्ला, भुल्लयां गले लगाईआ। प्रभ दा बूटा कदे ना हुला, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। श्री भगवान दा सदा दवारा खुल्ला, पापी अपराधी दुष्ट दुराचारी

हँकारी विकारी दर आए चरण लगाए मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत कहे मैं कदे ना मोया, मरजीवत रूप वटाईआ। मैं प्रभ दी गोदी सोया जिथ्थों सके ना कोए उठाईआ। निरगुण जोत निरगुण रूप होया, निरगुण निरगुण विच समाईआ। भगत भगवान दा भेव ना जाणे कोया, कूक पुकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के निझर धार अमृत चोया, चौंह जुगां दा लेखा दिता मुकाईआ। जन भगत कहे मैं करता लभ्भा, लबां दे अंदर वेख वखाईआ। जिस नूं मिल के कदे कहिणा ना पए हाए रब्बा, बौहड़ी बौहड़ी ढोला ना कोए जणाईआ। मालक हो के मिल गया परमात्म इक्को अब्बा, जो अदब नाल आपणे घर बहाईआ। जन भगतां कदे ना देवे दग़ा, दाअवेदार आपणे दए वखाईआ। गुरमुखां नाल वधावे प्रभू आपणा अग्गा, लोकमात करे वड्याईआ। भाग लगा के काया माटी हड्डा, नाड़ी नाड़ी सोभा पाईआ। सति निशाना सति सरूपी अंदर गड्डा, गाइड हो के वाहिद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लेखा सब दा छड्डा, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। जन भगत कहे मैं की जाणां प्रभू दी सिफ्त, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। मैं प्रेम प्यार अंदर होया ग्रिफ़त, बिना ग्रिफ़तारी आपणा आप हवाले दिता कराईआ। मेरा इक्को बण गया इष्ट, इक्को एक एकँकारा नज़री आईआ। मैनूं झूठी दिसी सृष्ट, नाता कूड़ तुड़ाईआ। झगड़ा मुकाया स्वर्ग बहिश्त, बहिस करन दी लोड़ रही ना राईआ। मेरी प्रीत लग्गी बाहर हकीकी मज़ाजी इश्क, मज़ाजी हकीकी इश्क जिस दा बाहर रंग रहे वखाईआ। जिस दे बिरहों वैराग अंदर जुग चौकड़ी आत्मा रही सिसक, हौकयां विच ध्यान लगाईआ। उह खोल्ह के अंदरों दृष्ट, दिब नेत्र करे रुशनाईआ। आदि जुगादि दी जिस दे कोल फ़रिसत, उह गुरमुख चुण चुण रिहा उठाईआ। जेहड़े जगत वासना कर के बिन प्रभ दी किरपा गए खिसक, पल्लू जगत वाला कतराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। जन भगत तेरा वक्त विच्चों वक्त, व्यिक्तिआं दए वड्याईआ। लहिणा देणा उपर जगत, जुगतीआं विच्चों कढाहीआ। नाम खुमारी दे के शक्त, शकां सहिंसयां दे रोग दए गवाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के शर्त, शरीअत आपणी दए दृढ़ाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच रहिण ना देवे फ़र्क, फ़िरकेदारी अंदरों बाहर कढाहीआ। रहमत विच आ के मुहब्बत विच करे तरस, सहिमत हो के आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अर्श दा मालक उत्ते आ के फर्श, फ़ैसला हक हक सुणाईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे जन भगत तेरे उत्ते होए भरवासा, भरमां वाला भाव रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैगम्बरां दी पूरी करनी आसा, आसावंद सचखण्ड दुआर बैठे ध्यान लगाईआ। खुशीआं विच गीत गा के सचखण्ड दवारे करन हासा, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां मानस जन्म कर रहिरासा, रस्ता आपणा इक दृढ़ाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाशा, प्रकाशवान तेरी बेपरवाहीआ। दर्शन दीदार दे साख्याता, हाज़र हो के परदा दए उठाईआ। जिन्हां गुरमुखां मंनयां तेरा आखा, आख़र मंज़ल दे चढ़ाईआ। मानस जन्म रहे कोए ना घाटा, ख़ाली भण्डारे दे भराईआ। तेरे विहार अंदर जेहड़ा लग्गया आटा, अन्न मन करे सफ़ाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहा खाटा, खटीआ आत्म सोभा पाईआ। जिस कारन सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण धार कटे वाटा, पाँधी हो के फेरा पाईआ। सति सच दे के जा दाता, दातार आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुका के जाह साचा, सति सच आपणा आप समझाईआ। जन भगत कहे मेरा अन्तर भेव, अभेद दे खुल्हाईआ। तूं मालक धुर दा देवी देव, दीवा बाती कर रुशनाईआ। झगड़ा चुका रसना जेहव, अन्तर मंत्र दे चलाईआ। धाम वखा इक निहकेव, निहचल अस्थिल नज़री आईआ। सदा सदा तेरी करदे रहीए सेव, सेवा विच मिले वड्याईआ। नाम पदार्थ दे मेव, रसना तृष्ना कूड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हत्थ रखाईआ। जन भगत कहे प्रभ देवीं कलयुग अन्त निशानी, निशाना अगला पिछला देणा चुकाईआ। जन भगत कहे साडी लेखे लग्गे वरजी तेरी महिमानी, मेहरवान हो के दया कमाईआ। तूं गहर गम्भीर बेनज़ीर गुणवन्त गुणदानी, दरदमंद अख्वाईआ। सब दी मुश्कल कर आसानी, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। लोकमात जूह दिसे बेगानी, सचखण्ड दवारा इक्को दे दरसाईआ। जित्थे होवे ना कोए हैरानी, परेशानी ना कोए तड़फाईआ। जिस घर वस्या सुत भानी, अर्जन बैठा डेरा लाईआ। गोबिन्द मारे तीर दी कानी, चिल्ला शब्दी इक वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जित्थे तेरे नाम दी होवे ना बदनामी, उह दवारा देणा वखाईआ। लोड़ रहे ना सूरज चन्द भानी, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। भज्जणा पए ना जंगल विच मैदानी, घर महबूब नज़री आईआ। मंज़ल अवर ना रहे रुहानी, रूह बुत्त दोहां कर सफ़ाईआ। तैनूं ईसा मूसा मुहम्मद मंनयां मालक उत्ते असमानी, आसमां तेरे कदमां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देणा इक घर, जिस घर बह खुशी मनाईआ। जन भगत कहे प्रभ आपणा गृह दस्स, दिशा दिशा ना कोए भवाईआ। मुहब्बत विच मिल के पईए हस्स, विकार विशा

रहे ना राईआ। सिफ्त सालाही इक दूजे दा करीए जस, सोहँ ढोला गाईआ। दोहां दा इक्को जिहा हो जाए हक, मुरीद मुर्शद मिल के खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी मज़ल कर के गए थक, मंज़ल आपणी लै चढ़ाईआ। जित्थे ना कोई शिकवा शकूक रहे शक, शकायत करनवाला नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखीए तक्कीए ओधरे सति, सच शब्द होवे शनवाईआ। तेरे नाम दी होवे मत, वासना मन ना कोए हल्काईआ। तूं परमेश्वर रखणवाला पत, पती पतवन्ता बेपरवाहीआ। तेरे पिच्छे सब कुछ हब्बो दिता छड्ड, हवस जगत दिती गवाईआ। अगे प्रभू कदी ना होवीं अड्ड, वक्खरा हो ना डेरा लाईआ। असीं ताअने मेहणे सहिंदे जग, आंढी गवांढी ठोकरां रहे लाईआ। सिर्फ़ पवित्र हुन्दे तेरी अमृत धार नहा के विच गंग, दुरमति मैल रहे ना राईआ। पुरख अकाल गुरमुख कहे साडे नालों जगत पिता विछड़ जावे भावें निसंग, तेरी ना होवे जुदाईआ। एह आदि जुगादी जगत जुग रीती चली आई तेरा खेल सूरे सरबंग, पिता पुत्त हरनाक्ष प्रहलाद दिता लड़ाईआ। जन भगतां सदा अंदर रहे ठंड, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरे प्रेम दा मिले अनन्द, इक्को रस देणा चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं साहिब सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी बख्शीश कर नाम झोली देणी भराईआ।

४२८
१६

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ड

जन भगत तेरे प्रेम दी सच्ची आहूती, सच समग्री विच समाईआ। समग्री विच्चों साचे चरण दी दे के भबूती, पंज भूत करे सफ़ाईआ। शब्द अगम्मां भेज के दूत दूती, दुतीआ भाउ दए चुकाईआ। घर आत्म उठाए सुत्ती, सुत्तयां अक्ख खुल्हाईआ। महका के धुर दी रुत्ती, रुतड़ी दए बदलाईआ। घड़ी सुहञ्जणी आ के पुजी, वेला वक्त नाल वड्याईआ। लेखा बणया रिहा सदा चौंह जुगीं, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जोड़ी चली आईआ। तेरा कुछ लहिणा देणा पिछला पिण्ड याद आए बुग्घीं, मनी सिँघ नूं मिल के पंज पैसे भेंट चढ़ाईआ। ओस परेर के तेरी बुद्धी, बिध दिती समझाईआ। तेरी आत्मा होवे उग्घी, उदे असत होवे रुशनाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल ने धार बदली दूजी, सरगुण तों निरगुण वेस वटाईआ। आपे गोदी लए चुक्की, चाकर हो के सेव कमाईआ। ओस वेले कोई अगली गल्ल होर नहीं पुछी, जे पुछदा सब कुछ देणा सी समझाईआ। एसे कारन पुरख अकाल मार के आपणी बुत्ती, पैंडा पन्ध मुकाईआ। प्रीतम नाल प्रीतम दी रुत होवे सुची, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे दा लेखा लहिणे दा लहिणा देणे दा देणा झोली पाईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बलवन्त सिँघ दे गृह नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जुग जुग जन भगतां प्रभ देवे साची सिख्या, पाठशाला काया मन्दिर दए वखाईआ। नाम भण्डारा पावे आपणी भिच्छया, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। मालक हो के करे रच्छया, रच्छक हो के वेख वखाईआ। अगला पिछला जन्म कर्म मिटावे लिख्या, लेखा आपणे नाल बणाईआ। माया ममता मोह प्यार दस्से के मिथ्या, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। सच प्रीती झोली पा के हिस्सया, हिसाब कूड़ा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन मन भगतां रिहा सिंचया, कलयुग कूड़ी अग्ग बुझाईआ। जन भगतां प्रभ कूड़ी मेटदा आया हस्ती, हस्ती आपणी इक समझाईआ। धार दे के अमृत रस दी, रस्ता धुर दा दए वखाईआ। जिस घर आत्म निरगुण हो के वसदी, परदा दए उठाईआ। आवाज़ सुणा के धुर दे जस दी, करे सच पढ़ाईआ। खेल मुका के रहिणा वक्ख दी, वक्खरा हुक्म आप जणाईआ। सच्ची प्रीती परम पुरख नाल सच दी, जो सच सच विच समाईआ। काया माटी खेल काची वंग दी, वंगार के कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चोट ला के धुर दे मृदंग दी, सन्त सुहेले लए जगाईआ। जन भगतां प्रभ दस्से आपणी धार, धर्म धुर दा इक जणाईआ। जन भगतो परम पुरख परमात्म अबिनाशी करता बणाउणा सांझा यार, याराना अवर ना कोए रखाईआ। कदमां तों जाणा बलिहार, चरणां सीस झुकाईआ। सेवा विच बणना ख़िदमतगार, खुशामद विच आपणा आप लैणा बदलाईआ। नेत्र नैणां कर दीदार, दाअवा कूड़ा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत भगवन तेरे घर दा वसनीक, दर ठांडे सोभा पाईआ। निरगुण निरवैर सदा लाशरीक, शिरक्त विच कदे ना आईआ। जुग जुग जन भगतां करे उडीक, गुरमुखां राह तकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। माया ममता विच्चों करे अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, सीतल धार दए वहाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, कूड़ कुटम्ब विच्चों बाहर कढाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीरी रिहा बीत, दीआ बाती करे आप रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया अंदरों कर के ठीक, ठाकर आपणा रंग चढ़ाईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ जोगिंदर सिँघ, महिंदर सिँघ दे गृह नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नयामते नाम कयामते पैग़ाम सदाकते सलाम, खुदावंद करीम अज़ीमउलशान बेपरवाहीआ। नूरे नुरान वालीए दो जहान,

ज़मीनाने अर्शां नुराने, फ़र्शां फ़ैसला हक हकीकत इक दृढ़ाईआ। फ़रमाने आम नज़ामे तमाम शहाने मज़ाम, ज़माने अलज़ाम बदनामे ख़लक खुदाईआ। पैगम्बरे पीर, दस्ते दस्तगीर, मुर्शदे आमीन, फ़ुरस्ते अज़ीन, कुराने नज़ीन, तसलीमे तलकीन, तल्बगारे दीद, दुआए शुनीद, शायरे मज़ीद, शमाएगुल्ल, जलवा नूर खुदाईआ। कुदरते काद, मुहम्मदे आदि, मसीहे आदाब, यसूए ख़ताब, वलीए नवाब, हज़रते महिराब, रसूले पाक, माटीए ख़ाक, नग़माए नाज़, कलमाए आवाज़, ज़ुल्माए साज़, उल्माए ख्वाहिश, बी ख़ैर या अलाह मिहबान बीदो बी पिहर नजरी आईआ। दुआए रफ़ीक, हुक्मे फ़रीक, शब्दे ताईद, कादरे ईद, बहादरे रसीद, जवाबे जदीद, मुदाए अजीब, ज़ाहर ज़हूर जलवा लासानी जलाल बेपवराहीआ। कुदरते कानून फ़ितरते ममनून, नुकताए कानून, हमजाए मज़मून, जलवाए जनूंन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ख़दीले खुदा अज़ीले दुआ, ज़माने रहीम, नीज़ाने करीम, निराकार नज़री आईआ। कुतबे कातब, मुरीदे मुख़ातब, शुनीदे तुआकब, अहिमीयते रखाकत दीदे स्वागत, सदा दस मुसलसल इक्को नूरी आईआ। जवाबे मरग़ूब, मस्तीए कलबूत, हस्तीए मौज़ूद, मस्तीए मसरूफ़, अर्शीए बेहरूफ़, फ़र्शीए फ़ैसलाए मनसूख़, मंज़ले मकसूद, सति सतिवाद सति पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। किशते कुना, बख्शे गुनाह, दानिस्ते सयाह, फ़रिश्ते फ़नाह, बहिश्ते मवा गुलदस्ते गुलां, मुरीदे मरा, दानिस्ते नज़ां, आशके इश्क आज़म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़ज़ले फ़िज़ा, रमज़े खुदा नग़मे दुआ बदने रुबा रहबर रहीम इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सहिज सुभाअ, हुक्म अंदर हुक्म रिहा वरताईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फिरोज़पुर ✪

जन भगतां मिलदी आई सदा चरण धूढ़, धूढ़ मस्तक टिक्के रही रमाईआ। आसा मनसा करदा रिहा पूर, निरासा आसा विच बदलाईआ। लोकमात मिलदा रिहा ज़रूर, निरगुण हो के सरगुण दए वड्याईआ। साचे नाम दा सुणाउँदा रिहा तूर, तुरत आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगत दवारे बणदा रिहा मज़दूर, मुफ़लिस हो के सेव कमाईआ। मुहब्बत विच करदा मुआफ़ कसूर, माटी ख़ाकी भस्म चशम नाल तराईआ। पन्ध मुकाउँदा रिहा नेड़ दूर, गृह मिल मिल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। धूढ़ कहे मैनूं समझया कोई ना लोकमात, मेरा भेव कोए ना पाईआ। धूढ़ कह के सारे गाउँदे गए गाथ, सिफ्तां विच सालाहीआ। वड्याई वेंहदे गए लगदी रही माथ,

४३१
१६

मस्तक टिक्के जगत भगत लगाईआ। धूढ़ कहे मेरी सब तों वक्खरी बात, खाणी बाणी ना कोए जणाईआ। एह उह अगम्मी दात, जेहड़ी चरण कँवल थल्ले रखी छुपाईआ। जिस दा शास्त्रां विच मिलदा नहीं हालात, अहिवाल ना कोए दृढ़ाईआ। लेखा लिख्या नहीं कलम दवात, कलमयां वालयां ने कलाम कायम ना कोए कराईआ। बिना गुर अवतार पैगम्बर एह किसे ना आई हाथ, जगत खोजयां खोज ना कोए खुजाईआ। जिस ने पाई उस ने इस दी सिफ्ती गाई गाथ, वजूद वजह ना कोए जणाईआ। क्यों इस दा मालक इक जनाब, जिस दा स्वाल जवाब जवाब तल्बी विच कदे ना आईआ। कुछ इस दा लेखा पीरां ने नानक कोलों पुछया विच बग़दाद, नानक ने ख़ाली पगड़ी झाड़ के दिती वखाईआ। पुरख अकाल ने मारी अगम्मी आवाज़, शब्दी धुन शनवाईआ। नानक तेरा मेरा दो जहानां तों बाहर राज़, परदा ना देणा खुल्हाईआ। जे तूं दस्सया ते इन्हां नूं भुल्ल जाणी नमाज़, वुज़ूआं दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले मैं आया आप, भगतां दा बणया बाप, पिता पुरख अकाल आपे वेस वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जीवण जुगत दिती बदलाईआ। ओस वेले चरण धूढ़ी जो चरणां दे उत्ते दिसदी ख़ाक, ज़र्रा ज़र्रा रूप नज़री आईआ। मेरे चरण कँवल दे थल्ले होवे पाक, पवित रूप वटाईआ। एह भगतां दी आदि दी पूंजी ते जुगादि दी रास, जुगां दे लहिणे दए चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सांभ के रखे रास, बिन गुरमुखां झोली किसे ना पाईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुलज़ार सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धूढ़ कहे मैं मस्तक जावां लग्ग, लग्न इक्को दयां लगाईआ। दीन दुनी कायनात सृष्टी विच्चों कर के अलग्ग, अगला भेव दयां खुल्हाईआ। नाता जोड़ के नाल सूरे सरबग, अल्पग जीव दयां वड्याईआ। मन वासना नौ दुआर मुके हद्द, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। शब्द अगम्मी धुन आत्मक सुणे नद, अनहद नादी नाद वज्जे वधाईआ। पंच विकारा देवे बध्ध, बन्दना इक्को दए समझाईआ। घर दीपक जोती जाए जग जागरत जोत होवे रुशनाईआ। भगत भगवान रहिण कदे ना अड्ड, विछोड़ा अंदरों दयां चुकाईआ। धर्म दवारे इक्को सद्द, सदा होका नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धूढ़ कहे मैं भगतां जोगी, जगजीवण दाता पुरख अकाल दए वड्याईआ। मैं हथ्थ ना आई किसे फ़कीर जोगी, चार कुण्ट खोजण थाउँ थाँईंआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले देवां सोझी, सुत्यां लवां उठाईआ। नाम भण्डारा दे के रोज़ी, भुखयां भुक्ख गवाईआ। बुध बिबेक कर के बोधी, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन्म कर्म दा रहिण

दा देवां रोगी, दुःख संताप दयां गवाईआ। ठाकर मिला के धुर दा मौजी, महबूब दयां वखाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी चुकणहारा गोदी, जिस नूं गोदावरी कन्ढे गोबिन्द गया गाईआ। जिस दा इक नाम निधान सच सलोकी, सोहला ढोला इक दृढ़ाईआ। उस दी खेल कदे किसे ना रोकी, दो जहान बैठे सीस निवाईआ। जिस दे हुक्में अंदर कोटन कोटि कृष्न काहन फिरन त्रैलोकी, राम वशिष्ट सेव कमाईआ। जिस ने पढ़ाउणी कदे नहीं कोई पोथी, पुस्तक पाठशाला काया मन्दिर दए वखाईआ। आदि निरँजण निरगुण नूर जगाए जोती, परदा ओहला दए उठाईआ। भगत सुहेले वेख के माणक मोती, मल मूत्र विच्चों बाहर कढाहीआ। दुरमति मैल जाए धोती, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। वासना कढ्ढे खोटी, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। मंज़ल चढ़ावे चोटी, सचखण्ड दवारा इक वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। धूढ़ कहे मैं निशानी धुर दी, धुर मस्तक लेख बणाईआ। मैं वस्त अमोलक पूरे सतिगुर दी, दूसर सके ना कोए वरताईआ। मैं खेल वेखी अनन्द पुर दी, गोबिन्द नाल मिल के ख़ुशी मनाईआ। मैं चाल वेखी देवत सुर दी, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। मैं कलयुग लहर वेखी अन्ध घोर दी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। हकूमत बणी ठग्ग चोर दी, गुरमुख सन्त साध नज़र कोए ना आईआ। ऐस वेले जन भगतो ज़रूरत पई ओस दी लोड़

दी, जो लोड़ींदा साजण घर घर होए सहाईआ। मैं ओस प्रभू दा हुक्म कदे ना मोड़दी, हुक्में अंदर भज्जां चाँईं चाँईंआ। आवाज़ सुण शब्द अगम्मी घनघोर दी, घोर अन्धेरा घुप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कदे खेल ना करे कमज़ोर दी, मालक हो के ख़ालक हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार रखे आपणे ज़ोर दी, ज़रूरत भगतां पूर कराईआ।

✪ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत ख़ुशीआं नाल रिहा कुद्द, कदीम दी याद नज़री आईआ। पुरख अकाल बुद्धी विच्चों बदल दिती बुध, बिध आपणी दिती समझाईआ। लेखा ला के दया कमा के विच्चों कलयुग, जुग जन्म दे विछड़े रिहा मिलाईआ। लख चुरासी वरोल सन्त सुहेले लए चुग, चुग़ली निंदया विच्चों बाहर कढाहीआ। ओनां दा पैंडा अगला पिछला जावे मुक, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। अग्नी तत विच्चों देवे सुख, आत्म दरसी दया कमाईआ। घर बैठयां गृह मन्दिर स्वामी सतिगुर लए पुछ, पसचाताप दए गवाईआ। मानस जन्म उज्जल करे मुख, दुःख दर्द डेरा ढाहीआ। सफ़ल कर के धरनी कुक्ख, धर्म दा

धरवास दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगत सुहेला खुशीआं विच नच्चया, अन्तर वज्जी वधाईआ। क्यों पुरख अकाल ने मैनूं किहा बच्चया, पिता हो के गोद उठाईआ। मैं ओस दे चरण कँवल दवारे वस्या, जित्थे अग्नी तत ना लागे राईआ। खुशीआं दे विच हस्सया, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। दर्शन पाया अक्खीआं, आख़र तक्कया नूर खुदाईआ। मेला मिल्या नाल सखियां, गुरमुख बैठे नज़री आईआ। जिन्हां नूं लोड़ ना रही जगत वालीआं मोमबत्तीआं, बातन जलवा करे रुशनाईआ। श्री भगवान नाल रख के आपणे हिस्से पत्तीआं, पतिपरमेश्वर नाल मिल के ढोले गाईआ। जिन्हां लभ्भणीआं जगत वालीआं मूल नहीं हट्टीआं, हट्ट इक्को वेखण बेपरवाहीआ। जित्थे वस्तां अगम्म सट्टीआं, अतोट अतुट टिकाईआ। तोल तुले ना कदे धड़ी वट्टीआं, तराज़ू जगत ना कोए वखाईआ। ओन्हां दे अंदर प्रीतां लग्गीआं पक्कीआं, लोकमात सके ना कोए तुड़ाईआ। सरन सरनाई साची ढठ्ठीआं, आपणा आप मिटाईआ। सो रूहां रहबर दवारे होईआं इक्ठीआं, गुरमुख सोहणा रूप बदलाईआ। इक्को पढ़ के नाम दीआं पट्टीआं, पटने वाले नूं मिल के इक्को आपणी खुशी वखाईआ। एहो मानस जन्म दीआं खट्टीआं खट्टीआं, अगे दा खटका रिहा ना राईआ। विकणा प्या ना वांग यूसफ अट्टीआं, सुलेमान दा तख्त ना कोए उलटाईआ। ओस प्रभू दे नाल मिल के वसीआं, जिस दा वसल हथ्थ किसे ना आईआ। जिस आदि जुगादि लाजां दो जहान रखीआं, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राग गावे ना कोई वांग भट्टीआं, हुक्म धुर दा रिहा सुणाईआ।

४३३ १६

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ करतार सिँघ दे गृह चड़िक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू मेरे किरपा निधान, पतिपरमेश्वर शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर निराकार मार ध्यान, आदि निरजंण बेपरवाह आपणी अक्ख उठाईआ। नव सत्त चार कुण्ट दहि दिशा सति धर्म दा दिसे ना कोए निशान, चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब ज़ात पात कूड़ी क्रिया करन लड़ाईआ। नाम धुन आत्मक सुणे ना तेरा कोई गान, अनहद नादी नाद काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ ना कोए शनवाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म मिले कोए ना आण, साचे पौड़े अगम्मी मंज़ल धाम अवल्लड़े डेरा कोए ना लाईआ। मन वासना शरअ होई शैतान, बुध बिबेक साची टेक एकँकार तेरे उत्ते ना कोए रखाईआ। चरण प्रीती धुर दी नीती ठांडी सीती दिसे ना विच

जहान, निरगुण जोत सच प्रकाश अन्ध अन्धेर सके ना कोए मिटाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्के अलिफ़ ये वाली कुरान, काया काअबा हक महबूब धुर दे मन्दिर सति गुरदुआरा पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। हउमें हंगता कूड़ कुड़यारा होया प्रधान, नाम शब्द अजपा जाप अन्तर अन्तर ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभ वेख आ के आपणी धौल, धर्म दया रहिण कोए ना पाईआ। फग्गण रुतड़ी रही कोए ना मौल, सच बहार ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं तेरा पैगम्बरां वाला पूरा होण वाला कौल, वक्त दुहेला सुहेला दए बणाईआ। तेरा लेखा अगम्म अथाह बेपरवाह भविक्तां वाला कोई जाणे ना मुल्ला शेख़ पंडत पांधा रौल, ग्रन्थी पन्थी सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। धरनी कहे चार कुण्ट दहि दिशा मेरे उत्ते रिहा कोए ना धर्म, तीर्थ तट अठ्ठ सठ्ठ देण दुहाईआ। चौदां विद्या प्या भरम, चौदां लोक हक सच ना कोए शनवाईआ। लेखा मुक्कया ना जगत वरन, बरन रहे कुरलाईआ। तेरे मिलण दा अबिनाशी करते कोई करे ना प्रण, साची मंजल चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। निज नेत्र खुल्ह्ला दिसे ना किसे दा हरन फरन, लोचन अक्ख ना कोए रुशनाईआ। जगत ढोले सारे पढ़न, आत्म परमात्म राग ना कोए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साहिब स्वामी अन्तरजामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तरनी तरन, तारनहारा एकँकारा पुरख बिधाता नज़री आईआ। दर दरवेश हो के आई तेरी सरन, सरन इक्को दिती जणाईआ। किस बिध सन्त सुहेले तेरी मंज़ल कलयुग अन्तिम अन्धेरी रैण चढ़न, बिन दीवे बाती कमलापाती तेरा दर्शन पाईआ। सच दवारे दरगाह साची खड़्हन, जित्थे पंज तत तन वजूद ख़ाकी पुतला नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे मुकाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरी चौधवीं सदी दी आउँदी जांदी हद्द, हदूद आपणी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे सद्द, हुक्म धुर दा लै मनाईआ। जेहड़े दीनां मज़्हबां विच हो गए तैथों अड्ड, फ़कीरां दे फ़िकरे दे गवाईआ। आत्म परमात्म सब नूं दस्सदे इक्को यद, ब्रह्म पारब्रह्म आपणा नूर कर रुशनाईआ। तेरा तैथों रहे ना कोए अलग्ग, भगत सुहेले सन्त सूफ़ी फ़कीर लै उठाईआ। कर प्रकाश उपर शाह रग, जलवागर इक्को नूर रुशनाईआ। बिन मक्के काअब्यों करा दे हज्ज, हुजरा हक दे वखाईआ। जिस मन्दिर स्वामी काया अंदर बैठों सज्ज, सज्जण हो के परदा दे उठाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरी सरन सरनाई जावण लग्ग, ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। तेरा दीपक जोती जाते जग, जगजीवण दाते तेरी वड वड्याईआ। मानस मानुख मानव रहे ना कोए बुद्धी कग, काग हँस दे बणाईआ। त्रैगुण माया साड़े ना अग्ग, अग्नी तत

ना कोए जलाईआ। आपणे मिलण दा छोटा रस्ता निक्का दस्स दे ढंग, बहुती लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच चाढ़ दे रंग, अनडिठड़ी आपणी धार जणाईआ। भेव खुल्हा दे हँ ब्रह्म, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। जन भगतां आपणे गृह शब्दी धार विच्चों दे दे जन्म, जन्म विच्चों जन्म दे बदलाईआ। लेखा रहे ना कोए शाही कलम, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। धरनी कहे धर्म विच रहे कोई ना भरम, अन्धविश्वास ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख लोकमात, गृह गृह पई लड़ाईआ। धरनी कहे प्रभू आपणा शब्दी भेज दे दूत, दुतीआ भाउ दे मिटाईआ। परदा लाह के वेख पंज तत काया भूत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका दे जूठ झूठ, माया ममता मोह दे गवाईआ। भाग लगा दे आपणी कूट, काया कुटीआं अंदर घर घर विच होए रुशनाईआ। जिधर वेखण उधर दिसें मौजूद, मुफ़लिसां मिल के आपणा रंग वखाईआ। जन भगतां कर महिफ़ूज, कलयुग अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। नौ दवारे मुका हदूद, अंदर परदा दे खुल्हाईआ। आपणे प्रेम दा दे सबूत, शब्दी धुन कर शनवाईआ। लेखा मुक जाए कंचन माटी कलबूत, कलमा इलमां तों बाहर दे दंड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख थाउँ थाँईंआ। धरनी कहे प्रभू उठ वेख आपणे चौदां लोक, चौदां तबक दए दुहाईआ। साचा गाए ना कोए सलोक, सोहँ रूप ना कोए बणाईआ। मन वासना सके ना कोई रोक, झगड़यां विच लोकाईआ। तेरा नूर सच प्रगटे ना निर्मल जोत, गृह मन्दिर होए ना कोए रुशनाईआ। ठाकर मिल के माणे कोई ना मौज, मजलस कूड़ी सोभा पाईआ। निज घर लवे तैनूं कोई ना खोज, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत भज्जण थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार परम पुरख परमात्म आत्म आसा मनसा पूरी कर दे लोच, लोचन अंदरों लोचां वाला दे खुल्हाईआ। मेरी अगली मिटा दे सोच, समझ दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण हो के सरगुण पहुंच, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभू चार कुण्ट दहि दिशा वेख धक्का, दीन दुनिया दए दुहाईआ। हकीकत रही ना काअबा मक्का, हुजरयां विच्चों मुर्शद मुरीदां रहे जणाईआ। प्यार मुहब्बत विच रिहा कोई ना सका, शरअ नाल शरअ करे लड़ाईआ। परवरदिगार दा बणे कोई ना बच्चा, पूत सपूता रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग जीव मन वासना होया कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। जूठ झूठ ममता मोह तृष्ना अंदर मच्चा, भज्जे वाहो दाहीआ। घर स्वामी मिलण दा नहीं पता, जो मन्दिर अंदर गृह बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा वेख अन्तश्करन सावधान कर चेतन सता, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दे जणाईआ। धरनी कहे प्रभू शब्द अनाद

दे दे अगम्मी तूर, तुरीआ पद दे समझाईआ। मेरी आसा मनसा पूर, कूड़ी क्रिया दे कढाहीआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के आपणा मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया काया कपड़ कट दे कसूर, कसम खा के तेरे अगे सीस निवाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर पुरख अकाल दीन दयाल प्रगट हो ज़रूर, तेरी ज़रूरत बिना कलयुग अन्धेर ना कोए गवाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां कलयुग गढ़ बणया हउमें हंगत सुघड़ सुचज्जे होए मूर्ख मूढ़, सति सच सच ना कोए जणाईआ। तेरा नूर नुराना शाह सुल्ताना जोती जलवा नजर ना आए नूर, नौबत नाम हक ना कोए वजाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण जगत वासना प्या फ़तूर, सारे दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आपणे लेखे लाईआ। धरनी कहे मैं नेत्र रही रो, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आत्म परमात्म किसे ना सके छोह, बंक दवारे ख़ाली देण दुहाईआ। घर प्रकाश किसे ना होवे लो, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। समरथ स्वामी अन्तर आत्म निझर झिरना अमृत रस दे चो, चोर यार ठग्ग पंज अंदर रहिण कोए ना पाईआ। बी अगम्म नाम निधान बो, सति धर्म दा बूटा दे उपजाईआ। तेरा लेखा लिख्त विच ना जाणे को, भविख्त विच गुर अवतार पैगम्बर इशारयां नाल सृष्टी दी दृष्टी गए समझाईआ। निरगुण निरवैर परम पुरख परमात्म आपे हो, होका दे के दे सुणाईआ। धरनी कहे मेरे नाल जगत जीव कमाउँदे धरो, धर्म दा अधर्म गए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत वासना कूड़ कुड़यार शब्दी हुक्म सब तों लै खोह, ख़ालस चार वरन अठारां बरन दे बणाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड चड़िक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे मेरी नमो नमो निमस्कार, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। परम पुरख निरँकार, निरवैर तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी वेखदा रिहों आपणा संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्ह्राईआ। कूड़ कुड़यार करदा रिहों खुआर, नाम खण्डा इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे, सुण धरती, की लख चुरासी रुठ्ठी, सारे गए भुलाईआ ? धरनी किहा प्रभू नहीं कोटां विच्चों मुठ्ठी, थोड़े तेरे भगत नज़री आईआ। जिन्हां दी अन्तर आत्मा उठी सुत्ती, सवाधान हो के तेरा नाम ध्याईआ। एकँकार तेरे नाल ला के रुची, रचना तेरी वेख खुशी मनाईआ। ओनां दी बुद्धी मैनूं दिसे सुच्ची, सच कह के दयां सुणाईआ। एह कोई खेल नहीं लुकी,

परदयां विच ना कोए छुपाईआ। मैं वेख्या प्रभू तूं ओनां पिच्छे कटें बुत्ती, बुत्तख़ाने करदा जाएं सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभू गुरमुख थोड़े, बहुत्यां विच्चों नज़री आईआ। जिन्हां अन्तर आत्म आपणे नाल जोड़ें, जोड़ जगत ना कोए वखाईआ। आपणे नाम दे सुणा के धुर दे दोहरे, दोहा आपणा आप जणाईआ। सदा सदा सद आपणी रख लोड़े, लोकमात विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश अन्ध घोरे, सति सच कर रुशनाईआ। श्री भगवान कहे गुरमुख थोड़े नहीं अनक, अंक अनेक नज़री आईआ। जिन्हां दा भाग वड्डा नालों जनक, जामन हो के मिल्या बेपरवाहीआ। लहिणा देणा आपणे नाल रखे अन्त, अन्तिम होए ना कदे जुदाईआ। नर्कां विच जा के कढ्ढणी पए ना मिन्नत, तराज़ू धर्म ना कोए टिकाईआ। सिध्धी दस्सी इक्को सिम्मत, सहिम फ़हिम रहे ना राईआ। अगे करनी पए ना मिन्नत, सीस अवर ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे मिटा चिन्त, चिन्ता ग़म खुशी विच बदलाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिण्ड रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी धरत धवल कहे प्रभ कलयुग अन्तिम वेख मौका, दीन दुनी वेख वखाईआ। सति धर्म सन्तोख रिहा ना चौदां लोका, चौदां विद्या लोकमात कुरलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा गृह गृह देवे आपणा होका, मन मनुआ आपणा हुक्म रिहा चलाईआ। जूठ झूठ सब नाल करे धोखा, कपट हँकार अंदरों सके ना कोए गवाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे साढे तिन्न हथ्थ काया कोठा, कुटीआ सुहञ्जणी नज़र कोए ना आईआ। जीव जंत बिन हरि नामे होया थोथा, अन्तर आत्म रंग ना कोए रंगाईआ। बिन अक्खरां वाला निरअक्खर धार तेरा पढ़े कोई ना पोथा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़ पढ़ ढोले रहे गाईआ। सति प्रकाश नूर नुराना निरगुण निरवैर होवे ना जोता, पारब्रह्म ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। दुरमति मैल पाप किसे ना धोता, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ फिर फिर थक्की मात लोकाईआ। गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरे नाम सागर विच मारया किसे ना गोता, माणक मोती हथ्थ किसे ना आईआ। वरन बरन दीन मज़्हब वेख्या रोता, रुतड़ी रुत्त ना कोए सुहाईआ। सृष्टी दृष्टी दा विचार होया खोटा, इष्ट पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख थाउँ थाँईंआ। धरनी कहे प्रभू मेरी तेरे चरण कँवल निमस्कार, नमो नमो नमस्ते कह के सीस निवाईआ। कलयुग अन्त होई दुख्यार, दीनण हो के दयां दुहाईआ। चुक्कया ना जाए भार, दरोही तेरा

नाम खुदाईआ। सदी चौधवीं आउँदी दिसे हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भविख्त पूरा होया गुर अवतार, पैगम्बर शहादत रहे भगताईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लै अवतार, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा नूर कर रुशनाईआ। सच वखा इक ठांडा दरबार, मानव मानुख आत्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। दीवा बाती कमलापाती साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अंदर घर विच घर कर उज्यार, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले सन्त साजण सूफ़ी लै उठाल, सुरत शब्द हलूणे नाल जगाईआ। झगड़ा मुका दे शाह कंगाल, ऊँच नीच ज़ात पात दीन मज़्ब रहे ना कोए राईआ। आपणे भगत सन्त वेख आपणे लाल, लालन हो के खोज खुजाईआ। जो तेरी प्रीती नीती अंदर घालना रहे घाल, दिवस रैण घड़ी पल इक ध्यान लगाईआ। तिन्नां लेखा चुका आण शाह पातशाह श्री भगवान, भगवन्त कन्त तेरी ओट तकाईआ। दीन दुनी जगत आसा होई शैतान, शरअ कर कर गए लड़ाईआ। बोध आवे ना किसे ज्ञान, अक्खरां करन पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाईआ। धरनी कहे मैं रो के मारां धाह, बिन नैणां नीर वहाईआ। परवरदिगार नूर ख़ुदा, जलवागर तेरी इक सरनाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह पतिपरमेश्वर इक्को ओट तका, दो जहानां वाली साहिब सुल्तान हो सहाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, शब्द नाम डंका इक वजा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल हुक्म दे सुणाईआ। आत्म परमात्म निझर धार बण मलाह, सति सरूप बिन रंग रूप शाहो भूप बेपरवाह, साची दस्स इक सलाह, जीव जंत तेरा ढोला इक्को गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अदल इन्साफ़ विच कर न्याँ, दूई द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रख आपणी ठंडी छाँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे प्रभू मेरा कलयुग वेख डुब्बदा बेड़ा, नईआ नौका नाम नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्ब गृह गृह प्या झेड़ा, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। भाग लग्गा दिसे ना कोए काया खेड़ा, बन्द कवाड़ी खिड़की बजर कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। साहिब सतिगुर किसे दिसे ना नेरन नेरा, निज नेत्र लोचन नैण होवे ना कोए रुशनाईआ। दए दुहाई गुरू चेरा, चेला गुर दोवें तेरा राह तकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणे नाम दा अगम्मी दस्स दे गेड़ा, कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों बाहर दे कढाहीआ। सति धर्म दा खुल्ल्हा कर दे वेहड़ा, सति सुच गुरमुखां दे अंदर दे वसाईआ। तेरे नाउँ दा सब दे अंदर होवे चाउ घनेरा, मन वासना रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं नेत्र नीर वहावां नैण, छहबर इक्को इक वखाईआ। चार कुण्ट अन्धेरी रैण, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। प्यार मुहब्बत रिहा ना मात पित भाई भैण, साक

सज्जण सैण सगला संग ना कोए निभाईआ। माया राणी घर घर खावे डैण, शाह सुल्तान राजा राणा मूँह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बिन तेरे नज़र किसे ना आईआ। धरनी कहे मेरी पुनह पुनह नमस्ते, निउँ निउँ सीस निवाईआ। श्री भगवान आपणी दुनिया नूं पा दे रस्ते, क्यों बैठी तैनूं भुलाईआ। इन्नां दे साढे तिन्न हथ्थ शरीर दे घराणे रहिण वसदे, जिस गृह बैठा सोभा पाईआ। इशारे दे दे आपणी निझर अक्ख दे, निज लोचन होए रुशनाईआ। राह दस्स दे ब्रह्म मति दे, मनमति झगड़ा दे मुकाईआ। भण्डारे भर दे धीरज सन्तोख जत दे, मन वासना होए ना कोए हल्काईआ। आवण जावण गेड़े लख चुरासी कट दे, जम की फाँसी अन्त रहिण कोए ना पाईआ। नाम सुणा दे अगम्मी नद दे, धुन आत्मक होए शनवाईआ। घर वखादे प्रभू जित्थे तेरे दीपक जोत जगदे, इक्को नूर होवे रुशनाईआ। जित्थे भगत कबीर वरगे वसदे, सचखण्ड बैठे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जैकारे सुणा दे इक अलख दे, अलख अगोचर बेपरवाह तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। धरनी कहे प्रभू वखा दे उह धर्म दवार, जन भगतां दया कमाईआ। घर ठाकर मिलें धुर दा यार, कूड़ा नाता दे तुड़ाईआ। तेरी आत्म तेरी ख़िदमतगार, दूजा कन्त ना कोए हंढाहीआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घर विच घर कर प्यार, मुहब्बत बाहर ना कोए लगाईआ। एहो सिख्या दे के गए गुर अवतार, पैगम्बर कलमयां विच पढ़ाईआ। दुखियां दा दुःख सुण बण दिलदार, दीनण आपणी गोद उठाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित बख़्शणहार, बख़्शिश रहमत तेरी मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। धरनी कहे पुरख अकाल कलयुग जीव वेख सड़दे, माया ममता मोह रहे जणाईआ। तेरी मंज़ल मूल ना चढ़दे, पाँधी बणे ना सच्चे राहीआ। दर्शन करे ना अगम्मी हरि दे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। प्याले पीते नहीं अमृत धार जल दे, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। झगड़े मुके नहीं दूई सल दे, तीर अणयाला पार ना कोए कराईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते रहिण वाले तेरे विच मूल नहीं रलदे, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच ना कोए समाईआ। गोबिन्द शब्द साहिब सतिगुर इक्को घल्ल दे, जो कलयुग दा घलूघारा दए मिटाईआ। झगड़े चुका दे जल थल दे, महीअल आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लहिणा दे जणाईआ। धरनी कहे किरपा कर श्री भगवान, नाम भगौती आपणी लै चमकाईआ। योद्धा सूरबीर शब्द गुरू तेरा बलवान, बावरी दुनिया दे मिटाईआ। सति धर्म दा चार कुण्ट दहि दिशा झुला इक निशान, निशाने कूड़े दे गवाईआ। सब दे हिरदे अंदरों काया मन्दिरों मिलादे उह अगम्मी राम, जिस राम ने राम वरगे दशरथ बेटे दिते बणाईआ। लख चुरासी दा बण के आजा उह

अगम्मी काहन, जिस दी धुन नाम बंसरी वज्जे थाउँ थाँईंआ। पैगम्बरां नूं देण वाले पैग़ाम, अमामां दे अमाम, झगड़े मुका दे दुनी दे तमाम, शरअ विच्चों शरअ दे बदलाईआ। आत्म परमात्म दा दे के सच ज्ञान, अज्ञानीआं दा अन्धेरा दे मिटाईआ। तेरी मेहर नज़र नाल तैनूं समझ जाण इन्सान, हैवान रहिण कोए ना पाईआ। तूं सब दा मालक प्रितपालक ख़ालक वाली दो जहान, जहालत अंदरों दे कढाहीआ। सृष्टी दृष्टी तेरा इष्ट करे परवान, परवाना हुक्मे नाम परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, धरनी कहे मेरा धर्म तेरी लज्जया नज़री आईआ।

४४०
१६

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ माधो सिँघ दे गृह पिण्ड रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी कहे प्रभू बिन हथ्थां मेरी अरज़, बिन मस्तक सीस झुकाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी पूरी कर ग़रज़, ख़ाहिश अंदरे अंदर आपणे विच मिलाईआ। जन्म जन्म दा पूरब लाह कर्ज़, मकरूज़ पिछला लहिणा दे चुकाईआ। तेरे हथ्थ जुग चौकड़ी दी फ़रद, लख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। दीनां दुखियां दा वण्ड दर्द, मज़लूमां नूं ज़ुल्म तों लै बचाईआ। शरअ छुरी रहे ना करद, कतलगाह ना कोए वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, मुद्दा आपणा दे समझाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, अचरज तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान महबूब हकीकत विच जन भगतां पार कर निधड़क, भय भउ दोवें दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मेरी चरण कँवल दुआ, बिन इबादत अब्बा रही जणाईआ। तूं सर्ब व्यापी खुदा, खुदी कलयुग अन्तिम दे मिटाईआ। जेहड़े तेरे नालों होए जुदा, जुज हिस्सा ओनां दा आपणे नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्सदे सिध्धा, सिदक सबूरी अंदर दे वसाईआ। आपणे मिलण दी महबूब हो के दस्स बिधा, बिधना दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रमाना आपणा इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू धुर दी साची दे ताअलीम, तुलबे गुरमुख लै बणाईआ। झगड़ा मुका अलिफ़ ये नुकते नून मीम, ऐन ग़ैन भेव रहे ना राईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोए तक्सीम, झगड़ा ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच दवारा वखा इक अज़ीम, शाह शाहाने आपणा परदा लाहीआ। तूं आदि जुगादी मालक प्रितपालक कदीम, कुदरत दा कादर नूर खुदाईआ। दर तेरे मंगां हो अधीन अदना रूप वटाईआ। अबिनाशी करते सदी चौधवीं दे यकीन, यक्क आपणा हुक्म सुणाईआ। धरनी कहे मैं शुक्रिए विच कहां आमीन, सिफ्तां विच नाउँ निरँकार गाईआ। मेरा

४४०
१६

अन्तर ना रहे ग़मगीन, खुशीआं दा रंग देणा रंगाईआ। बेशक तेरी धार जुग चौकड़ी बारीक महीन, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देणा रंग रंगीन, रंगत आपणी इक रंगाईआ। धरनी कहे पुरख अकाल आपणयां भगतां चुक्क लै गोदी, गोदावरी वाले गोबिन्द आपणे नाल मिलाईआ। झगड़ा मुका दे वेदी सोढी, आत्म ब्रह्म परदा दे उठाईआ। जंगलां विच वैरागी बण के फिरे कोए ना जोगी, घर जागरत जोत करे रुशनाईआ। तेरे विछोड़े विच रहे कोई ना रोगी, जन्म जन्म दा परदा दे उठाईआ। चशमें दीद दीदार दरस दे अमोघी, सनमुख हो के सोभा पाईआ। इक्को नाम निधान सुणा सच सलोकी, कलमा नग़मा इक शनवाईआ। जन भगतां आपणे प्यार दी दे साची सोझी, तैनूं मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणे हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे प्रभ आपणी कर मेहर, नज़र विच्चों नज़र बदलाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान वड्डा केहर, शेर सिँघ तेरी ओट रखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लै घेर, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा हुक्म वरताईआ। लोकमात विच्चों जड़ दे उखेड़, बूटा सति धर्म अगला सतिजुग दे लगाईआ। धरनी कहे मेरा खुल्ला कर दे वेहड़, भीड़ी गली दे गवाईआ। हुक्में अंदर दे दे गेड़, कूड़ीआं सफां दे उठाईआ। अन्त झगड़ा दे नबेड़, लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगे बहुती ना लावीं देर, डेरे सब दे दे उठाईआ।

४४१
१६

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बदनी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धरनी धरत धवल कहे प्रभ वेख चार कुण्ट दहि दिशा अन्धेरी राता कलयुग कूड़ कुड़यार जूठ झूठ डंक रिहा वजाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही पढ़ पढ़ थक्के तेरी गाथा, निजानंद आत्मक धुन सुणन कोए ना पाईआ। नाता तुट्टा आत्म परमात्म पुरख बिधाता, मन वासना जगत हल्काईआ। तेरा नूर ज़हूर लाशरीक परवरदिगार किसे ना जाता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश काया मन्दिर अंदर आया घाटा, वस्त अमोलक नाम गोलक सच दवारे ना कोए टिकाईआ। निज गृह निज मन्दिर निज घर महल अटल पारब्रह्म ब्रह्म कोए ना वासा, वास्तवक तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मैं जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखदी आई तमाशा, गुर अवतार पैगम्बर नित नवित आपणा हुक्म गए सुणाईआ। सदी चौधवीं धुर फ़रमान सच संदेसा मन्ने कोए ना आखा, आखर

अक्खर निरवैर निरँकार तेरा गए भुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल साचा दिसे कोए ना राखा, बेवारिस होई लोकाईआ। सतिगुर शब्द बुद्धी तों परे किसे ना जाता, जगत विद्या नाल करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम दीन दुनी वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं की दस्सां तेरी सृष्टी दृष्टी दी हालत, अहिवाल दीन दुनी गुर अवतार पैगम्बर तैनूं रहे जणाईआ। कूड़ क्रिया जूठ झूठ मन वासना काया माटी होई जहालत, निरगुण जोत तत्व तत करे ना कोए रुशनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरदुआर तेरी सिफ्तां वाली करदे इबादत, हुजरा हक काया काअबा हरि मन्दिर निरगुण हो के निरगुण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परम पुरख सुल्तान लोकमात वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभ वेख आपणी दीन दुनी मख़लूकात, काया परदा दे उठाईआ। दीन मज़्हब झगड़ा प्या ज़ात पात, आत्म ब्रह्म ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा देवे कोए ना साथ, सगले नाते कूड़े नज़री आईआ। शाहरग तों उपर तेरा जपे कोई ना जाप, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला कोए ना गाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म संदेसा तेरा फ़रमाना गए आख, आखर कलयुग जीव सारे गए भुलाईआ। वस्त अमोलक धुर दी नज़र ना आवे दात, दातार तेरे दर दा पाँधी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वार चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं सच बेनन्ती कर के मंगां चरण धूढ़, धूल धूर धूढ़ तेरे दर तों झोली पाईआ। जगत वासना भुल्ल गया संसार तेरा मूल, अमुल तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जगत रीती बदल गया असूल, असल विच तेरा वसल करन कोए ना आईआ। आपणा हुक्म नाम संदेसा इक दे माअकूल, जो चार वरनां इक्को रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। श्री भगवान कहे धरनी रख धरवासा, धर्म दी धार दयां जणाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग उलट देवां पासा, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण नूर जोत करां प्रकाशा, शब्दी डंक इक वजाईआ। माया ममता हउमे हंगता गृह मन्दिर अंदर करां नासा, अबिनाशी हो के खेल वरताईआ। लख चुरासी जीव जंत जन भगत सुहेले करां दासी दासा, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म हो के परदा दयां उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के इक्को गाथा, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी जुग चौकड़ी आपणे हुक्म अंदर चलाईआ। अबिनाशी करता कहे धरनी मेरे दर ते वेख झुकदे गुर अवतार, पैगम्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे भिखार, ख़ाली

झोलीआं रहे वखाईआ। मेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा चले संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सिर सके ना कोए उठाईआ। नित नवित निरगुण सरगुण खेल करां अपर अपार, अपरम्पर स्वामी हो के आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं चौदां तबक पावां सार, परदा ओहला काया चोला साढे तिन्न हथ्थ माटी अंदर रहिण कोए ना पाईआ। हुक्में अंदर हुक्मीं करां ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। कल कल्की मेरा इक अवतार, जिस दा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। सम्बल धाम अगम्म अपार, छप्पर छन्न माटी ख़ाकी बणत ना कोए बणाईआ। दो जहानां एथे ओथे ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर धुर दा हुक्म चले एका वार, दूजा सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं लैणा तेरा धुर संदेसा, खुशीआं विच खुशी प्रगटाईआ। तूं मालक ख़ालक पितपालक इक नरेशा, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण धारें वेसा, विश्व आपणी कार कमाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां खोलें आपणा भेता, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के दर दवारे साचे सोभा पाईआ। भाग लगाएं आत्म सुहञ्जणी सेजा, साजण हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म आवण जावण लख चुरासी पतित पावन मेटें लेखा, जम की फाँसी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, धरनी कहे दाता दर तेरे सीस निवाईआ। अबिनाशी करता कहे मैं करने योग, आदि जुगादी इक अखवाइंदा। कलयुग काया कूड़ कपड़ रहे कोई ना रोग, दुरमति मैल अंदरों बाहरों आप धवाइंदा। आत्म परमात्म कर के धुर संजोग, जुग जन्म दी विछड़ी सुरत शब्द नाल मिलाइंदा। भाग लगा के काया माटी साचे कोट, टिल्ला पर्बत सच सिँघासण इक्को वेख वखाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दूर कराइंदा। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के साची गोत, ज़ात पात दीन मज़्हब लेखा अन्त चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी अगली मेटे सोच, समझ आपणे विच छुपाइंदा। धरनी कहे प्रभू मैं रखां तेरी उडीक, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। श्री भगवान कहे मैं दीन दुनी दी बदल देणी तारीख, तवारीख अगली देणी बदलाईआ। दूर दुराडा चल के आवां नज़दीक, नेरन नेरा हो के नित नित करां रुशनाईआ। लख चुरासी जीव जंत चार वरन अठारां बरन दस्सणा इक्को ढोला गीत, संगीत इक्को देणा समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार करनी इक प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी कर के गए तस्दीक, दूजी शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सति सतिवादी सति सति मार्ग दए दृढ़ाईआ। धरनी कहे मैं

उह तक्कां राह, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिस वेले परमात्म आत्म दा मिले मलाह, बिन नईआ नौका बेड़ा पार दए लँघाईआ। मंज़ल रहे ना कोई थल अस्गाह, साचे पौड़े दए चढ़ाईआ। बिन अक्खरां तों जणावे आपणा नाँ, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हल्काईआ। बिन भुजां तों पकड़े बांह, बिन अक्खां तों अक्ख खुल्हाईआ। बिन दीए बाती करे रुशना, जोती जोत जोत डगमगाईआ। सृष्टी दी दृष्टी दए बदला, ग़मी खुशी विच जणाईआ। सतिजुग सति सति ब्रह्म मति विच देवे ला, अग्नी तत पोह ना सके राईआ। महबूब मुहब्बत विच मिले जलवागर नूर नूर खुदा, जुदा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर संदेसा रिहा सुणा, जिस दा लेखा बुद्धी विच कदे ना आईआ।

२६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ कपूर सिंघ दे गृह मोगा ज़िला फ़िरोज़पुर

धरनी कहे प्रभू मैं जगत विकार नाल गई दब्बी, परदा सके ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण तैनूं रही लभ्भी, वरन बरन दीन मज़्हब खोज खुजाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर तेरे हुक्म अंदर रही भज्जी, चलां वाहो दाहीआ। साची दिसे कोई ना गद्दी, साध सन्त अवधूत बैठे कोटन आसण लाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरी सच जोत किते ना जगी, जागरत नूर ना कोए रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया त्रैगुण अग्नी लग्गी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मन वासना विच दीन दुनी दझी, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। सच प्रीत त्रैगुण अतीत तेरे नाल किसे ना लग्गी, लगां मातरां दी करन पढ़ाईआ। नौबत हक मुकाम बिन सजदयां कोई ना वज्जी, सुल्हकुल तेरी सरन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त दे वड्याईआ। धरनी कहे प्रभू मैं चार कुण्ट वेख्या झगड़ा, धुर दा दाअवेदार नज़र कोए ना आईआ। कोई मार्ग समझे ना अगला, पिछलीआं कहाणीआं गा गा खुशी मनाईआ। कलयुग जीव बग बप्पड़ा होया बगला, हँस रूप नज़र कोए ना आईआ। धुर दे ठाकर तैनूं लभ्भदे विच्चों जंगला, काया प्रभास खोजण कोए ना आईआ। बिन साचे नाम जगत जहान होया कंगला, कूड़ी माया ममता कम्म किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल वेख सगला, सगल सृष्टी रही कुरलाईआ। बुद्धिवान बुद्धी विच होया कमला, अनुभव परदा ना कोए उठाईआ। बाहरों हथ्थां नाल ढोलक छैणा वजाउँदे तबला, धुन आत्मक राग सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख अन्त अख़ीरी पतणा, नईआ नौका नाम निधान

सच ना कोए वखाईआ। धरनी कहे मैं वेख वेख दुनिया थक्की, हैरानी मेरे अंदर आईआ। परम पुरख तूं किसे नहीं मिल्या कमलापती, पतिपरमेश्वर हो के घर साचे सोभा पाईआ। निज नेत्र खोल्हे कोई ना अक्खी, जगत अक्खां नाल तक्कण लोकाईआ। साचे काहन दी बणी कोई नहीं सखी, सीता सुरती धुर दा राम ना कोए प्रनाईआ। बिन अक्खरां वाली गुण निधान तेरी पढ़ी किसे नहीं पट्टी, कलम शाही नाल लिख के काग़ज़ अक्खरां नाल सालाहीआ। सच दुआर एकँकार दरगाह साची तेरी वेखी किसे नहीं हट्टी, जगत वणजारे चार कुण्ट भज्जण थाउँ थाँईंआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लातस्वीर जगत जहान लेखा मुका आपणे हथ्थीं, गुर अवतार पैगम्बर तेरी ओट गए तकाईआ। दर निमाणी नवाज़िश विच ढठ्ठी, डण्डावत बन्दना कर के सीस नमस्ते विच झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूरी दे कराईआ। धरनी कहे मैनूं क्यों कहिंदे धौल, धवल कह के क्यों गाईआ। जिस दा लेखा समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ ना सिफ्त सालाहीआ। इक गोबिन्द जाणे जिन अमृत धार प्याई पाहुल, रस धुर दा दिता वरताईआ। पुरख अकाल नाल कर के कौल, कँवल नाभी बूँद स्वांती दिती टिकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच निरगुण हो के निरगुण विच गया मौल, सरगुण रुत्त बसन्त बहार आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दस्स अगम्मा बोल, अनबोलत आपणा फ़रमान जणाईआ। धरनी कहे मैं चार कुण्ट वेख्या मार के चक्र, बिन पाँधी पन्ध मुकाईआ। कोई ना दिस्या यारड़े दे लथ्था सत्थर, जगत सेजा सारे रहे हंढाहीआ। तेरे प्यार विच नेत्र वरोले कोई ना अथ्थर, जगत हावे विच मारन सारे धाहीआ। बजर कपाटी तोड़े कोई ना पत्थर, परदा दूई ना कोए उठाईआ। तेरा समझे ना कोई निरअक्खर, निरवैर सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल आपणी दुनिया दा वेख की होया हशर, हैसीअत विच्चों असलीअत सारे गए गवाईआ। चार कुण्ट मैनूं करदे नशर, नश्यां विच आ के निशाना तेरा गए भुलाईआ। कूड़ कुड़यार जगत विकारी आ के पकड़, शब्द अगम्मी फेरा पाईआ। सच झूठ तोल आपणे तक्कड़, तराज़ू इक्को नाम वखाईआ। गुरमुख संत सुहेले जन भगत मेल धुर दे फ़क्कर, जो फ़िकरा इक्को ढोला गाईआ। चोटी चढ़ के वेख सिखर मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। जिस धारों तेरी धार बण के आत्म आई निक्कल, परमात्म अन्त ओसे विच मिलाईआ। गुरमुख रहे कोई ना पित्तल दा पित्तल, पारस दा पारस आपणा लै मिलाईआ। धरनी कहे मैं साचयां गुरमुखां दी करां सफ़ारश, जो मेरे उत्ते बह के तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे हुक्म दी लिख इबारत, बिन तख्ती तख्ता दे उलटाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ अजमेर सिँघ दे गृह मोगा ✪

धरनी कहे जो तेरे उत्ते भगत सुहेले रहे वस, सद इक्को ध्यान लगाईआ। ओनॄां दे अन्तर इक प्रेम दा रस, रस्ते चल के खुशी मनाईआ। तरानयां विच रहे हस्स, गीत गहर गम्भीर सुणाईआ। सिफ्तां विच गाउँदे जस, धुर दा राग अलॄाईआ। निज खोलॄ के अक्ख, नेत्र दर्शन पाईआ। कूड़ विकारा कर के भठ्ठ, खेड़ा इक्को रहे सुहाईआ। नाम अगम्मी शब्दी वज्जे सट्ट, सोई सुरत जगाईआ। हरि भण्डार मिले धुर दा हट्ट, वस्त अमोलक नज़री आईआ। जगे जोत लट लट, दीवे बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दर्द रिहा वण्डाईआ। धरनी तेरा दर्द वण्डां बण के दर्दी, दीनां अनाथां दया कमाईआ। तूं वेखें प्रेमीआं भगतां दी मरजी, जो मर्ज़ दूई अंदरों रहे कढाहीआ। सति दुआर दे के अर्ज़ी, अज़ल दा लेखा रहे मुकाईआ। प्रभ मिलण दे हो के ग़रज़ी, कूड़े नाते रहे तुड़ाईआ। खेल ना वेख सृष्टी जग दी, जग जीवण दाता दए समझाईआ। तेरी धूढ़ जेहड़ी मेरे भगतां दे चरणां उत्ते लग्गदी, नाल छोह के खुशी मनाईआ। तेरी तृष्ना मिटा देवे अग्ग दी, अगला लेखा दए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना रहे दगदी, दग़ेदारां दा झगड़ा रिहा मुकाईआ। सच प्रेम दी वधाई रहे वज्जदी, भगत भगवान मिल के ढोला गाईआ। सतिजुग अंदर सुखां नाल रही वसदी, वसल इक्को यार खुदाईआ। धार मिल जाए अगम्मे रस दी, अमृत अंमिउँ दए चुआईआ। तूं भगतां नाल रही सजदी, सज्जण स्वामी देवणहार वड्याईआ। कथा कहाणी याद रख लईं अज्ज दी, धुर फ़रमाने विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आया मुरीदां दे ओस अगम्मे हज्ज लई, जो मुर्शदां दा मुर्शद बिना दीद दए कराईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड मनावा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गुरमुख तेरी पूरी आसा, जन्म जन्म दा लहिणा दए चुकाईआ। सच प्रीती आत्म परमात्म दे भरवासा, कूड़ी क्रिया नाता दए तुड़ाईआ। लेखे लावे पवण स्वासा, साह साह याद विच समाईआ। एथे ओथे दो जहानां परम पुरख बणया रहे राखा, समरथ स्वामी अन्तरजामी निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख आसा मनसा पूर, सतिगुर शब्द वड्डी वड्याईआ। घर ठाकर स्वामी दिसे हाज़र हज़ूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हउमें हंगता गढ़ तोड़ ग़रूर, साची नीती दए बदलाईआ। कर प्रकाश

जोती नूर, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए मुकाईआ। हरिजन तेरा लहिणा देणा लोकमात जाए चुक्क, आवण जावण लख चुरासी रहिण कोए ना पाईआ। मानस जन्म बूटा ना जाए सुक्क, अमृत सिंच सतिगुर हरा दए कराईआ। कूड़ी मेटे तृष्ना चिन्त, चिक्खा अग्न ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। साची सरन देवे चरण दवार, चरणोदक अमृत जाम मुख प्याईआ। जन्म जन्म दा रोग निवार, कर्म कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। घर मन्दिर अंदर वखावे ठांडा दरबार जित्थे सदा वज्जदी रहे इक्को नाम वधाईआ। बिन गोपी काहन सखियां होवे मंगलाचार, सुरती शब्दी ढोला गीत अनहद नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। हरिजन साचा उतरे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। मानस जन्म पैज दए संवार, लख चुरासी आवण जावण गेड़ा दए कटाईआ। दर दर घर घर वेखे आण, निरगुण निरवैर दाता बेपरवाहीआ। सति धर्म दा पक्कया वेख पकवान, पवित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करनहार कल्याण, कायनात दुनिया विच्चों अन्तिम बाहर दए कढाहीआ।

४४७
१६

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सविंदर कौर दे गृह पिण्ड दुने वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गुरमुख तेरा वेला आया शुकर दा, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। आत्म परमात्म नाता बणया रहे पिता पुत्तर दा, दो जहान ना होवे जुदाईआ। पुरख अकाल आपणी धारों उतरदा, गुरमुख सज्जण रिहा मिलाईआ। भाव रहे ना कोई दुत्तर दा, एका घर दए वसाईआ। लेखा लग्गा कदमां उत्ते सीस झुकण दा, बाकी पिछली दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लए टिकाईआ। जन भगत किड्डी सोहणी मौली रुत्त, बहार प्रभ ने दिती बणाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चातृक बिल्लाउँदे तृखा दिती बुझाईआ। सच दुआर बणा के आपणा सुत, सुरती रंग रंगाईआ। अगे विछोड़न दी किसे दी रहे कोई ना जुरत, ज़ुराइम वाले कायम कर के दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा मनसा सब दी पूरत, इच्छया अंदर भिच्छया नाम अमोला झोली पाईआ। इच्छया कहे मैं आसावंद, सदा सदा राह तकाईआ। कवण वेला मेरा मिले बख्शंद, मेहरवान होए सहाईआ। घर ठांडे देवे अनन्द, अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आवण जावण लख चुरासी कटे फंद, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ।

✪ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ केहर सिँघ दे गृह पिण्ड रजी आला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान कहे फलगुण आपणा सुण लै नतीजा, मज़मून अगला दयां जणाईआ। चाचा गुरू गुरमुख रहे ना कोए भतीजा, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। जो जन भगतां निज आत्म गृह मन्दिर करे रीझा, महल अटल चढ़ के खुशी वखाईआ। निज नेत्र खोल्ह के सिध्धा करे दीदा, अक्ख प्रतख प्रगटे आप गुसाँईंआ। चरण प्रीती यकीन देवे इक अकीदा, अकल बुद्धी तों बाहर आपणा नाम दए दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया पंज तत काया अंदर बणे सच तबीबा, चिन्ता रोग कूड़ा वेख वखाईआ। गृह मन्दिर धाम दस्से अजीबा, अजब निराला पुरख अकाला आपणा घर दिसाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना अमीर ग़रीबा, दीन मज़्ह्ब ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचा कलमा दस्से हदीसा, हज़रत हो के करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा पूरा करे मुहम्मद मूसा ईसा, असल आपणी खेल जणाईआ। जलवा जोत उज्यार कर जगदीशा, जगदीशर आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं आदि जुगादि वड्डी बलवान, बलधारी रहिण कोए ना पाईआ। मेरा मालक परम पुरख सुल्तान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा नाउँ धराईआ। वसणहारा सचखण्ड सच मकान, मुकामे हक डेरा लाईआ। जिस दा समझ ना सके कोए सलाम, धर्म दा धर्म ना कोए प्रगटाईआ। सिफ्तां विच सारे गाण कलाम, जो कलमे दिते पढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार आपणा बदल देवे विधान, जगत विद्या विद्याला ना कोए वखाईआ। नव नौ चार वेखे मार ध्यान, लख चुरासी अंदर परदा दए उठाईआ। अगला सम्मत देण वाला ब्यान, ब्याना लोकमात टिकाईआ। जीव बुद्धी रहे ना कोए अन्जाण, सुत्यां सुरत हिलाईआ। सुणो साहिब दा इक फ़रमान, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। जन भगत करे परवान, परवाने धुर दे हथ्थ फड़ाईआ। निरगुण हो के वेखे आण, अनक कलधारी आपणा वेस वटाईआ। दर दवारे देवे माण, मन का मणका आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी शाम, शामत सब दे सिर ते आईआ। शामत कहे मैं चार कुण्ट मेटणी शमां, शायद कोई गुरमुख विरला बचया नज़री आईआ। कूड़ी रहिण नहीं देणी जगत विच तमअ, तमाचे मार के बाहर देणे कढाहीआ। मनमुखता दा लेखा रहिण नहीं देणा जमा, जमां दे हथ्थ देणा फड़ाईआ। बिन पुरख अकाल तों दुनी दा दीन कर निकम्मा, ग़मां विच फिरे लोकाईआ। प्रभ दा कोई ना समझे समां, सहायता विच सहायक अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म करे रवां, रवानगी परवाने बिना

पत्रका घर घर दए पुचाईआ। पत्रका कहे मैं नहीं बणना अक्खरां वाली पाती, पातन हो के वेख वखाईआ। मैं इके हुक्म सुणना कमलापाती, जो पतिपरमेश्वर आपणी धार विच्चों प्रगटाईआ। खेल वेखणा बहु बिध भाती, भावी भउ सब नूं रही जणाईआ। अन्धेरा चुकदा तक्कणा कलयुग अन्धेरी राती, अमावस आपणा रूप लए बदलाईआ। जन भगतां दा तक्कणा साथी, गुरमुखां गुर गुर आपणी गोद उठाईआ। बहुता लेखा लिखा देणा एसे आउण वाली वसाखी, विश्व भुल्ल रहे ना राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन विच्चों मन कराए सब दा बाग़ी, बग़ावत विच वेखे जगत लोकाईआ।

✪ २७ शहिनशाही सम्मत १ मल सिँघ दे गृह पिण्ड रजी आला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

दर्दीआं वण्डे प्रभू सदा दर्द दु:ख, मन दा रोग दए गवाईआ। सच दुआर दा बदल के रुख़, रुख़सत कूड़ी कोलों दवे दवाईआ। परदा रहिण ना देवे ओहला लुक, हस्ती विच्चों हस्ती दए वखाईआ। बिन हथ्थां बाहवां गोदी लए चुक्क, सतिगुर पूरा पुरख अकाल दया कमाईआ। हिरदिउँ प्रणाम बन्दना विच जो गया झुक, आसान मुश्कल हल कराईआ। भगत सुहेला उज्जल करे मुख, चेला गुरू लए अपणाईआ। अगला पैंडा जावे मुक, पिछला लेखा देवे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा सब कुछ, सबब नाल समझ दए बदलाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड कादर वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन्म जन्म दा लेखा रिहा मुक्क, अबिनाशी करता लहिणा झोली पाईआ। आवण जावण मेट के दु:ख, लख चुरासी फंद कटाईआ। आत्म परमात्म दे के सुख, निजानंद करे रशाईआ। सड़ना पए ना जनणी कुक्ख, दस दस मास अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल गोदी लए चुक्क, साहिब सतिगुर आपणा रंग चढ़ाईआ। अमृत प्याए अगम्मा घुट, तृष्णा अग्ग कूड़ दी दए बुझाईआ। कर प्रकाश निरगुण जोत, जोती जाता करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के वरन गोत, इक्को ब्रह्म दए दरसाईआ। चिन्ता ग़म रहे ना सोग, हिरस कूड़ी दए गवाईआ। घर ठाकर दरस देवणहार अमोघ, सनमुख हो के नजरी आईआ नाम संदेसा देके इक सलोक, सोहँ सच करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। हरिजन लहिणा रिहा वसूल, दाता देवणहार अख्वाईआ। जो दर आयां करे कबूल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मानस जन्म जाण ना देवे फ़ज़ूल, फ़ज़ल रहमत आप कमाईआ। नाम

निधाना दस्स मज़मून, कलमा इक्को दए दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया बदल कानून, सति धर्म दए वखाईआ। साचा गृह कर मालूम, मुश्कल अगली हल्ल कराईआ। जिसनूं समझे ना कोए अलूम, इलम विद्या ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। जन भगत काया माटी अंदर झोली रिहा भर, अगम्मी वस्त सतिगुर शब्द नाम टिकाईआ। जन्म मरन भय भउ चुकाए डर, कर्म कांड रहे ना राईआ। दुरमति मैल धुआए नुहा के साचे सर, सर सरोवर इक्को इक वखाईआ। करे प्रकाश साढे तिन्न हथ्थ धुर दे घर, घर विच घर होए रुशनाईआ। सन्त सुहेला गुरमुख गुर शब्दी ढोला जाए पढ़, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। धाम सुहञ्जणा वेखे काया बंक गढ़, शाहरग उपर सोभा पाईआ। सुरती लग्गे शब्दी लड़, मन वैरागी कन्त सुहागी सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहेले लए फड़, लख चुरासी विच्चों कर किरपा बाहर कढाहीआ। जन भगत तेरा लहिणा देणा पूरब जन्म दा प्यार, परम पुरख परमात्म आत्म देवणहार वड्याईआ। जग वेंहदयां लँघ गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेशे दे के गए गुरू अवतार, पैगम्बर कलमयां विच कर पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, अञ्जील कुरान बाईबल होका हक सुणाईआ। जन भगत कहिण भगत वछल गिरवर गिरधार, ग़रीब निमाणे कोझे कमले गले लगाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त देवणहार सच दीदार, गृह मन्दिर काया माटी खुशी मनाईआ। जुग जन्म दे विछड़े फड़ बाहों लए तार, तारनहार समरथ आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे गृह गृह सच्चे घर बाहर, घट भीतर वेख खुशी जणाईआ। करनी दा करता दुक्खां दा हरता सन्त सुहेले लए भाल, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। लेखा रहिण ना देवे शाह कंगाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच दवारा हरि मन्दिर दस्सणहारा अगम्मी धर्मसाल, जित्थे पुरख अबिनाशी घट घट वासी बैठा डेरा लाईआ। गुरमुखां काया सुरती सदा करे संभाल, अकाल मूर्त हो के मूर्त नाद तूरत विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला गहर गम्भीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। पुरख अबिनाशी ठाकर स्वामी दो जहानां वड पीरन पीर, पैगम्बर सुअम्बर आप रचाइंदा। आदि जुगादि नित नवित खेले खेल बेनज़ीर, शाह सुल्ताना श्री भगवाना आपणा हुक्म वरताइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख सज्जण लभ्भे अन्त अखीर, आखर परदा ओहला आप उठाइंदा। प्रेम विछोड़े विच होण ना देवे दिलगीर, आत्म दरसी आपणा दरस कराइंदा। हरिजन बणा के साचे सन्त फ़कीर, साचा फ़िकरा इक्को सोहँ नाम समझाइंदा। जिस नाल जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी बदल देवे तकदीर, तकदीर

उत्ते लकीर हुक्म नाल फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नवें जुग दी जन भगतां नाल करी जाए तामीर, महल अटल इक्को इक सुहाइंदा।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगतां वक्त सदा रहे सुहञ्जणा, घड़ी सुहञ्जणी जुग जुग देवे वड्याईआ। हुंदा रहे पुरख अकाल चरण धूढ़ी मज्जना, धुर बिन मस्तक मस्तक छुहाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच्चों पए ना लभ्भणा, घर बैठयां घर घर नज़री आईआ। मिन्नतां कर के पए ना सद्दणा, तपां वाली खुशामद ना कोए कराईआ। भिखारी हो के पए ना मंगणा, स्वाली हो के ना झोली डाहीआ। श्री भगवान आपणी किरपा नाल चाढ़े रंगणा, रंगत इक्को दए रंगाईआ। कर्म रहे कोई ना मंदना, वडभाग दए बणाईआ। दूसर करनी पए कोए ना बन्दना, सीस जगदीश इक झुकाईआ। भीड़ी गली पए ना लँघणा, सच दवारा दए वखाईआ। करे प्रकाश अगम्मी चन्दना, चन्द सूरज सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग चढ़ाईआ। जन भगतां पूरी करे सधर, सद सद दया कमाईआ। प्रेमी प्यारा फिरे मगर, घर घर अलख जगाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे ग़दर, वासना मन ना कोए लड़ाईआ। भाग लगाए अंदर, काया मन्दिर वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ ना नचाए कलंदर, जूठ झूठ डंक ना कोए वजाईआ। कूड़ी वासना रहे ना बन्दर, मन शब्दी डोर बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोड़नहारा कूड़ा संगल, संग आपणा आप बणाईआ। जन भगतां देवण दी आपणे हथ्थ रखे जुगत, जगत जुगत दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहर मुहब्बत वण्डे मुफ्त, कीमत करमां ना कोए चुकाईआ। खेल करदा जाए गुप्त, जगत संसारी नज़र ना कोए तकाईआ। उठाउँदा जाए सोई सुरत, सुत्यां दए अंगड़ाईआ। हुक्म वरताई जाए तुरत, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुरमुख रहे कोई ना मूर्ख, चतुर सुघड़ सुचज्जे दे जणाईआ। नाम सुणा के आपणी तूरत, तन माटी करे शनवाईआ। आसा मनसा सब दी पूरत, तृष्ना दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब कला भरपूरत, भाण्डा भरम दए भन्नाईआ। जन भगतां हथ्थ रखदा जाए पुश्त पनाह, मेहर नज़र टिकाईआ। जन्म जन्म दा मेटदा जाए गुनाह, बदीआं नूं बध कर वखाईआ। दृढ़ाउँदा जाए इक नाँ, सोहँ ढोला बेपरवाहीआ। समझाउँदा जाए पुरख अकाल इक्को पिता माँ, दो जहानां गोद टिकाईआ। सचखण्ड दवारा जिस दा थाँ, तख्त निवासी हो के सोभा पाईआ। सो लेखा जाणे दो जहां, निरगुण सरगुण हुक्म वरताईआ। जन भगतां पकड़े बांह,

कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। सिर रख के ठंडी छाँ, अग्नी तत दए गवाईआ। सच प्रीती बख्श के चरण धिआं, माया ममता मोह मिटाईआ। साची सिख्या दए सिखा, सिख्या विच्चों सिक्खी लए प्रगटाईआ। सति सरूप दर्शन जाए दिखा, पेख पेख बिगसाईआ। जन्म जन्म दा लेखा जाए चुका, लहिणा अवर रहे ना राईआ। भगत सुहेले दए तरा, तारनहारा दया कमाईआ। आत्म परमात्म नाल लए मिला, मिलणी जगदीश कराईआ। कलयुग अन्तिम हो सहा, सहायता देवे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्नां पकड़े बांह, बल आपणे नाल पार लँघाईआ।

४५२ १६ ✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ बगीचा सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪ ४५२ १६

जन भगतां प्रभ लेखे लावे जन्म जन्म दी बन्दगी, बन्दीख़ाने विच्चों बन्दा दए छुडाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना अंदर रहे ना गंदगी, माया मोह लोभ रसना जेहवा ना कोए हल्काईआ। अगे कटणी पए ना किसे दी मशंदगी, मुश्कल विच्चों खुशीआं नाल बाहर कढाहीआ। आसा रहे ना सुरप्त इन्द दी, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए मनाईआ। धार बणा के अगम्मी बिन्द दी, बिन्दराबन तों खैहड़ा दए छुडाईआ। एह खेल अगम्मी दाते गुणी गहिंद दी, जो गहर गम्भीर बेनज़ीर निरगुण निरँकार नज़री आईआ। मंज़ल मुक जाए जीउ पिण्ड दी, ब्रह्मण्डां खण्डां उपर आपणा दरस दिखाईआ। जीवण विच्चों नवीं मिल जाए ज़िंदगी, मरन पिच्छो मरतबा देवे धुरदरगाहीआ। धार मिले अमृत रस सिन्ध दी, संधया कूड़ी दे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत होवे ना किसे अधीन, अदना हो के मंग ना कोए मंगाईआ। इक परमात्म आत्म हो के रखे यकीन, इष्ट देव इक मनाईआ। सति धर्म दा लभ्भे सच्चा दीन, आपणे मज़्हब विच जज़ब लए कराईआ। भगत सुहेला रहे ना कोए कमीन, दात अगम्मी निरगुण दाता आप वरताईआ। सच दुआर बणा मस्कीन, मसला अगला हल्ल कराईआ। चिन्ता विच ना रहे ग़मगीन, ग़मां तों लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी होण ना देवे तकसीम, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। जन भगत कदे ना होवे दूर, कदमां उपर कदीम तों रिहा टिकाईआ। दरस दिखा दए सदा सदा सद हाज़र हज़ूर, हाज़री आपणे घर लगाईआ। पूरब बख्श देवे कुसूर, कसम अगे इक्को नाम दए खवाईआ। मनुआ मन ना रहे ग़रूर, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। काया तपे ना अग्न तन्दूर, त्रैगुण अग्न लेखा देवे ढाहीआ। जन्म जन्म दा बख्श कुसूर, सिर आपणा हथ्थ

टिकाईआ। कलयुग अन्त मिलण वास्ते आत्मा करे मजबूर, हुक्में अंदर अंदर सुणाईआ। जोत जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले सच दवारे कर मन्जूर, मंज़ल पैंडा दिता मुकाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडी जमाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

जन भगत रहे ना कदे अनभोल, अभुल्ल भुल्लयां लए मिलाईआ। हिरदा शांत मन रखे अडोल, जगत तृष्ना देवे बुझाईआ। प्रीती विच प्रीतम वसे कोल, कौल इकरार तोड़ निभाईआ। सच दवारा इक्को खोल्ह, ख़ालस गुरमुख रिहा प्रगटाईआ। नाम कंडे तोल के तोल, कीमत साची रिहा चुकाईआ। सांझा दस्स के इक बोल, सोहँ ढोला रिहा पढ़ाईआ। लख चुरासी तत वरोल, गुरमुख गुर गुर बाहर कढाहीआ। शब्द स्वामी बण विचोल, विचला भेव खुल्हाईआ। वस्त दे अनमोल, अन्न्हयां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शे इक सरनाईआ। जन भगत रहे ना मन अधीन, सुरती अंदरों दए लगाईआ। लेखा चुका के उपर ज़मीन, फर्श तों अर्श दए चढ़ाईआ। जित्थे मालक इक आमीन, अमल रहत अख्वाईआ। जिस दर धार ना नर ना मदीन, जोती नूर नूर रुशनाईआ। सो साचा दस्से इक दीन, धर्म हँ ब्रह्म दृढ़ाईआ। भय चुका के लोक तीन, माया तीन पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कहे आफ़रीन, जो बिना उफ़ हाए तों सीस निवाईआ।

✪ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत १ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड तरन तारन ज़िला अमृतसर ✪

फलगुण कहे मैं की दस्सां सिफ्तां, सिफ्त विच ना सिफ्त सालाहीआ। जन भगतां रंग वेखां आपणी अक्खां, श्री भगवान रिहा चढ़ाईआ। बिन दन्दां तों ख़ुशीआं नाल हस्सां, बिन तन वजूद हस्ती लए अंगड़ाईआ। परम पुरख दे कदमां उत्ते ढठ्ठां, माण अभिमाण मोह मिटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नठ्ठां, भज्जां चाँईं चाँईंआ। जिस कोटां अरबां विच्चों गुरमुख थोड़े लभ्भे दीपां सत्तां, नौ खण्ड वेख वखाईआ। गल पलड़ू आपणे इक घत्तां, निर्धन हो के सीस झुकाईआ। तेरा खेल बेअन्त समर्था, समरथ तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दया आप कमाईआ। फलगुण कहे मेरे अंदरों आउँदी हासी, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। जोत प्रकाश तक्कया सचखण्ड निवासी, निरगुण दाता बेपरवाहीआ।

जन भगत सुहेले वेखे दास दासी, दस्त बदस्त सेव कमाईआ। गोबिन्द शब्द वेख्या साथी, जो अंदर वड़ के सेव कमाईआ। पुरख अकाल करदा वेख्या राखी, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। प्रेम प्यार अंदर बणदा वेख्या साकी, नाम प्याला अंदर मुख लगाईआ। झगड़ा मुकाउँदा वेख्या ज़ात पाती, वरन बरन डेरा ढाहीआ। संदेसा देंदा वेख्या कमलापाती पतिपरमेश्वर हुक्म जणाईआ। दर्शन देंदा वेख्या दिवस राती, जन भगतां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार खेल साची, सच मार्ग इक प्रगटाईआ। फलगुण कहे मैं कुछ नहीं दसणयोग, यथा शक्त कहिण कुछ ना पाईआ। जन भगतां दवारे लगदा वेखदा रिहा भोग, भावना सब दी खोज खुजाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पुरख अकाल दा तक्कया एह चोज, चोजी प्रीतम हो के आप कराईआ। खुशी विच वेख्या लोक परलोक, सलोक ढोले राग सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खेल वेखणा निरगुण जोत, जोती जाता आपणी कार कमाईआ। भगत तक्के रखदे गए इक ओट, दूजी आस ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे मैं रुत्त बसन्ती कलयुग अन्त गुरमुख फुल्ल, फुलवाड़ी महकी बेपरवाहीआ। नाल तक्के गुंचे गुल, पत्त टहणी वेख वखाईआ। जिस दी ना कोई कीमत ना कोई मुल्ल, हट्ट बज़ार ना कोए विकाईआ। जिन्हां दा मालक एकँकारा सुल्हकुल, परवरदिगार नूर खुदाईआ। सो करे खेल अनतुल, अडुल दया कमाईआ। जन भगत बणा के आपणी कुल, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग धुर दा इक प्रगटाईआ। फलगुण कहे मैं वेख्या घर घर, जन भगतां वज्जी वधाईआ। पुरख अकाला दे के वर, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। सच सरोवर दस्स के सर, बिन तीर्थ तट इश्नान कराईआ। भाग लगा के काया गढ़, कूड़ी गढ़ी देवे वड्याईआ। मंज़ल महल्ल वेखे चढ़, पौड़ी डण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। फलगुण कहे मैं भगतां अंदर वेखी सोहणी सुगंधी, चार कुण्ट महकाईआ। जिन्हां दी नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, अंध्यारा कूड़ा दए चुकाईआ। मन वासना रहे ना गंदी, गंदम कटवा के गुदाम भरन नाम निधान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे मैं तक्कदा रिहा अनक अनेक पदार्थ, चार जुग खोज खुजाईआ। दुनिया आपणा मुक्ख रखदी रही स्वार्थ, जगत आसा विच लोकाईआ। प्रभू दा प्रभू बिन जाणे ना कोए परमारथ, परदा परे ना कोए हटाईआ। कलयुग अन्त पुरख अबिनाशी खेल करया विच भारत, धरनी हिस्सा सोहणा वण्ड वण्डाईआ। भगत दुआर उपा सच्ची इमारत, महल अटल करे रुशनाईआ। जित्थे मन्ज़ूर होवे बिन सजदिउँ सच ज़िआरत, सफ़ारश दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दी बदले ना कोए वज़ारत, वुज़ूआं

तों लए छुडाईआ। जन भगतां महिमा धुर दी गाथा शब्दी नाम लिखे इबारत, हुक्मी हुक्म आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल जणाईआ। फलगुण कहे मैं वेख्या घर घर दा हिस्सा, भगवान भगत वण्ड वण्डाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे किसे ना पिच्छा, पिछले अगे लए लगाईआ। शाह सुल्तान होके करे रिछा, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगती दा भाव नाम पाए भिच्छा, धुर दी वस्त इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दा लिखा, लखपती समझ किसे ना आईआ। फलगुण कहे मैं तक्कदा रिहा भगत भगवान प्यार, पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। वेंहदा रिहा जगत संसार, लख चुरासी अंदर वड़ वड़ चारे कुण्ट परदा लाहीआ। साचा दिसे ना कोए दिलदार, दलिद्रीआं दुःख ना कोए मिटाईआ। हंगता विच भरया संसार, मनुआ मन हँकार ना कोए गवाईआ। पुरख अकाल हो त्यार, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दा पूरब विहार, बिवहारी हो के आप कराईआ। जिस दा लेखा ओसे दा लहिणा सदा जुग चार, चौकड़ आपणी खेल खिलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां गृह गृह दे दीदार, दलिद्रां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म कर वरतार, विहार भगतां नाल रखाईआ।

✪ ३० फग्गण शहिनशाही सम्मत १ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

शहिनशाही सम्मत कहे पहली सदी दा पहला सुहञ्जणा बरस, जन भगतां सदीआं दे सदमे दए गवाईआ। सच प्रेम प्यार मुहब्बत दा दे के दरस, दरसी दरस आपणे रंग रंगाईआ। अगला खेल कर उत्ते फर्श, आतशफ़शां वेखे लोकाईआ। लहिणा देणा देवे शरकुल शरक, मशरक हुक्म वरताईआ। मग़रब पए भड़क, अग्नी तत जलाईआ। शमाल उठे निधड़क, जनूब लए अंगड़ाईआ। पुरख अकाल हुक्म देवे कड़क, सख्ती विच सुणाईआ। फ़रमान अंदर रहे ना अटक, अटक तों परे लए उठाईआ। शमां उत्ते पतंगयां दा चढ़े कटक, कठपुतली करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप भुगताईआ। बरस कहे मैं पहला इक्क, इक दी करां शनवाईआ। पूरी कर के सिक्क, सिकम दयां हिलाईआ। धुर दा हुक्म लिख, लेखा दयां भगताईआ। भगत सुहेला वेख के सिख, सिखर चोटी आप चढ़ाईआ। मेरे विच दर्शन कीता जिस, जिस्म ज़मीर दोवें लेखे पाईआ। सम्मत कहे जो कुछ करना सो इस, इस तों परे ना कोए खुदाईआ। जगत अक्खां ना आवे दिस, ज्ञान लोचण करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम लाहवे विख, रस मिठ्ठा इक चखाईआ।

जो भगतां भगत दुआर ल्याए खिच, खिच अंदरे अंदर रखाईआ। ओस सृष्टी करनी जिच, जच्चां देण दुहाईआ। साचा रहे कोई ना हित्त, हिम्मत दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। फलगुण कहे पहले बरस दा मेरा अन्त संदेश, साचे सन्तां दयां जणाईआ। जन भगतो सदा वसणा प्रभ दे देस, दिशा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ज़ात पात ना लैणी वेख, विषयां विच ना वक्त गवाईआ। आपणा बल कुछ प्रगटाउणा दस दस्मेस, दहि दिशा कर रुशनाईआ। थोड़ा शमां फिर जोत प्रकाश रहे हमेश, परदा ओहला दूर कराईआ। सुणाउँदा रहे संदेश, सुत्यां आप उठाईआ। मालक बण नरेश, निशाना दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूजा साल सम्मत सदे पेश, पेशतर आपणा हुक्म सुणाईआ। अगला साल कहे मैं चढ़न वाला जग, जुगती पिछले सम्मत दिती समझाईआ। ला के बुझाउणी अग्ग, एहो मेरी वड्याईआ। हँस बणाउणे कग, चार कुण्ट हल्काईआ। सन्त सुहेले मिल के गाउणा छद, छन्द इक्को इक सुणाईआ। प्रगट होणी भगत भगवान यद, यथार्थ बख्शे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी तों हो के बैठा दूर अड्ड, मास नाड़ी हड्ड नज़र किसे ना आईआ। अगला साल कहे मैनूं कहो सुभागा, भाग सब दा देणा बदलाईआ। जन भगतां धोणा दुरमति मैल दाग़ा, दग़िआं दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा सज्जण मिलणा साका, सकीरी अगली लए बणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दा नवां बणाउणा ख़ाका, ख़ालस हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे पृथ्मी आकाशा, आकाशां तों उपर आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ पहली चेत शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

पहली चेत शहिनशाही सम्मत पहला साल गया मुक, फलगुण अन्त अख़ीर जन भगतां दए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहान जिन्हां पढ़ी अगम्मी तुक, सोहँ ढोला हक बोला बण विचोला निरगुण सरगुण आप जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म निज दे के सुख, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी भेव अभेदा अछल अछेदा निरगुण आप खुल्हाईआ। भगत भगवान नौजवान मर्द मर्दान परदा ओहला रहे ना लुक, बजर कपाटी साची हाटी जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी नव नौ चार पिच्छो आपणा बदल के आया रुख़, रुख़सत दे के गुर अवतार पैगम्बर जोती जोत विच समाईआ। दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना शाह सुल्ताना हुक्म देवे अबिनाशी अचुत्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार

सांझा यार धुर दा कलमा बिन अक्खरां इक दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ज़िमीं असमान चार कुण्ट दहि दिशा साचा मिले किसे ना सुख, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज परदा दए उठाईआ। दीन दुनी ज़ात पात ऋषी मुनी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर सब नूं होणा दु:ख, दुखियां दर्द हा भरके सरद सुण के अरज़ अगे हो ना कोए बचाईआ। ज़ालम ज़ुल्म अगम्मी धार हुक्मे प्यार शब्दी कार फड़नी करद, बेपनाह बेगुनाह बेज़नाह बेरफ़ा बेवफ़ा कोई ना सके अटक, खटका सब नूं दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करनी करता कुदरत दा मालक वड ख़ालक हुक्म इक्को इक जणाईआ। पहली चेत कहे मैं दस्सां इक संदेसा, बिन अक्खरां इक जणाईआ। कलयुग जीवो रिहो ना वेखी वेखा, वक्खरा परदा ओहला दयां उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण जोत धार के भेखा, भेखाधारी आपणा आप बदलाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी एथे ओथे ब्रह्मण्ड खण्ड सचखण्ड मुकामे हक रूप रंग ना कोए रेखा, लाशरीक वाहिद जलवागर आपणा नूर करे रुशनाईआ। ना कोई मुच्छ ना कोई दाढ़ी ना कोई केसा, पंजां तत्तां वाली धार ना दिसे दस दस्मेसा, शब्द खण्डा देवे सच अनन्दा, परमानंदा आत्म विच्चों दए दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़यां वास्ते सम्मत चढ़या चंगा, नेत्र रोंदी वेखी जमना सुरस्ती गंगा, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ बिन अक्खां नीर वहाईआ। साध सन्त चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन बिन शब्द ओढण फिरे नंगा, कूड़ी क्रिया सीस ख़ाक, रूह बुत्त ना होया पाक, पतित पुनीत नज़र कोए ना आईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमें हंगता होया गंदा, धुन अनाद शब्द अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। सच दवारे कर दरस नर निरँकारे, निर्मल जोत जोत उज्यारे, नूर नूर नूर विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी घट भीतर अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। पहली चेत कहे मैं दस्सण आया धुर दी बात, चोरी चोरी फेरा पाईआ। की करे पुरख अबिनाश, करनी करता आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो सुण लओ तुसीं ख़ास, खसूसीअत विच दृढ़ाईआ। चार कुण्ट सृष्टी दृष्टी करनी उदास, सांतक सति ना कोए वरताईआ। गोपी काहन वाली भुल्लणी सब नूं रास, नटुआ स्वांगी स्वांग ना कोए जणाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआर शिवदवाले मठ किसे ना पुछणी बात, वातावरन बदले लोकाईआ। दीन मज़्हब वड्डा छोटा इक दूजे दा करन घात, घाउ लग्गे थाउँ थाँईंआ। बिन गुरमुखां साची दिसे ना कोए जमात, जुमला हक ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला समरथ स्वामी अन्तरजामी वेखण आया आप, आपणे वाक्यात, वाक्

भविख्त गुर अवतार पैगम्बरां पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा इक सरनाईआ। चेत कहे मैं दस्सण जोगा नहीं कुछ, कच्छ मच्छ मारन सर्ब धाईआ। सृष्टी वेख प्रभू दी मैनूं आवे दुःख, दृष्टी अंदर ध्यान लगाईआ। मनुक्खां अंदर दिसे ना सुच्च, सति बैठा मुख भवाईआ। होया ना प्यार साचे पिता पुत्त, जगत वासना ना कोए तजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे गए रुस, रुस्सयां ना कोए मनाईआ। पंजां तत्तां वाले छड्ड के जिस्म जुस्स, नाता लोकमात तुड़ाईआ। झगड़ा रिहा ना काया बुत्त, बुत्तख़ाने गए तजाईआ। अन्तिम वेखणी परम पुरख दी मौली रुत्त, लोकमात वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी खेल खिलाईआ। चेत कहे मैं वेख के होया आप हैरान, बिन हैरानिउँ हैरानी आईआ। धुर फ़रमाना सुण के शब्दी समझे ना कोए ब्यान, विद्या विच जगत वड्याईआ। पैगम्बरां दी ख़ुशीआं नाल पढ़न कलाम, परवरदिगार दा कलमा सुणन कोए ना आईआ। पत्थरां वाला तत्तां वाला पूजदे सारे राम, हर घट वस्या राम ना कोए मनाईआ। गऊआं चरावण वाला बंसरी वजावण वाला सख़ियां खेल खिलावण वाला मन्नदे काहन, धुर दा काहन जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, घर घर बणया रहे महिमान, लख चुरासी सुरती गोपी आदि जुगादि प्रनाईआ। साचा बेनज़ीर नज़र ना आए किसे अमाम, कलमयां विच सीस सर्ब झुकाईआ। वुज़ूआं विच करन इश्नान, शरा शरीअत होए वैरान, लाशरीक दरस कोए ना पाईआ। नानक सरगुण गाउँदे गान, तत्तां वाला करन ध्यान, अक्खरां दा देण परमान, निरगुण जोत तक्के ना कोई भगवान, जो नानक नानक आपणे विच समाईआ। गोबिन्द गोबिन्द कह के थक्की ज़बान, बाहर दा वेख के चिल्ला कमान, बाज़ उडदा, केहड़े असमान, नीला हिणके केहड़े दालान, सब दा मालक श्री भगवान, वेख के सीस ना कोए निवाईआ। पहली चेत कहे मैं तक्कया वेद पुराण, शास्त्रां मार ध्यान अञ्जील कुरानां वेख्या ब्यान, अन्तर अन्तर रोवण, आदि जुगादि कदे ना सौवण, बिन हरि किरपा कटी जाए कोई ना बिप्पता, बिन सतिगुर शब्द कोई ना लिखदा, कलम चले ना कोए चतुराईआ। खाणी बाणी लेखा जिसदा, उसदे उत्ते कोई ना विसदा, मन्दिर मस्जिद शिवदवालयां विच्चों नहीं दिसदा, पूजा पाठ उत्ते कदी नहीं टिकदा, उह मालक बणया नहीं किसे गारे इट्ट दा, हर घट निवासी पुरख अबिनाशी साख्यात, जोती जाता निरगुण धार निरवैर चार वरन अठारां बरन बुद्धी विच किसे ना आईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द गा गा रिहा कुरला, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूहां विच्चों लभ्भदे जगत मलाह, पंडत पांधे मुल्ला शेख़ मुसायक ग्रन्थी पन्थी करन सलाह, शब्द संदेसा नर नरेशा धुर फ़रमाना विच जहानां कलयुग अन्त सुणन कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ।

चेत कहे मैं वेख्या लख चुरासी अंदर, अंदर वड़ वड़ वेख वखाईआ। साचा सोहया कोए ना मन्दिर, मंदभाग दिसे लोकाईआ। भाग लग्गा किसे ना कंदर, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। मनुषां नालों चंगे डंगर, जो मवेशी हो के दर्शन पाईआ। उन्हां दे अंदर गुरमुखां सिक्खां दिसी इक्को बन्दन, दूजी करी ना कोए पढ़ाईआ। टिक्के लग्ग गए बिना धूढ़ी मस्तक चन्दन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैनूं हो गई चिन्दा, दुखी हो के दयां दुहाईआ। परम पुरख परमात्म तेरी सृष्टी दृष्टी करदी वेखी निन्दा, निंदया विच लोकाईआ। तेरा हाहे वाला उपर समझया किसे ना बिन्दा, टिप्पी कह के सारे रहे गाईआ। एहो खेल जेहड़ा खुल्ले ना किसे कोलों जिंदा, कुंजी कलयुग सन्त सके ना कोए लाईआ। औझड़ वेखदे सुखमन दा राह डिंगा, भज्जण वाहो दाहीआ। मुरली नाद सुण के किंगा, बच्चयां वांग आपणा मन परचाईआ। बूँद स्वांती लै के बूँद कहिण मिल्या सागर सिन्धा, खुशीआं ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मैं वेख वेख के हस्सां, हस्ती बेपरवाहीआ। मूर्खां मुग्धां दस्सां, धुर संदेश सुणाईआ। निज नेत्र खोल्हो अक्खां, लोचण बाहर बन्द कराईआ। कूड़ीआं छड्ड दयो ढकां, दलीलां साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। मेरे साथी बण जाओ तुहाडे अंदर पड़दे चुक्कां एह चेत रिहा जणाईआ। दीन मज़्हब दीआं नकेलां कढ्ढ दयो विच्चों नक्कां, इक्को मिले बेपरवाहीआ। जिस दीआं शब्द अगम्मी सट्टां, सुत्यां लए उठाईआ। ओसे दे हुक्मे अंदर लोकमात विच वसां, वास्ता भगतां नाल जुड़ाईआ। दुनियादारो पहली चेत कहे अजे सड़न लगीआं बस्सां, बिस्तरे सब दे देणे जलाईआ। अग्नी अग्ग लग्गे बिन कक्खां, कामल मुर्शद दए गवाहीआ। जिस दे हुक्म नाल पैण लग्गा रट्टा, रोटीन विच आपणी कार कमाईआ। सब नूं छानणा पए घट्टा, कौडी नाम हथ्थ किसे ना आईआ। मावां पुत्तां हथ्थ मारने उत्ते पट्टां, पटणेवाला दए सजाईआ। क्यों, उस ने वेस वटाया वांग जट्टां, चार कुण्ट दए हिलाईआ। भावें सारी दुनिया करे ठट्ठा, फिर वी लख चुरासी विच्चों गुरमुख लैणे मिलाईआ। ना कोई चूंकि चुनांचि ना अलबत्ता, बत्ती अंदरों करनी रुशनाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के सका, सकयां तों लैणा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। चेत कहे कलयुग जीव जाओ सौं, आपणी अक्ख बन्द कराईआ। लख चुरासी फिरन दा तुहानूं चाउ, पतिपरमेश्वर दए भवाईआ। तुसीं भुल्ले पुरख अकाल दा नाउँ, सिफ्तां वाले ढोले सारे रहे गाईआ। जिस दे हथ्थ अन्त अख़ीरी न्याउँ, दो जहानां खोज खुजाईआ। नाता तोड़ के पिता माउँ, जगत जरवाणयां करे जुदाईआ। सदी चौधवीं क्यों भुल्ले राहों, रहबर हो के रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

चेत कहे मैं रख के जाणी लोकमात यादगार, चार युग मेरा ढोला गाईआ। सृष्टी दा दृष्टी नाल रहिण नहीं देणा प्यार, मुहब्बत विच ना कोए लोकाईआ। चार कुण्ट करा के हाहाकार, खुशीआं नाल वेखां चाँईं चाँईंआ। दहि दिशा पुच्छण किथे निहकलंक कल कल्की अवतार, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जिस गुर अवतारां पैगम्बरां दा लहिणा देणा पूरब झोली दिता डार, अगे आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां बण के हक सिक्दार, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। दग़िआं वाला वेख संसार, कूड़ी क्रिया फोले थाउँ थाँईंआ। बुद्धी विच कोई ना करे विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। पहली चेत कहे प्रभ मारना आपणा चौंकड़, सोहणा खेल खिलाईआ। दो जहानां पैणी औकड़, विष्न ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। दीन मज़्बां दा झगड़ा होणा वांग सौंकण, सुत्ती कला दए प्रगटाईआ। शाह सुल्तान कूकरां वांग भौंकण, आवाज सुणन कोए ना आईआ। प्रभ दा भाणा मेट ना सके विच्चों कोट कोटन, काया कुटीआ सब दी फोल फोलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेला वक्त अख़ीरी सोचण, आपणी समझ गए मिटाईआ। जो लेखा इक्को इक लोचण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे प्रभ ने आपणा चुकणा गोडा, जिस नूं घुटना कहे लोकाईआ। सृष्टी नूं लग्गणा रोगा, हउमे हंगता दए दुहाईआ। साचा मेल ना होणा धुर संजोगा, विछड़ विछड़ दए दुहाईआ। इक धुर संदेसा शब्द अनोखा गोबिन्द किहा सिँघ जोगा, जिस दी सार किसे ना पाईआ। गुरू चेले दा इक्को घर इक्को सेज ते इक्को भोगा, इक्को रस दिता वखाईआ। इक्को अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के वेसवा दवारे खड़के तूं मेरा मैं तेरा गाया सलोका, सोहँ ढोला सच्चा दिता सुणाईआ। जोगे किहा साहिब एह किहो जिहा मौका, की खेल दिती वरताईआ। गोबिन्द किहा मैं तेरे कारन पहुंचा, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक ढईआ लाउणा पए ढौंका, नीती बदले सर्ब लोकाईआ। किसे दा काया माटी साफ़ नहीं रहिणा चौंका, पंडत पांधा क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे ना कोए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोगे किहा तेरे चरण मेरी निमस्कार, बन्दन कह के खुशी मनाईआ। गोबिन्द किहा कर मेरा दीदार, बिन तत्तां तत दयां वखाईआ। एह खेल होणा अपर अपार, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्त मिल के नाल श्री भगवन्त जोती शब्दी चलणी धार, निहकलंक कल कल्की नाउँ धराईआ। ओस समें सब दे अंदर होणा कूड़ विकार, हँकार ममता मोह जलाईआ। जोगया, चोगा बदल के मैं भगतां पावां सार, काया मन्दिर अंदर वड़ वड़ करां आप सफ़ाईआ। बिन अक्खां देवां दीदार, बणा धुर दा सांझा यार, लेखा मुका के पुरख नार, नजरी आवां रूप करतार, कुदरत दा कादर करनी दा करता रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

४६० १६

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। चेत कहे मैं गोबिन्द तक्कया, जिस दा तत नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां निरगुण रूप फिरे नट्ठयां बिन लत्तां पैरां भज्जे वाहो दाहीआ। जिस ने गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेला कर इक्ठ्या, इक्को रंग दिता चढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडी रैण अगे रहिण नहीं देणी मस्सया, अंदरों अन्धेरा बाहर देणा कढाहीआ। जो गोबिन्द दे तीर नाल गया फट्टया, दूई द्वैती फट्ट रहे ना राईआ। जिन्हां प्रेम रस अमृत निझर धारों चट्टया, अठ्ठ सठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख कोई ना पूजे सिल पत्थर ते वट्टया, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तों अगे प्रभ दा दर्शन पाईआ। जित्थे बैठा लामुकाम, शरअ दा दिसे ना कोए तुफ़ान, ना कोई बन्दा ते ना बन्दगी ना इन्सान, ना कोई नौबत ना कोई नग़मा ना कोई नाम ना कोई गावे गान, ना कोई ज़िमीं ना असमान, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। सो खेल करे महान, कलयुग अन्त सन्त सुहेले वेखे आण, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रिहा उठाईआ। चेत कहे मैं चार कुण्ट दा राही, तक्कां सृष्ट सबाईआ। झगड़ा होणा भाई भाई, सज्जण जाण रूप बदलाईआ। प्रभ दा दूजा सम्मत खुशीआं नाल दीन दुनी लई पुट्टे खाई, डूँग्घा घाउ लगाईआ। सम्भल पैर ना कोए टिकाई, गोबिन्द दा लेखा भुल्ल गया जो इक्ठे कर गया छींबे झीवर नाई, नौका नाम वाली चलाईआ। ओस ने आपणे हुक्म नाल बदल देणी शाही, शहिनशाह हुक्म इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं आया लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। अबिनाशी करते दे के अगम्मी दात, पुश्त पनाह मेरे हत्थ टिकाईआ। जा के मेट कलयुग अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। भगत सुहेले सज्जण बणा मेरे सज्जण साक, सुत्तयां लै उठाईआ। अंदर वड़ के बन्द कवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी परदा रहे ना राईआ। शब्द अगम्मी अनहद वजा नाद, धुन आत्मक कर शनवाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द सुणा राग, छत्ती राग दी लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, दीवा बाती सूरज चन्द करे ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करनी ख़ाहिश, ख़ालस आपणा आप समझाईआ। सब दी लेखे लाउणी पूरब आस, आहिस्ता आहिस्ता वेखणा थाउँ थाँईंआ। चौथे युग दी फोल के वेखणी दरख़ासत, जो बिना दसख़्तां तों प्रभ दे हत्थ फड़ाईआ। जिस नूं चार जुग कोई ना सक्या वाच, विद्या विच ना कोए समझाईआ। सिफ्तां दी गा के थक्के गाथ, ढोलयां विच शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। पहली चेत कहे मैं जुग चौकड़ी पिच्छो आया मर के, आपणा फेरा पाईआ। लोकमात मैं नहीं रहिणा डर के, सृष्ट सबाई

दयां हलाईआ। पुरख अकाल कोलों अगम्मी ढोला आया पढ़ के, दूजी करी ना कोए पढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे मन्दिर आया चढ़ के, मुकामे हक वेख खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो भाणा आया ज़र के, जेहवा कथे ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैनूं कहिणा बरस दूजा, दो जहान राह तकाईआ। मैं भेव खुल्हाउणा गूझा, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिस कारन अजीत जूझार झूजा, सो वेला देणा जणाईआ। कलयुग दा ढूठा कर के मूधा, मुद्दतां दे विछड़े लैणे मिलाईआ। जिस दा देवे ना कोए सबूता, सो पुरख अकाला गया आईआ। कोई ना जाणउँ एह पंज तत कलबूता, कलमयां तों परे आपणा हुक्म सुणाईआ। शब्दी धार हो मौजूदा, मुफ़लिसां रिहा उठाईआ। मुहब्बत वाला महबूबा, महिज़ इक्को जाम प्याईआ। सृष्टी वास्ते कम्म हो गया कसूता, कुशतीआं विच लड़दी वेखे लोकाईआ। सब दी स्यासत सब दी विरासत सब दी अकल सब दी बुद्धी करनी बेहूदा, बेवा चार कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार सरनाईआ। चेत कहे मैं तक्कदा गोबिन्द धार, बिन अक्खां नज़री आईआ। जिस आपा दिता वार, करते पुरख नाल कुड़माईआ। छड्ड के सज्जण यार, नाता इक्को नाल रखाईआ। तक्क के सदा दीदार, अक्खां गया तकाईआ। मन्न के मददगार, डंका दिता वजाईआ। तेरी दीन दुनी करनी ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। तूं कल कल्की अवतार, मैं तेरा नूर उज्यार, मेरा शब्द अगम्मी कार, करते पुरख ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान तूं अगे मैनूं ल्या परख, मैं कराउणा भगतां नूं दरस, एह खुशीआं वाला बरस, सब दी मेट के चिन्ता हरख, अंदरे अंदर नूरी जोत करां रुशनाईआ। सिध्धी कर के दीन मज़्ह़ब दी सड़क, जन्म जन्म दी पिछली मेट के भटक, काया मन्दिर अंदर रहिण ना देवां कोई रड़क, सच दवारा एकँकारा इक्को दयां वखाईआ। प्रभ दे नाल पूरी होई शर्त, जामा धार के आया परत, खेल वेखणा उपर धरत, कूड़ी क्रिया करनी ग़रक, माया ममता मोह वखाउणा नर्क, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां जाणा खड़क, जन भगतो खटका कोए रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। गोबिन्द कहे तैनूं चार युग करदे रहे मिन्नता, पुरख अकाल तेरे अगे सीस निवाईआ। हुण इक्को शब्द नूं दे दे हिम्मता, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। कोई रहिण नहीं देणा जेहड़ा करन वाला सुन्नता, सुन्नी मुस्लिम सारे देणे खपाईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर रहे ना चिन्ता, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। बेड़ा शौह दरयाए डोबणा निन्दका, उच्ची कूक देणा सुणाईआ। लेखा वेखणा जीउ पिण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक

४६२
१६

सुणाईआ। धुर फ़रमाना कहे मैं गोबिन्द रखी आस, नाते दीन दुनी तुड़ाईआ। जिस बच्चे दा मोड़ के ख़ाली ग्लास, ख़ास आपणा हुक्म सुणाईआ। मैं सदा भगतां गुरमुखां दा दास, नाता बंस ना कोए बणाईआ। शब्द अगम्मी देवां दात, बिन अक्खरां आप पढ़ाईआ। अगे मार के वेख झात, कलयुग अन्त अख़ीरी राह तकाईआ। जिस वेले मिल के आवां नाल पुरख अबिनाश, कल कल्की वेस वटाईआ। लेखा जाणां पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। सच धर्म दा होणा नास, कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। ओस वेले गुरमुखां दे अंदर करना वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। बिना सिख्या तों दे के विश्वास, विषयां तों लैणा बाहर कढाहीआ। मन वासना कर के फ़ाश फ़ाश, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। गुरमुख रहे ना कोए गुसताख़, ग़ुस्से गिले आपणी झोली पाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैं की कुछ सुणया स भ नूं दयां जणाईआ। गोबिन्द किहा हुण पुरख अकाल आ, झल्ली ना जाए जुदाईआ। मेहरवान तूं बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। तूं केहड़ी किसे कोलों लैणी सलाह, धुर फ़रमाना दे दृढ़ाईआ। तेरा हुक्म बेपरवाह, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच सीस रहे झुका, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरी धरती तेरी धरनी तेरी धवल तेरी दुनिया भरी नाल गुनाह, हक हकीकत ना कोए समझाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां अंदर जगे कोई ना शमां, तारीकी चारों कुण्ट नज़री आईआ। अंदर मन्दिर मिटे किसे ना ग़मा, सांतक सति ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा जुग बदल दे नवां, नवां रंग आत्म सेजा पलँघ सब नूं दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। श्री भगवान कहे चेत ना कर छेती, छत्रधारी सर्ब वेख वखाईआ। मैं लख चुरासी काया मन्दिर अंदर दा भेती, बाहरों वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग जिस दे नाल करदा नेकी, निक्कयां तों वड्डे देणे बणाईआ। कलयुग कहे प्रभू तेरे हुक्में अंदर मैं पवित्र रहिण नहीं दिती किसे बहु बेटी, नेत्र अक्ख नाल दृष्टी अंदर सृष्टी इक दूजे नूं रही तकाईआ। मैं गुर अवतारां पैगम्बरां दी लेखणी वेखी, जो भविख्तां विच कर के गए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड निवासी जोत बण के वेख परदेसी, परदेसीआं नूं ला के आपणे घर ख़ुशी मनाईआ। श्री भगवान कहे चेत ना कर झगड़ा, धुर दा हुक्म जणाईआ। किसे नूं भेत नहीं अगला, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार बप्पड़ा बगला, बाहरों दए सफाईआ। मन वासना कलयुग जीव होया पग़ला, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। जे मंगणा इक निरअक्खर मंग लै, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। चेत

४६३
१६

कहे प्रभू मेरा खेड़ा साढे तिन्न हथ्थ दा बंगला, जित्थे रह के बह के खुशी मनाईआ। श्री भगवान किहा होर किसे नूं सद्द ला, साथी लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैं देवां सद्दा, कोटन कोटि कूक सुणाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल मिल के मैनूं आवे मज़ा, मजाज विच सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगतां नाल कदे करे ना दग़ा, दग़े फरेब तों लए बचाईआ। तुहाडे नाल मिल के श्री भगवान दा वधदा अग्गा, पुश्त दर पुश्त वज्जदी रहे वधाईआ। आत्म परमात्म नाता जुड़ जाए सका, साजण हो के मेल मिलाईआ। दर्शन कराउँदा रहे बिन अक्खां, निज लोचन कर रुशनाईआ। भाग लगाउँदा रहे कुल्ली कक्खां, बिन कक्खां महल अटल ना कोए वड्याईआ। सो कलयुग अन्तिम वेला वक्त सुहञ्जणा होया मसां, मस्त खुमारी लओ चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। जन भगत कहिण की रिहा आख, सानूं दे समझाईआ। असां परम पुरख नूं तक्कणा साख्यात, बिना वेक्खयां दीद कर के खुशी ना कोए मनाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण साडी खुशीआं वाली रखे प्रभात, रैण अन्धेरी नज़र कोए ना आईआ। अमृत आत्म सच प्याला देवे आबेहयात, हयाती विच्चों हयाती दए बदलाईआ। बिन दीए बाती कमलापाती निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। बिन मन्दिर पौड़े सचखण्ड दुआर कराए निवास, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सदा सुहेला वसे पास, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। बेशक भगत बाले नढ्ढे बच्चे जे हो जाण गुसताख़, फड़ बाहों गले लए लगाईआ। मेहर नज़र नाल कर देवे पाक, रूह बुत्त करे सफ़ाईआ। जन भगत कहिण चेत असां एहो जहे परम पुरख दा करना साथ, जो समरथ आप अख्वाईआ। जेहड़ा झोली डाह के मंगण वाला दात, ओस गुरू दी लोड़ रहे ना राईआ। ओस नालों चंगी कन्त तों विछड़ी नार कमज़ात, घर घर खसम ना कोए हंढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कह के गए सब दा मालक पुरख अबिनाश, मुरीदां दा मुर्शद शहिनशाहीआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई रसना जेहवा बत्ती दन्द करे बात, बातन आपणा परदा दए खुल्हाईआ। ना कोई नूर करे आफ्ताब, जलवागर जोती जोत डगमगाईआ। चेत जे एहो जहे सतिगुर नाल बण जाए साक, मिल के झट लईए लँघाईआ। जे कोई गुरू विद्या वाला मिले चालाक, मूँह दे भार सुट्ट के डण्डे दईए लगाईआ। असीं कोई मज्झां चारन वाले नहीं चाक, वञ्झली वजा के आपणा मन परचाईआ। जन भगत कहिण असीं लभ्भणा ते लभ्भणा इक्को बाप, जिस नूं मूसा ईसा बाप कह के सीस निवाईआ। चेत कहे जन भगतो मैं हुण हो गया चुप, हैरानी मेरे अंदर आईआ। मैं श्री भगवान तों लवां पुछ, जो सब दा पिता माईआ। प्रभू की

४६४
१९

४६५
१६

तेरे कोल कुछ, जो भगतां दएं वरताईआ। श्री भगवान कहे चेत तूं नहीं जाणदा मैं चार जुग सब तों बैठा रिहा लुक, जगत अक्खां नाल नज़र किसे ना आईआ। इक्को दस्स के कलयुग अन्त अख़ीरी आपणी तुक, तोहमत सब नूं दिती लगाईआ। जिस नूं पढ़यां अगला पिछला जन्म दा पैंडा जाए मुक, मुकम्मल मिले बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले गोदी चुक्क के कहे लाडले पुत्त, सुत दुलारे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। चेत कहे प्रभू तूं आदि जुगादि देवें धोखा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। जन भगतां मिलदा रिहों उत्ते मौका, सज़ा जगत वाली भुगताईआ। लुक्कया रिहा अर्शां तों परे फ़र्शां तों थल्ले शैतानी विच काया काअबे कोठा, मकबरे विच आपणा आप छुपाईआ। लख चुरासी जीव जंत पढ़न ला के अक्खरां वाला पोथा, निरअक्खर भेव ना कोए समझाईआ। तेरा सति सच किसे ना सोचा, बुद्धी विच दिता फसाईआ। कलयुग अन्तिम खेल कर के न्यारा निरँकार कर के मोटा, मोटी मति कीती लोकाईआ। वड्डुउँ बण के निक्का जिहा छोटा, बिन रूप रंग रेख डेरा लाईआ। गुरमुख वेखीं तक्कीं आपणा पोता, गोबिन्द पिता नाल मिलाईआ। जलवा नूर जला के जोता, जोती जोत करी रुशनाईआ। तेरा सागर फोल सके ना मार के कोई गोता, डूँघी हाथ किसे ना आईआ। पाया अन्त किसे ना चौदां लोका, त्रैलोकी रहे कुरलाईआ। कर किरपा जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां आपणा सिफ्ती दस्सदा रिहों सलोका, साचा नाम ना किसे समझाईआ। जोगी अभ्यासी तपी हठी सन्यासी वैरागी त्यागी इस नूं कैहिंदे रहे वड्डा चोखा, बहुता कर के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज खेल रिहा वरताईआ। श्री भगवान कहे मैं सब नूं दस्से सजदे, सरीर तत तत सरीर वाले जणाईआ। मैं गुर अवतार बणा के बरदे, पैगम्बरां करी पढ़ाईआ। मंगते कीते घर दे, दरवेश नज़री आईआ। मिन्नतां वेखे कढ्ढदे, ख़ाली झोलीआं अगे डाहीआ। सिर कदमां उत्ते सटदे, नैण अक्ख शरमाईआ। वणजारे बणे रहे सचखण्ड दवारे हट्ट दे, दर ठांडे फेरा पाईआ। सारे मेरा नाम गए रटदे, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। झगड़े पा के दीन मज़्हब वाली वट दे, हुक्में अंदर खेल खिलाईआ। हुक्मनामे दिते बिना आपणे दस्तख्त दे, शब्दी ख़तां नाल करी पढ़ाईआ। जिन्हां दे पिच्छे छोटे छोटे दायरे मज़्हबां वाले दस्सदे, निक्के निक्के कसबे नज़री आईआ। हुण अगे खेल होणे पुरख समरथ दे, दो जहानां झगड़े दए मुकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ मसीत वेखो किवें ढठ्ठ दे, अगे हो ना कोए बचाईआ। ललकारे सुणने पुरख अकाल शब्दी जट्ट दे, जो जटा जूटधारी सारे दए खपाईआ। जन भगत सुहेले काया चोली अंदर चोले आपणे रंगदे, रंग रतड़ा आपे रिहा रंगाईआ। गुरमुखो लहिणे चुक गए जगत वाली मनमति दे, गुरमति इक्को दए

समझाईआ। जो भगत प्रभू दे नाल मिल के वसदे, दो जहानां रंडेपा ना कोए कराईआ। तुहाडे मेल होणे अंदर वाली अक्ख दे, बाहरों पूजा पाठ ना कोए कराईआ। जो सोहँ ढोला रटदे, रट्टयां तों लैणे छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। चेत कहे मैनूं वेख लैण दयो नाल चोरी, चोरी चोरी अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग वेखां रैण अन्धेरी घोरी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाल किस बिध दुनिया नाल करे हेरी फेरी, फेरी विच आया फेर ना किसे समझाईआ। ना कोई जाणे गुरू ते ना कोई जाणे चेरी, कोटां विच्चों चिरी विछुन्ने गुरमुख आत्म आपणे नाल मिलाईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के ठोकर ला के दया कमा के दरस वखावे ना लावे देरी, दुर्गा इष्ट दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत मलाहां वाली साधां सन्तां कोल लभ्भणी पए कदे ना बेड़ी, इक्को नाम जहाज़ उत्ते फड़ बाहों दए चढ़ाईआ। फेर दस्सयो भगत आत्मा विछड़ी केहड़ी, अगले साल नूं सब नूं सुत्तयां दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा रिहा वरताईआ। चेत कहे मैनूं कढ्ढ लैण दे घुंड, परदा लवां पाईआ। मुख तों हो लैण दे गुंग, रसना जेहवा ना कोए सुणाईआ। श्री भगवान कहे ओए उठ जन भगतां नूं दे टुम्ब, शब्द इशारे नाल उठाईआ। जन भगतो बिना रसना जेहवा तों पुरख अकाल दे उह चरण लओ चुम्म, जिन्हां दी धूढ़ नज़र किसे ना आईआ। तुसीं ना कोई रिख ना कोई मुन, जिन्हां दस्म दवारी विच वड़ के खुल्हाउणी पए सुन, ना कोई ज्ञानीआं वाला रखणा पए गुण, लख चुरासी विच्चों थोड़े लए चुण, जिन्हां दे उत्ते किरपा करनी हुण, अगे आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैनूं थोड़ा पिच्छे लैण दे खिसक, पासा लवां बदलाईआ। पुरख अकाल कहे सारयां नूं दस्स के इक्को सब दा इष्ट, हरि करता बेपरवाहीआ। जो लख चुरासी नाल भोगदा गृहस्त, आत्म परमात्म सेज हंढाहीआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां गुर अवतारां पैगम्बरां दी जिस दे कोल लिस्ट, फ़रिसत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखो तुहानूं केहड़ी लोड़ स्वर्ग ते बहिश्त, बिना प्रभ दे चरणां दूजा धाम ना कोए वखाईआ। बेशक तुहाडी काया हो जाए नष्ट, तुहाडी आत्मा परमात्मा विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। चेत कहे मैनूं परत लैण दे पिच्छा, करवट लवां बदलाईआ। पुरख अकाल कहे उठ मेरी सुण लै सिखा, बच्चया तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तेरे विच भगतां उधारना मेरी इच्छा, इच्छा सब दी पूर कराईआ। कोटां विच्चों किसे ना दिसा, गुरमुख थोड़े अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां दे कोल गोबिन्द दी शब्दी चिट्टा, चिट्टी धार विच फिराईआ। तिन्हां सम्मत एसे विच कढ्ढ के वक्खरा सिट्टा, सिटे दी बाज़ी सब नाल दयां लगाईआ। जेहड़ा

पुरख अकाल जगत नेत्रां किसे नहीं सी डिठा, सो सनमुख सब नूं दयां समझाईआ। कोटन कोटि लभ्भदे गए विच्चों सवा गिठा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैं पिच्छो हो जां अगे, अगली गाथ सुणाईआ। निर्मल जोत इक्को जगे, जो लख चुरासी करे रुशनाईआ। जिस दे हुक्में अंदर बद्धे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरन ढठ्ठे, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गा गा थक्के, ढोले गीत नग़मे गए जणाईआ। कलयुग अन्तिम सारे कर के इक्ठे, धुर फ़रमाना दिता दृढ़ाईआ। पुरख अकाल मेटण लग्गा दीन मज़्ब दे रट्टे, ज़ात पात करे सफ़ाईआ। इक्को जोत घर घर जगे लट लट्टे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सदी चौधवीं लिख्त पढ़त दे तुहाडे पूरे हो गए पटे, अगे तुहाडी ना कोए वड्याईआ। धुर फ़रमाना श्री भगवाना नर नरेशा हक संदेसा इक्को दस्से, दहि दिशा करे पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन जिस ने बणाउणे आपणे बच्चे, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। सति प्रेम प्रीती अंदर जाण रत्ते, रंग अगम्मड़ा दए चढ़ाईआ। सारे वेंहदे रह जाण हके बक्के, परदा हकीकत ना कोए उठाईआ। झगड़ा पैणा मदीने मक्के, मकबरयां विच्चों मुर्शद रहे कुरलाईआ। साचे दस्से किसे ना पते, इशारयां विच गुर अवतार गए जणाईआ। गोबिन्द थोड़े लेख लिखे सच्चे, जो सरसे विच गए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मेरी चेतन हो गई सुरती, सुत्तयां लवां जगाईआ। जोत वेखी अकाल मूर्ती, बिन रंग रूप करे रुशनाईआ। जिस दी आवाज़ शब्द अगम्मी तूरती, तुरीआ पद सार ना आईआ। जन भगतो एह गल्ल मशहूर कद दी, कल कल्की फेरा पाईआ। जिस दी खोज किसे ना लभ्भदी, विद्वानी ज्ञानी रहे कुरलाईआ। अगे खेल रहिण नहीं देणी अज पज दी, शाह सुल्तानां देणा समझाईआ। दूजा साल कहे मेरी वेल रहिणी वध्धदी, वाधा प्रभ दे घर बणाईआ। थोड़ी खेल होणी अग्नी अग्ग दी, अगला परदा पड़दे विच छुपाईआ। तिन्न असू दी धार सब नूं सद्द दी, सद्दे दे के रही जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पहली चेत कहे मैनूं थोड़ा दिसदा अगे नज़ारा होर, प्रभ नज़र रिहा बदलाईआ। दुनिया दे बदले तौर, तऱ्हा तऱ्हा खेल वरताईआ। जिस ते करे कोए ना ग़ौर, उह समझ दए समझाईआ। जिस नूं कैहिंदे ब्रह्मण गौड़, बिन गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। चारों कुण्ट करना चौड़, चार कूट दए हिलाईआ। जन भगतां जाणा बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। चेत कहे उह असू वेखो आउँदा जांदा नेड़े, नेत्र नैण उठाईआ। जेहड़ी सृष्टी करदी झेड़े, धक्का लग्गे थाउँ थाँईआ। धरनी दे

खुल्ले होए वेहड़े, चार कुण्ट होए रुशनाईआ। झूठे साधां दे रहिणे नहीं डेरे, डंका इक्को नाम वजाईआ। जन भगतां चाढ़ के आपणे बेड़े, बेड़ा दो जहान पार कराईआ। करे खेल सिँघ सच्चा शेरे, शेर भबक इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। तिन्न असू कहे कुछ मिलण वाला फ़रमान, फरमांबरदारां दयां जणाईआ। पुरख अकाला करन वाला ध्यान, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। राशटरपति देण वाला ज्ञान, प्रधान मंत्रीआं दए समझाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा लिख के निशान, नौ खण्ड पृथ्मी दए वखाईआ। सब नूं मन्नणी पए इस दी आन, सिर सके ना कोए उठाईआ। शब्दी आन नाल सब नूं मन्नणा पए श्री भगवान, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी वड्डा बलवान, जिस दा सानी नज़र कोए आईआ। वेख्यो कदे भुल्ल ना जायो एह चलण फिरन वाला इन्सान, तत्तां वाला वेस वटाईआ। एह खेल लामुकाम, बेमुकाम आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। धुर फ़रमान कहे मैं ख़बर सुणावां धुर दी, धर्म दी धार दयां जणाईआ। खेल दस्सां ओस सच्चे सतिगुर दी, जो आदि जुगादि सति सतिवादी नज़री आईआ। जेहड़ी बाकी रह गई अनन्दपुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर झोली पाईआ। धार बख्शे आपणे प्रेम प्यार सुर दी, सोई सुरती लए उठाईआ। धाड़ रहे ना कोई गुरमुखो पंज चोर दी, तृष्ना मात ना कोए हल्काईआ। नगरी रहे ना अन्धघोर दी, तन माटी अंदर करे रुशनाईआ। गंढु टुट्टे ना कदे शब्द अगम्मी डोर दी, मेला आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। चेत कहे मैनूं कैहिंदे पहला माह, महिरम हो के दयां जणाईआ। जलवागर इक खुदा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जेहड़ा आत्म कर के होया जुदा, परमात्म हो के नाल मिलाईआ। मार्ग दो जहानां कर के सिध्धा, मंज़ल आपणी रिहा चढ़ाईआ। सच दवारा दे के निग्घा, जगत तृखा रिहा बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक वड्याईआ। चेत कहे मैनूं कैहिंदे पहला मास, अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। थोड़ी समझ आई गुरदास, जो अर्जन दए गवाहीआ। जोती उपजी ललाट, शब्दी होई शनवाईआ। कलयुग वेख घाट, प्रभ करे खेल बेपरवाहीआ। अन्त दिसे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म पढ़े कोई ना गाथ, बाणी बैखरी सर्ब सालाहीआ। हरि का शब्द सके कोई ना वाच, बुद्धी नाल बुद्धी करे लड़ाईआ। मनुआ करे नाच, घर घर फेरा पाईआ। गुरदास बिन तेरे किसे हथ्थ नहीं आउणी कलम दवात, बिना रविदास चमार ना कोए वड्याईआ। बिन भगतां प्रभू नहीं देणा साथ, सगला संग ना कोए रखाईआ। गुरमुखां होण ना देवे उदास, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। चेत कहे मेरा पहला कैहिंदे महीना, रुत रुतड़ी विच्चों बदलाईआ। मैनूं समझे ना कोए नर मदीना, परदा सके ना कोए उठाईआ। ग़रीब कैहिंदे आख़री वक्त कमीना, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। जन भगत कहिण साडा ठांडा होवे सीना, अग्नी तत बुझाईआ। झगड़ा चुक जाए लोक तीना, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। जाणा पए ना मक्का मदीना, मकबरयां सीस ना कोए झुकाईआ। तीर्थ तटां उत्ते वहाउणा पए ना कोई पसीना, पाँधी बण ना पन्ध मुकाईआ। लोड़ रहे ना बणन दी जलमीना, भगत भगवान विच समाईआ। जन भगतो श्री भगवान वरगी लोकमात नहीं कोई होर हुसीना, जो जोबन आपणा सदा रखे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। चेत कहे मैं की बणना चातर, चतुराई नज़र कोए ना आईआ। मैनूं याद आई गोबिन्द वाली पात्र, जो पत्रका बिन अक्खरां दिती वखाईआ। पुरख अकाल आउणा भगतां खातर, खतरे विच होवे लोकाईआ। जिस वेले धर्म दा निशान रिहा ना तिल मातर, मातरभूमी दए दुहाईआ। अबिनाशी करते प्रेमीआं दा बणना याचक, निरगुण हो के दया कमाईआ। गुरमुखां दा लहिणा लेखा देणा बण विद्या दा वाचक, अंदर वड़ के दस्सणी सच पढ़ाईआ। गुरमुखो कलयुग दा अन्त वेख लओ नाटक, नटुआ हो के तुहानूं दए वखाईआ। किरपा कर के तुहाडे अंदरों खोल्ह देवे फाटक, परदा ओहला रहे ना राईआ। तुसीं बच्चयो श्री भगवान दे निक्के जिहे जातक, यथा योग सारे सेव कमाईआ। उह तुहानूं लै के जावे आपणे पातन, पत्रयां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। तुहाडा मेला ज़ाहर ते रातीं सुत्यां बातन, मोमबत्तीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुखो तुहाडे पिच्छे प्रभू आया सदा जागण, जागरत जोत विच समाईआ। सब दे करे वड वड भागण, भाग हिस्सा पिछला झोली पाईआ। वेख्यो भुल्ल के कदे ना लभ्भयो तित्तर बाज़न, बिना गोबिन्द सांत किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी सुणयों आवाज़न, जो बिना कलमयां तों करे पढ़ाईआ। तुहाडी साजण आवे साजण, जिस दी याद विच आपणा झट लँघाईआ। तुहाडी लेखे लावे रातण, रुत्त दी रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल शाहो शाबाशन, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। चेत कहे मैनूं होई चितवनि, चिन्ता गई आईआ। बौहड़ी सब दा लुट्टया जाणा धन, कूड़ी माया रही कुरलाईआ। पुरख अकाल ने ठीकर जाणा भन्न, ठग्गां चोरां कर लड़ाईआ। निरगुण कोटां विच्चों थोड़े लभ्भे जन, लेखा चुकाउणा धन जणेंदी माईआ। जिन्हां दे सच प्रवेश होणा काया माटी तन, तिन्हां बुध तों सुध देणी कराईआ। राग सुणाउणा बिना कन्न, अनहद नादी नाद धुन शनवाईआ। दीपक जोत चाढ़ना चन्न, सूरज चन्द लोड़ रहे ना राईआ। करना वसेरा बिन छप्पर छन्न, हरि चरण कँवल

बिन चरणां इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चेत कहे मैं खेल वेख्या चौंह जुगी, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त औध रही पुगी, वेला वक्त दए दुहाईआ। वसदी रहे कोए ना झुग्गी, झगड़ा दिसे लोकाईआ। प्रभ दा नाम जपण तों जगत रसना हो गई गुंगी, साचा ढोला ना कोए सुणाईआ। साध सन्त जगत फ़कीर प्रभ दे नाम दी लैंदे चुंगी, पैसयां टकयां नाल झट लँघाईआ। सति वस्त हथ्थ ना आवे ढूंडी, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। चेत कहे मैं चेतन हो के शब्दी धार वेखी उह अगम्मी खूंडी, जो खुडयां विच्चों सारे बाहर कढाहीआ। जन भगतां नाभी कर के ऊंधी, अमृत झिरना दए झिराईआ। अमृत बरख के आपणा बूँदी, तृष्ना दए मिटाईआ। शरअ दस्स के सच गुरू दी, सतिगुरू इक्को दए वखाईआ। जन भगतो दस्म दवारी तों तुहाडी मंज़ल शुरु दी, पिच्छे दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। जन भगत कहे की मैनूं मिल्या संदेश, कवण रिहा जणाईआ। चेत कहे ओस नूं कर आदेस, जो सब दा पिता माईआ। पुरख अकाल कहे मैं निरगुण नर नरेश, दो जहाना हुक्म दयां वरताईआ। मेरे अगे किसे दी कोई चले ना पेश, पेशवा गए सीस झुकाईआ। मित्र बण के दरवेश, ख़ाली बग़लीआं गए फड़ाईआ। मुहब्बत विच दस दस्मेश, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित रहे हमेश, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। ओसदा दे के गया संदेश, शब्द सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया होए कलेश, कलमा भुल्ले सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लवे वेख, दो जहानां परदा आप उठाईआ। सच धर्म दी मिटदी वेखो रेख, रेखा सब दी दए बदलाईआ। शब्दी सतिगुर आपणी धार भेज, भजन बन्दगी दए बदलाईआ। जोती जलवा दे के तेज, दीन दुनी दा तख्ता दए उलटाईआ। जन भगतां माण के साची सेज, सुहञ्जणी रुत दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं बण के आया बरदा, धर्म संदेसा देवां थाउँ थाँईंआ। पुरख अकाल मालक मन्नो घर घर दा, लख चुरासी अंदर डेरा लाईआ। परदा खोल्ह भेव चुक्के चेतन जड़ दा, ओहला अवर ना कोए जणाईआ। इश्नान करो पुरख अबिनाशी चरण साचे सर दा, सरोवर अवर ना कोए नुहाईआ। सुख वेख्यो पुरख अकाल दे घर दा, जो घराने रिहा बणाईआ। झगड़ा मुक्के जन्म मरन डर दा, लख चुरासी ना कोए फिराईआ। जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ढोला पढ़दा, अबिनाशी करता आपणी गोद उठाईआ। उह गुरमुख सन्त सुहेला बिन मंज़ल पौड़े चढ़दा, अद्ध विच ना कोए अटकाईआ। दर्शन करे पुरख अबिनाशी नरायण नर दा, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र

इक उठाईआ। चेत कहे मैं निउँ निउँ करां सलाम, बन्दना बेपरवाहीआ। तक्कया इक अमाम, जो नौबत हक सुणाईआ। पैगम्बर जिस दे ग़ुलाम, बरदे लोकमात अख्वाईआ। सुणदे रहे पैग़ाम, कलमयां विच पढ़ाईआ। दे के गए ब्यान, शरअ विच समझाईआ। अन्त आवे अमाम, जलवा नूर खुदाईआ। जिस दा हकीकत हक मुकाम, जग नेत्र दरस कोए ना पाईआ। उह मार्ग दस्से आसान, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। आवण जावण चुका के कान, बिन कन्नां राग सुणाईआ। शब्दी खण्डा लै के आवे विच मैदान, मदद अवर ना मंग मंगाईआ। जिस दी कोई ना करे पहचान, बेपहचान करे लोकाईआ। शब्दी खेल करे बण रहमान, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। कुछ लेखा जानण वाला ईरान, तहिरान दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं वरतणा जग, जग जीवणदाता दया कमाईआ। जन भगतां कराउणा धुर दा हज्ज, काया काअबा कर रुशनाईआ। कूड़ कुड़यारां लाउणी अग्नी अग्ग, अग्नी तत जलाईआ। गुरमुखो याद रखणा दिहाड़ा अज्ज, अगे अज़ल तों लए बचाईआ। लोकमात चला के तुहाडी यद्द, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नाम निधाना प्याला प्या के मध, मधुर ख़ुमारी दए चढ़ाईआ। लख चुरासी कटण वास्ते सच दवारे लए सद्द, जम की फाँसी रहिण ना पाईआ। दरस देवे जगत दवारयों अगे वध्ध, अनडिठ्ठी मंज़ल पन्ध मुकाईआ। साचा ढोला गाउँदे रहिणा सद, छन्द इक्को दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वड्डी वड्याईआ। जन भगतो तुहाडा मेल होवे सच मिलाप, अस्थान इक्को दयां जणाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा होवे जाप, भूमिका सोई सोभा पाईआ। ओथे रहे कोई ना पाप, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। सज्जण बणे साक, सगला संग निभाईआ। खोल्ह के अंदर ताक, परदा दए उठाईआ। करे हिसाब बेबाक, पिछला लेख चुकाईआ। नज़री आवे साख्यात, निहकलंक जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सच मिलण दा सच अस्थान, भूमिका नज़र कोए ना आईआ। जित्थे झुल्ले धर्म निशान, निशाना अवर ना कोए वखाईआ। सीता सुरती मिले राम, रघुपत देवणहार वड्याईआ। साची राधा मिले काहन, बंसरी नाम सुणाईआ। धुर दा गोबिन्द मिले राम, नानक निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। साचे आसण सिँघासण करे बिसराम, आत्म सेजा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेसा बिन अक्खरां वाली चिठ्ठी दे के जावे गुमनाम, विद्या वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चेत कहे मैं वेखां उह चेत्र, जिस नूं चित्तरकार ना कोए बणाईआ। उह भगतां तक्कया नेर नेर मित्र, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। जो आपणी धारों आवे निकल, अर्श फर्श खेल खिलाईआ। चोटी चढ़े सिखर, सच दवारे सोभा पाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी

भगतां सदा फ़िकर, फ़िकरा नाम सुणाईआ। जिस निहकलंक कल कल्की दा करदे गए ज़िकर, सो ज़ाहर ज़हूर वेस वटाईआ। जो चार वरन अठारां बरन कदे ना होवे भिट्टड़, भाण्डे कुल्ल दे साफ़ कराईआ। जिस दा नाम निधाना शब्द अगम्मा बोल मिठ्ठड़, कूड़ी विख अंदरों दए कढाहीआ। जिस दा धाम अस्थान टिकाणा अनडिठ्ठड़, घर घर बैठा सोभा पाईआ। सो भगतो तुहाडे नालों कदे जावे ना विच्छड़, विच्छड़यां मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दीआं भरीआं गुरमुख सखीआं चिक्कड़, फड़ बाहों गले लगाईआ। जगत प्यार विच कदे ना जावे विसर, भरम भरम ना कोए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा दए वखाईआ। जन भगतो घर ठंडा ठार, त्रैगुण अग्न ना लागे राईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो एह बणया भगत दवार, दवारकावासी जित्थे सीस निवाईआ। चल के आउण गुरू अवतार, पैगम्बर वेख खुशी मनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा करन दीदार, बिन दीद ईद चन्द रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहणी दिसे गुफ़तार, गुफ़त शनीद वज्जे वधाईआ। गुरमुखो प्रभ दे सम्मत दी अगे वेख्यो रफ़तार, जो चले वाहो दाहीआ। कूड़ कुड़यारयां करे ख़बरदार, डोरी हुक्मी तन्द बंधाईआ। जेहड़े भाण्डे घड़े विष्न ब्रह्मा शिव बण घुम्यार, सो ठठयार ठोकर नाल ठुकराईआ। जिस नूं लभ्भदे गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। सो आ गया सांझा यार, जिस दी अली मुहम्मद मंग मंगाईआ। हकीकत दा सरदार, हक करे शनवाईआ। जिस दा लोकमात किसे ने बणाया नहीं कोई मज़ार, महिराबां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दी कला दी लभ्भे ना कोई मिकदार, हद हदूद ना कोए दृढ़ाईआ। उह मुरीदां दा बण के तल्बगार, तल्ब कर के हुक्म सुणाईआ। भगतां दा हो के ख़िदमतगार, ख़ादम बण के सेव कमाईआ। गुरमुखो जिस दा जुग चौकड़ी करदे रहे इंतज़ार, उह मालक मिल्या बेपरवाहीआ। जिस नूं मिल के होणा ना पए खुआर, जूनी जून ना कोए भवाईआ। दरगाह विच्चों देवे ना कोए दुरकार, दरे दरबार पिच्छे ना कोए हटाईआ। जिन्हां दा कोटां विच्चों थोड़ा शुमार, फिगरॉं विच गणत ना कोए गणाईआ। ओन्हां पुरख अकाल दे देणा एतबार, बेएतबारी दए मिटाईआ। साचा नाम दे के शब्द खुमार, ग़मीआं विच्चों बाहर कराईआ। पूरब जन्म दा दे उधार, उदर तों लए बचाईआ। कुदरत दा कादर बण के यार, याराना धुर दा दए समझाईआ। जन भगतो रहिणा बण के बरखुरदार, बरखिलाफ़ी विच मिले सदा सज़ाईआ। सदी चौधवीं आई हार, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। पुरख अकाला शब्दी खिच्च कटार, कटड़ा वेखे दुनी लोकाईआ। सब नूं मारन वाला मार, मुर्दा करे बेवफ़ाईआ। कोटां विच्चों लभ्भ के दो चार, दुराचारां तों लए बचाईआ। रीती दस्स वक्खरी संसार, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलो जैकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण

अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। घर दा मालक सदा प्रितपालक गृह मन्दिर मिले साचा यार, याराना धुर दा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। चेत कहे मैं करां सब नूं चेतन, चिन्ता विच्चों कढाहीआ। परम पुरख करो सच्चा हेतन, हितकारी इक्को लैणा बणाईआ। जो नज़री आवे नेत नेतन, नित नवित होवे सहाईआ। जिस नूं समझे कोई ना मुल्ला शेख़न, शखसीअत तों बाहर आपणी दस्से सिफ्त सालाहीआ। कलयुग अन्त वटा के वेसन, जन भगतां बण के भेतन, भेव अंदरों दए समझाईआ। सन्त सुहेले आया वेखण, गुरमुख गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। चेत कहे सब मन्नणा इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। जन भगतो सम्मत चढ़या महान, जगत मस्ती सब दी दए गवाईआ। हैरानी विच होवे जहान, जवानी सब दी दए दुहाईआ। प्रभू खेल करन वाला महान, जिस नूं लिखे कोए कलम ना शाहीआ। इशारे देण वाला अफ़गान, आफ्त कलयुग धार नाल मिलाईआ। जगत रीती बदलण वाला विधान, विद्या विच्चों विद्या दए समझाईआ। झगड़ा वेखणहारा बीआबान, काया अंदर मनमति मनसा नाल दए दुहाईआ। साचा हुक्म करे ना कोई परवान, परवाना बण के आपणा आप ना कोए जलाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां तों लै के कमान, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो श्री भगवान, कल कल्की नाउँ जणाईआ। जिस दा दिसे ना कोए निशान, निशाने धुर दे रिहा लगाईआ। सो शब्दी धार आया मैदान, मदद अवर ना मंग मंगाईआ। सन्त सुहेले वेखे आण, गुरमुख गोद उठाईआ। आत्म परमात्म मिलणा दस्स आसान, मुश्कल अगला पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्रीती कर परवान, परवाने धुर दे हथ्थ फड़ाईआ। जन भगतो तुहाडा मार्ग सच जहान, जहालत कूड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, भाग सब दा झोली पाईआ। भाग कहे प्रभ दे दे पिछली वण्ड, बिन रसना मंग मंगाईआ। जन भगतां आत्म गंढु, अगे ना होए जुदाईआ। सांतक सति दे ठंड, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सुरत सवाणी ना होवे रंड, कन्त सुहागी लैणा प्रनाईआ। साचा सुणाउणा छन्द, सोहँ ढोला इक दृढ़ाईआ। आदि जुगादी धुर दी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरे नाम दा वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग सुणाईआ। रस अमृत धारा वहे गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तों पल्लू देणा छुडाईआ। नव नौ चार चौकड़ी गई लँघ, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, घर साजण सोभा पाईआ। तेरा सुणां अगम्मा मृदंग, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। द्वैती ढाह दे अंदरों कंध, कंधे उत्ते चुक्क के पार लँघाईआ। तूं दीन दयाल सदा बख्शंद, रहमत तेरी बेपरवाहीआ। पुरी अनन्द दा दे उह

अनन्द, जिस अनन्द विच रिहा समाईआ। जन भगत मिलाउणा तेरा वक्खरा ढंग, तरीका हथ्थ किसे ना आईआ। खेलें खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले इक्को मंग रहे मंग, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, हरि तेरी सच सरनाईआ। कोई रहे ना भागांमंद, तकदीर देणी बदलाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। कलयुग अन्त अखीरी रिहा हंढ, होणी अन्त जुदाईआ। सतिजुग मिल के पवे ठंड, अग्नी तत ना लागे राईआ। सति सतिवादी देणी इक सुगंध, दुर्गन्धी बाहर कढाहीआ। पुरख अकाल तेरे नाम दे होईए पाबन्द, गुरमुख सारे खुशी मनाईआ। हे प्रभू तेरा प्यार नहीं कोई काची वंग, जो हथ्थां बाहां नालों सके तुड़ाईआ। चेत कहे मैं हैरान होया दंग, दंगा दिसे सर्ब लोकाईआ। अबिनाशी करते किहा मेरा हुक्म कोटन कोटि ब्रह्मण्ड वरभण्ड सके ना कोए उलटाईआ। सम्मत शहिनशाही दो विच झगड़यां वाला झगड़े विच लगे जगत, जगा बजगा विच समझ किसे ना आईआ।

✪ सुरजीत सिँघ दी शादी वास्ते बेनती ✪

माझा मालवा जम्मू वेखो निशान दोआबा, दो धार खेल खिलाईआ। जिस दा लेखा लिख के गया शब्द गुरू आदि जुगादी जोबनवन्ता नढ्ढा बाबा, जिस दी उमर सके ना कोए समझाईआ। जिस दा खेल करदा गया वाला बाज़ां, बाज़ी अन्त लगाईआ। छड्ड के जगत ख़ाहिश तख्त ताजा, तख्ता दीन दुनी उलटाईआ। करे खेल वड राजन राजा, भूपत भूप बेपरवाहीआ। जिस ने जगत दा बदलणा समाजा, समें दी शहादत दए भुगताईआ। जिस दे हुक्में अंदर होणा काजा, कार आपणी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सतिगुर शब्द आदि बुढ्ढा नढ्ढा नौजवान, बिन हड्डां सोभा पाईआ। हुक्म संदेशे देंदा रहे फ़रमान, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। पूरब लेखा वेखे मार ध्यान, परदा ओहला रहिण ना देवे राईआ। देवणहारा सब नूं वरदान, झोली ख़ाली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। जन भगतो जगत समाज दी साची बदलणी रीत, रीतीवान दए दृढ़ाईआ। लोड़ रहे ना मन्दिर मसीत, साचा कलमा दए जणाईआ। आत्म परमात्म दस्से प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। जो सदा रहे अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जिस दा मार्ग सदा ठीक, लोकमात ना कोए बदलाईआ। जिस दी सारे करदे गए उडीक, बिन अखां अक्ख खुलाईआ। उस दी आ गई तारीक, तवारीख वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतो तुहाडे कोलों कराउणी इक तस्दीक, शहादत इक्कीआं देणी भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, अगला हुक्म आप दृढ़ाईआ। इक्की सिख करो अरदास, बेनन्ती इक्को इक जणाईआ। पुरख अकाल सब दे कारज करने रास, जो तेरा ध्यान लगाईआ। भगत समाज बणाउणा ख़ास, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। जेहड़ी पूरब कन्यां वाली आस, गोबिन्द शब्दी हुक्म सुणाईआ। जुझार दा इक ग्लास, प्यास सब दी दए बुझाईआ। जन भगतो सारे करो कयास, पंज पोह दए समझाईआ। लक्ष्मण सिँघ गृह कर निवास, इश्नान सब तों ल्या कराईआ। ओस विच डूँग्घी राज़ वाली बात, जो परदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। जन भगतो जे तुसीं खुशी नाल कराउणी चाहुन्दे जीत दी शादी, सुरजीत सिँघ तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। मज़्हबां विच्चों दे के आज़ादी, बरबादी विच्चों बाहर कढाहीआ। सतिगुरू मिलण दे बण के आदी, आदत दयां बदलाईआ। जिस कन्यां दी पूरबले कर्म दी किस्मत जागी, जन्म विच्चों जन्म ल्या प्रगटाईआ। होवण मात वडभागी, वज्जे सच वधाईआ। नवीं साजणा दिती साजी, हुक्म इक मनाईआ। जन भगतो सच्चा प्रेम भगतां दा लागण लागी, दूसर सेव ना कोए कमाईआ। पंज पंज सिख माझा मालवा दोआबा जम्मू इक्ट्ठे हो के मंग मंगो नाल आज़ादी, बीस तुहाडी गणत गणाईआ। इकीवीं नाल रलाओ बिशन कौर दादी, जो दाअवेदार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। इक्की जन भगत पंज वार देण आख, इक्ट्ठे हो के बचन जणाईआ। पुरख अकाल खुशीआं वाली वखा ओह रात, जिस रात विच्चों दिवस सच दा नज़री आईआ। साची मिले दात, दौलत बेपरवाहीआ। गुरमुख खुशीआं दी लै के आउण सौग़ात, फूलण बरखा इक लगाईआ। दो जहान मारन झाक, ब्रह्मण्ड खण्ड अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्की सिख मंगण मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाल चाढ़े रंग, रंग पिछला दए बदलाईआ। सोहणा बणे संग, वज्जदी रहे प्रेम वधाईआ। चढ़या रहे चन्द, गुरमुखां कर रुशनाईआ। गुरदर्शन पए ठंड, तृष्ना अग्न बुझाईआ। सति दी पए गंढु, सके ना कोए तुड़ाईआ। जन भगतो अठारां हाढ़ साढे नौ दा वेला होवे रात नशंग, निसचे नाल तकाईआ। खुशीआं नाल ढोले गाउणे धुर दे छन्द, बिन साजां ताल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। इक्की सिख इक्की लैण हार, हर इक विच सोहँ अंक जुड़ाईआ। पंजां प्यारयां दे सिर उत्ते पीली होवे दस्तार, तन चोला आपणा रंग रंगाईआ। नंगी होवे कटार, चमक विच रुशनाईआ। सोहणा होवे श्रृंगार, अगम्मी रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए दृढ़ाईआ। इक्की हार इक इक्क दी वण्ड, वण्डे बेपरवाहीआ। दस दस दी गंढु, इक नाल जुड़ाईआ। प्यार प्यार दा छन्द, सोहँ

ढोला बेपरवाहीआ। होवे कारज अनन्द, कर्ज़ा पिछला दए चुकाईआ। जुझार पिच्छे गुरमुखां करना पए ना जंग, जगत ना कोए लड़ाईआ। खुशी रखे बन्द बन्द, बन्दीख़ाने तों दए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्की सिख करो ध्यान, शब्दी हुक्म जणाईआ। जे हरि संगत करे परवान, फेर शादी प्रभ नूं भाईआ। चार कुण्ट चार सत्त रंगे झुलदे होण निशान, राज नरैण सेव कमाईआ। तारा सिँघ ब्रह्मण इक निक्का जिहा ल्यावे तीर कमान, रंग सत्त नाल रंगाईआ। लाल सिँघ छे इंच दी ल्यावे कृपान, वड्डी छोटी ना कोए बणाईआ। डाकटर पाल सिँघ सवा रुपईए दा देवे दान, हरि संगत हथ्थ वड्याईआ। केहर सिँघ जल कराए पान, ग्लास ढाई उंगलां वण्ड वण्डाईआ। तेज भान सवा रती करे परवान, केसर किस्म वाला बदलाईआ। गुरमुखो सोहणे बण के आयो महिमान, महिमानी आपणा नाम प्रभू सब नूं दए खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरि संगत आउणा नाल चाउ, खुशीआं विच वड्याईआ। तुहाडे नाल सच्चा भाओ, भगत वज्जे वधाईआ। धुर दा ढोला गाओ, अगम्मी कर पढ़ाईआ। होणा सच न्याउँ, न्याँकार दए समझाईआ। जन भगतां बिना प्रभ नूं मिले कोई ना थाउँ, आपणी डोर तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। तुहाडा परत के बणया पिता माउँ, आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति देवे वड्याईआ। माझा मालवा जम्मू दोआबा खुशीआं वाली लै के आयो सौग़ात, सोहणा रंग बदलाईआ। गोबिन्द दी तुहाडे लाल मिल के सुहञ्जणी होवे रात, भिन्नड़ी वज्जे वधाईआ। सतिजुग दी होणी प्रभात, भरम दए मिटाईआ। गुरमुख सिँघ लेखा लिखे नाल कलम दवात, शहादत इक भुगताईआ। लेखा रहे जुग आदि, जुग चौकड़ी वड्याईआ। शब्दी गोबिन्द दा गुरमुखो घराना करना आबाद, जो तुहाडे पिच्छे गया लुटाईआ। इस दा होर ना कोई लभ्भयो जवाब, ख़ताब देवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा हुक्म इक वरताईआ। जो दस्सया सो शब्दी हुक्म ठीक, ठाकर दए दृढ़ाईआ। कुछ लेखा सुरजीत दी माता कौर रणजीत, कलम नाल वड्याईआ। प्रभ दे कोलों मंगणी पए भीख, अबिनाशी करते झोली देणी भराईआ। इक्कीआं नूं करनी पए तस्दीक, शहादत विच गवाहीआ। हरि संगत विच तौफ़ीक, जो तोअफ़े विच प्रेम प्यार वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिजुग मार्ग दी हुक्म अंदर कर के आप तस्दीक, अगला लेखा दए बणाईआ।

✪ ५ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर किंगजवे कैंप धीरपुर दिल्ली-६ ✪

सम्मत शहिनशाही दो कहे मेरा पंचम चेत, नव नौ चार दए वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा खोले भेत, भेव अगला दए जणाईआ। जन भगतो सब तों पहलों साख्यात तक्को नेत नेत, नित नवित दा मालक बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म करे हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मालक इक अख्वाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड अगम्मे देस, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर करदे गए आदेस, सीस सजदयां विच झुकाईआ। जिसदा भविख्त बिन लिख्त शब्दी धार दस्स के गया दस्मेश, गोबिन्द खोजी खोज खुजाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी खेल करनहारा हमेश, हमसाजण हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। पंज चेत कहे सम्मत शहिनशाही दूजा, दुतीआ भाओ रहे ना राईआ। जन भगतां भेव खुल्ले अंदरों गूझा, रमज़ इशारा आप लगाईआ। गुरमुख रहे कोई ना सुत्ता, नेत्र लोचन अक्ख खुलाईआ। गोद उठाए धुर दा पिता पुतां, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। साचा मार्ग दस्से सुचा, संजम इक्को इक समझाईआ। लेखा रहे कोई ना लुका, सनमुख हो के दए दृढ़ाईआ। कलयुग वेला अन्तिम ढुक्का, पैंडा आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे भाणे विच कदे ना रुका, ना कोई हुक्म मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत शहिनशाही दूजा कहे पंचम चेत दा वेखो दिन, रुत्त बदल के गया आईआ। गुर अवतार पैगम्बर लओ गिण, चार जुग दे बैठे सीस निवाईआ। जिनां दा खेल वेख्या भिन्न भिन्न, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। तत्तां वाला छड्ड के चिन्न, चिन्ता जगत वाली चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। पंज चेत कहे प्रभ दा शहिनशाही सम्मत आ गया दो, दोहरी धार रिहा बणाईआ। निरगुण सरगुण आपे हो, होका दे के रिहा सुणाईआ। भगत सुहेले अंदर कर के लो, लोचण आपणी अक्ख खुलाईआ। जगत नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल बणाईआ। कूड़ी क्रिया सके ना छोह, धुर दा मेला रिहा जुड़ाईआ। नाम निधाना लै के ढोआ ढो, सच दवारे गया आईआ। जिस दा मलतब समझे ना को, सो साहिब दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे पंच चेत दा आ गया दिन सुभागा, दो जहान वज्जी वधाईआ। शब्द अगम्मी मारे आवाज़ा, सुत्यां रिहा उठाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह तक्को राजन राजा, भूपत भूप नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा निरगुण काजा, सरगुण हुक्में अंदर फिराईआ। सो दो जहान निरवैर हो चलाए जहाज़ा, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ।

४७७ १६

कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखण आया जगत तमाशा, शाह सुल्तान आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी दीन दुनी करदा रिहा हासा, हस्ती वेखो बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम चेत कहे सम्मत शहिनशाही दो दा की करां ब्यान, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर होए सवाधान, आपणी आप लैण अंगड़ाईआ। नेत्र लोचण नैण उठाण, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। चलो वेखीए तक्कीए शाह पातशाह श्री भगवान, जो आदि जुगादी पिता माईआ। जो जुग चौकड़ी लहिणा देणा चुकावे आण, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जिस दा कौल इकरार नाल कृष्ना काहन, कायनात समझ सके ना राईआ। सो भगवन्त प्रगट होया मेहरवान, महबूब आपणा वेस वटाईआ। निगाह मार ज़िमीं असमान, लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कमाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे पंज चेत सब तों वड्डा मात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी मंगदे गए दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। लेखा जाणे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक भेव खुल्हाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। सच दवारे देवणहार शाबाश, मेहर नज़र इक उठाईआ। जो भविख्तां विच गया आख, अन्तिम ओहो पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान बेपरवाहीआ। पंच चेत कहे सम्मत शहिनशाही दो गया आ, आगमन विच सारे ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दया कमा, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच दवारा इक सुहा, सोभावन्त वेख वखाईआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना, सो परदा रिहा उठाईआ। जिसदा लभ्भे ना कोए निशान, सो निशाने रिहा गडाईआ। जिस दा समझे ना कोए ईमान, सो अमल आपणा नाम गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे मैं करां ख़बरदार, शब्द अगम्मी ढोला गाईआ। जन भगतो आपणा वेखे सच्चा घरबार, जो घराने रिहा बणाईआ। जिस दा राह तक्कदे गए जुग चार, चौकड़ अक्ख खुल्हाईआ। भिच्छया मंगदे गए गुर अवतार, पैगम्बर झोलीआं डाहीआ। सो देवणहार दातार, आपणी दया कमाईआ। जिस दा लेखा सिफ्त तों बाहर, सिफ्त करे ना कलम शाहीआ। रसना सके ना कोई उच्चार, कथनी कथ ना कोए वड्याईआ। सो भगतो तुहाडा बणा सच्चा दरबार, दिलां दा यार नज़री आईआ। जिस नूं कितों ना लभ्भया प्यार, तिस मेहर मुहब्बत झोली पाईआ। जस दा निशाना रहे सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंज चेत कहे दिल्ली दरबार दा वेखो तख्त, तख्ता दीन दुनी उलटाईआ। शब्द अगम्मी इक्को सख्त, सख्ती नाल भुगताईआ। दूजा रहिण नहीं देणा वक्त,

वेला दए गवाहीआ। होए खुआरी जगत, जागरत जोत हुक्म जणाईआ। सांतक सति रहे जन भगत, भगवन दया कमाईआ। गुर अवतारां पूरी कर के लिख्त, लखां तों ख़ाक दए बणाईआ। गुरमुखां खोल्ह के अंदरों दृष्ट, दृष्टी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। दिल्ली दरबार दा तक्को सिँघासण, सिँघ आसण नज़री आईआ। जिस नूं कैहिंदे पुरख अबिनाशन, उह पुरखां तों परे बैठा डेरा लाईआ। खेले खेल खेल तमाशन, हुक्मी हुक्म आप समझाईआ। जन भगतां दस्से अगम्मी गाथन, निरगुण निरवैर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दिल्ली सिँघासण कहे मैं सोहया भगत दवार, भाग बणया बेपरवाहीआ। पहला हुक्म दयो संसार, सच संदेसा इक अल्हाईआ। सन्त जगत करो ख़बरदार, बेअन्त हथ्थ वड्याईआ। लेखा लिख के भेजो वारो वार, आया धुर दा इक्को माहीआ। भगत सुहेले हो जाओ ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पंज चेत कहे अज्ज दा लिख दयो लेख अवल्ला, आलम समझ कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, कलयुग काया रिहा बदलाईआ। साध सन्त जगत वासना जो रल के मारन हल्ला, किसे दी चलण ना देवे चतुराईआ। शाह सुल्तान फड़ाए मूल ना पल्ला, भरमे विच भरम लोकाईआ। सहिज सुभाउ शहिनशाही सम्मत दो आ गया दवारे सच महल्ला, परदा ओहला रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। पंज चेत कहे मेरा संदशा दे दयो राष्ट्रपत, नौ चेत नूं घर घर होए शनवाईआ। पुरख अकाल परत के आ गया वत, जो बेवतनां तों वतन कराईआ। शब्द अगम्मी लावे सट्ट, सिट्टेबाज़ी वेखे जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिधर चाहो लओ नठ्ठ, बिना पुरख अकाल ना कोए सरनाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं लाउणा फट्ट, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मिसल मशहूर मच्छी मुड़दी पत्थर चट्ट, सो वेला गया आईआ। दिल्ली दरबार आण के खोल्ह दिता सच्चा हट्ट, सच वणजारा बणया बेपरवाहीआ। दूसर वस्त किसे रहिण नहीं देणी हथ्थ, साधां सन्तां दयो सुणाईआ। राज राजान शाह सुल्तान प्रधान सारे करने वस्स, प्रैज़ीडैंट अडैंटी कारडां उत्ते जगत फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। पंचम चेत कहे ख़बर दे दयो प्रधान मंत्री, जगत मंत्र कम्म किसे ना आईआ। समझ सके ना कोई पंडतां वाली पत्री, नैण नज़र आवे ना बेपरवाहीआ। धुर दा हुक्म ना कदी लिख्या गया निरअक्खरी, फ़रमाने विच जणाईआ। जो तोलणहारा दो जहान बिना तक्कड़ी, कंडा इक्को इक उठाईआ। झगड़ा पैंणा शूद्र वैश ब्राह्मण शतरी, शत्रु सारे देणे बणाईआ। स्यासत रह जाए हकड़ी बकड़ी, हुक्म चले शहिनशाहीआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। धुर संदेसा दे दयो मनिसटर होम, धुर दा हुक्म हुक्म मनाईआ। पुरख अकाल ने वस कर ल्या आपणे ओम, विष्न ब्रह्मा शिव दी चले ना कोए चतुराईआ। दूजा रहिण नहीं देणा दोम, द्वैत भावना बाहर कढाहीआ। तीजा होर ना कोई सोम, सुअम्बर इक्को देणा रचाईआ। शब्दी तेज नाल करने मोम, वजूद सारे जाण बदलाईआ। पुरख अकाल दी इक्को दस्सणी आत्म कौम, झगड़े मज़्हबां वाले मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुख दी नींदे किसे ना देवे सौण, सोहणा हुक्म वरताईआ। पंज चेत कहे मेरा हुक्म धुर फ़रमाना, फुरतीआं विच सुणाईआ। साधो सन्तो प्रभ दे साहमणे आ के दस्सो गा के गाणा, जो बिन रसना जेहवा राग अल्लाईआ। तिन्न चेत तों लै के पुरख अबिनाशी बदल ल्या आपणा टिकाणा, भूमिका समझ किसे ना आईआ। तख्त निवासी बण के धुर दा राणा, मुकामे हक सोभा पाईआ। भरम विच रहे ना कोए अंञाणा, बोध नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता कार कमाईआ। पंज चेत कहे मैं आया दिल्ली दरबार, दवारा इक्को देणा सुहाईआ। सब नूं वेखणा चढ़ के मंज़ल मनार, परदा परदयां विच्चों उठाईआ। मन वासना दा रहिण नहीं देणा जैकार, जैकार जगत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पंज चेत कहे मैं दस्सणहारा सति सच, सहिज नाल जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां अंदर गया रच, रचना आपणी अवर वखाईआ। चरण कँवल दे के ब्रह्म मत, बिन विद्या करे पढ़ाईआ। बिन अक्खां खोल्ह के अक्ख, नेत्र नेत्र विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुणो हुक्म पुरख अकाल, अकल कलधारी रिहा जणाईआ। अख़ीरी संदेसा बाग़ दयाल, बाग़वान धुर दा रिहा जणाईआ। शब्द अंदर जागणा सन्त कृपाल, सिँघ रिहा उठाईआ। मुनी सुशील मार ध्यान, ज्ञान देवे बेपरवाहीआ। निरँकार निरँकार निरँकार कोलों पुच्छे सच भूमिका अस्थान, बिन छप्पर छन्न देणा दृढ़ाईआ। महीना अस्सू भज्जया आउँदा विच जहान, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर खेल करना श्री भगवान, दर दर जा के पुछे थाउँ थाँईंआ। किसे नूं लुकण ना देवे हुक्म फ़रमान, फ़ुरनयां विच्चों फड़ के बाहर कढाहीआ। विद्या वाली चलण ना देवे कलाम, अगम्मता विच्चों अगम्मता लए प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुरुआं विच्चों सतिगुर दा झुलदा इक निशान, निशानयां दे निशाने गए गवाईआ। सो चढ़ गया ज़िमी तों उत्ते असमान, असमानां दे उत्ते मेहरवान दए वखाईआ। सब नूं मन्नणी पए एसदी आन, जो आपणा रंग रिहा वखाईआ। सच्याई दा सब नूं होणा पए गुलाम, बुरयाई दी लोड़ ना कोए रखाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पुरख अकाल हुन्दा रिहा बदनाम,

कलयुग अन्तिम तेरा नूर करां रुशनाईआ। प्रगट हो के योद्धा सूरबीर बलवान, बलीआं दे बल देवे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्में अंदर हुक्म दए प्रगटाईआ। निशाना कहे मैं चढ़ गया ओस दरबार, जिस दुआर दा भेव कोए ना पाईआ। जिस नूं डण्डौत बन्दना करदे गुर अवतार, पैगम्बर सीस झुकाईआ। अन्त बदल के आ गई ओस दी वार, जिस दी वारता गा गा सारे झट गए लँघाईआ। लेखा लिख लिख गए विच संसार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दए गवाहीआ। ओस ने महीने अस्सू विच सारयां दे कढ्ढ देणे इशतहार, होए फरंट कढ्ढ के वारंट आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। धुर फ़रमाना कहे मैं बली बलधारी, बल सब दा वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा जोत जगे इक निरँकारी, बहुते निरँकार कम्म किसे ना आईआ। सब दी इक नाल पक्की रहे यारी, दुहागणां वाले याराने सारे गए तुड़ाईआ। एह खेल अगम्म अपारी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म मनाईआ। जन भगतां दे के धुर दी सच्ची सरदारी, सदा दे दुखड़े दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे मेरा वक्त होया चालू, लोकमात वज्जी वधाईआ। साहिब सतिगुर तक्कया परम पुरख कृपालू, किरपा निधान बेपरवाहीआ। आदि जुगादि दीनां नाथ सदा दयालू, ग़रीब निमाणे आपणी गोद उठाईआ। जो कलयुग अन्त अख़ीर गुरमुखां सुरत संभालू, सभनां दे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं किसे दी करदा रिहा उडीक, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सो वेला वक्त पहुंचयां आण तारीख, तरीका अगला दयां दृढ़ाईआ। साहिब स्वामी हो के नज़दीक, दूर दुराडा रिहा समझाईआ। जिस दे विच हक तौफ़ीक, वाहिद नूर ख़ुदाईआ। जो पूरी करे उम्मीद, कामल मुर्शद नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे मैं किड्डा वड्डा बणया लोकमात, मति आपणी दिती गवाईआ। पुरख अकाल दी सुण के अगम्मी बात, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। नव नौ चार पिच्छो आउण वाली अज्ज दी उह रात, जिस रात विच रुत गुर अवतार पैगम्बर जाण बदलाईआ। मैनूं याद आई काहन वाली उह बात, जो बिना मुरली धुन विच जणाईआ। जिस दा सब तों वक्खरा स्वाद, रसना जेहवा ना कोए समझाईआ। जिस दे कारन एथे बद्धी मुनयाद, पिछला लेखा बिन कलम शाही शहादत रिहा भुगताईआ। ओस वेले गवालयां दी इक्कीआं दी जमात, काने दीआं कलमां ते मिट्टी दी दवात, फट्टी ज़मीन लई बणाईआ। तक्क के उपर आकाश, खुशी विच कर के हास, अन्तर कर के आस, प्यास लई वधाईआ। जिंनां चिर ना मिले सर्ब गुणतास, साचे मन्दिर ना करे निवास, निरगुण

४८१
१६

जोत ना होए प्रकाश, कूड़ी क्रिया ना होवे फाश फाश, दुखड़ा रोग ना दर्द मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म कहे मैं तकया पिछला वेला, जो आपणा पन्ध गया मुकाईआ। प्रभ तक्कया सज्जण सुहेला, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा वक्त ना होए दुहेला, आदि जुगादि वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल वेख वखाईआ। धुर दा खेल कहे मैं बड़ा खिलाड़ी, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। मैं लेखा जाणा कृष्न मुरारी, जो मुरली मनोहर आप सुणाइंदा। जिस एथे रात गुजारी, ध्यान इक्को विच टिकाइंदा। इक्कीआं दी आई वारी, एका आपणा रूप बदलाइंदा। अधर्मी आ गया इक वैश वापारी, जो परशोतम नाम अखवाइंदा। उह वेख के खेल अपारी, दूर खलोता अक्ख उठाइंदा। कृष्न सहिजे आवाज़ मारी, इशारे नाल समझाइंदा। कुछ मंग दर तों भिखारी, बिना मंगयां भेंटा तेरी झोली पाइंदा। ओस किहा मेरी ओसदे नाल ला दे यारी, जिस दा याराना ना कोए तुड़ाइंदा। इक्कीआं किहा तेरे नालों मंगण दी साडी पहलों वारी, कृष्न साडे नाल मिल के झट लँघाइंदा। रात बोली मैं भिन्नड़ी रैण सब तों न्यारी, निराकार आपणा हुक्म जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाइंदा। इक्कीआं किहा साडी अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। असीं सिध्धे वसणा ओस दे पास, जिसदा पासा ना कोए बदलाईआ। परशोतम किहा मैं ओस दी वेखणी रास, जो बिना गोपीआं काहन रिहा नचाईआ। मैं तक्कणा उह बाप, जो पूत सपूते गोद उठाईआ। कृष्न किहा उह पुरख अकाल आप, जिस मेरी बणत बणाईआ। जे ओस नाल जोड़ लओ साक, मैं सब नूं दयां समझाईआ। द्वापर चलदा रहिणा त्रैलोकी दा नाथ, अनाथां दया कमाईआ। कलयुग वेखणा डूँघा खात, जगत अन्धेरा नज़री आईआ। झगड़ा दिसदा ज़ात पात, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। अन्तिम निरगुण जोत प्रगट होणा पुरख अबिनाश, जोती जाता शहिनशाहीआ। उसने करना खेल तमाश, अगम्म अगम्मढ़ी कार कमाईआ। फेर तुहाडी पुछणी वात, लेखा हुण दा दए चुकाईआ। लेखे लावे अज्ज दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। बच्चे किहा की उह मेरा होवे बाप, कृष्न किहा नहीं उसदा सब तों वक्खरा प्रताप, जिस दा आदि अन्त लेखा कहिण कोए ना पाईआ। इक्कीआं किहा की उह सानूं रखे याद, याददाशत विच टिकाईआ। कृष्न किहा हां तुहाडे काया खेड़े कर के आबाद, वास्ता आपणे नाल बणाईआ। परशोतम किहा की मैनूं देवें दात, वस्त अगम्मी इक वरताईआ। कृष्न किहा सुण मेरी बात, तैनूं दयां जणाईआ। उह तेरे बाप दा होवे बाप, जिस दी समझ किसे ना आईआ। इक्कीआं किहा की सच दिता आख, कृष्न किहा आख, बिन कलम शाही लेखा दिता बणाईआ। परशोतम किहा मेरा ओस दे नाल जोड़ दे नात,

जिस दा नाता ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्कीआं किहा सानूं इस विच दिसदा कोई धोखा, ऐवें मिल के रिहा परचाईआ। कृष्न किहा मैं मार्ग दस्सां सौखा, सहिज नाल समझाईआ। जिस वेले परम पुरख दे शहिनशाही सम्मत दा आया मौका, मौके नाल सारे लए उठाईआ। आपणे नाम दा दे के होका, हुक्म नाल ल्याईआ। हुण तेरी ब्राह्मण माटी दा पोचदे चौंका, फेर तुहाडे अंदरों करे सफ़ाईआ। परशोतम तूं होवें ओसदा पोता, जिस दा रोसा नज़र किसे ना आईआ। परशोतम किहा की पहिचाण ते की सलोका, मैनूं दे समझाईआ। ओधरों मालण आ गई देंदी होका, कूक कूक अल्लाईआ। इक बुड्ढी निकली अंदरों कोठा, कुण्डा दिता खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा दृढ़ाईआ। पंज चेत कहे मैं इस दुआर दी दस्सदा रिहा कहाणी, जिस दा लेखा ना कोए समझाईआ। एह खेल कोई बहुती नहीं पुराणी, द्वापर दा वेला याद कराईआ। उह फुल्लां वाली सवाणी, पुरख अकाल आपणा वेस रही बदलाईआ। ओन सहिज नाल पुछया भेव दस्सो महानी, बिन महिंमां महिंमां दयो दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। कृष्न किहा एह खेल अपार, मैं सब नूं दयां समझाईआ। इक्की करो विचार, वेला वक्त दए गवाहीआ। जिस वेले कल कल्की लै के आया अवतार, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। एस धरती उत्ते बणे ओस दा धर्म दवार, भगत भगवान मिल के खुशी मनाईआ। तुहाडा पूरब लहिणा देणा देवे उधार, लेखा आपणी हथ्थीं दए मुकाईआ। ओस मालण ने फुलां वाले गुंद के हार, कृष्न दे हथ्थीं दिते पहनाईआ। खुशीआं नाल गा के ताल, ढोला दिता सुणाईआ। आह वेख मेरा हाल, बिरहों विच कुरलाईआ। एह बचन सुण के परशोतम बच्चा लाल, नेत्र रो के मारे धाहीआ। मैं बच्चा नहीं गवाल, ज़ात आपणी वण्ड वण्डाईआ। कृष्न किहा मैं तेरी करां भाल, भोले भाउ दयां वड्याईआ। तूं उस दा बणना लाल, जिस दे लाल चार वरन दी सेव कमाईआ। तेरा लेखे लग्गे एह स्वाल, जवाब मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले सृष्टी होई बेहाल, चार कुण्ट दए दुहाईआ। किरपा करे पुरख अकाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा झोली पाईआ। भगत दुआर कहे मैं क्यों बण गया लोकमात, मता आपणा दयां समझाईआ। मैनूं याद द्वापर दी बात, बातन हो के भेद खुल्हाईआ। इक्कीआं नूं दिती दात, सुगंद खा के आपणी गंढु बंधाईआ। बच्चे दा जोड़ के नात, परशोतम दिती वड्याईआ। जिस वेले आवे पुरख अबिनाश, मेला सब दा लए कराईआ। अगले जुग दी झोली पा के रास, रस्ता सब दा दए उलटाईआ। भगतां नूं दे के विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, लेखा जाणे खेल तमाश, परदा ओहला दए उठाईआ। इक्कीआं किहा आह लै प्रभू आपणे हार, हिरदे विच हरि रूप नज़री आईआ। कृष्न किहा नाल प्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अन्ध अंध्यार, प्रगट होवे धुरदरगाहीआ। तुहाडे कोलों करावे आपणा श्रृंगार, सोहणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। परशोतम किहा दस्स मेरे भगवान, मैं आपणी मंग मंगाईआ। कलयुग अन्त की होवे निशान, निशाना दे समझाईआ। की मैं मानस होवां कि इन्सान, बिरध होवां कि जवान, बाली बुध दे दृढ़ाईआ। कृष्न किहा प्रभू मेरा मेहरवान, आदि जुगादी जाणी जाण, सद वेखे मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बाला कहे आपणे हुक्म दी दस्स धार, बिन संग दे समझाईआ। कृष्न किहा जिस वेले किरपा करे निरँकार, मेहर नज़र इक उठाईआ। परशोतम तेरे प्रेम दी खिड़े गुलज़ार, गुलज़ार सिँघ तेरा नाम रखाईआ। गल पा के फुल्लां दे हार, पूरब लेखा दए मुकाईआ। अगे वेखणा खेल निरँकार, दीन दुनी दए हिलाईआ। चार कुण्ट रोवण ज़ारो ज़ार, दहि दिशा पए दुहाईआ। सच्ची रहे ना कोई सरकार, सरोकार ना ख़लक खुदाईआ। थोड़े भगतां उत्ते रहे बहार, बाकी ख़िज़ां रूप जाए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। लेखा सब दा पूरा होणा, होणी घर घर वेख वखाईआ। बिन दुक्खां तों सब ने रोणा, दुखियां दी सुणे कोए ना आहीआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले भगत सुहेले परम पुरख नूं पाउणा, आत्म परमात्म मिल के ख़ुशी मनाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा दुरमति दाग़ धवाउणा, मन की मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे मैं कोई करन नहीं लग्गा ख़ुदी, तकब्बर विच ना कोए वड्याईआ। मैं सब दी भृष्ट करनी बुद्धि, बुद्धिवान रहिण कोए ना पाईआ। जेहड़ी खेल किसे नहीं कीती चौंह जुगी, उह पुरख अकाल कोलों देणी वरताईआ। वसदी रहे कोए ना झुग्गी, अग्ग लग्गे थाउँ थाँईंआ। लुक्कया रहे कोए ना खुड्डीं, खुडयां विच्चों बाहर कढाहीआ। लाड़ी मौत चार कुण्ट दहि दिशा आपणे प्यार दी पावे लुड्डी, वांग मलंगां नच्चे टप्पे कुद्दे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो दिल्ली दरबार विच तुहाडे दिलां दा राह, रहबर हो के रस्ता दए वखाईआ। चौहां कुण्टां सदा बणया रहे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जागदयां सुत्यां तुहाडे नाल शब्दी करे सलाह, अक्खरां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। कोट जन्म दे बख़्श देवे गुनाह, जो प्रेम नाल चरणां सीस निवाईआ। अज्ज तों बण के दो जहानां दा सच्चा शहिनशाह, सिर तुहाडे हथ्थ टिकाईआ। होका दे दयो थाँ

४८४
१६

थाँ, परम पुरख परमात्म आ गया बेपरवाहीआ। ख़बरदार हो जाओ जेहड़े खांदे सूर गाँ, सब दी करनी सफ़ाईआ। मातलोक विच उडण नहीं देणे विष्टा फोलण वाले काँ, हँस रूप गुरमुख लैणे बणाईआ। बिना भगत तों जनेंदी किसे कम्म नहीं आउणी माँ, लख चुरासी कूकर सूकर जन्मां विच भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। भगत दुआर कहे कोई ना समझयो एह घराणा निक्का जिहा विच दिल्ली, दलीलां दा मालक देवणहार वड्याईआ। तुहानूं कुछ पता होणा एहदे विच किन्नी इट्ट लाई पिल्ली, जिस दा लेखा पिच्छे दिता लिखाईआ। एसे साल विच सब दी सुरती कर देणी ढिल्ली, सिर सके ना कोए उठाईआ। कोई रहिण नहीं देणा एधर ओधर शेख़ चिल्ली, शरारत वाले सारे देणे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। दिल्ली दरबार कहे मेरा वेखो ज़रा दब्बा, हुक्म चले बेपरवाहीआ। सब नूं भुल्लया चाचा अब्बा, अम्मी याद ना कोए कराईआ। तोबा होई हाए रब्बा, दुहाई विच ख़ुदाईआ। काया ख़ाली होणा सब दा डब्बा, डौरू डंक ना कोए वजाईआ। एसे कारन सत्त रंग निशाना गड्डा, गुडलक कहिण वाले सारे मुख जाण भवाईआ। एह झुलदा रहिणा सदा, शाह सुल्तानां ईन मनाईआ। इस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर बध्धा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव रहे कमाईआ। जन भगतो तुहाडा वध्धण लग्गा अग्गा, अगलवांढी हो के तुहानूं मिले चाँई चाँईंआ। हुण पूरे सतिगुर दा बिना रसना तों चखयों मज़ा, जो आपणा रस बिना रस्ते दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दरबार कहे मेरा असली वेला रात दे साढे नौं, पूरा लेखा दयां जणाईआ। मैनूं कुछ दीन दुनिया नाल गौं, गाउँ गाउँ दयां हिलाईआ। मैं इक उपजाउणा नाउँ, नौ नौ देणे भुलाईआ। जन भगतां फड़ के बाहों, सिधे पुरख अकाल नाल मिलाईआ। होर किसे दा लग्गण नहीं देणा दाओ, बुद्धिवानां चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। साढे नौ कहिण मैं लिखाउणी अगम्मी इबारत, जिस दा हरफ़ हरूफ़ ना कोए समझाईआ। थोड़ी जेही अद्धे घंटे लई सारी दुनिया उत्ते कर देणी शरारत, शरअ विच आपणी अग्ग लगाईआ। साढे बारां सकिंटां विच जन भगतां दी कर के सफ़ारश, चार युग दे लिखे होए सफ़े देणे बदलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दी सोहणी सुहा के इमारत, बिन तेल बत्ती दीपक करना रुशनाईआ। मन दी रहे कोई ना साज़श, पंच विकार ना कोए लड़ाईआ। तृष्ना दी मेट देणी आतश, अग्नी अग्ग बुझाईआ। इक्को नाता जोड़ना आपणे नाल वास्तवक, वस्तू इक्को झोली पाईआ। ढाई महीनयां पिच्छो झगड़ा छेड़ देणा विच नास्तिक, नास्तिकां नूं अंदरों देणा उठाईआ। सारयां प्रधानां दी किसे कम्म नहीं आउणी स्यासत, ओन्हां आपे लभ्भणा बेपरवाहीआ। ओन्हां दे

कोलों साढे तिन्न हथ्थ सरीर दी खोह लैणी रयासत, बिना राजे तों रईयत कम्म किसे ना आईआ। किसे ने करनी नहीं हिफ़ाज़त, अगे हो ना कोए बचाईआ। वेख्यो किस तरा चार कुण्ट बदलदी वज़ारत, वज़ीरां दे फ़कीर फ़कीरां दे हकीर नज़री आईआ। एह अज्जे थोड़ी जेही करनी विच बनावट, इस साल दा निशाना देणा वखाईआ। अगले साल तों किसे नहीं करनी रुकावट, हुक्म नाल सारे देणे उठाईआ। प्रभ दे नाम दी लग्गी होई केहड़ा मेटे बग़ावत, बग़लगीर मिल के कोई संग ना निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिल्ली दुआर दी बड़ी सोहणी नींह रिहा रखाईआ। नींह कहे मैं बड़ी डूँघी, चार युग हथ्थ किसे ना आईआ। मैं बणी रही गूंगी, बाले आपणे विच छुपाईआ। हुण वेख्यो मैं सारयां नूं रही टुम्बी, सोया कोए नज़र ना आईआ। सच पुछो मैं अस्सू तों बाद बण जाणा लुंडी, लंडयां घर डण्डे देणे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। भगत दुआर कहे मैं दाअवे नाल कहां आ गया भगवान, होका सब नूं देणा सुणाईआ। सारे तक्क लओ झुलदा निशान, जिस ने धर्म धर्म विच्चों देणे बदलाईआ। कोई हो ना जावे हैरान, हैरानी सब दी देणी कढाहीआ। जे कोई अंदर किसे दे आराम, परदा उस दा देणा उठाईआ। चलो ज़रा मिल के सामणे हो के वेखो किथ्थे वसदा नाम, किथ्थे मिलदा जाम, कवण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होणा इक्को हुक्मरान, हकूमत सब दी दए गवाईआ। साढे नौ कहे वेले दी चंगी तरा करयो पहचान, पच्छिम दक्खण उत्तर पूरब ध्यान लगाईआ। बिना श्री भगवान तों दूजी रहिण नहीं देणी कोई दुकान, हटवाणे बणीए भज्जण थाउँ थाँईआ। हुक्म मिलणा फ़रमान, फुरने धुर दे दए सुणाईआ। सब नूं मन्नणा पए इक आदि जुगादी नौजवान, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बहुता लेखा अज्ज दी रैण दए लिखाईआ।

✪ रात साढे नौ वजे ✪

सति धर्म तेरी साची जड़, भगत दुआर नींह धराईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खड़, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। धुर दा ढोला अगम्मा पढ़, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। साची मंज़ल आपे चढ़, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, हउमे हंगता रिहा मिटाईआ। सति दवारा खोल के धुर दा साचा सर, सरोवर इक्को इक प्रगटाईआ। दुरमति मैल धुआउणी नारी नर, नर नरायण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। सति धर्म तेरा लेखा मात, हरि करता आप बणाईआ। वस्त अमोलक दे के दात, जन भगतां संग रलाईआ। नाम भण्डारा

अगम्म सौग़ात, धुर दा सोहला सच सुणाईआ। कलयुग मेट कूड़ अन्धेरी रात, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी बदल देवे हालात, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड कायनात, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सति धर्म तेरा लेखा जग, हरि करता आप जणाइंदा। कलयुग अग्नी वेखे कूड़ी अग्ग, चार कुण्ट फोल फुलाइंदा। साचा समझे कोई ना हज्ज, हाजत पूर ना कोए वखाइंदा। मन वासना सृष्टी रही भज्ज, दहि दिशा पन्ध ना कोए मुकाइंदा। साचा सुणे कोई ना नद, अगम्मी राग ना कोए अलाइंदा। जगत विकार पी के मध, अमृत रस मुख ना कोए चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। सति धर्म तूं वेख धर्म दवार, हरि करता आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़, परदा देणा चुकाईआ। हरि पुरख निरँजण पावे सार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि निरँजण कर उज्यार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। एकँकारा दए अधार, मेहर नज़र उठाईआ। अबिनाशी करता करे प्यार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। श्री भगवान दए हुलार, सच हुलारा इक जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल अगम्म अपार, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म लेखा जाण आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। सति धर्म तेरा एका एक, एकँकार आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चुक्के टेक, टिक्का मस्त खुमारी दए लगाईआ। माया ममता मोह करना भेंट, झगड़ा कूड़ दए मुकाईआ। ठाकर बण के खेवट खेट, साचा बेड़ा पार लँघाईआ। जन भगतां दा सुहञ्जणा होवे चेत, थित पंज मिले वड्याईआ। सृष्टी संसार कटण वाला खेत, रुत्त आपणी रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वतराईआ। सति धर्म तेरा लेखा सच गृह, घर मन्दिर इक्को इक वखाईआ। जित्थे पुरख अबिनाशी रहे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच दवारे धाम बहे, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। हुक्म अंदर आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्टी दृष्टी करदा आया लय, सिर सके ना कोए उठाईआ। एकँकार खेले खेल अगम्म अपार आदि जुगादि जुगा जुगन्त इक्को है, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सति धर्म कहे मैनूं रख्या केहड़े थाँ, पुरख अकाल दे जणाईआ। कलयुग सृष्टी वेखी भरी गुनाह, पतित पुनीत रूप ना कोए बणाईआ। साचा भुल्लया आत्म तेरा परमात्म नाँ, धुर दा ढोला हक ना कोए पढ़ाईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी तुध बिन करे ना कोई न्याँ, अदल अदालत नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग कूड़ फिरे शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। दीन मज़्हब होए वैरान, वैरी घर घर बैठे डेरा लाईआ।

साचा मिले ना कोई अमाम, ईमान हक ना कोए दृढ़ाईआ। दीपां खण्डां विच झुलदे वेखे निशान, निशाना पार ना कोए कराईआ। जुग चौकड़ी देंदे गए ब्यान, शहादत अन्त ना कोए भुगताईआ। बिन अक्खरां मिले ना किसे ज्ञान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मुहब्बत विच मिले ना आण, महबूब बेपरवाहीआ। तेरा खेल ख़ालक महान, ख़लक समझ सके ना राईआ। मैं वेखां मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। किस दवारे मिले श्री भगवान, भगत सुहेला धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दे उठाईआ। सति धर्म कहे मैं वसां केहड़ी कूट, अबिनाशी करते दे जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे झूठ, वरन बरन करन लड़ाईआ। दर दिसे ना कोई ऊँचो ऊँच, अगम्म अथाह मिले ना किसे सरनाईआ। महल अटल सके कोई ना पहुंच, मंज़ल विच थक्के पाँधी राहीआ। बुद्धी करे कोई ना सोच, अनुभव भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे जणाईआ। श्री भगवान कहे सुण सति धर्म, पहली वार दयां जणाईआ। तेरा भगत दवारे होवे जन्म, जन्म भगतां नाल समझाईआ। पुरख अकाल दा रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सृष्टी दा अन्तिम वेला आया मरन, जीवत रूप ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल करनी करन, करता बेपरवाहीआ। जन भगतां नेत्र खोल्ह के हरन फरन, हर हिरदे दए सुणाईआ। धूढ़ी दे के धुर दे चरण, मस्तक भबूती दए रमाईआ। लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। सन्त सुहेले इक अकेले मंज़ल चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सोहँ ढोला सच्चा पढ़न, गृह मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति धर्म तेरा लेखा सच हिसाब, धुर फ़रमाने विच जणाईआ। जेहड़ा लेखा नहीं किसे विच किताब, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। उसनूं पूरा करे आप, पारब्रह्म नूर खुदाईआ। जन भगतां खोल्ह के अंदरों ताक, परदा दए उठाईआ। शतरी ब्रह्मण शूद्र वैश सब ने करना इक्को पाठ, इक्को मंत्र दए दृढ़ाईआ। इक्को तीर्थ इक्को ताट, किनारा इक्को इक समझाईआ। इक्को मन्दिर शिवदवाला माठ, हट्ट इक्को इक प्रगटाईआ। इक्को लेखा जाणे अठ्ठ सठ्ठ, इक्को परदा दए उठाईआ। इक्को जोड़नहारा धुर दा नत्त, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। इक्को जाणे मित गत, आदि जुगादि वेख वखाईआ। इक्को हुक्म रिहा दस्स, दो जहान करे शनवाईआ। जन भगत साचा लैणा रस, रस्ता मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। सति धर्म वेख सच दरवाज़ा, भगत दवारा नज़री आईआ। जित्थे वसे ग़रीब निवाज़ा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दर आयां दुरमति मैल धोवे दाग़ा, बिन कपड़ करे सफ़ाईआ। नाम सुणाए शब्द अनरागा, धुनी नाद इक वजाईआ। कोटां विच्चों

४८८ १९

सन्त सुहेला जागा, हरि सरन मिले सरनाईआ। हँस बुद्धी रहे ना कागा, ना कोई हँस रूप वटाईआ। नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छो पंज चेत आया सुभागा, भागां वालयां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत दुआर कहे मैं बूटा लाउणा उह, जिस नूं ओड़क सके ना कोए हिलाईआ। जिस दा मालक बणया जो आदि जुगादि जगत निर्मोह, कूड़ प्यार ना कोए वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवणहारा लो, सच प्रकाश करे रुशनाईआ। किसे नाल ना करे धरोह, करमां दा लेखा दए भुगताईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया लवे खोह, सति सच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। भगत दुआर कहे मेरे भगवन्त, बेनन्ती दयां सुणाईआ। जन भगतां दा बण अगम्मी कन्त, विछोड़ा अगे रहे ना राईआ। झगड़ा रहे ना कूड़े सन्त, जगत साधां तों पल्लू देणा छुडाईआ। आत्म परमात्म दस्स के आपणा मंत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। सर्ब वखादे इक्को पंगत, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निरगुण ढोला दे जणाईआ। लेखा मुक जाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेतज ना कोए भवाईआ। नाम खुमारी चाढ़ दे रंगत, अनडिठड़े आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत दुआर कहे मैं वेख होया खुशहाल, खुशी प्रभू प्रगटाईआ। सति धर्म दे वेखे लाल, जो लालन विच समाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के घाल, अगे लेखा मंगण चाँईं चाँईआ। आ पहुंचे सच दुआर दी सच्ची धर्मसाल, जित्थे कर्म दा रोग रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी दा पूरा होया स्वाल, भिच्छया सब दी झोली पाईआ। भगत रहे ना कोए कंगाल, नाम भण्डारा दए वरताईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरमुखां चले नाल नाल, अंदर बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं आदि जुगादी नाल फिरां ज़ोर, जाबर जबर मात अखवाइंदा। नाता तोड़ां कूड़ कुड़यारां ठग्ग चोर, ममता मोह वेख वखाइंदा। मन वासना कूड़ी क्रिया तक्कां ढोर, चम्म दृष्टी फोल फुलाइंदा। लख चुरासी अंदर वड़ के वेखां अन्धेरा घोर, गुरमुख परदा कवण मात रखाइंदा। कोटां विच्चों थोड़े लभ्भे जिन्हां नूं इक दी लोड़, बहुते भज्जण थाउँ थाँईंआ। सुरती शब्दी बन्हे कोई ना डोर, आत्म परमात्म गंढु ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भगत दुआर कहे मैं आपणा कर्म कमावांगा। जो प्रभ सरनाई बहे, तिसदा मेला आप करावांगा। जो धुर दा भाणा सहे, लख चुरासी विच्चों बाहर कढावांगा। जो नाम इक्को लए, लहिणा उसदी झोली आप टिकावांगा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। भगत दुआर कहे मैं आवण वाला आपणी विच बहार, सच संदेशे विच जणाईआ। खेल वेखण वाला विच संसार, ख़लक खोज खुजाईआ। मेरे उत्ते करे ना कोए एतबार, बेएतबारी होई लोकाईआ। मैं कूक कहां पुकार, ऊँचो ऊँच सुणाईआ। सारे हो जाओ ख़बरदार, नेत्र आलस निंद्रा दयो मिटाईआ। जिस ने साढे तिन्न हथ्थ भाण्डा घड़या बण ठठयार, उह ठोकर रिहा लगाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा ना कर्ज़ा रहे उधार, लेखा सब दी झोली पाईआ। करनी दा करता आप करतार, कुदरत दा कादर वेख वखाईआ। बिन भगतां सन्तां साचा वसे ना कोए घर बाहर, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। मुहब्बत विच ना मिले यार, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। मन वासना सृष्टी दिसे खुआर, धीरज धीर ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। भगत दुआर कहे मैं आदि जुगादि संजोगी, जन भगतां साचा मेल मिलाईआ। मेरा भेव समझे कोए ना जोगी, जोगीशर सार किसे ना आईआ। जगत वासना कीते रोगी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म जन भगतां नाल बणाई संजोगी, मेला इक्को घर बणाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना दोखी, हरख चिन्ता दयां गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। भगत दुआर कहे मैं भगवन तेरा मीत, मित्र इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी बदल दे रीत, सतिजुग सति धर्म कर रुशनाईआ। लख चुरासी वेख के रीत, आपणा नाम दे जणाईआ। चारे वरन गाउण इक्को गीत, ढोला धुर दा दे समझाईआ। चरणां संग दस्स प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात खैहड़ा दे छुडाईआ। निरगुण धार वस तूं बीच, सच दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे सुणो अख़ीरी अन्त, अन्तिम दयां जणाईआ। की खेल करे श्री भगवन्त, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। नवीं बणावण वाला बणत, सच साजण हो के सेव कमाईआ। माया ममता कूड़ विकार कर के अन्त, अन्तश्करन वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमान इक समझाईआ। पंज चेत कहे मैं सब नूं दस्सां हाल, हालत वेखी जगत लोकाईआ। की करे खेल पुरख अकाल, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। मन वासना दी बणा के धर्मसाल, बिन अक्खां राह तकाईआ। जगत वासना बण कंगाल, सारे रहे कुरलाईआ। चार कुण्ट हाल हाल, दहि दिशा दए दुहाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलमे वाला ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। अगला खेल दस्से भगवान, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। पुरख अकाल दा झुलणा इक निशान, निशाने

सारे देणे मिटाईआ। दुनिया अंदर देवे पहिचाण, परदा आप उठाईआ। साचा मन्दिर दस्स महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। सुणो पंजां तत्तां वाले इन्सान, हुक्म विच्चों हुक्म आप बदलाईआ। आत्म परमात्म दा जाणो इक ज्ञान, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जिस ने तख्त निवासी हिला देणे प्रधान, प्रधानगी विच्चों लए उठाईआ। शब्द अगम्मी मार के बाण, बाल अंञाणे लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सति धर्म कहे मैं की दस्सां अन्त, कहिण कुछ ना पाईआ। पुरख अकाल दा ढोला सुण के इक्को मंत, मंत्र सारे गया भुलाईआ। जिसदे हुक्में अंदर जीव जंत, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। ओनॄां भगत सुहेला मालक ख़ालक प्रितपालक बण के बणावे बणत, घड़न भन्नॄणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत दुआर कहे मैं भगतां दा दरबार, दिलां दा मालक नज़री आईआ। गुरमुखां दे के सच एतबार, बेएतबारी दयां गवाईआ। पुरख अकाल नूं मन्नो सांझा यार, जिस ने वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरगुण नाल करो प्यार, सरगुण इष्ट देव समझाईआ। शब्दी शब्द करो गुफ़तार, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। दीवा बाती करो उज्यार, निरगुण जोत होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी नज़री आईआ। साहिब कहे मैं की वेखी हालत, हल्ले विच लोकाईआ। मनसा वाली जहालत, ममता करे लड़ाईआ। साचा कलमा पढ़े ना कोई अबादत, करनी कार ना कोए कमाईआ। सुरती दिसे रूप ना जागरत, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां दी लैंदे शहादत, जो आपणी आप दे ना सकण सफ़ाईआ। जिन्हॄां नूं पढ़ सुण के मन नूं होवे बग़ावत, दीन दुनी करे लड़ाईआ। कोटन कोटि अक्खर मेट ना सकण अदावत, झगड़ा झगड़ ना मूल चुकाईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल दीन दयाल आपणे प्रेम दी करे ना आप सख़ावत, वस्त अमोलक काया गोलक हथ्थ किसे ना आईआ। सिफ़ावत कहे मैं प्रभ नूं कहिणा बण जा सख़ी, वस्त अगम्मी दे वरताईआ। जेहड़ी जुग चौकड़ी सांभ के रखी, परदा दे खुल्ॄहाईआ। जन भगतां वखा आपणी अक्खीं, सिफ्तां विच्चों बाहर कढाहीआ। मेहरवान हो के पत रखीं, अन्त ना करीं जुदाईआ। सब नूं तेरी प्रीत लग्गे अच्छी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेहरवान महबूब बिन अक्खां मिलाए आपणी अक्खीं, आख़र आपणी मंज़ल इक चढ़ाईआ। जित्थे तत्तां वाली नज़र ना आवे सख़ी, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। मालक धुर दा बण जा पती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तेरे नाम दी पढ़ीए पट्टी, दूजे कलमे दी लोड़ रहे ना राईआ। बिरहों वैरागण गई फट्टी, घाउ डूँघा नज़र ना आईआ। बिना दान तोल तों देदे नाम दी रती, जो रतन अमोलक हीरे गुरमुख लए बणाईआ। तेरी धार आदि जुगादि कदे ना थक्की,

निरगुण हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लेखा दे जणाईआ। धर्म दुआर कहे भगतां देणा रंग, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। सब दी पूरी कर के मंग, मंगते घर घर देणे टिकाईआ। किसे रहे ना भुक्ख नंग, दुखियां दर्द ना कोए सताईआ। कूड़ी क्रिया मेट घमंड, मन का मणका देणा भवाईआ। सति सच चाढ़ के चन्द, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। ढोला इक्को गाओ छन्द, साची सच करो पढ़ाईआ। जो सच दरबारे गया लँघ, दिल्ली दलील वज्जे वधाईआ। धर्म दुआर दा लए अनन्द, धीरपुर दी धार बणाईआ। भगत उधारन वाला कर के ढंग, आपणा खेल रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत दुआर कहे जो आ गए अगे साथी, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दे मेरे बण गए जमाती, जिन्हां दी इक्को इक पढ़ाईआ। नाम भण्डारा ख़ैर मिल्या कोलों ख़ैरायती, ख़ैरखाह हो के झोली पाईआ। जन भगतो तुहाडी थोड़ी दिसे अबादी, बहुते छेती देणे खपाईआ। प्रभ दी कार वरतणी डाढ़ी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चुल्हे कूड़ चढ़े ना हाण्डी, ढांडी मुख कोए ना खाईआ। किसे कम्म ना आवे सोना चांदी, रुपा रंग ना कोए वखाईआ। दुनिया दीन दी होवे बांदी, बन्दना भुल्ले लोकाईआ। जेहड़े पूजा करदे गांधी, गंदल उन्हां दी देणी तुड़ाईआ। कलयुग अन्त औध है जांदी, ना सके कोए बचाईआ। पुरख अकाल आ गया फांदी, लख चुरासी रिहा फसाईआ। जो तीर्थ तटां रही धिआंदी, तिन्हां वेखे थाउँ थाँईंआ। जेहड़े रसना ढोले रही गांदी, कूक कूक सुणाईआ। प्रभ खेल जाणे थाँ थां दी, बचया नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। भगत दुआर कहे जो चल के आए पाँधी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ओन्हां दी पुरख अकाल नाल निर्मल धार होवे शादी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। मन वासना दा रहिवे कोए ना आदी, आदत अगे दए बदलाईआ। सोई सुरत सवाणी जागी, शब्द हलूणे ल्या उठाईआ। जन भगत होए वड वडभागी, भाग हिस्सा सब दा झोली पाईआ। गुरमुखो थोड़े समें अंदर बहुती घट जाणी आबादी, अबादत वाले गुरमुख लए बचाईआ। प्रभ दा रहिण नहीं देणा कोई बाग़ी, बग़ावत वालयां दी करनी सफ़ाईआ। झगड़ा मुका के चार कुण्ट दहि दिशा भेव रहे ना हिन्दू पंजाबी, पंजां दा मालक इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी कार कमाईआ। भगत दुआर कहे जो आ गए गुरमुख चल, चलितर प्रभ दा वेख वखाईआ। सच दुआर बैठे मल्ल, मलकुलमौत ना दए सज़ाईआ। साची धार अंदर गए रल, जिथ्थों होवे ना कदे जुदाईआ। पहला साल हुक्म नाल गया चल, दूजा आपणा रंग बदलाईआ। शाह सुल्तान उठणे मल, मलीन बुद्धी वाले देणे लड़ाईआ। हुक्म संदेसा इक्को घल्ल, घलूघारा

देणा वखाईआ। हरि का भाणा जाए ना टल, कोटन टल्लीआं रहे खड़काईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे खेल अछल अछल्ल, वल छल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमाना कहे भगतो तुहाडा लहिणा जगत अनोखा, वक्खरी धार नज़री आईआ। पुरख अकाल ने मार्ग दस्सया सौखा, बिन अक्खरां रिहा पढ़ाईआ। नाता तुट्ट गया जगत पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। धुर दा मालक मिल गया काया काअबे साचे कोठा, जगत कुटीआ विच आसण ना कोए लाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोता, जोती जोत डगमगाईआ। नाम खुमारी अंदर कर मदहोशा, दुनी दा दीन दिता बदलाईआ। अगे रहिण ना देवे कोई सोचा, सोच समझ तों बाहर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे मिलण दा दे के मौका, सृष्ट सबाई दए रुढ़ाईआ। भगत दुआर कहे मेरी सुण लओ सच्ची पूजा, पुज्ज के दयां सुणाईआ। बिना पुरख अकाल तों कोई नाँ नहीं बणना दूजा, ढोला सोहला इक सुणाईआ। एह भेव नहीं गूझा, सनमुख हो के रिहा सुणाईआ। कलयुग अन्त भाण्डा होणा मूधा, फड़ के सके ना कोए उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार वड्याईआ। जन भगत तेरी आई सच्ची वारी, वारता पिछली रिहा दुहराईआ। पुरख अकाल नाल लग्गी अनोखी यारी, यादगार रिहा बणाईआ। पंज चेत चार युग तक्क लेखे लग्गदी रहे दिहाढ़ी, दिवस रैण इक्को रंग चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब दी किस्मत कीती माढ़ी, मढ़ी गोर बैठी राह तकाईआ। अन्त वासा होणा विच उजाड़ी, उजड़यां फेर ना कोए वसाईआ। जन भगतो तुहाडी लेखे लग्गी अज्ज दी दिहाढ़ी, अगे पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास तों देवे लँघाईआ। दर्शन देवे अनेक वारी, गिणतीआं विच्चों लेखा बाहर देवे कढाहीआ। पुरख अकाल बण के वड्डा बलकारी, बल आपणा दए जणाईआ। कोई रहिण ना देवे राजा छत्रधारी, शत्रुआं नाल शत्रु देणे लड़ाईआ। इक्को जोत जगे निरँकारी, दो जहानां करे रुशनाईआ। सच दुआर उत्ते सति दी आए वारी, वारता पिछली जाए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां भगतां लेखा रिहा वखाईआ। पंज चेत कहे मैनूं समझे कोई ना साध, जगत सन्त सार कोए ना आईआ। मेरे कोलों खटे कोई ना लाभ, वस्त अमोलक झोली ना कोए पवाईआ। मैं प्रभ दे कोलों सब नूं कोरा दवा देणा जवाब, अगे गुंजाइश ना कोए रखाईआ। सृष्टी ने तरसणा बूँद स्वांती आब, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। किसे कम्म ना आउणा खाधा कबाब, कबरां विच सारे रहे कुरलाईआ। सारे कर के लाजवाब, जवाबतलबी विच सच दवारे दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक बण के नवाब, नौबत इक्को दए सुणाईआ।

भगत दुआर कहे मेरा किड्डा सोहणा आया वक्त, भविख्त पिछला लेख मुकाईआ। अगे लहिणा विच जगत, जुगती भगतां रिहा समझाईआ। इक्को पुरख अकाल दे मिलण दा वक्त, दूजी घड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग अन्त तारन वाला इक्को फ़कत, जो फ़िकर सारे दए मिटाईआ। ओस दे कोल आपणी धुर दी शक्त, दूजे दर मंगण ना जाईआ। निरगुण हो के आया उत्ते फर्श, सरगुण देवे माण वड्याईआ। जन भगतो तुहाडे उत्ते कर के तरस, रहमत आपणी रिहा कमाईआ। वेख्यो नज़ारा की की हुन्दा इस दूजे बरस, बरसी गावण वाले सारे देण दुहाईआ। पुरख अकाल आप बैठणा निधड़क, धड़के विच दीन दुनी दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म अंदर पैण ना देवे फ़र्क, फ़िरकयां वाले फ़िरके वेख वखाईआ। भगत दुआर कहे मैं कोई खिच्ची नहीं भगौती, चण्डी हथ्थ ना कोए उठाईआ। मैं कोई खेल दस्सणी नहीं बहुती धुर दा हुक्म सहिज नाल जणाईआ। सृष्टी कोटां विच दिसे औंती, अगे जड़्ह ना कोए लगाईआ। मुकामे हक मूल ना पहुंची, सचखण्ड ना कोए रुशनाईआ। किसे कम्म ना आई बुद्धी वाली सोच सोची, जगत वाली पढ़ाईआ। बण गए जन्म जन्म दे रोगी, कर्म कर्म दा गेड़ रखाईआ। बिना भगतां धुर दे बणे ना मूल संजोगी, साचा मेल ना कोए कराईआ। जन भगतो तुहाडे बिना किसे नूं आउण नहीं देंदा सोझी, सुत्यां दी रैण रही विहाईआ। रैण कहे मैं भिन्नड़ भिन्नी, भागां वाली फेरी पाईआ। मैं वेखी परम पुरख दी भगतां वाली संगत किन्नी, किन्ने आपणे नाल मिलाईआ। सच पुछो छे हज़ार सत्त सौ तरेठ जिन्हां दी गिणती गिणी, गिण के दयां समझाईआ। उहनां दी अक्ख नहीं अंदरों अन्न्ही, अन्न्हयां दे सुजाखे अंदरों रूप दए बदलाईआ। पंज चेत तों बाद बहुत्यां नूं दर्शन होवे दिन दीवी, साख्यात अगे खलोता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। भगत दुआर कहे भगवान बदल लै आपणा रूप, अनूप दे बदलाईआ। तूं मालक धुर दा भूप, भूपत तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के गए कूच, कूचा गली ख़ाली दए दुहाईआ। साची आवे किसे ना सूझ, भरमें विच लोकाईआ। झगड़ा रिहा एका दूज, भरमे विच लोकाईआ। कोई चढ़े ना मंज़ले मकसूद, नाअरा हक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे दृढ़ाईआ। साचा हुक्म कहे मैं करन वाला फुरती, फुरतीला हो के दयां जणाईआ। मैं किसे नूं पूजण नहीं देणी कोई मूर्ती, मूर्त अकाल इक्को देणी जणाईआ। जन भगतो हुण एह गल्ल नहीं दूर दी, दूर दुराडा पैंडा रिहा मुकाईआ। एह खेल होणी सर्ब कला भरपूर दी, जो ख़ाली भाण्डे दए भराईआ। एह धार प्रगटाउणी इक नूर दी, जो नूरो नूर करे रुशनाईआ। एह कोई चोटी नहीं कोहतूर दी, जो मूसा मूँह दे भार सुटाईआ। एह खेल हाज़र हज़ूर दी,

जो हज़रतां नालों नाते रिहा तुड़ाईआ। तुहाडी सेवा नहीं किसे मज़दूर दी, जो टकयां वाली वण्ड वण्डाईआ। तुहाडी मुहब्बत सदा मन्ज़ूर दी, मन्ज़ूरी आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए वड्याईआ। सच दवारा वेखणा धुर धाम, हरि करता आप जणाईआ। तुहाडा मालक इक्को राम, हर घट रम्यां दए वखाईआ। तुहाडा सालस इक्को काहन, जो फ़ैसला धुर दा एका दए सुणाईआ। तुहाडा मालक इक अमाम, जो अमलां तों बाहर दए कढाहीआ। उसदा सजदा इक कलाम, जो कलमा कायनात विच्चों बाहर दए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, हुक्म आपणा रिहा जणाईआ। जन भगतो भगत दवारे उत्ते चढ़ गया सत्त रंग निशान, निशाने सब दे दए उठाईआ। जिन्हां सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा गाया गाण, तिन्हां नूं गाने बन्न्ह के सगणां नाल आपणे घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार आया विच मैदान, मैदान सारे साफ़ कराईआ। मैदान आया विच अखाड़े, पुरख अकाल आपणी फेरी पाईआ। निक्के निक्के रहिण नहीं देणे वाड़े, वाड़ कंडयां वाली देणी हटाईआ। इक्को पुरख अकाल दे सब नूं कढ्डुणे पैण हाढ़े, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाईआ। जन भगत सुहेले जिस आपणे बणाउणे धुर दे लाड़े, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। एह खेल होण वाला विच हाढ़े, हाढ़े कढ्ढे सर्ब लोकाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी वाले आए दिन माढ़े, सुधी सच ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेट देवे जो टटू जगत वाले भाड़े, शाह अस्वारा इक्को आपणा अस्व दए दुड़ाईआ। अस्व कहे मेरी शब्दी दौड़, कदमां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं चार कुण्ट जावां बौहड़, भज्जां चाँईं चाँईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं राज राजानां शाह सुल्तानां बेईमानां मारां अगम्मां पौड़, पौड़ी डण्डे उत्तों हेठां दयां सुटाईआ। किसे नूं समझ आउण ना दयां किस धार विच खेले खेल ब्राह्मण गौड़, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा हुक्म वरताईआ। लखां कोटां अरबां विच्चों थोड़्हयां उत्ते कर के ग़ौर, गौरव नाल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतो विछड़यां नूं रिहा जोड़, विछोड़ा अगला दए कटाईआ। विछोड़ा कहे मैं भगत दवारे खावां सुगंद, विचोला श्री भगवान बणाईआ। जन भगतो तुहाडा बन्दीख़ाने विच्चों निकलया बन्द बन्द, बन्दना दस्सी बेपरवाहीआ। तुहाडा जोती नूर चमकणा चन्न, बिना चन्द होवे रुशनाईआ। तुहाडे जन्म मरन दा लेखा होया बन्द, बन्दीआं तों बन्दगी वाले बन्दे लए बणाईआ। पंज चेत दा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों अनन्द, साल बसाला हथ्थ किसे ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अगे तुहाडा सदा बणया रहे बख़्शंद, रहमतां दा मालक हो के आपणा रैहम कमाईआ। तुसां ख़ुशी नाल सौंदयां जागदयां दोवें वेले सोहँ

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा गाउणा छन्द, अगे देवे ना कोए सज़ाईआ। सच्चा प्रेम सच प्यार सच मुहब्बत विच तुहानूं देणा वण्ड, गंढु आपणी रिहा खुल्हाईआ। तुहाडे सीने पा के ठंड, आपणे ला के अंग, अंगण विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे हुक्म दे कर पाबन्द, पाबन्दी सारी दए कटाईआ। जन भगतो तुसां सच प्रेम दी समझणा पाबन्दी, मुहब्बत इक्को नाल रखाईआ। लख चुरासी रहे ना ख़ानाबन्दी, बन्दगी आपणी दए दृढ़ाईआ। अगे प्रभ ने खेल करनी बहुरंगी, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तुहाडी धार बदल के धार करनी चंगी, चंगी तरा आपणे नाल रखाईआ। दुनिया दी दृष्टी करनी अन्धी, अज्ञान विच लोकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे सदा पाउण ठंडी, अग्नी तत तत विच ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सदा सदा सद बणया रहे तुहाडा संगी, संग अंदरों दए कढाहीआ।

७ चेत शहिनशाही सम्मत २ भगत सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश

सत्त चेत कहे मैं लई अंगड़ाई, अंग अंग ल्या उठाईआ। भगत भगवान अन्तर आत्म दी वेखां कुड़माई, कर्म कांड दा लेखा रहे ना राईआ। बिन रसना जेहवा वज्जे सच वधाई, नाद अगम्मी राग अल्हाईआ। दो जहान खुशीआं रहे मनाई, गुर अवतार पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। सन्त सुहेले वेखे चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक दसाईआ। मेहर करे चेत विच गुसाँईं, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। मालक ख़ालक बण के धुर दा माही, महबूब हो के रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भगत भगवान दा नाता वेखां जुड़दा, जग नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। हुक्म सुणां अगम्मी सतिगुर दा, जो सुत्यां रिहा जगाईआ। खेल करे आपणा आप शुरु दा, शरअ दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा इक्को मंत्र सोहला ढोला फुरूगा, जगत फ़ुरने बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा सच सरनाईआ। भगत भगवान वेखणा मिलाप, विचोला नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार जोत शब्द दा जाप, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के लेखा जाण के पूत बाप, सपूत आपणे रंग रंगाईआ। निज गृह निज मन्दिर घर सुहञ्जणे कर के वास, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना वस्त अमोलक दे के दात, दानी दयावान दया कमाईआ। पूरब लेखा लहिणा देणा जुग चौकड़ी देवणहारा आप, अनडिठ बिन मंगयां झोली पाईआ। गुरमुखां कर वड प्रताप, जगत पाप तों लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त

सुहेले कर के दास, दरस आपणा दए दिखाईआ। जन भगत वेखणे प्रभ दी मंज़ल चढ़दे, बिन पौड़े डण्डे पन्ध मुकाईआ। सच दवारे वेखणे खड़्दे, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। बिन अक्खां दर्शन करदे, लोचन नैण खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़दे, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहीआ। बिरहों विछोड़े अंदर वैरागी हो के मरदे, मुरीद बिना मुर्शद आपणा आप मिटाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा इक्को इक घल्लदे, हक हक आवाज़ अल्लाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करते असीं मंगते तेरे घर दे, दूजा दुआर ना कोए तकाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान पड़दे लाह दे आपणे घर दे, ओहला विच रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। भगत भगवान मिलण दी रीती, बिना पुरख अकाल ना कोए जणाईआ। पिछली गाथा अजे बीती, अगला वरनण आपणे हथ्थ रखाईआ। मेहर नज़र नाल जन भगत चढ़ा आपणी चोटी टीसी, मंज़ल आपणी पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी बदल के रीती, नीतीवान होए सहाईआ। जन भगत आत्मा सदा रहे जीती, जन्म मरन ना रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दयावान दया आप कीती, केते विछड़े लए मिलाईआ।

८ चेत शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश

जन भगतां प्रभ सदा दर्दी, दीनां नाथ दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी नित नवित आसा मनसा दी वेखे अर्ज़ी, अर्शी प्रीतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परदा ओहला फोल फुलाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेश्वर सहेला बणया कदे ना फ़र्ज़ी, फ़ैसला हक हकीकत लाशरीक शहिनशाह आप जणाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेले खेल नरायण नर दी, बोध अगाधा शब्द अनादा धुर संदेसा अगम्म राग अल्लाइंदा। खेल जाणे लख चुरासी जीव जंत घर घर दी, गृह मन्दिर मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पताल फोल फुलाइंदा। गुरमुखां खेल दस्स के परम पुरख परमात्म आत्म साचे घर दी, काया माटी साची हाटी सेजा खाटी परदा ओहला दए चुकाईआ। आसा मनसा पूरी करे जुग चौकड़ी वर दी, वाहिद लाशरीक सच तौफ़ीक महबूब मुहब्बत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक रुशनाईआ। जन भगत तेरा मित्र प्यारा एक, एकँकारा नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे टेक, श्री भगवन्त बण के धुर दा कन्त, समरथ स्वामी अन्तरजामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द ज्ञान करे बुध बिबेक, मन वासना कूड़ी तन माटी ख़ाकी वजूद पतित पुनीत दए बणाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के निरंतर हो के अन्तर खोल्हे

भेत, अछल अछेद परदा ओहला बण विचोला दूई द्वैती दए चुकाईआ। बिन कलम शाही शाह सुल्तान वड मेहरवान लिख देवे अगम्मा लेख, जुग चौकड़ी जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। एथे ओथे दो जहान निरगुण सरगुण करे आपणा हेत, हितकारी हो के दरस दिखाए नेतन नेत, निज लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म दस्स के आपणी खेड, दीआ बाती कमलापाती जोती जाता निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख मित्र निरगुण सरगुण धार लोकमात भेज, भजन बन्दगी सच मशंदगी हक हकीकत लाशरीक इक्को इक दृढ़ाईआ। धार दस्से सच दुआर आपणे अनन्द दी, परमानंद परम पुरख परमात्म आत्म विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शिश बख्शे आपणे छन्द दी, मशंदगी अवर रहे ना राईआ। जन भगत तेरा सदा कयास, कीमत हरि जू दए बदलाईआ। लेखा लिख के गया वेद व्यास, शहादत लेखणी रही भुगताईआ। साहिब सतिगुर पुरख बिधाता भगवन हो के वसे भगतां पास, वेस अवेसा निरगुण सरगुण आपणा रूप बदलाईआ। निरगुण नूर जलवागर जोती जोत करे प्रकाश, अन्ध अज्ञान विच जहान श्री भगवान मेटे थाउँ थाँईंआ। लेखा जाणे पाउण पवणा विच्चों स्वास, झगड़ा मुका के पृथ्मी आकाश, प्रकाश विच्चों प्रकाश दए प्रगटाईआ। सच दवारा बख्शे इक निवास, प्रभास विच लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मानस जन्म करे रास, रस्ता इक्को इक वखाईआ। जन भगत तेरा मार्ग परम पुरख दस्से सति, सति सच आप दृढ़ाईआ। बिन अक्खरां तों दे के ब्रह्ममत, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। हकीकत विच्चों मिले हक, हुक्म धुर दा इक दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जस, सिफ्त वेद पुराण रहे सुणाईआ। निज नेत्र अंदरों खोल्ह के अक्ख, आखर आपणा मेला लए मिलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक रहिण ना देवे वक्ख, हमबिस्तर हमसाजन सेज सुहजंणी डेरा लाईआ। साख्यात निरगुण धार जोत कर प्रतख, शब्दी नाद ब्रह्म ब्रह्माद ढोला गीत आप सुणाईआ। प्रेम प्यार अमृत धार निझर दे के रस, कूड़ी क्रिया तृष्ना अग्न देवे बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे सिर ते रखे हथ्थ, समरथ हो के लेखा दए चुकाईआ।

✪ ८ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरदित सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश ✪

श्री भगवान कहे मैं भगतां जोगा, जगत जोगीशर हथ्थ किसे ना आइंदा। कलयुग अन्त अख़ीर निरगुण धार बदल के चोगा, सरगुण सवरूप भेव कोए ना पाइंदा। हुक्म संदेसा नाम निधाना देवां चौदां लोका, परलोक आपणी कार कमाइंदा।

नाम निधाना दस्सां इक सलोका, धुर दा ढोला राग अलाइंदा। लख चुरासी विच्चों जन भगतां बख्शणा आपणा मौका, मुकम्मल आपणा रंग रंगाइंदा। गुरमुखां नाल कदे करां ना धोखा, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाइंदा। सच दवारे चढ़ना मार्ग दस्सां सौखा, फड़ बाहों पार लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। जन भगत गृह मन्दिर तेरा सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। दीपक जोत जगाए आदि निरँजणा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी सगला साथ देवे दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर बेड़ा पार कराईआ। निज नैण लोचण नाम पाए आपणा अंजणा, अन्ध अज्ञान कूड़ अन्धेर दए चुकाईआ। चरण धूढ़ी सच सरोवर कराए मजना, दुरमति मैल काया माटी अंदर बाहर रहिण कोए ना पाईआ। दरस दिखाए गोपाल मूर्त मदना, नरालम आलम बाहर करे रुशनाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर हुक्में अंदर सन्त सुहेला सद्दणा, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निरँकार आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चाढ़े आपणी रंगणा, रंगत अवर रहे ना राईआ। जन भगत तेरा रंग मजीठ, लख चुरासी नज़र ना कोए पाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल मेहरवान करनहार बख्शीश, महबूब मुहब्बत विच दया कमाइंदा। साचा नाम धुर दा कलमा निरअक्खर कर हदीस, हज़रत हो के हज़ूर धुर फ़रमाना इक सुणाइंदा। जुग चौकड़ी लोकमात गए बीत, कोटन कोटि काल चरणां हेठ दबाइंदा। कलयुग अन्त सतिजुग बदल के धुर दी रीत, रीतीवान मार्ग मेहरवान प्रगटाइंदा। सन्त सुहेला त्रैगुण कर अतीत, त्रैभवन धनी कन्नीं आपणा राग सुणाइंदा। माटी हाटी काची कर के ठांडी सीत, सीतल धारा हरि निरँकारा बूँद स्वांती रस मुख चुआइंदा। झगड़ा चुका के मन्दिर मसीत, नीती अंदरों बदल के नीत, सच स्वामी वस के चीत, जगत ठगौरी बाहर कढाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान धुर प्रेम दी दस्स के प्रीत, प्रीत विच्चों प्रीतम आपणा आप वखाइंदा।

६ चेत शहिनशाही सम्मत २ जसवन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्या प्रदेश

जन भगत तेरा जस, जुग चौकड़ी रहे गाईआ। आत्मा परमात्मा नाल मिल के रिहा वस, वसल इक्को यार खुदाईआ। बिना रसना तों मिलदा रिहा अगम्मा रस, झिरना अमृत आप झिराईआ। मेला हुन्दा रिहा हस्स हस्स, हस्ती विच्चों हस्ती मिले शहिनशाहीआ। नज़ारा देंदा रिहा अगम्मी अक्ख, लोचन लोयण कर रुशनाईआ। नाम संदेसा देंदा रिहा सच, सति सति कर पढ़ाईआ। भाग लगाउँदा रिहा माटी काया कच्च, कंचन गढ़ आप वड्याईआ। लूं लूं अंदर आप रच, रंचत

५०० ९६

दु:ख रिहा गवाईआ। जिस शब्द नूं कोई ना सके वाच, उह बचन रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। जन भगत तेरा बणदा रिहा गीत, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जदी रही वधाईआ। धारा बदलदी रही जग रीत, दीन दुनी भेव खुल्हाईआ। काया हुन्दी रही ठंडी सीत, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। मालक मिलदा रिहा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी देवणहार सरनाईआ। छत्र झुलाउँदा रिहा उपर सीस, जगदीश हो सहाईआ। नाम दस्सदा रिहा अगम्मी हदीस, हकीकत हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा सच प्रीत, प्रतीनिध हो के वेख वखाईआ। जन भगत तेरा कटदा रिहा बन्धन, बन्दगी आपणी इक दृढ़ाईआ। देंदा रिहा अगम्मी अनन्दन, अन्तर आत्मा रस चखाईआ। धूढ़ी टिक्का लाउँदा रिहा चन्दन, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। सच दवारे रखदा रिहा अंगण, गोदी गोद आप सुहाईआ। नाम निधान चढ़ाउँदा रिहा रंगण, दुरमति मैल धवाईआ। जन भगत दवारा जुग चौकड़ी आउँदा रिहा मंगण, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। कर खेल सूरा सरबंगण, वेस अवेसा मात जणाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच प्रीती आया वण्डण, अनमंगी दौलत झोली पाईआ। जेहड़ा हथ्थ ना आवे विच ब्रह्मण्डण, वरभण्ड रही कुरलाईआ। दीन दयाल बण बख्शंदण, बख्शिश आपणी रिहा कराईआ। लख चुरासी तोड़ के आवण जावण फंदन, फ़ैसला आपणा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेला जोड़ जुड़ाईआ। जन भगत तेरा उपजदा रहे नाउँ, नाउँ निरँकार दए वड्याईआ। तेरा वसदा रहे सच्चा खेड़ा गाउँ, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। पुरख अकाल पकड़दा रहे बाहों, जगत विछोड़ा रहे ना राईआ। मुहब्बत विच करदा रहे न्याउँ, अदल इन्साफ़ आप समझाईआ। बणदा रहे पिता माउँ, दो जहानां गोद चुकाईआ। देवणहारा सदा सदा सद ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह शान अगली रिहा बणाईआ।

✪ ६ चेत शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड ज़ातरी मध्या प्रदेश ✪

जन भगत तेरी आसा मनसा पूरी होवे शीघर, साहिब सतिगुर पुरख अकाल दया कमाईआ। दूजा भउ अन्तर अवर ना रहे दीगर, दीदा दानिस्ता इक्को नूर करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया जगत आलस मेटे नींदर, स्वच्छ सरूपी आपणा दरस कराईआ। पंज तत हड्ड मास नाड़ी सुक्का रहे ना ढींगर, पत्त टहणी फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत तेरा लहिणा देणा देवणहारा छेती, शहिनशाह दया कमाईआ। अन्तर आत्म बण के भेती, परदा ओहला दए चुकाईआ। जुग जन्म दी याद रखे नाम जपण वाली नेकी, निक्कयां तों वड्डे दए बणाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे कोई परदेसी, देस आपणा दए वखाईआ। आत्म परमात्म दा बण के हेती, प्रेमी प्रीतम मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। जन भगत तेरा लहिणा देणा चुकावे आप, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। परम पुरख बण के बाप, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। तूं मेरा तेरा दोहां दा इक्को जाप, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। जगत रोग ना रहे संताप, सहिंसयां विच्चों बाहर कढाहीआ। लेखे लाए प्रेम नाल रसना वाले गाए अल्फ़ाज़, आरफ़ां तों अगे तेरा पन्ध चुकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साची ज़ात विच मिलाईआ। नव नौ चार पिच्छो मिलण दा होया इतफ़ाक, इतमीनान नाल देवणहार वड्याईआ। पूरब लहिणा देणा करे बेबाक, हिस्सा हिसाब पूरब वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दस्स के इक आदाब, अदब नाल दर घर साचे दए बहाईआ। जन भगत तेरा देणा पूरब जन्म दा मूल, लेखा देवे धुरदरगाहीआ। भगत उधारना प्रभ दा असूल, असलीअत विच्चों असल दए समझाईआ। नाम संदेसा दे के इक माअकूल, मुकम्मल आपणा परदा दए उठाईआ। मस्तक ला के बिना चरणां तों धूल, धूढ़ी टिक्के लेखे दए चुकाईआ। घर स्वामी मिल के सज्जण कन्त कन्तूहल, काया कपड़ कपट दए बदलाईआ। आपणे नाम दा अगम्मां दस्स के मज़मून, मजमूयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जिस दा मार्ग अगम्मड़ा इक कानून, काइदे सारे रिहा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन तेरा लहिणा देणा उधार दा विच उदर, अधक अध्यापक समझ कोए ना पाईआ। जिस कारन माणस जन्म जावे सुधर, शुध आत्मा लए कराईआ। नेत्र रोणा ना पए वांग रुदर, रिदयां दे विच्चों सिध्धा आपणा राह वखाईआ। कुछ नाता नाल बिदर, बुढ़ापा दए गवाईआ। जिस कारन आया इधर, लेखा शहिनशाहीआ। पुरख अकाल कर के फ़िकर, फ़िकरयां विच लहिणा रिहा चुकाईआ। पूरब जन्म दा द्वापर युग दा तित्तर, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। शरअ शिकारी विच्चों गया निकल, भज्जया वाहो दाहीआ। फस्या विच चिक्कड़, अंग ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा मंज़ल चढ़ के चोटी सिख़र, सिक पिछली बिना सिख्या साख्यात दए वड्याईआ।

५०१
१६

६ चेत शहिनशाही सम्मत २ सविंदर सिँघ दे घर इटारसी मध्या प्रदेश

पंज चेत सोहया दिल्ली दरबार, हरि भगत दुआर वज्जी वधाईआ। सच सिँघासण बैठ आप निरँकार, निरगुण निरवैर शब्द फ़रमान हुक्म सुणाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप शाह सुल्तान होणा ख़बरदार, राशटरपति वाली हिन्द अक्ख खुल्हाईआ। प्रधान मंत्री स्यासत विच्चों होणा बेदार, ज्ञान लोचण अक्ख प्रतख बदलाईआ। अबिनाशी करता धुर दा मालक संदेसा देवे अगम्म अपार, परवरदिगार सांझा यार करे शनवाईआ। सृष्टी दृष्टी लख चुरासी जिस पाउणी सार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निहकलंक नरायण नर आ गया अवतार, परम पुरख पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जिस ने चार वरन अठारां बरन दीनां मज़्बां झगड़ा देणा निवार, नौबत नाम आपणा डंका इक वजाईआ। बुद्धी वाली विद्या लओ संभाल, करे खेल हरि कमाल, स्यासत चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक समझाईआ। धुर संदेसा देवे आप निरँकार, निरगुण निरवैर हुक्म जणाईआ। वेला वक्त वेखो संसार, संसे विच सर्ब लोकाईआ। हुक्म वरते इक करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार कुण्ट होणा हाहाकार, सृष्टी नेत्र रोवे मारे धाहीआ। जिस दी करे ना कोए विचार, मंत्री मण्डल भेव कोए ना पाईआ। लोक सभा जाणे कोई ना कार, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। करे कराए करनेहार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जिस ने चरण छुहाया बिन चरणां दिल्ली दरबार, दवारे सब दे फोल फुलाईआ। सत्त रंग निशान झुलाया आण, दो जहान करे रुशनाईआ। ओस दे कोलों सब नूं अगला पुछणा पए ब्यान, भरम विच भुल्ल रहे ना राईआ। संदेसा सुणना पए सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जै कार थाउँ थाँईआ। राष्ट्रपति प्रधान मंत्री बणे ना रहिणा नादान, बिन अक्खां अक्ख लैणी खुल्हाईआ। पहला संदेसा धुर दा हुक्म सम्मत शहिनशाही दो नौ चेत दा फ़रमान, संदेसा इक्को इक दृढ़ाईआ। जगत विद्या दा रहिण नहीं देणा ज्ञान, अनुभव आपणा खेल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो जहानां बण के हुक्मरान, संदेसा सति सति सुणाईआ। धुर दा संदेसा शब्दी धार, शाह सुल्तानां दए उठाईआ। मिल के सब ने करनी विचार, कवण खबर रिहा पुचाईआ। जिस दा लेखा मिले ना विच्चों किसे अख़बार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव ना कोए जणाईआ। सिरफ लभ्भे हरि भगतां दे दवार, दवारा जिस ने दिता सुहाईआ। ओस दा पूरा पता धुर संदेशे शब्दी विच इज़हार, अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। धीर पुर दी धरती बणा के धर्म दवार, प्रतीनिध हो के हुक्म जणाईआ। अगला भेव खोल्ह देवे बिन परदयां वाले किवाड़, साल बसाला हाल सुणाईआ। कलयुग अन्त उठण वाली धाड़, धड़ेबाज़ी

विच लोकाईआ। इक वार इक दी कर लओ भाल, फेर लोड़ अवर रहे ना राईआ। जिस दा लेखा नाल शाह कंगाल, शहिनशाहां दए समझाईआ। उह वस्या धर्म दवारे सच्ची धर्मसाल, सच दवारा इक्को इक दृढ़ाईआ। अगे सृष्टी दी दृष्टी होणा बेहाल, बिहबल हो के रोवे सर्ब लोकाईआ। जगत साध सन्त सके ना कोए संभाल, स्यासत ज़ोर ना कोए चतुराईआ। अस्सू विच खोल्ह के खुलासा देवे अहिवाल, भविख्त भविश नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धार आ गया विच मैदान, संदेसा देवे मंत्री प्रधान, राष्ट्रपति सिक्खणा इक ज्ञान, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत २ कृष्ना कांत तिवारी दे घर इटारसी मध्या प्रदेश ✪

भगत भगवान दा इक दर, दरवाज़ा अवर ना कोए वखाइंदा। सचखण्ड दवारा अगम्मी घर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। जित्थे वसे नरायण नर, दूजा रूप ना कोए बदलाइंदा। चरण प्रीती देवे धुर दा सर, सरोवर इक्को इक सुहाइंदा। जन भगत सुहेले साची मंजल वेखण चढ़, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। बिन अक्खरां ढोला गीत लैण पढ़, परम पुरख परमात्म आत्म आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक वड्याइंदा। भगत भगवान घर सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाईआ। दीपक जगे आदि जोत निरँजणा, जलवागर नूर रुशनाईआ। मेला मेले दीनां नाथ दु:ख दर्द भय भंजना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। नज़री आवे अकाल मूर्त मोहन मदना, मधसूदन आपणा परदा दए उठाईआ। नाम संदेसा धुर दा देवे दस्से सच्ची बन्दना, डण्डावत इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार वड्ड वड्याईआ। भगत भगवान अन्तर अन्तर एका बोल, एकँकारा दए जणाईआ। शब्द नाद वजा के ढोल, हुक्म फ़रमाना इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा वसेरा उपर धौल, धरनी धरत खुशी मनाईआ। आदि आदि दा पूरा होया कौल, इकरारनामा रिहा वखाईआ। पतिपरमेश्वर घट भीतर अन्तर अन्तर जावे मौल, निरगुण हो के सरगुण देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती बख्शे अनमोल, अनमुलड़ी दात झोली पाईआ। जन भगत तेरा घर सुहाया लोकमात जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। प्यार मुहब्बत प्रीती अंदर दर्शन देवे सति, सच सच दए समझाईआ। अन्तर आत्म परमात्म दे के ब्रह्ममत, बोध अगाध शब्द अनाद अनादी करे पढ़ाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मन मनसा ना उबले रत्त, रतन अमोलक नाम पदार्थ धुर दी धार दए दृढ़ाईआ। जो निरगुण निरवैर

निरँकार हो के लोकमात आया वत, वास्तवक नाता बिधाता बिन ज़ाता इक्को नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख समरथ, लहिणा देणा लेखा अलेख बिना लिख्त पूरब दी झोली पाए वथ, बिरथा जन्म ना मात गवाईआ।

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ औरंगाबाद वाले दे नवित इटारसी मध्या प्रदेश ✪

जन भगत तेरा करां पवित हिरदा, पुनीत अंदरों दयां कराईआ। धाम सुहावां सच्चे घर थिर दा, थिर घर देवां माण वड्याईआ। करां खेल निरवैर निरँकार निर दा, निराकार हो के नज़री आईआ। पूरब लहिणा देणा चुकावां जुग चौकड़ी चिर दा, चिरी विछुन्ने मेल मिलाईआ। अमृत झिरनां देवां निझर दा, बूँद स्वांती कमलापाती हो के आप टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगत तेरी वेखां धार धुर दी, बिन मस्तक वेख वखाईआ। एह वड्याई पुरख अकाल पूरे सतिगुर दी, जो सति सतिवादी हो के होए सहाईआ। सेवा करनी ना पए किसे देवत सुर दी, सुरती सर्ब व्यापी आपणे नाल मिलाईआ। जोड़ी निक्खड़े ना पिता पुत्तर दी, दो जहानां वज्जदी रहे वधाईआ। घड़ी सुहञ्जणी इक्को लख चुरासी विच्चों शुकर दी, जिस वेले परम पुरख प्रभ मिले बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छो अगम्मी धार उतरदी, चार जुग गुर अवतार पैगम्बर जन्म विच्चों जन्म लैण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत तेरी अन्तर आत्म वेखां नंगी, परदा ओहला दयां चुकाईआ। मन मनुआ ना रहे फ़रंगी, फ़ुरना कूड़ा बन्द कराईआ। सति प्रेम धार दे के इक अनन्दी, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी जाए गंढी, अगे गंढु ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला गोबिन्द धार बणे संगी, सगला संग इक वखाईआ। नाम भण्डारा धुर दी दौलत देवे बिन रसना जेहवा दन्दीं, अनमुलड़ी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे मेहर सूरा सरबंगी, सर्ब व्यापक आत्मक अध्यापक करे सच पढ़ाईआ। जन भगत तेरा अन्तर वेखे हाल, हालत आप बदलाईआ। शब्दी वज्जे ताल, सति होवे शनवाईआ। लेखे लग्गे घाल, सेवा सच कमाईआ। टुट्टे जगत जंजाल, देवे माण वड्याईआ। एथे ओथे सुरत संभाल, जन भगतां विच रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो दयाल, दीनण आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त जग चल अवल्लड़ी चाल, जन भगत रिहा मिलाईआ।

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत २ श्रृंगारा सिँघ बम्बई वाले दे नवित इटारसी मध्या प्रदेश ✪

जन भगत कदे ना होणा डावांडोल, तन माटी नईआ जगत ना कोए डुलाईआ। अगे रहिणा ना मूल अनभोल, सुत्यां लए उठाईआ। पुरख अबिनाशी सदा समझणा आपणे कोल, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। मन विच रहिण नहीं देणा चोर, झगड़ा अवर ना होर वधाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी अन्तिम हथ्थ आपणे पकड़े डोर, बिन टुट्टयां टुट्टी गंढु वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत एह सृष्टी तिलकणबाज़ी, कलयुग बाज़ीगर आपणा डंक वजाईआ। पता नहीं किसे नूं की पिछला लेखा माज़ी, पूरब लहिणा वेखे बेपरवाहीआ। तूं हरि गोबिन्द दे वेले दा इक मुगल ग़ाज़ी, शम्मशदीन नाम धराईआ। तेरी सुलहा सी नाल अबूउल बुकर काज़ी, कसम खा के अंदरों सेव कमाईआ। इक दिन हरि गोबिन्द दा तक्क के ताज़ी, अस्व दिता सीस झुकाईआ। तेरी सुरती अंदरों जागी, दिती हाल दुहाईआ। गोबिन्द मारी शब्द आवाज़ी, ढोला दिता सुणाईआ। तेरी लेखे लग्गे नमाज़ी, निवाज़िश विच वड्याईआ। जिस वेले परम पुरख अकाल आवे वड सुभागी, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तेरी साधना जावे साधी, गुरमुख सन्त लए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा चुकाईआ। पूरब लेखा कहे मैं आदि जुगादि जुग जुग मुकदा, पुरख अकाल दए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दीआं सुक्खणां रिहा सुक्खदा, सो साहिब स्वामी होए सहाईआ। जिस दा नाम निधाना इक्को तुक दा, तुख्म ताअसीर दए बदलाईआ। उसदा भाणा कदे ना रुकदा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहान जिस नूं झुकदा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। ओह हो मेहरवान जन भगत प्यारे पुछदा, पूरब पिछले लेखे सब दे झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगे लेखा मिटा देवे जगत वाले दुःख दा, सुख घर घर दए उपजाईआ।

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत २ सदन मल, कौड़ा मल दे गृह इटारसी मध प्रदेश ✪

जन भगत पूरी होवे आसा, निरास्ता अंदर रहे ना राईआ। किरपा करे परम पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करता दए वड्याईआ। सच प्रीती बख्शे चरण भरवासा, नाता आत्म परमात्म जुड़ाईआ। मानस जन्म करे रहिरासा, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। काया माटी वस्त अमोलक पाए साचे कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनसा सब दी वेख वखाईआ। जन भगत तेरी आत्म अन्तर पूरी होवे मनसा, देवणहार सच्ची वड्याईआ। सोहँ रूप बणाए साचा हँसा,

बुद्धी काग ना कोए कुरलाईआ। जगत नाता बणया रहे सरबंसा, बंस खुशी मनाईआ। भण्डारा देवे अगम्मी धन दा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भाण्डा भन्ना के कूड़े जन दा, जन आपणा लए बणाईआ। प्रकाश कर के नूरी चन्न दा, चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत प्रभ देंदा रहे दलासा, जुग चौकड़ी आपणी दया कमाईआ। लेखे लाउँदा रहे पवण स्वासा, जो साह साह हिरदे रहे ध्याईआ। पूरब लेखा रहिण ना देवे रती मासा, बेपरवाह हो के झोली पाईआ। सच दवारे कर के दासी दासा, सेवक सेवा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रीती दे के दान, दयावान होए सहाईआ। जन्म कर्म दयां विछड़यां मिल्या आण, अगे आपणा रंग रंगाईआ। वस्त अमोलक दे के जाए श्री भगवान, भिच्छया विच्चों भिच्छया आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिला के विच जहान, जगत जहालत विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत तेरा लेखा हथ्थ भगवान, भगवन देवणहार वड्याईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। साचा दे के शब्द ज्ञान, अन्तर करे पढ़ाईआ। रसना जेहवा दा लै के ब्यान, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। आसा मनसा पूरी करे विच जहान, निरासा रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी धुर दा काहन, दयावान रखिअक होवे थाउँ थाँईंआ।

५०६ १९

✪ १० चेत शहिनशाही सम्मत २ टोपनराम दे गृह इटारसी मध प्रदेश ✪

दस चेत कहे मैं खुशीआं नाल हस्सां, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। जन भगतां धुर संदेसा हक फ़रमान दस्सां, शब्दी ढोला नाद जणाईआ। जन भगतो श्री भगवान सदा वसे तुहाडी पिच्छे अक्खां, सच दवारे डेरा लाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लभ्भदे गए लखां, कोटन कोटि जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जिस दीआं चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड सार ना पाई किसे हद्दां, हदूद विच महिदूद ना कोए जणाईआ। ओस दे हुक्म अंदर दो जहान विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर बध्धा, बन्धना विच दिसे सर्ब लोकाईआ। जो बोध अगाध शब्द अनाद वजाए नद्दा, धुन आत्मक राग घट भीतर सर्ब सुणाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता नाम निधान देवे सद्दा, सोहला ढोला लोक परलोक आप सुणाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार दीन दुनी दा मालक

हो के आप भज्जा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेस अनेका जोती जाता पुरख बिधाता आपणा वेस वटाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार मनमुखां देवे सज़ा, हुक्म फ़रमान नौजवान दो जहानां इक सुणाईआ। जन भगतां नाल एथे ओथे दो जहान निरगुण सरगुण धार कदे करे ना दग़ा, साची सिख्या बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द अगम्म अथाह बेपरवाह निरअक्खर आप जणाईआ। जिस दा दीपक जोती धार जलवा नूर हो के जगा, जागरत जोत बिन वरन गोत लाशरीक हक तौफ़ीक, दाअवेदार हरि निरँकार, निरगुण धार हुक्म वरताईआ। सो खेल करे शाह पातशाह शहिनशाह सूरा सरबग्गा, धुर फ़रमाना नौजवाना मर्द मर्दाना धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। साचा नाम नर निरँकार वजाए डंका शब्दी ढोल डग्गा, चार वरन अठारां बरन अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर हक सच करे शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हँस रूप बणाए कग्गा, मन वासना दुरमति मैल ममता मोह दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल करे हकीकत हका हुक्म धुर दा इक प्रगटाईआ। हुक्म कहे मैं होण लग्गा तामीर, पुरख अकाल देवे वड्याईआ। कलयुग लेखा अन्त अख़ीर, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। झगड़ा मुकावां अमीर ग़रीब, ऊँच नीच राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। शरअ दे कट ज़ंजीर, शरीअत असलीअत इक्को दयां प्रगटाईआ। परम पुरख दी इक्को दस्स के तदबीर, तबदीली विच वेखां जगत लोकाईआ। भगत सुहेला कोई रहे ना दलगीर, अमृत बख्श के ठंडा नीर, अग्नी अग्ग देवां बुझाईआ। मुहब्बत विच देवां धीर, प्यार विच नाता इक रखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले सज्जण सच दुलारे बणा अज़ीज़, प्रीतम धुर दे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

५०७
१६

✪ ११ चेत शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध प्रदेश ✪

जन भगतां भगती करे मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। दया कमा के हाज़र हज़ूर, हाज़र हो के वेख वखाइंदा। जगत दुक्खड़े विच रहिण ना देवे मजबूर, महबूब आपणा रंग रंगाइंदा। चरण प्रीती बणा सच्चा मज़दूर, मुशक्कत आपणी झोली पाइंदा। भगत उधारना प्रभ दा आदि जुगादी दस्तूर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सच प्रेम विच हो मशकूर, मुश्कल अगली आप कटाइंदा। बिना चन्द तों दे के नूर, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगत जग कटे दलिद्र, दलिद्री रहिण कोए ना पाईआ। दयावान हो के आया

एधर, पुरख अबिनाशी वेस वटाईआ। दए वड्याई वांग बिदर, बिध आपणी नाल तराईआ। होए सहाई जावे जिधर, यथार्थ देवे माण वड्याईआ। पुरख अकाल बण के धुर दा पितर, पिसर पिसरान दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां रहिण ना देवे दु:ख, दुखियां दर्द मिटाइंदा। सच स्वामी देवणहारा सुख, सुख निरंतर इक प्रगटाइंदा। जन्म कर्म दी रहे कोई ना भुक्ख, नाम भण्डारा झोली पाइंदा। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चारों कुण्ट रंग रंगाइंदा। सन्त सुहेला बणा के आपणा सुत, जगत अपराधां विच्चों बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे कुछ दा कुछ, किस्मत दी किस्म करमां विच्चों बाहर रखाइंदा।

✪ ११ चेत शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिँघ दे गृह भुपाल मध प्रदेश ✪

५०८ १६ जन भगतां मिले माण अगम्मा मुफ्त, करता पुरख करतार कीमत ना कोए लगाईआ। सच फ़रमान धुर संदेसा अगम्मी धार देवे दरुसत, जगत विद्या अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कलयुग रैण अन्धेरी रहे ना कोए सुसत, निरगुण नूरी जोती चन्द सच प्रकाश करे रुशनाईआ। मेहरवान हो के महबूब मुहब्बत विच हथ्थ रखे उपर पुश्त, प्रितपालक हो के आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। जन भगतां देवे परम पुरख परमात्म नाम अनमुल्ला, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ मनार काया कुल्ला, कलमयां दा मालक धुर दा नग़मा हक इक दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाए दया कमाए हुक्म जणाए सुलह कुला, साहिब स्वामी अन्तरजामी धुर दी बाणी अगम्मी नाद जणाईआ। चरण दुआर बण भिखार दर दरवेश जो आए भुल्ला, अभुल्ल गुरदेव पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीनां बन्दू होए आप सहाईआ। सन्त सुहेला गुरमुख सज्जण मीत चार युग लोकमात कदे ना रुला, माणक मोती धुर दा हीरा हर हिरदे अंदर वड़ के करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। जन भगत सदा तक्के घर अगम्म, जित्थे वज्जे इक वधाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द होवे धन्न धन्न, बिन ढोले गीत सति सच शनवाईआ। होवे प्रकाश बिन सूरज चन्न, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। तत विकार ना दिसे तन, बेपरवाह आपणा खेल वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवन, भगत भगवन्त आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साजण वेख वखाईआ।

जन भगतां देवे एकँकारा इक प्यार, अपरम्पर स्वामी दया कमाईआ। बिना अक्खां नेत्र लोचन दरस देवे दीदार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। भाग लगाए महल अटल उच्च मनार, महबूब मुहब्बत विच आपणा परदा दए उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक इकल्ला पावे सार, अकल कलधारी जोत उज्यारी परदयां विच्चों परदा लए उठाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए जुग चार, सो खेल करे करतार, कुदरत दा कादर सृष्टी दा मालक दृष्टी दा पालक, परवरदिगार पर्दानशीन पर्दा दए उठाईआ। जन भगतां देवे नाम गुफ़तार, दो जहानां करे ना कोए तकरार, सिफ्ती सिफ्त करे इज़हार, पावे कोए अन्त ना पारावार, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खले साचा हरि, हर हिरदा वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा सच दलासा, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के हक हकीकत आप जणाईआ। चरण प्रीती धुर दी रीती बिन मन्दिर मसीती देवे इक भरवासा, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। काया चोली काया माटी साढे तिन्न हथ्थ रंग चाढ़े अगम्म मजीठी, एथे ओथे दो जहान, बिना निशान वेखणहार श्री भगवान, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। अन्तर धार कर प्यार परम पुरख परमात्म आत्म दस्से इक प्रीती, प्रीतीवान प्रीतम प्रतीनिध हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुहेला इक इकेला इक्को रंग रंगाए गुरू गुर चेला, चेला गुर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत तेरा मन्दिर महल अटल वेखे इक महबूब, एकँकारा दया कमाईआ। लेखा जाणे अर्श उपर सच अरूज, बेपरवाह दया कमाईआ। तेरी मंज़ल हक झगड़ा रहे ना दूज, वाहद देवणहार शरनाईआ। सो साहिब स्वामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त हक दा मालक हो मौजूद, सन्त सुहेले रिहा जगाईआ। जिस दी एथे ओथे दो जहान चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या विच समझ सक्या ना कोए हदूद, अनन्त कह के अन्त ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया चार वरन अठारां बरन विच्चों करनहारा नेस्तोनाबूद, निज आत्म परमात्म निजानंद परमानंद गुरमुखां अंदर काया मन्दिर, साढे तिन्न हथ्थ गृह गृह देवे प्रगटाईआ।

✪ १२ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिँघ दे गृह भुपाल मध्या प्रदेश ✪

जन भगतां अमृत आत्म नाम देवे सांतक सति, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण आपणी दया कमाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद धुन आत्मक राग सुणा के प्रगटावे अगम्मी मत, ब्रह्म मति बिन विद्या अक्खर दए पढ़ाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी

५१०
१६

आकाश मनमति बुध झगड़ा रहे ना कोई तत, भेव अभेदा अछल्ल अछेदा बिन चार वेदां आपणा दए जणाईआ। धीरज धर्म सन्तोख बख्शे सति, करे खेल अलखना अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेपरवाही विच दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण सरगुण नाता जुड़े सच, दूई द्वैत कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार हँकार विच्चों बाहर कढाहीआ। निज नेत्र लोचण नैण परम पुरख परमात्म खोल्हे अक्ख, हरिजन अन्तर अन्तर जाए वस, वास्ता वाबस्ता हो के आपणे नाल जुड़ाईआ। कूड़ कुड़यार नौ दुआर जगत वासना पिछला पन्ध मुके हद्द, हद्द हदूद हक महबूब पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मुकामे हक सचखण्ड दुआर इक जणाईआ। धुन आत्मक राग सुणाए ताल अगम्मी नद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द बुद्धी ढोला ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हर घट वेखे चाँईं चाँईंआ। जन भगत प्रभ देवणहारा सच भरवासा, भाण्डा भरम भउ काया माटी अंदर दए तुड़ाईआ। जुग जन्म दी कर्म कर्म दी पूरी करे आसा, तृष्ना तृखा माया ममता मोह दए चुकाईआ। साचे मण्डल साढे तिन्न हथ्थ सरीर सुरती शब्दी गोपी काहन मिल के पावे रासा, नाम शब्दी धुर दा राग वैरागी हो के आप अलाईआ। निज घर निज गृह निज आत्म कर के वासा, निर्मल नूर जोत जोत प्रकाशा, अन्ध अज्ञान श्री भगवान अन्धेरा अन्तर दए मुकाईआ। मानस जन्म लख चुरासी विच्चों करे रहिरासा, अन्तिम तोड़नहारा जम की फासा, फ़ैसला हक हकीकत इक्को इक जणाईआ। सन्त सुहेला इक इकेला जुग चौकड़ी जन भगतां बण के दासी दासा, पुरख अबिनाशा शाहो शाबाशा, मेहर नज़र बेनज़ीर आपणी इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरा करे जन्म जन्म दा घाटा, अगली मंज़ल पन्ध मुकावे वाटा, चरण कँवल जोड़ के सच्चा नाता, नरायण नर नूर आपणे विच मिलाईआ।

✪ १३ चेत शहिनशाही सम्मत २ किशन चन्द नारंग दे नाल निरँकारी सटोर कोआपरेटिव दिल्ली ✪

एकँकार निरँकार सतिगुर जिस नूं देवे सच्ची अर्शीवाद, एका वार इक इकल्ला आपणी दया कमाईआ। सति वस्तू सच घर काया मन्दिर साचे अंदर कदी ना होए बरबाद, नष्ट रूप ना कोए वखाईआ। नाम निधान मेहरवान जिस अन्तर आत्म परमात्म हो के देवे आपणी याद, मन वासना जगत माया विच विसर कदे ना जाईआ। प्रेम प्यार सच मुहब्बत विच महबूब वजाए आपणा अगम्मी नाद, धुन आत्मक अनहद नादी नाद शनवाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द देवे सच स्वाद, मन मति बुध सके ना कोए बदलाईआ। धुर दी वस्त बिना हथ्थ दस्त देवे दाता दातार, शाह नवाब शहिनशाह शाह पातशाह

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार जलवागर आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अर्शीवाद जिस नूं देवे साचे घर, सो दूजे दर मंगण कदे ना जाईआ। साची अर्शीवाद मिल जाए विच जग, जगजीवण दाता देवे माण वड्याईआ। माया ममता मोह तृष्ना कूड़ी क्रिया सड़े ना विच अग्ग, हउमे हंगता रोग ना कोए सताईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण निराकार जोत सरूप दर्शन करे उपर शाह रग, नव नौ चार लेखा रहे ना राईआ। बिन मक्के काअबे साचे हुजरे मुकामे हक मुरीद मुर्शद करावे आपणा हज्ज, महव महबूब मुहब्बत विच मिलाईआ। नाम निधान सति सतिवाद शब्द अगम्मी सुणाए नद, सुरती सुत्ती लए उठाईआ। सो गुरमुख गुरसिख सन्त भगत हरिजन इक्को ढोला इक्को गीत इक्को नग़मा इक्को नाम इक्को कलमा गावण धुर दा सद, छन्द इक्को इक सुणाईआ। जो पूरे सतिगुर दी शब्द डोरी अंदर गया बज्झ, मन वासना विच चार कुण्ट दहि दिशा नठ्ठ नठ्ठ कोए ना जाईआ। पूरा महापुरुष जिस दे अंदर जावे वस, निझर झिरना अमृत देवे रस, जोती जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर करे विनाश, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रखे निवास, स्वास स्वास इक्को नाम जणाईआ। आत्म परमात्म परम पुरख कदे टुट्टण ना देवे साथ, किरपा करे पुरख समराथ, अर्शीवाद विच्चों असर मुक्कण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणी अर्शीवाद, तिस दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत ऊँच नीच क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कलमा कलाम सिफ्ती नाम विच्चों करे आज़ाद, इक्को गृह इक्को मन्दिर इक्को घर इक्को मुरीद इक्को मुर्शद इक्को राह इक्को मंज़ल इक दवारा सहिजे दए वखाईआ।

५११
१६

✪ १४ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़का कलां ज़िला जलन्धर ✪

जन भगत तेरी इच्छया पूरी, आसा मनसा आपणा रंग रंगाईआ। जुग जन्म कर्म दी लेखे लाए मज़दूरी, सेवा सेवक दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना दूर कराए नाल चरण धूढ़ी, टिक्का मस्तक इक रमाईआ। निरगुण जोत प्रकाश करे अगम्मी नूरी, अन्ध अज्ञान देवे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत तेरी जुग जुग इच्छा, प्रभ मेला सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी लेखा जाणे धुर दा लिखा, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। कर्म कर्म दा झोली पाए हिस्सा, शाह पातशाह शहिनशाहीआ। धुर फ़रमान श्री भगवान जो कलम शाही बिन अक्खर लिखा, भविख्त विच इष्ट दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत आसा मनसा पूरी करे मंग, दूजे दर मंगण ना जाईआ। नाम निधान श्री भगवान काया मन्दिर अंदर चाढ़े रंग,

अगम्म अगम्मड़ा आप रंगाईआ। धुरदरगाही सच्चा देवे आत्म परमात्म संग, जुगती जगत ना होए जुदाईआ। बिन ताल तलवाड़े वजाए आपणा मृदंग, नाद अनादी अनहद राग सुणाईआ। भेव खुल्हाए पारब्रह्म ब्रह्म हँ, पतिपरमेश्वर आपणा परदा दए उठाईआ। करनी दा करता मानस पूरा करे कम्म, निहकर्मी हो के कर्म कांड दए मुकाईआ। वस्त अमोलक नाम पदार्थ देवे सच्चा धन, बेपरवाह आपणी दात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चाढ़ इक्को चन्द, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जन भगत तेरा लेखा लिखे बिन शाही कलम दवात, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सच प्रीती जोड़ के निरगुण सरगुण नात, मेला मेले धुरदरगाहीआ। झगड़ा मुका के विछोड़े वाली ज़ात, आत्म परमात्म संग निभाईआ। लेखे लावे सुहञ्जणी रात, रुत रुतड़ी विच्चों बदलाईआ। लेखा देवणहारा आदि, अन्त आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई लोकमात, अगला संग संगी हो के तोड़ निभाईआ।

✪ १५ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरचरण सिँघ दे गृह धीरपुर दिल्ली ✪

५१२
१६

भगत उधारी सदा चौंह जुगी, जुग करता दया कमाइंदा। सद भाग लगाउँदा रहे काया माटी झुग्गी, गृह मन्दिर आप सुहाइंदा। अन्तर वासना रहिण ना देवे दूजी, एकँकारा एका रंग रंगाइंदा। निर्मल पवित्र बिबेक करे बुद्धी, ज्ञान ध्यान विच बदलाइंदा। शब्दी रमज़ लगाए गुझी, सोई सुरती आप उठाइंदा। धार रहे ना मूल लुकी, परदा ओहला आप उठाइंदा। जगत क्रिया विच रहे ना दुखी, दीनां अनाथां दर्द गवाइंदा। उज्जल कर के मात मुखी, मुखड़ा सिफ्त सालाह सालाहइंदा। मंज़ल कर के उच्ची, जगत दवारयों बाहर कढाइंदा। आत्मा कर के सुच्ची, आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत सुहेला सदा जुग चार, चौकड़ आपणी दया कमाईआ। वेखे विगसे पावे सार, वेखणहार बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक देवे अपर अपार, पारब्रह्म प्रभ आप वरताईआ। चरण प्रीती बख्श के इक अधार, आदत कूड़ी दए बदलाईआ। गृह मन्दिर खोल्ह किवाड़, परदा ओहला दए चुकाईआ। अग्नी मेट के तत्ती हाढ़, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति बख्श के प्रेम प्यार, प्रीतम हो के धुर दा पता दए समझाईआ। जन भगतां मिलदा रहे सदा सुहेला, सच स्वामी दया कमाईआ। नज़र आउँदा रहे इक अकेला, एकँकार वड्ड वड्याईआ। माण दिन्दा रहे गुरू गुर चेला, चेला गुरू होए सहाईआ। सुहाउँदा रहे भगतां अन्तर

सुहञ्जणा वेला, वक्त नाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतां दस्सदा रिहा इबादत, कलमा धुर दा इक जणाईआ। जगत समाज विच्चों बदलदा आया आदत, अगला परदा आप उठाईआ। नाता तुड़ाउँदा रिहा निन्दक साकत, सगला आपणा संग बणाईआ। निरगुण हो के करदा रिहा हिफ़ाज़त, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मन वासना मेटदा रिहा साजश, सुरती आपणे नाल जुड़ाईआ। अमृत मेघ बरसदा रिहा बारश, बूँद स्वांती आप चुआईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां दी करन आया आप सफ़ारश, दूजा विचोला ना कोए जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धीरज नाल देवे सच दवारे दी सच्ची ढारस, ढाह ढेरी गुरमुख ख़ाक ना कोए बणाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह धीरपुर दिल्ली ✪

जन भगतां पूरब लहिणा धुर दा भाओ, भगती भगतां विच्चों प्रगटाईआ। इक्को सिमरन पुरख अबिनाशी साचा नाउँ, नर निरँकार निराकार इक मनाईआ। चरण कँवल साहिब स्वामी लागण पाउँ, पवित्र पुनीत आपणा आप बणाईआ। एका वेखण पिता माउँ, सदा सुहेला शहिनशाहीआ। जो देवणहारा ठंडी छाउँ, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त करन आए न्याउँ, नईआ नौका वेखे जगत लोकाईआ। परदा लाहवे मन्दिर अंदर साचे गाउँ, गहर गम्भीर हो के वेख वखाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत मिलण दा चाउ, चाउ घनेरा इक्को इक दृढ़ाईआ। भगत सुहेले गुरमुख सज्जण फड़ के बाहों, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मालक हो के धुर दा शाहो, शाही दुरमति मैल दए धवाईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी अगम्मी दस्सदा रहे जुगती, जगजीवण दाता दया कमाईआ। सिध्धी आपणे नाल मेलदा रहे सुरती, सुत्ती लोकमात उठाईआ। धार दस्सदा रहे आदि जुगादी धुर दी, धुर मस्तक लेखा दए प्रगटाईआ। महिमा अकथ अगाध बोध जणाउँदा रहे साचे सतिगुर दी, जो सति सतिवादी शब्द अनादी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक दरसाईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी देंदा आया दरस, दीनां अनाथां दया कमाईआ। जन्म कर्म दी मेटदा आया हरस, हवस जगत वाली बुझाईआ। मेहरवान हो के सरगुण उत्ते करदा आया तरस, निरगुण हो के अक्ख खुलाईआ। जन भगत प्यार मुहब्बत विच पैण ना देवे फ़र्क, फ़िरकेदारी विच्चों बाहर कढाहीआ। जगत जंजाला कर के तरक, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। सच दुआर दस्स के उपर अर्श, ऐशो इशर्त इक समझाईआ। भेव अभेदा खोल्ह के आप असचरज, अचरज लीला दए वखाईआ।

जित्थे इक्को शब्दी शेर रिहा गरज, ग़रज़ अवर ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भय विच करदे अरज़, बेनन्ती सच सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया प्रभू लोकमात पए मर्ज़, सच तबीब नज़र कोए ना आईआ। नूरानी चिहरे होए ज़रद, जगत ज़ावीए विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। जिस बिध साडी फोल लई फ़रद, परदा ल्या उठाईआ। जन भगतां नाल वण्ड आपणा दर्द, दीन दयाल दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी शरअ छुरी रहिण ना दए करद, कुदरत दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना तूं आदि जुगादी इक्को मर्द, दूजी मदद दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे बणाईआ। जन भगतां जुग जुग सुणाउँदा रिहा ढोला, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। सुणाउँदा रिहा सोहला, धुर दा हुक्म जणाईआ। चुकाउँदा रिहा ओहला, परदा आप उठाईआ। पढ़ाउँदा रिहा बोला, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। बणदा रिहा विचोला, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। अख्वाउँदा रिहा मौला, हर घट रमिआ बेपरवाहीआ। बणया रिहा भोला, भाओ भगतां आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जो सच दवारा खोल्ह, ख़ालक ख़लक दए दृढ़ाईआ। मन वासना कम्म ना आवे रौला, रौणक होवे आत्म परमात्म मिल के घर वज्जदी रहे वधाईआ। लख चुरासी जीव जंत सब नूं छड्डणा पए चोला, चोली तन माटी ख़ाक ना कोए हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप तराईआ। जन भगतां सदा मिलदा रिहा जगदीश, जगदीशर हो के वेख वखाइंदा। धुर दा कलमा नाम दस्सदा रिहा हदीस, हज़रत हो के आप पढ़ाइंदा। नाम निधान दस्सदा रिहा गीत, धुर दा राग आप सालाहइंदा। मन मनुआ बदलदा रिहा नीत, नीतीवान रंग रंगाइंदा। सदा वसदा रिहा चीत, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। भगत भगवान सदा माणदा रिहा प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाइंदा। साचा मार्ग दस्स के ठांडा सीत, अग्नी तत तत विच्चों बदलाइंदा। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, राउ रंकां इक्को घर वखाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगत दवारयों भिखारी हो के मंगे भीख, भिच्छया लै के खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले बणा अज़ीज, अज़ीम आज़म आपणे रंग रंगाइंदा।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरदर्शन कौर सुखवन्त कौर महल्ला जट्टपुरा कपूरथला ✪

सतिगुर धार अमृत दुद्ध, मिठ्ठा रस ना कोए जणाइंदा। जन भगतां करे निर्मल बुध, विवेक विवेकी आप बणाइंदा। पूरब जन्म दी होवे सुध्ध, मानस जन्म आत्म परमात्म रंग चढ़ाइंदा। मन वासना कूड़ी क्रिया करे ना युद्ध, जगत विकारा मोह मिटाइंदा। आत्म परमात्म सच प्रेम बख्श के सुध्ध, वदी सुदी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। कलयुग धार बदल के फेर रुतड़ी आउण लग्गी सतिजुग, जुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। दुद्ध कहे मैं अंमिउँ रस अमृत सीर, सर सरोवर विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। मेरा दाता पुरख अकाल गहर गम्भीर बेनज़ीर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जो मेहर नज़र नाल जन भगतां अन्तर आत्म बदल देवे तासीर, लातस्वीर जलवा नूर नुराना कर रुशनाईआ। फड़ के चोटी चाढ़े मंज़ल हक अख़ीर, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सच प्यार हक मुहब्बत दे के इक्को धीर, धर्म धरवास आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दी कट लकीर, फ़िकरा इक्को इक दए समझाईआ। दुद्ध कहे मेरा ओस दे नाल होण लग्गा मिलाप, जिस नूं देहुरयां अंदर सारे रहे गाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भगत सूफ़ी जिस दा दसदे गए भविख्त वाक्, वाकिफ़कार अन्तर आत्म बेपरवाहीआ। बख्शणहारा सच सौग़ात, नाम अगम्मी देवे दात, काया माटी हाटी सरगुण निरगुण झोली आप भराईआ। जन भगतां मेटणहार अन्धेरी रात, देवणहारा अमृत बूँद सवांत, बोध अगाध दस्स अगम्मी गाथ, करे सच पढ़ाईआ। उह साहिब स्वामी अन्तरजामी पतिपरमेश्वर कमलापात, देवणहार सच्ची वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा जन्म कर्म लेखा देवणहारा साख्यात, परदा ओहला रहिण कोई ना पाईआ। दुद्ध कहे मैनूं याद आई दादू वाली गाथा, गोबिन्द रिहा समझाईआ। जिस ने भरया हक ग्लासा, जाम हकीकी रिहा दिखाईआ। नेत्र रो के किहा मैं किस बूँद दा प्यासा, जिस नूं चातृक समझे कोए ना राईआ। गोबिन्द किहा सुण अगम्मी बाता, धुर फ़रमान दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होवे अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतर पैगम्बरां पुच्छे कोए ना वाता, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान सारे देण दुहाईआ। ओस वेले निरगुण निरवैर निराकार निरँकार निरगुण जोत करे प्रकाशा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रूप धराईआ। भगत भगवाना खेले लोकमात तमाशा, जगत जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। बावन दी याद रखे गाथा, बल दा लहिणा दए दुहराईआ। बच्चयां दा पिछला देवे बाका, हिसाब आपणे हथ्थ वखाईआ। पहली धार बण के अन्न दाता, दूजी वार भोग लगाए ओस ग्लासा, जिस नाल भगतां दी बुझे प्यासा, गुरमुखां दी पूरन होवे

आसा, तूं मेरा मैं तेरा चलदा रहे स्वासा, चरण प्रीती बणया रहे भरवासा, भाउ भउ इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा लेखे विच्चों भविख्त नाल मिलाईआ।

✪ १६ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

चेत कहे मैं करन आया आदाब, अदब विच सीस निवाईआ। जलवा तक्क महिराब, महबूब वेख बेपरवाहीआ। जो भगतां देवे ख़ताब, मुख़ातब हो के रिहा सुणाईआ। हकीकत वाला हक जनाब, ज़ाहर ज़हूर नूर खुदाईआ। हक निवासी इक्को वाहिद, वाहवा आपणी कार कमाईआ। नाम निधाना कर अनायत, इलम इक्को इक जणाईआ। आत्म परमात्म सच शरायत, शरीअत अवर ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दवारे करनी इक रिहाइश, धाम इक्को इक समझाईआ। जिस दी कर सक्या ना कोए पैमाइश, पैमाना नाप ना कोए बणाईआ। धुर दा संदेसा देवे सच हदायत, हाज़र हज़ूर करे पढ़ाईआ। जन भगतो एथे ओथे तुहाडी करां हमायत, हम साजण हो के वेख वखाईआ। मुहब्बत विच करां इतायत, इतलाह देवां थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। चेत कहे मैं करन आया निमस्कार, नमो नमो सीस झुकाईआ। डण्डावत करां बारम्बार, बेनन्ती इक सुणाईआ। परम पुरख मीत मुरार, पारब्रह्म तेरी सच सरनाईआ। जन भगतां करीं प्यार, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। दुखियां दा दिलदार, दर्दीआं हो के दर्द आपणी झोली पाईआ। शब्द अगम्मी करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद इक पढ़ाईआ। नज़र ना आवे जगत नेत्र विच संसार, संसारी समझ ना कोए रखाईआ। तेरा महल अटल उच्च मनार, महबूब हो के वसें बेपरवाहीआ। नव नौ चार पिच्छो आई वार, वारता पिछली रहे ना राईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी बख्श दे धार, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे आज्ञाकार, सिर सके ना कोए उठाईआ। कुछ लहिणा देणा पिछला कौल याद कर जुझार, जोगी जोगीशर देण गवाहीआ। तैनूं सजदा इसतगुफ़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चेत कहे मैं करन आया बन्दन, भज्जया वाहो दाहीआ। मस्तक टिक्का धूढ़ी ला के चन्दन, चन्द चांदना करां रुशनाईआ। जन भगतां दस्स के इक अनन्दन, अनन्द परमानंद दयां जणाईआ। लख चुरासी कटो बन्धन, जम की फाँसी रहे ना राईआ। दूजे दर ना जायो मंगण, देवणहारा बेपरवाहीआ। जिस दा खुल्ला सदा अंगण, दो जहान वसण चाँईं चाँईंआ। नाम निधान श्री भगवान चाढ़े आपणी रंगण, रंग रंगीला शहिनशाहीआ। जो तुहाडे काया मन्दिर अंदर आया लँघण, बिन पौड़ी डण्डे

आपणा कदम टिकाईआ। नाम पदार्थ आया वण्डण, धुर दी वस्त झोली पाईआ। जन भगतो जन्म कर्म दयां विछड़यां आया सद्दण, सधने तों अगे लेखा तुहाडा दए रखाईआ। लेखे ला के काया माटी बदन, बदीआं तों लए बचाईआ। जेहड़ा हथ्थ ना आया कोटन कोटि कीत्यां यतन, यथार्थ तुहाडा लेखा दए चुकाईआ। जन भगतो तुहानूं रहिण ना देवे बेवतन, वतन दे मालक घर ठांडे दए बणाईआ। सांझा दस्स के इक्को आपणा पत्तन, नाम बेड़े दए चढ़ाईआ। जुग जन्म दे लेखे कारन तुहाडा पदार्थ आया चक्खण, चसका ज़बान ना कोए रखाईआ। बिना अक्खां तों आया तक्कण, दोए लोचन जगत ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी विच्चों विरोल के मक्खण, कीमत आपणे घर चुकाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

श्री भगवान कहे जन भगतां दस्स के निरअक्खर आपणा ऊड़ा, ओड़क लेखा दयां मुकाईआ। बिना ललारी नाम अगम्मा रंग चाढ़ां गूढ़ा, गुरमुख विच उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणावां मेहरवान हो के मूढ़ा, मुरदयां मुर्शद हो के लवां उठाईआ। सरगुण चरण प्रीती मस्तक देवां धूढ़ा, धूढ़ निरगुण धार छुहाईआ। मन वासना नाता तोड़ां कूड़ां, कुटम्ब झूठ दयां छुडाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा करां पूरा, पूरन परमेश्वर हो के होवां सहाईआ। हरि भगत दूजे गृह बणे ना कोए मज़दूरा, मांगत हो के झोली कोए ना डाहीआ। नाम खुमारी बख्शां सच सरूरा, सिमरन इक्को इक समझाईआ। सच प्रकाश दे के नूरा, निरगुण जोत करां रुशनाईआ। मानस जन्म रहिण ना देवां अधूरा, हाज़र हो के पार लँघाईआ। जन भगत खल्ल लहाउणी ना पए वांग मनसूरा, मुश्कल अगली आप चुकाईआ। मूसे वांग डिगणा ना पए उत्ते कोहतूरा, कुदरत दा मालक काया कित्ते विच आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे जिस निरगुण धार पढ़या ऊड़ा अक्खर, आखर आपणे विच मिलाईआ। बिना पौड़ी डण्डे चढ़ के सिखर, साख्यात आपणा दरस दिखाईआ। जन्म कर्म आवण जावण लख चुरासी मिटा के फ़िकर, फ़िकरा इक्को दयां सुणाईआ। धुर दा रस देवां अमृत धार निझर, निज नेत्र कर रुशनाईआ। जिस दरस नूं तड़पदा रिहा बिदर, बिध नाल सनमुख हो के रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत इक्को इक निरगुण ऊड़े नाल करे प्यार, परम पुरख परमात्म देवणहार सच्ची सरनाईआ। बिना अक्खरां तों मेला हुन्दा

रहे नाल निरँकार, निरगुण आपणी धार विच समाईआ। जिस दीआं सिफ्तां करदे रहे सदा जुग चार, चौकड़ी पाठशाला विच कुरलाईआ। सजदयां विच सिर निवाउँदे रहे उपर मज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कैहिंदे रहे सिफ्तां विच सांझा यार, काअब्यां दा मालक ख़लक दा ख़ालक जलवा नूर खुदाईआ। जिस दा सदा सदा नित बणया रिहा बेएतबार, बेएतबारी लोकमात ना कोए रखाईआ। उह भगतां मीता प्रगट हो के वेखे ठांडा दरबार, दर दरवाज़ा इक सुहाईआ। सति वरतारा बण के देवे इक भण्डार, भंडी वरभण्डी दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सिरजणहार, सति स्वामी अन्तरजामी गुण निधान गुण आपणा भगतां झोली पाईआ।

२० चेत शहिनशाही सम्मत २ फुमण सिँघ दे गृह अहिमदपुर ज़िला कपूरथला

श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़े दा समझे ना कोए आकार, ओंकार सिफ्त विच सालाहीआ। जिस धार विच्चों निकल के धार, धुर दा हुक्म सदा वरताईआ। उह लेख लिखण तों बाहर, कलम शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ओस दा हुक्म सुणदे रहे गुर अवतार, पैगम्बर कलमा नाम खुदाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे अन्तर रखी संभाल, बाहर रूप रंग ना कोए वखाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खोज विच करदे गए भाल, खुद विच्चों खुदी ना जगत मिटाईआ। किसे दा हल्ल ना होया अन्तर स्वाल, स्वाल जवाब विच निरगुण सरगुण खेल वखाईआ। सिफ्तां वाला शास्त्र देण अहिवाल, जैकारयां वाले ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आपणे विच छुपाईआ। श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़े दी पाई किसे ना सार, सर्ब व्यापी परदा ना कोए उठाईआ। कागज़ कलम लिख लिख गए हार, शाही रो रो दए दुहाईआ। जिस दा अन्त ना पारावार, बेअन्त बेपरवाहीआ। उह सिख्या दए सिखाल, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी दो जहानां वक्खरी रख के चाल, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा फेरा पाईआ। जिस दा हुक्म बेमिसाल, वशाल जिस दी धार नज़री आईआ। ढोला गाए कोए ना कवाल, राग नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे विच रखाईआ। श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़े दा जे कोई समझ लैंदा राज़, इशारा धुर दा इक जणाईआ। झगड़ा रैहन्दा ना पूजा पाठ नमाज़, सिमरन जगत ना कोए वखाईआ। पैंडा मुक जांदा पृथ्मी आकाश, समाधीआं वाली सुन ना कोए वड्याईआ। बिन दीवा बाती सदा हुन्दा रहे प्रकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो कोटां विच्चों जन भगतां मिलदी एह दात, लख चुरासी पढ़ पढ़ थक्के मात लोकाईआ।

५१८
१६

जिन्हां दे अन्तर निरंतर हो के निरवैर करे निवास, आसण सिँघासण इक सुहाईआ। सदा सुहेला बण के वसे पास, करवट पासा आपणा लए बदलाईआ। ओन्हां पढ़न लिखण दी रहे कोई ना खाहश, मनसा मनसा विच्चों पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दयावान हो के दया करे साख्यात, साहिब हो के सबब आपणा आप बणाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन कौर दे गृह अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़े, दी जे समझ जावे जन उसतत, जगत निंदया रहे ना राईआ। पढ़नी पए ना कोई वाचकां वाली पुस्तक, अक्खरां राग ना कोए अलाईआ। जगत जहान विच्चों मिल जाए फ़ुरसत, ममता मोह बन्धन ना कोए बंधाईआ। इक्को मालक मिल जाए धुर दा मुर्शद, जो मुरीदां हाल सुण के खुशी मनाईआ। मुहब्बत विच दस्से अगम्मी उल्फ़त, धुर संदेसा इक जणाईआ। मन वासना रहिण ना देवे दुरमति, गुरमति इक्को दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव आपणा दए खुल्हाईआ। श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़े दा जो लेखा जाणे मुक्त, मुकम्मल परदा लए उठाईआ। ओस कोल धुर भण्डार रहे मुफ्त, भजन बन्दगी समझ ना कोए बणाईआ। आत्म सवाधान रहे चुस्त, आलस निंद्रा ना कोए बणाईआ। श्री भगवान मिलदा रहे दरुसत, मेला धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना बालिशत अंगुशत, उंगली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। श्री भगवान कहे जिस निरगुण ऊड़ा तक्कया बिन अक्ख, नेत्र नैण बन्द कराईआ। उह परम पुरख परमात्म नाल मिल के हो गया सच, सति सति विच समाईआ। बिना तत वजूद गया रच, रचना वेख बेपरवाहीआ। प्रकाश हो के जगे लट लट, नूर हो के डगमगाईआ। शब्द हो के मारे अगम्मी सट्ट, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। निरवैर हो के नज़री आए प्रतख, मेहरवान महबूब गोसाँईआ। जन भगतां इक्को मार्ग दए दस्स, दर दरवाज़ा अंदरों दए खुल्हाईआ। मोह मुहब्बत विच हो के वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। निरगुण ऊड़ा कहे भगत भगवान दा सांझा जस, अक्खर एसे दी करन वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। श्री भगवान कहे निरगुण ऊड़ा बुद्धी विच कदे ना आवे विचार, अकल विद्या ना कोए चतुराईआ। लिखण विच ना कोए शुमार, सतरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बोलण विच ना कोए जैकार, कलमे देण दुहाईआ। अददां विच ना कोए आधार, अंकड़यां विच ना कोए जणाईआ। त्रैगुण

माया ना कोए प्यार, पंज तत ना कोए सरनाईआ। इक्को खेल वेखे परवरदिगार, पारब्रह्म प्रभ नज़री आईआ। जो भगतां देवे अधार, नित नवित होए सहाईआ। जिस निरगुण अक्खर पुरख अकाल ल्या विचार, विचरके अवर ना किसे सुणाईआ। जिस नूं बीते नहीं जुग दो चार, कोटन कोटि गए विहाईआ। सो कलयुग अन्त जन भगतां करन आया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। इक्को अक्खर पढ़ो जिस नाल दो जहानां बेड़ा हो जाए पार, नईआ नौका मात ना कोए वड्याईआ। धुरदरगाही मिल जाए अबिनाशी करता धुर दा यार, कूड़ा नाता ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव नौ चार पिच्छो जन भगतां वखा के आपणी बहार, विहार विच बिवहार विच तिवहार विच आपणा रंग रंगाईआ।

५२० १९

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

श्री भगवान कहे मैं अक्खरां वाला लेख कदे ना लिखदा, वक्खर दी धार हुक्म जणाईआ। आदि जुगादि लेखा लहिणा देणा जाणां सतिगुर सिख दा, जन भगतां खोजां थाउँ थाँईंआ। आवण जावण पन्ध मुकावां झगड़ा नित दा, लख चुरासी दयां कटाईआ। मेल बणावां धुर दे मित दा, मित्र प्यारा हो के संग निभाईआ। जो जग नेत्र नैण किसे नहीं दिसदा, गुरमुख विरला दर्शन पाईआ। गुरमुखो एह लहिणा देणा नहीं पिछली रीती वाली इक दा, इक इकल्ला जुग जुग दयां विछड़यां पार कराईआ। नाता जोड़ के शब्दी धार पिता पूत पित दा, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। मार्ग दस्से जगत जहान हित्त दा, हितकारी हो के जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर नाम जगत वणजारयां कोल किते नहीं विकदा, हट्ट हटवाणे ख़ाली देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले दए वड्याईआ। श्री भगवान कहे मैं पढ़ावण आया अगम्मी पट्टी, जिस दा हरूफ़ ना कोए समझाईआ। नाम अमोलक देण आया अगम्मी रती, रतन जवाहर माणक मोती जिस दी कीमत ना कोए चुकाईआ। मिलावण आया निरगुण धार कमलापाती, पतित उधारन जो आदि जुगादि अख्वाईआ। बिन कर्म कांड तों करन आया गती, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख आत्मा सीत करावण आया तत्ती, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक सुहाईआ। जन भगतो मैं सिख्या वाला खोल्या नहीं कोई विद्याला, विद्या वाला इलम ना कोए पढ़ाईआ। इक्को मार्ग दस्स के सुखाला, सोहँ ढोला दिता समझाईआ। हथ्थ विच किसे नूं पकड़नी पए ना माला, मन का मणका दयां भवाईआ। पूजा करनी पए ना जोत ज्वाला, जागरत जोत करे

रुशनाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर देंदे गए अहिवाला, उह हालत वेखे थाउँ थाँईंआ। तुहाडा काया काअबा बणा के सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा आपणा दयां वखाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे मिसाला, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे दो जहान सदा बणया रिहा रखवाला, रखक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो प्रभ देण नहीं आया कोई इशारे, सैनत जगत ना कोए लगाईआ। मेहरवान हो के पार लँघाउण आया आपणे किनारे, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे गए सदा जुग चारे, चौकड़ी बैठी सीस निवाईआ। सजदयां विच गुरू अवतारे, पैगम्बर ढोले गाईआ। उह आ भगतां दे दवारे, भाग हिस्सा पिछला झोली पाईआ। निहकर्मी हो के कर्म कांड तों कढ्ढे बाहरे, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मानस जन्म गुरमुखां पैज संवारे, सेवक हो के आपणी सेव कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल धरनी धरत धवल जन भगत दवारे निरगुण रूप पधारे, सरगुण लेखे लए लगाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ✪

जन भगतो तुहाडा पवित्र साफ़ करना हिरदा चंगा, हरदम इक्को याद देणी बंधाईआ। शब्द अनाद धुन आत्मक वजा अगम्मी मृदंगा, नाम संदेसा देणा सुणाईआ। अन्तर आत्म चाढ़ के आपणा रंगा, रंगत दूजी देणी बदलाईआ। साचा ढोला सुणा के छन्दा, संसा रोग देणा मिटाईआ। निज आत्म दे के इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच देणा समाईआ। बिना बन्दगीउँ बणा देणा उह बन्दा, जो बन्दीख़ाना आपणा जाए तुड़ाईआ। सदा मिल्या मेल रहे नाल सूरे सरबंगा, विछोड़े वाली वण्ड ना कोए वखाईआ। तुहाडे चरणां दा राह तक्कदी रहे जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, त्रबैणी नैण अक्ख खुल्हाईआ। अमृत रस निझर मिलदा रहे ठंडा, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। सच प्रेम दा चढ़या रहे चन्दा, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। बेड़ा पार करना चुक्क के आपणे कंधा, कदम कदम दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सीस रहिण ना देवे नंगा, महबूब हो के आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो प्रभ ने चुकणा ओस गोदी, जित्थे गुर अवतार बैठे सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देणी उह सोझी, जिस नूं समझ सके ना कोए चतुराईआ। जित्थे जंगलां विच फिरना ना पए बण के जोगी, तपस्सवीआं वाला तप ना कोए कमाईआ। त्याग वैराग दा बणना ना पए रोगी, सीस ख़ाक ना कोए छुहाईआ। बंस लभ्भणा ना पए वेदी सोढी, चार वरन इक्को रंग दए चढ़ाईआ। झगड़ा मुका के जञ्जू

बोदी, आत्म ब्रह्म सब नूं दए समझाईआ। नाम संदेसा दे के इक सलोकी, सुल्हकुल घर विच दए मिलाईआ। साचे नाम दी दे के अगम्मी रोज़ी, रोज़ दे मंगते मंगण दी आदत दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। जन भगतो आत्म परमात्म बणा के इक्को याचक, यथार्थ इक्को हुक्म दयां सुणाईआ। तुहाडे अन्तर दा बण के वाचक, लेखा पढ़ां सहिज सुभाईआ। गुरमुख रहिण ना देवां कोई साकत, निन्दक दुष्ट दुराचार ना कोए अख्वाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच बणावां अस्तिक, इष्ट इक्को इक जणाईआ। नाता जोड़ धुर दा वास्तवक, वसल इक्को दयां वखाईआ। अबिनाशी करता तुहाडा बणे उपाशक, उपनिशदां दी करनी ना पए पढ़ाईआ। हरि चरण दुआर चंगी सेज नालों बाशक, विष्नूं सागों पांग उत्ते दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखा रिहा कोए दीन ना मज़्ाबी, आत्म परमात्म मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। पुरख अकाल बणया रहे मददी, दूजा सिर ना कोए उठाईआ। तुहाडा मन ना रहे तशदद्, कूड़ विकारा दयां खपाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के बन्दगी, बन्दीख़ाना दयां तुड़ाईआ। गुरमुखो तुसीं कटणी नहीं किसे दी मुशंदगी मुश्कलां विच्चों आपे बाहर कढाहीआ। मौज लैणी अगे सतिगुरू दे अनन्द दी, रसना रस फीके दए जणाईआ। कूड़ विकार दी खाणी ना पए गंदगी, सुगंधी आपणा नाम धराईआ। एह खेल ओस अगम्मी चन्द दी, जिस नूं चन्द सूरज बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगतो तुहाडा बदल देणा कानून काइदा, कामल मुर्शद दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा पूरा कर के वाअदा, वाहिद आपणा हुक्म सुणाईआ। शब्दी गोबिन्द दो जहानां बण के आया नुमाइंदा, नमो नमस्ते इक्को दए दृढ़ाईआ। जिस दा हुक्म फ़रमान चलणा आइंदा, वेखे थाउँ थाँईंआ। सो स्वामी अन्तरजामी खेल करे बाकायदा, धुर दी धार आप दृढ़ाईआ। अगे गुरमुखो तुहाडे नालों होवे ना कदे अलाइदा, वक्खरा घर ना कोए सुहाईआ। जन भगतो तुहानूं मिल के तुहाडे नालों प्रभ नूं बहुता फ़ायदा, जो फ़ैसले हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहेगा, लोकमात ना कोई मेटे मेट मिटाईआ।

२० चेत शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला

जन भगत लोकमात बणना धरनी, धुर दा धाम इक जणाईआ। पुरख अकाल करता करनी, कुदरत दा कादर बेपरवाहीआ।

जिस दी मंज़ल तुसां चढ़नी, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। इक्को तुक ओस दी पढ़नी, जो तोहमतां तों लए बचाईआ। जिस दी पत टहणी कदे ना झड़नी, बसन्त ख़िजां ना रूप वखाईआ। धार अग्नी हवन कदे नहीं सड़नी, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। झगड़ा मुक जाए वरनी बरनी, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। इक्को परम पुरख दी लग्गणा सरनी, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लए उठाईआ। जन भगत परम पुरख परमात्म वेखणा चार कूट, दहि दिशा रिहा समाईआ। खोटे खरे परखे जूठ झूठ, सति सतिवाद परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। कलयुग अन्त तुहाडे उपर गया तुठ, तुछ तों कुछ दए बणाईआ। अमृत जाम प्या के घुट, घाटी मंज़ल पार कराईआ। नाम भण्डारे दी पा के लुट्ट, लुटेरयां तों लुका के तुहाडे अंदर दए टिकाईआ। तुसां खुशीआं नाल सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पढ़नी तुक, तुरत निरत सुरत अकाल मूर्त इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तुहाडा अंदरों बदल देवे रुख, रुक्खा सुक्खा खा के सुख तुहाडे विच वखाईआ।

✪ २० चेत शहिनशाही सम्मत २ सूरत सिँघ दे गृह पिण्ड डाला ज़िला कपूरथला ✪

५२३
१६

कलयुग वेख अन्धेरी रात, पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाइंदा। लख चुरासी तक्के मार झात, चारे खाणी फोल फुलाइंदा। जन भगतां बन्द कवाड़ी खोल्ह ताक, परदा ओहला आप उठाइंदा। लेखे ला के तन माटी ख़ाक, असल वसल वजूद आप कराइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के जाप, जीवण जुगत जगत दृढ़ाइंदा। कोटन कोटि जन्म दे मेट के पाप, दुरमति मैल धवाइंदा। सति सतिवादी हो के देवे साथ, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सगला संग निभाइंदा। मेहरवान वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक हो के फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर परदा आप उठाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख अन्धेरा अन्ध, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। साचा देवे कोए ना संग, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आत्म परमात्म चाढ़े कोई ना रंग, कूड़ी क्रिया जगत वासना होई हल्काईआ। नाम अगम्मा सुणाए कोए ना छन्द, अक्खरां वाले ढोले रहे गाईआ। निज घर निज गृह पाए कोए ना निजानंद, परमानंद विच ना कोए समाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अन्तर आत्मा दिसे रंड, सन्त कन्त सुहागी निरगुण निरवैर निराकार ना कोए हंढाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब नूं देवणहारा दंड, नाम खण्डा ब्रह्मण्डां इक्को रिहा उठाईआ। नेत्र रोवण सूर्या चन्द, पाताल आकाश रहे कुरलाईआ। भेव चुक्कया ना किसे ब्रह्म हँ, आत्म अन्तर परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सति सतिवादी लेखा अगला दए समझाईआ। कलयुग कहे मेरी अन्धेरी घट, घट घट परदा दिता पाईआ। करया खेल बाज़ीगर स्वांगी हो के नट, नटुआ मन दिता नचाईआ। वस्त अमोलक रहिण ना दिती किसे साढे तिन्न हथ्थ काया हट्ट, जगत वासना कूड़ी क्रिया सृष्टी दृष्टी होई हल्काईआ। निज नेत्र खोल्ह के वेखे कोए ना अक्ख, प्रतख मिले ना रूप गुसाईआ। माया ममता गृह गृह नाता तोड़या सच, जूठ झूठ कूड़ कुटम्ब वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। कलयुग कहे तेरा खेल अगम्मा अनोखा, जीव बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। जगत विद्या रहिण ना देवां सोचा, विद्वान चले ना कोए चतुराईआ। हाहाकार कराए चौदां लोका, परलोक दिता रवाईआ। दीवा बाती जगण ना दिता किसे काया माटी कोठा, अन्ध अन्धेर दिता बणाईआ। जीव जंत साध सन्त पढ़न लगाया अक्खरां वाला पोथा, निरअक्खर भेव ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कलयुग कहे मेरा चार कुण्ट वेखो कलेश, कलमा हक ना कोए जणाईआ। जो हुक्म दे के गया दस दस्मेश, दहि दिशा गई भुलाईआ। धुर दा सुणे ना कोए संदेश, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। निज नेत्र निरगुण निरवैर निरँकार कोई ना सके वेख, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत लभ्भण थाउँ थाँईंआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित बदलणहारा वेस, वेसाधारी आपणा रूप वखाईआ। जिस दा कलम शाही तों बाहर लिखण वाला लेख, काग़ज़ां उत्ते वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्तिम खेल देणा खेड, जगत खलारी हो के फेरा पाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा भेज, भजन बन्दगी नाम कलमा उल्मा इलम विच करे पढ़ाईआ। सो पुरख बिधाता सुणावे गाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। कलयुग कहे मैं होण ना देवां किसे दा कल्याण, कलमे वाले देवां भुलाईआ। अन्तर रहिण ना देवां कोई ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे रहे कुरलाईआ। सति धर्म दा मेट के जगत निशान, कूड़ कुड़यारा दयां झुलाईआ। मेला होण ना देवां मन वासना विच श्री भगवान, तृष्ना विच रखां जगत लोकाईआ। करां खेल ख़लक विच महान, महबूब दा हुक्म मन्न के आपणी कार कमाईआ। कोटां विच्चों हरिजन भगत सुहेले थोड़े चतुर सुजान, जो बिना विद्या बुध बिबेक रहे कराईआ। तिन्हां काया मन्दिर अंदर दीआ बाती कमलापाती जगाए आप महान, शब्द नाद बोध अगाध अकथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कहे मैनूं कैहिंदे कूड़ कुड़यार, काया कपड़ सब दा दिता

बदलाईआ। लहिणा देणा मुका के गुरू अवतार, पैगम्बरां धुर दा हुक्म दिता सुणाईआ। सचखण्ड दवारे जा के सारे इक्ट्ठे करो निमस्कार, दीन मज़्ब दा झगड़ा रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जिस नूं जुग चौकड़ी सिफ्तां विच गाउँदे गए वारो वार, वारता अक्खरां वाली बणाईआ। सो निरगुण जोत बिन वरन गोत कल कल्की लै अवतार, कलमयां तों बाहर इज़हार आपणा रिहा जणाईआ। जिस दी रसना जिह्वा बत्ती दन्द वाली नहीं कोई गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा हुक्म सुणाईआ। सो साहिब सुहेला इक अकेला जन भगतां देवे आप दीदार, दयावान हो के परदा अंदरों दए उठाईआ। गृह मन्दिर घर मेला मिले मीत मुरार, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन तेल बाती दीपक दीआ होए उज्यार, दिवस रैण अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। धुन आत्मक सुणाए अगम्मी आवाज, बिन सरवण जस धुर दा आप दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले सुरती शब्द उठाए आण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काया माटी साची हाटी अंदर आत्म परमात्म मिले श्री भगवान, भावना जन भगतां पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, नाम अमोलक काया गोलक वस्त अगम्मी झोली पाईआ।

✪ २१ चेत शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड बाऊपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

श्री भगवान कहे मैं आपणी दुनिया तक्की, लख चुरासी जीव जंत वेख वखाईआ। मन वासना जगत क्रिया विच होई शकी, गुर अवतार पैगम्बरां हुक्म गई भुलाईआ। आत्म परमात्म प्रीत ना वेखी हकी, हकीकत विच्चों हक कीती जुदाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नठ नठ थक्की, जगत माया भज्जी वाहो दाहीआ। निज नेत्र ज्ञान खुल्ही किसे ना अक्खी, अक्खीआं वाले अन्धे नज़री आईआ। अमृत धार निझर बूँद सवांत किसे ना चक्खी, चसका रसना प्या लोकाईआ। परम पुरख परमात्म परमेश्वर मिल्या ना कमलापती, पतित उधारन नज़र कोए ना पाईआ। घर घर अंदर बुझी वेखी बत्ती, सति जोत ना कोए रुशनाईआ। बिन हरिनामे ख़ाली होई साढे तिन्न हथ्थ हट्टी, मन हटवाणा पूंजी बैठा लुटाईआ। सदी चौधवीं सारे भरन वाले चट्टी, चोट परवरदिगार इक लगाईआ। नाम पदार्थ मिले कोए ना रती, रतन अमोलक हीरे माटी ख़ाक मिल के आपणी पत गए गवाईआ। सति सन्तोख धीरज विच नज़र ना आवे कोए जती, सति विच सती ना कोए समाईआ। श्री भगवान कहे मेरी खातर माया करदे इक्ठ्ठी, भठ्ठी कूड़ी अग्न तपाईआ। सिफ्तां दी पढ़दे पट्टी, पटने वाले नालों होई जुदाईआ।

जिस ने लेख लेखणी बिन कलम शाही लिखी, इबारत विच ना कोए पढ़ाईआ। जिस दी चार वरन तों बाहर प्रेम धार दी सिक्खी, सख़ावत विच चरण प्रीती झोली पाईआ। धार अगम्मी दरस अनडिठ्ठी, बिन नेत्र करे रुशनाईआ। जिस नूं समझे कोए ना वार थित्ती, जुग चौकड़ी देण दुहाईआ। ओस प्रभू दी भगत उधारन दी साची मित्ती, मित्र प्यारा हो के नज़री आईआ। जिस ने मंज़ल वड्डुउँ कीती निक्की, निकयाँ तों वड्डे दए बणाईआ। खेल जाणे जीव जीअ की, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान बेपरवाहीआ। श्री भगवान कहे मैं आपणा वेख्या लोकमात, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसी अन्धेरी रात, ज्ञान गुरू चन्द ना कोए चमकाईआ। सच भण्डारा नज़र ना आए अगम्मी सुग़ात, जो साहिब सतिगुर आप वरताईआ। आत्म परमात्म जुड़या ना वेख्या नात, नातवां होई लोकाईआ। सिफ्तां वाली गाउँदे गाथ, आत्म परमात्म वज्जे ना कोए वधाईआ। पिछलीआं कथा कहाणीआं करदे याद, सनमुख हो के दरस कोए ना पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया खेड़ा, मानव वेख्या बरबाद, मनुष हो के सोभा विच ना कोए सुहाईआ। जन्म कर्म विच्चों करे ना कोए आज़ाद, आज़ादी हक ना कोए दवाईआ। लेखा मुक्कया ना वुज़ू विच नमाज़, सजदयां विच सिर ना कोए झुकाईआ। सचखण्ड दवारे वस्या तक्कया ना कोए आबाद, इबादत विच लग्गी सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान मेहरवान महबूब मालक ख़ालक गृह मन्दिर अंदर सुणे ना कोए फ़रयाद, दुखियां दर्द ना कोए मिटाईआ। अल्ला राम वाहिगुरू कह कह गॉड, बैठे सीस निवाईआ। सच दवारे करे ना किसे लाड, गोदी गोद ना कोए उठाईआ। दीन दुनी दा लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। दीपक जोत ना जगे चिराग़, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो भुल्लया बेपरवाहीआ। रसना जेहवा दा लैंदे स्वाद, निज रस ना कोए चखाईआ। कन्नां नाल सुणदे आवाज़, धुन आत्मक राग ना कोए अल़ाईआ। जगत नींदर विच्चों जाण जाग, माया परदा ना कोए उठाईआ। विद्या नाल वड्डा होया दिमाग़, वैराग अंदर ना कोए जणाईआ। हरि कन्त किसे ना पाया सुहाग, सौहरे पईए सारे रहे हंढाहीआ। श्री भगवान कहे मैं वेख्या जगत विवाद, गुर अवतार पैगम्बर सक्या ना कोए मिटाईआ। सच प्रेम दा उजड़या होया बाग़, पत्त टहणी कली मुरझाईआ। एसे कारन कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखण आया आप, निरगुण हो के वेस वटाईआ। जन भगतां खोल़ के अंदर ताक, परदा रिहा उठाईआ। शब्द सुनेहड़ा दे के साफ़, धुर हुक्म करे शनवाईआ। पूरब जन्म दा कर्म कीता मुआफ़, मुसतकिल नाता इक्को ल्या बंधाईआ। अंदर बाहर रहे कोई ना ना पाक, दुरमति मैल धवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दरस्स के जाप, सोहँ सच करी पढ़ाईआ। पुरख अकाल मेल के बाप, गोदी धुर दी ल्या टिकाईआ। जो गुर

अवतार पैगम्बर गए आख, आख़र ओहो रिहा भुगताईआ। लेखा जाणे भविख्त वाक्, वाक्य आपणा दए समझाईआ। सन्त सुहेले कर के दास, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जित्थे वज्जे अगम्मी नाद, शब्द धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वड वड्याईआ। श्री भगवान कहे मैं वेख्या लोकमात जग, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। घट घट अंदर लग्गी अग्ग, तृष्ना जगत ना कोए बुझाईआ। कूड़ी क्रिया पार करे ना कोए हद्द, हदूद परदा ना कोए उठाईआ। घर स्वामी सज्जण लए कोई ना सद्द, पुरख अकाल मिलण किसे ना आईआ। मन वासना जगत तृष्ना रहे नठ्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। साचा करे कोई ना हठ्ठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लभ्भदे तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खोज खुजाईआ। नज़र आए ना कमलापति, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। श्री भगवान कहे मैं दुनिया कर के वस्स, वासना विच जगत कीती हल्काईआ। मोह ममता विच गए फस, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख थोड़े लए रख, जिन्हां दे अंदर वड़ के ल्या उठाईआ। बिन अक्खां तों खोल्ह के अक्ख, आख़र मंज़ल दिता चढ़ाईआ। नाअरा जैकारा बोल के हक, हकीकत परदा दिता उठाईआ। प्रेम प्यार दा दे के रस, रस्ता इक्को दिता जणाईआ। आत्म परमात्म कर के वस्स, वसल आपणा दिता वखाईआ। अबिनाशी करता रखणहारा पत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ।
जो भगतां कारन आया वत, बेवतन हो के गुरमुख वतन रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब कला समरथ, धुर दा लेखा दए चुकाईआ। श्री भगवान कहे मैं वेखे भगत, जो बैठे ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ के कूड़ा जगत, जागरत जोत करी रुशनाईआ। इक्को नाम चेतण फ़कत, फ़िकरे सारे गए भुलाईआ। उन्हां दा मिलण दा आवे वक्त, वार थित दए गवाहीआ। जिन्हां दे अंदर देणी शक्त, शखसीअत देणी बदलाईआ। प्यार विच होण ना देणां फ़र्क, फ़िरकेदारी देणी खपाईआ। देणी वड्याई उपर धरत, धरनी धवल वज्जे वधाईआ। भगत उधारना भगतां नाल प्रभ दी शर्त, शरअ विच्चों बाहर कढाहीआ। जो निरगुण धार हो के आया परत, पतपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उह अर्श विच लै के जाए उत्तों फर्श, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, जन भगतां मदद करे चाँईं चाँईंआ। अज़ल छुरी कोहे कोए ना करद, कतलगाह वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अबिनाशी करता आत्म दा बणे हमदर्द, दीनां अनाथां दया कमाईआ। सच बेनन्ती सुण के अरज़, आरज़ू आपणे विच समाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा करे फ़र्ज़ पुरख अकाल होए सहाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल मिलण दी प्रभ नूं बहुती ग़रज़, प्रेम दी ख़ातर चातृक हो के चलित्तरां विच बिलप रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सब दी जाणे बिन अक्खरां वाली फ़रद, नित नवित लेखा लेखे विच्चों बाहर कढाहीआ।

दलीप कहे मैं हाज़र होया, हज़ूरी विच खुशी मनाईआ। गुरमुखो मैनूं कोई ना जाणयो मोया, मुरदयां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं ओस दी गोदी सोया, जिथ्थों सुत्यां ना कोए उठाईआ। जेहड़ा मेरे मरन उत्ते नहीं रोया, मैं देवण आया वधाईआ। मैं अबिनाशी करते दा रूप होया, जोती जोत विच समाईआ। मैं प्रकाश तक्कां उपर त्रैलोआ, ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ छुपाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा नवां नरोया, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। मैं ओस परम पुरख दा होया, जिस दा होका देवे लोकाईआ। माता पिता ने लाल नहीं खोया, जिस दी वस्त ओसे हथ्थ फड़ाईआ। मैं संदेसे विच लै के आया ढोआ, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। जन भगतो तुहाडे प्रेम प्यार दी मुहब्बत मैनूं मोहया, मिल के खुशी वखाईआ। अबिनाशी करते वरगा अवर ना कोआ, कूक कूक दयां सुणाईआ। जिसने अमृत रस निझर धारों चोया, सांतक सति दिता कराईआ। मेरे कोलों कुछ नहीं लकोया, सब कुछ बिन अक्खां दिता वखाईआ। मैनूं ओस धार विच परोया, जिथ्थे भगत सुहेले बैठे डेरे लाईआ। मैं ओसे दा रूप ते ओसे दा होया, अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दलीप कहे मैं कहिण आया धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। जिस प्रेम धार अंदर कहिणा ल्या मन्न, आसा मनसा वेख वखाईआ। भगत सुहेले चाढ़ के साचे चन्न, लोकमात कीती रुशनाईआ। नाम संदेसा सुणा के अगम्मी कन्न, परदा दिता उठाईआ। साचे सन्तां नेत्र नैण रिहा ना अन्न्ह, होई सच रुशनाईआ। उन्हां अग्गे बेनन्ती करां सब ने लैणी मन्न, ममता विच सुणाईआ। जन भगतो पिछला सांभ के रख्या तुसां खाधा अज्ज अन्न, अनन्द विच ढोले लैणे गाईआ। मालक हो के बेड़ा जावे बन्न्ह, बंदयां दे बन्दीखाने दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाए आत्म तन, परमात्म हो के आपणे विच मिलाईआ।

५२८ १६

५२८ १६

२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ गंढा सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर

तन माटी ख़ाकी जगत साक, लोकमात रहिण ना पाइंदा। आत्म परमात्म धुर दा साथ, अबिनाशी करता आप बणाइंदा।

जन भगतां माणस जन्म कर के रास, रस्ता धुर दा इक जणाइंदा। अन्त अख़ीरी लेखे ला के स्वास, साह साह आपणा रंग रंगाइंदा। निरगुण वस्त लै के जाए आपणे पास, सरगुण आपणी भेंट जणाइंदा। मेला कर धुर प्रकाश, पिछला पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे विच छुपाइंदा। तन माटी ख़ाकी जगत मीत, परमात्म आत्म मित्र इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां करदा रहे उडीक, नित्त नवित ध्यान लगाईआ। सो कलयुग अन्त गुरमुखां करन आया तस्दीक, शहादत शब्दी नाल भुगताईआ। आपणे हथ्थ रख तौफ़ीक, तोहफे देवे थाउँ थाँईंआ। जन्म कर्म दी मेट के लीक, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। मनसा आसा पूरी कर उम्मीद, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए आपणा घर, जिस गृह दा मालक इक्को नज़री आईआ। तन माटी खाकी कूड़ा रिश्ता ख़ाक, ख़ालस रंग ना कोए रंगाइंदा। बिन सतिगर पूरे करे ना कोए साफ़, दुरमति मैल ना कोए धुआइंदा। रूह बुत्त ना होवे पाक, पतित पुनीत ना रूप बदलाइंदा। जन भगत सुहेले कर के आपणे दास, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निज आत्म कर के वास, विश्व आपणी धार समझाइंदा। सद रखणहारा पास, पासा ज़िमीं असमान उलटाइंदा। मेला कर जोत प्रकाश, प्रकृती बन्धन आप तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करे रहिरास, रिश्ता आत्म परमात्म आप रखाइंदा।

२२ चेत शहिनशाही सम्मत २ दर्शन कौर दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर

जन भगत नाम निधाना गाउणा धुर दा मंगल, सतिजुग कीती सच पढ़ाईआ। कूड़ी शरअ दा तोड़ के संगल, संग रहिण बेपरवाहीआ। फिरना पए ना उजाड़ जंगल, जूहां विच ना कोए भुआईआ। मस्तक टिक्का लाउणा पए ना चन्दन, संधूर कसूर ना मुआफ़ कराईआ। ममता मन रहे ना गंधल, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। चरण प्रीती करनी धुर दी बन्दन, बन्दगी इक दृढ़ाईआ। दूजे दर ना जाणा मंगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। अबिनाशी करता चाढ़नहारा आपणी रंगण, रंग रंगीला दया कमाईआ। सच दवारे दे के धुर दा अनन्दन, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाईआ। लख चुरासी विच्चों आया कढ्ढण, धुर दा कटड़ा आपणा दए समझाईआ। शब्द संदेशे विच आया सद्दण, सद्दा देवे नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत तेरा लेखा रहिण ना देवे जग, जग्ग जग्ग वेख

वखाईआ। कूड़ी तृष्ना मेट के अग्ग, अगला परदा दए उठाईआ। सच दवारे दा बख्श के हज्ज, हाजत पूरी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल पुरख समरथ, समां समझ विच्चों बदलाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

हरि दाता आदि जुगादि, जुग चौकड़ी देवणहार अखवाइंदा। नाम पदार्थ शब्द भण्डारा देवे दाद, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले बणाए आपणे साध, साधना धुर दी इक वखाइंदा। धुर दी प्रीती दस्से अगम्मी याद, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। उजड़े खेड़े कर आबाद, रुत्त सुहञ्जणी नाल सुहाइंदा। जन भगतां कर वास, निवास अस्थान इक वड्याइंदा। घर साचे कर प्रकाश, अन्ध अज्ञान चुकाइंदा। स्वामी हो के वसे पास, अन्तरजामी हो के परदा लाहइंदा। जुग चौकड़ी चली आई गाथ, सतिजुग आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिजुग कहे एह पिछली पुराणी बस्ती, बसतयां ग्रन्थां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। राजे बल दे नाल सी वसदी, सोहणा आपणा रंग वखाईआ। एथे कुटीआ सी रामजस दी, जो पंडत वेता वेदां दा अख्वाईआ। उस दी रमज़ सी अंदरली अक्ख दी, बिन अक्खां राह तकाईआ। गाथा धुर दी सच दी, सच सच समझाईआ। धरनी खुशीआं नाल हस्सदी, ढोलयां विच अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे एथे रामजस प्रभ दा भगत, सतिजुग पिछला रिहा जणाईआ। जिस दी बल नाल सी शर्त, बलख जा जा गया सुणाईआ। मैनूं ऐं दिसदा पुरख अकाल कलयुग आउणा एथे परत, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सोहणी होणी धरत, कलयुग कंडयां विच्चों गुरमुख लए प्रगटाईआ। मालक बण के अर्श, फर्श दए वड्याईआ। गुरमुखां मेटे हरस, संसा रोग गवाईआ। निमाणयां करे तरस, रहमत नाल तराईआ। अमृत देवे बरस, बूँद सवांत चुआईआ। पिछली याद करे पढ़त, लिख्त अगली दए बणाईआ। सोहणा शहिनशाही होवे बरस, सम्मत सम्मती नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए चुकाईआ। बस्ती कहे मेरे विच पिच्छे वसे थोड़े लोक, इक सौ उनत्ती नजरी आईआ। इक दा इक्को गाउंदे सलोक, दो दा दूआ गए मिटाईआ। नौ दर तों बाहर मानण मौज, मजलस कर के बेपरवाहीआ। दर्शन कर के रोज़, खुशीआं झट्ट लँघाईआ। चुगदे रहे चोग, नाम अमोलक रसना लाईआ। कटदे रहे विजोग, संजोगी जोड़

जुड़ाईआ। करदे रहे भोग, आत्म सेज हंढाहीआ। पैंडा मुकाउँदे रहे लोक परलोक, पन्ध विच ना कोए अटकाईआ। सोहँ ढोला गाउँदे रहे सलोक, जो रामजस दिता समझाईआ। पुरख अकाल दी रखदे ओट, ओड़क मिल के विच समाईआ। जो आदि जुगादी निर्मल जोत, जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सर्ब स्वामी वेख वखाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बलाका सिँघ, आसा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

धरनी कहे मेरा वसदा सी खेड़ा, सतिजुग पिछला रिहा जणाईआ। सति सतिवादी रामजस दा सी डेरा, बावन बावन कर्म वण्ड वण्डाईआ। जिस दे अंदर ढोला गाउँदा सी तूं मेरा मैं तेरा, दूजी आवाज़ ना कोए सुणाईआ। बाई चेत नूं पिच्छे होया अन्धेरा, बादल घनघोर रहे कुरलाईआ। मन विच उलटा आया गेड़ा, मनूआं ल्या भुआईआ। जिन्नां चिर साहिब घर आ मिले ना मेरा, मित्र हो के मीत बणाईआ। नज़र ना आए नेरन नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। जगत मोह ना मिटाए झेड़ा, झगड़ा अंदरों बाहर कढाहीआ। चार कुण्ट ना पाए घेरा, शाहसवारा हो के सेव कमाईआ। मेहरवान हो के करे ना मेहरा, मेहर नज़र नाल तराईआ। ओन्नां चिर सुहञ्जणा दिसे ना मेरा डेरा, जे डेरी ला के आवे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए रंगाईआ। अन्धेरी रात रामजस दे पैर हेठां आ गई कीड़ी, अंदरों दिती हाल दुहाईआ। मैं दर्द नाल गई पीड़ी, पीड़ अंदरों ना कोए कढाहीआ। मेरी ज़िंदगी दी मंज़ल अन्त अख़ीर, मंज़ल मिली ना बेपरवाहीआ। होई मात दिलगीरी, रो रो रही सुणाईआ। धीरज मिले ना कोए धीरी, धरवास रिहा ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा दरसाईआ। कीड़ी कहे जिस वेले मैनूं पैर नाल दिता दब्ब, अड्डी चुक्क के पंजे उत्ते भार ल्या टिकाईआ। मेरे अंदरों निकलया हाए रब्ब, बौहड़ी बौहड़ी कर के दिता सुणाईआ। रामजस नूं सुरती आई झब्ब, चारों कुण्ट वेखे अक्ख उठाईआ। मैं थल्लयों किहा मैनूं मिट्टी विच्चों लै लभ्भ, जिस दा तन वज़ूद दिता गवाईआ। ओस अन्धेरे विच मारया हत्थ, खाक विच फिराईआ। मैं अग्गों बोली हस्स, मसख़री विच सुणाईआ। रामजस जे तूं प्रभ दा गाउँदा जस, क्यों नहीं तेरी अंदरों खुल्ही अक्ख, निक्कयां नूं वेख खुशी मनाईआ। प्रभ मिलण तों बिना खेड़ा दिसे भठ्ठ, साढे तिन्न हत्थ माटी चार गुणां दी चौगुणी कम्म किसे ना आईआ। ओस ने एधर ओधर तक्कया झट्ट, अंदर झटका वज्जा सहिज सुभाईआ। अणआले तीर नाल किसे ने दिता फट्ट, घाउ इक्को दिता वखाईआ। मूँह

दे भार गया ढठ्ठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दोवें मारे हथ्थ, ख़ाक रिहा उडाईआ। कीड़ी किहा जे प्रभ नूं मिल्यों सच, मैनूं ओस दी सूचना दे समझाईआ। की होया तेरे वस, कि बैठा कर जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा लेखे विच्चों कढाहीआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ प्यारा सिँघ दे गृह बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

कीड़ी कहे मेरा सबर, सन्तोख विच जणाईआ। मेरा बहुता वड्डा टब्बर, अणगिणत भैण भाईआ। जिन्हां नूं मिलण दी मेरी रह गई सध्धर, ध्यान विच ध्यान रखाईआ। मैं रोंदी क्यों आ गई इधर, आपणा रुख बदलाईआ। दर्दी नहीं कोई जिधर, दुखियां दुःख वण्डाईआ। मैनूं बहुता लग्गा फिकर, अंदरों रही कुरलाईआ। मैं फस गई किस चिक्कड़, बाहर ना कोए कढाहीआ। किस बिध जावां निक्कल, भज्जां वाहो दाहीआ। कोई धुर दा मिल जाए मित्र, पल्लू लए छुडाईआ। मैं ओस दा करां ज़िकर, जो ज़ाहर ज़हूर होवे सहाईआ। चोटी चाढ़े सिक्खर, सिख्या इक सुणाईआ। धुर दे प्रेम दा लावे इश्क, हकीकत विच वड्याईआ। औखी वेले ना जावे खिसक, होवे धुर दा माहीआ। रामजस तेरे वरगा जे ओस दा वी होवे झूठा तिलक, मैं जावां मुख भुआईआ। रामजस किहा मेरा वी एहो इष्ट, जो सब दा पिता माईआ। मेरी खुल्ही अंदरों दृष्ट, जिस दिशा दिती बदलाईआ। जिस दा लेखा नहीं विच टांक जिसत, इक दो ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। कीड़ी किहा खुल्ही दृष्ट वेख्या की, मैनूं दे समझाईआ। मैं वी निक्का जिहा ओस दा जीअ, जो तेरे पैरां हेठ आ के दयां दुहाईआ। उस दी सहादत दे तशबीह, तमहीद नाल दृढ़ाईआ। की धार जलवा नूर रब्बी, रहमत विच समाईआ। कोई करना नहीं अज्ज पज्जी, भरम ना कोए रखाईआ। मैं ओसे दे प्रेम अंदर बद्धी, विआकुल हो के दयां दुहाईआ। हुक्में अंदर आ गई सद्दी, गली कूचे फिरां चाँईं चाँईंआ। मेरी तार सितार ओसे नाल वज्जी, जो हर घट रिहा समाईआ। पर मैनूं मिलदा कदी कदी, कदीम दा मालक कदम पुट्ट के चरण मेरे नाल छुहाईआ। मैं ओसे दी धार विच बद्धी, बन्दना कह के खुशी मनाईआ। जिस दे कोल पंडतां पान्धआं वाली नहीं कोई गद्दी, मथ्थे संधूर ना कोए छुहाईआ। इक्को जोत अगम्मी जगी, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। मैं ओस नूं रही लभ्भी, जो मालक बेपरवाहीआ। रामजस किहा कलयुग अन्त जिस वेले बीतण वाली होई चौधवीं सदी, सदमा होवे सर्ब लोकाईआ। ओस वेले निरगुण धार आवे उह रब्बी, जो रहमतां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ कीड़ी किहा चौधवीं सदी दा की लग्गे पता, मैनूं दे समझाईआ। हुण मेल मिला दे रता, रंग रतड़ी दे बणाईआ। मेरा अंदर रहे ना तत्ता, अग्नी अग्ग गवाईआ। तेरे पैर थल्ले आ के मेरी होई हत्ता, हत्या विच दयां दुहाईआ। मैं ओस दी वेखणी सत्ता, जो सति सतिवादी बेपवराहीआ। दरस करना नाल अक्खां, आख़र राह तकाईआ। मैं सड़ना नहीं विच कक्खां, अग्नी भेंट ना कोए बणाईआ। मैं अन्तर धार दस्सां, रो रो कुरलाईआ। मैं बिना प्रभू दे चरण होर किते ना वसां, वास्ता अवर ना कोए रखाईआ। इक्को प्रेम प्यार दा रस चक्खां, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। चरण कँवलां ढठ्ठां, निउँ निउँ लागां पाईआ। साचा लाहा खट्टां, झोली लवां भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दीआं मत्तां, मतयां विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ रवेल कौर दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

कीड़ी कहे जिस वेले मेरे उत्ते पाया भार, भावी सिर ते नज़री आईआ। मैं रोई धाहां मार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। इक्ठे हो गए दो चार, बहुत्यां रौला दिता पाईआ। मैं वेख के एह हाल, आपणी हालत लई बदलाईआ। मेरा अन्त पहुंचया काल, आपणा ग्रास लए बणाईआ। मैं हो के अन्तर ध्यान, ध्यान ल्या लगाईआ। हे मेरे भगवान, प्रभू बेपरवाहीआ। सहायता कर आण, रच्छक शहिनशाहीआ। मेरी कर कल्याण, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। होया धुर फ़रमान, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। गाउणा धुर दा गाण, सोहँ ढोला दिता पढ़ाईआ। मिले मेहरवान, महबूब नज़री आईआ। तेरा लेखा चुक्के विच जहान, जन्म मरन दा गेड़ दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कीड़ी कहे मेरे उत्ते आया बोझ, बोझल हो के दिती दुहाईआ। मेरी रही ना कोई सोच, समझ दिती गवाईआ। इक्को दरस तक्कां नेत्र लोच, लोचण लए उठाईआ। अंदरों गा के सच सलोक, सोहला ल्या गाईआ। मिले ओस दी मौज, जो मजलस भगतां संग रखाईआ। जो हथ्थ ना आवे चौदां लोक, चौदां तबक देण दुहाईआ। जिस दा नाम निधाना इक सलोक, धुर दा अक्खर दए दृढ़ाईआ। नित्त दर्शन देवे रोज़, नेत्र ज्ञान अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चीऊंटी कहे मैं थोड़ा जेहा कर ल्या चलित्तर, पुट्ठी हो के दिती दुहाईआ। कोई मिलावे मेरा मित्र, प्रीतम शहिनशाहीआ। जो निरगुण धारों आवे निकल, जोती जाता रूप बदलाईआ। मंजल चढ़ के वेखां सिखर, सिख्या इक्को दए सुणाईआ। अकल्ला रहे कोई ना फ़िकर, फ़ाकयां विच्चों बाहर कढाहीआ। आदि जुगादि ना

जाए विच्छड़, विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। गल लावे भरी चिक्कड़, अवगुण गुण विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। चीऊंटी कहे मैं परत के हो गई उलटी, आपणा आप बदलाईआ। भगत भगवान दी वेखणी कुशती, बल जोर नाल मिलाईआ। जिस दी करे ना कोए दरुसती, अग्गे हो ना कोए समझाईआ। जो खेल करे पुश्त दर पुश्ती, पोशाक काया चोला बदलाईआ। अंदर आवे कदे ना सुसती, निंद्रा आलस ना कोए रखाईआ। मंज़ल वेखणी ओस दी, जिस दी उसतत शास्त्र सिमरत रहे गाईआ। सैर करनी लोक परलोक दी, दो जहान परे डेरा लाईआ। मौज वेखणी इक सलोक दी, जो सोहँ ढोला रिहा सुणाईआ। चांदनी तक्कणी निर्मल जोत दी, जो बिना सूरज चन्द करे रुशनाईआ। जिस नूं आदि जुगादि दृष्टी अंदर सृष्टी खोज दी, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी दया कमाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबू पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

चीऊंटी किहा दस्स रामजस पंडे, पंडत हो के देणा समझाईआ। किस बिध चढ़ां मंज़ल अखीरी डण्डे, डण्डावत इक्को सीस निवाईआ। खलोती रहिवां ना किसे कन्ढे, तट किनार ना दयां दुहाईआ। धुर दा मालक होवे संगे, सगला संग बणाईआ। देवे भण्डारे बिना मंगे, मांगत झोली दए भराईआ। कर्म करे चंगे, चंगयाईआं विच वड्याईआ। सिर धड़ रहिण ना देवे नंगे, ओढण सीस टिकाईआ। नहावण देवे ना किसे गंगे, बख्शे चरण सरनाईआ। नेत्र रहिण मूल ना अन्धे, लोचण करे रुशनाईआ। जिस नूं लभ्भ ना सकण बुद्धी वाले बन्दे, विद्या विच्चों हथ्थ ना आईआ। आपणा निराला दस्से ढंगे, तरतीब बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक भोजन खा के इक डंगे, डंका आपणा दए सुणाईआ। मंज़ल ओस अगम्मी लँघे, जित्थे वेखण कोए ना पाईआ। नाम अनमुलड़े विच रंगे, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। जिधर वेखां ओधर आवे संगे, सगला संग बणाईआ। ना मरे ना कदे जम्मे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। भगत सुहेले होण ना दए नकम्मे, निहकरमण मातलोक ना कोए अख्वाईआ। सदा खेल दस्से नवें, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जेहड़ा ग़रीब निमाणयां दी मन्ने, एहो जेहा मिले बेपरवाहीआ। करे प्रकाश नेत्र अन्ने, अन्ध दए चुकाईआ। सन्त सुहेले आपे जणे, बणे धुर दी माईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भन्ने, भरम भउ गवाईआ। सदा वसे बिन छप्पर छन्ने, दर सुहञ्जणे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रामजस कहे चीऊंटी मैनूं वेख लैण दे पत्री, वरका वरका उलटाईआ। उह प्रभू ब्रह्मण होवे कि क्षत्री,

शूद्र वैश कवण रूप धराईआ। उस दा लेखा लिख्या होवे विच सतरीं, कि अक्खरां विच वड्याईआ। उह बैठा होवे केहड़े पतणीं, पतिपरमेश्वर हो के डेरा लाईआ। जां पुस्तक वेखी उह सक्खणी दी सक्खणी, प्रभ दा रूप ना कोए बदलाईआ। आवाज आई उह धुर दा मालक सदा बेवतनी, जिस दा वतन ना कोए समझाईआ। जिस आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां पत रखणी, भगत दवारे बह के खुशी मनाईआ। ओहनूं जगत अक्ख किसे ना तक्कणी, ताकतवर लभ्भ ना सके कोए आपणा बल रखाईआ। जिस ने गृह गृह गराही इक इक्क चक्खणी, चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। तुक अगम्मी दस्सणी, इक्को करे पढ़ाईआ। जिस दी वस्ती कलयुग अन्तिम विच फेर वसणी, घराने सोहणे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। रामजस कहे मेरे हिसाब विच ना आई कोई कुण्डली, नछत्र सक्या ना कोए समझाईआ। पता लग्गे ना धार मुढली, मुद्दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। एह अक्खरां वाली खेल बणी बुध लई, इस तों परे दा परदा ना कोए उठाईआ। मैं अंदरे अंदर ओस दी रमज़ बुज्झ लई, जो शब्द विच समझाईआ। रामजस मैं दुनियां वास्ते कीता कुछ नहीं, भगतां वास्ते सब कुछ अंदर दिता टिकाईआ। बेशक मैं प्रेम प्याला पीवण वाला दुद्ध नहीं, अमृत धारा सब दे मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पत्री कहे जिस वेले मेरा फोलया पत्रा, बौहड़ी बौहड़ी दे के दिती दुहाईआ। मैनूं पै गया ख़तरा, नैणां नीर वहाईआ। जिस दा लेखा नहीं विच सतरां, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लभ्भयां नहीं कोई विच्चों पत्थरां, धन्ने नूं बज़र कपटी अंदरों दरस दिखाईआ। जिस दा शैतानां वाला नहीं नख़रा, वेस अवल्लड़ा लए वटाईआ। नटूआं वांग नहीं कोई मसख़रा, मस्त खुमारी नाम चढ़ाईआ। लोहार तरखाण दा घड़या होया नहीं शस्त्रा, शब्द खण्डा खड़ग खड़काईआ। जिस दा कोई लेफ़ तलाई वाला नहीं बिस्तरा, आत्म सेजा सदा हंढाहीआ। पत्री कहे मैं ओस दा ब्यान करां किस तह्रा, मेरी अकल चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पत्री कहे मैनूं मुड़ के ना लैणा फोल, सहिजे दयां सुणाईआ। तुसीं ओस दा सुणो बोल, जो अंदरे अंदर करे शनवाईआ। जन भगतां वसे कोल, दूजिआं अक्ख ना कदे मिलाईआ। नाम निधान वजा के ढोल, सुत्यां लए उठाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पांधा रौल, पंडत विद्या ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आप आपणी खेल वखाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ संपूरन कौर दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

पत्री कहे मैं कुछ नहीं दस्सण जोगी, जुगती ना कोए जणाईआ। श्री भगवान वैरागी त्यागी बैरागी सन्यासी नहीं कोई भोगी, भावना जगत ना कोए वखाईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रीतम धुर दा चोजी, खेल निराली आप बणाईआ। बिना भगतां किसे ना देवे सोझी, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। जगत वासना सब नूं करे रोगी, हंगता गढ़ बणाईआ। गुरमुख विरला जाणे विच्चों कोटन कोटी, काया कुटीआ फोल फुलाईआ। मंजल चढ़ के तक्के चोटी, चोट जिस नूं दए लगाईआ। वासना रहिण ना देवे खोटी, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, जोत जोती जोत करे रुशनाईआ। भगतां पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। तिलक माला ना कोए धोती, टिक्कयां विच ना कदे फसाईआ। मेहर नज़र नाल अंदरों वासना कढ्ढ दए खोटी, खोटयां तों खरे दए वखाईआ। आपणे आप बणा के गोती, वरनां बरनां तों दए छुडाईआ। जेहड़ी समझ किसे ना सोची, उह सोच गुरमुखां अंदर दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी बेपरवाहीआ। पत्री कहे मैं दस्सां अन्तिम एक, इक्को वार जणाईआ। प्रभ बिन अवर ना कोई दूजी टेक, टिकयां वाले सारे ओसे नूं रहे ध्याईआ। शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ लए वेख, विद्या वाली जगत चतुराईआ। हरि दा समझे कोए ना भेख, भेखाधारी की की कल वरताईआ। मैं बिन अक्खां ल्या वेख, अगला हाल सुणाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया मिटण लग्गी रेख, मातलोक होए दुहाईआ। ओस वेले फेर एह नगर खेड़ा वसणा देस, परदेसा दे विछड़े एथे लए मिलाईआ। जिन्हां दा नाता जोड़ हमेश, हमसाजण लए बणाईआ। कुछ थोड़ा जिहा लेखा एस थाँ दा लिखणा गुर दस्मेश, बरिज भाषा विच बिंझल कह के नाउँ गाईआ। जित्थे पुरख अकाल जन भगतां लए पेख, वेख वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर संदेश, सुनेहड़ा इक्को नाम सुणाईआ। पत्री कहे मैथों फेर ना पुछिओ कोई बात, बिन अक्खरां दिती समझाईआ। जिस वेले आए कल अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। चार जुग दे भगत एथे होणे आबाद, बरबादी विच्चों आज़ादी देणी कराईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को होणी आवाज़, सोहँ धुर दा ढोला गाईआ। अंदर खुल्हणा राज़, परदा रहे ना राईआ। धुर दा मिलणा साथ, सगला संग बणाईआ। पूरी होवे आस, तृष्ना दए बुझाईआ। पत्री कहे मेरे उत्ते करयो विश्वास, विश्व दा मालक आउणा चाँईं चाँईंआ। जिस दा नूर नूर होणा प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी करे ख्वाहिश, ख़ास आपणा रंग चढ़ाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ करतार कौर दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

रामजस किहा मेरी रहे कोई ना सुध्ध, वदी सुदी ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल आपणी करनी दा खेल लैणा बुज्झ, परदा ओहला दए उठाईआ। लहिणा चुकाउणा अन्तिम कलयुग, चौथी धार मिले वड्याईआ। जन भगत बणा के आपणे पुत्त, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। निर्मल कर के बुध, बिबेक देणा बणाईआ। मन मनुआ बदल के रुख़, राह आपणा देणा समझाईआ। जित्थे आत्म परमात्म मिलदा सुख, लख चुरासी गेड़ ना कोए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तराईआ। कीड़ी किहा मैं निक्की जेही चीऊंटी, बेजान हो के दयां दुहाईआ। कोलों बोल पई निक्की जेही बूटी, जो पत टहणी आपणी रही महकाईआ। मैं जाग पई सुती, अंदरों लई अंगड़ाईआ। कुछ सहिजे रही पुच्छी, सहिज सुभाउ नाल जणाईआ। तेरी किधर लग्गी रुची, मैनूं दे दृढ़ाईआ। चीऊंटी किहा मेरी औध रही मुकी, तन होए जुदाईआ। मैनूं एस खुशी दी ख़ुशी, खुशख़बरी दयां जणाईआ। जिस पुरख अकाल दीन दयाल भगतां दी गंढु पवाउणी वांग पुतीं, पिता हो के गोद उठाईआ। जिस लेखे लाउणी रविदास दी गंढी जुती, बटवारे दा लहिणा झोली पाईआ। गुरमुखां पिच्छे कटणी बुत्ती, घर घर आपणा फेरा पाईआ। ओनां दी रोटी खा के सुक्की, सुख दो जहानां दए वखाईआ। मंज़ल देणी उच्ची, अगम्म अथाह इक सरनाईआ। आपणे विच लगा के रुची, जगत रचना तों लैणा छुडाईआ। धार चला के सच्ची मुखी, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। चार युग दी जो आत्मा प्रभ प्रेम तों भुक्खी, उस दा दुखड़ा दए गवाईआ। मैं कूक सुणावां उच्ची, दोहयां विच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ी कहे मैं निक्का जेहा पौदा, पदम रेखा नज़र कोए ना आईआ। मैं किस बिध करां सौदा, चीऊंटी मैनूं दे समझाईआ। ओस हस के किहा चरण कँवल झुकण विच मिल जाए उह औहदा, जिस नूं अदालत हुक्म विच ना कोए सुणाईआ। मिल जाए उह चोगा, जिस नूं खा के तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। मिल जाए उह जोगा, जन्म मरन दा लेखा दए चुकाईआ। सुणा देवे अगम्मी होका, हुक्म नाल उठाईआ। जन भगतो झूठा नाता चौदां लोका, लख चुरासी कम्म किसे ना आईआ। बनास्पत विच रह के प्रभ मिलण दा मिल जाए मौका, मुकम्मल मिले शहिनशाहीआ। अगला मार्ग दिसे सौखा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चीऊंटी कहे मैं दस्सां कहाणी धुर दी, कीड़ी कपड़ रूप बदलाईआ। की सिफ्त करां पूरे सतिगुर दी, जो सुत्यां लए उठाईआ। जिस दे नाल आत्म परमात्म हो के जुड़दी, जोड़ी धुर दी दए वखाईआ। कुछ कथा कहाणी होणी अग्गे अनन्दपुर दी, पुर

अनन्द दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ी कहे मैनूं होई हैरानी, अनन्दपुर कह के की सुणाईआ। कुछ ओस दी दस्स निशानी, निशाना दे लगाईआ। ओस ने किहा प्रभ ने सिख्या देणी किस तरां प्रभ दी दिती जांदी कुरबानी, जगत माण ना कोए वड्याईआ। किस बिध मंज़ल मिलदी आसानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। किस बिध खाई जांदी महिमानी, चीऊंटी माछूवाड़े दा राह तकाईआ। वेखीं किते एस विच कदे ना करीं बेईमानी, बेवफ़ा हो ना मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे धुर दा हरि, हिरदा फोले थाउँ थाँईंआ। चीऊंटी कहे मैनूं दिसदा चम्मड़े लाहुण वाला चम्यार, कलयुग अन्तिम नज़री आईआ। जिस दा परम पुरख होणा यार, याराना धुर दा इक लगाईआ। लेखा लिखे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए समझाईआ। पूरब जन्म लाहे उधार, कर्ज़ा जाए चुकाईआ। जन भगतां कर बेदार, सुत्यां लए उठाईआ। प्रीती बख्श सच संसार, सिख्या इक दृढ़ाईआ। गुरमुखो साचा करो दरस दीदार, दरस विच खुशी आप प्रगटाईआ। मंगण जाए भगतां दवार, घर घर फेरा पाईआ। गुरमुख जो कुछ खुशीआं विच देण खुआल, खा के शुकर मनाईआ। अग्गे लेखा मुका के काल, करमां विच्चों बाहर कढाहीआ। सचखण्ड दवारे लै के जाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले वेखे आण, मेला कर भगत भगवान, देवे नाम पदार्थ दान, दाता हो के आप वरताईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

कीड़ी किहा मैं खा के कहां कसम, सुगंध नाल जणाईआ। पुरख अकाल धुर दा मालक कल अन्तिम आउणा ख़सम, लख चुरासी जगत हंढाहीआ। ओस दा इक्को होणा इस्म, वाहद इक शरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी किस्म, तरां तरां उपजाईआ। माण वड्याई दे के ख़ाकी जिस्म, जुमला अक्खर करे पढ़ाईआ। उस ने वखरा चलाउणा आपणा धर्म मिशन, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे रामा कृष्न, किशना शुक्ला दोवें पक्ख सीस निवाईआ। दर मंगते शिव ब्रह्मा विष्न, झोलीआं रहे वखाईआ। चारे जुग भिखारी दिसण, पैगम्बर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ी कहे कुछ मैनूं लग्गा झटका, बिना झकोले दिता हिलाईआ। मेरे अन्तर होया खटका, हैरानी इक्को आईआ। खेल होणा उपर फ़र्शा, अर्श देण दुहाईआ। कुछ गोबिन्द दा लहिणा दिसे

उपर सरसा, कलयुग वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर हुक्म कहे पत्री समझया ना रामजस पांधा, परदा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जगत विचारां रिहा गांदा, ढोले सलोकां विच अल्हाईआ। बिना मंज़ल थक्कया मांदा, बैठा डेरा लाईआ। परोहत बण के रिहा खांदा, घर घर खुशी मनाईआ। जजमानां घर रिहा जांदा, भज्जया वाहो दाहीआ। गंगा सागरां विच रिहा नहांदा, जलधारा सीस झुकाईआ। पता लगया ना सच थाँ दा, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। गोबर वेंहदा रिहा गऊ माँ दा, ममता मोह ना कोए चुकाईआ। जिंनां चिर रस ल्या ना प्रभू दे नाँ दा, नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। हँस बदलया ना रूप काँ दा, माणक मोती चोग़ ना कोए चुगाईआ। जिस वेले दवारा वेख्या बल राजे दे थाँ दा, जित्थे हुक्म बेपरवाहीआ। इन्साफ़ होवे न्याँ दा, न्याँकारी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी इक वखाईआ। रामजस जिस वेले आया सी इस गृह, अवस्था तेती साल जणाईआ। हुक्में अंदर गया बहि, करी अगम्म पढ़ाईआ। अंदर उपजी इक लै, प्रेम लगन लगाईआ। पुरख अकाल अंदरों कहै, हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी वगणी नैं, वैंहदी धार वहाईआ। ओस वेले प्रगट होणा निरगुण रूप मैं, ममता भगतां देणी चुकाईआ। सारी सृष्टी ने करना हैं, की खेल कीता बेपरवाहीआ। इक्को मेरे नाम दी होणी जै, जै जैकार इक शनवाईआ। तूं वी आउणा एस गृह, गृह मन्दिर देणा सुहाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरब दए, देवणहार वड्डी वड्याईआ। लँघ जाण दे जुग त्रै, त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। धुर फुरमाणा सच्चा कहै, शब्दी शब्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रामजस किहा मैं सुणना तेरा पैग़ाम, शब्द विच शनवाईआ। की मेरा लेखा होणा नाल राम, कृष्न नाल वड्याईआ। की पैगम्बरां करना एहसान, सच दयां दृढ़ाईआ। की गुरुआं देणा दान, झोली मात भराईआ। की तीर्थ तटां मिलणा माण, अठ सठ खोज खुजाईआ। की पढ़यां होणा ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण फोल फुलाईआ। की मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ वेखणे निशान, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। हुक्म विच किहा श्री भगवान, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिस वेले कलयुग अन्त पहुंचया आण, निरगुण जोत करां रुशनाईआ। भगत सुहेले प्रगटावां विच जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। नाम संदेसा देवां महान, शब्दी ढोला इक समझाईआ। साची बस्ती देवां दान, गृहस्ती वेखां चाँईं चाँईंआ। जो मंज़ल चढ़न आसान, फड़ बाहों पार कराईआ। घर घर दा खा के पकवान, पक्के नाते देवां जुड़ाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा जवान, बुड़ेपे वाला रूप ना कोए वखाईआ। रामजस तेरा रूप ओस वेले समझे ना कोए इन्सान, इन्सानीअत तों बाहर दे वड्याईआ। चरण धूढ़ी दी

ख़ाक तेरी पहचान, वस्त चोरी दी आपणे विच छुपाईआ। जिस दा सब नूं टिक्का मस्तक विच लाया आण, पिछला सम्मत दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर दया कमाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

सोहणी सुहञ्जणी बणे बस्ती, बिसराम घर धुर दा रूप बदलाईआ। पुरख अकाल दी आवे अगम्मी हस्ती, जिस नूं हज़रत रहे गाईआ। लहिणा देणा चुकावे दस्ती, जगत उधार ना कोए बणाईआ। नाम खुमारी दे के मस्ती, मस्त दीवाने दए वखाईआ। चरण प्रीती बख़्श के सस्ती, सुत्यां लए उठाईआ। हरिजन उधारे गृहस्ती, गृह गृह चरण छुहाईआ। सब दी धार जिस नूं दिसदी, दहि दिशां वेख वखाईआ। उह करनी वेखे किस किस दी, किस्मत वाले लए उठाईआ। खेल होवे इक दी, एकँकार दया कमाईआ। धार चले पिता पुरख अकाल पित दी, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। खेल मुक्क जाए आवण जावण नित्त दी, चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार वेखे धुर दे सिख दी, जो सिख्या विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस नगरी दे लँघ जाए विच दी, विचले पड़दे दए उठाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

नाम संदेसा पिछला पात्र, पतवंतयां रिहा उठाईआ। श्री भगवान सद आवे भगतां खातर, ख़त्म करे अग्गे जुदाईआ। हरिजन बणाए धुर दे चातर, चातृक वांग जो रहे बिल्लाईआ। जलवा दे के बातन, नूर करे रुशनाईआ। जो दवारे आए पातण, फड़ बाहों पार कराईआ। कलयुग अन्तिम इक सुनेहड़ा आया आखण, धुर दा हुक्म जणाईआ। पुरख अकाल मन्नणा माई बापन, पिता पूत गोद लए बहाईआ। तन माटी ख़ाकी करे पवित रहे ना भरी पापण, पुनीत आप बणाईआ। जन भगतां बण के धुर दा साकण, सज्जण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी लए कमाईआ। कीड़ी कहे मैं वेखी इक बस्ती, अगम्मी नज़री आईआ। जिस दी कथा कहाणी जुग चौकड़ी रही दस्सदी, हुक्म बेपरवाहीआ। ओथे भगतां दी धारा वेखी वसदी, वसण चाँईं चाँईंआ। धार ओन्हां अंदर प्रेम रस दी, रस्ते चल के

खुशी मनाईआ। आत्म रैहन्दी हसदी, खुशीआं ढोले गाईआ। थोड़ी कहाणी रामजस दी, जो सिफ्तां विच सलाहीआ। अग्गे गाथा अगम्मी बाप दी, जो पुत्रां करे पढ़ाईआ। कुछ खेल होर जाप दी, जगजीवण दाता दए दृढ़ाईआ। कलयुग क्रिया कूड़ी सड़नी पाप दी, माया ममता अग्ग लगाईआ। जन भगतो तुहाडी सुलखणी घड़ी सोहँ जाप दी, स्वासां विच्चों भरवासा दिता बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल वेखो साख्यात दी, जो सति सतिवादी हो के आपणी कल वरताईआ।

५४१
१६

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ मुनशा सिँघ दे गृह ज़िला गुरदास पुर ✪

सति भूमिका सुहाउणा नगर, नागरक गुरमुख सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी पूरी करे सधर, सदीआं दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। करनी दा करता करे कदर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन्म कर्म दी रेखा देवे बदल, बदला चुकावे बेपरवाहीआ। सच दवारे करे अदल, इन्साफ़ इक्को इक जणाईआ। जन भगतो तुहाडी पूरी होई मज़ल, मंज़ल आपणी दए वखाईआ। नाम गाउणा धुर दी गज़ल, गर्ज सब दी वेख वखाईआ। सच दवारे तुहानूं जाणा ना पए पैदल, शब्दी धार विच पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नगरी सोहणी सुहञ्जणा धाम, धर्म मिले वड्याईआ। चिरी विछुंनयां मिल्या राम, रहमत आप कमाईआ। सुहावणा होया ग्राम, गृह गृह वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेले तारे तमाम, तमूां विच्चों बाहर कढाहीआ। प्रभ दा मार्ग नहीं आम, सन्त सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। जन भगतां दे पैग़ाम, परत के लए उठाईआ। सच प्रीती बख्श के आराम, दवारा धुर दा दए वखाईआ। दूजे दे रहिणा ना पए गुलाम, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। मन वासना विच होणा ना पए बदनाम, बदीआं तों बाहर रखाईआ। पुरख अकाल करो प्रणाम, अवर अवरा सीस ना कोए झुकाईआ। अगली सुणो दास्तान, पिछली कहाणी ना कोए दृढ़ाईआ। साहिब स्वामी हो के मेहरवान, महिव आपणा हुक्म चलाईआ। गुरमुख गुरसिख वेखे आण, बिन अक्खीआं अक्ख खुलाईआ। भण्डारा दे के धुर दा दान, नाम अनमोला झोली पाईआ। किरपा कर प्रभू महान, महिमा आपणी दए समझाईआ। लख चुरासी होए हैरान, हैरानी अंदर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक निशान, जिस नूं जगत निशाने सीस निवाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ भाग सिंघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

भूमिका कहे मेरे उत्ते भगतां दी जगी शमां, शमसान भूमी दए पन्ध मुकाईआ। चिन्ता सोग मिटाया ग़मां, हरख़ हवस ना कोए वखाईआ। प्रभ मिलण दी रख के तमअ, लालच अगला रहे बणाईआ। झगड़ा मुका के राए धर्म जमां, जन्म मरन दा गेड़ कटाईआ। पुरख अकाल दा नाम सुण के नवां, नाअरा ढोला इक्को गाईआ। जिस दी उडीक करदा रिहा लोकमात दा समां, समझ तों बाहर ध्यान रखाईआ। कोई भेव ना जाणे काया माटी चम्मा, चम्मदृष्टी ना कोए दृढ़ाईआ। तिस दा खेल होया रवां, रौणक भगतां विच रखाईआ। की सिफ्त ओस दी कहां, धरनी खुशीआं विच नीर वहाईआ। किस बिध नाम अगम्मी लवां, लग मातर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म रिहा वरताईआ। भूमी कहे मेरा मिट गया भरम, भुलेखा रिहा ना राईआ। लज्जया रही ना शरम, परदा दिता उठाईआ। कांड रिहा ना कर्म, कूड़ ना कोए चतुराईआ। जिस वेले तक्कया पिता पुरख परम, परमेश्वर बेपरवाहीआ। झगड़ा रिहा ना वरन, बरन ना कोए लड़ाईआ। जन भगत ढहिंदे वेखे सरन, ओट इक रखाईआ। ढोला इक्को पढ़न, सोहँ राग अल़ाईआ। मंजल अगम्मी चढ़न, भज्जण चाँईं चाँईआ। इक्को दा पल्लू फड़न, जित्थे होवे ना कदे जुदाईआ। खोल़ के हरन फरन, निज नैण दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते रिहा घुंम, घुंमण घेरी विच जगत लोकाईआ। जिस नूं समझे कोई ना रिख मुन, मुनीश्र अक्ख ना कोए खुल़ाईआ। जिस ने लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले लए चुण, चौणवें गुरमुख आपणे नाल रलाईआ। एस दा कवण जाणे गुण, शास्त्र सिमरत भेव ना आईआ। मैं अगम्मी आवाज़ लई सुण, जो गुरमुख रहे गाईआ। धरनी किहा मैं धरवास नाल थल्ले चरण लए चुम्म, चरणोदक धूढ़ आपणे मुख छुहाईआ। रस पी के हो गई गुंम, सुरती सुरत भुलाईआ। अंदरों आई धुन, शब्दी शब्द शनवाईआ। परम पुरख दा लहिणा वेख हुण, हरिजन साचे पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सदा सुहेला लेखा जाणे कुन, कुनबा जन भगत वेख वखाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बख्शीश सिंघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

धवल कहे प्रभ भगतां अंदरों मेट दे धब्बा, नाम अगम्मा रंग चढ़ाईआ। तैनूं सारे मन्नण इक्को अब्बा, मालक हो के दे दृढ़ाईआ। सच प्यार दा बख्श मज़ा, मजलस धुर दी इक जणाईआ। अन्त देवे कोई ना सज़ा, सज्जण हो के होणा

सहाईआ। कलयुग अन्त ना देवीं दग़ा, फरेबां विच ना फेर भवाईआ। नव नौ चार पिच्छो तैनूं निरगुण धार लभ्भा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जगत विकार मिटाउणा हभ्भा, हमसाजन लैणे बणाईआ। धुर धाम वखाउणी जग्गा, चरण कँवल सरनाईआ। जित्थे सति निशाना गड्डा, आदि जुगादि सोभा पाईआ। तेरे नालों नहीं कोई वड्डा, जिस दे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा देणा बणाईआ। धरनी कहे प्रभू भगतां दी लेखे लाउणी भगती, वडभागी लैणे बणाईआ। प्यार दी बख्शणी शक्ती, शक देणा कढाहीआ। बण के धुर दा अर्शी, फर्श होणा सहाईआ। दरख़ासत वेखणी अर्ज़ी, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। वरतीं ना आपणी मर्ज़ी, मज़ाक विच ना देणा भुलाईआ। वेख कलयुग अन्धेर गर्दी, ग़दागर होई सर्ब लोकाईआ। आत्म दा परमात्म बण के होए ना कोए दर्दी, दुखियां दुःख ना कोए वण्डाईआ। धार बदल दे जग दी, जगजीवण दाते बेपरवाहीआ। लेखे ला दे सेवा कीती सब दी, सबब नाल आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणी इक सरनाईआ। धरनी कहे प्रभ कोट जन्म दे कर दे पाप मुआफ़, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। अंदरों बाहरों कर दे साफ़, सुथरे गुरमुख लै बणाईआ। साचा कलमा दस्स आदाब, नमस्ते इक्को दे सिखाईआ। प्रेम प्यार वजा रबाब, अहिबाब हो के नाल रखाईआ। सच अमृत दा दे स्वाद, रसना रस ना कोए वड्याईआ। लेखा लिख अगम्मी कताब, जिस नूं कुतबखाना ना कोए वखाईआ। अन्त अखीरी तेरी मंगदे इक इमदाद, कूड़यां अमलां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम रखणी लाज, लोकमात तेरी ओट तकाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

त्रेता युग कहे एथे नगरी सी इक ढठ्ठी, निशान पिछला रही जणाईआ। हज़ारा सिँघ दी हुन्दी सी हट्टी, वणज करे चाँईं चाँईंआ। हिसाब लिखदा सी लक्कड़ वाली फट्टी, अक्खर विंगे टेडे पाईआ। जन्म दी बाज़ी पैंदी वेखी नट्टी, हार विच्चों रूप बदलाईआ। वाधा होवे ना किसे खट्टी, अंदरे अंदर मारे धाहीआ। इक दिन घर रही ना तेल बत्ती, अन्धेरे बैठा राह तक्के हक गोसाँईंआ। मेरी अकल ना चले रत्ती, रतन पदार्थ घर दे गए मुकाईआ। मैं केहड़ा बणया शाह लखी, प्रभू सुक्के टुकड़े नाल पेट देणा भराईआ। ओधरों दर्द पई सज्जी वक्खी, रो रो रिहा कुरलाईआ। उंगल वज्ज के चुभ गई खब्बी अक्खी, दुःख दुःख नाल बणाईआ। उत्तों कोठे दी कड़ी ढठ्ठी, जिस कमर दिती हिलाईआ। ओहदी सवाणी

आई नठ्ठी, कुंतला वाहो दाहीआ। की होया मेरे पती, पता दे जणाईआ। ओस किहा मैनूं कोई गल नहीं लगदी अच्छी, रसन कह ना सके राईआ। ओधरों खुल्ह के गाँ दी आ गई वच्छी, जिस मार के टक्कर मूँह दे भार दिता सुटाईआ। ओहदे सट्ट लग्गी दो पट्टीं, पिटटया वाहो दाहीआ। सवाणी रोवे मैं गई फट्टी, दु:ख दर्द ना कोए कटाईआ। ओधरों पैण लग्गी ग़शी, होश हवास रही मिटाईआ। गवांढण लै के आ गई खट्टी लस्सी, बिरध अवस्था बुढ्ढी माईआ। सहिजे किहा एस नूं उंगलां नाल चट्टीं, दुक्खड़ा रहे ना राईआ। आपणे लीड़े दी पाड़ के पट्टी, उत्ते रही बंधाईआ। एह सब कुछ वेखे खेल लखपती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। ओधरों रावी कन्ढे बाल्मीक ने खोल्ही अक्खी, बिना अक्ख अक्ख उठाईआ। ओहनूं नज़र आई सच्ची, सति सतिवादी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। बाल्मीक उठया रिषी, महारिषी लई अंगड़ाईआ। ओस नूं दुखी वाली देह दिसी, जो दुख विच रही कुरलाईआ। ओस ने गौह नाल डिठ्ठी, बिन नैणां नैण पन्ध मुकाईआ। जिस दे कोल आदि जुगादी चिठ्ठी, सो संदेशे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बाल्मीक ऋषी इक लै अंगड़ा, अंगणा आपणा वेख वखाईआ। कवण संदेसा रिहा सुणा, हुक्मी हुक्म जणाईआ। ओधरों आ गया बेपरवाह, वेस अवेसा रूप बदलाईआ। हथ्थ करमण्डल रिहा लटका, भूरी मोढ्ढुयां उत्ते सुटाईआ। केस सारे रिहा खुल्हा, हथ्थ पेट उत्ते टिकाईआ। खब्बे हथ्थ नाल मंगे दुआ, पुठ्ठा रिहा वखाईआ। बाल्मीक वेख्या सहिज सुभा, एह मेरा धुर दा पिता माईआ। अबिनाशी करते सहिजे दिता सुणा, हुक्म बेपरवाहीआ। उह जा के वेख जिस नूं मिलदी सज़ा, हुक्में अंदर फिराईआ। उह मन्ने मेरी रज़ा, हाए उफ़ ना कोए कढाहीआ। बाल्मीक आया भज्जा, चलया वाहो दाहीआ। जिस दा अख़ीरी चरण एथे आ के लग्गा, जित्थे सोभावन्त रिहा सुहाईआ। खब्बे चरण विच कंडा चुभा, दर्द दु:ख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बाल्मीक बिन कदमां आया खेड़े, शब्दी पन्ध मुकाईआ। वड़या ओस दे वेहड़े, जो रोवे मारे धाहींआ। हौली हौली पहुंचया नेड़े, सहिजे सहिज हुक्म दिता सुणाईआ। चढ़ावां ओस बेड़े, जिस दा मालक इक अख्वाईआ। एस ने किहा तेरे वरगे साधू वेखे बथेरे, जो लुट्ट लुट्ट रहे खाईआ। झूठे वेखे डेरे, दग़िआ वाली दुहाईआ। केहड़ा दु:ख कटे मेरे, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल रिहा वखाईआ। बाल्मीक किहा आह वेख मेरा हथ्थ, हथेली हथेली नाल लगाईआ। एधर तक्क पुरख समरथ, सहिजे दयां जणाईआ। दोहां दा नाम जप, सोहँ ढोला गाईआ। तेरा कारज पूरा होवे सब, दु:ख दर्द रहे ना राईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हथ्थ नाल जोड़या हथ्थ, हथेली दिती मिलाईआ। अक्ख नाल मेल के अक्ख, अक्ख अक्ख विच समाईआ। नाअरा बोल के हक हक, ढोला हकीकत वाला गाईआ। बाल्मीक प्रेम प्यार दा दे के रस, रस्ता अंदरों दिता वखाईआ। दु:ख दलिद्र गया नस्स, तन माटी होई सफ़ाईआ। चरणां उत्ते ढठ्ठ, रो रो दए दुहाईआ। मैनूं ओस दे कर वस, जो वास्ता तेरे नाल रखाईआ। बाल्मीक किहा मैं दस्सां तैनूं सच्च, सुनेहड़े विच दृढ़ाईआ। हुण तूं ग्यों बच, खुशीआं विच कुछ मैनूं दे खवाईआ। मैं खा के जाणा नस्स, रावी कन्ढे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल इक वरताईआ। ओस किहा मेरा नाम गणेश, पुत्तर क्षत्री नज़री आईआ। मैं तैनूं याद करां हमेश, हिरदे विच समाईआ। मैनूं भेव दस्स दे एक, इक्को दे दृढ़ाईआ। जिस तैनूं दिता भेज, मैनूं ल्या बचाईआ। बाल्मीक ऋषी किहा उह आदि जुगादि रहे हमेश, हर घट रिहा समाईआ। भगतां दी माणे सेज, सिँघासण डेरा लाईआ। गुरमुखां दे आवे देस, लख चुरासी कर जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गणेश किहा मैं तक्कां साख्यात, मंग इक्को इक मंगाईआ। ओह वेख मेरी फट्टी ते कलम दवात, जिस नाल लेखा रिहा बणाईआ। अंकड़यां वाला हिसाब, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। पहला हिस्सा ते पहला बाब, दूजी वण्ड ना कोए वखाईआ। दु:ख विच्चों मेरा बदल गया मिज़ाज, खुशी मेरे अंदर आईआ। उजड़ी नगरी होई आबाद, तूं चरण दिता टिकाईआ। बाल्मीक दिता जवाब, सहिज दिता समझाईआ। जिस मैनूं दिता ख़ताब, उह सब दा पिता माईआ। जुग चौकड़ी चलाए रवाज, भगवन हो के भगतां गोद उठाईआ। जिस दा लहिणा देणा आदि जुगादि, वेखे थाउँ थाँईंआ। परदा लाहे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। साची देवे सदा सदा इमदाद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त तेरी रखे लाज, लाजावन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गणेश किहा मेरा दुखड़ा होया दूर, रिषी तेरी सरनाईआ। मैं तक्कया हाज़र हज़ूर, तेरे मन्दिर सोभा पाईआ। मेरे मुआफ कर कसूर, किस्मत दे बदलाईआ। मैं मिलणा ओस ज़रूर, जो आदि जुगादि पिता माईआ। भण्डारा करे भरपूर, खाली दए भराईआ। सेवक बणाए मज़दूर, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। बख्शे आपणा नूर, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बाल्मीक किहा मैं पीणा ठंडा पाणी, पत्तण वाला मंग मंगाईआ। लै के आई खुशीआं नाल सवाणी, भज्जी चाँईं चाँईंआ। जिस दी सताई साल दी तरल जवानी, जोबन विच सुदाईआ। नैण अक्ख मस्तानी, रूप अनूप दरसाईआ। अन्तर होई हैरानी, बुद्धी रही समझाईआ।

कुछ रिषी नूं दे निशानी, जो आया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा दृढ़ाईआ। सवाणी कहे की देवां सुग़ात, वस्त नज़र कोए ना आईआ। आटे तों बिना खाली दिसे परात, भोजन पकवान ना कोए बणाईआ। गणेश किहा ओह पट्टी ओह लै कलम दवात, ऋषी हथ्थ देणी फड़ाईआ। साडे कोल नहीं कुछ दात, जो तेरी भेंटा देईए कराईआ। भुक्ख्यां दे घर कट के जावीं रात, दुखियां दर्द वण्डाईआ। बाल्मीक किहा शाबाश, हथ्थ पुश्त पनाह रखाईआ। तुहाडी पूरी होवे आस, तृष्ना रहे ना राईआ। मेरे नाल जिस वेले आवे पुरख अबिनाश, मंज़ल पैंडा पन्ध मुकाईआ। तुहाडे कोलों मंगे उह सुग़ात, जो आसा ख्वाहिशां विच रखाईआ। सहिजे जेहे लिख के गया अगम्मी बात, नुकता अग्गे दिता लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कमाईआ। बाल्मीक किहा मेरी जात कुल हीणी, सच दयां समझाईआ। मेरे प्रभू दी भेंटा चाढ़नी उह शरीणी, जेहड़ी शरअ विच्चों बाहर रखाईआ। भुक्खे ने फड़ लई वीणी, घुट्ट के गले लगाईआ। थोड़ी ना देवीं देवीं दूणी ते तीणी, तिन्नां लोकां विच्चों जेहड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लैणहारा पूरब दान, देवणहारा दे के खुशी मनाईआ।

५४६
१६

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी वीरो दे घर पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✪

भूमिका कहे मेरी सुहञ्जणी होई कुल्ली, कलमयां दा मालक रिहा सुहाईआ। जिस नूं सतिजुग त्रेता याद नहीं भुल्ली, भरम रिहा मिटाईआ। चरण धूढ़ दे के धूली, धर्म रिहा बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल बेअसूली, असल आपणा आप समझाईआ। जन भगतां कोलों करावे सच वसूली, पिछला लेखा झोली पाईआ। मेहर करनी प्रभ दी धार मामूली, ना मालूम होए सहाईआ। भरदा जाए अगम्मी झोली, झूला आपणा इक झुलाईआ। सुणाउँदा जाए साची बोली, अनबोलत राग अल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते भगतां दी सोही झुग्गी, झगड़ा रिहा ना राईआ। अन्तिम औध पुग्गी, मुकया पैंडा जुदाईआ। निर्मल होई बुद्धि, समझ दिती समझाईआ। नाम जैकारा दस्स के उच्ची, परदा दिता खुल्ाईआ। हरि संगत बणा के सुच्ची, संजम इक्को दिता दरसाईआ। गुरमुखो कटणी ना किसे दी बुत्ती, बुत्तखानयां विच्चों बाहर रखाईआ। तुहाडी आत्म रहे ना सुत्ती, सुत्ती लवां जगाईआ। सुहावां आपणी रुत्ती, रुत रुतड़ी नाल महकाईआ। घर घर बख्श के जावां खुशी, ग़मीआं दा ग़म ना कोए सताईआ। आत्म रहे कोई

ना रुस्सी, रस्ता इक्को दयां जणाईआ। जे लभ्भ नहीं सके तुसीं, सहिजे ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडी वासना कर के उच्ची, उच्च महल अटल दए बहाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ हरनाम कौर दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

धरनी कहे मेरा लेखा लग्गा, मालक मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस जन भगतां वधाउणा अग्गा, अगला हुक्म मनाईआ। सच प्रेम दा देणा मजा, रस अगम्म चखाईआ। धुर संदेसा देणा सद्दा, सुत्यां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरी आसा होई पूरी, अर्शां तों परे खुशी मनाईआ। मिल्या मालक धुर दा नूरी, जो सति सच करे रुशनाईआ। वासना कटी कूड़ी, दुर्गन्ध दिती मिटाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूढ़ी, चरणोदक इक्को जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

५४७
१६

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ विरसा सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

धरनी कहे मैं वेख्या अन्नदाता, दातार हो के वेख वखाइंदा। सर्ब जीआं दा बण ज्ञाता, गुरमुख सज्जण आप उठाइंदा। देवे धुर दीआं सच सुग़ातां, नाम भण्डारा झोली पाइंदा। पूरीआं करे सब दीआं आसां, तृष्ना जगत बुझाइंदा। लेखे लावे पवण सुवासा, साह साह विच्चों बदलाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर जिस दीआं शाखां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताइंदा। धरनी कहे मैं वेखे पकदे पकवान, कचिउँ पक्के रिहा बणाईआ। देंदा जाए माण, अभिमान रिहा कढाहीआ। झुलाउँदा जाए निशान, निशाने रिहा वखाईआ। बणाउँदा जाए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ां दया कमाईआ। चरण प्रीती बख्श इक ध्यान, दूजा रोग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग दा लहिणा कर परवान, मेहरवान हो के सहिजे रिहा वरताईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ वरखा सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

धरत कहे मेरे जागे भाग, भगवन होया सहाईआ। जन भगत जगे चिराग, लोकमात रुशनाईआ। सुणी अगम्मी आवाज़,

शब्दी नाद वजाईआ। सन्त सुहेले रहे जाग, भरमे सुत्ती सर्ब लोकाईआ। गृह गृह लग्गी आग, अग्नी तत जलाईआ। बिना गुरमुखां मिले ना कन्त सुहाग, सुहञ्जणी सेज ना कोए हंढाहीआ। बिरहों मिले ना कोए वैराग, बेहबल हो के सारे देण दुहाईआ। झगड़ा प्या कूड़ समाज, समग्री सच ना कोए वरताईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो खेले खेल धुरदरगाहीआ। जन भगत दवारे साचे रस दा लै स्वाद, स्वार्थ सब दा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करनी दा करता कर के काज, कारज आपणे विच रखाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ मुनसा सिँघ, मेला सिँघ दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

पुरख अकाल सब दा लहिणा देवे हक दा, ठग्गी चोरी ना कोए कमाईआ। जुग जुग जन भगतां पैज रखदा, लोकमात होए सहाईआ। मार्ग दस्से सच दा, साधना इक दृढ़ाईआ। लूं लूं अंदर रचदा, रचना आपणी दए प्रगटाईआ। संदेसा दे के गुरमति दा, मनमति अंदरों बाहर कढाहीआ। इशारा दे के अगम्मी अक्ख दा, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। परदा लाह के दूई द्वैत फट दा, सति सच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पिछला अगला दए मुकाईआ। श्री भगवान सदा सुहेला, सर्ब व्यापी इक अखवाइंदा। जन भगतां करे जुग जुग मेला, विछड़यां जोड़ जुड़ाइंदा। रंग रंगा के गुरू चेला, चेला गुरू आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। सिर सिर हथ्थ रखे करतार, करनी दा मालक दया कमाईआ। गुरमुखां बण रखवार, रच्छया करे चाँईं चाँईंआ। जन्म जन्म दा गेड़ निवार, कर्म कर्म दा रोग मिटाईआ। साचे धर्म दा दे दवार, दरवाज़ा इक्को दए खुल्हाईआ। जित्थे वसे हरि निरँकार, सच दवारे सोभा पाईआ। प्रेम प्यार दा होवे आहार, भोजन आपणा रस बणाईआ। सांतक सति सति कर विच संसार, गुरमुखां अग्नी तत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अपार, आप आपणे विच आपणे लए मिलाईआ।

✪ २२ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी सवरनी दे गृह पिण्ड बाबूपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जगत नयासरयां देवे सहारा, सहायक हो के दया कमाईआ। चरण प्रीती दे आधारा, उदम नाल लए उठाईआ। पार कराए कूड़ किनारा, साचा दर इक सुहाईआ। नाम निधान जणा के नाअरा, नर नरायण लए उठाईआ। जन्म कर्म कर

उज्यारा, उजरत पिछली झोली पाईआ। धुर दा शब्द कर इशारा, आसा मनसा खोज खुजाईआ। वड्याई दे धुर दरबारा, दर घर साचा इक सुहाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे पार उतारा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्टां होए सहाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी लाजी दे गृह अलूड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा पकवान आदि जुगादि रहे पक्कदा, साहिब सतिगुर खा खा खुशी मनाईआ। प्रेमीआं दे प्यार विच्चों रहे छकदा, नेमीआं दा नेम आप जणाईआ। लेखा देंदा रहे धुर हक दा, मस्तक आपे वेख वखाईआ। हुक्म चलदा रहे सदा एकँकार यक्क दा, यथार्थ आपणा रंग चढ़ाईआ। नाता बिधाता जुड़या रहे सच दा, सच वज्जदी रहे वधाईआ। राह तक्कदा रहे काया माटी भाण्डा कच्च दा, जगत नेत्र अक्ख उठाईआ। किरपा निधान सदा अंदर रहे वसदा, निज लोचण करे रुशनाईआ। साचा मार्ग रहे दस्सदा, जुग जुग कर पढ़ाईआ। भेव खलाउँदा रहे घट घट दा, घाटी मंज़ल आप चढ़ाईआ। दरवाज़ा खुल्ला रखे आपणे हट्ट दा, भण्डारा वरते बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवणहार सहाईआ। जन भगत तेरा पक्कदा रहे पकवान, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। भोग लगाउँदा रहे श्री भगवान, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। धुर दा देंदा रहे दान, दाता हो के आप वरताईआ। आत्म सुरती मिलदा रहे कानू, घनईआ हो के घर घर फेरा पाईआ। सईआ हो के मुग्ध वेखे चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ दए वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन कर परवान, परम पुरख देवे इक सरनाईआ। दूर नेड़े सारे रखे आपणे विच ध्यान, ओहला जगत ना कोए बणाईआ। सब दी करन जाए कल्याण, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। सुणाउँदा जाए धुर फ़रमान, शब्द संदेसा बेपरवाहीआ। प्रेम प्यार मुहब्बत दा सच्चा पीण खाण, तृष्ना तृखा रहे ना राईआ। पूरब लेखा लहिणा चुकणा लालो तरखाण, सगले साथी सर्ब तजाईआ। नानक दा महिमान, भगत वछल बेपरवाहीआ। सब दी इच्छया पूरी करे आण, भिच्छया देवे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत तेरा चलदा रहे भण्डारा, भण्डारी पुरख अकाल अख्वाईआ। जुग चौकड़ी वसदा रहे दवारा, दर घर वजदी रहे वधाईआ। मिलदा रहे नाम अधारा, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जुग चौकड़ी हुन्दा रहे मेला कन्त भतारा, आत्म परमात्म मिल के सोभा पाईआ। खेल खेल अगम्म अपारा, अलख निरँजण आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी जन्म कर्म दा पहला लाहे उधारा, पूरब लेखा लेखे विच्चों

वरताईआ। सुहञ्जणा होया सुभागी दिहाढ़ा, भाग आपणा रिहा वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्रीती अन्तर जन भगत दवारे अंदर बणे आप वरतारा, वर्तमान वारता आपणे नाल मिलाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी बिसी दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

श्री भगवान कहे उठ वेख कबीर, सवाधान हो के लै अंगड़ाईआ। करे खेल की पुरख अकाल पीरां दा पीर, धुर दा पैगम्बर बेपरवाहीआ। जन भगतां लेखे लाए पदार्थ धुर दी खीर, अन्न अनन्द विच रखाईआ। किसे नूं टिकाउणा ना पए कंडयां विच सरीर, भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। किसे नूं बणना ना पए हकीर, हट्टो हट्ट ना कोई फिराईआ। कलयुग अन्त झगड़ा मुका के शाह हकीर, पीर फकीर इक्को रंग रंगाईआ। साचे मार्ग दी कर तामीर, तामील आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वरताईआ। वेख कबीर उठ साध सन्त, गुरमुख सज्जण सोभा पाईआ। जिन्हां दा मालक इक बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। भण्डारा दे अगणत, अतोट अतुट वरताईआ। साची बणा के बणत, धुर फुरमाणा रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। वेख कबीर सन्त सुहेले होए इक्ठे, गुरमुख मिल मिल खुशी मनाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच फिरदे नठ्ठे, खुशीआं विच भज्जण चाँईं चाँईंआ। जिन्हां खातर पुरख अकाल प्रेम पदार्थ पक्के, पकवान आपणा रंग चढ़ाईआ। तिन्हां दे अंदर जाणे रते, रंग रतड़ी आप रंगाईआ। धुर संदेशे दे के पक्के, भगत लए जगाईआ। नाते जोड़ के भाई भैण सके, सज्जण सज्जणां नाल मिलाईआ। जो इस भण्डारे विच्चों छके, छक रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कबीर कहे प्रभू मैं कुछ अंदर रिहा सोच, चले ना कोई चतुराईआ। केहड़ी बणी मौज, मजलस बेपरवाहीआ। जिस दी चार युग कीती खोज, नव नौ ध्यान लगाईआ। भज्ज भज्ज वेख्या लोक परलोक, साख्यात सति ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्त भगतां दे के ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। तन नगारे ला के चोट, चोटी चढ़ के रिहा उठाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा रिहा गवाईआ। सच भण्डारा दे के बहुत, गृह गृह रिहा वरताईआ। गुरमुख कोई लोकमात ना जावे औंत, नेंदा खा के नेता अग्गे लए बणाईआ। जित्थे किसे दी नहीं कोई पहुंच, पंजा ला के पंजां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ।

कबीर कहे मैं घर घर पकदा वेख्या लंगर, गुर अवतार पैगम्बरां दिता सुणाईआ। गौह नाल तक्कया राम चन्द्र, त्रेता द्वापर कलयुग अन्त लँघाईआ। कुछ रमज़ मारी थोड़ी जेही हनवन्त बानर बन्दर, शब्दी शब्द जणाईआ। हुण खाणा मूलकंदन, पत्त डाली नाल वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान जन भगतां तोड़ के बन्धन, बन्दगी इक्को इक समझाईआ। भिखारी हो के दरवेश हो के दर दर आए मंगण, माणक मोती झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी रिहा कराईआ। कबीर कहे मैं वेखे गुरमुख काबल, कबीले आपणे रहे तराईआ। जिन्हां दा मालक धुर दा बाबल, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सो बण के आया आदल, अदल इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। सच दुआर दस्स के पातन, पत्रका धुर दी रिहा पढ़ाईआ। भगत सुहेले मिल के साजण सच्ची करे बातन, ढोला गाए बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा मिल के सारे आखण, दूजी आवाज़ ना कोई सुणाईआ। अबिनाशी करता कलयुग अन्त कोई खाण नहीं आया माखण, मटकी दहीं ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। कबीर कहे मैं जुग चौकड़ी प्रभ नूं वेख्या, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। निरगुण सरगुण धार करदा रहे (वेस्या), ... मनुक्ख मानव आपणी खेल कराईआ। कलयुग अन्त जन भगतां दिवाउण आया साचा सुक्खा, सुक्ख सागर नाल ल्याईआ। जन्म मरन दा रहिण ना देवे दुक्खा, आवण जावण लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दस्स के मार्ग उच्चा, उच्च अगम्म अथाह आपणे विच मिलाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी ध्यानो दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

कबीर कहे जन भगतो सोहणा मिल गया मौका, वक्त आपे रिहा सुहाईआ। मेरे वांग किसे नूं भरना नहीं प्या हौका, दु:ख भुक्ख ना कोए सताईआ। मेहरवान हो के लै के आ गया धुर दी नौका, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। तुहाडा समां सुहावणा बणाया चाउ का, खुशीआं रंग वखाईआ। झगड़ा मुका के हउमे हउँ दा, हरिजन आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सरन इक दृढ़ाईआ। कबीर कहे करनी पई नहीं कोई बन्दगी, बन्धन दुनी दिते तुड़ाईआ। कटणी पई नहीं कोई मुशंदगी, मुश्कल आपे हल कराईआ। किरपा नाल कढु दे अंदरों गंदगी, मन वासना करे सफ़ाईआ। धार बख्श के आपणे अनन्द दी, अनन्द अंदरों इक प्रगटाईआ। खेल कर साहिब बख्शंद दी, बख्शिश रहमत आप कमाईआ।

एह वस्त अमोलक अन्न दी, आदि अन्त कार कमाईआ। तुहाडी ख़ुशी सदा धन्न धन्न दी, धन्न वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वासना मेट के मनुआ मन दी, ममता आपणे विच रखाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ अच्छर सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जिस गृह लग्गे भोग, भागीरथ वेख ख़ुशी मनाईआ। गुरमुखां मिले अगम्मी चोग, अमृत भण्डारा रस चखाईआ। ओन्हां दा पूरा होवे जोग, जुगती आपणी नाल तराईआ। सच दा होवे संजोग, सति नाल कुड़माईआ। हउमे मिटे रोग, हँ ब्रह्म दरसाईआ। शब्दी वज्जे चोट, सुत्यां लए उठाईआ। नाता जोड़ के निर्मल जोत, जोती जाता होए सहाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख खोज, खुद आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगतां गृह अगम्म रस, रसना सके ना कोए समझाईआ। जिस परम पुरख कीता वस, वास्तवक आपणे नाल मिलाईआ। नाता जोड़या सच्च, सच वज्जे वधाईआ। ख़ुशी होए काया माटी कच्च, कंचन रूप हो के सोभा पाईआ। अन्तर मिले धुर दी मत, मंत्र नाम इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे दे ख़ुशी वखाईआ। जन भगतो भोग लग्गे अगम्मी रसना, रास्ता इक्को इक जणाईआ। सच दवारे सदा वसणा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। धुर दे पाँधी हो के नस्सणा, भज्जणा वाहो दाहीआ। सोहँ ढोला साचा जपणा, रसना जिह्वा नाल वड्याईआ। जिस गृह परम पुरख दा पदार्थ पक्कणा, तिस पकवान मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतो तुहाडी खातर सब कुछ छकणा, इच्छया आपणी ना कोए बणाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ सरूप सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरी धार उच्ची, धर्म दुआर मिले वड्याईआ। जन भगत तेरी आत्म सुची, सच सूचना सुणे चाँईं चाँईंआ। जन भगत तेरी डूँघी रुची, रचना वेखे शहिनशाहीआ। जन भगत तेरी आत्मा रहे ना सुत्ती, सोवत जागत रूप बदलाईआ। जन भगत तेरी आवण जावण खेल मुक्की, गेड़यां विच्चों बाहर रखाईआ। जन भगत तेरी आसा सदा सुखी, सुखसागर रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत तेरी वड्डी दलील, दयावान दिती बणाईआ। किसे दे अग्गे करनी ना पए अपील, अपरम्पर स्वामी होए सहाईआ। मातलोक करे ना कोए ज़लील,

जगत खुआरी विच्चों बाहर कढाहीआ। दरगाह दा लभ्भणा ना पए कोए वकील, बिना सफारश पार लँघाईआ। सच दवारे कर के तसलीम, तक्सीम वण्ड विच्चों बाहर कढाहीआ। बुद्धी होण ना देव मलीन, मल मूत्र विच्चों करे सफ़ाईआ। गुरमुख होवे ना कदे बेदीन, इष्ट इक्को इक जणाईआ। झगड़ा चुका के नर मदीन, आत्म परमात्म मिल के खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता सच भरोसा दे के यकीन, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार बदल के नवीं नवीन, नवां रंग दए रंगाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ सांझी राम दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां सदा रंग एक, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आइंदा। अबिनाशी करता बुद्धी करनहार बिबेक, मन वासना दुरमति मैल धुवाइंदा। चरण प्रीती साची रीती दस्से धुर दी टेक, टिक्का मस्तक नाम धूढ़ी चरण छार इक छुहाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन अक्खां सब नूं लए पेख, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाइंदा। पूरब जन्म लहिणा देणा जन्म कर्म लेखा लिख्त भविख्त जाणे रेख, ऋषी मुनी गुरमुख सन्त सुहेले आप उठाइंदा। नाम सुनेहड़ा देवणहारा सच संदेश, धुर फुरमाणा श्री भगवाना आप सुणाइंदा। जन भगतां वेखणहारा सच्चा सुच्चा देस, जिस गृह आत्म नाल परमात्म रह के सोभा पाइंदा। माण वड्याई देवणहारा विशेष, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच्चा घर, सच दवारा एकँकारा विच संसारा, चरण कँवल उपर धवल धर्म धार इक जणाइंदा।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ हज़ारा सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरी आसा पुन्नी, पूरन ब्रह्म दया कमाईआ। सच पुकार दातार प्रभ सुणी, सचखण्ड निवासी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जिस नूं समझे कोए ना ऋषी मुनी, मनीम जगत हिसाब ना कोए दृढ़ाईआ। सो वक्खरी बिन अक्खरी उपजा के धुनी, अंदरे अंदर लए जगाईआ। जिस दा भेव जाणे कोए ना गुणी, शास्त्र सिमरत वेद सिफ्त सालाहीआ। सो गुरमुख गुरसिख रिहा चुणी, चार वरन फोल फुलाईआ। जिस दे प्रेम विच कबीर जुलाहे ताणी बुणी, भज्जया वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब होए सहाईआ। जन भगत तेरी मंज़ल हक, हुक्म मंनयां बेपरवाहीआ। अग्गे रहे कोई ना शक, शकायत करन कोए ना आईआ। मालक मिल गया इक्को सति, सतिवादी गुरसिख लए बणाईआ।

धर्म धार दी दे के मत, प्रेम प्यार इक दृढ़ाईआ। नाता जोड़ के सच, कूड़ी क्रिया दए छुडाईआ। अंदरों बदल के अक्ख, प्रतख आपणा आप दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथ्थ, अग्गे उधार ना कोए रखाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ गंडा सिँघ दे गृह अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा बणे आप, मालक हो के वेख वखाइंदा। सोहँ ढोला दस्स के जाप, अन्तर आत्म रंग रंगाइंदा। लेखे ला के तन माटी खाक, ख़ालस आपणा रूप समझाइंदा। हो सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे सगला साथ, मँझधार ना कोए डुबाइंदा। मेहर विच महबूब सिर रखे हाथ, समरथ आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले कर के आपणे वस, वास्ता एथे ओथे आपणे नाल रखाइंदा।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बंता सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा वड घराना, घरबार इक्को इक दसाईआ। उच्च अगम्म अथाह टिकाणा, टकयां वाला कोई पहुंच ना सके राईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा होवे गाणा, गावण वाला नज़र कोए ना आईआ। दीपक जोत जगे महाना, बिन नूर नूर रुशनाईआ। सोभावन्त होवे साचा कान्हा, राधा आपणा खेल खिलाईआ। तख्त निवासी होए श्री भगवाना, शाहो शाबाशी शहिनशाहीआ। जो भगतां देवण आए फ़रमाना, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। इष्ट देव इक मनाना, दूजी टेक ना कोए बंधाईआ। दरस करो रूप नाना, नर नरायण होए सहाईआ। लेखा चुक्के आवण जाणा, जानशीं आपणे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां उपर होए आप मेहरवाना, मेहर धुर दी नाल तराईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां प्रभ सदा विचोला, जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। नाम दस्स के धुर दा साचा ढोला, ढोल माही हो के दया कमाइंदा। माण वड्याई दे के उपर धरनी धरत धौला, धर्म धुर दा इक समझाइंदा। लेखे लाए मूर्ख मुग्ध कमला, कमलापाती आपणे रंग रंगाइंदा। बिरथा जाण ना देवे मानस जन्मा, कूड़यां करमां विच्चों बाहर कढाइंदा। संसा रोग चुकाए भरमा, माया

ममता मोह मिटाइंदा। झगड़ा मुका के वरना बरना, ब्रह्म मति इक समझाइंदा। इक्को पुरख अकाल दी साची सरना, जो सरन आया सरासर पार लँघाइंदा। झगड़ा रहे ना फेर मरना, मरन तों पहलों जन्म आपणे घर दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा ढोला सब ने पढ़ना, पाटे चीथड़ रंग अगम्मी आप रंगाइंदा।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी धन्नी दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतो तुहाडा बड़ा एहसान, ज़िमी असमान वेख खुशी मनाईआ। जिन्हां दे गृह गृह फिरे श्री भगवान, जोती जाता भज्जे वाहो दाहीआ। तन वज़ूद तों बाहर इन्सान, इन्सान दा महिमान जुग जुग आप अख्वाईआ। सच भगती दे के आपणा ज्ञान, प्रीती प्रेम वाली वखाईआ। विछड़यां विछड़ मेले आण, विछोड़ा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे वेख पदार्थ अमोलक पकवान, पक्का हो के खा के खुशी मनाईआ। ... ... जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नारद दी चलण ना देवे कोए चतुराईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बावा राम दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी गुरदास पुर ✪

जन्म कर्म ना व्यापे रोग, चुरासी दु:ख ना कोए सताईआ। जिन्हां सोहँ आत्म परमात्म चुग लई चोग, चार कुण्ट तों खैहड़ा गए छुडाईआ। सच प्रीती सिख के साचा जोग, जुगती धुर दी लई अपनाईआ। जगत विछोड़ा रहे ना कोए विजोग, व्यक्ति भगती लेखे पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देवे दरस अमोघ, अमुल्ल आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, जिस गृह इक्को नज़री आईआ। जन भगत तेरी साची मिलख जागीर, जग्गा जग्गा नज़री आईआ। तेरे हथ्थ वड्डी तदबीर, अबिनाशी करते दिती फड़ाईआ। शरअ दे कट ज़ंजीर, सोहँ ढोला गाईआ। मंज़ल चढ़ अख़ीर, अक्ख़रां छड्ड पढ़ाईआ। तक्क बेनज़ीर, जो बिना नज़र करे रुशनाईआ। जो तारनहारा अमीर ग़रीब, दुखियां दु:ख आप वण्डाईआ। जिस दे पिच्छे घर मन्दिर घराने छड्ड के होए फ़कीर, सो फ़िकर तुहाडा कर के फ़ाकयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी मेट के जगत लकीर, लायक गुरमुख लए बणाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां नाम पवण मिले ठंडी, जगत बवला रहिण कोए ना पाईआ। शब्द धार दी मिले अगम्मी सुगंधी, दुर्गन्धी अंदरों बाहर कढाहीआ। दीन मज़ूब ना रहे पाबन्दी, जात पात ना कोए लड़ाईआ। आत्मा परमात्मा मिल के हो जाए चंगी, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। आवण जावण राए धर्म दी रहे ना बन्दी, चुरासी गेड़ ना कोए भुवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मिल जाए धुर दा संगी, संगत वल हो के धुर दा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक अनन्दी, अन्तर अन्तर रस निझर निझर झिरना झरोके विच्चों आप झिराईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी चन्नों दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा शब्द ज्ञान, जगत ज्ञानीआं हथ्थ मूल ना आइंदा। शास्त्र सिमरत जिस दा देंदे परमाण, सो परवाना हुक्म नाम सुणाइंदा। चरण प्रीती एकँकार इक्को वार कर ध्यान, इक इकल्ला लेखा सर्ब मुकाइंदा। योद्धे सूरबीर बणो बलवान, बलधारी आप समझाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाओ श्री भगवान, सांझा यार सगला इक अखवाइंदा। बिन साहिब सतिगुर किसे दी होवे ना मात कल्याण, पुस्तक पढ़यां पार ना कोए कराइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जो दर्शन करे आण, दासी दास हो के वेख वखाइंदा। दरगाह साची सच दवारे देवे इक्को माण, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शमां जगाए आण, दीपक आपणे नाल डगमगाइंदा।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ वकील सिँघ दे गृह अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा पदार्थ चंगा नालों भोजन छत्ती, गिणती दी लोड़ रहे ना राईआ। इस दा रस स्वाद सोहणा अवल्लड़ा नालों दन्द बत्ती, जिह्वा चक्ख ना कोए समझाईआ। इक इकल्ला साहिब स्वामी अन्तरजामी जाणे कमलापाती, कामल मुर्शद जो खा के खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित जिस दी धार चले सुच्ची, सच साजण आप बणाईआ। एह कोई जगत विहार वाली नहीं पक्की रोटी, पेट भरन दी आस ना कोए रखाईआ। मेहर नज़र कर के सिरफ गुरमुख चाढ़े चोटी, चट्टीआं तों लैणे बचाईआ। अन्तिम मेला कर के धुर दी जोती, जोत जोत विच समाईआ। घड़ी आवण ना देवे औखी, राए

धर्म ना कोए सज़ाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्नां पढ़ लई अगम्मी पोथी, पुस्तकां तों पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारे दी खोल्ह के कोठी, लंगर भगतां दिता लगाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ पिण्ड सिम्मल सकोर ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत आत्मा कहे खेल वेख्या पूरे सतिगुर दा, जो तन वजूद माटी ख़ाकी पहन के कुड़ता, कोमल कमल कँवल रंग रंगाईआ। निरगुण धार सचखण्ड दुआरयों वापस आया मुड़दा, अवल आपणा हुक्म मनाईआ। लहिणा देणा जुग चौकड़ी पूरब देख धुर दा, मस्तकां विच्चों मस्तक खोज खुजाईआ। लहिणा पूरा करनहारा अनन्द पुर दा, दुष्ट दमन दमन आपणे विच कराईआ। जेहड़ा भविक्खतां विच फुरना रिहा फुरदा, पैगम्बरां पहरा दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। भगत आत्मा कहे मैनूं वेख पेख वेख होई हैरानी, हरि मन्दिर कवण प्रभ सुहाईआ। जिस सम्बल दी लभ्भे ना कोए निशानी, नश्यां विच सार किसे ना आईआ। धुर दी जूह दिसे बेगानी, गृह मन्दिर ना खोज खुजाईआ। बिन हुक्मे होई वैरानी, खिज़ां आपणी रुत बदलाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां उत्ते कर मेहरवानी, नज़र मेहर इक उठाईआ। शब्दी धार दस्स निशानी, जोती जोत कर रुशनाईआ। महिमा अकथ कहाणी, धुर दी आप प्रगटाईआ। जिस नूं समझ सके ना चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। भगत आत्मा कहे मैं की तक्कां, तक्कणी समझ कुछ ना आईआ। मेरीआं बदल गईआं अक्खां, अक्खीआं पिच्छे अक्ख खुल्हाईआ। किसे नूं कह कुछ ना दसां, परदा भेव ना कोए उठाईआ। इक्को पुरख अकाल तक्कां, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। जिस ने कलयुग सब दे कोलों खोहणीआं ढक्कां, ढाके विच पए दुहाईआ। शब्द अगम्मी वज्जण सट्टां, सिट्टा सके ना कोए कढाहीआ। मन्दिर मस्जिद खड़कण इट्टां, इट्ट इट्ट रही कुरलाईआ। बिन भगतां साची मिले किसे ना चिटा, चिठ्ठी हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। कोटां विच्चों साहिब सतिगुर गुरमुख विरले उठाए उठ मेरया सिक्खा, सिक्खी विच्चों साख्यात नज़री आईआ। जग नैण जगत नेत्र सृष्टी अक्ख कायनात किसे ना दिसा, हैवान इन्सान सारे दिते भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत आत्मा कहे मैं कदे ना सौंदी, आलस निंद्रा मन दे नाल प्रनाईआ। निरगुण धार हो के रहां भाउँदी, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख

वखाईआ। सुणदी रहां शब्द अगम्मी दी डौंडी, जो डंके नाल करे शनवाईआ। किसे हथ्थ ना आवां लभ्भयां ढूंडी, अंदर मन्दिर बह के आपणा आप छुपाईआ। मैं बिन रसना तों होई गूंगी, जिह्वा नाल ना कोए चतुराईआ। सैनत जाणां ना हां हूं दी, हउमे रोग ना कोए सताईआ। मेरी इक्को आवाज़ तूं ही तूं दी, दूजा राग ना कोए अल्लाईआ। मैं बड़बोली नहीं किसे मूँह दी, लब होंट ना कोए हिलाईआ। मैं डड्डी नहीं किसे खूह दी, मैंडक वांग बन्द ना कोए कराईआ। मैं वसनीक नहीं किसे जूह दी, जंगलां विच भुवाईआ। मैं बणी नहीं किसे बदबू दी, गंदगी विच समाईआ। मेरी धार पुरख अकाल हू बहू दी, रूह बुत्त नाल मिल के करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। भगत आत्मा कहे मैं तक्कदी की, बिन अक्खां अक्ख खुल्लाईआ। जिस दा रूप बणी पुत्तर धी, पिता पुरख अकाल मनाईआ। जो दर आया घर कहे सब नूं जी, जीवण जुगत इक जणाईआ। हिस्से दे के साढे तिन्न हथ्थ सीं, काया माटी दिता टिकाईआ। मैं तक्कदी रही गोबिन्द दी इक्की वीह, बीस इकीसा अक्ख खुल्लाईआ। जिस दे पिच्छो धार बदलणी लीह, मार्ग मार्ग विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप दृढ़ाईआ। भगत आत्मा कहे मैं तक्कया इक हज़ूर, हज़ूरी विच बह के सीस निवाईआ। जो सर्ब बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। कर्म कांड दा कट कसूर, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। सच प्रेम दा दे के नूर, उजयाला करे रुशनाईआ। नाम भण्डारा भर भरपूर, भगतां दए रजाईआ। जन भगतां हो मशकूर, शुकरीआ कह खुशी मनाईआ। नाम खुमारी दे करे मख़मूर, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख सन्त निरगुण धार आ के मिल्या ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समरथ पुरख सर्ब कल भरपूर, भार गुरमुखां रिहा उठाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड कठयाली ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत आत्मा कहे मैं तक्कां भिन्नड़ी राती, रैण सुहञ्जणी वेख खुशी मनाईआ। शब्द अगम्मी सुनेहड़ा मिल्या धुर दी पाती, पत्रका वाच पत्तण बैठी आईआ। संदेसा दिता कमलापाती, पतिपरमेश्वर ल्या बुलाईआ। उठ वेख मार झाती, झाकी आपणी इक दिखलाईआ। भाग लगा तन माटी ख़ाकी, ख़ालस आपणा नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां लहिणा देणा चुकावे बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म मनाईआ। सन्त सुहेले बणा के साथी, सगला संग निभाईआ। सोहँ दस्स के धुर दी गाथी,

गहर गम्भीर दए वड्याईआ। जो इक्को हुक्म मन्न लैण आखी, बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। नाम प्याला देवे बण के साकी, साकत निन्दक दुष्ट दुराचार पार कराईआ। आत्म परमात्म बणा के जाती, यात्रा धुर दी दए कराईआ। सच भण्डारा देवे दाती, दाता दानी आप वरताईआ। अमृत बख्शे अगम्मी बाटी, जिस बाटे नूं लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। प्रेम प्याला दे के बदल देवे हयाती, हज़रत हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। भगत आत्मा कहे मैं चुक्क के वेख्या परदा, ओहला दिता उठाईआ। पुरख अकाल भगतां दे ढोले पढ़दा, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। बिन सद्दयां पुछयां अंदर वड़दा, घर घर सुत्यां रिहा उठाईआ। दरवेश बणया दर दर दा, दर दर मंगे चाँईं चाँईंआ। रूप धर के नरायण नर दा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले सज्जण फड़दा, फाटक अंदरों दए खुल्हाईआ। चरण प्रीत बणा के बरदा, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। जेहड़ा कारज किसे कोलों नहीं सी सरदा, सो सहिजे गुरमुख पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, परमात्म हो के आत्म वरदा, घर सज्जण सच करे कुड़माईआ।

५५६
१६

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी बचनी दे गृह पिण्ड काणा कौंटा ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत आत्मा कहे मैं तक्कया परमात्म पती कमलेश, कुशलता विच बह के खुशी मनाईआ। आदि जुगादि सदा रहे हमेश, सच घर बैठा डेरा लाईआ। हौली हौली बचन करदा नाल दस्मेश, शब्द सतिगुर शब्द गुरू शनवाईआ। जन भगतां लिख लेख, लिख्ती लिख्त बदलाईआ। चुरासी चुराहे विच्चों वेख, दोराहे विच्चों पार कढाहीआ। एकँकार इक दा दस्स के हेत, नेत नेत दए समझाईआ। प्रभ नूं चेतन वाला चेत, चित मन चिंदया दए मिटाईआ। काया परफुल्लत होवे खेत, पत टहणी खुशी मनाईआ। भगत भगवान लए वेख, घर साजण फेरा पाईआ। जिस गुरमुख आप कीता भेंट, पेट ओन्हां दा लए भराईआ। शब्द दुशाले आप लपेट, धुर दी गोदी लए उठाईआ। कौड़ा रहिण ना देवे रेठ, मिठ्ठा रस आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कुछ लहिणा देणा देवे विच जेठ, महीना पसीना मिहनत लेखे लाईआ।

✪ २३ चेत शहिनशाही सम्मत २ किशन सिँघ, बीबी पूरो दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✪

गोबिन्द किहा प्रभ की धार तेरी कल कल्की, कल्गी वाले मंग मंगाईआ। पुरख अकाल किहा ना कर जलदी, भेव अभेदा दयां दृढ़ाईआ। मेरी खेल जल थल दी, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। किसे नूं समझ नहीं घड़ी पल दी, शब्द इशारे विच नचाईआ। निरगुण जोत अगम्मी बलदी, लटा लट करे रुशनाईआ। सार दस्सां नेहचल धाम अटल दी, जित्थे बह के हुक्म वरताईआ। जो सच सुनेहड़े घलदी, हुक्में अंदर हुक्म प्रगटाईआ। ओह सिँघासण आपणा मलदी, जोत अकालण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द किहा की धार होवे कल्की, कला आपणी दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा एह खेल अछल अछल्ल दी, जगत बुद्धी ना कोई वड्याईआ। जगत जवानी जाए ढलदी, ढहिंदी कला सृष्ट सबाईआ। खेल होणी डूँघी डल दी, समुंद सागर देण दुहाईआ। कीमत पैणी लख चुरासी दे फल दी, गृह गृह फोले सर्ब लुकाईआ। हालत रहिणी नहीं गुर अवतार पैगम्बर दे हल दी, हाहाकार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा कुछ मैनूं दे दे भेद, परदा दे उठाईआ। मैं छड्डे चारे वेद, शास्त्र पुराण दिते तजाईआ। तक्कणी नहीं कोई कतेब, कुतबखाना ना कोई खुल्हाईआ। ममता वाली भरनी नहीं जेब, माया मोह ना कोई भटकाईआ। मनाउणा नहीं कोई देव, सुर ना कोई जणाईआ। पुरख अकाल इक्को करनी तेरी सेव, सिख्या साची देणी दृढ़ाईआ। मैं कुछ बोलना नहीं नाल जेहव, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। सच दुआर दस्स नेहकेव, नेहचल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दे उठाईआ। गोबिन्द कहे परदा रहे ना ओहला, इक्को मंग मंगाईआ। सच दस्स दे ढोला, सोहला बेपरवाहीआ। पुरख अकाल किहा तूं बण मेरा विचोला, विचला लेखा दयां चुकाईआ। नाम कंडे दा बण तोला, तराज़ू तेरे हथ्थ फड़ाईआ। प्रीतम दा बण गोला, सेवक सेवा इक्को दयां जणाईआ। साचयां भगतां दा करना भार हौला, हुलीआं ओनां दा दयां लिखाईआ। जिन्हां दे नाल मेरा जुग जुग दा कौला, चौकड़ी गई वक्त लँघाईआ। ओन्हां प्रगट होणा उपर धौला, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। ओन्हां दस्सणा जा के मेरा बोला, आत्म परमात्म राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची करनी इक समझाईआ। गोबिन्द किहा की प्रभू कल कल्की होवें अवतार, अवतर आपणा दे समझाईआ। कवण तत करें श्रृंगार, मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। कवण बूझ करें विचार, कवण धार परदा दएं उठाईआ। की पुरख होवें कि नार, तत तन वज़ूद दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा सुण मेरे नढ्ढे बाल, भेव अभेदा दयां जणाईआ।

मेरी वखरी होवे चाल, निराली खेल वखाईआ। लोकमात बणा के सचखण्ड सची धर्मसाल, सच दवारे दयां वड्याईआ। जिस नूं कोई ना सके भाल, नेत्र नैण ना किसे वखाईआ। पहलों तैनूं रखां नाल, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। छोटी जेही सिख्या देवां सिखाल, ढोला इक्को इक दृढ़ाईआ। हुक्म देवां कमाल, फ़रमाना बेपरवाहीआ। साचे गुरमुखां नूं जा के भाल, शब्दी रूप धराईआ। लख चुरासी विच्चों कर बहाल, गेड़ा आवण जाण कटाईआ। जिस तरां दा तूं मेरा लाल, एहो जेहे लाल गुरमुख मेरी गोद देणे सवाईआ। फेर मैं आपे करां प्रितपाल, मेहरवान हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिधर वेखण ओधर चलां नाल, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सगला संग बणाईआ। सब दी लेखे लावां पूरी घाल, कीती करनी झोली पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगतां दा बणयां रहीं दलाल, शरतां विच्चों शर्त अवर ना कोए वखाईआ। अन्त अख़ीरी करीं फेर इक स्वाल, स्वालीआ फ़िकरा ना कोए बणाईआ। बिना हथ्थां तों कर के निमस्कार, मंग वास्ते बिन झोलीउँ झोली देणी डाहीआ। दाता देवणहार होए आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बाग़बान, पर्दा पर देह विच्चों खुल्हाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड अनतोर ज़िला गुरदास पुर ✪

कल कल्की प्रभ साची धार, कल्गीधर कल प्रगटाईआ। जोत शब्द खेल अपार, तत वज़ूद ना कोए वखाईआ। बुद्धी समझे ना कोए संसार, मनूआं खोज ना कोए वखाईआ। शास्त्र वेद करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल खेल अपार, अपरम्पर आप वखाईआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चार, चौकड़ रिहा भुवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो स्वामी आपणी धारों उतरया आपणी वार, वारता अगली दए जणाईआ। जगत जुग कोए ना पावे सार, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। एकँकारा इक इकल्ला आपणा जाणे सति विहार, बिवहार आपणे नाल वखाईआ। निराला अकाला दयाला प्रितपाला हो त्यार, शाह कंगाला फेरा पाईआ। विद्याला धर्मसाला वेख सच्चा दवार, परदा ओहला आप चुकाईआ। तख्त निवासी शाहो शाबाशी पुरख अबिनाशी हो हुशियार, होश सब दी रिहा भुलाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित सिफ्तां दा इज़हार, रागां नादां विच शनवाईआ। सो खेल करनेहार अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह शहिनशाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी लोकमात मार झात अन्धेरी रात पावे सार, साध सन्त जीव जंत भगत भगवन्त वेख वखाईआ। बिन रूप रंग रेख जो वसे धुर दरबार, जोती जाता पुरख बिधाता नूर नुराना नूर इलाहीआ। सो साहिब नरेशा इक संदेसा नाम डंके देवे विच संसार, राउ रंकां आप

जणाईआ। जगत विद्या होवे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जिस दा अक्खरां विच करदे इंतज़ार, नूर इलाही परवरदिगार पारब्रह्म प्रभ बेऐब नज़री आईआ। जो भगत सुहेला इक इकेला निरगुण सरगुण करे मेला आपणी धार, धरनी धरत धवल धर्म इक्को इक जणाईआ। उठो वेखो नेत्र लोचण नैण अक्ख प्रतख करो दीदार, समरथ अकथ मालक धुरदरगाहीआ। जिस दा एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण सब तों वक्खरा शृंगार, भूषन वस्त्र ज़ेवर ओढन समझ कोए ना पाईआ। दीन दुनी दा करता धरता दाअवेदार करतार, कुदरत कादर वड्ड बहादर सूरबीर अख्वाईआ। जिस दा धुरदरगाही मंज़ल उच्च दरबार, बुज़दिल कायर रूप ना कोए वखाईआ। महल अटल अचल्ल सुहावणहारा उच्च मनार, ज़िमीं असमान दो जहान गोर मढ़ी कब्रिस्तान ना कोए दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, इक अख्वाईआ। निहकलंक प्रभ कमलापती, पत्तीदारी ना कोए रखाईआ। सचखण्ड निवासी धार सच्ची, आसण सिँघासण ना कोए बदलाईआ। शब्द अगम्मी धुर दी पट्टी, पारब्रह्म हो के करे आप पढ़ाईआ। नाम भण्डार खोल्ले हट्टी, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जन भगतां वस्त अमोलक देवे रती, जगत रतनां दी लोड़ रहे ना राईआ। मुहब्बत प्यार विच खोल्ले अक्खी, अक्ख आपणे नाल मिलाईआ। धुर दा काहन हो के बणावे सच्ची सखी, सखावत नाम इक्को झोली पाईआ। दासन दासी रूप बणाए बच्ची, बचपन आपणी गोद टिकाईआ। जगत वासना रहिण ना देवे कच्ची, काया कंचन गढ़ सुहाईआ। सति सन्तोख धीरज देवे जती, मेहर नज़र इक उठाईआ। त्रैगुण अग्नी तपण ना देवे भट्ठी, अमृत मेघ इक बरसाईआ। धर्म राए दी भरन ना देवे चट्टी, चेटक अवर ना कोए लगाईआ। भाग लगा के काया मट्टी, मन का मणका दए भुवाईआ। सच प्रकाश कर के आपणी बत्ती, बातन नूर करे रुशनाईआ। बिरहों विछोड़े विच जाए फट्टी, तीर निशाना घाउ चलाईआ। सच दवारे आवे नट्ठी, गुरमुख सवाणी भज्जे वाहो दाहीआ। प्रेम डोर कदे ना जावे कटी, पेचा जगत ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराए सच्ची, सति सतिवादी धार चलाईआ। निहकलंक की प्रभू तैनूं कहिण सति, सच दे दृढ़ाईआ। किस बिध दर्शन करन नैण अक्ख, प्रतख मिले गोसाँईआ। भगवान कहे मैं जुग जुग देवणहारा देण, दाता दानी धुरदरगाहीआ। भगत सुहेले गुरमुख लैण, लायक नालायक जो चल आयण सरनाईआ। ओन्नां लेखा चुकावां ऐन गैन, ग़म ना कोए वखाईआ। नाम पदार्थ दे के रसायण, घर भण्डारा दयां भराईआ। जो बाल्मीकी लेखा लिख्या विच रमायण, तिन्न सौ ब्यासी अंक दए गवाहीआ। जन भगतां कलयुग अन्तिम लैण आवे आप नरायण, नर नारी वेख वखाईआ। कड़वी धार रहिण ना देवे अजवायण, रस मिठ्ठा इक भराईआ। गुरमुख

आत्म होए ना कोए शुदैण, बावली पगली रूप ना कोए वखाईआ। दूजे घर ना बणे परायण, परम पुरख आप प्रनाईआ। धुर दा मालक बण के सैण, सज्जण हो के संग निभाईआ। शब्दी शब्द संदेसा आवे कहिण, कह कह आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा हुक्म आपणा नाम फ़रमान इक्को इक दृढ़ाईआ। की निहकलंक प्रभ तेरा नाम, सच दे समझाईआ। पुरख अबिनाशी करे खेल तमाम, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। जन भगतां देवां नाम, जाम प्याला अमृत इक वखाईआ। सांतक सति कर के नगर ग्राम, काया खेड़ा वज्जे वधाईआ। झगड़ा चुक्के अंदर तमाम, तमअ रोग ना कोए सताईआ। चरण कँवल दुआर वखावां सच हमाम, इश्नान इक्को इक कराईआ। लख चुरासी दा रहे ना कोई गुलाम, बन्दीखाना दयां तुड़ाईआ। धुर दा ढोला दस्स कलाम, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। महबूब बण के सच अमाम, आमद आपणी दयां समझाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी शाम, शमां भगतां दयां जगाईआ। सच दवारे दे के माण, ममता मोह दयां मिटाईआ। बिन सद्दयां पुच्छयां पिच्छों अग्गे मिलां आण, अगला आपणा रंग वखाईआ। बिन किरपा करे ना कोए पछाण, पसचाताप सर्ब लोकाईआ। निहकलंक जोत धार नाम रख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शैतान सारे दयां मिटाईआ।

५६३
१६

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी छिन्दो दे गृह पिण्ड मधे पुर ज़िला गुरदास पुर ✪

निहकलंक नाउँ निरँकार, निरवैर निरअक्खर धार चलाइंदा। धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक बण के सिरजणहार, पुरख समरथ हुक्म इक्को इक वरताईआ। जुग चौकड़ी खेल कर विच संसार, संसारी भण्डारी लाए दीबाण शब्द डोरी तन्द बंधाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की लै अवतार, अवर का अवरा खेल वखाइंदा। भगत सुहेले गुरमुख साचे तार, तुरत आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची करनी करता पुरख, नर निरँकार आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां अन्तर अन्तर खिच्चे सुरत, सोई नींदर गफ्लत विच्चों आप उठाईआ। भेव खुल्लावे दया कमावे परदा लाहवे तुरत, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। रूप दरसावे सति सरूप अकाल मूर्त, कल कलेश दर दरवेश अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन गुरमुख विरला उठदा, उठाए गहर गम्भीर। जिस उपर सतिगुर दीन दयाला तुठ्ठदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेनज़ीर। जाम प्याला दे के अमृत आपणे घुट्ट दा, धुरदरगाही बख्शे साचा सीर। झगड़ा मुक जाए आवण जावण

लख चुरासी दुःख दा, पार किनारा कराए दो जहानां पैंडा चीर। गृह मिल जाए पुरख अकाल दी गोदी सुख दा, दुक्खां विच नैण वहाए कोए ना नीर। सन्त सुहेले गुरमुख गोदी चुक्कदा, शाह पातशाह शहिनशाह वड पीरन पीर। घर साजण आ आ पुछदा, वड दाता दानी गहर गम्भीर। नाता जोड़ के धुरदरगाही पिता पुत दा, पत्तण पहुंचे घत वहीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम अनमुल्ला दस्से हक तदबीर। हक तदबीर सच तरीका, सतिगुर शब्दी शब्द जणाईआ। भरम मेटे जन जीव जीअ का, जागरत जोत करे रुशनाईआ। फुहारा बरखे अमृत मींह का, बूंद स्वांती आप चुआईआ। लेखा जाणे पुत्तर धी का, धौल धर्म दए वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए घृत घी का, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच्चा दान, गुरमुख गुरसिख कलयुग गोर विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी चन्नो दे घर पिण्ड खुशीपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

किरपा कर अबिनाशी करता, करनहार दया कमाइंदा। जन भगत बणाए साचे घर दा बरदा, सच दवारा इक्को इक वखाइंदा। अन्तर आत्म खोल्ह़े परदा, दूई द्वैती डेरा ढाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़दा, दूजा राग ना कोए अल्ह़ाइंदा। साची मंज़ल अगम्म अथाह चढ़दा, हक मुकामे सोभा पाइंदा। इश्नान करे धुर अगम्मे सर दा, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। निज नेत्र दरस करे जोत सरूपी हरि दा, लोचण नैण अक्ख खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला आदि जुगादि, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। शब्द अगम्मी धुन आत्मक सुणाए नाद, अनहद रागी राग अल्ह़ाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द देवे सच स्वाद, अमृत अंमिउँ रस आप चुवाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना मेटे वाद विवाद, ब्रह्माद ब्रह्मांड ब्रह्मण्ड खण्ड परदा दए उठाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक शब्द अगम्मी देवे दाद, दाता दानी कर मेहरवानी, निरगुण निरवैर आप वरताईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सदा सुहेला इक इकेला बख्शे आपणी याद, दीन दुनी कूड़ा नाता माया ममता मोह चुकाईआ। काया खेड़ा साढे तिन्न हथ्थ कर आबाद, रुत्त बसन्ती सति सुहावणी आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खोल्ह़े आपणा राज़, राज़क रिज़क रहीम दया कमाईआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा माण, जुग चौकड़ी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण वेखे आण, सति सरूपी शाहो भूपी वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा नाम निधाना देवे

५६४
१६

इक फ़रमान, धुर दा ढोला इक जणाईआ। जिस नूं जगत बुद्धी समझे ना कोए ज्ञान, चौदां विद्या भेव आवे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला गुरमुखां उपर हो मेहरवान, अबिनाशी करता महबूब मुहब्बत विच परदा दए उठाईआ। सच दवारा एकँकारा धर्म वखाए इक निशान, कूड़ी क्रिया जूठ झूठ काया माटी खाकी अंदरों बाहर कढाहीआ। साचा मंत्र धुन आत्मक देवे गाण, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा हुक्म सुणाईआ। सन्त सुहेले साचे मन्दिर अंदर काया काअबे दर्शन पाण, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित भगतन मेला हुन्दा रहे नाल श्री भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगत भगवान जोड़ा रिहा जुड़दा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। भेव खुल्हदा रिहा साचे सतिगुर दा, शब्दी शब्द वज्जे वधाईआ। ताल बणया रिहा सुरत सवाणी सुर दा, आलस निंद्रा परे हटाईआ। अन्तर अन्तर फुरना रिहा फुरदा, गुरमुख गुर गुर आप पढ़ाईआ। मंज़ल मार्ग सन्त सुहेला रिहा तुरदा, भज्जया वाहो दाहीआ। घर वेख्या सच्चे अनन्द पुर दा, जित्थे परम पुरख परमात्म बैठा सोभा पाईआ। झगड़ा रहे ना देवत सुर दा, विष्न ब्रह्मा शिव इष्ट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, भगत भगवान वेख वखाईआ। जन भगतां प्रभ तक्कदा रहे राह, नित्त नवित ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण बणदा रहे मलाह, नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाउँदा रहे गवाह, खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान शहादत दए भुगताईआ। नित नवित देंदा रहे शब्द अगम्मी सलाह, मश्वरा धुर दा आप समझाईआ। नौजवाना मर्द मर्दाना जणाउँदा रहे आपणा नाँ, नर निरँकारा हो के करे हक पढ़ाईआ। वाहद कलमा दस्सदा रहे नूरी खुदा, नग़मा इक्को इक सुणाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी जणाउँदा रहे बिधा, बिधना लेख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले आत्म परमात्म कर कर मेले, मिलणी जगदीश जगजीवण दाता आप कराईआ। जन भगतां प्रभ देंदा रिहा दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम वेख अन्धेरी रात, पुरख अकाला होए सहाईआ। शब्द अगम्मी लै के आए सुग़ात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। अन्तर बातन करे बात, शब्द शनीद इक शनवाईआ। मन मनुआ कूड़ी क्रिया करे घात, नाम खण्डा इक खड़काईआ। जन भगतां पुछे वात, वातावरन दए बदलाईआ। सच प्रीती चरण कँवल उपर धवल जोड़ के नात, साक सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। सोहँ ढोला बण विचोला दस्स अगम्मी गाथ, आदि जुगादी इक्को नाम सुणाईआ। खेलणहारा नित नवित खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता मालक हो के घर घर दा, लख चुरासी गृह गृह वेख वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणा के धुर दे दास, दस्त आपणे नाल मिलाईआ। प्रभ देंदा रिहा माण, ऊँच नीच जात पात राउ रंक ना कोए वड्याईआ। वखाउँदा रिहा सच निशान, निशाना अपाणा नाम दृढ़ाईआ। सुणाउँदा रिहा धुर दा गाण, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। बिन अक्खां देंदा रिहा पहचान, निज लोचन अक्ख खुल्हाईआ। मेहर नज़र करदा रिहा गुण निधान, गुणवन्ता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल महान, महिंमां अकथ कथ सुणाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, पंज तत मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। धुर दा कलमा साचा नग़मा शब्द अगम्मी दसे आण, हँ ब्रह्म पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं जिस दा खेल महान, हज़रत पैगम्बर पीर ईसा मूसा मुहम्मद बैठे सीस निवाईआ। जिस दा धुर दरगाह हुक्म चले फुरमाण, जुग चौकड़ी ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी करतारी दे गृह दुरांगला जिला गुरदास पुर ✪

भगत सुहेला जुगादि आदि आदि जुगादि इक, आदि पुरख अबिनाशी करता एकँकार बेपरवाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर समझ ना सके भविख्त, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंज़ील कुरान खाणी बाणी परदा अगम्म ना कोए उठाईआ। कलम शाही कागज़ शब्द संदेसा सिफ्त सालाही लिखदे गए लिख्त, राग नाद नग़मे गीत ढोले सलोक वारता वारां विच गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिख मुन खोज खोज गए इष्ट, दृष्ट विच दहि दिशां ध्यान लगाईआ। लख चुरासी जीव जंत चार खाणी अंडज़ जेरज उत्भुज सेत्ज भोगदे गए गृहस्त, गहर गम्भीर बेनज़ीर आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन विच्चों गुरमुख सन्त सुहेले लए मिलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल पुरख समरथ, अबिनाशी करता निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। जोत सरूप शाहो भूप निरगुण सरगुण हो प्रगट, शब्द अनाद ब्रह्म ब्रह्माद धुर संदेसा राग अल्हाइंदा। सच दवारा नाउँ निरँकारा लोकमात खोल्ह के हट्ट, भगत भगवान देवे दान नाम पदार्थ झोली पाइंदा। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप मन वासना सारे रहे नठ्ठ, अन्तर अन्तर ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी हुक्मरान, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी देवणहार फ़रमान, शब्द संदेश नर नरेश

इक दृढ़ाईआ। चार जुग करदे रहिण परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गा गा गए गान, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे के गए अहिवाल, भेख भविख्तां विच दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर निराकार निरँकार होवे प्रधान, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म पवरदिगार जलवा नूर करे रुशनाईआ। एथे ओथे दो जहान ज़िमी असमान पृथ्मी आकाश गगन गगनंतर वेखे मार ध्यान, धरनी धरत धवल खोजे थाउँ थाँईंआ। गुरमुख साचे सन्त जनां अन्तर अन्तर देवे सच ज्ञान, नाम मंत्र धुर दा इक समझाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत करे ना कोए वखाण, जन भगतां अंदरों विख दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर दवारा इक वखाईआ। आदि जुगादी परम पुरख प्रभ दाता, दयावान इक अखवाइंदा। जिस दी चार जुग गाउँदे गए गाथा, चारे खाणी वण्ड वण्डाइंदा। चारे बाणी दस्से साका, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा हुक्म वरताइंदा। हुन्दा रिहा सहाई नाथ अनाथा, दीन दयाल दीनां आपणे रंग रंगाइंदा। नाम संदेसा देंदा रिहा साचा, सुच्च संजम इक समझाइंदा। भाग लगाउँदा रिहा साढे तिन्न हथ्थ माटी काचा, कंचन गढ़ महल अटल आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित कर कर हित्त, भगत सुहेला इक इकेला लेखा जाण गुरू गुर चेला, गुरमुख गुर गुर आपणी गोद उठाइंदा। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, आदिन अन्ता इक अख्वाईआ। लख चुरासी घट भीतर होवे अन्तरजामी, परदा ओहला ना कोए वखाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दस्सणहारा अगम्मी बाणी, शब्द निधाना नाम दृढ़ाईआ। अमृत आत्म सर सरोवर बख्शणहारा ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराईआ। सोई सुरती उठा के देवणहारा पद निरबाणी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा रंग रंगाईआ। सति दुआर एकँकार सचखण्ड बख्शे इक निशानी, निशाने कूड़े दए गवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त नाम संदेसा देवे मणीआं मंत, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के वज्जे वधाईआ। कोई भेव ना जाणे बोध अगाधा पंडत, चौदां विद्या सार किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। आदि जुगादी हरि भगतां संग, सगला संग बणाईआ। नाम मजीठी चाढ़े रंग, रंगत अगली दए बदलाईआ। मानस जन्म होण ना देवे भंग, भाण्डा भरम भउ तुड़ाईआ। निरगुण नूर चाढ़े चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पवण स्वास लेखे लाए दम, साह साह आपणा भेव खुल्हाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी अंदरों दए बदलाईआ। आत्म परमात्म कूड़ी क्रिया मेट के भरम, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप दए दरसाईआ। झगड़ा मुका के चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर दए सुहाईआ। गुरमुखां नेत्र खोल्ह के अन्तर हरन फरन, निज गृह

दर्शन दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मंज़ल आपे आया चढ़न, बिन पौड़े डण्डे पारब्रह्म पार ब्रह्मण्डे सच दुआर एकँकार करनी दा करता हरिजन आपणे विच समाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी वीरो दे गृह पिण्ड दुरांगला ज़िला गुरदास पुर ✪

प्रेम प्यार दा मिल्या प्रसादि, प्रसादा मुहब्बत रूप बदलाईआ। अन्तर आत्म दा स्वाद, रसना जेहवा ना सके समझाईआ। जिस दी सिफ्त अंदर लेखे लिखे गए बोध अगाध, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। सो साहिब स्वामी देवणहारा दाद, दात आपणी इक वरताईआ। जिन्हां दे अन्तर रिहा याद, यादाशत ओन्हां जाए बणाईआ। आत्मा हरिमन्दिर सदा रहे आबाद, खेड़ा कूड़ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वसा के जाए साचा घर, जिस गृह गिरहाबान हो के वेख वखाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड वज़ीरपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ वेख कलयुग अन्त अख़ीर, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन होया दिलगीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। नाता छड्ड गए पैगम्बर गुर अवतार पीर, सगला संग ना कोए निभाईआ। दीन मज़्ब जात पात ऊँच नीच राउ रंक शरअ कटे ना कोए जंजीर, इक्को रंग सूरे सरबंग साचे घर ना कोए रंगाईआ। अमृत आत्म साचा मिले किसे ना नीर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ सृष्टी दृष्टी भज्जी वाहो दाहीआ। हक हकीकत मंज़ल पैंडा लए कोए ना चीर, चार कुण्ट दहि दिशा वेखण थाउँ थाँईंआ। मेहरवान बेनज़ीर, नज़र आपणी इक उठाईआ। जन भगतां बदल दे तकदीर, तकब्बर माण अंदरों बाहर कढाहीआ। तेरी याद विच शाह सुल्तान होए फ़कीर, फ़िकरे ढोले तेरा नाम गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। जन भगत कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ कुड़यार, साचा धर्म ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या पुरख नार, पिता पूत करे लड़ाईआ। घर घर गृह गृह मन्दिर मन्दिर दिसे विभचार, सति सच ना कोए समझाईआ। दुखियां सुणे ना कोए पुकार, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए गवाईआ। चार वरन हाहाकार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रहे कुरलाईआ। नव नौ चार दिसे अंध्यार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण आपणा हुक्म सुणाईआ। सदी चौंधवी दिसे खुआर, ख़ालस रूप ना कोए प्रगटाईआ। पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद

नेत्र लोचण नैण रहे उठाल, चौदां लोक चौदां तबक वेखण थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे समझाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग वेख अन्त, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। माया भुल्ले भेखाधारी सन्त, सहिब सतिगुर तेरा भेव ना कोए खुल्लाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा दिसे कोए ना पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। तेरे मिलण दी किसे अन्तर सति ना दिसे हिम्मत, हौसले सारे बैठे ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर कीती इल्लत, इलम वाले आलम दिते भुलाईआ। दर दरवेश तेरे अग्गे जन भगत करदे मिन्नत, पुरख अकाल दीन दयाल निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मनुआ मन जगत वासना करे कोए ना इल्लत, शब्द डोरी तन्द लैणा बंधाईआ। मानुख जन्म मनुष ना आवे ज़िल्लत, मानव देणी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा देणा वखाईआ। जन भगत कहिण प्रभू वेख आपणा कलयुग कूड़ कुड़यारा वक्त, वाक्य वाक्यात देवे गवाहीआ। भरमे भुल्ला माया ममता जगत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। फिरे दरोही उत्ते फर्श, अर्श रिहा कुरलाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उत्ते कर तरस, मेहर नज़र नज़र इक उठाईआ। अमृत मेघ अगम्मी बरस, बूंद स्वांती मुख चुआईआ। लोकमात मार झात खोल्ह ताक पुरख अबिनाशी निरगुण धार आयों परत, पति पतवन्ते तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां नाल पूरी हो गई शर्त, शरीअत विच्चों शरअ दे बदलाईआ। तेरे हुक्में अंदर एथे ओथे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर पए कोई ना फ़र्क, रवि ससि सूर्या चन्द मण्डल मण्डप सीस ना कोए उठाईआ। पिछला हुक्म मनसूख़ कर करदे तरक, तुरत आपणा हुक्म दे दृढ़ाईआ। जन भगतां नाल कर आत्म परमात्म हो के दर्द, दीनां अनाथां दीन दुनी विच्चों लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे मन्ज़ूर कर अरज़, अरज़ खाहश गुरमुख रहे जणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ इक वारां वेख चुक्क के परदा, लोकमात ध्यान लगाईआ। तेरा नाम कोई ना पढ़दा, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। हक मंज़ल कोए ना चढ़दा, अधवाटे दिसी लोकाईआ। तेरा दरस कोए ना करदा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ रहे कुरलाईआ। तेरा प्रेम प्यार मुहब्बत विच कोए ना वरदा, वारता सारे रहे सुणाईआ। परदा खोल्हया ना किसे आपणे घर दा, साढे तिन्न हथ्थ वज्जी ना कोए वधाईआ। निरँकार तेरा नाम अक्खर कोए ना पढ़दा, जगत विद्या पढ़ पढ़ ढोले रहे सुणाईआ। बिरहों वैराग विछोड़े अंदर कोए ना मर्दा, मर जीवत रूप बदलाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित आपणा खेल करदा, करनी दा करता इक अख्वाईआ। जन भगत सुहेला तेरा दीदार दीद नाल इक मंगदा, दरे दुआर होणा सहाईआ। परदा लाह दे हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ।

लहिणा देणा मुक्क जाए काया माटी चम्म दा, आवण जावण पतित पावन रहे ना राईआ। तूं साहिब सुहेला सदा सदा जन भगतां बेड़ा बन्नृदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे कंध उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वक्त सुहञ्जणा कर तेरा ढोला गाईए धन्न धन्न धन्न दा, धर्म दुआर एकँकार किरपा धार विच संसार इक्को दे बणाईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ महिंदर कौर दे गृह पिण्ड वज़ीरपुर ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरी मंज़ल रुहानी, रूहे रवां दया कमाइंदा। किरपा करे खाक जिस्मानी, जिस्म इस्म इक दृढ़ाइंदा। मिले मेल महबूब आसमानी, एहसान सिर ना कोए रखाइंदा। सच दुआर बख्शे इक महिमानी, महिमान निवाज़ आपणी दया कमाइंदा। हरिजन वस्त दिसे ना कोए बेगानी, धुर दी दात झोली पाइंदा। किरपा करे साहिब गुण निधानी, गुणवन्त गुण वखाइंदा। जिन्नृां बख्शे चरण प्रीती सच ध्यानी, परदा ओहला द्वैत मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे पवित पुनीत प्राणी, पूरन ब्रह्म आप समझाइंदा।

५७० १६

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ सलविंदर कौर दे गृह पिण्ड जीवण चक ज़िला गुरदास पुर ✪

अगम्म अथाह खेल सतिगुर दा, सर्ब स्वामी आप वखाइंदा। लख चुरासी नालों तुट भगतां नाल जुड़दा, जोड़ा धुर दा आप सुहाइंदा। गुरमुख सवाधान करे मन वासना मुर्दा, मुरीद मुर्शद आपणे रंग रंगाइंदा। लेखा मुकावे अवर होर दा, हरि हर हिरदे आपणा नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे गृह आप सुहाइंदा। साचा गृह ग़रीब निवाज़, दर ठांडा इक वखाईआ। जिस दी निरगुण साजण लई साज, बाडी बणत ना कोए बणाईआ। धुरदरगाही बह के करे राज, रईयत दो जहानां वेख वखाईआ। भगतां स्वारे काज, भगवन मीता बेपरवाहीआ। सच बणाए समाज, सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुगत जन भगतां रखे लाज, बिध आपणी नाल तराईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड नशैहरा ज़िला गुरदास पुर ✪

जै जैकार श्री भगवन्त, जिस अग्गे ज़िमीं असमान सीस झुकाईआ। आदि जुगादि जिस दी महिमां अगणत, अकल

कलधारी खेल खिलाईआ। सति धर्म बणाउँदा रहे बणत, जूठ झूठ आपणा हुक्म वरताईआ। प्रगटाउँदा रहे गुरमुख सज्जण सन्त, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। नाता जोड़दा रहे आत्म परमात्म नार कन्त, सज्जण सुहेला इक इकेला शहिनशाहीआ। काया चोली जन भगतां चाढ़दा रहे रंग बसन्त, मौसम ख़िज़ा बसन्त बहार रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची सेव जणाईआ। जन भगतां देंदा आया हक, हकीकत इक समझाईआ। सेवा कराउँदा आया अनथक्क, थकावट रूप ना कोए वखाईआ। मिलदा रिहा हस्स हस्स, हस्ती दा मालक बेपरवाहीआ। खोल्हदा रिहा अक्ख, निज नेत्र नैण वड्याईआ। जणाउँदा रिहा सच, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। बंधाउँदा रिहा नत्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सिर टिकाउँदा रिहा हथ्थ, मेहरवान हो गुसाँईंआ। जन भगतां करदा रिहा वस, वासा आपणा उन्हां अंदर कराईआ। देंदा रिहा अमोलक रस, अमृत झिरना इक झिराईआ। कलयुग अन्तिम गावण आया जस, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मेला सहिज मिलाईआ। जन भगतां प्रभ पाउँदा रिहा सार, महासार्थी हो के सेव कमाईआ। हभ कुछ रखे आपणे अख्त्यार, मुखत्यार गुर अवतार पैगम्बर मात जणाईआ। संदेशे दिन्दा रिहा वारो वार, वारता अक्खरां विच दुहराईआ। कलयुग अन्तिम उतर आपणी धार, धरनी धरत धवल उत्ते सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। भगत सुहेले लए उभार, लख चुरासी विच्चों आप उठाईआ। वेखे विगसे पावे सार, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त कल कल्की लए अवतार, कलधारी आपणी कल वरताईआ।

५७१
१९

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ मुनशा सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगत तेरी जगदी जोत, जोती जाता आप जगाइंदा। भाग लगा के काया मन्दिर साचे कोट, महल अटल उच्च मनार आप सुहाइंदा। शब्द अगम्मी ला के आपणी चोट, सोई सुरती मात उठाइंदा। झगड़ा मुका के वरन गोत, आत्म ब्रह्म सच समझाइंदा। बुद्धी वाली रहे ना कोई सोच, अनुभव आपणा खेल वखाइंदा। नाम खुमारी अंदर करे मदहोश, मन वासना कूड़ी क्रिया आप बदलाइंदा। सच प्रीती अन्तर करे सन्तोश, अग्नी अग्ग ना कोए तपाइंदा। गुण निधाना दस्स के इक सलोक, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। लेखा मुका के लोक परलोक, सचखण्ड दवारा इक वखाइंदा। जित्थे आदि जुगादि इक्को मौज, दूजा रूप ना कोए बदलाइंदा। जन भगतां संग जुग चौकड़ी करदा रहे चोज, चोजी प्रीतम वेख वखाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। जन भगत तेरा साचा नूर, अर्शां तों परे नज़री आईआ। जित्थे वसे हरि हज़ूर, सर्ब कला भरपूर डेरा लाईआ। पैंडा रहे ना नेड़े दूर, मंज़ल पन्ध ना कोए वखाईआ। जोती जाता इक्को नज़री आए ज़हूर, ज़रूरत अवर रहे ना राईआ। नाता तुट जाए कूड़ो कूड़, सति सच मिले वड्याईआ। मस्तक मिलदी रहे अगम्मी धूढ़, धूढ़ी टिक्का सरगुण आप रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा वेख वखाईआ। हरिजन तेरी पूरी मनसा, मन ममता मोह मिटाइंदा। सोहँ रूप बणा के हँसा, माणक मोती चोग चुगाइंदा। कोटन जन्म दा लहिणा चुका के सहँसा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। भगत भगवान मिल के बणाए धुर दा बंसा, बंसाँवली आपणी आपणे हथ्थ रखाइंदा। मनुआ रखे ना कोए संसा, हउमे रोग कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जन भगत तेरी धुर दी पूजा, सिल पूजस लोड़ रहे ना राईआ। भाओ भेव खुल्ले गूझा, परदा ओहला दए उठाईआ। निर्मल निर्मल साफ़ पवित्र करे बुधा, चिट्टी धार विच प्रगटाईआ। जो प्रभ सरनाई झूजा, सच दवारे दए टिकाईआ। जित्थे अवर ना कोई दूजा, निरगुण निरवैर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लोकमात लाए बूटा, पत्त डाली आप महकाईआ। जन भगत तेरा लेखा विच जहान, जहालत विच्चों बाहर कढाहीआ। मेल मिला श्री भगवान, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। मुहब्बत विच बण महिमान, दर दर आपणी अलख जगाईआ। लेखे ला पक्का पकवान, पाकीज़ा अंदरों दए कराईआ। दरगाह साची देवे माण, सचखण्ड मिल के खुशी वखाईआ। कलयुग अन्त कर परवान, मेहरवान होया सहाईआ। जिस दवारे झुला के जाए सच निशान, तिसदा निशाना ना कोए मिटाईआ। चार जुग देंदे रहे ब्यान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सोहला इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भरम विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ तरलोक सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरी अन्तर याद, याद पूरब रही कराईआ। जिस कारन पंज तत खेड़ा होया आबाद, साढे तिन्न हथ्थ वज्जी वधाईआ। शब्द अगम्मी सुण नाद, सुर ताल बदलाईआ। खुल्ले अंदरों राज़, परदा दए उठाईआ। झगड़ा मुक जाए सिमरन पूजा नमाज़, सीस इक्को इक झुकाईआ। किरपा करे आप महारज, पुरख अकाला दीन दयाला बेपरवाहीआ। नवें जन्म दी साजण देवे साज, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। शब्द अगम्मे चाढ़ जहाज, दो जहानां पार लँघाईआ। माया

ममता मेट के वाद विवाद, अमृत इक्को रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। जन भगत तेरी उज्जल बुद्धि, मन विकार रहे ना राईआ। अन्तर आत्म आपे करे सुध्धी, अन्त पवित आप बणाईआ। रमज़ लाए शब्दी गुझी, सोई सुरती आप उठाईआ। खेल रहे कोई ना लुकी, परदा आप उठाईआ। अन्त अन्तश्करन विच रहे कोई ना दुखी, सुख सागर रूप समाईआ। उज्जल करे मात मुखी, मुफ्त आपणा रंग चढ़ाईआ। सचखण्ड दवारे गोदी फिरे चुक्की, दर घर साचे दए बहाईआ। लोकमात रोटी खा के सुक्की, सुक्के रुखड़े हरे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे कोलों सलाह नहीं कोई पुच्छी, पुश्त पनाह जन भगतां आपणा हथ्थ टिकाईआ।

५७३ १६

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा ऊँच टिकाणा, टकयां वाला पहुंचण कोए ना पाईआ। जित्थे खड़े इक्को शब्द बबाना, ख़ाकी तन नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म गाउँदी जाए गाणा, सोहँ ढोला सहिज सुभाईआ। अन्त पए ना पछोताणा, साचे दर ना होए जुदाईआ। मिले मेल श्री भगवाना, भगवन आपणे घर वसाईआ। चरण कँवल बख्शे सच ध्याना, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मन्दिर सोहे सच मकाना, सचखण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। लेखे लग्गे आवण जाणा, जानणहार होए सहाईआ। चले चलाए सदा आपणे भाणा, भावी भउ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारे देवे इक्को माणा, मान अभिमान रहे ना राईआ। जन भगत तेरी उच्ची चोटी, चोट सतिगुर शब्द आप लगाइंदा। जित्थे पहुंच ना सकण कोटन कोटी, कूड़ कुटम्ब भेव कोए ना आइंदा। जिस गृह जगे इक्को निर्मल जोती, जागरत जोत डगमगाइंदा। उह मंज़ल तेरी होवे सौखी, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक हथ्थ ना कोए फड़ाइंदा। किसे दवारयों भिखिअक हो के मंगणी पए ना रोटी, सच भण्डारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महल अटल इक्को इक सुहाइंदा। जन भगत तेरा घर बहुरंगा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सलाहीआ। जित्थे सति सतिवादी डठ्ठा इक पलँघा, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द वजाए मृदंगा, तार सतार ना कोए हलाईआ। बिना रसना तों आवे रस अनन्दा, रस्ता दिसे बेपरवाहीआ। अमृत धार वहे बिना गंगा, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। मन वासना दिसे कोए ना दंगा, क्रिया कूड़ ना कोए लड़ाईआ। सति पुरख

निरँजण इक लहराए धुर दा झण्डा, ब्रह्मण्डां हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी फड़ के खण्डा, खण्डरां विच्चों जन भगतां पार कराईआ।

✪ २४ चेत शहिनशाही सम्मत २ दयाल सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा गुरदास पुर ✪

किरपा करे हरि जगदीस, कृपाल हो के वेख वखाइंदा। धुर दा नाम दस्से हदीस, हाज़र हो के हरिजन आप पढ़ाइंदा। लेखा मुका के बीस इकीस, इक्की वीह आपणा हुक्म सुणाइंदा। छत्र झुला के धुर दे सीस, सीस जगदीश आप वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाइंदा। साचा खेल करे हरि करनी दा करता मालक कुदरत, लेखा कदीम वेख वखाइंदा। महबूब मालक बण के धुर दा मुर्शद, मुरीदां मरन तों आप बचाइंदा। लख चुरासी विच्चों दे के फुरसत, गृह मन्दिर साचे घर आप टिकाइंदा। जित्थे इक्को नाम साची उलफत, दूजा राग ना कोए सुणाइंदा। अग्गे रही कोई ना मुश्कल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। हरिजन वसणा घर महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। जिस दी समझे ना कोए हदूद, जगत वण्ड ना कोए वखाईआ। साची मंज़ल दस्स मकसूद, धाम इक्को इक दृढ़ाईआ। जित्थे हाज़र रहे सदा मौजूद, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां अन्तिम कूड़ी क्रिया कर मौकूफ़, मसरूफ़ आपणे नाल रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रहिण ना देवे कोई बेवकूफ़, बेवा दी सेवा, सेवा दा मेवा, मेवा दा देवा, देवा दा धाम निहचल निहकेवा, इक्को घर दए वसाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ चन्नण कौर दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

हरि किरपा होए जन्म रहिरास, कर्म रोग ना कोए सताईआ। आत्म परमात्म होवे दास, बण सेवक सेव कमाईआ। घर साचे करे निवास, दर ठांडे डेरा लाईआ। सदा सदा सद वसे पास, बिस्तर इक्को सेज सुहाईआ। जुग चौकड़ी ना होवे नास, अबिनाशी देवे माण वड्याईआ। तन माटी चोला लख चुरासी बदलणा ना पए लबास, जूनां विच ना कोए भवाईआ। फिरना पए ना पृथ्मी आकाश, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दवारा इक वसाईआ। दर दवारा वेख अथाह, वज्जे सच वधाईआ। जित्थे बैठा बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ।

सच सिँघासण रिहा सुहा, सति सतिवादी डेरा लाईआ। जोती जोत कर रुशना, नूरो नूर डगमगाईआ। धुर फुरमाणे रिहा सुणा, शब्द अगम्मी हुक्म वरताईआ। सच इशारे रिहा समझा, बिन सैनत अक्ख हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा रिहा जगा, शंकर नेत्र अक्ख खुलाईआ। चारे जुग रिहा भवा, चौकड़ आपणा बन्धन पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सेवा रिहा ला, सिख्या इक्को इक समझाईआ। वरन बरन वण्ड रिहा वण्डा, दीन मज़्हब खेल खिलाईआ। मन ममता हउमे हंगता गढ़ रिहा सुहा, साढे तिन्न हथ्थ नाच नचाईआ। घर विच घर रिहा बणा, दीआ बाती कमलापाती इक्को नूर कर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम वेखण गया आ, अगला पिछला लेखा दए चुका, जन भगत सुहेले लए तरा, तारनहार हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब व्यापी इक खुदा, खुदी कूड़ी दए मिटाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ अतर सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

हक खुदा सच तौफ़ीक, हदीस पनहा आप जणाइंदा। सज्जण साहिब स्वामी रफ़ीक, जगदीश करता सोभा पाइंदा। नाम सच सति उम्मीद, कामल मुर्शद वेख वखाइंदा। दरस अगम्म दर्शन दीद, दास्तान पिछली आप समझाइंदा। धुर दा खेल जगत शदीद, शकायत सब दी खोज खुजाइंदा। जाबर ज़ोर ज़बर हमीद, हमज़ा हारब हरि मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। नूर प्रकाश पुरख अबिनाश मण्डल रास शाहो शाबाश पृथ्मी आकाश पवण स्वास दासी दास निरगुण सरगुण नज़री आईआ। नूरे नुराना शाह सुल्ताना श्री भगवाना मर्द मर्दाना नौजवाना रहीम रहमाना कलमा कलामा उल्माए आलमाना ज़ज़दाए जुदाराना वैरी बेगाना रूप ना कोए वटाईआ। हजरते हज़ूर सर्ब कला भरपूर शब्द नाद तूर नाम खुमार सरूर मुरीदां मुर्शद हो के मिले ज़रूर फज़ूल वक्त ना कोए लँघाईआ। हक रुशना सच रहिनुमा दो जहानां दुआ राएमा खुदा नाएमा जुदा वाएमा फिदा साएमा सिदा कलमा कर्म ना कोए बणाईआ। अदलो आदल अदले इन्साफ गुसाए ग़म गुस्ताख़ी मुआफ़ पर्दानशीं फरामोशे नकाब बरदा अज़ी, अनायत तरमीमे कफ़ायत कफ्ने काफर ना कोए रखाईआ। स्वामी महबूब उच्च अरूज मुहब्बते महिदूद मंज़ले मकसूद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुर्शदे मुरीद मुरीदे मुर्शद मराशला इक्को दए वखाईआ।

५७६
१६

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ चतर सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

दायराए तजदीद, मुशायराए तमहीद, ज़ाहराए पुशीद, बाहराए अदीब, नूरे खुदा ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। सदमाए सदाक, कदमाए पाक, बदनाए ख़ाक, यदनाए ताक, रसनाए मुसताक, कुशताए इलहाक, इतफ़ाक इतमिनान मुरीदे मुर्शद आप बनाईआ। ज़ाहराए बातन, पिसराए साकन, शोहराए फ़ाकब, जीराए नाकन, अमीराए वाचन वफदे वफ़ा, जसते जुदा, आसमाने खुदा, पैमाने रुबा, जमाने दुवा, अहिमकाने हवा, बेगाने गुनाह, रहिनुमाए राज़े रज़ूह, नमाज़े वुज़ू, आतशे फ़शो, शायरे शायरान, मुहब्बते मेहरवान सजदे निशान, बरदे गुलाम, दरदे दुहान, अज़मते ईमान, बशरते आसमान, ज़मीनो दीनान, दामनेगीर दस्त बदस्त मेल मिलाईआ। चशमे चरोग, शदमे अलोग, कदमे तलोक, ज़ाबते सलोक, रासते बहोश, अशायते अशां अनायत नहां, जमाने ज़मीन, इन्साने अज़ीम, फसाने तक्सीम, दीवाने नग़मीम दामनेगीर ज़ाहरा पीर बेनज़ीर ख़ालके खुदा, दिल दिलरुबा, हक मुकाम, पके अवाम, अमाम धुर दा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कुदरते कादर, फितरते बहादर, मुसरते आदर, अदले इन्साफ, पुरख अबिनाश, सर्ब घट वास, जोत प्रकाश, जन भगतां पूरी करे आस, आसानी नाल असल वसल हक महबूब दए तराईआ।

५७६
१६

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड चोबे ज़िला गुरदास पुर ✪

रावी दा कन्ढा, गुरमुख प्रेम रस ठंडा, अमृत धार सच सुगंधा, प्यार मुहब्बत विच अनन्दा, सच प्रकाश विच चन्दा, बिना बन्दगीउँ बणया धुर दा बन्दा, मंज़ल पौड़ी चढ़या डण्डा, मेल होया स्वामी संदा, संग सगला आप बणाईआ। रावी किनारा, अर्जन भठयारा, शब्दी सहारा, सुरती दवारा, साची कारा, मद्दगारा, परम पुरख परमात्म दया कमाईआ। रावी दे कोल, शब्द अगम्मी बोल, प्रेम प्रीती ढोल, चरण प्रीती घोल, सच दवारा खोल्ह, तोलया पूरा तोल, कंडा नाम तराज़ू आपणा हथ्थ उठाईआ। रावी दे नेड़े, वसदे खेड़े, चुक्क गए झेड़े, चढ़ गए बेड़े, हो गए मेरे, लग्गी ना देरे, आ गए घेरे, चार कुण्ट सिँघ शेरे, लेखा मुके अण्डज जेरे, ज़ाहर हो के बाहर हो के हरिजन लए तराईआ। रावी दे पिच्छे अग्गे, गुरमुख दीपक जोती जगे, ठंडी पवण अगम्मी वगे, नूर नुरानी मस्तक दगे, आत्म परमात्म आवण मजे, भगत भगवान मिल के सजे, सच मुहब्बत अंदर बद्धे, विछोड़ा अग्गे होवे ना कदे, जन्म जन्म ना होवण दगे, सरन तक्की शब्दी शेर बग्गे, लाज रखी चिट्टी पग्गे, नाम खुमारी देवे मधे, हुक्मे अंदर गुरमुख रहिण बज्झे, सच दवारे निरगुण धार सद्दे,

सदा सुनेहड़ा आपणा नाम सुणाईआ। रावी दा आर पार, पुरख अकाल दा खेल न्यार, भगत भगवान दा सच प्यार, बालू थल दए अधार, कृपालू हो के सिरजणहार, सन्त सुहेले वेखे आण, गुरमुख गुर गुर कर परवान, देवे नाम पदार्थ दान, भण्डारा खा के इक पकवान, चरण धूढ़ कराए इश्नान, मीज़ान विच गुरमुख थोड़े नज़री आईआ। रावी दे पिच्छे अग्गे, अगला हुक्म जणाईआ। दीवे बुझणे जगे, जागरत जोत खेल खिलाईआ। सारे फिरन भज्जे, भज्जण वाहो दाहीआ। पुरख अकाल किसे नूं ना लभ्भे, नेत्र रोवण मारन धाईंआ। जिन्हां दे अंदर प्रेम डोरी बद्धे, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। सोहँ गावण छन्दे, ढोला शहिनशाहीआ। गुरमुख गुरसिख कलयुग दी अन्तिम चढ़न जंझे, लाड़े सोहणे नज़री आईआ। पार कराउणा बिन मुहाणे वञ्झे, बेड़ा अद्धविचकार ना कोए डुबाईआ। जेहड़ा कौल इकरार कीता कृष्न नाल संजे, बिन अक्खां अक्ख दयां खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्मे अंदर गुरमुख गुरसिख बन्ने, बन्धन आपणा आप पाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड मम्मीआं ज़िला गुरदास पुर ✪

५७७
१६

रावी दी रेत, किणका किणका रही जणाईआ। दिलबर दा भेत, दिलदार हो के आप खुल्हाईआ। प्रेम दा खेत, फुलवाड़ी इक महकाईआ। महीना होया चेत, रुत्त बसन्ती सोभा पाईआ। दर्शन कीता नेत नेत, निज घर वज्जी सच वधाईआ। परम पुरख मिल्या खेवट खेट, नईआ नौका पार लँघाईआ। सचखण्ड लै के जाए धुर दे देस, जित्थे बह के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रावी कन्ढ्ढ्डे आर पार जल धार सोहणी लहर, पवण झकोलयां विच समाईआ। इक्को राग तर्ज़ इक्को बहिर, इक्को ढोला रही गाईआ। कलयुग काया कपड़ होणा कहर, भाणा सके ना कोए मिटाईआ। वसणा नहीं कोई मेरे उत्ते शहर, वसदयां ढेरी दयां बणाईआ। एह वी परम पुरख दी मेहर, जो हुक्में हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कर वखाईआ। रावी दी धार पाणी दा शोर, जल थल दोवें रूप बदलाईआ। पुरख अकाल दा खेल होर, गुर अवतार पैगम्बर रहे लोड़, जोड़ दोवें सीस झुकाईआ। कलयुग जीव मन वासना होए ढोर, ममता मोह बणाया चोर, जगत अन्ध होया घनघोर, गोर विच परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेल रिहा वरताईआ। पाणी पवित, गुरमुख मित, हरिजन हित, सतिगुर दर्शन नित्त, अबिनाशी करता वसे चित, चेतन सुरती आप कराईआ। जल दा वहण, गुर

अवतार पैगम्बर कहिण, भगत सुहेला तक्के नैण, नाम निधाना लए रसैण, दर्शन पाए हूब हू ऐन, निरगुण निरवैर निरँकार आपणी दया कमाईआ। भगती दी धार, पृथ्मी पुकार पवण दी हाहाकार, आकाश दी गिरयाज़ार, ब्रह्मण्डां खण्डां कोई ना देवे सहार, सहायक नायक एकँकार, इक्को अकल कलधारी जन भगतां बण वापारी, प्रेम प्रीती खरीदे थाउँ थाँईंआ। रावी दा हासा, जगत तमाशा, उलटे पासा, भगतां भरवासा, कूड़ी खाहिशा, लेखा रविदासा, बटवारे दा साथा, बाल्मीक दा आखा, अर्जन दा साका, गोबिन्द दा वाका, पुरख अकाल खोल्ह के ताका, तकदीर दा मालक तदबीर आपणी इक बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कल हो समराथा, सामराजी वेखे थाउँ थाँईंआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ लखा सिँघ दे गृह पिण्ड ओगरा ज़िला गुरदास पुर ✪

रावी दे उरे, गुरमुख प्रीती जुड़े, सच भण्डार कदे ना रुड़े, शौह दरया मूल ना रुढ़े, रंग अगम्म चढ़े गूढ़े, चरण प्रीती मिले धूढ़े, चतुर सुघड़ बण मूर्ख मूढ़े, चिन्ता रोग सोग जाण वसूरे, पुरख अकाल नज़री आए हाजर हजूरे, जन्म कर्म दे कारज करे पूरे, अधूरे गुरमुख जगत ना कोए वखाईआ। रावी तों उरी, कन्ढी दा कन्ढा आप सुहाईआ। भगतां दी पुरी, गुरमुखां वधाईआ। होए ना कूड़ी, जगत कुटम्ब तराईआ। मुहब्बत विच जुड़ी, नाता रही बंधाईआ। सृष्टी नाल होणी बुरी, बुरयाई नाल लड़ाईआ। शरअ चलणी छुरी, शायद कोई बचया नज़री आईआ। जन भगतां प्रभ सेवा कदे ना खुरी, लूण डली ना रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रावी दे पिच्छे, पश्चाताप मुकाईआ। जो सोहँ ढोला सिखे, सिख सतिगुर लए बणाईआ। नाम निधाना देवे हिसे, वस्त अमोलक आप वरताईआ। घर स्वामी ठाकर दिसे, निज गृह होवे रुशनाईआ। गुरमुख उधारे जित्थे जित्थे, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी करे हिते, प्रेम प्रीती विच वड्याईआ। अगले लेख आपे लिखे, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। रावी कहे मेरे उरार, बहु कुछ नज़री आइंदा। बाल्मीक दी धार, कन्ढी दा कन्ढा कन्ढे विच्चों रस चुआइंदा। नाम दा जैकार, शब्द श्रृंगार सोभा पाइंदा। भगतां दा उधार, पुरख अकाल आप अखवाइंदा। कल दा अवतार, कल्की नाउँ प्रगटाइंदा। अस्व दा अस्वार, घोड़ा शब्दी आप दौड़ाइंदा। सन्त सुहेले लए उठाल, गुरमुख गुर गुर गोद टिकाइंदा। सति सतिवादी हो दयाल, दीन दयाल अंग लगाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करे संभाल, सम्बल दा वासी पुरख अबिनाशी घाटी मंज़ल राह औझड़ पार कराइंदा।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ देवराज दे गृह भीम पुरा ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत कहे प्रभ वेख कलयुग कूड़ कुड़यार, चार वरन अठारां बरन धुर दा मीत नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हाहाकार, चार कुण्ट दहि दिशा दए दुहाईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी गई हार, धुर दा इष्ट एकँकार ना कोए मनाईआ। जूठ झूठ माया ममता हउमे गढ़ बणया हँकार, सति सच हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर हो सहाईआ। जन भगत कहे प्रभ वेख आपणा लोकमात, कलयुग अन्त ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं दिसे अन्धेरी रात, निरगुण नूर साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म मिल के करे कोए ना बात, जगत विद्या पढ़ पढ़ मन ममता होई हल्काईआ। निज मन्दिर काया अंदर अगम्मी सुणे कोए ना गाथ, अनहद नादी धुन ना कोए शनवाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। वस्त अमोलक सच पदार्थ तेरा नाम देवे कोई ना दात, माया ममता मोह होई हल्काईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, अधवाटे बैठी सर्ब लोकाईआ। दुरमति मैल सके कोए ना काट, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी धुर दा संग ना बणया कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाह तेरी सिफ्त सालाह सारे रहे गाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शब्द संदेसा भविख्तां विच जो गए आख, नाम निधान श्री भगवान मेहरवान मेहर झोली ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख ख़लक ख़ुदाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख लोकमात आपणा जगत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरा करे कोई ना दरस, दृष्ट इष्ट विच तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे लग्गी हिरस, हवस सके ना कोए मिटाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले थोड़े रहे तरस, जो दिवस रैण अठ्ठे पहर बिन नेत्र निज नैण तेरा राह तकाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाते कर तरस, महबूब मुहब्बत विच आपणा फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुका उपर फर्श, अर्शी प्रीतम आसा भगतां पूर कराईआ। दीन दुखियां वण्ड दर्द, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणी गोद उठाईआ। सच बेनन्ती सुण अरज़, डण्डौत बन्दना नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत उधारना तेरा फर्ज़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा राह तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख अन्धेरा गर्द, सति सच बैठा मुख छुपाईआ। शरअ छुरी मारी जाए सब नूं करद, हक हकीकत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के वेख दर, गृह मन्दिर परदा आप उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग अन्तिम वेख मार झाकी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ।

परवरदिगार सांझे यार मुकामे हक खोल्ह ताकी, तख्त निवासी शाहो शाबाशी आपणी दया कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त भगतां बण साथी, सन्त सुहेले सूफ़ी फ़कीर बैठे राह तकाईआ। निज आत्म काया मन्दिर अंदर निरगुण जोत कर प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को रंग रंगाईआ। मन चिंदया रहे ना कोए उदासी, संसा रोग ना कोए सताईआ। लख चुरासी कट जा फाँसी, आवण जावण पतित पावण अगला गेड़ कटाईआ। नित नवित निरगुण सरगुण जन भगतां मन्नदा रहें आखी, अक्खर आपणा दे पढ़ाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाह बेनज़ीर नज़र आपणी लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख कलयुग अन्तिम वेला, वेला वक्त दए गवाहीआ। साचा दिसे ना कोए गुरू गुर चेला, चेला गुर इक रंग ना कोए समाईआ। दरगाह साची बणे ना कोए सज्जण सुहेला, सचखण्ड दवारे सहिजे सहिज ना कोए पुचाईआ। शब्दी धार करे कोई ना मेला, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। तूं समरथ महिमा अकथ जन भगतां मिलदा रिहा इकेला, एकँकार नेहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के वेख वखाईआ।

५८० १६ जन भगत कहिण प्रभ लोकमात आ, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के बण मलाह, नईआ ५८० १६

नौका नाम इक चलाईआ। सच दुआर दी देणी हक सलाह, लाशरीक शरक्त अंदरों देणी कढाहीआ। मेहरवान महबूब कोटन कोटि बख्श गुनाह, गहर गम्भीर आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरे दवारे दरवेश हो के इक अलख रहे जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। बिन दीवे बाती कमलापाती होवे रुशना, दिवस रैण इक्को रंग समाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना बूँद स्वांती दे चुआ, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। निज नेत्र लोचन नैण दरस दीद ईद दरसा, परदा ओहला दे उठाईआ। रहमत कर परवरदिगार ऐ खुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया वेख जहालत, चार कुण्ट सच सुच नज़र कोए ना आईआ। धुर दरगाही बेपरवाही हकीकत विच करे ना कोए हक अदालत, जूठ झूठ चार वरन अठारां बरन करी कुड़माईआ सच सरूप दिसे ना कोए सही सलामत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर होई हल्काईआ। कलयुग अन्त अख़ीर सच दवारे देवे ना कोए ज़मानत, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले गुरमुख वर, दूर दुराडे नेरन नेरा फेरा पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ काया मन्दिर चढ़ जा उपर चोटी, चोट शब्द नगारे दे लगाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। मन वासना रहे ना खोटी, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं आदि

जुगादी गोती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नाम इशारे सुरत उठा सोती, आलस निंद्रा दे गवाईआ। गल लगा कमली कोझी, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। बिन तेरी किरपा श्री भगवन्त किसे ना आवे सोझी, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जगत वासना सारे होए रोगी, हँ ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। विछोड़े विच बण विजोगी, धुर संजोगी मेल ना कोए कराईआ। तेरी धार निरगुण सरगुण वेदी सोढी, सो पुरख निरँजण लेखा लहिणा देणा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा लाह लोक परलोकी, सलोक इक्को दे जणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दस्स अगम्मा सलोक, निरअक्खर विच्चों अक्खर दे समझाईआ। जिस दे नाल आत्म परमात्म मिले मौज, मजलस तेरे विच समाईआ। सच दवारे कर खोज, परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। निरगुण धार तेरा दर्शन होवे रोज़, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंज़ील कुरान खाणी बाणी करना पए कोई ना बोध, सिमरन पूजा जोग अभ्यास तत साधन दी लोड़ रहे ना राईआ। मन मति बुद्धी दी रहे कोई ना सोच, अनुभव परदा दे उठाईआ। बिन अक्खां पैंडा मुक्क जाए चौदां लोक, ज़िमीं असमानां परे आपणा डेरा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग अन्तिम वेख हरि, भगत सुहेले मंगण वर, दीन दयाल दयावान जोती जाते पुरख बिधाते वस्त अनमोल गुरमुखां झोली देणी पाईआ।

५८१
१६

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ लाल सिँघ दे गृह गुजरात ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरा धुर दा ज़ामन, करता अबिनाशी इक अखवाइंदा। बिन हथ्थां पकड़े दामन, दामनगीर पल्लू गंढु पुआइंदा। जगत अन्धेरा मेटे शामन, शाम हो के शमॄां आप जगाइंदा। मेला मिल्या रहे अगम्मी रामन, राम हो के रहबर दया कमाइंदा। जणाउँदा रहे धुर दा नामन, नाम निधाना झोली पाइंदा। वखाउँदा रहे सच्चा आरामन, सिँघासण आसण इक वड्याइंदा। जणाउँदा रहे धुर पैग़ामन, धुर दा धर्म इक दसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वड्याइंदा। जन भगत तेरा डाहढा ज़ोर, ज़ोरावर दए बणाईआ। आत्म परमात्म बज्झी रहे डोर, जगत जहान सके ना कोए तुड़ाईआ। झगड़ा मुक्कया रहे पंज चोर, ममता मोह ना कोए सताईआ। मन्दिर लभ्भणा पए ना कोई होर, घट दवारे वज्जे वधाईआ। मनूआं मन ना पावे शोर, छोहरा बांका शब्दी आपणी लए अंगड़ाईआ। सदा सदा सद रखे तेरी लोड़, अबिनाशी करता ध्यान लगाईआ। समें समें लए जोड़, मेला करे सहिज सुभाईआ। अन्त काल कलयुग इकल्ला कदे ना जावे छोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छुटकी लिव आप लगाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी महंती दे गृह पिण्ड गुजरात ज़िला गुरदासपुर ✪

जन भगत वेखो सचखण्ड, धर्म दवारा इक्को सोभा पाइंदा। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाइंदा। ना कोई ढोला गीत गावे छन्द, रागां ताल ना कोए अलाइंदा। ना कोई दर दरवेश भिख्या रिहा मंग, जगत अलख ना कोए जगाइंदा। ना कोई मन वासना दिसे अनन्द, बुद्धी बिबेक ना कोए बणाइंदा। ना कोई तीर्थ तटां वाला पन्ध, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ ना कोए प्रगटाइंदा। ना कोई अमृत धार दिसे गंग, जल वहण ना कोए वहाइंदा। ना कोई साक सज्जण सैण होवे संग, नार कन्त सेज ना कोए हंढाइंदा। ना कोई पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास मिलण दा ढंग, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चा टिल्ला पर्बत नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई आवण जावण लख चुरासी पावे फंद, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। ना कोई धरनी धरत धवल दिसे वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ नाच ना कोए नचाइंदा। ना कोई क्रिया जूठ झूठ ममता दिसे गंद, सुगंध धार ना कोए बणाइंदा। ना कोई सेज सुहञ्जणी दिसे पलँघ, जगत आसण ना कोए विछाइंदा। ना कोई दूई द्वैत भरमां दिसे कंध, भाण्डा भरम ना कोए वड्याइंदा। इक इकल्ला एकँकारा बैठा सूरा सरबंग, जोती जाता पुरख बिधाता नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। जन भगतां कोलों सच प्रीती प्रेम प्यार मुहब्बत रिहा मंग, दूजी आस ना कोए वखाइंदा। इक्को नाम संदेसा देवे सोहँ ढोला सुणाए छन्द, निरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वखाइंदा। जन भगत वेख प्रभू दा देस, परदेसी हो के फेरा पाईआ। जित्थे वसे इक नरेश, नर नरायण डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी देवे संदेश, धुर फ़रमाने हुक्म सुणाईआ। चरण झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, देवत सुर बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे हेत, चरण धूढ़ी खाक रमाईआ। शब्दी गुर पुछदे भेत, परदा ओहला रिहा उठाईआ। सन्त सुहेले तक्कदे नेत नेत, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां रुत बदल के चेत, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। शब्दी धार अगम्मी लिखे लेख, लिख्त भविख्त नाल वड्याईआ। जिन्नां पहलों ल्या भेज, अन्तिम सहिज ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्रीती अंदर लए पेख, रेख पिछली दए बदलाईआ।

५८२
१६

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ कौशलया देवी दे गृह पिण्ड गुजरात ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत साची प्रभ दी प्रीत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोकमात बणी आईआ। आत्म परमात्म साहिब सुहेला इक्को वसे चीत, चेतन सुरती अंदरों दए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सदा गाउँदे रहिणा गीत, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी मनाईआ। काया माटी तन वजूद होवे ठांडा सीत, अग्नी तत मोह विकार ना कोए सताईआ। साचा कलमा धुर दा नग़मा सुणदे रहिण हदीस, हज़रत हो के हरि जू करे पढ़ाईआ। मन मनुआ निज गृह बदल जावे नीत, बुध बिबेक साची टेक दए समझाईआ। झगड़ा मुक जाए ऊँच नीच, राउ रंक हस्त कीट ज़ात पात वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश अबिनाशी करता सब दा मीत, द्वैत भावना विच कदे ना आईआ। सदा छत्र झुलदा रहे जिस दे सीस, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे निरगुण जोत सोभा पाईआ। नाम भण्डारा हरि निरँकारा नित नवित भगतां करदा रहे बख्शीश, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। जन भगत प्रभू दा सच्चा प्यार, बिन किरपा हथ्थ किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल अगम्म अपार, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सन्त सुहेले लए उठाल, गुर चेले रंग रंगाइंदा। दीआ बाती कमलापाती काया मन्दिर अंदर देवे बाल, आदि निरँजण जोत निरँजण डगमगाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक वड्याइंदा। जिस गृह मिले दीन दयाल, सो मन्दिर सोभावन्त अखवाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दिवस रैण चले नाल, मन नालिश मेट मिटाइंदा। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को दर वखाइंदा। जन भगतां जुग जुग सुरत रिहा संभाल, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाइंदा। निरवैर हो के बणदा रिहा दलाल, निरँकार हो के आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे विच समाइंदा। जन भगत आदि जुगादी प्रभ दा सच्चा नाता, दो जहान ना कोए तुड़ाईआ। मार्ग दस्से धुर दा साचा, मंज़ल मंज़ल राह विच ना कोए अटकाईआ। आत्म परमात्म दस्से गाथा, धुर दी करे सच पढ़ाईआ। जोती दा बण के जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। अन्तर मेट अन्धेरी राता, निरंतर नूर करे रुशनाईआ। गृह मन्दिर वखाए साचा, दर घर ठांडे वज्जे वधाईआ। जिस गृह भगतां बणे राखा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्यावणहारा अमृत बाटा, आबेहयात बूँद स्वांती मुख चुआईआ। सुहावणहारा आत्म सुहञ्जणी सेज खाटा, बिस्तर ना कोए टिकाईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म लख चुरासी आवण जावण मेटणहारा वाटा, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। अन्तिम मेल मिलाए पुरख समराथा, समरथ

आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वखाए इक घर, जित्थे अवर ना कोए साका, सज्जण साहिब सतिगुर इक्को नज़री आईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ कंस राज दे गृह पिण्ड गुजरात ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत निरगुण धार वेख प्रभ चरण, कँवल मिले सरनाईआ। दो जहानां बख्शे सरन, सरनगति इक्को इक समझाईआ। साची मंज़ल होवे चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धुर दा ढोला पैणा पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। झगड़ा चुक्क जाए ज़ात पात वरन बरन, हिंसा वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग अग्नी अग्ग ना पवे सड़न, अन्तर आत्म मेघ बरसाईआ। मरन विच्चों मिले मरन, जीवण विच्चों जीवण दए बदलाईआ। निज नेत्र खुल्ला रहे हरन फरन, दर्शन देवे चाँईं चाँईंआ। करनी दा करता आप हारकरन, करता पुरख बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले जुग जुग आवे फड़न, भगत भगवन्त विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लए मिलाईआ। जन भगत वेख प्रभू दा नूर, निरगुण जोत डगमगाईआ। सर्ब कला भरपूर, खाली भण्डारे दए भराईआ। जन भगतां मिले ज़रूर, नित नवित वेस वटाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सति सच इक समझाईआ। लेखे ला के मूर्ख मूढ़, मुग्धां दए वड्याईआ। बेड़े चाढ़ के आपणे पूर, जगत जहान पार कराईआ। साचे नाम दा दे सरूर, सुखसागर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखावे इक घर, परम पुरख आत्म परमात्म भगत भगवान दर दवारा इक्को इक सुहाईआ।

✪ २५ चेत शहिनशाही सम्मत २ जीत सिंघ दे गृह पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत कहे मैं गया जाग, पुरख अबिनाशी घट घट वासी दया कमाईआ। मेरे अन्तर उपज्या इक वैराग, वैरी दुश्मण अंदरों दिते कढाहीआ। बिन नग़मे सुणी आवाज़, बिन गीत संगीत वज्जे वधाईआ। बिन तेल बाती होए प्रकाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वसे पास, सदा सुहेला शहिनशाहीआ। काया मन्दिर अंदर पावे धुर दी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन रूप वटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कटदा फिरे बनबास, सीता सुरती राम राम दुहाईआ। पूरब जन्म कराउँदा फिरे याद, लेखा लहिणा लहिणे विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा खेड़ा कर आबाद, गुलशन इक्को इक महकाईआ।

जित्थे दिसे कोई ना दाग़, पतित पुनीत रिहा बणाईआ। गुरमुख हँस बणा के काग, कागों हँस रिहा उडाईआ। मेल मिला के कन्त सुहाग, विछोड़ा जगत रिहा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, जिस घर वजदी रहे वधाईआ। जन भगत तक्क इक महबूब, जो मुहब्बत विच समाईआ। अर्श कुर्श तों उच्चा जिस दा अरूज, आलीशान बैठा डेरा लाईआ। जिस दी हक मंज़ल मकसूद, हक मुकाम डेरा लाईआ। जिस दीआं सिफ्तां करे हज़ारा दरूद, अल्फ़ ये नाल वड्याईआ। जिस दी कोई समझ ना सके हदूद, आर पार ना कोए समझाईआ। जगत तत ना कोए वजूद, वसल सब नूं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत बिन अक्खां वेख श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब तों वक्खरा ज्ञान, निरवैर निराकार निरँकार आपणी सूझ दए समझाईआ। नित्त नवित निरगुण सरगुण खेले खेल जहान, जुग चौकड़ी हुक्मे हुक्म आप सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त काया मन्दिर अंदर वेखे आण, परदा ओहला माटी चोला रहिण कोए ना पाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी आपणी खेल दए वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा आया कल्याण, कायनात दीन दुनी वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप हो प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म सुणाईआ। नाम पदार्थ वस्त अमोलक काया गोलक देवणहारा दान, बिन हथ्थां जन भगतां झोली दए भराईआ। सृष्टी दा मालक दृष्टी दा ख़ालक इष्टी दा प्रितपालक विशेष नरेश हमेश, हरिजन हमसाजण लए बणाईआ। जिस दे अग्गे आदि जुगादि एथे ओथे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल चले कोए ना पेश, पेशवा पेशतर संदेशे गए सुणाईआ। जो साहिब स्वामी अन्तरजामी सदा सुहेला रहे हमेश, सचखण्ड दुआर एकँकार इक इकल्ला सच महल्ला आप वसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयांविच बणे दरवेश, विष्न ब्रह्मा शिव नमो कह के सीस निवाईआ। जो पुरख अकाला दीन दयाला सुहावणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाला कलयुग अन्त सुनेहड़ा देवे इक संदेश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुर दी धार आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घट भीतर गृह मन्दिर हर घट लए वेख, पेखत पेख दया कमाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ गुरचरण सिँघ दे गृह पिण्ड कतोवाल ज़िला गुरदास पुर ✪

साहिब सतिगुर सदा बन्ने बेड़ा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां दया कमाइंदा। चरण कँवल सच सरनाई आए जेहड़ा, आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी फंद कटाइंदा। भाग लगावे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ खेड़ा, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी नज़री आए नेरन नेरा, दो जहानां वाली दूरन दूर पन्ध मुकाइंदा। कूड़ी क्रिया मन वासना रहिण ना देवे अन्धेरा, निरगुण जोत सति प्रकाश गृह मन्दिर अंदर आप कराइंदा। भेव खुल्हाए दया कमाए सच बुझाए तेरा मेरा, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। जन भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। नित नवित नाम निधाना देवे धुर दा धन, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। लोकमात सति सरूपी सन्त सुहेले चाढ़े चन्न, प्रकाश विच्चों आपणा प्रकाश प्रगटाईआ। मनसा कूड़ी रहिण ना देवे मनुआ मन, ममता मोह दए गवाईआ। भेव खुल्हा के अन्तर आत्म ब्रह्म हँ, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए उठाईआ। जन भगतां बेड़ा बन्ने पुरख अकाल, दीन दुनी दा मालक दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारा वखाए सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आइंदा। दीवा बाती कमलापाती जोत अगम्मी देवे बाल, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी सुणाए आपणा ताल, भेव अभेदा अछल अछेदा परदा ओहला आप चुकाइंदा। पूरब जन्म जो सन्त सुहेले घालण आए घाल, कीती घाल सब दी झोली पाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे आपणे लाल, पूत सपूते आपणी गोद उठाइंदा। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण चले नाल, चाल निराली भगतां आप जणाइंदा। जिस नूं चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी अंदर करे भाल, खोजयां हथ्थ किसे ना आइंदा। उह पुरख बिधाता लेखे लाए शाह कंगाल, गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत सुहेले मेल मिलाइंदा। शब्द सरूपी बिन रंग रूपी बणया मात दलाल, नाम वचोला इक्को इक खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा राह वखाइंदा। जन भगतां बेड़ा बन्ने पहले पूर, पूरन गुर हथ्थ वड्याईआ। कोट जन्म दे मुआफ कर कसूर, दुरमति मैल दए धवाईआ। आपणे नाम दा दे सरूर, शब्द खुमारी इक रखाईआ। जोती जलवा कर नूर, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जिधर तक्कण ओधर हाज़र हज़ूर, सनमुख हो के सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे गरूर, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सच बेनन्ती दरे दरबार करे मन्ज़ूर, मेहरवान मेहर नज़र नाल तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा पार करे ज़रूर, मँझधार

अद्धविचकार शौह दरया जगत वहण ना कोए डुबाईआ। जन भगतां बेड़ा लाए आपणे पतण, खेवट खेटा दया कमाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सन्त सुहेले आया रखण, गुर चेले मेल मिलाईआ। भगत भगवान मिल के इक्को मन्दिर वसण, दूजा दर ना कोए बणाईआ। खुशीआं अंदर गीत गा के हस्सण, सोहँ राग अल्ाईआ। मुड़ के जाणा आपणे ओस वतन, जिस विच्चों होई मात जुदाईआ। साहिब सतिगुर पत आया रखण, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी जीव जंत अनक बिधी करदे यतन, हरि का दरस कोए ना पाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले सहिज सुभाउ पतिपरमेश्वर तक्कण, तकवा इक्को उपर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। जन भगतां बेड़ा बन्ने देवे ला, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। परम पुरख परमात्म बणे मलाह, नईआ नौका आपणा नाम वखाईआ। सन्त सुहेले लए चढ़ा, सति सतिवादी हो सहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जिन्हां नूं परम पुरख परमात्म मिल गया शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। उह वसण साचे थाँ, सचखण्ड दवारे साचे डेरा लाईआ। जित्थे ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई साक सैण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, जिस गृह जन भगतां मिल के खुशी मनाईआ। जन भगत तेरा बेड़ा पार कन्ढे, कन्ढीवाला पार लँघाईआ। मंज़ल चाढ़े ओस डण्डे, जिस नूं डडौत कह के सारे सीस निवाईआ। बिना भुजां तों चुक्के निरगुण निरगुण कंधे, दो जहानां पैंडा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे धन्दे, धर्म दुआर इक्को इक वखाईआ। जित्थे भगत सुहेले सुहंदे, स्वामी मिल के खुशी मनाईआ। चरण कँवल सरनाई साची ढहिंदे, बिन धूढ़ी मस्तक टिक्के ख़ाक रहे लगाईआ। तूं ही तूं बिन रसना जिह्वा कैहिंदे, गीत अगम्मी इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार धुर वड्याईआ। जन भगतो बेड़े दा करे कोई ना शंका, संसा अंदरों दए कढाहीआ। तुसां वसणा ओस दवारे बंका, जित्थे बैठा बेपरवाहीआ। माण वड्याई देंदा साचे सन्ता, भगत सुहेले गोद उठाईआ। गढ़ रहे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। झगड़ा चुक जाए विद्या वालयां पंडतां, सोहँ ढोला सच सुणाईआ। गुरमुखो तुहानूं किसे दी करनी पए ना मिन्नता दीन दुनी तों पल्ला देणा छुडाईआ। सचखण्ड दुआर तुहाडी सिधी सिम्मता, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। प्रभू कदी ना होवे हराम निमका, जन भगतां खा के एहसान ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा पार करे जित्थे जगत मलाह कोए ना मिलदा, वहणां गहणां नैणां तों परे पारब्रह्म आपणे घर वसाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ जसवंत सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत रहे ना औखी घाटी, आवण जावण लेखा दए मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना अन्धेरी राती, नाम निधाना साचा चन्द चमकाईआ। दीन मज़्हब झगड़ा रहे ना जात पाती, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा रंग दए रंगाईआ। नाम प्याला जाम देवे बण के धुर दा साकी, रस खुमारी इक्को इक चढ़ाईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत अंदर देवे सच्ची दाती, दाता दयावान आपणी दया कमाईआ। निज गृह निज मन्दिर साचे घर निरगुण धार करे वासी, पुरख अबिनाशी सच दवारा इक सुहाईआ। अमृत बूँद अगम्म प्याए स्वांती, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। एथे ओथे दो जहानां जन भगतां बणया रहे धुर दा साथी, निरगुण निरवैर सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि लेखे लाईआ। जन भगतां लेखा रहे ना मातलोक, जूनी जून ना कोए भवाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नर नरायण आत्म परमात्म दस्से इक सलोक, सोहँ ढोला सच सुणाईआ। घट भीतर गृह मन्दिर होवे प्रकाश जोत, निर्मल नूर डगमगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ करनी ना पए खोज, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरदुआर ना कोए भवाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता संसा मेटे चिन्ता सोग, हरख हवस ना कोए वधाईआ। चरण प्रीती धुर दी रीती मिले धुर दा जोग, जोगीशर ऋषीशर मुनीशर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। भाग लग्गे काया माटी साचे कोट, किला बंक दुआर इक सुहाईआ। शब्द नाद वज्जदी रहे चोट, सोई सवाणी सुरती शब्द हाणी आप उठाईआ। भगत भगवान आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरगुण मिल के मानण मौज, सरगुण लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। जन भगत सदा मिलदा रहे ओस, जो एक एकँकारा आपणा नाउँ धराईआ। निज घर सद वस्या रहे पड़ोस, मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। नाम खुमारी अंदर रखे सदा मदहोश, जगत प्याला मधर ना कोए प्याईआ। बुद्धी तों परे शब्दी धार दस्से सोच, जगत विद्या लोड़ रहे ना राईआ। जिस मंज़ल जिज्ञासू जीव ना सके पहुंच, जन भगत सुहेले सहिजे बैठे डेरा लाईआ। झगड़ा मुक गया चौदां लोक, चौदां तबक ओट ना कोए रखाईआ। इक्को ढोला गीत गाउँदे तूं मेरा मैं तेरा सलोक, सोहला साहिब स्वामी अन्तर आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता कट रोग, सच सुच्च संजम विच गए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए धुर दा घर, सचखण्ड दवारा एकँकारा निरगुण धारा जोती जाता जागरत जोत करे रुशनाईआ। जन भगत तेरा दवारा धुर दा इक, अबिनाशी करते दिता बणाईआ। बिना कलम शाही लेख दिता

लिख, एथे ओथे दो जहान सके ना कोए मिटाईआ। नाम पदार्थ अगम्मी पाए भिक्ख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। सच दवारे जो बणया सिख शिश, सिध्धा आपणे नाल मिलाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी पूरी करे पूरब इच्छ, इच्छया अंदर आसा दए भराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साख्यात निज महल अटल पए दिस, दहि दिशा लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां संग आदि जुगादि सदा करे हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। लोकमात आउँदा रहे नवित, जोती जाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवान देवे जीआ दान, जीवण जुगता मुफ्त दरुसत दीन दयाल दए समझाईआ।

५८६
१६

५८६
१६

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी ज्ञानो दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां प्रभ आप बणदा, बन्धनां विच्चों दए कढाहीआ। गुरमुख सुहेले शब्दी धारों जणदा, आदि जुगादी बणे धन्न जणेंदी माईआ। लहिणा देणा चुकाए पंज तत ख़ाकी माटी तन दा, वजूद महबूब करे सफ़ाईआ। झगड़ा मेट के अंदरों मन दा, पतित पुनीत दए बणाईआ। इक्को नाम अक्खर देवे धन्न धन्न धन्न दा, खुशीआं विच खुशी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ओनां दे बेड़े बन्नदा, जो पूरब जन्म विछड़े राह तकाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ बीबी दुरगी दे गृह नवां पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

भगत सुहेले जुग जुग लभ्भदा, लावारस रहिण कोए ना पाईआ। मेला करे आपणे सबब दा, सहिज सुभाउ लए उठाईआ। हुक्में अंदर शब्दी धार सद्दा, सुनेहड़ा इक जणाईआ। कूड़ा नाता समझो जग दा, बिना श्री भगवान लेखा ना कोए मुकाईआ। मन विकार अंदर सड़ना अग्ग दा, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। जो साहिब सतिगुर सरनाई लगदा, सो मंज़ल चढ़ के सोभा पाईआ। जित्थे नाउँ निरँकारा डंका वज्जदा, दूजा राग ना कोए अलाईआ। झगड़ा मुक्के जगत जहान कूड़ी हद्द दा, दीन दुनी ना कोए लड़ाईआ। दर्शन होवे इक्को सूरे सरबग दा, सर्ब व्यापी नज़री आईआ। विछोड़ा रहे ना अग्ग अलग्ग दा, पिछला पन्ध दए मुकाईआ। प्यार बणया रहे सचे जस दा, मुहब्बत विच ढोला गाईआ। इशारा मिल जाए ओस अक्ख दा, जो आखर इक्को घर टिकाईआ। जुग जुग जन भगतां पैज आपे रख दा, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा मुका के जगत रूप कग्ग दा, हँस गुरमुख आप प्रगटाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ तेजकौर दे गृह पिण्ड नवां पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां प्रभ सदा संग, आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दा संग निभाइंदा। आत्म परमात्म चाढ़े अगम्मी रंग, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। नाम निधान श्री भगवान वजाए आपणा मृदंग, धुन आत्मक राग अनरागी आप सुणाइंदा। जगत दवारा वेखे पार लँघ, घर विच घर गृह विच गृह आप वड्याइंदा। जित्थे नाउँ निरंकरा वज्जे मृदंग, सुर ताल रूप ना कोए बदलाइंदा। होवे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जाता डगमगाइंदा। साचा अमृत देवे निजानंद, रस उमंग बेपरवाह आपणा भेव खुल्हाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा ढोला दस्से के छन्द, सोहँ सति सरूप आप समझाइंदा। परदा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणे विच मिलाइंदा। सन्त सुहेला दूजी वार ना पए जम्म, लख चुरासी गेड़ ना कोए भुवाइंदा। धुर संजोगी मेला होवे नाल श्री भगवन, भगत भगवान इक्को घर सोभा पाइंदा। जित्थे झुल्ले सति सच इक निशान, निशाना अवर ना कोए वखाइंदा। बिन पढ़यां होवे ज्ञान, निरअक्खर धार प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन परदा आप उठाइंदा। हरिजन मिले नाल जगदीश, जगदीश आपणे विच समाईआ। साचा नाम कलमा दस्से हक हदीस, हज़रत हो के करे पढ़ाईआ। अन्तर अन्तर मन वासना बदल देवे रीत, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुक जाए मन्दिर मसीत, काया काअबा दए वखाईआ। जित्थे बैठा सदा अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। लेखा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म दस्से सच प्रीत, परम पुरख प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगतां साची मंज़ल चढ़ के वेखे ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लँघणहारा ओस दहिलीज़, जित्थे जगत वासना रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा जुगत, शब्दी शब्द भेव खुल्हाईआ। सच दवारे चढ़ी रहे सुरत, सुत्यां आलस निंद्रा दए गवाईआ। नज़री आए अकाल मूर्त, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जिस दा नाम अगम्मी साचा तूरत, तुरीआ पद तों आपणा अगला खेल वखाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़त, सन्त सुहेले साचे दर दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नित नवित कर कर हित, पुरख अबिनाशी धुर दा पित, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड नवां पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगतां बख्शे अमृत सीर, धुर दा जाम इक पिलाईआ। मन कल्पणा आवे धीर, धाम राम दए जणाईआ। हउमे रहे ना कोई पीड़, सोग रोग दए गवाईआ। मानस जन्म बन्ने बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सचखण्ड दवारे भगतां दी कोई बहुती नहीं भीड़, कोटां विच्चों थोड़े बैठे सोभा पाईआ। जिन्हां दा उपदेशक इक कबीर, कामल मुर्शद नाल मिलाईआ। दरस करावे बेनज़ीर, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। लहिणा रहे ना कोई तत सरीर, शरअ छुरी ना कोए चलाईआ। जगत खड़ग ना कोए शमशीर, चिल्ला तीर ना कोए उठाईआ। किरपा करे दाता गहर गम्भीर, गुणवन्ता होए सहाईआ। जन भगतां चरण प्रीती दे के धीर, धीरज धरवास इक दृढ़ाईआ। सच दवारे रहे ना कोए ग़रीब, (ग़रीब) अमीर इक्को रंग दए वखाईआ। जो सोहँ ढोला गाए फ़िकरा सो हक फ़कीर, फ़क्कर हो के फ़कत ज़ाती नाता जाए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदरों बदल देवे तासीर, बिन तसबी माला आत्म परमात्म नाम जपाईआ।

५६१
१६

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड नवा पिण्ड ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत तेरी रहे ना गिरिआज़ारी, ग्रिहा गृह वेख वखाईआ। चुरासी कटे जगत बेज़ारी, बेवा नाता दए तुड़ाईआ। किरपा करे अपर अपारी, अपरम्पर होवे आप सहाईआ। आत्म रहिण ना देवे कुँवारी, परमात्म हो के आप प्रनाईआ। चरण कँवल सच प्रीत देवे आधारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत विछुंनयां मेली जाए वारो वारी, वारता पिछली वेख वखाईआ। लेखा जाणे धुरदरबारी, परदा ओहला दए उठाईआ। मेला मिले जोत निरँकारी, निरगुण आपणे विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मालक बण के धुर दरबारी, दरगाह साची साचे धाम धुर दा राम आराम नाल गुरमुख दए टिकाईआ।

✪ २६ चेत शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

जन भगत कहिण प्रभ वेख कल अन्धेरी राती, अन्तर आत्म पारब्रह्म ब्रह्म ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले कहिण पुरख अकाल अमृत मिले ना बूँद स्वांती, चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटाईआ। गुरमुख कहिण दीन दयाल साची देवे वस्त कोए ना दाती, चार वरन अठारां बरन वस्त अमोलक काया गोलक

हक हकीकत झोली कोए ना पाईआ। गुरमुख कहिण साचा जुड़े ना कोए नाती, धरनी धरत धवल साची धारा कोए ना रिहा मवल, पत्त टहणी फुल्ल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। अबिनाशी करते तुध बिन दूजा दिसे ना कोए साथी, गुर अवतार पैगम्बर आपणा लहिणा गए चुकाईआ। नव नौ चार लहिणा रहे कोए ना बाकी, परवरदिगार सांझे यार शाह पातशाह शहिनशाह तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। मनूआं मन विकारी होया आकी, ममता मोह हँकार ना कोए गवाईआ। साचा जाम प्याए कोए ना बण के साकी, मधर प्याले पीवे ख़लक ख़ुदाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जीवण विच्चों जीवण बदले ना कोए हयाती, काया मन्दिर अंदर तेरा रूप सति सरूप सति सतिवादी दरस ना कोए कराईआ। कोटां अरबां वधदी दिसे आबादी, साचा मीत मित्र प्यारा बिन रसना जिह्वा गावणहारा गीत, नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख लोकमात आपणा दर, धुर दरबारी आपणा फेरा पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख कलयुग अन्धेरी रैण, साचा चन्द जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। तेरा दरस करे ना कोई निज लोचण नैण, आत्म परमात्म मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी ढोले सारे कहिण, गा गा थक्की जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अठसठ तीर्थ भज्ज भज्ज नहायण, दुरमति मैल अन्तर भीतर बाहर ना कोए कढाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल्या ना साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण नार पत कोटन कोटि सज्जण जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा मेहर नज़र इक खुल्हाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख कलयुग वेला अन्त अख़ीर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। शरअ कटे ना कोए जंजीर, लाशरीक तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा प्या ग़रीब अमीर, नास्तिक रूप बणी लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दीन मज़्हब दे के गए तरतीब, हुक्म हुक्मे अंदर सुणाईआ। सो खेल निराला हरि निरँकारा वेख अजब अजीब, जिस दी चौदां विद्या सार कोए ना पाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाते तेरे नाम दी देवे कोई ना भीख, गुरदुआर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ नेत्र रोवण मारन धाहींआ। भविख्तां विच लिख्तां विच तेरी रखदे गए सर्ब उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। परवरदिगार सांझे यार कलयुग अन्तिम बदल दे तवारीख, जूठ झूठ कूड़ कुड़यार डेरा ढाहीआ। चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म साची दस्स इक प्रीत, प्रीतम हो के अंदरों परदा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला साचा दस्स गीत, जो गुर अवतार पैगम्बर भगत भगवान मिल के आदि जुगादि जुग चौकड़ी मिल मिल सदा गाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदल दे अंदरों नीत, काया काअबे अंदर कर रुशनाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी नज़री आ इक अतीत, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ।

सदी चौधवीं रही बीत, वातावरन वेख आपणी जगत लोकाईआ। निरगुण हो के सरगुण कर तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्टी दृष्टी वेख घर, निरगुण हो के वेस वटाईआ। जन भगत कहिण प्रभ आ जलदी, लोकमात फेरा पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया अग्ग बलदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कल वरती कलयुग कल दी, कालख मस्तक टिक्के लग्गे शाहीआ। किसे सार ना जल थल दी, महीअल खोज ना कोए खुजाईआ। दीपक जोत कोए ना बलदी, शमां गुल होई लोकाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, भेव अभेदा अछल अछेदा तेरा परदा ना कोए उठाईआ। आत्म परमात्म विच मूल ना रलदी, रसना जेहवा ढोले गा गा खुशी मनाईआ। लहर मुक्के ना अंदरों दूई द्वैती सल दी, तन्द सतार अन्तर आत्म ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख घर, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दीन दुनी दी वेख आदत, अदली हो के फेरा पाईआ। साची करे ना कोए इबादत, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मनूआं घर घर करे बग़ावत, पंज तत करन लड़ाईआ। ममता मोह ना मिटे अलामत, हउमे रोग रिहा सताईआ। गुर अवतार पैगम्बर देवे ना कोए ज़मानत, बरीख़ाना ना कोए वखाईआ। चार वरन अठारां बरन जगत वासना होई जहालत, ज़ाहर ज़हूर तेरा दरस कोए ना पाईआ। दीनां मज़्ह़बां दिसे अदावत, हक इन्साफ़ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी जीव जंत तन माटी ख़ाकी वेख बनावट, घट भीतर खोज खुजाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख आपणी दुनिया दुनिया दे दुनीदार, काअब्यां विच जगत लोकाईआ। जूठ झूठ वध्या हँकार, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ गए हार, आत्म ब्रह्म बोध ना कोए वखाईआ। तेरा शब्द करे ना कोए प्यार, धुन आत्मक अनादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत जल निझर झिरना कोई ना पीवे ठंडा ठार, अठ्ठसठ्ठ तीर्थ सृष्टी दृष्टी होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेख़बर कर ख़बरदार, शब्द संदेसा नर नरेशा एकँकार इक सुणाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साचे भगवन्त, भगवन तेरी ओट रखाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाम संदेसा इक्को दे धुर दा मंत, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर पढ़ के ख़ुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गाथा कहिण अनन्त, ढोले गीत संगीत बिन रागां राग सुणाईआ। तूं बोध अगाधा शब्द अनादा दो जहानां सच्चा पंडत, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर दूजी करें ना कोए पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सन्त सुहेले गुर अवतार पैगम्बर बणा अगम्मी संगत, जिस दे संग रह के आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगत किसे दवारे ना जाए मंगत, खाली

झोली ना कोए वखाईआ। दूजे दर ना कढ्ढे मिन्नत, सीस अवर ना कोए झुकाईआ। मनुआ मन ना करे इल्लत, वासना जगत ना कोए हल्काईआ। सिध्धी दस्स दे आपणी सिम्मत, सिमरन पूजा जोग अभ्यास दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दे दे उह जाप, जिस नूं रसना नाल पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोल्ह दे ताक, परदा ओहला दे उठाईआ। निरगुण निरवैर जोत सरूप नज़रीं आवीं साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप आपणा दरसाईआ। आत्म परमात्म हो के वसीं साथ, सगला संग आप बणाईआ। रूह बुत्त दोवें कर दे पाक, ख़ाकी ख़ाक मिले वड्याईआ। कलयुग अन्धेरी रहिण ना पाए रात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए ज़ात पात, वरन गोत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साची दस्स दे प्रीती चरण नात, चरण कँवल इक सरनाईआ। तूं आदि जुगादी शाहो शाबाश, पुरख अबिनाशी अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगत सुहेले कर दासी दास, सेवक सेवा सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल काती वेख वखाईआ। जन भगत कहिण प्रभू वेख आपणा परदेस, जो लोकमात दिता बणाईआ। जित्थे आवें नित्त नवित कर अवल्लड़ा वेस, पंज तत काया माटी चोला तन हंढाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा रिहों संदेश, निरअक्खर अक्खर विच बदलाईआ। कलम शाही कागज़ लिखाउँदा रिहों लेख, कातब हो के कर्म कमाईआ। जन भगतां अंदर वड़ के दसदा रिहों भेत, परदा ओहला आप उठाईआ। नज़री आउँदा रिहों नेत नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। कलयुग अन्त स्वामी आत्म परमात्म कर हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। अन्त सुहञ्जणा सुहावणा कर महीना चेत, चेतन सुरती भगत कराईआ। सब कुछ तेरे अग्गे अरपन कीता भेंट, आत्म परमात्म तेरी झोली पाईआ। तूं एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण बण खेवट खेट, नईआ नौका आपणी इक चढ़ाईआ। धुर फ़रमान श्री भगवान शब्द अगम्मी दे संदेश, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप दृढ़ाईआ। गृह मन्दिर तेरा तक्कीए महल अटल उच्च मुनार एक, एकँकार जिस घर बैठा निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम फेरा पाईआ। जन भगत कहिण प्रभ किरपा कर धुर मेहरवान, महबूब तेरी इक सरनाईआ। बुद्धी तों परे दे ज्ञान, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा मन्दिर वखा मकान, पौड़ी डण्डा ना कोए चढ़ाईआ। झगड़ा चुक्के ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। बिना अक्खां तों प्रतख नज़री आएं श्री भगवान, स्वच्छ आपणी कार कमाईआ। बिन तेरी किरपा लोकमात किसे ना होवे कल्याण, कलमयां वाले काअबे देण दुहाईआ। तूं परवरदिगार सांझा यार मालक हक मकान, साढे तिन्न हथ्थ समरथ तेरी धार नज़री आईआ। जोती

५६४
१६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम दे वर, वारता अगली दे समझाईआ। जन भगत कहिण प्रभ पिछला लेखा दे चुका, पूरब रहे ना राईआ। अगली मंज़ल दे चढ़ा, जित्थे वसें बेपरवाहीआ। इक्को नूर होवे रुशना, दीआ बाती ना कोए जगाईआ। इक्को सिँघासण रिहा सुहा, साहिब सुल्तान डेरा लाईआ। भगतां नाल मिल के भगवन आपणे विच समा, समाप्त होवे खेल जगत लोकाईआ। तूं दाता दानी दयावान बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जलवागर नूर खुदा, मुकामे हक डेरा लाईआ। वाहद लाशरीक सच तौफीक हक रफीक चरण कँवल कदमे कदीम दे पनाह, सहारा इक्को इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरी आत्म परमात्म होवे ना कदे जुदा, जुज़ अंग वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

५६५
१६

✪ पहली विसाख शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

वतन वल फेरा पाया साख्यात, बेवतन गुरमुख रिहा उठाईआ। नव नौ चार पिच्छो आया उह विसाख, जो वसाह के सृष्टी विच्चों भगतां दी दृष्टी लए बदलाईआ। बिन अक्खरां तों जो गोबिन्द गया आख, बिन सतरां सति सति समझाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार वेखण आया आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जिस दा एथे ओथे दो जहान आदि जुगादि करे कोई ना नाप, पैमानयां विच्चों पैमाइश ना कोए रखाईआ। सो करन आया खेल अन्तरजामी पुरख अबिनाश, करनी दा करता दया कमाईआ। विछड़ी रहिण ना देवे कोई सखी नार कमज़ात, कुलखणी रूप ना कोए बणाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रूह बुत्त दोवें कर दए पाक, पुनीत पवित आप कराईआ। इक जपा के धुर दा जाप, जीवण जुगत जुगत दए बदलाईआ। बिना बेनती कीती अरदास, आस सब दी वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अठसठ तीर्थ मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गुरमुख किसे लभ्भणी ना पए ख़ाक, दर दर अलख ना कोए जगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाला आपणे मिलण दी आपे दस्स दए जाच, याचक आपणे लए उठाईआ। कोट जन्म दी भगती नालों सुहञ्जणी हो जाए अज्ज दी रात, गुर अवतार पैगम्बर वेख वेख खुशी मनाईआ। भगत सुहेला इक इकेला शाह सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना पुच्छणहारा धुर दी वात, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वतनां वल पाई फेरी, फिर के आपणा आप बदलाईआ। जो लेखा जाणे आदि जुगादि गुरू गुर चेरी, लख चुरासी खोज खुजाईआ। गुरमुखो सतिगुर पूरा जाणदा विछड़ी केहड़ी केहड़ी, जुग जन्म दी पूरब राह तकाईआ। विछोड़े दी रुतड़ी पिच्छे बीत गई

बथेरी, चौकड़ी दए गवाहीआ। कलयुग रैण वेखो अन्धेरी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। बिन पुरख अकाल सागर विच्चों कढ्ढ लई सब ने आपणी आपणी बेड़ी, नौका नाम ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता दीन दयाल निरगुण धार हो के लावे कोए ना देरी, डेरयां विच्चों डण्डे दए उठाईआ। धन्न भाग जे गुरमुखो तुसां एह अंदरों छेड़ छेड़ी, मांगत हो के मंग मंगाईआ। अग्गे कूड़ दी रहिण ना देवे अन्धेरी, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वतन विच आ के पढ़न ना देवे कोई पोथी, पुस्तकां तों खैहड़ा लए छुडाईआ। इक्को मंज़ल दस्से सौखी, सहिज परदा दए उठाईआ। घाटी रहे ना कोई औखी, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जन भगत सुहेले धुर दे बणा सौंकी, शान आपणे नाल वधाईआ। आत्मा चुरासी विच रहे ना भाउँदी, भवजल विच ना कोए रुढ़ाईआ। जेहड़ी तूंही तूं ही ढोला गाउँदी, गहर गम्भीर विच समाईआ। पुरख अकाल खेल कर के आपणे गौं दी, खेड़ा तुहाडा दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वतन वल आ के तक्कण लग्गा, लग मातर पिछली वेख वखाईआ। दो जहान कूक पुकार उठे प्रभू बिन भगतां तेरा वधे कोई ना अग्गा, अगला खेल ना कोए दृढ़ाईआ। बिन धर्म दवारयों दूजी नज़र ना आए कोई जग्ह़ा, चार कुण्ट कूड़ कुड़यार होया हल्काईआ। चेले गुरुआं नाल ते गुरू चेलयां नाल करन दग़ा, कलयुग रीती सोहणी दिती बणाईआ। तेरे शब्द धार विच शब्द रूप कोए ना बज्झा, भजन बन्दगी विच लग्गी जगत लोकाईआ। पेट कारन करदे मन वासना गजा, सदा हक ना कोए सुणाईआ। तेरा नूर जहूर बेमन्ज़ूर किसे ना लभ्भा, मन्ज़ूरी विच मनसूर रूप ना कोए बदलाईआ। किसे कम्म ना आया पढ़या गग्गा घग्घा, घर आपणे चढ़ के हरि कन्त मिल ना खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म रस माणया ना उह मज़ा, जिस दा मज़ाक दुनियां रही उडाईआ। अबिनाशी करता कहे जन भगतो मैं तुहाडी चलां सदा विच रज़ा, रमज़ आपणी अंदरे अंदर लगाईआ। बेवतन होण दी जे सच्ची पुच्छो वज़्ह़ा, भेव अभेदा दयां खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। जन भगत कहिण बेवतन होए क्यों, अबिनाशी करते दे दृढ़ाईआ ? श्री भगवान कहे तुहाडा गोबिन्द नाल नेहों, एसे कारन लोकमात जन्म दिता दवाईआ। जो अन्त अखीर बेनज़ीर बिन अक्खर बिन लेख लिख्त कह के ग्यों, ओड़क लेखा पूरा कराईआ। कुछ ईसा मंग मंगी अग्गे देउ, दीन हो के सीस झुकाईआ। सो खेल करे अलख अभेउ, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहिण नहीं कुछ प्या पल्ले, भेव धुर दा दे खुल्ह़ाईआ। क्यों तेरी धार नहीं रले, हुन्दी रही जुदाईआ। की मन वासना रहे झल्ले, बुद्धी चली ना कोए चतुराईआ।

५६६
१६

क्यों विछोड़े तीर रहे सले, सलल मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा दे उठाईआ। श्री भगवान कहे भगतो की दस्सां, दास्तान पिछली दयां दोहराईआ। जिस वेले गोबिन्द माछूवाड़े मेरे नाल लाईआ अक्खां, अक्खां अक्खां विच्चों बदलाईआ। सेज सुहाउणी होई कक्खां, ओढण नज़र कोए ना आईआ। हथ्थ मार के उत्ते पट्टां, पटने वाले खुशी मनाईआ। मेरा राग कोई किसे नहीं गाउणा भट्टां, वारां विच ना कोए छपवाईआ। पुरख अकाल मैं आपणा प्यार तेरे अंदर रखां, दुनियां हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। मैं तैनूं सदा बणाउणा आपणी जननी ज़च्चा, तेरी गोद बह के खुशी वखाईआ। मैं कोई खाण पीण वाला गुरू नहीं कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। मैं तेरी धार विच रचा, पंज तत ना कोए वड्याईआ। लोकमात आया ते करके तेरे नाल मता, दूजे नाल सलाह ना कोए रखाईआ। हुण तेरे सत्थर लथ्था, दूजी सेज ना कोए हंढाहीआ। पुरख अकाल खुशीआं विच हस्सा, हस्ती आपणी लई बदलाईआ। गोबिन्द मैं मुड़ के तेरे खेड़े अंदर वसां, बिन तेरे मन्दिर डेरा अवर ना कोए सुहाईआ। गोबिन्द किहा प्रभू की तैनूं मेरे वरगे लखां, कोटन कोटि नज़री आईआ। श्री भगवान किहा नहीं मैं तेरे अंदर आपणा आप ढकां, ढईआ तेरा मेरा दए गवाहीआ। गोबिन्द किहा की बाप नहीं सका, सकयां तों लएं छुडाईआ। पुरख अकाल किहा अच्छा, अच्छी तरां दयां वखाईआ। जेहड़ा लेख किसे ना लिखा, उह तेरे नाल लवां बणाईआ। गोबिन्द किहा पहलों तारीं मेरयां सिक्खां, जो सिख्या विच तेरा मेरा नाम ध्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जे ओनां नूं देवें पिच्छा, मैनूं तेरी लोड़ रहे ना राईआ। मैं किसे हथ्थ नहीं आउणा मन्दिर इट्टां, पत्थरां विच ना डेरा लाईआ। मेरे पुत्रां पिच्छे गुरमुखां दीआं लिखीआं चिटां, जिनां दा हरफ़ ना कोए बुझाईआ। श्री भगवान किहा मैं ओनां दा लेखा नजिठ्ठां, नेरन नेर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा वेख प्रभू बेवतन, धुर संदेसा इक जणाईआ। मैं छड्डुयां केहड़ा पतण, डेरा कवण किनार टिकाईआ। कुछ थोड़ा हाल आया दस्सण, सब नालों कर जुदाईआ। ज़रा तक्क आपणी अक्खन, बेनज़ीर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तेरा बेवतन नहीं लोकमात, वतन साचा दयां वखाईआ। बिन तेरी धार मेरी प्रगट ना होवे ज़ात, ज़ाहर जहूर ना कोए रुशनाईआ। धुर दा देवे ना कोए साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। ढोला गाए ना कोई पुरख अबिनाश, बेपरवाह दी बेपरवाही ना कोए दृढ़ाईआ। साचा मेला करे कोई ना आप, आपणा आप भेंट ना कोए कराईआ। मैं किस दा बणां बाप, सुत दुलारा कवण अख्वाईआ। एह अगम्मी खेल तमाश, कलम शाही ना सके कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं वतन बेवतन दी नहीं लोड़, लोड़ींदे साजण दयां दृढ़ाईआ। सब तों पहले गुरमुख मेरे सज्जण लैणे जोड़, जोड़ी धुर दी आप बणाईआ। जो आपणा आप घोली गए घोल, अन्तर आत्म प्रेम वधाईआ। मेरे नाल पूरा कर कौल, इकरारनामा दे बणाईआ। पुरख अकाल हौली जेही किहा बोल, शब्द अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर गुरमुख सन्त सुहेला रहिण ना देवां कोई अनभोल, सुरती विच्चों सुरती आप जगाईआ। गोबिन्द सदा तैनूं रखां कोल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक सरनाईआ। गोबिन्द किहा सुण ठाकर मेरे स्वामी, परम पुरख दयां दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। मेरे गुरमुखां दी वखरी होवे निशानी, निशाना तीर इक दरसाईआ। निरगुण ढोला आत्म परमात्म पढ़न बाणी, बनां विच खोजन दी लोड़ रहे ना राईआ। ओनां वास्ते करन आया आसानी, असल विच एसे कारन सत्थर रिहा हंढाहीआ। तूं पुरख अकाल करनी मेहरवानी, महबूब हो के मिल के ख़ुशी मनाईआ। जन भगतां अंदर मेरी शब्दी धार ज़िंदगानी, तत्तां दे जीवण दी लोड़ ना कोए वखाईआ। जिन्नां दा सदा पद निरबाणी, निरवैर हो के निरवैर आपणी दया देणी कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।
५६८ १६ श्री भगवान कहे मैं दया कमावांगा। गोबिन्द तेरी धार, धर्म दा रूप सच प्रगटावांगा। कलयुग वेख अन्तिम वार, कल ५६८ १६
कल्की नाउँ प्रगटावांगा। सन्त सुहेले आप उबार, गुरमुख गुर गुर रंग रंगावांगा। लख चुरासी विच्चों भाल, सज्जण सुहेले आप जगावांगा। जिन्नां पिच्छे भेंटा कीते लाल, उह लाल आपणे रंग रंगावांगा। सच दवारा वखा सच्ची धर्मसाल, बेवतनां दा वतन आप वसावांगा। रंग चढ़ा के शाह कंगाल, ऊँच नीच पन्ध मुकावांगा। लख चुरासी विच्चों कर बहाल, जम की फाँसी फंद तुड़ावांगा। फल लगा के तेरी डाल, माली हो के वेख वखावांगा। आपे वेख मुरीदां हाल, मुर्शद हो के ख़ुशी मनावांगा। त्रैगुण माया तोड़ ज़ंजाल, जागरत जोत इक रुशनावांगा। लेखा चुका के माज़ी हाल, अगला आपणे हथ्थ वखावांगा। ओनां पोह ना सके काल, कलयुग कूड़ कलेश मिटावांगा। जिस वेले गुरमुख अग्गे करन स्वाल, सब दा लेखा पलट के झोली पावांगा। साचे वतन देवां स्वाल, फड़ बाहों आप टिकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठावांगा। गोबिन्द किहा प्रभू एह केहड़ी तेरी मेहरवानी, बहुती ख़ुशी ना मैं मनाईआ। जिन्नां तेरे पिच्छे जोबन लाई जवानी, आपणा आप भेंट कराईआ। की होया तूं तत्तां दा बण ग्यों दानी, पंज तत दएं वड्याईआ। एह नाटकां वाली खेल आसानी, गोबिन्द शब्द कदे ना भाईआ। मेरा झगड़ा रहिणा नहीं कोई दीवानी, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ।

जे मिलणा फेर काहदी मेहरवानी, एहसान सिर ना कोए रखाईआ। मेरा सिख प्रभू तेरी कीमत टकयां विच ना चुकाए कोई दवानी, मथ्थे टिकाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिन्हां पिच्छे तत्ती लोह उत्ते बह गया सुत भानी, आप आपणा तेरी गोद टिकाईआ। कलयुग अन्त गुरुमुख मेरी होए उह निशानी, जो निशाना तेरा नाउँ तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल उठाईआ। पुरख अकाल किहा मेरे उत्ते ना कर एहसान, असल दयां जणाईआ। गोबिन्द किहा ओ प्रभू तूं केहड़ा मेरा जजमान, मैं मरासी डूम बण के मंगण आईआ। मैं तेरा बाल नादान, बच्चयां वांग गोदी बह के सब कुछ लै के खा के ख़ुशी मनाईआ। मैं कोई हज़ारां लखां सखीआं दा गिणती वाला नहीं काहन, हिन्दसयां विच अंक ना कोए बणाईआ। बिन मेरे तेरा झुल्ले ना कोए निशान, निशाना सच ना कोए वखाईआ। मैं तेरा हुक्म करां परवान, मन्नां चाँईं चाँईंआ। तैनूं देणा पए सच प्रीती दा दान, दूजी मंग ना कोए मंगाईआ। जिस वेले निरगुण धार सति सच दा आवें भगवान, भाग गुरमुखां देणा बदलाईआ। अबिनाशी करते तेरे दर ते केहड़े ढोलक छैणयां वाले लग्गणे दीवान, मस्त दीवाने नाम खुमारी विच देणे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे गुरमुखो तुहाडे वतन आवां, आवा गवण दयां मुकाईआ। आ के सांझा ढोला गावां, आपणा नाम ना कोए जपाईआ। तुहाडा कंडा आपणे नाल रखां सांवां, तराज़ू दूजे हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। बच्चयां नूं लाड लडावां वांग मांवा, पिता हो के पूत गोद सुहाईआ। तुहाडा लख चुरासी दा लेखा मुकावां नाल चावां, जुग चौकड़ी पिच्छो वारी आईआ। उच्ची कूक के लंमीआं करो बाहवां, बेवतनां दा मालक मिल्या बेपरवाहीआ। गुरमुख कुँवारी आत्म इक्को वार लै लवे लावां, लख चुरासी विच्चों दूजा खौंत लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतो तुहानूं किसे दा लैणा ना पए परछावां, पिछलयां तों पिच्छे अगलयां तों अग्गे लेखा दिता मुकाईआ। बेवतन हो के तुहाडे दवारे आवां, वतनां दे मालक तुहानूं दयां बणाईआ। आपणा तत सरीर तुहाडे पिच्छे गवावां, जोती जोत कर रुशनाईआ। भुक्खा दरवेश हो के टुकड़े मंग के खावां, भण्डारा अतोट अतुट भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। वतन विच आया, अवण गवण मुकाईआ। लेखा रहे ना त्रैगुण माया, माया ममता मोह दए चुकाईआ। जिस दे अन्तर आपणा नाम दृढ़ाया, दृढ़ विश्वास दए बंधाईआ। अन्तिम लेखा रहे ना राया, जमां तों लए छुडाईआ। चुरासी लख ना कोए भुवाया, चारे खाणी ना कोए कुरलाईआ। साचा मन्दिर दए वखाया, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। बेवतनां वतन विच बह के ढोला इक्को गाया, वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। जन भगतो जे तुसीं

ना हुन्दे बेवतन लोकमात ना जन्म दिवाईआ। फिर किस दी पत आउँदा रखण, निरगुण आपणा वेस धराईआ। किस दवारे सोंहदा पतण, कवण घाट डेरा लाईआ। लख चुरासी किन्नां करे यतन, अबिनाशी करता हथ्थ किसे ना आईआ। जुग जन्म पिच्छो तुहाडे पड़दे आया ढकण, ओढन आपणा नाम वखाईआ। साचे वतन आया छड्डुण, फड़ के बाहों पार कराईआ। तुहाडा नूर हो के आया जगण, लोकमात करे रुशनाईआ। गुरमुखो सच प्रेम दा मुख ते ला के सगन, अमृत जाम दए प्याईआ। जिस दे नाल आपणी मंज़ल सारे लँघण, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। साची चढ़ी रहे रंगण, दुरमति मैल दए मिटाईआ। दूजे दर जाणा पए ना मंगण, घर घर अलख ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख़्शणहार सरनाईआ। वतन आया जाए मिल के, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। भेव जाणे हर घट अन्तर दिल दे, दिलदार हो के खोज खुजाईआ। सोच रहिण ना देवे की नज़ारे मिलदे तेरे तिल दे, तिलकणबाज़ी विच्चों बाहर कढाहीआ। जेहड़े विकार अंदरों कढ्ढुयां बाहर नहीं हिलदे, शब्द इशारे नाल लेखा दए चुकाईआ। खेल वखा के धार बिस्मिल दे, पड़दे ओहले दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वसाईआ। वतन विच आ के कुरलावे कोई ना कूंज, बेहबल हो ना दए दुहाईआ। जन भगतो तुसीं केहड़ी लभ्भणी स्वांती बूँद, जाम प्याले धुर दे रिहा प्याईआ। अन्त अख़ीरी तुहाडी दुरमति मैल देवे पूंज, कूड़ कुड़यार गठड़ी गंढु आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म रहे ना कोए दूज, दुतीआ भाउ दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साची आ जाए सूझ, समझ विच्चों आपणी समझ दए बदलाईआ। की होया थोड़े समें वास्ते चोला मिल्या पंज तत काया भूत, हड्ड मास नाड़ी खेल खिलाईआ। अन्त फेर तुसीं पूत दे पूत, पिता आपणी गोद उठाईआ। लेखा मुका के चारे कूट, दहि दिशा लहिणा रहे ना राईआ। महल अटल वखा के ऊँचो ऊँच, सच दुआर दए टिकाईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर कर के गए कूच, ओसे कूचे गली विच तुहाडे ढोले दए सुणाईआ। अन्त सुनेहड़ा देवणहारा इक्को शब्दी दूत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा जसबीर सिंघ कोलों लै लओ सबूत, गुरमेज कौर गुर के धाम पुचाईआ। हाज़रां विच हाज़र मौज़ूदा विच मौजूद, बेवतनां नूं वतनां विच दए पुचाईआ। खुशीआं विच रखे खूब, महबूब हो के वेख वखाईआ। सब ने छड्डुणा तन वजूद, तत्तां दा नाता तोड़ ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। वतन विच आया जाए वस के, भागां वालयां भाग बणाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल जाए हस्स के, हस्ती विच्चों हस्ती आप समझाईआ। धुर दा मार्ग जाए दस्स के, दसां गुरुआं दी जो पढ़ाईआ। एसे कारन गोबिन्द अंगीठे विच बह गया अक्क के, अकलां वालयां

दी चली ना कोए चतुराईआ। गुरसिखां कोलों अमृत आप छक के, आपणा भरोसा गुरमुखां उत्ते टिकाईआ। बेशक गुरमुख गए भज्ज के, गोबिन्द हाज़र हो के दरस दिखाईआ। एह बचन नहीं कोई अज्ज दे, जुग चौकड़ी रीती रिहा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आउँदे रहे जग ते, हुक्में अंदर खेल वरताईआ। भगत भगवान नूं रहे सद्द दे, अन्तर रो रो मारन धाहींआ। दूर दुराडे रहे भज्जदे, भज्जण वाहो दाहीआ। इक्ट्ठे हो के तुहाडे वांग नहीं रहे सजदे, भगत दवारा ना कोए वखाईआ। दुख झल्लदे रहे पाणी अग्ग दे, ठोकरां पत्थरां नाल खाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल खुशीआं ताल वेखो वज्जदे, वजा़ सके ना कोए समझाईआ। जे गोबिन्द दे बच्चे नीहां हेठां ना दब्बदे, प्रभ दा दाउ लग्गे ना विच लोकाईआ। एह खेल रोज़े शब दे, दिवस दिवस नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे मुका के पिछली हद्द दे, हाज़र हो के दया कमाईआ। वतन विच आए देवे होका, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। गुरमुखो गावो सच सलोका, जो सुल्हाकुल रिहा दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों माणस जन्म इक्को मौका, जो मुकम्मल प्रभ दे नाल मिलाईआ। शब्दी धार गोबिन्द कदे करे ना धोखा, ध्रू प्रहलाद देण गवाहीआ। किसे कम्म नहीं आउणा साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कोठा, जिंनां चिर आत्म परमात्म मिल के वज्जे ना वधाईआ। गुरमुखो सतिगुरू प्रीत सत्त समुंदर नालों डूंघा मारना गोता, मोतीआं वाले सिप्प हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्ची सरनाईआ। वतन कहे वतनां वाल्लयो बेवतन दी वत आई वसाखी, वातावरन दए बदलाईआ। जे वेखो गोबिन्द दी इकसठ वाली साखी, जो सिख्या सिख दृढ़ाईआ। विद्या विच किसे ना भाखी, कलयुग सन्त कन्त भेव ना कोए दृढ़ाईआ। गोबिन्द वार गाए कोई ना ढाडी, सरंगा सार ना कोए जणाईआ। ताल कढ्ढे कोई ना भाटी, भट्टां विच ना कोए वड्याईआ। बिना पुरख अकाल खेल दस्से कोई ना साची, बुद्धी दी बुद्धी नाल लड़ाईआ। गोबिन्द बाणी जगत विद्या विच किसे ना भाखी, अक्खरां नाल बहुते रहे समझाईआ। शब्द सतिगुरू दी मन्ने कोए ना आखी, अक्खरां दी करन लड़ाईआ। एस तों वड्डी होर नहीं कोई गुस्ताख़ी, एसे कर के मिले सज़ाईआ। गोबिन्द दी अमृत प्याउण छकाउण वाली नहीं वसाखी, वस्त्र पहनाउण ना कोए चतुराईआ। क्यों, गोबिन्द नूं पता सी मैं शब्दी धार हो के जन भगतां अंदर कटणी दिन ते राती, दूजा दर नज़र ना आईआ। एन्हां दे अन्तर मेरे प्रेम दी हाटी, जित्थे अमृत देणा टिकाईआ। अजे तक्क किसे नूं समझ नहीं कोई भाखी, भरम सके ना कोए चुकाईआ। गुरमुखो वतन विच रह के तुहाडी करदा रहे राखी, ख़बरदार हो के होका आप सुणाईआ। बुत्त करके अंदरों बाहरों पाकी, आत्म परमात्म नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक

उठाईआ। किसे नहीं जाणया क्यों गोबिन्द गुरमुखां कोलों अमृत पीता, हथ्थां अग्गे हथ्थ फलाईआ। की पुरख अकाल ने हुक्म कीता, अंदरों करी पढ़ाईआ। की दान दिता खोल्ह के खीसा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। धुर संदेश होया गोबिन्द तेरा नूर गुरमुख शीशा, आपणा आप इस दे विच टिकाईआ। तैनूं पंजां तत्तां वाला सरीर धरना पए विच अंगीठा, वजूद रहिण कोए ना पाईआ। फेर किथे रहें तूं जीता, कवण दुआर रह के झट लँघाईआ। गोबिन्द चार कुण्ट वेख के किहा प्रभू ठीक आ, ठीकर भज्जयां मेरा निशान नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल किहा सुण मेरी सच हदीसा, हुक्म नाल सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त अख़ीरी बीता, वेला वक्त दए गवाहीआ। तेरी फुलवाड़ी दा महकणा इक बग़ीचा, महक अन्तर अन्तर महकाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँचा नीचा, राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरा खेल होणा ठंडा सीता, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। तूं जन भगतां बणना मीता, मित्र प्यारा हो के संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं क्यों गुरमुखां अग्गे डाहे हथ्थ, हथेली हथेली उत्ते टिकाईआ। हुक्म दिता पुरख समरथ, सहिजे सहिज दृढ़ाईआ। छड्ड के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ देणा तुड़ाईआ। शब्दी धार हो के आउणा सच, सति तेरी वड्याईआ। ओस वेले जन भगतां अंदर जाणा वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। अन्तर आत्म धुर दा रस देणा झट्ट, अक्ख आपणे नाल मिलाईआ। रहिणा ओस हट्ट, नाम देणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दिता सुणाईआ। साचा हुक्म सुण गोबिन्द धार, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। वतन वेखणा गुरमुखां दा घरबार, काया माटी सोभा पाईआ। बणना मित्र यार, प्रीतम हो के प्रीती तोड़ निभाईआ। वेखणा सदा जुग चार, घड़ी पल वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कर्ज़ा लहिणा देणा तेरे कोल रख्या उधार, वेले वक्त नाल झोली देणा पाईआ। हो के रहिणा खबरदार, बेख़बरां ख़बर देणी पुचाईआ। सो वेला वक्त पहुंचयां आण, कलयुग अन्त दए गवाहीआ। वतनां वाल्लयो हो जाओ सवाधान, जगत स्वादां विच्चों तुहानूं साध दए बणाईआ। आपणे घर दी करो पहचान, जिस गृह विच्चों होई अन्त जुदाईआ। नाता जोड़े नाल श्री भगवान, भाग हिस्सा तुहाडी झोली पाईआ। दसरथ दा बेटा लभ्भणा पए ना राम, गोपीआं वाला काहन बंसरी बांस ना कोए सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करना ना पए ध्यान, नानक गोबिन्द सिफ्त ना कोए सालाहीआ। इक्को वतन दा मालक पहुंचे आण, दो जहान लेखा दए मुकाईआ। दया कमा के पुचाए ओस मुकाम, जो मुकीम कदीम तों बणाया बेपरवाहीआ। जित्थे रह के गुरसिखो होणा ना पए बदनाम, बदी नेकी दा लेखा दए चुकाईआ। लख चुरासी रहिणा ना पए ग़ुलाम, राए धर्म दए ना कोए सज़ाईआ। सतिगुर चरण धूढ़ी होवे इस्नान, मजन इक्को इक

कराईआ। साचे दर मिले बिसराम, बिस्तर खटीआ दोवें देणा तजाईआ। कलयुग अन्त ना रहे बेपहचान, अक्खां विच्चों अक्ख लैणी खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगतो तुहाडा वतन सदा वसदा, आ के वेखे शहिनशाहीआ। जित्थे ढोला भगत भगवान दे जस दा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। इष्ट बणया इक्को ज्ञान नेत्र अक्ख दा, अज्ञान बैठा मुख भवाईआ। प्रकाश होवे सच सति दा, वज्जे हक वधाईआ। जो जन भगत सुहेला सोहँ ढोला रटदा, रट्टा अगला पिछला जाए मुकाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन गगनंतरां आपे टप्पदा, भज्जा जाए वाहो दाहीआ। गुरमुख नूर कदे ना छपदा, जुग चौकड़ी करे रुशनाईआ। मंज़ल चढ़दा कदे ना अक्कदा, पैंडा सहिजे जाए मुकाईआ। ओस घराने विच वसदा, जित्थे गुरमुख घर दे बैठे डेरा लाईआ। सच सिँघासण साहिब स्वामी सजदा, सज्जण बेपरवाहीआ। जो जन भगतां दर्शन कर कर जुग जुग रज्जदा, दूजिआं मिलण कदे ना आईआ। लख चुरासी खेल रचाया दुनी जग दा, कायनात रिहा भवाईआ। गुरमुखो तुहाडा सुहावणा समां होया अज्ज दा, अगे अज़ल ना कोए सताईआ। वतन अनोखा रहे वसदा, जित्थे वसल यार खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक बणया तुहाडा सब दा, सभना दा लेखा लहिणा आपणयां चरणां विच रखाईआ।

६०३
१६

२ विसाख शहिनशाही सम्मत २ हरचरण सिँघ दे गृह बठिंडा

जन भगत कदे ना होवे बेघर, घराना वसदा रहे बेपरवाहीआ। अबिनाशी करता परम पुरख जिन्हां दा वर, अन्तर मिल के दए वड्याईआ। सदा सदा सद नुहाए अगम्मी सर, सरोवर इक्को इक वखाईआ। भय भउ चुकावे कूड़ा डर, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। दीन दुनी विच्चों लए फड़, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। पल्लू नाल शब्दी डोर बंधाए लड़, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। साचे मन्दिर अंदर जावे चढ़, गृह वज्जे इक वधाईआ। धुर दा ढोला गीत सोहला लए पढ़, सोहँ राग इक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। जन भगत कदे ना होवे खानाबदोश, बेदर ना मात अख्वाईआ। जिन्हां दे अंदर अबिनाशी करता वसदा रहे ख़ामोश, सच सिँघासण आसण डेरा लाईआ। नाम खुमारी अंदर रखे मदहोश, प्याला मधर जाम जाण भुलाईआ। जन्म जन्म दी मेटे सोच, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। चरण प्रीती दस्से के मौज, मजलस आपणे संग वखाईआ। पूरब जन्म दी मनसा पूरी कर के

लोच, लोचण अंदरों दए खुल्हाईआ। नाम सुणा के धुर सलोक, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। जन भगत कदे ना होए बेगाना, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जिन्हां दा मालक शाह सुल्ताना, शहिनशाह दो जहानां सोभा पाइंदा। सो आत्म परमात्म निरगुण धार निरगुण लाए याराना, मुहब्बत मेहर विच रखाइंदा। साचे नाम दा सुणाए अगम्मी अफ़साना, अफ़सोस चिन्ता ना कोए रखाइंदा। सच प्रीती अंदर करे दीवाना, मस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाइंदा। धुर दा धाम दस्स निशाना, तीर निशाना इक्को इक चलाइंदा। योद्धा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, मदद आपणी नाल उठाइंदा। पहलों लोकमात जन भगतां करे रवाना, पिच्छे आपणा नूर चमकाइंदा। मेल मिलाए गुण निधाना, गुणवन्ता आपणा भेव खुल्हाइंदा। प्रगट हो के आवे विच मैदाना, सच सुहाना वक्त सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगत कदे ना जावे औझड़ राह, उजड़या खेड़ा ना कदे वखाईआ। जिन्हां दा परम पुरख परमात्म बणे मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। शब्दी शब्द दए सलाह, मशवरा इक्को नाम कराईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमति मैल करे सफाईआ। चरण कँवल दे पनाह, मेहर नज़र इक उठाईआ। जीवण विच्चों जीवण दे के नवां, नव जोबन आपणा दए वखाईआ। मन ममता मेट दे तमअ, समझ मसझ विच्चों बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वास दमां, दामन हो के दामनगीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत कदे ना होवे दूर, दुराडा पन्ध ना कोए वखाईआ। जिन्हां दे अन्तर इक्को नूर, मंत्र ढोला इक्को गाईआ। सच नाम सरूर, सुरती शब्द विच समाईआ। नाता तोड़ कूड़ मफ़रूर, माया ममता मोह चुकाईआ। नित दर्शन करन हाजर हज़ूर, हज़रत वेखण शहिनशाहीआ। जिस दा शुक्रिए विच सारे करदे मशकूर, मुश्कल सब दी हल्ल कराईआ। सर्ब कला भरपूर, अतोट अतुट रिहा वरताईआ। जन भगतां मानस जन्म कर मन्ज़ूर, कलयुग कूड़ फतूर दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे प्रेम भगती वाले मज़दूर, मेहनत मुशकत बावक्त सब दी झोली पाईआ।

✪ ४ विसाख शहिनशाही सम्मत २ मैहिंगा सिँघ दे गृह पिण्ड हरी पुर ✪

तेरा खेल पुरख समरथ, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भेव कोई ना पाइंदा। बोध अगाध शब्द अनाद महिमा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्त सालाहइंदा। गुर अवतार पैगम्बर गाउँदे तेरा जस, रसना जिह्वा

बत्ती दन्द सिफ्त सालाहइंदा, सन्त भगत सूफ़ी दिवस रैण रहे लभ्भ, अन्तर आत्म खोज खुजाइंदा। नौ सत्त आर पार तेरी कोई ना जाणे हद्द, चौदां लोक चौदां तबक परदा ना कोए उठाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण देवे अगम्मी वथ, वस्त अमोलक नाम निधाना झोली पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकावे नठ नठ, जुग चौकड़ी आपणी धार चलाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तीर्थ सरोवर अठ्ठ सठ्ठ समुंद सागर जलधारा तेरी ओट तकाइंदा। हुक्मे अंदर खेले खेल चुरासी लख, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी आप वड्याइंदा। नित नवित निरवैर निराकार निरगुण जोत होए प्रगट, साख्यात स्वच्छ सरूपी अनभउ प्रकाश आपणा इक दृढ़ाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दो जहान श्री भगवान खोल्ह आपणा हट्ट, कलमा हक हक समझाइंदा। जोती नूर ज़ाहर ज़हूर होवे लट लट, करनी दा करता कुदरत दा कादर महबूब मुहब्बत विच आपणा खेल खिलाइंदा। सोई सुरती हुक्में अंदर आत्म परमात्म लावे सट्ट, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाइंदा। निझर झिरना अमृत धार अंमिउँ देवे रस, रस्ता रहबर हो के आप वखाइंदा। घर घट भीतर जगत निराला रिहा दस्स, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा कोई ना पावे भेव, परदा ओहला धुर दरगाह सच मलाह ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव करदे रहे सेव, निरगुण सरगुण अक्खरां वाली जगत पढ़ाईआ। ढोले गाउँदे गए बत्ती दन्द जेहव, राग नाद शब्द धुन कलमयां विच शनवाईआ। तेरा महल अटल उच्च मनार सदा निहकेव, अगम्म अथाह बेपरवाह तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। पारब्रह्म बेअन्त अगम्म अथाह, बेपरवाह बेपरवाही विच समाइंदा। नित नवित जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण बणे मलाह, आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म परदा आप उठाइंदा। शब्द अनादी बोध अगाधी बिन अक्खरां देवे इक सलाह, निष्अक्खर आपणा हुक्म वरताइंदा। साहिब स्वामी अन्तरजामी आपे बणे मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। सन्त सुहेले गुर गुर चेले लए उठा, जागरत जोत बिन वरन गोत आप डगमगाइंदा। जलवागर नूरी नूर इक खुदा, खुदी तकब्बर माया ममता मोह मेट मिटाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म कदे ना होवे जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। सूफ़ी सन्त फ़कीरां अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के साचा मार्ग दए सिध्धा, रिद्ध सिद्ध कूड़ कुड़यार डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर निरंतर अन्तर मंत्र इक्को नाम दृढ़ाइंदा। पारब्रह्म तेरा खेल अगम्म, अगोचर, कहिण कोए ना पाईआ। रसन स्वासी कोई ना गावे पवणी दम, विद्या

विच ना कोए चतुराईआ। लेखा जाणे ना कोई काया माटी हड्ड (चम्म), चम्म इष्टी दृष्टी भेव ना कोए खुल्ल्हाईआ। तेरी धार नूरो नूर जलवागर ब्रह्म, इस्म आज़म इक रुशनाईआ। निहकर्मी हो के करे अगम्म कर्म, जगत कांड दा झगड़ा दए चुकाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया मेटणहार भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मानव ज़ाती मनुक्खता इक्को दस्से धर्म, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोई वण्डाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सति सतिवादी साची सरन, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। साचा ढोला धुर दा संगीत नाम निधान गुरमुख सन्त सुहेले पढ़न, दूई द्वैती रहे ना राईआ। बिन पौड़ी डण्डे मंज़ल आपणी चढ़न, नौ दुआर सुखमन टेडी बंक जगत वासना अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत प्रकाशी निरगुण नूर जोत दर्शन करन, दीदार दीद दूर करे नाबीनाईआ। आत्म हो के परमात्म पीआ पतिपरमेश्वर वरन, पारब्रह्म ब्रह्म नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। भगत भगवान मिल के बिन अक्खरां ढोले पढ़न, बिन नाद धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गृह आपणी खुशी मनाईआ। पारब्रह्म बेअन्त अबिनाशा, अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेखणहारा तमाशा, तमअ तृष्ना जगत वासना फोल फुलाईआ। जन भगतां अन्तर आत्मा निज गृह मन्दिर अंदर वेखे पूरब जन्म दी आसा, आसा मनसा तृष्ना ममता मोह मेट मिटाईआ। सच प्रीती चरण कँवल उपर धवल देवे धुर भरवासा, भाण्डा भरम भउ कूड़ी क्रिया आप भन्नाईआ। बिन दीआ बाती कमलापाती जोत कर प्रकाशा, मण्डल रासी सुरती शब्दी गोपी काहन आप नचाईआ। जन भगतां अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर नित नवित सदा सुहेला वसे पासा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट दहि दिशा विछड़ कदे ना जाईआ। एथे ओथे दो जहान भगत भगवान बणया रहे राखा, रखक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी हरिजन हरि हरि मेले सहिज सुभाईआ।

✪ ५ विसाख शहिनशाही सम्मत २ प्रगट सिँघ दे गृह हरि भगत दुआर धीर पुर दिल्ली ✪

ब्रह्म कहे तेरी बेपवराही, पारब्रह्म तेरे विच समाईआ। आत्म परमात्म होई जुदाई, तन वजूद तत डेरा लाईआ। नूरो नूर कर रुशनाई, दीपक दीआ डगमगाईआ। लख चुरासी खेल रचाई, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज अगम्मी बणत बणाईआ। घट भीतर गृह डेरा लाई, सुहञ्जणा दर सुहाईआ। नाम धुन शब्द शनवाई, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द गाईआ। ख़ालक ख़लक बण नूर खुदाई, जलवागर आप अख्वाईआ। जुग चौकड़ी वण्ड वण्डाई, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ।

गुर अवतार बणत बणाई, निरगुण सरगुण सेव लगाईआ। नाता जोड़ काग़ज़ कलम शाही, अक्खरां अंदर सधरां जोड़ जुड़ाईआ। हुक्म दे के धुरदरगाही, फ़रमाना इक समझाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ दुहाई, दोहरा हक ना कोई सुणाईआ। चार वरन रहे कुरलाई, अठारां बरन रोवण मारन धाहीआ। मिल्या मेल ना महबूब मुहब्बत विच गुसाँईं, गहर गम्भीर जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। अलख अगोचर तेरा भेव कोई जाणे नाहीं, जीव जंत सार कोए ना आईआ। समुंद सागर हाहाकार मचाई, ज़िमीं असमान धीर ना कोए धराईआ। जगत वासना मात नचाई, नटुआ नट स्वांग बणाईआ। ममता मोह कर कुड़माई, नाता दीन दुनी बंधाईआ। आपणा भेव ना किसे खुलाई, ओहला अंदरों ना कोई उठाईआ। सन्त सुहेले वेखण चाँईं चाँईं, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। शाह पातशाह शहिनशाही, शहिनशाह सुल्तान मेहरवान बेअन्त अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं हुक्में अंदर होवे तबाही, तोबा तोबा सारे फिरे दुहाईआ। कोई ना पकड़े बांही, बलधारी नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द लेखा लिख्या जीव समझे नाहीं, अमृत आत्म जाम ना कोए प्याईआ। साची मंज़ल बणे कोए ना राही, पाँधी हो के पन्ध ना कोए मुकाईआ। अन्तिम सब दे गल विच पैणी फाही, फाँसी धर्म राए लटकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देवे ना कोए गवाही, अन्त सहाई ना कोए छुडाईआ। जगत विद्या डूँघी खाई, ख़ालस ख़ालक ना कोए मिलाईआ। लहिणा देणा तेरा दो जहानां थाउँ थाँईं, थान थनंतर सारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा धुर दा घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, तेरी ओट सहारे छड्डे कोटन कोटि, काया कुटीआ साचे कटड़े अंदरों कामल मुर्शद मिल के कबीला भगत भगवान इक्को नज़री आईआ।

✪ ५ विसाख शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ नूर पुर (ज़िला जलन्धर) निवासी दे प्रशाद कराउण ते, हरि भगत दुआर दिल्ली ✪

बेपरवाह तेरी बेपरवाही, आदि अन्त भेव ना कोए जणाइंदा। गुर अवतार पैगम्बर बण के पाँधी राही, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर फिराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव भज्जण थाउँ थाँईं, देवत सुर सेवक हो के सीस निवाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण दुहाई, अञ्जील कुरान, नाअरा हक हक दृढ़ाइंदा। खाणी बाणी ढोला रही गाई, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी सिफ्ती सिफ्त सालाहइंदा। जन भगत सुहेले ध्यान रहे लगाई, निज नेत्र लोचन नैण परदा ओहला इक उठाइंदा। सन्त सज्जण लभ्भण थाउँ थाँईं, खोजत खोजत आपणा मेल वखाइंदा। गुरमुख गुरसिख नाम रहे ध्याई, दिवस रैण अठ्ठे पहर

इक्को राह तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्मी दर, धुर दरबारे धार ना कोए जणाइंदा। धुर दरबारे तेरी धार, धरनी धरत धवल समझ कोए ना आईआ। हुक्मे अंदर हुक्म गुरू अवतार, हुक्मी हुक्म खुशी मनाईआ। गावत गा गा तेरा नाम सिफ्त अपार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गए जणाईआ। चार जुग जुगती नाल करदे गए इज़हार, सुरती अकाल मूर्ती सुरती नाल मिलाईआ। नाम निधाना सुणदे गए शब्द सच्ची धुन्कार, धुनकी तूम्बा तन रबाब वजाईआ। बिन जुगत पैगम्बर करदे गए दीदार, सति सरूप अनूप वेख वखाईआ। राह तक्कदे गए परवरदिगार, सच ग़मख़ार ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सोभा पाईआ। बेअन्त बेपरवाह तेरी अपरम्पर वेखी लीला, लालच विच जगत लोकाईआ। कोई ना जाणे तेरा अम्बर रंग नीला, नीली धारों परे सारे कहिण बेपरवाहीआ। जीव जंत साध सन्त सच बणाए ना तैनूं कोई वसीला, वास्ता वास्तविक तेरे नाल जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बण के तेरा कबीला, किबला कामल मुर्शद गए जणाईआ। खेल कर के उत्ते धरनी धरत ज़मीना, ज़ामन हो के ज़मीमा गए समझाईआ। ठंडा करके सीना, सीतल धार अमृत विच समाईआ। दरवेश सेवक हो अधीना, अदने हो के आहला ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे बह के खुशी मनाईआ। अदने हो के किसे कैहिंदे गए आहला, आलमगीर इलम ना कोए चतुराईआ। सच खुदाए मन्नदे गए ताअला, तुलबा हो के करी हक पढ़ाईआ। प्यार मुहब्बत मेहर पा के माला, मसला मिसल विच्चों हल्ल कराईआ। मार्ग वेख सुखाला, सुखसागर अंदर तारीआं लाईआ। हुक्मे अंदर दे अहिवाला, स्वाल सब दे अंदर टिकाईआ। त्रैगुण माया कर खेल निराला, ज़ंजाला जीवण जुगत जगत जणाईआ। सार पाशे वाली चल के चाला, शत्रु मित्र आपणा आप छुपाईआ। गोप बण ग्वाला, मटकी ठोकर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार अंदर जन भगत दवारे नाशता करन वाला, स्वाल पिछला हल्ल कराईआ। सच गृह जन सच्ची धर्मसाला, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे बेमिसाला, मिसल विच मसला ना कोए समझाईआ। हुक्मे अंदर हुक्म वरता के पुरख अकाला, कलधारी आपणी कल जणाईआ। गुरमुखां पूरब जन्म लेखे ला के घाला, कीती घाल पाए थाँईंआ। हरिजन गोद उठाए धुर दा बाला, बाली बुध देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वखाईआ। सच दवारा धुर दा धाम, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। सब तों निराला आहला वसे राम, रहमत विच रैहम आप कमाईआ। पैगम्बरां दा पैगम्बर साचा दिसे अमाम, आमद विच वेखे ख़लक लोकाईआ। हक हकीकी देवे अगम्मी जाम, जामावन्त बैठा सीस निवाईआ। जन भगत दवारे भगवन कर बिसराम,

विश्व आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म झुला निशान, निशाने कूड़े दए बदलाईआ। सन्त सुहेले वेखे आण, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भाग उन्हां दा झोली पाईआ। योद्धे सूरबीर बणा मर्द मर्दान, मदद दा लेखा दए चुकाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के मिले आण, सरोसमान दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा सचखण्ड दवारा बदले ना कदे विधान, अज़ीम तरमीम ना कोए रखाईआ। सद सुहेला बणया रहे निगाहबान, वेख वखाणे चाँईं चाँईंआ। कलयुग अन्तिम हो मेहरवान, महबूब हो के वेस वटाईआ। जन भगतां सहिज सुभाओ, मिले आण, बन खण्ड खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन्म कर्म दे झगड़े सहिंसे मेटे तमाम, तमअ तकब्बर अंदरों बाहर कढाहीआ। चुरासी विच रहिण ना दए गुलाम, गुलामां दी ग़मी दए गवाईआ। साचा दस्से के इक्को नाम, सोहँ ढोला सति पढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त करे कर्म कांड कल्याण, प्रेम प्रीती ब्रह्म ब्रह्मांड वज्जे वधाईआ। सच संदेसा देंदा रहे फ़रमान, फ़ुरनयां विच्चों फ़ुरना आप प्रगटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सन्त सुहेले कर परवान, प्रेम प्यार विच आप बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे देवे इक आराम, अगे होणा ना पए बदनाम, महिमान आपणे लए बणाईआ।

✪ ६ विसाख शहिनशाही सम्मत २ तरलोक सिँघ सनाम निवासी दे प्रशाद कराउण ते, दिल्ली हरि भगत दुआर ✪

पुरख अकाल भेव किसे की कहिणा, गुर अवतार पैगम्बर कथनी ढोला गाईआ। अबिनाशी करता आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब कुछ वेखे बिन आपणे नैणां, अक्ख जलवा नूर रुशनाईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी देवे देणा, दे दे खुशी वखाईआ। साचे सन्तां भाणा दस्से सहिणा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां आत्म परमात्म जुड़ के दस्से रहिणा, घर सच्चे वज्जे वधाईआ। गुरमुखां बणे साकसज्जण धुर दा सैणा, सर्ब स्वामी दया कमाईआ। नाम अमोलक वस्त तन साचा पाए गहिणा, जगत मुलम्मा रूप ना कोए वखाईआ। तन माटी ख़ाकी साची वस्त वखाए रसायणा, जिस अन्तर अनमुलड़ी वस्त दिती टिकाईआ। शब्दी शब्द धुर दी धार बणे अलाइना, आलम उल्मा आप समझाईआ। भगत वछल विश्व बणे तराइना, तारनहार समरथ आप अख्वाईआ। जिस दा लेखा कोई लिख ना सके गीता रमायणा, वेद शास्त्र बिध रहे समझाईआ। करे खेल अगम्म अथाह निरगुण नूर नरायणा, नर हरि आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धुर दा खेल आप वरताईआ। पारब्रह्म तेरी सारे करदे गए सिफ्त, सालाही सालाह वड्डी वड्याईआ। हुक्मे अंदर हो के गुफ्त, गृह अंदर निगाहबान खोज खुजाईआ। नाम संदेसा सुनेहड़ा देंदे गए सृष्ट, शरेआम ढोला गाईआ। पुरख अकाल जणाउँदे गए इष्ट, ईश जीव जगदीश कर पढ़ाईआ। रसीए भोगी हो के भोगदे गए गृहस्त, नाता तन माटी ख़ाक जुड़ाईआ। अददां अंकां विच बणदी रही फरिसत, मीज़ान विच बहुते रंग रंगाईआ। निज नेत्र नैण तीर निशाने लाउँदे रहे शिसत, बण शिकारी शिकार पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। साचे नाम दी लोकमात थोड़ी थोड़ी तारदे रहे किशत, केशव कृष्न कह के आकाश उपर ध्यान लगाईआ। अन्तिम हुन्दे रहे निष्ट, नष्ट पंज तत तन वजूद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। खेल तेरा सदा अनोखा, बिन अनुभव समझ किसे ना आईआ। बुद्धी विच सब ने खाधा धोखा,साध सन्त चले ना कोए चतुराईआ। अक्खरां वाला ग्रन्थ पोथा, तेरी महिमा रिहा सुणाईआ। शनवाई करदा रिहा लोकां, लुकवां भेव ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतारां दा उच्ची होका, हुक्म बेपरवाहीआ। बिन हरि किरपा कोई ना उठे सोता, आलस निंद्रा ना कोए मिटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को सतिगुर बहुता, बहु गिणती विच कदे ना आईआ। नित नवित कदे ना पए होछा, हुशियारी विच हुशियारां दए बतलाईआ। किसे नाल करे ना गुस्सा रोसा, जुग जन्म दयां विछड़यां रुसयां लए मनाईआ। बिना भगतां किसे दवारयों ना खावे तोसा, भोग भगवान ना कदे लगाईआ। प्रेम प्यार दा रस जगत पदार्थां विच्चों बहुता, प्रेम प्यारयां विच्चों कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जन्म मरन दी दूर कराए सोचा, सोच विच्चों सच सच विच्चों सति सति विच्चों हो प्रगट आपणे विच समाईआ।

✪ ६ विसाख शहिनशाही सम्मत २ लक्ष्मण सिँघ दे गृह हरि भगत दुआर दिल्ली ✪

सतिगुर शब्द कहे जन भगतां भगती करावां आपणी रुचीआ, कोटन कोटि जगत अक्खां वाले वेखण कोए ना पाईआ। जिथ्थों इक्को प्रेम प्यार मुहब्बत सोहवे साची रुतीआ, रुत्त अगम्मी आपणे रंग रंगाईआ। एका दूजा भउ रहे कोए ना दुतीआ, एका एक मिली वड्याईआ। सुरत सवाणी रहे मूल ना सुतीआ, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। मन वासना लग्गे कोए ना रुचीआ, रचना माया ना कोए भरमाईआ। शाहो भूप सति सरूप मिले पंज मुखीआ, जो पंचम देवणहार वड्याईआ। जिस दा लेखा बोध अगाध रहे ना लुक्कया, परदयां विच्चों परदा दए उठाईआ। जिस दे दुआर उत्ते रहे ना कोए दुखीआ,

जन्म मरन दा रोग ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। जन भगतां अंदर दस्से उह समाधी, जिस विच जगत अंगड़ाई ना कोए रखाईआ। मन वासना रहे बांधी, बन्धन कूड़ा मोह चुकाईआ। सुरती ढोले रहे गांदी, तूं ही तूं राग अलाईआ। भूमिका मिले अगम्मी ठांडी, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। लख चुरासी बणना पए ना पाँधी, जूनां विच ना कोए भवाईआ। मिले वड्याई जन्म कर्म धुरां दी, धुर लहिणा मस्तक विच्चों चुकाईआ। लोड़ रहे ना दीपक शमां दी, शमशान भूमी विच्चों बाहर कढाहीआ। तृष्ना रहे ना कोई तमअ दी, तमन्ना अंदरों पूर कराईआ। मार खाणी ना पए जमां दी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। घड़ी वेखणी ना पए ग़मां दी, हिरस हवस दए गवाईआ। लेखे लाए धार दमां दी, दामनगीर हो के दमन आपणे विच कराईआ। चले चतुराई ना कोई नावां दी, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। मंज़ल मुके जुग चवां दी, चौथे पद दए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। काया कुटीआ अंदर दस्से धुर दा जोग, जगत जुगीशरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। ममता मन रहे ना रोग, हउमे हंगता ना कोए भरमाईआ। झगड़ा रहे ना लोक परलोक, सलोक इक्को इक सुणाईआ। चिन्ता ग़म रहे ना दोख, दुखियां दर्द दए मिटाईआ। सच दवारे बख्शे मौज, मेला मेले सहिज सुभाईआ। नाम निधाना देवे चोग, चुग़ली निंदया विच्चों बाहर कढाहीआ। अन्तर प्यार दर्शन देवे रोज़, रोजिआं विच फाका ना कोए कटाईआ। समझ विच किसे ना आवे सोच, बुद्धी विच परदा ना कोए उठाईआ। जन भगतां किरपा करके दस्से आपणी खोज, बिन खोजत ख़बर दए पहुंचाईआ। जगत जन्म दा दाता बण के बख्शे साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। सन्त सुहेला साची मंज़ल जावे पहुंच, पंचां दा परपंच दए गवाईआ। जित्थे मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को खौंत, ख़तरा लख चुरासी दए गवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कदे ना जावे औंत, भगत भगवान मिल के साची धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। काया कुटीआं अंदर दस्से धुर दा गीत, गहर गम्भीर गोबिन्द आप जणाईआ। भगत भगवान दी साची चले रीत, हड्ड मास नाड़ी रत रती रत ना कोए डुलाईआ। धार हो के वसे अन्तर चीत, चेतन हो के चातृक लए उठाईआ। तन वजूद काया माटी कर के ठांडी सीत, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। जन भगत आपणा हमसाया बणा के नज़दीक, वास्ता इक्को घर रखाईआ। आपणे हथ्थ रख तौफ़ीक, हुक्म संदेसा इक दृढ़ाईआ। करे कराए ठाकर ठीक, ठोकर विच जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे गए उडीक, ओढण आपणा रिहा बदलाईआ। जिस दी शब्दी सतिगुर करे तस्दीक, शहादत अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रखे तौफ़ीक, तुआरफ़ विच सफ़ारश विच इबारत विच जन भगतां बख्शिश करे चरण प्रीती माण वड्याईआ।

✪ ७ विसाख शहिनशाही सम्मत २ अर्जन सिँघ दे गृह बलोचपुरा ज़िला करनाल ✪

पुरख अकाल अगम्म अथाह, अलख अगोचर शहिनशाहीआ। जन भगतां दस्से एकँकारा इक्को राह, रहबर हो के दया कमाईआ। दर दवारा धुर दरबारा दए वखा, नर निरँकारा सोभा पाईआ। शब्द इशारा इक जणा, नाम निधाना श्री भगवाना परदा आप उठाईआ। मेला मिलाए सहिज सुभा, दूई द्वैती अंदरों दए चुका, चार कुण्ट दहि दिशा कर रुशनाईआ। जलवागर नज़री आए खुदा, आत्म परमात्म रहिण ना देवे जुदा, जागरत जोत डगमगाईआ। धुर दा नग़मा नाम सुणाए सदा, सूफ़ी सन्त फ़कीर लए उठा, आलस निंद्रा मात मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सरन कहे मैं भगतां जोगी, जगत जोगीशरां हथ्थ कदे ना आईआ। मेल मिलावां प्रीतम चोजी, जो चार जुग दा लेखा रिहा चुकाईआ। अन्तर आत्म बख्श के इक्को सोझी सूझ समझ दयां बदलाईआ। जन भगत कर्म दा रहे कोई ना रोगी, निहकर्मी मेला मेले सहिज सुभाईआ। जिस दी धार समझे कोई ना बोधी, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। सो गुरमुखां चुक्के आपणी गोदी, बाल अंञाणे आपणे रंग रंगाईआ। ठाकर हो के सचखण्ड दा मौजी, मजलस धुर दी विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। सरन कहे मैं वेखां खेल देवत सुर दी, विष्न ब्रह्मा शिव ओट रखाईआ। खेल जाणां अनन्द पुर दी, पुरी अनन्द परदा ओहला चुकाईआ। सेवा वेखां पूरे सतिगुर दी, जो सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। मंज़ल वेखां ओस घर दी, जिस गृह मिले माण वड्याईआ। गुरमुख आत्म मरन विच कदे ना मरदी, जन्म विच जन्म ना कोए भवाईआ। साची मंज़ल अगम्मी चढ़दी, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। कन्त सुहागी इक्को वर दी, वारता पिछली जाए भुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दी, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। बिन अक्खां दर्शन करदी, बिन दीद ईद चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वखा दे आपणे दर दी, जित्थे इक्को वजदी रहे वधाईआ।

सच्च दवारे लग्गा नावां, गुरमुखां मिले माण वड्याईआ। भगत भगवान दीआं सांझीआं होईआं बाहवां, चतुर्भुज वाली पिछली वण्ड रही ना राईआ। धन्न धन्न धन्न जणेंदीआं मावां, जिन्हां अंदर वज्जे वधाईआ। अगे प्रेम प्यार दा रिश्ता होया सांवां, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गोबिन्द दा लेखा पत्रयां विच्चों वरका निकले बेदाअवा, दाअवेदार अगले दिता बणाईआ। जन्म तों पहलां बाद भरना पए किसे ना हावा, हौकयां विच आपणा आप ना कोए मिटाईआ। बिन रसना जिह्वा गीत आत्म परमात्म धुर दे गावां, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वड्याई कहे मैं की दस्सां सलाह, साहिब हुक्म इक जणाईआ। पूरब लहिणा रिहा चुका, चार जुग दा लेखा रिहा गवाईआ। साचे दर रिहा बहा, महल अटल वज्जे वधाईआ। पूरब दा पूरब लहिणा झोली पा, अगला हुक्म इक सुणाईआ। जिन्हां ने सेवा लई कमा, सरसे दे विछड़े सहिजे लए मिलाईआ। एसे कारन लए बुला, माझे विच्चों महबूब आपणे बाहर कढाहीआ। जिस नूं दूजा बदले ना कोए खुदा, खुद आपणे हुक्म विच रखाईआ। एथे ओथे अगे पिच्छे दो जहान होण ना देवे कदे जुदा, वक्खरा अंग ना कोए रखाईआ। गोबिन्द इक अन्त अख़ीर बिन अक्खरां ढोला गया गा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। अंगीठे विच बहण लग्गे नेत्र आंसू ल्या वहा, ध्यान माझे विच टिकाईआ। पुरख अकाल ल्या मना, बेनन्ती बिन हथ्थां दिती सुणाईआ। जे बणें पिता माँ, इक्को गोद बह के खुशी मनाईआ। अगे गुरमुखां दा मेरा लेखा इक्को घर दएं सुहा, दूजा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं की दस्सां हालत अज्ज, कहिण वाली कथा ना कोए बणाईआ। की बहाना प्रभ ने लाया पज्ज, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिस नूं कोई जाण ना सके वकील जज्ज, अक्खरां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा हक, हकीकत विच्चों झोली रिहा भराईआ। जिन्हां उत्ते कोई नहीं रिहा शक, शकूक शिकवे सारे दिते मिटाईआ। अगे मेहर दा सिर उत्ते रखे हथ्थ, हथेली उत्ते आपणा आप जमाईआ। नाम प्यार दी दे के वथ, वक्खरे सब तों लए कराईआ। बिना अक्खां तों दे के अक्ख, दर्शन देवे चाँईं चाँईंआ। जन भगतो तुहाडा पिछले जन्म दा जस, गावण दा वेला रिहा सुहाईआ। कोई ना किहो असीं गए थक्क, थकावट जन्म जन्म दी दिती मिटाईआ। तुहाडे अंदर जावां वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। गोबिन्द नंदेड़ विच बह के इक बचन बोलया सच, सति कर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेखां माझा देस, जित्थे महबूब फेरा पाईआ। होवे सच

नरेश, नरायण बेपरवाहीआ। देवे इक संदेश, भगतां आप उठाईआ। मेरे लेखे लावे मुच्छ दाढ़ी केस, किस्मत सब दी दए बदलाईआ। मैं ओन्हां लवां वेख, जो मेरे पिच्छे आपणा आप मिटाईआ। मैनूं फेर किसे नहीं कहिणा दस दस्मेस, दहि दिशा विच नज़र किसे ना आईआ। मेरी बदल जाणी रेख, रेखा जगत देणी बदलाईआ। मैं रहिणा सदा हमेश, जन्म मरन विच कदे ना फेरा पाईआ। बदल के आवां भेस, जोती जाता आपणा लै के नाल धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। जन भगतो कोई ना किहो असीं वाढी नाल कीती दाती, बल बाहवां वाला वखाईआ। तुहाडे पिच्छे सचखण्ड विच खेल कीता रातीं, गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे कर के सब नूं दिता वखाईआ। ज़रा वेखो मार के झाती, बेदाअवयां दे हावे दिते गवाईआ। मेरी लेटे उत्ते छाती, बच्चयां नालों बच्चे प्यारे लए बणाईआ। मेरी अज्ज दी नहीं कोई बाती, जुग चौकड़ी चली आईआ। तुहाडी मंज़ल पार कर दिती घाटी, घाटा एथे ओथे दो जहान रहे ना राईआ। तुहाडी मंज़ल मुकी वाटी, सचखण्ड दवारा दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। माझे वाल्लयो क्यों तुहानूं सद्दयां इकल्ले, सदमा पिछला दिता चुकाईआ। जे तुसीं भज्जे सो किसे विच्चों हल्ले, हालत तुहाडी दिती बदलाईआ। तुहानूं फेर वसावां ओसे महल्ले, जित्थे गोबिन्द सोभा पाईआ। तुसीं माढ़े नहीं चंगे जे भले, भार तुहाडा दिता उठाईआ। क्यों साहिब सुल्तान मेहरवान तुहाडे हो गया वले, वलवले अंदरों दए कढाहीआ। नाम वस्त अमोलक बन्ने तुहाडे पल्ले, ख़ाली हथ्थ ना कोए जाईआ। तुसीं ओस साहिब नाल रले, जिथ्थों करे ना कोए जुदाईआ। तुहानूं कलयुग माया मूल ना छले, ममता मोह ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखो तुसीं माझे दे नहीं वासी, पुरख अकाल चरण दए सरनाईआ। तुहाडे अंदर निर्मल जोत प्रकाशी, जो बिन दीपक करे रुशनाईआ। तुहाडी मण्डल तों परे रासी, जित्थे गोपी काहन नाच ना कोए वखाईआ। तुहाडा इक इकल्ला निरगुण निरवैर पुरख अबिनाश साथी, दूजा संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण कँवल बख्शे अगम्मी दाती, दातार दाता हो के आपे जोत जगाईआ।

✪ २१ विसाख शहिनशाही सम्मत २ इन्द्रजीत सिँघ, अजमेर सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द कहे मैं दो जहान वेखी कुटीआ, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। बिन भगतां लख चुरासी

६१४
१६

ख़ाली वेखी लुटीआ, आबे हयात अमृत धारा ना कोए सुहाईआ। सच सुहञ्जणी सोहे कोई ना रुतीआ, रुतड़ी रुत अबिनाशी अचुत ना कोए महकाईआ। चार वरन अठारां बरन भाउ जाणया दुतीआ, एका एकँकार एका रंग ना कोए समाईआ। जगत वासना सृष्टी दृष्टी वेखी सुतीआ, सोवत जागत हरि का दरस कोए ना पाईआ। मानस जन्म कलयुग जीव करन आए बुत्तीआ, बुत्तख़ाने अंदर मन वासना रही कुरलाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी मिल कोई ना उठीआ, सति सच लए ना कोए अंगड़ाईआ। आत्म परमात्म परम पुरख लग्गे कोए ना रुचीआ, रचना कूड़ी तक्के जगत लोकाईआ। बिन सतिगुर चरण तन माटी ख़ाक होए कोए ना सुचीआ, सुच संजम कीते कम्म किसे ना आईआ। जिस दी याद विच जुग चौकड़ी मुकिया, मुकम्मल गुर अवतार पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। जो गुरमुख सन्त सुहेले करे मुक्खीआ, मुख अन्तर नरंतर बसन्तर दए बुझाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले करे सुखीआ, सुखआसण सिँघासण पुरख अबिनाशण इक दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सरन कहे मैं तक्कां लख चुरासी, धुर हुक्म ध्यान लगाईआ। बिन भगतां सब दे गले दिसे फाँसी, फ़ैसला हक ना कोए सुणाईआ। सचखण्ड दुआर दा बणे कोए ना वासी, वसल यार करे ना कोए नूर खुदाईआ। कलमयां अंदर भुल्लया बन्दा ख़ाकी, ख़ालस रंग ना कोए चढ़ाईआ। बिना महबूब खोल्हे कोए ना ताकी, तकवा हक ना कोए जणाईआ। जिन्हां दा मेल होया इतफ़ाकी, इतमीनान दए जणाईआ। प्रेम प्याला देवे बण के साकी, सकयां तों लए छुडाईआ। वस्त अमोलक दे के दाती, दातार आपणा भेव खुल्हाईआ। पूरब लहिणा जाण के बाकी, बन्धन अगले दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म कहे मेरा हुक्मी संदेसा, फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वड नरेशा, नर नरायण शहिनशाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित रहे हमेशा, सदा सदा सद आपणा खेल वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दो जहानां बणया रहे मीता, नित नवित आपणी कार कमाईआ। भगत सुहेला इक इकेला करदा रहे हेता, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी हो के भुल्ले कदे ना चेता, चातृक गुरमुख गुरसिख गुर गुर लए उठाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दुआर खड़ के खोल्हे भेता, भावना भाउ भय भउ भावी विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी हरि हरि आपणे रंग वखाईआ। हरि हरि रंग आदि जुगादि अनोखा, जगत ललारी समझ कोए ना पाईआ। जिस दे विच एथे ओथे नहीं धोखा, अग्नी वाली भठ्ठी ना कोए तपाईआ। मंज़ल मार्ग राह दस्स के सौखा, सोहणे मनमोहणे गुरमुख लए तराईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोका, लुकवां

भेव अगला दए खुल्हाईआ। पढ़ना पए ना कोई पोथा, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। लभ्भणा पए कोई ना कोठा, मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। जित्थे रहे कोई ना रोगा, हँ ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। तत्तां वाला दिसे कोई ना चोगा, तन वजूद ना कोए सफ़ाईआ। बैरागीआं वाला धारना पए ना जोगा, जगत जोगीशर ना कोए समझाईआ। अलख जगा के देणा पए ना होका, रसना ढोला गीता ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चरण प्रीती दे के इक्को मौका, मुफ्त आपणे नाल रलाईआ। मुफ्त कहे मेरी कोई ना जाणे कीमत, क्यामगाह विच गुर अवतार ना कोए चुकाईआ। जन भगतां वक्त दस्सां, ग़नीमत, ग़मी दे विच्चों गुमनाम बाहर कढाहीआ। परदा रहे ना त्रिया त्रीमत, तवाम आम बमकाम निशान ना कोए वखाईआ। विचारनी पए ना कोए ज़हिनीअत, ज़िहन जहान ना कोए रुशनाईआ। वड्याई दिसे ना कोए विच ज़ीनत, ज़ेर ज़बर ज़बर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सदमे दए मिटाईआ। सद कहे सदा मेटदा रहां सदमा, सदी सदीवी समझ कोए ना पाईआ। गुरमुख तारां विच्चों पदमां, पदम दी रेखा दए गवाहीआ। पुरख अकाल दे रखां विच कदमां, कदीम तों धारा जिस दी चली आईआ। नाम निधान सुणावां नग़मा, नबीआं दी सेवा इक समझाईआ। नूर नुराना देवां चशमा, चशमे दीद शमां गुल गुले गुलशन इक महकाईआ। ६१६ १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं सदा बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं वेखां शाह फ़कीर, आहला अदना खोज खुजाईआ। मैं फिरदे वेखे फ़कीर, फ़िकरे ढोले रहे गाईआ। प्रभू दी वेखी तदबीर, तालीम विच सके ना कोए समझाईआ। शरअ दी वेखी ज़ंजीर, शरीअत नाल लड़ाईआ। दुनी दी वेखी तकदीर, तकब्बर विच लोकाईआ। दुद्ध दी वेखी तासीर, तबा रही बदलाईआ। झगड़ा प्या अमीर ग़रीब, अमरापद ना कोए समझाईआ। साची दए ना कोए तरतीब, दीन मज़्ब पल्लू ना कोए छुडाईआ। खेल वेख्या अजीब, अजब निराला हरि कराईआ। जन भगतां पूरी होई उम्मीद, आमद विच खुशामद विच दर पाया बेपवराहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे तमहीद, सिफ्तां विच सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दस्से इक प्रीत, प्रीतम हो के परम पुरख आपणा रंग रंगाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा भीतर हो के वस्या भीत, करे कराए ठांडा सीत, सीतल धारा सति स्वामी इक वहाईआ। जन भगत अंदर बाहर होण ना देवे पलीत, फ़रीक फ़िरका मन ना कोए बणाईआ। नाउँ निरँकारा दे के इक तौफीक, हदीस कलमा सच पढ़ाईआ। नेड़े आए ना कोए अबलीस, लाअनत जामा ना कोए छुहाईआ। मुर्शद मुरीद बणा के अज़ीज़, मुहब्बत विच आपणी गोद उठाईआ।

साचे घर दी दस्स तमीज़, तमा कूड़ी दए गवाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, इक्को रंग दए चढ़ाईआ। जन भगत जगजीवण दाता मिल के जगत जावण जीत, हार हिरदे विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बख्शणहार प्रेम प्यार दी इक बख्शीश, बख्शश विच्चों बख्शश रहमत विच्चों रैहम कायम मुकाम मुकीम मुकम्मल आपणी दया कमाईआ।

✪ २३ विसाख शहिनशाही सम्मत २ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

भगत भगवान आदि जुगादी बन्धन, बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म देवे साचा अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए चन्दन, निरगुण चांदनी चन्द जोती जोत जोत रुशनाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी हो के लाए अंगन, अंगीकार खुद मुखत्यार इक अख्वाईआ। लहिणा देणा मूल चुकाए लोकमात वरभण्डन, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ लेखा रहे ना राईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार आए मंगण, प्रेम प्रीती साची नीती आपणी झोली पाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण निरवैर आए लँघण, जगत दवारका लेखा रहे ना राईआ। निरगुण निरगुण नाता आए गंढुण, सरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। चरण धूढ़ी अमृतसर नुहाए साची गंगन, अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। भगत भगवान आदि जुगादी मेला धुर दा, धुर मस्तक लेखा आप बणाईआ। जुग चौकड़ी मेला मिलदा रहे सच्चे सतिगुर दा, सति स्वामी शब्द अनामी इक्को बेपरवाहीआ। अन्तर अन्तर निरंतर साचा फ़ुरना रहे फुरदा, मन वासना झगड़ा दए चुकाईआ। ताल बणया रहे सुरत सवाणी शब्दी सुर दा, सोवत जागत इक्को रंग वखाईआ। लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी मुकाउँदा रहे अनन्द पुर दा, पूरन ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। झगड़ा चुकाउँदा रहे कलयुग कूड़ी क्रिया अन्ध घोर दा, सति सतिवादी आपणा नूर कर रुशनाईआ। लेखा रहिण ना देवे पंज चोर दा, ठगौरी मन ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कारज करे लोड़ दा, लोड़ींदा साजण दया कमाईआ। जन भगतां मेला आदि अन्त, अन्तश्करन लेखा रहे ना राईआ। मेला मिलदा रहे गुरमुख साचे सन्त, सति सतिवादी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोड़ जुड़दा रहे धुर दे कन्त, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चलदा रहे इक्को मंत, मंतव सारे हल्ल कराईआ। रुत्त मौली रहे सदा बसन्त, फुल्ल फुलवाड़ी पत्त डाली आप महकाईआ। भगत भगवान जोड़ा जुड़दा रहे विच्चों जीव जंत, जीवण

जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी वेख वखाईआ। भगत भगवान इक्को गृह हुन्दा रहे वास, निवास अस्थान मिले वड्याईआ। इक्को मन्दिर हुन्दा रहे प्रकाश, प्रकाशवान नूर खुदाईआ। बिन मंज़ल बणया रहे साथ, सगला संग आप जणाईआ। पूरब जन्म पूरी करदा रहे आस, आसा मनसा आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण हो के वसदा रहे पास, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। प्रेम प्रीती अंदर देंदा रहे शाबाश, शहिनशाह हो के आपणी खुशी वखाईआ। झगड़ा मुकाउँदा रहे पृथ्मी आकाश, अकल कलधारी आपणी खेल वखाईआ। लेखे लाउँदा रहे पवण स्वास, साह साह आपणा नाम जपाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को दस्से के जाप, ज़ामन हो के लए छुडाईआ। कोट जन्म दे मेट देवे पाप, मेहरवान हो के आपणा दरस कराईआ। तन माटी ख़ाकी करे पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। जुग चौकड़ी पूरा करे वाक्, भविख्त लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख गुर गुर बणा साक, सज्जण हो के मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म वेख आपणी ज़ात, परदा ओहला दए चुकाईआ। भगत भगवान इक्को मन्दिर अंदर धुर दा वास, दूजा गृह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा रखे आपणे हाथ, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ।

६१८
१६

पहली जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल

बिजली कहे आदि जुगादि ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर खेल तमाशा, जल विच थल विच जल विच पल विच खेल कोए ना पाईआ। सन्त भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त साख्यात प्रभू वेखे आप तमाशा, तमाशबीन दीन दुनी जगत लोकाई नाल मिलाईआ। मैं तूं तूं मैं हँ ब्रह्म पारब्रह्म आत्म परमात्म निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण ज़ात अजाती खेल बहुभांता, दिवस राता आपणी कार कमाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर शाह हकीर बेनज़ीर लाशरीक सच तौफ़ीक अगम्मी करन अगम्म बाता, अजपा जाप बिन पुन्न पाप, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द वाक्, वाका ख़ाका नाल इतफ़ाका धुर दा दाता वेख वखाईआ। सहिज सुभाउ बेपरवाहो सच न्याउँ शब्दी धार सच जैकार एकँकार निराकार कर पसार बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सूरा सरबंग मारे अगम्मी हाका, हाकम धुर दा लेखा कोई ना जाणे ताल सुर दा सारंगा सति मृदंगा अनहद नादी ब्रह्म ब्रह्मादी साची धार जणाईआ। पतासे नालों भगत भगवान दा मेल चंगा, जित्थे अठसठ तीर्थ ना कोई जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, तन्द तन तम्बूर रबाब वजाए मृदंगा, खेले खेल निरगुण सरगुण मेल चढ़े रंग तन वजूद ख़ाकी

बन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट घट वासी पुरख अबिनाशी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सन्त सुहेला इक इकेला गृह भीतर गृह गृह वेख वखाईआ। बिजली कहे मैं खुरदा वेख्या उह पतासा, जिस दा वजूद नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं दीन दुनी दोवें करे हासा, हस्ती विच हस्ती बेपरवाहीआ। जिहदा इक्को नाल इक्को नाता, दूजे विच दूजा हो ना कदे समाईआ। इक्को मालक इक्को पालक इक्को होवे साका, सज्जण सैण बिन नेत्र लोचन नैण बिन अक्खां इक अख्वाईआ। इक्को नूर ज़हूर इक्को होवे ज़ाता, आदि जुगादि धुर दा देवे साथा, सगला संग बणाईआ। बिन कर्म कांड विच ब्रह्मांड निराकार करे खेल तमाशा, तमअ तरंग सूरा सरबंग ना कोए उठाईआ। भगत सुहेला इक इकेला खेल जाणे गुरू गुर चेला सज्जण सुहेला पूरन पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करनहारा अन्तर अन्तर पूरी आसा, निराशा विच करके वासा, निरगुण नूर जोत निरगुण प्रकाशा, अबिनाशा आपणा रंग चढ़ाईआ। कोट जन्म दे पिच्छों परम पुरख दे नाल सुभावक मिलण दा हुन्दा वाकया, वाकिफ़कार बिना इलम दे पावण सार, बिना मंज़ल दे चढ़न दवार, बिना लभ्भण तों वेखण यार, बिना सुणन तों सुणन जैकार, जै जैकारा हरि हरि प्यारा हरि मन्दिर महबूब उच्च अरूज, अर्शे आज़म इक्को धुन धनवादी हो आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर सच घर यार, बिन तेल बाती दीवे कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। बिजली कहे मैं पतासे नूं वेखणा खुरदा, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। लहिणा देणा जानणा ओस सतिगुर दा, जो सुत्यां रिहा उठाईआ। जो बिना भजन बन्दगी परमात्म हो के आत्म जुड़दा, जोड़ी धुर दी सदा बणाईआ। जो एथे ओथे दो जहान जगत प्यार विच कदे ना मुड़दा, माया ममता मोह ना कोए फसाईआ। करे खेल अगम्मी अगम्म होर होर दा, चन्द चकोर ना कोए वड्याईआ। लेखा लहिणा देणा जाणे आपणी लोड़ दा, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। झगड़ा चुकाए मन वासना चोर दा, नौ दुआर ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिजली कहे मैं वेखां पतासा भुरदा, किणका किणका रूप बदलाईआ। लहिणा देणा जाणां ठग्ग चोर दा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। शाहसवारा वेखां अगम्मी घोड़ दा, जो दो जहानां भज्जे वाहो दाहीआ। जन भगतां लेखा करे आपणे भाग मथोर दा, मिथ्या दस्से अवर लोकाईआ। सच दवारा जित्थे झगड़ा नहीं किसे शोर दा, सुन्न समाध ना कोए लगाईआ। अन्ध रहे ना कोई अन्ध घोर दा, जगत बिजली ना कोए डगमगाईआ। इक्को प्रकाश पुरख अबिनाश करे मोर तोर दा, तुरीआ पद तों तुरत अगला पैंडा दए वखाईआ। जन भगतां बिना कारज किसे ना सौर दा, सोवत जागत वेखी जगत लोकाईआ। जगत वासना

लहिणा देणा नहीं फुल्ल ते भौर दा, गुरमुख आसा सच वासना जगत कँवल कलमबन्द ना कोए कराईआ। एह नाता नहीं गुड्डी तन्द डोर दा, पेचा ला ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिजली कहे मैं पतासा रूप वेखणा दीन दुनी, दो जहानां नज़र उठाईआ। कोटन कोटि खुर गए ऋषी मुनी, मुनीश्र आपणा आप मिटाईआ। विद्या वाले विद्वान गए बहु गुणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर पढ़ाईआ। बिन हरि भगतां प्रभ ने पुकार ना किसे दी सुणी, अनसुणत करी लोकाईआ। साचे सन्तां अंदर आपणी रख के शब्द धुनी, धुन आत्मक राग दए दृढ़ाईआ। दस्म दवारी निक्की जेही कुंनी, कुल्ली चों बाहर कढ्ढ के आपणे कुम्भ विच टिकाईआ। याद रखी जुलाहे दी ताणी बुणी, जिस दा लेखा रिहा मुकाईआ। गुरमुख हरिजन आसा रहे कदे ना ऊणी, ऊणता विच ना कदे जणाईआ। वस्त नाम भण्डारा देवे दूणी, दुनिया तों बाहर लेखा दए कराईआ। जिन्हां दी सच्ची दरगाह पुकार गई सुणी, पतासे वांग खुर के आपणा आप ना कदे मिटाईआ। अगे ताउणी पए ना धूणी, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। नहाउणा पए ना किसे खूणी, जलधारा ना कोए वहाईआ। दीवे विच वट्टी पाउणी पए ना नालों पूणी, गोहड़े हथ्थ ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिजली कहे मैं पतासे दी वेखी हालत, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। सच दवारे दी तक्कां अदालत, प्रभ चरण ध्यान रखाईआ। लख चुरासी दी वेखां बग़ावत, मनुआ घर घर करे लड़ाईआ। परवरदिगार दी वेखां सख़ावत, जो सूफ़ीआं ख़ैर झोली देवे पाईआ। जन्म मरन दी रहिण ना देवे अलामत, झगड़ा अवर ना कोए लोकाईआ। जन भगतां सदा रखे सही सलामत, सुल्हाकुल आपणे विच समाईआ। आउँदयां जांदयां एथे ओथे दो जहानां करे ना कोए ममानत, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। लोकमात आ के दया कमा के आपणे शब्द दी दे के जाए ज़मानत, अगला हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। सच प्रेम दी बख्श के जाए नयामत, अमृत फल इक्को दए खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बिजली कहे मैं पतासे नाल करां कुछ गल्ल, अन्तर अन्तर जणाईआ। सच दस्स की पुरख अबिनाशी करदा वल छल, लख चुरासी भँवरी विच भवाईआ। की खेल होणा अज्ज कल्ह, कलमयां तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। की करनी दा देवे फल, हरि करता बेपरवाहीआ। तूं सदा खुरदा रिहों विच जल, धारा विच आपणा आप बदलाईआ। मसले विच्चों मसला कर दे हल्ल, अहिवाल अगला दे दृढ़ाईआ। पतासा कहे सुण मेरी गल्ल, सहिजे दयां जणाईआ। दीन दयाला साहिब स्वामी जिन्हां होया वल्ल, वलवले अंदरों दए कढाहीआ। नित नवित जुग चौकड़ी जन भगतां कारन लोकमात आए चल, चलित्तर आपणा ना किसे समझाईआ। वैंहदी धार दो जहान समुंद सागर

सारे देवे ठल्ल, सिर सके ना कोए उठाईआ। की होया जे लेखा मुक जाए काया माटी तन वजूद खल्ल, फ़लक ख़ुदा रहिण ना पाईआ। भगतां दी आत्म परमात्म विच जाए रल, जल विच मिल के आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पतासा कहे सुणा बिजली भैण, तैनूं दयां जणाईआ। की तूं मैनूं आई कुछ कहिण, आपणा ख़िआल दृढ़ाईआ। ज़रा खोल्ह के वेख नैण, मैं भगतां दयां दरसाईआ। जिस नूं सब ने मंनयां आपणा साक सज्जण सैण, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। जो जुग चौकड़ी देवे देण देण, गुर अवतार पैगम्बर झोली आप भराईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां नाल मिल के आपणी सुहावण आया रैण, भिन्नड़ी आपणे रंग रंगाईआ। सो गुरमुख सन्त सुहेले मेरे वांग खुर के पाणी विच कदे ना वहण, वैहन्दी धार कदे ना जाईआ। जो बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द अजपा जाप ओस दा नाम लैण, जो बिन सद्दयां पुच्छयां घर घर डेरा लाईआ। जिस नूं समझ ना सके शास्त्र सिमरत वेद पुरन अञ्जील कुरान खाणी बाणी बाल्मीक दी लिखी होई रमायण, रमता राम रमिआ कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बिजली कहे सुण पतासे वीर, वारता तैनूं दयां जणाईआ। मैं जुग जुग वेखे सन्त फ़कीर, जो फ़िकरे ढोले रहे गाईआ। जिन्हां तोड़े शरअ ज़ंजीर, सूली चढ़ के ख़ुशी मनाईआ। जिन्हां मंनयां इक्को पीर, पैगम्बर गए तजाईआ। जिन्हां दा अन्तर होया दिलगीर, बिरहों रही कुरलाईआ। ओन्हां प्यार दी वेखी शमशीर, शमां गए जगाईआ। बदलदी वेखी तकदीर, तदबीर बेपरवाहीआ। तक्कया बेनज़ीर, जो मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जुलाहे दा ताणा जाणे नहीं कबीर, बिन काअब्यों जिस काअबा दिता समझाईआ। तुहाडी सचखण्ड विच सच तस्वीर, जिन्हां दे हथों तसबी माला दिती सुटाईआ। तुहाडे पिच्छे तुहाडा मालक बणया हकीर, हिकमत नाल हाकम धुर दे दए बणाईआ। सति सच दी बख़्श इक जागीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। तुहाडा ना कोई आदि ना कोई अख़ीर, ना कोई अन्तशकरन ना कोई ज़मीर, ना कोई सुखमन टेडी बंक ना नौ दवारे दिलगीर, ना राउ रंक ना शाह सुल्तान ना फड़नी पए शमशीर, तुहाडा इक्को दवारा बंक जित्थे वसे बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सफ़री जी बिजली कदे कटण ना देवे नम्बर, मारक हक हक लगाईआ। जिन्हां दा हो गया सच सुअम्बर, एथे ओथे ना होए जुदाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब कला भरंतबर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। बिन कलम शाही दे लेखा जाणे अमल, आलम उल्मा सारे खोज खुजाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सद बैठा रहे नाल तहम्मल, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जन भगतां तोड़ के आदि जुगादी बन्धन, बन्दगी

इक्को दए समझाईआ। सच प्यार दा दे अनन्दन, अनंद अनन्द विच टिकाईआ। जो आवे टुट्टी गंढुण, नाता आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेले सहिज सुभाईआ। बिजली कहे मैं पतासे नूं दस्सणा अंदरला भेत, जिस नूं कथनी कथ ना सके राईआ। इक बचन किहा गुरू अर्जन जिस वेले सीस तत्ती पई रेत, बिन रसना जेहवा आख सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी वेख अगम्मी खेड, मेरा अन्तर खुशी मनाईआ। जिस कारन मैनूं दिता भेज, बिना भजन भय भंजन ल्या मिलाईआ। धन्नभाग तूं तत्ती तवी उत्ते माणी मेरी सेज, संगी हो के संग रखाईआ। कुछ प्रेम प्यार अंदर लिखदे लेख, जिस नूं लिखे कोए ना शाहीआ। जिस वेले निरगुण हो के धारें भेख, जोती जोत हो के जोती जोत रूप वटाईआ। ऐ प्रभू आपणयां भगतां नूं लईं वेख, किसे गुरू अवतार पैगम्बर दी लोड़ रहे ना राईआ। बदल देवीं रेख, ऋषीआं मुनीआं विच्चों बाहर कढाहीआ। वखावीं आपणा देस, जित्थे निरगुण हो के सोभा पाईआ। सुणावीं इक संदेश, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सदा कोल रखीं हमेश, विछोड़े वाली रुत्त मिटाईआ। ओनां पिच्छे जे तैनूं जाणा पए लोकमात बदेश, प्रदेशी हो के आपणे देसी लैणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरू अर्जन किहा मैं नीला नहीं तरंग, तरंग जगत नज़र ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा वजूद मेरा वजदा रहे वजूद तेरा अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। सदा भगतां दा मंगां संग, गुरमुखां नाल कुड़माईआ। अबिनाशी करते कदे ना नंगी करीं कंड, जो तेरी ओट तकाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़ा हिस्सा तेरी वण्ड, तेरी किरपा नाल नज़री आईआ। आपणी पीच के रखीं गंढु, सहिजे सके ना कोए खुल्हाईआ। प्रेम प्यार प्रीती मुहब्बत दा चाढ़ना रंग, हकीकत विच्चों हकीकत देणी समझाईआ। नूर जहूर दा बख्शणा आनंद, फ़जूल जन्म ना कोए गवाईआ। बिन भगतां तेरा सच चढ़े कोई ना चन्द, जो अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा मैं दयां संदेसा, धुर शब्दी हुक्म जणाईआ। लख चुरासी खेल खिलाउणा मेरा पेशा, गुर अवतार पैगम्बर हुक्में विच भवाईआ। कोटां विच्चों गुरमुखां सन्तां खोल्हां आपणा भेता, अन्तर निरंतर परदा इक उठाईआ। साचे भगतां पूरा करां लेखा, जिन्हां दी लिख्त मेरा भविख्त दए बणाईआ। जिन्हां दा सदा सदा सद मार्ग एका, दीन मज़्ब ज़ात पात वरन गोत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। त्रैगुण माया पंज तत पंज विकार ना लाए सेका, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तिन्हां दा रखां सदा सदा सद चेता, चेतन हो के चतुर दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे जगत मिसाल विद्या विच प्रचार, पर्चा हरि समझ

कोए ना पाईआ। बिन भगतां करे ना कोए दीदार, सनमुख हो के खुशी ना कोए मनाईआ। अक्खरां वाला जगत विवहार, विद्या नाल विद्या करे लड़ाईआ। सन्त सुहेला करे ना कोए एतबार, बिन मिलयां सांत कोए ना आईआ। लख चुरासी रुढ़दी जाए विच संसार, भवसागर पार ना कोए कराईआ। गुरमुख राह तक्कण धुर दे यार, जो याराना शाह सुल्ताना इक्को इक रखाईआ। बिना गुलशन दे दिसे उह बहार, जित्थे उडणवाली बुलबुल ना कोए चहिचहाईआ। जित्थे ख़िज़ां दी आवे कदे ना वार, पतझड़ रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को रंग रहे सच्ची गुलज़ार, कली कली आप महकाईआ। खुद खुदा बणया रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सूफ़ी सन्त बणा के वफ़ादार, मेहर नज़र इक टिकाईआ। सच भरोसा दे एतबार, बेएतबारी दए चुकाईआ। जन भगतो तुहानूं खुरन नहीं देणा विच संसार, पतासे वाला पता आपणे नाल लगाईआ। तुहाडा उह सच्चा घरबार, जित्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। बिन तेल बाती होए उज्यार, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। बिन ज़िमीं असमानां होए बहार, बिन बारश रुत्त दए महकाईआ। सहिज सहिज अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सुरत सवाणी शब्दी फड़ के, प्रेम प्रीती अंदर करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। बिन हथ्थां बाहवां फड़ के बेड़ा कर के जाए पार, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जित्थे रागां दा नहीं शमार, शमां दीप ना कोए रुशनाईआ। लै जाए ओस दरबार, जिस दरबार दा मालक बेपरवाहीआ। दरगाह साची दा हकीकत वाला यार, हुक्म इक मनाईआ। जिस दा प्यार मुहब्बत विच्चों होवे नमूदार, नुमाइंदे पीर पैगम्बर गए सुणाईआ। जलवागर जलवा वखाए बेमिसाल, जिस दी मिसल ना किसे बणाईआ। जन भगतो तुहाडा वड्डा करे इकबाल, इकबाल तुहाथों लै के ब्यान कलमबन्द रखाईआ। जिस नूं गा ना सके कोई ज़बान, सो तुहाडे ध्यान विच टिकाईआ। जिस नूं विद्या ना जाणे ज्ञान, ब्रह्मज्ञान रमज़ विच समाईआ। साचे सन्त ओस हुक्म नूं करन परवान, जो बिना परवानयां दे दए पुचाईआ। बिना सफ़र दे सफ़र अंदर रहे आण, काया कफ़नी भाग लगाईआ। बिना जगह तों जगह लए पहिचाण, जित्थे ना ज़िमी ते ना असमान, ना पीण ते ना खाण, ना हैवान ते ना इन्सान, ना दुनी ना जहान, ना विद्या ना कोई ज्ञान, ना सीता ना कोई राम, ना कोई राधा ना कोई काहन, ना कोई गुर अवतार पैगम्बर देवे ब्यान, जित्थे इक्को नूर जोत निशान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिना बिजली तों चानण देवे उह चानाण, जित्थे जलवा नूर महान, निरगुण रूप श्री भगवान, जो सब नूं देवे दान, घर स्वामी मिले आण, लख चुरासी चुके काण, आवण जावण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिना चपातीआं तों देवे पकवान, बिना परोसयां तों देवे ध्यान, बिना मंज़ल तों देवे निशान, साख्यात उतर आवे जिसनूं मन्नदे गए राम, रमता रमता सब दे अंदर रस्ते दए बणाईआ। ना तहसील ना कोई

डिसटिक, कर किरपा जिस नूं मारे आपणी हिट, बिन किरपा दे दए चिट, हरि संगत दे कर दए फिट, भावें उस नूं वट्ट कहो भावें इट्ट, थीं आई दी समझ किसे ना आईआ। भावें सब दा मानस जन्म लए नजिठ, बिन अक्खां तों नज़री आवे विच, बिन किरपा तों सृष्टी समझे टिच, दयाल हो के जन भगतां लेखा दए लिख, जिस नूं दो जहान ना कोए मिटाईआ। ना कोई बीकानेर ना कोई गंगा नगर, बालू रेत ना कोए वखाईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के प्रेम प्यार दा पावे सगन, सगल सृष्टी तों बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म करके लग्न, पिछलयां तों लए छुडाईआ। बिना बिजली तों अंदर दीपक जगण, एस बिजली दी लोड़ रहे ना राईआ। एस बिजली वाले भाखड़े दा (राह) तक्कण, गुरमुख बेपरवाह विच समझाईआ। जो थोड़े जहे हो जाण शकण, शिकवे अंदरों दए कढाहीआ। जिस दे हथ्थ दस्म दवारी दा निक्का जिहा ढक्कण, सहिजे दए उठाईआ। बिना पतासयां तों अमृत बह के छकण, अमृत रस निझर धार दए झिराईआ। बिना बोलयां तों नाद अगम्मी वज्जण, जिन्हां दी सदा वजदी रहे वधाईआ। जे चन्द चकोर नूं जांदा नहीं सद्दण, श्री भगवान भगतां दे अंदर वड़ के दए उठाईआ। जुग जुग पैज आवे रखण, एह ओसे दी बेपरवाहीआ। भाण्डे रहिण ना देवे काया माटी सक्खण, सहिजे दए भराईआ। जो सतिगुर पूरे दे आ गए पत्तन, बेड़ा अगले किनारे तों अगे दए लँघाईआ। जित्थे उह साहिब सुहेले वसण, जिन्हां दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण रागां नादां विच ढोले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र टिकाईआ। पतासा कहे मैं मनमुखां सदा खोरदा, जिन्हां प्रेम नज़र ना आईआ। जिन्हां दा नाता पंज चोर दा, पंजां विच मिल के खुशी मनाईआ। ओन्हां शौह दरयाए रोड़्दा, चुरासी पार ना कोए कराईआ। अगे हो कोए ना होड़दा, सच संदेसा ना कोए दृढ़ाईआ। राए धर्म अगे तोरदा, जो तुरत दए सज़ाईआ। खेल वेखां पैंदे शोर दा, हाहाकार विच खुशी मनाईआ। कलयुग लहिणा जाणा अन्ध घोर दा, चार कुण्ट साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वरताईआ। पतासा कहे मैं दस्सां सच सलोका, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। उच्ची कूक जणावां होका, हुक्म मन्नो बेपरवाहीआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, कूड़ी क्रिया ना कोए जणाईआ। मानस जन्म मिल्या मौका, मुकम्मल मिलो शहिनशाहीआ। जिस दा मार्ग सब तों सौखा, औखी मंज़ल दए मुकाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। भिखारी बण के फड़ना पए ना सोटा, सवानां परे हटाईआ। भेखीआं विच बन्न्हणा ना पए लंगोटा, तन ख़ाक ना कोए रमाईआ। कक्खां दा बणाउणा पए ना कोठा, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। गृहस्तीआं घरों मंगणा पए ना तोसा, बगली बांह ना कोए टिकाईआ। गोबर नाल देणा पए ना कोई चौंका,

सीस हदीस ना कोए निवाईआ। जिन्हां नूं प्रभ मिलण दा सौंका, सिधे मिलो बेपरवाहीआ। जिसनूं मिलयां कोई जावे ना औंता, औंत गयां दे घर जन्म कोए ना पाईआ। मालक मिल जाए ख़ालक इक्को खौंता, जिस नूं ख़सम कह के सारे गए गाईआ। ओस दी गोद विच लाओ ढौंका, जित्थे सुत्यां ना कोए उठाईआ। साची मंज़ल चढ़ो जित्थे कोए ना पहुंचा, सच दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपाल हो के किरपन लए तराईआ। पतासा कहे जन भगतो तुहानूं कोई रहे ना सोग, चिन्ता अंदरों देणी कढाहीआ। तुहाडा जन्म जन्म दा कटया गया रोग, जगत रोगीआं विच्चों बाहर कढाहीआ। ओस दे नाल होया संजोग, जो परमात्म आत्म आपणी खेल खिलाईआ। एथे ओथे सदा माणो मौज, मजलस इक्को नज़री आईआ। तुहाडा पूरा होया जोग, जुगती प्रभ ने दिती समझाईआ। तुहाडे बदले आप तुहानूं ल्या खोज, गुरसिखां लभ्भण दी लोड़ रही ना राईआ। जगत विछोड़ा गंवाए विजोग, विचला लेखा दए मिटाईआ। प्रेम प्यार दा प्रीतम नाल करो भोग, भगवन हो के भगतां विच समाईआ। कलयुग अन्तिम प्रभ नूं देवो रोहब, आपणा बल दयो वखाईआ। नाले कहो, हे प्रभू, जे असीं ना आउँदे तेरे नाम दा पै जांदा भोग, कलयुग जीव भोगी विषयां विच तेरा नाम मिटाईआ। सच पुछें जे तैनूं सिध्धे याद करीए सारे करदे विरोध, क्यों तेरी सिफ्त नूं पढ़ के मूर्ख झट लँघाईआ। चंगा कीता गुरमुखां नाल मनमुखां दी लड़न वास्ते भेजी फ़ौज, बिना सीमां हद्द तों अगे पिच्छे करन लड़ाईआ। थोड़ा जिहा विद्या दा दे के बोध, बुद्धी सब दी दिती बदलाईआ। माया राणी ने बणा के सारे नर तैथों भुल्ले भोज, अड्डीआं मार के सुरत दिती भुलाईआ। किसे नूं हथ्थ आवे ना मुक्ती मोख, मुफ्त विच टल्लीआं रहे खड़काईआ। अमृत रस दी मिले ना अन्तर चोग, चुग़ली निंदयां कर के झट्ट रहे लँघाईआ। श्री भगवान तेरे उत्ते रखे कोई ना ओट, गुर अवतार पैगम्बर मन्न के ओन्हां दा हुक्म रहे उलटाईआ। अंदरों कढ्ढे कोई ना खोट, खोटे हो के खटीआ सेज हंढाहीआ। बिन भगतां तों लग्गे किसे ना चोट, जो चुटकी अंदर चोरी चोरी तेरा दर्शन अंदरों पाईआ। जित्थे बुद्धी दी नहीं सोच, विद्या ना कोए पढ़ाईआ। हरख नहीं कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए वखाईआ। संजोग नहीं विजोग, नाता धुर ना कोए जुड़ाईआ। बिन तेरे मिले ना साची मौज, मौजूदा हो के दरस ना कोए दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्ध सब दा दे चुकाईआ। पतासा कहे जन भगतो मैं वेखां तुहाडा पत्तन पतित पुनीत दया कमाईआ। जिस दा इक्को धुर दा बचन, बच्चयां वांग रिहा मनाईआ। निरगुण हो के लज्जया आया रखण, सरगुण देवे माण वड्याईआ। काया गढ़ सुहाए कंचन, माटी ख़ाक वज्जे वधाईआ। निराकार हो के साचे मन्दिर आया वसण, घट भीतर डेरा लाईआ। धुर दा दीपक हो के आया

जगण, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सच प्रीती अंदर रखे मग्न, मार्ग इक्को रिहा वखाईआ। अग्नी पोह ना सके त्रैगुण अग्न, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हस्ती विच्चों हस्ती आप बदलाईआ। बिजली कहे मैं सन्तां कोलों कदे ना जावां मुक्कर, पासा दे ना पल्लू छुडाईआ। जो साहिब दा करदे शुकर, शुक्रिए विच ओन्हां सीस निवाईआ। जिन्हां दी खातर निरगुण धारों आया उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। बिना मात पिता बणा के आपणे पुत्तर, पिता पूत गोद सुहाईआ। स्वामी हो के आया पुछण, पूरब जन्मां लेखा रिहा मुकाईआ। शब्दी धार हो के आया बुक्कण, बुकल विच्चों बुकल दए खुल्हाईआ। सन्त सुहेले जन्म कर्म दे कर के मेले अगे देवे ना रुस्सण, रुसयां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बिजली कहे मेरी जगत कड़ावी चमक, सहारा पिछला नज़र ना आईआ। मेरी समझ ना आवे समझ, बेसमझ दयां दुहाईआ। जिन्हां नूं मुर्शद वाली वज्ज गई रमज़, उह रमज़ान दा लेखा गए मुकाईआ। उह छड के पढ़ाई ये अलिफ़, आरफ़ां वाली मति मिटाईआ। इके दी हो गए तरफ़, जिस दी सिम्मत ना कोए बदलाईआ। जिस दा लिख्या ना जावे कदे हरफ़, हरूफ़ां विच जम्हां ना कोए कराईआ। करवट दे के दीन दुनिया कर देवे बेतरफ़, पासा लए उलटाईआ। मेहरवान हो के सूफ़ी सन्तां मेटे हरस, हवस अंदरों दए चुकाईआ। कौण जाणे की रमज़ मारी शम्मस, पुठी खल्ल लुहाईआ। विद्या वाले अहमक, झगड़ा करे लोकाईआ। मुल्ला की जाणे सिर उत्ते कुल्ला तेड़ तहिमत, तुहमत सभनां रिहा लगाईआ। पतासा कहे ओन्हां नूं मेरे वांग कदे ना आवे ज़हिमत, बिना खुरयां तों खुद ओसे विच समाईआ। जिन्हां उत्ते हो गई रहमत, रैहम विच लए उठाईआ। सफ़र करन दी सब दी लेखे ला दए मिहनत, दर आयां दए वड्याईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के बिन अक्ख तों ला दए सैनत, बिना इशारयों इशारा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो बिन हथियारां लख चुरासी बणया रहे मकैनक, बिन बिजली बिन अलैकर्टिक आपणा सुच कर सिलैकट, डायरैकट सिध्धा दए मिलाईआ। जिस दे कोल बिना खंबिआं तों वड्डा प्राजैकट, कदी बन्द ना होवे विच बरैकट, कोई विद्या वाला कर ना सके सिलैकट, सीलां नाल बन्द ना कोए कराईआ। जिस दा माल बन्द हो के आवे ना विच किसे पैकट, राह विच रोके ना कोई सन्तरी खड़ा उत्ते टरैफक, परदा बाहरों ना कोए चुकाईआ। जिस नूं जाणे कोई ना ईसट वैसट, जिस दी कवालटी सब तों बैसट, जिस दे मालक नूं इनकम टैकस विच करे कोई ना अरैसट, इनकुआयरी करन कोए ना आईआ। जे उह किरपा करे भावें मारक देवे अनपढ़यां नूं कलास फ़सट, दया नाल बणा लए आपणे गैसट, आपणी मुहब्बत दा रख देवे टैसट, पर्चा जगत

ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब तों वक्खरी रखे लिस्ट, जिन्हां दा इक्को इक इष्ट, जिस नूं मन्नदे गए रामा नाल गुरू वशिष्ट, जिस ने गुर अवतार पैगम्बर दी हुक्मे अंदर रखी फ़रिसत, मुक्ती तों परे जुगती तों दूर लहिणे विच ना रखे दोज़ख़ बहिश्त, तन वजूद वाला तत्तां वाला कदे करे ना इश्क, जे बख़त पए ते भगतां कोलों कदे जाए ना ख़िसक, ध्रू प्रहलाद देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन बिजली तों जन भगतां अंदर प्रेम प्यार दी मार के लिशक, लशकर अंदरों चोरां वाला दए कढाहीआ। पतासा कहे मैं फ़र्क रखां ना रती, खेल दस्सां बेपरवाहीआ। जो कुछ वेखां अक्खीं, सो सच दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां नूं मिल गया कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उह गुरमुख सवाणी बण गई धुर दी सखी, नाता सकयां नालों तुड़ाईआ। ओहनूं लोड़ ना रही किसे मोमबत्ती, घर घर विच घर दा मालक करे रुशनाईआ। झलणी पए ना हथ्थां नाल पक्खी, पवण उणंजा सेव कमाईआ। पढ़नी पए कोई ना पट्टी, हरफ़ां वाली ना कोए लिखाईआ। लभ्भणी पए कोई ना हट्टी, जगत वणजारा राह ना कोए तकाईआ। इक्को मालक प्रितपालक साचा साहिब मिल जाए जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी नाम कहाणी सदा सच्ची, सति सति दए दृढ़ाईआ। जिस दी नगरी जोत उजगरी इक्को दुआर वसी, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए जणाईआ। बिजली कहे मैं भगतो कदे ना बुझदी, जिन्हां ने धुरदरगाहों मेरा नाता ल्या जुड़ाईआ। मैं खेल अंदरली बुज्झदी, बुझिआं लवां उठाईआ। एह खेल नहीं कोई लुक दी, परदयां विच्चों पड़दे दयां चुकाईआ। मैनूं याद कहाणी आई गुजरी दी कुक्ख दी, जिस दी लिख्त ना कोए सुणाईआ। उह अन्त अख़ीरी घड़ी वेखी सुख दी, जिस वेले गोबिन्द मिली वड्याईआ। धार जाणी पिता पुत्त दी, अंदर बाहर इक्को रंग समाईआ। जिस नूं झुकयां तों बिना झुकदी, झुकी नूं झुकयां लए जगाईआ। एह मैं कथा दस्सी नहीं किसे उलटे रुक्ख दी, ना तत्तां वाले मनुक्ख दी, अबिनाशी सुत मिली माण वड्याईआ। कवण खेल जाणे ओस रुत्त दी, रुतड़ीआं विच्चों रुत्ती रुत्त ना कोए बदलाईआ। मैनूं घर घर आसा आसा विच्चों आस कदे ना मुकदी, चुरासी विच चौरस्ता आपणा ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग समाईआ। बिजली कहे मैं धोखे वाली करां कदे ना बात, बातन दयां समझाईआ। सुहञ्जणी होई रात, रैण मिली वड्याईआ। भगतां बणयां साथ, गुरमुख ढोले गाईआ। मैनूं आया विश्वास, विश्व इक्को रूप दरसाईआ। ओस दे पहुंची पास, जो पासा सब दा दए उलटाईआ। जित्थे सदा निरगुण नूर जोत प्रकाश, इक्को रूप रिहा दरसाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। दुरमति मैल देवे काट, कटाखश इक्को

नाम लगाईआ। सब दी लेखे लावे दूर नेड़े दी वाट, वट अंदर रहे ना राईआ। जन भगतां देवे उह अगम्मी दात, जो दाता हो के आप वरताईआ। लहिणा देणा चुक्के तन माटी ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। पूरा करे भविख्त वाक्, वाकफ़िकार हो के वेख वखाईआ। जन भगत सुहेले अन्तर कर के साफ़, सफ़ा कूड़ी दए मिटाईआ। जन्म जन्म दी क्रिया कर मुआफ़, मेहर नज़र इक उठाईआ। हरिजन रहे ना कोए गुस्ताख़, गुसा ग़मी विच्चों कढाहीआ। लहिणा देणा करे बेबाक, पूरब लेखा झोली पाईआ। सोभावन्त सुहाए सुहञ्जणी रात, रैण नैण अक्ख रही खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहारा इक्को वर, वारता जगत ना कोए सिखाईआ। पतासा कहे धन्न वड्याई साचे सन्त, जो साहिब सतिगुर विच समाईआ। जिन्हां दा मालक इक्को कन्त, सेज सुहञ्जणी सच हंढाहीआ। नाम दस्स के धुर दा मंत, मंतव जन्म जन्म दा हल्ल कराईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। लेखा मुका के स्वर्ग जन्नत, चरण कँवल दए सरनाईआ। किसे दी करनी पए ना मिन्नत, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। सचखण्ड दवारा दस्स के सिम्मत, मंज़ल मंज़ल दए पुचाईआ। आपणी मेहर देवे हिम्मत, हौसला सच नाल जणाईआ। नाल रलण ना देवे कोई निन्दक, चुग़लखोर ना कोए हमसाईआ। जन भगत सुहेला साची मंज़ल उत्तों कदे ना जावे तिलक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। नाम अपारा दे के खिल्लत, सेहरा सति सति बंधाईआ। आत्म परमात्म दस्स के मिलत, जोड़ा धुर दा लए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए मुकाईआ। पतासा कहे मैं गुरमुख वेखे सजदे, हरिमन्दिर डेरा लाईआ। जित्थे दीपक जोती जगदे, आदि जुगादि होवे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्को रूप लगदे, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिन भगतां तों भेत कदे ना लभ्भदे, सच्चा रब्ब नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी वहण वेखे वगदे, कोटन कोटि जुग गए पन्ध मुकाईआ। कलयुग जीव रूप बणे बगले बग दे, बप्पड़े अंदरों साफ़ ना कोए कराईआ। जो इक्को श्री भगवान दा नाम जपदे, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। बिन गुरमुखां फल कदे ना पक्कदे, कलयुग कर्म झक्खड़ रिहा झुलाईआ। जिन्हां दे लहिणे देणे हुन्दे हक दे, उह दूर दुराडे आउँदे चाँईं चाँईंआ। उह संदेसे सुणदे इक्को यक्क दे, इक्को ओट रहे तकाईआ। ओन्हां नूं हुक्म आ गए पिछले कर्म कांड फ़क दे, बिना पटवारीआं कलम देणी चलाईआ। जित्थे लिखण वाले कदे ना थक्कदे ना अक्कदे, बिना अकलां तों लेखे रहे बणाईआ। बिना सफ़र तों सफ़र मिलदे उस रब्ब दे, जो रबी ख़रीफ़ दोवें फ़सलां आपणे विच्चों उगाईआ। झगड़े नहीं चुरासी लख यभ्भ दे, जमां दी चोट ना कोए लगाईआ। भगत

भगवान जुग चौकड़ी मेले प्रभू सबब दे, आपणी बिधी ना कोए बणाईआ। किसे नूं पता नहीं विछड़े कद दे, कदीम तों कदमां दा प्यार कुदरत दे कादर नाल चलया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़े मुका के दीन मज़्हब हद्द दे, मढ़ीआं विच्चों दाअवे नाल बाहर कढाहीआ। जन भगत कदे ना जम्मदा मर्दा, मानस रूप बदलाईआ। एथे ओथे मालक रहे आपणे घर दा, घर विच्चों कदे ना होए जुदाईआ। हुक्में अंदर रहे चलदा, जगत जहान सेव कमाईआ। भाणा रहे मन्नदा, भावी दा दुःख लागे ना राईआ। जगत नाता सरीर तन दा, आत्म परमात्म विच समाईआ। जिस दा लेखा पिछला बल दा, धर्म दवारे सोभा पाईआ। जोत जोत विच रलदा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लहिणा दिता कलयुग कल दा, कलम लिखे कोए ना शाहीआ। बावन दवारे आया चलदा, आयू पंज दो वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा रिहा भुगताईआ। बावन कोल आया बाल, अवस्था बाली नज़री आईआ। ओस फड़ के धुर दा लाल, गोद आपणी ल्या टिकाईआ। फल अगम्मी दिता खवाल, भुक्खे रह के दिता रजाईआ। ओधरों मंगती कीता स्वाल, भिखारन हो के दिती दुहाईआ। मेरी कर प्रितपाल, दयावान तेरी वड्याईआ। मैं वी उस दी चाहवान, जो नढ्ढे दिता छकाईआ। बावन किहा ना हो हैरान, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। एह कोई पक्कया नहीं पकवान, तवा परात ना कोए वखाईआ। जिस दे उत्ते होवां मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। अनमोल वस्तू देवां दान, चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। भगतां विच मिलावां आण, भावनी पूर कराईआ। जगत झुलावां निशान, वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। मंगती कहे मैं खड़ी भिखार, भिखारन नज़री आईआ। मंगयां तेरा दवार, दवारे सीस झुकाईआ। सब कुछ तेरे अख्त्यार, इख़तलाफ़ ना कोए दृढ़ाईआ। बावन किहा नाल प्यार, सहिज नाल समझाईआ। तेरी मंज़ल दिसे दुष्वार, औखी घाटी पार ना कोए कराईआ। तेरा जन्म ना जाए कोई स्वार, स्वार्थ विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। मंगती मांगत हो के पई रो, नैणां नीर वहाईआ। क्यों मेरे नाल करावें धरोह, की तेरी बेपरवाहीआ। मैं मुहब्बत करां मोह, तूं नाता रिहा तुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी दिती सो, समझ अंदरे अंदर जणाईआ। मेरा लेखा जाणे ना को, बुद्धिवान ना कोए वड्याईआ। जिस वेले जुग बीते चार नव नौं, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। सच प्रकाश होवे लो, अन्धेरा जगत खुदाईआ। साचा बीज देवां बो, भगत सुहेले मात प्रगटाईआ। तेरे कोलों करावां धरोह, धुर दी लिख्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी वस्त आपणयां कोलों खोह, आपणे घर टिकाईआ। बाल अवस्था दा मेरा

मोह, मुहब्बत अगे एहो चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म रहे अतीत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हुक्में अंदर समां गया बीत, वेला वक्त दए गवाहीआ। करे करावे करनहारा ठीक, ठाकर हो के ठूठे भन्न वखाईआ। आत्म परमात्म बणा के सच प्रीत, प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ। जिस ने बख्श्या मरन जीत, अन्तिम आपणे दर लए बुलाईआ। आत्मा परमात्म दा सच्चा मीत, तन नाल मोह ना कोए रखाईआ। माता पित अन्तर रहे सीत, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगे होर करे बख्शीश, बख्शिश विच्चों उजड़े दए वसाईआ।

✪ २ जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

जेठ कहे मैं जुग जुग लोकमात रिहा तपदा, मेरी अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। राह लभ्भदा रिहा सच दा, मार्ग मिले इक्को बेपरवाहीआ। जलवा तक्कां उस अगम्मी रब्ब दा, जिस नूर नूर विच रुशनाईआ। अगे खैहड़ा छुट्टे अलग दा, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिना अग्नी होवे दगदा, जोती जाता जलवागर नूर खुदाईआ। शब्द संदेशे होवे सद्दा, बिन हद्दां सद्दा इक्को नाम समझाईआ। सच प्याला देवे आपणे प्रेम प्यार मध दा, मद्धम परा पसन्ती बैखरी लोड़ रहे ना राईआ। लेखा मुकाउँदा जावे जग दा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। झगड़ा मुकावे काअब्यां वाले हज्ज दा, हाज़र हो के वेख वखाईआ। राग सुणावे आपणे नद दा, जगत ताल ना कोए वजाईआ। जन भगतां प्यारा होवे लग्ग दा, लग मातर दी करे ना कोए पढ़ाईआ। दर्शन मिले ओस प्रभ दा, जो पारब्रह्म हो के ब्रह्म रिहा उपजाईआ। खेल होवे खुशीआं विच गद गद दा, गदागद आपणी धार लए बदलाईआ। लेखा बणा के धुरदरगाही यद्द दा, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे बप्पड़े कग्ग दा, काल फास ना कोए सज़ाईआ। लेखा मुकावे कूड़ कुड़यारे दुर्गन्ध दा, सुगंध इक्को नाम जणाईआ। झगड़ा मुका दे आवण जावण पन्ध दा, पाँधी हो के फेरा पाईआ। मालक बण जाए बन्दीख़ाने विच्चों बन्द बन्द दा, बन्दना इक्को इक समझाईआ। नज़ारा दे दे आत्म अनन्द दा, परमानंद परम पुरख जणाईआ। प्रकाश कर दए आपणे नूरी चन्द दा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। नाता जोड़ के आपणे छन्द दा, सोहँ रूप लए बणाईआ। जेठ कहे मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग इक्को मंग आया मंगदा, मांगत हो के झोली डाहीआ। झगड़ा मुके मनूए मन फ़रंग दा, साची नीती इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। जेठ कहे मैं जुग

चौकड़ी रिहा फिरदा, ब्रह्मण्ड खण्ड बण बण पाँधी राहीआ। मैं मालक बणया रिहा लख चुरासी दिल दा, गृह अंदर काया भीतर वेख वखाईआ। बिन भगतां पुरख अबिनाशी कोई ना मिलदा, मिलणी करे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जेठ कहे मेरी अग्न रहे ना धुप्प, तत्व तत ना कोए जणाईआ। मेरा मालक आपणी धारों आया उठ, फेरा मेरे विच पाईआ। एके नालों दूए उत्ते गया तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बिन हथ्थां बांहवां गोदी ल्या चुक्क, चार कुण्ट कर रुशनाईआ। वस्त अमोलक दे के आदि जुगादि सब कुच्छ, कच्छ मच्छ चरणां नाल धूढ़ी विच छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा आदि जुगादी दुक्खड़ा दुःख, दर्दीआं दर्द रिहा वण्डाईआ। जेठ कहे मैं खुशीआं वाला महीना जेठ, दो जहान खुशी मनाईआ। मेरे विच आया मालक धुर दा पुरख अबिनाशी वड्डा सेठ, जिस दा लेखा लिख्त ना कोए गणाईआ। जो जन भगतां रखे सदा साया हेठ, हेठों उपर लै के आपणा चरण टिकाईआ। सचखण्ड दुआर वखाए आपणा देस, देसन्तर इक्को परदा दए उठाईआ। जित्थे सदा रहे हमेश, हम साजण बण के खुशी मनाईआ। लोकमात बण दरवेश, दर दर घर घर अलख जगाईआ। जिस दा लहिणा
६३१ देणा नाल दस्मेश, दहि दिशा खोज खुजाईआ। जोती जामा धर के भेख, भेखाधारी भेस वटाईआ। जिस नूं जाणे ना ६३१
१६ कोए नरेश, नरां दी बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार अगम्म १६
संदेश, सद्दा धुर दा इक जणाईआ। सद्दा देवे सच संदेसा, सदीआं दे विछड़े मेल मिलाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी लभ्भदे फिरन अनेकां, कोटन कोटि भज्जण वाहो दाहीआ। किसे दा पूर ना होवे लेखा, लिख्या लेख ना कोए चुकाईआ। बिन भगतां साचे सन्तां किसे ना वेखा, दृष्टी विच दृष्ट धरे ना कोए लोकाईआ। कलयुग अन्तिम बण के एकँकार एका, इक इकल्ला फेरा पाईआ। देणा जाणे जीव जीअ का, लहिणा सब तों मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सो गुरमुख सूरा कहीए सन्त, जो सतिगुर सरन सेव कमाइंदा। जिस दा नाम निधान एका मंत, मंत्र अवर ना कोए दृढ़ाइंदा। घर स्वामी हंढाउँदा धुर दा कन्त, मालक ख़ालक ख़लक विच ना कोए बदलाइंदा। तिस दा लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखे अन्त, अन्तर अन्तर लेखा सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जन्म कर्म दा बण के पांडा पंडत, बिन वेदी बिन सोढी बेदी बण बिन अंदर भेदी भेव भाव भउ आपणे विच रखाइंदा। अशमेध जग बल ल्या रचा, रुची अन्तर अन्तर बदलाईआ। नौ सत्त ल्या बुला, पत्र पंडतां ताईं पुचाईआ। साध सन्त ल्या मंगा, सुनेहुड़यां विच वधाईआ। बेअन्त भोजन ल्या पकवा, पदार्थां सोभा पाईआ।

खुशीआं नाल ल्या खवा, सुख आसण बह के खुशी मनाईआ। इक बावन ना सक्या रजा, भेखाधारी भरम विच भुलाईआ। जिस नूं कुँवारी कन्यां भईआ भैणां नाल मिल के ल्या मना, नमो नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। गल पल्लू इक पा, बेनन्ती धुर दी दिती सुणाईआ। मेरे दवारे चरण टिका, टिक्के मस्तक धूढ़ी नाल वड्याईआ। रुक्खा सुखा भोजन दयां खवा, जो राज दरबार हथ्थ कदे ना आईआ। बावण सहिज दिता सुणा, हुक्मी हुक्म विच प्रगटाईआ। जिस वेले बिन लत्तां बांहवां तों जावां जा, अचरज आपणी खेल खिलाईआ। तेरा लहिणा देणा दयां चुका, चार जुग दा लेखा झोली पाईआ। तेरे पिच्छे चार जुग दे गुरमुख मंगते दयां रजा, दर दर घर घर भोग लगाईआ। रविदास चम्यारा, बणा गवाह, शहादत गोबिन्द दयां भुगताईआ। जिस दा सदा चले जुग नाँ, तेरे नाउँ दए वड्याईआ। धुर दा बण के पिता माँ, वारस हो के होए सहाईआ। प्रेम प्यार दा पकवान लवां खा, ख़ालस गुरमुख नाल रलाईआ। जिन्हां रसना लाउणा ना होवे सूर गाँ, ग़रीबां मिल के दयां वड्याईआ। बिन हथ्थां पकड़ां बांह, पल्लू आपणे नाल जुड़ाईआ। इक वेरां कह दे हां विच हां, जुग बीतदयां देर लग्गे ना रईआ। कन्यां निउँ के सीस दिता निवा, नेत्र नैणां नीर वगाईआ। बावन हो के मेहरबां, मेहर नज़र इक उठाईआ। तेरा लहिणा देणा चुकावां आ, आप आपणा फेरा पाईआ। कोई मैनूं वाहिगुरू कहे कोई कहे खुदा, रामां दा राम रूप वटाईआ। जुज़ विच विछड़यां ना रहां जुदा, जज़बे विच्चों जज़बां लवां प्रगटाईआ। जिस वेले मेरा धुर दा हुक्म होया रवां, रवानगी सब दी देवां पाईआ। शब्द संदेसा इक्को कहवां, ढोला धुर दा दयां दृढ़ाईआ। सतिजुग फेर लगावां नवां, नवीं कार कमाईआ। जन भगतां विच खुशीआं नाल बहवां, सच दुआर वज्जे वधाईआ। सब दा लेखा कर के सावां, पिछला मूल झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र तक्कां आ, आप आपणी दया कमाईआ। सति धर्म दा दस्स के राह, रहबर हो के दयां समझाईआ। जेहड़ा पकवान बल दवारयों नहीं ल्या खा, भगत दवारे खा के खुशी मनाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत धुर सम्बंधी लवां बणां, नाते कूड़े तोड़ तुड़ाईआ। संदेसा इक्को दयां जणा, शब्दी शब्द शनवाईआ। जिस वेले तेरा तेरा परम पुरख करे विवाह, वाहवा वज्जे इक वधाईआ। संदेश्यां विच सब नूं लए बुला, जिस दा बुल्हे शाह आपणी काफी विच ढोला गया गाईआ। शम्मश तबरेज़ गया जणा, खलड़ी दे अंदर बैठा बेपरवाहीआ। मनसूर सूली चढ़ के रिहा अल्ला, अल्लाह तों अलैहदा नज़र कोए ना आईआ। लेखा नानक गया लिखा, घड़ीआं पलां विच्चों आपणी वण्ड वण्डाईआ। गुर अर्जन साह गया सुधा, सुदी वदी विच्चों बाहर ना कोए प्रगटाईआ। गोबिन्द मन्न के गया रज़ा, प्रभ अगे सीस झुकाईआ। बेटे प्रभ दे पेटे पा, पटने तों कीती जुदाईआ।

क्षत्री दे बेटे दी मन्न के दुआ, बच्ची नढ्ढी वेख वखाईआ। तिनां दा लहिणा देणा देणा चुका, लेखा चुक्के जगत लोकाईआ। जन भगतो अगे मार्ग देणा ला, भगत दवारे जो जोड़े जुड़े ओन्हां दी अगे होए ना कदे जुदाईआ। क्यों अठारां हाढ़ साह ल्या समझा, हुक्म धुर दा इक मनाईआ। ओस दिन सुरजीत दा सरीर होणा स्वाह, एह वस्त अमोलक इक्कीआं हथ्थ फड़ाईआ। जे तुहानूं ना बणाउँदा गवाह, गुरमुखां नूं देंदा कौण वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ सदा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। वेख्यो बेनन्ती विच भुल्ल ना रक्ख्यो रा, एसे कर के पहलों दिता लिखाईआ। फेर अगे ढोले खुशीआं वाले लैणे गा, जिंनी कहो ओनी उमर दयां वधाईआ। अगे तों गुरमुख गुरसिख बिना बच्चे तों कोई खाली रहिण ना देवां माँ, एथे ओथे दयां वड्याईआ। समें विच्चों समां दयां बदला, बदला पिछला दयां चुकाईआ। कोटन कोटि जगत जीव जहान गए खा, खा खा मरी सर्ब लोकाईआ। बल नालों तुहाडा वड्डा अस्वमेध जग दिता रचा, जिस दा भोग आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां कदे ना देवे सज़ा, सज़ा विच्चों साफ़ बाहर कढाहीआ।

★ ६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ संगत दे नवित बाबू पुरा ज़िला गुरदास पुर ★

जेठ कहे मेरा धुर दा जरम, जन्म ल्या बदलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बदले कर्म, निहकर्मी हो सहाईआ। जन भगतां बख्शे आपणी निरगुण धार सरन, शरन शरनगत इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोई मन वासना भरम, भाण्डा भरम कूड़ भन्नाईआ। साचा प्रेम बख्शे इक्को धर्म, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। निरगुण हो के सरगुण आए वरन, वरन गोत दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुरमुखां अन्तर निरंतर आपणा नाम आए पढ़न, पुस्तक विद्या हथ्थ ना कोए उठाईआ। गुरसिखां मंज़ल पौड़ी आए चढ़न, चार कुण्ट दहि दिशा नव दुआर पन्ध मुकाईआ। जन भगतां अगे आवे खड़्हन, सनमुख हो के साख्यात स्वामी हो के साहिब दरस दिखाईआ। जुग चौकड़ी कीता कौल इकरारी पूरा करे प्रन, परमात्म आत्म आपणी गंढु पवाईआ। साचे सन्तां नेत्र खोल्ह के अन्तर फरन, फ़ुरना मनुआ मन बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। चेत कहे मैं वेखां प्रभ दा अगम्मी चलित्तर, चेतन हो के ध्यान लगाईआ। जिस दा खेल वड्डा बचित्तर, वरन बरन भेव कोए ना आईआ। जो निरगुण धारों निरवैर हो के आया निक्कल, निरँकार नूर नूर खुदाईआ। भगत सुहेला बण के मित्र, मीत प्यारा आपणा मेल कराईआ। जन्म कर्म दा पिछला लेखा अगला लहिणा चुका के फ़िकर, फ़िकरा ढोला इक्को दए सुणाईआ। गुरमुखां अंदरों कदे ना जावे विसर, जुग जन्म दे विछड़े सुरती

शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। महबूब हो के मुहब्बत विच चोटी चाढ़े सिखर, साख्यात हो के नज़री आईआ। बिन रंग रूप रेख प्यार विच दस्से इक्को चित्तर, जिस दी चाहवान आदि जुगादि बणी रही लोकाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना अक्खरी धार दस्से लिखण, सिक्खण सति सच दृढ़ाईआ। दीन दुनी दृष्टी इष्टी दस्से मिथ्थन, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। गुरसिखां पूरी करे इच्छन, इच्छया अंदर भिच्छया आपणा नाम झोली पाईआ। प्रेम प्यार अंदर आवे विकण, करनी दा करता आपणी कीमत ना कोए रखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले जिस नूं धुर दे पूत दिसण, पिता हो के गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चेत कहे मैं जेठ दा वेखां हाल, जेठ कहे मैं जगह बजगह ध्यान लगाईआ। नव नौ चार दा पूरा करां स्वाल, स्वालीआ फ़िकरा जवाब विच बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा पूरा करां अहिवाल, ज़वाल वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। कूड़ नगारा वज्जे काल, कलमा कायनात भुलाईआ। कुछ लहिणा देणा गोबिन्द नाल रवाल, सम्मत चौदां रिहा समझाईआ। जन भगतां हिरदा करां विशाल, कूड़ विकार विषयां तों बाहर कढाहीआ। हरि दी सिफ्त सुणावां बेमिसाल, जिस दी मिसल ना किसे बणाईआ। गुरमुखां अंदर प्रेम दा वजावां ताल, ढोलक छैणां ना कोए खड़काईआ। बिना रसनां तों गीत गावां बण अगम्मी कवाल, तान तर्ज़ रसना जिह्वा ना कोए जणाईआ। सच मुहब्बत विच बणां गवाल, गोकल बिन्दराबन काया मन्दिर दयां समझाईआ। बन विच खोजणा पए कोई ना राम, सीता सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। मन इच्छीआ बख़्शां धुर दा नाम, मनसा ममता मोह बाहर कढाहीआ। धुर दा सजदा हक हकीकत जणावां इक पैग़ाम, कलमा हक हक सुणाईआ। मूर्खां मुग्धां कोलों कदे ना होवां बदनाम, बदीआं अंदर बदला दयां चुकाईआ। निरगुण नूर जोत सरूप हो श्री भगवान, भाग भगतां दयां वखाईआ। साचे मन्दिर दा बण के काहन, गोपी इक्को इक अन्तर आत्म दयां वखाईआ। नाम संदेसा दस्सां इक्को गान, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। जन भगतां झगड़े जन्म जन्म कर्म कर्म मेटां सर्ब तमाम, तमअ तृष्ना कूड़ी बाहर कढाहीआ। सच दवारे सचखण्ड सति सतिवादी बणावां उह महिमान, जिन्हां दा भोजन आपणा नाम बन्दगी रसना दयां लगाईआ। सति सच दा होवे पकवान, पीण खाण अमृत रस वखाईआ। सति सतिवादी झुल्लदा होवे निशान, गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव बैठण सीस निवाईआ। मिले हुक्म धुर दा इक फ़रमान, फ़रमाबरदार सारे दयां समझाईआ। कलयुग अन्तिम वेखो मार ध्यान, निगाहबान हो के खोज खुजाईआ। मानस ज़ाती झगड़ा करे इन्सान नाल इन्सान, अंस बंस आपणा गए भुलाईआ। बिन भगतां प्रभू किसे ना करे परवान, पारब्रह्म ब्रह्म विच ना कोए समाईआ। गुरमुख योद्धे सूरबीर बणा जवान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखण

विच मैदान, मुद्दत तों विछड़े सहिजे ल्या मिलाईआ। बिना चिट्ठी पत्र तो करं परवान, परा पसन्ती मद्धम बैख़री विच्चों बाहर कढाहीआ। सच दुआर दस्से इक अस्थान, असथिती अंदरों दिती उलटाईआ। गुरमुखां मानस जन्म कदे ना जाए हराम, पुरख अकाल दीन दयाल पिता हो के गोद उठाईआ। साचे गुरसिखां करे आप पहचान, पूरब जन्म दा लहिणा देणा खोजणहारा थाउँ थाँईंआ। जन भगतो तुहाडी लेखे ला के चरण कँवल प्रणाम, लोहे तों कंचन कंचन तों पारस पारस तों ख़ालस ख़ास आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ बरखे अगम्मी बारश, अग्नी अग्ग जेठ तपश दए बुझाईआ।

✪ ६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चेला सिँघ दे गृह वज़ारड रोड जम्मू ✪

६३५
१६

जेठ कहे मैं खुशीआं नाल चढ़या, चढ़दी कला दयां वखाईआ। पुरख अकाल अकल कलधारी लड़ फड़या, पल्लू आपणी गंढु पवाईआ। सच स्वामी ढोला इक्को पढ़या, पुस्तक हथ्थो हथ्थ ना कोए उठाईआ। सच दवारा वेख के घरया, गृह बह के खुशी मनाईआ। कन्त कन्तूहल कुदरत दा मालक इक्को वरया, वारता जिस दी सारे रहे गाईआ। मेरा अन्तर अन्तर होया हरया, बाहर बसन्तर अग्नी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। जेठ कहे मैं मन्नण आया हुक्म, हाकम हकीकत विच्चों दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा तुख्म, तासीर अगली देणी बदलाईआ। मैनूं गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे हो के पुछण, किस बिध मिल्या बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहे क्यों कलयुग पैंडा आया मुकण, मुकम्मल दे जणाईआ। किस बिध पुरख अबिनाशी जन भगतां आया चुक्कण, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। निरगुण हो के साची धारों आया उठण, धरनी धरत धवल वेख खुशी मनाईआ। शब्द अगम्मी शब्दी धार शाह सुल्तान आया बुक्कण, बुक्कल सब दी दए खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। जेठ कहे मैनूं चढ़या चाउ विच्चों घनेरा, घनईआ वेख खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी करे आपणी मेहरा, मेहर मुहब्बत विच प्रगटाईआ। दूर दुराडा नज़री आवे नेरन नेरा, निरगुण निरवैर निरँकार शहिनशाहीआ। जिस दा जगत नेत्र नज़र ना आए कोई तत्तां वाला चिहरा, चिन्न्ह इन बिन ना कोए समझाईआ। सो परम पुरख परमात्म सच वसाए इक खेड़ा, बिन दवारका दवारे वज्जे वधाईआ। जिस दा समझ सके ना कोई वेहड़ा, हद्द हदूद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहारा हक निबेड़ा, लेखा सब दा दए चुकाईआ। जेठ कहे मैं तक्कया

इक हज़ूर, हज़रतां दा हज़रत नज़रीं आईआ। जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, सूरबीर मिली वड्याईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां बणया मज़दूर, सेवक हो के सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच्चों कढ्ढे कपूर, करमां दा लेख दए चुकाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले शब्दी बेड़े चाढ़े आपणे पूर, पुरीआं लोआं तों बाहर रखाईआ। मनुआ पा ना सके कोए फतूर, फतवा अवर ना कोए वखाईआ। जोती जाता हो के बख्शे आपणा नूर, नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता देवणहार सदा भरपूर, भरम भुलेखा भरम दए मिटाईआ। जेठ कहे मैं वेख्या आ के जग, जगजीवन दाते दिती माण वड्याईआ। बाहरो बाहर सब नूं लाउणी अग्ग, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सृष्टी दृष्टी करनी वांग कग्ग, शाह सुल्तान देण दुहाईआ। जन भगत सुहेले प्रेम प्रीती अंदर जावण बज्झ, टुट्टी आपणे नाल जुड़ाईआ। दीन दुनी कूड़ नगारा जाए वज्ज, वजह सके ना कोए समझाईआ। जगत प्रधान कोई ना जावे बच, बचत विच ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणा नाम संदेसा देवे सच, सच सति विच मिलाईआ। जेठ कहे मैं हौली हौली खोल्हणा आपणा परदा, परदा अंदरों देणा उठाईआ। लेखा दस्सणा घर घर दा, ओहला नज़र कोए ना आईआ। लेखा जानणा जल थल दा, समुंद सागर फोल फुलाईआ। भाणा वरतणा पुरख अकाल दा, अकल कलधारी अकलां वाले देणे भुलाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख आत्म परमात्म हो के रलदा, परम पुरख विच समाईआ। खेल जाणे निहचल धाम अटल दा, वलवले कूड़े दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा सब दा जाणे पल पल दा, पलक तों पहले ख़लक ख़ालक हो के वेख वखाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ अमरो देवी दे गृह वजारत रोड जम्मू ✪

जन भगत प्रभ पावे सार, सार शब्द शब्द विच मिलाईआ। निज नेत्र नैण देवे दीदार, बिन अक्खां अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। अमृत रस निझर हकीकी जाम दए प्याल, मन वासना कूड़ी तृष्ना मेट मिटाईआ। काया मन्दिर अंदर धुर दा काअबा वखाए सच्ची धर्मसाल, सच दवारा इक्को इक सुहाईआ। बिन तेल बाती जोती दीपक देवे बाल, दिवस रैण अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। निरगुण हो के सरगुण करे संभाल, रखक रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। आत्म परमात्म हो के वसे नाल, नालिश कूड़ ना कोए प्रगटाईआ। जन्म ज़िंदगी जीवण आपणी जुगती करे बहाल, गेड़े विच फेरे विच भरम ना कोए भुलाईआ।

पूरब लहिणा आसा मनसा पूरा करे स्वाल, अहिवाल आपणा इक जणाईआ। सदा सुहेला इक इकेला पारब्रह्म ब्रह्म वसे नाल, नालिश कूड़ी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत देवे प्रभ हक दीदार, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। सोई सुरती करे बेदार, आलस ग़फ़लत ना कोए वड्याईआ। परदा लाह के दहि दिशा कुण्ट चार, चार वरन अठारां बरन झगड़ा दए चुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी दस्स के इक प्यार, मुहब्बत महबूब नाल जणाईआ। कुदरत दा कादर करनी दा करता पावे सार, सर्ब व्यापी आपणा रंग रंगाईआ। हरि सन्त सुहेले गुरू गुर चेले मेले विच संसार, संसारी हो के खुआरी दए गवाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाए धर्म दवार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परदा इक उठाईआ। नाद शब्द सुणाए सच्ची धुन धुन्कार, अनहद नादी नाद अलाईआ। वेखे विगसे पावे सार, परदा ओहला अंदरों दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगतां प्रभ दस्से एका टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। अन्तर अन्तर करना बिबेक, सुरती सुरत शब्द विच समाईआ। कूड़ कुड़यारा रहे कोई ना भेव, पाखण्ड रूप ना कोए बदलाईआ। परमात्म आत्म एकँकारा एक, एक मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत दस्से एका ओट, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। गुरमुख तेरा सति सरूप सति निर्मल जोत, प्रकाश विच्चों प्रकाश करे रुशनाईआ। झगड़ा रिहा ना ज़ात पात दीन मज़्हब वरन गोत, सतिगुर शब्द इक्को करे शनवाईआ। लहिणा देणा चुक्के लोक परलोक, लेखा मंगण कोए ना आईआ। मन बुद्धी दी करे कोई ना सोच, बिन अनुभव हमसाजण मिलण कोए ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां वाले सलोक, अन्तर अन्तर बिन रसना होवे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। जन भगत प्रभ परदा खोल्हे आप, आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जाप, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेरा नूर सदा पाक, पाक पवित सोभा पाईआ। लभ्भयां कोई कर ना सके तलाश, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। काया मन्दिर अंदर बण निरगुण धार जावां गवाच, भरम भुलावां सर्ब लोकाईआ। कूड़ कुड़यारां लावां आंच, अग्नी अग्ग तपाईआ। जन भगतां मेल मिला के कमलापात, पतिपरमेश्वर नाता दयां जुड़ाईआ। साचे सन्तां धुर संदेसा जावां आख, आख़र इक्को हुक्म दृढ़ाईआ। मन वासना होयो ना कोए गुस्ताख़, पंजां नाता जाणा तुड़ाईआ। मानुख मानव मानस एको ज़ात, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच रखो इतफ़ाक, इतमीनान आपणा नाम दए कराईआ। हथ्थों सुट्टो ना कोए रबाब, अहिबाब मिल के वज्जे वधाईआ। सुफ़ने वाला नहीं ख्वाब, ख़ालस

मिल के रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सब नूं सजदा कलमा दस्से इक आदाब, आदत इबादत अंदरों दए बदलाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ सधरो देवी पिण्ड दवाणा जम्मू ✪

जन भगत आपणा तन वजूद वेख जुस्सा नज़र विच्चों नज़र उठाईआ। आत्म परमात्म कदे ना रुस्सा, मन वासना सृष्ट दृष्ट हल्काईआ। सति सच करना नहीं कदे ग़ुस्सा, गिले विच ग़ुस्सा ना कोए पाईआ। सच दुआर रहिणा ना रुस्सा, साची सिख्या इक समझाईआ। आत्म नूर रहे ना लुका, हरिजन वेख खुशी मनाईआ। काया मन्दिर अंदर तूं मेरा मैं तेरा पढ़ना इक्को तुका, जिस नाल तोहमत लग्गे ना कोए लोकाईआ। कर्म कर्म रहे ना दुक्खा, दलिद्रां दए चुकाईआ। तन सरीर कर के सुच्चा, संजम इक्को दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम पैंडा रिहा मुक्का, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतो श्री भगवान नाता शब्दी धार पिता पुत्ता, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ।

६३८
१६

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ केसरी देवी सतिवारी रेलवे लाईन जम्मू ✪

जन भगत तेरा सच्चा रस्ता, रहबर इक्को नज़री आईआ। बन्नृणा पए कोए ना बस्ता, पुस्तक सीस ना कोए उठाईआ। सच भण्डारा मिले सस्ता, बिन कीमत झोली पाईआ। सच मुहब्बत विच होणा वाबस्ता, आहिस्ता आहिस्ता देवणहार सरनाईआ। मानस जन्म लाहा खट्टणा साचे जस दा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। नज़ारा तक्कणा निज नेत्र अक्ख दा, दोए लोचन बन्द कराईआ। चंगा नहीं लग्गदा वसणा वक्ख दा, आत्म परमात्म काया मन्दिर अंदर मिल के इक्को घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा समझाईआ। जन भगत तेरी आत्म सृष्ट सिफ्तां तों बाहर ज़ात, वरनां दा वरन इक्को नज़री आईआ। सच प्रेम प्यार मुहब्बत दी तेरी जमात, अक्खरां विच्चों निरअक्खर तेरी अगम्म पढ़ाईआ। आत्मा कदे ना पाए वफ़ात, मरन विच मर के आपणा आप ना कदे मिटाईआ। इस दी सिफ्त अक्खरां विच करे ना कोए लुग़ात, लायक नालायक भेव कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी आत्म परमात्म मेल हुन्दा प्रभ किरपा इतफ़ाक, परवरदिगार सांझा यार आपणा रंग वखाईआ। लहिणा देणा पूरब लेखा कराए बेबाक, हिसाब किताब ना कोए वड्याईआ।

सच प्रीती जोड़ के आपणा नात, नातवां तों नौजवान दए बणाईआ। बिन साहिब स्वामी अन्तरजामी सतिगुर पूरे दूसर कोलों सिक्खी किसे ना जाच, जगत मीत हक वतन ना कोए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दस्सणहारा गाथ, गावणहारा गा गा खुशी मनाईआ। जन भगत सति सति तेरा रूप मनुक्ख मनुष, मुश्कल रहे ना राईआ। मानव आए कोई ना दुःख, मंत्र आपणा दए दृढ़ाईआ। तृष्ना जगत रहे ना भुक्ख, ममता मोह विच्चों कढाहीआ। साचे नाम दी दस्स के तुक, तूं मेरा मैं तेरा इक्को घर दए वखाईआ। अगला पैंडा जाए मुक्क, पिछला लेखा ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत तेरे हथ्थ सच तौफ़ीक, यकतरफ़ मिले वड्याईआ। तेरा रहे ना कोए फ़रीक, फ़िरके कूड़े देणे चुकाईआ। काया माटी करके अंदरों सीत, अग्नी अग्ग बुझाईआ। चार वरन बणा के प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए तस्दीक, शहादत शब्द हुक्म भुगताईआ। सच दवारे दा मालक बण वसनीक, वास्ता तुहाडे नाल जुड़ाईआ। सति सच दी इक उम्मीद, अमलां विच्चों अमल इक्को देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद काया माटी सच गृह वसण वाला नज़दीक, दूर दुराडा सफ़र मुसाफ़र हो के आपे दए मुकाईआ।

६३९
१९

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी बंती देवी वज़ारत रोड जम्मू शहर ✪

जन भगत सद लेखे लग्गे जरम, जन्म जन्म मिले वड्याईआ। अबिनाशी करता करनेहार देवे आपणी सरन, सवरन कंचन गढ़ काया माटी सोभा पाईआ। इक प्रीती धुर दी नीती इष्ट पुरख अकाल चरण, दृष्टी दया नाल खुलाईआ। पूरब लेखा रहिण ना देवे कोई कर्म, कामना कायनात विच्चों पूर कराईआ। नित नवित कौल इकरार पूरा करे प्रन, परमानंद निजानंद निज गृह आप वखाईआ। झगड़ा चुका के ज़ात पाती वरन बरन, आत्म ब्रह्म इक दृढ़ाईआ। जगत विकार शब्दी धार निरगुण निरँकार आवे लड़न, नाम खण्डा सच ब्रह्मण्डां इक्को इक उठाईआ। गुरमुख सन्त फ़कीर आपणे फ़िकरे नाल आवे फड़न, डोरी तन्द मुहब्बत नाल बंधाईआ। साची मंज़ल महबूब हो के आवे चढ़न, चार दीवारी जगत दुष्वारी शत्रु दुश्मण अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मालक हो के तरनी तरन, जन भगतां तार भवसागर पार सच दरबार दवारा इक्को इक जणाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ अमरो देवी वज़ारत रोड जम्मू ✪

जन भगतां देवे प्रभ इक्को जोग, जुगती आपणी इक दृढ़ाईआ। बिन कपड़े रंगण तों बख्शे उह अगम्मी मौज, जिस दा माजरा गावे सर्ब लोकाईआ। याद अंदर याद देवे रोज़, रोज़यां तों बिना रैहम विच मिले सच गुसाईआ। नाम भण्डारा बख्श आपणी चोग, चुग़ली निंदयां कूड़ी क्रिया तों लए बचाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी दस्से साची होश, हवस हवास हमद आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेल मिलाईआ। जन भगत तपीश्र होवे सति, तपदा हिरदा शांत कराईआ। इक्को नाम लए जप, अजपा जाप विच बदलाईआ। कोट जन्म दे मिटण पप, पत्रयां दी करनी पए ना कोए पढ़ाईआ। मालक मिले जगत वाला हक, हिकमत नाल हुक्म दए समझाईआ। दयावान हो पुरख समरथ, समें नाल समां दए टकराईआ। जन भगत मेले नठ नठ, दीन दुनी विच्चों बाहर कढाहीआ। सच दवारा खोल्ह के हट्ट, वस्त धुर दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। हरि भगत वड वड्डा ऋषी, रेखा आपणी आप बदलाईआ। जिस दे पास नाम निधान धुर दी चिठ्ठी, बिन अक्खरां पढ़ के आपणी खुशी विच समाईआ। जिस दी सतर मज़मून विच निक्की, कानून विच वड्डी नज़री आईआ। धार होवे तिक्खी, तृखा तृष्ना दए बुझाईआ। मेला मिल के नाल साची सिक्खी, साख्यात सख़ावत वाला प्रभ दा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बदल देवे सम्मत वाली मित्ती, मित्र मातहत ना किसे रखाईआ। जन भगत प्रेम प्यार दा वड्डा रसीआ, रस विच रस समाईआ। नैणां विच्चों नैण नेत्रां विच्चों नेत्र अक्खां विच्चों अक्खीआं, आख़र इक्को नाल मिलाईआ। जिस मुहब्बत प्यार नूं जुगां परवान लभ्भदीआं रहीआं सखीआं, सो मेहरवान हो के भगतां अंदर दए टिकाईआ। सच प्यार दीआं रसमां चसमां अंदरों कर के पक्कीआं, जिस्म विच्चों इस्म गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ कुड़यारयां रहिण ना देवे हिस्से वाली पत्तीआं, पतिपरमेश्वर हो के इक्को हुक्म दए वरताईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बाज सिँघ दे गृह पिण्ड मटू ज़िला जम्मू ✪

जन भगत सच धार दी तेरी जुगत, जोगी जुगीशर सिफ्त सालाहीआ। सच दा मार्ग सदा दरुसत, जूठ झूठ कूड़ी क्रिया कम्म किसे ना आईआ। मुहब्बत विच्चों मुहब्बत प्यार विच्चों प्यार लैणा मुफ्त, यार नाल याराना तोड़ लैणा निभाईआ।

६४१
१६

दीन दुनिया विच्चों रहिणा चुस्त, अन्तश्करन आप आपणा वेख वखाईआ। मुड़ के आउणा ना पए मात गर्भ उलट, गेड़ गेड़ जन्म रखाईआ। जा के वेखणा आपणा विछड़या होया मुल्क, जित्थे मालक बेपरवाहीआ। जगत वासना विच ना जाणा उलझ, ममता मोह ना कोए वधाईआ। मानस जन्म जावे सुलझ, सुल्हकुल मिल के सही सलामत आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। जन भगत तेरे अन्तर रहे ना चुगली निन्दा, सति धर्म इक समझाईआ। भेव खुल्हाए दाता गहर गुणी गहिंदा, गवर सबर सवर इक आपणा आप जणाईआ। तेरा मूल निरगुण धार दस्से बिन्दा, मात पित दी रक्त बूँद नाता दए तुड़ाईआ। मानस जन्म कर के माटी चर्म दी रहे ना चिन्दा, भरम गढ़ ना कोए वखाईआ। अमृत धार रहे सागर सिन्धा, रस अनरस हो के वस, विश्व आपणा आप समझाईआ। खेल वखा के जीउ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड परदा आप उठाईआ। नित नवित जीवण जुगती भगत भगवान दान देंदा, देह विच देह आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक दरसाईआ। जन भगत तेरी मंज़ल इक निराली, बिखड़ा राह ना कोए वखाईआ। जित्थे जलवा नूर जलाली, रोशन रैहम विच प्रगटाईआ। तेरा लेखा तत वजूद जिस्म नहीं जिस्मानी, निरगुण धार बूझ बुझाईआ। तेरा मालक इक असमानी, जो इस्म आपणा आपे दए समझाईआ। सो मार्ग दस्से आसानी, असल विच वसल विच वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सच दुआर किरपा धार खावे खवावे इक महिमानी, मेहर विच रस इक चखाईआ। लेखे लाए प्यार दी कुरबानी, कायनात विच्चों कायम मुकाम मुकम्मल दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जन भगत तेरी जगत वासना विच होवे ना कदे बदनामी, बदीआं दा बदला आपणी बदौलत आपणी खुशीआं विच चुकाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश चन्द वज़ारत रोड जम्मू ✪

जन भगत तेरा सच्चा सन्यास, चरण प्रीती हरि जणाईआ। बाहरों लभ्भणा ना पए कोई प्रकाश, घर विच घर करे रुशनाईआ। होणा पए ना कदे उदास, खुशी विच ना ग़मी कोए वखाईआ। आसा होवे ना कदे बेआस, भगत भगवान जुग चौकड़ी चलदी रहे शाख़, शखसीअत विच्चों असलीअत आप समझाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे दस दस मास, मसला मस्ती वाला हल्ल कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा एहो तेरा अभ्यास, मन दा मणका बिन मणक्यों दए भवाईआ। मालक उत्ते बिन किरपा होवे ना कदे विश्वास, विषयां वाला विशा सब नूं रिहा डुलाईआ। रसना तत्तां वाला जगत स्वाद, विस्माद हो

के विश्व रंग ना कोए बदलाईआ। बिन भगतां खेड़ा होया ना कदे आबाद, आबादी विच वधदी वेखी लोकाईआ। जे सतिगुर सज्जण गया जाग, जगह जगह करे रुशनाईआ। हरिजन प्रीती सब तों वड्डा त्याग, वैराग विच्चों बैराग सीस निवाईआ। हरिजन तेरा झगड़ा नहीं विच किसे समाज, समें दा मालक समझ रमज़ विच मिलाईआ। जीउदयां जगत सनबंधीआं जवाब, मरन तों पहले आदाब, बाद विच लैणा ना पए ख्वाब मिल के धुरदरगाही इक अहिबाब, गृह साचे डेरा लाईआ। हँस बणना ना पए काग, कन्नां वाला सुणना ना पए राग, रसना वाला चक्खणा ना पए स्वाद, विकारां वाला लभ्भणा ना पए ववाद, सतारां वाला वजाउणा ना पए साज, चप्पूआं वाला तक्कणा ना पए जहाज़, जिन्हां उपर किरपा करे आप महाराज, मारफ़त विच्चों करके बाहर, नाम सिफ्ती कर के शाहर, शरीर दी शरअ विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत तेरा इक वैराग, वैरी अंदरों दए कढाहीआ। दुरमति रहे ना दाग़, द्वैती पन्ध चुकाईआ। दीआ बत्ती रहे ना चराग़, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। तत्ती लग्गे ना अग्नी आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सुणनी पए ना कोए आवाज़, नाम शब्द संगीत करे शनवाईआ। सतिजुग सति धर्म चला रवाज, रयायत विच अनायत विच हमायत विच अशायत विच कफायत विच हरिजन पास कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग अनडिठड़े धुर दे आप पुचाईआ।

६४२
१६

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी राम कौर दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ✪

जन भगत अन्तर होवे कदे ना अन्धा, बिन नेत्र नैण नूर जोत रुशनाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया होए कदे ना गंदा, जगत तृष्ना ना कोए सताईआ। सच प्रकाश आत्म ब्रह्म चढ़या रहे चन्दा, ओम सोम दोवें इक्को रंग रंगाईआ। परमानंदा विच्चों लैंदा रहे अनन्दा, निजानंद निज आनंद सुख सागर रूप समाईआ। धुर दी बन्दगी विच बणया रहे बन्दा, बन्दना अंदर बन्धन सर्ब कटाईआ। साची मंज़ल चढ़े शब्द अगम्मी डण्डा, डण्डावत विच इक्को सीस झुकाईआ। काया माटी साची हाटी खुल्ह्ले जिंदा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी जीवण विच्चों जीवण लए बदलाईआ। लेखा जाण गहर गम्भीर गुणी गहिंदा, सागर गहरा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत डगमगाईआ। गुरमुख अन्ध ना होवे अंध्यार, सति सच सति रुशनाईआ। आत्म आत्म नाल प्यार, परमात्म परमात्म विच समाईआ। बेख़बर होवे ख़बरदार, बेकदर कदरदान नाल मिल के खुशी मनाईआ। जगत ग़फ्लत विच्चों होवे बाहर, मुश्कल विच्चों मुश्कल मुसीबत विच्चों मुसीबत ग़मी विच्चों ग़मख़ार दए गवाईआ। सच दवारे हक महबूब दीदा देवे दीदार, ज़ाहर हो के आपणा रंग जणाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच नूर कर रुशनाईआ। हरि सन्त अन्तर होए ना कदे अन्धेरा, जगत अक्ख लोड़ रहे ना राईआ। इक्को लेखा जाणे तूं मेरा मैं तेरा, हउँ हँ हँ ब्रह्म विच समाईआ। आवण जावण चुरासी चुक्के गेड़ा, झेड़ा जून रहे ना राईआ। काया काअबा कुदरत वाला कादर वसावे खेड़ा, काअबा महिराबा इक जणाईआ। दरे दरबार नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के मेहर नज़र करे मेहरा, बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जलवा इक्को दए वखाईआ। गुरसिख अन्तर होवे ना कदे काली रात, अन्ध अन्धेर ना कोए वड्याईआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। साचे मण्डल पावे रास, रस्ता बावस्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जगत नैण कोई ना लवे झाक, चार कुण्ट परदा ना कोए उठाईआ। जिन्हां रमज़ वाली रमज़ इशारे विच्चों जाणी बात, किनारे तों किनारा कर के कादर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर कर प्रकाश, प्रकाश्त हो के वेख वखाईआ। जन भगतां अंदर कदे ना होवे धुंआंधार, (अन्ध अन्धेर) नज़र कोए ना आईआ। बिन तेल बाती दीपक होए उज्यार, उजाला इक्को दए वखाईआ। मेला मिल के साचे यार, मुहब्बत नाता लए जुड़ाईआ। आत्म आत्म दे आधार, परमात्म परम आत्म साची खुशी वखाईआ। शब्द सार पावे सार, तुरीआ पद पैंडा तुरत मुकाईआ। गुफ़त शनीद कर गुफ़तार, नाद अगम्मी दए वजाईआ। जिस दी समझ ना आई जुग चार, चौकड़ी कूक के दए दुहाईआ। लेखा लिख के गए पैगम्बर गुर अवतार, सेवा कर के कलम शाहीआ। सिफ्तां विच कर इज़हार, इबादत विच इबादत गए जणाईआ। बिन हरि किरपा काया मन्दिर अंदर होया ना कोए पसार, पिशर पिदर सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। जन भगतां अन्तर होवे रोशन, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जिस दा समझे कोई ना मोशन, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। संसार सागर वेख डूँघा ओशन, इशारे आपणे नाल पार कराईआ। कोटन कोटि बुद्धिवान जिस नूं सोचण, मन विद्या कर पढ़ाईआ। उह नज़र ना आया बिन भगतां वाले लोचन, बिन निज नैण दरस कोए ना पाईआ। खोज खोज थक्के चौदां लोकन, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को इक रंग रंगाईआ। जन भगतां बिना अक्ख तों खुल्ही रैहन्दी अक्ख, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। निरगुण रूप तक्क प्रतख, पारब्रह्म विच समाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पैगम्बर पीर भगत सुहेले गाउँदे जस, जगत विद्या नाल पढ़ाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह मन्दिर काया माटी अंदर रिहा वस, रस्ता रहबर हो के गुरमुखां आप वखाईआ। खुशीआं अंदर हक महबूब

मुहब्बत विच पए हस्स, हस्ती विच मस्ती मस्ती विच मतवाला मातरभूमी खोज खुजाईआ। जोगी जोगीशर तपी तपीश्र ऋषी मुनी साधू सन्त फ़कीर सूफ़ी लभ्भण नठ नठ, दिवस रैण बिन जगत नैण भज्जण वाहो दाहीआ। सो पुरख बिधाता वस्त अमोलक देवे विच्चों आपणे हट्ट, नाम भण्डारा निरगुण धारा झोली पाईआ। सति सरूप हो प्रगट, भाग लगाए काया मट, मन्दिर मस्जिद शिव दवाला मठ्ठ, नज़र कोए ना आईआ। बिन भगतां अन्तर खुल्ले किसे ना अक्ख, दीन दुनी नालों होए कदे ना वक्ख, हकीकत विच्चों लभ्भे ना आपणा हक, परम पुरख उत्ते सारे करदे शक, शकायत अंदर शिकवा, शिकवे अंदर श्रृंगार मनुआ होए ओदास, मण्डल ना वेखे रास, वस्तू ना लभ्भे पास, बदी विच गुस्ताख़, बिन सख़ी दरस ना पावे कोई साख्यात, धुर दा काहन नज़र किसे ना आईआ। जो बिन नैणां रिहा झाक, लेखा जाणे कायनात, परदा लाहे नबातात, दीन दुनी जाणे हालात, जुग चौकड़ी वेखे वाक्यात, भेव खोल्हे कलम दवात, आलम उल्मा आलमीन यामबीन रहमत रहमान ज़िमीं असमान बन्दाए ख़ाकी, ख़ालके ख़लक लेखा जाणे फ़र्शे फ़लक, बिन दीदे दीद नूरे चशम, रोशने ज़मीर ज़ाहरा पीर बेनज़ीर, आफ्ताबे महबूब, लेखा जाणे उच्च अरूज, काया माटी देवे सच सबूत, बिन भगतां अन्तर आईना होवे किसे ना साफ़, दिल दा दिल विच नज़र ना आए प्रकाश, खुहाइश विच खुशी खुशी विच ख़सूसीअत, ख़सूसीअत विच्चों नसीअत, नशरे नाब अनायत कर झोली ना कोए पाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ सूबेदार तेज भान दे गृह पिण्ड शेख़सर ज़िला जम्मू ✪

जन भगत रखे सदा उडीक, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द अन्तर आत्म करदा रहे तारीफ़, सिफ्तां नाल साहिब स्वामी सिफ्त सालाहीआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी घर मन्दिर अंदर मिले सज्जण मीत, साहिब सुहेला इक अकेला आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मिटा के ऊँच नीच, राउ रंक हस्त कीट क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। धुर दा नाम साचा कलमा दस्स आपणी इक हदीस, हज़रत हो के हरि जू करे सच पढ़ाईआ। आसा मनसा पूरी ख़ाहिश करे उम्मीद, आमद खुशामद इक्को घर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साचा गीत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन आत्मक राग अलाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण बण के साचा मीत, मित्र प्यारा एकँकारा आपणे घर वसाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना मन मनसा मेट के लीक, सति सच इक्को दए समझाईआ। सच दुआर दा जन भगत बणा के हकीकत विच्चों वसनीक, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण भगत सुहेला दया कमाईआ। प्रभ मिलण दी जो जन आस रखदा, हिरदे हरि हरि आप ध्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण हो के अंदर वसदा, जोती जाता पुरख बिधाता निर्मल जोत करे रुशनाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर मार्ग दस्से सच दा, कूड़ी क्रिया हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां जन भगतां पैज रखदा, समरथ हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी झगड़ा मुकावे आत्म परमात्म आपणा वक्ख दा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ। नाम निधाना इक्को ढोला दस्से धुर दे जस दा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल करे सदा निज नेत्र आपणी अक्ख दा, ज्ञान नैण इक खुल्हाईआ। जन भगत उडीक, विच रखे आसा मनसा मन ही मांहे छुपाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर चरण कँवल देवणहार भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। काया मण्डल अंदर निरगुण निरवैर हो के पावे रासा, सुरत शब्द गोपी काहन खेल खिलाईआ। झगड़ा मुका के पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर पन्ध दए चुकाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। दर्शन वखाए साख्याता, जोती जोत करे रुशनाईआ। हुक्मे अंदर मन्न के आखा, आख़र आपणी मंज़ल दए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जोड़ के नाता, धुर दा संग इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्तर रहिण ना देवे मनुआ मन उदासा, उत्तम सृेष्ट आपणा नाम समझाईआ। जन भगत उडीक विच जो रिहा तक्क, तकवा इक्को उपर रखाईआ। परम पुरख परमात्म परवरदिगार देवे हकीकत वाला हक, वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। शब्द अगम्मी सोई सुरती लावे सट्ट, सिट्टेबाजी कूड़ी दए गवाईआ। सच भण्डारा खोल्ह के आपणा हट्ट, वस्त अगम्मी इक वरताईआ। नाड़ बहत्तर कदे ना उबले रत्त, अप तेज वाए प्रिथवी आकाश पंज तत त्रैगुण माया लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच सिर ते रखे हथ्थ, रखक हो के रच्छया करे थाउँ थाँईंआ। जन भगत जो उडीक विच तक्के राह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी मिले बेपरवाह, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। दो जहानां बण मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचे नाउँ दी दे के इक सलाह, सच्ची सिख्या इक्को इक वखाईआ। मेहर नज़र नाल कोट जन्म दे पिछले कटे गुनाह, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र आपणी इक उठाईआ। सच दवारा एकँकारा मुकामे हक सचखण्ड दए वखा, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां परदा दए चुकाईआ। जन भगत जो उडीक, विच रिहा वेख, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। भगत उधारी

रिहा पेख, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बदल देवे रेख, ऋषी मुनी समझ कोए ना पाईआ। निरगुण हो के सरगुण आवे देस, साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण निरवैर आपणा धारे भेख, भेखाधारी अछल अछल्ल आपणी कार कमाईआ। जिस दा गुण गायण करन चार वेद, जुग चौकड़ी चार वरन अठारां बरन बख्शणहार सरनाईआ। सो सन्त सुहेला इक अकेला जन भगतां अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के खोल्हे आपणा भेत, परदा ओहला बजर कपाटी दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत उडीक विच जो रिहा तरस, तड़फ तड़फ वक्त लँघाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती इक चुआईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेटणहारा हरस, दीन दुनी दी हवस दए गवाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां प्रेमीआं प्यारयां करे तरस, रहमत विच्चों रहमत रहीम झोली देवे पाईआ। साची मंज़ल चढ़दा जन भगत कोई ना जावे अटक, सुखमन टेडी बंक सिर सके ना कोए उठाईआ। पंज विकारा कोई ना पाए भटक, रिद्ध सिद्ध बैठे मुख छुपाईआ। धुर फ़रमान नाम संदेसा मिले सख्त, कलमा इक्को इक जणाईआ। नव नौ चार पिच्छों जन भगतां मिलण दा आ गया वक्त, घड़ी पल थित वार दए गवाहीआ। मिले वड्याई लोकमात जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर गुरमुखां कारन आया फ़कत, फिकरयां विच फ़ैसला दए कराईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्दाना मर्द, मदद करे थाउँ थाँईंआ। दूर दुराडा नेरन नेरा मन्ने अरज़, आरज़ू अंदर बैठे ध्यान लगाईआ। करे खेल आप असचरज, जगत विद्या समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणयां वण्डे दर्द, दुखियां दुःख दए गवाईआ। जन भगत उडीक अंदर जो करे ध्यान, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सच बेनन्ती कर परवान, परवाना धुर दा दए फड़ाईआ। बिन अक्खरां बिन पढ़यां देवे इक ज्ञान, ब्रह्म विद्या अंदरे अंदर दए जणाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, निशाना आपणा आपणे नाल रलाईआ। साची मंज़ल दस्स हक मुकाम, मुकामे हक दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सिर कदे ना करे एहसान, आसान इक्को रस्ता दए वखाईआ। जन भगत उडीक विच जो रिहा उठ, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। जिन्हां उपर जाए तुठ, दीनां अनाथां होए सहाईआ। सति जाम निझर धार देवे घुट, रसना रस ना कोए चखाईआ। पंच विकारा अंदरों कढ्ढे कुट्ट, काया कुटीआं साफ़ कराईआ। जन भगतां सदा सुहावणी मौले रुत्त, बसन्त खुशी दए वखाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, गुरमुख चातृक तृखा दए बुझाईआ। भाग लगा के

६४७
१६

काया माटी बुत्त, बुत्तख़ाना आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रहिण ना देवे लुक, राज़ बिना नमाज़ भेव दए जणाईआ। ... ... जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा जाणे सच मुच, दीर्घ रोग दए कटाईआ। जन भगत उडीक विच जो लावे कन्न, कायनात विच्चों बाहर कढाहीआ। मनसा विच्चों रोक के मन, ममता कूड़ी परे तजाईआ। लालच विच्चों विरोल के (तन), अडोल बह के ढोला गाईआ। भाग लग्गे तिस छप्परी छन्न, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले श्री भगवन, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत अगम्मी चढ़े चन्न, सूरज चन्द जिस नूं सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव खुल्ह्ा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। जन भगत उडीक विच जो होया मस्त, मस्त खुमारी विच समाईआ। झगड़ा मुका के कीट हसत, हस्ती इक्को वेखे बेपरवाहीआ। जो ज़मीन तों थल्ले वासा रखे उपर अर्श, अर्शां दा मालक प्रीतम शहिनशाहीआ। सो भगतां जुग जुग मेटणहारा भटक, सन्त सुहेले आपणी गोद उठाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल करे चटक, जगत फ़ुरतीआं विच बन्द ना कोए कराईआ। गुरमुखां मिलण आवे सचखण्ड निवासी परत, पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होण ना देवे कोई हर्ज, हर्जाना पिछला पूरब झोली पाईआ।

✪ १० जेठ शहिनशाही सम्मत २ राज सिँघ दे गृह (पिण्ड मर्‍ाज ज़िला गुरदास पुर वाला) जम्मू ✪

जन भगत आसा विच रखे कोई ना आलस, कूड़ी निंद्रा अंदरों बाहर कढाहीआ। साहिब सतिगुर बण के धुर दा सालस, सही सलामत लए उठाईआ। मार्ग दस्स के आपणा इक खालस, तन माटी ख़ाकी दए वड्याईआ। सन्त सुहेला बण के धुर दा बालक, पिता पूत गोद उठाईआ। ठांडे दर बणा के याचक, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। मनुआ मन रहे ना नास्तिक, वास्तवक वासा इक्को घर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के माशूक आशक, हरिजन साचे आपणे विच टिकाईआ। जन भगत उडीक विच जो मारे झाकी, अन्तर अन्तर परदा लाहीआ। साहिब सतिगुर लहिणा देणा चुकाए बाकी, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जाम प्याला देवे बण के साकी, अमृत रस इक चखाईआ। भाग लगा के काया माटी ख़ाकी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोत जोती जाता कर प्रकाशी, प्रकाशवान ज़हूर आपणा दए प्रगटाईआ। मेल मिला के पुरख अबिनाशी, आवण जावण पतित पावण लेखा दए मुकाईआ। एथे ओथे दो जहान सचखण्ड

दुआर दा बण के साथी, सगला संग आप निभाईआ। मंज़ल औखी रहे कोई ना घाटी, दुष्वारी अगे ना कोए अटकाईआ। जन भगत काया मन्दिर अंदर बणया रहे आप सच्चा पाठी, पाठशाला जाण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिने जागदयां दर्शन देवे सुत्यां राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन भगत उडीक विच जो सुणदा रहे संदेसा, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल वड नरेशा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा भेव जणाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण जोती जाता जामा धार के वेसा, वेसवा रूप वेखे सर्ब लोकाईआ। भगत उधारना जिसदा पेशा, पारब्रह्म आपणा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं मुके ठेका, ठाकर हो के ठोकर गुरमुखां दए लगाईआ। स्वामी सज्जण मन्नो एका, मालक ख़ालक परवरदिगार सांझा यार जलवागर नूर खुदाईआ। साची मंज़ल चढ़ के तक्को आपणा वतन देसा, जिस विच्चों होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहारा लेखा, लेखे विच्चों लेखा दए बदलाईआ। जन भगत तेरा लहिणा देणा लेखा अख़ीर, आख़र तों आख़र देवे माण वड्याईआ। बिन मुसव्वर तों वखा के आपणी तस्वीर, तजवीज़ आपणी नाल मिलाईआ। जन्म कर्म दी कट भीड़, साचे मार्ग दए वड्याईआ। लख चुरासी भरमण दी रहे कोई ना पीड़, लेखा अगला पिछला दए चुकाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब जगत शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, बन्धन कूड़ा दए कटाईआ। जिस मंज़ल चढ़या जुलाहा कबीर, काया कबर विच्चों कढ्ढ के काअबे हक दे दए पुचाईआ। जित्थे मालक बेनज़ीर, नज़रां तों ओझल बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां प्रेम दे बदले विच बदल देवे तकदीर, तकरीर तहिरीर विच तरह तरह समझाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, पीरन पीर, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे घर वसाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ केसर सिंघ दे गृह पिण्ड झमां ज़िला जम्मू ✪

जन भगतां प्रभ बणे खोजी, खोजत खोजत मेल मिलाईआ। साचा मार्ग दस्से प्रीतम चोजी, काया चोली राह प्रगटाईआ। जन्म कर्म दा रहिण ना देवे कोई रोगी, चिन्ता सोग सर्ब गवाईआ। बणन ना देवे जंगलां विच फिरन वाला जोगी, जुगत आपणी इक दृढ़ाईआ। देवे दरस दरस अमोघी, अंमिउँ रस अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन भगतां प्रभ जुग जुग लभ्भदा, थान बनंतर वेख वखाईआ। मेल मिलाए आपणे सबब दा, सुबह शाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पैंडा मुका के जगत वाली हद्द दा, घर आपणा इक वखाईआ।

जित्थे दीपक जोत जगदा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सेक लग्गे ना माया अग्ग दा, अग्नी तत ना कोई तपाईआ। सच प्रेम दा वहण होवे वगदा, सीतल धारा नाल प्रगटाईआ। रूप नज़री आए सूरे सरबग दा, सर्ब व्यापी परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले दर ठांडे सदा सददा, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जन भगतां प्रभ करदा रहे तलाश, चार कुण्ट वेख वखाईआ। समुंद सागर पर्बत वेखे ख़ास, जंगल जूह परदा लाहीआ। पूरब जन्म जिनां बख़्शी नाम रास, वस्त धुर दी नाल रखाईआ। ओहनां बुझावणहारा प्यास, सांतक सति दए कराईआ। चुरासी विच्चों कर ख़लास, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। चरण दवारे कर वास, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। मेहरवान हो पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। जन भगतां प्रभ जुग जुग वेखे, पेख पेख खुशी मनाईआ। जन्म कर्म दे मेटे लेखे, धुर दा लेखा दए समझाईआ। जगत विकार कढ्ढे भुलेखे, भरम भरम ना कोए डुलाईआ। पूरब लहिणा रखे चेते, चेतन हो के याद कराईआ। शब्दी धार जिस कारन एथे, इस्म चशम चिशम आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी वेख वखाईआ। जन भगतां प्रभ लभ्भे फिरदा फिरदा, फिरत फिरत आपणा खेल खिलाईआ। सन्त सुहेले साफ़ वेखे हिरदा, हिरदक हारदिक देवणहार वड्याईआ। मेल मिलाए धुरदरगाही पिर दा, प्रीतम हो के प्रेम बंधाईआ। जो भगत सुहेला विछड़या होवे चिर दा, सहिजे सहिजे नाता लए जुड़ाईआ। दवारा दस्स के घर थिर दा, महल अटल दए वड्याईआ। जित्थे अमृत झिरना झिरदा, रस निझर रिहा टपकाईआ। सदा भण्डारा बख़्शे मेहर दा, मेहर नज़र पार कराईआ। जगत झल्ल विच बुकणा सदा खेल शब्द शेर दा, शायर सके ना कोई गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चोजी प्रीतम हो के खेल खेलदा, ख़लक दा मालक आपणी दया कमाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ जीवण सिँघ दे गृह पिण्ड मोयल ज़िला जम्मू ✪

जन भगतां प्रभ देवे अनन्द, अनन दया कमाईआ। धुर दा नाम सुणा के सच्चा छन्द, सहिंसा रोग दए मिटाईआ। आत्म परमात्म पा गंढ्ढ, नाता धुर दा लए जुड़ाईआ। अंदर बाहर हो के संग, सगला संग निभाईआ। सच प्रकाश चाढ़ के चन्द, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। आवण जावण चुका के पन्ध, मुसाफ़र काफ़र रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां सुहाए सुहावणी

रुत्त, सोभावन्त सुहाईआ। नाम भण्डारा दे के सब कुछ, किशती नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। मेहरवान हो के जन्म कर्म दा लेखा लए पुछ, धर्म दी धार इक समझाईआ। जगत क्रिया मेटे दुःख, दुखड़ा दर्द वाला गवाईआ। साचे नाम दा देवे सुख, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां भगती अंदर गोदी लए चुक्क, शक्ती अंदर शहिनशाह दए वड्याईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बसन्ती देवी दे घर पिण्ड अम्बा राए जम्मू ✪

जन भगतां सद मनसा पूरी, मानस जन्म मिले वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल किरपा करे ज़रूरी, ज़ाहर हो के बातन परदा लाहीआ। लख चुरासी आवण जावण कटे मजबूरी, मज़दूरी नाम दी झोली पाईआ। जलवा बख्श के इक्को नूरी, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। चरण कँवल सरनाई बख्शे धूढ़ी, हाज़र हो के मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक वखाईआ। जन भगत आत्म परमात्म रखदा रहे मिलाप, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। धुर फ़रमाने सुणदा रहे बात, शब्द अनाद धुन शनवाईआ। दीन मज़्हब विच्चों बणया रहे आज़ाद, पाबन्दी जगत ना कोए लगाईआ। बिना साधनां तों सच दुआर ना बणया रहे साध, सिदक हरि चरण इक सरनाईआ। साचा खेड़ा करदा रहे आबाद, इबादत इक्को अव्वल अल्ल़ा नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खोल्ह़दा रहे अन्तर राज़, रहमत नाल परदा आप उठाईआ। जन भगत आलस विच कदे ना आवे निंद्रा, ग़फ़लत विच ग़ाफ़ल ना कोए बणाईआ। लभ्भणा पए ना गोकल बिन्दरा, बन बन ना फेरा पाईआ। साड़ना पए ना तन माटी पिंजरा, पिंजर ख़ाक ना कोए रमाईआ। मनाउणा पए ना गणपति गणेश इन्द्रा, सुरप्त सीस ना कोए निवाईआ। जगत जिज्ञासूआं कोलों खुल्ह़ाउणा पए ना जिंदरा, कुफ़ल बन्द ना कोए कराईआ। मन बुद्धी अंदर सोचनी पए कोई ना बिधना, इशारा रमज़ ना कोए लगाईआ। धुर दा लेखा पुरख अकाल सब दा देवे जितना, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। सच दवारे बण के इक्को पितना, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा हुक्में अंदर लिखना, कलम शाही काग़ज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख हरिजन हरि भगत प्रेम प्रीती अंदर जित्तना, जीवत जी जागरत जोत विच समाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ईश्र सिँघ के गृह पिण्ड दड़ जम्मू ✪

जन भगत तेरा सति सरूप, तत्तां परदा ओहला आप रखाईआ। तेरा मालक दाता दानी एका शाहो भूप, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी एका रंग एका रूप, रेख भेख इक्को इक वखाईआ। इक्को गृह घर घराना लेखा चार कूट, दहि दिशा मिले वड्याईआ। इक्को नूर जोती दीपक जागरत रूप जगे महाना, सति सतिवाद नज़री आईआ। इक्को नाम शब्द धुन धुर दा गाणा, गावत गा गा ख़ुशी मनाईआ। एका पुरख एका भगवन्त एका श्री भगवाना, भगवन देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि आपणे विच टिकाईआ। जन भगत तेरी महिमा अकथ, शास्त्र सिमरत वेद पुरन कहिण कोए ना पाईआ। तेरा मालक दाता सच स्वामी समरथ, पुरख अकाल दीन दयाल बेपरवाहीआ। जो सदा सदा नित नवित आत्म परमात्म सांझा रखे जस, हिस्से वाली वण्ड ना कोई वण्डाईआ। निरगुण हो के सरगुण मिलदा रहे हस्स हस्स, हस्ती मस्ती नाम ख़ुमारी धुर दी इक चढ़ाईआ। प्यार अंदर कर के वस, महबूब हो के महव आपणा रंग रंगाईआ। इशारे अन्तर निरंतर निज नेत्र खोल्हे अक्ख, प्रतख रूप नजर आए गोसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाअरा बोल इक अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह देवणहार वड्याईआ। जन भगत तेरा मन्दिर सुहेला, साहिब स्वामी अन्तरजामी आप मनाईआ। जित्थे वसे एका एकँकार अकेला, अकल कलधारी सोभा पाईआ। सिध्धा भगतां करदा रहे मेला, चुरासी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बणया रहे सज्जण सुहेला, धुर दा संगी बहुरंगी फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सुहावणहारा वेला, दर दरबार दर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण शहिनशाहीआ। जन भगत तेरा महल अटल उच्च मुनार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीआ बाती जगे अगम्म अपार, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। शब्द नाद वज्जे धुन्कार, धुर दा राग अल्हाईआ। साची सखियां मंगलाचार, गीत गोबिन्द सुणाईआ। झगड़ा मुके पुरख नार, नार कन्त इक्को रंग वटाईआ। साचा दर सोहे बंक दुआर दर दरबार वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग हिस्सा पूरब इच्छा हरिजन झोली पाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रताप सिँघ दे गृह पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ✪

जन भगत तेरा राह तक्कण चौदां लोक, ब्रह्मण्ड खण्ड राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणन इक सलोक, सोहँ ढोला चाँईं चाँईंआ। प्रकाश तक्कण निर्मल जोत, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुलाईआ। साध सन्त फ़कीर मानण मौज, मजलस वेख बेपरवाहीआ। आपणी आप मिटा के सोच, समझ विच्चों समझ गए गवाईआ। जन भगत तक्कण बिना तकल्लफ़ मिली मौज, मुकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। जंगलां करनी पए ना खोज, टिल्ले पर्बत कोए ना फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए वखाईआ। जन भगत तेरा निराला गृह, गृहस्ती मिले माण वड्याईआ। जिस घर स्वामी रहे, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। सच भण्डारा अमृत दए, दाता दानी झोली पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला कहे, कह कह आपणी खुशी मनाईआ। सच प्यार वगा के नैं, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। निरगुण वस्त अमोलक दे के शै, शहिनशाह आपणा घर समझाईआ। जित्थे गुरमुख सज्जण बहै, बहिश्त स्वर्ग दोवें सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत तेरा घर सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। दीपक जोत जगे निरँजणा, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। साहिब सतिगुर दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। दरगाह साची बणे सज्जणा, सगला संग रखाईआ। नेत्र लोचण नैण पावे कजला, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरण धूढ़ कराए मजना, दुरमति मैल धुआईआ। साची दस्से धुर दी बन्दना, बन्दगी सीस जगदीस वखाईआ। आत्म दे के परमानंदना, निजानंद करे रसाईआ। दूजा दर पए ना मंगना, सच भण्डारा झोली देवे पाईआ। भाग लगाए काया बंगला, मंगलाचार इक्को इक सुणाईआ। पुरख अकाल साहिब मिले रंगला, रंग रतड़ा वेख वखाईआ। जिस दी एथे ओथे कोई ना वण्डना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत तेरी मंज़ल हक, धुर दे हुक्म नाल बणाईआ। जित्थे रहे कोई ना शक, शकायत कर ना कोई सुणाईआ। अग्नी तपे कोई ना मठ्ठ, कूड़ी वज्जे ना कोए वधाईआ। तीर्थ दिसे ना अठ्ठ सठ्ठ, जगत धार ना कोई जणाईआ। वणजारा बहे कोई ना हट्ट, हट्टो हट्ट ना कोए फिराईआ। इक्को मेला पुरख समरथ, जो सब दा पिता माईआ। निज नेत्र खोल्हे अक्ख, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। प्यार मुहब्बत विच कर के वस, वसल यार दए समझाईआ। नाता जोड़ के धुर दा सच, सति सतिवादी मेल मिलाईआ। मार्ग महबूब हो के देवे दस्स, दहि दिशा पन्ध चुकाईआ। जन भगतां साचा दस्स के आपणा जस, ढोला इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछोड़ा रहिण ना देवे वक्ख, वास्ता आपणे नाल रखाईआ।

६५३
१६

११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश सिँघ दे घर पिण्ड दड़ जम्मू

जन भगत तेरा झगड़ा रहे ना पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ना कोए लड़ाईआ। मण्डल रहे कोई ना रास, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। सुरती होवे किसे ना दास, सेवक सेव ना कोए कमाईआ। मनुआ मन ना करे घात, दाओ चले ना कोए चतुराईआ। जगत आए ना अन्धेरी रात, कूड़ अन्धेर ना कोए छुपाईआ। इक्को मेला मिले पुरख समराथ, जो बख्शणहार बेपरवाहीआ। पूरा कर भविख्त वाक्, वाक्फकार अगला लए बणाईआ। दुरमति मैल अंदरों काट, बाहरों ब्रह्म करे सफ़ाईआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, (वंका) धुर दा रंग चढ़ाईआ। सदा सुहेला वसे साथ, सगला संग निभाईआ। मालक हो के कमलापात, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी दस्स के इक्को ज़ात, जेर जबर दी करे ना कोई पढ़ाईआ। सच प्रीती जोड़ के नात, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला वसे पास, पासा दुनी वाला उलटाईआ। जन भगत तेरी कोई ना जाणे हद्द, हदूद समझ कोए ना पाईआ। तेरा नूर पुरख अकाल दी यद, पिता पूत रीती चली आईआ। जुग चौकड़ी हुक्म अंदर लवे सद, हुक्मे अंदर हुक्म मनाईआ। आपणी धारों लए कढ्ढ, पंज तत नाता मानव ज़ाती लए बणाईआ। लोकमात रहिण ना देवे अड्ड, निरगुण हो के सरगुण वेख वखाईआ। अंदर वड़ के दस्से धुर दा छन्द, छन्द इक्को इक सुणाईआ। सच प्रेम दा दे के अनन्द, चन्द नूर करे रुशनाईआ। लेखा चुका के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को दए दृढ़ाईआ। भगत सुहेला इक अकेला वाहो दाही मारे पन्ध, वेखणहार थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म सदा बख्शंद, तत्तां दा लेखा लेखे विच लेखे लए लगाईआ।

११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ झण्डू राम दे गृह पिण्ड जिउड़ीआं ज़िला जम्मू

जन भगत रहे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। दूजे दर ना होवे मंगता, भिखारी बण ना अलख जगाईआ। नाता जुड़ के साची संगता, हरिजन हरि हरि मिल खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी काया चोली रंगदा, कंचन गढ़ इक सुहाईआ। जन भगत खेल वखाए सूरे सरबंग दा, साहिब स्वामी दया कमाईआ। परदा उठाए निजानंद दा, अमृत झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत सदा दर्शन तक्के निज नैण, जगत अक्ख ना कोए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी मिले धुर दा साक सैण, सज्जण इक्को बेपरवाहीआ।

जन्म कर्म दा बणाए लहिणा देण, पूरब लेखा झोली पाईआ। नाम अगम्मड़ा देवे सच रसायण, धुर दी दात आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत सुहेले सदा कहिण, गुरमुख गा गा खुशी मनाईआ। सचखण्ड दवारे सति सतिवादी हो के बहण, सच सच विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे इक सरनाईआ। जन भगत प्रभ दा बणे याचक, यथराथ सेव कमाईआ। अक्खरां दी लोड़ रहे ना वाचक, विद्या विच ना कोए चतुराईआ। मनुआ मन होवे सांतक, अमृत मेघ साहिब सतिगुर इक बरसाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना नास्तिक, वास्तवक नाता इक्को नाल रखाईआ। जिस दी महिमा करदे सिमरत शास्त्र, शत्रु अंदरों दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखे लाए स्वार्थ, साह साह आपणा नाम जपाईआ। जन भगत कदे ना होवे दरवेश, जगत दवारा मंगण कदे ना जाईआ। इक्को मालक मिले नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेश, निरगुण हो के सरगुण खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जन भगतां देंदा रहे नाम संदेश, कलमा कायनात पढ़ाईआ। जिस दा अक्खरां दा बाहर उपदेश, सिफ्तां तों परे साफ़ दए दृढ़ाईआ। जिस दा कलम शाही लिखे कोई ना लेख, बेअन्त कह के सारे पल्लू गए छुडाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां दस्से वेस, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जिस दी लभ्भे किसे ना रेख, रूप रंग ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। जन भगत कदे ना होवे निरासा, आसा आसा विच्चों बदलाईआ। पुरख अबिनाशी देवे साथा, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। एथे ओथे दो जहानां होवे राखा, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। निरगुण नूर जोड़ के नाता, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड दवारे करे वासा, जोती जोत जोत मिलाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। जो शब्दी हुक्म फ़रमान मन्नदे आखा, आख़र मंज़ल चढ़ के धुर स्वामी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नजरी आए साख्याता, साहिब सुल्तान परदा लाहीआ। जन भगत दूसर किसे ना होवे मुरीद, मुर्शद मन्नण कोई ना जाईआ। घर स्वामी ठाकर कराए आपणा दीद, दर्शन देवे शहिनशाहीआ। जन्म कर्म दी पूरी करे उम्मीद, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां हथ्थ रखे सीस सीस जगदीश, जगदीशर आपणे लेखे लाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिव दे गृह जिउड़ीआं ज़िला जम्मू ✪

जन भगत कदे ना होवे हैरान, परेशानी ना कोई सुणाईआ। मालक मिले इक श्री भगवान, दीन दुनी दुःख दलिद्र दए गवाईआ। सच वखाए निशान, धर्म दवारे आप प्रगटाईआ। सतिगुर हो के होवे मेहरवान, मेहर नज़र नाल तकाईआ। सच धर्म दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। दरगाह साची बख्शे माण, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाईआ। जन भगतां अंदर कदे ना आवे उदासी, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। गल रहे ना जम की फाँसी, फ़ैसला धुर दा इक दृढ़ाईआ। मेल मिलाए सचखण्ड निवासी, निवास अस्थान इक वखाईआ। जित्थे निरगुण नूर जोत प्रकाशी, दीवा बाती अवर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां बणाउँदा रहे साथी, सखा सुहेला हो के जोड़ जुड़ाईआ। जन भगत जग वासना कदे ना होवे दुखी, दलिद्र विच कदे ना आईआ। श्री भगवान रखणहारा सुखी, सुखआसण आत्म सेज दए बणाईआ। उज्जल करे मात मुखी, मुख अन्तर दुरमति मैल धवाईआ। सच दवारे आपणी गोदी फिरे चुक्की, चार कुण्ट मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्दी धार आपणे विच रखे उच्ची, रचना बाहर ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सुरत उठावे सुत्ती, आलस निंद्रा दए गवाईआ। जन भगत कदे ना करे तलाश, लभ्भण बन कोए ना जाईआ। पुरख अकाल काया घर पूरी करे आस, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। साची वस्त नाम देवे रास, रहबर हो के रस्ता दए समझाईआ। निज घर आत्म रखे वास, परमात्म परम पुरख वड्याईआ। अगली पिछली निहकर्मी जन्म जन्म दी मेटे वाट, क्रिया कांड अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब व्यापी प्रतापी हो के वसे पास, जापी हो के आपणा नाम जपाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भोला राम दे गृह पिण्ड जिउड़ीआं जम्मू ✪

जन भगत कदे ना मर्दा, मर जीवत रूप वटाईआ। मालक बणे साचे घर दा, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। भउ भय विच कदे ना डरदा, भयानक रूप ना कोए सताईआ। साची मंज़ल चढ़दा, भज्जे वाहो दाहीआ। इक्को ढोला पढ़दा, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। बिन अक्खां दर्शन करदा, सच दवारे खुशी मनाईआ। सरन सरनाई साची परदा, जिथ्थों सके ना कोई उठाईआ। पुरख अकाल अगम्मी लड़ फड़दा, दो जहान ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले आप वरदा, वारता पूरब वेख वखाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ करमो देवी दे गृह पिण्ड करनगेल जम्मू ✪

जन भगत कदे ना आवे विच चुरासी, चारे खाणी ना कोए भवाईआ। जुग चौकड़ी मेला मिलदा रहे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। चरण सेवक बणाउँदा रहे दासी, दासन दास दए वड्याईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण बणया रहे साथी, सरगुण साचा संग वखाईआ। निज घर साचे मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ रखे वासी, निवास अस्थान इक्को इक समझाईआ। हरिजन हरि पूरी करे आसी, असल आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुका के जम की फाँसी, फ़ैसला धुर दा इक सुणाईआ। जन भगत चुरासी भोगे मूल ना सज़ा, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। सदा परम पुरख दी चले विच रज़ा, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। आत्म रस दा चक्खे मज़ा, मिज़ाज अवर ना कोए बदलाईआ। सिर ते कूके कोई ना कज़ा, कहर सके ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुरफ़ुरमाण अंदर देवे सद्दा, शब्दी हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जन भगत दूसर कदे ना तक्के ओट, सहारा अवर ना कोए रखाईआ। आत्म मिल के निर्मल जोत, पारब्रह्म विच समाईआ। भाग लगा के काया कोट, गढ़ बंक दए वड्याईआ। झगड़ा मुका के मुक्ती मोख, मुफ्त प्रभ दे विच समाईआ। अगे रहे कोई ना सोच, झगड़ा चुक्के कूड़ लोकाईआ। दर्शन पा के नेत्र लोच, अक्ख अंदरों लए खुलाईआ। सच दवारे माणे मौज, मिल मिल ठाकर खुशी बणाईआ। अबिनाशी करता करे चोज, काया चोली रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्को जोग, जुगती आपणा नाम रखाईआ। जन भगत कदे ना मारे आह, नाअरा हक हक सुणाईआ। साची मंज़ल चढ़े राह, रहबर वेखे बेपरवाहीआ। विछोड़ा रहे ना कोई जुदा, जुज़ वण्ड ना कोई वण्डाईआ। सिध्धा मानस जन्म विच मिले आ, दूजी खाणी ना कोए वखाईआ। घर दीपक होवे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण मेला लए मिला, चेला गुर गुर चेला इक्को रूप वखाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी लीला देवी पिण्ड कर नमयाल जम्मू ✪

जन भगत एका ओट रखे भगवन्त, दूसर आस ना कोए रखाईआ। एका नाम जपे मणीआं मंत, मन वासना बाहर कढाहीआ। देवे वड्याई धुर दा कन्त, पारब्रह्म बेपवराहीआ। लेखा चुके विच्चों जीव जंत, चारे खाणी खण्डर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। जन भगत घर सच वसेरा, निहचल धाम मिले वड्याईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना तेरा मेरा, आत्म परमात्म विच समाईआ। सदा वसदा रहे धुर दा खेड़ा, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। आवण जावण लख चुरासी चुक्के झेड़ा, जन्म मरन वण्ड ना कोई वण्डाईआ। पुरख अकाला भगतां बन्ने बेड़ा, शब्दी डोरी तन्द आप बंधाईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, निरगुण निरवैर निराकार परदा दए उठाईआ। चरण कँवल सच सरनाई इक्को गृह कराए वसेरा, बाकी विसरे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा कूड़ अन्धेरा, सच नाम करे रुशनाईआ। जन भगत कूड़ी क्रिया कदे ना चाढ़े रंग, माया ममता ना मोह हल्काईआ। इक्को साहिब दा रखे संग, नाते सगले कूड़ तुड़ाईआ। प्रेम प्यार दा वजाउँदा रहे सदा मृदंग, बिन तन्द सतार हिलाईआ। जन भगतां विच माणदा रहे अनन्द, निजानंद होए रसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउँदा रहे छन्द, शमा दीप जोत करे रुशनाईआ। धुर दे हुक्म अंदर रहे पाबन्द, बन्दीख़ाना कूड़ा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां बेड़ा बन्नू, साचे पत्तन पार किनार दरगाह साची आप लगाईआ। जन भगत दूजे दर मंगे कदे ना भिच्छया, झोली जगत ना कोए वखाईआ। दीन दुनी कूड़ी सृष्टी जाणे मिथ्या, बिन हरि अवर ना कोए सहाईआ। जन भगत सच दवारे सिक्खे धुर दी सिख्या, जगत विद्या करे ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी सति सतिवादी नाम पदार्थ पावे भिच्छया वस्त अमोलक काया गोलक दए टिकाईआ। बिन कलम शाही लेखा जाए लिख्या, रेखा धुर दी दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मीता ठांडा सीता, वसणहारा धाम अनडीठा, सच दवारा एकँकारा इक्को इक सुहाईआ।

✪ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चीफ़ इंनजीनयर आर० ऐल० शरमा करन नगर जम्मू ✪

जेठ कहे नव नौ चार दा मैं शुभ महीना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरा राह तकाईआ। मैं वेखां खेल शाह सुल्तान

परम पुरख प्रबीना, परवरदिगार सांझा यार जलवागर परदा नूर उठाईआ। भेव अभेदा खोल्हां लख चुरासी नर मदीना, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख सन्त सुहेला तक्कां जगत नगीना, माणक मोती जगती जोती नूर नूर रुशनाईआ। खेल वेखां ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल लोक तीना, त्रैगुण माया पंज तत तत्व तत जणाईआ। सजदा करां हक सलाम धुर दरगाह या मुबीना, दरोही तोबा तोबा तोब दुहाईआ। मनुआ मन जगत वासना धार वेखां कमीना, कामल मुर्शद शब्द सतिगुर साहिब स्वामी दरस ना किसे वखाईआ। अन्तर अन्तर नर नरायण काया मन्दिर अंदर बिन रसना जिह्वा किसे ना चीना, जगत विद्या पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। सति सरूप शाहो भूप जोबनवन्ता जोत अकालण निरगुण धार वड हसीना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मालक ख़ालक वेख वखाईआ। जेठ कहे मैं खुशीआं वाला मास, गुर अवतार पैगम्बर मेरा ध्यान लगाईआ। कुछ लेखा लिख के गया चम्यार रविदास, रवी आपणा ध्यान लगाईआ। कबीर बिन नेत्रां वेख के गया प्रकाश, मंज़ल चढ़ के ख़ुशी मनाईआ। पैगम्बर लभ्भदे गए साथ, ईसा मूसा मुहम्मद देण दुहाईआ। नानक गोबिन्द मंज़ल लभ्भदे रहे घाट, भज्जण वाहो दाहीआ। गोपी काहन करदे गए नाच, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। धुर फ़रमाना शब्द अगम्मी सारे रहे वाच, वाचक हो के करन पढ़ाईआ। कोटां विच्चों परम पुरख दा जन भगत सुहेले विरले मिलदा साथ, सज्जण मिले बेपरवाहीआ। नज़र आए नाल इतफ़ाक, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। जेठ कहे मैं आया जग, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी मेरा गाउँदी गई छन्द, छन्दां विच धुर दा राग अलाईआ। कलम शाही मैनूं किसे ना कीता बन्द, कातब चली ना किसे चतुराईआ। रसना जिह्वा गा गा गए बत्ती दन्द, सिफ्तां नाल सिफ्त वड्याईआ। बिन परम पुरख दे मेरा जाणयां ना किसे अगला संग, संगी साथी सारे देण दुहाईआ। मेरे गृह मन्दिर घर बिन दीवा बाती कमलापाती निरगुण नूर चढ़ा के चन्द, रवि ससि दी लोड़ रहे ना राईआ। सदा स्वामी अन्तरजामी निझर धार देवे परमानंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट वेखे थाउँ थाँईंआ। जेठ कहे मैं गया जाग, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धुर फ़रमाना सुणया राग, अगम्मी अवाज़ बेपरवाहीआ। जिस दा खोल्ह ना सके कोई राज़, जगत स्यासत कम्म किसे ना आईआ। जो आत्म परमात्म परमात्म आत्म वजावणहारा साज, तन्द रबाब इक हिलाईआ। सो खेले खेल विच ब्रह्माद, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दायरे अंदरों हो के आज़ाद, कलमा हक हक

सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे वुज़ू नमाज़, वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। जेठ कहे मैं आया आपणी वार, वारता अगली दयां जणाईआ। लेखा मुकावां जुग चौकड़ी चार, कलयुग लहिणा दयां उठाईआ। मैनूं सजदे करदे दो जहान हो के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दयां सुणाईआ। इक्को तक्को सांझा यार, रसूलां दा रसूल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक्को इक दृढ़ाईआ। जेठ कहे मैं देवां इक फ़रमान, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। खेल वेखे वाली दो जहान, दोज़ख़ बहिश्त दोवें देण दुहाईआ। स्वर्ग नर्क सर्ब कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। नज़री आए ना किसे भगवान, साख्यात दरस कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत लभ्भदे जीव जहान, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। सिफ्तां वाला करन ब्यान, अक्खरां वाला लेख वखाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोई महान, महबूब मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक फ़रमान, संदेसा इक सुणाईआ। जेठ कहे संदेसा देवां धुर दा एक, एकँकार रिहा जणाईआ। मानस मानव मानुक्ख बुद्धी करां बिबेक, विवेकी आपणी धार प्रगटाईआ। हर घट अन्तर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लओ वेख, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म रंग रंगाईआ। भरमे भुल्ले जगत माया विद्या विच करे खेल, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। निरगुण निरगुण करे कोए ना मेल, सरगुण वज्जे ना कोए वधाईआ। झगड़ा प्या गुरू गुर चेल, मुरीद मुर्शद मिल के खुशी ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग दृष्टी सृष्टी इष्टी करे खेल, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। जेठ कहे मैं देवां इक संदेश, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन बदल जाणा भेख, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार सब ने करनी इक आदेस, नमो नमो सीस सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित हमेश, भाणे अंदर आपणा हो के आपणा हुक्म वरताईआ। आपणा हुक्म दस्से करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नव नौ चार होवे पार, नौ सत्त परदा दए उठाईआ। अठ्ठ पंज करे ख़बरदार, पंचम पंच पंच शनवाईआ। नाम संदेसा नर नरायण दे दे आपणी वार, इक इकल्ला सच महल्ला काया खेड़ा लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार इक बंधाईआ। जेठ कहे मैं नौ सौ चुरानवे जुग चौकड़ी पिच्छो आया भज्जा, बण के पाँधी पन्ध मुकाईआ। सच दुआर बह के सजा, पुरख अबिनाशी देवणहार वड्याईआ। जिस मेरा एथे ओथे दो जहानां परदा कज्जा, शब्दी ओढण सीस टिकाईआ। कूड़ी क्रिया

मन वासना जूठ झूठ कलयुग अन्तिम देवे सज़ा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म आपणे नाम दा देवे मज़ा, मज़ाक विच रखे सर्ब लोकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अछल छल्लधारी, बिन साचे सन्तां सब दे नाल करे दग़ा, बग़ावत विच सख़ावत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जेठ कहे मैं आया परत, लोकमात फेरा पाईआ। वेख्या खेल उपर धरत, धरनी धवल दए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर काग़ज़ कलम शाही नाल ला के गए शर्त, लेखा अक्खरां विच लिखाईआ। अबिनाशी करता चार वरन अठारां बरन साचा मार्ग सिध्धी दस्से इक्को सड़क, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को घर वखाईआ। जन भगत चलाए दया कमाए आप निधड़क, भय भउ खतरा ग़म ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना जूठ झूठ मेटे हरस, हवस अवर ना कोए वधाईआ। मेहरवान हो के महबूब करे तरस, रहमत आपणी नाल पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक असचरज, अचरज विच अचरज हो के जाए समाईआ। जेठ कहे मैं वेखां दीन दुनी हाल, हालत सब दी खोज खुजाईआ। जिस दा भविख्तां विच मिलदा अहिवाल, रागां नादां शब्दां विच ढोले गाईआ। सो सब दा हल करे स्वाल, जवाबतलबी विच फेर रखे लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सम्मत शहिनशाही कूके काल, डंक वजावे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सन्त सुहेले लए भाल, लख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। सन्त सुहेला सति सरूप मानुख, मानव ज़ाती नज़री आईआ। दूई द्वैत रहे कोई ना दुःख, झगड़ा हउँ ना कोए बणाईआ। आत्म परमात्म इक्को जाणे सुख, सच सागर विच समाईआ। घर सुहञ्जणी होवे रुत्त, बसन्त बहार इक प्रगटाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर घड़ी पल सुरती शब्द रहे खुश, सदा वजदी रहे वधाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द रहे चुप्प, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारों पए उठ, निरगुण हो के निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर नूर प्रकाश, प्रकाशवान दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा खेल तमाश, गुर अवतार पैगम्बर लोकमात सेव लगाईआ। सो वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक फेरा पाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, आहिस्ता आहिस्ता साचे मन्दिर अंदर परदा दए उठाईआ। सच दवारे बण गोपी काहन वखाए रास, मण्डल मण्डप वज्जदी रहे वधाईआ। निरगुण हो के निराकार वसे पास, निरँकार हो के आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतां देवां सद्दा, सदके वारी घोल घुमाईआ। गुरमुखो किसे नाल कोई ना करे दग़ा, सच प्रीती सच दवारे सोभा पाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म

लभ्भा मनुक्खा, हउमे हंगता लैणी प्रनाईआ। सति धर्म सच घर गृह वजाउणा डग्गा, होका हक हक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ पदमनी दे गृह काली जनी जम्मू ✪

जो सब कुछ सौंप देवे प्रभ दे हथ्थ, जगत माण वड्याई ना कोए रखाईआ। तिन्हां उपर किरपा करे साहिब स्वामी पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सच भण्डारा हरि निरँकारा देवे नाम वथ, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। निझर धार अमृत देवे अगम्मी रस, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। निज नैण नरायण खोल्हे अक्ख, नर आपणा परदा दए उठाईआ। आत्म परमात्म रहिण ना देवे वक्ख, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। धीरज सन्तोख दान देवे सति सच, बुध बिबेक बणाईआ। जैकारा सुणाए इक अलख, अलख अगोचर वड्ड दाता बेपरवाहीआ। हिरदे अन्तर निरंतर हो के जावे वस, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। साचा मार्ग काया मन्दिर देवे दस्स, मंज़ल पौड़ी पन्ध मुकाईआ। हकीकत विच्चों झोली पा के हक, जन्म कर्म दा लहिणा देणा पूरब वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावे अगम्मी हट्ट, जित्थे वणजारा दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो सब कुछ सौंप देवे श्री भगवान, लेखा हथ्थो हथ्थ चुकाईआ। देवणहारा दाता वड मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच वेख वखाईआ। खेले खेल हर घट वस्या राम, रमईआ रमता सीता सुरती सहिज मेल मिलाईआ। घर मन्दिर गृह मेला करे आसान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर फिरन दी लोड़ रहे ना राईआ। तन मन धन प्रेम प्यार सच मुहब्बत होवे कुरबान, मन वासना ममता रहे ना राईआ। सच प्रीती धुर दी नीती जन भगतां करे परवान, परम पुरख परमात्म आत्म बन्धन इक्को इक जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। हब्ब कुछ जो प्रभ नूं देवे सौंप, जगत इच्छया ना कोई रखाईआ। लोकमात मानस जामा कदे ना जावे औंत, देवणहार दातार सीस वड्याईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक नर दा नरायण मिले इक निरँकार इक इकल्ला ठाकर स्वामी धुर दा खौंत, कन्त कन्तूहल आपणे अंग लगाईआ। सच दुआर कर प्यार देवे अगम्मी मौज, मजलस भगतां विच रखाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दवारे गुरमुखां करे खोज, परदा ओहला दए चुकाईआ। नित नवित सञ्झ सवेर जन भगतां दर्शन देवे रोज़, जागत सोवत आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान अगे जो आपणा आप करे अरपण, आप

आपा विच्चों मिटाईआ। जन्म मरन लख चुरासी दी रहे कोई ना धड़कन, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज ना कोए भवाईआ। दया कमाए योद्धा सूरबीर मर्दाना मरदन, मेहर नज़र इक उठाईआ। पूरे सतिगुर अगे जिस दी प्रेम प्यार विच इक वेर झुक गई गर्दन, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तिस दा लहिणा लेखा परे तों परे धार गवर्धन, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र आपणी विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सब कुछ जो प्रभ दी दए हथेली, बिन हथ्थां हथ्थ टिकाईआ। सो आत्म रहे ना कदे अकेली, परमात्म मिल के खुशी मनाईआ। आदि जुगादि सच्ची सहेली, साजण धुर दा संग निभाईआ। वसणहारी धाम नवेली, सचखण्ड दवारे बह के खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा रिहा मेली, सच मिलाप बख्श आपणा जाप बिना रसना जिह्वा बत्ती दन्द धुन आत्मक अनादी राग सुणाईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ कर्म चन्द दे गृह जम्मू ✪

जन भगत किसे ना झुकदा, बिन श्री भगवान इष्ट ना कोए मनाईआ। आपणे मार्ग कदे ना रुकदा, दीन दुनी दोवें देवे तजाईआ। सलाह मश्वरा किसे कोलों नहीं पुछदा, अक्खरां वाली करे ना कोई पढ़ाईआ। चार जुग सदा ढोला गावे इक्को तुक दा, सोहँ राग अलाईआ। जिस नाल आत्म दा पैंडा मुकदा, परमात्म विच समाईआ। सरूप नज़री आवे सति सुच दा, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। परदा ओहला रहे ना लुक दा, भेव अभेदा दए खुलाईआ। ध्यान रखे सौंदा उठदा, चवी घंटे इक्को रंग समाईआ। लेखा मुका के जनणी कुक्ख दा, करमां दा गेड़ा दए कटाईआ। रूप धार के सच सुत दा, पिता पुरख अकाल मनाईआ। मन्दिर सुहा के काया बुत्त दा, हुजरा हक खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहारा दे के आपणी ओट दा, कोटन कोटां विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत मिले इक जगदीस, जगजीवण दाते आस रखाईआ। दूसर कदे ना झुके सीस, गल्लीं यार ना कोए मनाईआ। मनुआ झगड़ा करे ना कोए अबलीस, शरअ शैतान ना कोई लड़ाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, वरन बरन ना वण्ड वण्डाईआ। एको एक रखे उडीक, आसा मनसा विच समाईआ। जिस नाल लग्गी प्रीत, सो साहिब मिले सच्चा माहीआ। प्रेम पीती करे बख्शीश, नाम निधाना झोली पाईआ। सति धर्म दी दस्से रीत, मन्दिर मसीत मसला इक्को हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव इक समझाईआ। जन भगत बणे ना किसे दी गोली, मज़दूरी जगत ना कोई कमाईआ। इक्को साहिब

६६२ १९

स्वामी चरण घोली, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा समझ के बोली, दूजा राग ना कोई अल्हाईआ। मनुआ मन ना पाए रौली, झगड़ा दिसे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वस्त अनमोली, अनमुल्ल झोली इक्को दए भराईआ। जन भगत दूसर दा ना होवे भिखारी, मंगण कोए ना जाईआ। जिस दा मालक इक मुरारी, मोहण माधव शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी रहिण ना देवे खुआरी, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर देवे सच्ची सरदारी, सदा दा हुक्म इक वरताईआ। ब्रह्म दा बण अधारी, पारब्रह्म आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत किसे ना जावे दर, दरवाज़ा दहिलीज़ ना कोए खड़काईआ। भय भउ ना रखे डर, निउँ निउँ लागे पाईंआ। इक्को पुरख अकाल पकड़े लड़, हो सके ना जुदाईआ। साची मंज़ल जावे चढ़, दर घर साचे सोभा पाईआ। जित्थे वसे नरायण नर, नरां दा मालक धुरदरगाहीआ। सहिज सुभाओ किरपा देवे कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख लए वर, वारिस हो के चरण कँवल लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले लए फड़, फड़ बाहों पार किनार संसार आप कराईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लाल चन्द दे घर वज़ारत रोड जम्मू ✪

जन भगत सुहञ्जणी सुहावणी साची झुग्गी, अंदरां विच्चों अंदर मन्दिरां विच्चों मन्दिर सोभा पाईआ। जित्थे प्रभ दा वसेरा हुन्दा बाहर जुगीं, जुग जुग देवे माण वड्याईआ। जिस दी विचार करे कोई ना बुद्धी, मन मन्नण कोई ना पाईआ। रमज़ इशारा सैनत लावे गुज्झी, हलूणा हिरदे विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक दरसाईआ। जन भगत झुग्गी ज जगदीश, मिले माण वड्याईआ। आत्म परमात्म जित्थे मेला होवे बिना धड़ सीस, तिन्हां अंदर वड़ के खुशी मनाईआ। साचा हुक्म मन्न इक हदीस, हद्दां तों परे झगड़ा वरनां वाला मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पूरी करे उडीक, आसा मनसा पूर कराईआ। जन भगत लेखा जाणे आपणे नेहुं दा, नव नौ चार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। रस माणे अगम्मी मेहों दा, मेघ अमृत रूप बदलाईआ। झगड़ा रहे ना तूं मैं क्यों दा, कामल मुर्शद मिल के वज्जे वधाईआ। खेल वेखे अलख अभेउ दा, परदा ओहला दए चुकाईआ। घराना वेखे धुर दे देउ दा, देवत सुर जिस दा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन

भगतां नाता जोड़ के पिता पूत प्यो दा, पीआ प्रीतम हो के गोद उठाईआ। जन भगत सदा रहे खुशहाल, खुशी ग़मी ना कोई वखाईआ। मन्नदा रहे एका दीन दयाल, जो दया विच दान झोली पाईआ। बणाउँदा रहे भगत सुहेले साचे लाल, लाल गुलाला आपणा रंग चढ़ाईआ। करदा रहे एथे ओथे सदा संभाल, दूसर हथ्थ ना दए फड़ाईआ। झगड़ा मुकाउँदा रहे शाह कंगाल, ऊँचां नीचां इक्को घर टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेले साचे भाल, भार सब दा दए चुकाईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह जम्मू ✪

असलीअत में ये बात बड़ी, विद्या विच्चों वड्डी नज़री आईआ। जन भगत भगवान दी मंज़ल चढ़ी, मानस जन्म पन्ध मुकाईआ। सरगुण दी सोभावन्त सुलखणी घड़ी, वक्त सुहावणा रही बणाईआ। जिन्हां निरगुण निरअक्खर धार पढ़ी, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। ओहनां दे वासना अंदरों आपे मरी, मारन दी लोड़ रही ना राईआ। बुध बिबेक होवे खरी, बरी जगत विच्चों कराईआ। घर स्वामी सज्जण मिले हरी, हिरदे बह बह खुशी मनाईआ। भगत भगवान दी जुग चौकड़ी चलदी रहे लड़ी, इक दूजे दा लड़ सके ना कोई छुडाईआ। परमात्मा आत्मा सदा सुहेले बण के रही वरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कलोए जम्मू ✪

जन भगत साची रखे श्रद्धा, सदा सदा सद इक्को ध्यान लगाईआ। सचखण्ड दवारे बणे बरदा, अबिनाशी करते अगे झोली डाहीआ। झगड़ा मुका के दर दर दा, दरवेश हो के दूजे दर अलख ना कोए जगाईआ। दर्शन पावे इक्को नरायण नर दा, जो घट घट अंदर डेरा लाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़दा, महल अटल बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेले साचे घर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जन भगत आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित गावे इक्को ढोला, आत्म परमात्म राग अलाईआ। रागां नादां बाहर जाणे सोहला, सो पुरख आदि निरँजण हो के आप पढ़ाईआ। विष्नूं धार रविआ वेखे मौला, मूल मंत्र इक्को नज़री आईआ। खेले खेल उपर धरनी धरत धवला, लोकमात वधाईआ। जलवागर अलाही नूर अवल्ला, एकँकार सच्चा शहिनशाहीआ। जो भगतां चढ़ा के साची मज़ला,

मंज़ल मंज़ल दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत किसे दा बणे ना कदे मुहताज, मंगण दूजे दर कदे ना जाईआ। इक्को आसा रखे साहिब सतिगुर महाराज, पुरख अकाल ओट तकाईआ। जो देवणहार एथे ओथे दो जहानां धुरदरगाही एज़ाज़, कंगाल शाह आपणे रंग रंगाईआ। नाम धुन सुणावणहारा शब्द धुन अगम्मी आवाज़, धुर संदेसा इक अलाहीआ। झगड़ा चुकाए वुज़ू नमाज़, सिमरन जोग अभ्यास साधन इक्को दए दृढ़ाईआ। प्रभ मिलण दी साची इक्को आस, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणाए दासी दास, दास्तान पिछली वेख वखाईआ। जन भगत प्रभ देवणहारा वस्त, नाम अनमुलड़ी दौलत आप वरताईआ। झगड़ा मुका के कीट हसत, हस्ती विच्चों हस्ती दए बदलाईआ। नाम खुमारी विच रखे मस्त, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लख चुरासी रहिण ना देवे कष्ट, गेड़े विच गेड़ा ना कोई भवाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को नज़री आए इष्ट, ईश जीव जगदीश, जगदीशर करे रुशनाईआ। जन भगतां खुल्ही रहे दृष्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा इक वड्याईआ। जन भगत कदे ना मारे धाह, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ। जिन्हां मिल्या परम पुरख बेपरवाह, अन्तरजामी परदा ओहला दए चुकाईआ। लोकमात बणे सच मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। सचखण्ड दवारे साची दरगाह दए पुचा, राह विच सके ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठा, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां प्रभ तारनहारा आप, आप आपणी दया कमाईआ। अन्तर निरंतर मंत्र दस्से जाप, साचा ढोला आप सुणाईआ। रूह बुत्त तन माटी ख़ाक करे पाक, पतित पुनीत आपणे रंग रंगाईआ। बजर कपाटी खोल्ह के ताक, परदा ओहला बण विचोला काया चोला आप चुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पृथमी आकाश देवे साथ, गगन गगनंतर नाता लए ना कोई तुड़ाईआ। सच घर सच दुआर काया मन्दिर अंदर हो के दास, आत्म सेजा बह बह खुशी मनाईआ। झगड़ा चुकाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत प्रभास, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। सति जोत निरगुण धार नूरो नूर करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी आवण जावण मानस ज़ाती मुके वाट, अगला पन्ध अवर ना कोए जणाईआ। सच किनारा दस्से घाट, पतण इक्को रहे सुहाईआ। जिस दवारे बैठा रहे पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी शाहो शाबाशी जोत प्रकाशी, प्रकाशवान हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे मण्डल रासी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। जन भगत कूड़ी कदे मंगे ना मंग, मांगत

हो के झोली कदे ना डाहीआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा संग, सगला संग जणाईआ। आत्म परमात्म देवे निजानंद, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। शब्दी धुन साची धार जणाए सतिसंग, सति सतिवादी धुर दा डंक वजाईआ। शब्द अगम्मी वजदा रहे मृदंग, तन्द सतार इक्को दए दरसाईआ। भेव खुल्ला के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। भाग लग्गे नाड़ी माटी चम्म, चम्म दृष्टी अंदरों दए बदलाईआ। चिन्ता रोग सोग रहे कोई ना ग़म, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। लेखे ला के पवण स्वासी दम, दामनगीर हो के पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। जन भगत सुहेले लोकमात निरगुण नूर चाढ़ के साचे चन्न, चार वरन अठारां बरन करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के इक दूजे नूं कहिण धन्न धन्न, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत एको जपे हरि हरि नाँ, नाउँ निरँकारा इक ध्याईआ। दूसर जाए किसे ना थाँ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी मिल मिल देण गवाहीआ। पुरख अकाल इक्को बणा के पिता माँ, निरगुण जोत बणे धन्न जणेंदी माईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां पकड़नहारा बांह, बाज़ू आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शहिनशाह, शाही कूड़ी दए मिटाईआ। जन भगत कलयुग कूड़ कुड़यार मेटे शाही, जगत अन्धेर रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता श्री भगवान पारब्रह्म पुरख अकाल इक्को नाम पए दुहाई, चार कुण्ट दहि दिशा तोबा तोबा करे लोकाईआ। आत्म परमात्म मन्नणा पए सब नूं इक गुसाँईं, इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। कलयुग जीव चार वरन चार कुण्ट जगत वासना भुल्ले राही, मंज़ल हक ना कोई पुचाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रो रो सारे देण दुहाई, दोहरा हक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले सज्जण मीत घर साचे लए चढ़ाईआ। जन भगत सुहेला धुर दा मित्र, श्री भगवान वेख वखाइंदा। जो निरगुण धारों आया निक्कल, सरगुण अंदर सोभा पाइंदा। जिस दा घड़े कोई ना चित्तर, रूप अवर ना कोए समझाइंदा। सो जन भगतां अंदर कदे ना जावे विस्सर, विछड़े आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आपणे (रंग) विच रंगाइंदा।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे घर पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ✪

जन भगत सद जन्म सुहञ्जणा, चुरासी विच्चों फाँसी जाए कटाईआ। मिले मेल आदि पुरख निरँजणा, सरगुण नाता

जुड़े सहिज सुभाईआ। नेत्र मिले ज्ञान साचा अंजना, अन्धेरा अन्ध अन्ध अंदरों दए गवाईआ। चरण कँवल सच सरनाई देवे मजना, मिजाज़ी हकीकी इश्क जिस नूं दोवें सीस निवाईआ। सति सति दस्से अगम्मी बन्दना, जो बन्दगी बन्द बन्द लेखा दए मुकाईआ। रस रसायण वखाए परमानंदना, जो ब्रह्म तों परे पारब्रह्म विच समाईआ। जलवा दिसे इक्को नूरी चन्दना, चन्द तों परे जिस दी सति जोत रुशनाईआ। गृह मन्दिर धुर दुआर दे लँघणा, मंज़ल विच कंडा रहे ना राईआ। घर वखाए साचा अंगना, जगत दवारी हद्द डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा बेड़ा बन्नूणा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत आसा विच रखे रुची रचना प्रभ दी वेख वखाईआ। धार मिले उच्ची, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। आत्म होवे सुच्ची, मनुआ मैल ना लावे राईआ। सुहञ्जणी होवे रुत्ती, फुलवाड़ी आप महकाईआ। भाग लग्गे काया बुत्तीं, बुत्तख़ाने वज्जदी रहे वधाईआ। सुरत सवाणी उठे सुत्ती, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। साचे मार्ग रहे ना घुस्सी, घुंमणघेर ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा गंढुणहारा टुट्टी, टुकड़यां वाली वण्ड ना कोई कराईआ। जन भगत नाता कदे ना टुट्टदा, डोरी गंढु ना कोए कटाईआ। धुर दा रिश्ता कदे ना छुट्टदा, छुट्टे सर्ब लोकाईआ। साचा सोमा इक्को फुट्टदा, अमृत धारा दए वहाईआ। भण्डारा मिले सच सुच दा, जूठ झूठ पन्ध मुकाईआ। वेला सोहवे साची रुत्त दा, घड़ी पल सोभा पाईआ। चुरासी लेखा जावे मुक दा, मुकम्मल आपणे विच मिलाईआ। माण सुहञ्जणी इक्को तुक दा, तुरत लहिणा दए मिटाईआ। सचखण्ड दवारा देवे सुख दा, सुखआसण आप बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रणीआ राम दे घर पिण्ड कलोए जम्मू ✪

जन भगत याद रखे इक्क, एकँकार ध्यान लगाईआ। जो साचा लेखा देवे लिख, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया अन्ध कढु के विख, अमृत जाम दए प्याईआ। सच प्रेम दा दस्से हित, नवित आपणा रंग रंगाईआ। चारों कुण्ट पए दिस्स, हर घट बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वसाईआ। जन भगत साचे घर करे वसेरा, सचखण्ड दवारे डेरा लाईआ। जित्थे झगड़ा होवे ना मेरा तेरा, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। वक्त होवे ना सञ्झ सवेरा, रुतड़ी रुत्त ना कोए बदलाईआ। किशना शुक्ला होए ना चन्द अन्धेरा, निरगुण नूर

जोत रुशनाईआ। भव सागर डुब्बे कोई ना बेड़ा, शौह दरिया ना कोए रुढ़ाईआ। वसदा उजड़े कदे ना खेड़ा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। पुरख अबिनाशी करनहारा इक्को हक नबेड़ा, हकीकत दा मालक दया कमाईआ। जन भगत उधारे कर के मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। नज़री आवे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। भगतां मुका के लख चुरासी गेड़ा, चारे खाणी ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर लावे डेरा, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। जन भगत कदे ना करे सोग, चिन्ता ग़म विच ध्यान ना कोए लगाईआ। हउमे हंगता रहे ना रोग, मनुआ मन ना कोए भटकाईआ। आत्म परमात्म ना होए विजोग, विछोड़े वाला पैंडा दए मुकाईआ। पुरख अकाल दी बैठा रहे गोद, सच सिँघासण सोभा पाईआ। साचे नाम दी चुगदा रहे चोग, चुग़ली निंदया नेड़ कोए ना आईआ। चरण प्रीती करदा रहे जोग, तन माटी कपड़ रंग ना कोए बदलाईआ। आत्म सेजा साचा भोगदा रहे भोग, रसीआ रस दए वखाईआ। झगड़ा मुके लोक परलोक, दो जहान मिले वड्याईआ। साचे नाम दा गा के सलोक, शोक अंदरों दए तजाईआ। झगड़ा मुक्के लाड़ी मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच दवारे जाए पहुंच, जिस घर वसे शहिनशाहीआ। जन भगत सच्चे मार्ग चलदयां कोई ना सके रोक, रोकड़ वही खाता चित्रगुप्त ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे प्रेम प्यार विच आपणी मौज, महबूब हो के आपणी खुशी वखाईआ।

६६८ १९

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रणीआ राम दे गृह पिण्ड बदी पुर ज़िला जम्मू ✪

जन भगत कदे ना कटे तंगी, तंगदस्त ना कोए अख्वाईआ। नाम वस्त मिले अनमंगी, साहिब सतिगुर झोली पाईआ। काया चोली जाए रंगी, दुरमति मैल रहे ला राईआ। दीन मज़्ब दी रहे ना कोई पाबन्दी, बन्धन जगत कोए ना पाईआ। कूड़ी वासना अंदरों निकले गंदी, सच सुगंधी दए भराईआ। पवण स्वासी आवे ठंडी, अग्नी तत ना कोई तपाईआ। सुरत सवाणी होवे ना रंडी, मिल हरि कन्त वज्जे वधाईआ। राह रहे ना ओझड़ डण्डी, मार्ग इक्को इक समझाईआ। मनुआ भेख ना करे पाखण्डी, परदा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक बण के संगी, सगला संग निभाईआ। जन भगत कदे ना जाए सौं, आलस निंद्रा ग़फ्लत ना कोए रखाईआ। इक्को एक एका जाए हो, एकँकार विच समाईआ। अन्तर अन्तर सदा रहे लोअ, प्रकाश प्रकाश बेपरवाहीआ। जगत नाता तुट्टे मोह, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया देवे खोह, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। भेव चुका के सोहँ सो, सति सति

विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कदे ना फिरे किसे दे गिर्दे, चक्र जगत ना कोए लगाईआ। इक्को श्री भगवान वसावे हिरदे, हरि मन्दिर काया लए बणाईआ। मेले होवण विछड़े चिर दे, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। दरवाज़े खुल्लृण घर थिर दे, थिर घर साचे विच समाईआ। दर्शन होवण अगम्मी पिर दे, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। झगड़े मुक्क जाण धड़ सीस सिर दे, सर आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लहिणे देवे देर दे, पूरब जन्मां वेख वखाईआ। जन भगत जगत वासना विच ना लावे चक्र, चक्रवतीआं पल्लू जाए छुडाईआ। इक्को प्रेम विच बह के फ़क्कर, फ़िकरा धुर दा ढोला गाईआ। चोटी मंज़ल चढ़ के सिखर, सिख्या इक्को इक लए अपणाईआ। बिन अबिनाशी करते दूजा करे कोई ना ज़िकर, जगत वाली ना कोई पढ़ाईआ। श्री भगवान बणा के आपणा मित्र, मित्र मुरारा लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा साचा वर, साची धारों काया मन्दिर अंदरों आवे निक्कल, परदा ओहला बण विचोला काया चोला सहिजे दए चुकाईआ।

६६९ १९

१२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी चन्नो देवी दे गृह पिण्ड बदी पुर ज़िला जम्मू

जन भगत प्रभ दी रखे सदा याद, जगत वासना विच विसर कदे ना जाईआ। अंदरे अंदर प्रेम प्यार दी मारदा रहे आवाज़, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जुग जुग सुणनहारा फ़रयाद, सचखण्ड निवासी वेखे थाउँ थाँईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक देवे दात, काया झोली आप भराईआ। परदा ओहला लाह के अंदर खोलृ दए राज़, अन्ध अन्धेर देवे मिटाईआ। झगड़ा मुका के कूड़ समाज, समग्री इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत दए बणाईआ। जन भगत प्रभ दी रखे सदा लोड़, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। करे बेनन्ती दोए जोड़, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी जाए बौहड़, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, सरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। मनुआ रहिण ना देवे कठोर, हिरदे हरि हरि जाए समाईआ। झगड़ा मुकाए पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। सुरती शब्दी बन्नृे साची डोर, तन्द आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया देवे होड़, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत माया ममता कोई ना करे ख़ाहिश, कूड़ी ख़सलत विच कदे ना आईआ। जपदा रहे स्वास स्वास,

साह साह मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी सद वसणहारा पास, घर विच घर परदा दए उठाईआ। जन भगत तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दोहां दी इक्को ज़ात, रूप रंग ना कोई वण्डाईआ। तेरा मेला दवारे साच, सच वज्जे इक वधाईआ। मनुआ मन ना होए उदास, चिन्ता ग़म ना कोई सताईआ। जन्म कर्म दी पूरी होवे आस, भरम भरम दा डेरा ढाहीआ। कूड़ विकारा होवे नास सच सच दए उपजाईआ। घर स्वामी वसे पास, काया मन्दिर होए रुशनाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। जन भगतां आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा साथ, सगला संगी आप बण जाईआ। जन भगत सदा राह रिहा तक्क, तकवा इक्को उपर रखाईआ। बिन नैण तों खुल्ह्ली रखे अक्ख, लोचण तीजा इक खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हिरदे जाए वस, हरिजन हरि हरि आपणी बणत बणाईआ। नाम अणयाला तीर मारे कस, तिक्खी मुखी धार बणाईआ। जगत विकारा सत्थर जाए लथ्थ, सोई सुरती आप उठाईआ। नाउँ भण्डारा दे के धुर दी वथ, वक्खर अक्खर दए वखाईआ। जित्थे आत्म परमात्म मिल के रिहा वस, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को दीपक जोत रिहा जग, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत मार्ग रस्ता दस्से इक्को सच, सति सतिवाद दया कमाईआ। जन भगत जगत वाली जाणे कोई ना जुगती, जीवण विच्चों जीवण लए बदलाईआ। परम पुरख परमात्म नाल मेले सिध्धी सुरती, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। अबिनाशी करता किरपा करे अकाल मूर्ती, मोह मुहब्बत कूड़ी दए मुकाईआ। नाद सुणावे अगम्मी तूरती, तुरीआ पद करे रुशनाईआ। धार रहे ना गढ़ हँकार ग़रूर दी, गुरबत अंदरों दए कढाहीआ। नाम खुमारी देवे आपणे सरूर दी, मस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाईआ। खेल खिलाए हाज़र हज़ूर दी, हरिजन साचे लए तराईआ। मिहनत मुशकत झोली पाए गुरमुख मज़दूर दी, जो सदा इक्को नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मंज़ल कटे दूर दी, नेरन नेरा घर वसेरा गृह मन्दिर डेरा घट स्वामी नज़री आईआ।

✪ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिंघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✪

जन भगत चुक्के अन्तर परदा, प्रनदानशीन दया कमाईआ। ओहला मिटाए आपणे घर दा, गृह विच्चों गृह लए प्रगटाईआ। इश्नान कराए साचे सर दा, सरोवर इक्को इक वखाईआ। रूप दरसाए अगम्मी हरि दा, जो हर घट डेरा लाईआ। भेव खुल्हाए थिर घर दा, जित्थे गुरमुख बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी

कार कमाईआ। जन भगत थिर घर सदा ना रखे आसण, आस आपणी आप वधाईआ। तक्के राह पुरख अबिनाशण, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। जिस दा सच दुआर सिँघासण, स्वामी हो के सोभा पाईआ। निरगुण जोत जोत प्रकाशण, रवि ससि ना कोए वड्याईआ। घड़ी पल दिवस रातण, मास बरख ना वण्ड वण्डाईआ। शाहो भूप जगत ना कोए राजण, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। जगत वणजारा वक्त ना कोए महाजन, हट्टो हट्ट ना कोए भवाईआ। नाद धुन शब्द ना कोए आवाज़न, ताल तलवाड़ा ना कोए खड़काईआ। गुर अवतार पैगम्बर पुस्तक कोए ना वाचन, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोए पढ़ाईआ। करे खेल सर्ब गुणतासण, गुण करता नूर खुदाईआ। जलवा ज़ाहर कर बातन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत थिर घर अगे जावे वध, बिन कदमां कदम उठाईआ। पुरख अकाल सहिजे लए सद्द, सदमा पिछला दए चुकाईआ। सच दवारा वखाए हद्द, हदूद पिछली दए मिटाईआ। विष्नूं धार बणा के आपणी यद्द, यदप आपणे रंग रंगाईआ। बिन तत्तां हो जाण संग, वजूद ख़ाक माटी तत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा पूरी करे मंग, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत सचखण्ड दवारा वेख इक प्रकाश, प्रकाश विच समाईआ। ना कोई बचन ना बिलास, अनुभव अन्तर राग अलाईआ। ना सेवक ना दास, ख़ालस हो के मालक विच समाईआ। ना मण्डल ना रास, गोपी काहन ना सूरत बदलाईआ। ना सीआ ना राम ना जंगल बनबास, समुंद सागर ना कोए फोल फुलाईआ। ना हज़रत ना रूह पाक, ना अलिफ़ ये पढ़े लुगात, कलमा हक ना कोए जणाईआ। सच दवारे खोल्ह के ताक, कर प्रकाश बिन आफ्ताब, सच रबाब अहिबाब हो के आपणी इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले कर के आज़ाद, दर घर ठांडे दए टिकाईआ। दर घर दस्से इक्को ठंडा, चरण कँवल मिले सरनाईआ। जित्थे बन्दगी करे कोई ना बन्दा, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। ना कोई ढोला ना कोई छन्दा, गीत राग ना कोए सुणाईआ। ना कोई सुखसागर अनन्दा, सदा अनन्द चित ना कोए वड्याईआ। ना कोई हँ ना कोई ब्रह्मा, ना कोई धर्म ना धर्मा, धर्मी धौल ना कोए वखाईआ। ना कोई जीवण ना कोए मरना, ना कोई नेत्र खुल्ले हरना फरना, ना कोई गुरू अवतार पैगम्बर देवे सरना, सरनगति नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मंज़ल पौड़ी डण्डा चढ़ना, ना कोई विद्या अक्खर पढ़ना, ना कोई तत्तां वाला लड़ फड़ना, जिस दे नालों होए जुदाईआ। पुरख अबिनाशी जोत प्रकाशी शाहो शाबाशी इक परमात्मा वरना, जो वरनां बरनां खैहड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत मंज़ल चढ़े अनोखी, जगत जुग नज़र कोए ना आईआ।

जित्थे पढ़नी पए ना कोए पोथी, बग़ल कुरान ना कोए टिकाईआ। दरवेश हो के मंगणी पए ना रोटी, भिच्छया अलख ना कोए वखाईआ। बिरध बाल हो के फड़नी पए ना सोटी, कदमां नाल चले ना वाहो दाहीआ। इक्को नूर निर्मल सच प्रकाश हो के जोती, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जेहड़ी मंज़ल दिती रविदास चमारे मोची, मौजूदा हो के आपणे विच समाईआ। जन भगत सचखण्ड दवारे चढ़े आप, आपणा आप बदलाईआ। इक्को पुरख अकाल मिल के बाप, सच सिंघासण सोभा पाईआ। लोकमात फेर कदे ना लवे झाक, लख चुरासी नाता ना कोए जुड़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा सद वसे ओस दे पास, जिस दा पासा ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरि भगत सुहेले निरगुण नूर जोत जोड़े नात, तत्तां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सरदारा सिंघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✪

जन भगत प्रभ पूरी करे सध्धर, सदा सदा सद आपणा रंग वखाइंदा। लोकमात निरगुण धार सरगुण करे कदर, कुदरत दा कादर वेख वखाइंदा। अमृत रस नाम प्याला देवे मधुर, मध प्यास ना कोए जणाइंदा। जीवण जुगती देवे बदल, बदी नेकी विच वटाइंदा। पूर करा के मज़ल, मंज़ल आपणी इक समझाइंदा। सच तराजू तोल के वज़न, झूठ सच फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। जन भगत जागरत जोत, शमां शमशान भूमी ना कोए समझाईआ। सदा प्रकाश हुन्दा रहे साचे कोट, कुटीआ विच्चों कूड़ कुटम्ब बाहर कढाहीआ। सुणदा रहे सदा धुर सलोक, सोहला अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। बैठा रहे घराणे वाले चौक, चार कुण्ट जिस दा रस्ता इक्को सोभा पाईआ। परम पुरख दा पूरा करदा रहे शौक, शाकर होके सद सद सीस निवाईआ। साची मंज़ल जाए पहुंच, दर घर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जन भगत कोई ना रहे तृखा, तृखा जगत ना कोए सताईआ। पुरख अबिनाशी पावे भिच्छा, भिक्खक झोली दए भराईआ। मन बुद्धी पूरी करे इच्छा, निरिच्छत हो के दया कमाईआ। रूप बणा के साचे सिक्खा, सिख्या धुर दी इक दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दी मेट के विक्खा, अमृत फल दए खुआईआ। सच संदेश देवे चिट्ठा, कलम शाही ना कोए बणाईआ। धार वखाए इक अनडिठ्ठा, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। जन भगतां दए कदी ना पिच्छा, सनमुख हो के गले लगाईआ। जुग चौकड़ी जगत नेत्र किसे ना दिसा, बिन भगतां लोचन

अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। बिन प्रेम प्यार किते ना विका, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत दूजे घर ना बणन गाहक, वस्त लैण कोए ना जाईआ। कदे होर बणे ना राहक, हिसेदार ना कोए जणाईआ। सिध्धा पुरख अकाल बणावे साक, सज्जण सैण इक अख्वाईआ। सहिज नाल खुल्हावे अंदरों ताक, परदा ओहला परे हटाईआ। किसे हीर दा बणे कदे ना चाक, चाक दी हीर बण के आपणी सेव कमाईआ। मंगदा रहे इक्को धुर दी दात, जो दातार बिन तमअ रिहा वरताईआ। आत्म परमात्म मिलण दा बणया रहे इतफ़ाक, विछोड़े विच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत सदा लावे इक्को नाअरा, नर हो के नरायण ध्याईआ। प्रेम प्यार दा हक जैकारा, जै जै कार विच समाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना छड्ड के दायरा, दामन फड़ के ख़ुशी मनाईआ। रमज़ वाला समझ के इक इशारा, बहुती करे ना कोए पढ़ाईआ। पार होवे दूर किनारा, मंज़ल नेड़े लए मुकाईआ। घर सज्जण मिले मीत मुरारा, ठाकर हो के दरस दिखाईआ। हकीकत विच्चों हक लै लए सारा, मुजारा हो के दूजा हिस्सा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आपणे विच समाईआ।

६७३
१६

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✪

जन भगत विरला विच्चों पदमां, पद साचा वेख ख़ुशी मनाईआ। दूसर चुक्के ना कदमां, कदीम दी रीती प्रभ नूं सीस झुकाईआ। धर्म राए दी अदालत भुगते ना मुकद्दमा, सच मुकाम जाए चाँईं चाँईंआ। लख चुरासी भरमण दा रहे कोई ना सदमा, दु:ख दर्द ना कोए सताईआ। झगड़ा रहे ना पंज तत काया माटी बदना, बदला अगला दए मुकाईआ। मनुआ रहे ना कोई पगला, सोई सुरत सुरत उठाईआ। भटकणा पए ना विच जंगलां, जूह कंदरां ना खोज खुजाईआ। भीड़ी गली पए ना लँघणा, मन्दिर साचे दए टिकाईआ। मंगतयां कोलों पए ना मंगणा, दवारा इक्को मंगे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दस्स के साची बन्दना, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत दूजे घर ना करे अरज़, आरज़ू अवर ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल पूरा करे फ़र्ज़, मेहरवान हो के दया कमाईआ। दुखियां दी दु:ख विच्चों वण्डे दर्द, दीन दयाल हो के वेख वखाईआ। पूरब जन्म दी फोल के फ़रद, फ़रमांबरदारां आपणी गोद उठाईआ। जगत वासना लग्गण ना देवे वरग, वाहिद कलमा इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल सच असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। जन भगत किसे ना होवे अधीन, भय भउ ना कोए मनाईआ। इक्को पुरख अकाल लए चीन, हिरदे हरि हरि आप वसाईआ। मार्ग चढ़ के जगत महीन, पैंडा अगला लए मुकाईआ। श्री भगवान करे तसलीम, तसबी माला गलों सुटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा दे यकीन, यक हुक्म इक सुणाईआ। बिना मुर्शद तों दस्से ना कोए तालीम, मुरीद मुर्दा ना कोए उठाईआ। गुरमुख रहे ना कोए ग़मगीन, गुस्सा गिला देवे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा वर, झगड़ा रहे ना नर मदीन, आत्म रूप सति सरूप सब दा इक्को नज़री आईआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ माई लछमी दे गृह पिण्ड सीड़ जम्मू ✪

जन भगतां होवे ना कदे हैरानी, पसचाताप ना कोए रखाईआ। मन करे ना कोई शैतानी, शरअ ज़ंजीर ना कोए बंधाईआ। मंज़ल वेखे सच असानी, एहसान विच किसे ना आईआ। जूह जाणे ना कोए बेगानी, हर घट रमिआ वेखे धुर दा माहीआ। झगड़ा रहे ना बुत्तख़ानी, ख़ालस रंग विच समाईआ। किसे तों मंज़ल पुछणी ना पए रुहानी, पौड़े डण्डे हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किसे उधार ना होए प्रानी, जगत रीत ना कोए वखाईआ। इक्को तक्के सच निशानी, जिस दा निशाना झुल्ले थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा चुकावणहारा जन्म कर्म दीवानी, दाअवा दायर फिर ना कोए कराईआ। जन भगत माया ममता करे कोए ना सोच, ग़म विच ना कदे समाईआ। इक्को दर्शन रिहा लोच, लोचा मनसा पूर मिले वड्याईआ। घर विच ठाकर करे खोज, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर सरन चरण साची मौज, मज़ा अंदरों दए चखाईआ। बिना कपड़े रंग्यों देवे जोग, जुगती आपणा नाम समझाईआ। दर्शन देवे रोज़, रोज़यां तों लवे बचाईआ। विकारां तों लवे रोक, हंगता दए मिटाईआ। सुणा के इक सलोक, सूखम मेला सहिज सुभाईआ। गुआ के चिन्ता सोग, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला धुर संजोग, जग विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। जन भगत देवे ना किसे ख़राज, जज़ीआ डंन भरन कोए ना आईआ। दूसर होवे ना किसे मुहताज, आसा विच ना नीर वहाईआ। साहिब सतिगुर पूरा करे काज, करनी दा मालक होए सहाईआ। शब्दी बेड़े चाढ़ जहाज़, जगत जहान पार लँघाईआ। पूरब करमां दा बदल रिवाज़, रवादारी पिछली दए चुकाईआ। साचा दस्स के इक अदाब, सिख्या सिख सिख दृढ़ाईआ। धुन आत्मक सच्ची निकले आवाज़, सोहँ ढोला सहिज सुभाईआ। कोटां

विच्चों खोल्ह के राज़, हरिजन साचा आप जगाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, दगेबाज़ी तों लवे बचाईआ। जोती दीप जगा चराग़, चारागाहां विच ना कोए फिराईआ। भगत भगवान दस्स समाज, समग्री इक्को झोली पाईआ। धुर दा खेड़ा कर आबाद, इबादत आपणी दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन माटी ख़ाकी साची देवे पोशाक, पोशीदा आपणा आप रिहा लुकाईआ। जन भगत सद रखे हथ्थ पुश्त, पनाह इक्को इक जणाईआ। हुक्म नाम देवे दरुस्त, कूड़ी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नाम भण्डारा वण्डे मुफ्त, कीमत करता ना कोए लगाईआ। वासा होवे ना फेर उलट, गर्भ जून ना फेर भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कदे ना होवे मुर्दा, मुरीद मुर्शद विच समाईआ। आदि जुगादि लहिणा देणा साचे सतिगुर दा, सति सतिवादी धार चली आईआ। जो सच प्रेम अंदर जुड़दा, जोड़ी आपणी लए बणाईआ। राग सुणा के शब्दी ताल सुर दा, सुत्यां लए उठाईआ। झगड़ा मुका के अन्ध घोर दा, घराना साचा दए वसाईआ। झगड़ा चुका के ठग्ग चोर दा, चुरस्ते सारे साफ़ कराईआ। दर्शन देवे आपणी लोड़ दा, लोक परलोक वेख वखाईआ। पैंडा मुकावे काया मन्दिर अंदर आपणे कोल दा, कुल्ल मालक आपणी दया कमाईआ। सच दरवाज़ा इक्को खोल्हदा, जन भगतां दए समझाईआ। गुरमुखां कुकर्म कदे ना फोल दा, जगत करमां दी करे सफ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द कंडे तराज़ू साचे तोलदा, धड़ी वट्टे सेर नाल ना कोए रखाईआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मान कौर दे घर पिण्ड सीड़ जम्मू ✪

जन भगत बदले कदे ना मनसा, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। सोहँ रूप बणया रहे हँसा, चतुरमुख साचा ढोला गाईआ। नाता तुटे जगत विकार बंसा, अंदर दे बंधू बन्धन कोए ना पाईआ। मनुआ हँकारी रहे ना कंसा, कूड़ा गढ़ दए तुड़ाईआ। जन्म मरन चुक्के संसा, गेड़ चुरासी ना कोए भवाईआ। दूई द्वैत रहे ना हिंसा, इक्को रंग वेखे सर्ब लोकाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर बिनसा, अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। बिन भगतां झगड़ा किसे ना चुकया जूह पिण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध ना कोए मुकाईआ। जगत जहान सर्ब अबिनाशी करता निन्द दा, निन्दक हो के देण दुहाईआ। कोई भेव ना जाणे गहर गम्भीर सागर सिन्ध दा, संगी हो के संग ना कोए रखाईआ। जगत मकान हुजरा बणया रहे चिन्द दा, चिन्ता विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। लेखा मुके ना किसे ज़िंदगानी ज़िंद दा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी ना कोए बदलाईआ। राग सुणदे सारे सुरां वाली किंग दा, साचे शब्द ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल

खेल गुणी गहिंद दा, गहर गवर इक अख्वाईआ। जन भगत कदे ना जावे दोज़ख़ बहिश्त, स्वर्गां विच डेरा कदे ना लाईआ। अपच्छरां भोगे ना कोए गृहस्त, ममता ना कोए वधाईआ। इक्को पुरख अकाल मन्ने इष्ट, आशक माशूक दोहां विच्चों बाहर कढाहीआ। सदा खुल्ही रखे दृष्ट, दिब नेत्र विच रुशनाईआ। मानस जन्म अन्त अख़ीरी चुरासी दी तारन आवे किशत, पिछला लेखा हिसाब बेबाक कराईआ। एह इशारा राम नूं दिता वशिष्ट, विषयां वाला राम विशेष इक्को विच समाईआ। जिस दी कल्पणा विच अन्तर ना जावे भृष्ट, भरमां विच ना कोए भुलाईआ। अयुध्या निवासी वेख लिस्ट, फ़रिसत अगली दिती वखाईआ। गोबिन्द धार पिच्छो भारत खेल होणा बिंटिश, वैरी घर घर नज़री आईआ। मेरा नाउँ होणा टांक जिसत, इक दो वण्ड वण्डाईआ। सति धर्म होणा निष्ट, नश्यां विच होवे लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात विच्चों सारयां जाणा ख़िसक, पल्लू जगत नालों छुडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी पूरी करनी लिख्त, जो भविख्तां विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। जन भगत कदे ना जाए मढ़ी गोर कबर, लेखां वाला राह ना कोए तकाईआ। राह तक्के ना धरती उपर नीला अम्बर, ज़िमीं असमान ना कोए वड्याईआ। प्रेम प्यार अंदर कर के साचा सबर, साबत सूरत तक्के धुर दा माहीआ। जाम प्याला पी के इक्को मधर, मधम बैखरी परा पसन्ती चारे जाए तजाईआ। सुणे संदेसा धुर दी ख़बर, शास्त्रां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। जिस दा हुक्म लेख कोई कर ना सके रबड़, ग़लती विच दरुस्ती कर ना कोए वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत गुर अवतार पैगम्बर साध सन्त जिस दा निक्का जिहा टब्बर, टप्पयां वाली सब नूं कर के गया पढ़ाईआ। बिन भगतां पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड कीती ना किसे दी कदर, बेकदरी होई लोकाईआ। वशिष्ट ने किहा राम कलयुग जिस वेले क्षत्रीआं ने पहनआं खद्दर, किसे दी पूरी होणी नहीं सध्धर, पुरख अकाल करना पध्धर, उपद्दर विच वेखे जगत लोकाईआ। दीन दुनी होवे कतल, साचा मिले ना किसे पत्तन, पैगम्बरां दा चले कोई ना यतन, यथार्थ इक्को हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले आवे रखण, लख चुरासी विच्चों वरोले मक्खण, दिशा वेखे उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, चारे खाणी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ी क्रिया जड़ आवे पट्टण चार वरन करे सफ़ाईआ।

६७७
१६

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ माया देवी दे गृह पिण्ड मगोवाली जम्मू ✪

जन भगतां ताले लग्गी रहे सदा कुंजी, कुफल बन्द ना कोए कराईआ। सच प्रेम दी मिली रहे पूंजी, अतोट अतुट देणी वरताईआ। दीन मज़्ब दी देणी पए ना चुंगी, शरअ मसूल ना कोए लगाईआ। रसना रहे ना कोए गूंगी, गुण गहर गम्भीर सद गाईआ। बिन मेरी किरपा वस्त लभ्भे ना किते ढूंडी, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। जन भगतां कँवली करनी ऊंधी, नाभ विच्चों आब देणा चुआईआ। दर दर घर घर खा के दाल मसर मूंगी, असर आपणा देणा वखाईआ। बिन मेरे आत्मा दिसे ना कोई जीउँदी, अमर रूप ना कोए वटाईआ। दात बख्शण लग्गे नेंहों दी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धार मिल जाए अमृत मेहों दी, मेघला इक शरमाईआ। खेल तक्कीए अछल अभेओ दी, जन भगत झोली डाहीआ। सेज माणीएं ओस प्यो दी, जित्थे मतरेआ भगत नज़र कोए ना आईआ। प्रभू तेरे अगे शरीणी रखणी नहीं किसे घिओ दी, घृत नाल ना कोए वड्याईआ। साची खेल वेखणी अगम्मी दयो दी, जिस दा देवत सुर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तकाईआ। जन भगत किसे नाल ना जोड़े रिश्ता, बन्धन अवर ना कोए रखाईआ। लेखा रखे ना कोई फ़रिश्ता, फ़रिसत विच्चों आपणा आप बाहर कढाहीआ। इक्को श्री भगवान उत्ते करे निसचा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट अवर ना कोई दिस्सदा, दहि दिशा इक्को रूप समाईआ। गृह वेखे धुर दे मित दा, पतिपरमेश्वर परदा दए उठाईआ। मानस जन्म वेला जित्त दा, हार नेड़ कोए ना आईआ। साडा नाता नहीं कोई मुन रिख दा, जो जंगलां विच बह के धूंणीआँ रहे तपाईआ। साडा प्यार नहीं जगत वाले सिख दा, जो सुख कारन तेरा नाम ध्याईआ। साडा लहिणा देणा आदि जुगादी एकँकार इक दा, इक इकल्ले दे वड्याईआ। जे भगत ना होवे तूं किस दा नाम लिखदा, तेरे नाम दी कदर कोए ना पाईआ। लेखा मुका दे करवट वाली पिठ्ठ दा, पिछला अगला दे बदलाईआ। असीं सफ़र नहीं करना सवा गिठ्ठ दा, कफ़नी विच आपणा आप ना बन्द कराईआ। असीं कोई तेरा दवारा वेख्या नहीं पत्थर इट्ट दा, जिस नूं बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां हर घट दिसदा, देस देसन्तर तेरा ढोला गाईआ। जन भगत नाम लए कोई ना मुल्ल दा, कीमत (करता) कोई ना पाईआ। तेरे प्यार अंदर तुलदा, भाणे विच समाईआ। लेखा मुका के आपणी कुल दा, कुल्ल मालक कुल तेरी झोली पाईआ। नज़ारा तक्क तेरे असल असूल दा, वसल विच आपणा आप समाईआ। मानस जन्म वेला वक्त नहीं फ़ज़ूल दा, फ़ैसला हक देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत तेरी याद कदे ना भुल्लदा, भुल्लेखे

विच ना कोए भरमाईआ। जन भगत प्रभ चले तेरे भाउ, भँवर विच ना कोए भवाईआ। जपे साचा नाउँ, नईआ नौका चरण ना कोए टिकाईआ। वसे तेरे गाउँ, गली कूचे फिरे ना वाहो दाहीआ। कर किरपा पकड़ उहनां बाहों, बल आपणा आप प्रगटाईआ। कलयुग अन्त दे ठंडी छाउँ, अग्नी अग्ग दे बुझाईआ। तेरे हथ्थ सच्चा न्याउँ, अदल इन्साफ़ दे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं करदे वाहो वाहो, वाहिगुरू तेरी सरनाईआ। तेरे मिलण दा सच्चा चाउ, घनेरा घर घर नज़री आईआ। पाँधी भुल्ले ना कोई राहों, जो तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होणा सहाईआ। जन भगत तेरा नूर इक्को लभ्भदा, अंदरे अंदर खोज खुजाईआ। जित्थे झगड़ा मुक्के हब्ब दा, जगत सबब ना कोए लड़ाईआ। विछोड़ा मिटे पिछला कब दा, कदीम दे कर्म देवे कटाईआ। नूर नज़री आवे इक्को रब्ब दा, जो रहमत रिहा कमाईआ। हुक्मे अंदर भगतां सदा सद्दा, सुनेहड़ा शब्द धार पहुंचाईआ। प्रेम प्रीती अंदर परमात्म आत्म नाल लगदा, लग मातर नज़र कोए ना आईआ। प्रकाश हो के जगदा, जोती जोत होवे रुशनाईआ। काया भँवरी विच्चों कढ्ढदा, इशारा अगला इक वखाईआ। सच सिँघासण जित्थे सजदा, साजण इक्को सोभा पाईआ। सच नगारा इक्को वज्जदा, नाम अगम्मा होए शनवाईआ। दीपक निराला इक्को जगदा, तेल बाती ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता जित्थे वसदा, दर घर ठांडा सोहणा नज़री आईआ। जन भगत मालक ओसे हक दा, जिस हक विच शक रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी सदा पैज रखदा, (भै भंजन) आपणा आप जणाईआ।

६७८
१६

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी शाहणी दे गृह चक्क माजरा जम्मू ✪

जन भगत भवे किसे ना कूट, कुटीआ जगत ना कोए बणाईआ। ख़ाक रमा ना बणे अवधूत, माटी खेह ना कोए उडाईआ। गली गली ना करे कूच, घर घर ना अलख जगाईआ। भाग लगाए काया पंज भूत, भाओ आपणा पूर कराईआ। चिन्ता ग़म मिटा के दूख, दलिद्र दए गवाईआ। संसा रोग जाए चूक, चुकन्ना हो के वेख वखाईआ। सति सच दी पावे सूझ, बुध बिबेक बणाईआ। घर तक्क महल्ल अरूज, पेख पेख खुशी प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना एक दूज, दूआ एका नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे रंग आप समाईआ। जन भगत वस्तू लभ्भे ना किसे बाज़ार, गली गली ना फेरा पाईआ। नेत्र रोवे ना ज़ारो ज़ार, हन्झूआं धार ना कोए वहाईआ। अन्तर अन्तर करे

सच प्यार, मंत्र फ़ुरने वाला गाईआ। बसन्तर सके कोई ना साड़, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। प्रकाश होवे नाड़ नाड़, हाडी माटी सोभा पाईआ। साचा वेखे इक अखाड़, सुरती शब्दी मिल के रंग रहे वखाईआ। शब्द अनादी वज्जे ताड़ ताड़, पंच विकारा सिर ना कोए उठाईआ। सदा खुल्ल्या रहे किवाड़, बन्धन बन्द ना कोए कराईआ। देणी पए ना किसे आड़, आड़्त जगत ना कोए वखाईआ। इक्को दरस करे निरँकार, निरवैर मिल के खुशी मनाईआ। जो सुणे सदा पुकार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगतां होवे मददगार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग होण ना देवे खुआर, खुआरी गवारी दोवें लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्चा अधार, धीरज धीर इक वखाईआ। जन भगत पुस्तक पढ़े ना कोए कताब, कुतबख़ाना फोलण कोए ना जाईआ। सतार वजाए ना कोए रबाब, सरंगा कंध ना कोए लगाईआ। मुहब्बत विच मिले इक अहिबाब, जो मेहर नज़र उठाईआ। प्याला देवे हयाते आब, आबरू रखे थाउँ थाँईंआ। साचा बख्श के हक ख़ताब, ख़ता पिछली साफ़ कराईआ। जन्म जन्म चों कर आज़ाद, मार्ग साचा दए वखाईआ। जेहड़ा होवे ना कदे बरबाद, आबादी विच बहुती संख्या ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दाद, दास्तान अवर ना कोए दोहराईआ। जन भगत होए ना कदे दिलगीर, जिंदादिल नज़री आईआ। दर दर दरवेश ना बणे फ़कीर, फ़िकरा प्रभ दा ढोला गाईआ। शरअ वाली पाए ना कोए ज़ंजीर, डोरी तन्द ना कोए बंधाईआ। सागरां विच्चों लभ्भे ना नीर, अमृत आत्म रस चुआईआ। साहिब स्वामी इक्को कर के दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। सदा रहे बग़लगीर, हम साजण हो के सोभा पाईआ। जित्थे पढ़नी पए ना कुरान मजीद, आयत सुणन कोए ना आईआ। सदा खुशी रहे तबीअत, तबअ तबीब ना कोए बदलाईआ। नज़री आए हक असलीअत, असल वेखे चाउ चाँईंआ। भगत भगवान जाण वलदीअत, वाहद इक्को सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्सणहारा सच नसीहत, दूजा नाम नशर ना कोए कराईआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह पिण्ड मगोवाली जम्मू ✪

जन भगत पढ़े किसे ना पाठशाला, सिख्या जगत ना कोए जणाईआ। वड़े किसे ना धर्मसाला, जो इट्टां पत्थरां नाल सोभा पाईआ। नहावे ना किसे ताला, जो बूँद बूँद मिल के वहण वहाईआ। कूड़ी घाले ना कोई घाला, घायल माया ना कोए कराईआ। इक्को मिले पुरख अकाला, अकल आपणी छड्ड चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा मार्ग दए वखाईआ। जन भगत पढ़े ना किसे मकतब मदरसे, सबक लैण कोए ना जाईआ। लेखा लिखे ना उपर किसे फट्टे, पट्टी फट्टी ना कोए बणाईआ। कैदा ख़रीदे ना किसे हट्टे, उंगलां अक्खरां उत्ते घसाईआ। इक्को ओट प्रभ दी रखे, जो मालक धुर दा नज़री आईआ। जो सिख्या साची दस्से, दस्म दवारी तों अगे करे पढ़ाईआ। प्रीती विच करे पक्के, मेहर मोहर नजर लगाईआ। ख़ुशी रखे पहर अठ्ठे, अठ्ठां तत्तां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म दे मेट के रट्टे, लेखा अगला दए चुकाईआ। जन भगत पढ़े ना कोल किसे उस्ताद, हिन्दसा हरफ़ ना कोए जणाईआ। बन्धन पाए ना कोए समाज, ज़ाती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लेखा लिखे ना कोए हिसाब, वधाओ घटाओ ना कोए रखाईआ। इक्को प्रभ दी रखे याद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। जिस काया खेड़ा कीता आबाद, इबादत आपणी दए समझाईआ। प्रेम अंदर मारे आवाज़, सुत्यां लए जगाईआ। मानस जन्म पूरा करे काज, करनी आपणी इक दृढ़ाईआ। सच दुआर दा सवराज, सरोपा इक रखाईआ। जन्म कर्म दा बदल रिवाज, राह आपणे लए चलाईआ। किसे दा होण ना देवे मुहताज, सच भण्डारा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे बेड़े चाढ़ जहाज़, जगत जहालत विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ १३ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देवी सिँघ दे गृह मगोवाली जम्मू ✪

जन भगत मंगे एका धूढ़, मस्तक मस्ती नाम रमाईआ। झगड़ा छड्डे क्रिया कूड़, सति सच सुच इक्को लए प्रनाईआ। चतुर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़, बुध बिबेक नज़री आईआ। जलवा जोती मिले नूर, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। मन वासना मनुआ ना पावे फ़तूर, मति मतवाली ना कोए कुरलाईआ। गढ़ हउमें तुट्टे ग़रूर, नौबत अंदरों बाहर कढाहीआ। करे ना कोए कुसूर, कसम खा के प्रभ दा ढोला गाईआ। सच दवारे बण मज़दूर, चाकर हो के सेव कमाईआ। नाम खुमारी विच हो मख़मूर, महिफ़ल वेखे धुर दी चाँईं चाँईंआ। दरगाह साची दा हज्ज कर कबूल, काअब्यां विच्चों पल्ला लए छुडाईआ। जित्थे मिले इक्को महबूब, मुहब्बत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा चार युग दिन्दे गए सबूत, साबत सूरत दए वखाईआ। भाग लगाए पंज तत काया कलबूत, वजूद इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। जन भगत दर दरवाज़ा अंदरों लए खोल्ह, बाहर परदा ना कोए जणाईआ। निरगुण हो के निरगुण नाल लए बोल, शब्द अगम्मी धुन सुणे चाँईं चाँईंआ। आत्म हो के परमात्म वस्से कोल, काइल हो के आपणा आप मिटाईआ।

लोकमात सुत्यां विच रहे ना कोए अनभोल, सलाह मश्वरा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सिध्धा मार्ग परम पुरख दा वेखे इक निरोल, अनमोल धुर दा नज़री आईआ। सति सच विच जाए मौल, मौला मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल खेल दए वखाईआ। जन भगत दूसर करे ना कदे सजदा, नमस्ते विच सीस ना कदे झुकाईआ। इक्को परम पुरख दा बणे बरदा, बन्दीख़ाने विच्चों आपणा आप बाहर कढाहीआ। मेला मंगे इक्को हरि दा, हर हिरदे अंदर वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण गेड़ा गिड़दा, लख चुरासी रिहा भवाईआ। जन भगतां नाल भगवन्त हो के आपे निबड़दा, गुर अवतार पैगम्बर देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक वखाईआ। जन भगत होवे ना कदे ग़दागर, ग़द्दारी विच डेरा ना कोए लगाईआ। इक्को मंग धुर दर, दर दरबारे मंग मंगाईआ। मालक मिले सच्चा हरि, महबूब हो मुहब्बत विच समाईआ। मंज़ल मंज़ल आपणी जाए चढ़, अगे हो ना कोए अटकाईआ। बिना कलमे तों कलमा जाए पढ़, नाम निधाना सोहला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी सति सतिवादी लए बणाईआ। जन भगत मस्ती अंदर होए मतवाला, मुतलाशी अवर नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी होए रखवाला, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। नाम खुमारी अंदर करे दीवाना, दीवा बाती निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सच वखाए इक्को मैख़ाना, महबूब हो के मेहर नज़र उठाईआ। लेखा जाणे आवण जाणा, आवत जावत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर साचा घर वसे उच्च महल अटल टिकाणा, महिराब हुजरा हक इक समझाईआ। जन भगत दूसर होए ना ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव ना कोए कमाईआ। इक्को दरस मंगे दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। इक्को मेला परवरदिगार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा लहिणा देणा सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। नित नवित प्रगट होए विच संसार, दीन दुनी वेखे चाँईं चाँईंआ। भगत सुहेले लए उठाल, काया मन्दिर अंदर सोई सुरती रहिण कोए ना पाईआ। कर किरपा बणावे आपणे लाल, लालन आपणे रंग दए रंगाईआ। सचखण्ड वखा के सच्ची धुर दी धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक बणाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, सकयां नालों नाता जाए तुड़ाईआ। लख चुरासी विच्चों होए बहाल, जम की फाँसी गल ना कोए पाईआ। मेल मिले दीन दयाल, दीनां बंधू बन्धन दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दा मुश्कल हल्ल करे स्वाल, अहिवाल आपणा इक समझाईआ।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरी सिँघ दे गृह मगोवाली जम्मू ✪

६८२
१६

जन भगत अवस्था सदा बाल, पुरख अकाल आपणी गोद टिकाइंदा। लोकमात मातलोक दे साचे लाल, लाल गुलाला अगम्मी रंग चढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी सद करदा रहे प्रितपाल, सेवक हो के आपणी सेव कमाइंदा। शब्द अनादी बणाउँदा रहे दलाल, विचोला हो के विचला भेव खुल्हाइंदा। मुरीदां मुर्शद हो के सुणदा रहे हाल, हालत सब दी फोल फुलाइंदा। निरगुण हो के वसदा रहे नाल, सरगुण मेला आप कराइंदा। जुग जुग जगत चले अवल्लड़ी चाल, भगत भगवन्त आपणी कारे लाइंदा। साचा मंत्र अन्तर निरंतर देवे सिखाल, इष्टी दृष्टी इक्को घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दस्स सच्ची धर्मसाल, धर्म दी धिर आपणे नाल रखाइंदा। जन भगत मांगे इक दवार, घर ठांडे डेरा लाईआ। जित्थे मिले वस्त नाम हरि थार, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। साची चढ़ी रहे खुमार, खुशी आपणा रंग वखाईआ। भरमे भुल्ले ना विच संसार, सहिसा ग़म ना कोए सताईआ। आत्म माणे आपणी बहार, बसन्त बसन्त विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार अधार, आदर इक्को घर रखाईआ। जन भगत सद पूरी होवे मुराद, मुरीद मुर्शद मिल के खुशी मनाईआ। ठाकर करदा रहे इमदाद, मेहरवान हो के आप सहाईआ। आपणे उपर रखे शाकर शाद, शदीद रोग ना कोए सताईआ। करनी होण ना देवे बरबाद, करता कर्म वेख वखाईआ। लेखा अगे मंगे ना कोए जुआब, जवाब तल्बी विच ना कोए रखाईआ। दो जहान देण शाबाश, वाहवा कर के ढोले गाईआ। पुरख अकाल होया साथ, सगला संग निभाईआ। झगड़ा पृथ्मी आकाश, गगनां उत्ते मंगल वेख वखाईआ। लेखे लग्गा साह स्वास, स्वार्थ मिली माण वड्याईआ। दीआ जोत होई प्रकाश, बाती कमलापाती नाम टिकाईआ। प्रभ चरण मिल्या प्रताप, परत फेर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले वेख के आप, आपणे घर टिकाईआ। जन भगत मालक साचे घर दा, घिरना विच कदे ना आईआ। जित्थे इक्को दीपक जगदा, जगह जगह ना कोए रुशनाईआ। पुरख अकाल सच सिँघासण सजदा, सोभावन्त डेरा लाईआ। हुक्म सुनेहड़ा जुग जुग घलदा, फ़रमाना आप उपाईआ। लख चुरासी चोली रंगदा, तन माटी कर सफ़ाईआ। जन भगतां सच बेनन्ती मन्नदा, सुणनहार गुसाँईंआ। कदे कच्चा ना होवे कन्न दा, चुग़ली निंदया सुणन कोए ना पाईआ। प्यारा बणे साचे जन दा, जो जन्म प्रभ दी झोली पाईआ। पूरा लेखा करे पवण स्वास दम दा, दामन आपणा दए फड़ाईआ। लेखा रहे ना कोई मन दा, मनसा मोह कूड़ दए चुकाईआ। कर प्रकाश साचे चन्न दा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। भेव खुल्हा के हैं ब्रह्म दा, पारब्रह्म आपणे विच

समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा सद साचे घर टिकाईआ। हरि भगत वेखे गृह ठंडा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जगत वासना विच ना होए गंदा, कूड़ी क्रिया ना कोए रखाईआ। रसना वाला सुणे ना कोए छन्दा, अगम्मी नाद करे शनवाईआ। वासना वाला दिसे ना कोए बन्दा, बन्दगी विच बन्धन सारे जाए तुड़ाईआ। मंज़ल पौड़ी पार होवे डण्डा, डण्डउत कर के सीस झुकाईआ। पूरी होवे मनसा आसा उमंगा, सहिसा सहिम रहे ना राईआ। धाम सुहावणा मिले चंगा, चंगयाईआं बुरयाईआं दा लेखा दए मुकाईआ। चरणां हेठां वैहन्दी वखाए गंगा, गोदावरी सुरस्ती जमना झुक झुक लागण पाईआ। मिले मेल सूरा सरबंगा, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जिस दा प्यार इक अनन्दा, चिन्ता रोग दए गवाईआ। सच दवारा वखावे धुर दरगाह ठंडा, सचखण्ड निवासी मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत प्रभ देवे सच सुगंधा, दुर्गन्धां अंदरों बाहर कढाहीआ। दीन दयाल हो बख्शंदा, बख्शिश रहमत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कारन सच दुआर दा सदा खुल्ला रखे जंदा, कुफ़ल काफ़र बन्द ना कोए कराईआ।

६८३
१६

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड हँसा जम्मू ✪

जन भगत प्रेम प्यारा निर्मल जोत, इष्टां दा इष्ट इक्को वेख वखाईआ। धाम वेखे सचखण्ड दवारा धुर दा कोट, बंक दुआर छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मन बुद्धी दी करे ना सोच, अनुभव अंदर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। लेखा जाणे ना लोक परलोक, ब्रह्मण्डां खण्डां ध्यान ना कोए लगाईआ। इक्को पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दी रखे ओट, ओड़क आपणा आप ओसे विच समाईआ। साचा ढोला गाउँदा रहे सलोक, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर साचा नूर करे रुशनाईआ। जन भगत इक्को होवे धार, धारना विच दूजी कदे ना आईआ। नाता तोड़ सर्ब संसार, संसारी अंदर आपणा आप समाईआ। सति धर्म दा बोल जैकार, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। दर वेख ठांडा दरबार, नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों होए बाहर, माया ममता ना कोए सताईआ। मंज़ल चढ़े जगत दुष्वार, दुश्मन अंदरों बाहर कढाहीआ। सुरती शब्दी कर प्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लेखा दए मुकाईआ। एका रंग माणे कन्त भतार, आत्म सेजा सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती घर करे उज्यार, उजाला निराला आपणा इक दरसाईआ। जिस दा हुक्म चले सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ना कोए उलटाईआ। सो भगत सुहेला

आवे आपणी वार, वारता पिछली वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों लए उबार, निरगुण हो के सरगुण लए जगाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहार, कातब चले ना कोए चतुराईआ। संदेशे विच सुनेहड़ा देवे आप निरँकार, हुक्मे अंदर हुक्म आप मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लावे पार, पारस रूप देवे वखाईआ। जन भगत दूसर कोई ना जाणे जुगत, जुगती विच कदे ना आईआ। कदी ना मंगे मुक्त, मुक्ती तों परे आपणा घर वसाईआ। जित्थे प्रभ दा दर्शन होवे मुफ्त, टकयां दी लोड़ रहे ना राईआ। मात गर्भ फेर ना आवे उलट, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जन भगत कूड़ी क्रिया मेटे लीक, लकीर फ़कीर ना कदे अख्वाईआ। प्रभ दा दर्शन मंगे ठीक, ठाकर इक्को लए ध्याईआ। जो देवे वड्याई ऊँच नीच, राउ रंकां होए सहाईआ। सदा बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच सके ना कोए फसाईआ। जन भगतां काया माटी ठांडी करे सीत, अमृत धारा मुख चुआईआ। सच दुआर धुर दी दस्से प्रीत, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन भगत किसे ना बणे कदे ख़ादम, ख़िदमतगार इक्को घर दा नज़री आईआ। मानस रूप जाणे धुर दा आदम, हवा पवण नाल उडाईआ। लेखा समझे ना कोई कान्हा यादव, यदिप आपणे रंग विच समाईआ। निरगुण सरगुण हुन्दा वेखे तबादल, तबदीली अंदर खुशी मनाईआ। सच दवारे इन्साफ़ तक्के आदल, अदली होवे बेपरवाहीआ। जित्थे दूजा रहे ना कोए कातिल, मकतूल रूप ना कोए वटाईआ। जलवा होए बातन, ज़रा ज़रा रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी दिसे साथन, सगला संग निभाईआ। भगतां पढ़े गाथन, ढोला इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा दस्से धुर दा पातन, पत्तन इक्को दए वखाईआ। जन भगत दूजे जाए कदे ना पत्तन, घाट नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल मिलण दा इक्को करे यतन, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मुड़ के जाणा ओस वतन, जिस गृह विच्चों होई जुदाईआ। साहिब सतिगुर पत आपे आवे रखण, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। दरस वखावे आपणी अक्खण, आख़र आपणा परदा दए उठाईआ। जन भगतां हिरदे आवे वसण, ओहला अंदर रहे ना राईआ। सच्चा मार्ग आवे दस्सण, सहिजे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुकाए आपणे हथ्थन, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जन भगत आत्म कदे ना होवे अकेली, अकल कलधारी मेल मिलाइंदा। पुरख अकाल बणे बेली, बेले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाइंदा। सति प्यार बणा के चेली, मुहब्बत महबूब विच्चों प्रगटाइंदा। शब्दी धार बणा सहेली, सज्जण हो के संग रखाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेली,

ख़ालक हो के भेव आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सीस रखे ओस हथेली, जिस हथ्थ उत्तों फड़ परे ना कोए सुटाइंदा।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ दौलत राम दे गृह पिण्ड कोटली जम्मू ✪

जन भगत कूड़ी रखे कोए ना हरस, ममता मन ना कोए धराईआ। इक्को प्रभ दा निज लोचन मंगे दरस, जगत अक्ख ना कोए वड्याईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर रहे भटक, भटकणा बाहरों सर्ब चुकाईआ। अबिनाशी करता करे सद्दा तरस, मेहरवान मेहर नज़र वेख वखाईआ। बूँद स्वांती अमृत धार निझर झिरना देवे बरख, अग्नी तत कूड़ बुझाईआ। पंच विकारा मिटे कटक, कर्म कांड दा लेखा दए चुकाईआ। आपणा घर वखाए परत, जिस गृह विच्चों होई जुदाईआ। तख्त निवासी नज़री आए उपर सचखण्ड दवारे साचे तख्त, जोती जाता नूर रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के नाता जुड़ाए भगत भगवन्त, भाग हिस्सा दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया मेटे चिन्त, ग़म सोग ना कोए सताईआ। घट भीतर सदा बहार रहे बसन्त, गुलशन वेखे बेपवराहीआ। मेल मिलावा होवे धुर दे कन्त, सेज सुहञ्जणी वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुक जाए स्वर्ग जन्नत, बहिश्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। सचखण्ड दवारा मिले इक्को अन्त, अन्तश्करन दा लहिणा झोली पाईआ। बोध अगाध जन भगत बणे अगम्मी पंडत, निरअक्खर पढ़ के अक्खरां दए बणाईआ। नाता तोड़ के जेरज अण्डज, उत्भुज सेतज पल्लू लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत कदे ना बज्झे शरअ विच ज़ंजीर, दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को मंज़ल चोटी चढ़े अख़ीर, आख़र प्रभ नूं मिल के ख़ुशी मनाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना कोए तकदीर, करमां दी करे ना कोए लड़ाईआ। लेखा रहे ना अमीर ग़रीब, अमरापद इक्को नज़री आईआ। अमृत धारा मिले धुर दा ठंडा सीर, रस अनडिठ्ठा आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वड्याईआ। जन भगत प्रभ दर्शन लोड़े लोच, निज नैण अक्ख खुल्हाईआ। जित्थे बुद्धी दी रहे कोई ना लोच, मन चैंचल ना कोए चतुराईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी लोक, सलोक इक्को सुण के ख़ुशी मनाईआ। सच दुआर दी माणे मौज, ग़मी अंदरों बाहर कढाहीआ। परम पुरख दा वेखे चोज, चोला आपणा रंग रंगाईआ। साची भगती दा पूरा होवे जोग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मैं ममता दा रहे ना रोग, हँ ब्रह्म परदा दए उठाईआ। आत्म परमात्म होवे धुर

संजोग, विछोड़ा दूई वाला चुकाईआ। निरगुण निरगुण दिन्दा रहे दरस अमोघ, सरगुण सरगुण वज्जदी रहे वधाईआ। होवे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। भाग लग्गे साचे कोट, कूड़ कुटम्ब अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम खुमारी जन भगतां सदा रखे मदहोश, मध आपणा जाम प्याईआ। जन भगत कोई ना लोड़े झगड़ा, झगड़त वक्त ना कोए गवाईआ। ओह मार्ग सोचे अगला, जिस बिध मिले बेपरवाहीआ। लेखा चुक्के सगला, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। सदा होवे चार मंगला, गीत गोबिन्द अलाईआ। तन माटी ख़ाकी सोहे साढे तिन्न हथ्थ बंगला, बग बप्पड़ा हँस रूप वटाईआ। मनुआ मन रहे ना पग़ला, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। पुरख अबिनाशी लभ्भणा पए ना विच्चों जंगलां, काया मन्दिर अंदर मिल के खुशी मनाईआ। दवारयों पए ना मंगणा, लोक लाज ना कोए जणाईआ। काया माटी चोला पए ना रंगणा, सतिगुर पूरा चरण धूढ़ी टिक्का ख़ाक दए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्से इक्को बन्दना, डण्डावत विच सखावत धुर दी झोली पाईआ। जन भगत इक्को करे बन्दगी, बन्दना विच सीस निवाईआ। दूसर रखे ना कोए मशंदगी, दर दर भज्जे ना वाहो दाहीआ। मन मनसा कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे गंदगी, सुगंधी हरि का नाम अंदर टिकाईआ। लोड़ रहे ना सूरज चन्द दी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरे सरबंग दी, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन हरि भगत भाउ ना जाणे दूजा, दूई विच ना कदे आईआ। इक्को नेत्र खोल्ह के तीजा, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। परम पुरख परमात्म नाल पतीजा, पतिपरमेश्वर इक्को लए हंढाहीआ। जिस दे प्रेम अंदर तन मन सीझा, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। साचा नाम धुर दा कलमा सुणे हदीसा, हज़रत हज़ूर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम सदा अनडीठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगत सद मंगे एका मंग, ख़ाहिश जगत ना कोए वधाईआ। पुरख अबिनाशी टुट्टी गंढु, जोड़नहार तेरी वड्याईआ। चुरासी रहे ना कोई वण्ड, चारे खाणी ना कोए भवाईआ। लेखा चुक जाए बत्ती दन्द, अजपा जाप दे समझाईआ। मेरी आत्म ना होए रंड, सुहागण घर विच देणा बणाईआ। इक्को तेरा गावां छन्द, साजण अवर ना कोए मनाईआ। सच दवारा धुर दा तेरा जावां लँघ, नौ दुआर सके ना कोए अटकाईआ। मनुआ करे ना कोई पखण्ड, भरम विच ना कोए भरमाईआ। प्रकाश तक्कां ना सूरज चन्द, इक्को तेरा नूर वेख के आपणा आप परचाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के वजा अगम्मा मृदंग, ढोलक छैणा सरवण सुणन कोए ना पाईआ। तेरे प्रेम दा तेरे गृह माणां अनन्द, रसना जेहवा रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन

६८७
१६

भगत सुहेले पा ठंड, अमृत धारा मुख चुआईआ। जन भगत सदा लोड़े वस्त इक, दूजी मंगण कोए ना जाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा आत्म परमात्म आए दिस, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। निहकर्मी हो के करमां दा लेखा देवे लिख, पूरब लेखा दए बदलाईआ। सति धर्म दी सिख्या दे के बणावे धुर दा सिख, शिश आपणा रंग वटाईआ। करवट दे ना बदले पिठ, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। मानस जन्म लवे जित्त, हार शौह दरया रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद बणनवाला मित, मित्र प्यारा हो के मेल मिलाईआ। जन भगत लोड़े इक्को मित्र, सज्जण अवर ना कोए बणाईआ। जिस दा रूप सदा बचित्तर, रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। जो आपणी धारों आवे निकल, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। ओह भगतां लेखा आए लिखण, धुर दा मालक बण के बिना कलम शाहीआ। जुग चौकड़ी दा लहिणा आए नजिठ्ठण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आए दिसण, लख चुरासी नज़र कोए ना पाईआ। जन भगत तक्के इक्को बेनज़ीर, नज़र आपणी आप बदलाईआ। जिस दी समझे ना कोए तस्वीर, तसबी माला वाले सारे देण दुहाईआ। जिस दी सब तों वक्खरी तदबीर, तकदीर सब दी दए बदलाईआ। जन भगतां पिच्छे घत्तदा, रहे वहीर, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। जिस तारे सधना सैण कबीर, जुलाहे दिती माण वड्याईआ। सो भगतां होए अधीन, ध्रू प्रहलाद गया समझाईआ। शम्मस तबरेज़ किहा आमीन, मनसूर सूली चढ़ के खुशी मनाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां नूं देवण आए आप यकीन, यके बाद दीगरे सारे लए उठाईआ। उहनां कहे आफ़रीन, जो जगत आफ्त विच्चों प्रभ नूं रहे ध्याईआ। लेखा दोहां दा सांझा रखे नर मदीन, नारी पुरुष वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दर आए सर्ब करे तसलीम, जो निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किसे नूं पढ़न ना देवे नुकता नूंन (ते सीन), डण्डे वाली मीम ना कोए पढ़ाईआ। मार्ग पार कराए जो काया मन्दिर अंदर महीन, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। घर दाता करनी दा करता मिले करीम, कायम मुकाम आपणा दए जणाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना लोक तीन, त्रैगुण माया पोह ना सके राईआ। हिस्सा नहीं कोई मज़्ज़ब दीन, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। जन भगत इक्को पुरख अबिनाशी वेखण हक हसीन, हुसन दा मालक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत दिन्दा रहे तरमीम, तलकीन हुक्म विच कराईआ। जन भगत कदे लभ्भण ना जाए बन, जंगलां विच ना फेरा पाईआ। सदा दर्शन मंगे अंदर तन, काया काअबा खोल्ह वखाईआ। प्रेम प्रीती अंदर बणे साचा जन, जन्म मरन दा लेखा जाए चुकाईआ। नाता जोड़े इक्को श्री भगवन, भाग हिस्सा ओसे दी झोली पाईआ। कूड़ कुड़यारा भाण्डा देवे भन्न, भरम अंदरों

बाहर कढाहीआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर याद विच करदा रहे धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत सुहेला इक अकेला जन भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, जुग जुग आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जगत मेट के वासना ग़म, झगड़ा मुका फाँसी जम, लेखे ला के पवण स्वासी दम, हम साजण बणा के घर साचे दए पहुंचाईआ।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सुंदर सिँघ दे घर पिण्ड मगोवाली जम्मू ✪

जन भगत पूजे कोई ना सिल पत्थर, पाहिन पाउँ ना सीस झुकाईआ। सुख जाणे ना विद्या अक्खर, किताबां दा कुतब ना कदे अख्वाईआ। सदा सच प्रेम दे लथ्था रहे सत्थर, आप आपणा आप मिटाईआ। सच दीदार दा अंदरों निकले ना कदे असर, असल आपणा राह तकाईआ। हरिचरण शरनाई करे बसर, बिस्तरे मरग सेज ना कोए हंढाहीआ। विछोड़े दी अंदर लग्गी रहे दर्द, बिरहों, चोट लगाईआ। वैराग दी चलदी रहे करद, कातिल कतल कूड़ कुड़यार वखाईआ। मन अन्धेरा रहे ना गर्द, गुबार गोर ना कोए प्रगटाईआ। प्रभ मिल के पूरी करदा रहे सध्धर, सद मनसा जाए गवाईआ। पुरख अबिनाशी मेहर करे नदर, नज़र इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगत इष्ट देव स्वामी इक्को तक्के, अक्ख अक्ख ना कोए बदलाईआ। रस्ता मार्ग समझ के हके, हिकमत कूड़ छड्डे चतुराईआ। मंज़ल चढ़दयां मूल ना थक्के, भज्जे वाहो दाहीआ। नाते तोड़े कूड़े साक सज्जण सके, साहिब इक्को इक मनाईआ। जो सदा रहे सज्जे खब्बे, अगे पिच्छे होए सहाईआ। पाप अंदरों कढ्ढे दब्बे, परदा मोह दए चुकाईआ। घर सुहावणे सदा सद्दे, चरण कँवल दए सरनाईआ। जित्थे नाद अगम्मी वज्जे, शब्द धुन शनवाईआ। दीपक जोत जगे, दिवस रैण होवे रुशनाईआ। बिन रसना जेहवा मिलण मज़े, झिरना अमृत दए झिराईआ। राए धर्म ना देवे सज़े, जम डण्ड ना देवे सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग चढ़ाईआ। जन भगत दूजा तक्के ना कोए वसीला, ओट अवर ना कोए रखाईआ। प्रभ मिलण दा सदा करे हीला, हिरदे हरि हरि आप वसाईआ। मालक लभ्भे इक्को छैल छबीला, जोबनवन्ता बेपरवाहीआ। दो जहान जिस दे अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा नाम रहे चीना, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म होवे प्रबीना, प्रभू बेऐब नूर खुदाईआ। जिस दा ना कोई मज़्हब ना कोई दीना, ज़ातां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेहर विच होए ना कदे कमीना, बख्शिश आपणी

रहमत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत ठांडा करे सीना, सांतक सति सति कराईआ। जन भगत कदे ना जाणे मुश्कल, औझड़ राह ना कोए तकाईआ। सदा सदा सद रहे खुशदिल, खुशीआं विच ढोला प्रभ दा गाईआ। कायर हो के बणे कदे ना बुज़दिल, सूरबीर आपणा नाउँ धराईआ। प्रेम प्यारा हरदिल, अज़ीज़ धुर दा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दवारा लए मल्ल, दर घर साचे सोभा पाईआ। जन भगत सच झूठ कदे ना करे मिलावट, दोए दोए रंग ना रूप बदलाईआ। प्रेम विच करे ना कोई बग़ावत, मनुआ मन ना कोए सताईआ। झगड़े विच ना कोई अदावत, द्वैत दूई ना कोए रखाईआ। मेहर विच मुहब्बत करे सखावत, धुर दी वस्त आप वरताईआ। सच दवारे हरिजन रखे सांभ अमानत, अमलां दर अमल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्में अंदर हुक्म करे ब्यानत, ख्यानत नेड़ कोए ना आईआ।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ नंती देवी दे गृह पिण्ड मगोवाली जम्मू ✪

६८६
१६

जन भगत आलस निंद्रा विच कदे ना जावे सौं, ग़फ्लत रूप ना कोए बदलाईआ। जागरत सोवत एका गाउँदा नाउँ, नाउँ निरँकार इक ध्याईआ। बन्दना विच मस्तक छूंहदा रहे पाउँ, पारब्रह्म चरण कँवल सरनाईआ। बणाउँदा रहे सुहञ्जणा थाउँ, आत्म सेजा सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां पकड़दा रहे बाहों, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। सदा सदा सद करदा रहे न्याउँ, अदल दा मालक आदल इक अख्वाईआ। हरिजन बणाउँदा रहे हँस फड़ फड़ काउँ, बुद्धी काग ना कोए रखाईआ। एथे बणदा रहे पिता माउँ, मालक हो के आपणी गोद उठाईआ। सच प्रीती अंदर करदा रहे वाहो वाहो, वाह वाह आपणा गुण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले पार करे शौह दरयाउँ, साचे कंधे आप उठाईआ। जन भगत कोई ना तक्के ओट, आसरा नज़र कोए ना आईआ। इक मुहब्बत विच होए मोहत, मालक मिल के खुशी मनाईआ। साढे तिन्न करोड़ खुल्ले रखे सोत, रोम रोम वज्जदी रहे वधाईआ। भाग लग्गे काया कोट, तन माटी रंग चढ़ाईआ। जलवा तक्के निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुणावे इक सलोक, सोहला धुर दा इक दृढ़ाईआ। जन भगत कदे ना होवे विश्वास घाती, दृष्ट आपणी ना कोए बदलाईआ। प्रभ दा दरस मंगे दिवस राती, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। अमृत पीवे

बूँद स्वांती, अग्नी तृखा जगत बुझाईआ। आपणी निर्मल करे ज़ाती, उज्जल हो के सोभा पाईआ। इक्को रंग वेखे प्रभाती, संधया रूप ना कोए बदलाईआ। मिले मेल कमलापाती, कँवल नैण नैण करे रुशनाईआ। गृह मन्दिर अंदर देवे शांती, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा बणे आप साकी, साख्यात अमृत जाम दए प्याईआ।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लच्छमी देवी दे गृह मूसे चक्क जम्मू ✪

जन भगत प्यार बणे ना काया झुग्गा, तन माटी सच सच ना कोए रखाईआ। अंदर प्रेम लभ्भे गुज्झा, पुरख अकाल ढूंडे चाँईं चाँईंआ। जित्थे भाओ रहे ना दूजा, दवैश रहे ना राईआ। सहिज नेत्र खोल्ले तीजा, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। आपणा मार्ग दस्से सिध्धा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोए फिराईआ। सच घराना दस्से निग्घा, दर ठांडे वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आपणे मिलण दी दे के बिधा, बदौलत आपणी दया कमाईआ। जन भगत कदे प्रेम करे ना काया कपड़, कपटी रूप ना कदे बणाईआ। सच दवारे मंज़ल जावे अप्पड़, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। बग्गा रहे मूल ना बप्पड़, हँस सरबंस मिले वड्याईआ। नहाउणा पए किसे ना छप्पड़, सच सरोवर इश्नान दए कराईआ। दूजा लड़ ना लए पकड़, आत्म परमात्म गंढु पवाईआ। किसे तराज़ू तुले ना तक्कड़, नाम कंडे वजन वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत किनारा पार कराए रक्कड़, सच दुआर इक रखाईआ। जन भगत काया माटी कदे ना मंगे सुख, सुख आत्म नज़री आईआ। जन्म जन्म दा मेटे दुःख, कर्म कर्म दा रोग गवाईआ। प्रभ मिलण दी रखे भुक्ख, तृष्ना रोग ना कोए वधाईआ। लेखे लावे जामा मानस मनुक्ख, मानव दर घर सोभा पाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब स्वामी आपणी गोदी लवे चुक्क, चार कुण्ट दा झगड़ा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्स के इक तुक, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा रहिण ना देवे ओहला लुक, गुरमुख परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत काया मन्दिर अंदर करे अरदास, सीस जगदीस झुकाईआ। हरि करते वसणा मेरे पास, सदा तेरा राह तकाईआ। मोहे तेरा इक विश्वास, विषयां तों लैणा बचाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश, प्रकाश्त हो के वेखे सर्ब लोकाईआ। मैं बण के तेरा दासी दास, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। मेरी पूरी करनी आस, तृष्ना देणी बुझाईआ। तेरे मन्दिर करां वास, तेरे चरण मिले सरनाईआ। मेरी नेत्र खुल्ले जाग,

आलस निंद्रा रहे ना राईआ। मानुख जन्म होवे वड वड भाग, हिस्सा तेरी झोली पाईआ। मेरा जगदा रहे चराग, तेरा नूर होए रुशनाईआ। जलवा तक्कां विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड वेख खुशी मनाईआ। तूं रचना रची आदि, जुगादि तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्त अमोलक दे दे दाद, दाते दानी देंदयां तोट रहे ना राईआ।

✪ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाश चन्द दे गृह पिण्ड मगोवाली जम्मू ✪

जन भगत कदे ना करे खुदी, हँकार विच ना आईआ। सदा निर्मल रखे बुद्धी, प्रेम प्यार मुहब्बत विच समाईआ। मंज़ल तक्के उच्ची, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। सुरती रखे सुच्ची, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत करे ना कूड़ विचार, ममता मोह ना कोए रखाईआ। इक्को प्रभ दा मंगे दरस दीदार, चन्द नूर होए रुशनाईआ। मंज़ल मिले अटल मुनार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जित्थे सूरज चन्द ना कोए सतार, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। इक्को खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर रिहा कराईआ। जोती जाता हो उज्यार, नूरो नूर नूर डगमगाईआ। जन भगतां पावे सार, महासार्थी हो के आपणे दर पहुंचाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत इक्को मंगो धुर दा रंग, रंगत कूड़ ना कोए रखाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। शब्द नाद वज्जे मृदंग, धुन आत्मक सुणे चाँईं चाँईंआ। निजानंद विच्चों परे होए परमानंद, परम पुरख विच समाईआ। जित्थे इक्को ढोला इक्को छन्द, गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंग, बख्शंद हरिजन भगत लए तराईआ। जन भगत चढ़े मंज़ल महबूब, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस दा इक्को अर्श अरूज, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। हज़रत पढ़े ना कोए हज़ारा दरूद, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ। परवरदिगार सांझा यार परम पुरख परमात्म होए मौजूद, अबिनाशी करता नज़री आईआ। जिस दी समझ ना सक्या कोए हदूद, बेअन्त कह के सारे रहे गाईआ। जन भगतां सदा हाज़र मौजूद, ओझल हो ना मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी भगत भगवान हो मेहरवान दर ठांडे देवे माण वड्याईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सरदार चन्द दे गृह पिण्ड बालेवाल ज़िला जम्मू ✪

जन भगतां अंदर साची रास, मण्डल सोहणा नज़री आईआ। गोपी काहन पैंदी रास, सुरती शब्दी नाच नचाईआ। सच दीपक होए प्रकाश, ख़ाली हथ्थ ना कोए उठाईआ। खेल खेले जिस रचना रुची आदि, अन्त दा मालक ख़ुशी मनाईआ। जिस मंज़ल नूं खोजदे सन्त साध, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। सो भगतां सहिज मिले दाद, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कदे ना करे दलिद्र, आलस विच कदे ना आईआ। लेखा जाणे पूरब बिदर, बिध सब नूं गया दृढ़ाईआ। निरगुण धारों आउणा निक्कल, परदा माया परे हटाईआ। पुरख अबिनाशी मिलणा मित्र, मीत मुरारा ख़ुशी मनाईआ। चोटी चढ़ना सिख़र, घर वज्जे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर टिकाईआ। जन भगत लेखा जाणे पूरे सतिगुर दा, सति सतिवादी सीस निवाईआ। राह तक्के रस्ता धुर दा, धर्म दी धार नाल वड्याईआ। झगड़ा मुकाए अन्ध घोर दा, अन्ध अन्धेरा ना कोए भरमाईआ। लेखा चुका के पंज चोर दा, चोरी चोरी दाओ ना कोए लगाईआ। लहिणा रहे ना मनूए शोर दा, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपे बौहड़दा, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। जन भगत कदे ना बणे जिज्ञासू, जगत वाली रीत ना कोए बणाईआ। जगत ममता नेत्र नीर वहाए कोए ना आंसू, छहबर नैण ना कोए वखाईआ। जिस दी धार नूं कट सके ना धातू, खण्डा खड़ग ना कोए छुहाईआ। जगत विद्या समझे कोई ना साधू, साधना विच जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सोए आप उठाईआ। जन भगत सदा सद निरगुण धारों उठे, निरवैर दए वड्याईआ। पुरख अकाल अबिनाशी करता तुठे, मेहरवान होए सहाईआ। हरिजन रहिण ना देवे सुत्ते, सोई सुरती सवाधान आप वखाईआ। भाग लगा के काया बुत्ते, वतन पिछले दए पहुंचाईआ। जित्थे पैंडा मंज़ल मुके, लेखा रहे ना राईआ। साहिब स्वामी पुछे, सतिगुर दया कमाईआ। जन भगत सचखण्ड दुआर प्रभ सरनाई पुजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ठांडे दर सदा टिकाईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ख़जान सिँघ दे घर रणबीर सिँघ पुरा ज़िला जम्मू ✪

जन भगत देवे हरि नाम ख़ज़ाना, अतोट अतुट आदि जुगादि रखाइंदा। बख़्शणहार पद निरबाणा, निरवैर निरँकार

निराकार आपणी दया कमाइंदा। महल अटल वसे उच्च मकाना, महबूब हो के मुहब्बत विच समाइंदा। शब्द अगम्मी धुन आत्मक राग सुणाए गाणा, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। नाम खुमारी अन्तर करे मस्ताना, मस्ती विच हस्ती आप बदलाइंदा। सुरती शब्दी मेल कराए गोपी कान्हा, बंसरी धुर दी हक सुणाइंदा। एथे ओथे निरगुण सरगुण देवे वड्याई दो जहानां, जगत जहालत विच्चों बाहर कढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए धुर दा घर, जिस गृह आपणा आसण लाइंदा। जन भगत एका ओट रखे निरँकार, दूजा राह ना कोए तकाईआ। निरगुण नूर जोत दरस करे अपार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। नाता तोड़ कूड़ जगत संसार, वड संसारी मिल के खुशी मनाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त सदा चले जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी रागां नादां विच सुणाईआ। सो भगतां मीता ठांडा सीता दर साचा मिले दरबार, दरगाह साची हक मुकाम सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। जन भगत इक्को मन्ने भगवन्त, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। आत्म परमात्म दा मालक बणा के कन्त, कन्त कन्तूहल साची सेज सुहाईआ। इक्को नाम जपणहारा मणीआं मंत, मन का मणका दए भवाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म इक्को नजरी आईआ। झगड़ा छड्ड बहिश्त जन्नत, सच दवारा राह तकाईआ। मेल मिलावा होवे निरगुण धार अन्त, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत सुहेले परदा दए उठाईआ। जन भगत मन्ने इक भगवान, निरगुण निरगुण ध्यान लगाईआ। जित्थे झुल्ले धर्म निशान, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। नाद शब्द वज्जे धुनकान, अगम्मी राग सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दर ते सीस निवाण, निउँ निउँ लागण पाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां करे परवान, नाम परवाना बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। साचा बण के धुर दा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। जन भगत एका मन्ने आदि निरँजण, जोती जोत ध्यान लगाईआ। जो दाता दानी दर्द दु:ख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पावे अंजण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरण कँवल धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धवाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण बणे साचा सज्जण, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा परदा लाहीआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया पंज तत विकारा पोह ना सके अग्न, माया ममता मोह ना कोए सताईआ। मिले मेल सूरा सरबंगण, आत्म परमात्म वज्जदी रहे वधाईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ बदन, घर विच घर मिले वर नरायण नर निरगुण नूर नज़री

आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत इक्को मन्ने अबिनाशी करता, साहिब स्वामी सीस निवाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना मर्दा, जन्म विच जन्म ना कोए बदलाईआ। जो लख चुरासी मालक घर घर दा, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा रिहा लगाईआ। जो मंज़ल अगम्मी चढ़दा, सच दवारे बह के हुक्म वरताईआ। जो सन्त सुहेले नित नवित फड़दा, शब्दी डोरी सुरती लए बंधाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्हे आपणे घर दा, गृह मन्दिर साचा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पल्लू सदा फड़दा, लोकमात सके ना कोए छुडाईआ। जन भगत इक्को आसा रखे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर इक ध्याईआ। जो कदे मरे ना जाए जम्म, जम की फाँसी ना कोए भवाईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को धर्म, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां जन भगतां देवे साची सरन, जो सिध्धा हरि हरि ओट तकाईआ। साची मंज़ल आवे चढ़न, काया परदा ओहला दए उठाईआ। निरगुण धार निरअक्खर आवे पढ़न, जगत अक्खर वक्खर हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। जन भगत इक्को मन्ने हरी हरि, हिरदे हरि वसाईआ। चुक्के भरम भाओ डर, भयानक नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे जाए खड़, खटका अंदरों दए कढाहीआ। इक्को नज़री आए नरायण नर, नरां दा मालक बेपरवाहीआ। जो शब्दी प्यार अंदर लए फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। भाग लगाए काया माटी घर, घर विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मन्दिर दए वखाईआ। जन भगत आपणा मन्दिर लए तक्क, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जित्थे लेखा हकीकत हक, लाशरीक रिहा चुकाईआ। पुरख अकाल रिहा दस्स, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी होए आस, अबिनाशी करता दए माण वड्याईआ। साची पूंजी मिले रास, वस्त अमोलक नाम झोली पाईआ। मिटे कलयुग रैण अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्से आपणी गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मेला मिले पुरख समराथ, समरथ स्वामी अन्तरजामी हरिजन साचे लए जुड़ाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां पुच्छे वात, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। चरण प्रीती साची नीती धुर दा जोड़े नात, साक सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साचा साथ, धुर दा संगी संग निभाईआ। जन भगत इक्को प्रभ दी करे पूजा, सिमरन जोग अभ्यास, इक्को नज़री आईआ। अवर ना दिसे दूजा, तीजे लोयण होए रुशनाईआ। कँवल नाभी होए मूधा, झिरना निझर दए झिराईआ। भेव अभेदा खुल्ले गुझा, शब्द नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावे

साचा दर, धुर दरबारे परदा लाहीआ। जन भगत खुल्ले दर दरवाज़ा, बन्द किवाड़ी परदा आप उठाईआ। राह तक्के ग़रीब निवाज़ा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो आदि जुगादि दो जहानां राजन राजा, शाहो भूप सुल्तान नज़री आईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ज़िमीं असमान करनहारा काजा, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। जो लख चुरासी अंदर शब्द अगम्मी अनहद धार वजाए वाजा, पवण स्वास नाल रलाईआ। निरगुण जोत जोती जोत प्रकाशा, असल आपणा रंग रंगाईआ। सच दवारे दे के इक भरवासा, भाण्डा भरम दे भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखावे ओह घर, जिस घर इक्को नूर नज़री आईआ। जन भगत तक्के ओह मनार, जिस दी मंज़ल समझ किसे ना आईआ। मार्ग दिसे दुष्वार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जिस दी सिफ्त महिमा करदे गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा ढोला गाईआ। जिस दी अद्धविचकारी मंज़ल दसम दवार, इस तों उपर लेखा बेपरवाहीआ। भगत सुहेला जावे खुशीआं नाल, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सुन अगम्म करे सहिजे पार, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग वखाईआ। थिर घर वासी दरस करे दीदार, हरिजन आपणा आप मिटाईआ। सचखण्ड दवारे वेख सच्ची सरकार, सच जगदीश दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला एका एकँकार, अकल कलधारी आपणे विच समाईआ। जन भगत नाम ख़ज़ाने दा धुर दा मालक, देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। बख्शणहार साहिब स्वामी ख़ालक, अन्तरजामी बेपरवाहीआ। झोली भराए हरि भगत सुहेले बालक, अन्तर आत्म आप टिकाईआ। जित्थे रूप नज़री आए ख़ालस, ख़ालस इक्को इक दरसाईआ। मन वासना रहे कोई ना लालस, लालच अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे घर लोकमात विच्चों लै के जाए वापस, जिस घर विच्चों आदि होई जुदाईआ। मन शांती दी अवस्था नहीं थोड़ी, बहुती तों बहुती नज़री आईआ। जिन्हां गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां साचे सन्तां अबिनाशी करता आपणे शब्द नाल दए जोड़ी, जोड़ी धुर दी लए बणाईआ। ओथे मन करे ना बौहड़ी बौहड़ी, दरोही दरोही ना कोए सुणाईआ। एह वारता नहीं कोई लंमी चौड़ी, पुरख अकाल आपणे हथ्थ रखाईआ। जिधर चाहे उधर खिच्चे डोरी, जगत वासना विच्चों खिच के आपणे प्रेम विच टिकाईआ। हुक्में अंदर जाए तोरी, तुरत आपणा राह बणाईआ। इक्को मंत्र दस्स के फुरना फोरी, धुर दा फ़िकरा फिकर सारे दए गवाईआ। मन वासना विच कदे करे ना चोरी, सतिगुर पूरा अंदरे अंदर लए हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। मनुआ जगत जिज्ञासू जग जगयास, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। लख चुरासी दा खेल तमाश, मनुआ

वेख के ख़ुशी मनाईआ। इन्द्रिआं दे नाल जोड़ के नात वासना दा देवे साथ, कूड़ी क्रिया नाल शब्दी धार मिल जाए सहिज हो जाए साफ़, देर लग्गे ना राईआ। थोड़ी बहुती कोई ना सके वाच, वाचक हो के बचन ना कोए सुणाईआ। इक्को सच प्रीती दा बणा दे आपणा नात, नाता इक्को इक जणाईआ। थोड़ी तों बहुती होवे ख़ाहिश, ख़ालस इक्को ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा दे के विश्वास, विषयां तों बाहर कढाहीआ। निर्मल नूर कर प्रकाश, जोत सरूप जोत दी धार विच टिकाईआ। जन भगत मन दे पिच्छे कदे ना होवे उदास, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। एस नूं निक्की जेही समझ के शाख़, शहिनशाह इक्को लए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बहुती थोड़ी थोड़ी बहुती बहुती मनूए दी मनसा वाली रास, अगम्मता विच आपणा आप जणाईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ जस कौर दे गृह निहाल पुर सिम्बल जम्मू ✪

जन भगतां धाम मिले अनडिठ्ठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मिले अमृत रस इक्को मिठ्ठा, विख रूप ना कोए बदलाईआ। जन्म कर्म दा लेखा हो जाए चिट्टा, काली शाही ना रंग रंगाईआ। मानस जन्म दा अन्त अख़ीरी निकले सिट्टा, सिट्टेबाज़ी मुक्के जगत लोकाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को मिले पिता, पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। जो साचे भगतां करे साचा हिता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेल मिलावे नित नविता, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां कदे ना देवे पिच्छा, पल्लू गंढु ना कदे खुल्लाईआ। सदा सुहेला करदा रहे रिच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना पाउँदा रहे भिक्खा, भिक्खक झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लावे वड्डा निक्का, निक्का वड्डा जन भगत मांगे इक्को सरनगति सरन सरनाईआ। मालक मिले तरनी तरन, तारनहार बेपरवाहीआ। जिस दी मंज़ल सन्त सुहेले चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। धुर दा ढोला पढ़न, बोध अगाध समझाईआ। जीवण विच जीवण मरन विच होवे ना कदे मरन, मरजीवत रूप वटाईआ। सच दवारे खड़्हन, सनमुख हो के सोभा पाईआ। नित नवित दर्शन करन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। जन भगत रूप धारे ना कदे जल मीन, विछोड़ा अन्तर ना कोए रखाईआ। लेखा मुका के लोक तीन, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। इक्को परम पुरख दे हो अधीन, सीस जगदीश देवे झुकाईआ। मार्ग मंज़ल चढ़े दुष्वार महीन, महबूब मिल के ख़ुशी मनाईआ। परवरदिगार उत्ते रखे यकीन, दलील दलील विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। सो स्वामी आपे करे तसलीम, तसबी माला परे दए सुटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक तालीम, जिस दी अलिफ़ ये सिफ्त कर के खुशी मनाईआ। जन भगत अगम्म पढ़े हरफ़, हरूफ़ां जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जो दीन दुनी नालों करे बेतरफ़, नाता कूड़ा दए छुडाईआ। माया ममता मिटे हरस, हवस देवे बुझाईआ। झगड़ा मुका के उत्ते अर्श, सच दवारे दए बहाईआ। लेखा रहे ना कोई फर्श, फ़रेबां विच ना कोए भरमाईआ। मिले मेल मर्दाने मर्द, मालक इक्को नज़री आईआ। जित्थे शरअ छुरी चले ना करद, कदीम दा मालक इक्को सोभा पाईआ। ग़रीब निमाणयां जन भगतां वण्डे दर्द, दीनां दुःख आपणे विच छुपाईआ। लोकमात सन्त सुहेला हो के आवे परत, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। चार युग चार वरन अठारां बरन मानव ज़ाती लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अण्डज जेरज उत्भुज सेतज चारे खाणी सब दी रखे फ़रद, बचया रहिण कोए ना पाईआ। भगतन मीता ठांडा सीता कदे होण ना देवे हर्ज, हर्जाना श्री भगवाना नाम निधाना सब दी झोली पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणी ताल खेल करे असचरज, अचरज दा मालक अचरज विच अचरज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेट के जन्म जन्म दी तड़प, तपश भटक वाली बुझाईआ। जन भगत वेखे धुर दा गृह, ग्रामी इनामी आपणा ध्यान लगाईआ। जित्थे समरथ पुरख अबिनाशी रहे, दूजा रहबर नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी सृष्टी दृष्टी होए कोई ना लै, विष्न ब्रह्मा शिव नज़र कोए ना आईआ। हुक्म संदेसा धुर फ़रमान तख्त निवासी इक्को कहे, थिर घर वासी साचे घर आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए धुर दा घर, घराना इक दरसाईआ। जन भगत साची मंज़ल वेखे महबूब, अध विच डेरा कोए ना लाईआ। जिस दा अर्श तों उपर अरूज, कुर्श कुरह ना कोए वखाईआ। जिस दी समझे ना कोए हदूद, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो हर घट हर थाँ लख चुरासी मौजूद, निरगुण हो के सरगुण सोभा पाईआ। सो साहिब स्वामी जन भगतां रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भाग लगाए काया काअबा कलबूत, हुक्म इक्को दए जणाईआ। जिस दा सच दरबार सचखण्ड मिले सबूत, साबत सूरत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले दर सहिजे मेल मिलाईआ। जन भगत मंज़ल चढ़े सच अटारी, अटल पदवी इक्को पाईआ। जित्थे निर्मल जोत जगे निरँकारी, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। तख्त निवासी इक्को सोहे शाह पातशाह शहिनशाह वड बलकारी, सुल्तान भूप सोभा पाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चारी, ब्रह्मण्ड खण्ड सके ना कोए उलटाईआ। जिस दी धार पैगम्बर गुर अवतारी, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जो जन भगतां दए अधारी, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचे सन्तां देवे नाम खुमारी, मस्त दीवाने

दए कराईआ। गुरमुखां जाए पैज संवारी, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरसिख साची मंज़ल जाए चाढ़ी, अगम्म अथाह दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेला करे खेल न्यारी, निरँकार आपणी कार कमाईआ। जन भगत आदि जुगादि सदा सद रहे उज्जल, अन्ध अन्धेर ना कोए कराईआ। अंदर रहे कोई ना गुंझल, सुखमन टेडी बंक ना कोए अटकाईआ। धुर दा हुक्म संदेसा बुझण, शब्दी शब्द होए शनवाईआ। लेखा जाणन आथण उगण, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। प्रभ सरनाई चरण कँवल बिन शस्त्र झूजण, कातिल मकतूल आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे साची मंज़ल हक महबूब, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जन भगत चढ़े अगम्मी पौड़ी, डण्डे हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गली दिसे ना कोई भीड़ी सौड़ी, डूँघी भँवर ना कोए भवाईआ। वासना रहे ना कोए कौड़ी, सुगंधी इक्को इक प्रगटाईआ। आत्म परमात्म साचे मन्दिर बण जाए साची जोड़ी, लुड़ींदा साजण घर घर नज़री आईआ। मनुआ मन करे ना बौहड़ी बौहड़ी, बुद्धी देवे ना कोए दुहाईआ। तत्तां वाली अग्न ना उबले तौड़ी, साढे तिन्न हथ्थ वज्जदी रहे वधाईआ। पंच विकारा करे कोई ना चोरी, चुरस्ते सब दे बन्द कराईआ। आपणा दरस दे के भोरी, भोरे विच्चों बाहर कढाहीआ। झगड़ा चुका के मढ़ी गोरी, गहर गवर आपणे विच समाईआ। जन भगत आत्मा सचखण्ड दवारे खुशीआं नाल जाए दौड़ी, भज्जे वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी खेल मुका के मोरी तोरी, तोरा मोरा इक्को दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भाग करे मथोरी, मिथ्या दिसे सर्ब लोकाईआ।

६६८
१६

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भगत सिँघ दे गृह कीर पिण्ड ज़िला जम्मू ✪

जन भगत दर्शन मंगे पुरख अकाल, अकल कलधारी मिले बेपरवाहीआ। साहिब स्वामी लभ्भे दीन दयाल, जो दीन कर के रच्छया खुशी मनाईआ। लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती घाल, घायल हो के पट्टी नाम बंधाईआ। गोदी चुक्के आपणे लाल, बाल अंञाणे दए वड्याईआ। सदा सुहेला हो के करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। चरण दुआर बख्शे सच्ची धर्मसाल, दर घर साचे वज्जदी रहे वधाईआ। बिरहों विछोड़े विच कदे ना करे बेहाल, बिहबल रूप ना कोए बदलाईआ। नाम शब्द दे के सच्चा धन माल, धनी धुर दे दए बणाईआ। निरमाणता विच रखे कंगाल, अधीनगी इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। जन भगत सुणे इक संदेसा, अठ्ठे पहर ध्यान लगाईआ। मिले मेल नर नरेशा, जो नरायण हो के नरां दए वड्याईआ। झगड़ा मुकाए ब्रह्मण्ड खण्ड देस प्रदेशा,

ਪੁਰੀਆਂ ਲੋਆਂ ਵਿਚੋਂ ਬਾਹਰ ਕਢਾਹੀਆ।

पुरीआं लोआं विच्चों बाहर कढाहीआ। मिन्नत करनी ना पए किसे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, शंकर सीस ना कोए निवाईआ। दूजा मंगे कोई ना लेखा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मंज़ल चढ़दयां लग्गे कोई ना ठेडा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सच दुआर दा खुल्ल्हे भेदा, परदा रहे ना राईआ। फोलणा पए ना चार वेदां, पुराण अठारां ना कोए खुल्हाईआ। सिध्धा मेहरवान नाल मिले दीदा, दीदा दानिस्ता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दस्से सिफ्त नाम तअरीफ़ा, तुआरफ़ विच परदा दए उठाईआ। जन भगत परदा देवे चुक्क, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। अन्तर ओहला रहे लुक, अन्ध अन्धेर ना कोए जणाईआ। मनुआ मन ना होवे चुप, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, काम क्रोध ना कोए हल्काईआ। लख चुरासी रहे ना दुःख, जूनी जून ना कोए भवाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। अंदरे अंदर बदल के रुख, रुखसत दे के नाता जगत देवे तुड़ाईआ। उज्जल करे मुख, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारों पए उठ, निरगुण हो के नूर करे रुशनाईआ। जन भगत कदे ना होवे दुखीआ, दलिद्र विच कदे ना आईआ। आत्म परमात्म मिल के करे सुखीआ, सुखसागर विच समाईआ। इक्को ध्यान रखे रुचीआ, रचना बाहर ना कोए रखाईआ। बुद्धी बिबेक करे .. .. , आपणा आप लए अपनाईआ। मन वासना कटे कोई ना बुत्तीआ, बुत्तख़ाने वज्जे वधाईआ। भाओ रहे ना कोई दुतीआ, द्वैती लेखा दए चुकाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर माणे सदा खुशीआ, खुशहाल मिल के आपणा आप लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाए काया कुटीआ, कुटलता अंदरों बाहर कढाहीआ। जन भगत काया कुटीआ करे ख़िआल, लेखा होर ना कोए रखाईआ। जिस घर वसे दीन दयाल, सो मन्दिर सोभा पाईआ। सुरती शब्दी सुणे ताल, तलवाड़ा वज्जे चाँईं चाँईंआ। माया ममता तुट्टे जंजाल, जागरत जोत होए रुशनाईआ। जीवन ज़िंदगी हल्ल होए स्वाल, फ़िकरा अवर ना कोए पढ़ाईआ। लेखा रहे ना शाह कंगाल, किंगरे किंगर मृदंग ना कोए वजाईआ। नज़री आए दीन दयाल, बेनज़ीर, आपणी नज़र बदलाईआ। जन भगतां सद रखे चरणां नाल, चरणोदक बूँद स्वांती मुख चुआईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, गफ्लत विच्चों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ीना इक्को दए वखाईआ। जन भगत सद रखे इक्को घर वसेरा, जित्थे विसर कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी होए ना कदे अन्धेरा, किशना शुक्ला पक्ख थित ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा रहे ना मेरा तेरा, तूं मैं ना कोए लड़ाईआ। इक्को वसे नगर खेड़ा, जित्थे साहिब स्वामी डेरा लाईआ। तत्तां वाला रहे ना झेड़ा, दीन मज़्हब रो रो देवे

ना कोए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी करनहारा मेहरा मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जन भगतां करे हक नबेड़ा, हकीकत विच्चों हकीकत खोज खुजाईआ। चरण सरन सरनाई आया जेहड़ा, जगत झेड़े विच्चों बाहर कढाहीआ। शौह दरयाए डुब्बण ना देवे बेड़ा, बण मलाह खेवट खेटा बन्ने देवे लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर सच्चा आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को बथेरा, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। इक्को रंग रवे सदा सदा सद गुरू गुर चेला, गुर गोबिन्द गया समझाईआ। मानस जन्म होवे वक्त सुहेला, सुहञ्जणी घड़ी मिले वड्याईआ। जन भगतां परमात्म लभ्भणा ना पए जंगल जूह विच बेला, घर बैठयां घर विच घर दए समझाईआ। जो वसणहारा धाम नवेला, निज घर वासी पुरख अबिनाशी परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे बन्द खलासी, बन्धन अगे ना कोए रखाईआ। जन भगत किसे दा बणे ना कदे ख़ादम, ख़िदमतगार ना कोए अख्वाईआ। जगत शरअ ना कोए बांधन, बन्धनां विच ना कोए भटकाईआ। प्रकाश तक्के ना सूरज चांदन, सति जोत वेखे चाँईं चाँईंआ। पैसयां टकयां दी लभ्भे कदे ना आमदन, आमद विच खुशामद विच बरामद विच राह तक्के बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां निरगुण धार आपणे मिलण दा दस्स के साधन, सिध्धा आपणे रंग समाईआ।

७०० १६

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कीर जम्मू ✪

जन भगत अन्तर आत्म परमात्म नाल जाए जुड़, नाता बिधाता इक रखाईआ। किसे आस ना रखे देवत सुर, विष्न ब्रह्मा शिव सीस ना कोए झुकाईआ। बाहरों सुणे ना कोए राग ताल सुर, धुन आत्मक सुण के खुशी मनाईआ। जगत वस्त दी समझे कोए ना थुड़, नाम भण्डारा लै के हस्से चाँईं चाँईंआ। पाँधी बण के मंज़ल चढ़े धुर, धाम दवारे जा के सोभा पाईआ। जित्थे जा के कोई ना आवे मुड़, प्रभ चरण कँवल बैठे डेरा लाईआ। पुरख अबिनाशी साहिब स्वामी इक्को मिले सतिगुर, सतिगुरू गुर गोर विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत इक्को दर रहे हज़ूरी, हाज़र हो के सेव कमाईआ। सचखण्ड दी लै मन्ज़ूरी, लेखा पिछला दए चुकाईआ। वासना रहे कोए ना कूड़ी, कूड़ कुटम्ब ना भरम भुलाईआ। बुद्धी रहे ना मूरख, मूढ़ी, चतुर सुघड़ वज्जे वधाईआ। मंज़ल रहे ना नेड़े दूरी, पैंडा अगला दए मुकाईआ। मानस जन्म लेखे लग्गे ज़रूरी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। इक्को दर्शन करे नूरी, नूर

नुराना नज़री आईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी लेखे लग्गे मज़दूरी, मुश्कल अगे ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। जन भगत कदे ना रहे ओहले, परदयां विच्चों परदा लए उठाईआ। सुरती शब्दी प्रीतम विच मौले, मौला घर में नज़री आईआ। देवे वड्याई उपर धरनी धरत धवले, धौल हस्से चाँईं चाँईंआ। करे प्रकाश नूर अलाही अवले, अवल इक्को एकँकार बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले मस्ती अंदर करे बवले, बाबल बावरा आपणा रंग लए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वजावण ना देवे कोई हथ्थां वाले तबले, तपदे हिरदे शांत करके सति दए समझाईआ। जन भगत सांतक होवे सदा सति, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। इक्को उपजे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या दए समझाईआ। नाड़ी नाड़ी ना उबले रत, बहत्तर भँवर ना कोए भवाईआ। अग्नी कूड़ पोह ना सके अग्ग, अमृत मेघ दए बरसाईआ। हँस बुद्धी बणाए कग, कागों हँस उडाईआ। दरस वखा उपर शाह रग, शमां बुझी दए जगाईआ। जगत वासना दूर कराए हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। जित्थे इक्को नाद रिहा वज्ज, आदि जुगादि करे शनवाईआ। दीपक जोती रिहा जग, अन्ध अन्धेरा रिहा मिटाईआ। भगत भगवान कदे ना होवण अड्ड, सुहञ्जणी सेज सोभा पाईआ। पिछला लेखा पिच्छे जाए छड्ड, अगे अगला मालक मिले बेपरवाहीआ। जिस दी आदि
७०१ जुगादि जुग चौकड़ी भगतां नाल मिल के बणदी यद्द, पुश्त पनाह सद आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप ७०१
१६ आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले साचे गृह लवे सद्द, सद्दा होका आपणा नाम सुणाईआ। जन भगत राह तक्के गहर गम्भीर, १६
गवर इक्को नज़री आईआ। जिस दा तत्तां वाला नहीं शरीर, पंज तत काया देवणहार वड्याईआ। जिस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी चारे खाणी विच्चों गाईआ। शरअ शरीअत तन माटी ख़ाकी पा ज़ंजीर, ज़ेर ज़बर गए समझाईआ। मंज़ल दस्स के चोटी अख़ीर, वाहवा कह के ढोले रहे सुणाईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, मुसव्वर रूप ना किसे दरसाईआ। जिस नूं सजदा कीता कबीर, कबरां विच्चों बाहर डेरा गया लगाईआ। हज़रतां किहा आमीन, तेरी बेपरवाहीआ। भगतां देवे यकीन, भरवासा इक्को इक रखाईआ। हुक्मे अंदर दे तलकीन, तुलबे सारे दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे मार्ग दए लगाईआ। जन भगत लभ्भे इक, मलाह, खेवट खेटा अवर ना कोए रखाईआ। जो सिधा सचखण्ड दा दस्से राह, दूजी बिधी ना कोए समझाईआ। मंज़ल मंज़ल साची मजल दए पहुंचा, पन्ध अगे रहे ना राईआ। निरअक्खर वक्खर सिख्या दए सिखा, विद्या दा लेखा दए चुकाईआ। प्रेम प्यार दी भिच्छया देवे पा, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। पार करा के थल अस्गाह, टिल्ले पर्बत

चोटी चरणां हेठ दबाईआ। धुर दा दस्स के इक्को नाँ, नाउँ निरँकार अंदर दए वसाईआ। सदा सुहेला हो के देवे ठंडी छाँ, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। बाल अंञाणयां बणे पिता माँ, गोदी आपणी लए उठाईआ। जन भगतां वखा के धुर दा, थाँ, डेरा पिछला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां नाल मिल के शब्दी धार हां विच कर लई हां, हार जित्त दा लेखा दए चुकाईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फ़रंगी राम दे गृह पिण्ड झण्डे झज्जर कोटली कैंप जम्मू ✪

जन भगत चढ़े अगम्मी घाटी, साची मंज़ल पन्ध मुकाईआ। आवण जावण रहे ना कोई वाटी, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी मिले कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। नाम भण्डारा देवे साची दाती, दाता दयावान बेपरवाहीआ। दरस वखावे इक इकांती, इक इकल्ला नज़री आईआ। अमृत बूँद देवे हयाती, हाज़र हो के परदा देवे उठाईआ। चरण प्रीती जोड़े साचा नाती, सहारा इक्को इक समझाईआ। मानस जन्म जन भगतां पुछे वाती, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ।
७०२ जिन्हां दी लेखे ला लए इक राती, रुत्त विच्चों रुत्त दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन ७०२
१६ देवे माण वड्याईआ। हरिजन लेखा चुक्के चारे कूट, हरि भगत वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल होवे मौजूद, मेहर नज़र १६
इक रखाईआ। किसे नूं पढ़ना पए ना हज़ारा दरूद, इस्म आज़म इक दरसाईआ। मेहरवान हो के रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा रहे ना किसे जिंन भूत, जनत बेख़बर ख़बर उठाईआ। जो साचे हिरदिउँ बण जाण पूत, तिन्हां दु:ख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत जगत दु:ख विच कदे ना रोवे, हाहाकार ना कोए वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अमृत जल मुखड़ा धोवे, दुरमति मैल धवाईआ। अमृत आत्म बीज साचा बोवे, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। ग़फ़लत विच कदे ना सोवे, सुत्यां लए उठाईआ। करे कराए सोई जग होवे, करन करावणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। जन भगत लवे कदे ना हौका, ग़म ग़म ना कोए सताईआ। पुरख अबिनाशी चढ़ाए आपणी नौका, नईआ नाम दए समझाईआ। दरस कराए शाह पातशाह सच्चे शाहो का, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। नाता जोड़ के पता पूत मांउ का, गोद सुहञ्जणी इक टिकाईआ। सहारा दे के ठंडी छाउँ का, अग्नी तत दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कदी ना मारे धाह, नेत्र नैणां नीर ना कोए वहाईआ।

जिन्नां मिल गया बेपरवाह, बेपरवाही विच रखाईआ। अमृत आत्म जाम देवे प्या, प्याला मधुर अंदरों बाहर कढाहीआ। साची मंज़ल दस्से राह रस्ते विच ना कोए अटकाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगत कदी ना होवे जुदा, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। हक प्रीती होवे फ़िदा, आपणा आप मिटाईआ। मार्ग वेखे धुर दा सिध्धा, सदने वांग रहे ना बणया कसाईआ। साची मिले धुर दरगाह जगह, थान भूमिका सोहणी नज़री आईआ। जित्थे नाम पदार्थ मिले मज़ा, दूसरा रस ना कोए वखाईआ। पोह ना सके कोए क़ज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। जन भगतां प्रभ दए भरोसा, सिदक सिदक विच्चों उपजाईआ। जन्म जन्म दा रहिण ना देवे रोसा, रस्ते साचे देवे लगाईआ। भाग लगाए काया कोठा, पंज तत वज्जे इक वधाईआ। निर्मल प्रकाश करे जोता, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म स्वच्छ दे के मौका, मुकम्मल परदा दए उठाईआ। अबिनाशी करता दीन दयाल राह दस्स के सौखा, मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भवगान, गुरमुखां नाल कदे करे ना धोखा, धुखदे धूंएं ठंडे ठार बणाईआ।

✪ १५ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी दे गृह चक्क पंडत झज्जर कोटली कैंप जम्मू ✪

जन भगत कदे ना तक्के दृष्टी चम्म, मन का मोह ना कोए रखाईआ। झगड़ा मुका के खुशी ग़म, इक्को रंग विच समाईआ। भरम भय ना रहे जन, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। नाम भण्डारा मिले धन, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भाग लग्गे काया माटी तन, तपदे हिरदे शांत कराईआ। साचा नाम संदेसा देवे कन्न, सरवण सुणे आप सुणाईआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, गढ़ हँकार आप तुड़ाईआ। सच प्रकाश चाढ़े चन्न, जलवा नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्धन आपणा इक्को पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ साँईं दास दे घर पिण्ड झण्डा कैंप झज्जर कोटली जम्मू ✪

जन भगत झगड़ा मुका के संसार कूड़ कुकर्म, कुटलता अंदरों दए कढाहीआ। सति सच जाणे सच धर्म, धीरज जत सति सन्तोख वधाईआ। प्रभू प्रीती जाणे धुर दा कर्म, कांडा दा झगड़ा दए मुकाईआ। निरगुण धार कदे ना करे भरम,

भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। झगड़ा रखे ना वरन बरन, इक्को रंग तक्के ख़लक ख़ुदाईआ। अबिनाशी करता जाणे साची सरन, सरनगति मालक इक्को नज़री आईआ। भय रखे ना कोई मरन, मरन जीवण इक्को रंग समाईआ। साची मंज़ल सिक्खे चढ़न, सुरत शब्द नाल जुड़ाईआ। धुर दा ढोला जाणे पढ़न, सोहँ साचा सोहला गाईआ। पुरख अबिनाशी पकड़े चरण, चरणोदक पी पी ख़ुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन भेव दए खुल्हाईआ। जन भगत नाता तोड़े कलयुग कूड़ कुड़यार, ममता मोह ना कोए रखाईआ। जूठ झूठ जड़्ह देवे उखाड़, अंदरों करे सफ़ाईआ। इक्को वस्त मंगे अपर अपार, प्रभ दर्शन कर के ख़ुशी मनाईआ। शब्द नाद वज्जे धुन्कार, अगम्मी राग अलाहीआ। निरगुण जोत होए उज्यार, बिन चन्द सूरज रुशनाईआ। मन्दिर सोहे सच दवार, जिस गृह बैठे डेरा लाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, मेहरवान दया कमाईआ। जन भगतां सद पावे सार, सार शब्द नाद सुणाईआ। बणया रहे सदा ग़मखार, ग़मी चिन्ता दूर कराईआ। भव सागर करे पार, भँवर विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा तराईआ। जन भगत कदे ना लोड़े मोह ममता, माया बन्धन कोए ना पाईआ। गढ़ रहे ना हउमें हंगता, हिरदे हरि हरि वसाईआ। दरवेश रूप ना धारे मंगता, घर घर अलख ना कोए जगाईआ। सच दुआर ना रहे संगदा, लोक लाज ना कोए वड्याईआ। रिवाज छड्डे दीन दुनी जग दा, प्रभ चले हुक्म रजाईआ। अग्नी वांग कदे ना मघदा, कूड़ी तपश ना कोए जलाईआ। भेव खुल्ले हँ ब्रह्म दा, पारब्रह्म मेला मिले सहिज सुभाईआ। लेखा देवे दर घर साचे जन्म दा, कर्म कर्म नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण बख़्श के आपणी सरन दा, सहिंसे सारे दए मिटाईआ। जन भगत कदे फसे ना विच दुनी, बन्धन अवर ना कोए रखाईआ। शब्दी दाता बणे गुनी, गहर गम्भीर ढोला गाईआ। लहिणा मुका के ऋषी मुन्नी, मुन्न सुन्न तों अगे वेखे चाँईं चाँईंआ। जित्थे शब्द नाद ना कोए धुनी, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पुकार सदा रिहा सुणी, सुण सुण हर घट हर थाँ हरि मन्दिर हरि जू हरि हरि होवे आप सहाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमी देवी दे गृह पिण्ड झण्डा कैंप झज्जर कोटली जम्मू ✪

जन भगत एका सिमरे हरि का नाम, हरि हिरदे सदा वसाइंदा। दूसर बणे ना किसे गुलाम, चाकर हो ना सेव कमाइंदा।

झोली पाए धुर दा दान, वस्त अगम्म आप वरताइंदा। लोकमात वड्याई देवे माण, दरगाह साची सचखण्ड दुआर सुहाइंदा। जन्म जन्म दा पूरन होवे काम, अगला पिछला पन्ध आप चुकाइंदा। भाग लग्गे काया खेड़े नगर ग्राम, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। मंज़ल मंज़ल पौड़े चढ़ना करे आसान, मेहर नज़र नाल पार कराइंदा। ग़फ़लत विच ग़ाफ़ल रहिण ना देवे बाल अंञाण, बुध बिबेक साची टेक आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दरसे सति पहिचाण, परदा ओहला आप उठाइंदा। जन भगत दूसर किसे ना झुकाए सिर, सर प्रभ दी भेंट कराईआ। अन्तर अन्तर ना जाए फिर, धीरज धीर नाल वड्याईआ। इक्को मालक समझे प्रीतम पिर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस तों विछड़यां होया चिर, अन्तिम ओसे विच समाईआ। सच फुलवाड़ी विच्चों गुरमुख गुंचा फुल्ल जाए खिल, पत्त टहणी आप महकाईआ। प्रेम प्यारा बणया रहे हरदिल, हिरदे हरि हरि नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन भगत कूड़ा रखे कोई ना डेरा, घर सच्चा इक सुहाईआ। जित्थे रहे ना अन्ध अन्धेरा, सतिगुर नाम करे रुशनाईआ। वसदा रहे धुर दा खेड़ा, खिड़की कुण्डी आप खुल्हाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, निज घर बैठा सोभा पाईआ। जित्थे इक्को रंग सञ्झ सवेरा, प्रभाती रूप ना कोए बदलाईआ। चुरासी वाला रहे ना गेड़ा, फाँसी वाला फंद ना कोए भवाईआ। सदा सदा सद रहे चाउ घनेरा, मन चैंचल ना कोए चतुराईआ। बुद्धी दा रहे कोई ना झेड़ा, मति मतवाली ना कोए कुरलाईआ। पुरख अकाल करे मेहरा, नज़रे कर्म आप उठाईआ। आपणे रंग रंगाए चेरा, चेरा गुर इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन परदा दए चुकाईआ। जन भगत कदे ना होए बेसबर, सबूरी सिदक नाल हंढाहीआ। अन्धेरा चुका के काया कबर, काअबा किबल वेख वखाईआ। धुर दा तक्के सच्चा अदल, इन्साफ़ करे बेपरवाहीआ। जो ज़िंदगी जीवण देवे बदल, मन का मणका दए उलटाईआ। सच चाढ़े आपणी मज़ल, मंज़ल इक्को दए वखाईआ। जित्थे नाद गावे धुर दी ग़ज़ल, ग़रज अवर ना कोए रखाईआ। जन भगतां पोह ना सके अज़ल, अज़ीज़ आपणे लए उठाईआ। जगत वासना कर के कतल, मकतूल इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा वखा के पिछला वतन, बेवतनां परदा आप उठाईआ। जन भगत सदा लोड़े आपणा घर, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जित्थे वस्से मालक इक्को हरि, हरिजन साचे सदा मिलाईआ। खुल्ला रखे धुर दा दर, दरबान अगे ना कोए अटकाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले लए फड़, फड़ बाहों आप उठाईआ। निरगुण हो के सरगुण मंज़ल जाए चढ़, पैंडा पन्ध मुकाईआ। शब्दी धार बन्ने लड़, जोरू ज़र चलण ना देवे चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, जन भगत नुहाए धुर दे सर, सरोवर इक्को इक वखाईआ। जन भगत सतिगुर चरण धूढ़ी करे सच्चा नहावण, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे विद्या अक्खरी बावन, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भेव दस्स के गए अकावन, हुक्में अंदर हुक्म जणाईआ। साहिब सतिगुर मेहरवान अमृत मेघ बरसे सावण, सँावल सुंदर दया कमाईआ। दुरमति मैल धोवे पतित पावन, पुनीत गुरमुख लए बणाईआ। दरदवंद हो के पकड़े दामन, दामनगीर आप अख्वाईआ। आत्म दा बणे अन्त ज़ामन, जमां तों लए छुडाईआ। मनुआ मन हँकारी हँकार करे कोई ना रावण, तीर अणयाला इक्को दए चलाईआ। सन्त सुहेले साचा नाम इक्को गावण, गा गा खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी घर साचे दर्शन पावण, नेत्र लोचन नैण अक्ख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जन भगतां आवे आप उठावण, सोया ग़फ्लत अंदर रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप झज्जर कोटली जम्मू ✪

जन भगत प्रभ मिलण दा रखे शौंक, शमां अन्तर आपणी आप जगाईआ। साची मंज़ल जाए पहुंच, जित्थे जगत विकार ना कोए अटकाईआ। मन बुद्धी दी रहे कोई ना सोच, वासना कूड़ ना कोए भरमाईआ। झगड़ा रहे ना कोई जीव लोक, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। नाम निधाना सुणे इक सलोक, जिस दे सोहले सिफ्त सलाहीआ। सच दवारे लग्गी वेखे मौज, महबूब मजलस भगतां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाईआ। जन भगत वेखे आपणा पिछला घराना, जिस विच्चों होई जुदाईआ। जिस दा मालक इक्को इक श्री भगवाना, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। ओथे दिसे ना कोए बेगाना, वैरी वैर ना कोए कमाईआ। कूड़ा दिसे ना कोए निशाना, जूठ झूठ नज़र कोए ना आईआ। इक्को तख्त बैठा शाह सुल्ताना, तख्त निवासी सोभा पाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवे नाम दाना, भगतां भगती विच लगाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेलदा रहे विच जहाना, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। निरअक्खर धार अक्खरां वाला बणाउँदा रहे गाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत घर मन्दिर आपणे वेखे मीत, मित्र प्यारा हरि जू नज़री आईआ। जिस दा झगड़ा नहीं हस्त कीट, ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचा नाम सब नूं दस्से हदीस, हाज़र हो के हज़रतां करे पढ़ाईआ। मनुआ शैतान ना रहे अबलीस, लाअनत जामा गल ना कोए पवाईआ। जन भगतां रखे सदा उडीक, सूफ़ी सन्तां राह तकाईआ। साचे नाम दी करे तबलीक,

तरतीब वार सदा समझाईआ। गुरमुखां बदल देवे नसीब, नसल धुर दी दए समझाईआ। घर वखाए इक अजीब, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए ताईद, सो सचखण्ड दवारा दए जणाईआ। जित्थे भगतां प्रभ मिलण दी सदा रहे उम्मीद, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचे दर दए टिकाईआ। जन भगत आपणा गृह मन्दिर वेखे कोठा, कुटीआ सोहणी नज़री आईआ। जिस नूं समझे कोए ना लम्बा चौड़ा छोटा, नाप विच ना कोए रखाईआ। जित्थे इक्को प्रकाश देवे निरगुण जोता, आदि जुगादि सदा रुशनाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले विरले मिलदा मौका, जो मन्दिर चढ़ के अंदर वड़ के खुशी मनाईआ। हक हकीकत दा देवे होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पैंडा मुके चौदां लोका, चौदां तबकां लहिणा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाईआ। जन भगत आपणा गृह मन्दिर वेखे धुर दा मठ, परदयां विच्चों परदा फ़ाश कराईआ। जित्थे नूर नुराना जोत रोशन होवे लट लट, अन्ध अन्धेर नज़र कोए ना आईआ। इक्को सोभावन्त सोभा पाए पुरख समरथ, जिस दी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जिस दे चरण कँवल पैगम्बर अवतार गुरू शुरु तों जाण ढठ्ठ, अन्त नूं ओसे विच समाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी धार अंदर कर इक्ठ्ठ, एकँकार वेख वखाईआ। जन भगतां कारन खोल्ह के हट्ट, भगत दुआर दिती वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन सब दा सांझा रख के हक, हकीकत धुर दी दिती जणाईआ। दीन मज़्हब दी रहे ना कोई वट्ट, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। ऊँच नीच दा दिसे कोए ना हट्ट, सब दा मालक इक्को नज़री आईआ। जो सरन सरनाई जाए ढठ्ठ, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। ओह लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश प्रकाश विच जावे टप्प, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दवारे साचे घर जावे वस, जित्थे मेला होवे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सचखण्ड दवारे दे के धुर दा हक, हिकमत नाल कूड़ी हकूमत दए बदलाईआ।

७०७
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बेला सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप झज्जर कोटली जम्मू ✪

जन भगत प्रभ चरण धूढ़ी ख़ाक रमाए जिस्म, रोम रोम विच समाईआ। धूणी ताए ना जगत कूड़ी वेखे भस्म, स्वाह सीस ना कोए पवाईआ। सच सौगंद प्रभू प्रेम प्रीती खाए कसम, किस्मत आपणी लए बदलाईआ। सद दर्शन लोड़े नूरे

चशम, अक्ख प्रतख नज़र आए गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगत नूर विच्चों लोड़े नूर, ज़हूर विच्चों ज़हूर करे रुशनाईआ। मंज़ल विच्चों मंज़ल नेड़े करे दूर, दूर दा दर्रा बन्द कराईआ। हाज़री विच्चों हाज़र तक्के हज़ूर, हज़रत धुरदरगाहीआ। शुक्रिए विच शुकर करे मशकूर, मुश्कल विच्चों मुश्कल आपणी हल कराईआ। विछोड़े विच विछड़ कदे ना रहे मजबूर, मजबूरी मख़मूरी विच बदलाईआ। सदा सदा सद अमृत रस दा चक्ख इक सरूर, जो सवरन पारस दोहां तों अगे लेखा दए बताईआ। खुशी विच सदा होवे मशकूर, साहिब मुसाहिब आपणा इक मनाईआ। गुरबत तन ना रहे ग़रूर, ग़रीब निमाणा हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म दा मेट कसूर, कुशल कुशलता झोली पाईआ। जन भगत कदे ना होवे औखा, दुखड़े विच ना दुःख समाईआ। आपणा पन्ध मुकावे सौखा, सुखमण विच ना कोए अटकाईआ। मनुआ देवे कोई ना धोखा, धूआँधार ना कोए कराईआ। पढ़ना पए ना कोई पोथा, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। पन्ध मुकावे लोक परलोका, भज्जे वाहो दाहीआ। गावे इक सलोका, सोहँ राग अलाहीआ। प्रभ मिलण दा रख के शौंका, शाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम निधाना जन भगतां अंदर वजाए अगम्मी धौंसा, भय विच विकार दए कढाहीआ। जन भगत सुणे इक्को धौंसा डंका, नाअरा बेपरवाहीआ। जो जाणया राजे जनका, जंन अंदरों दिता कढाहीआ। जिस कारन फेरया मन का मणका, अष्ट बक्कर मिली वड्याईआ। भाग होया साचे तन का, तन माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। प्रकाश होया अगम्मी चन्न का, नूर नूर नूर रुशनाईआ। भण्डारा मिल्या धुर दे नाम धन का, घर खज़ाना दिता टिकाईआ। राग सुणना चुकया कन्न का, काया मन्दिर अंदर शब्द सुणे शनवाईआ। माण रिहा ना हउँ हम का, हँ ब्रह्म रूप आपणा नज़री आईआ। झूठा नाता दिस्या चमढ़ी चम्म का, चम्म दृष्टी लई बदलाईआ। लेखा ला के पवण स्वास दम दा, दामनगीर इक्को श्री भगवान ल्या बणाईआ। जो ना मरे ना कदे जम्मदा, जूनी विच लख चुरासी रिहा भवाईआ। जन भगतां कदे ना डंनदा, लख चुरासी सज़ा दए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां वक्त सुहञ्जणा करे धन्न धन्न धन्न का, धर्म दवारा एकँकारा साचा गृह सचखण्ड इक्को इक वखाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप मुअतल जम्मू ✪

जन भगत किसे दर ना मंगे आबा, अमृत प्रभ दा पी के खुशी मनाईआ। माण रखे ना कोए कँवली नाभा, नाभी तों परे स्वादा बेपरवाहीआ। सीस झुका के जगत इष्ट ना करे अदाबा, सीस इक्को इक निवाईआ। आत्म परमात्म प्यार करे सांझा, साची रीती आप मनाईआ। कलयुग अन्धेर झक्खड़ ना वेखे झांजा, अडोल अडुल रह के खुशी विच समाईआ। अठ्ठे पहर सोहँ ढोला गीत रहे गांदा, गावत गा गा खुशी मनाईआ। अबिनाशी करता सब दा लेखा रहे लांदा, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थक्का मांदा, जगत मंज़ल विच्चों पार कराईआ। हरि भगत कूड़ी करे ना कोई बनावट, ठग्गां वाला रूप ना कोए वटाईआ। पुरख अबिनाशी कोलों मंगे नाम नयामत, वस्त अमोलक झोली डाहीआ। जिस दे नाल रहे सदा सही सलामत, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। प्रभ दी बणया रहे अमानत, काया माटी अंदर बह के वक्त लँघाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि जुगादि सदा सद सब दा जाणत, अणजाणत कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उज्जल आप कराईआ। जन भगत कटे जगत ना कोए गुलामी, दरवेश दर ना अलख जगाईआ। कलमा पढ़े ना शरअ कलामी, कायनात ना कोए सुणाईआ। वड्याई विच ना लए बदनामी, नेकी बदी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ममता मोह विच मन ना करे हरामी, कूड़ी क्रिया संग ना कोए रखाईआ। इक्को ध्यान प्रभ चरण करे ध्यानी, ओट इक्को इक तकाईआ। जिस दी दरगाह सच निशानी, निशाना आपणा रिहा झुलाईआ। जन भगतां देवणहारा पद निरबाणी, पदमां दे विच्चों बाहर कढाहीआ। आत्म रहिण ना देवे बेगानी, बेगम धुर दी लए बणाईआ। लेखे लावे बाल बिरध अवस्था जवानी, जोबनवन्ता आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां संग सूरा सरबंग कदे ना करे बेईमानी, बेवा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंज़ल आपणी दस्से आसानी, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी भाईआं देवी पिण्ड धंगाली कैंप झजर कोटली जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं जावां आपणे रस्ते, सच दवारे खुशीआं पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राह विच मिलण हस्सदे, खुशीआं ढोले गाईआ। सानूं प्रभ दा खेल दस्स दे, की कलयुग अन्त कल वरताईआ। असीं चार कुण्ट दहि दिशा रहे

नठदे, उस दी समझ कोए ना आईआ। चरण कँवल सरनाई रहे ढठ्ठदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भाण्डे घड़दे रहे अठ्ठ तत दे, पंजां तत्तां मिल के खुशी वखाईआ। मेल करदे रहे हड्ड मास नाड़ी रत दे, रतन अमोलक हीरे सर्ब प्रगटाईआ। संदेशे दिन्दे रहे सज्जण सच दे, हुक्मे अंदर सुणाईआ। सानूं खेल दस्स दे अज्ज दे, दर तेरे मंग मंगाईआ। की वेस पुरख समरथ दे, किस बिध भगतां दए वड्याईआ। जन भगत कहे असीं ओसदी सरनाई वसदे, चरण कँवल आस रखाईआ। साडे झगड़े मुक्क गए जगत वाली अक्ख दे, प्रतख दर्शन पाईआ। इक्को ढोला रटदे, जो सहिज दिता समझाईआ। झगड़े मिट गए दूई वाले विछोड़े फट्ट दे, पट्टी सहिज दिती बंधाईआ। खेल करे गृह मन्दिर साचे जट्ट दे, जटा जूटधारी नज़र किसे ना आईआ। भेस वटा के वांग नट दे, नटुआ हो के आपणा स्वांग वखाईआ। कोटां विच्चों जन भगत थोड़े लाहा खट दे, जिन्हां दी खटीआं आत्म सेजा दिती सुहाईआ। अमृत रस प्रीती अंदर चट्ट दे, चेटक कूड़ा दए गवाईआ। सदा सदा सद चरण सरन ढठ्ठदे, डिगयां लए उठाईआ। प्रेम प्यार विछोणे देवे पट्ट दे, बिस्तरे जगत ना कोए सुहाईआ। अर्शां तों थल्ले फ़र्शां तों उत्ते उह तम्बूआं टैंटां विच वसदे, टंटे सारे गए मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राह वेखण ओस अक्ख दे, जो आखर मंज़ल इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लहिणे जाणे घट घट दे, दर दर देणा दे के खुशी मनाईआ।

७१० १६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बंती देवी दे गृह छम्ब झज्जर कोटली कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे मैनूं मिले गुरू अवतार, पैगम्बर हस्स हस्स खुशी मनाईआ। लोकमात दा दस्स विहार, की खेल प्रभू रचाईआ। किस बिध लहिणा देणा रिहा उतार, भगतां होए सहाईआ। चार कुण्ट पावे सार, दहि दिशा खोज खुजाईआ। जन्म मरन तों करे बाहर, चुरासी गेड़ रहे ना राईआ। सच वखावे धर्म दवार, नाते कूड़े दए तुड़ाईआ। महल अटल चढ़ाए उच्च मनार, मंज़ल अगली पन्ध मुकाईआ। नाता जोड़े बण के सांझा यार, यराना आपणा इक वखाईआ। जिस दी महिमा कागत कलम ना लिखणहार, शाही रोवे मारे धाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणा हुक्म मनाईआ। जन भगतां रखे किस बिध नाल, शब्द इशारे नाल उठाईआ। जन भगतां किरपा कीती आप निरँकार, निरगुण हो के वेख वखाईआ। इक्को सिख्या दिती सिखाल, साची करे पढ़ाईआ। दीनां बंधू हो दयाल, मेहर नज़र उठाईआ। सच मुहब्बत कर प्यार, प्रीती आपणी विच रखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दस्स जैकार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां टिल्ले पर्बतां समुंद सागरां जगत अभ्यासां जोगां दा खैहड़ा दिता छुडाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिवो देवी पिण्ड धंगाली झज्जर कोटली जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं चढ़या सच मनार, मंज़ल वेखी बेपरवाहीआ। जित्थे इक्को इक जैकार, इक्को आवाज अलाहीआ। जित्थे इक्को इक चमत्कार, इक्को नूर रुशनाईआ। जित्थे इक्को शहिनशाह सिक्दार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। इक्को हुक्म देवे जुग चार, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। इक्को भेजे गुर अवतार, पैगम्बरां वण्ड वण्डाईआ। इक्को सन्तां भगतां दे अधार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्को विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, धुर संदेसा आप समझाईआ। इक्को त्रैगुण माया पंज तत भरे भण्डार, चारे खाणी सोभा पाईआ। इक्को लख चुरासी खेल करे अपार, अपरम्पर स्वामी हो के डेरा लाईआ। इक्को चार कुण्ट दहि दिशा होवे उज्यार, रवि ससि देवणहार वड्याईआ। इक्को मण्डल मण्डप गगन गगनंतर खेले खेल बण करतार, करनी दा करता इक अख्वाईआ। इक्को इक धरनी धरत धवल दए अधार, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बख्शे सच दवार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कया मन्दिर निराला, हरि जू हरि हरि नज़री आईआ। जित्थे बिन दीपक जोत होवे उजाला, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दुआर सोहे सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे वसे पुरख अकाला, अकल कलधारी डेरा लाईआ। जिस दा खेल जुग जुग निराला, चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। पूरी करे घाला, जो सेवक हो के साची सेव कमाईआ। अन्त अन्तश्करन विच्चों पकड़ उठाए बाला, नन्न्हे बच्चे आपणे रंग रंगाईआ। मार्ग दस्स इक सुखाला, सुखमन विच्चों बाहर कढाहीआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाला, जीवन जुगत दए समझाईआ। हरिजन होण ना देवे कोई बेहाला, मेहर नज़र नज़र आपणी लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी जन भगतां कारन निरगुण बदलदा रहे आपणी चाला, चार वरन अठारां बरन मन मति बुद्धी समझ कोए ना पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फ़त्तू राम दे गृह पिण्ड अम्बा राए जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभू दवारा सोहणा रमणीक, सुहावणा सुहञ्जणा नज़री आईआ। जित्थे दिसे ना कोए शरीक, द्वैत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अन्धेरा अन्ध ना होवे तारीक, इक्को नूर जोत करे रुशनाईआ। ठाकर स्वामी मिले ठीक, निरगुण आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म करे सच प्रीत, हकीकत नूं हकीकत विच रखाईआ। सनमुख सदा रहे नज़दीक,

मंज़ल दूर ना कोए बणाईआ। सचखण्ड दवारे दा बण वसनीक, आसण सिँघासण डेरा लाईआ। जुगा जुगन्तर गुर अवतार पैगम्बरां देंदा रहे तरतीब, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणे विच भवाईआ। साचा नाम कलमा दस्सदा रहे हदीस, सति सतिवाद दए जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखदा रहे जगदीस, जगदीशर हो के फेरा पाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी करे जो रख के बैठे उडीक, संसा रोग दए चुकाईआ। काया माटी ठांडी करे सीत, अग्नी तत बुझाईआ। नाउँ निरँकारा दस्से गीत, सति सतारा नाल वजाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा करे आप तस्दीक, तसल्ली नाल हुक्म आप समझाईआ। जन भगत कहे सच दवारा वेख्या ठंडा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जो उपर खण्डां ब्रह्मण्डां, गगन गगनंतरां सोभा पाईआ। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्दा, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। तत वजूद ना ख़ाकी बन्दा, रसना ढोला ना कोए सुणाईआ। चारे खाणी ना जेरज अंडा, ...। मन वासना करे कोई ना दंगा, बुद्धी वाली ना कोए लड़ाईआ। सरोवर वहे कोई ना गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती नाल ना कोए मिलाईआ। ढोला गीत गाए कोई ना छन्दा, जै जैकार ना कोए सुणाईआ। चतुराई विच बणे कोई ना चंगा, बदी रूप ना कोए वखाईआ। इक्को एक एकँकार पुरख अकाल रहे बख़्शंदा, जो भगतां मेहर नज़र नाल पार कराईआ। दो जहान होवे तरंदा, तारनहार इक अख्वाईआ। संसार सागर पार कराए कन्ढा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मंज़ल सच चढ़ाए डण्डा, डण्डावत आपणी दए समझाईआ। जन भगतां अन्तर दे के प्रेम अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। लहिणा देणा चुकाए विच्चों वरभण्डा, भंडी कूड़ी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे सचखण्ड दुआर चंगा, जित्थे चुग़ली निंदया करन कोए ना आईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ फुमण सिँघ दे गृह पिण्ड छम्ब कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत सोहे सचखण्ड, जित्थे खण्डा खड़ग नज़र कोए ना आईआ। अवतार पैगम्बर वण्डे कोई ना वण्ड, इक्को पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल जोत जोत विच समाईआ। ना कोई कलमा ढोला गीत सुणावे छन्द, रसना वाली आवाज़ ना कोए अल्ल़ाईआ। ना कोई सूर्या दिसे चन्द, मण्डल रूप बदलाईआ। ना कोई भरम भलेखा दूई द्वैती शरअ दी होवे कंध, दीन मज़्ह़ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। ना कोई इष्ट देव वक्खरा होवे ढंग, मन्दिर मस्जिद शिव दवाला मठ गुरुदुआर नज़र

कोए ना आईआ। ना जलधारा वहण वहे गंग, समुंद सागर रूप ना कोए बदलाईआ। ना कोई चार कुण्ट दहि दिशा मारना पए पन्ध, नौ सत्त भज्जे कोए ना वाहो दाहीआ। ना कोई काग़ज़ कलम शाही लेखा करे बन्द, बन्द अक्खर वक्खर दए जणाईआ। ना कोई रूप रेख दिसे रंग, निरवैर निराकार निरँकार आपणा खेल रिहा कराईआ। जन भगतां प्रेम प्यार प्रीती देवे आपणा सच अनन्द, अनरस लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे इक्को एक एकँकार आपणा दस्से धर्म, धुर दी बाण सब नूं दए लगाईआ। जन भगत तक्के सचखण्ड महल्ल, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। जित्थे बिन तेल बाती दीपक रिहा बल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल बैठा अटल, पदवी आपणी आप बणाईआ। जित्थे ना कोई जल ना कोई थल, समुंद सागर रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई कपट ना कोई छल, अछल अछल्ल वेस ना कोए धराईआ। इक्को शहिनशाह धाम सोहे निहचल, निहकर्मी आपणा डेरा लाईआ। सच संदेशे आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्दी धार रिहा घल्ल, धुर फ़रमाना इक अल्लाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी अंदर जाए रल, निरगुण हो के सोभा पाईआ। मेहरवान हो के महबूब जन भगतां होवे वल, वलवले कूड़े अंदरों दए कढाहीआ। साचे नाम दा देवे फल, रस आपणा दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वसावे साचे आपणे घर, जिस घर दा स्वामी इक्को इक अख्वाईआ। जन भगत वेखे सच्ची दरगाह, मुकामे हक खुशी मनाईआ। जित्थे आत्म परमात्म दा अन्त अख़ीरी होए नकाह, तत्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। पवण स्वासी लैणा पए ना साह, चमढ़ी हड्ड जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। फिरना पए ना किसे थल अस्गाह, जंगलां विच ना कोए भवाईआ। लभ्भणा पए किसे ना राह, चारे कुण्टां भज्जे ना वाहो दाहीआ। किरपा करे बेपरवाह, अबिनाशी करता परदा दए उठाईआ। घर सज्जण मिले सहिज सभा, गृह बैठा नज़री आईआ। जिस नूं जलवागर कैहिंदे खुदा, खुदी तकब्बर दए मिटाईआ। आपणा नूर करे रुशना, ज़हूर विच्चों ज़हूर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सदा मेहरवां, मेहरवान हो के आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत कदे ना लोड़े स्वर्ग नर्क, बहिश्त जनत दोज़ख़ लोड़ रहे ना राईआ। जगत सुख सारे करे तरक, तुरत फ़ैसला इक कराईआ। सिध्धी परम पुरख परमात्म नाल मेल के आपणी सुरत नाता सतिगुर शब्द नाल मिलाईआ। दर्शन करे अकाल मूर्त, अकल कलधारी वेख वखाईआ। जिस दी समझे कोई ना सूरत, सिफ्तां विच सारे गए गाईआ। जिस दा नाद अगम्मी तूरत, तुरीआ पद तों परे करे शनवाईआ। जिस दी आदि करी ना किसे महूरत, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी रखदे गए ज़रूरत, उह ज़रूरी भगतां

होए सहाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, ममता मोह दए चुकाईआ। चरण प्रीती दे के साची ख़ाक धूढ़त, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, अज्ञान अन्धेर अंदरों दए कढाहीआ। कर प्रकाश नूर नुराना नूरत, निरगुण आपणे विच समाईआ। आसा मनसा जन भगतां सदा होवे पूरत, पूरब लेखा बिन लेखिउँ दए वरताईआ। सर्ब कला बण भरपूरत, भरम भुलेखा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। जन भगत कदे ना करे मिन्नत, बौहड़ी बौहड़ी कर ना कोए कुरलाईआ। सदा जावे परम पुरख दी सिम्मत, जगत समाज सके ना कोए अटकाईआ। अन्तर आत्म कर के हिम्मत, भज्जे वाहो दाहीआ। रोक ना सके कोई निन्दक, निंदया विच जगत लोकाईआ। मनसा मन रहे ना चिन्तक, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग निभाईआ। जन भगत कदे ना लोड़े जग तीर्थ पाणी, तीर्थ सरोवर भगत जन बणाईआ। इक्को अबिनाशी करता लभ्भे आपणा हाणी, जो हर घट हर वेले होए सहाईआ। जिस दी बदल ना जाए कदे जवानी, जोबनवन्ता इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल परे ज़िमीं असमानी, जसमानी तत सब दे रिहा हंढाहीआ। जिस दुनिया रखी फानी, पीर पैगम्बर गुर अवतार बचया रहिण कोए ना पाईआ। जो धुर दे कलमे दी कायनात मारे कानी, नाम निधाना तीर चलाईआ। जिस दा दूजा दिसे कोए ना सानी, लासानी इक्को नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी खेले खेल महानी, महाबीर सूरबीर आप उपजाईआ। जो जन भगतां अन्तर बख्शे नूर जोत नुरानी, नर नरायण दया कमाईआ। मंज़ल चढ़ के सच रुहानी, रूह बुत्त दोवें करे सफ़ाईआ। आत्म रहिण ना देवे बेगानी, बेगाने घर विच्चों बाहर कढाहीआ। आत्म परमात्म मिल के पावे पद निरबाणी, निरवैर हो के इक्को रंग समाईआ। जन भगत सच दवारे चढ़ के जलवा तक्के शाह सुल्तानी, शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित भगतां लेखे लाउँदा रिहा कुरबानी, जो आपा आप भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा बणया रहे बानी, बावन अकावन आपणे विच छुपाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली मनवाल कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे मेरा मालक शाह सुल्तानी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि निरँजण नूर अलाहीआ। सचखण्ड दुआर जिस दी जोत जगे महानी, रंग रूप रेख समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी लोकमात निशानी, जुग चौकड़ी

नित नवित वेस वटाईआ। शब्द नाद बोध अगाध देवे अगम्मी बाणी, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर बणया रहे दानी, वस्त अमोलक सब दी झोली पाईआ। भगत सुहेला इक इकेला नाम निधाना देवे सच निशानी, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आप वरताईआ। लेखा जाणे अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज चारे खाणी, चार वरन अठारां बरन करनहार पढ़ाईआ। निरअक्खर अक्खर धार बणाए शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, कलम शाही काग़ज़ बन्धन देवे पाईआ। जीव जंत साध सन्त गृह मन्दिर काया होवे जाण जाणी, अन्तरजामी खोजे थाउँ थाँईंआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती देवे ठंडा पाणी, त्रैगुण माया पंज तत अग्नी अग्ग बुझाईआ। सुरत सवाणी सहिज सभाउ मेल मिलाए शब्द हाणी, हर घट हिरदे अंदर बह के खुशी मनाईआ। चरण कँवल उपर धवल निरगुण सरगुण बख्शणहार इक ध्यानी, इष्ट देव स्वामी सतिगुर वाहिद नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए सच घर, जिस मन्दिर बह के निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगत इक्को दरस मंगे गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़र टिकाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, आख़र पैंडा दए मुकाईआ। बिन रूप तों तक्के उह तस्वीर, जिस नूं तसव्वर सके ना कोए कराईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करे कबीर, काया काअबा गया जणाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक मिले दस्तगीर, दयावान दृष्ट इष्ट दए खुल्हाईआ। दूई द्वैती शरअ मज़्हब दीन कट ज़ंजीर, ज़ाहरा पीर दए मिलाईआ। नाम खण्डा तिक्खी धार सच वखाए शमशीर, कूड़ी क्रिया हउमे हंगता माया ममता मोह दए चुकाईआ। अन्तर आत्म प्रेम रस निझर देवे नीर, नर नरायण अग्नी अग्ग बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साची मंज़ल दए चढ़ाईआ। जन भगत मंज़ल चढ़ के वेखे एक, एकँकार ध्यान लगाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी नित नवित अवल्लड़ा भेख, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस लए वटाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर साध सन्त करन आदेश, बिन सीस जगदीश निउँ निउँ लागण पाईआ। दो जहानां ब्रह्म ज्ञाना देवे सति उपदेश, निरअक्खर विच्चों अक्खर धार प्रगटाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण हो के रहे सदा हमेश, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जिस नूं सीस झुकाउँदे शंकर गणेश, करोड़ तेतीसा बैठा ध्यान लगाईआ। देवत सुर जिस दा लिखदे लेख, सिफ्तां नाल जगत वड्याईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी हर घट वस्से साचे देस, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। धुर दा मालक बण के इक नरेश, नारी नर दोवें दए तराईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड सत्त दीप मानव ज़ाती खेले खेड, खिडारी हो के फेरा पाईआ। जोती जलवा नूरी कर के तेज, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश परदा देवे उठाईआ। जिन्हां भगतां लोकमात सरगुण धार देवे

भेज, निरगुण धार लभ्भे चाँईं चाँईंआ। आत्म परमात्म माणे साची सेज, सच दवारा एकँकारा आदि निरँजण करे रुशनाईआ। साचे सन्तां सति स्वामी अन्तरजामी दूर दुराडा नेरन नेरा हो के लए वेख, सच दवारे बण के पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहाए साचे घर, जिस घर दा दरवाज़ा नज़र किसे ना आईआ। जन भगत तक्के इक्को मीत, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जिस दा धुर दा साचा गीत, लोकमात सके ना कोए बदलाईआ। जुग जुग सच्ची दस्से रीत, नीतीवान दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्ने ठोकर ला के ठीक, ठाकर हो के आपणे रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, साढे तिन्न हथ्थ अंदर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां नज़रीं आए बैठा अतीत, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, राउ रंक इक्को दर बहाईआ। परदा रहे ना ऊँच नीच, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को नाम देवे समझाईआ। जन भगतां दस्स अगम्मी प्रीत, प्रीतम आपणे विच समाईआ। दवारा लँघे बिन कदमां हक दहिलीज़, पदमां विच्चों गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर चार जुग चारे बाणी विच करदे गए उडीक, वेद व्यासा लिख लिख दए गवाहीआ। मुहम्मद कर के गया तस्दीक, ईसा शहादत इक भुगताईआ। नानक गोबिन्द बण के गए रफ़ीक, मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण दाता पुरख बिधाता कलयुग अन्त अन्धेरी रैण मेटे तारीक, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां चार वरनां दस्से इक प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। मेहरवान हो के सति सच करे बख्शीश, रहमत नाल आपणा रैहम कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक तौफ़ीक, मार्ग साचे लए चलाईआ। जन भगत बिन श्री भगवान करे ना कदे सजदा, बिन परवरदिगार कदमां सीस ना कोए टिकाईआ। दूसर होए ना कदे बरदा, निउँ निउँ ना लागे पाईआ। मालक इक्को लभ्भे पुरख अकाल साचे घर दा, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा पिता माईआ। जिस दा नाम निधाना दा जहानां चलदा, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द विष्न ब्रह्मा शिव ओम धार आपे बणदा, सोइम आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी आपे जणदा, धन्न जणेंदी माता आप अख्वाईआ। अन्तकाल तोड़ जम काल जन भगत सहाई लोकमात बणदा, निरगुण हो के सरगुण फेरा पाईआ। साचे तख्त शाहो भूप शाह सुल्तान राज राजान हो के चढ़दा, तख्त निवासी हो के सोभा पाईआ। हक मनार उच्च मंज़ल महबूब हो के खड़्दा, पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेश्वर आपणा रूप दए दरसाईआ। जन भगत सुहेला इक अकेला आत्म परमात्म हो के वरदा, कन्त कन्तूहल हो के आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखा जाणे घर घर दा, काया मन्दिर अंदर पड़दे ओहले रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ इन्द्रो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ दा वेखणा चमन, दवारा सोहणा सोभा पाईआ। जित्थे आदि जुगादि सदा अमन, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। पुरख अकाल इक्को सारे मन्नण, निउँ निउँ बिन सीस सीस झुकाईआ जिस दी धार विच्चों गुर अवतार पैगम्बर लोकमात जम्मण, जन्म लै के सरगुण रूप बदलाईआ। भय विच देवत सुर सारे कम्बण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जित्थों वड्याई मिली दुष्ट दमन, दामनगीर दामन ल्या फड़ाईआ। सन्त सुहेले सोहणे लभ्भण चन्दण, सुगंधी सोहणा आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा आए बन्नूण, फड़ बाहों आप उठाईआ। जन भगत कहिण प्रभ दा वेखणा उह बाग़, जो निरगुण हो के रिहा लगाईआ। जित्थे दीपक जगे इक चराग़, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। बिना तम्बूरी वज्जदे साज, बिन लोड़ां नाद, बिन पढ़यां खुल्ह्दा राज़, बिन सुणयां होए शनवाईआ। बिन कीत्यां हुन्दा काज, करमां दा लेखा जाए चुकाईआ। बिन सेवा बणदा चाक, चाकर हो के फेरा पाईआ। लेखा चुकाउँदा माटी ख़ाक, ख़ालस घर वखाईआ। नाम निधान दूजा वजा नाद, नादी सुत लए उठाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, दर्दी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दस्स के धुरदा इक समाज, समें दा गेड़ा दए भवाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा वेखणा सच बग़ीचा, बाग़बान जित्थे इक्को नज़री आईआ। कोई बूटा दिसे ना ऊँचा नीचा, इक्को रंग रिहा वखाईआ। अमृत धार नाल जिस ने प्रेम रस सींचा, सुच संजम रिहा समझाईआ। नाम भण्डारा दे के किणका, किरन किरन करे रुशनाईआ। लहिणा देणा देवे जिन का, जमां तों लए छुडाईआ। खेल करे आपणा छिन का, शहिनशाह हो के वेख वखाईआ। जन भगतां मुहब्बत आपणे प्रेम पैमाने नाल मिणदा, मिणती गिणती होर ना किसे समझाईआ। निशाना दस्स के आपणे छिन्द दा, चिन्ता कूड़ी दए चुकाईआ। झगड़ा मुका के जीउ पिण्ड दा, घर साचे दए बहाईआ। जित्थे श्री भगवान नूं नहीं कोई निन्द दा, निन्दक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, खेल करे सदा बख्शिंद दा, बख़्शणहार फेरा पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शाहणी देवी दे गृह पिण्ड छम्ब कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं तक्कणी प्रभ दी उह दहिलीज़, जिस दर भगतां मिल के खुशी मनाईआ। सच प्यार अंदर करे रीझ, मेहरवान आपणा रंग चढ़ाईआ। आपणी पहचान दी देवे तमीज़, परदा अंदरों देवे उठाईआ। लेखा रहे ना कोए ऊँच नीच, चारे वरन इक्को दए शरनाईआ। आत्म करे ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। साची दस्से धर्म दी रीत, सिख्या इक्को इक समझाईआ। सच दुआर दे बणे वसनीक, सचखण्ड साचे मिले वड्याईआ। अबिनाशी करता सदा करे तुहाडी उडीक, जो दिवस रैण इक्को ध्यान लगाईआ। चार युग दी शहादत देवे तवारीख, समां रही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा बै ख़रीद, सौदा अवर ना कोए जणाईआ। मेरी इक्को नाल मिल गई दीद, दीदड़यां विच्चों बाहर दिता कढाहीआ। मेरी मनसा पूरी होई उम्मीद, कामल मुर्शद मिल के वज्जी वधाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन ताईद, ताबेदार हो के ओसे दा हो के सेव कमाईआ। जिस दी खेल महा अजब, अजीब, आजिज़ हो के वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर देवे माण वड्याईआ। जन भगत कहे मैं वेख के मालक धुर, धरनी धरत धवल दिता जणाईआ।
७१८ जित्थे झुकदे पैगम्बर अवतार गुर, सुर बेनन्ती कर सीस झुकाईआ। झगड़ा रहे ना किसे ठग्ग चोर, कूड़ कुटम्ब ना कोए ७१८
१६ बणाईआ। इक्को नाम शब्द सच्चा घनघोर, घनईए मिल के ढोले रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १६
कर, जन भगतां आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित आपणे हथ्थ रखे डोर, दूसर ओट ना कोए जणाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ इन्द्रो देवी दे गृह पिण्ड नगयाल मनवाल कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं तक्कया उह राम, जो हर घट रमिआ बेपरवाहीआ। सो वसे अगम्मी साचे धाम, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा मातलोक निशान, सरगुण हो के फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दे ढोले गाण, रागां नादां सिफ्तां विच सालाहीआ। जो लख चुरासी घट घट वस्या काया सच मुकाम, दर दवारा इक सुहाईआ। जो जन भगतां लोकमात जुग चौकड़ी मिले आण, निरगुण हो के सरगुण फेरा पाईआ। जो आत्म परमात्म खेले खेल महान, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। जो त्रैगुण माया पंज तत करे प्रधान, अप तेज वाए पृथमी आकाश रजो तमो सतो आपणी वण्ड वण्डाईआ। जो शब्द संदेशे नाद अनादी सुणाउँदा रहे धुर फ़रमान, नित

नवित आप जणाईआ। जिस दा इष्ट दृष्ट अंदर करन सर्ब ध्यान, सृष्ट सबाई मालक बेपरवाहीआ। जिस नूं वाहिद लाशरीक सारे तक्कण लामुकाम, हक मुकामे सोभा पाईआ। जिस नूं अलिफ़ ये सिफ्तां विच सालाही गाण, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए उह घर, जित्थे मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा इक अकल्ला, जो मालक सब दा नज़री आईआ। सच दवारे वसे उच्च अगम्म अथाह महल्ला, दर दरबार देवे माण वड्याईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार फड़ाए आपणा पल्ला, शब्द शब्दी गंढु पवाईआ। जिसनूं सारे कैहिंदे वाहिगुरू गॉड अल्ला, आलमीन कह के सीस झुकाईआ। जो वस्या जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर रिहा समाईआ। जो भगतां शब्द अणयाला तीर मारे बिन घड़ी पलां, सच निशाना श्री भगवाना बिन हथ्थां आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक वर, जिस दी समझ जगत विद्या कोए ना पाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा दीन दयाला, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस दी सब तों वक्खरी पाठशाला, निरअक्खर करे पढ़ाईआ। जिस दा अजब निराला विद्याला, ब्रह्ममत दए समझाईआ। जिस दी सच दुआर सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, दीन मज़्ब ज़ात पात वरन गोत ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां तोड़नहारा त्रैगुण माया जगत जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लहिणा देणा लेखा चुकाए काल महाकाला, मेहर नज़र इक उठाईआ। आपणी गोद उठाए निरगुण धार साचा बच्चा नढ्ढा बाला, गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा हल्ल करे स्वाला, पूरब लेखा लहिणा झोली देवे पाईआ। चरण प्रीती साची रीती मार्ग दस्से सुखाला, चार कुण्ट दहि दिशा भटकण दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को देवे प्रेम प्याला, अमृत झिरना निझर आप झिराईआ। जन भगत कहे मैं भगवन्त दे नाम दी अन्तर आत्म पाउणी उह माला, जो बिना मणकयां तों मन का मणका दए फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दुरमति मैल दाग़ रहिण ना देवे काला, कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लछमी देवी दे गृह पिण्ड नगयाल कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं तक्कया पुरख अलख, अलख अगोचर अथाह अनामी नज़री आईआ। खुशीआं विच कहां सच, सति सति दृढ़ाईआ। प्रभू दा हथ्थ मूँह वेख्या नहीं कोई नक्क, काया कंचन कच्च ना कोए बणाईआ। रसना वाला सुणया नहीं

जस, दन्दां वाली ना कोए पढ़ाईआ। किताबां वाला खुल्लया नहीं कोई हट्ट, पुस्तकां कीमत कोए ना पाईआ। नहावण वास्ते नहीं कोई तट, तीर्थ वहण ना कोए वगाईआ। सौण वास्ते नहीं कोई खाट, सेजा बिस्तर रंग ना कोए रंगाईआ। मंज़ल पैंडा नहीं कोई वाट, जोजन गणत ना कोए गिणाईआ। जां तक्कया भगतां वस्या सदा साथ, घर घर बैठा सोभा पाईआ। जिस नूं सीस निवाउँदे गए रघुपत रघुनाथ, बंसरी वाला जिस दी धुन उपजाईआ। सो साहिब स्वामी पुरख बिधाता तक्कया साख्यात, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जिस दी वरनां बरनां विच वण्डी ना जाए ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म हर घट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा देवे धुर दा साथ, जगत जहान विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगत कहे मैं तक्कया प्रभ दा राह किनारा, जित्थे नईआ नौका नज़र कोए ना आईआ। तक्कया उह उज्यारा, जित्थे सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। तक्कया उह दरबारा, जित्थे दरबान दर सीस ना कोए झुकाईआ। तक्कया उह करतारा, जो करनी दा करता कुदरत रिहा बणाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर भज्जे फिरन वाहोदाह गुरू अवतारा, पैगम्बर नठ्ठ नठ्ठ ढोले गाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दए सहारा, शब्दी डोरी आपणी गंढु पवाईआ। सो सज्जण सुहेला इक अकेला जन भगतां वेखे विगसे वेखणहारा, जग नेत्र कलयुग जीव नजर किसे ना आईआ। जो नाम निधान श्री भगवान बख्शणहार अतुट भण्डारा, दाता दानी बेपरवाहीआ। सो सन्त सुहेला आत्म परमात्म बणया रहे हक वणजारा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत सुहेले अन्तर निरंतर लए फड़, बाहरों बणतर विच नज़र किसे ना आईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं वेख्या आलीजाह, ज़ाहर नज़री आईआ। जलवे विच खुदा, खुदाई विच समाईआ। कदे ना होवे जुदा, जुदाई विच बिजाईआ। जन भगतां कर विवाह, विद्या आपणी दए समझाईआ। मार्ग ब्रह्म करो सिध्धा, साधना दस्सो जगत लोकाईआ। प्रभ मिलण दी जणाओ बिधा, बन्धन दयो तुड़ाईआ। दवारा दस्सो निग्घा, अग्नी तत गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू हरि बन्धन इक दरसाईआ। जन भगत कहे मैं वेखणा प्रभ दा उह मक्का, जिस दा मुकाबला करे ना कोई लोकाईआ। जिस गृह वसे महबूब सका, साख्यात नज़री आईआ। मंज़ल विच कदे ना थक्का, थकावट पिछली दए मिटाईआ। यकीन दवावे हकीकत हका, हकल आप समझाईआ। भगत उधारे विच्चों

कोटां लखां, लख्मी नरायण होए सहाईआ। जिस दीआं समझे कोई ना अक्खां, आख़र सब नूं वेख वखाईआ। ओस दी सिफ्त महिमा की लिखां, जन भगत कहे मेरे नैण रहे शरमाईआ। जो वड्याई देवे गुरमुख प्यारयां सिक्खां, सिखर चोटी दए चढ़ाईआ। जित्थे जन्म मरन दी मिटे तृखा, तृष्ना विच ना कोए भटकाईआ। अग्नी वाली बाले कोई ना चिखा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। चरण कँवल ल्या के सिध्धा, रस्ते विच ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत अन्तिम वेले रहिण ना देवे विंगा, टेडी बंक रस्ता भँवर दए मिटाईआ।

७२१
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ दे नूर दी वेखी चमक, चन्द चांदना सीस ना कोए उठाईआ। मेहरवान हो के बख्शिश करे रहमत, दयानिध दया कमाईआ। भगतां नाल हो के सहिमत, सहिम पिछला रिहा चुकाईआ। भगती भाओ दी लेखे लावे मिहनत, जो ढोले रहे गाईआ। सच भण्डार देवे नयामत, काया झोली आप भराईआ। अन्त होवे ना कदे क्यामत, चरण कदमां देवे माण वड्याईआ। सच दवारे खड़े सही सलामत, आत्म चुरासी विच ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए बणाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कया प्रभ दा अर्श, अर्शां तों उत्ते ध्यान लगाईआ। मेरे उपर कीता तरस, दीन दयाल होया सहाईआ। दमां दा पल्ले बन्न्या ना कोए खर्च, धन दौलत कंध ना कोए उठाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ गया किसे ना चर्च, चर्चा सुणी ना जगत लोकाईआ। धाम निराला डिठ्ठा इक असचरज, जित्थे अचरज लीला बेपरवाहीआ। दीनां दुखियां वण्डे दर्द, निमाणयां होए सहाईआ। जन भगतां सुणे अरज़, जो बेनन्ती रहे जणाईआ। पूरा करे फ़र्ज़, फरमांबरदारां वेख वखाईआ। आपणे मिलण दी आसा वेख के ग़रज़, भुल्ले भटके लए जगाईआ। अंदर नाद सुणा के तर्ज, तरफदारी दए मिटाईआ। ममता मोह रहे ना मर्ज़, मरीजां सफा दए वखाईआ। जन भगतां होण ना देवे भगती वाला हर्ज, हर्जाना सहिजे झोली पाईआ। जिन्नां दा नाम लेखा रविदास राहीं कर ल्या दरज, दरजा उन्नां दा ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेसे कहे गरज, नाम सुनेहुड़े विच सुणाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मेला राम दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ दा वेख्या थिर घर, जित्थे चरण कँवल टिकाईआ। जित्थे शब्दी सुत रिहा खड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अकाले किरपा कर, दीन दयाल तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अग्नी विच रिहा सड़, सांतक सति ना कोए कराईआ। साची विद्या कोई ना रिहा पढ़, पुस्तकां वाली करन लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो मार्ग आए धर, धरनी धरत धवल उपर टिकाईआ। ओस नूं सारे गए हर, हिरदे हरि ना कोए मनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा चुकया डर, भटकणा विच रहे कुरलाईआ। तूं सचखण्ड दवारे रिहों वड़, सिँघासण बह के खुशी मनाईआ। जन भगत सुहेले लोकमात मिन्नता रहे कर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सच स्वामी आ साडे घर, घराना साचा दे बणाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छो मानस जन्म मिल्या वर, कर्म रेखा दे बदलाईआ। सतिगुर हो के दे वर, वस्त आपणी आप वरताईआ। अन्तिम लै के जावीं आपणे घर, गृह डेरा देणा लगाईआ। तेरा पल्लू ल्या फड़, पलक ना होए जुदाईआ। तूं आदि जुगादी चोटी जड़, हभ कुछ तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत इक्को वार नुहावे ओस सर, जिस सर विच्चों सरीर दा लेखा रहे ना राईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ दा मानणा इक आनंद, जो अनन्द विच्चों अनन्द प्रगटाईआ। आत्म परमात्म इक्को देवे ठंड, सीतलधार अग्नी तत ना कोए तपाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच बन्ने उह गंढ, एथे ओथे दो जहान मन बुद्धी सके ना कोए खुल्हाईआ। सति सरूप शाहो भूप अनडिठड़ा चाढ़े रंग, जगत ललारी जिस नूं रंगण कोए ना आईआ। सेज सुहाउँणी सच स्वामी बख्शे इक पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी घड़ ना कोए वखाईआ। नाम निधान बिन तन्द सितार वजाए उह मृदंग, जो छत्ती राग तों बाहर सच जैकार दए दृढ़ाईआ। निरगुण हो के सरगुण सदा बख्शे आपणा संग, सगला साथी हो के लग्गी तोड़ निभाईआ। झगड़ा रहे ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज चारे खाणी ना कोए भवाईआ। प्रकाश तक्कणा पए ना सूरज चन्द, जलवा जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरमां ढाए झूठी कंध, बख्शिंद हो के रहमत आप कमाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा प्रभ दा सांतक सति, सति सतिवादी दए दृढ़ाईआ। इक्को देवे ब्रह्ममत, पारब्रह्म प्रभ भिच्छया धुर दी झोली पाईआ। साचा नाअरा जैकारा दस्से अलख, अलख अगोचर दया दृष्टी इष्टी

आप समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रहिण ना देवे वक्ख, दूजा दर ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म मेला होवे निरगुण धार सच, सच दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम अगम्मी वथ, वस्त धुर दी झोली पाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा प्रभ दा नूर उजाला, जो करे सच रुशनाईआ। जित्थे कलयुग कूड़ रहे ना काला, कायनात कर्म ना कोए कमाईआ। मार्ग मिले धर्म सुखाला, वरन बरन ना कोए वण्डाईआ। लेखे लग्गे पिछली घाला, घायल हो के सेव कमाईआ। महल अटल चढ़ के तक्के सच सच्ची धर्मसाला, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा जिस दा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दरस वखावे अगे खड़्, स्वच्छ सरूप शाहो भूप नज़री आईआ।

७२३
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राजा सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे सुरती शब्दी मेरा जोड़, जोड़ी जुड़ के ख़ुशी मनाईआ। आत्म परमात्म सांझी रखी लोड़, दर्दी हो के दर्द दर्द वण्डाईआ। प्रभ मालक स्वामी हो के जाए बौहड़, अगला पिछला पन्ध मुकाईआ। साचे मन्दिर ला के आपणा पौड़, आख़र चढ़ के लए उठाईआ। बिन अक्खां वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत जगत विच्चों लए प्रगटाईआ। जन भगत कहे मेरा प्रभ दे अरपण जीवण, जुगत जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं नाम निधान अमृत रस आया पीवण, साहिब सच प्याला दीन दयाला हथ्थ फड़ाईआ। चरण कँवल सरनाई आया थीवण, बलिहार हो के बलि बलि जाईआ। ग़रीब निमाणा हो के आया नीवण, निउँ निउँ लागां पाईआ। तन पाटा आया सीवण, कपड़ लबास लवां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां अंदर साचा बीज आया बीवण, बीर रस अमृत रस स्वास रस प्रकाश रस अबिनाश रस कर के आपणे वस, वास्ता एकँकार एका आपणे नाल रखाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धर्मो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ मिले साहिब बख़्शंदी, रोग सोग चिन्ता दुःख जगत दए गवाईआ। साचे नाम प्रेम दी बख़्शे इक सुगंधी, दुर्गन्धी अंदरों दए कढाहीआ। जन्म जन्म दी रहे ना कोए पाबन्दी, लख चुरासी आवण जावण झगड़ा दए मुकाईआ।

सिध्धा मार्ग दस्स के डण्डी, दरगाह साची सच दवारे दए पहुंचाईआ। माया ममता विच्चों लए कढ्ढी, जगत जंजाल ना कोए फसाईआ। आत्म परमात्म होण ना देवे रंडी, सुहागण सोभावन्त सदा सुखदाईआ। आपणे लेखे लावे मंदी चंगी, झगड़ा रहे ना जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि आपणे चरण टिकाईआ। जन भगत कहे प्रभ तक्कणा आपणे नैण, कथा सुणन दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस नूं निरगुण धार पुरख अकाल जोत सरूप सारे कहिण, मालक धुर दा इक अख्वाईआ। उह नज़री आवे इक्को साक सज्जण सैण, नाता कूड़ कुटम्ब तुड़ाईआ। आपणा दर्शन देवे निरगुण धार ऐन, अक्ख प्रतख आप खुल्हाईआ। मन मनुआ सुख शांती विच करे चैन, वासना अंदर भज्जे ना वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मन्दिर दए सुहाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा उह नवाब, जो नौबत धुर दा नाम वजाईआ। जिस दा सिफ्तां तों बाहर ख़ताब, शाह पातशाह शहिनशाह अख्वाईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कोए किताब, हरफ़ हिन्दसा सिफ्त ना कोए सालाहीआ। गा सके ना कोए रबाब, रसना जेहवा ना कोए वड्याईआ। पूरा कर सके ना कोए आदाब, सजदयां विच सारे सीस झुकाईआ। जो बैठा हक महिराब, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सो खेल करे साहिब स्वामी श्री सतिगुरू महाराज, राजन भूप बेपरवाहीआ। जन भगतां बख्शे आपणी दात, नाम निधाना झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे संग निभाईआ। चिन्ता रोग सोग मिटे संताप, संसा अंदरों दए कढाहीआ। पूरा करे भविख्त वाक, वाकिफ़कार भगत लए कराईआ। निरगुण हो के देवे सच्चा साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ दस्स के साची गाथ, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा जन्म कर्म देवे हथ्थो हाथ, अगे उधार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेटणहारा अन्धेरी रात, निरगुण साची जोत धुर दा नूर करे रुशनाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ महिंदर कौर दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ दा बणना बाला सच्चा, नंन्हां निक्का नढ्ढा रूप वटाईआ। भाग लगाउणा काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ वज्जे सच वधाईआ। शब्द अनादी धुर दा राग गाउणा सच्चा, जगत विद्या ना कोए पढ़ाईआ। साची मंज़ल चढ़ के प्रभ दा करना पूरा पता, पतिपरमेश्वर वसे किस किस थाँईंआ। सुरती धार अंदर फिरां नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। खैहड़ा छुडा अठ्ठां सठ्ठां, सच सरोवर नहा के खुशी मनाईआ। जित्थे मन वासना रहे ना कोई रट्टा, झगड़ा तत

ना कोए वखाईआ। मन्दिर दिसे ना पत्थरां इट्टां, गुरूदवारा नज़री आईआ। खोजणा पए ना किसे हट्टां, जगत बज़ार ना कोए भवाईआ। इक्को लाहा हरि सरनाई खट्टां, खटका अगे रहे ना राईआ। अमृत आत्म निझर धार झट्टां, नाभी कँवली कँवल उलटाईआ। पंच विकारा सत्थर घत्तां, कूड़ कुड़यारा परे हटाईआ। प्रभ दा दर्शन करां बिन अक्खां, निज लोचन होए रुशनाईआ। आत्म हो के परमात्म गृह वसां साचे मन्दिर बह के खुशी मनाईआ। दीन दुनी जगत जहान छड्डां, छुटके सर्ब लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखावे आपणा घर, जन भगत कहे निरगुण दर्शन कर के हस्सां, मस्ती विच्चों नाम मस्ती इक चढ़ाईआ। जन भगत कहे मैं चढ़ाउणी धुर दी मस्ती, जाम इक्को मुख लगाईआ। जिस नाल भाग लग्गे मेरी काया बस्ती, खेड़े साचे वज्जे वधाईआ। प्रभ दी नज़र आए निरगुण धार हस्ती, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मैं इक्को दा होणा चरण परस्सती, सीस इक्को इक झुकाईआ। खेल वेखणी दरगाह साची सच दी सच संजम लैणा अपणाईआ। मुहब्बत वेखणी परम पुरख परमात्म कमलापति दी, जो पतिपरमेश्वर हो के आत्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां धार दस्से साची अक्ख दी, अक्खीआं तों पिच्छे सखि़यां दा रूप बदलाईआ।

७२५
१६

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्यारी देवी दे गृह खै़रोवाल मनवाल कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे तन मन देणा प्रभ दे जुंमा, आपणी जुंमेवारी ना कोए रखाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सति सतिवादी चरण चुम्मा, रसना रस अवर ना कोए वड्याईआ। मेहरवान किरपा कर के कूड़ी विख रहिण ना देवे तुमा, अमृत रूप दए जणाईआ। चारे खाणी लख चुरासी विच कदे ना घुंमा, घुंमण घेर डूँघी भँवर ना कोए भवाईआ। इक्को नाम संदेश पुरख अकाल दा सुणा, सरवण दूजी आवाज़ सुणन कोए ना पाईआ। इक्को उपजे अगम्मी धुना, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। स्वामी मिले सतिगुर बहुगुणा, औगुण मेरे दए छुपाईआ। तन माटी भाण्डा रहिण ना देवे ऊणा, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। अन्तकाल कल पए ना रोणा, जम की फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। मढ़ी गोर पए ना सौणा, बिस्तरे मरग सेज ना कोए हंढाहीआ। आत्म परमात्म हवाले हभ कराउणा, आपणा आप मिटाईआ। सचखण्ड दवारा इक्को पाउणा, जिस विच रह के झट लँघाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन कर के आपा आप भेंट चढ़ाउणा, बाकी अवर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत कहे मोहे देवे इक वर, वरम द्वैत रहिण ना पाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ कृष्ना देवी दे गृह पिण्ड खैरोवाल कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं पुरख अकाल इक्को बनाउणा बाप, पिता परमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि साचा जाप, जुग चौकड़ी जगत सुणाईआ। जन भगतां करे दासी दास, सेवक आपणे लए बणाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पवित्र धारा विच रखाईआ। आत्म दा देवे सच्चा साथ, सगला संग तोड़ निभाईआ। लहिणा देणा चुका के मस्तक माथ, पूरब लेखा दए मुकाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कर के आस, तृष्ना रोग रहे ना राईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। जन भगतां मिलण आवे आप, निरगुण हो के वेख वखाईआ। त्रैगुण मेटे रोग संताप, पतित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा मुकाए विच लोकमात, सचखण्ड दवारे साचा हिस्सा झोली देवे पाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रसाल सिँघ दे गृह पिण्ड मनावर कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ मालक बणे सच्चे हित दा, प्रेम बन्धन नाम रखाईआ। जन्म मरन झगड़ा मुक जाए नित दा, चुरासी फंद ना कोए पवाईआ। साचा लेखा जावे लिखदा, जन्म कर्म उलटाईआ। नज़री आवे दिसदा, सनमुख सोभा पाईआ। नाता जोड़े साचे पित दा, पिता पूत गोद सुहाईआ। घर मिले इक्को ठाकर सज्जण इक दा, एकँकार लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग देवे लगाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ दा बणना सख़ा, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। दरस करना अक्खां, आख़र मंज़ल चढ़ के खुशी मनाईआ। खुशी रहिणा वस के कुल्ली कक्खां, महल अटल ना कोए वड्याईआ। झगड़ा चुका के कूड़ कुड़यार लखां, लख्मी नरायण इक्को लैणा ध्याईआ। जिस दी सरनाई सदा वस्सां, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। खुशीआं विच ढोले गा के हस्सां, गीत गोबिन्द जणाईआ। ओस दा पल्लू कदे ना छड्डां, मालक धुर दा आपणी गंढु पवाईआ। भाग लगा के काया माटी हड्डां, हिरदे विच्चों हरि लवां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत कहे चुरासी विच्चों तैनूं निरगुण धार हो के लभ्भां, जगत खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ।

७२७
१६

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रवेला राम दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे साची धार तक्कां सतिगुर शब्द, थिर घर वासी नज़री आईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़्ब, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। व्यापक होवे सृष्टी सरब, दृष्टी दा मालक नज़री आईआ। जिसनूं झुकदे अरब खरब, दो जहान सीस निवाईआ। जिसदा लहिणा देणा शरकन गरब, पच्छिम दक्खण सोभा पाईआ। प्रेमीआं प्यारयां वण्डे सदा दर्द, दीनां दुखियां गले लगाईआ। साचे सन्तां सुण के अन्तर अरज़, सरगुण हो के दए वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरा करदा आया फ़र्ज़, गुर अवतार पैगम्बर आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहे मैं सतिगुर शब्द वेखणा इक गुरदेव, देवत सुर जिस दा ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करदे सेव, निउँ निउँ लागण पाईआ। जो दिसे सदा निहचल धाम निहकेव, अटल पदवी डेरा लाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके कोई रसना जेहव, कातब लिखे नाल ना कलम शाहीआ। गहर गम्भीर होवे अलख अभेव, बेअन्त बेपरवाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा होवे सहाईआ। जन भगत कहे सतिगुर शब्द तक्कणा धुर दा पीर, पैगम्बरां दा पैगम्बर नज़री आईआ। जो सब दा दस्तगीर, दस्त नाल दस्त मिलाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, काया काअबा परदा दए उठाईआ। निरगुण निरवैर निराकार वखाए आपणी सच तस्वीर, जिस दा मुसव्वर रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। जन भगतां मुर्शद हो के दस्से सच तदबीर, मुरीद आपणे लए जणाईआ। सहारा दे के जुलाहे कबीर, कबरां विच्चों बाहर दिता कढाहीआ। नूर ज़हूर करे नज़ीर, नज़रीआ अंदरों दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा मिटावणहारा अमीर ग़रीब, जन भगतां अमरापद इक्को इक वखाईआ। जन भगत कहे मैं सतिगुर शब्द तक्कां, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। फिरना पए ना किसे मदीना मक्का, तीर्थ तट भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। खोजणा पए ना मन्दिर मठ्ठां, गुरुदुआर परदा ना कोए उठाईआ। इक्को ओसे दी ओट रखां, जो रक्ख्या करे हर हर थाँईंआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर तक्कदे रहे नाल अगम्मी अक्खां, दोए लोचन बन्द ध्यान कराईआ। जिस दे चरण कँवल सरनाई सदा वसां, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। मन हँकारी विकारी कर के ढठ्ठां, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। सच्चा लाहा साचे नाम पदार्थ दर तों खट्टां, अगे दा खटका रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी बणे सज्जण सखा, सगला संग आप निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नू भगवान, सतिगुर शब्द जन भगतां मिलाए इक्को सच्चा, दरगाह साची सच धाम वड्याईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बचन सिंघ तूतां वाले दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ लभ्भणा सच्चा खोजी, जो खोजत खोजत वेख वखाईआ। सचखण्ड दवारे दा बणया रहे मौजी, मजलस भगतां विच जणाईआ। प्रीतम बणया रहे चोजी, चोज निराले आप जणाईआ। जन भगत जन्म कर्म दा रहिण ना देवे रोगी, चुरासी दुक्खां विच्चों बाहर कढाहीआ। सच दुआर दी देवे आपणी सोझी, समझ विच्चों समझ दए बदलाईआ। भाग लगा के काया माटी साची कोठी, साढे तिन्न हथ्थ वेखे चाँईं चाँईंआ। कर प्रकाश निर्मल जोती, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी सुरत उठावे सोती, सुत्तयां रैण ना कोए विहाईआ। आत्म परमात्म बणा के आपणा गोती, घर विच घर मेला लए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। जन भगत कहे मैं प्रभ लभ्भणा दीनां बंधू, जो बन्दन इक्को इक जणाईआ। गहर गम्भीर होवे सागर सिन्धू, मेहर नज़र इक उठाईआ। मनुआ मन वासना रहिण ना देवे चिन्दू, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। मुस्लिम सिख ईसाई सारे तारे हिन्दू, दीन मज़्ह्ब वण्ड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे सिफ्त सालाहीआ। जन भगत कहे मैं वेखणा सच भण्डार, जो भण्डारी हो के रिहा वरताईआ। मुके कदे ना सदा जुग चार, जुग चौकड़ी दूण सवाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अपार, अपरम्पर हो के वेस वटाईआ। सुत दुलारा कर त्यार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। सच संदेसा देवे आपणी धार, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। धाम वखावे अपर अपार, सम्बल बह के सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण मिल के शब्द रखे आपणे अख्त्यार, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस नूं हज़रतां पैगम्बरां रसूलां मन्नया सांझा यार, परवरदिगार नूर खुदाईआ। उह भगतां उत्ते करे इक एतबार, बेएतबारी वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचे रंग समाईआ। जन भगत कहे मैं वेखणा शब्द निराला गुरू, जिस नूं गुरदेव कह के सारे गए मनाईआ। जिसदे कोलों परम पुरख दा कारज हुन्दा शुरु, आदि आदि रचना जिस रचाईआ। जेहड़ा मंज़ल चढ़ के पाँधी हो के मुसाफ़र कदे ना मुड़ू, सच दवारे बह के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर शब्दी नाम फ़ुरना हो के फुरू, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देस राज दे गृह कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं प्रभ दी लैणी सिख्या, निरअक्खर पढ़ के खुशी मनाईआ। जेहड़ा कलम शाही नाल ना जाए लिख्या,

रसना गा ना कोए सुणाईआ। जिथ्थों गुर अवतार पैगम्बरां मिलदी भिच्छया, अणमंगी, दौलत रिहा वरताईआ। जिस दी धार नाल आदि जुगादि करे सब दी रच्छया, रच्छक हो के वेख वखाईआ। जग नेत्र नाल विद्या विच्चों किसे ना दिस्या, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। जो दीन मज़्हब ज़ात पात विच आ के कदे ना जाए भिटया, भिट्टड़ रूप ना कोए वटाईआ। सदा सदा सच स्वामी बोल बोले मिट्ठया, अनरस आपणा दए चखाईआ। जन भगतां मार्ग ला के जुग जुग सिध्या, साजण साचा लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित जन भगतां प्रेम प्रीती अंदर विकया, बिन कीमत तों कीमत सब दी दए चुकाईआ। जन भगत कहे मैं तक्कणा भगवान उह, जिसदी शास्त्र सिमरत वेद पुराण उसतत कर के खुशी मनाईआ। जगत वासना विच्चों करे निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। परमात्म हो के आत्म जावे छोह, शहिनशाह हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। तन माटी ख़ाकी मन्दिर अंदर देवे साची लो, जोती नूर कर रुशनाईआ। नाम निधाना साचे बीज देवे बो, पत्त टहणी आप महकाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों लवे खोह, धरोह मन ना कोए कमाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना देवे गरोह, शब्दी खण्डां इक चमकाईआ। साचा अमृत निझर धार देवे चो, चरण चरणोदक आपणा नाम प्याईआ। भगतां अंदर मिल के भगतां रूप जावे हो, निरवैर निराकार आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शब्द संदेसा दे के सोहँ सो, सर्ब व्यापी प्रतापी गुरमुख लए बणाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धर्मो देवी पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं श्री भगवान तक्कणा शहिनशाह, जो दो जहानां हुक्म चलाईआ। सति सच दृढ़ाए इक आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा सर्ब जणाईआ। होए सहाई हर घट थाँ, थान थनंतर दीन दुनी वेख वखाईआ। सदा सुहेला जुग जुग सिर ठंडी रखे छाँ, जगत अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां सन्त फ़कीरां पकड़े बांह, संसार सागर विच्चों बाहर कढाहीआ। कोटन कोटि जन्म दे बख्श देवे गुनाह, दुरमति मैल पापां आप धवाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के बख्शे सच ध्यान, ज्ञान इक्को इक समझाईआ। मानस जन्म करे कल्याण, गेड़े विच ना कोए भवाईआ। साचा धर्म दस्से ईमान, पुरख अकाल इक्को इष्ट मनाईआ। जन भगत अंदरों रहे ना कोई बेईमान, कूड़ शैतान ना कोए लड़ाईआ। हँकारी मन ना करे गुमान, गुरबत ग़ैर ना वण्ड वण्डाईआ। इक्को इक अबिनाशी करता गावे गाण, कुदरत दा कादर दए

समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणा के दर घर साचे दे महिमान, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जन भगत प्रभ दी सदा करे तलाश, शास्त्र सिमरत वेद पुराण फोल फुलाईआ। जिस दे विच सिफ्तां दी शाख़, शनाख़त दी शहादत रहे भुगताईआ। बिन हरि किरपा दरस ना होवे साख्यात, सनमुख हो के दरस कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल तमाश, नित नवित आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां देवणहारा दात, दानी हो के आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द करे रुशनाईआ। गुरमुख कदे ग़रूब ना होवे आफ्ताब, साची चमक दए चमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत साचे नाम दी सदा देवे अमदाद, अनमुल्ल दौलत झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लहिणा देणा पूरब जन्म कर्म दा करे बेबाक, बाकी अवर और ना कोए रखाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राजो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं अबिनाशी करते नाल लाउणा याराना, कूड़ा यार ना कोए जित्थे दिसे ना कोए बैगाना, वैरी रूप ना कोए बदलाईआ। इक्को नज़री आए साहिब सुल्ताना, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म चले सदा दो जहानां, जुग चौकड़ी बैठे सीस निवाईआ। दिन्दा रहे धुर फ़रमाना, गुर अवतार पैगम्बर हुक्में विच फिराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती पहरया आपणा जामा, रूप रंग रेख नजर किसे ना आईआ। शब्दी योद्धा सूरबीर सुत बलवाना, गोबिन्द आपणे नाल रखाईआ। जिस दा खण्डा खड़के कूड़ी क्रिया शरअ मेटे शैताना, सरीर शरीर रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होए हैराना, भेव अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले गावण इक्को गाणा, तूं ही तूं ही राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जीव जहाना, मानस मानव मानुख परदा दए उठाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरो दे गृह पिण्ड झण्डा कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ पुकार लै सुण, संदेसा तेरे दर पुचाईआ। तुध बिन सहाई होवे कौण, लोकमात दया कमाईआ। कलयुग अग्नी वगे तत्ती पाउण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सुख सागर विच मिले ना नहाउण, तीर्थ तट फिर फिर

दिती दुहाईआ। मनुआ मन हँकारी मरे ना राउण, सच्चा तीर निशाना अणयाला ना कोए लगाईआ। मन वासना पिच्छे आए ना कोए हटाउण, परदा अंदरों ना कोए चुकाईआ। वरन बरन वेखे सारे तेरे ढोले गउण, मन्दिर चढ़ के अंदर वड़ के निज नेत्र तेरा दरस कोए ना पाईआ। चरण कँवल कोई ना भुल्ल बख्शाउण, बख्शिश मंगे ना चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आयों भगत दुआर बुलाउण, बुलावा आपणा नाम समझाईआ। जन भगत कहे प्रभू तेरी याद अंदर गए रुल, आपणा आप मिटाईआ। पढ़ पढ़ थक्क गए बुल्ल्ह, बत्ती दन्द देण दुहाईआ। कीमत प्या कोई ना मुल्ल, लेखे लेखा ना कोए लगाईआ। सच भण्डार गया डुल्ह, वस्त अमोलक हथ्थ कोए ना आईआ। कलयुग अन्धेरा झक्खड़ रिहा झुल्ल, ठंडी पवण ना कोए वखाईआ। मूर्ख मुग्ध हो के जे गए भुल्ल, अभुल्ल तेरी ओट रखाईआ। भाग लगा दे साची कुल्ल, कुल्ल मालक तेरे अगे सीस रहे झुकाईआ। सच दवारा जाए खुल्ह, ख़ालस रूप तेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे लै तराईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी लग्गे कोए ना कीमत, निहकर्मी कर्म दे कमाईआ। जन भगत तेरी आत्म बण के बणे तरीमत, त्रिया हो के सेव कमाईआ। मानस जन्म चुरासी विच्चों मिल्या इक ग़नीमत, ग़मां तों दे छुडाईआ। साडी पवित्र कर ज़िहन वाली ज़िहनीअत, ज़ेर ज़बर विच ना कोए अटकाईआ। साची सिख्या सति सति नसीहत, हुक्म फ़रमाना आप सुणाईआ। भेव खोल्ह दे असल असलीअत, दुरमति मैल मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आपणे मिलण दी दे काबलीअत, कामल मुर्शद मुरीद आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विरासत नाम भण्डारा जन भगतां करदे वसीअत, मेहरवान हो के बिन लेखे लेख बणाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमा देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ किरपा कर खुद, खादम आपणे लै बणाईआ। निर्मल होवे बुध, बुद्धी मलीन ना कोए बणाईआ। पंज विकारे करना पए ना युद्ध, झगड़ा मन ना कोए लड़ाईआ। तेरा दवारा जाए सुझ, परदा ओहला दे उठाईआ। मंज़ल चढ़दयां रस्ते विच ना जावां रुक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तेरा नूरी दरस कर के भगत सुहेला होवे खुश, खुशीआं विच तेरे विच समाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना दुःख, बण दर्दी दर्द देणा गवाईआ। साची गोदी लैणा चुक, पुरख अकाल बण के धुर दा पिता माईआ। आवण जावण पैंडा जावे मुक, झगड़ा कर्म रहे ना राईआ। अपराधी बणाउणा आपणा

सुत, साहिब सतिगुर देणी इक सरनाईआ। बिन कदम सीस जगदीश तोहे जाए झुक, निउँ निउँ मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। जन भगत कहे तेरा रूप तक्कणा ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा आपणा लैणा बणाईआ। दो जहानां बणना सालस, सच सालासी आप कमाईआ। कूड़ी निंद्रा रहे ना आलस, ग़फलत नाता देणा तुड़ाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा बालक, बाल अवस्था दयां दुहाईआ। तूं साहिब स्वामी धुर दा ख़ालक, ख़ावंद सब दा नज़री आईआ। आदि जुगादि सदा सद बणया प्रितपालक, सेवक हो दे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सांभ आपणी अमानत, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ क्यों बैठा छुप, आपणा आप लुकाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। डूँघी भँवरी बैठों चुप्प, शब्द संदेश ना कोए सुणाईआ। कलयुग सृष्टी दृष्टी दा बदलया रुख़, बिन तेरी किरपा वांग सके ना कोए बदलाईआ। मन वासना होई भुक्ख, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर पूरे गोदी सके कोई ना चुक्क, सीस भार ना कोए उठाईआ। दीन मज़्हब विच आ के सारे गए रुठ, अगे कदम ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां उज्जल कर मुख, मुख अन्तर निरंतर मंत्र आपणा दे समझाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ तेरा सुणना सच्चा ढोला, ढोल माही देणा सुणाईआ। भाग लगा दे काया चोला, चोली आपणी रंग रंगाईआ। सुणा दे धुर दा सोहला, सोहणी आवाज़ सुणाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना ओहला, रौणक आपणी देणी वखाईआ। तूं मालक धुर दा दिसें मौला, हर घट रिहा समाईआ। नूर खुदाई अवल्ला, अवल इक जणाईआ। दे वड्याई उपर धौला, धरनी धरत वेख खुशी मनाईआ। आपणा पूरा इकरार कर कौला, जन भगतां होएं सहाईआ। मन हंगता सीस मार पउला, पाहुल अमृत गुरमुखां अन्तर आत्म दे चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कहे प्रभ सोहणे सुंदर, स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। धूढ़ी ख़ाक रमाउणी कन्न नहीं पाउणी मुंदर, सीस स्वाह ना कोए सुटाईआ। वड़ना नहीं किसे डूँघी कुंदर, कंदर विच डेरा कोए ना लाईआ। तेरे कोलों खुल्हाउणा आपणा कुफल जंदर, परदा सहिजे देणा चुकाईआ। पूजा करनी नहीं किसे सुरप्त इन्द्र, गणपति गणेश विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान ना कोए लगाईआ।

तूं मालक वड गजिंदर, फुनिन्दर तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा वरताईआ। जन भगत कहिण मालक सिध्धा हो के आ, वल छल खेल ना कोए खिलाईआ। तुध बिन अवर ना दिसे कोई मलाह, मुलाहज़ेदार संग ना कोए बणाईआ। साचा मार्ग दस्स राह, रहबर हो के दे समझाईआ। मालक ख़ालक सांझा बण खुदा, खुदी तकब्बर अंदरों बाहर कढाहीआ। वाअज़ वहदत इक्को दे समझा, इबादत तेरा नाम नज़री आईआ। फ़ज़ल रहमत दे कमा, अज़ल लेखा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे चरण कँवल कर फ़िदा, माण हँकार अभिमान अंदरों बाहर देणा कढाहीआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा राम दे गृह पिण्ड चक्क पंडत कैंप मनवाल जम्मू ✪

जन भगत कहे श्री भगवान कट दुक्खड़ा, चिन्ता ग़म सोग ना कोए सताईआ। तेरी किरपा उज्जल होवे लोकमात मुखड़ा, मुख अन्तर आपणा नाम दे समझाईआ। मात गर्भ आउणा पए ना उलटा रुखड़ा, चुरासी वाली फाँसी दे कटाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर सदा भुक्खड़ा, दे दरस भुक्ख्यां भुक्ख दे गवाईआ। साचे नाम दा बख़्श अगम्मी टुक्कड़ा, जिस नूं खाधिआं तोट रहे ना राईआ। मानस जन्म जाए सुधरा, सुद्ध बुध बिबेक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा दे वरताईआ। जन भगत कहे प्रभ जन्म जन्म दी कट तंगी, जगत कलेश रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म बण संगी, धुर दा संग बणाईआ। नाम वस्त साची दात दे मंगी, अनडिठड़ी झोली पाईआ। दूई द्वैत अंदरों ढाह कंधी, अन्ध अज्ञान दे चुकाईआ। झगड़ा रहे ना ख़ानाबन्दी, चुरासी फाँसी नज़र कोए ना आईआ। साचा नाम ढोला गाईए छन्दी, छन्द आनंद तेरा नज़री आईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी विछड़ी आत्म तेरे नाल जाए गंढी, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी मनाईआ। तेरे साचे रस दी आवे इक सुगंधी, दुर्गन्धी दर रहे ना राईआ। एथे ओथे दो जहानां जन भगतां पिठ होए ना नंगी, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। लोकमात वरभण्डी विच होए मूल ना भंडी, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। साचे नाम दी सति सतिवाद सुणाउणी इक सुरंगी, सुर ताल दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगत आसा तेरा चरण भरवासा पुरख अबिनाशा सदा सदा सद रही मंगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, हरि सन्त सुहेले गुर चेले ला आपणे अंगी, अंगीकार एकँकार निराकार आप अख्वाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धर्मो देवी दे गृह पिण्ड ख़ैरोवाल मनवाल कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ तेरा मेरा सांझा होवे रिश्ता, रिश्ता दुनी ना कोए वड्याईआ। नेड़ आए ना कोए फ़रिश्ता, जम दंड ना कोए लगाईआ। लहिणा देणा पिछला मुक जाए आहिस्ता आहिस्ता, वेला वक्त गया आईआ। तेरे कोल आदि जुगादी सति फ़रिस्ता, हरिजन आपणे लै जगाईआ। जिन्हां दे अंदर वड़ के साचा देवें निसचा, निहचल धाम देणा वखाईआ। इक्को पुरख अकाल हो के इष्टा, दृष्टी दा दीर्घ रोग देणा मुकाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां रहें दिसदा, लोचन नैण अक्ख बन्द ना कोए कराईआ। लहिणा देणा देणा जिस जिस दा, दर घर जा के झोली पाईआ। हिसाब रखे पुरख अकाल इक इक्क दा, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उन्हां दा लेखा आप लिखदा, जिन्हां दी लिख्त अगे सके ना कोए मिटाईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ किरपा कर छेती, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। भगत सुहेले बणा अन्तर आत्म दे भेती, परदा ओहला दे चुकाईआ। अगे कोटन कोटि तैनूं कह के गए नेती नेती, रसना जिह्वा ढोला सिफ्त सालाहीआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणया रिहों परदेसी, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां नाल कर आपणी नेकी, निक्कयां तों वड्डे लै बणाईआ। तेरी याद करे ना कोई वेखा वेखी, सिध्धा आपणा रंग रंगाईआ। नाम संदेसा शब्द सुनेहड़ा धुर दा भेजीं, भजन बन्दगी इक समझाईआ। जलवा नूर देणा तेजी, तपदे हिरदे शांत कराईआ। प्रीती बणी रहे सच्चे नेंह दी, नेहों अंदर इक जणाईआ। धार बरसे अमृत मेंह दी, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी बख़्शणी इक सरनाईआ। जन भगत कहे प्रभ झगड़ा मुक जाए मोरा तोरा, तुरत परदा दे उठाईआ। शब्द अगम्मी भेज घोड़ा, आसण पलाणे लोड़ रहे ना राईआ। नाद सुणा दे धुर दा दोहरा, सच सच जणाईआ। जन भगत बणा लै आपणा बांका छोहरा, स्त्री पुरुष वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म परमात्म बणया रहे जोड़ा, जुग चौकड़ी होवे ना कदे जुदाईआ। सोहणा लगदा रहे तेरा सस्से उपर होड़ा, हाहे टिप्पी हरि हरि रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा आसा पूरी कर लोड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, डोरी तेरे हथ्थ नज़री आईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लाल चन्द दे गृह पिण्ड मोयल कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभू तूं आपणी कर दे रहमत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढ दे ज़हिमत, जमां दा रोग चले ना राईआ। नाम भण्डारा दे दे नयामत, निमख निमख तेरा ध्यान लगाईआ। गुरमुख कोई ना रहे अहिमक, मूढ़ां डेरा ढाहीआ। आपणे शब्द इशारे दी दस्स अगम्मी सैनत, जगत नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन देणा जणाईआ। जन भगत कहे श्री भगवन्त बण धुर दा साथी, साथ आपणा दे निभाईआ। तेरी भेंटा करना नहीं कोई ऐराप्त, हाथी, अस्व भेंट ना कोए चढ़ाईआ। सिमरन जोग ना पूजा पाठी, माला मणका ना कोए फिराईआ। जागया नहीं जांदा राती, जलधार सीस ना कोए गिराईआ। तीर्थां उत्ते मारी नहीं जांदी वाटी, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। इक्को समझीए तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ाती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरी संधया खेल प्रभाती, तेरा नूर नूर रुशनाईआ। दर्शन मंगीए इक इकांती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर देणी वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ खोल्ह खलासा, खुशीआं दे वखाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। साचे गृह साचे मन्दिर निरगुण सरगुण वेखे खेल तमाशा, शमां दीपक इक्को जोत होवे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी कर आसा, असल आपणा आप समझाईआ। जन्म जन्म दा पूरा कर दे घाटा, घाट आपणे पार लँघाईआ। नैण उठा के साथों तक्कीआं नहीं जांदीआं वाटां, रातीं सुत्यां दिने जागदयां सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले तेरीआं सच्चीआं शाखां, शनाखत तेरी रहीआं कराईआ।

✪ १७ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ शब्दी धार गोबिन्द तेरा प्रगट, परगणे आपणे डेरा लाईआ। जित्थे कदे ना होवे मरघट, शमशान भूमी रूप ना कोए बणाईआ। इक्को इक साचा मिले अमृत रस, रस्ता रहबर हो के दे समझाईआ। आत्म परमात्म कर के वस, नाता कूड़ा दे छुडाईआ। निज नेत्र खोल्ह के धुर दी अक्ख, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। धुर दवारा दस्स के इक्को सच, घर ठाकर स्वामी सज्जण लै मिलाईआ। सदा सुहेला रखणहारा पत, पतिपरमेश्वर मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां रहिण ना देवीं कदे वक्ख, वक्खरे घर ना कोए टिकाईआ। मानस जन्म पंज तत काया चोला सब ने जाणा

छड्ड, हड्ड मास नाड़ी पिंजर कम्म किसे ना आईआ। सच दवारे हरिजन साचे जाणा वस, भगत भगवान मिल के इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, जन भगतां देवे अगम्मी वथ, अमृत आत्म रस लैणा चख, चसका कूड़ रहे ना राईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ महिंगा राम दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ किरपा करीं आप, साडे विच ना कोए वड्याईआ। जन्म कर्म दा धोवीं पाप, काया माटी कर सफ़ाईआ। नाम भण्डारा बख्श दात, सति सतिवादी झोली पाईआ। अंदर रहे ना अन्धेरी रात, कूड़ भरम देणा कढाहीआ। सदा सदा सद रहे तेरी याद, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना कोई आबाद, घर साचा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत कहे आपणी आप कर किरपा, मैनूं दस्सण दी लोड़ रहे ना राईआ। मेहरवान हो के कट बिप्पता, दुखियां दुःख दे गवाईआ। तूं आदि जुगादि सब दा लेखा लिखदा, बिधना लेखा दे मिटाईआ। प्यार कर साचे हित दा, पिता पूत गोद उठाईआ। रूप दे दे साचे सिख दा, सिख्या धुर दी इक समझाईआ। अंदर झगड़ा रहे ना कोई कूड़ी विख दा, अमृत बूँद स्वांती मुख चुआईआ। जिधर वेखां ओधर सदा रहें दिसदा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहे प्रभ वेख मेरी हालत, आप आपणा ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा होवे ना सच इबादत, ढोला गीत ना कोए गाईआ। किरपा कर के बदल लै आपणी आदत, भगतां हो सच सहाईआ। माया ममता मेट जहालत, जहां तहां दे वड्याईआ। तेरा नाम पदार्थ मिले नयामत, रस खा खा खुशी मनाईआ। विकार रहे ना कोई अलामत, हँकार अंदरों देणा कढाहीआ। लोकमात शब्दी धार दे ज़मानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा दे वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ आ के वेख साडा हाल, हाल हाल कर दुहाईआ। जगत दुखी होया वाल वाल, वलवले अंदरों ना कोए कढाहीआ। पिता गोद उठाए ना कोए बाल, बचपन लेखे कोए ना पाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर चले ना कोए नाल, सगला संग ना कोए बणाईआ। प्रेम प्यार दा वज्जे ना कोए ताल, दुखियां दुःख रहे डराईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों कर बहाल, अगला लहिणा दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगत मंगे तेरी सरनाईआ। जन भगत कहे मैं करां की, समझ समझ विच ना आईआ। जगत वासना

नाता जुड़या पुत्तर धी, साक सबंध कुटम्ब गंढु पवाईआ। निर्मल होए ना अन्तर जीअ, पतित पवित पुनीत ना कोए कराईआ। झगड़ा रखे ना साढे तिन्न हथ्थ सीं, सतिगुर सरन देवे ना कोए वड्याईआ। बिन तेरी किरपा अमृत बरखे कोए ना मींह, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद चरण बलिहारे जन भगतां मैं जावां थीं, थान थनंतर इक्को दे वखाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सन्तो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ आ के वेख साडा रुक्खा सुक्खा टुक्कर, टुकड़यां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं खा के करीए तेरा शुकर, धन्न धन्न धन्न तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान निरगुण धारों आ उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। कीता कौल इकरार ना जावीं मुकर, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जन भगत कहे प्रभ आप आ के वेख साडा दलिद्र, दलील सके ना कोए जणाईआ।
७३७ भरमे फिरदे इधर उधर, साचा घर ना कोए बणाईआ। दे वड्याई वांग बिदर, कोझे कमले गले लगाईआ। निरगुण निरवैर ७३७
१६ हो जा पितर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां बणा मित्र, ममता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १६
आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहे प्रभ दस्स करीए की पुकार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तूं सब कुछ वेखणहार, अभुल तेरी बेपरवाहीआ। जगत विच होए खुआर, घर घर पई दुहाईआ। सृष्टी ताअने रही मार, अणयाले तीर चलाईआ। छड्ड गए भैण भाई साक सज्जण यार, नाते कूड़े गए तुड़ाईआ। कर किरपा साचा दे अधार, मेहर नज़र इक उठाईआ। कोटां विच्चों थोड़े तेरे नाम दा करन जैकार, नाअरा धुर दा इक लाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग विच्चों कढु बाहर, बैरूनी लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी करदे रहे इंतजार, उडीक विच ध्यान लगाईआ। अन्तिम किरपा कर के मिल्यों आण, आप आपणा फेरा पाईआ। नाउँ रख के महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग साडा दे बदलाईआ। दु:ख रहे ना विच जहान, दलिद्र अंदरों दे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे दवारयों जन भगत सुहेले मंगदे सच्चा दान, दानशमंदी आपणी प्रीती प्रीतम दे वरताईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रकाशो देवी पिण्ड नगयाल कैंप मानसर जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ नेड़े आ अगे, घर आ के वेख वखाईआ। साडे पाटे चीथड़ झग्गे, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। दुद्ध दहीं दे ख़ाली मग्घे, अमृत रस ना कोए चखाईआ। दीपक सच कोई ना जगे, अन्ध अन्धेरा रिहा डराईआ। भुक्खे नंगे फिरदे भज्जे, नठ्ठीए वाहो दाहीआ। साची वस्त कोई ना लभ्भे, दिवस रैण कुरलाईआ। इक्को तेरी सरन लग्गे, बाकी छड्डी सर्ब लोकाईआ। पढ़ने छड्डे कक्के खक्खे गग्गे घग्घे, सोहँ ढोला रहे गाईआ। दु:ख दुनियावी सानूं दस्स वज्जे, क्यों मात रिहा तड़फाईआ। असीं छोटे नन्न्हे तेरे बच्चे, पिता पुरख अकाल हो सहाईआ। असीं बचन करदे सच्चे, दु:ख आपणे रहे जणाईआ। बिन तेरी किरपा कदे ना होईए पक्के, कच्चे करे जगत लोकाईआ। इक्को आसा मनसा दर्शन करीए आपणी अक्खे, आख़र मिल के ख़ुशी मनाईआ। सुखां वाले खाईए भत्ते, भटकणा अवर रहे ना राईआ। कर्म माढ़े जाण कटे, सुख मिले सभनी थाँईंआ। जगत मख़ौल करे ना ठठ्ठे, ठोकर सब नूं दे लगाईआ। वैर रहे ना घड़े वट्टे, ठीकर कूड़ा भन्न दे सज़ाईआ। जो तेरा नाम रहे जपे, जामा उन्न्हां दा वेख वखाईआ। सरन सरनाई तेरी ढठ्ठे, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। जन भगत कहिण प्रभू सानूं चरणां विच कर लै इक्ट्ठे, चार कुण्ट विछोड़े विच झल्ली ना जाए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे दर दुआर हरि भगत सुहेले सदा सदा सद आवण नठ्ठे, अगे हो के ना कोए अटकाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरदित सिंघ दे गृह पिण्ड छम्ब खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे क्यों भगत सुहेला मात आउँदा, सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाईआ। क्यों निरगुण सरगुण वेस वटाउँदा, जोती शब्दी धार बेपरवाहीआ। क्यों विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाउँदा, हुक्मे अंदर हुक्म लगाईआ। क्यों त्रैगुण माया पंज तत खेल खिलाउँदा, मेहर नज़र इक उठाईआ। क्यों लख चुरासी वण्ड वण्डाउँदा, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। क्यों चारे खाणी रूप धराउँदा, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज आपणा भेव जणाईआ। क्यों चारे बाणी शब्द अलाउँदा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गाईआ। क्यों चारे वेद जणाउँदा, ब्रह्म वेता कर पढ़ाईआ। क्यों चारे कुण्ट सुहाउँदा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण कर रुशनाईआ। क्यों चारे वरन बणाउँदा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड वण्डाईआ। क्यों ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रचाउँदा, क्यों धरनी धरत धवल जल विच समाईआ। क्यों समुंद सागर खेल खलाउँदा, नदीआं नाले वण्ड

वण्डाईआ। क्यों टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उपजाउँदा, पत्त टहणी क्यों लहराईआ। क्यों जीवण मरन बणाउँदा, घड़या भन्न वखाईआ। क्यों निरगुण हो के सरगुण हुक्म वरताउँदा, शब्दी शब्द करें शनवाईआ। क्यों गुर अवतार पीर पैगम्बर वेस वटाउँदा, नव सत्त फेरा पाईआ। क्यों भगत भगवान राग अलाउँदा, अनहद नादी नाद वजाईआ। क्यों सन्त सुहेले मात प्रगटाउँदा, साधना धुर दी दएं समझाईआ। क्यों गुरमुख गुर गुर हो के गोद उठाउँदा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। क्यों गुरसिख आपणे रंग रंगाउँदा, रंग रतड़ा शहिनशाहीआ। क्यों अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ वण्ड वण्डाउँदा, हुक्में अंदर हुक्म भवाईआ। क्यों खाणी बाणी रचन रचाउँदा, निरअक्खर अक्खरां विच्चों प्रगटाईआ। क्यों पंज तत मन्दिर आप सुहाउँदा, गृह बह के सोभा पाईआ। क्यों काम क्रोध लोभ मोह हँकार धार चलाउँदा, सृष्टी दृष्टी नाल मिलाईआ। क्यों मन मति बुध विचार वखाउँदा, सोच समझ दा गेड़ा दिता भवाईआ। क्यों भूत भविख आपणी कार कमाउँदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। क्यों दीन दुनी मिटाउँदा, तत रहिण ना कोए पाईआ। क्यों विद्या विद्यालयां विच पढ़ाउँदा, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। जन भगत कहे प्रभ क्यों नहीं सरगुण आप वेस वटाउँदा, मोहे भेव दे खुल्हाईआ। दोए जोड़ बेनन्ती सीस चरण निवाउँदा, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों बणयों अगम्म अथाह, की तेरी बेपरवाहीआ। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड दिते रचा, रवि ससि करन रुशनाईआ। मण्डल मण्डप दिते सुहा, हुक्में अंदर हुक्म मनाईआ। वेस अनेकां लए वटा, रूप रंग ना किसे जणाईआ। खेलें खेल हरि घट थाँ, नूर नुराना कर रुशनाईआ। तेरा लेखा जाणे कोए ना, बेअन्त हो के बेअन्त विच डेरा लाईआ। क्यों सब दा बणया पिता माँ, क्यों गोद रिहा उठाईआ। क्यों हँस बणाए काँ, क्यों कागों हँस उडाईआ। क्यों देवें ठंडी छाँ, क्यों सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। क्यों आवण जावण खेल दिता रचा, राए धर्म वण्ड वण्डाईआ। क्यों लेखा लिखाएं थाउँ थाँ, चित्रगुप्त बैठा सेव कमाईआ। क्यों लाड़ी मौत लई उपजा, जो घड़या भन्न वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरा परदा दे लाह, भेव अभेदा रहे ना राईआ। तूं मालक महबूब मेरा खुदा, खुद इक्को नज़री आईआ। तेरा ढोला गीत रिहा गा, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी हुक्म अंदर दे समझा, बुद्धी दी लोड़ रहे ना राईआ।

७३८
१८

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ संसार सिँघ दे गृह पिण्ड छम्ब कैंप खूण जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभू क्यों आवें जगत, सति सच दे दृढ़ाईआ। क्यों प्रगट करें आपणी शक्त, शक्ती आपणे विच्चों उपाईआ। क्यों उधारें साचे भगत, भगवन हो के वेख वखाईआ। क्यों इक्को ढोला दस्सें फ़कत, फ़िकरा सच पढ़ाईआ। क्यों सुहावें सच वक्त, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। क्यों योद्धा सूरबीर मर्दान बणया मर्द, निरगुण हो के भज्जें वाहो दाहीआ। क्यों ग़रीब निमाणयां वण्डें दर्द, दुखियां दुःख आपणी झोली पाईआ। क्यों शरअ छुरी चलाई करद, कातिल मकतूल आपणा खेल वखाईआ। क्यों बेनन्ती सुणें अरज़, क्यों चरणां उत्ते मस्तक रिहा रगड़ाईआ। जन भगत कहे प्रभू परदा खोल्ह कर ना पड़द, ओहला काया चोला रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों आवें मात, मित्र प्यारे मैनूं दे समझाईआ। क्यों बणाए दिवस रात, घड़ी पल वण्ड वण्डाईआ। क्यों खेलें खेल तमाश, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रास रचाईआ। क्यों सुरती शब्दी करें नाच, नटुआ हो के स्वांग कराईआ। क्यों शब्द सुनेहड़े देवें साच, क्यों जूठ झूठ उपजाईआ। क्यों सेजा सोवें जगत खाट, क्यों अन्तर आत्म बह के खुशी मनाईआ। क्यों जुग चौकड़ी कटें वाट, निरगुण सरगुण बण के पाँधी राहीआ। क्यों भगतां देवें साथ, सच देणा समझाईआ। क्यों बणें त्रिलोकी नाथ, क्यों सलोकी ढोला गाईआ। क्यों कहें भविख्त वाक्, हुक्म नाल हुक्म बदलाईआ। क्यों सेवक करें चाक, चाकर रूप धराईआ। जन भगत कहे मेरी पूरी कर दे आस, तृष्ना तृखा दे गवाईआ। क्यों लोकमात निरगुण जोत करें प्रकाश, नूर नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल दस्स ख़ास, ख़सूसीअत ख़सम हो के दे जणाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ खेमो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभ क्यों दिता ख़ाकी तन, नाता तत्तां नाल जुड़ाईआ। क्यों बख़्श्या बुद्धी मन, मेहर नज़र उठाईआ। क्यों जणाए सरवण कन्न, साची वण्ड वण्डाईआ। क्यों बख़्श्या माल धन, ख़ज़ीना बेपरवाहीआ। क्यों बणाया आपणा जन, जन्म कर्म दे दृढ़ाईआ। क्यों परदा रखाया विच ब्रह्म, पारब्रह्म लेखा दे चुकाईआ। क्यों खुशी रखी ग़म, चिन्ता नाल मिलाईआ। क्यों पवण स्वास दिता दम, रसना जेहवा नाल वड्याईआ। क्यों हड्ड नाल जोड़या चम्म, रक्त बूँद वण्ड वण्डाईआ। क्यों प्रकाश कीता साचा नूर जोत चन्न, सीतल धार क्यों प्रगटाईआ। क्यों बणाया मात कर्म, कांड क्यों झोली पाईआ। क्यों

वण्ड वण्डाई ज़ात पात धर्म, मज़्ब हिस्सयां विच रखाईआ। क्यों लेखा रख्या भरम, पड़दे ओहले विच छुपाईआ। क्यों बदलदा रवें जन्म, लख चुरासी विच भवाईआ। क्यों रख्या हया शरम, नेत्र नैण शरमाईआ। क्यों द्वैती लाया वरम, आर पार दिता कराईआ। क्यों नेत्र खोल्या हरन फरन, निज लोचण कर रुशनाईआ। क्यों भय विच सारे डरन, भउ कवण रिहा वखाईआ। क्यों मंज़ल चोटी तेरी चढ़न, क्यों करन पढ़ाईआ। क्यों बिरहों वैराग अंदर मरन, विछोड़ा रिहा सताईआ। क्यों बख़्शी सच्ची सरन, साहिब स्वामी दे समझाईआ। क्यों आदि जुगादि जुग चौकड़ी करें प्रन, भविख्तां विच गंढु पवाईआ। क्यों लख चुरासी नाल आवें लड़न, हँकारी विकारी खेल खिलाईआ। क्यों अग्नी आवें सड़न, पंज तत काया चोला दएं तजाईआ। क्यों गोर आवें वड़न, मकबरयां विच बह के सोभा पाईआ। क्यों भगत भगवान आवें फड़न, भज्जें वाहो दाहीआ। जन भगत कहे प्रभ क्यों तेरा भाणा गुरमुख जरन, ज़रा ज़रा आप कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत क्यों लड़ तेरा फड़न, भेव अभेदा दे खुलाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शंकर दास दे गृह पिण्ड मलक खूण कैंप जम्मू ✪

७४१
१६

जन भगत कहे प्रभ क्यों बणाए ज़िमीं असमान, जगत ज़माना खेल खिलाईआ। क्यों प्रगटाए रवि ससि सूर्या चन्द भान, किरन किरन तेज जोत रुशनाईआ। क्यों बणाए ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान, बेअन्त अन्त आपणे विच छुपाईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बर दिता दान, शब्द निधाना नज़री आईआ। क्यों खेल खिलाएं गोपी काहन, क्यों सीता राम वज्जी वधाईआ। क्यों मूसा ईसा मुहम्मद दिता फ़रमान, कलमा धुर दा इक दृढ़ाईआ। क्यों नानक दस्सया सतिनाम, सति सति विच्चों समझाईआ। क्यों गोबिन्द फ़तिह डंक वजाया आण, हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। क्यों नाद धुन सुणाए गाण, क्यों नाम करी शनवाईआ। क्यों जंगल बेले बणाए बीआबान, बन खण्ड क्यों वण्ड वण्डाईआ। क्यों खेलें खेल हर घट विच दरम्यान, उपर थल्ले समझ कोए ना पाईआ। क्यों दूई द्वैती शरअ बणाया शैतान, चार कुण्ट करे लड़ाईआ। क्यों पंखी पंछी बणाए हैवान, क्यों इन्सानां वण्ड वण्डाईआ। क्यों शस्त्र चिल्ला बणाए तीर कमान, क्यों भथ्थे कंध उठाईआ। क्यों माण मोह हँकार विकार बणाया गुमान, भेख पाखण्ड क्यों रचन रचाईआ। क्यों बणाया पीवण खाण, क्यों तृष्ना जगत हल्काईआ। क्यों कराया मध पाण, क्यों नश्यां विच रुलाईआ। क्यों भूमिका बणाई शमशान, क्यों मकबरयां खेल खिलाईआ। क्यों बणया रिहा नादान, जग वेखण कोए ना पाईआ। क्यों हुक्म हाकम बणाए विधान, क्यों हकूमत रिहा चलाईआ। जन भगत कहे प्रभू आपणा

खोलू के दे ब्यान, बेईमानी विच ना कोए रखाईआ। क्यों होइउँ जाणी जाण, हर घट वेखे थाउँ थाँईंआ। क्यों कलयुग अन्त बणयों तरखान, तिक्खी धार आप प्रगटाईआ। क्यों बदलया रूप महान, वेस जट्टां वाला वखाईआ। क्यों मारन आयों अफ़ग़ान, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। क्यों ख़ाली करन आयों मैदान, मदद अवर ना कोए मंगाईआ। क्यों सृष्टी कीती हैरान, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। क्यों शब्दी सुत ल्याया नाल जवान, जोबनवन्ता नज़री आईआ। क्यों आपणे हथ्थ फड़ी कमान, कामल मुर्शद फेरा पाईआ। क्यों दो जहान बणयों प्रधान, प्रधानगी आपणी रिहा वखाईआ। जन भगत कहे प्रभू जुग जुग क्यों नहीं बैठदा नाल आराम, झंजटां विच झंजट पा के झगड़ा वेखें जगत लोकाईआ। अबिनाशी करता कहे जुग चौकड़ी छेड़ छेड़नी मेरा काम, सब दी करनी करनी नाकाम, मन मति बुध मेटणी तमाम, कूड़ा रहिण ना देणा हराम, शरअ शरीअत मेट शैतान, इक्को रूप नज़री आए सब नूं भगवान, भगवन्त हो के आपणी खेल खिलाईआ।

७४२
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ पूरन चन्द पिण्ड मलक खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे प्रभू क्यों बणाए लोक परलोक, क्यों परलो आपणे हुक्म विच रखाईआ। क्यों हर घट थाँ प्रकाश कीती जोत, आपणे नूर नाल चमकाईआ। क्यों शब्द अगम्मी लावें चोट, सोए सर्ब उठाईआ। क्यों सुहावें किला कोट, बंक दवारे दएं वड्याईआ। क्यों जणावें सच सलोक, आपणा नाम करें पढ़ाईआ। क्यों बख्शे मुक्ती मोख, क्यों मुफ्त आपणे विच समाईआ। क्यों निरगुण हो के सरगुण करें खोज, वेखें थाउँ थाँईंआ। क्यों प्रीतम हो के प्यार दा करें चोज, चोले अंदर वज्जे वधाईआ। क्यों बिरहों विछोड़ा लाया रोग, याद रही सताईआ। क्यों बैरागी बख्श्या जोग, जोगीशर दिते भटकाईआ। क्यों अमृत रस दी दे के चोग, सांतक सति दएं कराईआ। क्यों बख्शें दरस अमोघ, चिन्ता ग़म मिटाईआ। क्यों भोगें साचा भोग, आत्म सेजा डेरा लाईआ। क्यों मिलाएं सच संजोग, मेला सहिज सुभाईआ। क्यों करें वियोग, दो जहानां सदा जुदाईआ। क्यों लख चुरासी अंदर देवें झोक, जूनीआं विच भवाईआ। क्यों दु:ख देण दा तैनूं शौंक, जन भगत कहे मैनूं दे समझाईआ। तैनूं कोई ना सके रोक, क्यों तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत कहे प्रभू तेरा खेल वेख्या बहुत, गिणती विच ना कोए गिणाईआ। क्यों खुमारी अंदर करें मदहोश, सुरती सुरत भुलाईआ। क्यों बैठा रहें खामोश, सुन्न समाध डेरा लाईआ। क्यों भाग लगावें काया माटी पोश, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सद दर्शन देवे रोज़, रजा आपणी विच मनाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ अंग्रेज़ सिँघ पिण्ड धींगा वाली कैंप खूण जम्मू ✪

जन भगवन्त कहे प्रभू क्यों कीता आपणा आप प्रकाश, क्यों नूर नूर रुशनाईआ। क्यों सच स्वामी हो के पावें रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। क्यों वसें आपणे पास, आप आपा दे समझाईआ। क्यों प्रगट होइउँ ख़ास, ख़सम हो के हुक्म वरताईआ। क्यों सेवक बणयों दास, सेवक सेवा सच कमाईआ। क्यों तृष्ना रखी आस, क्यों ममता मोह जणाईआ। क्यों भुक्ख बणाई प्यास, सहिजे दे समझाईआ। क्यों बणयों सर्ब गुणतास, गुणवन्ता नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए आपणी शाख़, शरअ दिती प्रगटाईआ। क्यों कर के मातलोक उदास, अन्तिम नाते लए तुड़ाईआ। क्यों भगतां पुछें बात, नित नवित फेरा पाईआ। क्यों सोहणा वेला बणाया प्रभात, क्यों संधया ढोले गाईआ। क्यों लेखा लिख्या पट्टी नाल कलम दवात, क्यों अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। क्यों सन्तां दएं शाबाश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। क्यों पतण बणाया घाट, क्यों गुरमुखां पार लँघाईआ। क्यों नेरन नेरे रखी वाट, गुरसिखां दएं समझाईआ। क्यों झगड़ा पाया ज़ात पात, दीन मज़्हब रिहा टकराईआ। क्यों जीवण रख्या वफ़ात, क्यों मुर्दा मुरीद विच समाईआ। क्यों अंदरे अंदर धुन आत्मक जणाएं आपणी बात, बातन हो के करें शनवाईआ। क्यों भगतां सच सुनेहड़ा जाएं आख, आख़र आपणा हुक्म मनाईआ। क्यों झगड़ा पावण वाला इस विसाख, वसाह के सब नूं रिहा हिलाईआ। क्यों खिड़की खोलें ताक, क्यों कुण्डे रिहा खड़काईआ। क्यों हो के पुरख अबिनाश, भगतां रिहा तड़पाईआ। क्यों दिन्दा नहीं आपणी दात, दातार हो के झोली पाईआ। जन भगत तैनूं कह बैठे इक्को बाप, पिता पुरख अकाल नज़री आईआ। पूरा कर गोबिन्द वाला वाक्, वख़त पए ते जगत विच्चों बाहर कढाहीआ। सब दे वेख हालात, हालांकि बदली नहीं बदलण दा वेला रही तकाईआ। कलयुग कूड़ी रहिणी नहीं जमात, जमां ने घेरा लैणा पाईआ। जन भगत कहे प्रभू तूं उन्हां पुछणी बात, जेहड़े तेरा इक्को नाम ध्याईआ। क्यों कलयुग अन्तिम मुक्कणी वाट, वट्टा रहिण कोए ना पाईआ। क्यों सूरबीर योद्धा बणें राठ, हुक्मे अंदर हुक्म भवाईआ। क्यों शौह दरयाए लहर मारे ठाठ, अमृत धारा इक वहाईआ। क्यों बणे साचा घाट, पतण बह के ख़ुशी मनाईआ। क्यों भगतां होवें दास, दस्स के देणा सझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कोए ना पुछे बात, वतन बेवतनां होए ना कोए सहाईआ।

✪ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत २ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे क्यों रचन रचाई, रचनहारे दे समझाईआ। क्यों त्रैगुण माया उपजाई, आपणा हुक्म वरताईआ। क्यों पंज तत करी कुड़माई, नाता जोड़या सहिज सुभाईआ। क्यों प्रकृती विच टिकाई, दिती माण वड्याईआ। क्यों सुरती शब्द भुलाई, परदा दिता रखाईआ। क्यों मूर्त अकाल छुपाई, नज़र किसे ना आईआ। क्यों सुर ताल वजाई, नादी नाद शनवाईआ। क्यों घर मन्दिर बणत बणाई, गृह आपणा रंग चढ़ाईआ। क्यों जोत निरँजण डगमगाई, आदि निरँजण वण्ड वण्डाईआ। क्यों टेडी बंक सुहाई, भँवर गुफ़ा क्यों चतुराईआ। क्यों सहँस कँवल रिहा भवाई, दल आपणा नाल मिलाईआ। क्यों ईड़ा पिंगल करी कुड़माई, हुक्म इक वरताईआ। क्यों मारू डण्ड विच कीते शुदाई, बुद्धी चली ना कोए चतुराईआ। क्यों सवा गिठ वण्ड वण्डाई, हिस्सा आपणा आपे पाईआ। क्यों नैणां पिच्छे नैण कीता रुशनाई, तीजी अक्ख खुल्हाईआ। क्यों बण के ब्रह्म गुसाँईं, पारब्रह्म अख्वाईआ। क्यों आत्म नूर रुशनाई, रूह बुत्त वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे इक वर, वारता आपणी दे दृढ़ाईआ। जन भगत कहे क्यों बणाया तत वजूद, हरि साचे दे समझाईआ। क्यों बणाया काया माटी कच्च कलबूत, कंचन गढ़ सुहाईआ। क्यों सुहाया अरूज, सच दवारे डेरा लाईआ। क्यों बणयों निर्मल महबूब, मुहब्बत आपणा रंग रंगाईआ। क्यों ना देवें आपणा सच सबूत, सबर सबूरी विच समझाईआ। क्यों भज्जा फिरें चारे कूट, दहि दिशा वाहो दाहीआ। क्यों उपजाया जूठ झूठ, माया ममता मोह हल्काईआ। क्यों अंदरों ग्यों रूठ, आपणा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा नज़र आ मौजूद, घर साचे सोभा पाईआ। जन भगत कहिण क्यों रचन ल्या रच, रच रच वेख वखाईआ। क्यों भाण्डा बणाया काया माटी कच्च, तन माटी सोभा पाईआ। क्यों आत्म रखी सच, वज्जे सच वधाईआ। क्यों लूं लूं अंदर रिहा रच, आपणा आप छुपाईआ। क्यों लुकाया ब्रह्ममत, पारब्रह्म दे दृढ़ाईआ। क्यों उपजाया धीरज जत, सति सन्तोख नाल मिलाईआ। क्यों उबले बहत्तर नाड़ी रत, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी रही कुरलाईआ। जन भगत कहे प्रभू क्यों खेल खिलाया जगत, जग जीवण दाते दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्यों सृष्टी लाई अग्ग, तृखा तृष्ना विच तपाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ वज़ीरो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे क्यों मालक बणयों धुर, दरगाह साची सोभा पाईआ। क्यों प्रगट कीते पैगम्बर अवतार गुर, हुक्म संदेशे नाल सुणाईआ। क्यों खेल खिलाया देवत सुर, करोड़ तेतीसा वज्जे वधाईआ। क्यों निरगुण सरगुण हो के रिहों जुड़, मेला मेलें थाउँ थाँईंआ। क्यों लोकमात आवें मुड़, नित नवित फेरा पाईआ। क्यों चार कुण्ट दहि दिशा रिहों तुर, नव नौ भज्जें चाँईं चाँईंआ। क्यों फ़ुरना हो के रिहों फुर, फुरने अंदर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ। जन भगत कहे क्यों उपजाए ऋषी मुनी, मुनीशर क्यों वड्याईआ। क्यों बणाया दीन दुनी, दोहरी धार चलाईआ। क्यों विद्यावान कीते गुणी, गहर गम्भीर दे समझाईआ। क्यों भाग लगावें काया कुंनी, काअबा गृह गृह दएं प्रगटाईआ। क्यों वस्त अमोलक दएं अनमुल्ली, अनमंगी दौलत झोली पाईआ। क्यों सृष्टी तैनूं भुल्ली, प्रभ सहिजे दे समझाईआ। क्यों जगत अन्धेरी झुल्ली, चारों कुण्ट धक्का रही लगाईआ। क्यों दृष्ट इष्ट किसे ना खुल्ही, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। क्यों अमृत धार सब दी डुल्ही, निझर रस ना कोए प्याईआ। जन भगत कहिण प्रभू तेरी फुलवाड़ी किस बिध मात फुल्ली, सच सच दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेखे लाए सच प्रीती घोल घुली, घाल सब दी झोली पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ चरण जीत सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे किरपा प्रभ गहर गम्भीर, गवर सबर आपणा दे बंधाईआ। अन्तर आत्म साचा अमृत बख्श सीर, सीर खार बच्चे सारे मंग मंगाईआ। तन मन रहे ना हउमें पीड़, दुखियां दर्द दे गवाईआ। तेरे मिलण दी इक्को रहे रीझ, दूजा ध्यान ना कोए लगाईआ। तन माटी ठांडी होवे सीझ, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, झल झल थक्के तेरी जुदाईआ। लभ्भदे रहे ठाकर मन्दिर विच्चों मसीत, मसला हल ना कोए कराईआ। रसना जेहवा गाउँदे रहे गीत, दिवस रैण कूक कूक सुणाईआ। मानस जन्म किसे ना ल्या जीत, नाता छुटया ना जगत लोकाईआ। पुरख अकाल तेरी करदे रहे उडीक, राह तक्कदे थाउँ थाँईंआ। साडी पूरी कर उम्मीद, आसा तृष्ना दे गवाईआ। नाम भण्डारा झोली पा भीख, भिख्या आपणी इक वरताईआ। सिर हथ्थ रख जगदीश जगदीशर तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग माया ममता रही पीस, मेहर नज़र पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लैणा टिकाईआ। जन भगत कहे

प्रभ चुका दे झेड़े, झंजट रहिण कोए ना पाईआ। उजड़े वसा दे खेड़े, घर साचे मिले वड्याईआ। असीं बालक बच्चे नन्हे तेरे, दूजा पिता ना कोए बणाईआ। चुरासी कटदे अगले गेड़े, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। चार जुग धक्के खाधे बथेरे, भज्जे वाहो दाहीआ। बिन पुरख अकाल तेरे कोई ना आया नेड़े, संगी साथी सारे गए तजाईआ। चरण कँवलां लवा डेरे, डेरा आपणा इक बणाईआ। शब्दी हुक्म कर घेरे, घिरना अंदर रहे ना राईआ। सदा बहा आपणे खुल्ले वेहड़े, जित्थे दुःख दर्द ना लागे राईआ। जमदूत ना आवे नेड़े, फास गल ना कोए लटकाईआ। सच चढ़ा आपणे बेड़े, बाहों फड़ जगत उठाईआ। तूं सतिगुर हउँ बालक तेरे चेरे, तूं ही राग अल्हाईआ। क्यों मेहरवान हो के नखेड़े, बिखरे आपणे नाल जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया जगत रहिण ना झेड़े, मनुआ करे ना कोए लड़ाईआ। जगत वासना चिक्कड़ नाल लिबेड़े, दुरमति मैल दे धवाईआ। दूर दुराडे वस आ के नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। कोटां विच्चों थोड़े भगत जेहड़े बैठे रख के वड्डे जेरे, जेरज़ अण्डज उत्भुज सेहतज विच्चों देणा बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहर नज़र कर मेहरे, मेरा तेरा तेरा मेरा रहिण कोए ना पाईआ।

७४६
१९

✪ १९ जेठ शहिनशाही सम्मत २ देवा सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं सार ना जाणां तेरी, तेरा भेव कोए ना आईआ। बण सेवक घर दी चेरी, गोली हो सेव कमाईआ। शौह दरया डुब्बण ना देवीं बेड़ी, पार किनारे आप लगाईआ। कलयुग अन्त करीं ना हेरा फेरी, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। सानूं नज़र आउँदी गुरमुख कहे राम वेले एथे हुन्दी सी इक बेरी, बेर कच्चे पके दोवें रंग वटाईआ। इक अयाली लाई ढेरी, तोड़ तोड़ के खुशी मनाईआ। अंदर आसा कीती वधेरी, बहु ममता लई प्रगटाईआ। साचा राम मारे फेरी, बण के पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वरताईआ। जन भगत कहे प्रभ फेरा पा, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। अयाली दासी जीउणा नाँ, मापे खुशीआं नाल सुणाईआ। अन्तर बैठा ध्यान लगा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिंनां चिर मेरा राम ना जावे आ, मैनूं सुरत रहे ना राईआ। मार के उच्ची धाह, कूक कूक दिता सुणाईआ। भीलणी दी ते मेरी माँ दी इक्को माँ, भणेवां ओसे दा नज़री आईआ। जिंनां चिर ना दरश देवें आ, झल्ली ना जाए जुदाईआ। राम शब्दी रूप वटा, भज्जया वाहो दाहीआ। सहिजे पहुंचया आ, फड़ बाहों दिता हिलाईआ। नैण ल्या खुल्हा, खुशी विच ताली दिती लगाईआ। वाह मेरे बेपरवाह, तेरे हथ्थ वड्याईआ। राम ने विच्चों पंज बेर लए खा,

अद्धा हिस्सा उस दे मूँह विच पाईआ। फिर सहिजे सहिजे दिता समझा, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर गया विहा, कलयुग अन्ध अन्धेरा छाईआ। राम दा राम तेरा अगला लेखा दए चुका, बाकी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। निरगुण हो के देवे दरस दिखा, जोती जाता शहिनशाहीआ। मेहर नज़र लए उठा, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। अयाली निउँ के सीस दिता झुका, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। की उह अकल्ला आवे तेरे वांग आपणा आप लुका, परदा जगत रखाईआ। राम किहा नहीं उह सन्त सुहेले नाल मिला, गुरमुख साचे संग ल्याईआ। तेरे दवारे देवे भाग लगा, भगवान हो के होए सहाईआ। बच्चे किहा की मैनूं लवे पहचान, निरगुण परदा दए उठाईआ। राम किहा हां उह करे ध्यान, दाता बेपरवाहीआ। प्रेम प्यार दा खावे पकवान, कच्चयां तों पक्के दए बणाईआ। पूरब लेखा चुक्कया आण, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लहिणा देवा सिँघ दा देणा दे के खुशी मनाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ कुलवन्त सिँघ पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

जन भगत कहिण प्रभू सहारे तक्के सच सतिगुर दे, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। मेहरवान हो के जगत उधार ग़रीब गुरबे, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। बिन तेरे प्रेम सारे होए मुरदे, मुद्दतां दे विछड़े बैठे ध्यान लगाईआ। बिन तेरे गृह दूजे घर मूल ना तुरदे, चार कुण्ट ना अक्ख बदलाईआ। राग दस्स दे आपणी सुर दे, सुत्यां लै जगाईआ। विछोड़े मेटदे पिछले अनन्दपुर दे, पुरीआं लोआं विच्चों लेखा बाहर कढाहीआ। असीं मूर्ख हो के सारे रहे भुल्लदे, अभुल्ल तेरे हथ्थ वड्याईआ। बिन तेरे दर तों रुलदे, कोझयां कमलयां गले ना कोए लगाईआ। तूं टुकड़े खा के चुल्ह चुल्ह दे, राजे बल दा लेखा दे मुकाईआ। असीं भगत ओस कुल दे, जिथ्थों भगवान नज़री आईआ। साडी सेवा दा सानूं मुल्ल दे, कीमत नाम वाली झोली पाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे तोल कोई ना तुलदे, जगत तराज़ू कम्म किसे ना आईआ। सानूं माण दे ओस कमल फुल्ल दे, जो कँवल नैण आपणे विच छुपाईआ। टिक्के लाईए तेरी सच्ची धूल दे, धूढ़ मस्तक ख़ाक रमाईआ। राह तक्कीए तेरे सच असूल दे, असल विच वसल दे वखाईआ। झगड़े मुक जाण गुर अवतार पैगम्बर रसूल दे, रस्ता इक्को दे दृढ़ाईआ। जित्थे भगत भगवान इक दूजे नूं कबूल दे, मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कहे प्रभ करीं रच्छा, रच्छक हो के

वेख वखाईआ। बल बावन वाली इच्छा, सब दी लेखे देणी लगाईआ। इस बन खण्ड अंदर तेरां सौ सतासी रिषी रैहन्दा सी इक्ठ्ठा, इक मन हो के इक्को ध्यान लगाईआ। जिन्हां नूं बल ने भेजीआं गठ्ठां, गंढ्ढां नाल बुलाईआ। सब ने आउणा नठ्ठा, भज्जणा वाहो दाहीआ। अस्वमेध यग इक रचा, रचना कीती बेपरवाहीआ। सन्त साध सद्दणा सच्चा, सच मिले वड्याईआ। ओसे वेले सब ने कर के मता पक्का, इरादा ल्या बणाईआ। जिस वेले दिन आया अच्छा, भज्जे वाहो दाहीआ। बल दवारे खा खा सब रज्जा, खुशी खुशी ढोले गाईआ। बावन बुढ्ढा उठ के कोल आया पासे सज्जा, डंगोरा सहिज दिता हिलाईआ। रिषीओ मैनूं दसो केहड़ी वजह, जिस नाल प्रभ नूं मिल के शुकर मनाईआ। सब ने खब्बा हथ्थ मार के उपर ढिड्डां, होका दे के दिता जणाईआ। साडा मंगतयां दा सड़ गया पिण्डा, प्रभ नूं खोजया थाउँ थाँईंआ। अजे दरस नहीं किसे नूं दिन्दा, नज़र कोए ना पाईआ। बावन किहा आह मैं तुहानूं देवां नेंदा, सतिजुग दा त्रेता त्रेते दा द्वापर द्वापर दा कलयुग कलयुग दा अन्त खेल भगवन्त सहिजे दयां समझाईआ। मैं ओस वेले निरगुण धार हो के फिर होणा जीउँदा, जागरत जोत रूप वखाईआ। लहिणा देणा चुकावां साचे नेंहु दा, निहकर्मी हो के दयां दृढ़ाईआ। तुहाडे नाल फेर नाता जोड़ां पिता प्यो दा, पुरख अकाल वेस वटाईआ। जिस कन्यां मेरे लई थाल परोस्या खण्ड घिउ दा, चार भैणां पंजवां रल के छोटा वड्डा भाईआ। मैं ओस दा कीता धन्न धन्नयां, खुशी विच खुशी दिती बदलाईआ। जिस वेले लोकमात निरगुण चढ़या चन्नया, जोत नूर होवे रुशनाईआ। ओस वेले इक शब्द संदेसा तुहाडे पावां कन्यां, कन्नां विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। सारे ऋषी कर के निमस्कार, इक दूजे वल बैठे ध्यान लगाईआ। बावन किहा तुहाडे नहीं कुछ अख्त्यार, करन करावणहार इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, विछड़यां लए मिलाईआ। तुसीं राजे बल दा खा के अहार, मन शात ना कोए कराईआ। क्यों तुहानूं मिल्या नहीं निरँकार, मन वज्जी ना सच वधाईआ। उह मेरे आह मेरे नाम दा लवो प्यार, तुहाडे हथ्थ देवां फड़ाईआ। कलयुग अन्त तुहाडे विच्चों लवां निकाल, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं लेखे लाउणा ओस कन्यां दा थाल, जिस दे पिच्छे घर घर जा के गुरमुखां दे भोग लगाईआ। सब दा पूरा करां स्वाल, लेखा सब दा दयां चुकाईआ। ओस दा काज रचणा विच जहान, जहान जहान जुग ओस नूं सके ना कोए प्रनाईआ। कुछ थोड़ा लेखा रखणा गोबिन्द नाल, परदा परदयां विच्चों टिकाईआ। अगों रिषी चरणां वल्ल कर ध्यान, सारे नीर वहाईआ। सानूं सच दस्स मेहरवान, किस बिध एथे इक्ठे लएं कराईआ। बावन किहा एह मेरा खेल कमाल, जुग जुग मेरा भेव कोए ना पाईआ। दूर दुराडे मेलां आण, डेरा जंगलां विच लगाईआ। फेर आपणे निउँदे दा तुहानूं सनेहा

७४८
१६

देवां आण, रिषीआं दा रिषी चेला सिँघ नाल मिलाईआ। तुहानूं खवावां उह पकवान, जिस दे नाल मिले भगवान, सेवा करे जगत महान, बच्चे बणा के गोद उठाईआ। घर आउँदयां नूं मुड़ के दे के जीवन ज़िंदगी दा दान, तुहाडा अगला लेखा कर परवान, परवाने घर घर दयां पुचाईआ। जन भगतो तुसीं खुशीआं नाल खायो आण, तेरां सौ सतासीआं विच्चों जिन्हां नूं मिल्या माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लेखे कारन सब नूं आया उठाण, इक्ठुयां कर के इक्ठा हुक्म जणाईआ।

७४६
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली खूण कैंप जम्मू ✪

रिषी कहिण किस बिध आवांगे। की होवे तेरा नाउँ, किस बिध दर्शन पावांगे। बावन किहा निरगुण हो के पकड़ां बाहों, दर दर घर घर साचा दरस दखावांगे। पूरब मेट के हरस, हसदयां हसदयां खुशी मनावागे। विछोड़े वाली रहे ना तड़प, तड़पदयां शांत करावांगे। अगे कोई ना रहे अटक, मार्ग इक्को इक सुहावांगे। तुहाडा मेरा रहे कोई ना फ़र्क, इक्को घर बह के खुशी मनावांगे। तुहाडे नाल पक्की होई शर्त, शरअ दा लेखा सर्ब चुकावांगे। जिस वेले निरगुण हो के आया परत, भगत भगवान हो के रंग वखावांगे। भाग लग्गे एस धरत, उजड़ी होई फेर वसावांगे। हुण तुसां बल दा कीता खर्च, फेर तुहाडा खर्च आपणे ख़ज़ाने विच्चों वण्ड वण्डावांगे। तुहाडे नालों बहुती मैनूं गरज, हुण दे विछड़े फेर इक्ठे हो के सोभा पावांगे। जन भगतो मैं आपणा पूरा करां फ़र्ज, मिल के दोवें धिरां काज रचावांगे। तुसां प्रभू दी मन्नणी इक अरज़, बेनन्ती इक्ठी इक प्रगटावांगे। भावें जगत विहार दा हो जाए हर्ज, इस विवहार नूं सिरे चढ़ावांगे। तुसीं मेरे मैं तुहाडा वण्डणा दर्द, दुःख विच्चों सुख प्रगटावांगे। एह खेल होणा असचरज, वेला वक्त वेख खुशी मनावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे विच्चों कढे सब दी फ़रद, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखावांगे।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सरदार सिँघ पिण्ड सरदारी खूण कैंप जम्मू ✪

रिषी कहिण साडी भूमिका सोहे अस्थान, बिरध बावन ध्यान लगाईआ। चौदां चौदां जोजन साडा निशान, चारे कुण्ट नज़री आईआ। जित्थे मिले पीण खाण, मूलकंद खा के शुकर मनाईआ। दिवस रैण याद करीए भगवान, अंदर आशा

इक वधाईआ। तेरां सौ सतासीआं विच्चों छेवां हिस्सा कुछ अणजाण, जो बच्चयां वांग बच्चे रहे अख्वाईआ। जे पेट भर के ना मिले पकवान, रो रो देण दुहाईआ। रिषी बणना नहीं आसान, घर कुटम्ब तजाईआ। इन्हां नूं दे कुछ दान, मेहर नज़र उठाईआ। बावन किहा हुण छड्डणा पए जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। फिर मेला होवे सच अस्थान, भूमिका मिले वड्याईआ। सभना भगतां नूं इक्को जिहा देवां ज्ञान, वड्डा छोटा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान इक दूजे नूं करन परवान, विछोड़ा विच्चों दयां कटाईआ। सांझा रखां इक पकवान, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बिन अक्खां मार ध्यान, वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ऋषी कहिण चौदां जोजन साडी भूम, धरनी सोहणी सोभा पाईआ। असीं बाले नढ्ढे तेरे मासूम, बच्चे नज़री आईआ। सानूं साचा दस्स कानून, रस्ता दे दरसाईआ। इक्को दस्स मजमून, इक्को दे पढ़ाईआ। तेरे प्यार तों होईए ना महिरूम, ख़ाली हथ्थ ना कोए बदलाईआ। तेरा लहिणा नामालूम, समझ विच ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ऋषी कहिण बावन साडी वेख अबादी, आबादकार देणा बणाईआ। असीं घरां दी कर बरबादी, इस घर विच बैठे आईआ। जगत जंजाल, तों दे आज़ादी, फाँसी गल रहे ना राईआ। बावन किहा जिस वेले कन्यां दी होवे शादी, शादयाने घर घर दयां वजाईआ। तुहाडा नवां साजण लवां साजी, साजण हो के वेख वखाईआ। पिछला लेखा याद रखां माज़ी, पूरब भुल्ल कदे ना जाईआ। तुहाडे लेखे लावां उह अराज़ी, जिस नूं कानून सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा अगला दए चुकाईआ। रिषी कहिण प्रभू वेख साडी हद्द, बावन बुढ्ढे ध्यान लगाईआ। बावन किहा मैं होवां गद गद, कलयुग अन्त चरण लवां टिकाईआ। सारे इक्ठे लवां सद्द, चौदां जोजन अंदर दयां वसाईआ। इक्को सुणा के छन्द, ढोला दयां दृढ़ाईआ। रसना जेहवा गाए बत्ती दन्द, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले हो के चमको चन्द, नूर जोत रुशनाईआ। तुहाडा मुकावां फेर पन्ध, सफ़र रहे ना राईआ। परदा लाह के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। तुसां मानस जन्म विच पैणा जम्म, लोकमात तन हंढाहीआ। तुहाडा कारज पूरा करना कम्म, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेटणा ख़ुशी ग़म, चिन्ता देणी कढाहीआ। तुहाडा लेखे लाउणा पवण स्वास दम, जिस नाल प्रभ नूं रहे ध्याईआ। ओस वेले निरगुण धार बिरध ब्रह्मण ना होवे होवे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिषीआं ऋषीआं मुनीआं मुनीशरां मनसा सब दी वेख वखाईआ।

✪ १९ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राम लाल दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप खूण जम्मू ✪

रिषी कहिण दस्स मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। किस बिध मिले भगवान, साख्यात दरस कराईआ। उपजे सच ज्ञान, अज्ञान दए मिटाईआ। विछोड़ा कटे आण, मेला सहिज सुभाईआ। पत्थर इट्टे करे परवान, उजाड़ पहाड़ होए सहाईआ। सुणाए धुर दा गाण, अगम्मी आवाज अलाईआ। देवे साचा दान, भण्डारा इक वरताईआ। लेखा चुकाए दो जहान, अन्त अन्तश्करन ना कोए भवाईआ। साचा घर वखाए आण, निज आपणी अक्ख खुलाईआ। भाग लगा के बीआबान, सच अस्थान दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। बावन किहा दया कमावेगा। ऋषी मुनी वेख वखावेगा। द्वापर त्रेता कलयुग पन्ध मुकावेगा। पुरख अबिनाशी वेस वटावेगा। निरगुण नूर जोत रुशनावेगा। शब्दी धार हुक्म सुणावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल खिलावेगा। लोआं पुरीआं वेस वटावेगा। जोत सरूप आपे हो, होका हक नाम सुणावेगा। किसे नाल ना करे धरोह, कीता कौल तोड़ निभावेगा। तुहाडा पिछला याद कर के मोह, मुहब्बत आपणे नाल बणावेगा। अन्तर आत्म जाए छोह, बाहरों नज़र किसे ना आवेगा। सच प्रकाश दी कर के लो, अज्ञान अन्धेर मिटावेगा। तुहाडे जोगा जावे हो, हरिजन साचे आप प्रनावेगा। तुहाडा लेखे लावे जन्म जन्म अगले नाल मिल के होण दो, दोहरी आपणी कार कमावेगा। सृष्टी माया नालों कर निर्मोह, धरती एसे आप टिकावेगा। जिस दा भेव ना जाणे को, मानव बुध ना कोए समझावेगा। जोती जाता जावे हो, परदा ओहला आप उठावेगा। कूड़ी वस्त सब कुछ खोह, खेड़ा सच्चा आप वखावेगा। रिषीओ तुहाडा इक्ट्ठा कर के इक गरोह, संग सोहणा आप बणावेगा। लै के आवे ढोआ ढोअ, निउँदा नाम हथ्थ फड़ावेगा। तुसीं लभ्भण ना जायो को, कोटां विच्चों तुहानूं आप जगावेगा। तुहाडे वरगा आपे हो, अंदर तुहाडे सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म जावे छोह, शहिनशाह आपणी कार कमावेगा।

✪ १९ जेठ शहिनशाही सम्मत २ प्रेमो देवी पिण्ड ख़ैरोवाल कैंप खूण जम्मू ✪

बावन कहे चंगी भूमी, भरम भउ ना कोए रखाईआ। जिस नूं समझे ना कोए नजूमी, हिसाब किताब ना कोए दृढ़ाईआ। जित्थे खेल करे प्रभ वड कानूनी, काइदा आपणा इक समझाईआ। जगत विधानां समझे खेल मामूली, नामालूम आपणा हुक्म वरताईआ। सदा सदा सद कदे ना करे बेअसूली, असल हुक्म इक वरताईआ। दीन दुनी जाए भूली, भुलयां राह

७५१
१९

ना कोए वखाईआ। रिषीओ तुहाडी मेहनत देवे दूणी, दुगणे दे चौगणे दए बणाईआ। तुहाडी अंदरों बदल देवे कूणी, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। एसे डूँग्घी धार नूं कैहिंदे खूहणी, जेहड़ा हिस्सा कृष्न काहन झोली पाईआ। तुहाडी आत्मा रहे ना ऊणी, उनती करे विच लोकाईआ। सच प्रीती करे गूढ़ी, रंग आपणा दए रंगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़ मूढ़ी, पुरख अकाल वेख वखाईआ। चरण टिक्का लावे धूढ़ी, धुर दा परदा दए उठाईआ। तुहाडी आसा मनसा करे पूरी, पूरीआं दे थाँ पूरन सतिगुर दए मिलाईआ। जिस दी बिरथा ना जाए मज़दूरी, सेवकां दी घाल लेखे पाईआ। दर्शन दे के हाज़र हज़ूरी, आपणे साजण लए बणाईआ। रिषीओ ओस वेले समझयो ना कोई मजबूरी, दुःख दे भुक्ख तों लए छुडाईआ। भगत उधारना प्रभ दा कम्म ज़रूरी, जुग चौकड़ी विच्चों आपणे हिस्से रखाईआ। तुहाडी मंज़ल कर के पूरी, मज़ा आपणा दए चखाईआ। जोती दर्शन दे के नूरी, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। दुनिया दी प्रीती दस्से कूड़ी, सच्चा मेला मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे मस्तक लावे मस्ती वाली धूढ़ी, मस्ती विच्चों हस्ती, हस्ती विच्चों मिले अर्शी, अर्शी प्रीतम फर्श उत्ते दए वड्याईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिवो देवी पिण्ड बाले वाल कैंप खूण जम्मू ✪

रिषी कहिण साडी गिणती तेरां सौं सतासी, सैंकड़े रहे जणाईआ। किस बिध मिटे उदासी, सच देणा समझाईआ। रहे ना जम की फ़ासी, फ़ैसला अन्त कराईआ। होईए ना मधरा मासी, रसना जेहवा ना कोए हल्काईआ। चढ़ीए मंज़ल घाटी, आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग दूर दुराडी दिसे वाटी, लम्बा पन्ध ना कोए फिराईआ। बावन किहा तुसीं मेरी मन्नो आखी, प्रेम नाल समझाईआ। तुहाडा लहिणा देणा बाकी, पुरख अकाल हथ्थ फड़ाईआ। तुसीं जोत मिलयो साची, सच विच समाईआ। फिर मिले देह माटी काची, कंचन गढ़ बणाईआ। तुहाडी भगतां दी होवे ज़ाती, दीन मज़्हब ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल होवे साथी, सगला संग बणाईआ। दुरमति मैल जाए काटी, पड़दे दए खुल्हाईआ। पन्ध मुकावे मुकी वाटी, धुर दा हुक्म जणाईआ। तुहाडा बणे धुर दा साथी, सगला संग निभाईआ। मेरा सुनेहड़ा लै लओ बिन अक्खरां वाली पाती, पत्रका दयां फड़ाईआ। तुहानूं वेखण नहीं देणी कोई काशी, गंगा जल ना कोए नुहाईआ। पुरख अकाल मेहरवान मेहर कर के बणाउणा दासन दासी, सेवक सेव आप कराईआ। झगड़ा चुका पृथ्मी आकाशी, अकल अंदरों देणी बदलाईआ। मिलणा मेल सचखण्ड निवासी, निमाणयां आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग लहिणा देवे बाकी, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। निरगुण

हो के खेल करे पुरख अबिनाशी, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडे कारन मारे वाटी, वट्टयां पत्थरां विच फेरा पाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ नानक चन्द दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप खूण जम्मू ✪

बावन किहा तुहाडी धरती वेखे चंगी, चंगेरां छाबे लेखे लाईआ। सेवा वेखे कीती पैरीं नंगी, बन खण्ड फिरो वाहो दाहीआ। जगत तृष्ना रहे ना तंगी, तंगदस्त ना कोए वखाईआ। काया चोली जाए रंगी, रंग रंगीला धुर दा माहीआ। देवे वस्त नाम अनमंगी, धुर दी दौलत झोली पाईआ। तुहाडी आत्मा कर के ठंडी, अग्नी तत दए बुझाईआ। पिछली टुट्टी जावे गंढी, अगे फेर ना कोए तुड़ाईआ। साची देवे प्रेम सुगंधी, सति सरूप वखाईआ। जन्म कर्म दी रहिण ना देवे पाबन्दी, कांडां दा डेरा देवे ढाहीआ। सिध्धा मार्ग दस्स के डण्डी, रस्ते आपणे लए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बावन कहे तुहाडी धरती लग्गे भाग, चौदां जोजन वेख वखाईआ। तुहाडे जन्म दा जगे चिराग़, भगवान भगतां विच वण्ड वण्डाईआ। दुरमति मैल दा धोवे दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। नाम दा दे के दाज, दौलत सोहणी घर टिकाईआ। सचखण्ड दा चला रवाज, पिछला लेखा दए मुकाईआ। तुहानूं घर घर विच्चों पा के भाज, इक्ट्ठे सहिजे लए कराईआ। फिर लहिणा देणा देवे आप, पिछला कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। अगे दस्स के सतिजुग जाप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दए सुणाईआ। तुसां अंदरों बाहरों बणना साफ़, कपड़ कूड़ ना कोए हंढाहीआ। नाम भण्डारा देवे इक सौग़ात, वस्त अनमुल्ली आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आस, बहुत्यां विच्चों थोड़े, थेड़यां विच्चों थोड़े रहिण देवे उदास, बाकी हिरदे आपणे नाल मिलाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ खोजू राम दे गृह ख़ैरोवाल खूण कैंप जम्मू ✪

रिषी कहिण बावन दस्स, अन्तरगत जणाईआ। अन्तर बिध तेरे वस्स, मेला लैणा मिलाईआ। हुण किधर जाणा नठ्ठ, कवण कूट डेरा लाईआ। बावन किहा मेरा खैहड़ा दयो छड्ड, इक्को हुक्म दिता समझाईआ। मैं हो के सब तों अड्ड, आपणा आप लैणा बदलाईआ। जिस वेले निरगुण धार हो के पुरख अकाल आया जग, मेरी आशा नाल ल्याईआ। मैं तुहानूं लवां

लभ्भ, भज्जां चाँईं चाँईंआ। इक्ठे कर के एसे हद्द, चौदां चौदां जोजन अंदर सोभा पाईआ। हुक्में अंदर लवां सद्द, सुनेहड़ा इक पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रिषी कहिण बावन कुछ खोल्ह भेद, भरम दे मिटाईआ। किस बिध करे प्रभू हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। बावन किहा शहिनशाही सम्मत दा पहला होवे चेत, चेतन तुहानूं दए कराईआ। तुहाडे घर घराने खोह के खेत, सहिजे एथे दए पुचाईआ। जित्थे लेखा मुके महीना जेठ, जेठ पिछला दए गवाहीआ। अगे रखे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम दुशाले लए लपेट, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। शब्द संदेशे हुक्मे भेज, भजन बन्दगी इक वखाईआ। निरगुण धार दस्स के तेज, तेज प्रकाश आप चमकाईआ। तुहाडी घर घर दी लेखे ला के देग, दामन पकड़े दमां दा होए सहाईआ। जिस कारन तुहानूं लए भेज, उह लेखा पूरा लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म माणे साची सेज, सुहञ्जणा समां दए प्रगटाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड ख़ैरोवाल खूण कैंप जम्मू ✪

ऋषी कहिण असीं रखीए उडीक, कलयुग अन्त राह तकाईआ। श्री भगवान जणा के सच प्रीत, परमात्मा हो के आत्मा आपणे नाल मिलाईआ। जन्म कर्म दी बदल देवे तवारीख, तरीका आपणा इक दृढ़ाईआ। सच पदार्थ नाम पावे भीख, धुर दी दात देवे वरताईआ। काया माटी करे ठांडी सीत, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्से साचा गीत, शास्त्रां वाली ना कोए पढ़ाईआ। सति धर्म दी दस्से रीत, मार्ग इक्को इक जणाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी जाए बीत, लेखा आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पन्ध मुकावण ठीक, ठाकर अगे सीस झुकाईआ। इक्को छत्र झुल्ले हरि सीस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लेखा चुके बीस इकीस, एकँकार वज्जे वधाईआ। परम पुरख परमात्म आवे ठीक, ठाकर हो के फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकावे हस्त कीट, शाह सुल्तान नज़र कोए ना आईआ। तुहाडी पूरी करे उम्मीद, मनसा मन ही विच समाईआ। इक्ठे करे नाल तरतीब, तरीका वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। रिषी कहिण किस बिध करें खेल, प्रभ प्रभू दे जणाईआ। विछड़यां लएं मेल, विछोड़ा रहे ना राईआ। वसें धाम नवेल, वक्खरी कार कमाईआ। जो जोबनवन्ता अलबेल, खेले खेल शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बावन किहा एह भेव अवल्ला, एकँकार आप

कराईआ। खेले खेल जला थला, सृष्टी दृष्टी खोज खुजाईआ। वेस वटावे घड़ी पला, पलक पलक विच्चों बदलाईआ। कलयुग अन्तिम वसे सच महल्ला, सच घराने डेरा लाईआ। जोती शब्दी धार हो के रला, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तुहाडा सब दा इक्ठा फड़े पल्ला, फड़नहार देर कोए ना लाईआ। ल्या के एसे जंगल जूह विच झल्ला, झलक आपणी इक वखाईआ। सब दा इक्ठा बणा के इक्को महल्ला, भगत दुआर दए वखाईआ। जित्थे इक्को दीपक जोत जला, नूर नूर चमकाईआ। तुहाडा मेटे दूई सल्ला, सलल आपणा रंग चढ़ाईआ। सच पकवान देवे उह भल्ला, जेहड़ा भालयां हथ्थ कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा आपे देवे घल्ला, घोर कलयुग विच्चों देवे आप उठाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ रोलू राम दे गृह पिण्ड खैरोवाल कैंप खूण जम्मू ✪

रिषीआं किहा असीं बलख चों जाईए भज्जे, बलपुरी सोहणी नजरी आईआ। जिथ्थों पकवान खा के रज्जे, अग्गों प्रभ मिलण दी मिल जाए वड्याईआ। जिस दा सच्चा नूर जगे, प्रकाश होवे रुशनाईआ। सानूं मिले जुग अगे, अगला पन्ध मुकाईआ। बावन ने निशाने दस्से सच्चे, सच दिता समझाईआ। असीं हुण नहीं रहिणा कच्चे, पक्की लई पकाईआ। जिंनां चिर श्री भगवान दा दरस ना करीए अक्खे, कथा सुण के मन ना कोए परचाईआ। सदा साडे अंदर वसे, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। पिच्छा दे मूल ना नठ्ठे, साजण हो के अंग लगाईआ। कर किरपा सानूं फेर कर इक्ठे, दूर नेड़े लए मिलाईआ। पूरब लहिणा देणा बाकी किसे ना रखे, सब दा दए चुकाईआ। सच प्रेम प्यार मुहब्बत विच हस्से, हस्ती दूसर ना किसे समझाईआ। लख चुरासी विच्चों फड़ फड़ लभ्भे, कौल इकरार जिन्हां नाल रखाईआ। सच प्रेम प्यार दे देवे मज़े, पदार्थ इक्को दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब बचन करे सच्चे, सच स्वामी हो के वेख वखाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान चन्द दे गृह पिण्ड तूतां वाली कैंप खूण जम्मू ✪

बावन किहा जिस वेले कलयुग रैण अन्धेरी होई मस्सया, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। साचा मार्ग दस्स ढंगया, अगला भेव खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी करता आवे नठ्ठया, लोकमात फेरा पाईआ। जेहड़ा जगत नेत्र किसे ना लभ्भया,

खोजे जगत लोकाईआ। जन भगतां अंदर सदा वसया, बाहर डेरा कदे ना लाईआ। नज़री आए धुर दी अक्खीआं, आख़र आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगत सुहेले मेले साची सख़ियां, सिख़ावत आपणे कोलों झोली पाईआ। नाम रंगण नाल जाण रत्तीआं, रतन अमोलक लए बणाईआ। किसे दीआं भरन मूल ना चट्टीआं, चेटक इक्को इक वखाईआ। सच दवारे होवण सच्चीआं, सति सतिवादी मिल के ख़ुशी मनाईआ। दीन मज़्हब दीआं कटण रस्सीआं, फाँसी जम ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बावन किहा जिस वेले होवे कलयुग अन्ध, रैण अन्धेरी छाईआ। निरगुण हो के आवे सूरा सरबंग, लोकमात फेरा पाईआ। लोकमात वजाए मृदंग, अगम्मा राग सुणाईआ। शब्द अगम्मी दुड़ाए तुरंग, तुरत वेखे थाउँ थाँईंआ। तुहाडी पूरी करे मंग, मनसा मन ही विच समाईआ। सच दुआर आवे लँघ, मंज़ल पन्ध चुकाईआ। इक सुणाए ढोला छन्द, मेरा तेरा राग अल्हाईआ। ठाकर हो के देवे आनंद, परमानंद विच समाईआ। भगत सुहेले बणा के चन्द, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। शब्दी धार होवां संग, सोहणा खेल वखाईआ। सब दी कटे भुक्ख नंग, दुखड़ा दर्द रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। रिषी कहिण सुण स्वामी, सच दे जणाईआ। किस बिध होवे अन्तरजामी, घट भीतर वेख वखाईआ। साडा बणे हामी, मिल के ख़ुशी मनाईआ। बावन किहा ओह जान जानी, जानणहार वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बण के बानी, कोटन बावन भेख वटाईआ। जिस खेल करना रावण रामी, राम रमईआ फेरा पाईआ। जिस वेस वटाउणा कृष्ना काहनी, घनईआ हो के फेरा पाईआ। जिन्ह ईसा मूसा मुहम्मद प्रगटाउणी इक निशानी, कलयुग देवे माण वड्याईआ। जिस नानक गोबिन्द बख़्शणी जोत नुरानी, नूरो नूर कर रुशनाईआ। जिस कलयुग अन्त निहकलंक हो के मंज़ल करनी आसानी, एहसान सिर ना कदे चढ़ाईआ। ऋषीओ तुहाडी जूह ना होवे बेगानी, बेगाना नज़र कोए ना आईआ। खेल खेले वाली दो जहानी, जहां तहां लए उठाईआ। उस दे आउण दी इक निशानी, तुहानूं सहिजे दयां समझाईआ। किसे नूं देणी पए ना कुरबानी, चार कुण्ट दहि दिशा लभ्भण कोए ना जाईआ। मेहरवान हो के तुहाडे गृह आ के घर घर खावे महिमानी, जिस महिमानी कारन बल दवारे फेरा पाईआ महिमानी खा के मिली जोत नुरानी, नूर चशम ना कोए कराईआ। ओस वेले तुहाडे उत्ते करे मेहरवानी, परदा अंदरों दए उठाईआ। झगड़ा चुका के चारे खाणी, ख़ाने आपणे विच टिकाईआ। भगत भगवान दी सदा इक्को जही जवानी, बाल बुढेपा रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिषीओ, ओह बणे धुर दा दानी, दाता हो के दया कमाईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बेलू राम दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप खूण जम्मू ✪

बावन किहा कलयुग अन्तिम धरे भेख, जग जीवण दाता नज़र किसे ना आईआ। किसे हथ्थ ना आवे ऋषीकेश, केशव आपणा रूप लए बदलाईआ। लहिणा देणा देवे दस दस्मेश, दहि दिशा वज्जे सच वधाईआ। करे खेल जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। पूरब जन्म सब दा जाणे लेख, ऋषी रखीशर खोज खुजाईआ। चरण प्रीती बख्शे धुर दी टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। बुद्धी करे आप बिबेक, मन चंचल ना कोए चतुराईआ। मानस जन्म बदल देवे रेख, शब्दी चोट इक लगाईआ। पहलों तुहानूं देवे भेज, लोकमात जन्म दवाईआ। फिर परमात्म हो के आत्म माणे सेज, घर साचे सोभा पाईआ। तुहाडा देस कर परदेस, देसन्तर आपणा वेख वखाईआ। जिस उज्जल करना लेख, कलम शाही वण्ड वण्डाईआ। चौदां जोजन होवे हेत, हितकारी बेपरवाहीआ। लेखा लिख के महीने चेत, चेतन सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बावन कहे जिस वेले लग्गी अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली होए हड्ड, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। साक सज्जण भैण भाई सारे जाण छड्ड, नार कन्त नाता ना तोड़ निभाईआ। साचे काअबे करे ना कोए हज्ज, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। नेत्र रोवण शिव दवाले मठ, गुरदवारा दुआर दए दुहाईआ। परदा रहे अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। साचा नाम मिले ना किसे हट्ट कोटन कोटि साधू बैठण वेस वटाईआ। मन वासना जगत रहे नठ्ठ, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। बिन भगतां किसे मेल ना मिले पुरख समरथ, जगत विद्या कम्म किसे ना आईआ। अबिनाशी करता तुहाडी झोली पावे हक, देवणहार दे दे खुशी मनाईआ। दरस वखा के आपणी अक्ख, लोचन धुर दा दए खुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स नाम सच, धरनी धरत धवल भाग लग्गे जित्थे भगत सुहेले जाण वस, भूमिका इक्को मिले वड्याईआ। रिषीओ किसे दा चले ना कोए वस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हद्द सब दी बन्द कराईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ गुरा राम दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप खूण जम्मू ✪

रिषी कहिण की वेला होवे वक्त, वाक्य दयो समझाईआ। बावन किहा अन्धेरा होवे जगत, सच सति ना कोए रुशनाईआ। पिता पूत पवे फ़र्क, साचा प्रेम ना कोए निभाईआ। श्री भगवान देवे ना किसे दरस, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू जाण छुडाईआ।

माया ममता दर मिले हरस, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सृष्टी दृष्टी जाए तड़प, हउकयां विच दुहाईआ। मनुआ जावे भटक, सांतक सति ना कोए कराईआ। मंज़ल चढ़नों साधू जाण अटक, रुहानी सफ़र ना कोए मुकाईआ। बिना फ़ासीउँ जाण लटक, जम फ़ास ना कोए कटाईआ। प्रभ का हुक्म चले सख्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। भाणे विच होण ना देवे फ़र्क, फ़ैसले हक हक सुणाईआ। दीन मज़्हब सारे करे तरक, तुरत आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां नाल पूरी करे शर्त, शरअ विच्चों बाहर कढाहीआ। माण वड्याई दे के उपर फर्श, अर्शां दे उपर दए टिकाईआ। वड्याई देवे रिषीओ एस धरत, जित्थे बह के प्रभ दा नाम ध्याईआ। कलयुग अन्त कर के तरस, त्रैगुण अतीता होए सहाईआ। घर स्वामी देवे दरस, ठाकर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दी मेट के हरस, वेला वक्त दए वड्याईआ।

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड मलेक खूण कैंप जम्मू ✪

रिषी कहिण असीं करदे रहे तपस्सया, तामस जगत मिटाईआ। अंदर हनेरी मस्सया, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। मन दी कर ना सके हत्या, मनसा विच्चों बाहर कढाहीआ। कलयुग अन्त पूरी होई समस्सया, प्रभ समां दिता बदलाईआ। हरि जू हो के हिरदे वसया, हसद दिता मिटाईआ। भगत बणा के करे जस्या, सिफ्तां नाल सालाहीआ। माण ताण जगत रख्या, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पूरब लहिणा कर के सच्चया, सच देवे सरनाईआ। हरिजन रहिण ना देवे भाण्डा कच्चया, कंचन गढ़ दए वखाईआ। सचखण्ड निवासी आवे नस्सया, भज्जया आवे वाहो दाहीआ। निरगुण हो के दरस दखावे अक्खीआं, आख़र पैंडा पन्ध मुकाईआ। जो बावन नाल होईआं पक्कीआं, पकवान पिच्छे भोजन रिहा खाईआ। जन भगतां जमां दीआं भरन ना देवे चट्टीआं, यमराज ना कोए सताईआ। फिरन ना देवे दीनां मज़्हबां दीआं हट्टीआं, हिस्सयां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा रिहा मुकाईआ। रिषी कहिण कुंदरां विच रहे वड़दे, जंगल पहाड़ वेख वखाईआ। जगत हवस विच रहे सड़दे, प्रभ मिल्या ना बेपरवाहीआ। उच्चीआं नीवीआं थांवां रहे चढ़दे, कदम कदम नाल बदलाईआ। हरी ओम रहे पढ़दे, ओम ओम विच शनवाईआ। भेव खुल्ले ना आपणे घर दे, परदा सक्या ना कोए उठाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर रहे सड़दे, प्रभ दरस कोए ना पाईआ। नेत्र हन्झू रहे किरदे, अक्खीआं वहण वहाईआ। मेल मिले ना साचे पिर दे, प्रीतम अंग ना कोए लगाईआ। एह बचन पुरातन पुराणे

चिर दे, बावन नाल मिल के ब्राह्मणी सलाह पकाईआ। जिस दे लहिणे देणे निबड़दे, कलयुग अन्तिम झोली पाईआ। अगे झगड़े मुकणे फ़िकर दे, फ़िकरा इक्को सोहँ ढोला गाईआ। आत्म परमात्म मिल के भगत भगवान कदे ना विछड़दे, लख चुरासी जून ना कोए भवाईआ। जन भगत कहिण असीं बेशक माया ममता मोह विकार कलयुग भरे चिक्कड़ दे, पुरख अकाल आपणी गोद उठाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले थोड़े निकलदे, जो प्रभ दी ओट तकाईआ। बाकी भाण्डे जीव मुलंमे पित्तल दे, दरगाह साची कीमत ना कोए चुकाईआ। बाहरों रूप मानस वाली शकल दे, अंदर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। रिषी कहिण असीं प्यासे ओस दे इश्क दे, जिस दी मुहब्बत बन्द ना किसे कराईआ। कीते कौल इकरार ना खिसकदे, इक्ट्ठे हो के ढोला गाईआ। सगन हो जाण इक्को वार अगम्मी तिलक दे, तिल आपणा दे वखाईआ। जित्थे जोती नूर लिशकदे, जगमग होवे रुशनाईआ। जिस मंज़ल नूं रहे विलकदे, घर बाहर छड के जंगलां विच डेरा लाईआ। हुण वेले आ गए सिदक दे, प्रभ भरोसा दे कराईआ। झगड़े रहिण ना किसे निन्दक दे, निंदया कलयुग जीवां झोली दे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां माण वड्याई देवे आपणी हिम्मत दे, हौसला जगत वलों वधाईआ।

७५६
१६

✪ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत २ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

रिषी कहिण किस बिध साडा होवे जन्म, जरम मिले वड्याईआ। किस बिध होवे साडा कर्म, सच वज्जे वधाईआ। किस बिध मिले सरन, प्रभ चरण सच्ची सरनाईआ। किस बिध होवे तरन, तारनहार पार कराईआ। किस बिध मिटे भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। किस बिध लेखा चुक्के माटी चर्म, चम्म दृष्टी दए गवाईआ। किस बिध मिले सरन, ओट इक तकाईआ। किस बिध खुल्ले हरन फरन, धुर दा रूप नज़री आईआ। झगड़ा मुके वरन बरन, मनुआ करे लड़ाईआ। किस बिध ढोले लग्गीए पढ़न, सहिजे दे समझाईआ। बावन किहा जिस वेले निरगुण हो के आवे उपर धरन, धरनी धरत धवल फेरा पाईआ। भगत सुहेले आवे फड़न, फ़ैसला हक जणाईआ। उच्ची मंज़ल आवे चढ़न, बिन कदमां कदम टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला आवे पढ़न, सहिजे सब नूं दए पढ़ाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा दर्शन करन, परदा अंदरों दए चुकाईआ। आत्म परमात्म लगावे साची लग्न, लग मातर ना कोए जणाईआ। त्रैगुण माया मेटे अग्न, बूँद स्वांती इक चुआईआ। सच प्रकाश दीपक जगण, जन भगतां करे रुशनाईआ। साचे प्रेम अंदर करे मग्न, मगरला लेखा झोली पाईआ।

साजण हो के आवे सद्दण, सुनेहड़ा इक्को इक पुचाईआ। जन भगत सुहेले आपे आए लभ्भण, परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। साचा नाम आए रंगण, रंग रंगीला हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे आप बहाईआ। रिषी कहिण किस बिध होवे पहचान, सच दे समझाईआ। बावन किहा उह लभ्भणहार श्री भगवान, मेहरवान अख्वाईआ। सहिजे मिले आण, आनन फ़ानन लेखा दए मुकाईआ। सच प्रीती दे के दान, चरण चरणोदक मुख चुआईआ। भूमिका सुहाए अस्थान, सोभावन्त दे वड्याईआ। साची दरगाह करे परवान, परम पुरख बेपरवाहीआ। भगत सुहेले कर प्रधान, लोकमात देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिषीओ रिश्ते तोड़ के कूड़ जहान, जोड़ा जोड़ के श्री भगवान, काहन बंसरी आपणा नाम सुणाईआ।

२० जेठ शहिनशाही सम्मत २ शिव सिँघ दे गृह पिण्ड शेख़सर कैंप खूण जम्मू

रिषी कहिण सच दे सबूत, सभनां अंदर ध्यान लगाईआ। किस बिध भाग लग्गे काया कलबूत, जिस्म इस्म इक्को नज़री आईआ। चार कुण्ट होवें मौजूद, हर घट रम्यां नज़री आईआ। सानूं सदा रखें महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म मरन दी रहे ना कोई हदूद, दायरा आपणा दएं वखाईआ। जित्थे जोती सूरज होए ना कोई ग़रूब, दिवस रैण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। उच्च महल्ल नज़र आए इक अरूज, अर्शी प्रीतम अंदर बैठा सोभा पाईआ। साचे घर दी आवे सूझ, बुध बिबेक दएं बणाईआ। वक्खो वक्ख रखें पाणी दा पाणी दूध दा दूध, निर्मल निरवैर दएं वखाईआ। भेव अंदरों खुल्ले गूझ, गुंझल कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे चुकाईआ। रिषी कहिण किस बिध हाज़र होवें हज़ूर, मिल के खुशी मनाईआ। मुआफ़ करें कुसूर, कसरां नाल उडाईआ। जगत जहान करें अबूर, दूर दुराडा चल के आईआ। गढ़ हँकारी तोड़ें ग़रूर, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मिहनत देवें भगत मजदूर, कीती घाल झोली पाईआ। दरस देवें ज़रूर, दर्शन कर के खुशी मनाईआ। मनुआ मन ना पाए फ़तूर, फ़ातया इक्को वार पढ़ाईआ। साचे नाम दा दएं सरूर, सुरती शब्द मेल मिलाईआ। जन भगत करें मशहूर, मश्वरा भगतां नाल पकाईआ। आपणी जोती बख्शें नूर, बिन चन्द चन्द रुशनाईआ। नाता रहे ना कूड़ो कूड़, सच सच मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी धारा बख्शे चरण धूढ़, धूढ़ दा टिक्का लगावे वड्डा निक्का, मिता पिता प्रभू इक्को नज़री आईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बसो देवी दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप खूण जम्मू ✪

रिषी कहिण किस बिध करे याद, बावन सानूं दे समझाईआ। सुणे सर्ब फ़रयाद, वेखे चाँई चाँईआ। चुरासी विच्चों काढ, आपणे नाल मिलाईआ। प्रीती विचों करे लाड, प्रेम इक समझाईआ। बणाए धुर दे साध, साधना दए समझाईआ। मेटे वाद विवाद, दुरमति मैल गवाईआ। नाम सुणाए नाद, वज्जे धुन शनवाईआ। बुद्धी रहे ना काग, हँस दए बदलाईआ। तृष्ना रहे ना आग, अग्नी तत गवाईआ। सच सुणाए राग, ढोला बेपरवाहीआ। आपे मारे आवाज़, सुत्यां लए उठाईआ। अंदरों खोल्हे राज़, परदा दए चुकाईआ। परमात्म देवे साथ, आत्म जोड़ जुड़ाईआ। घर आवे रघुनाथ, रग रग करे रुशनाईआ। साची दस्से गाथ, पढ़ीए इक पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, मता आपणे नाल पकाईआ। कूड़ी रैण अन्धेरी मेटे रात, रुत रुतड़ी आप महकाईआ। नज़री आवे साख्यात, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। लेखा लिखे नाल कलम दवात, दाअवेदार सच घर दे दए बणाईआ। इक्ठी बणाए सब दी इक जमात, जमा तफ़रीक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी रखे याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ।

७६१
१६

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ सधरो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

किरपा करे प्रभ आप, रिषीओ रस्ता दयां जणाईआ। इक्को नाम दस्स के जाप, जीवण जुगत दए बदलाईआ। जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लेखा कर मुआफ़, मुश्कल हल्ल कराईआ। धुर दरगाही आ के देवे साथ, सगला संग निभाईआ। मेहरवान आ के पुछे बात, वाट पिछली पन्ध मुकाईआ। मेरा बचन रखयो याद, बावन रिहा समझाईआ। जगत खेड़े कर बरबाद, घर बाहर तजाईआ। सुण तुहाडी आवाज़, लेखा दए मुकाईआ। वस्त देवे दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। तुसां सुत्यां जाणा जाग, आलस निंद्रा परे हटाईआ। इक उपजाउणा वैराग, इक्को ध्यान लगाईआ। तुहाडी साधना देवे साध, सति स्वामी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे आप मिलाईआ। घर साचा केहड़ा थाँ, सहिज सहिज दे जणाईआ। किस बिध पकड़े बांह, मेल मिले बेपरवाहीआ। जपाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा दए दरसाईआ। बावन किहा बड़ा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग अन्त आवे विच जहान, निरगुण हो के फेरा पाईआ। तुहाडा कूड़ा छुडा मकान, सच दवारे लए बुलाईआ। जित्थे इक्ठयां सब नूं मिलणा होवे आसान, लभ्भण दी लोड़

रहे ना राईआ। सो भूमिका सच अस्थान, जोजन चौदां सोभा पाईआ। रिषीओ भगती दा देवे दान, भगवन बेपरवाहीआ। आत्म दर देवे आराम, सांतक सति कराईआ। पूरन होवे काम, करनी करता वेख वखाईआ। तुहाडा प्रेम प्यार मुहब्बत दा वसा के नवां ग्राम, घर साचा दए जणाईआ। जित्थे कदे ना होवे शाम, शमां दीप ना कोए रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकाए आण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाता दानी गुण निधान, गुण सब दा वेख वखाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ गूढ़ा राम दे गृह पिण्ड शेख़सर कैंप खूण जम्मू ✪

धरनी कहे मेरा बणया भाग, चौथे युग मिली वड्याईआ। पुरख अबिनाशी देवे दात, दयावान दया कमाईआ। रिषीआं दी पूरब जमात, भगतां दा रूप वटाईआ। धुर दा बणा के साथ, सोहणा वक्त सुहाईआ। आपणा दस्स के पाठ, सोहँ करे पढ़ाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, इक्को ब्रह्म रिहा समझाईआ। साचा परविष्टा वेख वेखे साची रास, धुर रस्ता खोज खुजाईआ। जिन्हां विछड़या उन्हां दे आया पास, पासा बदल के आया बेपरवाहीआ। सब दी सुण दरखास, दर दर साजण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन परदा दए उठाईआ। धरनी कहे मैनूं खुशी होई बहुत, बेनन्ती दयां जणाईआ। सुत्ती नूं आई होश, लई मात अंगड़ाईआ। रसना रही ना मेरी ख़ामोश, कुकां दयां दुहाईआ। प्रभ तक्कया निर्मल जोत, जोत जोत रुशनाईआ। जिस दा सचखण्ड दवारा साचा कोट, बंक इक्को इक वड्याईआ। इन्हां मेटण आया पिछली सोच, भगत बणा के भगवन आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के लोक परलोक, लुकयां नूं रिहा उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स के सच सलोक, सोहला आपणा इक गवाईआ। जिस दा भाणा कोई ना सके रोक, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सो भगतां देवणहारा साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। ममता मैं रहे ना रोग, हउमे रूप ना कोए वखाईआ। साचा दस्स प्रभ दा जोग, जुगती इक्को दए जणाईआ। अंदर रहे ना चिन्ता सोग, ग़मी दा ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। धरनी कहे मैनूं दयो वधाई, मैं खुशीआं विच सुणाईआ। सतिजुग रीती कलयुग अन्त पूर कराई, त्रेता द्वापर देण गवाहीआ। बावन मिले वड्याई, रिषीआं होई कुड़माईआ। भगतां रंग चढ़ाई, कटी गई जुदाईआ। मेला होया भाई भाई, भावी सिर ते रही ना राईआ। धरनी होई सुहाई, धरत नैण उठाईआ। धवल ढोले रही गाई, धउल भार चुक्क

के खुशी मनाईआ। रवि ससि नूर रुशनाई, मण्डल मण्डप परदा लाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखण चाँईं चाँईं, गुर अवतार पैगम्बर वज्जी वधाईआ। आत्म परमात्म होई कुड़माई, भगत भगवान वज्जे शनवाईआ। पूरब लेखा रहे ना राई, लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। खुशीआं वाली घड़ी सुहञ्जणी आई, मातलोक मिली वड्याईआ। धरनी कहे मेरी भूमिका भावना खुशीआं गीत गाई, गा गा आप सुणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाही, जो विछड़यां रिहा मिलाईआ। उजड़यां रिहा वसाई, बिखड़यां रिहा जुड़ाई, जोड़ आपणे नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण कँवल उपर धवल धरनी कारन रिहा टिकाईआ।

७६३ १६

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

धरनी कहे सतासी साल एथे रिषीआं दा धूंआं रिहा धुखदा, आहूती सुगंधी वाली पाईआ। रस माणदे रहे नाम वाले सुख दा, अंदरे अंदर रहे ध्याईआ। सीस रिहा झुकदा, भबूती ख़ाक रमाईआ। शंकर रिहा लुकदा, नज़र किसे ना आईआ। जाप बणया रिहा मुख दा, रसना नाल वड्याईआ। परदा खुल्ह्या ना इक तुक दा, रूप रूप विच ना कोए समाईआ। जगत जहान निशान्यौं रिहा उकदा, तीर बेनज़ीर ना कोए चलाईआ। माणस जामा मिलदा रिहा मनुक्ख दा, मानव दानव खेल खिलाईआ। भेव लभ्भया ना मालक उस दा, जिस दी उसतत सारे गाईआ। परदा चुकया ना हनेरी गुठ्ठ दा, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। दर्द गया ना अंदरली हुक दा, साह साह सताईआ। शब्द अगम्मी विच अबिनाशी करता इक दिन पुछदा, कुछ मैनूं दयो जणाईआ। की तुहाडा नाता जुड़या पिउ पुत दा, परमात्म आपणी गोद उठाईआ। एह शब्द सुण के रिषीआं दा दिल दुखदा, नेत्र रोवन मारन धाईंआ। दर्शन होया नहीं अबिनाशी अचुत दा, मिल्या मेल ना बेपरवाहीआ। एसे कारन अगला पैंडा नहीं मुकदा, भज्जीए वाहो दाहीआ। जगत जहान नहीं छुटदा, छुटी लिव ना कोए लगाईआ। सहारा तक्कया बल दे टुक्क दा, भण्डारे विच्चों खा के खुशी मनाईआ। बावन खेल दस्सया कुछ कुछ दा, कुछ समझ कोए ना आईआ। साडा धूणी वाला धूंआं धुखदा, धुंआंधार रिहा वखाईआ। नज़ारा तक्कया नहीं मुख उज्जल दा, साफ़ सुथरा नज़री आईआ। जेहड़ा आपणी धारों उठदा, निरगुण हो करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा समझाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते तपदा रिहा अंगीठा, अग्नी ईंधन भेंट चढ़ाईआ। रिषीआं दा जीवण रिहा जीता, सहारा ओट तकाईआ। सिधी रखदे रहे नीता, अंदर कूड़ कपट ना कोए वधाईआ। पुरख अबिनाशी लभ्भदे रहे

मीता, तन भबूती ख़ाक रमाईआ। मिल्या मेल ना साहिब अनडीठा, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। भाग लग्गया ना किसे सीसा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। ब्रह्म पाया ना पारब्रह्म जगदीशा, जगदीशर मिल ना खुशी मनाईआ। पूरी होई किसे ना रीझा, मिली माण ना कोए वड्याईआ। सिध्धा होया ना किसे दीदा, दीद चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। धरनी कहे धूंएं उत्ते रिषीआं मारया धरना, इक सौ अठ्ठ दिन लगाईआ। प्रभू वैराग अंदर मरना, जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। लभ्भणी साची सरना, ओट अवर ना कोए तकाईआ। इक्को मंज़ल चढ़ना, जिथ्थों सके ना कोए उठाईआ। इक्को अक्खर पढ़ना, जिस दी वज्जदी रहे वधाईआ। इक्को पल्लू फड़ना, जिस नूं दो जहान ना कोए छुडाईआ। इक्को नेत्र खुल्ले हरनां फरनां, निज आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। इक्को मिले सरनाई चरणां, चरण चरणोदक पी के खुशी वखाईआ। इक्को भय भउ रहे ना डरना, भरम अंदरों दए कढाहीआ। डूँग्घी कंदर मिले ना वड़ना, जंगलां विच ना कोए भरमाईआ। अग्नी अग्ग ना पए सड़ना, धूणी धवल ना कोए तपाईआ। जोग अभ्यास ना पए करना, करता मिले बेपवराहीआ। सो करता बख्शे आपणी सरना, सरन स्वामी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रिषीआं मरन दा कीता हठ, इक सौ अठ्ठ दिन ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी आया नठ, निरगुण हो के फेरी पाईआ। हौली हौली अंदर वड़ के दिता दस्स, सहिज सहिज समझाईआ। रिषीओ तुसीं पओ हस्स, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी हुक्म देवे समरथ, धुर फुरमान आप जणाईआ। जो जुग चौकड़ी चलावे रथ, लख चुरासी रिहा भवाईआ। तुहानूं हुक्म संदेशे देवां सच, सच सच दृढ़ाईआ। तुसीं काया माटी पंज तत सरीर जाणा छड्ड, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी नालों हो के अड्ड, प्रभ दी धार जाणा समाईआ। जिथ्थों कोई ना सके लभ्भ, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम मुकया पन्ध, लोकमात तुहाडा जन्म लए प्रगटाईआ। सोहँ ढोला सुणा के छन्द, शंका पिछला दए उठाईआ। आत्म परमात्म दे के आनंद, सुखसागर विच समाईआ। एसे धरती आउणा मार्ग पन्ध, सब ने भज्जणा चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी चाढ़े रंग, अनमोला आप रंगाईआ। मानस जन्म होण ना देवे भंग, जोती जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म प्यार दा कर के ढंग, तरीका इक उपजाईआ। हुक्मे अंदर सारे गंढ्ढ, इक्ट्ठे कर के लए बहाईआ। अग्नी धुंएं दी थाँ अमृत दी पावे ठंड, लक्कड़ी बालण दी लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण हो के सरगुण लावे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। तुहाडी आत्म सेज हंढावे पलँघ, पतिपरमेश्वर सद आपणी आस कराईआ। जगत हैरानी विच तुसां होणा नहीं दंग, दंगल वेखणा सृष्ट सबाईआ। तुहाडी

आसा मनसा पूरी करे मंग, अगे मंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा बख्शंद, पूरब बाकी देवे बण के साथी, भाग लगा के धरनी ख़ाकी, धूणी दी जगह प्रीत देवे दूणी, दोहरा नाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे नाल जुड़ाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ बाबू राम दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

धरनी कहे मैं धूणी नाल रही सड़दी, अंदरे अंदर रही तपाईआ। रिषीआं कोलों रही डरदी, कोई सराफ ना देवे सुणाईआ। प्रभ नूं याद रही करदी, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। मालक महिरम मिले दर्दी, जो दुखियां दुःख मिटाईआ। मेरी शांत होवे सड़दी, सांतक सति कराईआ। मैं इक्को गीत रही पढ़दी, तूंही तूं राग अलाईआ। प्रभ दा भाणा रही जरदी, सिर अग्नी तत तपाईआ। प्रभू वेख खेल आपणे घर दी, क्यों भगतां रिहा सताईआ। तेरी धार लभ्भयां नहीं किसे लभ्भदी, सारे भज्जण वाहो दाहीआ। आहूती दे के बैठे अग्ग दी, अंदरों अग्ग ना कोए बुझाईआ। रीती वेखी जग दी, जगजीवण दाता मिले ना किसे गुसाईआ। खेल हो गई अन्त अख़ीरी हद्द दी, रो रो के रही कुरलाईआ। मेरी धीरज नहीं बज्झदी, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। मेरी आवाज़ मुक गई शाहरग दी, अगे कहिण सुणन दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा मुकाईआ। धरनी कहे मैनूं अग्ग नाल दिता ताअ, धूंणीआँ वालयां धूणे लाईआ। मेरी किसे ना सुणी हा, हौका लै के रही कुरलाईआ। कोई ना पकड़े बांह, फड़ बाहों ना कोए उठाईआ। साचा करे ना कोए न्याँ, अदालत हक ना कोए बणाईआ। नाले सारे मैनूं कैहिंदे धरती माँ, सीना साड़ के रहे वखाईआ। साचा दिसे कोई ना थाँ, प्रभू भज्जी वाहो दाहीआ। किरपा कर सच्चे शहिनशाह, तेरी ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी हस्स के किहा नेड़े आ, मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं आपणीआं उंगलीआं नाल वखा, जेहड़े तेरे उत्ते धूंणीआँ रहे ताईआ। धरनी सहिजे दिता सुणा, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। ओह वेख तेरां सौ सतासी इक्ट्ठे नज़री रहे आ, जटा जूट वेस रहे वटाईआ। बहुते मलके तन सुआह, नैण अक्ख लाल चमकाईआ। बहुते सूटा खिचण नाल चाअ, सुलफ़ा पी के खुशी मनाईआ। बहुते कर के उतांह बांह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। बहुते नैण रहे शरमा, मुख धरत वल टिकाईआ। बहुते आहूती रहे पा, फल फुल्ल भेंट कराईआ। बहुते भबूती रहे रमा, स्वाह सीस विच टिकाईआ। बहुते लंगोटी रहे लगा, बहुते नग्न फिरन धाईआ। मैं वेख के हो गई हैरां, हैरानी मेरे अंदर आईआ। एहनां दी पकड़ी किसे ना बांह, घर मिल्या ना बेपरवाहीआ।

प्रभू तेरा की पता, मैनूं दे समझाईआ। अबिनाशी करते दिता सुणा, शब्द अगम्मी इक दृढ़ाईआ। एहनां दा लहिणा बाकी रिहा मुका, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिस वेले द्वापर त्रेता कलयुग दिता लँघा, सतिजुग वारी आईआ। निरगुण जोत करां रुशना, लोकमात वेस वटाईआ। शब्दी धार लवां प्रगटा, रूप ना कोए वखाईआ। गोबिन्द मेला लवां मिला, घर साचे मेल मिलाईआ। ऋषी ऋषीशरां जन्म लवां दवा, लोकमात आप उपजाईआ। तेरे उत्ते इक्ठे लवां करा, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। फिर सहिज सुभाओ जावां आ, आप आपणा फेरा पाईआ। जित्थे रिषी धूणी रहे ताअ, ओथे चरण कँवल दयां टिकाईआ। अग्नी अग्ग कोई ना मारे भाअ, तूं मेरा मैं तेरा ढोले सारे गाईआ। अमृत मेघ तेरे उत्ते जावां छिड़का, भगतां दी धूढ़ तेरे नाल मिलाईआ। समें सार सद करां न्याँ, एह मेरी बेपरवाहीआ। बेशक तूं धरती सब दी इक्को रहिणी माँ, बिना बाप तों माता कम्म किसे ना आईआ। तेरा लेखा लहिणा देणा दयां चुका, चुकन्नी हो के वेखणा आपणी अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग अन्त होवां सहा, सहायक हो के दया कमाईआ। धरनी किहा मैं की कहां, पहिचाण मैनूं दे समझाईआ। अबिनाशी करते किहा जिस वेले सोहँ महाराज सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां लैणा गा, तूं समझीं मेरा वेला वक्त गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी फड़ फड़ बांह, सहायक नायक इक्को इक अख्वाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ करमो देवी दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

धरनी कहे मेरा ठांडा होया हिरदा, अमृत वहण दिता वहाईआ। भगतां भगवान मिल्या विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ने मेल मिलाईआ। अगम्मी धार आ गया फिरदा फिरदा, फिरत फिरत आपणा खेल खिलाईआ। गुरमुखां घेरा रखे चौगिर्दी, गिरवर गिरधार भगतां ... ...। सच दवारे जिन्हां दा लेखा निबड़दा, लहिणा रिहा चुकाईआ। मैनूं याद आया लेखा बिदर दा, बिध नाल समझाईआ। जेहड़ा प्रभ दी धारों नितरदा, आपणी भगती ना कोए वखाईआ। सदा लाहा ल्या साचे मित्र दा, अलूणा साग खा के दए वड्याईआ। प्रेम प्यार वेख्या धुर दे इश्क दा, मुहब्बत नाता इक जणाईआ। झगड़ा चुक्कया टांक जिसत दा, जिस्म ज़मीर दिती बदलाईआ। भरोसा दे के चरण प्रीती सिदक दा, सदना सैण पार लँघाईआ। कबीर मंज़ल कदे ना खिसकदा, रवी पाणां गंढु के झट लँघाईआ। धू्र प्रहलाद माण दे के साची हिम्मत दा, जगत नाता दिता तुड़ाईआ। सो खेल वेखे आपणी सिम्मत दा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका

के कलयुग कूड़ कुड़यार निन्दक दा, सुखसागर विच समाईआ। रोग रहे ना चिन्तक दा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। रस देवे जन भगतां खाधे निमक दा, निमक हराम ना कदे अख्वाईआ। देणा देवे प्रेम प्यार दी मिन्नत दा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तर आए हासा, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। भगतां वेख्या भरवासा, जो बैठे खुशी मनाईआ। पैंदी वेखी रासा, सुरती शब्द नाच नचाईआ। पूरी हुन्दी वेखी आसा, तृष्ना रिहा बुझाईआ। ऋषीआं दा स्वासा, साह साह आपणे विच मिलाईआ। झगड़ा पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतरां रिहा मिटाईआ। पूरब जन्म दा घाटा, सहिजे पूर कराईआ। अगली चुक्के वाटा, पिच्छा याद कोए ना आईआ। अबिनाशी वस्या साथा, सोहणा संग बणाईआ। सोहँ दस्से के गाथा, गहर गम्भीर ल्या उठाईआ। बावन दा मन्न के आखा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नज़री आए साख्याता, साहिब स्वामी दया कमाईआ। जन भगतां पुछे वाता, वाहवा वज्जदी रहे वधाईआ। झगड़ा मुकाए ज़ाता पाता, इक्को रंग रिहा रंगाईआ। हो के दासी दासा, धुर दी सेवा सच कमाईआ। निरगुण जोत सच प्रकाशा, परम पुरख बेपरवाहीआ। सच दवारे देवे दातां, पूरब लहिणा खोज खुजाईआ। जित्थे धूंए धार वाली धुखदी आगा, आगमन भगतां रिहा कराईआ। दीपक जोत जगा चरागा, चरागाहां विच दए वड्याईआ। जिस दा लिख्या ना किसे साका, सो लिख्त भविख्त रिहा दृढ़ाईआ। धरती कहे मेरी पूरी कीती आसा, तृष्ना दिती बुझाईआ। मैं वेखां खेल तमाशा, निउँ निउँ लागां पाईआ। धन्न भाग चरण छोहया मेरी मिट्टी ख़ाका, ख़ाकी मिट्टी ख़ालस दिती बणाईआ। जेहड़ी कदी तुली नहीं धड़ीआं सेरां विच छटाकां, गुरमुख मस्तक लग के मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी धरत धवल कहे मेरा लेखा आप पछाता, पछोकड़ रोकड़ ओड़क आप चुकाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ राम सिँघ दे गृह पिण्ड धंगाली कैंप खूण जम्मू ✪

धरती कहे किरपा कर श्री भगवान, सर्ब स्वामी तेरी आस रखाईआ। धन्न भाग जे पहुंचिउँ आण, कलयुग वेला अन्त दए दुहाईआ। चार कुण्ट दिसे कूड़ निशान, निशाना सच ना कोए झुलाईआ। धूआँधार ज़िमीं असमान, नूर चन्द ना कोए रुशनाईआ। दीन दुनी सर्ब कुरलाण, हाहाकार सुणाईआ। सांतक सति ना कोई कराए आ अमृत पान, विख बाहर ना कोए कढाहीआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले मंगण तैथों दान, दर ठांडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मैं सुत्ती उठी, इक लई अंगड़ाईआ। वेख्या चौंह गुठी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। बिना भगतां प्रभ नाल किसे दी लग्गी नहीं रुची, जगत वासना भरी लोकाईआ। कोटां विच्चों थोड़्यां आत्म वेखी सुची, जो इक्को ढोला रहे गाईआ। जिन्हां नूं शब्द फ़रमान संदेसा देवे तेरा दूती, घर घर आप उठाईआ। जन भगतां बसन्त रुत्त मौली रुत्ती, चुरासी जीव समझ कोए ना पाईआ। रिषीआं दी रेखा भगतां दी धार विच लुकी, बावन हाज़र हो के दए गवाहीआ। जिन्हां कारन खेल बणी बुत्ती, बुत्तखानयां करे सफ़ाईआ। तेरी खेल साहिब अनडिठ्ठी, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। धार बारीक अगम्मी निक्की, निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। मैं खुशहाल होई तेरी वेख के सतिगुर वाली सिक्खी, जिन्हां दे अंदर वस के वासना कूड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दरस दीदार दी भुक्खी, जुग जुग बैठी राह तकाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ हँसराज दे गृह पिण्ड बालेवाल खूण कैंप जम्मू ✪

७६८ १९ धरती कहे मैं खुशी होई नाता जुड़या भगत भगवन्त, आत्म परमात्म ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जी वधाईआ। निरगुण निरगुण प्यार जुड़या ब्रह्म पारब्रह्म धुर दे कन्त, विछोड़ा विच रिहा ना राईआ। बोध अगाध शब्द नाद सुणया धुर दा मंत, मंतव इक्को नज़री आईआ। जो वड्याई देवे लख चुरासी साध सन्त, जीव जंत भेव अभेदा मात खुल्हाईआ। परदा लाहे दया कमाए मानव ज़ाती साचे सन्त, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणे रंग रंगाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत बोध अगाधा बण के पंडत, भेव अभेदा अछल छेदा आप खुल्हाईआ। सिफ्त महिमा सुणी अगणत, जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना पाईआ। लेखा मुका के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पैंडा रिहा मुकाईआ। नाम लिख्त धुर दी दे के संनत, हक हकीकत खुशी मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर के अन्त, सतिजुग सच दए प्रगटाईआ। जन भगतां कारन बणाए बणत, घड़न भन्नणहार समरथ बेपरवाहीआ। जिस दा शहिनशाही चलदा सम्मत, समां वेखे थाउँ थाँईआ। गुरमुखां उत्ते कर के रहमत, मुरीद मुर्शद लए मनाईआ। रहिण ना देवे अहिमक, मूर्ख मुग्धा चतुर सुघड़ सुजान बणाईआ। शब्द इशारा एकँकारा निरगुण धारा बिन अक्खां लाए सैनत, सोई सुरती अकाल मूर्ती काया मन्दिर साचे अंदर आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मोहे चढ़या रंग, रंगत नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग दी आशा पूरी होणी मंग, बावन दा लेखा बल दी धार रिषीआं दा प्यार झोली पाईआ। जिस

नूं जगत जुग बीतड़े चार, कलयुग अन्तिम आई वार, जिस नूं समझे ना संसार, मन भेव कोए ना पाईआ। कागत कलम ना लिखणहार, इशारे दे के गए गुरू अवतार, भविख्तां विच जणाईआ। चौदां योजन दा अधार, लहिणा देवणहार आप करतार, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जो कलयुग अन्तिम पहुंचया आण, सन्त सुहेले लए उठाल, जोती जाता पुरख बिधाता धुर दी करनी आपणी कार कमाईआ। वस्त अमोलक देवे नाम सच्चा धन माल, लख चुरासी विच्चों करे बहाल, आवण जावण पतित पावण दए कटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत प्यारे वेखे आपणे लाल, सचखण्ड बहाए सच्ची धर्मसाल, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। लहिणा देणा चुका के शाह कंगाल, सच प्रीती दस्से पुरख अबिनाशी निभे नाल, दो जहान ना कोए तुड़ाईआ। धरनी कहे सो वक्त पहुंचयां आण, जिस दा मिल्या धुर फ़रमान, ऋषीआं होण लग्गा कल्याण, भगतां मिलण लग्गा दान, जन्म जन्म दा लेखा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेला इक अकेला एकँकार कर प्यार, निरगुण दाता पुरख बिधाता पूरब लहिणा दए उधार, बकाया सब दी झोली पाईआ।

७६६ १६ ✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ वरयाम सिँघ दे गृह पिण्ड मलिक कैंप खूण जम्मू ✪ ७६६ १६

धरती कहे मेरा बणया धर्म दवार, सच दरबारा नज़री आईआ। जित्थे वस्या हरि निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। भगतां पैज रिहा संवार भगवन हो के दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी विछड़े मेले यार, पूरब लेखा वेख वखाईआ। परदा ओहला रिहा उतार, सहिंसा रोग रिहा चुकाईआ। रिषीआं दा उधार, बावन दा प्यार, परम पुरख परमात्म आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वरताईआ। धरती कहे मैं खुशीआं अंदर हस्सां, हस्ती वेख बेपरवाहीआ। भगत भगवान बिन नेत्र अक्खां तक्कां, जोती नूर नूर रुशनाईआ। दो जहानां दस्सां, ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाईआ। चारों कुण्ट नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। प्रभ दे चरण कँवल सिर सिट्टां, सीस धड़ भेंट चढ़ाईआ। दोए जोड़ वास्ता घत्तां, नेत्र नैण हन्झूआं नीर वहाईआ। धन्न वड्याई जे आया पुरख समर्था, अबिनाशी हो के फेरा पाईआ। जिस दी चार युग गाउँदे गए कथा, गाथा वारता विच अलाईआ। सो भगतां बण के सखा, साजण हो के फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथ्था, हाजर हो के वेख वखाईआ। धरनी कहे जिस प्यार नाल इस धरती उत्ते टेक ल्या इक वार मथ्था, मस्तक दा लेख लेखे विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, भगतां दा बण के सका, साख्यात सनमुख एका दरस वखाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ धर्मो देवी पिण्ड छम्ब कैंप खूण जम्मू ✪

धरती कहे मेरा होया वड्डा कर्म, निहकर्मी दिती वड्याईआ। पूरबला पालया धर्म, मेरा धर्म ल्या रखाईआ। रिषीआं नूं दे के जरम, जन्म ल्या उपजाईआ। दुखियां दे मेट के भरम, भाण्डा भरम भउ दिता भन्नाईआ। भगतां नूं दे के सरन, सरनगति जणाईआ। मंज़ल दस्सया चढ़न, ओझड़ राहों बचाईआ। अंदर दस्सया वड़न, प्रभ दा दर्शन पाईआ। सच दवारे दस्सया खड़न, हरि संगत मिल के वज्जी वधाईआ। बावन दा पूरा कीता प्रन, परमात्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार सरनाईआ। धरती कहे मैं मनसा विच होई पूर, प्रभ पूरन दिती वड्याईआ। मेरा पिछला पैंडा रिहा ना दूर, अगला पन्ध दिता मुकाईआ। नाता तोड़ के कूड़, कुटम्ब भगतां दिता वखाईआ। जित्थे बणया रहे मज़दूर, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। दिन्दा रहे नूर, जोत नूर रुशनाईआ। भण्डारा करदा रहे भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। बेनन्ती करदा रहे मन्ज़ूर, मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। जन्म जन्म दा कट कुसूर, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धरती कहे मेरी जुग चौकड़ी आसा पुन्नी, भरवासा मिल्या बेपरवाहीआ। मेरे सीस तों ओढण लथ्था ना चुन्नी, प्रभ ने परदा दिता पाईआ। भगत सुहेले मिले गुणी, गहर गभीर दिता वखाईआ। मन्न के साची धुनी, धन्न भाग कह के शुकर मनाईआ। जिस वेले सच जैकार सुणी, सोहँ ढोला रहे गाईआ। लेखा चुकाया रिषी मुनी, मुनकर हो ना मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी पुकार सुणी, अनभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ।

✪ २० जेठ शहिनशाही सम्मत २ कृपाल सिँघ तूतां वाले दे गृह कैंप खूण जम्मू ✪

रिषीआं बावन दी कीती धन्न धन्न, धन्न कह के खुशी मनाईआ। एह आवाज शुक्कर परोहत दे पै गई कन्न, शंकयां विच हाए हाए सुणाईआ। एह किस दा बिरध तन, समझ कोए ना आईआ। बल नूं देवण आया डंन, भेख कोए बदलाईआ। मैनूं पै गया जंन, भरम विच रखाईआ। हौली जेही कोल आ के बावन, परोहत दे विच सुणाया कन्न, हुक्म धुरदरगाहीआ। जे तूं वेख्या सी चन्न, तैनूं दयां समझाईआ। हँकारी ठीकर अंदरों भन्न, भज्जा जा वाहो दाहीआ। पंज वार इश्नान कर आपणे तन, तेरे माटी मन्दिर होए सफ़ाईआ। फेर भेव खुल्ले ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म नजरी आईआ। तृष्ना रहे ना तम, तामस

देणी चुकाईआ। दृष्टी रहे ना चम्म, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। खुशी रहे ना ग़म, ग़मख़ार होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शुक्कर परोहत होया हैरान, हैरानी अंदर आईआ। चोरी सब तों करां इश्नान, मैनूं वेखण कोए ना पाईआ। मेरे वल किसे दा ना होवे ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। मैं करां जल परवान, भज्जा वाहो दाहीआ। फिर कुछ मैं पुछां आण, सहिजे दे समझाईआ। अंदरों होया इक फ़रमान, हुक्म दिता दृढ़ाईआ। तेती मिन्ट वक्त पछाण, वध घट ना कोए रखाईआ। हुण तैनूं बणाउणा अणजाण, तेरी विद्या देणी भुलाईआ। अगे सुणावां इक फ़रमान, हुक्म संदेसा बेपरवाहीआ। तेरा मेला होणा वशिष्ट राम, रमईआ हो के खेल खिलाईआ। गोबिन्द जन्मे तेरे ग्राम, राज महल्ल मिले वड्याईआ। अन्त अखीरी खेल श्री भगवान, अबिनाशी करता आप कराईआ। साचे रिषीआं करे परवान, परवाने सब दे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा उहनां नाल लेखा चुकाए आण, बाकी पिच्छे ना कोए रखाईआ। परोहत चरण कँवल कर ध्यान, सीस दिता निवाईआ। बावन दे के इक फ़रमान, फ़ुरनयां विच्चों फ़ुरना दिता प्रगटाईआ। तेरी करे आप कल्याण, पुरख अबिनाशी होए सहाईआ। कलयुग जिस वेले वक्त पहुंचया आण, समां समां दिता बदलाईआ। तेरा फेर कराए पंज वार इश्नान, निशान आपणा वेख वखाईआ। एसे कर के राज नरैण नूं खेचल दिती महान, दीबाण बाण धुर दा आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा सर्ब चुकाए विच जहान, काइदा कानून आपणे हथ्थ रखाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ राम चन्द दे गृह देवा पिण्ड कैंप खूण जम्मू ✪

धरती कहे खुशी होए रोड़े पत्थर, इट्टां मिट्टी ख़ाक खुशी मनाईआ। जिस वेले वैराग अंदर सुट्टदे रहे अथ्थर, बिन नैणां नीर वहाईआ। घास फूस उत्ते जिस दा वेख्या सत्थर, सेजा सच हंढाहीआ। सो साडी पूरी करन आया सध्धर, जो सधनां सैण तराईआ। ग़रीब निमाणयां कीता कदर, कुदरत दे मालक हो सहाईआ। सच इन्साफ़ कीता अदल, अदम दा लेखा दिता मुकाईआ। छड्ड मैदानां पध्धर, उच्चे नीवें टिब्बयां चलया चाँईं चाँईंआ। मेहर कर के आपणी कर नदर, नज़र आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी वेखे ग़दर, झगड़ा सर्ब लोकाईआ। सृष्टी होवे महशर, दृष्टी दए दुहाईआ। जन भगतां चोटी चाढ़ सिखर, मंज़ल इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। इट्टां पत्थर कहिण रोड़े, रुढ़दी धारों ल्या बचाईआ। कर किरपा जिस आपणे नाल जोड़े, जुग चौकड़ी दिती वड्याईआ।

सन्त सुहेला हो के बौहड़े, निरगुण हो के वेख वखाईआ। भगत जनां सुणा के दोहरे, धुर दा नाम जणाईआ। लेखे ला के कोटां विच्चों थोड़े, जोती शब्दी धार मिलाईआ। नाम अगम्मे चढ़ाए घोड़े, ब्रह्मण्ड खण्ड पार लँघाईआ। लेखा मुके पेके सौहरे, इक्को घर दए वखाईआ। जित्थे गुस्से विच कोई ना होड़े, भय नाल ना कोए डराईआ। लग्गी प्रीत कोए ना तोड़े, नाता कूड़ ना कोए जणाईआ। ममता मोह दिसे ना ठग्ग चोरे, हँकार विकार ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रोड़े पत्थर कहिण साडे नाल तरया घास, चरण छोह के खुशी मनाईआ। बण के दासी दास, सेवक नज़री आईआ। करे हास बलास, खुशीआं रंग वखाईआ। वेख जोत प्रकाश, भज्जया वाहो दाहीआ। जन्म जन्म दी पूरी होई आस, तृष्ना लई बुझाईआ। जित्थे रिषी जपदे रहे स्वास स्वास, अंदर वड़ के ध्यान लगाईआ। ओथे वस्या सब दे पास, घर स्वामी नज़री आईआ। दर्शन दे के साख्यात, शनाख़त आपणी दए कराईआ। हरिजन बणा के पारजात, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। खुशी होई नबातात, कायनात वज्जी वधाईआ। बनास्पत कदी ना होवे उदास, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ। धरनी कहे लेखे लग्गे स्वास, साह साह जिस नूं रही ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी मेटे वाट, वट्टा सट्टा जगत नाल कराईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ इन्द्रो देवी दे गृह पिण्ड दयोड़े कैंप मनवाल जम्मू ✪

खुशीआं विच हस्से टिबे टोए, पध्धर आपणा रंग वखाईआ। दुरमति मैल साडा धोए, पापां रंग दिता मिटाईआ। सच अमोलक वस्त दे के इक्को ढोए, ढोला इक्को दिता सुणाईआ। भगत भगवान मिल के गाए दोहे, दोहरा हुक्म आप वरताईआ। अमृत जाम साचा अन्तर चोए, मुख रसना जेहवा समझ सके ना राईआ। सच प्रकाश कीता आपणा लोए, लोचन दुनी दा इक खुल्हाईआ। जिस वैराग अंदर रोए, सो मिल्या बेपरवाहीआ। लेखा समझ सके ना कोए, कूक कूक कूक दुहाईआ। किसे नाल कदे ना करे धरोहे, धुर दा मालक दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। टोए टिब्बे हस्सण पर्बत, चोटीआं खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी सच दवारे पाई बरक्त, बेपरवाह दिती वड्याईआ। ग़रीब निमाणे अमृत जाम प्याया शरबत, शरअ कूड़ बाहर कढाहीआ। खुशीआं अंदर प्रेम दी आई हरक्त, भज्जे नट्ठे चाँईं चाँईंआ। लेखे लग्गे झाड़ी बूटे दरख़त, ख़ता सब दी मुआफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहिणा सब दी झोली पाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भाईआ देवी पिण्ड मोयल कैंप मानसर जम्मू ✪

दरख़त बूटे कहिण टाहणी पत्त, जड़ चोटी खुशी मनाईआ। प्रभ वेख्या कमलापति, कोझयां कमलयां होए सहाईआ। जो सांझा गावे जस, भगत भगवान ढोला इक अलाहीआ। पूरब लहिणा देवे हक, हाकम हो के वेख वखाईआ। दिंदयां कदे ना जावे थक, अतोट अतुट भण्डार आप वरताईआ। आत्म ब्रह्म प्यार देवे सति, सति सतिवादी वेख वखाईआ। धीरज सन्तोख देवे यति, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। भाग लगाए तत अठ्ठ, त्रै पंज वज्जे वधाईआ। लोकमात लज्जया लए रख, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। सन्त सुहेले तक्के आपणी अक्ख, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख रहिण ना देवे वक्ख, गुरसिख इक्को घर टिकाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा सांझा होवे जस, वेद पुराण सिफ्त ना कोए सालाहीआ। करे खेल पुरख समरथ, धुर दा मालक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। टाहणी पत्ते बोली शाख़, शनाख़त धुर दी नज़री आईआ। जो बावन गया आख, पतित पावन पूर कराईआ। रिषी रहे ना कोए उदास, सिक्खी साची आप उपजाईआ। लेखे ला के हड्ड मास, नाड़ी नाड़ी करे रुशनाईआ। मंज़ल मुका के घाट, पार किनारे दए लगाईआ। साची दस्स के गाथ, सिख्या इक समझाईआ। मेल मिला पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतां देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी धरत धवल तेरी पूरी कर के ख़ाहिश, अवल आपणा नाम इक समझाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ सोभा सिँघ दे गृह पिण्ड मोयल कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत मानस जन्म जग जाए जीत, हिरदे हरि हरि इक वसाईआ। प्रेम प्यार दी चला के रीत, सृष्टी दृष्टी दए समझाईआ। खेल वखा के हस्त कीट, ऊँचां नीचां जाए समाईआ। पुरख अबिनाशी सब दा मीत, मित्र प्यारा इक्को वेख वखाईआ। जो हर घट वसे चीत, घट घट रिहा समाईआ। साचा करे नाम बख़्शीश, वस्त वास्तक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जन भगत सफ़ल होवे जन्म, कुफल अंदरों लए खुल्हाईआ। मिटे मन का भरम, भउ जगत चुकाईआ। तक्के साची सरन, ओट इक रखाईआ। मस्तक निवे चरण, जगदीश सीस झुकाईआ। घर साचे मिले वड्न, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सच देवणहार सरनाईआ। जन भगत मानस जन्म लेखे, हरि गिणती विच गिणाईआ। निरगुण हो के आपे वेखे, सरगुण मेले सहिज सुभाईआ। जुग जन्म रखे चेते, चातृक आपणे लए उठाईआ। नाम शब्द दए संदेशे, धुर फ़रमान दृढ़ाईआ। अंदर वड़ के खोल्हे भेते, ममता मोह मिटाईआ। भगत भगवान सदा खेल करे जुग केते, कोटन कोटि काल गए विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जन भगत जन्म लेखे जाए लग्ग, माटी ख़ाक ना कोए रलाईआ। आत्म परमात्म रहे ना अलग, धुर दा मेला सहिज सुभाईआ। नाता कूड़ कुड़यार तुट्टे जग, जगत पित दए शरनाईआ। पोह सके ना अग्नी अग्ग, तत्ती वा ना कोए लगाईआ। नाम निधान सुणाए नद, हद्द कूड़ी पार कराईआ। अमृत जाम प्याए मध, मधुर धुन इक सुणाईआ। दरस देवे उपर शाह रग, परदा ओहला आप चुकाईआ। बिन काअब्यों कराए धुर दा हज्ज, हज़रत हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। जन भगत जन्म जाए संवार, माटी ख़ाकी मिले वड्याईआ। पूरब लहिणा लेखा चुक्के उधार, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। रिषीआं लहिणा देणा करे आर पार, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। सच सौदागर कराए वणज वपार, सौदा इक्को हट्ट नाम विकाईआ। ख़रीददार थोड़े लभ्भे भगत सुहेले यार, दूजा लैण कोए ना आईआ। करे खेल तख्त निवासी एकँकार, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। लहिणा देणा चुकावणहार सदा जुग चार, चौकड़ औकड़ सब दी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम हो त्यार, त्रैगुण अतीता फेरा पाईआ। जन भगत सुहेले कर के ख़बरदार, नाम संदेशे आप उठाईआ। साची भूमिका खिड़ी वेखे आप गुलज़ार, गुलशन आपणा आप महकाईआ। अन्त लहिणा देणा भगत भगवन्त दए उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्ट खुशी मनाईआ। वार थित दिवस घड़ी पल लए विचार, विलखण आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पैज जाए संवार, धरनी धरत धवल पावे सार, हब्ब किछ आपणे रख अख्त्यार, इफ़तलाफ़ अंदरों दए कढाहीआ।

७७४ १६

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ हरनामो देवी दे गृह पिण्ड मोयल कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहिण असीं पूरब लहिणा आए लैण, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तजाईआ। सृष्ट सबाई आए कहिण, अबिनाशी करता मन्नो बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ दर्शन करो आपणे नैण, जग लोचन हरस मिटाईआ। इक अकल्ला बणे सच्चा साक सज्जण सैण, समरथ स्वामी होए सहाईआ। जुग चौकड़ी आदि जुगादि देवे देण, कर्ज़ा सब दा दए चुकाईआ। जिस राम

दी महिमा सुणदे विच रामायण, राम दा राम भगतां रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। जन भगत कहिण असां पूरब लैणा लेखा, बावनधारी नज़री आईआ। चौथे जुग चुक्कया ठेका, गुर अवतार पैगम्बर गए सीस निवाईआ। जन भगतां साहमणे कीता एका, इक्को एकँकार लैणा मनाईआ। दूजी रखणी नहीं कोई टेका, सिर सके ना कोए झुकाईआ। अन्त रहिणा नहीं वेखी वेखा, भरम अंदरों देणा कढाहीआ। मालक तक्कणा नर नरेशा, अबिनाशी करता शहिनशाहीआ। जिस दा सचखण्ड साचा देसा, मातलोक करे रुशनाईआ। जुग चौकड़ी आवे वार अनेका, बिन भगतां दरस ना किसे वखाईआ। जिस बल बावन रख्या चेता, सतिजुग धार सतिजुग दए प्रगटाईआ। सो दो जहानां बण के आया नेता, धुर फ़रमान हुक्म सुणाईआ। जन भगतां अंदर खोल्हे भेता, भेव आपणा दए खुल्हाईआ। श्री भगवान आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां बदल देवे रेखा, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहिण असीं नहीं वड्डे छोटे, निक्के बाल बिरध जवानी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जगत विचार विच मारे कदे ना गोते, वैहन्दे वहण ना कोए पाईआ। इक्को प्रभ दा दर्शन रहे लोचे, दो जहाना ध्यान ना कोए लगाईआ। सचखण्ड दी साची रहे सोचे, समझ जगत ना कोए भुलाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म मिलण दे मौके, पारब्रह्म प्रभ मिल के आपणा आप समाईआ। माया ममता दे ना सके धोखे, कूड़ी क्रिया ना कोए हल्काईआ। असां मंज़ल पौड़ी चढ़ना सौखे, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। उच्ची कूक ढोले गाउणे होके, हुक्म सुण के खुशी मनाईआ। कलयुग जीव जगत जहान रहिणे सोते, सुत्यां अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। जन भगत कहिण असीं लहिणा देणा लैण च वड्डे, वड्डयां विच्चों नज़री आईआ। पुरख अकाल आपणी धारों कड्ढे, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। कूड़ कुड़यारे नाते छड्डे, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सच दवारे जाईए भज्जे, चलीए वाहो दाहीआ। जित्थे इक्को दीपक जगे, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। भगत भगवान नाते बणना सके, सकयां नालों होए जुदाईआ। चरण कँवल सरनाई साची रखे, घर ठांडे दए बहाईआ। जित्थे जगत अक्ख कोई ना तक्के, निज नेत्र दर्शन पाईआ। नाता बिधाता करे पक्के, कच्ची गंढु ना कोए रखाईआ। कोटन कोटां विच्चों भगत सुहेले थोड़े अच्छे, जिन्हां मिले माण वड्याईआ। परम पुरख सरनाई ढठ्ठे, निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरबार कर सच्चे, सच सच सच विच समाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ जीत कौर पिण्ड धंगाली कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहिण असीं वेखे जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नित्त वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिल्या सांझा यार, आदि निरँजण अबिनाशी करता आपणा रूप बदलाईआ। सन्त सुहेला इक अकेला एकँकार मार्ग लाउँदा रिहा विच संसार, हुक्में अंदर हुक्म सुणाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म पाउँदा रिहा सार, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण आपणा खेल वखाईआ। शब्द संदेसा नाम निधान कलम शाही कातब बण के लेखा लिखदा रिहा लिखार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी रंग रंगाईआ। पंज तत काया माटी मन मति बुध दिन्दा रिहा अधार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता करनी कार कमाईआ। भगत वछल अछल अछल्ल गुरमुखां दिन्दा रिहा दीदार, निज लोचन नैण ज्ञान अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता चार कुण्ट दहि दिशा हुन्दा रिहा उज्यार, गुर अवतार पैगम्बर रूप वटाईआ। जन भगत कहिण सदा सदा सद साडा बणया रिहा मीत मुरार, विछोड़े विच्चों जोड़ा आप मिलाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के शब्द अगम्मी दस्सदा रिहा गुफ़तार, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त जिस दी पावे कोई ना सार, बेअन्त कह के सारे शुकर मनाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी जन भगतां मीता ठांडा सीता करे हक प्यार, हकीकत विच्चों सच खोज खुजाईआ। जन भगत कहिण बिन भगतां प्रभ दा करे ना कोए इज़हार, परदा ओहला भेव ना कोए खुल्हाईआ। इष्ट दृष्ट विच करे ना कोए प्यार, सृष्ट कूड़ कुड़यार हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले लए वर, वरन बरन वेख कोए ना पाईआ। जन भगत कहिण असीं आउँदे रहीए जग, प्रभ आपणा जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत छड्ड, साडे अंदर वड़ के आपणी मंज़ल दए वखाईआ। पंज तत काया माटी ख़ाकी रहिण ना देवे अड्ड, नाम निधाना श्री भगवाना अंदर दए टिकाईआ। सति धर्म दा निशाना गड्ड, जिस नूं दो जहान वेख विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। बिन भगतां प्रभ दी चले मात ना यद्द, बिना भगवन्त गोद ना कोए उठाईआ। साची सिख्या गावे कोई ना सच, सति सतिवादी रूप ना कोए वटाईआ। भाग लग्गे ना काया माटी कच्च, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। दर्शन मिले ना किसे अगम्मी अक्ख, जगत लोचण बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मेला मिलाउँदा रहे पुरख समरथ, महिमा अकथ आप समझाईआ। जन भगत कहिण साडा मेला हुन्दा रहे गहर गम्भीर, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। पंजां तत्तां वाला लेखे लाउँदे रहे सरीर, मन शरीर परे हटाईआ। नज़र तक्क दे, रहे बेनज़ीर, नज़र नुराना शहिनशाहीआ। जिस दी बाहर नज़र ना आए किसे

तस्वीर, जोती जोत जोत समाईआ। जो मंज़ल चढ़े अख़ीर, काया काअबे साचे हुजरे धुर दे मन्दिर डेरा लाईआ। जिस गढ़ विच बह के खुशी मनाए कबीर, सो भगत सुहेले सहिजे आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जन भगतां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम निधाना जाम प्याए ठांडा सीर, अग्नी तत दए बुझाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित भगत भगवन्त इक दूजे दी बणे रहे धीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शाह अमीर कंगाल वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ ढेरू राम दे गृह पिण्ड मनावर कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहिण साडी चुक्की माया ममता, मन वासना बन्द कराईआ। नाता तुटया हँ हंगता, वज्जी सच वधाईआ। मेल मिल्या साची संगता, सरन मिली सरनाईआ। ठाकर पाया धुर दा पंडता, करे नाम पढ़ाईआ। लेखा चुका चुरासी जन का, जन्म दए बदलाईआ। लहिणा चुकाए साचे तन का, तन मन आपणे लेखे पाईआ। जुग जन्म बेड़ा बन्नह्दा, कलयुग अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा जाणे आपणे जन दा, भुल्ल विच भुल्ल कोए ना जाईआ।

७७७
१६

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बीबी सन्तो देवी दे गृह पिण्ड नवां चक कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहे मैं सतिगुर जोगा, जुगां दी धार चली आईआ। मेरा प्रभ दे नाल बदलदा रहे चोगा, काया कपड़ वेस वटाईआ। मिलदा रहे नाम सलोका, साचा ढोला गाईआ। दिन्दा रहवां होका, हुक्म मन्न बेपरवाहीआ। दस्सदा रहां लोका, ओट इक्को शहिनशाहीआ। जिस दी लख चुरासी जोता, जोती जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं मिलयां कदे ना आए मौता, मर के जीवण जीवण लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेटे अगली पिछली सोचा, सच साजण हो के आपणे घर वसाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ भोला राम दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहिण साडा मिटया कर्म कांड, कंडा कूड़ ना कोए चुभाईआ। घर ठाकर मिल्या ठांड, अग्नी अग्ग बुझाईआ।

जन भगतां बख्श्या गवांढ, दर साचे वज्जी वधाईआ। जन्म जन्म दी पूरी कीती तांघ, तृष्ना दिती मिटाईआ। बदल के आया स्वामी स्वांग, कलयुग जीव नज़र किसे ना आईआ। अमृत रस दी चाढ़े कांग, विख अंदरों दए रुढ़ाईआ। गुरमुखां पूरी करे मांग, आशा पूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगत कहिण साडा तन मन होया ठांडा, अग्नी रही ना राईआ। तन मन ढोला गांदा, गा गा खुशी मनाईआ। सच सरोवर अंदर नहांदा, मैल ममता मोह मिटाईआ। मन का मणका आप भवांदा, गेड़ा गेड़े विच्चों चलाईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन पाउँदा, जलवा तक्के नूर रुशनाईआ। घर ठांडा इक रुशनांदा, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सहारा दे के आपणे नाँ दा, नईआ नौका जगत पार कराईआ। जन भगत कहे मेरे अन्तर आई शांती, सति दिता वरताईआ। मिल्या अमृत बूँद स्वांती, अग्नी अग्ग गवाईआ। मारी अंदर झाती, परदा ल्या उठाईआ। मिल्या कमलापाती पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी सब तों वक्खरी साखी, जुग जुग करदे गए पढ़ाईआ। जन भगत बणाए दासण दासी, सेवक सेवा आप लगाईआ। साचे मण्डल पावे रासी, सोहणा आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले वेखे शब्द स्वासी, स्वास शब्द पवण पवण स्वास शब्द विच समाईआ।

७७८
१६

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ मलूका राम दे गृह पिण्ड देवा कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहिण सानूं दुःख ना कोई व्यापे, सुख प्रभ चरण कँवल नज़री आईआ। मिले मेल पुरख अबिनाशी साचे, जो देवणहार सच सरनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दी महिमा आखे, कथा कथ कथ सुणाईआ। जो आत्म परमात्म निरगुण निरगुण जोड़े नाते, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। जिस दे जग गाउँदे साके, ढाडी वारां विच अल्ाईआ। खेल वेखदे भगत भगवान दीन दुनी जगत तमाशे, तमअ आपणी ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट लग्गी आंचे, आंचल पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। शब्दी चोट कोई ना जागे, ठग्ग चोर होई लोकाईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना आगे, काया अंदर परदा ना कोए उठाईआ। दीपक जोत जगे ना कोई चिराग़े, घर घर दीवे बाती रहे जगाईआ। शब्द नाद अनहद सुणे कोई ना वाजे, बाहर ढोलक छैणे सर्ब रहे खड़काईआ। दुरमति मैल कोई ना धोवे दाग़े, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। बिन पुरख अबिनाशी साची साजणा कोई ना साजे, सज्जण धुर दा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत

कहिण असीं ओसदे चरण लागे, जित्थे लागत लग्गे कोए ना राईआ। सानूं भुल्ल गए जन्म देण वाले मापे, मात पिता पुरख अकाल इक्को गोद रिहा उठाईआ। सचखण्ड दुआर दे निवासे, सुहञ्जणा घर दए जणाईआ। जित्थे इक्को नूर जोत प्रकाशे, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लहिणा देणा पार कराए पृथ्मी आकाशे, आकाशां तों उपर दर घर साचे ठांडे सचखण्ड दुआर दए टिकाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त कौर दे गृह पिण्ड छम्ब कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहे मेरा मालक पुरख अकाला, सचखण्ड निवासी इक अखवाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बणया रहे दीन दयाला, भगत सुहेले गोद उठाइंदा। निर्मल निरगुण जोत करे उजाला, कूड़ी क्रिया अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। सचखण्ड दुआर वखाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक्को सोभा पाइंदा। बणया रहे भगतां सदा रखवाला, जुग जुग आपणी सेव कमाइंदा। पापां मैल दुरमति दाग़ धोवे काला, पतित पुनीत आप कराइंदा। कूड़ी क्रिया ममता मोह तोड़े जंजाला, जोती जाता जोत रुशनाइंदा। जन भगतां लेखे लाए जन्म जन्म दी घाला, घायल आयल मसायल सब दा हल कराइंदा। नाम प्रीती देवे सच नवाला, कूड़ी क्रिया तृष्ना भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन गोद उठाए आपणा बाला, बाल्मीक ऋषी हो के रिषी आप जणाइंदा। जन भगत कहे मेरा मालक निरँकार, नर निरवैर नज़री आईआ। जिस दी दो जहान सच्ची सरकार, सच अदालत रिहा कमाईआ। ठांडे दर झुकदे जिस दे पैगम्बर गुर अवतार, निमस्कार कर कर सारे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्में अंदर ख़बरदार, ख्वाबां विच वेखण जगत लोकाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द संदेसा देवे जुग चौकड़ी वारो वार, वारता आपणी आप जणाईआ। सन्त सुहेले उठाए विच संसार, विहार आपणे नाल मिलाईआ। मार्ग दस अगम्म अपार, अलख अगोचर करे पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त श्री भगवन्त पावे सार, सर्ब व्यापी सन्त सुहेला दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण लए उठाल, चुरासी फाँसी जम दी दए कटाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, मेल मिलाए दीन दयाल, सच दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल, जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां जीवण हल करे स्वाल, ज़िंदगी बन्दगी विच बिना बन्दना दए बदलाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धर्म चन्द दे गृह पिण्ड छम्ब कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहे जगत नालों कीता निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। जोत सरूप आपे हो, निरगुण हो के दया कमाईआ। नाम दस्स के सोहँ सो, आदि अन्त मध इक्को रंग रंगाईआ। सच प्रकाश कर के लो, लोचण दिता खुल्हाईआ। अमृत रस चो, चोरां दिता भजाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, समझ सके ना राईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना खोह, ज़ात पात दिती गवाईआ। सतिजुग विछड़े कलयुग अन्त नहीं कीता धरोह, धुर दा मेला ल्या मिलाईआ। प्रेम नाल कहे सच संदेश सुणो, सरवणां अंदर ज्ञान प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मालक इक्को चुणो, जो अवतार गुरू पैगम्बर सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणाए साची धुनो, धुनीआं दी धार जिस विच्चों प्रगट करे शनवाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धन्ना राम दे गृह पिण्ड अम्बा राए कैंप राम कोट जम्मू ✪

जन भगत कहे मेरा मालक इक्का, दो इक दए वड्याईआ। भगत उधारे वड्डा निक्का, आयू लेखा ना कोए समझाईआ। गुरसिख पार उतारे साचा सिखा, सिख्या धुर दी इक समझाईआ। पूरा करे जो बावन लेखा लिखा, लिख्त भविख्त नाल मिलाईआ। रिषीआं पूरी कर के इच्छा, सच भण्डारा लेखे पाईआ। अगे नाम दी पा के भिच्छा, भिच्छक धुर दे लए बणाईआ। मानस जन्म जिन्हां जित्ता, लोकमात वज्जी वधाईआ। अबिनाशी करता करे हित्ता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। धुर ठाकर मिले सिध्धा, विचोला विच ना कोए रखाईआ। जगत निराली कर के बिध्धा, बदला सब दा रिहा चुकाईआ। जिस नूं समझ ना सके कोई किड्डा, वड्डा छोटा भेव कोए ना पाईआ। सो भगतां दा भगती दा प्रेम प्यार अंदर कढ्ढे सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत दए तजाईआ। जन्म जन्म दा लेखा कर के चिट्टा, दुरमति मैल दए धवाईआ। साचा घर गृह मन्दिर धाम वखाए इक अनडिठ्ठा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जित्थे याद ना रहे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण पिच्छा, पुत्तर धी प्यार ना कोए रखाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल जोत सरूप सच प्रकाश दिस्सा, जो घट घट रिहा समाईआ। सच दुआर एकँकार जन भगतां करे हित्ता, हितकारी हो के अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत भगत सुहेले आप प्रगटाईआ। जन भगत कहिण साडी जन्म दी पूरी होई बाज़ी, बाज़ां वाले नाल मिल के बाज़ी लई लगाईआ। साडी आत्म होई राज़ी, राज़क रहीम दए सरनाईआ। झगड़ा रिहा ना किसे पंडत मुला

काज़ी, शरअ शरीअत ना कोए लड़ाईआ। मनुआ मन रहे ना ग़ाज़ी, हँकारी गढ़ देणा तुड़ाईआ। सोई सुरत सवाणी जागी, शब्द गुरू रिहा उठाईआ। आसा तृष्ना रहे ना पाजी, पाज सब दा देणा खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले दर घर साचे सचखण्ड दुआर इक्को सुणन रागी, जिस दी धुन जगत ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म दी प्रीत वेखे साची, लेखे लावे काया माटी काची, कंचन गढ़ अंदर वड़, मन्दिर चढ़, सच दवारे खड़, निरगुण नूर जोत धर, मेल मिला हरी हरि, सर साचे दए नुहाईआ।

✪ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत २ नंदू दे गृह पिण्ड सरदारी कैंप छले जम्मू ✪

जन भगत कहे मेरा गृह मन्दिर सुहञ्जणा, भिन्नड़ी रैण वज्जी वधाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म पाया दर्द दुःख भय भंजना, भय भउ भरम सर्ब गवाईआ। आदि जुगादि शाह पातशाह आदि निरँजणा, जोती जाता पुरख बिधाता नूर नूर करे रुशनाईआ। एकँकार कर प्यार चरण धूढ़ कराए धुर दा मजना, दुरमति मैल अंदर बाहर कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ।
७८१ एथे ओथे दो जहान श्री भगवान बणे साचा सज्जणा, सगला संग सूरा सरबंग आप निभाईआ। भगत भगवान इक्को दीप ७८१
१६ हो के जगणा, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे सच अनन्दना, आनंद आनंद विच्चों प्रगटाईआ। १६
गुरमुखां दस्स के धुर दी बन्दना, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। नाम निधान चाढ़े धुर दी रंगणा, रंग रंगीला सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। जन भगत कहे परम पुरख दा वेखणा अगम्मी नूर, नूर नुराना शाह सुल्ताना गृह मन्दिर अंदर नज़री आईआ। जो सदा सुहेला इक अकेला सर्ब कला भरपूर, पतिपरमेश्वर पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां आसा मनसा करे पूर, कूड़ी क्रिया माया ममता तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। चरण प्रीती साची नीती कँवल धवल देवे धूढ़, अवल आपणा रंग रंगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, नाम निधाना श्री भगवाना इक्को करे पढ़ाईआ। जन भगतां पन्ध मुकाए नेड़े दूर, अन्तर आत्म हाज़र हज़ूर, साहिब स्वामी अन्तरजामी, घट भीतर मेला मेले सहिज सुभाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद गुर अवतार पैगम्बर सुणाए बाणी, बानी हो के आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जन भगतां देवे नित नित्त दाद ब्रह्म ब्रह्माद धुर दी इक निशानी, जिस दा निशाना नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं जगत विद्या समझे ना कोई विद्वानी, चौदां विद्या नेत्र रोवे मारे धाईआ। जन भगतां उपर करे आप मेहरवानी, महबूब हो के

मुहब्बत विच दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंज़ल करे आसानी, देणी पए ना कोए कुरबानी, बख़्शे इक्को पद निरबानी, थिर घर साचा सच दवारा इक जणाईआ।

✪ २२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ वीरो देवी पिण्ड धंगाली कैंप छले जम्मू ✪

रिषी कहिण परम परम प्रभ पाया धुर दा राम, रमईआ राम नज़री आईआ। धरनी कहे पूरा कर के आपणा काम, मेरा लहिणा रिहा चुकाईआ। आसा कहे मैं करां प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भरवासा कहे मैं होया बलवान, जिस पिछला पैंडा ल्या मुकाईआ। लहिणा देणा कहे मेरा पूरा कौल होया आण, इकरार दिता भुगताईआ। भाग लगा के जंगल बीआबान, जूह मिली वड्याईआ। सच पदार्थ खा के पकवान, पक्के कच्चे आपणे रंग रंगाईआ। भूमी सोहे अस्थान, वज्जे सच वधाईआ। भगत करे परवान, भगवान बेपरवाहीआ। मंज़ल होए आसान, मुश्कल हल्ल कराईआ। सच दवारे देवे आराम, धाम सुहञ्जणा इक सुहाईआ। जित्थे इक्को वार करनी पए प्रणाम, दूसर सिर ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। रिषी कहिण साडी रास आई राशी, रस्ता मिल्या बेपरवाहीआ। घर पा पुरख अबिनाशी, करनी दा करता नज़री आईआ। जन्म जन्म दी लाह उदासी, अंदरों चिन्ता दिती कढाहीआ। तोड़ कट जमां दी फाँसी, फ़ैसला इक्को हुक्म सुणाईआ। भगत सुहेले कर के दासी, दहि दिशा वेख वखाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतासी, गुणवन्ता होए सहाईआ। जन भगत कोई ना होवे मदरा मासी, स्वास स्वास इक्को नाम ध्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे अन्तर हो के बणे सच्चा पाठी, पाठशाला काया मन्दिर आप वखाईआ।

✪ २२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ धन्ना सिँघ दे घर पिण्ड खेरोवाल कैंप छले जम्मू ✪

प्रभ कहे हरि संगत मेरा परिवार, पारावार कहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां नूं जुग जुग विछोड़दा रिहा संसार, अन्त आपणे नाल मिलाईआ। सच प्रीती दे के चरण प्यार, प्यार मुहब्बत विच्चों लए प्रगटाईआ। पूरब लहिणा लेखा कर्म विचार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। मेहरवान हो के निक्के वड्डे जोबनवन्ते सारे जाए तार, तारनहार बेपरवाहीआ। चुरासी विच होए ना कोए खुआर, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। अंदर बाहर करे संभाल, एथे ओथे होए सहाईआ। जन भगत रहे ना

कोए कंगाल, नाम भण्डारा झोली पाईआ। पिता हो के करे प्रितपाल, बालक आपणे गोद उठाईआ। इक इक्क दा लेखा जाणे अहिवाल, भुल विच ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत देवे माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे हरि संगत मेरी धार, सतिजुग सच मिले वड्याईआ। जिस दा लेखा रहे जुग चार, चार कुण्ट ना कोए मिटाईआ। जुग चौकड़ी गाउँदे रहिण वार, वारता विच आपणा राह वखाईआ। करदे रहिण निमस्कार, नमों नमों कह के सीस झुकाईआ। मनाउँदे रहिण त्योहार, खुशीआं विच्चों खुशीआं आप प्रगटाईआ। झुकदे रहिण हरि भगत दवार, पैंडे पन्ध मुकाईआ। गाउँदे रहिण निरँकार निरँकार, विष्नूं भगवान जैकार सुणाईआ। अन्त अख़ीरी शब्द ज़ंजीरी आत्म परमात्म जाए डार, अंदर सके ना कोए तुड़ाईआ। अगे होण ना देवे खुआर, खुआरी विच रखे लोकाईआ। रिषीआं दा पूरा कीता विहार, एसे कारन एथे ल्या टिकाईआ। सो लहिणा देणा पूरब कर्ज चलया उतार, मकरूज आप चुकाईआ। अगे दे के सच प्यार, घराने साचे दए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत तेरा बणया रहे अधार, सहारा इक्को इक नज़री आईआ।

७८३
१६

✪ २२ जेठ शहिनशाही सम्मत २ बुढो देवी दे घर कैंप छेले जम्मू ✪

रिषीओ तुहाडा पूरा होया वर, वऱे बरस गिणन दी लोड़ रही ना राईआ। प्रभ दर्शन ल्या कर, दर्शन दे के खुशी मनाईआ। सब दा चुकया डर, जम डण्ड ना कोए लगाईआ। इक्को पल्लू ल्या फड़, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साचे मन्दिर जाणा चढ़, खुशीआं नाल पन्ध मुकाईआ। नहाउणा इक्को सर, दुरमति मैल रहे ना राईआ। खुशीआं नाल सब ने जाणा आपणे घर, गृह गृह वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे उत्ते किरपा जाए कर, मेहरवान हो के मेहर नज़र नाल तराईआ।

✪ पहली हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल अमृतसर ✪

हाढ़ कहे मैं नव नौ चार रिहा हड़दा, हाढ़े कढ्ढ के दयां दुहाईआ। जुग चौकड़ी रिहा डरदा, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। तूं ही तूं ही रिहा पढ़दा, दिवस रैण ढोला गाईआ। भेव लभ्भदा रिहा साचे घर दा, गृह मन्दिर लख चुरासी फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रिहा वरदा, नाता तत्तां वाला रखाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जलधार रिहा ठरदा, वैहन्दा वहण वेख वखाईआ।

टिल्ले पर्बत उच्चे रिहा चढ़दा, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। बिरहों विछोड़े अंदर रिहा मर्दा, वैरागी हो के ध्यान रखाईआ। नित नवित भाणा रिहा जरदा, हाए उफ़ ना कोए कढाहीआ। साधां सन्तां पल्लू रिहा फड़दा, सूफ़ीआं कन्नी नाल गंढु रखाईआ। दरयावां समुंद सागरां विच रिहा तरदा, तारी आपणी आप प्रगटाईआ। कुंदरां अंदर रिहा वड़दा, भज्जया वाहो दाहीआ। मेरा कारज कितों ना सरदा, आह सरद ला के दयां दुहाईआ। धन्न भाग जे वेला वक्त आया नरायण नर दा, दो जहानां वज्जे वधाईआ। लहिणा देणा मूल चुकाए सब दा, पूरब लेखा दए मुकाईआ। झगड़ा रहे ना कूड़ कल दा, कलयुग मेटे कूड़ी शाहीआ। जेहड़ा भण्डारा लेखे लग्गा नहीं बल दा, बावन हो के दए गवाहीआ। लेखा समझया ना कोए अन्न जल दा, जुग चौकड़ी गए विहाईआ। रिषीआं मुनीआं भेव खुल्ह्या ना घड़ी पल दा, पलक उत्तों परदा ना कोए उठाईआ। सच दुआर कोई ना मल्लदा, सिँघासण हक ना कोए सोभा पाईआ। जोती धार कोए ना रलदा, शब्दी शब्द ना कोए समाईआ। घर खेल वेख्या नहीं अबचल दा, चलत विच जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। हाढ़ कहे मैं कढ्ढां हाढ़ा, हौकयां नाल जणाईआ। जुग चौकड़ी धुरदरगाही मिल्या कोई ना लाड़ा, रंडेपा अन्त ना कोए कटाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां वेंहदा रिहा अखाड़ा, जो सख़ियां बण के प्रभ दा नाच नचाईआ। निशाना तक्कदा रिहा रवि ससि सूरज चन्द सतारा, सतह हक ना कोए पहुंचाईआ। चार युग साचे दर दरवेश बणया रिहा वणजारा, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहीआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए मुनारा, चरण ढह के सारे सीस निवाईआ। जुग चौकड़ी खेल वेखदा रिहा न्यारा, निरँकारा आप खुल्हाईआ। कागत कलम ना लिखणहारा, शाही चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग तक्कया अगम्म अपारा, अथाह बेपरवाह बेनज़ीर दिता वखाईआ। बल बावन वाला उधारा, बिना उदर तों रिहा मुकाईआ। साचे रिषीआं कर प्यारा, प्रेम प्रीती इक धराईआ। भगती दा भर भण्डारा, भगवन इक्को वार दए वरताईआ। कलयुग मेट कूड़ पसारा, साचा नूर करे रुशनाईआ। सतिजुग बन्न्हे साची धारा, धर्म दया दा पूत अख्वाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त आया बेपरवाहीआ। साचा खेल करे विच संसारा, संसारी भण्डारी वगारी लए बणाईआ। दिवस रैण नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, अगे चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ कहे मैं रिहा डुब्बदा, किनारा नज़र कोए ना आईआ। किसे हाल ना पुच्छया मुझ दा, मुश्कल हल्ल ना कोए कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा धुखदा, धूआँधार वेखी लोकाईआ। वेला वक्त मिल्या ना कोए सुख दा, चिन्ता ग़म ना कोए चुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत नाता जुड़या वेंहदा रिहा उलटे रुख़ दा, रुख़सत देह छुट्टी ना मनाईआ। झगड़ा

७८४ १६

रिहा अन्तर अन्तर आत्म परमात्म चुप्प दा, मिल के ढोला ना कोए सुणाईआ। नाता जुड़या ना पिता पुत्त दा, कलमयां विच कायल हो के दिते भुलाईआ। घराना दिसया ना मालक उच्च दा, अगम्म अथाह ना कोए सरनाईआ। मेला मिल्या ना अबिनाशी अचुत दा, चेतन रूप ना कोए बणाईआ। चार जुग निशान्यौं रिहा उकदा, तीर अंदाज़ रूप ना कोए वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सहारा तक्कदा रिहा टुक्क दा, टुकड़यां विच दीन मज़्ब वण्ड वण्डाईआ। बिना पुरख अकाल सिध्धा गोद कोए ना चुकदा, भगत भगवान रूप ना कोए रखाईआ। झगड़ा मक्के ना आवण जावण दु:ख दा, दलिद्रां विच्चों ना बाहर कढाहीआ। मैं शुकराना करां उस दा, जो मालक बेपरवाहीआ। जिस लहिणा देणा मुकाया योजनां वाले कोस दा, कसम विच्चों भस्म दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पहली हाढ़ कहे मैं रिहा रोंदा, जुग जुग नीर वहाईआ। साची सेज कदे ना सौंदा, सुखआसण सोभा कोए ना पाईआ। चार कुण्ट रिहा भाउँदा, भज्जया वाहो दाहीआ। वरनां बरनां रिहा मिलाउँदा, दीनां मज़्बां लेखा दयां चुकाईआ। इक्को पुरख अकाल रिहा दृढ़ाउँदा, जो सब दा पिता माईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर ध्याउँदा, दिवस रैण मंगे सरनाईआ। ओह

७८५
१६
मालक ख़ालक प्रितपालक इक अख्वाउँदा, ना मरे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी जीव जंत उस तों कन्नी रिहा कतराउँदा, सनमुख हो के दरस कोए ना पाईआ। कोटां विच्चों थोड़यां अंदर वड़ के रिहा मिलाउँदा, कबीर जुलाहा दए गवाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीर राह रिहा तकाउँदा, बिन अक्खां अक्ख बदलाईआ। धरनी धवल आपणा वेला वक्त सुहाउँदा, सोहणी रुतड़ी सोभा पाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाउँदा, मिलणी जगदीश आप कराईआ। साची वार थित आप सुहाउँदा, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। पूरब इच्छया पूर कराउँदा, पूरब लहिणा झोली पाईआ। सच समग्री नाल रलाउँदा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जन भगतो तुहाडा मार्ग इक चलाउँदा, जिस दा चलन सके ना कोए अटकाईआ। अनन्द कारज ओह रचाउँदा, जिस विच्चों रचना दिसे शहिनशाहीआ। साचा सगन जन भगतां मुख लगाउँदा, दु:ख अंदरों बाहर कढाहीआ। हाढ़ कहे मैं हार के आपणा आप बदलाईआ। बदल के वेखां धुर दा माहीआ। जिस दा चार युग राह तकाउँदा, गुर अवतार पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। ओस दा वक्त सुहञ्जणा नेड़े आउँदा, घड़ी पल रिहा बीताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे मैं वेख्या सब दा हिरदा, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। जो भगत विछड़या चिर दा, चिरी विछुन्ने लैणे मिलाईआ। मेल कराउणा साचे पिर दा, जो प्रीतम हो के गोद उठाईआ। घर वखाउणा साचे थिर दा, जित्थे गुरमुखां मिल के वज्जे वधाईआ। लहिणा

देणा जगत जहान निबड़दा, बाकी रहे ना राईआ। जन भगत सच दुआर वस कदे ना उजड़दा, उजड़े खेड़े सोभा पाईआ। मानस जन्म गुरमुखां सदा सुधरदा, सिध्धा रस्ता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। हाढ़ कहे मैं फिर फिर थक्का, थकावट आपणी दयां जणाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख के होया हका, हकीकत बैठी मुख छुपाईआ। जगत वासना फाँसी प्या रस्सा, रसतिउँ भुल्ली लोकाईआ। किसे नहीं वेख्या क्यों होड़ा लग्गा उपर सस्सा, चौथे अक्खर वज्जी वधाईआ। क्यों हाहे उत्ते टिप्पी रखी मसा, मसले सब दे वेख वखाईआ। चुरासी विच्चों किसे ना खोल्ही अक्खां, आख़र बैठे मुख छुपाईआ। भाग लग्गा ना काया माटी कुली कक्खां, दीआ बाती घर जोत ना कोए रुशनाईआ। हाढ़ कहे मैं कथा कहाणी साची दस्सां, दहि दिशा दयां जणाईआ। दरस मंगां अठ्ठ पहर बिना पाँधीउँ पाँधी बण के नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हाढ़ कहे मेरी अन्तिम आ गई वारी, वारता दयां जणाईआ। जन भगतो जागणा नाल हुश्यिारी, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। किसे दी आत्म ना रहे कँवारी, कन्यां रूप लैणा बदलाईआ। परम पुरख परमात्म नाल लाउणी अगम्मी यारी, याराने कूड़े देणे तजाईआ। लोकमात ना रहे खुआरी, खुमारी अगली दए चढ़ाईआ। नौ सौ चुरानमें चौकड़ी जुग पिच्छों एह भगतां दे हथ्थ आई सतारां हाढ़ी, हाढ़े कढदी गई लोकाईआ। खुशी वेखण मिल के पुरख नारी, नर नरायण दए वखाईआ। गुरमुख किसे दर ना रहे पनहारी, पनघट तों बाहर डेरा लाईआ। महल अटल दस्स के इक उच्च अटारी, टिल्लयां पर्बतां दा खैहड़ा देणा छुडाईआ। करे खेल आप बनवारी, बिवहारी भेखाधारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी दा करता बण करतार, कुदरत आपणी वेख वखाईआ। हरि संगत रहिणा ख़बरदार, बेख़बरां खबर पहुंचाईआ। जगत तों वक्खरा विहार, चार युग जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। भगतां दा उधार, पृथ्मी दा सुधार, गगनां दा चमत्कार, मण्डलां दा लिशकार, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे जन भगतो वेला आया नाज़क, बेनज़ीर रिहा जणाईआ। इक दे बण जाओ आजिज़, अज़ीज़ हो के सीस निवाईआ। मनूए मन दी रहिण नहीं देणी साज़श, शरअ विच्चों शरअ देणी बदलाईआ। अग्नी अग्ग रहे ना आतश, सांतक सति दए कराईआ। गुरमुख बण के नन्न्हे जिहे यातक, यथार्थ आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी भगतां झोली पाईआ। हाढ़ कहे मैं संदेसा देवां इक, एकँकारा दिता जणाईआ।

सवाधान रहिणा इक्की सिख, सिख्या बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी दा लहिणा देणा लए नजिठ, वेला वक्त दए वड्याईआ। माझे वाल्लयो तुहाडा लेखा चुकाए जो गोबिन्द दिती पिठ्ठ, पिछला पूर कराईआ। अगे मानस जन्म ल्या जित्त, बिना यतन दए वड्याईआ। धुरदरगाही लेखा लिख, लिख्त भविख्त दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कुदरत विच समाईआ। हाढ़ कहे मैं आया मातलोक, अलौकिक दयां जणाईआ। जन भगतो प्रभ मिलण दा सच्चा शौक, शौकीन हो के वेख वखाईआ। तुहानूं कोई ना सके रोक, आउणा चाँईं चाँईंआ। प्रकाश लै के जाणा धुर दी जोत, नूर नूर रुशनाईआ। मरन तों पहलां तुहाडी लेखे लावे मौत, मौत तों पिच्छो ख़ौंत आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म सुणना रविदास, गुरमुख सच दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले यारां हाढ़ दी आवे रात, वक्त यारां यारां समझाईआ। नाल रखणी कलम दवात, पंजां नाल सोभा पाईआ। बैठणा इक इकांत, चरण कँवल सरनाईआ। दस्सां इक सिधांत, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। वक्खरी मिले दात, दाता दए वरताईआ। सतारां हाढ़ दा लेखा ख़ास, ख़सम नाल होए कुड़माईआ। भगत भगवान दा होवे इक विश्वास, विषयां चों बाहर कढाहीआ। पूरब लहिणा देणा दे के आप, आपणा परदा दए उठाईआ। करे खेल साख्यात, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। शब्द अगम्मी धुर दी दात, आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म दए समझाईआ। हुक्मे अंदर इक फ़रमान, सहिज सहिज जणाईआ। सुणना नाल ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। सतारां हाढ़ कुंदन सिँघ कराउणा इश्नान, ग्लास इक्की वण्ड वण्डाईआ। पुरख अबिनाशी होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। लेखा कहे मैं बड़ा लखार, जुग जुग लेख बणाईआ। हुक्मे अंदर फिरां जुग चार, भज्जां वाहो दाहीआ। अमरजीत सिँघ संदेसा दयां धुर दी धार, धर्म दी कार कमाईआ। सीस बन्नू नीली दस्तार, पोशाक चिट्टी तन छुहाईआ। पंज लै कलीआं दे हार, पंजां प्यारयां देणे पहनाईआ। कर के निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा दरसाईआ। निमस्कार कर के जाणा उठ, मुख चढ़दी दिशा रखाईआ। तेजभान दा फड़ना सज्जा गुट, उंगलां नीचे अंगूठा उपर नज़री आईआ। अजीत सिँघ कोलों पाणी मंगणा घुट, जो बटाल्यों लै के एथे दए पहुंचाईआ। जसवन्त सिँघ उपर देवे सुट्ट, जो इटारसी बैठा डेरा लाईआ। मनजीत कौर होवे सनमुख, जसबीर कौर प्रीतम सिँघ दी बेटी नाल मिलाईआ। कुलदीप कौर पढ़े तुक, सोहँ ढोला बिशन सिँघ दी जाईआ। आई हरि संगत सारी होवे

खुश, वज्जे नाम वधाईआ। मुक्खों कहिणा नाता जुड़या पिता पुत्त, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे तुहाडा जन्म मरन दा मेटया दुःख, साचे चरण मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पंज प्यारे पंजे हार, तन नाल छुहाईआ। फेर कटण आपणी नंगी कटार, टुकड़े दो दो बणाईआ। अमरजीत सिँघ फेर गलों लए उतार, प्रभ चरणां भेंट कराईआ। किरपा करे आप निरँकार, जम की फाँसी सब दी दए मुकाईआ। दाअवे नाल चुरासी विच्चों कर के पार, चुरस्ते विच्चों बाहर कढाहीआ। सचखण्ड दवारे लै के जाए एको वार, दूजी वार बाहर ना कोए कढाहीआ। अगे होर बहुता विहार, हाढ़ यारां दए लिखाईआ। जन भगतो तसीं वेखण नूं रहो त्यार, घर साचे दए वखाईआ। प्रभ दी मौलण लग्गी बहार, खुशीआं दी रुत्त आपणा रंग बदलाईआ। पूरब लहिणा दए उतार, कन्या दी शादी दा विवहार, सिक्दार आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पावणहार सार, सरसे वाले वेखे यार, शहिनशाह हो के खोज खुजाईआ।

✪ ११ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल दरबार विच ✪

यारां हाढ़ कहे मेरा तत ना सरीर, शरीर फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। मेरे अन्तर प्रभ मिलण दी इक तदबीर, तकदीर मेरी नाल कुड़माईआ। मेरा दिहाढ़ा धन्न पहली वार सुरती शब्द मिली कबीर, काया काअबे वज्जी वधाईआ। जिस ने अन्तर अन्तर किहा मैं ग़रीब, मन ग़ायब कर के गुरबत दिती गवाईआ। धुर फ़रमान सुणी इक हदीस, हरि हज़रत दिती पढ़ाईआ। जिस दा लेखा नहीं विच बतीस, सिफ्त विच ना कोए समझाईआ। बिन सिर तों झुक गया सीस, बिन सजदिउँ सर निवाईआ। गल कोई नहीं कमीज़, कमलयां दा कमला नज़री आईआ। पुरख अकाल फेर किहा मेरे अज़ीज़, प्रेम प्यार विच बुलाईआ। हुक्म दी दे तमीज़, सच नाम करी शनवाईआ। कबीर तक्कया नाल नीझ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म करदा वेख्या प्रीत, प्रीतम बेपरवाहीआ। होया ठांडा सीत, अग्नी तत बुझाईआ। गाया धुर दा गीत, सोहँ विच समाईआ। निकली बिरहों चीक, कूक कूक दुहाईआ। पुरख अकाल आया नजदीक, अंदर वड़ के परदा लाहीआ। कबीरा, शहादत देवां कि करां तस्दीक, कि हुक्म दयां समझाईआ ? बाहर दिसां कि भीत, भय विच वड़्याईआ ? कबीर अंदरे अंदर नक्क नाल कढ्ढी लीक, बिन लाईन लाईन दिती लगाईआ। श्री भगवान तेरे नाल बोलणा नहीं मैं नाल जीभ, रसना वाली ना कोए पढ़ाईआ। धुर दा हुक्म दे ठीक, ठाकर बेपरवाहीआ। साची दस्स तारीख, तारीक दे बदलाईआ। जन भगतां भिच्छया

पावीं भीख, नाम निधान वरताईआ। श्री भगवान किहा पहलों तेरी पूरी करां रीझ, रहमत रैहम नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। यारां हाढ़ कहे कबीर ने वेख्या नूर, निराकार नज़री आईआ। तक्कया उह हज़ूर, जो सब दा पिता माईआ। वेख्या हक दस्तूर, हुक्म बेपरवाहीआ। जित्थे पाए ना कोए फ़तूर, फ़तवे विच ना कोए लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बैठे मज़दूर, बिन सीस जगदीस झुकाईआ। मालक दिसे इक हज़ूर, हाज़री सब दी वेख वखाईआ। सर्ब कला भरपूर, दाता बेपरवाहीआ। बिन इच्छया चरणां दे अन्तर ला लई धूढ़, धूल आपणे नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दिता वखाईआ। यारां हाढ़ कहे कबीर सोया धुर दे काअबे, कलमा सुणया धुरदरगाहीआ। नज़ारा तक्कया हक महिराबे, महबूब मिल्या बेपरवाहीआ। सजदा कर अदाबे, नमस्ते सीस निवाईआ। इशारा दिता नानक बुढ्ढे बाबे, बिन तत्तां अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी आदि जुगादि इक मरयादे, धुर दा हुक्म सच वरताईआ। जन भगतां दे साफ़ करने इरादे, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जो आत्म परमात्म साजण साजे, सज्जण बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर वजाए वाजे, नाद धुन शब्द शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जागे, लोकमात लई अंगड़ाईआ। जो लहिणा देणा चुकाए हिसाबे, पूरब वेख वखाईआ। मैं नज़ारा तक्कया इक बग़दादे, बग़ल कुरान टिकाईआ। वस्त्र पहन के जगत विहार सादे, साधन आपणा इक जणाईआ। मैं सुणी इक आवाज़े, अगम्म दिती दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हाढ़ यारां कहे नानक तक्कया नाल कबीर, बिन सरीर नज़री आईआ। शहिनशाह वेख्या बेनज़ीर, दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म हुक्म विच्चों होवे तामीर, तुख्म विच्चों तासीर लवे बदलाईआ। मंज़ल वेखे अख़ीर, चोटी नूर अलाहीआ। साची सति जागीर, हक विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा भेव चुकाईआ। कबीर कहे यारां हाढ़ मिली दाद, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल सुणी फ़रयाद, मेहर नज़र उठाईआ। वेला वक्त मैनूं याद, भुल्ल विच ना कोए भुलाईआ। नानक किहा मेरा लेखा विच बग़दाद, दिवस एहो सोभा पाईआ। धुर दी सुणी सच आवाज़, नाअरा हक अल्हाईआ। सत्त सतरां वाली किताब, पुरख अकाल बाहरों दिती वखाईआ। जिस दे विच ओसदा आदि, अन्त ओसे विच छुपाईआ। नानक किहा मैं कर ना सक्या कोई स्वाल जवाब, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। कबीर कहे मैं पुच्छ ना सक्या राज़, नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अबिनाशी करते इक वजा अगम्मी साज, सज्जण हो के दिता जणाईआ। आदि जुगादी जिस दे हथ्थ वाग, उह मालक नज़री आईआ। जित्थे वजाउणी पए ना कोए रबाब, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। कबीर कहे दिवस चंगा, मैनूं पिछला नज़री आईआ। चरणां विच वैहन्दी वेखी गंगा, जिस वेले प्रभ ने दया कमाईआ। मेरा चम्म पिण्डा नंगा, ओढण नज़र ना कोए वखाईआ। विंगा टेडा हथ्थ विच डण्डा, पंज फ़ुट सत्त इंच नज़री आईआ। होया प्रकाश बिन सूरज चन्दा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मैं भागहीण बन्दा, बिन बन्दगीउँ ल्या तराईआ। भेव खुल्ल्या हैं ब्रह्मा, आत्म वज्जी सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। कबीर कहे यारां हाढ़ होया वाधा, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। सुणया इक अगम्मी रागा, मेरा तेरा राग अलाहीआ। दुरमति मैल धोया दाग़ा, पतित पुनीत दिता बणाईआ। सच दवारे होया वाधा, पिछला पैंडा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा रिहा वखाईआ। कबीर कहे यारां हाढ़ मेरी अंदरों खुल्ली अक्ख, बिन अक्खां सब कुछ नज़री आईआ। परम पुरख वेख्या प्रतख, जोती जाता नज़री आईआ। जिस दा हुक्म सदा जगत सच, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लेखा जाणे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ सोभा पाईआ। भाग लगा के हड्ड मास नाड़ी रत्त, रतन अमोलक दए बणाईआ। हर घट अंदर रिहा वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। इक्को मैनूं दस्सया जस, सोहँ ढोला दिता समझाईआ। कबीर बिन कबरां तों जाणा वस, बिन काअब्यों कलमा दयां जणाईआ। मैं चरणीं डिगा ढठ्ठ, जुलाहा दए दुहाईआ। अबिनाशी करते मैनूं दस्स, की तेरी बेपरवाहीआ। क्यों जुग जुग भगतां लावें सट्ट, लोकमात भटकाईआ। तेरा वड्डा डूँग्घा वेख्या हट्ट, जित्थे तोट रहे ना राईआ। क्यों भगतां तों रवें वक्ख, दूर दुराडा डेरा लाईआ। बचन अमोलक दे सच, सुच संजम नाल समझाईआ। तूं परमेश्वर कमलापति, पारब्रह्म अख्वाईआ। सब कुछ तेरे हथ्थ, दूजे दर ना मंगण जाईआ। पुरख अकाल प्या हस्स, खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। मेरा खेल अलखणा अलख, लेखे विच ना कोए रखाईआ। कबीर मेरे चरणां ला हथ्थ, सज्जा खब्बे नाल छुहाईआ। भेव खोल्हां पुरख समरथ, जो समें दए बदलाईआ। जुग चौकड़ी करां भठ्ठ, खेड़े ख़ाक विच मिलाईआ। निरगुण हो के रिहा नठ्ठ, सरगुण वेखां थाउँ थाँईंआ। हुक्म संदेसा देवां सच, धुर दी धार इक जणाईआ। कलयुग अन्त होवां प्रगट, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके कोई भट्ट, गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। निरगुण नूर हो के आवां नठ्ठ, जोती जाता हो के भेव चुकाईआ। सब दा लहिणा देणा देवां हक, पूरब लेखा दयां चुकाईआ। भगत सुहेले गोदी चक्क, चक्क चक्क आपणा रंग रंगाईआ। आवण जावण विच ना जावां थक्क, दो जहानां आपणा खेल वरताईआ। इक्को नाम संदेसा दे के सति, सति सतिवादी लवां उठाईआ। शब्दी हुक्म दे के मत, मनमति दयां गवाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कबीर तैनूं सच सच दृढ़ावांगा। बिन तेरे हक सरीर, हुक्म धुर दा आप सुणावांगा। बण के मालक पीरां पीर, पैगम्बरां नाल वखावांगा। शरअ दी तोड़ ज़ंजीर, धुर दा हुक्म इक दरस्वांगा। शब्दी शब्द खिच शमशीर, खण्डा खड़ग इक चमकावांगा। सतिजुग सच कर ताअमीर, तमअ कूड़ जगत गवावांगा। झगड़ा रहे ना जगत अमीर, उमराउ ख़ाक मिलावांगा। जन भगत सुहेले वेख फ़कीर, फ़िकरा इक्को इक पढ़ावांगा। तेरे नाल करां तहिरीर, बिन अक्खरां लेख लिखावांगा। कलयुग अन्त होवे आखीर, शहिनशाह हो के देवां धीर, हुक्म शहिनशाही चलावांगा। जन भगतां अंदरों कट के द्वैती पीड़, बिरहों रोग आप गवावांगा। चार वरन अठारां बरन होवे भीड़, डूँग्घी धार आप वहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप दरसावांगा। साची खेल आप दरसावेगा। वेला वक्त आप सुहावेगा। लेखा जाणे जीव जहान जगत, दो जहानां पन्ध मुकावेगा। जन भगतां लहिणा देणा लेखा मुकावे फ़कत, फ़िकरा आपणा आप समझावेगा। जेहड़ा हुक्म शब्दी दिता बिना दसख़्त, दस्तयाब आप करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक मनावेगा। कबीरा, मेरा एह उच्च दिहाढ़ा, पुरख अकाल जणाईआ। कबीर कहे मैं पाया लाड़ा, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे मैं हाढ़ दा सुणया हाढ़ा, जो हौकयां विच जणाईआ। पूरब मिलदा वेखणा उधारा, बावन नाल भुगताईआ। रिषीआं दिता लारा, वेला वक्त दए गवाहीआ। खेल अगम्म अपारा, हरि करता दए भुगताईआ। आई कलयुग अन्तिम वारा, वारता पिछली दए सफ़ाईआ। सच दुआर दा इक अखाड़ा, इक्को घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कबीर सुण हाढ़ा बात, बातन दयां जणाईआ। शब्द संदेशे चलया आख, हुक्म विच मनाईआ। कलयुग होवे अन्धेरी रात, समां जाए बदलाईआ। साची रहे ना कोए जमात, हकीकत हक ना कोए समझाईआ। भगत रहे ना कोई ख़ास, ख़ालस रूप ना कोए वटाईआ। ओस वेले आवां आप, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जन भगतां बणां बाप, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जीवण जुगत दयां बदलाईआ। कोटन कोटि मेट के पाप, दुरमति मैल धवाईआ। दर्शन दे के सख्यात, पूरब लेखा दयां चुकाईआ। रविदास हथ्थ फड़ा के कलम दवात, पंजां नाल करां शनवाईआ। जन भगतो तुहाडा लहिणा देणा दस्सां ख़ास, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। जिस मंज़ल ते कबीर नूं दिती दात, वस्त अनमुलड़ी झोली पाईआ। तुहाडी ओस नाल मिल के अगे हो गई जमात, अगे पट्टीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। सतारां हाढ़ अगे इक्को वार दे देणा विश्वास, वासना कूड़ी बाहर कढाहीआ। पंजां प्यारयां कर सच प्रकाश, नूर नूर विच रुशनाईआ। एह

लेखा जुगादि आदि, आदि वज्जी वधाईआ। जिस कारन रचया एह काज, बल बावन हो के फेरा पाईआ। जिस पंच परवान कर के मारी आवाज़, पंच प्रधान रूप वटाईआ। दर सोहे पंचे भगतां विच समाज, साजण हो के वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडा अंदरों बदल देवे स्वाद, सवा दा सवा सवा सवा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कबीर किहा मैं सुणया शब्द अनोखा, सोहणा दिता दृढ़ाईआ। भगतां नाल करीं ना धोखा, एह अन्तिम मंग मंगाईआ। मेरा मित्र इक छोटा, उमर तेती साल दरसाईआ। जिस मैनूं पंज सत्त दा दिता सोटा, विंगा टेडा हथ्थ फड़ाईआ। ग़रीबी नाल तेड़ रखे लंगोटा, ओढ़ण हथ्थ ना कोए रखाईआ। कच्चा मिट्टी दा रखे लोटा, आसण कक्खां वाला रखाईआ। भार चुकण नूं रख्या खोता, गधा कहे सर्ब लोकाईआ। मस्ताना हो के देवे होका, मिट्टी ख़ाक नाल उडाईआ। दुनियादारो साफ कर लओ काया कोठा, महल अटल कम्म किसे ना आईआ। कबीर कहे प्रभू ओस ने इक दिन मेरी उंगल दा चुंघ ल्या पोटा, सज्जे हथ्थ दा वड्डा हिस्सा नज़री आईआ। मेरे अंदर मार के गोता, माणक मोती तेरा नाम ल्या उठाईआ। मेरे जुलाहे दा साफ़ हो गया चौंका, भिट रही ना राईआ। इक अमृत सच तरौंका, सांतक दिती वरताईआ। भेव खुल्ल्या तेरे नाउँ दा, नौका मिली बेपरवाहीआ। मेरा रूप ना रिहा काउँ का, हँस हो के सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कबीर किहा मेरे मित्र दा छोटा इक भ्रा, उमर सताई साल वखाईआ। उह हुन्दा सी बेपरवाह, ग़मी खुशी ना कोए मनाईआ। उस नूं सारे कैहिंदे होया शुदा, शुदा कोल ना कोए बहाईआ। इक दिन मैनूं हस्स के कैहिंदा कबीरा मैनूं वखा खुदा, जो खुदी दए मिटाईआ। सिध्धा हो के उपर ध्यान ल्या लगा, अक्खां उंगलां नाल उलटाईआ। नेत्र नैणां नीर रिहा वहा, रो रो दए दुहाईआ। मैं हुण नहीं रहिणा जुदा, वक्खरी वण्ड ना कोए वखाईआ। कबीर कहे ओधरों हुक्म दिता बेपरवाह, शब्द संदेशे विच जणाईआ। कबीरा इन्हां नूं लै पर्चा, पर्चा मेरे नाम दा इक वखाईआ। अगला लेखा देवां बणा, सहिजे दिता समझाईआ। जिस वेले बण के आवां शहिनशाह, पातशाहां दा पातशाह रूप बदलाईआ। दोहां दा नाता लवां जुड़ा, जगत विछड़े मेल मिलाईआ। दोहां नूं बणा के भैण भ्रा, लेखा अगले घर रखाईआ। कबीर किहा मैनूं वी देणा वखा, झोली तेरे अगे डाहीआ। पुरख अकाल किहा एहो दिवस दयां सुहा, हाढ़ यारां वज्जे वधाईआ। दोहां दा मेला लवां मिला, तेरी शहादत देवां भुगताईआ। बावन दा लहिणा देवां चुका, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। परदयां विच्चों परदा देवां उठा, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिस नूं कैहिंदे होया शुदा, उमर सतावीए साल समझाईआ। दूजे दा लहिणा देवां बणा, वड्डे दी वड्डे नाल वड्याईआ। जिस उंगली नूं

७६२
१६

उंगल दिती ला, उगण आथण ताईं होए रुशनाईआ। एसे सुरस्ती दा मनी सिँघ लेखा गया लिखा, संगरूर विच बह के कलम चलाईआ। ओस दा पिछले जन्म दा भ्रा, सरूप सिँघ दिता समझाईआ। कबीर दोहां दा विचोला बणया जुलाह, गंढु आपणे नाल रखाईआ। जिस कन्यां दा होणा विवाह, वाइदे विच काइदे दए बणाईआ। साढे नौ दा वक्त जाणा आ, अठारां हाढ़ वज्जे वधाईआ। पंजां प्यारयां तलवार पंज वार प्रभ दे सीस उत्ते देणी टिका, ठोकर नाल देणी हिलाईआ। इक्कीआं जैकारे देणे ला, इक्की वार वज्जे वधाईआ। सुरस्ती तिलक देणा लगा, भज्जे चाँईं चाँईंआ। बुढ्ढी दादी दोहां दे सिर ते हथ्थ देणा टिका, टिकटिकी इक्को विच रखाईआ। लाल सिँघ ने कृपान देणी फड़ा, सज्जे हथ्थ नाल छुहाईआ। ब्रह्मण तीर कमान अगे देणा टिका, टके पंज नाल वखाईआ। अमरजीत पंजे हार लैणे उठा, प्रभ चरणां उत्तों चुक के हरि संगत उत्ते देणे बरसाईआ। फिर अगला विहार होवे रवां, समां आपणा रंग बदलाईआ। जन भगतो तुहानूं उह संदेसा कहवां, जिस दी कहाणी ना कोए सुणाईआ। सदा तुहाडे अंदर रहवां, बह के ख़ुशी मनाईआ। वेख्यो कोईं ना करयो ग़मा, ग़मी अंदरों दयां कढाहीआ। मैनूं तुहाडे मिलण दी तमअ, तुसां लालच मेरा बणत बणाईआ। मैं बदल के सारा समां, जगत विहार परे देणे सुटाईआ। तुहाडा लेखा ला के दम दमा, दमड़े चमड़े सारे आपणे हट्ट विकाईआ। तुहाडा जीवण कर के नवां, रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा इक हुक्म वरताईआ। सतारा हाढ़ कहे मैनूं हुक्म मिलदा सख्त, हैरानी मेरे अंदर आईआ। जिउँ जिउँ वेला नेड़े आउँदा वक्त, व्यक्ति रिहा हिलाईआ। मेरी मुकदी जांदी शक्त, शक्ती नज़र कोए ना आईआ। मैं वेंहदा चार कुण्ट जगत, नव सत्त अक्ख खुल्हाईआ। बौहड़ी हाए दरोही उफ़ मैनूं थोड़े दिसदे भगत, भागवान सोभा पाईआ। बाकी उत्ते फिरदी दिसे करद, कदमां तों दूर ख़ुदाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वण्डे कोई ना दर्द, दुखी दीन देण दुहाईआ। गुरमुखां पूरी करन आया ग़रज़, गज़ल आपणा नाम सुणाईआ। मैं हैरान होया असचरज, अचरज लीला की वरताईआ। पूरब जन्म दी कढ्ढ के फ़रद, फ़ैसले सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक वरताईआ। हाढ़ सतारां कहे मैं दस्सां सच विचार, जो प्रभ रिहा जणाईआ। प्रभ चरणां तों कदम अगे चार, फ़ुट दस वण्ड वण्डाईआ। जित्थे होणा सच विहार, आसण सोहणा नज़री आईआ। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ चारों कुण्ट लकार, सहिजे देणी लगाईआ। चारे झण्डे होण उज्यार, आपणा रंग वखाईआ। अठारां इंच दा उच्चा मनार, सोहणा लैणा बणाईआ। सत्त चार दी होवे धार, तूल अरज़ वेख वखाईआ। फुल्लां होवे बहार, गुलशन इक महकाईआ। इक्कीआं दी कतार, दस दस वण्ड वण्डाईआ। दादी दा प्यार, सोहणा सोभा पाईआ। माता

दा विसथार, बेनन्ती बेपरवाहीआ। भगतां दा जैकार, दो जहान शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं उठ उठ तक्कां, ताकत आपणी नाल लवां अंगड़ाईआ। वेखां उह अक्खां, जो प्रभ ने भगतां अंदर दितीआं लगाईआ। जिन्हां दे नाल मिल के हस्सां, बाहरों समझे कोए ना राईआ। उहनां नाल वसां, जिन्हां कदे ना होए जुदाईआ। जुग चौकड़ी भावें कोटन कोटि कारज हुन्दे करोड़ां लखां, श्री भगवान दे अगे भगत भगत दी अजे तक्क होई ना कदे कुड़माईआ। अठारां हाढ़ पूरब जन्म सब दे लेखे दस्सां, बच्चे बच्चीआं आपणी झोली पाईआ। उमर विच आयू विच जोबन विच भावें थोड़ा समां, दो चार दिन लोकमात विच रखाईआ। फिर वी जोड़ी बिना घोड़ी (रखां), दरगाह साची दयां पुचाईआ। गुरमुखां सड़न ना देवां अग्नी कक्खां, जन्म मरन दे दुक्खां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा पूरन करन आया, अगला लेखा कच्चा रहे ना राईआ।

✪ १३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ ठाकर सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✪

जन भगत कहे मैं प्रीतम वेख्या चोजी, निरगुण निरवैर निरँकार नज़री आईआ। जो आत्म परमात्म निरगुण सरगुण बणया रहे खोजी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेख वखाईआ। शब्द धार एकँकार देवे अगम्मी सोझी, निरअक्खर धार आप प्रगटाईआ। गुरमुख जन्म मरन दा रहिण ना देवे कोई रोगी, कर्म कांड दे विच ना कोए फसाईआ। भेव अभेद लिख के लोक परलोकी, सच सलोकी नाम निधाना दए सुणाईआ। मन मति कूड़ क्रिया विच होण ना देवे बेगोशी, सच सरूप आपणा दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया पुरख अगम्म, महिमा कथ्थ ना कोए जणाईआ। जिस दा लहिणा देणा लख चुरासी जीव ब्रह्म, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद आदि जुगादि एका धर्म, धुर धाम बैठा सोभा पाईआ। निहकर्मी हो के करे आपणा काम, कायनात अंदर वेख वखाईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा देवे इक पैग़ाम, बिन कलमा हक पढ़ाईआ। सजदा दस्स के सच सलाम, समां आपणा दए समझाईआ। बरदा कर के धुर गुलाम, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। जन भगतां मंज़ल करे आसान, असल वसल यार दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति स्वामी अन्तरजामी गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया पुरख अपार, अपरम्पर मिल्या बेपरवाहीआ। जिस नूं गाउँदे गए सदा

जुग चार, चौकड़ी विच सिफ्त सालाहीआ। लेखा लिखदे गए गुर अवतार, पैगम्बर पैग़ाम विच जणाईआ। सो लहिणा देणा देवणहार विच संसार, महासार्थी हो के फेरा पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण सरगुण पावे सार, सति स्वामी अन्तरजामी परदा ओहला दए उठाईआ। भगत सुहेला इक अकेला आपणे रंग रवे करतार, कुदरत दा मालक ख़लक दा ख़ालक, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे सोभा पाईआ। जन भगत कहे प्रभ आया पुरख अकाल, अकल कलधारी नज़री आईआ। दीन दुनी दा दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। लेखा चुका के काल महाकाल, वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को दए दरसाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, शब्द अगम्मी वज्जे ताल, दीआ बाती देवे बाल, साचा चन्द नूर जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां कर संभाल, लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती घाल, गोद उठा के आपणे लाल, दुरमति मैल दए गवाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, अन्तिम हल्ल होवे स्वाल, फ़िकरा इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा बेपरवाहीआ। जन भगत कहे मैं वेख्या परम पुरख श्री भगवन्त, भगवन इक्को नज़री आईआ।
७६५ आत्म परमात्म दा दिस्या साचा कन्त, नाता धुर दा रिहा जुड़ाईआ। गढ़ रिहा ना हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दिता समझाईआ। ७६५
१६ बोध अगाधा बण के पंडत, निरअक्खर दिता पढ़ाईआ। जन भगतां जुग जुग दी सुण के मिन्नत, मेहर नज़र इक उठाईआ। १६
सच प्यार दी दे के हिम्मत, अंदरों हौसला दिता वधाईआ। जन भगतो तुहाडी नौ खण्ड दी इक्को सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। दूजे दर करनी पए ना मिन्नत, मिन्नतां तों दिता छुडाईआ। मनुआ करे कोई ना इल्लत, वासना जगत ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडी मेट खुआरी ज़िल्लत, ज़ाहिद तों वाहिद नाल दिता मिलाईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया एक, एकँकार नज़री आईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर रखदे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी ल्या पेख, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। जो वस्या सचखण्ड दवारे साचे देस, हक मुकामे सोभा पाईआ। मालक बण के प्रभ नरेश, नरायण हुक्म वरताईआ। जिस दा कलम शाही लिख ना सके लेख, कागज़ मिले ना कोए वड्याईआ। सो भगत सुहेला इक अकेला निरगुण धार खोले भेत, परदा अंदरों आप चुकाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर दयावान दया कमाईआ। जन भगत कहे मैं पाया गहर गम्भीर, गवर नज़र किसे ना आईआ। बिन तत्तां चोटी मंज़ल चढ़े अख़ीर, आखर बैठा डेरा लाईआ। जिस दी नज़र ना आए कोई तस्वीर,

तसव्वर सब नूं दए कराईआ। जन भगत बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। लेखा मुका के ग़रीब अमीर, अमरापद दए जणाईआ। जित्थे वसे बेनज़ीर, जोती जाता सोभा पाईआ। जन भगतां लहिणा देणा चुका के तत सरीर, मन शरीर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होण ना देवे कदे मात दिलगीर, अज़ीज़ आपणे लए बणाईआ।

✪ १४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ अमीर चन्द गुलाटी दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✪

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साहिब सुल्तान मालक घर घर दा, गृह गृह लख चुरासी वेख वखाईआ। आदि अन्त मध मंज़ल अगम्मी चढ़दा, निरगुण निरवैर निराकार आपणा पन्ध मुकाईआ। नित नवित लोकमात वेस धरदा, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल करे नरायण नर दा, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख भगत प्यारे फड़दा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। मंज़ल मंज़ल पौड़ी डण्डे चढ़दा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे विच समाईआ। जन भगत प्रभ करदा रहे मिलाप, मिलणी जगदीश आपणे नाल कराईआ। बाहों फड़ गोदी चुक्कदा रहे आप, धुर दा जाप बिन अक्खरां दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी रैण सुहञ्जणी दए वड्याईआ। जन भगत साची मंज़ल चढ़ा के आपणे घाट, गृह मन्दिर अंदर देवे माण वड्याईआ। सच प्रीती बख्श के सति विश्वास, धीरज धीर इक बंधाईआ। गुरमुखां लेखे ला के सच प्रेम दी साची दात, दातार हो के दया कमाईआ। जगत जहान विच्चों लए राख, रच्छया करे थाउँ थाँईंआ। दर्शन दीदार दीद अंदर देवे साख्यात, सुखीआं दा मालक सुख आपणे घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रहिण ना देवे कोई गुस्ताख़, रूह बुत्त पवित्र पाक पुनीत पवित लए कराईआ।

✪ १५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल जम्मू संगत दी आमद विच ✪

धुर शब्द संदेशे दे के आए सद्दे, सदीआं दे विछड़े फेरा पाईआ। धर्म प्रीती अंदर बद्धे, बन्दगी विच कमाईआ। सच दवारे बह बह सज्जे, सजणां मिल के खुशी मनाईआ। पूरब लहिणा मिले मज़े, रस इक्को दए वखाईआ। बल दवारयों

जेहड़े रज्जे, रसना खा के पेट वखाईआ। बावन संदेशे दिते अद्धे, धुर दा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त भगवन्त जोत इक्को जगे, जागरत नूर नूर रुशनाईआ। तुहाडा लहिणा देणा लेखा देवे हथ्थ बद्धे, आशा मनसा पूर कराईआ। सति धर्म दा खेल करे अगे, अगला हुक्म वरताईआ। नाम भण्डारा धुर दा वण्डे, अतोल अतुल वरताईआ। साचे चाढ़े नाम पौड़े डण्डे, डण्डावत इक्को इक समझाईआ। वेला वक्त अख़ीर वेखे कन्ढे, कन्ढी वाले लए बुलाईआ। जगत ग़रीबी विच होवण नंगे, शब्द ओढण इक्को सीस टिकाईआ। हरि भगत प्यारे कर के चंगे, भगतां विच मिलाईआ। बिना बन्दगीउँ बणा के बन्दे, बन्धन सारे दए तुड़ाईआ। जुग जन्म दे तपदे करे ठंडे, अमृत मेघ बरसाईआ। साची रंगण आपणी रंगे, रंगत इक्को दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। लेखा कहे रिषी आ गए छड्ड के ऋषीकेश, केशव कुशलता पुच्छ पुछाईआ। विछड़यां नूं मेले सदा हमेश, हमसाजण आप बणाईआ। जिन्हां अगे नहीं तक्कया दस दस्मेस, सहिजे दर्शन दए कराईआ। जिस दा मालक एकँकार एक, पुरख अकाल वड्याईआ। देवणहारा जुग जुग टेक, टिक्के मस्तक नाम लगाईआ। बावन नालों चंगा धर के भेख, वेस आपणा आप बदलाईआ। वेख के तुहाडा देस, परदेसी लए मंगाईआ। सच दर करे हेत, नेत नेत नज़री आईआ। साचे प्रेम प्यार दी हरि संगत आई नूं देवे आपणी भेंट, नाम निधान सच वरताईआ। सब दे कर्म कुकर्म पावे आपणे पेट, कूड़ कपट डेरा ढाहीआ। पिछला लहिणा पूरा कर के लेख, लेखा अगला दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे सच संदेश, शुभ सगण लगण विच मनाईआ।

✪ १५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ बीबी प्यारो दे गृह पिण्ड जेठूवाल ✪

वेला कहे मेरा सुहञ्जणा वक्त, थित वार सोभा पाईआ। सच दुआर सुहाए भगत, भगवान आगमन विच खुशी मनाईआ। प्रेम प्यार वड्या के विच जगत, मुहब्बत सहिमत रहमत नाल कराईआ। धुर प्रीती आत्म नीती साची रीती देवे शक्त, शनाखत रफाकत विच जणाईआ। नाम निधान श्री भगवान देवे आपणी वस्त, वास्तक अस्तिक नास्तिक आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां श्री भगवान बणे प्यार प्रसत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि देवणहार वड्याईआ। श्री भगवान भगत सुहाए वेला, दिवस रैण वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जगत खेल कर नवेला, नव नौ चार खोज खुजाईआ। सति सति कर के मेला, असति अंदरों दए कढाहीआ। भगतां बण के सज्जण

सुहेला, साहिब स्वामी होए सहाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म कर के मेला, मिलत विच ज़िल्लत खुआरी दए मिटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित करे खेल इक अकेला, एकँकार नर निरँकार निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त लख चुरासी जीव जंत साध सन्त नालों हो के वेहला, वस्त अमोलक काया गोलक गृह मन्दिर अंदर भगतां आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा नाम रहिण ना देवे झमेला, गुर चेला इक्को रंग रंगाईआ।

✪ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ✪

सो पुरख निरँजण अगम्म अथाह, अलख अगोचर वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एकँकार जलवागर खुदा, नूर नुराना नूर करे रुशनाईआ। आदि निरँजण डगमगा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। अबिनाशी करता परदा लाह, ओहला अंदरों दए चुकाईआ। श्री भगवान दया कमा, दाता दानी इक अख्वाईआ। पारब्रह्म आपणा नाउँ धरा, करे खेल अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

साची करनी करे करतार, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकार निराकार कर उज्यार, जोत उजाला पुरख अकाला आपणा मन्दिर करे रुशनाईआ। थिर घर खोल्ह ठांडा दरबार, सच स्वामी अन्तरजामी वेख वखाईआ। दूसर अवर ना कोए नाल करे खेल कमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्म दी खेल आप प्रगटाईआ। धुर दी खेल करे प्रभ आप, हरि करता वड्ड वड्याईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोती जाता वेख वखाईआ। सच दवारे प्रगट हो के कमलापात, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। खेलणहारा खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी दा करतार, हरि करता इक अख्वाईआ। जिस दा सचखण्ड दवार, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यार, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। एका हुक्म साची धार, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। ना कोई गुर अवतार पैगम्बर दिसे यार, सगला संग ना कोए निभाईआ। करे खेल अपर अपार, अपरम्पर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण हो के ख़बरदार, आपणा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म दए जगत, अपर अपार इक जणाईआ। करे खेल आप बेअन्त, भेव अभेद समझे कोए ना राईआ। लेखा जाणे आदि अन्त,

७६८ १६

मध आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल करे भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण हो के मेहरवान, महबूब मेहर नज़र उठाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर गुलाम, बरदे हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रच दो जहान, सृष्टी दृष्टी वण्ड वण्डाईआ। त्रै पंज कर प्रधान, ढोले धुर दे रिहा सुणाईआ। प्रगट हो के जाणी जाण, भेव देवे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। धुर दी करनी करे गोबिन्द गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। शब्दी धार बणा के आपणी बिन्द, बन्दगी इक्को इक समझाईआ। हरख़ सोग ना कोए चिन्द, चिन्ता ग़म ना कोए उपाईआ। दाता दानी बण के गहर (गम्भीर) गुणी गहिंद, गवर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। धुर फ़रमाना इक अकाल, एकँकारा आप जणाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, राज राजान वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआर हो प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। थिर घर साचे देवे दान, सुत दुलारे तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्रधान, त्रै पंज करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, लख चुरासी वण्ड वण्डाईआ। जोती जाता हो बलवान, निरगुण सरगुण डगमगाईआ। सच संदेसा दे धुर फ़रमान, नाम निधाना आप जणाईआ। वेखणहारा मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। दूसर सके ना कोई जाण, भेव सच ना कोए खुल्हाईआ। रचना रच सर्ब जहान, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दे के दान, कलयुग देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर बलवान, लोकमात दए अंगड़ाईआ। शब्द संदेसा दो जहान, नाम निधाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। शब्द संदेसा दिन्दा रिहा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाउँदा रिहा सेवादार, चाकर आपणे घर बणाईआ। धुर फ़रमाना देंदा रिहा एकँकार, इक अकल्ला कर पढ़ाईआ। जोती नूर करदा रिहा उज्यार, आत्म ब्रह्म भेव चुकाईआ। महल अटल सुहाउँदा रिहा मुनार, काया बंक वज्जे वधाईआ। नाम संदेशे देंदा रिहा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। भगत सुहेले करदा रिहा उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप खिलाईआ। धुर दी खेल करे निरँकार, नर हरि वड्डी वड्याईआ। लेखा जाण सदा जुग चार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। वेखणहारा भगतां इजहार, परदा ओहला आप उठाईआ। जिस नूं कैहिंदे गए सांझा यार, वाहिद लाशरीक अख्वाईआ। वस्से सचखण्ड दवार, हक मुकाम डेरा लाईआ। रूप रंग तों वसे बाहर, हर घट मौले शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, मेहरवान दया कमाईआ। हर घट बोलण वाला राम, हरि करता इक अख्वाईआ। भगत उधारना जिस दा काम, निहकर्मी बेपरवाहीआ। मंज़ल दस्से हक आसान, बिन पौड़ी डण्डे दए चढ़ाईआ। भगत सुहेले कर परवान, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। काया काअबा सच मुकाम, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। अंदर शरअ ना रहे शैतान, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। जुग चौकड़ी हो प्रधान, हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। करे खेल पुरख समरथ, हरि करता वड वड्याईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर गया दस्स, हुक्में अंदर हुक्म जणाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी होणी रैण मस्स, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन नाड़ बहत्तर उबले रत्त, सांतक सति ना कोए वरताईआ। अन्तर आत्म रहे ना कोई ब्रह्म मत, मनमति होए हल्काईआ। भरमदे रहे तीर्थ तट अठ्ठ सठ्ठ, झगड़ा पए मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म नाल जोड़े कोए ना नत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्हे कोए ना अक्ख, परदा सके ना कोए चुकाईआ। काया माटी खेड़ा सब दा दिसे भठ्ठ, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जो वेला वक्त लोकमात मार झात बावन बल दवारे गया दस्स, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।
बल दवारे बावन गया आख, बलधारी बल उपाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए पुरख अबिनाश, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। वेला वक्त जन भगतां सुहञ्जणी करे प्रभात, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। आत्म परमात्म जोड़ के साचा नात, तूं मेरा मैं तेरा धुर दा ढोला दए सुणाईआ। पूरा करे चार युग दा भविख्तां वाला वाक्, वाकिफ़कार हो के दया कमाईआ। गुरमुखां दे के अगम्मी दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। साहिब स्वामी वेखणहारा, हरि करता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे गए जिस दा इज़हारा, रागां नादां ढोलयां विच कर शनवाईआ। जिस नूं निरगुण नूर कहिण उज्यारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दा शब्द अगम्म नगारा, दो जहानां रिहा उठाईआ। सो खेले खेल खेलणहारा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जामा श्री भगवाना निरगुण निरवैर लए अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। जन भगतां साचे सन्तां पूरब लहिणा जन्म दे उधारा, कर्म कांड दा गेड़ा आप मिटाईआ। सच प्रीती धुर दी नीती चरण कँवल दे सहारा, पुसत पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। जिस दा कागत कलम शाही लेखा लेख ना लिखणहारा, गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कह के सीस निवाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी कल कल्की लए अवतारा, जोती जाता डगमगाईआ। वेखणहार हरि करतार अगम्मड़ा यार सर्ब संसारा,

सृष्टी दृष्टी इष्टी खोज खुजाईआ। जन भगतां दस्से सच दवारा, जित्थे दग़ा ना कोए कमाईआ। बिन तेल बाती दीप होए उज्यारा, उजरत कोई ना लागे राईआ। घर स्वामी दिसे मीत मुरारा, पीआ प्रीतम नज़री आईआ। जिस दा विछोड़ा रिहा जुग चारा, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत सुहेले दए वड्या, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। धुर दा मालक बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। कीते कौल इकरार दे कारन गया आ, आवण जावण समझे कोए ना राईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे लए बुला, चरणां विच टिकाईआ। हुक्म देवे शहिनशाह, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे अगे सजदयां अंदर करदे गए दुआ, दवारकावासी हो के फेरा पाईआ। जिस नूं मन्नया नूरी नूर खुदा, खुद मालक वेस वटाईआ। जो हर घट बोले सो साहिब स्वामी गया आ, आमद विच खुशी जणाईआ। रहबर बण के बेपरवाह, तुहाडे पड़दे दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। निरगुण रूप श्री भगवान, किस बिध आपणा फेरा पाईआ। जेहड़ा जुग चौकड़ी लभ्भया ना विच जहान, टिल्ले पर्बत पहाड़ ना नज़री आईआ। सो खेल करे आप महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। पूरब लेखा चुकावे आण, भगत सुहेले आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। जन भगतो तुसां जाणा जाग, जागण वेला जगत आईआ। तुहाडा बदल देणा समाज, समें दी शहादत आप भुगताईआ। अंदर रहिण नहीं देणा दाग़, दुरमति मैल आप धवाईआ। भगत जगत रहे ना कोई काग, गुरमुख हँस देणा बणाईआ। आपणे नूर दा दे के चिराग़, जोती जोत करां रुशनाईआ। अंदर बाहर दा देवां साथ, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। साचा ढोला दस्स के गाथ, इक्को अक्खर दिता पढ़ाईआ। जन भगतो तुहानूं मेलया आपणी ज़ात, जित्थे कबीर जुलाहा सीस निवाईआ। देवां साची दात, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छो आवे मात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। पुरख अबिनाशी पुछे जिस दी बात, दाता दानी हो के सर्ब लोकाईआ। तुहाडा लहिणा देणा हिस्सा करां बेबाक, लेखा धुर दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो खोल्हो आपणी अक्ख, नेत्र नैण उठाईआ। परम पुरख वेखो प्रतख, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा अक्खरां नाल दस्सदे रहे जस, वेद पुराणा सिफ्त सालाहीआ। सो आ गया कमलापति, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। चरण प्रीती जोड़ के सति, हरिजन साचे लए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए दस्स, दहि दिशा खोज खुजाईआ। बिन करनीउँ तुहाडे होया वस, वास्ता

आपणे नाल रखाईआ। शब्द अणयाला मारे कस, कसर तुहाडी दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खबरदार सब नूं दए कराईआ। जन भगतो जाणा उठ, सोया रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर इक्को गया तुठ, बहुते गुरुआं दी लोड़ रही ना राईआ। शब्द भण्डारा कदे ना जावे मुक्क, जो गुर अवतार पैगम्बरां झोली रिहा भराईआ। जिन्हां इक्को गाई सोहँ तुक, तुख्म तासीर दयां बदलाईआ। दो जहानां बदल के रुख़, राखा बणया धुरदरगाहीआ। विछोड़े वाली मेट के भुक्ख, तृष्ना दए मिटाईआ। सच सुहञ्जणी कर के रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सो भगत सुहेले गए पुज, पाँधी बण के पन्ध मुकाईआ। परदा रहे ना गुझ, सोयां अक्ख आप उठाईआ। जन भगतो खोल्ह दयो आपणा नेत्र नैण, निज नैण दयां खुल्हाईआ। इक्को हुक्म संदेसा आया कहिण, जिस दा भेव ना कोए समझाईआ। भाग लग्गणा इक्को रैण, मिले सच दुआर वड्याईआ। नाम झोली पावां रसैण, देणा धुर दा दयां चुकाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना वहण, गुरमुख साचे सोभा पाईआ। नेत्र तक्को नर नरायण, जिस दा सिफ्तां नाल सारे ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। जन भगतो वेला गया आ, आगमन विच खुशी मनाईआ। तुहाडा

लहिणा देणा दयां मुका, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। बावन दी आशा नाल मिला, वेला वक्त दयां सुहाईआ। रिषीआं दा मेला रिहा मिला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर हथ्थ रखे करतार, करनी करता वेख वखाईआ। धन्न वड्याई जो आए बंक दवार, भगवन खुशी मनाईआ। खेल होण लग्गा अपर अपार, पारब्रह्म दए समझाईआ। जिस दा राह तक्कदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर बिन नैणां नैण उठाईआ। कलमे ढोले गीत जुग जुग गांदे गए वारो वार, शब्द अनाद नाद कर शनवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिखदे रहे अक्खरां नाल कर प्यार, निरअक्खर धार लए जणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता कलयुग अन्तिम वेखे अन्धेरी राता जिस दी पावे कोई ना सार, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। गुरमुखो आई तुहाडी वार, जिस दी समझ नहीं जुग चार, चारे वेद गए हार, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। जन भगत कहिण किवें वक्त होए सुहञ्जणा, प्रभ देवें की वड्याईआ। की दाता दानी दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। की नेत्र देवें नाम अंजणा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। की आत्म परमात्म बणे सज्जणा, सगला संग निभाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम वेखें दक्खणा, चारे कुण्टां खोज खुजाईआ। की साडे अंदर मिल के तूं वसणा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप उठाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत मीत, धुर दे मित्र दयां जणाईआ। दरस

दिखा के इक अतीत, त्रैगुण लेखा दयां मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से के गीत, परदा ओहला दयां चुकाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वण्ड वण्डाईआ। वड़ना पए ना किसे मसीत, मन्दिर मठ्ठ ना कोए भवाईआ। घर दस्सां इक अनडीठ, जिस दी छप्पर छन्न ना किसे छुहाईआ। इक्को परमात्म होवे प्रीत, दूजी अवर ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। श्री भगवान ना लावीं डेर, जन भगत रहे दृढ़ाईआ। अबिनाशी करते कर मेहर, मेहरवान हो सहाईआ। कलयुग लहिणा अन्त नबेड़, लेखा पूरब दे चुकाईआ। लेखा चुक्के चुरासी गेड़, मात गर्भ ना कोए फिराईआ। तेरे नाल कुछ कौल कीता गोबिन्द अन्त नंदेड़, जिस दा उधेड़ ना कोए कराईआ। जिस कारन लख चुरासी अंदर छेड़ां रिहों छेड़, हर घट वस्या राम आपणी कार कमाईआ। मानव नाल मानव मानव रिहों भेड़, मनमुख नाल मनमुख करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरे सज्जण, जन भगत दयां जणाईआ। चरण प्रीती देवां धुर दा मजन, धूढ़ी टिक्का इक्को लाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भज्जण, भरम गढ़ दयां तुड़ाईआ। सच दवारे आवां सद्दण, होका इक्को नाम सुणाईआ। लख चुरासी विच्चों आवां कढ्ढण, आवण जावण दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत कहे प्रभ नंदेड़ कीता की कौल इकरार, गोबिन्द शब्दी शब्द रूप जणाईआ। जिस दा लेखा लिख्या ना किसे लिखार, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। पढ़ सक्या ना कोए विच संसार, निरअक्खर धार ना किसे समझाईआ। भेद खोल्ह आप निरँकार, परदा दे चुकाईआ। वेला वक्त वेख आपणी बहार, ख़िज़ां रही रूप बदलाईआ। तेरा सोहे इक दरबार, मन्दिर सच वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले बण भिखार, भिच्छया धुर दी मंग मंगाईआ। तूं देवणहार दातार, दयावान तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे चुकाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरे भगत सुहेले, सहिजे दयां जणाईआ। गोबिन्द शब्दी धार मेले, जोती जोत जोत रुशनाईआ। खेले खेल इक अकेले, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द मंगी इक्को एक रंगण गुरू चेले, दूजा फ़र्क रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत कहे प्रभ मैनूं पै गया शक, वल छल दे चुकाईआ। किस बिध मैनूं आवे सच, गोबिन्द एहो गया सुणाईआ। पुरख अबिनाशी प्या हस्स, खुशीआं विच मुसकराईआ। जन भगत दर खोल्ह के वेखे अक्ख, गोबिन्द मिले सच्चा माहीआ। बिन गोबिन्द मेरा करे कोई ना जस, वेद पुराण कम्म किसे ना आईआ। मेरा लहिणा ओसे दे हथ्थ, जो आपा गया मिटाईआ। शब्द धार होया प्रगट, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। जन भगत कहे एह मैनूं नहीं मन्ज़ूर, दोए जोड़ सीस निवाईआ। वल छल करना तेरा दस्तूर, आदि जुगादि खेल चली आईआ। मैनूं गोबिन्द मिला ज़रूर, जो परदा दए उठाईआ। साचा खेल दस्से सर्ब कला भरपूर, बेपरवाह तेरी बेपरवाही दए जणाईआ। कोटन कोटि जुग लँघ गए तेरा पन्ध ना मुक्कया दूर, नेरन नेरे तेरा अन्त कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे समझाईआ। श्री भगवान कहे सुण भगत मेरे प्यारे, प्रेमी पुरख दे जणाईआ। हुक्में अंदर खेल न्यारे, निरगुण सरगुण आप समझाईआ। जिन्नां नूं जुग चौकड़ी देंदा गया लारे, बन्धन आपणे नाल पाईआ। उहनां अन्तिम पैज संवारे, जुग जुग देवणहार वड्याईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ इक्को मारे, संदेसा हक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आउ सच दवारे, मिल के सच्चे माहीआ। परदा ओहला रहे ना विच संसारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप वखाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दया कमावांगा। सुण भगत सुहेल मीत, भेव अभेदा आप जणावांगा जुग चौकड़ी बदलणी रीत, एह आपणा हुक्म वरतावांगा। गोबिन्द दस्स के साचा गीत, ढोला इक्को इक सुणावांगा। तुहानूं छड्डणी पए मन्दिर मसीत, काअबा इक्को इक दरसावांगा। जित्थे बुद्धी दी रहे ना कोई तामीज़, अनुभव आपणा परदा लाहवांगा। पूरी आसा होवे उम्मीद, आमद विच खुशी मनावांगा। जेहड़ी गोबिन्द कर के गया ताईद, तारीफ़ ओसे कोलों सुणावांगा। साची सच कर बख्शीश, बख्शिश रहमत आप कमावांगा। साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रत इक्को इक वखावांगा। झगड़ा मुक जाए ऊँच नीच, हस्त कीट पन्ध मुकावांगा। लेखा मुके बीचो बीच, परदा बाहर ना कोए वखावांगा। आत्म परमात्म लग्गे प्रीत, प्रीतम पुरख अकाल जणावांगा। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, छत्रधारी होवे जगदीस, जगदीशर इक्को इक मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तरावांगा। जन भगत कहे मैं मंगां मंग, हाढ़ सतारां झोली डाहीआ। पुरख अकाल सूरे सरबंग, वस्त अमोलक देणी वरताईआ। हर घट बोलण वाले चाढ़ना रंग, रंगत आपणी इक वखाईआ। मेरा तेरा बणया संग, सगला संग निभाईआ। शब्द नाद वजाउणा मृदंग, मन मनुआ इक उठाईआ। साची मंज़ल आउणा लँघ, नौ दुआर ना कोए अटकाईआ। सुहावणी सेजा वेखणी पलँघ, कन्त भतार बेपरवाहीआ। मेरी भन्न ना देवीं काया माटी काची वंग, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। पूरब जन्म दी आसा मंग, बावन दए गवाहीआ। रिषी तेरा दवारा आए लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती चाढ़ दे चन्द, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्को दे दे परमानंद, निजानंद विच्चों बाहर कढाहीआ। लोड़ रहे ना जमना सुरस्ती गंग, गोदावरी चरणां हेठ दबाईआ। सानूं मंगदयां

नहीं कोई संग, लोकलाज ना कोए रखाईआ। तेरी दीन दुनी वेख के हो गए तंग, झगड़ा वेख्या सर्ब लोकाईआ। दरोही फिरी विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। सांत मिले ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। जन भगत कहे प्रभ तेरी आत्मा रहे कदे ना रंड, कन्त सुहागी इक हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं हर घट बोलण वाला राम, रमता रमता खेल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के काम, दिशा तुहाडी वेख वखाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी शाम, शमां सच दयां जगाईआ। इक्को दस्स धुर प्रणाम, टिक्का मस्तक दयां लगाईआ। जन भगतो तुहानूं रहिण ना दयां गुलाम, शरअ ज़ंजीर दयां तुड़ाईआ। काया मन्दिर अंदर रहिणा दस्सां आसान, एहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जे कोई तुहाडा घर ग्राम पुछे बेमकाम, भगत दवारा देणा सुणाईआ। जित्थे रास्ता बरास्ता करे ना कोए बदनाम, सिध्धा धुर दा मेल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वाला खाणी विच्चों बाणी विच्चों सुणना पए ना कोए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दी लोड़ दयां मुकाईआ। अक्खां मीट के मन घसीट के सुरती पीच के वेखणा पए ना सूर्या भान, रवि ससि दी लोड़ रहे ना राईआ। मन्दिरां विच अंदरां विच कंदरां विच लभ्भणा पए ना सीता राम, राम धुर दा तुहाडा मीत तुहानूं दए वखाईआ। गोपीआं वाली रास तक्कणी ना पए जगत काहन, उंगलां वाली बंसरी ना कोए वजाईआ। इक्को देवे सच्ची धुनकान, जिस दा मिले ना कोए निशान, निशाना आपणा इक लगाईआ। पढ़नी पए ना कोए कलाम, बदलणा पए ना कोए निज़ाम, पीणा पए ना कोए जाम, बिना आब तों बेताब दयां बणाईआ। लैणा पए ना कोए खवाब, करना पए ना कोए अदाब, पढ़ना पए ना कोए हिसाब, झगड़ा रहे ना कोए पाप, जिधर तक्को नज़री आवां आप, आप आपणे विच मिलाईआ। प्रीती अंदर दास, सेवा विच प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। हाढ़ सतारां कहे मैं भगत भगवान दा की कुछ सुणया झगड़ा, समझ किछ ना आईआ। मैं बेनन्ती करां कुछ भेद दस्स अगला, पिछली करनी की पढ़ाईआ। कलयुग जीव बहुता वेख्या झगड़ा प्या सगला, सोहणा तन बणाईआ। भाउँदा फिरे विच जंगलां, टिल्ले पर्बतां खोज खुजाईआ। करदा फिरे चार मंगला, तेरा नाम शब्द सुणन कोए ना पाईआ। की होया जे तेरा भगत तेरी प्रीती विच कंगला, कमला कोझा नज़री आईआ। जगत जहान विच्चों हो के अन्धला, अक्ख तेरी इक खुलाईआ। सच बेनन्ती हरि जू इक मन्न ला, चरण कँवल सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। श्री भगवान कहे मैं सब कुछ रिहा जाण, अणजानत जग नूं नज़री आईआ। हुक्म दे रिहा फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हाढ़ सतारां कर लै कान, सच संदेसा दयां

जणाईआ। मेरे हुक्म दा उठण वाला तुफ़ान, अगे हो ना कोए बचाईआ। गोबिन्द दा चिल्ला चढ़न वाला कमान, कामल मुर्शद वेख वखाईआ। जिस अबिनाशी करते नूं सारे करदे गए बदनाम, नाम आपणा जगत जणाईआ। उहनूं अक्खरां वाला बणा के भगवान, मथ्थे चरणां उत्ते टिकाईआ। बण के चतुर सुजान, सुरती मन दे विच फसाईआ। कैहिंदे गोपीआं नूं गाओ मिल गया काहन, जिस ने लख चुरासी लई प्रनाईआ। जन भगतो तुहाडे बिना हर घट बोलण वाला मिल्या किसे ना राम, रमता रमता चलदी वेखो लोकाईआ। देवणहारा देवणवाला दाता आदि जुगादी इक जजमान, जो जमां तों लए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दे उठाईआ। जन भगत कहिण क्यों प्रगट होवें, सानूं दे समझाईआ। क्यों लख चुरासी नाम कंडे तोलें, तोल तराज़ू आपणे हथ्थ रखाईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बर बणाए गोले, दर साचे सेव कमाईआ। क्यों जुग चौकड़ी माणस सुणाए ढोले, आपणा नाम बदलाईआ। क्यों लख चुरासी घट घट रविआ मौलें, मौला हो के वेख वखाईआ। क्यों वस्या पड़दे ओहले, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। क्यों भाग लगावें काया चोले, चोली आपणा रंग चढ़ाईआ। क्यों दस्सें साचे ढोले, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दे समझाईआ। मैं हर घट बोलण वाला राम, जन भगतो इस बिध अख्वाईआ। सचखण्ड दवारे हो प्रधान, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। थिर घर चरण कँवल खोलू दुकान, शब्दी तत दयां वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, परवाना आपणा इक फड़ाईआ। त्रै पंज कर प्रधान, लख चुरासी सोभा पाईआ। चारे खाणी कर इक निशान, चारे बाणी करां इक पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, खेल खेलां बण के शहिनशाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के दान, दाता हो के आप वरताईआ। भगतां हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सन्त सुहेले कर पहचान, कूड़ी क्रिया दयां गवाईआ। गुरमुखां बख्श चरण ध्यान, प्रीती रीती इक समझाईआ। गुरसिखां वखा के सच निशान, कूड़ा लालच दयां मिटाईआ। जुग चौकड़ी बदल के विधान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दयां टिकाईआ। शब्द संदेसा दे ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान दयां लिखाईआ। भविख्तां विच दस्स फ़रमान, शब्द अगम्मी इक जणाईआ। सब दा बण के हुक्मरान, ज़िमीं असमान रिहा फिराईआ। रवि ससि होए हैरान, मण्डल मण्डप सीस झुकाईआ। देवत सुर करन प्रणाम, असुर नैणां नीर वहाईआ। किन्नर यच्छप गायन गाण, मधुर धुंन इक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर करां खेल महान, महिमा अकथ कथ समझाईआ। सब दा मालक बण के श्री भगवान, भेव आपणा आपणे विच रखाईआ। आपणी दया किरपा नाल हर घट वस के बोलां राम, रहमत विच दया कमाईआ। भाग

लगा के काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हर घट बोलण वाला जग, जग जीवण दाता नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडा मेला उपर शाह रग, नव नव लेखा दए मुकाईआ। बुद्धी रहे ना जगत, कग्ग, हँस गुरमुख लए प्रगटाईआ। त्रैगुण लग्गे ना कोई अग्ग, सच खुमारी प्या के मध, वस्त अगम्मी हथ्थ फड़ाईआ। भगत दवारे सद्द, पूरब लेखा दयां चुकाईआ। जन भगतो रिषीओ तुहाडा यज्ञ, बल नालों कोटन दरजे मिले वड्याईआ। जिस नूं खा के सुखाले होए हड्ड, हड्डीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मिल के होणा गद गद, गदागराँ दा लेखा दए चुकाईआ। सतिजुग तुहानूं बणा के आपणी यद्द, भगत सुहेले नाम प्रगटाईआ। तुहाडी इक्को मंज़ल इक्को पद, इक्को मन्दिर दयां वखाईआ। जिस दी आर पार किसे ना समझी हद्द, हद्द सक्या ना कोए समझाईआ। ओथे खुशीआं नाल जाणा वस, वसल इक्को यार खुदाईआ। साचे प्रेम दा देवे रस, रसना दे रस दी लोड़ रहे ना राईआ। हकीकत विच तुहानूं कर के वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सांझा कर के जस, सोहँ ढोला दिता पढ़ाईआ। द्वैती रहे कोई ना फट्ट, इक्को गोबिन्द मिल्या सच्चा माहीआ। निझर अमृत लैणा झट्ट, झंजट मन दा देणा चुकाईआ। पुरख अकाला लैणा रट, झगड़ा मुके नटुआ नट, स्वांगी स्वांग ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत कहिण असीं आए दवारे, बण के पाँधी राहीआ। परम पुरख तेरे तक्कणे सच नज़ारे, नज़रीआ आपणा दे वखाईआ। चार युग तेरे नालों रहे कुँवारे, आत्म परमात्म करी ना किसे कुड़माईआ। मंज़ल चढ़दे जुग जुग हारे साडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। सानूं बावन कीते इशारे, आशा नाल मिलाईआ। जिस वेले बीते जुग चारे, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जिस ने गोबिन्द नाल कीते उधारे, नंदेड़, अंदर हुक्म सुणाईआ। उह प्रगट होवे आपणी धारे, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारे, बेपरवाह आप अख्वाईआ। शब्दी शब्द वजाए नगारे, नौबत नाम हक वखाईआ। जोती नूर करे चमत्कारे, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। जन भगतां चाढ़ के साचे खारे, खोटे खरे लए बणाईआ। कर के अगम्म विहारे, विवहारी धार चलाईआ। सतिजुग साची दस्से कारे, करता हो के आप उपजाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नाते इक्ठे जुड़ने सारे, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। इक्को पुरख अकाल दे लग्गणे जैकारे, चाचयां दे नाम सारे देणे भुलाईआ। हर घट वस्या बोले राम करे हुक्म आप निरँकारे, निराकार आप जणाईआ। जन भगत रहिण ना देवे दुख्यारे, विछोड़ा दुःख वाला गवाईआ। अगे तुहानूं दर्शन होवे साख्यात दिन दिहाढ़े, बज़र कपाटी तोड़ वखाईआ। शब्द चले हुक्म नाल अपारे, धुर दा परदा आप उठाईआ। तुहानूं

ओस अंदर वाड़े, जिस घर अंदर कबीर वरगे बैठे दो चारे, बाकी रोवण मारन धाईआ। श्री भगवान दे समझण वाले इशारे, इशारयां तों बाहर गुप्त ज़ाहर कर प्यार वांग पुरख नार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत कहिण क्यों हर घट वसे, प्रभ सानूं दे जणाईआ। श्री भगवान कहे एह खेल मेरे हथ्थे, दूसर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा के नन्हे नन्हे बच्चे, लोकमात उंगली ला दिते फिराईआ। सब नूं दिते काया माटी भाण्डे कच्चे, नाता तत्तां नाल रखाईआ। आपणा दरस दिन्दा रिहा आपणी अक्खे, जगत नैण जगत विच मिलाईआ। गोबिन्द जो नंदेड़ दिते पते, पतिपरमेश्वर दए समझाईआ। जिस ने चौथे युग होड़ा ला के उपर सस्से, हाहा बिन्दी टिप्पी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे गोबिन्द मंगी इक निशानी, आसा अन्त नेदेड़ रखाईआ। पुरख अकाल आपणी प्रीत मेरी कर कुरबानी, क्यों जगत नाल लड़ाईआ। तेरा हुक्म सदा लासानी, लाशरीक तेरी बेपरवाहीआ। आह लै भथ्था तीर कमानी, मेरे कम्म किसे ना आईआ। मेरी शब्द वाली जवानी, जुग चौकड़ी ना कोए बदलाईआ। मैं सदा तेरे घर खांदा रहां महिमानी, निरगुण हो के निरगुण फेरा पाईआ। जिस वेले तेरा कलयुग अन्तिम झगड़ा पए दीवानी, चार जुग दा लेखा ना कोए मुकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ तेरी करन बदनामी, पुरख अकाल तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। ओस वेले तेरे नाल नाता जोड़ां बाहमीं, वजूद आपणा ना कोए जणाईआ। एसे कर के जुझार नूं नहीं दिता पाणी, नाता जगत नालों मुकाईआ। सृष्टी समझ के फ़ानी, मंग तेरे कोलों मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र देणी उठाईआ। गोबिन्द किहा सुण मेरे पुरख अकाल, अकल कलधारी दयां जणाईआ। मैं तेरे उत्तों वारे लाल, लाल हो के सेव कमाईआ। मैं वेखी तेरी सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, अकल्ला बैठा नूर चमकाईआ। जुग चौकड़ी की रखी अवल्लड़ी चाल, भगतां रिहों तड़फाईआ। मेरा मन्न इक स्वाल, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। कलयुग अन्तिम होणा प्रधान, मेहर नज़र टिकाईआ। भगत सुहेले लभ्भणे बाल अंजाण, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। तूं मालक ख़ालक अबिनाशी करता श्री भगवान, परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ। जे तैथों नहीं कुछ हुन्दा मेरे हथ्थ दे दे कमान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे देवां हिलाईआ। जेहड़ा तेरा नाम ना लवे ज़बान ज़िबह कर के दयां वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण के बलवान, शब्दी गुर आप अख्वाईआ। घर घर अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के देवां पैग़ाम, पैगम्बरां तों देवां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा मेरे प्रभू उठ के लै अंगड़ाई, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरे नाम दी सर्ब दुहाई, कूक कूक सुणाईआ। निगाह मार के

वेख मैं बूटा पुट्टया काही, कायनात दिती हिलाईआ। मैं सत्थर सेज हंढाई, आसण सिँघासण इक वखाईआ। धार धार विच मिलाई, नाता मिट्टी ख़ाक तुड़ाईआ। लेखा लिख्या ना किसे नाल कलम शाही, शहादत सके ना कोए भुगताईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी मेरी तत्तां वाली रात आई, फेर मैनूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणा थाउँ थाँईंआ। गोबिन्द किहा मेरी अरज़ अख़ीर, आख़र दयां जणाईआ। मैं किसे दे हथ्थ भगतां दी फड़ाउणी नहीं तकदीर, करमां दा हिसाब ना कोए बणाईआ। उहनां दा बणन नहीं देणा कोई दूजा पीर, बिना सतिगुर शब्द तों दूजे सीस ना किसे निवाईआ। तेरे कोलों लै के तेरा नाम बदलणी सब दी ज़मीर, ज़ामन हो के लैणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द कहे मेरी मन्नो इक्को अरज़, आरज़ू दिती जणाईआ। भगत उधारना तेरा फ़र्ज़, फ़र्ज़ी रूप ना कोए बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं इक्को तेरी ग़रज़, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। श्री भगवान किहा एह खेल मेरा असचरज, भेद अभेदा दयां खुल्हाईआ। कलयुग अन्त बण भगवन्त धुर दा कन्त जन भगतां अंदर काया मन्दिर साचे नाम दी बदल देवां तरज़, तर्हा तर्हा नाल समझाईआ। गोबिन्द किहा एह मेरी अन्त बेनन्ती, चरण कँवल सरनाईआ। गुरमुख आत्म होवे ना किसे दी मंगती, झोली दूसर अगे ना डाहीआ। प्रभू तेरे नाम दी जिस इक्को पढ़ लई पंगती, वेद पुराणां दी लोड़ रहे ना राईआ। एह खेल वेखणी कलयुग अन्तिम जोत जगदी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। मैं कहाणी याद रखणी अज्ज दी, हुक्मे विच सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा मुकाईआ। गोबिन्द तेरा लेख मुकावांगा। कर के वेस आवेस रूप वटावांगा। वस्सां साचे देस, घर ठांडे सोभा पावांगा। बण के धुर नरेश, नर नरायण बण के हुक्म वरतावांगा। वेखां देस परदेस, दो जहाना खोज खुजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, गणपति परदा आप उठावांगा। गुर अवतार पैगम्बर जो लिख के गए लेख, लेखा पूरा अन्त करावांगा। जो बालक कीते भेंट, लेखा सब दी झोली पावांगा। तेरे अंदर जावां लेट, मन्दिर इक्को इक सुहावांगा। कोई जननी मैनूं जन्मे ना आपणे पेट, रक्त बूँद ना रंग रंगावांगा। बण के सब दा खेवट खेट, नईआ नौका आपणे कंध उठावांगा। बीस इकीसे तों बाद रुत्त बदल के शहिनशाही सम्मत दी पहली चेत, चेतन सब नूं आप करावांगा। जन भगतां खोल्ह के भेत, अन्तर आत्म कर के हेत, दर्शन वखा के नेतन नेत, निज लोचन नैण अक्ख खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकावांगा। गोबिन्द किहा प्रभू तेरे उपर भरवासा, भरम रिहा ना राईआ। मेरी पूरी करनी आसा, आसा आसा विच्चों प्रगटाईआ। मैं वी वेखां तेरा तमाशा, निरगुण

हो के निरगुण सोभा पाईआ। तूं मेरा बणया पापा, पिता पुरख अकाल वड्याईआ। मैं तेरा करां जापा, अवर ना कोए पढ़ाईआ। दोहां दा सांझा होवे साका, चार युग अगे वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करते मैं तेरे प्यार दे अंदर मारना डाका, डाकू हो के खेल वखाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तूं मेरा निक्का जिहा काका, नंन्हां गोदी बह के खुशी मनाईआ। गोबिन्द किहा जिंनां चिर मेरे गुरमुखां दा अंदरों ना खोल्हें ताका, परदा ना मात उठाईआ। निरगुण हो बणया ना राखा, सरगुण सेव कमाईआ। मालक होवें ना कमलापाता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। झगड़ा मुकावें ना ज़ातां पातां, दीन दुनी ना परदा लाहीआ। मेरा मन्ने ना सच्चा आखा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी कार कमावांगा। धरत धरनी सोभा पावांगा। निरगुण निरवैर जोत जगावांगा। पुरख अकाल रूप धरावांगा। दीन दयाल वेस वटावांगा। सच धर्मसाल इक बणावांगा। चार कुण्ट हुक्म वरतावांगा। दहि दिशा परदा लाहवांगा। जन भगतां हिस्सा आप वण्डावांगा। जेहड़ा गोबिन्द बिन अक्खरां तों लेख लिखा, अन्त ओहो पूर करावांगा। तूं पुत्रां नालों प्यारे कीते सिक्खा, सिखर चोटी आप चढ़ावांगा। झगड़ा मुका के वड्डा निक्का, बुड्ढा बाल चरण टिकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरतावांगा। धुर दा हुक्म वरते की, श्री भगवान दे समझाईआ। श्री भगवान किहा जन भगत बणा के पुत्तर धी, धन्दा जगत वाला तुड़ाईआ। सतिजुग सच रखा के नींह, नाम इक्को इक पढ़ाईआ। साचे मार्ग दी ला के लीह, चार वरन दयां खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप समझाईआ। गोबिन्द किहा की करें पुरख समरथ, सति सतिवादी तेरी वड्याईआ। अबिनाशी किहा सब कुछ मेरे हथ्थ, हर घट रम्यां राम नज़री आईआ। बोलणहारा सच, शब्दी शब्द पढ़ाईआ। जन भगतां जोड़ां नत्त, नाता इक्को इक वखाईआ। नाड़ी नाड़ ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सृष्टी दृष्टी नालों कर के वक्ख, इष्ट पुरख अकाल समझाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, अक्खरां दी पढ़ाई दयां मुकाईआ। उस घर विच जाओ वत, जिस वतन तों होई जुदाईआ। मेल मिलावां बण के कमलापति, पतिपरमेश्वर हो के होवां सहाईआ। जिउँ भावे तिउँ लवां रख, राखा हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दए सुहाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरी आई वारी, वाहवा वज्जी वधाईआ। जुग चौकड़ी मैं बणया रिहा वपारी, लोक परलोक भज्जया वाहो दाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार वेखे खलारी, खेल जगत वाली चलाईआ। जुग चौकड़ी बणदी वेखी पनहारी, सेवक रूप वटाईआ। लख चुरासी हुन्दी वेखी खुआरी, चार कुण्ट दहि दिशा होए दुहाईआ। कलम शाही काग़ज़ लिखती लिखदी

रही धुर दी धारी, निरअक्खर अक्खरां विच वण्ड वण्डाईआ। विद्या वेखी वधदी रही जुग चारी, चार कुण्ट कर रुशनाईआ। साध सन्त लेखा विच जंगल जूह पहाड़ी, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। ऋषी मुनी तपी तपीशर तपदे वेखे विच अंग्यारी, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिन भगतां लेखे लग्गे ना किसे दिहाढ़ी, जगत मज़दूर जगत वासना खारी सीस उठाईआ। मन मति बुध कुलखणी विभचारन नारी, नर हरि कन्त ना कोए हंढाहीआ। सोभावन्त बणाए ना कोए अटारी, महल अटल ना कोए वड्याईआ। जन भगतो तुहाडी रहे ना कोए दुष्वारी, दुश्मण अंदरों दयां खपाईआ। आत्म रहिण ना देवां कुँवारी, कन्त सुहागी इक मिलाईआ। मात गर्भ आउणा पए ना दूजी वारी, गेड़े विच ना कोए भवाईआ। राए धर्म ना करे खुआरी, चित्रगुप्त ना हिसाब खुल्हाईआ। नेड़ ना आवे मौत लाड़ी, जमदूत ना कोए सताईआ। अन्तर मेला होए जोत निरँकारी, जिस तों विछड़े ओसे विच समाईआ। गोबिन्द नाल पक्की होवे यारी, याराना इक्को नाल निभाईआ। लेखे लग्गे जिन्हां दाढ़ी, दमां दा सहिंसा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर इक सुहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ वेख साडा मन्दिर, मन वासना खोज खुजाईआ। डूँघी दिसे अन्धेरी कंदर, नूरी जोत ना कोए चमकाईआ।
८११ ममता मोह ना खुल्ले जंदर, धातू गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। मनसा मन ना टिके बन्दर, भज्जे वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया ८११
१६ मेट के गंधल, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। मस्तक धूढ़ी टिक्का दे चन्दन, चन्द सूरज दा रूप ना कोए चमकाईआ। सच १६
सुहञ्जणी धुर अरदास इक्को मन्न बन्दन, नैण करनी ना पए पढ़ाईआ। किसे दर ना जाईए मंगण, दर दर ना अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी इक सरनाईआ। साची देणी सरन सरनगति, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब स्वामी कन्त, दूहला नज़री आईआ। तेरे अगे मेरी मिन्नत, बेनन्ती इक सुणाईआ। साची देणी हिम्मत, हौसला इक वधाईआ। कहे ना कोई किन्नत, ग़मां दा डेरा ढाहीआ। मन करे ना कोई इल्लत, होवे सच जणाईआ। तेरे प्रेम दी होवे मिलत, तमां कंचन देणी मिटाईआ। साथी बणे कोए ना निन्दक, भगतां मेला लैणा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर हिरदे डेरा लाईआ। ऐ हर घट वसण वाले मेरे भगवान, भगवन दे जणाईआ। की तेरा सच निशान, निशाने दे बदलाईआ। की तेरा तीर कमान, चिल्लयां मुख भवाईआ। की तेरा रूप धुर दा काहन, गोपी काहन बैठे सीस निवाईआ। की पैगम्बर करन सलाम, सजदयां विच वड्याईआ। की गुरू गुरदेव तैनूं सतिगुर मन्नण आण, दो जरान हुक्म वरताईआ। की तेरा सच्चा नाम, सानूं दे जणाईआ। क्यों बदलें विच जहान, जुग जुग हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक रखाईआ। साचा मार्ग दे

दे इक्क, एकँकार तेरी सरनाईआ। साचे नाम दी पा दे भिक्ख, भिच्छया आपणी इक वरताईआ। गोबिन्द धार बणा दे सिख, दूजी अवर ना कोए पड़ाईआ। हउँ बालक तूं साडा पित, पतिपरमेश्वर अख्वाईआ। सदा सुहेले वस चित, मन ठगौरी रहे ना राईआ। साडी पूरी कर दे इच्छ, इच्छयावान मंग मंगाईआ। चारों कुण्ट आवें दिस्स, बिन अक्खां सोभा पाईआ। असीं तेरे चरण कँवल दवारे गए विक, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं अन्तिम मंगी मंग अवल्ली, दुनिया (समझ) किसे ना आईआ। बण के योद्धा सूरबीर छली, भरम भुलेखा गया पाईआ। माता पिता पुत्तरां दी दे के बली, बालण हड्डीआं नाल रलाईआ। विचों आत्म वेख के इकल्ली, अकल कलधारी नाल जुड़ाईआ। सोहणी सच अगम्मी कली, धुर दी महक नाल महकाईआ। जिस दा लेखा लिख्या कुछ अली, मुहम्मद नाल सलाह पकाईआ। हथ्थ लै के तेल दी पली, सवा तोला पटयां उत्ते लगाईआ। मुख रख लूण दी डली, अक्खां मीट दए दुहाईआ। कलयुग अन्तिम घड़ी आउणी भली, भाणा प्रभू दए वरताईआ। होका देणा गलीओ गली, मुरीद मुर्शद लए उठाईआ। दुनिया बावरी होणी झल्ली, कायनात कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल वेखां तेरा सच दरबारा, दरगाह साची नज़री आईआ। मेरा भविख दा इशारा, लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। कुँवार कन्या दा उधारा, जुझार नाल कुड़माईआ। जिस नूं समझे ना कोए संसारा, बिन तेरे मेरे भेव ना किसे आईआ। मैं कीता नहीं प्यारा, पाणी जल ना कोए प्याईआ। दे के अंदर शब्द इशारा, अंदरों दिता समझाईआ। जा के वेखो पुरख निरँकारा, जो सब दा पिता माईआ। उह कर के निमस्कारा, भज्जा वाहो दाहीआ। झूजया नाल कटारा, बन्द बन्द कटाईआ। कन्यां मारया इक्को आह दा नाअरा, लोकां दए सुणाईआ। गोबिन्द तेरा मेरा इक्को अधारा, दूजा समझे कोए ना राईआ। मेरा बावन नाल प्यारा, जो भगतां भाउ रिहा जणाईआ। मैं आउणा लोकमात दूजी वारा, लेखा लेख ना कोए मिटाईआ। खेल होणा नर निरँकारा, निरगुण निरवैर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द किहा मेरी नदेड़ दी अन्तिम आसा, आशा दयां जणाईआ। जिस कन्यां ने कीता भरवासा, भरोसा उस दा तोड़ निभाईआ। जिस दी चार युग चलदी आई शाख़ा, शनाख़त करे ना कोए लोकाईआ। मैं ओस दा मन्नणा आखा, जो आख़र आपणा रंग चढ़ाईआ। जिस भगतां दीआं मेटणीआं वाटां, पन्ध दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरी शब्दी धार दलील, मन वासना ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल अगे अपील, दूसर अगे ना कोए शनवाईआ। तेरी

धार दे पहरे वस्त्र नील, नीले वाला दए दुहाईआ। तूं मालक या मुबीन, अज़ीम तेरी शरनाईआ। साचे हुक्म दी कर ताअमील, फ़रमान देणा सुणाईआ। निरगुण हो के आउणा उत्ते ज़मीन, निहकलंक वेस वटाईआ। रखणी धार महीन, जगत नज़र कोए ना पाईआ। बिन भगतां होवे ना किसे यकीन, यके बाद दीगरे सारे देणे हिलाईआ। आपणी चिल्ले कमान वाली दे के तालीम, सोहँ भथ्था देणा समझाईआ। झगड़ा रहे ना नर मदीन, मुद्दा इक्को नज़री आईआ। सब दा सांझा करना दीन, वरन बरन डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह वेख वखाईआ। गोबिन्द किहा मेरा अन्त अख़ीर इक्को इरादा, इक्को वार जणाईआ। जन भगतां गुरमुखां बणां पिता पुरख अकाल मिलावां दादा, जो धुर दा मालक इक अख्वाईआ। ओस दा वेखां अगम्मी स्वांगा, जो कलयुग सन्त लए प्रगटाईआ। जिस दीआं सारयां रखीआं तांघां, निरगुण हो के निरगुण विच ध्यान लगाईआ। जिस प्रेम दीआं चढ़ाउणीआं सच्चीआं कांगां, कागों हँस बणाईआ। जिस दे नाम दीआं पैणीआं धाकां, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। ओस प्रभू ने फड़नीआं नहीं कोई डांगां, हुक्म नाल हुक्म देणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी इच्छया पूर कराईआ। गोबिन्द किहा मेरी इच्छीआ मनसा, सति धार जणाईआ। गुरमुख रूप सोहँ हँसा, बुद्धी काग ना कोए कुरलाईआ। जन भगतां दा सोहणा बणावां बंसा, बंसरी वाला वेखे चाँईं चाँईंआ। मनुआ हँकारी रहे ना कंसा, दूती दुष्ट दयां खपाईआ। कोटन कोटि वेख सहँसा, सन्त सुहेले लवां उठाईआ। आपणे बणा के अंसा, पिता पूत गोद सुहाईआ। भरम भुला के सृष्टी जनता, पड़दे ओहले विच टिकाईआ। गढ़ बणा के हउमें हंगता, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। बोध अगाध बण के पंडता, गुरमुखां करां पढ़ाईआ। जन भगतां दुःख लाह के कूड़ी चिन्ता, चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरी आसा शब्द धार, रूप अवर ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणा देणा कर्ज दए उतार, मकरूज आपणी करे सफ़ाईआ। भगतां दा सांझा करे प्यार, शब्दी तन्द इक रखाईआ। पूरब लहिणे दा उधार, कन्यां दी झोली पाईआ। गोबिन्द दा लेखा नाल जुझार, बिन झूजिआं दए चुकाईआ। जिस दा होणा सच विहार, वेला वक्त गया आईआ। बावन बोल के सच जैकार, रिषीआं दिता समझाईआ। जिन्हां पूरा कीता एतबार, उन्हां ल्या प्रगटाईआ। साची करनी कार, करता कीमत आपे आपणे हथ्थ रखाईआ। फेर जन्म लैणा पए ना जुग चार, बिना गोबिन्द ना होए कुड़माईआ। सोहणा महल्ल ल्या उसार, जिस दी नींह ना कोए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती इक वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं सच चलाउणी रीत, रीतीवान दृढ़ाईआ। भगत भगवान दी दस्स प्रीत,

परमात्म आत्म मेल मिलाईआ। साचा मार्ग दस्स के ठीक, ठाकर देणा वखाईआ। जन भगतो सदा रहे नहीं मन्दिर मसीत, शिव दवाले मठ तोड़ संग ना कोए निभाईआ। जन भगत सुहेले इक्ठे हो के साची करो तस्दीक, शहादत आपणा प्यार भुगताईआ। इक्कीआं दी उम्मीद, गोबिन्द अन्त नंदेड़ गया रखाईआ। अठारां हाढ़ नूं सब ने आउणा नज़दीक, नेरन नेर समझाईआ। पुरख अकाला वसणा भीत, भीतर हो के खोज खुजाईआ। बीस इकीसा गया बीत, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। जन भगतां काया चोली चढ़ना रंग मजीठ, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीत इक दृढ़ाईआ। गोबिन्द कहे मेरी अन्त अख़ीरी मंग, पुरख अकाल अगे झोली डाहीआ। गुरमुखां चाढ़ साचा रंग, मेहर नज़र नाल तराईआ। नाम वजाउणा हक मृदंग, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जिन्हां दा नाता तुट्टा उन्हां दा लैणा गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरी इक सरनाईआ। कँवार कन्या पाउणी ठंड, जो बावन भोजन भाग कढाहीआ। जिस दे कारन सब नूं भेजी गंढु, गुरमुख गुरसिख लए मिलाईआ। जन भगतो करयो कोई ना रंज, दुखड़ा अंदरों दए कढाहीआ। डोरी नालों तुटण नहीं देंदा तन्द, बन्धन जगत ना कोए वखाईआ। ढोला सुणा के सोहँ छन्द, शाम कूड़ी दए गवाईआ। चरण प्रीती दे के अनन्द, चन्द इक्को दए चमकाईआ। जन भगतो साढे पंज प्रेम प्यार दी चढ़ना जंञ, लाड़ा दिहाढ़ा इक्को नज़री आईआ। जल धारा लै के आए जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, कुंदन सिँघ हथ्थ फड़ाईआ। जिस दा गोबिन्द नाल मेला पुरी आनंद, सेवा साढे सत्त साल कमाईआ। भोजन खांदा सी इक डंग, दूजे डंग रसना चरणां नाल छुहाईआ। इक दिन खुशीआं नाल फड़ के तीर कमंद, चिल्ला उपर ल्या उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं अन्त अख़ीरी दस्सां, पुरख अकाल जणाईआ। मैं कलयुग वेला वेखां अक्खां, जगत नेत्र लोड़ रहे ना राईआ। तेरा पूत तेरा दूत हो के तेरा कलबूत हो के नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। खुशीआं विच नच्चां, आपणा ताल वजाईआ। जन भगतां नाल नाता कर के पक्का, पक्की तेरी गंढु पवाईआ। जिस कन्या दा लक्ष्मण सिँघ पिछला ताया सका, सगण लै के सगण मनाईआ। ओसे दा गवांढ ओसे दस्सां, जो नाता राज नरैण नाल रखाईआ। जिस दे कोल मौली अट्टा, तन्द सोहणा रिहा जुड़ाईआ। बादाम बदली करन वाला अच्छा, जो शरअ दए बदलाईआ। इक रुपईआ जिस दे नाल रखा, दोआबे वालयां मिली वड्याईआ। जिन्हां विच्चों कीड़ी रूप लाल सिँघ सच्चा, जो माछूवाड़े गोबिन्द सेव कमाईआ। मालवे वालयां लाहा धुर दा खटा, कंगण धुर दा ल्या छुहाईआ। जम्मू वालयां मिटया फट्टा, तन शृंगार इक वखाईआ। माझे वालयां भुल्लयां धोता घट्टा, दुरमति मैल गवाईआ। गुरमुख पूना इटारसी कर के इक्ट्ठा, दिल्ली दिलों

लए जगाईआ। जन भगतो तुहाडा सदा लई मेट के रट्टा, समाजां तों देणा छुडाईआ। सचखण्ड दा लै पट्टा, दसखत उत्ते देणा कराईआ। तुहाडे कारन आया नठ्ठा, गोबिन्द वेस वटाईआ। झगड़ा मुक जाए अठ्ठ सठा, तत्ता अठ्ठां लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे जन भगतो मैं तुहाडा वेख्या सुहावणा समां, शामत सृष्टी उत्ते आईआ। जिस कारन तुहानूं कीता जम्मां, ज़ामन हो के लवां छुडाईआ। मैनूं तुहाडे प्रेम दा तम्मां, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। तुसां विहार करना नवां, नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल दा हुक्म होणा रवां, रवानगी सब दी देवे कराईआ। कलयुग अन्तिम होणा निकम्मा, निकरमण हो के दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाडे लेख दा सब तों वक्खरा रख्या पंना, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान ग्रन्थ सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो तुहाडी सुहञ्जणी होवे दिहाढ़ी, हाढ़ अठारां सोभा पाईआ। प्रेम प्यार दा वेखणा लाड़ा लाड़ी, धार दो धार दए वखाईआ। कलयुग अन्त आई वारी, वारता पिछली रिहा दुहराईआ। जो सतिजुग तों कन्यां चली आई कुँवारी, आसा इक्को ओट तकाईआ। ओस दा नूर होवे उज्यारी, उजरत मंगे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान किहा गोबिन्द मैं वेखी तेरी खण्डे धार, खड़ग खुशी मनाईआ। गुरमुखां तक्कया प्यार, गुरसिखां विच समाईआ। नाता तोड़ संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखे थाउँ थाँईंआ। इक्को पुरख अकाल उत्ते कर एतबार, भरोसा चरण कँवल जणाईआ। ओस दी वेखणी अन्तिम वार, वेला वक्त दए गवाहीआ। जन भगतो होणा हुशियार, होछी मति ना कोए बणाईआ। खुशीआं नाल भुगते एह विहार, विवहारी दए भुगताईआ। तुसां सोहँ ढोले लाउणे महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान करनी जैकार, जै जैकार विच समाईआ। अगे सब कुछ प्रभू अख्त्यार, मुख़तारनामा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तुहाडे कोलों पूरा करना एह उधार, धुर फ़रमाने नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो किस बिध खुशी मनाउगे, पुरख अबिनाशी मंग मंगाईआ। केहड़ा रंग चढ़ाउगे, जो एथे ओथे उतर ना जाईआ। केहड़ा सगण पाउगे, जिस दी वस्त ना किसे समझाईआ। केहड़ा जशन वखाउगे, जिस दा नूर ना कोए चमकाईआ। केहड़ा गुलशन महकाउगे, सुगंध इक प्रगटाईआ। केहड़ा नाम ध्याउगे, ढोला इक शनवाईआ। किस नूं घोड़ चढ़ाउगे, जो आपणा जोड़ जुड़ाईआ। किस नाल तोड़ निभाउगे, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर सुहञ्जणा सच सुहाउगे। घर सुहञ्जणा सच सुहावांगे।

भगत सुहेले मिल के सोभा पावांगे। तेरे ढोले हरि जू गावांगे। जगत विचोले सर्ब तजावांगे। जो तेरी प्रीती अंदर मौले, उहनां दा दर्शन कर के खुशी प्रगटावांगे। जिन्हां दे नाल कीते इकरार कौले, उहनां हक वण्ड वण्डावांगे। तूं हर घट अंदर बोलें, अनबोलत तेरा राग सुण के आपणे अन्तर खुशी मनावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखावांगे। की आपणा रंग वखाउगे। की प्रेम प्यार वधाउगे ? की गुरमुख सज्जण नज़री आउगे। की गुरसिख सोहणी वण्ड वण्डाउगे। की जो बावन गया लिख, ओस दा पूरना आपे पाउगे। की जो गोबिन्द मंगी भिख, उस दा लेखा वेख वखाउगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाउगे। घर साचे सगण मनावांगे। पिछले नाते आप प्रगटावांगे। भगत सिँघ ते बिशन सिँघ पिछले मामे नाम धरावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक तेरी ओट रखावांगे। जे प्रभ दी ओट रखाउगे। घर बैठे दर्शन पाउगे। बाहर लभ्भण कदे ना जाओगे। सुरती शब्द नाल जुड़ाउगे। निर्मल नूर जोत डगमगाउगे। भाग लगा के काया कोट, काया काअबा वेख वखाउगे। शब्द अगम्मी लग्गे चोट, सोई सुरती आप उठाउगे। एस प्यार नूं भगतो लैणा सोच, आपणी समझ विच मिलाउगे। वेले वक्त नहीं आउँदे रोज़, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पछताउगे। गोबिन्द दे नंदेड़ वाले चोज, पुरख अकाल नाल मिल के वेख वखाउगे। एसे कर के तुहाडे जन्म मरन दे कटे रोग, लख चुरासी विच फेर ना आउगे। तुहानूं करने नहीं पैणे जोग, चिन्ता सोग सर्ब मिटाउगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर इक सुहाउगे। जन भगत कहिण प्रभ साडी साची इक्को आस, अगम्म अगम्मड़े दईए जणाईआ। तेरा वेख नूर प्रकाश, वज्जे नाम वधाईआ। भगतां दा भगतां नाल होवे साथ, सोहणा रंग रंगाईआ। पूरब दे लहिणे दा काज, करनी दे करते तेरी वड्याईआ। सानूं सिख्या दस्स दे जाच, याचक हो के मंग मंगाईआ। किस बिध वेखीए खेल तमाश, परदा देणा उठाईआ। तूं हर घट वस्या आप, बोलणहार शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा दृढ़ाईआ। साचा खेल दस्सां सच एक, एकँकार जणाईआ। जिन्हां दी पूरब प्रभ चरण दी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। सब ने खुशीआं रंग लैणा वेख, नेत्र लोचन नैणां दयां वखाईआ। भगतो भगत दवारा बणाओ देस, परदेस पुरख अकाल फेरा पाईआ। सिर्फ़ बदलण आया तुहाडी रेख, कर्म कांड दा गेड़ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं दस्सां हाल, पूरब माज़ी वेख वखाईआ। हुक्में अंदर पुरख अकाल, इक इकल्ला शहिनशाहीआ। जन भगतो पंज प्यारे विच रखे दलाल, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। इक्कीआं दी मिसाल, साची सिक्खी दए उपजाईआ। हरि

भगत सुहेले कर खुशहाल, वड्डे निक्के इक्को रंग चढ़ाईआ। रच्छया करे बण प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा हुक्म मन्नणा इक जो बणे स्वाल, फ़िकरा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। साढे पंज दा होवे वक्त, घड़ी घड़ी ना कोए बदलाईआ। कुंदन सिँघ विहार करना जगत, इक्की ग्लास सोभा पाईआ। सब ने मेटणी आपणी हरस, खुशीआं ढोले गाईआ। पुरख अकाल अमृत मेघ देवे बरस, दुरमति मैल धवाईआ। पूरब लहिणा पूरा होवे फ़र्ज़, पिछला लेखा दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हुक्म समझाईआ। जन भगतो तुहाडी बदल देणी आदत, नाता भगतां नाल रखाईआ। इक दूजे दा आपे बणना सालस, कूड़े रिश्ते दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडी गोबिन्द दए शहादत, मौके सिर आप भुगताईआ। तुहानूं करनी पए ना कोए इबादत, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो दोआबे वालयां दा वक्खरा विहार, संगत सारी सेव कमाईआ। जिस दा वारना इक इक्क वार, इक इक्क रुपईआ देवे गवाहीआ। जेहड़ा दब्बया थल्ले भगत दवार, एह पाल सिँघ दा प्यार, जो पिछला रिहा प्रगटाईआ। सोहणा करे विहार, विवहारी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दए वखाईआ। साची खेल करे निरँकार, निरगुण हथ्थ वड्याईआ। जांञी सोहणे दिसो संसार, मन मोहणा रूप बदलाईआ। तुहाडे अंदर इक गुफ़तार, जो तूं ही तूं ही राग अलाईआ। जन भगतो इस तों वड्डा नहीं दरबार, जित्थे भगत भगवान मिल के खुशी मनाईआ। तुहाडे आनंद कारज करने जगत विहार तों बाहर, संसार वाली ना कोए कुड़माईआ। जिन्हां बच्चयां दा हरि संगत विच बणया रिहा प्यार, मुहब्बत सके ना कोए तुड़ाईआ। ना कोई पंडत ना कोई मुल्ला ना कोई ग्रन्थी लावां पढ़े चार चार, चार वरन दा साचा नाता पुरख बिधाता भगतां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरते संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जन भगतो आउणा भगत दवार, प्रभ दा मेला सहिज सुभाईआ। जित्थे नाता जुड़े अगम्म अपार, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। सृष्टी वाले बण के कन्त भतार, दोवें मिल के पुरख अकाल इक मनाईआ। क्यों हर घट बोले राम, रमईआ सब दे विच समाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, गुर अवतार पैगम्बर सेवा लाईआ। अन्त वेखे तुहाडी मौले आप बहार, बसन्त खुशी मनाईआ। सुबह सत्त चाली ते होणा उह विहार, जिस दी धार भगत रहे प्रगटाईआ। नरैण सिँघ फूलण बरखा पंज पंज मुट्ठी लाए पंज पंज वार, जोड़ी जोड़ी उत्ते सुटाईआ। हरि संगत बोल के जै जैकार, खुशी लैण मनाईआ। साढे दस नूं खड़ा होणा उठ के इक वार,

बैठा रहिण कोए ना पाईआ। उच्ची कूक के कहिणा पुरख अकाल तेरा इक प्यार, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म कहे एह जगत ना समझयो शादी, शादयाना बेपरवाहीआ। जन भगतो तुहाडी थोड़ी दिसे आबादी, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। पुरख अकाल साजण रिहा साजी, सज्जण हो के होए सहाईआ। एह आशा बुरज तों डिगदी आखी सी बुढ्ढी दादी, दाअवे नाल जणाईआ। मेरी ऐवें ना जाए मानस जन्म दी बाजी, बाज़ां वाले तेरे अगे सुणाईआ। ... ... अन्तिम मन ने कीता बाग़ी, माया परदा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। हर घट वस्या इक रमईआ, रामा नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति चलाए नईआ, नौका नाम उपजाईआ। भगत सुहेला इक अकेला बणे धुर दा सईआ, साहिब स्वामी अन्तरजामी खोजे थाउँ थाँईंआ। पतिपरमेश्वर हो के पकड़े बहीआ, सगला साथ आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म इक वरतंत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। करे खेल श्री भगवन्त, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले इक्ठे कर के अन्त, अन्तश्करन वेख वखाईआ। गुरमुखो तुहाडा गीत इक्को मंत, मंत्र सच दिता समझाईआ। होवे मेला धुर दे कन्त, दुहागण रहिण कोए ना पाईआ। सद्दणा पए कोए ना पंडत, जगत वेदी ना कोए गडाईआ। मुल्ला दी करनी पए ना मिन्नत, जगत शरअ ना कोए नकाहीआ। आत्म परमात्म दी लांव चौथी नानक बोली जगत वासना खेल ना खेलणा इल्लत, धुर दा हुक्म वरताईआ। एसे कर के जोड़यां अंदर हुन्दी ज़िल्लत, ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे शब्द स्वामी अन्तरजामी देवे कोए ना नाम दी खिलत, हक पोशाक ना कोए पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतो तुहाडे अंदर शब्द नाम दी हिम्मत, हौसले धुर दे दए वधाईआ। जन भगतो तुहाडा होण वाला संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। जगत समाज विच्चों होण लग्गा विजोग, गोबिन्द करे जुदाईआ। तुहाडा इस विच नहीं कोई दोष, दोषी सृष्टी लए बणाईआ। तुसीं सदा रहिणा ख़ामोश, भाणे अंदर सीस निवाईआ। अगे तुहानूं दर्शन देवे रोज़, रोज़े बांग दी आस ना कोए तकाईआ। सदा माणयो मौज, मजलस बेपरवाहीआ। घर ठाकर ल्यो खोज, परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर दए वसाईआ। साचे घर होणा वसेरा, असथिर इक सुहाईआ। भरमा चुक्के डेरा, डण्डावत इक दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा, एहो सच पढ़ाईआ। शब्दी सतिगुर सिंघ शेरा, तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। विष्नूं भगवान सुहावण वाला खेड़ा, दर ठांडा

सोभा पाईआ। भगत दवारे आ गया जेहड़ा, अन्तर आत्मा प्रेम वधाईआ। ओस दा मानस जन्म डुब्बण नहीं देणा बेड़ा, दाअवे नाल पार लँघाईआ। जो जगत वासना विच मारन आए फेरा, राए धर्म हथ्थ सज़ाईआ। जन भगतो तुहाडा दिवस होए चंगेरा, चंगेरां वाले चंगी तरां तुहाडे नाल मिलाईआ। तुहाडा सोहणा वेखे घेरा, इरद गिर्द वज्जे वधाईआ। रात दे अन्धेरे बणना सवेरा, गुरमुखां सुबह लैणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, मेहरवान हो के करनी मेहरा, महबूब हो के मुहब्बत विच समाईआ।

१८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल

शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। सचखण्ड दवारा सोहे सच दरबार, मुकामे हक होए रुशनाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। इक्वे होए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। चरण धूढ़ी ला के छार, मस्तक टिक्का नाम रमाईआ। किरपा कर हरि निरँकार, वड्ड दाते तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। भविख्तां विच कर के इज़हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए गवाहीआ। शब्दी ढोला साचा सोहला ना कोई गाए वार, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। लख चुरासी पाउँदे गए सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। तेरा अन्त ना पारावार, बेअन्त कह के पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे झुकाउँदा सीस, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। तूं करनी करता हरि जगदीश, वाली दो जहान अख्वाईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, इक्को नाम दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना रसना जेहवा दन्द बतीस, आत्म परमात्म परदा दे उठाईआ। वेला चुकया बीस इकीस, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। सृष्टी दृष्टी मूल रही ना ठीक, ठाकर सच ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अन्धेरा तारीक, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। तेरा मार्ग मिले ना किसे बारीक, मंज़ल मिले ना बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तेरी करदे गए उडीक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी गुर कर तस्दीक, शहादत गोबिन्द इक भुगताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे वसणहार वसनीक, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। आसा मनसा पूरी कर रीझ, तृष्ना पिछली दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे झुक, दर ठांडे सीस निवाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चातृक वांग रहे बिल्लाईआ।

चार वरन अठारां बरन लग्गा दुःख, साची सिख्या गए भुलाईआ। भाग लग्गा किसे ना कुक्ख, जनणी मिले ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों बाहर कढ्ढे ना कोई मनुक्ख, वासना मोह विच हल्काईआ। आत्म परमात्म नाता गया तुट्ट, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक चार कुण्ट पई फुट्ट, गोबिन्द अमृत जाम हत्थ किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना होई लुट्ट, सति धर्म ना कोए समझाईआ। काया माटी ख़ाली भाण्डे दिसे ठुट्ठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे समझाईआ। साचा हुक्म दे फ़रमान, गुर अवतार मंग मंगाईआ। पैगम्बर करन सलाम, बिन सजदे सीस झुकाईआ। निरगुण नूर सच अमाम, लाशरीक तेरी सरनाईआ। धुर दरगाही साचे राम, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। डण्डावत बन्दना कर प्रणाम, नमस्ते कह सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख आण, श्री भगवान फेरा पाईआ। भविख्तां विच तेरा ब्यान, शहादतां नाल गवाहीआ। योद्धे सूरबीर बलवान, कल कल्की वेस वटाटीआ। दीन मज़्ब झगड़ा ना रहे शैतान, शरअ ना रहे लड़ाईआ। आत्म परमात्म सब नूं दे ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। काया मन्दिर साचा काअबा दस्स मकान, हुजरा हक दे वखाईआ। जलवा जोत नूर महान, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। अमृत आत्म दे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। साचा मार्ग दस्स जहान, झगड़ा जगत रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा खेलया खेल महान, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुर अवतार पैगम्बर देवण होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। फिरी दरोही चौदां लोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। तेरा पढ़े ना कोए हक सलोका, ढोला नाम ना कोए शनवाईआ। भाग लग्गे ना काया कोठा, माटी तन ना कोए वड्याईआ। प्रकाश होवे ना निर्मल जोता, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना चोटा, चोटीआं पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग जीव जगत वासना होया खोटा, सति सच ना कोए अपनाईआ। बिन तेरी किरपा शाह सुल्तान दिसे फोका, बग बप्पड़ा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे वरताईआ। साचा हुक्म दे श्री भगवान, दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम बदल दे विधान, शब्द सुनेहड़ा सच सुणाईआ। झगड़ा रहे ना सीता राम, गोपी काहन ना कोए लड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद शरअ रहे ना कोए शैतान, लाशरीक दे समझाईआ। नानक गोबिन्द हक पहचान, परदा ओहला आप उठाईआ। साचा मालक मेहरवान, महबूब दे दृढ़ाईआ। चार वरन करन परवान, बरन अठारां भुल्ल ना जाईआ। आत्म परमात्म आपणे नाल कर परवान, परवाना धुर दा दे फड़ाईआ। मनुआ मन ना रहे अफ़ग़ान, शब्द खण्डा हत्थ उठाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे

आए दान, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे मंगण मंग, अन्त अख़ीर ध्यान लगाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा लँघ, लेखा मात रहे ना राईआ। सृष्ट सबाई होई दंग, हैरानी अंदर दिसे लोकाईआ। साची दए कोई ना गंढु, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। शब्दी नाम ना वज्जे मृदंग, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। दीनां मज़्ह़बां झगड़ा पाया कंध, दूई द्वैत ना कोए गवाईआ। परदा लथ्था ना ब्रह्म हँ, पारब्रह्म ना कोए समाईआ। साचा नूर ना दिसे चन्न, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा राग सुणे कोए ना कन्न, सरवण धार ना कोए बंधाईआ। दोए लोचन सृष्टी होई अन्नृ, तेरा दरस कोए ना पाईआ। साचे मन्दिर मिटे कोई ना पन्ध, गृह मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, दर ठांडे सीस झुकाईआ। सच प्रेम दा दे आनंद, आनंद आपणा दे वखाईआ। लेखा मुक जाए जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अठ्ठ सठ्ठ ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर निमस्कार, सच दवारे सीस झुकाईआ। सतिजुग साची दस्स दे धार, शब्दी हुक्म प्रगटाईआ। किस बिध होवे जगत विवहार, विवहारी आप कराईआ। ज़ात पात ना रहे संसार, आत्म ब्रह्म दे समझाईआ। ऊँच नीच ना होए खुआर, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। साचा दस्स दे इक प्यार, सांझे यार तेरी वड्याईआ। कागत कलम ना लिखणहार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साचा मार्ग दस्स भगवन्त, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मेल कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी वड्याईआ। भगत सुहेले सन्त, सतिगुर हो के पैज धराईआ। इक्को नाम तेरा मंत, मंत्र साचा दे समझाईआ। गढ़ तुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बण जाए संगत, झगड़ा दुनी रहे ना राईआ। सच ब्रह्म दी होवे पंगत, पंगती आपणी दे समझाईआ। जित्थे कोई मुल्ला शेख़ ना होवे पंडत, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वक्त आप सुहाईआ। साचा वक्त सुहा भगवान, धुर दी मंग मंगाईआ। खेल खेल विच जहान, दो जहानां वेख वखाईआ। सति धर्म दा बणा इक विधान, विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म अन्तर दे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म परदा आप उठाईआ। सच प्रीती दे के दान, दानव देवत सुर लए बणाईआ। घर स्वामी मिले आण, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन अरज़, आरज़ू हक सुणाईआ। जुग बदलणा प्रभू तेरा फ़र्ज़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहिण ना पाईआ।

कलयुग अन्तिम पूरी कर ग़रज़, निरगुण हो के वेख वखाईआ। दीन दुनी वेख असीं होए असचरज, हैरानी साडे अंदर आईआ। शरअ छुरी फिरे जगत विच करद, कातिल मकतूल दोवें रहे कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए नापड़द, ओढण शब्द नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम दा सारे मंगदे धड़त, चुंग़ीख़ाना ल्या बणाईआ। नानक ने आत्म परमात्म चौथी लाव कीती लिख्त, तेरा रूप मन नाल तन ना कोए कुड़माईआ। गुरमुख मिल के रहे कोई ना फ़र्क, फ़ैसला हक देणा सुणाईआ। चार युग दी पिछली कर दे तरक, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। तूं मालक उत्ते अर्श, फर्श तेरी वज्जे वधाईआ। जन भगतां दे दरस, सनमुख हो के सोभा पाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। पूरब लहिणा देणा कर्ज, मकरूज हिसाब मुकाईआ। आपणा खेल कर निधड़क, गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। तेरा नाम इक्को होवे खण्डा खड़ग, चिल्ला धुर दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग ला दे चार वरन, वारता आपणी इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे कोई ना बरन, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। जीव जंत साध सन्त तेरा ढोला इक्को पढ़न, सोहँ बोला सति समझाईआ। सच प्रीती दस्स दे प्रन, प्रणाम इक्को दे समझाईआ। तूं किरपा कर करनी करन, कादर कुदरत दृढ़ाईआ। भय भउ चुकाउणा डरन, समाज दा झगड़ा रहे ना राईआ। सच दवारे दस वड़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सन्त सुहेले पौड़ी चढ़न, घर मन्दिर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे वरताईआ। श्री भगवान कहे सुण पैगम्बर गुर अवतार, अवतरा दए जणाईआ। कलयुग लेखा मुके अन्तिम वार, वारता आपणी दए समझाईआ। अगे खेल करे निरँकार, निरगुण दाता वड वड्याईआ। हुक्म संदेशे देवे विच संसार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल समझाईआ। सृष्टी दृष्टी लए उठाल, सुनेहड़ा इक सुणाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। सब दी सुरती लए संभाल, सम्बल बह के खुशी मनाईआ। पुछणहार मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। सतिगुर शब्द बणा दलाल, सांझा पीर आप हो जाईआ। जोती नूर जलवा कर जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। निरगुण धार इक अमाम, कामल मुर्शद फेरा पाईआ। शरअ दे झगड़े मेट तमाम, तमन्ना कूड़ी दए गवाईआ। दीन मज़्ब दा रहे ना कोई ग़ुलाम, ग़ुरबत अंदरों दए कढाहीआ। इक्को परवरदिगार पुरख अकाल साचे राम करनी पए सर्ब प्रणाम, सलाम इक्को दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर सुणो शब्दी बात, हुक्म संदेशे विच जणाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा लवां उठाईआ। साचा जोड़ के धुर दा नात, निरगुण हो के मेल मिलाईआ। जो गोबिन्द

गया आख, भविख्तां विच समझाईआ। सो खेल खेलां साख्यात, परदा ओहला नज़र कोए ना आईआ। जिस निरअक्खर नूं सक्या कोई ना वाच, बुद्धिवान सके ना कोए समझाईआ। उस दा परदा करां फ़ाश, नकाब नज़र कोए ना आईआ। साचा मार्ग कर जगत प्रकाश, नूर नूर दयां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कार कमावेगा। सो पुरख निरँजण वेख वखावेगा। हरि पुरख निरँजण रंग चढ़ावेगा। आदि निरँजण जोत जगावेगा। एकँकारा खेल खिलावेगा। अबिनाशी करता सोभा पावेगा। श्री भगवान परदा लाहवेगा। पारब्रह्म वण्ड वण्डावेगा। ब्रह्म आपणा रूप दरसावेगा। शब्दी ढोला राग अलावेगा। सोहला साचा इक सुणावेगा। मौला हो के वेख वखावेगा। काया चोला आप सुहावेगा। पंज तत कोए ना पावेगा। त्रैगुण लेखा अन्त करावेगा। भगत सुहेला सन्त उपावेगा। गुर चेला अंग लगावेगा। सज्जण सुहेला दया कमावेगा। कलयुग अन्तिम आया वेला, कूड़ी क्रिया डेरा ढावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। साची करनी कार कमावांगा। निरगुण हो के हुक्म वरतावांगा। सरगुण तेरी धार समझावांगा। लख चुरासी फोल फुलावांगा। दीन मज़्ह्ब झगड़ा अन्त चुकावांगा। चार वरनां इक्को अदब, बेअदबी विच्चों बाहर रखावांगा। पुरख अकाल दे सब नूं पूजणे पैण कदम, बिन कदमां तों सीस सर्ब निवावांगा। आत्म परमात्म साचे ढोले वज्जण, शब्द नाद गीत दृढ़ावांगा। नाता जोड़ के पंज तत काया माटी बदन, बदला सब दा आप चुकावांगा। दो जहानां कर के अदल, इन्साफ़ इक्को इक रखावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया देवां बदल, सतिजुग साचा मार्ग प्रगटावांगा। मन वासना रहिण ना देवां नकल, अकल सब दी इक रखावांगा। साचा दे के यकीन हकल, हकीकत आपणी इक समझावांगा। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडा हुक्म कलयुग करया मुअतल, मुअत्तला सब नूं आप करावांगा। झूठा छड्डुणा पए वतन, बेवतनां आप मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा आप जगावांगा। सतिजुग साचे उठ बलवान, तेरी वारी आईआ। किरपा करे श्री भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग वेला अन्त पहुंचया आण, गोबिन्द चिल्ला रिहा उठाईआ। पुरख अकाल दे हथ्थ होणी कमान, कामल मुर्शद हुक्म वरताईआ। घर घर मन्नणे पैण ना मूल जजमान, जमां दा लेखा देणा मुकाईआ। सब नूं मार्ग दे आसान, परदा ओहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म संदेसा इक दृढ़ाईआ। सतिजुग उठ के चरण रिहा झुक, नैणां नीर वहाईआ। कलयुग पैंडा किस बिध रिहा मुक, पुरख अकाल दे समझाईआ। अबिनाशी करते किहा गोबिन्द कोलों पुछ, जो बाले नीहां हेठ दबाईआ। इक्को साची रख के ओट, चोट जगत विच शनवाईआ। सचखण्ड

दवारे बह के कोट, किला गढ़ इक दरसाईआ। मेला मिल के निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द सतिगुर हो के मारे चोट, चोटी चढ़ के लए उठाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोट, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जो झगड़ा मुका के गया वरन गोत, अमृत जाम इक प्याईआ। उस दी करी किसे ना सोच, द्वैत अंदरों ना किसे कढाहीआ। सधरां नाल करदे खोज, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर सरनाई इक समझाईआ। सतिजुग कहे सुण गोबिन्द मेरे सतिगुर, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। की लहिणा देणा कलयुग अन्तिम धुर, मस्तक सब दा वेख वखाईआ। किस बिध छड्डुया अनन्द पुर, लहिणा जगत चुकाईआ। किस हुक्म नाल आवें मुड़, निरगुण हो के फेरा पाईआ। जन भगतां प्रीत निभावें लग्गी तोड़, टुट्टी गंढु पवाईआ। साचे शब्द चढ़ें घोड़, भज्जें वाहो दाहीआ। सच दवारे आयों वागां मोड़, एह तेरी बेपरवाहीआ। तेरयां सिक्खां नूं तेरी सदा लोड़, लोहड़े विच लोकाईआ। माछूवाड़े सेज हंढाई सत्थर रोड़, रोड़ा अगे ना कोए अटकाईआ। आपणा लेखा दस्स दे नवां नकोर, कलम शाही समझ सके ना राईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घोर, तेरा दरस कोए ना पाईआ। मन वासना इक्ट्ठे होए ढोर, पशू प्रेत रूप वटाईआ। झगड़ा मुक्के ना मोर तोर, तेरा मेरा ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे वरताईआ। गोबिन्द कहे सुण सतिजुग सच्चे मित्र, मित्रा दयां दृढ़ाईआ। मैं निरगुण धारों आया निक्कल, मैनूं जन्मे कोए ना माईआ। मेरी लभ्भे किसे ना शकल, ज्ञानी ध्यानी समझ किसे ना आईआ। मैनूं करे कोई ना कतल, तन धड़ ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दवारा मेरा वतन, पुरख अकाल पिता माईआ। मैं आया भगतां दे पत्तन, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दा रहिण नहीं देणा यतन, यथार्थ लेखा देणा चुकाईआ। माटी भाण्डे करने सक्खण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द उह वेख तेई अवतार, बैठे सीस निवाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करन पुकार, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। यामबीन सांझे यार, लाशरीक ओट तकाईआ। वाहिद तेरा कलमा कायनात जिस दी पावे कोई ना सार, सर सके ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं सब दा गया एतबार, बेएतबारी होई लोकाईआ। जो सिख्या आया सिखाल, हुक्म इक दृढ़ाईआ। उस दा अन्तिम होया ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। तेरे अगे इक स्वाल, अरज़ नाल शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दे माण वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर सलाम, बिन सजदिउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर वड अमाम, आमद तेरी वेख वखाईआ। साचा मन्दिर काया काअबा नज़र ना आए जहान, भज्जण वाहो दाहीआ। सति रिहा ना कोए सलाम, इस्लाम आज़म ना कोए दृढ़ाईआ। शरअ विच

८२४
१६

सारे होए बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह रहबर दे समझाईआ। गोबिन्द कहे सुण सतिजुग धुर दे साथी, सच दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दी मन्नणी पए आखी, आख़र इक्को नज़री आईआ। जिस मेटणी कलयुग अन्धेरी राती, कूड़ कुड़यारा दए खपाईआ। दीन मज़्ब दी रहिण ना देवे बाकी, गुर अवतार पैगम्बर लए बुलाईआ। लोकमात वेखो मार के झाती, बिन पुरख अकाल अक्ख तकाईआ। साचा दिसे कोई ना साकी, जाम हक ना कोए प्याईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, मिल महबूब दरस कोए ना पाईआ। सूफ़ीआं लभ्भे कोए ना दाती, साध सन्त रहे कुरलाईआ। मनुआ चढ़या विकार दे राकी, ऐरा गैरा रिहा जगाईआ। बिन भगतां ठंडी होवे किसे ना छाती, सांतक सति ना कोए कराईआ। कोटन कोटि तेरे नाम प्रभ गाउंदे दिवस रैण प्रभाती, सिफ्तां विच सालाहीआ। तेरी आत्म जोत किसे ना झाकी, परमात्म मिल ना वज्जी वधाईआ। बजर कपाट किसे ना पाटी, नाभी कँवल तृष्न ना कोए मिटाईआ। बिन अक्खरां तों तेरी पुस्तक किसे ना वाची, ग्रन्थ पढ़ पढ़ शुकर मनाईआ। तेरी सब तों उत्तम ज़ाती, जित्थे अलिफ़ ये दी लोड़ रहे ना राईआ। ना कोई झगड़ा दिसे समाजी, ना कोई मुला दिसे काज़ी, ना कोई

८२५ पंडत होवे राजी, ना कोई ग्रन्थी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दे वखाईआ। ८२५

१६ गोबिन्द कहे सतिजुग साचे प्रभ दा इक दस्तूर, चार जुग समझ किसे ना पाईआ। जुग चौकड़ी हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के वेख वखाईआ। पैगम्बरां दे के नूर, कलमयां नाल पढ़ाईआ। अन्तिम लेखा मुका के ज़रूर, ज़रूरत सब दी फोल फुलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बणा मज़दूर, सेवा सच लगाईआ। कलयुग नाता जोड़ के कूड़ो कूड़, कूड़ कुटम्ब दिता वखाईआ। बुद्धिवान बणाए मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ ना कोए चतुराईआ। मनुआ अंदर पावे फ़तूर, फ़तवे सब दे उपर लगाईआ। आपणा समझे ना कोए कसूर, कसम खा खा रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो आउ अगे, अगला लेख जणाईआ। जोती नूर इक्को जगे, सच प्रकाश मिले वड्याईआ। सच दवारा इक्को सजे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साचा मार्ग इक्को लग्गे, दीन मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। झगड़ा रहे ना कोए चूंडी पगे, सतिजुग सच्चा मार्ग लग्गे, लग मातर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर दयो ब्यान, बिन कलम कलमबन्द कराईआ। बिन सीस करो परणाम, जगदीसर वेख खुशी मनाईआ। सारे कहो साडा लेखा मुकया जगत कलाम, ढोले दी लोड़ रही ना राईआ। जिस विच मात होए बदनाम, बदी दा लेखा नज़री आईआ। तेरे अगे करीए सलाम, सजदयां ४

विच सीस झुकाईआ। परवरदिगार सांझे यार, लाशरीक तेरे हथ्थ हक तोफ़ीक, तौहफ़ा आपणा दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हुक्म सुणो तेई अवतार, अवतार तेई आप जणाईआ। सारे होवो ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर अलाईआ। नेत्र तक्को जगत संसार, दृष्टी जीव लोकाईआ। आत्म परमात्म केहड़ा करे प्यार, सुरती शब्द कवण जुड़ाईआ। तुसीं व्याह करदे आए जुग चौकड़ी चार, नाता तत्तां नाल जुड़ाईआ। अन्तर अन्तिम उतरया कोई ना पार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी गा के खुशी मनाईआ। रागां नादां विच करदे गए इज़हार, इशतयार मेरा नाम छपवाईआ। सिफ्तां वाले अक्खर दस्स दिते दो चार, जिन्हां नूं कैहिंदे वेद पुराण शास्त्र सिमरत विच जहान, अञ्जील कुरान होए प्रधान, खाणी बाणी वण्ड वण्डाईआ। इस तों परे भगत भगवान, जित्थे झुल्ले धर्म निशान, ना कोई ज़िमीं ना असमान, ना शब्द ना धुनकान, ना कोई रागी गावे गान, ना कोई मसला पढ़े पुराण, ना कोई वेदां मारे ध्यान, अछल अछेद आपणा हुक्म वरताईआ। एका शब्द गुरू बलवान, लेखा जाणे ज़िमी असमान, ब्रह्मण्डां खण्डां मार ध्यान, जुग चौकड़ी मेटे आण, कलयुग लेखा दए मुकाईआ। तुहाडा परवाना करे परवान, अबिनाशी करता मेहरवान, पुरख अकाला नौजवान, जन भगतां बणाए इक विधान, वाधा आपणे नाल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मनावो खुशी, खुशहाली विच जणाईआ। सतिजुग धार चलावां सुच्ची, सुच संजम वेख वखाईआ। मनुआ करे कोए ना रुची, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जन भगतां पदवी दे के उच्ची, उच्च अगम्म अथाह नाल मिलाईआ। मति होण ना देवां पुठ्ठी, शब्दी शब्द इक शनवाईआ। वड़या रहिण ना देवां कोई विच त्रैकुटी, दस्म दवारी पहली झलक प्रगटाईआ। जन भगतां करनी ना पए किसे दी बुत्ती, बुतख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। साची प्रीत कदे ना जावे लुट्टी, ठग्ग चोर यार सके ना कोए चुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समाज दए बणाईआ। सच समाज इक बणावांगा। शब्द अगम्मी सुणा के आवाज़, परदा ओहला आप उठावांगा। आत्म परमात्म खोल्ह के राज़, राजक रहीम मेल मिलावांगा। जन भगतो तुहानूं लभ्भणा पए ना कोए उस्ताद, मैं इक्को नाम पढ़ावांगा। जिस दी सिख्या चार जुग रहिणी याद, अगला मार्ग आप लगावांगा। बुद्धी हँस रहे ना काग, सोहँ ढोला इक दृढ़ावांगा। जिस दी करदे रहे तांघ, आख़र ओसे नाल मेल मिलावांगा। हुजरयां विच देणी पए ना बांग, मसीतां दा रगड़ा रंग चुकावांगा। सच दवारा दयां सुखाला लाभ, भगत दुआर इक वखावांगा। जित्थे धुर दा वज्जे नाद, ढोलक छैणा ना कोए खड़कावांगा। जिस रचन रचाई आदि, अन्तिम ओस दे रंग रंगावांगा। तुहाडा मानस जन्म ना होवे बरबाद, बरबादी विच्चों बाहर कढावांगा। सतिजुग साचा कर आबाद, नींह लोकमात प्रगटावांगा। सच प्रेम

दी दे के दाद, नानक दादक आप अख्वावांगा। गुरमुख फुलवाड़ी वेख के सोहणा बाग़, गोबिन्द बग़ीचा सच महकावांगा। सतिजुग होवे वड्ड वडभाग, भगवन हो के दया कमावांगा। दुरमति मैल धो के दाग़, निर्मल रूप आप वखावांगा। सच वड्याई मिलणी आज, सम्मत शहिनशाही आप समझावांगा। गुर अवतार पैगम्बर देवण साथ, सगला संग आप बणावांगा। पुरख अकाल धुरदरगाही बण महाराज, श्री भगवन्त नाउँ धरावांगा। जन भगतां भगतां नाल रच के काज, शब्द विचोला गुरू विच टिकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची रसम आप वखावांगा। सतिगुर शब्द जन भगत विचोला, एथे ओथे मेल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के सोहला, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जिस घर दा सतिगुर नानक बणया गोला, चाकर हो के सेव कमाईआ। उस दा नाम सदा अनबोला, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस कूड़ी क्रिया कलयुग मिटाउणा रौला, सतिजुग सच वज्जे वधाईआ। गोबिन्द चुकाउणा ओहला, परदा दए उठाईआ। चार वरन दा इक्को बोला, शब्द जैकारा इक अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। सतिजुग तेरा मार्ग सिध्धा, साहिब स्वामी आप लगाईआ। गोबिन्द हथ्थ रखाई बिधा, जो कर के गया शनवाईआ। अन्तिम जोती धार शब्दी लै के आए सीधा, निरवैर हो के वेस वटाईआ। भाग लगाए जीउ पिण्डा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जन भगतां तन मन जिस ने विध्धा, अणयाला तीर चलाईआ। सच दवारा दे के निग्घा, सांतक सति दए कराईआ। धुरदरगाही बण के पिता, पतिपरमेश्वर नाल मिलाईआ। पहलों आत्म परमात्म जन भगतां करा के हित्ता, नाता धुर दा आप जुड़ाईआ। फिर तन माटी ख़ाक पंज तत बध्धा, लड़का लड़की होए कुड़माईआ। चरण कँवल दवारे दे के जग्गा, जग्गा आपणी दए समझाईआ। शब्दी सतिगुर शेर बग्गा, कलयुग काली धार विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप प्रगटाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतां होवे नाता, सरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। पुरख अकाल जोती जाता, हर घट रम्यां वेख वखाईआ। सतिजुग पूरी करे आसा, तृष्ना कूड़ दए मिटाईआ। जन भगतां दे भरवासा, समाज सच दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द सदा कराउँदा काज, दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। भगतां नाल बणदा समाज, गुरमुखां एह वड्याईआ। पंजां जैकारयां दी सच आवाज़, सुणे धुरदरगाहीआ। चार वरनां दा साथ, अठारां बरन कुड़माईआ। पुरख अकाल हुक्म रिहा आख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिजुग सब नूं मन्नणी पए बात, बातन परदा आप चुकाईआ। अबिनाशी करता नर निरँकारा सब ने करना याद, यादाशत विच लोकाईआ। जिस ने सतिजुग खेड़ा करना आबाद, कलयुग

कूड़ा दए मिटाईआ। जन भगतो तुहाडा शुरु होया काज, कज्जल दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म अन्तर सुणना इक्को नाद, नाद धुन शनवाईआ। सोई सुरती जाए जाग, नाम वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता किरपा करे आप, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। साचा मार्ग लग्गणा जग, जगजीवण दाता दया कमाईआ। भगत सुहेले सज्जण सद्द, हरि संगत विच बहाईआ। सतिगुर ढोला शब्द गायो सद, राग धुरदरगाहीआ। कारज होवे हब्ब, ओहला रहे ना राईआ। प्रीती जावे बज्झ, वज्जे सच वधाईआ। तृष्ना मेटे अग्ग, हवस ना कोए रखाईआ। हँस बणाए कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। सच दवारे बहणा वध, पिछला पन्ध मुकाईआ। जन भगतो तुसीं श्री भगवान दी यद्द, बंस इक्को नज़री आईआ। वेख्यो ज़ात पात विच ना होयो अड्ड, गोबिन्द हुक्म इक मनाईआ। एसे कर के नानक सब नूं गया छड्ड, परदा ओहला विच टिकाईआ। जेहड़े खांदे मच्छी डड्ड, अर्जन गुरू ना होए सहाईआ। जेहड़े कैहिंदे गोबिन्द बक्करे दिते वढ्ढ, सति दयां वखाईआ। सतिगुर शब्द परवाना सदा सद, जुग जुग देण गवाहीआ। सच प्रीती चढ़या रंग खड़ग, कटार लाल वखाईआ। दीन मज़्हब झगड़ा मुकाए सच, पंजां प्यारयां आप समझाईआ। मैं तूं तूं मैं अंदर जावां रच, जो गुरसिख मेरा रूप वटाईआ। सो वेला सुहञ्जणा होवे अज्ज, वज्जे सच वधाईआ। एह खेल पुरख समरथ, लेखा जाणे धुर दरगाहीआ। जन भगतो धुर संदेसा देवां दस्स नौ खण्ड पृथमी देणा समझाईआ। जो सब नूं गया छड्ड, भज्जया वाहो दाहीआ। सो धर्म निशाना दए गड्ड, सत्त रंग निशान झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग इक लगाईआ। सतिजुग मार्ग भगतां लीक, लकीर सके ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल हत्थ तौफ़ीक, शब्दी शब्द हुक्म चलाईआ। सतिगुर शब्दी हुक्म करे तस्दीक, शहादत नाम भुगताईआ। भगतां नाल भगतां मेल ठीक, परम पुरख दए वड्याईआ। पूरब जन्म दी आसा पूरी होवे रीझ, जो सनमुख सोभा पाईआ। चरण प्रीती इक हदीस, साचा हुक्म दिता पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। हरिजन साचे जोड़े जोड़, पूरब जन्म वेख वखाईआ। दूजे नाता दए तोड़, कूड़ा संग ना कोए लिभाईआ। लागी लागण देवे होड़, होका इक्को नाम जणाईआ। समाज अटकाए ना कोई रोड़, अड़िक्का दुनी दिता मुकाईआ। झगड़ा रिहा ना मोर तोर, तोरा मोरा नज़री आईआ। नेत्र दे के फ़ुरना फोर, फ़ौरन आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले मेल मिलाईआ। भगत सुहेले कर मिलाप, मेला हरि जगदीश कराईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जपणा जाप, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। कोट जन्म दे उतरन पाप, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म परमात्म बणे

साक, पारब्रह्म ब्रह्म लए प्रनाईआ। जो कबीरा मंजल चढ़ के गया आख, ढोला गीत संगीत सुणाईआ। सो लेखा जाणे वड्ड प्रताप, बेपरवाह बेपरवाहीआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगा के माटी ख़ाक, तन वजूद करे सफ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हाथ, जगत उधार दए चुकाईआ। जन भगतो तुहाडा इक्को पूजा पाठ, सिमरन जोग अभ्यास दिता समझाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी भगतां काया मन्दिर अंदर खोल्ह के ताक, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर खोजण कोए ना जाईआ। किसे हथ्थ ना आए शिवदवाले मन्दिर माठ, मुल्ला काज़ी जगत मसीत रहे कुरलाईआ। जन भगतां दा सब तों वक्खरा समाज, रविदास चमार दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोड़ी जोड़ा लड़का लड़की, नारी नर दी नज़री आईआ। जन भगतो एह खेल प्रभू दे घर दी, दूजा संग ना कोए बणाईआ। उह आत्म प्यारी तरदी, जो प्रभ दा दर्शन पाईआ। सो कन्त सुहागी वरदी, जो वारता पिछली याद कराईआ। तुहाडी कला होवे चढ़दी, ढहिंदी दिसे जगत लोकाईआ। जेहड़ी तूं ही तूं पढ़दी, उह ओसे विच समाईआ। खेल रही ना कलयुग कल दी, सतिजुग सच्ची धार प्रगटाईआ। कुछ आसा बावन बल दी, बल दवारे लई तकाईआ। खेल वेखणी पुरख अटल दी, जो अटल पदवी रिहा पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लए तराईआ। जन भगतां होया धर्म विवाह, वाइदा पूर कराईआ। किसे ग्रन्थ दी लोड़ रहे ना रा, बग़ल कुरान ना कोए टिकाईआ। पांधा लए ना कोए सदा, वेदी आहूती ना कोए कराईआ। इक्को पुरख अकाल लैणा ध्या, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जो सिध्धा मिले आ, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। लख चुरासी विच्चों पकड़े बांह, निरगुण हो के लए जगाईआ। इक्को काया मन्दिर अंदर दस्स के आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा दए समझाईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे ठंडी छाँ, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। पतिपरमेश्वर बण के पिता माँ, भैण भईआ साक सैण नज़री आईआ। जन भगतो सिध्धा प्रभ दा धरो धिआं, हाज़र हो के होए सहाईआ। सदा वस्या तुहाडे साढे तिन्न हथ्थ मकां, काया मन्दिर डेरा लाईआ। जिस वेले चाहो सच प्रीत विच कराओ न्याँ, अदल इन्साफ़ इक वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए बिआं, आपणा आप ल्या प्रगटाईआ। पुरख अकाल तूं मालक दो जहां, दोहरी आपणी खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दए सुणाईआ। साचा हुक्म सुणाउणा साढे नौ रैण, अठारां हाढ़ नज़री आईआ। सतिगुर धारा दिसे ऐन, नुकता ग़ैन ना कोए बणाईआ। साचा बण के धुर दा सैण, समझ दए समझाईआ। चार युग जिस दे हुक्म अंदर रहिण, उह हुक्म इक प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया

खाए कोई ना डैण, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। किरपा करे नर नरायण, नर हरि फेरा पाईआ। विद्या मुख छुपाए जगत विद्वाइन, वाइदे ख़िलाफ़ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक चलाईआ। जन भगतो सच्चा रस्ता, रहबर हो के दयां जणाईआ। पिछला खोल्णा पए किसे ना बस्ता, विद्याला लभ्भण कोए ना जाईआ। इक्को इशारा रखां तुहाडे अंदर दी अक्ख दा, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। लहिणा देणा देवां हक दा, हकीकत तुहाडी वेख वखाईआ। परदा ओहला रहे ना शक दा, भरम देणा मिटाईआ। जेहड़ा चार युग पुरख अकाल रिहा तक्कदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। उह मालक बण के सच दा, जोती जाता फेरा पाईआ। जो सम्बल गोबिन्द दस्सदा, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। जो झगड़ा मुकावे दीन मज़्हब वट्ट दा, डंका इक्को दए सुणाईआ। मार्ग ला के सति दा, सति धर्म प्रगटाईआ। जन भगतो तुहाडा राखा बणे पति दा, जगत पतीआं बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप कराईआ। साचा मेला विच संसार, वड संसारी आप कराईआ। सन्त सुहेले लभ्भदे दो चार, चार खाणी फोल फुलाईआ। पूरब लहिणा पावे सार, जन्म जन्म परदा दए उठाईआ। पिछला कर्जा दए उतार, निहकर्मी कर्म कमाईआ। जिन्हां दा अज्ज होया विहार, इक्की इक्की नज़री आईआ। एहनां दा गोबिन्द नाल प्यार, सरसे शहादत दे के गए भुगताईआ। डुब्बे पहली धार, इक्को ओट तकाईआ। जे मिल्यों क्यों विछोड़ा दिता संसार, आसा इक वधाईआ। पुरख अकाल दिती आवाज़, अगम्मी आप जणाईआ। एह धुर दा खेल तमाश, भाणे विच रखाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त बदलां रिवाज, समाज दयां मिटाईआ। छत्रधारी हो के देवां धुर दा राज, सिक्दारी इक अख्वाईआ। प्रेम प्रीती आपणे नाल रच के काज, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। फिर जगत बणा सुभाग, नाता दीन दुनी मुकाईआ। साचा चला के इक जहाज़, वखाए सर्ब लोकाईआ। तुसां प्रभ दी रखणी लाज, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचे हुक्म अंदर दए संदेसा, सुनेहड़ा इक जणाईआ। तुहाडा लहिणा दस दस्मेसा, पूरब रिहा मुकाईआ। भगत उधारी जिस दा पेशा, पेशतर दए समझाईआ। जन भगतो मंनिओ कोई ना विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, गुरू अवतार पैगम्बर दी लोड़ रहे ना राईआ। जे लभ्भणा ते लभ्भयो इक्को गोबिन्द पुरख अकाल दा बेटा, जो आदि जुगादि सेव कमाईआ। एथे ओथे दो जहानां खेवट खेटा, नईआ नौका आपणे कंध उठाईआ। जिस दा कदे ना भुल्लया चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। तुहाडा खावण आए नेंदा, निन्दकां दए दुरकाईआ। जो बिन अक्खां रहे वेंहदा, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ।

सिर हथ्थ रखे स्वामी, समां मिले वड्याईआ। जन भगतो आत्म परमात्म पढ़नी बाणी, शब्द निशानी इक वखाईआ। पुरख अकाल करे मेहरवानी, महबूब धुरदरगाहीआ। तुहाडी लेखे लग्गे जवानी, जवां मर्द होए सहाईआ। नाता जुड़या बाहमी, सके ना कोए तुड़ाईआ। जगत वासना विच लेखा होणा कामी, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। शरअ दी कटणी गुलामी, तन ज़ंजीर ना कोए वखाईआ। लोकमात मिले नेकनामी, निक्कयां तों वड्डे दिता बणाईआ। जुग जुग दी तुहाडी जोड़ी त्रेते वेले दी पुराणी, पूरब विच्चों वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो होया आनंद, आनंद सतिगुर इक जणाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्धन नाम दिता वखाईआ। सांतक सति पा के ठंड, अग्नी तत बुझाईआ। हरि संगत विच थाउँ थाँईं पई गंढ, दूजे दी लोड़ ना कोए वखाईआ। एथे ओथे नूरी चमकावे चन्द, सीतलां विच सीतल हो समाईआ। पूरब होई आसा मनसा पूरी मंग, मंगलाचार खुशी मनाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छो जन भगतो तुहाडा हुन्दा एह परबंध, चार युग पुछे ना कोए लोकाईआ। पहलों रसना जेहवा मदिरा मास छुडा के कूड़ा गंद, सतिगुर शब्द कर कुड़माईआ। फिर चाढ़े जगत दा रंग, रंगत इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। जीवण विच्चों बदलया जीवण, जग जीवण दाता दया कमाईआ। भगत सुहेले अमृत रस पीवण, निझर झिरना रिहा झिराईआ। बिन पुरख अकाल लोकमात किसे ना नीवण, सिर दिता वापस हथ्थ किसे ना आईआ। जो अबिनाशी करते चरणां थीवण, नाता तोड़न जगत लोकाईआ। साचा बीज अगम्मी बीवण, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म दए सुल्तान, सुत्यां आप उठाईआ। जन भगतो तुहाडी भगती होई परवान, परम पुरख दए सरनाईआ। तुसीं सचखण्ड दे बणे महिमान, जगत महिमानी दी लोड़ रहे ना राईआ। साचे नाम दा खाधा पकवान, कच्चयां तों पक्के हो के खाईआ। घर सोहणा नज़री आवे काहन, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस दा बदले ना कोए विधान, वाधा तुहाडा दए कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शब्दी हुक्म देवे फ़रमान, धुर दरबारी आप दृढ़ाईआ। कलयुग मेटे कूड़ा निशान, सति धर्म इक प्रगटाईआ। चिल्ला चढ़े ओस कमान, जिस नूं लुहार तरखान ना कोए घड़ाईआ। गोबिन्द सूरा इक बलवान, दो जहानां वेखे चाँईं चाँईंआ। रहमत विच रहमान, मुहब्बत नाल खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। जन भगतो वेखो काया कुरह, कुरान दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहानूं सारे जग ने कहिणा बुरा, दरगाह साची मिले वड्याईआ। तुहाडे सिर ते शरअ ना फिरे छुरा, दीन मज़्हब दा झगड़ा ना कोए बणाईआ। सारा जहान

सृष्टी दृष्टी अंदर बेगुरा, बिन भगता सतिगुर पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं आ गई मात, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। जन भगतां देवां धुर दी दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुरसिखो बणना इक जमात, इक्को करनी सच पढ़ाईआ। जिस नूं गोबिन्द बणाया बाप, उह पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। ओसे दा करना जाप, सिफ्ती नाम ना कोए सलाहीआ। जो सब दा पूरा करन आया भविख्त वाक, वाकिफ़कार हो के वेख वखाईआ। तुहाडे काया मन्दिर अंदर खोल्ह के ताक, परदा पड़दे विच्चों उठाईआ। लहिणा देणा पूरा कर के हिसाब किताब, अगे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। धुर फ़रमान सुणो भगत, श्री भगवान आप जणाईआ। झूठा नाता वेखो जगत, सज्जण साथी नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां दा विहार खाणा पीणा फ़कत, फ़िकरा हक ना कोए सुणाईआ। हड्ड मास नाड़ी उबले बूंद रक्त, रती रंग ना कोए रंगाईआ। आत्म परमात्म लभ्भे किसे ना शक्त, मन वासना होई हल्काईआ। तुहाडा गोबिन्द नालों समझदे फ़र्क, आप नूं गोबिन्द पुत्तर कह सुणाईआ। किसे नूं हथ्थ ना आई गोबिन्द वाली सड़क, मंज़ल चढ़या ना चाँईं चाँईंआ। बुद्धी अंदर सारे गए अटक, अगला घर ना कोए वखाईआ। बक्करे रहे झटक, बदनाम गोबिन्द रहे कराईआ। हुण आउण वाला वक्त, होणी सर्ब जुदाईआ। किसे नहीं वण्डणा दर्द, गुर पीर होए ना कोए सहाईआ। किसे नहीं मन्नणी अरज़, दुखियां दुःख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए उठाईआ। जन भगतो तुहाडी धुर दी शादी, शमां शमां होए रुशनाईआ। कोटां विच्चों थोड़ी दिसे आबादी, अबचल नगर बह के ख़ुशी मनाईआ। तुहाडा ना कोई ढाडी ना रबाबी, जगत सितार ना कोए वजाईआ। ना शरअ ते ना समाजी, ना कोई लहिणा रिहा वखाईआ। तुहाडा भगवान तुहाडे नाल राज़ी, ओथे की करे लोकाईआ। जेहड़ी जगत निंद्रा विच्चों नहीं जागी, आलस सक्या ना कोए मिटाईआ। प्रभ दी निंदया करनी इन्हां दी धुर दी वादी, वाधा कूड़ विकार रखाईआ। जिन्हां दा मनुआ होया बाग़ी, सुरती सोई ना कोए उठाईआ। कल्पणा विच होए दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। बण के तत्तां वाले पाँधी, भज्जण थाउँ थाँईंआ। किसे ने खाधा सूर किसे ने खाधी ढांडी, दोवें आंढी गुआंढी, राए धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर नरायण वेख वखाईआ। नर नरायण कहे मेरा सतिगुर शब्द सूरा, सुत साचा इक जणाईआ। जिस ने कलयुग हूंझणा कूड़ा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जिस ने मेरे नाम दा वजाउणा इक्को तूरा, तुरीआ तों अगे करे पढ़ाईआ। सर्ब कला होवे भरपूरा, भरपूरी वेखे थाउँ थाँईंआ। चतुर सुघड़ बणाए

मूर्ख मूढ़ा, जिन्हां अमृत जाम प्याईआ। चरण प्रीती मस्तक टिक्का लावे धूढ़ा, अंदरों करे सफ़ाईआ। काया माटी रंग चढ़ाए गूढ़ा, दो जहानां उतर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक प्रगटाईआ। साचे राह दा जगत वाधा, वाहिगुरू पुरख अकाल कराईआ। जिस नूं दूसर जाणे कोए नांह, नांह नांह करे सर्ब लोकाईआ। साचे भगतां अन्तर होई हां, हां हां विच रखाईआ। सच दवारे कर न्यॉं, अदल इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। जन भगतो इक दूजे दी फड़नी बांह, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। सब ने समझणा पुरख अकाल पिता माँ, जगत माता पिता ना कोए भेव चुकाईआ। पुरख अकाल दा फ़रमाना होण लग्गा रवां, पहला दिन दए दृढ़ाईआ। जिस दा समाज मन्नणा नवां, नव नौ वेख वखाईआ। हुक्में अंदर किसे नहीं मारना दमा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। जन भगतो पुरख अकाल दया कमाउँदा ए। सो पुरख निरँजण निरगुण धार निरवैर हो के रंग चढ़ाउँदा ए। सति दुआर सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर इक वखाउँदा ए। जित्थे पोहे कोए ना काल, शाह कंगाल इक्को रूप रंग चढ़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाउँदा ए। साचा नाम सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार, चार युग समझ किसे ना आईआ। आउंदे रहे गुरू अवतार, पैगम्बर फेरा पाईआ। आपणा हुक्म बदलदा रिहा विच संसार, राम कृष्न ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द नाउँ प्रगटाईआ। परदा खोल्ह के अन्त दस्सया ना पारावार, बेअन्त कह के सारे शुकर मनाईआ। दो जहानां विच करदा रिहा इज़हार, थोड़ा थोड़ा नाम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा नाम पुरख अकाल सो, सो साहिब आप दृढ़ाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, लख चुरासी डेरा लाईआ। महाराज शहिनशाह दूजा अवर ना जाणे को, पातशाह बेपरवाहीआ। शेर सिँघ बब्बर हो के शब्दी किसे नाल ना करे धरोह, बलधारी वड वड्याईआ। विष्नूं हो के सेवा नाल करे मोह, हुक्म प्रभ दा मन्न मनाईआ। भगवान हो के घट घट अन्तर देवे लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखाईआ। आत्म परमात्म नाल जावे छोह, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन भगतो पुरख अकाल सतिगुर शब्द इक्को बड़ा गुरुआं दा चाहीए नहीं गरोह, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हुक्म इक समझाईआ। हरि दा हुक्म हुक्म अनोखा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण बैठे सीस निवाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, अदल इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। जुग जुग वेखे आपणा मौका, निरगुण हो के फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम आपे पहुंचा, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। जन भगत कलयुग अन्त कोई ना जावे औंता, साचा मेला आप

कराईआ। अंदर वड़ के करे साफ़ चौंका, जगत गोबर दी लोड़ रहे ना राईआ। अमृत रस गोबिन्द धार इक तरौंका, दुरमति मैल धवाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले चढ़ा के आपणी नौका, नईआ साची पार लँघाईआ। जन भगतो गोबिन्द सुता इक्को ढईआ लाया ढौंका, बरस बरसी समझ किसे ना आईआ। अन्त शब्दी धार वजाया धौंसा, नाम रणजीत नगारा इक प्रगटाईआ। जिस ने छड्डया पटना पौंटा, पाटल हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन साचे तारन जोगा, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। चिन्ता ग़म रहिण ना देवे सोगा, हरख वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेहरवान हो के जुग चौकड़ी काया पंज तत बदले चोला, झुग्गी सब दी वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडा वेखे काया साढे तिन्न हथ्थ दा कोठा, कोठड़ी परदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सरन कहे मैं आई लोकमात, मातर भूमी वेख वखाईआ। मेरा इक्को माई बाप, दूजा नाता ना किसे जुड़ाईआ। भगतां बणा साथ, साथण हो के सेव कमाईआ। जो गोबिन्द गया आख, उह वेखां चाँई चाँईंआ। जिस दी नंदेड़ों चुक्की ना किसे राख, राखी करे थाउँ थाँईंआ। गुरमुखां पुछे वात, वातावरन दए बदलाईआ। जो आपणा अन्त अख़ीरी दस्स के गया जाप, सोहँ भथ्था तीर कमान समझाईआ। सो लहिणा देणा रिहा वाच, वाचक ज्ञानी भेव ना कोए खुल्हाईआ। पत्रे पढ़ पढ़ सारे रहे वाच, मंज़ल चढ़ मन्दिर काया वड़, धुर दा हुक्म सच फ़रमाना लोकमात ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाईआ। जन भगतां भाग अवल्लड़ा, लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। इक्को जाणे पुरख अकाल अकल्लड़ा, एकँकारा बेपरवाहीआ। जो वस्या सच महल्लड़ा, सच दवारे सोभा पाईआ। शब्दी रूप फड़ाया पलड़ा, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ। सच दवारे खलड़ा, सनमुख हो के नज़री आईआ। जोती शब्दी धार रलड़ा, पंज तत ना कोए रखाईआ। सच सिँघासण इक्को मलड़ा, आत्म सेजा डेरा लाईआ। दीपक जोत हो के बलड़ा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। धाम वखाए निहचल इक अटलड़ा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। जन भगतो माण जगत वड्या, हरि वड्डा वेख वखाईआ। नाता बिधाता जोड़ के दए प्रना, परम पुरख हो सहाईआ। साचा सब दा सांझा होए विवाह, वक्खरी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां अगला साह लैणा सुधा, इक्की हो के पन्ध मुकाईआ। साढे नौ दा वक्त लैणा बणा, बनावट कूड़ी बाहर कढाहीआ। साढे पंज रंग लैणा चढ़ा, दुरमति मैल धवाईआ। सोहणा लाड़ा लैणा सजा, जिस दा सज्जण बेपरवाहीआ। गोबिन्द सूरा लैणा मना, शब्दी सतिगुर नज़री आईआ। जो पकड़नहारा बांह, बाहू बल ना कोए वखाईआ।

८३४
१६

८३५
१६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करने आया, करता पुरख गहर गम्भीर। जन भगतां नाता तोड़े कूड़ी माया, सांतक सांत सति करे सरीर। घर अबिनाशी ठाकर जिस ने पाया, शरअ तन ना रहे ज़ंजीर। हिरदे हरि गुण मंगल गाया, मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर। सो वेला भगतो तुहाडे उत्ते आया, तुहाडी बदल देवे तकदीर। चरण प्रीती झोली पाया, अमृत आत्म देवे साचा सीर। जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम पन्ध चीर। भगत दवारे बह के काज रचाया, मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक पंडत पांधा करे ना कोए दिलगीर। सब ने सोहँ ढोला धुर दा बोला मिल के गाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत तेरी पूरी होई मनसा, वासना कूड़ रही ना राईआ। गुरमुख रूप होया हँसा, सोहँ रूप समाईआ। हरि संगत तेरा बंसा, सरबंस दिता वखाईआ। मन हँकारी मारना कंसा, दुष्ट दुराचारी बाहर कढाहीआ। प्रभ मिलण दी रखणी ममता, माया मोह कूड़ तजाईआ। गढ़ रहे ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म नज़री आईआ। पुरख अकाल दा दूजा चलया सम्मता, शहिनशाही नाउँ धराईआ। जिस ने खेल करना रमता रमता, राम सब नूं देणा वखाईआ। दूजे अगे करे ना कोई मिन्नता, मंगण दा झगड़ा दए चुकाईआ। तुसां की करना स्वर्ग बहिश्त जन्नता, सचखण्ड दवारे सहिजे दयां पुचाईआ। किनारा मिले कोई ना निन्दका, जुग जुग प्रभ दी धार चली आईआ। तुहाडा परदा खोल्हां जीउ पिण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड होवे रुशनाईआ। अमृत बख़्शां सागर सिन्ध दा, निझर झिरना इक झिराईआ। दर्शन होवे गुणी गहिंद दा, गहर गवर परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आनंद आनंद विच्चों प्रगटाईआ। आनंद विच्चों आनंद दए प्रगटा, प्रगट आपणा हुक्म मनाईआ। गुरमुखो तुसां विकणा इक्को हट्टा, हटवाणे बहुते जग नज़री आईआ। जिस दवारे नहीं कोई रट्टा, द्वैत विच ना कोए रखाईआ। शरअ दा नहीं कोई पट्टा, कूड़ कटार ना कोए उठाईआ। इक्को पुरख अकाल सच्चा, सच दवारे सोभा पाईआ। गुरसिखो तुहाडा इक दूजे दे नाल नाता होया पक्का, अगे सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां तों कलयुग अन्तिम अख़ीर लै के सब हच्छा, हच्छी तरां अगे आपणा हुक्म चलाईआ। सतिगुर शब्द करे परवान, प्राणी समझ कोए ना पाइंदा। जिस नूं बुद्धी जाणे ना नाल ज्ञान, परदा पाड़ ना कोए उठाइंदा। इक्को जाणे श्री भगवान, अबिनाशी करता वेख वखाइंदा। सति सतिवादी देवे दान, ब्रह्म ब्रह्मादी झोली आप भराइंदा। आदि जुगादी खेले खेल महान, जुग चौकड़ी सोभा पाइंदा। नित नवित होए प्रधान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेल आप दृढ़ाइंदा। साचा हुक्म देवे आप, आपणी दया कमाईआ। इक्कीआं दा वेख जाप, अन्तर मेल मिलाईआ। सच्चा सुण के वाक्, वक्त दए सुहाईआ। जन भगतो जदों इक्ठे हो के सद्दो लोकमात, निरगुण हो के आवां चाँईं चाँईंआ। तुहाडा खोल्ह के अंदरों ताक, परदा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक तकाईआ। जन भगतो तुहाडी मंग चंगी, चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। जिस दी धार किसे ना कीती नंगी, ओहला सक्या ना कोए उठाईआ। पाणी धार समझ ना सकी गंगी, गोदावरी सुरस्ती जमना नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी होई रही रंडी, कन्त सुहाग ना कोए हंढाहीआ। दीनां मज़्हबां दी चलदी रही पगडण्डी, गुर अवतार पैगम्बर होण सहाईआ। कलयुग अन्तिम शरअ दी कूड़ कुड़यारी वेखी मंडी, वणज जगत नाल दसाईआ। चार कुण्ट जगत गुरू बहुते बण गए दंभी, भेख पखण्ड वखाईआ। धरनी धरत धवल धौल थर्ल्यों कम्बी, रो के प्रभ नूं दिता सुणाईआ। पुरख अकाल मैं तेरी कुक्खों जम्मी, बाली नढ्ढी बच्ची नज़री आईआ। कलयुग जीवां मैनूं कीता निकम्मी, निकरमण होके दयां दुहाईआ। पुरख अकाल बेड़ा बन्न्हीं, शौह दरया ना अन्त रुढ़ाईआ। माया ममता वेखी बहुते धनी, मोह जगत हल्काईआ। तेरे दरस नूं सृष्टी होई अन्न्ही, जगत रूप तक्कण चाँईं चाँईंआ। साहिब स्वामी मेरी इक्को मन्नीं, तेरे दर अरज़ सुणाईआ। कूड़ कुड़यारा अन्तिम डंनीं, डंका इक्को नाम वजाईआ। गढ़ हँकारी भन्नीं, भाण्डा भरम तुड़ाईआ। गुरमुख सवाणी वेखीं वंनी, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। खेल कहे मैं वेखणा करनी करता, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जो खेल जाणे घर घर दा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जन भगत मंज़ल चढ़दा, चोटी चढ़ के खुशी मनाईआ। साचा ढोला पढ़दा, आपणा राग अल्हाईआ। ओसे दा कारज जन भगतां मिल के सरदा, सच नाम समझाईआ। इकीआं दा हो के बरदा, धुर दी सेव कमाईआ। गुरमुखो एह लेखा नरायण नर दा, नर नारी मिल के लैणा चुकाईआ। वेख्यो ऐवें ख़ाली एथों खा के ना जायो ज़रदा, मठयाईआं विच्चों मिठ्ठा रस हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। जन भगतो अगला सुणो हुक्म अथाह, सहिज दयां समझाईआ। जित्थे भगतां दा होवे व्याह, ओथे जगत नाता रहिण कोए ना पाईआ। दो चार इक इक्ठे हो के जावो आ, आमद विच वज्जे वधाईआ। तुहाडा लहिणा देणा नाल बेपरवाह, जो परम पुरख अख्वाईआ। इकीआं मिल के सुरजीत सिँघ दा साह ल्या सुधा, सुदी वदी रही ना राईआ। बारां रासी मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जन भगतां साढे पंज वेला लैणा सुहा, सोभनीक दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भावें समझो खुदा, भावें जाणो होया शुदा, भावें वेखो लख चुरासी तों लए बचा, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बण के कन्त सच दवारे भगवन हो के गया आ, आमद विच खुशामद विच दामन हो के जामन हो के कामल हो के कामल मुर्शद मुरीद ईद दीद करे रुशनाईआ। जन भगतो खुशीआं विच हो जाओ चुप, सुन्न समाध नैण शरमाईआ। वेखे खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। शब्दी गोबिन्द मौली रुत्त, रुतड़ी आपणी आप महकाईआ। परदा ओहला रिहा ना लुक, धुर दी वज्जी हक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जन भगतो सुणो शब्द संदेश, वेला संधया आईआ। तुहाडा मालक इक नरेश, नर नरायण अख्वाईआ। लहिणा दस दस्मेश, गोबिन्द धार चुकाईआ। जिस दा हुक्म जुग चौकड़ी चले एक, एका रिहा वरताईआ। साचे सन्तां देवे टेक, धूढ़ी मस्तक नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो तुहाडा खुशीआं दा आया वेला, भगत दुआर वज्जी वधाईआ। इक्को रूप होया गुरू चेला, चेला गुरू रूप वटाईआ। एह कोई जगत विहार दा नहीं मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। जो सदा वसे पास नवेला, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत सोहणे नच्चे टप्पे कुद्दे, कुदरत वेख वखाईआ। उत्तम सृेष्ट होई बुधे, मन ममता दिती गवाईआ। अंदरों भेव खुल्ले गुज्झे, परदा रहे जगत ना राईआ। दूजे घर पैंडे मुके, मुकम्मल आपणा घर सुहाईआ। जिन्हां नूं शब्द संदेशे दिते रुक्के, धुर फ़रमाने नाल वड्याईआ। उहनां दे लख चुरासी पैंडे मुक्के, आवण जावण दिता मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता वेख वखाईआ। जन भगतो तुहाडा वेख्या हक प्रेम, मुहब्बत विच वड्याईआ। गोबिन्द निभया नेम, निरँकार इक सरनाईआ। जिस तपस्सया कीती कुण्ट हेम, हम घर साजण हो के वेख वखाईआ। पूरब लहिणा आया देण, देवणहार फेरा पाईआ। धुर फ़रमाना आया कहिण, शब्द सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। कलयुग वेखो अन्धेरी रैण, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता तुट्टा भाई भैण, नार कन्त होए जुदाईआ। साची संगत मिले किसे ना बहण, कूड़ी क्रिया मात हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला दयां मिलाईआ। जन भगतो तुहाडा सुहञ्जणा लग्गा वेला, गोबिन्द गीत अलाहीआ। प्रेम प्यार दा बोला, ब्रह्मण्ड खण्ड हिलाईआ। सतिगुर शब्द विचोला, सौहरे पईए खोज खुजाईआ। साचे कंडे रिहा तोला, तराज़ू नाम हथ्थ वखाईआ। भगत दवारा इक्को खोल्हा, ख़ालक ख़लक परदा आप उठाईआ। जित्थे मज़्हब दा रहे ना रौला, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। इक्को सब नूं नज़री

आए मौला, मेहरवान महबूब बेपरवाहीआ। बावन वाला पूरा करे कौला, रिषीआं रिषी केश विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला इक्को घर कराईआ। इक्को घर सुहञ्जणा, सो पुरख रिहा जणाईआ। प्रभ पाया ठाकर सज्जणा, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। दर्शन कर के रज्जणा, तृष्ना तृखा मिटाईआ। किरपा करे दीन दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। चरण धूढ़ी देवे मजना, दुरमति मैल दए गवाईआ। साचे गृह वखाए अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। जन भगतो जिस दा तुहाडे प्रेम विच होया मंगणा, अन्त ओसे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखे लाए हुक्मे अंदर सद्दणा, सद्दे दा सदा साहिब आपणे नाल रखाईआ।

✪ साढे नौ वज्जे दा विहार अठारां हाढ़ ✪

बावन कहे मैं वेख्या जग नज़ारा, बेनज़ीर दिता वखाईआ। रिषीआं दा छुट्टया उधारा, पूरब लेखा रिहा ना राईआ। धुर शब्दी इक विवहारा, हरि आप भुगताईआ। सतिजुग दा अन्त भण्डारा, कलयुग सहिजे दयां भुगताईआ। लेखा जाण सर्ब जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड्ड वड्याईआ।
८३८ १६ निरगुण निरवैर नर निरँकार लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ८३८ १६
साची करनी आप कमाईआ। बावन कहे मैं वेख्या गृह, घर साचे वज्जे वधाईआ। जित्थे पुरख अबिनाशी एको रहे, भगतां देवे नाम वड्याईआ। सच संदेसा धुर दा कहे, निरअक्खर आप पढ़ाईआ। कूड़ी माया करे लय, ठांडे दर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता खेल रचाईआ। बावन कहे मैं वेख्या खेल अजीब, आख़र वज्जी वधाईआ। जन भगतां बज्झी धीर, धीरज इक वखाईआ। बख्श्या साचा नीर, अमृत जाम प्याईआ। कढ्ढी बिरहों पीड़, हउमे रोग मिटाईआ। निराला मार के तीर, सोई सुरत उठाईआ। जन भगतां दस्स तदबीर, तकदीर दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे मैं आया मात, धुर धार दयां जणाईआ। जन भगतो तुहाडी खुशीआं वाली रात, दिवस नालों रैण रही आपणा रंग वखाईआ। पुरख अकाल दिस्या साथ, अबिनाशी करता जोड़ जुड़ाईआ। पूरब लहिणा चुकया माथ, लहिणा रिहा ना राईआ। जो बावन गया आख, आख़र ओहो पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। परदा ओहला कहे मेरा रहे कोए ना मूल, अन्तिम मुल्ल कोए ना पाईआ। त्रैगुण करे कोए ना भूल, पंज तत ना कोए हल्काईआ। प्रभ दा

सुणया इक असूल, असल हुक्म दिता दृढ़ाईआ। सतिजुग सच बणा कानून, काइदा इक्को इक प्रगटाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जाणे ना मज़मून, अक्खरां विच कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक उपजाईआ। साचा हुक्म देवे करतार, करनी करता आप कमाईआ। जन भगतो वेखो खेल विच संसार, संसारी भण्डारी वगारी तुहाडे दिते बणाईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे जुग चार, गुर अवतार पैगम्बर अक्ख खुल्ाईआ। खाणी बाणी करदी गई इज़हार, ढोले गीत सुणाईआ। सो आया आपणी धार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जोती जोत कर उज्यार, निरगुण नूर नूर कर रुशनाईआ। बावन दा लेखा वेखे भाल, भार सब दा दए सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा आप चुकाईआ। बावन कहे वेखो रिषी तेरां सौ सतासी, जम्मू वालयां दयां जणाईआ। कटां गलों सर्ब जम फाँसी, राए धर्म दए ना कोए सज़ाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राती, साचा चन्द चमकाईआ। तुहानूं बणा के सच दवारे दे वड जमाती, निरगुण अक्खर दयां समझाईआ। मंज़ल पूरी होवे घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। खेले खेल ना कोए मनुआ बाज़ीगर नाटी, नटुआ स्वांग ना कोए वरताईआ। बल दवारे बावन दस्सी साखी, सहिज सहिज समझाईआ। एह कन्यां तेरां साल दी नंन्ी काकी, जिस दा कारज रिहा रचाईआ। जिस नूं गोबिन्द दिती शब्दी पाती, बिन अक्खरां आप फड़ाईआ। ओस दा बण के रविदास साथी, सगला संग आप बणाईआ। गुरमुखो तुहाडी वेख के खुशीआं वाली हासी, हस्ती अंदरों दए बदलाईआ। जेहड़ी नच्च टप्प के तुसां पाई रासी, गोपी काहन वेख खुशी मनाईआ। जेहड़ा नेंदा दिता बावन भाजी, सो लेख चुकाए थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म दस्से भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। लख चुरासी सखियां दा साचा काहन, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। वेखणहारा दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। सब दा लहिणा देणा चुकाए आण, नित नवित आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा बंधाए इक विधान, कूड़ा रंग ना कोए रंगाईआ। सच धर्म दा मार्ग देवे एक, एकँकारा आप बतलाईआ। सति धर्म दी साची टेक, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। सति धर्म करे बुध बिबेक, मनुआ मन ना कोए हल्काईआ। सति धर्म वक्खरी रेख, जगत लकीर ना कोए बणाईआ। सति धर्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाईआ। सति धर्म दा मार्ग सति, सति सतिवाद आप दृढ़ाईआ। जन भगतो देवे ब्रह्म मत, विद्या इक्को दए दृढ़ाईआ। अंदरों खोल् तुहाडी अक्ख, परदा दूई मिटाईआ।

घर मेला पुरख समरथ, अकल कलधारी नज़री आईआ। आत्म मिल के गावे जस, सोहँ ढोला दए समझाईआ। मुहब्बत विच जाए फस, फाँसी जम दी दए कटाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रख, रखणहार आप गुसांईआ। झगड़ा मुका के अठ्ठ तत, बिन तत्व तत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप प्रगटाईआ। साची खेल करे संसार, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दा लहिणा रहे जुग चार, अगे ना कोई मेट मिटाईआ। भगत सुहेले बणा मीत मुरार, मित्र आपणा आप अख्वाईआ। कागत कलम ना लिखणहार, लेखा सके ना कोए समझाईआ। जन भगतो तुहाडी मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, दुखियां दा दर्द वण्डाईआ। अंदरों सतह कर हमवार, कूड़ा करकट बाहर कढाहीआ। निर्मल जोत कर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। सोहँ शब्द दस्स जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत मिलाईआ। जिस नूं सजदे करन गुरू अवतार, पैगम्बर नैण शरमाईआ। वाहिद तुहाडा यार, कलमयां दा मालक नज़री आईआ। जिस नूं कैहिंदे परवरदिगार, उह परदा दए उठाईआ। जिस दा नाउँ सच्चा निरँकार, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे बणन भिखार, दर ठांडे सेव कमाईआ। उह कल कल्की लए अवतार, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। सचखण्ड निवासी हो प्रधान, हुक्म संदेसा इक दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जहान, जहालत अवर रहिण ना पाईआ। शब्दी खण्डा लै के आवे विच मैदान, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुरमुखो सोहणे उठो नौजवान, नौबत नाम नाल रखाईआ। चार वरनां देवे इक्को दान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी शरअ मेट शैतान, रमज़ सब नूं दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। श्री भगवान कहे वेखां जुग चार, चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। थोड़ा थोड़ा गुर अवतार पैगम्बरां दे अख्त्यार, लोकमात हुक्म सुणाईआ। निउँ निउँ करदे गए निमस्कार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। अलिफ़ ये दा कर के गए इज़्हार, ऊड़यां ऐड़यां विच पढ़ाईआ। प्रभ दा हुक्म सब तों बाहर, अक्खरां विच बन्द ना कोए कराईआ। तुहाडा वेखणा महल्ल अटार, काया काअबा खोज खुजाईआ। जित्थे वस्से आप निरँकार, निरगुण हो के डेरा लाईआ। सतिजुग साची बन्न्ह के जाए धार, धरनी धरत वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा सतिजुग दा समाज, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गाउणा राग, छत्ती रागां दी लोड़ रहे ना राईआ। घर बैठयां अंदरों तुहाडी सुरती जाए जाग, सतिगुर शब्द दए हिलाईआ। त्रैगुण माया बुझे आग, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। घर

स्वामी मिले कन्त सुहाग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा दो जहानां आदि जुगादि जुग चौकड़ी बदले कोए ना राज, रईयत लख चुरासी लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। धुर फ़रमाना आवे भज्जा, नट्ठे वाहो दाहीआ। सतिजुग साचे वेखे अग्गा, कलयुग पिच्छा परे हटाईआ। नाम नगारा इक्को वज्जा, ब्रह्मण्ड खण्ड शनवाईआ। पुरख अकाला देवे सद्दा, सन्त सुहेले आप उठाईआ। नाम खुमारी देवे मज़ा, जाम प्याला इक प्याईआ। जन भगतो भगत दवारा तुहाडी जग्हा, शिवदवाले मन्दिर मसीत मठ गुरूदवारे दी लोड़ रही ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि सरनाई आवे भज्जा, भजन बन्दगी इक्को ढोला गाईआ। कलयुग अन्त इस दी समझ सके ना कोए वजह, वाकिफ़कार नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी नाल कर के दग़ा, हरिजन साचे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म आपणे नाम दा दे के साचा मजा, मज़ाक दुनिया नाल वखाईआ। जन भगतो वेखो भगती दा विवहार, विवहारी आप कराईआ। जिस नूं समझे ना संसार, दीन दुनी दए दुहाईआ। कागत कलम ना लिखणहार, शाही रही कुरलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, करोड़ तेतीसा नीर वहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तक्कण नाल प्यार, प्रीतम प्यारा नज़री आईआ। जिस नूं लभ्भदे गए सदा जुग चार, शब्दी अंदर खोज खुजाईआ। सो कल कल्की लए अवतार, कल काती दए मिटाईआ। सम्बल वस्या धाम अपार, धर्म दी धार इक जणाईआ। साचा मार्ग ला के अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए वड्याईआ। जन भगतां कर के ख़बरदार, बेख़बरां दए उठाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच्चों कढ के बाहर, इष्टी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगत कहे प्रभ दे दे वस्त अनमोल, दर ठांडे मंग मंगाईआ। साडे अंदर रहे ना पोल, कूड़ी क्रिया दे कढाहीआ। भगतां नाल मारीं ना रोल, ममता मोह ना कोए फसाईआ। तेरे हुक्मे अंदर आए उपर धौल, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। तेरा बावन नाल कौल, इकरार आपणा दे निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दे वसाईआ। जन भगतो साचे गृह वसणा खेड़ा, मन्दिर इक्को नज़री आईआ। जित्थे भगतां बन्ने बेड़ा, नईआ नौका आपणे नाम चढ़ाईआ। लख चुरासी आवण जावण कटे गेड़ा, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। मेहरवान हो के महबूब मुहब्बत विच करे मेहरा, महव आपणा हुक्म सुणाईआ। निज काया मन्दिर दिसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक रखाईआ। साचा हुक्म देवे करता पुरख, करनी दा मालक दया कमाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले

लए परख, नाम कसवट्टी उत्ते घसाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दवारे देवे दरस, जोती जोत कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां जगत निताणयां वण्डे दर्द, दीनां आपणी गोद उठाईआ। जन भगतो तुहाडे उत्ते दीन मज़्हब दी चले कोई ना करद, करमां दा माण दे के दए मिटाईआ। जिस दे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर गुर अवतारां पैगम्बरां दी फ़रद, फ़ैसले हक हक सुणाईआ। तुहाडी मन्न के साची अरज़, पूरब लहिणा चुकाए कर्ज, शब्द अगम्मी सुणाए तर्ज, ढोला इक्को इक दृढ़ाईआ। ढोला सुणो सच संगीत, हरि करता आप जणाईआ। झगड़ा चुक्के मन्दिर मसीत, हरि मन्दिर इक्को दए समझाईआ। जित्थे बैठा रहे अतीत, त्रैगुण पन्ध ना कोए हंढाहीआ। आत्म करदा रहे प्रीत, परमात्म हो के वेख वखाईआ। कलयुग अन्त बदल के रीत, साची नीती इक वखाईआ। धुर दा कलमा दस्से हदीस, हज़रत करे पढ़ाईआ। पिछला लेखा सब दा रिहा बीत, बाकी नज़र कोए ना आईआ। करे खेल आप अनडीठ, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। लख चुरासी दे के पीठ, जन भगत लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। श्री भगवान कहे सतिजुग साची धार, भगत मिले वड्याईआ। सच शब्द सच जैकार, ढोला गीत सुणाईआ। जिस नूं सन्त सुहेले वेखण आण, गुर चेले मिल के खुशी मनाईआ। परदा ओहला चुकाए श्री भगवान, नकाब रहिण कोए ना पाईआ। धुर दा हुक्म दए फ़रमान, फ़ुरना मन दा रहे ना राईआ। मंज़ल चढ़ना दस्से आसान, पौड़ी डण्डा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। परदा ओहला चुक्के आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से जाप, जगजीवण दाता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। त्रैगुण माया ममता मेटे ताप, पंच विकार काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। जन भगतां दर्शन देवे साख्यात, निरगुण हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग लावे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। आत्म परमात्म बणा के सच्चा साथ, साजण हो के मेल मिलाईआ। मन्दिर चढ़ के खोल्हे ताक, परदा दए उठाईआ। पूरा कर भविख्त वाक्, अगला लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्याई सतिगुर साच, सच स्वामी होए सहाईआ। सच कहे मैं सदा सच्चा, कूड़ा नज़र कोए ना आईआ। किसे हथ्थ ना आवां मदीना मक्का, काअबे कोई ना खोज खुजाईआ। फड़या जावां ना तीर्थ तटां, अठ्ठ सठ्ठ रहे कुरलाईआ। कदे वड़या ना मन्दिर मठ्ठां, शिवदवाले देण दुहाईआ। जगत प्यार कोलों दूर नठ्ठां, आपणा मुख भवाईआ। इक्को प्रभ दे अगे वास्ता घत्तां, दोए जोड़ सीस निवाईआ।

श्री भगवान जन भगतां दे साचीआं मतां, मन मति रहे ना राईआ। जिन्हां दे जोबन अंदर रत्तां, रंग रतड़े तेरी सेव कमाईआ। उहनां दी अंदरों खोल्ह अक्खां, जो तेरा ध्यान लगाईआ। मैं शब्द कहाणी दस्सां, ढोला राग इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। हुक्म कहे प्रभ आया अठारां हाढ़, हाढ़ा कढ्ढे लोकाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, हाडी हाडी दए दुहाईआ। सच्चा मिले ना कोए सिक्दार, धुर दा हुक्म ना कोए मनाईआ। पल्लू छड्ड गुर अवतार, पैगम्बर प्रभ दे विच समाईआ। दीन मज़्हब हाहाकार, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। किरपा कर आप निरँकार, तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग आई अन्तिम वार, वारता पिछली दे चुकाईआ। सच संदेसा दे संसार, सदी चौधवीं मंग मंगाईआ। बीस इकीसा होया पार, गोबिन्द निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अगे तेरे सर्ब अख्त्यार, हुक्मनामा दे प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा हुक्म दे भगवन्त, साची मंग मंगाईआ। तूं मालक हरि हरि कन्त, कन्तूहल तेरी सरनाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई बेअन्त, अनन्त घर खेल खिलाईआ। कोटन कोटि लभ्भदे सन्त, जंगल जूहां फेरा पाईआ। कोई ना तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। श्री भगवान कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर करन लग्गे अरदास, बेनन्ती अन्त सुणाईआ। साडी पूरी कर दे ख़ाहिश, झगड़ा दीन दुनी चुकाईआ। इक्को नज़री आवे तेरी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन बणाईआ। साची पट्टी दस्स अगम्म जमात, जिस दा अक्खर नज़र किसे ना आईआ। धुर दरगाही बण बाप, पिता पुरख तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग साचा जोड़ नात, नातवां कलयुग दे खपाईआ। जो बुढ्ढा हो के रिहा कांप, पापां अंदरों दिता हिलाईआ। इक्को मंग मंगी ख़ास, ख़ालस ख़ालसा चार वरन देणा उपजाईआ। जन भगतां वसणा पास, विछोड़ा अन्तर रहे ना राईआ। सुहञ्जणी होवे प्रभात, वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दे सरनाईआ। चरण कँवल दा सच सहारा, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। भगत भगत दा हक विहारा, हकीकत विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चारा, हुक्में हुक्म सर्ब भवाईआ। उह सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दस्स जैकारा, नाते जगत वाले बंधाईआ। जन भगतो इक्ठे हो के बोलो पंज वारा, पंजां दा लेखा दए मुकाईआ। तुहाडे काया मन्दिर नालों चंगा नहीं कोई गुरूदवारा, शिवदवाला मठ्ठ सोभा कोए ना पाईआ। ठाकर स्वामी मिलो गृह प्रीतम प्यारा, प्रेमी हो के वेख वखाईआ। जिस दा बावन ने तक्कया नज़ारा, नज़रीआ तुहाडा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरुआं अवतारां पैगम्बरां मूल चुकाए उधारा, बाकी लेखा रहे ना राईआ। जन भगतो अगे जिस वेले

होवे व्याह, घर घर काज लैणा रचाईआ। पंजां मिल के सच जैकारा लैणा ला, पुरख अबिनाशी सनमुख नज़री आईआ। शब्द सतिगुर हो के बणे गवाह, नाम शहादत इक भुगताईआ। लड़का लड़की इक दूजे नूं लवे प्रना, प्रने फड़न दी लोड़ रही ना राईआ। लागी लागण जन भगतो तुहानूं दिता बणा, नाम वस्त तुहाडी झोली पाईआ। जिस नाल कोट जन्म दे मुक जाण गुनाह, गुनाहगार गुरमुख रहिण कोए ना पाईआ। तुसीं कोई करना नहीं हुण ओम स्वाह, सहायता मंगण कोए ना जाईआ। जिन्हां दे रोम रोम अंदर गया समा, समें दा समां दए प्रगटाईआ। जन भगतो जिस कारन तुहानूं कीता जमां, जामन हो के वेख वखाईआ। बल दवारे बावन रिषीआं नाल कीता तमअ मिलण दी आसा लई वधाईआ। सो वेला वक्त आया सुहावणा समां, सोहणा आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडे मन्दिर अंदर रहिण ना देवे कोई ग़मा, खुशीआं दा ढोला राग सुणाईआ। भाग लगाए काया माटी चम्मां, चम्म दृष्टी लए बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वासां दमां, दामनगीर हो के होए सहाईआ। गुरमुखो प्रभ दा हुक्म चलया नवां, नौ सत्त आप भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समाज इक वखाईआ। जन भगतो समाज वेखस इक्को हक, जगत विच्चों नज़री आईआ। जित्थे उबले कोए ना रत्त, रतन अमोलक गुरमुख लए उपजाईआ। नाम खुमारी देवे पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, पूरब लेखा झोली पाईआ। सन्त सुहेले दर घर सद्द, सद्दे धुर दे नाल मंगाईआ। अगे जम की फाँसी देवे वढ्ढ, शब्द कटार इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। वेखणहारा थान थनंतर, थिर घर वासी गुरमुख दए उठाईआ। साचा नाम दस्स के मंत्र, मंतव अगला हल्ल कराईआ। निरगुण जोत दे निरंतर, निरवैर होए सहाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, लख चुरासी खोज खुजाईआ। झगड़ा रहे ना गगन गगनंतर, पुरी लोअ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म सुणो साहिब स्वामी, सति सति समझाईआ। जन भगतो तुहाडे कोल इक निशानी, जिस दा निशाना ना कोए वखाईआ। गोबिन्द दा चिल्ला प्रभ दी कमानी, भथ्था सतिगुर सोभा पाईआ। जिस दी पिछली वेखी अलड़ जवानी, बाल अवस्था वज्जे वधाईआ। जिस कन्यां दा दान सब नूं बणया दानी, दूर दुरेडे लए मंगाईआ। पन्ध मुका के आए ज़िमीं असमानी, मण्डल भज्जे चाँईं चाँईंआ। खुशी होई चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वज्जे वधाईआ। सिफ्त करे चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। जन भगतो तुहाडा तिलक लाए पटने दी राणी, जिस दी गोदी गोबिन्द बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। जन भगत कहिण सानूं होए हैरानी, हैरत

८४५
१६

अंदर आईआ। की खेल होया ज़िमीं असमानी, मन मति बुध समझ सके ना राईआ। वास्ता घत्तया अगे आदि शक्ति भवानी, भावना पूर ना कोए कराईआ। चतुर्भुज नूं समझ के दानी, सीस सीस इक झुकाईआ। राजे राम नूं समझ के बानी, बाहमी मंग इक मंगाईआ। काहन कृष्न समझ के साचा काहनी, भार ओहदे हथ्थ फड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखे जाण जाणी, जानणहार ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे बेईमानी, बेवा रूप सर्ब वखाईआ। जिन्हां दे पिच्छे तत्ती लोह ते बैठा सुत भानी, अर्जन अरज़ प्रभ नूं आप सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगतां आत्म रहिण ना देवीं बेगानी, बेगाना घर ना कोए जणाईआ। अन्तर आत्मा बाली नढ्ढी बच्ची इक अंञाणी, सोच समझ ना कोए वधाईआ। सुणदी रही जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां दी कहाणी, तेरा दरस कोए ना पाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सुणदी रही अक्खरां वाली बाणी, निरअक्खर ना कोए समझाईआ। आउँदी जांदी रही चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा तन हंढाहीआ। ऐ प्रभू कलयुग अन्त कर मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां लहिणा देणा चुका जिस्म जिस्मानी, जामन हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हणहारा, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जन भगतो तुहाडा विवहारा, लहिणा पिछला झोली पाईआ। शब्द होया हक विहारा, बरन अठारां वज्जी वधाईआ। सोहणा वेख्या धुर दरबारा, पुरख अकाल नाल जणाईआ। सब दा लहिणा चुक्कया अन्तिम वारा, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। अगला हुक्म सच्ची सरकारा, सहिजे दए सुणाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो जिस वेले धर्म व्याह दा होवे विवहारा, पंजां दा लेखे लग्गे जैकारा, जैकारे पंजां विच नाता दए जुड़ाईआ। बिना प्रभू तों किसे होर दी नहीं गाउणी वारा, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। सचखण्ड तुहाडा सच्चा दरबारा, जित्थे मिले धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पार कर के आप किनारा, सहारा इक्को दए वखाईआ। जन भगत कहिण प्रभ साडे अंदर आई खुशहाली, ख़ाहिश एका दईए जणाईआ। साडी काया चढ़ी लाली, जोबन आपणा रंग बदलाईआ। तेरे दर दे बणे स्वाली, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। कलयुग मेट रैण अन्धेरी काली, कलमा आपणा दे समझाईआ। तेरा हुक्म बेमिसाली, मिसल विच बन्द ना कोए कराईआ। प्रभू तेरे दर ते गुर अवतार पैगम्बर होए इकबाली, इकबाल दे के जगत नाता गए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान कहे मैं सब कुछ दिता आप, भगतां झोली पाईआ। रहे कोई ना पाप, इक्को मंग मंगाईआ। नज़री आए साख्यात, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो पूरा करे भविख्त वाक्, गोबिन्द दए गवाहीआ। जिस कन्यां दा नाता

जुड़या साक, सगन दोआबे विच्चों आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब खेल रिहा वखाईआ। साचा सगन आया विच्चों दोआबे, दोहरा फेरा पाईआ। खुशीआं वज्जे अनहद वाजे, धुनी आपणा राग सुणाईआ। वर पाया वड राजन राजे, कूड़ी क्रिया रही ना राईआ। लेखा मुकया कूड़ समाजे, भगत भगवान मिली वड्याईआ। जिस ने खेल रचाया विच माझे, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। उह वेखणहारा दूर दुराडे, आंढ गुआंढे दए तजाईआ। साचे नाते रखे सांझे, सज्जण हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार रिहा भुगताईआ। दोआबे वाले सगन लै के आए होर, भार सिर उत्ते वखाईआ। प्रभ ते आसा रख के डोर, नाता तन्द सितार जुड़ाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घोर, अंदरे अंदर रहे पछताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मेरा कोई ना जाणे भेत, भावी विच सर्ब रखाईआ। मैं हर घट रिहा वेख, गृह गृह खोज खुजाईआ। जिस दा ज़ामन बण के दस दस्मेश, शब्दी शब्द गया जणाईआ। सो खेले खेल इक नरेश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर कहे मैं कदे ना होवां सर, जन भगतां दयां जणाईआ। मैं इक्को लभ्भणा हरि, जो हिरदे बह के रंग चढ़ाईआ। भय भउ चुकावे डर, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। साचे मन्दिर बहे चढ़, ढोला गीत करे शनवाईआ। निरगुण जोत आपे धर, नूर ज़हूर दए वखाईआ। सन्त सुहेले लए फड़, फड़ बांहों गोद टिकाईआ। जगत हवस विच सारे रहे मर, बिन सतिगुर चरणां मरना कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म आप प्रगटाईआ। दोआबे वाल्लयो सुणना इक पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे पढ़ाईआ। तुहाडा हिस्सा सत्त सत्त बादाम, गोबिन्द माछूवाड़े लाल सिंघ गया समझाईआ। जिस ने त्रेते युग विच पीता जाम, राम राम ढोला गाईआ। उहनां खेल दस्स आसान, मुश्कल अगली दिती मिटाईआ। सुण के सच पैग़ाम, भज्जे वाहो दाहीआ। की हुक्म देवे भगवान, भगवत भेव कोए ना आईआ। की रहमत रहीम करे रहमान, मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। धुर दा खेल कहे मैं रवां जुग चार, वरन बरन विच समाईआ। जन भगतां करां प्यार, भगती मार्ग वेख आपणी ख़ुशी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे देस, जित्थे रहे सदा हमेश, निरगुण हे के सोभा पाईआ। जन भगतो तुहाडा विहारा सत्त बादाम, बदन दे अंदर होए रुशनाईआ। मिले धुर दा राम, रहीम हो के वेख वखाईआ। झगड़ा मेटे तमाम, तमअ दए गवाईआ। मिलणा होवे आसान, सहिजे दर्शन पाईआ। रोक रुपईआ अगे रखणा आण, जो हुक्म

८४६
१६

अंदर घर बैठयां दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा देवणहारा दान, दानी गुरमुख वेख वखाईआ। जन भगतां सगन दोहरा देणां पा, नवां जन्म फेर बदलाईआ। जिस सुरजीत सिँघ दा अठारां हाढ़ नूं नाता तुट्टणा सी विच जहान उस नूं फेर दिता प्रगटा, सठ्ठ साल दी आयू दिती वधा, वाधा आपणे नाल वधाईआ। जिस कन्यां गुरदर्शन दा सांढे तिन्न साल नूं सरीर होणा सी स्वाह, हड्डीआं राख कम्म किसे ना आईआ। जन भगतो उह तुहाडे कोलों लई बचा, विचोला गुरमुख नाल मिलाईआ। एसे कर के जुग चौकड़ी सदीआं दा साह ल्या सुधा, सदमा मात रहे ना राईआ। कदमां दा सहारा दिता वखा, पदमां दे विचों बाहर कढाहीआ। अर्शां तों अर्श साची मंज़ल दिता चढ़ा, पिछला पैंडा रहे ना राईआ। जन्म विचों जन्म दिता बदला, इक्की संग मिलाए गवाह, शहादत पंजां कोलों भुगताईआ। जे इक गुरमुख वी विचों कर जांदा नांह, फेर होणी नहीं सी कुड़माईआ। जन भगतो तुहाडी महिमा देवत सुर गण गंधरव विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर थाउं थाईं रहे गा, सोहले ढोले बिना रागां नादां सोहणा राग अल्हाईआ। हुण खुशीआं नाल आपणे वीरे दा वेखो व्याह, हीरे तुहाडे अगे टिकाईआ। जिस भोजन पिच्छे बावन ने इक्ठे लए करा, उह तुहाडा पकवान खा के श्री भगवान खुशी मनाईआ। मनमुख मूर्ख मुग्ध अंञाण दा लग्गण नहीं दिता दाअ, ख़ाली हथ्थ आए ते ख़ाली हथ्थ दए भवा, समरथ देवे ना कोए वड्याईआ। जिन्हां प्रेम प्यार सतिकार नाल इक वार सीस दिता झुका, तिन्हां नूं चार कुण्ट विचों बाहर कढ्ढ के, मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों वढ्ढ के, साचे धाम दए टिकाईआ। जन भगतो खुशीआं नाल खुशी मनाउणी रज्ज के, रज़ा प्रभ दी साची भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। दोआबे वालयां वारनां करनी गिरी ठूठी, पोखरा नाल जुड़ाईआ। तुहाडी आत्मा रहे ना रूठी, रुसयां लए मनाईआ। झगड़ा रहे ना दिशा कूटी, ममता मोह दए गवाईआ। मनुआ मन ना भज्जे दूती, दुश्मण अंदरों दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा मालक इक अख्वाईआ। दोआबे वाल्लयो तुहाडा सोहणा संग, पाल सिँघ नज़री आईआ। जिस दे कोल प्रभ मिलण दा वड्डा ढंग, तरीका नवां रिहा समझाईआ। जिस कारन गृह गृह खावे डंग, डंका शब्द नाम शनवाईआ। उहनां भगतां दर आयां लावे अंग, अंगीकार अख्वाईआ। आत्म सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोए जणाईआ। घर प्रकाश चाढ़े चन्द, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अमृत धार पावे ठंड, अग्नी अग्न बुझाईआ। सुरती होण ना देवे रंड, शब्दी कन्त जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा आनंद, आनंद आनंद विचों वखाईआ। जन भगतो दोहरा सगन तुहाडा एक, दोहरा जन्म बणाईआ। जेहड़ा लक्ष्मण पिच्छे कीता

भेंट, उस दा वाधा दिता वधाईआ। सति धर्म दी खेल के खेड, ख़ालस ख़ालक ख़लक आप जणाईआ। नाम संदेसा धुर दा भेज, भजन बन्दगी विचों बाहर कराईआ। आत्म परमात्म बण के माणे सेज, साजण हो के डेरा लाईआ। लहिणा देणा शब्द गुरू दहि दिशा वसणहारा दस दस्मेश, निरगुण निरवैर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सहाई हो के सदा हमेश, हमसाजण हो के भुल्ल कदे ना जाईआ।

✪ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

सतिगुर सरन मिले सच सुख, मानस जन्म मिले वड्याईआ। उज्जल होवे मुख, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले बणा के आपणे सुत, बिन जनणी गोद उठाईआ। आवण जावण मेटे दु:ख, जगत दलिद्र दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। जन भगतां होवे सच वसेरा, गृह मन्दिर इक्को नज़री आईआ। जित्थे ढोला सोहँ होवे तेरा मेरा, मेरी मैं ना कोए वखाईआ। नज़री आवे नेरन नेरा, दूर दुराडा वेख वखाईआ। जन भगतां बन्न्हण आए बेड़ा, खेवट खेटा हो के कंध उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान महबूब होया सिँघ शेरा, शब्दी गुर सतिगुर होए सहाईआ। आत्म परमात्म तन माटी ख़ाक करे नबेड़ा, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सहारा इक दरसाईआ। सच सहारा दे के एक, एकँकार वेख वखाईआ। जिन्हां दे पूरब जन्म दे लेख, तिन्हां दा मेला लए मिलाईआ। सच वसाए भगतां देस, जित्थे अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कर्म कर्म दी बदल के रेख, लेखा आपणे हत्थ बणाईआ। जो विछड़े नालों दस दस्मेश, सो सहिजे रिहा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां प्रेम प्यार सच मुहब्बत कर के भेंट, बेटी बेट आपणे अंग लगाईआ। जन भगतो तुहाडा धर्म पकवान, सचखण्ड निवासी दए वड्याईआ। जिस धारों गोबिन्द अमृत पीता पान, पारब्रह्म ओहो रस तुहाडे विच भराईआ। शब्द अणयाला मार अगम्मी बाण, बावन दा लेखा दिता मुकाईआ। अन्तिम होण ना दिता हैरान, पश्चाताप ना कोए लोकाईआ। साचा दे के धुर फ़रमान, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। लहिणा देणा वेखो श्री भगवान, अबिनाशी करता झोली पाईआ। भगत वछल हरि बण के काहन, निहकर्मी हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो होया

यज्ञ धर्म, धर्म आत्मा खुशी मनाईआ। झगड़ा रिहा ना कोई बरन वरन, सरन ना कोए जणाईआ। किरपा कर तरनी तरन, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पूरा दिता कराईआ। जन भगतो तुहाडा प्रेम वेख्या रस अनडिठ्ठा, रसत्यां विच गाउँदी दिसी लोकाईआ। मुहब्बत अंदर जिन्हां हरि जू जित्ता, वैरी दुश्मण अंदरों बाहर कढाहीआ। इक्को पुरख अकाल मन्न के पिता, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जिस दी यारी दा निकले सिट्टा, सट्ट ठोकर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए चढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडा प्रेम पकवान पक्का, सोहणा नजरी आईआ। मैं हैरान होया हका, हकीकत खोज खुजाईआ। मेरा संसा चुकया शका, शिकायत अगे ना कोए लगाईआ। मेरीआं अंदरों बाहरों खुल्हीआं अक्खां, अक्खरां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं सच कहाणी दस्सां, कूक कूक उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए वखाईआ। जन भगतो तुहाडा सच धर्म दा यज्ञ, जुगती प्रभ दिती बणाईआ। बिन काअब्यां वाला हज्ज, घर मन्दिर दिता प्रगटाईआ। नाता तोड़ साढे तिन्न हथ्थ, हथेली उत्ते सीस टिकाईआ। इक्को ढोला प्रभ दा गावे जस, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। नेत्र तक्के किसे ना अक्ख, हरिजन वेखे भैण माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के मेहर करे सच, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। जन भगत कहिण असीं बाली बुध, चले मात ना कोए चतुराईआ। साचे सर दी रहे ना सुध, सुदी वदी रहे ना राईआ। तुहाडा लेखे लाया सब कुछ, भेंटा दान आपणी झोली पाईआ। लंगर सांझा कर के पिउ पुत, पिता पूत खुशी मनाईआ। जन्म जन्म दी कट के तुहाडी भुक्ख, भुक्ख्यां दिता रजाईआ। बावन दा सल रिहा ना दुःख, लेखा पूर कराईआ। जन भगतो घर जा के मानणा सुख, दुखियां दा दुःख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गया तुठ्ठ, नज़र नज़र नाल दए बदलाईआ।

✪ २३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

प्रेम बूटा आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेख भगत, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल परम पुरख परमात्म दए वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा एथे ओथे दो जहानां उपर अर्श, पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार हो के आवे परत, परदा ओहला भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। देवे माण वड्याई उपर धरत, धरनी धरत धवल मेहर नज़र बेनज़ीर इक उठाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेटे हरस, हवस अगली दए मुकाईआ। सति

स्वामी अन्तरजामी हो के करे तरस, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता दीनन आपणे रंग रंगाईआ। अंदर वड़ मन्दिर चढ़ दर्शन देवे निधड़क, पंच विकारा हउमे हंगता गढ़ दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान वखाए इक्को घर धुर दा पाली जोत अकाली अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। साचा बूटा आदि जुगादी एका सन्त, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सतिगुर देवणहार इक वड्याईआ। जिस दी निरगुण सरगुण धार मौली रहे रुत्त बसन्त, फुल्ल फुलवाड़ी पत्त डाली आप महकाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलावा करे शब्दी मेला नार कन्त, सुरत सवाणी सोभा पाईआ। भेव अभेद बोध अगाध महिमा दस्से अगणत, निरअक्खर वक्खर आपणी धार जणाईआ। काया माटी साची हाटी गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दए जणाईआ। नाउँ निरँकारा निरगुण धार बणाए साचा पंडत, जगत विद्या पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। नाम अमोला अगम्मी चाढ़े रंगत, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। साचा बूटा लोकमात एका एक गुरमुख, गुर सतिगुर शब्दी धार वड्याईआ। जिस अन्तर आत्म इक्को उपजे सुख, सांतक सति नज़री आईआ। जन्म मरन दा रहे कोए ना दुःख, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। मात गर्भ होवे ना उलटा रुख, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पढ़े साची तुक, ढोला विचोला सोहला इक्को इक गाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, जगत पाँधी पन्ध ना कोए कराईआ। सदा सुहेला इक इकेला एकँकारा देवे सुख, सुख सागर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साचा बूटा एको सिख, गुर सतिगुर देवणहार वड्याईआ। बिन कलम शाही लेखा देवे लिख, अक्खरां दी लोड़ रहे ना राईआ। नाम भण्डारा अगम्मी पावे भिक्ख, परमात्म हो के आत्म झोली दए भराईआ। बिन जगत नेत्रां पए दिस्स, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। जिधर वेखे माली नज़री आए इक, एकँकारा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच रखाईआ। जन भगत कहे साचा माली इक्को मालक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार सच्चा ख़ालक, ख़लक मख़लूक वेखे थाउँ थाँईंआ। आदि जुगादी धुर दा पालक, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी समझे कोए ना आदत, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर भेव कोए ना पाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं दस्सदा रिहा इबादत, नाम कलमे ढोले गीत रागां नादां विच शनवाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी धार कोलों कराउँदा रिहा सफ़ारश, सफ़े विच्चों सफ़ा आप उलटाईआ। जिस दी बिन अक्खरां तों लिखी होई समझी ना किसे इबारत, बेअन्त कह के सारे खुशी मनाईआ।

सचखण्ड दवारा जिस दा महल अटल सब तों वखरी इमारत, दीवा बाती कमलापाती बिन तेल बाती डगमगाईआ। जगत नेत्रां नाल जिस दा करे ना कोए तुआरफ़ तारीफ़ विच शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सेवा रही कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी समझे ना कोए वज़ारत, हुक्म विच्चों हुक्म नित नवित दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। साचा सन्त कहे प्रभ मालक माली वेख्या एक, एकँकारा नज़री आईआ। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव रखदे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर कर आदेस, डण्डावत नमस्ते कह के सारे सीस झुकाईआ। जो सच सुहेला वस्या सचखण्ड साचे देस, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन सोभा पाईआ। जिस दी नज़र ना आए रूप रंग रेख, रेखा सब दी दए बदलाईआ। जिस ने सुत बणाया गोबिन्द दस दस्मेश, शब्द गुरू सतिगुर एका एक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, जन्म मरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदा आवे भेस, भेखाधारी स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। नाम सुनेहड़ा देंदा रहे संदेश, कलमा कायनात जणाईआ। चरण कँवल उपर धवल दस्सदा रहे टेक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक वखाईआ। गुरमुख कहे प्रभ माली हक महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा अर्श फर्श तों उत्ते अरूज, मुकामे हक लाशरीक सोभा पाईआ। दीन दुनी विच ना होया कदे महिदूद, हद्दां विच बन्द ना कोए कराईआ। जिस दा पैगम्बरां धुर इशारे नाल थोड़ा जिहा दिता सबूत, साबत सूरत सक्या ना कोए समझाईआ। हुक्म सुणाउँदा रिहा काया काअबा कलबूत, निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। जिधर तक्कण ओधर मौजूद, मुफ़लिस मुतल्ला सारे रिहा कराईआ। जिस दा नाम कदे ना होवे नेस्तोनाबूद, लख चुरासी अंदर वड़ मन्दिर चढ़ घर विच घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। गुरसिख कहे साचा माली वेख्या अगम्म अथाह, बेपरवाह नज़री आईआ। जो ब्रह्मण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर लख चुरासी रिहा समा, ईश जीव जगदीश खाणी बाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा रंग रंगाईआ। शब्द अगम्म नाद धुन रिहा जणा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा हुक्म वरताईआ। गृह मन्दिर अंदर साचे घर करे रुशना, आदि निरँजण निरगुण जोत कर रुशनाईआ। धुन आत्मक राग रिहा अला, आलमीन यामबीन मिहबान बीदो बी खैर या अलाह आपणी आवाज़ जणाईआ। बजर कपाटी परदा रिहा उठा, साची हाटी इक्को नाम हट्ट विकाईआ। अन्ध अज्ञान रिहा चुका, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। सुखमन टेडी बंक पैंडा रिहा मुका, ईड़ा पिंगल ना कोए अटकाईआ। जन भगतां वेखे थाउँ थाँ, चार कुण्ट दहि दिशा

फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले रिहा मिला, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख गुर गुर गोद रिहा उठा, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। गुरसिख सज्जण मीत रिहा हिला, नाम संदेसा इक सुणाईआ। अमृत आत्म जल रिहा पिला, सच सरोवर इक्को इक वखाईआ। पंज तत काया माटी साढे तिन्न हथ्थ साचा बूटा रिहा लहरा, रुतड़ी आपणे विच महकाईआ। साचा पाणी रिहा पा, बिन प्याले आप छिड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा बूटा हरि सतिगुर शब्द प्यार, प्रीतम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा फल अगम्म अपार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां रस देवे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वज्जदी रहे वधाईआ। मिले वड्याई विच संसार, श्री भगवान दए सरनाईआ। जिस दा लेखा कागत कलम ना लिखणहार, अक्खरां विच ना वण्ड वण्डाईआ। जगत शरअ तों दिसे बाहर, शरीअत विच ना कोए फसाईआ। चढ़ के वेखे मंज़ल हक मनार, बिन पाँधीआं पन्ध मुकाईआ। जित्थे इक्को नूर होए उज्यार, जलवागर करे रुशनाईआ। सजदे करन पैगम्बर गुर अवतार, बिन सीस सीस झुकाईआ। तत वजूद नज़र ना आवे कोई धार, धवल मिले ना कोए वड्याईआ। दरगाह साची सोहे परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जन भगतां प्रेम प्यार दी खिड़ी वेखे गुलज़ार, गुलशन आपणा इक महकाईआ। जित्थे ना कोई पुरख ना कोई नार, नरां दा नरायण सोभा पाईआ। कुदरत दा करतार कादर खुद मुख्त्यार, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ रिहा बरसाईआ। बूटा कहे मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी फलदा फुलदा, पत्त टहणी अन्तर सोभा पाईआ। मेरा रूप होवे ओस अगम्मी कुल दा, जिस नूं कुल्ल मालक कह के सारे सीस निवाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा लेख कदे ना भुलदा, कदीम दा मालक कुदरत दा ख़ालक सर्ब दा सालस नज़री आईआ। जिस दा खेल अतोल अतुल दा, जगत तराज़ू तत बाज़ू हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए वड्याईआ। बूटा कहे जो मैनूं रिहा पाल, हरी सिंच क्यार आप कराईआ। उह सब दी लेखे लावे घाल, करनी करता वेख वखाईआ। दीनां बंधप हो के दयाल, दयानिध आपणा रंग चढ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण भाल, लख चुरासी विच्चों लए उठाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर दस्से सच्ची धर्मसाल, घर विच घर सोभा पाईआ। अनहद नादी नाद वजाए ताल, तलवाड़े दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन तेल बाती दीपक जोती देवे बाल, दिवस रैण अठ्ठे पहर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दिसे नाल, मन दी नालिश दए गवाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल लेखा दए चुकाईआ। जो कलयुग अन्तिम वेला वक्त वेखणहारा हाल, माज़ी दा झगड़ा

८५२ १६

रिहा मुकाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच दे के गए अहिवाल, शब्दां विच शनवाईआ। सो खेल करे कमाल, कामल मुर्शद वेस वटाईआ। जिस दी जगत जुगत अवल्लड़ी चाल, निराली आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां करे संभाल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। सन्त सतिगुर लए उठाल, शब्द सुनेहड़ा इक घलाईआ। गुरमुख वेखे धुर दे लाल, लालन हो के मेल मिलाईआ। गुरसिख लख चुरासी विच्चों कर के भाल, आवण जावण पतित पावण पन्ध मुकाईआ। जो प्रेम बूटा भगती अंदर भगतां ल्या पाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक समझाईआ। बूटा कहे मेरी वेखो सोहणी छाया, शहिनशाह दिती माण वड्याईआ। जिस दे नेड़ ना आवे त्रैगुण माया, ममता मोह रिहा ना राईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक उपाया, संगीत ढोला धुर दा राग अलाईआ। घर स्वामी ठाकर पाया, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। मन्दिर चढ़ के ढोला गाया, गीत गोबिन्द जणाईआ। कूड़ कपट कुण्डा लाहया, परदा ओहला दिता उठाईआ। निज घर वासी निरवैर नज़री आया, मूर्त अकाल सोभा पाईआ। जिस दा तेज बेपरवाहया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश करे रुशनाईआ। बिना नेत्र नैण दए खुलाया, बिना नैण अक्ख करे रुशनाईआ। महल अटल सोभा पाया, जित्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्द ना कोए रुशनाया, मण्डल मण्डप ना कोए वड्याईआ। परम पुरख परमेश्वर पारब्रह्म ब्रह्म दाता नज़री आया, दानी हो के दया कमाईआ। ज़िमीं असमानी पन्ध मुकाया, ब्रह्म ज्ञानी ज्ञान इक्को इक जणाईआ। मंज़ल हक साची खेल खिलाया, जित्थे शक शकूक झगड़ा रहे ना राईआ। गुरमुख बूटा सोहणा नज़री आया, चारे कूटां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। बूटा कहे मेरा कोई ना समझे जिस्म ज़मीर, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। किस बिध माली कीता तामीर, ता अख़ीर आपणा हुक्म जणाईआ। मेरा रूप शाह कंगाल अमीर, सुल्तान राजान नज़री आईआ। मेरी समझे ना कोए जागीर, माल धन ना कोए वड्याईआ। जिस विच्चों पाणी मिल्या कबीर, काअब्यां दा लेखा गया मुकाईआ। बिन अक्खरां तों होया फ़कीर, फ़िकरयां तों बग़ैर बेनज़ीर दर्शन पाईआ। झगड़ा रिहा ना कोए हकीर, हुक्म दा मालक हिकमत रिहा समझाईआ। मनुआ मन ना होए दिलगीर, वासना जगत ना कोए हल्काईआ। जन भगतो कलयुग अन्त अबिनाशी करते अगम्मी कर तदबीर, तकदीर तुहाडी दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा वखाईआ। बूटा कहे मेरा पत्त टहणी वेखो शाख, शनाखत सतिगुर हथ्थ वखाईआ। जो मेरी दो जहानां पत्त रिहा राख, रक्ख्या करे चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर गया आख, आख़र ओहो रंग चढ़ाईआ। भविख्तां विच दे के गए वाक्, वाकिफ़कार इक्को

नज़री आईआ। जिस दे नाल मिलण दा होया इतफ़ाक, बेइतफ़ाकी अंदरों दए गवाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के धुर दा साक, सज्जण हो के दया कमाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पतित पुनीत आपणा रंग चढ़ाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा कर बेबाक, हिसाब बिन किताब आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दी दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। बूटा कहे मेरी वेखो मौली टहणी, टहिक महक आपणी रही वखाईआ। शब्द सतिगुर मिल्या हाणी, आयू उमर सके ना कोए समझाईआ। जिस झगड़ा मुकाउणा चारे खाणी, चारे बाणी अंदरों दिती समझाईआ। अमृत अंमिउँ रस दे के ठंडा पाणी, सांतक सति दिता कराईआ। झगड़ा मुका के आवण जाणी, जानणहार आपणा भेव खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी अकथ कहाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दी सोभा कर कर खुशी मनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला घट भीतर सर्ब जीआं जाण जाणी, जानणहार गोपाल दीन दयाल दया कमाईआ। जिस दा भेव अभेद चौदां विद्या समझे ना कोए ज्ञानी, जगत बुद्धी परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल दो जहानी, जहां तहां आपणी कार कमाईआ। बूटा कहे मैं इक नूं करां सजदा, बिन सर सिर झुकाईआ। ओस दा बणा बरदा, जो बन्दीख़ाने रिहा मुकाईआ। मालक वेखां आपणे घर दा, जो घर घर आबे हयात रिहा प्याईआ। मंज़ल साची चढ़दा, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। बिना अलिफ़ ये कलमा पढ़दा, कायनात तों परे सोभा पाईआ। लेखा जाणे जल थल दा, महीअल आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा सोभावन्त रिहा सुहाईआ। बूटा कहे मैं वेख्या अगम्म प्यार, प्रेमी परम पुरख जणाईआ। जिस दे विच्चों निकले गुरू अवतार, पैगम्बर वेस वटाईआ। पंज तत करदे गए श्रृंगार, तन माटी ख़ाक रमाईआ। सुणदे रहे अगम्मी गुफ़तार, गुफ़त शनीद शनवाईआ। मिलदे रहे सांझे यार, जो कलमा हक रिहा पढ़ाईआ। झुकदे रहे विच संसार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। लेखा लिखदे रहे अपार, कलम शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द बोलदे रहे जैकार, वाह वाह बेअन्त बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। नाम रखाउँदे रहे गुरू अवतार, पैगम्बर कहे जगत लोकाईआ। परवरदिगार दे बणदे रहे फ़रमांबरदार, सेवक हो के सेव कमाईआ। बूटे हो के फलदे फुलदे रहे जुग चार, चौकड़ी आपणी सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखणहार, वेखे विगसे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे ख़िज़ां बसन्त बहार, महिज आपणा हुक्म वरताईआ। बूटा कहे करे मेरी सब तों डूँग्घी जड़, माटी ख़ाक विच ना कोए दबाईआ। जगत जलधार विच कदे ना जावां हड़, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। अग्नी विच ना जावां सड़,

डूँघे खात ना कोए दबाईआ। मैं वसां ओस घर, जिस गृह नज़र ना कोए उठाईआ। इक्को सरन स्वामी जावां पड़, पुरख अकाल ओट तकाईआ। भय भउ चुक्के डर, भयानक रूप ना कोए वखाईआ। शब्दी पल्लू लवां फड़, अगे सके ना कोए छुडाईआ। सच दवारे जावां खड़, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। पतिपरमेश्वर लवां वर, मालक इक्को नज़री आईआ। जिस नूं कैहिंदे नरायण नर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सोभा पाईआ। सच दुआर कहे मैं बूटा वेखणा लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। जिस दे अन्तर इक्को याद, पतिपरमेश्वर रिहा ध्याईआ। प्रेम प्यार दा वज्जे नाद, धुनी धुन विच्चों शनवाईआ। इक्को नाम रिहा अराध, राधा कृष्न दी लोड़ रही ना राईआ। सच मुहब्बत विच हो विस्माद बिस्मिल हो के आपणा आप गवाईआ। सच घराने विच हो आबाद, आबादी पिछली देवे तजाईआ। रसना जेहवा रहे ना कोए स्वाद, रस अमृत इक चखाईआ। जिस ने रचना रची आदि, मध आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा खेल होणा जुगादि, जुग चौकड़ी रिहा भवाईआ। ओस दा बूटा सब तों सुहञ्जणा बाग़, बाग़बान माली मालक नज़री आईआ। जिस ने अन्तर जगाउणा इक चिराग़, चारागाहां विच करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा सोभा पाईआ। बूटा कहे मैं दस्सां आपणी कहाणी, बीती पिछली नज़री आईआ। फ़रीद फ़ाके विच नौ दवारयां तों बाहर एथे गाउँदा रिहा अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर अन्तर अन्तर लगाईआ। धुर दे मुर्शद कर मेहरवानी, महबूब आपणा रंग चढ़ाईआ। सजदे विच आपणी कर कुरबानी, मन वासना दिती भेंट कराईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना रहे शैतानी, शरअ दी शर्म दिती मिटाईआ। हथ्थ मार के उत्ते पेशानी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। मेरी मंज़ल नहीं कोई रुहानी, रूह बुत्त वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मैं वसां तेरे ओस आलमे जावदानी, जित्थे इक्को नूर नजरी आईआ। परवरदिगार मेरा तन नहीं जूह बेगानी, प्रभास रूप ना कोए बदलाईआ। तूं मालक इक असमानी, जिस्मानी ख़ाक वेख सोभा पाईआ। कूड़ क्रिया होई तुग्यानी, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। फ़रीद कहे मैं कटया फ़ाका, फ़िकरा तेरा ढोला गाईआ। आ मिल महबूब मेरे आका, अकल बुद्धी दी चली ना कोए चतुराईआ। तूं सज्जण मेरा साका, साख्यात दरस देणा वखाईआ। खोल्ह अंदरों ताका, परदा दे चुकाईआ। तूं मेरा पिता माता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मैं पढ़ां तेरी हक नमाज़ा, अक्खरां दा गीत ना कोए अलाईआ। सच सुणा अगम्मी आवाज़ा, अवल अल्ला नूर खुदाईआ। वजा उह रबाबा, जो रहमत विच तेरा नाम सुणाईआ। आवे उह स्वादा, जिस नूं रसना चख ना सके राईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। हुक्म आया धुरदरगाह, कलमा कलमे विच्चों दृढ़ाईआ। परवरदिगार होया मेहरवां, महबूब मेहर नज़र उठाईआ। अन्तर कर इक्को रुशना, अन्ध अन्धेरा दिता मिटाईआ। फ़रीदा तेरे बख्शे सर्ब गुनाह, भगती दा मालक भगवान दया कमाईआ। उठ वेख हक अमाम (अगम्मा), जो अमलां तों लए छुडाईआ। कूड़ी मेटे जगत तमअ, तमन्ना इक्को दए जणाईआ। हरख सोग रहे ना ग़मां, ग़ायब हो के मुसाइब हो के अजाइब अंदरों रंग वखाईआ। भाग लगाए काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वासी दमां, दामनगीर हो के पल्लू गंढु बंधाईआ। तेरे अंदरों जगा के आपणी शमां, शमशान भूमी विच्चों बाहर कढाहीआ। जीवण कर के नवां, नवां रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फ़रीद किहा की कीता ज़िकर, ज़ाहर ज़हूर दे जणाईआ। मेरे अन्तर चिन्ता रहे ना फ़िकर, फ़ाका पूरा कर वखाईआ। आपणी धार विच्चों नित्तर, निरवैर हो के दरस देणा वखाईआ। तूं आत्म दा सच्चा मित्र, परमात्म बेपरवाहीआ। तेरा चित्रे कोए ना चित्तर, मैं चातृक बूँद स्वांती मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। फ़रीद ने मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। धरनी वजाया मृदंग, धवल हो के खुशी मनाईआ। दोहां दा बणया संग, वज्जी नाम वधाईआ। फरकण लग्गा अंग, अंगीकार होवे बेपरवाहीआ। कटे भुक्ख नंग, दुखड़ा दुःख गवाईआ। वसे सदा सच आनंद, आनंद आनंद विच्चों प्रगटाईआ। दस्से ढोला छन्द, नाम निधान समझाईआ। होवे प्रकाश चन्द, नूर जोत रुशनाईआ। लेखा चुक्के वरभण्ड, ब्रह्मण्ड पन्ध चुकाईआ। दुआर वखाए सचखण्ड, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फ़रीद कहे मैं नौ दिन कीता फ़ाकाकशी, कसम खा के दयां जणाईआ। एह धरनी धवल लग्गी चंगी, जित्थे बैठा आसण लाईआ। प्रेम प्यार दी आए सुगंधी, दुर्गन्ध रही ना राईआ। मनसा अंदर आसा आसा विच ख़ाहिश चंगी, प्रभ चरण कँवल मिले सरनाईआ। जिस दी धार सदा बहु रंगी, भेव अभेदा सके ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म होया धुरदरगाही फ़रीद, फ़िकरा इक जणाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी होवे उम्मीद, आमल कामल मुर्शद दए गवाहीआ। दरस होवे दीद, नैण नूर रुशनाईआ। हुक्मे अंदर ताईद, सच दिता समझाईआ। धरनी दे भाग वड नसीब, निसबत सके ना कोए कढाहीआ। नौ दिन फ़रीदा तूं याद कीता ठीक, ठाकर इक्को इक मनाईआ। जिस दी जगत विद्या करे ना कोए तस्दीक, तत्तां वाला सरीर शहादत ना कोए भुगताईआ। अक्खरां वाली पाई ना किसे लीक, गुणां विच गुण ना कोए वड्याईआ।

पुरख अकाल बणया तेरा मीत, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। धरनी रो के मारी चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं कीटां दी कीट, नीचां दी नीच नज़री आईआ। तेरा खेल प्रभू अनडीठ, अक्खीं वेख ना कोए समझाईआ। मैं फ़रीद नाल कीती प्रीत, प्रेमिका हो के सेव कमाईआ। मेरा सीना होया ठांडा सीत, जित्थे बैठा आसण लाईआ। मैं सुणी तेरी तमहीद, सिफ्तां विच सालाहीआ। मैं खुशी विच किहा आ मुरीद, आमद विच रुशनाईआ। मेरी आसा इक उम्मीद, सहिजे दयां सुणाईआ। जिस बिध तारया फ़ाके वाला फ़रीद, फ़िकरा इक समझाईआ। मेरे लेखे विच उडीक, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फ़रीद पढ़न लग्गा नमाज़, निवाज़श कह के सीस झुकाईआ। अंदरों आई इक आवाज़, तऱ्हा तऱ्हा समझाईआ। खुल्ह्या धुर दा राज़, परदा रिहा ना राईआ। बिन अक्खां खुल्ही जाग, नेत्र नैण रुशनाईआ। चुकया जगत हिसाब, बाकी दिती मिटाईआ। वेखी अगम्मी किताब, पुरख अकाल ल्या समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा रिहा उठाईआ। फ़रीद नमाज़ विच्चों सुणी आवाज हक, हकीकत वाली नज़री आईआ। अन्तर संसा रिहा ना शक, झगड़ा दिता चुकाईआ। हब्भ कुछ मन्नया सच, कूड़ा नाता दिता तुड़ाईआ। प्रेम प्रीती अंदर रच, रचना वेखे बेपरवाहीआ। थल्लयों धरनी पई हस्स, खुशीआं विच ढोले गाईआ। फ़रीदा मेरा गा जस, जिस उत्ते बह के प्रभ दा दर्शन पाईआ। तेरी अंदरों खुल्ही अक्ख, वज्जी नाम वधाईआ। कुझ मैनूं भेव दस्स, परदा दे चुकाईआ। मेरा दे हक, लहिणा झोली पाईआ। मैं नौ दिन भार चुक के गई थक्क, तूं पासा ना कोए बदलाईआ। मेरे अंदर लग्गा फट्ट, घाउ डूँग्घा नज़री आईआ। जिंनां चिर मिले ना पुरख समरथ, मेरी आशा ना कोए बुझाईआ। अग्गों फ़रीद हथ्थ मस्तक उपर रख, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। तन वजूद तों हो के वक्ख, वक्खरे घर बैठा फेरा पाईआ। शब्दी धार हो के चरण कँवल गया ढठ्ठ, निउँ निउँ लागे पाईआ। झगड़ा मुका के तत अठ्ठ, गृह मन्दिर वेखे चाँईं चाँईंआ। आपणी आसा इक रख, सच बेनन्ती दिती सुणाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब तेरी सरनाईआ। धरनी धरत दे पूरब हक, हाकम हो के झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। फ़रीद किहा मेरी अगम्मी अरज़, आरज़ू इक सुणाईआ। मेरी आशा पूरी कर ग़रज़, ग़रज़े कि दूजी लोड़ रहे ना राईआ। दीनां दुखियां दा वण्ड दर्द, दयावान तेरी सरनाईआ। तूं जवान सूरबीर मर्दाना मर्द, गुर अवतार पैगम्बर तेरी ओट रखाईआ। किरपा कर उपर धरत, धौल दे इक सरनाईआ। मेरा लहिणा चुका कर्ज़, मकरूज हो के लेखा देणा मुकाईआ। पतित उधारना तेरा फ़रज, पुनीत देणा कराईआ। माटी ख़ाकी ना वेख गर्द, गर्दश कूड़ी

देणी गवाईआ। लख चुरासी तेरे कोल फरद, बिन अक्खरां लेखे विच रखाईआ। तेरा खेल प्रभू असचरज, अचरज लीला दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा फ़रीद सुण, शब्द शब्दी हुक्म जणाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले थोड़े लवां चुण, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। कोटन कोटि लभ्भदे रिख मुन, अणगिणत बैठे ध्यान लगाईआ। तेरी पुकार लई सुण, बेनन्ती आपणे विच रखाईआ। साचे भेव नूं जाणे कवण, कवण गुण कह के शुकर मनाईआ। हुक्मे अंदर पाणी पवण, देवत सुर गण गंधरव विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। खेल करे अवण गवण, लख चुरासी भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं दस्सां अख़ीर, फ़रीद दयां जणाईआ। प्रभ दे हथ्थ तदबीर, तहिरीर विच ना कोए लिखाईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, झगड़ा लख चुरासी वेख वखाईआ। कलयुग अन्त करनी कर बेनज़ीर, जगत नेत्र ना कोए वड्याईआ। साची भूमिका दी होणी तामीर, मिले मातलोक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे वखाईआ। लेखा कहे मैं अगम्म लिखारी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोए ना पाईआ। मेरा मेला नाल जोत निरँकारी, जो निरगुण हो के सरगुण खेल खिलाईआ। फ़रीद जित्थे नौ दिन नौ रात गुज़ारी, गुज़ारे विच आपणा गुज़र कराईआ। उस दी आउणी कलयुग अन्तिम वारी, वारता अगली दयां समझाईआ। जेहड़ी बावन वेले दी कन्यां कुँवारी, बल दा भोग हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। ओस दी एथे पैज जाणी संवारी, जित्थे बह के इक्को ध्यान लगाईआ। लेखा चुकाउणा वड संसारी, सहिंसा अंदर रहे ना राईआ। भगत वछल बण गिरधारी, सन्त सुहेला फेरा पाईआ। गुरमुखां देवणहारा नाम खुमारी, गुरसिखां मंत्र इक्को इक समझाईआ। पूरब लहिणा कर्ज़ा देवे उतारी, लेखा लेखे विच्चों पूर कराईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, जोती जाता वेख वखाईआ। धरनी धरत धौल धवल पैज जाए संवारी, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग चढ़ाईआ। लेखा चुकावे आपणी वारी, वारता पिछली दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुहेला इक अकेला एकँकारा बेपरवाहीआ। फ़रीद किहा वाह मेरे खुदा, नूर नुराने तेरी बेपरवाहीआ। वाहिद तेरा कलमा ल्या गा, ऐन ग़ैन ग़ैन ऐन विच ना कोए पढ़ाईआ। तेरे नालों तेरा ना होए जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। प्यार मुहब्बत विच होवां फ़िदा, आप आपा तेरी भेंट चढ़ाईआ। तेरा घर गृह मन्दिर वेख सिध्धा, सिदक सबूरी लवां हंढाहीआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक परम पुरख आत्म परमात्म पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तेरा खेल नित नविता, जन भगतां करीं हित्ता, चेतन चित्ता दया कमाईआ। एकँकार की मस्तक धूढ़ी देवें टिक्का, वड्डा निक्का नज़र कोए

ना आईआ। आपणे नाम दा दे चिठ्ठा, जेहड़ा होवे शब्दी धार अनडिठ्ठा, अक्खरां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अन्त अख़ीरी निकले सिट्टा, सब दा लहिणा देणा होवे चिट्टा, चेटक आपणा देणा लगाईआ। धरनी धवल वेखणा हित्ता, हितकारी हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा एकँकारा इक्को देणा वखाईआ। पुरख अकाल कहे दस्सां, हक हकीक, हिकमत दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया तारीक, तरीका दयां समझाईआ। मेरे अन्तर हक तौफ़ीक, तोहफ़ा साचा दयां पुचाईआ। मित्र प्यारा बण रफ़ीक, रकाबत अंदरों दयां कढाहीआ। भगत सुहेला वेख अज़ीज़, रहमत विच समाईआ। सन्त साचे दे तमीज़, तमअ दयां चुकाईआ। गुरमुखां कर तस्दीक, गुरसिखां शहादत आप भुगताईआ। जिस धरनी ने रखी उडीक, उस दा लेखा दयां मुकाईआ। जिस कन्यां दी ओमीद, बल बावन नाल वड्याईआ। साची वेख प्रीत, प्रीतम हो के होवां सहाईआ। सृष्टी दृष्टी दी बदल के रीत, इष्टी हो के वेख वखाईआ। फ़रीदा जेहड़ा ढोला अन्तर तैनूं दस्सया गीत, वाहिद कलमा दिता जणाईआ। सो भगतां दस्सां ठीक, ठाकर हो के आप मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फ़रीद कहे तेरा धन्नवाद, बिन कदमां सीस निवाईआ। धरनी कहे धन्न भाग जे मेरा खेड़ा होवे आबाद, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा मैं जुग चौकड़ी रखां याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सच दवारे देवां दाद, वस्त धुर दी झोली पाईआ। दो जहानां बण के शाह नवाब, शहिनशाह हो के हुक्म सुणाईआ। पूरब दी सुण आवाज़ लहिणा अगला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। फ़रीद किहा मैं वेख्या आपणा आप नहीं फ़ायदा, दुःख सुख विच बदलाईआ। परवरदिगार तेरे नाल होया मुआइदा, शब्दी शब्द गंढु पवाईआ। कलयुग अन्तिम आपणी धार बदलया काइदा, कानून आपणा इक जणाईआ। लख चुरासी नालों हो अलाइदा, भगत सन्त गुरमुख गुरसिख लैणे उठाईआ। लख चुरासी अंदर वड़ के लईं जाइज़ा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ऐउँ जापदा ओस कन्यां नूं होणा फ़ायदा, जो बावन नाल बाहमी वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वरताईआ। धरनी कहे मैनूं लग्गा भाग, भागां भरी मिले वड्याईआ। मेरी खुल्ही जाग, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। भगतां बुझणी आग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। पूरब लभ्भणा राज़, परदा देणा उठाईआ। जित्थे फ़रीद पढ़ी नमाज़, नमो नमो सीस झुकाईआ। ओस दा साजण लैणा साज, साहिब स्वामी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साहिब स्वामी सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धरनी कहे मेरी सोहणी होणी धरत, मिले माण वड्याईआ। पुरख अकाल परवरदिगार आउणा

परत, पत परमेश्वर वेस वटाईआ। बावन दी पूरी होणी शर्त, फ़रीद दा कौल तोड़ निभाईआ। मेरी मिटणी हरस, तृखा देणी गवाईआ। भगतां उत्ते होणा तरस, रहमत रैहम आप वखाईआ। खेल करना वाली अर्श, फर्श बह के खुशी मनाईआ। लहिणा देणा पूरा करना कर्ज़, लेखा अवर रहे ना राईआ। मनसा विच्चों पूरी होवे ग़रज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे सोभा पाईआ। सच दवारा सोभावन्त, सोभनीक धरती नज़रीं आईआ। फ़रीद कहे मैं वेखी रुत्त बसन्त, पत्त डाली सोहणी महक महकाईआ। मालक मिल्या अर्श, फर्श वज्जी वधाईआ। मुहब्बत विच कीता तरस, रहमत विच पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। धरनी कहे मेरा भार होया हौला, हौली हौली रही जणाईआ। मिल्या मालक मौला, मिल के वज्जी वधाईआ। परदा रिहा ना ओहला, नकाब दिता चुकाईआ। पूरा होया कौला, इकरार दिता भुगताईआ। शब्दी सतिगुर बण विचोला, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सोहँ दस्स के ढोला, तूं मेरा मैं तेरा नाता ल्या जुड़ाईआ। कूड़ रिहा ना ओहला, रौणक आपणे नाल वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। पूरब लेखा कहे मैं मुक्कया अज्ज, आजिज़ हो के दयां जणाईआ। बिना काअब्यों होया हज्ज, हज़रत मिल्या बेपरवाहीआ। दर्शन कर के गया रज्ज, रज़ा विच चल के खुशी मनाईआ। जिस कारन आया विच जग, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए सद्द, होका हक दे के जगत शनवाईआ। निरगुण धार हो के आया भज्ज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बावन होया गद गद, बिन रंग रूप वेख खुशी मनाईआ। नमस्ते करे अगे वध, आप आपणा सीस झुकाईआ। रिषीआं दा पूरा कर के यज्ञ, जग जीवण दाते दिती वड्याईआ। भगत सुहेले लए लभ्भ, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। कन्यां दे कारज पूरे कर के हब्ब, हमसाजण हो के नज़री आईआ। फ़रीद दा प्यार याद आया झब्ब, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। धरनी धरत धौल उत्ते आया भज्ज, बिन भजन बन्दगी सोभा पाईआ। चरण कँवल नाल सहिजे दिता दब्ब, सोई सुरती आलस निंद्रा विच्चों लई उठाईआ। दर्शन कर अब्ब, अबचल दा मालक सोभा पाईआ। जिस दा गुरमुख बूटा रिहा फब, ब्रह्म प्यार विच्चों लहराईआ। बावन होया गद गद, खुशी खुशी विच्चों बदलाईआ। धरनी दी सोहणी लग्गी हद्द, जित्थे बैठा सोभा पाईआ। जोती धार हो के रिहा जग, जागरत जोत हो के करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले रिहा सद्द, शब्द अगम्मी हुक्म जणाईआ। आपणा लेखा लैण अगे वध, बिन कदमां कदम बदलाईआ। देवणहार वड्याई उपर जग, जग जीवण दाता इक अख्वाईआ। सच भण्डारे दा पूरन होया जग, जगह विच्चों जग्गा बजग्गा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

८६०
१६

कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जग्ग़ा कहे मैं जगदी वेखी जोत, धरनी ख़ुशी ग़मी विच्चों बदलाईआ। मेरा दवारा सुहाया सोहणा कोट, कुटम्ब भगतां नज़री आईआ। जगत सुत्ती नूं लग्गी चोट, चोटी चढ़ के ल्या उठाईआ। मेरे हिलण नहीं दिते होंठ, अंदरे अंदर दिता समझाईआ। मैं ओथे गई गई पहुंच, जित्थे सन्त सुहेले डेरा लाईआ। प्रभ दा दर्शन करदे रोज़, रोज़ा नमाज़ बांग दी शरअ गए गवाईआ। प्रेम दी मानण मौज, मजलस बह के ख़ुशी मनाईआ। मन दी गई सोच, समझ दिती मुकाईआ। इक्को दर्शन रहे लोच, लोचन अन्तर अक्ख खुल्ह़ाईआ। रसना होई ख़ामोश, पढ़न लिखण दा लेखा गई मुकाईआ। मध खुमारी विच हो के मदहोश, मध प्रभ दा नाम नज़री आईआ। इक्को तक्क के साची ओट, ओड़क ओसे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा रिहा चुकाईआ। धरनी कहे मेरी निमस्कार, नमो नमो सीस निवाईआ। फ़रीद कहे मैं करया दीदार, हाज़र हज़ूर सोभा पाईआ। बावन कहे मेरा लथ्था उधार, पतित पावन वेस वटाईआ। लहिणा देणा ओस कन्यां चुक्कया संसार, जिस दा संसारी भण्डारी लेखा ना कोए मुकाईआ। किरपा कीती पुरख अकाल, अकल कलधारी हो के वेख वखाईआ। भाग लगा के साची धरनी धरत धवल धर्मसाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। भगत सन्त गुरमुख गुरसिख लए बहाल, बहाली लख चुरासी विच्चों आप कराईआ। अगे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। आवण जावण तोड़ जंजाल, कूड़ा बन्धन दए कटाईआ। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। करनहार सदा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। दीनां बंधप हो के दीन दयाल, दीनन आपणी गोद उठाईआ। धरनी दा हिस्सा झोली दिता डाल, पत्त डाली आपणा आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। परदा ओहला रिहा चुक्क, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। कुँवार कन्यां दा पूरब लहिणा गया मुक्क, बावन ख़ुशी वखाईआ। गुरदर्शन सतिगुर विछोड़े दा रहे ना अगे दु:ख, बिन जगत नैण दिवस रैण नज़री आईआ। मन वासना मिटे भुक्ख, जगत तृष्ना ना कोए तपाईआ। मिले मेल अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती आप कराईआ। सदा सुहञ्जणी होवे रुत्त, मौला होके आप महकाईआ। निरगुण धार बदल के आया रुख़, माणस मनुक्ख समझ कोए ना पाईआ। जन भगत साचे सन्त गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर बणा के आपणे सुत, अपराध कोटन दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप शब्दी धार सच दुआर गया पुज्ज, जित्थे फ़रीद बह के नौ दिन रह के कटी भुक्ख, भुक्ख विच्चों फ़ाका, फ़ाके विच्चों खुल्ह़या ताका, ताके विच्चों मिल्या आका, आके नाल मिल के भुलया पिछला मापा, बणया धुर दा साथा, परम पुरख समराथा,

जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी जणाए आपणी गाथा, खाणी बाणी चलाए राथा, लहिणा देणा चुकाए हाथो हाथा, होए सहाई नाथ अनाथा घट भीतर लख चुरासी अंदर रखे वासा, निरगुण जोत करे प्रकाशा, बिन गुर अवतार पैगम्बर शब्द अगम्मी दस्से किसे ना भाषा, अक्खरां वाली सृष्टी दृष्टी अंदर करे पढ़ाईआ। भगत फुलवाड़ी दा सोहणा बाग़ीचा, माली रखक इक्को नज़री आईआ। बूटा दिसे ना ऊँचा नीचा, राउ रंकां इक्को रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म दा बणे साचा मीता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। सति सतिवादी दस्से साचा गीता, एकँकार इक्को एक करे पढ़ाईआ। त्रैगुण माया तपण ना देवे अंगीठा, अमृत मेघ देवे बरसाईआ। झगड़ा मुकाए हस्त कीटा, कूड़ कुटम्ब दए खपाईआ। सति धर्म चला के रीता, रीतीवान वेख वखाईआ। खेले खेल त्रैगुण अतीता, त्रैभवन अवण गवण खोज खुजाईआ। जन भगतां साचा कलमा दस्से हदीसा, हज़रत हो के दए समझाईआ। निरगुण नाम निधान दए अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरण कँवल उपर धवल सच मुहब्बत दस्से प्रीता, प्रीतम हो के पारब्रह्म ब्रह्म आपणे विच समाईआ।

✪ २४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत २ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द अगम्मी जट्ट, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सचखण्ड दुआर साचा हट्ट, दो जहानां वस्त अमोलक आप वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल देवे वथ, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर झोली आप भराईआ। धुर दी करनी करता हो के दस्से सच, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा हुक्म वरताईआ। भाग लगाए काया माटी पंज तत कच्च, अप तेज वाए पृथमी आकाश सोभा पाईआ। रंगण रंग चढ़ाए हड्ड मास नाड़ी रत्त, रतन अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा हो के गाए जस, वेद पुराण शास्त्र सिमरत हकीकी राग अल्ल़ाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना सच सरोवर देवे रस, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा आप समझाईआ। बिन अक्खां निज नेत्र नैण खोल्ह अक्ख, प्रतख रूप नज़री आए गोसाँईआ। हकीकत विच्चों देवे हक, लाशरीक परवरदिगार जलवा नूर खुदाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्टी दृष्टी अंदर जिस नूं रही लभ्भ, मन मति बुध भज्जे वाहो दाहीआ। तिस दा मेला निरगुण धार सरगुण नाल सबब, करे खेल शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा जट्ट इक अख्वाईआ। धुर दा जट्ट पुरख अकाल, अकल कलधारी खेल खिलाइंदा। जो वसे सचखण्ड सच्ची धर्मसाल,

मुकामे हक डेरा लाइंदा। जिस नूं पोह ना सके काल, जन्म मरन रूप ना कोए बदलाइंदा। शब्द गुरू बण दलाल, दो जहानां खेल खिलाइंदा। सन्त सुहेले भगत भगवन्त लए भाल, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाइंदा। साचा मंत्र अन्तर दस्स सुखाल, निरंतर निरवैर निराकार आपणा परदा लाहइंदा। माया ममता तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। वेखणहार मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। साचा जट्ट पुरख अगम्म, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित कदे ना पए जम्म, तत्व तत ना कोए रखाईआ। हरख़ सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हल्काईआ। निहकर्मी हो के जाणे आपणा कम्म, करनी दा करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर देवे बेड़ा बन्न्, खेवट खेटा हो के भज्जे थाउँ थाँईंआ। कर प्रकाश सूरज चन्न, नूरी जलवा इक वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर कराए धन्न धन्न, शब्द अनादी नाद कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे जननी जन, परदा ओहला दए चुकाईआ। शब्दी जट्ट श्री भगवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जो लख चुरासी आत्म परमात्म धुर दा कन्त, कन्तूहल नज़री आईआ। काया चोली चाढ़नहारा रंग बसन्त, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़नहारा हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निरअक्खर निरवैर हो के दए समझाईआ। दूसर घर करनी पए ना हिम्मत, हिम्मत अंदरे अंदर वधाईआ। लभ्भणा पए ना उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सिम्मत, साचे घर गृह मन्दिर नज़री आईआ। मन वासना विकार विच करे ना कोए इल्लत, दहि दिशा ना कोए हल्काईआ। मेहरवान हो के मुहब्बत विच देवे खिल्लत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत वासना होण ना देवे ज़िल्लत, ख्वारी अंदरों बाहर कढाहीआ। कूड़ी क्रिया मेटे जगत वासना निंदया निन्दक, दुराचार विभचार कर प्यार करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। साचा जट्ट श्री भगवान, जटा जूट नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव करन परवान, परवाने दे के सब नूं रिहा समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां देवे दान, शब्दी ढोला कलमा कायनात इक सुणाईआ। वेखणहारा मार झात, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे सोभा पाईआ। नाम पदार्थ वस्त अमोलक अगम्मी देवे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। वेखणहारा खेल तमाश, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। धन्ने दी पुछणहारा बात, पाहन पाथर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक समझाईआ। साचा जट्ट शब्द गुरदेव, स्वामी इक्को नज़री आईआ। जिस दी धन्ना करदा सेव, सेवक हो के सेव

कमाईआ। उह वसे धाम निहकेव, निहचल आपणा डेरा लाईआ। बुद्धी पावे कोई ना भेव, अनुभव आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। साचा जट्ट साहिब सुल्तान, परम पुरख इक अखवाइंदा। आदि जुगादी मेहरवान, जुग जुग वेख वखाइंदा। धन्ना जट्ट कर परवान, ठाकर आपणा परदा लाहइंदा। पूरब जन्म दा दे के दान, ख़ाली झोली आप भराइंदा। मुहब्बत प्यार विच बण किरसाण, साची किरस आप कमाइंदा। हल खूहा वाहे बण बलवान, क्यारे मोड़ तोड़ जोड़ निभाइंदा। अन्तर अन्तर दे के ब्रह्म ज्ञान, साची विद्या इक समझाइंदा। मन वासना रहे ना कोए शैतान, शरअ कूड़ी मेट मिटाइंदा। जिधर वेखे नज़री आए नौजवान, नौबत हक हक सुणाइंदा। लेखे ला के पीण खाण, अमृत रस जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला आप चुकाइंदा। साचा जट्ट साहिब समरथ, पुरख अकाला इक अख्वाईआ। जो भगतां देवे अगम्मी वथ, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। काया मन्दिर अंदर साची मंज़ल चढ़ के देवे रख, जित्थे सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जगत वेखण वाली होवे कोई ना अक्ख, बुद्धी समझ कोए ना आईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश, नूरो नूर नूर डगमगाईआ। जित्थे भगत भगवान दी पूरी होवे ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। आत्म परमात्म होवे साथ, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह वेख वखाईआ। साचा जट्ट बणया इक धन्ना, धन धनाढ नज़र कोए ना आईआ। जिस ने धुर दा हुक्म मन्ना, मन वासना दिती तजाईआ। जगत नेत्र हीण हो के अन्न्हा, निज नैण अक्ख खुल्ह्लाईआ। अबिनाशी करता निरगुण सरगुण हो के आया भन्ना, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पन्ध मुकाईआ। आ के वेख्या जगत किसान दा बन्ना, खेत क्यारे संसारी वण्ड वण्डाईआ। कोल बह के खूह दे चन्ना, चन्न आपणा कीता रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी तनां, तत्व तत दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साचा जट्ट करे साची किरस, मिहनत सतिगुर झोली पाईआ। शब्द गुरू मेटे हिरस, हवस अगली दए मिटाईआ। पुरख अकाल करे तरस, मेहर नज़र नाल तकाईआ। घर स्वामी आ के देवे दरस, पाथर पाहन दी लोड़ रही ना राईआ। जन्म जन्म दी मुकी भटक, अटक अगे ना कोए वखाईआ। कूड़ कुड़यार रिहा ना अंदर कटक, नाता झूठा दिता मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म द्वैत दवेश रिहा ना फ़र्क, रंग इक्को दिता चढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी कर के तरक, तुरत आपणे नाल मिलाईआ। भुक्खे दा भुक्ख्यां वाला फेर रहिण ना दिता वरत, नाम भण्डार एकँकार इक्को ल्या छकाईआ। अगे ला के गया शर्त, शरअ दी शरीअत दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साचा खेल आप वरताईआ। साचा जट्ट ज़बरदस्त, सतिगुर शब्दी नज़री आईआ। जिस दा खेल कीट हसत, हस्ती सब दी दए बदलाईआ। जो विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा रसद, भण्डारा धुर दा इक वरताईआ। भगत भगवान नाम खुमारी विच रखे मस्त, मस्त दीवाने लए बणाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अंदर हसद, विकार हँकार देवे कढाहीआ। मन ममता मेटे आतश, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। साचा हुक्म देवे सख़्त, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। कलयुग वेला आवे वक़्त, अन्त अख़ीर बेनज़ीर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओहला परदा रिहा चुकाईआ। धन्ना जट्ट मूर्ख ना जाणो गवार, मनसा मन ही मांहि समाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर मंगे दीदार, बिन लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउँदा रहे साची वार, वारता इक्को इक अल्हाईआ। घर मन्दिर सोहे ठाकर ठाकर दवार, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। बन्द किवाड़ी खुल्ले किवाड़, बजर कपाटी पार नज़री आईआ। अमृत बख़्शे ठंडा ठार, धुर दा झिरना इक झिराईआ। शब्द अगम्मी वज्जे नाद, अनहद नादी नाद शनवाईआ। परम पुरख दी आवे याद, दूजा गुण ना कोए वड्याईआ। सुरती शब्द होवे बिसमाद, बिस्मिल आपणा रंग कराईआ। साचा मिले इक अहिबाब, मुहब्बत विच वड्याईआ। आसा मनसा पूरी करे मुराद, मुद्दतां दे विछड़यां दए मिलाईआ। घर स्वामी आ के सुणे फ़रयाद, फ़ैसला हक दए कराईआ। अन्तर अंदर प्रेम प्यार दी पुरख अकाल सुणी इक आवाज़, भज्जा वाहो दाहीआ। नाता तोड़ जगत समाज, जगत समग्री परे हटाईआ। भगत भगवान दा साचा दस्स रिवाज, रवायत कर के कफायत कर के अनायत विच आशा पूर कराईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत दिता बणाईआ। नूरी जोत जगा चिराग़, काया मन्दिर करे रुशनाईआ। नाम पदार्थ दे के खाज, भोग बाहरों दिता लगाईआ। सेवक सेवादार बण के चाक, मज्झी छेड़ हल वाह खुशी रखाईआ। चार युग विच इक वार धन्ने नाल मिलण दा होया इतफ़ाक, दूजा धन्ना नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी लहिणा देणा सब दा करे बेबाक, पुरख अकाल दीन दयाल दयावन्त मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे जट्ट लए प्रगटाईआ। साचा जट्ट एका सिध्धा, सिदक सबूरी विच समाईआ। जिस नूं पोह ना सके नौ निधा, अठारां सिधां नेड़ कोए ना आईआ। जिस दा शब्द गुरू तीर अणयाले नाल विध्धा, काया विद्याले अंदर करी पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साची बिधा, बिधना दा लेखा दिता चुकाईआ। भाग लगा के जीउ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। धन्ना जट्ट कहे मैं होया धनाढ, मिली नाम सच्ची वड्याईआ। जिस ने खूहा वाहया आज, क्यारे मोड़ खुशी वखाईआ। मैं ओस दा होया

दास, आपा आप ओसे दी झोली पाईआ। मेरा लेखे लग्गे स्वास, साह साह इक्को नाम ध्याईआ। निरगुण जोत होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। इक्को दस्से जाप, साचा ढोला दए जणाईआ। रूह बुत्त दोवें करे पाक, पारब्रह्म बेपरवाह आपणा रंग चढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां बणे सच्चा बाप, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। नाता जोड़े धुर दा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। मेहरवान हो के सिर ते रखे हाथ, समरथ आपणी दया कमाईआ। जिस कारन धन्ने दे आया पास, आशा मनसा पूर कराईआ। जन भगतो गुरमुखो जे एहो जेही सब नूं आ जाए जाच, फिर बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द घर घर दा लेखा ल्या वाच, लहिणा देणा जाणे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता करनी दा मालक कुदरत दा कादर इक्को नज़री आईआ। धन्ना बणन दा जिस नूं चाअ, चाउ घनेरा अंदर लैणा प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द आपे बणे मलाह, बेड़ा शौह दरयाए पार कराईआ। कोट जन्म दे बख्श देवे गुनाह, पतित पापी लए तराईआ। इक्को नाम संदेसा दए सुणा, धुर दा ढोला राग अलाईआ। घर मन्दिर दए सुहा, काया काअबे वज्जे वधाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्या, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ।
८६६
१९
बिन दीवा बाती करे रुशना, जोती जोत डगमगाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, साहिब स्वामी हो के वेख वखाईआ। दामनगीर ८६६
१९
हो के आपणा दामन दए फड़ा, सुरती शब्दी पल्लू गंढु फड़ाईआ। बिना सद्दयां घर स्वामी ठाकर जावे आ, ठोकर नाल लए उठाईआ। धन्ना जट्ट शहादत विच बणे गवाह, जो गहर गम्भीर मिल के खुशी मनाईआ। मन वासना अंदरों दयो गवा, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। माया ममता दा लग्गण दयो ना दाअ, हँकार विकार ना कोए वड्याईआ। इक्को चरण कँवल पुरख अबिनाशी करो धिआं, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। जिस वेले चाहो निज नेत्र दर्शन लवो पा, अक्ख प्रतख साख्यात सति सरूप नज़री आईआ। आपणा हक सच दवारे लओ जणा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। आत्म हो के परमात्म नालों कदे ना होवे जुदा, ब्रह्म हो के पारब्रह्म विच समाईआ। एहो धन्ने दा बिन धन तों सच्चा राह, मार्ग चल के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर अंदर परदा दए उठाईआ। धन्ने जट्ट ने पाया ठाकर, स्वामी इक्को नज़री आईआ। भाग लग्गा काया गागर, गहर गम्भीर दिती माण वड्याईआ। निर्मल कर्म होया उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। इक्को वणज कीता बण के हक सौदागर, दूजी वस्त हथ्थ ना कोए छुहाईआ। याद करदा रिहा हो इकागर, मन वासना ना कदे हल्काईआ। पुरख अकाल दीन दयाल घर आ के दिता आदर, आदत ठाकरां वाली दिती बदलाईआ। झगड़ा रिहा ना मकतूल कातिल, बातन आपणा दरस कराईआ।

लेखा जाण धुर रसातल, रसीआ हो के रस चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे सतिगुर बातन, जन भगत दवारे आ के खुशी मनाईआ।

✪ पहली सावण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

बल कहे मेरे धुर दे बावन, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले बणयों ज़ामन, निरगुण हो के मेल मिलाईआ। शब्दी डोर बंधाया दामन, सति सतिवादी खेल खिलाईआ। आसा मनसा पूरी कर के कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा गवाईआ। धुर दरगाही बण के पतित पावन, पुनीत गुरमुख दिते कराईआ। सच सरोवर तेरे नहावण दुरमति मैल रहे ना राईआ। धन्न वड्याई परत के आया सावण, शहिनशाह वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बर ढोले गावण, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक सरनाईआ। बल कहे मेरे बावन भगवन, भगत हो के सीस निवाईआ। लेखा चुक्कया अवण गवण, गहर गम्भीर मिली सरनाईआ। तेरा लेख किसे ना पढ़या वाहिद दुष्ट दमन, दमां वाला सार कोए ना पाईआ। लख चुरासी तेरा कोई ना जाणे चमन, चमत्कार तेरा जलवा नूर खुदाईआ। बिन गोबिन्द शब्द धार दो जहानां करे कोई ना अमन, आमद विच नज़र कोए ना आईआ। हरि का भेव जाणे कवण, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वखाईआ। बल कहे मेरे बावन, परम पुरख परमात्म तेरी वड वड्याईआ। सच सरूप जिस वेखी आत्म, अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। परदा ओहला चुक्कया बातन, नूर नूर नूर रुशनाईआ। सच स्वामी बण साथण, सगला संग आप प्रगटाईआ। जिस दी आदि जुगादि नित नवित दो जहान, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द गाउँदे गाथण, सोहले ढोले शब्दी नाद अनादी धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। बल कहे मेरी नमस्ते, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जो सहिज सुभाओ बचन किहा हस्सदे हस्सदे, हस्ती विच्चों हस्ती आप प्रगटाईआ। जिस ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखे वसदे, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे नस्सदे, जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाहीआ। निरगुण निरवैर निरँकार इशारे दए अगम्मी अक्ख दे, आख़र मंज़ल चढ़ के ख़ुशी मनाईआ। जित्थे बिन अक्खरां तों ढोले परम पुरख दे जस दे, अलिफ़ ये अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। खेल वेखे परम पुरख समरथ दे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जैकारे वेखे अलख अलख दे, नाअरा हक हक दृढ़ाईआ। भण्डारे वेखे धुर दे हट्ट दे, गुर अवतार

पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव बैठे झोलीआं डाहीआ। भगत सुहेले सति सतिवाद वेखे रटदे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बल कहे बावन मैं वेख्या अजब नज़ारा, बेनज़ीर दिता जणाईआ। ढाईआं करमां विच मेरा होया किनारा, किशती नईआ बाहर ना कोए लँघाईआ। सम्बल देस होया अवतारा, अवतर आपणा हुक्म बणाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त आप अख्वाईआ। सो खेले खेल खेलणहारा, पतिपरमेश्वर वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी पावे सारा, निरगुण हो के वेस वटाईआ। कागत कलम ना लिखणहारा, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। बल कहे तेरा खेल अवल्ला, आदि पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेस वटाए इक इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म फड़ाए पल्ला, परम पुरख तेरी बेपरवाहीआ। तूं वसें जलां थलां, डूँघे सागर गहर गम्भीर आपणा आसण लाईआ। तेरा महल अटल उच्च मनार अटला, साचे दर वज्जदी रहे वधाईआ। दीपक जोत इक्को बला, नूरो नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ। बावन कहे सुण बल बाली बुध, सचखण्ड दुआर तैनूं दयां जणाईआ। जिस दी चार जुग किसे ना पाई सुध, गुर अवतार पैगम्बर निउँ निउँ सीस निवाईआ। जो देवणहारा सब कुछ, परदा ओहला दए चुकाईआ। जिस दा भण्डार आदि जुगादि कदे ना जाए मुक्क, अतोट अतुट आप वरताईआ। जिस दा रूप नज़र ना आवे मानस मनुक्ख, तत्तां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोई ना व्यापे दुःख सुख, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जिस दा शब्द अगम्मी इक्को जिस विच्चों लख चुरासी लई प्रगटाईआ। हुक्में अंदर फिरे चारे कुण्ट, दहि दिशा वेखे थाउँ थाँईंआ। प्रभ चरण दवारा दस्से धाम बैकुण्ठ, दर दवारा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी धुर दा परदा आप उठाईआ। बल कहे सुण मेरे भगत, भगत भगत ताईं समझाईआ। जिस खेल रचाया जगत, बावन हो के वेस वटाईआ। जिस दा कारन इक्को फ़कत, फ़िकरा समझे कोए ना राईआ। चार वेद अठारां पुराण लिख ना सके लिख्त, वेद व्यासे चली ना कोए चतुराईआ। मेरा जाण ना सक्या इष्ट, ओहला परदा कोए ना लाहीआ। रामा मिल के नाल वशिष्ट, विषयां वाला गुरू गया मनाईआ। जिस दी नाम मिलदी रही किशत, दीन दुनी वज्जदी रही वधाईआ। चार युग पूरा होया किसे ना सिदक, भरोसे विच ना कोए लोकाईआ। गुस्सा आउँदा रिहा जे कोई दुष्ट वेखे निन्दक, दुराचारां दहिलीज़ दुरकाईआ। इक्को पुरख अकाल जिस विच आदि जुगादी साची हिम्मत, हौसला आपणे नाल रखाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म सब दी सांझी रखे सिम्मत, दिशा वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

जन्म कर्म दा पापी होवे निन्दक, निउँ के लागे पाईआ। दूजी वार करावे कदे ना मिन्नत, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। मन दी रहिण ना देवे इल्लत, कूड़ी क्रिया दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बल कहे बावन कुछ दस्स दे भेत, चौथे युग मंग मंगाईआ। जिस कारन नज़री आवें नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। पार अन्धेरा करें हेत, प्रेमी हो के प्रेम वखाईआ। निहकर्मी हो के लिखें लेख, बिन कलम शाही देवें माण वड्याईआ। जन भगतां लै के जावें साचे देस, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। मालक बण के नर नरेश, नर नरायण नज़री आईआ। तेरा मुच्छ दाढ़ी ना दिसे कोए केस, मूंड मुंडाया तत ना कोए वखाईआ। तेरा शब्द गाउँदा इक दस्मेश, दहि दिशा विच समाईआ। जिस दे अगे चले कोए ना पेश, पेशवा सारे सीस निवाईआ। जो सदा रहे हमेश, हमसाजण हो के वेख वखाईआ। कोई ना जाणे रंग रूप रेख, ऋषी मुनी सारे देण दुहाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के इक इकल्ला एकँकारा दस्से भेत, नर निरँकारा हो के परदा आप उठाईआ। सच दवारे आपे लए वेख, वेखणहार तेरी बेपरवाहीआ। मैं भगती अंदर होया तेरे पेश, शक्ती अंदर शक्त ना कोए वखाईआ। मैनूं अगला दस्सदे लेख, लेखा लेखे विच्चों कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। बावन किहा बल वेख विचार, बुद्धी रहे ना कोए चतुराईआ। नव नौ दिता वार, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धरनी उत्ते पैर पसार, आपणा आप दिता मिटाईआ। तेरी समग्री किसे कम्म ना आई कार, करता भोग ना मुख लगाईआ। रिषी रोंदे गए जगत हज़ार, अगणत देण दुहाईआ। मेरी किसे ना पाई सार, परदा सक्या ना कोए चुकाईआ। हुक्में अंदर सारे होए बेअख़्त्यार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। खेल करया परवरदिगार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। बल नेत्र नीर वहा के रोया धाहां मार, इक्को इक इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे बणाईआ। बल कहे मेरे भगवन्त, तेरा अन्त कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादी कन्त, वेस अनेका रूप धराईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, परदा ओहला दएं चुकाईआ। दर भिखारी होया मंगत, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बावन किहा सुण बल नाल प्रेम, शब्दी धार जणाईआ। नेत्र पुट्ट के वेख तैनूं नज़री आवे विच्चों हेम, कुण्ट आपणे विच छुपाईआ। जिस दा लहिणा उस दा देण, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शब्दी धार गोबिन्द जिस नूं कहिण, दो जहान जस गाईआ। उस दा खेल वखाया बिन नैण, बिन अक्खां अक्ख बदलाईआ। बिन भगतां साक सैण, सज्जण इक हो जाईआ। जिस दा लेखा बाल्मीक लिखणा विच रमायण, राम हो के रमता रमता मेरे विच समाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। बल कहे मैं मूर्ख मूढ़, सार तेरी ना आईआ। कर किरपा दे चरण धूढ़, टिक्का मस्तक लाईआ। नजरीं आएं हाज़र हज़ूर, निरगुण जोत करें रुशनाईआ। मेरा मुआफ़ कर कुसूर, कसम खा के दयां जणाईआ। मेरी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, घर मेरे भोग लगाईआ। बावन किहा एह पैंडा अजे दूर, कलयुग अन्तिम दयां वखाईआ। तेरे दर आवां ज़रूर, निरगुण हो के वेस वटाईआ। मन ममता पाए फ़तूर, फ़तवा लग्गे सर्ब लोकाईआ। गढ़ हँकारी होवे ग़रूर, गुरबत विच लोकाईआ। माटी तन तपे तन्दूर, सांतक सति ना कोए कराईआ। निहकलंक हो के होवां मशहूर, मश्वरा भगतां नाल बणाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, दरगाह वेखां चाँईं चाँईंआ। सच भण्डार कर भरपूर, भरम दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। बल किहा प्रभ खा लै इक दाणा, दयावान दया कमाईआ। मेरा तेरे उत्ते माणा, ममता मोह ना कोए रखाईआ। तूं चतुर्भुज श्री भगवाना, भाग सब दा दएं बणाईआ। निरगुण तेरा होया आणा, सरगुण वेस वटाईआ। बख्शीं चरण ध्याना, इक्को ओट तकाईआ। होया बाल अंञाणा, ढह प्या सरनाईआ। बावन किहा उठ वेख कर ध्याना, तैनूं दयां वखाईआ। तेरी नगरी विच बाल अंञाणा, चार भैणां इक्को भाईआ। जिस दे गृह दा मन्ज़ूर होया खाणा, चारे खाणी विच्चों बाहर कढाहीआ। ओसे दर मन्ज़ूर होणा पकवाना, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण हो के खेलां खेल दो जहानां, दोहरा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले देवां इक ज्ञाना, एका एक कर पढ़ाईआ। मेल मिला के सच दुआर श्री भगवाना, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। बावन किहा बल उठ के मार दे लीक, साढे तिन्न हथ्थ लंमी नज़री आईआ। मेरी चरण नाल करा तस्दीक, शब्दी हुक्म नाल समझाईआ। मेरी ओस वेले रखणी उडीक, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। नाल मिलाउणा बटवारा बाल्मीक, जिस ने रामा देणा प्रगटाईआ। रविदास चमारा जिस ने चौखुर लैणे घसीट, खलड़ी खल्ल लुहाईआ। जगत ज़ाती विच्चों होणा नीच, ऊँचो ऊँच मिले सरनाईआ। जिस दा पुरख अकाल होणा मीत, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। जिस ने पाहन गंढुदयां गाउणा गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। साची होणी हक प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा मनाईआ। निरगुण धार बिन अक्खरां तों शब्द देणी रसीद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। बावन किहा बल खोल्ह के वेख अक्ख, आख़र दयां जणाईआ। निरगुण धार गोबिन्द प्रतख, सरगुण पंज तत हंढाहीआ। पुरख अकाल दा करे जस, डंका फ़तिह नाम वजाईआ। हुक्म मंने हस्स हस्स, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। सब किछ परम पुरख दी झोली घत्त, वत आपणा आप

बदलाईआ। लेखे ला के आपणी बूँद रत्त, भेंटा प्रभ दी दए कराईआ। शब्द निराले तीर मार के फट्ट, फट्टड़ करे सर्ब लोकाईआ। भगत सुहेले वेखे नठ नठ, पाँधी हो के पन्ध चुकाईआ। जानणहारा घट घट, लख चुरासी खोज खुजाईआ। इक्को शब्द संदेसा देवे सच, साचा हुक्म आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप समझाईआ। बावन कहे बल वेख बेनज़ीर, बिन नज़र नज़र उठाईआ। जो बदले सर्ब तकदीर, तदबीर दए समझाईआ। जिस नूं कटे ना कोए शमशीर, शमां सके ना कोए बुझाईआ। जिस दी नज़र ना आए तस्वीर, तसबी माला ना गल लटकाईआ। चोटी चढ़ अख़ीर, घर घर डेरा लाईआ। जिस नूं सजदे करन पैगम्बर पीर, गुर अवतार सीस झुकाईआ। जिस ने शरअ पाउणा ज़ंजीर, शरीअत विच फसाईआ। जिस ने झगड़ा वखाउणा ग़रीब अमीर, अमरा पद ना किसे जणाईआ। कलयुग काया बदलणी ज़मीर, ख़मीर अंदर देणा टिकाईआ। हुक्म दे के शाह हकीर, संसा रोग देणा गवाईआ। संदेसा दे के इक कबीर, काया काअबे विच्चों करे रुशनाईआ। मेला मिले गहर गम्भीर, गवर इक सरनाईआ। जो आदि तों रिहा कदीम, कदमां ते कायम मुकाम इक्को दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ।
बावन कहे बल होर कर विचार, धुर दी धार जणाईआ। जिस वेले बीते जुग चार, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कल कल्की लए अवतार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस कन्यां दा परोसा वेख्या थाल, बल नगरी विच्चों सोभा पाईआ। ओस दा नाता जोड़ के गोबिन्द नाल, शब्दी शब्द मेल मिलाईआ। अन्तिम लेखा जाण माज़ी हाल, ओहला दए गवाईआ। सच स्वामी कर के भाल, मेला मेले सहिज सुभाईआ। अन्तरजामी वसे नाल, निहकामी कर्म कमाईआ। बाल्मीक दए अहिवाल, रविदास शहादत इक भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। बावन किहा बल वेख इक इशारा, बिन अक्खां दयां वखाईआ। जिस वेले निरगुण निरवैर होवे उज्यारा, लोकमात नूर रुशनाईआ। सच दुआर होवे सच विवहारा, विवहारी आपणी कार कमाईआ। जन भगतां भरे भण्डारा, भुक्ख्यां भुक्ख मिटाईआ। उठ वेख लेख अपारा, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। आलम इलम तों बाहरा, ज़ेर ज़बर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आप चुकाईआ। बल किहा बावन खोल्ह दे परदा, ओहले विच्चों आपणा आप जणाईआ। मैं मंज़ल जावां चढ़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। इक्को नाम जावां पढ़दा, जिस नूं पढ़यां दूजे दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा दर्शन जावां करदा, कदम कदम ते सीस निवाईआ। दर दवारे बणदा जावां बरदा, बन्दगी विच तेरी सेव कमाईआ। तेरा रूप जाण के नरायण नर दा, नर हरि तेरी ओट तकाईआ। जिस कारन तूं भगतां मात

घलदा, घल के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। अगे झगड़ा छड्ड दे वल छल दा, अछल अछल्ल तेरे अगे मंग मंगाईआ। जन भगत तेरे प्यार अंदर पलदा, इक्को समझे परम पुरख जणेंदी माईआ। रस लवे अमृत तेरे जल दा, दूजा नीर ना कोए चुआईआ। औखा वेला जिसदा कलयुग कल दा, कलमे वालयां इकल्ला परम पुरख देणा भुलाईआ। झगड़ा पैणा सूर गऊ खल्ल दा, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। लेखा होणा काम क्रोध लोभ मोह हँकारी दल दा, दलिद्री होणी जगत लोकाईआ। प्रभ दे भाणे अंदर कोए ना चलदा, चलित्तरां विच जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बावन किहा मैं दस्सां दूर दुराडा, अगे तों अग्गा दयां जणाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आया डाहढा, निरगुण हो के फेरा पाईआ। शब्द अगम्मी जणाए रागा, धुर दा हुक्म मनाईआ। जन भगत खोल्हे जागा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, दग़िआ तों लए बचाईआ। हरि जू मेले कन्त सुहागा, जगत रंडेपा दए कटाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ कागा, सोहँ जाप जपाईआ। बल जिस कन्यां रखीआं मेरीआं तांघां, तमअ विच शमां दयां जगाईआ। जित्थे झुकणे सूरज चांदा, गुरमुख चन्द करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत बदल के स्वांगा, स्वांगी हो के वेख वखाईआ। बल कहे प्रभ बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। दोए जोड़ के सीस निवा, बेनन्ती दिती जणाईआ। हउँ बालक तूं पिता माँ, तेरी ओट तकाईआ। इक्को लवां तेरा नाँ, दूजा गीत ना कोए जणाईआ। तूं साहिब स्वामी पकड़ें बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। तेरे चरण कँवल बलि बलि जां, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बावन किहा बल आह लै मेरी चिठ्ठी, ढाईआं लैणां विच लिखाईआ। जिस दी धार अगम्मी चिट्टी, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। जिस दे अगे लिखी इक्की, एकँकार दिती वड्याईआ। जिस दा भेव किसे ना दिस्सी, दहि दिशा ना कोए जणाईआ। उन्हां दी धार होवे मिठ्ठी, अनडिठ्ठी कार कमाईआ। सृष्टी जाणी जित्ती, हिती बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक प्रगटाईआ। चिठ्ठी बल ने लई वेख, एकँकार दिती पढ़ाईआ। जिस दा पहला सोहणा लेख, निहकलंक नज़री आईआ। जो वसे भगतां देस, सच दवारे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे होवण पेश, चार युग दा लेखा वेख वखाईआ। दो जहानां बण नरेश, इक्को हुक्म दए सुणाईआ। अंदर वड़ के खोल्हे भेत, परदा आप चुकाईआ। जिस दे हुक्में अंदर अर्जन सिर विच पैणी रेत, तत्ती अग्नी अग्ग जलाईआ। बाले वारने दस दस्मेश, दहि दिशा रूप दरसाईआ। पुरख अकाल दे हो के पेश, माछूवाड़े सीस झुकाईआ। अन्त हो के एक दा एक, एकँकार वेख वखाईआ। बल जिस कन्यां ने तेरी

८७३
१६

नगरी खाणा कीता भेंट, भट्ट बण के ओसे दा जस गाईआ। जन भगतां घर घर जा के सब दा पवित्र करे पेट, पटने वाला नाम मिलाईआ। जन्म कर्म दा बण के खेवट खेट, बेड़ा दो जहानां पार कराईआ। चिठ्ठी मेरी लै लपेट, चार युग ना कोए खुल्हाईआ। फेर तैनूं सचखण्ड दा बणावां सेठ, सच भण्डारा झोली पाईआ। बल चरणां उत्ते कर आदेस, सीस दिता झुकाईआ। बावन किहा मेरा तेरा हेत, अन्त वज्जे वधाईआ। घर आ के लवां पेख, पेखत पेखत आपणी खुशी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। बल चिठ्ठी लग्गा लपेटण, तीजा हिस्सा दिता उलटाईआ। की अगे लग्गा वेखण, बाल्मीक बैठा रूप बदलाईआ। रविदास कराया चेतन, चिन्ता रही ना राईआ। अगला खुल्ह्या भेतन, परदा इक उठाईआ। वेख्या नर नरेशण, नर निरँकारा नज़री आईआ। जो वस्या सचखण्ड दवारे साचे देसण, तख्त निवासी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक प्रगटाईआ। चिठ्ठी दा चौथा हिस्सा मरोड़, बल आपणी सेव कमाईआ। नज़री आया लेखा होर, होर दी होर होई पढ़ाईआ। कलयुग तक्कया अन्ध घोर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मन वासना होई चोर, घर घर बैठी मुख छुपाईआ। साचा नाम ना किसे कोल, ख़ाली दिसे लोकाईआ। कूड़ा डंका वज्जे ढोल, ढोलक छैणे सर्ब खड़काईआ। आत्म परमात्म जाए कोई ना मौल, निरगुण निरगुण विच ना कोए समाईआ। बावन किहा बल तेरे नाल मेरा कौल, कलयुग अन्त दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले आवां उपर धौल, तेरी धरनी भाग लगाईआ। सच दवारा सच भण्डारा बण वरतारा देवां खोल्ह, तेई मग्घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। बल चिठ्ठी दा पासा दिता पलट, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सारी सृष्टी दिसी ग़लत, बिन भगतां सच विच ना कोए समाईआ। बल दी थोड़ी खुल्ही पलक, पलकां तों परे पतित पुनीत नज़री आईआ। जिस दी अगम्मी झलक, झल्लयां दए वड्याईआ। जो राखा हलत पलत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सद वसे उपर फ़लक, ख़लक वेखे नूर खुदाईआ। जिस दी झल्ले कोए ना झलक, नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा आप चुकाईआ। बल ने चिठ्ठी दी कीती तहि, आप आपणी सेव कमाईआ। दुनिया हुन्दी वेखी लय, लैणां विच वेखी सफ़ाईआ। चार युग दी करनी हुंदी वेखी खै, बेख़बरां ख़बर ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को साचा रहे, रहबर सारे मुख छुपाईआ। जो भगतां अंदर बहे, भगवन हो के नज़री आईआ। सच भण्डारा नाम दए, मन दैंत दए खपाईआ। झगड़ा रहे ना कोई गृह, गृह भीतर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। चिठ्ठी कहे मैं होई इक्ठी, आपणा

आप रूप बदलाईआ। प्रभ चरणां उत्ते ढठ्ठी, निउँ के देवां दुहाईआ। मैं विकणा किसे नहीं हट्टी, गुर अवतार पैगम्बरां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मैं जगणा नहीं बण के मोमबती, कमलापती तेरी ओट तकाईआ। मैं कोई नाम मंगणा नहीं इक रती, रतन अमोलक तेरा नूर नज़री आईआ। मैं किसे दी भरनी नहीं चट्टी, हिस्सा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चार युग नहीं फिरना नठ्ठी, भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी बिना गोबिन्द पढ़े कोई ना पट्टी, अक्खर अक्खर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा चिठ्ठी तेरे उत्ते मेरा कोई नहीं दसखत, तेरी हद्द ना कोए बणाईआ। जिस वेले परत के आवां वत, वतन मातलोक प्रगटाईआ। तेरे अंदरों प्रगटा के सच, सति दयां समझाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दयां सुहाईआ। जन भगतां मार्ग धुर दा दस्स, अगम्मी अगम्म करां पढ़ाईआ। निज नेत्र लोचन खोल्ह के अक्ख, अक्खरां तों खैहड़ा दयां छुडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान दा सांझा होवे जस, वेद पुराणां दी लोड़ रहे ना राईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, दवारा इक्को दयां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा समझाईआ। चिठ्ठी कहे मैं तेरे हुक्म दी धार मामूली, जगत मुआमलयां विच कदे ना आईआ। प्रभू वेखीं मेरे नाल ना वरतीं बेअसूली, असल तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तूं मालक कन्त कन्तूहली, दो जहानां अख्वाईआ। तेरा नाम वड्डा कानूनी, जिस दा काइदा ना कोए बदलाईआ। तैनूं समझे ना कोए नजूमी, पंडतां दी चले ना कोए चतुराईआ। तेरा बालक नढ्ढा इक्को शब्द मासूमी, नंन्हां नंन्हां नज़री आईआ। जिस दी याद कदे ना भूली, भुल्लयां लए समझाईआ। जिस दे बाग़ फुलवाड़ी फूली, पत्त टहणी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। चिठ्ठी कहे मैं हो गई पड़दे ओहले, अंदरों नज़र किसे ना आईआ। मैं छुप गई साचे चोले, जो चोजी प्रीतम दिता पहनाईआ। हे प्रभू मैनूं बिना गोबिन्द कोई ना खोल्हे, मेरी तेरे अगे दुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर बणने बड़े विचोले, विचे विच फेरीआं पाईआ। दीनां मज़्बां पाउणे रौले, झगड़ा जगत होवे लोकाईआ। जन भगत तेरे बणन सिध्धे गोले, दूजे दर ना मंगण जाईआ। आत्म परमात्म गावण ढोले, ढोआ देणा बेपरवाहीआ। अग्नी तत मूल ना खौले, पंचम पंच ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस वेले बल ने चिठ्ठी लै लई मुट्ठ, बावन सीस झुकाईआ। कन्यां कँवारी घर तों आई उठ, भज्जी वाहो दाहीआ। बदलया आपणा रुख़, बल दवारे सोभा पाईआ। मैं हुण नहीं रहिणा चुप, मैनूं अंदरों कोए हिलाईआ। मैं वेखां कलयुग अन्धेरा घुप, मेरा परदा दिता उठाईआ। लहिणा देणा भगतां जावे ना मुक, मैं आसा होर

वधाईआ। बावन जे तूं भगतां लाहवें ना भुक्ख, भुक्ख्यां ना दएं रजाईआ। प्रभू दी सफ़ल होणी नहीं कुक्ख, कुलखणी नार बण के दएं दुहाईआ। जिंनां चिर भगतां नूं श्री भगवान कहे ना पुत्त, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। ओनां चिर मैं तेरे नालों पैणा रुठ्ठ, चार युग मिल ना सीस निवाईआ। बावन ने प्रेम जाम दे के घुट, घुट्ट के गले नाल लगाईआ। हौली जेही ल्या पुछ, की कुछ वेख्या चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तकाईआ। बाली किहा जिस वेले मैनूं घुट्टया, बावन प्यार वधाईआ। माता पिता नालों प्यार टुट्टया, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। जिस दा तन वजूद कोई ना जुस्सया, माटी ख़ाक ना कोए हंढाहीआ। जिस दा बूटा भगत किसे ना पुट्टया, भगवन हो के सेव कमाईआ। जिस दा भण्डारा ना कदे नखुट्टया, जुग जुग रिहा वरताईआ। जो मार्ग उत्तों कदे ना घुथया, गुर अवतार पैगम्बरां रिहा चलाईआ। ओस सहिजे नाल मैनूं अंदर वड़ के पुच्छया, शब्दी शब्द मंग मंगाईआ। मैनूं नज़र आया ओह रुक्कया, जो रुक्का बल आपणे हथ्थ छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी नज़र दिती बदलाईआ। नंन्ही कहे नंन्ही बच्चीआ, बचपन आपणा दयां जणाईआ। मैं शब्द कहाणी दस्सां सच्चीआ, अखरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। परम पुरख सब दा वेख के कमलापतीआ, पतिपरमेश्वर सीस झुकाईआ। जिस ने मैनूं पढ़ाई पट्टीआ, पटने वाला दिता वखाईआ। जिस दे कोलों मैनूं मिलणी खट्टीआ, खटका रहे ना राईआ। सौदा देवे इक्को हट्टीआ, हटवाणा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा आप बुझाईआ। नंन्ही कहे मैं वेख्या निक्का, सति सरूप सोभा पाईआ। जिस दा सब तों वक्खरा हिस्सा, भगतां झोली रिहा भराईआ। सच दा बण के पिता, पूत सपूते गोद टिकाईआ। कूड़ी क्रिया सड़न ना देवे चिखा, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दिता चुकाईआ। परदा चुकया होई हैरान, अंदरे अंदर ख़ुशी मनाईआ। मैनूं उपज्या ब्रह्म ज्ञान, पढ़न दी लोड़ रही ना राईआ। नज़र आया निशान, निशाने रिहा गवाईआ। मिल्या साहिब सुल्तान, पातशाह बेपरवाहीआ। हुक्म दिता फ़रमान, संदेसा शब्द जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार ध्यान, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। किरपा करे श्री भगवान, सिर आपणा हब्ब रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। भेव खोल्हया नज़री आया बाल्मीक, कलम शाही मोर पंख चलाईआ। रविदास चमारा दिस्या ठीक, जो ठाकर इक्को रिहा मनाईआ। कलयुग अन्त बदलदी वेखी रीत, रीतीवान दया कमाईआ। सच प्रेम दी वेखी प्रीत, परम पुरम नाल वज्जी वधाईआ। ढोला सोहया साचा गीत, सोहँ शब्द शनवाईआ। मन आत्मा होई अतीत, त्रैगुण लेखा रिहा ना राईआ। गोबिन्द नज़री आया

ठीक, शब्दी शब्द वेख वखाईआ। जिस दी शहादत करे तस्दीक, ओसे दी सति गवाहीआ। जो अंदर वसे करीब, बाहरों मेल मिलाईआ। एह खेल अजब अजीब, परम पुरख दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र विच तक्कया रविदास, रवी इक्को नज़री आईआ। कलम दवात जिस दे पास, शाही शहिनशाह वड्याईआ। जिस दे अन्तर प्रेम स्वास, साह साह ध्याईआ। प्रभ पा सर्ब गुणतास, गुण आपणा गया भुलाईआ। चरण धूढ़ी टिक्का ला के राख, राक्ष मन अंदरों दिता कढाहीआ। आत्म परमात्म कर इतफ़ाक, मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। रवीदास फड़ के कागज़ कोरा, बल दवारे दिता वखाईआ। मेरा अजे तिन्न जुग विछोड़ा, विछड़न तों पहले दिता जणाईआ। जिस दा कोई ना जाणे होड़ा, होका दे सर्ब लोकाईआ। जिस दा अन्तिम इक्को पौड़ा, पौड़ी अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। ओस दी सब नूं पए लोड़ा, ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले कलयुग होणा अन्ध घोरा, ठग चोरां यारां नाल वज्जणी कूड़ वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नंन्ही बच्ची किहा मैं वेख्या कागज़ चिट्टा, बल बावन सीस निवाईआ। की इस दा अन्तिम सिट्टा, मैनूं दे समझाईआ। बावन किहा जिस वेले फेर आवां मेरे निशान होवे उपर गिट्टा, इट्टां पत्थर मन्नण कोए ना जाईआ। जन भगतां बण के पिता, निरगुण नूर जोत करां रुशनाईआ। तेरी पूरी करां इच्छा, दर दर घर घर भोग लगाईआ। जेहड़ा खेल किसे नहीं दिसा, चार जुग दयां पगटाईआ। तेरा याद रखां पिच्छा, अगे होवां आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बावन ख़ुशी नाल फड़ के हथ्थ, कन्या नंन्ही दिता हिलाईआ। ओस वेख्या पुरख समरथ, जो समां रिहा बदलाईआ। अंदर आसा उपजी कुछ तेरा लिखां जस, सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाल किहा बस्स, अगे मंग ना कोए मंगाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आपणा खोल्हां हट्ट, निरगुण हो के फेरा पाईआ। पूरब लहिणा दे के वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। कलयुग अन्त अख़ीर आवांगा। बेनज़ीर खेल खिलावांगा। दस्तगीर आप अख्वावांगा। शाह हकीर परदा लाहवांगा। मंज़ल चढ़ अखीर, जलवा जोत नूर रुशनावांगा। साची दस्स तदबीर, तकदीर आप बदलावांगा। कुछ लेखा हथ्थ कबीर, काया कबर विच्चों बाहर कढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक दरसावांगा। साची सेवा इक्को दस्सांगा। हिरदे हरि जू हो के वसांगा। कूड़ी क्रिया कोलों नस्सांगा। जन भगतां अंदर बह के हस्सांगा। नवीं रचना जग विच रचांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे इक्को वसांगा। सच दवारा इक वसावांगा। लहिणा देणा मूल चुकावांगा। सच असूल इक बणावांगा। लेखा कदे ना जावां भूल, अभुल हो के आप प्रगटावांगा। चरण प्रीती दे के धूल, टिक्का धूढ़ी इक रमावांगा। सतिजुग सच बणा असूल, असल आपणा रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब इच्छा वेख वखावांगा। पूरब इच्छया कहे कन्या, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब स्वामी ठाकर मंनयां, मिन्नतां दी लोड़ रहे ना राईआ। धन्न जणेंदी माई जिस जणयां, जण के तेरी गोद टिकाईआ। मेरा मैं रिहा ना अंनया, तेरी किरपा मिली सरनाईआ। भाण्डा गढ़ हँकारी भन्नया, बाली बुध दिती वड्याईआ। मैं तेरा करां धन्न धन्नया, शुकर कह के खुशी मनाईआ। तूं भीतर भीतर रमिआ, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वेले बदलें आपणा सम्यां, समां आपणा देणा वखाईआ। बावन किहा जिस वेले समां होवे तबदील, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। शब्दी शब्द सुण सर्ब अपील, पिछले खाते वेख वखाईआ। जिन्हां साची रखी दलील, दिल दे पड़दे दयां उठाईआ। हुक्मे अंदर कर तामील, घर साचे लवां बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछली चिठ्ठी दयां वखाईआ। मेरी चिठ्ठी अंदर इक्को अक्खर, जिस दा चिन्न ना कोए समझाईआ। सब तों निराला वक्खर वक्खरा हुक्म समझाईआ। जिस नूं लिखे ना कोई सलेट पत्थर, कलम शाही ना रंग चढ़ाईआ। जो प्रभ दे सुत्ता सत्थर, यारड़ा सेज इक हंढाहीआ। जिस दी महिमा किसे ना लिखी विच नसर, अक्खरां नाल आख़र आपणा आप गवाईआ। मैं ओसे नाल आपणा आप करना बसर, बशरते कि ओहो मिले धुरदरगाहीआ। जिस दा सब तों वक्खरा जशन, भगतां नाल खुशी मनाईआ। सच प्रेम दा लै के मिशन, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जिस ने इशारा थोड़ा दिता काहन कृष्न, गोपीआं गवालयां वालीआं नचाईआ। ओस दे खेल अगम्मे दिसण, दिशा विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आख़र भेव दए जणाईआ। आपणा भेव दस्से प्रभ आख़र, अक्खरां सिफ्त सालाहीआ। पुरख अगम्मा होवे साथन, सगला संग बणाईआ। आत्म परमात्म गाथन, ढोला गीत सुणाईआ। निरगुण होके सरगुण आवे वाचण, वाचक विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। प्रेम प्रीती अंदर आवे नाचन, कूड़ स्वांग ना कोए रचाईआ। दरस देवे अगम्मी बातन, बाहर खोजण दी लोड़ दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। हुक्म सुणन नूं उठ खलोता रवी, दास हो के सीस निवाईआ। पुरख अकाल शब्द अगम्मी कहवीं, रसना वाली ना कोए पढ़ाईआ। जिस वेले तेरी धार चलणी नवीं, कलयुग विच्चों सतिजुग लैणा बदलाईआ। सच सिँघासण इक्को बहवीं, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

जन भगतां सार लवीं, लायक नालायक देणे बणाईआ। ओस वेले तैनूं सारयां कहिणा अवतार, चवी, चौंह जुगां दा लहिणा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा देणा मुकाईआ। जिस वेले होवें चवीआं अवतारा, कल कल्की नाउँ धराईआ। तेरा रविदास होए लिखारा, बाल्मीक नाल गवाहीआ। जेहड़ा कन्यां दा उधारा, कलयुग अन्तिम झोली पाईआ। तेरा वक्त समां होए अपारा, शहिनशाही दो वज्जे वधाईआ। गोबिन्द दा पिछला चुक्के उधारा, जुझार नाल कुड़माईआ। घर साचे मंगलाचारा, गीत गोबिन्द सुणाईआ। देवीं इक इशारा, शब्द शब्द पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। बावन किहा सब कुछ होवे पूरा, पूरन प्रभ दए वड्याईआ। जिस वेले आवे पुरख अकाल सूरा, सतिगुर साचा फेरा पाईआ। रविदास नाल होवे ज़रूरा, ज़रूरत पिछली वेख वखाईआ। सब दी अरज़ करे मन्ज़ूरा, मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। जन भगतां काया अंदरों हूंजे कूड़ा, दुरमति मैल धवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, दर देवे माण वड्याईआ। जिस वेले कन्यां प्रभ दे नाम दा पाया रंगला चूड़ा, मंगलाचार विच जणाईआ। शब्दी नाद दी दे के तूरा, तुरत आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रविदास नाल मेला मेले सहिज सुभाईआ। रविदास कहे की अगम्मी बात, प्रभ साचे दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा इक्की दिन एसे कन्यां दे हथ्थ फड़ाउणी कलम दवात, ढाई घंटे नित सेव कमाईआ। तूं खुशीआं नाल कोल गाउँदे रहिणा गाथ, एह करदी रहे लिखाईआ। पुरख अकाल दोहां दे वस्से पास, हिरदे हरि समाईआ। पहली पट्टी ते पहली जमात, पहला सबक दए समझाईआ। जन भगतो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तों वड्डी नहीं कोई करामात, जो करमां दा लेख चुकाईआ। इक्की सावण नूं सब दे उत्ते खुशीआं दी पए बरसात, बरखा मेहर आप बरसाईआ। एस दा फेर जवाब, तिन्न अस्सू दयां दृढ़ाईआ। गुरमुख सिँघ रखणा हिसाब, भुल्ल विच भुल्ल कदे ना जाईआ। गोबिन्द दे हथ्थ उह किताब, जित्थे अजीत जुझार सोभा पाईआ। छोटयाँ दा सब तों वक्खरा वाक्, जो वाकिफ़कार भगतां दे अख्वाईआ। जन भगतो तुहाडे रहिण कोई ना पाप, पतित पुनीत दिते बणाईआ। पुरख अकाल बणया तुहाडा बाप, जम्मण वाली इक्को माईआ। जिस ने गोबिन्द रख्या साथ, सगला संग बणाईआ। उह होवे तुहाडा दास, निर्धन हो के सेव कमाईआ। अंदर वड़ के करे पाक, पतित पुनीत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर देवे सरनाईआ। कलम दवात कहे मेरा लेखा बणना नाल शाही, शहिनशाह दए वड्याईआ। बल बावन दोवें देण गवाही, शहादत सच सच भुगताईआ। बाल्मीक भुल्लणा नाहीं, परदा पड़दे विच्चों चुकाईआ। रविदास वेख्या सच्चा थाँईं, भगत दवारा सोभा पाईआ। जित्थे हरि भगतां

मिले वड्याई, गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। दुरमति मैल धोवे शाही, कालख टिक्का रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए सरनाईआ। सच दवारा सोभावन्त, सो साहिब आप समझाईआ। जित्थे मेला भगत भगवन्त, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सच दवारे सोहण अगम्मे सन्त, जिन्हां सज्जण इक अख्वाईआ। गुरमुख गुरसिख दूजे दर करन ना मिन्नत, नमो नमो ना सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि साचे पार लँघाईआ। जन हरि साचा उतरे पार, परम पुरख दया कमाईआ। करनी दा करता करे हुदार, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दी आसा रखदे गए जुग चार, चारे खाणी चारे बाणी ध्यान लगाईआ। सो आया अन्तिम वार, कलयुग मेटे कूड़ी शाहीआ। जन भगतां देवणहारा नाम भण्डार, अतोल अतुल वरताईआ। सावण बरखे अमृत धार, रस अन्तर अन्तर चुआईआ। सोई सुरती कर के ख़बरदार, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। जन भगतो प्रभ तको आपणे भगत दवार, दूजे दर नज़र कदे ना आईआ। पंज वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बोलो जैकार, जैकारयां विच्चों निरँकार नज़री आईआ।

८७६
१६

✪ २ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ✪

हरि जैकार अगम्मी शब्द, सुरत अकाल मूर्त विच मिलाईआ। झगड़ा रहे ना कोए दीन मज़्हब, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। सच दवारे होवे अदब, आदाब इक्को दए समझाईआ। हैरानी विच ना होवे ग़जब, ग़रज सब दी पूर कराईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मदद भगतां करे चाँईं चाँईंआ। दीनां दुखियां वण्डे दर्द, नाथ अनाथां होए सहाईआ। भगतां सुणे अरज़, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जन्म कर्म दी कट के मर्ज़, मज़ा आपणा नाम चखाईआ। साचा खेल दस्से असचरज, अचरज लीला आप दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरा गर्द, सति जोत करे रुशनाईआ। पूरब कर्म दी कढ्ढ के फ़रद, फ़ैसले हक हक सुणाईआ। गुरमुख जाण ना देवे कोई नावलद, वलदीअत आपणे नाल बणाईआ। मार्ग पन्थ दस्से ना कोए ग़लत, कूड़ा राह ना कोए चलाईआ। सदा सहाई हलत पलत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त निराला करे चलत, चलित्तर वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। हरि शब्द सच जैकार, नाअरा हक अख्वाईआ। खुशी करन गुर अवतार, पैगम्बर ढोले गाईआ। कल वेख कल्की अवतार, कलाम सारे गए भुलाईआ। अमाम अमामां दा सिक्दार, भगत गुलामां करे रिहाईआ। सब कुछ रख

आपणे अख़्त्यार, मुख़तारनामे सब दे दए मिटाईआ। हुक्म दे के एका वार, एकँकार करे शनवाईआ। जिस दा जस सदा रिहा जुग चार, चौकड़ी राग अलाईआ। उह वस्या भगत दवार, भगवन हो के फेरा पाईआ। वेखणहारा अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक दरसाईआ। जै जैकार होवे हरि शब्द सच संगीत, नाद इक्को इक शनवाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी बदलदी आई रीत, मन्दिर मसीत देण गवाहीआ। सो करे खेल अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जन भगतां दरस देवे आपणी दीद, नूर चन्द जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाईआ। नाम शब्द जैकारा सति, सति सतिवादी आप जणाईआ। घट भीतर उपजे ब्रह्म मत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे पढ़ाईआ। जन भगतां खोल्ह नेत्र लोचन अक्ख, आख़र आपणा परदा लाहीआ। स्वामी हो के अंदर वस, अन्तरजामी हो के मेल मिलाईआ। नाम निधाना अणयाला तीर मारे कस्स, प्रतख हो के वेख वखाईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, हट्ट साचा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह नज़ाम पुरा ज़िला अमृतसर ✪

हरि नाम भगत भण्डार, पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोकमात वरताईआ। देवणहार नित नवित सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव जिस दर खड़े भिखार, मांगत हो के निरगुण सरगुण झोली डाहीआ। सो देवणहारा दाता इक इकल्ला एकँकार, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आप वरताईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पा ना सकी सार, बेअन्त कन्त भगवन्त कह के सारे शुकर मनाईआ। सो निरगुण निरवैर निराकार कल कल्की लै अवतार, लिख्त भविख्त अनदृष्ट वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी कल वरताईआ। जन भगत भण्डारा एका हरि हरि नाम, अन्तर आत्म आप जणाईआ। अमृत रस निझर झिरना देवे सच्चा जाम, तृष्ना भुक्ख जन्म मरन दए चुकाईआ। नाम संदेसा धुर दा दए पैग़ाम, बिन अक्खरां तों निरअक्खर करे पढ़ाईआ। मुकामे हक मंज़ल दस्से आसान, पुरी लो ब्रह्मण्ड खण्ड अद्ध विचकार ना कोए अटकाईआ। बिन रसना

जिह्वा बत्ती दन्द शब्द नाद दस्से धुन कान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। दीआ बाती कमलापाती पति परमेश्वर आप जगाए महान, सति स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दा भेव अभेद लख चुरासी जीव जंत साध सन्त समझ ना सके कोई पंज तत इन्सान, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। सो करनी दा करता पुरख करे खेल आप श्री भगवान, भगतन मीता ठांडा सीता सच सच साची कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, दरगाह साची सचखण्ड साचा इक सुहाईआ। जन भगत भण्डारा अमृत रस, निझर झिरना आप झिराईआ। आत्म परमात्म कर के वस, मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों दए कढाहीआ। साचा मार्ग शब्द अगम्मी इक्को दस्स, चार कुण्ट दहि दिशा पैंडा दए मुकाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अज्ञान कूड़ी क्रिया ममता मोह चुकाईआ। काया मन्दिर अंदर साढे तिन्न हथ्थ देवे नाम अमोलक वथ, जगत नेत्र सृष्टी दृष्टी नज़र किसे ना आईआ। सर्ब कला प्रभ आप हो समरथ, जन भगतां महिमा लिखाए बोध अगाध अकथ, जगत बुद्धी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर अंदर परदा आप चुकाईआ। जन भगत भण्डार सदा अमोल, जगत तराजू तोल ना कोए तुलाईआ। पुरख अबिनाशी धुर दा मालक सच दवारा देवे खोल्ह, नौ दवारे परे परमात्म आत्म परदा दए उठाईआ। शब्द अगम्मी नाद वजा आपणा ढोल, सोई सुरत अकाल मूर्त नाद तूरत आप जणाईआ। निज घर वासी पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार वस्से कोल, बिन तत्तां तत ज्ञान दए समझाईआ। अमृत आत्म निझर धार दे के साची पाहुल, परम पुरख परमात्म प्रेम रस इक्को इक चखाईआ। जिस दा लेखा कोई जाण ना सके पंडत पांधा रौल, मुला काज़ी शेख़ मुसायक समझ किसे ना आईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण जोत बिन वरन गोत प्रगट होवे उपर धौल, धरनी धरत धवल वेखे थाउँ थाँईंआ। भगत सुहेला इक इकेला अकल कलधारी जुग जन्म दा पूरा करे कौल, पूरब लेखा वेखे चाँईं चाँईंआ। शब्दी धार हरि निरँकार घट स्वामी गया मौल, मौला हो के परदा ओहला दए उठाईआ। जिस दा नित नवित जुग चौकड़ी सदा सदा गुर अवतार पैगम्बर बदलदे गए बोल, दीनां मज़्हबां ज़ातां पातां विच वण्ड वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगतन मीता ठांडा सीता एकँकारा इक्को नज़री आईआ। जन भगत भण्डार देवणहारा श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जिस दा आदि जुगादि नित नवित झुलदा रहे निशान, धर्म निशाना इक्को दए वखाईआ। जिस नूं झुकदे रहे सीता राम, कान्हा कृष्न सीस झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुणदे रहे पैग़ाम, काया काअबे अंदर खोज खुजाईआ। नानक गोबिन्द करदे गए प्रणाम, सीस जगदीस झुकाईआ।

जिस दा मंत्र शब्द अगम्मी विच जहान, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं करे सति जणाईआ। दरगाह साची वसे सचखण्ड धाम, भूमिका अस्थान जगत दवारे समझ कोए ना पाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल करे महान, सिफ्त सालाही बेपरवाही कलम शाही लेखा लिख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां जुग जुग देवणहार वड्याईआ। जन भगतां देवे आत्म परमात्म दरस, निज लोइन नैण खुलाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मिटे हरस, हवस अगली दए मुकाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे तरस, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। प्रभ दर्शन जो जन रहे तड़प, दूर दुराडा नेरन नेरा मिल के आपणी खुशी वखाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत मेट के भटक, अटक अगली दए चुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार तत निवास रहिण ना देवे कटक, घर विच घर दर दरवाज़ा साचा आप खुलाईआ। बूँद स्वांती अमृत मेघ जन भगतां अन्तर आपे बरस, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार आवे परत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जन भगतां नाम देवे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। नाता जोड़ के आत्म परमात्म नार कन्त, सेज सुहञ्जणी दए सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दस्स के साचा मंत, मंतव अगला हल कराईआ। शब्दी महिमा दस्स अगणत, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। सो सज्जण सच्चा सन्त, जिस घर बैठा नज़री आईआ। हँ ब्रह्म बोध अगाधा बण के पंडत, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नत, सचखण्ड दवारा इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे माण वड्याईआ। जन भगत भण्डारा पुरख अकाल देवे साची धूढ़, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, हउमे हंगता रोग गवाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सच सुच धुर दा संजम दए समझाईआ। शब्द अगम्मी वजा के नाद तूर, तुरीआ पद विच रखाईआ। साची जोती दे के नूर, निरँजण जोत करे रुशनाईआ। पन्ध मुका के दूरन दूर, नेरन नेरा नज़री आईआ। काया मन्दिर अंदर हो के हाज़र हाज़ूर, हज़रत हो के परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जन्म दी भगती कर मन्ज़ूर, मंज़ल अगली पन्ध मुकाईआ। जन भगतां नाम भण्डारा देवे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। चरण प्रीती दस्स के साची टेक, टकयां दा लेखा दए मुकाईआ। सचखण्ड दुआर दस्स के आपणा देस, कूड़ कुड़यारा देवे परे हटाईआ। नाम अगम्मा सब तों वक्खरा दे के संदेश, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तों बाहर करे पढ़ाईआ। बिन कलम शाही कागज़ लिखे लेख, बिन हरूफ़ हरूफ़ आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मालक बण के नर नरेश, सच फ़रमाना इक्को

राणा गुरमुखां आप समझाईआ। जन भगतां प्रभ देवे वस्त अमोलक, सच प्रीती काया झोली पाईआ। कलयुग अन्त बदल के नीती, निज घर आपणा दए वखाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीती, सीतल धारा आप वखाईआ। फुल्ल फुलवाड़ी गोबिन्द धार अगम्म अतीती, गुरमुख बूटा इक महकाईआ। जिस दा कलमा इक्को नाम सच हदीसी, हज़रतां करे पढ़ाईआ। सो वेखणहारा हस्त कीटी, ऊँचां नीचां खोज खुजाईआ। आपणी धार रखे अनडीठी, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जन भगतां दे के सच प्रीती परम पुरख परमात्म आत्म आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, सच दवारा इक वखाईआ। जन भगतां देवे इक्को नाम सलोक, सोहला हरि जू हक सुणाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। भाग लगा के काया माटी कोट, कोट कंचन गढ़ दए जणाईआ। बिन जगत नेत्र दर्शन देवे रोज़, रोज़े बांग दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म प्रभ दस्से साची मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए खोज, बेअन्त कह के ढोले गाईआ। सो परम पुरख परमात्म जन भगतां नाल करे आपणा चोज, चोजी हो के कर्म कमाईआ। लख चुरासी जन्म कर्म दा कटे रोग, वरन बरन झगड़ा दए मुकाईआ। नाम प्याला दे करे मदहोश, सच खुमारी इक वखाईआ। काया माटी जून अजूनी सब दा बदलदा रहे पोश, पशू प्रेत चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता, भगवन इक्को नज़री आईआ। जन भगत भण्डारा सतिगुर चरण कँवल, बिन अक्खां आप दरसाईआ। देवे वड्याई उपर धरनी धरत धवल, धौल वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस नूं कैहिंदे नुर खुदाई अवल, आलमीन कह के सारे सीस निवाईआ। जो हर घट रिहा मवल, लख चुरासी डेरा लाईआ। सो भगतां करे उलटा नाभ कँवल, अमृत झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, ताकी परदा आप उठाईआ। जन भगत भण्डारा रखे काया मन्दिर, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। बजर कपाटी तोड़ के जंदर, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। मन वासना दहि दिश ना दौड़े बन्दर, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। भाग लगा के डूंघी कंदर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लोड़ रहे ना सूर्या चन्द्र, रवि ससि अक्ख ना कोई खुलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां लावे आपणे अंगन, अंगीकार इक हो जाईआ। सन्त सुहेला दूजे दर कदे ना जावे मंगण, जिस दा मालक बेपरवाहीआ। काया काअबे अंदर वज्जे ढोला नाम मृदंगन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी अंदर बह बह खुशी मनाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़े रंगण, रंग मजीठ चले ना कोए चतुराईआ। योद्धा सूरबीर बण मृदंगन, मर्द मर्दाना इक्को देवणहार सरनाईआ। तूं

मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दरस के सच अनन्दन, निजानंद परमानंद विचों प्रगटाईआ। जिन्हां परम पुरख पारब्रह्म प्रभ ढोला गाया सोहँ छन्दन, संसे रोग मिल निरगुण जोत जगत गए चुकाईआ। लख चुरासी आवण जावण मात गर्भ रिहा कोई ना बन्धन, जम की फाँसी ना कोई लटकाईआ। राए धर्म चित्रगुप्त लेखा कोई ना मंगण, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। सच दवारा सचखण्ड बिन पौड़ी डण्डे लँघण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हीर, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा साचा घर, घर स्वामी ठाकर इक्को सोहणा रिहा सुहाईआ। जन भगत भण्डारा देवणहारा ठाकर, ठोकर इक्को नाम लगाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। जो सच वणजारा बणे सौदागर, वदी सुधी दा लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म सच दवारे देवे आदर, आदर्श आपणा इक दृढ़ाईआ। किरपा कर करीम कादर, कुदरत दा मालक ख़लक दा पालक ख़लक उपर नूर करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द योद्धा सूरबीर बहादर, साचे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी एका इष्ट करे तबादल, तबादले विच तबलीग आप जणाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत २ चन्द सिँघ दे गृह नज़ाम पुरा ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां प्रभ देवे ज्ञान, धुर दी धार आप जणाईआ। परदा ओहला चुक्के विच जहान, मन जहालत रहे ना राईआ। हुक्म देवे धुर फ़रमान, हक संदेसा आप सुणाईआ। सच प्रीती करो श्री भगवान, ओट पुरख अकाल तकाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर ढोला गाण, खाणी बाणी सिफ्तां नाल करे सफ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निज नेत्र दरस करे विच जहान, लोकमात मिले माण वड्याईआ। कलयुग कूड़ी रैण अन्धेरी मिटे रात, सति सतिवादी साचा चन्द नूर करे रुशनाईआ। इक्को ढोला नाम गाओ प्रभ दी गाथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द मिले माण वड्याईआ। जो एथे ओथे दो जहानां सदा वसे साथ, निरगुण हो के धुर दा संग निभाईआ। जिस दी काहन पाउँदे गए रास, गुर अवतार पैगम्बर रस्ते गए वखाईआ। जिस दे पिच्छे राम कटया बनबास, बणया पाँधी राहीआ। तिस दा वेखे जलवा जोत नूर प्रकाश, बिन तत्ता सोभा पाईआ। जो वसे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर रिहा समाईआ। भगत सुहेला हो के दास, दासी दास रूप वटाईआ। लहिणा देणा पूरब वेख के आदि, अन्त मेला रिहा मिलाईआ। जन्म जन्म दी सुणनहार फ़रियाद, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेड़ा कर आबाद, बख्शणहार सची सरनाईआ। जन भगतां मालक

गहर गम्भीर, परम पुरख अख्वाईआ। जो भाग लगावे काया माटी साढे तिन्न हथ्थ सरीर, तत्व तत सोभा पाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना बख्शे साचा नीर, जन्म जन्म दी तृष्ना दए बुझाईआ। साची चोटी चड़्ह के वेखे अख़ीर, हकीकत हक खोज खुजाईआ। आपणे मिलण दी सच्ची दस्स तदबीर, तकदीर दए बदलाईआ। इक्को रंग रंगा के शाह हकीर, ऊँचां नीचां दए माण वड्याईआ। बण के ठाकर धुर दा पीर, परम पुरख परमात्म आत्म आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन भगत सुहेले तारे सन्त फ़कीर, फ़िकरा इक्को आपणा नाम सुणाईआ।

✪ ३ सावण शीहनशाही सम्मत २ बीबी धनतो दे गृह नज़ाम पुर ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां पूरी करे आसा, तृष्ना मात ना रहे राईआ। चरण प्रीती साचा दे भरवासा, भाण्डा भरम कूड़ तुड़ाईआ। मानस जन्म कर दे रासा, रस्ता आपणा दए समझाईआ। नाम जपा के स्वास स्वासा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारे कर के वासा, मेला मेले सहिज सुभाईआ। झगड़ा मुका के पृथ्मी आकाशा, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सची सरनाईआ। जन भगतां देवे साची सरन, दूजी ओट ना कोए दसाईआ। झगड़ा मुका के जन्म मरन, मार्ग आपणे दए लगाईआ। लेखा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। जो पूरब कीता प्रन, परमात्म हो के तोड़ निभाईआ। जन भगतां आया फड़न, फड़ बाहों गले लगाईआ। चोटी आया चढ़न, मंज़ल दस्से बेपरवाईआ। कोटां विचों भगत सुहेले दरगाह साची वड़न, पिछला पन्ध मुकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी जो दरस करन, जोती जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाता हो के तरनी तरन, जन भगत तार तुरत आपणे विच समाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत २ इकबाल सिँघ दे गृह नज़ाम पुरा ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां सदा प्रितपाले, प्रितपालक हो के दया कमाईआ। साचा मार्ग दस्से सुखाले, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा देवे शाह कंगाले, ऊँच नीच ना कोए चतुराईआ। सति दवारा वखा इक्को सची धर्मसाले, धर्म दवारा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगतां दस्से साची खोज, अन्तर अन्तर बूझ बुझाईआ। चरण प्रीती बख्श के ओट, दूजा झगड़ा दए चुकाईआ। साचा मेल मिला के निर्मल जोत, जुगां दे विछड़े

जोड़ जुड़ाईआ। जन्म मरन दा कट के रोग, सद होवे आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां संवार के लोक परलोक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम आपणा इक दृढ़ाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ, गुरबखस सिँघ, गुरदयाल सिँघ दे गृह मैणीआं ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां होए जन्म सुहेला, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। जुग जुग विछड़यां होवे मेला, जगत दया कमाईआ। नज़री आए आदि पुरख अपरम्पर स्वामी इकेला, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। मानस जन्म सुहञ्जणा होए वेला, वक्त वार थित आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि साचे पार लँघाईआ। जन भगतां होवण वड वड भाग, हरि सतिगुर भाग लगाईआ। घर वेख्या जोत जगा चिराग़, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। रसना देवे अनरस स्वाद, जिस दा रस चख ना कोए समझाईआ। शब्दी नाम मार आवाज़, वाद विवाद दए मुकाईआ। दर दुरमति मैल धो के दाग़, दर्दी हो के वण्ड वण्डाईआ। जगत माया ममता मोह मेट के हँस बणाए काग, बुद्धी बिबेक आप कराईआ। सच प्रीती बख्श वैराग, वैरी अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बणा के सच समाज, साचा मार्ग इक वखाईआ। जन भगतां प्रभ देवे अगम्मी मत, जगत वाली ना कोए पढ़ाईआ। मेल मिला के परम पुरख परमात्म हो के सति, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। परम पुरख हो के सिर रखे हथ्थ, समरथ दया कमाईआ। वेद पुराणां तों बाहर गावे जस, नाम नामे नाल वड्याईआ। चरण कँवल सहारा देवे सच, सच साजण हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लूं लूं अंदर जाए रच, रचना आपणी दए बुझाईआ। जन भगतां प्रभ सदा संगी, विछोड़ा विच ना कोए रखाईआ। देवे वस्त सदा अनमंगी, पदार्थ नाम झोली पाईआ। साची मंज़ल जावे लँघी, कूड़ कुड़यारा पन्ध मुकाईआ। मनुआ मन मेट फ़रंगी, फ़रमाबरदार आपणा लए बणाईआ। होण ना देवे नंगी कंडी, पिठ्ठ आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अक्ख रहिण ना देवे अन्धी, अज्ञान अंदरों दए चुकाईआ। जन भगतां प्रभ सदा दयाल, दीन दुनी विचों बाहर रखाईआ। शब्दी धार बणा के आपणा लाल, गोदी धुर दी लए टिकाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सचखण्ड दवारा वखाए सची धर्मसाल, दरगाह साची इक जणाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे बेमिसाल, नूर नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जन भगतां दरगाह साची दए स्वाल, जित्थे सुत्यां बिना पुरख अकाल ना कोए उठाईआ। जन भगतां प्रभ देवे सच घराना, गृह मन्दिर इक वखाईआ। जित्थे वसे श्री भगवाना, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। निरगुण जोत दीप जगे महाना, नूरो नूर डगमगाईआ। सच प्रेम दा होवे मैहख़ाना, जाम इक्को इक प्याईआ। मस्त खुमारी अंदर करे दीवाना, सुरती शब्द नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा दे के इक ज्ञाना, परदा ओहला दए उठाईआ। जन भगतां बख्शे सतिसंग जमात, सच दरबारा इक जणाईआ। जित्थे वसे एकँकार, इक अकल्ला डेरा लाईआ। दर मंगते गुर अवतार, पीर पैगम्बर झोली डाहीआ। वेखणहारा पावे सार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम लै अवतार, निरगुण हो के सरगुण दए वड्याईआ। लेखा जाण जन भगत दवार, हरिजन साचे लहिणा दए चुकाईआ। चरण प्रीती दे के इक प्यार, पारब्रह्म प्रभ बख्शे सच सरनाईआ। कर किरपा जाए तार, दुत्तर बेड़ा पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुका के कूड़ संसार, धूढ़ चरण टिक्का मस्तक देवे लगाईआ।

✪ ३ सावण शहिनशाही सम्मत २ वरयाम सिँघ दे गृह पिण्ड तलवण्डी ज़िला अमृतसर ✪

८८७
१६

जन भगतां प्रभ दए भण्डार, नाम निधाना श्री भगवाना आप वरताईआ। शब्द अगम्मी दे खुमार, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। निर्मल जोती कर्म उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। महल अटल वखाए उच्च मनार, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। परदा ओहला देवे पाड़, दूई द्वैती शरअ शरायती रहिण कोए ना पाईआ। घर ठांडा वखा सच्चा दरबार, दर दवारा इक्को दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेला इक अकेला एकँकार, आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां हरि चाढ़े रंग, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। गहर गम्भीर बेनज़ीर मर्द मर्दाने नाम वजाए मृदंग, धुन आत्मक करे रुशनाईआ। भेव अभेदा खोल्हे ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दए जणाईआ। लेखा जाण पवण स्वास दम, चम्म दृष्टी इष्टी अंदरों दए खुल्हाईआ। लेखा मुका के हरख सोग चिन्ता ग़म, सांतक सति सति दए समझाईआ। पंच विकारा ममता मोह मेटे तम, मनसा जगत ना कोए वधाईआ। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद धुर दा दस्से धर्म, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि आपणी कार कमाईआ। जन भगतां प्रभ दस्से ठांडा दरबार, दरगाह साची हक मुकाम इक वखाईआ।

८८८
१६

जित्थे वसे परवरदिगार इक अकल्ला एकँकार, बैकुण्ठ निवासी सोभा पाईआ। जिस दी सिफ्त करे जुग चार, शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी ढोलयां विच सालाहीआ। जिस नूं नमस्ते निमस्कार करदे गुर अवतार, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर खड़े दर भिखार, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। सो लहिणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी जाणे चार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खोज खुजाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना दो जहानां शब्द अगम्मा सुणाए आपणी धार, निरअक्खर अक्खरां विच बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता ठांडा सीता, सति सतिवादी दर घर साचा इक प्रगटाईआ। दर घर साचा इक सुहञ्जणा, जन भगतां आप वखाईआ। जोत जगा आदि निरँजणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। दाता बण के दर्द दुःख भय भंजना, आवण जावण लख चुरासी गेड़ा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बण के धुर दा सज्जणा, सुहेला हो के आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रीती देवे धुर दा मजना, दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दए धवाईआ। सच ललारी हो के चाढ़े अगम्मी रंगणा, जिस दा रंग वेखे ना कोए लोकाईआ। साचे सन्तां सतिगुर पूरा देवे परमानंदना, निजानंद जिस दी करे शनवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्से इक्को बन्दना, तत्तां वाली सिख्या ना कोए दृढ़ाईआ। जिस आदि जुगादि नित नवित जन भगतां नाता निरगुण धार निरगुण नाल गंढणा, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुहेला इक अकेला दर घर ठांडा इक वखाईआ। दर घर ठांडा सच्चा दरबार, धुर दरबारी आप सुहाइंदा। जित्थे वस्से एकँकार, इक इकल्ला डेरा लाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। सुत दुलारा शब्दी कर के ख़बरदार, नाम संदेसा नर नरेशा आप जणाइंदा। थिर घर चरण कँवल खोल्हणहारा हक कवाड़, हकीकत आपणे विचों प्रगटाइंदा। हुक्म विचों हुक्म चला के शब्द सार, महासार्थी आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां वखावे सच घर, जिस गृह मन्दिर अंदर आपणा डेरा लाइंदा। साचा मन्दिर हरि का दवार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जित्थे झुकदे गुर अवतार, पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। सूरज चन्द ना कोए उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। कागत कलम ना लिखणहार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए ना कोए गवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को आए अगम्मी धार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सो खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। नित नवित जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण लए अवतार, तत निवासी जोत प्रकाशी करनी करता आप हो जाईआ। खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच दरवाज़ा ग़रीब निवाजा जन भगतां आप खुल्हाईआ। जन भगतां खोल्हे साचा दर, परदा ओहला आप उठाईआ। नज़री आवे नरायण नर, नर नरायण इक्को रूप प्रगटाईआ। करे खेल उपर धरनी धर, धरत धौल वेख वखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले आत्म परमात्म हो के लए फड़, सुरती शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। साचे मन्दिर काया काअबे हक महबूब वेखे खड़्ह, जलवागर करे सच रुशनाईआ। लेखा चुका के सीस धड़, कर प्रकाश बहत्तर नड़, नूरो नूर डगमगाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द नाम निधाना श्री भगवाना निरअक्खर लए पढ़, जगत विद्या दा लेखा दए मुकाईआ। भगत भगवान इक्को सोहण साचे घर, घर विच घर वज्जदी रहे वधाईआ। जित्थे भउ भयानक दा नहीं कोई डर, निरभउ एका सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए उठाईआ। जन भगतां दस्से घर अवल्ला, सच दवारा इक सुहाईआ। लहिणा देणा चुका के जला थला, ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जिस गृह वस्से इक इकल्ला, एकँकारा बैठा सोभा पाईआ। जोती शब्दी धार आपे रला, निरगुण हो के निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा घर ठांडा इक प्रगटाईआ। ठांडा घर सोभावन्त, जन भगत मिले वड्याईआ। पुरख अबिनाशी मिले धुर दा कन्त, मालक ख़ालक इक्को सोभा पाईआ। लेखा चुक्के लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी झगड़ा दए मुकाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हमसाजण हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। बोध अगाधा हो के पंडत, धुर दी सिख्या दए समझाईआ। परदा रहे ना बहिशत जंनत, सच दुआर चढ़ के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेले निरगुण धार अन्त, अन्तशकरन अन्तर अन्तरीव वेख वखाईआ। जन भगतां दस्से सच तराना, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। धुर दा देवे नाम निधाना, अक्खरां वाली करे ना कोए पढ़ाईआ। सृष्टी गाए ना कोई गाणा, होका हक हक जणाईआ। मिले महबूब मुहब्बत विच प्रेम प्यार दा देवे दाना, दाता हो के झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा देवे माणा, अभिमान अंदरों दए कढाहीआ। जन भगतां प्रभ करे खोज, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जन्म कर्म दा उत्तों लाहवे बोझ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना हउमे रोग, ममता मोह ना कोए वधाईआ। दीन दयाल दस्से आपणा जोग, जोगीशरां तों परे करे पढ़ाईआ। भगत भगवान मिल के जगत वासना रहे कोई ना रोग, संजोगी हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। भाग लगा के काया कोट, कूड़ कुटम्ब देवे तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर्शन देवे आप अमोघ, बिन तत्तां तत करे रुशनाईआ।

जन भगतां देवे साचा दरस, जगत अक्ख ना कोए खुल्ाईआ। अन्तर अन्तर मेटे हरस, मेहर नज़र इक उठाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा देवे कर्ज़, मकरूज हो के झोली दए भराईआ। भगत उधारना प्रभ दा फर्ज़, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के दस्से आपणी तरज़, तर्ा तर्ा नाल जणाईआ। दीन दयाल दीना नाथ हो के वण्डे दर्द, दुःख विछोड़े वाला दए मिटाईआ। जन भगतां छुरी हलाल करे कोई ना करद, जगत खल्ल ना कोए लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सदा असचरज, अचरज लीला आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां प्रभ देवे नाम गहर गम्भीर, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। साचा जीवण ज़िंदगी विचों करे ताअमीर, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। मंज़ल चोटी चढ़ अख़ीर, आख़र आपणा आप आपे दए समझाईआ। जिस दवारे बह के ढोला गाया जुलाहे कबीर, कबरां दा लेखा गया मुकाईआ। अमृत रस पी के धुर दा सीर, शरअ दे ज़ंजीर गया तुड़ाईआ। अंदरों बदल के आपणी ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर प्रभ दा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा साचा वर, वाहिद इक्को नज़री आईआ। वाहिद इक्को लाशरीक, शरक्त विच कदे ना आइंदा। जिस दे हथ्थ हक तौफीक, तारीफ़ आपणी जगत पैग़म्बरां आप सुणाइंदा। कलमा दस्से हक हकीक, कायनात अलिफ़ ये नाल पढ़ाइंदा। सूफ़ीआं दे के इक उम्मीद, आमद विच खुशामद विच ख़ाहिश सब दी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे सच दवारे आप सुहाइंदा। हरिजन मिले दुआर सच, सच सच विच समाईआ। भाग लगे काया माटी कच्च, पंज तत होए रुशनाईआ। मनुआ मन ना जाए नच्च, दहि दिशा ना कोए वड्याईआ। निज नेत्र निज लोचन निज ज्ञान खोले् अक्ख, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। सर्ब स्वामी परम पुरख परमात्म आत्म नज़री आए प्रतख, साख्यात स्वच्छ सरूप जन भगत दर्शन पाईआ। देवणहार वड्याई पुरख अकाल समरथ, सर्ब जीआं दा दाता दयावान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हकीकत विचों दए हक, कूड़ी क्रिया विचों बाहर कढाहीआ। जन भगतां प्रभ देवे सहारा चरण कँवल, कँवल चरण इक दरसाईआ। मिले वड्याई उपर धवल, धरनी धरत वज्जे वधाईआ। निरगुण धार हो के जावे मवल, आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। बूंद स्वांती अमृत बख्शे (नाभ) कँवल, झिरना झिरे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावणहारा साचा दर, बन्द किवाड़ी कुंडा लाहीआ। जन भगतां खोले् बन्द किवाड़ी ताकी, तकवा इक्को इक जणाईआ। जाम प्याए बण के साकी, प्याला धुर दा हथ्थ फड़ाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा रहे ना बाकी, लख चुरासी फाँसी दए कटाईआ। पूरब

पूरी होवे आसी, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। मानस जन्म होवे रासी, रस्ता इक्को दए वखाईआ। जित्थे मिले पुरख अबिनाशी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द बिन तत वजूद प्रेम प्यार भगत भगवान दी हुन्दी रहे हासी, हस्ती विचों हस्ती नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां शब्दी धार जगत लाहवे उदासी, स्वास स्वास इक्को नाम दृढ़ाईआ। सिफ्ती नाम कोटन कोटि देण सलाह, अक्खरां वाली दीनां मज़्बां विच वण्ड वण्डाईआ। सतिगुर शब्द निरअक्खर धार इक मलाह, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा बेड़ा बन्ने लाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद मन्नया नूरी खुदा, खुदी तकब्बर सब दा दए मिटाईआ। जिस दे अंदर राम कृष्न कोटन कोटि गए समा, नाता तत वजूद तुड़ाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द सीस गया झुका, भाणे विच मन्नी सच रज़ाईआ। सो सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक रिहा अख्वा, जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी दीन दुनी दिती उपजाईआ। जिस ने अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो दिती बणा, पवण पाणी हुक्म वरताईआ। रवि ससि धरत धवल ज़िमीं असमान दिते सजा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश करी रुशनाईआ। जो घट घट अंदर बैठा
८६१ डेरा ला, निरगुण हो के सरगुण हुक्म वरताईआ। उह लभ्भे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ किसे ना थाँ, टिल्ले पर्बत समुंद ८६१
१९ सागर डूंघी धार हथ्थ किसे ना आईआ। उह साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर बैठा डेरा ला, जोती जाता पुरख बिधाता १९
हो के बैठा सोभा पाईआ। धुन आत्मक राग सब नूं रिहा सुणा, बिन सतिगुर समझ किसे ना आईआ। सतिगुर पूरा काया मन्दिर चढ़ के, बजर कपाटी परदा लाह के, दीपक जोत जगा के, साचा मेला लए मिलाईआ। दर आ के, घर आ के, दुर दुराडा नेरन नेरा स्वच्छ सरूपी दरस जाए दिखा के, बिन देक्खयां बिन पेक्खयां जन भगतां साचे सन्तां धरवास कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित लोकमात आपणा मार्ग जाए ला के, दीन दुनी जाए बदला के, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार लँघा के, आपणा खेल सदा वरताईआ। सब दा सतिगुर आदि जुगादी एक, दूजा नज़र ना आईआ। जो हर घट रिहा वेख, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। बुद्धी करे बिबेक, ममता मोह चुकाईआ। सच दवारा वखावे इक्को सच्चा देस, सचखण्ड परदा दए उठाईआ। प्रेम प्यार प्रीती अंदर आत्म परमात्म दा खुल्हे भेत, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सतिगुर पाउणा कोई बच्चयां वाली नहीं खेड, बिना हरि किरपा सतिगुर हथ्थ किसे ना आईआ। जो वेखे नेतन नेत, जिस भगत उधारे केती केत, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मालक बण के इक नरेश, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जे मार्ग लभ्भो

सच्चा, सच स्वासी दए समझाईआ। सतिगुर शब्द कदे ना होवे कच्चा, कच्चयां नूं पक्के दए बणाईआ। जन भगतो तुहानूं केहड़ी लोड़ जाण दी मक्का, काया काअबे होए रुशनाईआ। पढ़न दी लोड़ नहीं बब्बा, भब्बा वाली पढ़ाईआ। मन ने सब दे उत्ते पाया दब्बा, सुरती अंदर दिती छुपाईआ। बिन सतिगुर किरपा किसे ना लभ्भा, रोंदी वेखो जगत लोकाईआ। सदा सदा सतिगुर शब्द मालक सब दा हब्बा, जिस शब्द दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी ढोले सर्ब गाईआ। ओहदा कोई आकार नहीं ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी सस्सा हाहा कक्का, अलिफ़ ये वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जो सदा सुहेला इक इकेला चार कुण्ट दहि दिशा फिरे नठ्ठा, दिवस रैण आपणी सेव कमाईआ। सदा सदा सद जन भगतां खातर खोल्हे आपणा हट्टा, हटवाणा हो के आपणा नाम दए वरताईआ। अंदरों सहिज नाल मन दा बाहर कढ्ढ के रट्टा, राह आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अगम्मी ला के सट्टा, सोयां सुत्यां लए जगाईआ। सृष्टी वेखी जगत बहु वास, दीन दुनी नज़री आईआ। सिफ्तां वाली सारे गाउँदे गाथ, अल्ला वाहिगुरू राम नाम ओम जगत पढ़ाईआ। सब दा मालक इक अबिनाश, जो हर घट रखे वास, निरगुण जोत प्रकाश, शब्द सरूप गुणतास, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। जे ओस दे हवाले कर दयो आपणा आप, तुहाडे अंदरों कोट जन्म दे दूर हो जाण पाप, पतित पुनीत दए कराईआ। सतिगुर हो के तुहाडी मेट देवे अन्धेरी रात, सदा चढ़ी रहे प्रभात, आवाज़ इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दा सच्चा रस्ता आदि जुगादि इक्को नज़री आईआ। सतिगुर रस्ता कदे ना देवे बदल, बदली करे जगत लोकाईआ। सचखण्ड दवारे बह के करे अदल, दो जहानां हुक्म वरताईआ। गुरमुखो बिना सतिगुरू किसे कम्म नहीं आउँदा यतन, यथार्थ परमारथ स्वार्थ साचे घर ना कोए मिलाईआ। सतिगुर शब्द लै जाए तुहानूं ओस वतन, जिस विचों होई जुदाईआ। जित्थे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दा इक्को पत्तन, गुर अवतार पैगम्बर बह के प्रभ दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित साचे भगतां सन्तां गुरमुखां सूफ़ीआं आपणा मार्ग राह रहबर हो के काया मन्दिर अंदर आवे दस्सण, दहि दिशा भरम ना कोए भुलाईआ। शब्द गुरू नाता नाल देह, देह शब्द गुरू अख्वाईआ। निरगुण सरगुण लग्गे नेंह, दो जहान वज्जे वधाईआ। जिस वेले तन माटी हो जाए खेह, मढ़ी गोर विच समाईआ। सतिगुर शब्द फेर वी भगतां उत्ते बरख आपणा मेंह, मेघ अमृत आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा कर, देह शब्द जोत मिल के आपणी कार कमाईआ। देह शब्द जोत ना हुन्दा रिश्ता, प्रभ दा सज्जण नज़र कोए ना आईआ। ना कोई हुक्म देंदा जबराईल इज़राईल मेकाईल

असराफ़ील फ़रिश्ता, फ़रिसत हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। एह भेव समझण वाला आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता, जिस वेले चोटी मंज़ल चढ़ के प्रभ दा दर्शन पाईआ। फेर पक्का हो जाए निसचा, जगत वासना सके ना कोए डुलाईआ। जिधर वेखे ओधर एका रूप दिसदा, घट घट रमिआ बेपरवाहीआ।

३ सावण शहिनशाही सम्मत २ अमरीक सिंघ दे गृह पिण्ड रूपो वाली ज़िला अमृतसर

जन भगतां प्रभ देवे साची ओट, चरण कँवल सच सरनाईआ। शब्दी धार अंदरों कढ्ढे खोट, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। भाग लगाए काया माटी साचे कोट, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अंध्यार दए गवाईआ। मन मति बुद्धी दी रहिण ना देवे सोच, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। हउमे हंगता मेट के रोग, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। साचा नाम धुर दा जोग, कपड़ तन ना कोए रंगाईआ। झगड़ा मुका के चौदां लोक, परलोक दा लेखा दए गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा दस्स सलोक, सोहँ करे हक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जन भगतां प्रभ दए सहारा, लोकमात मेहर नज़र उठाईआ। सच्चा दस्से इक किनारा, जिस पत्तन बैठा बेपरवाहीआ। सच बुझाए सचखण्ड दवारा, दरगाह साची नज़री आईआ। जित्थे वसण गुर अवतारा, पैगम्बर प्रभ दर्शन कर कर खुशी मनाईआ। भगतां मिले सच भण्डारा, हरि करता आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर दरवेश मंगण भिखारा, भिक्खक हो के झोली अगे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहार सरनाईआ। जन भगतां देवे सरनगति, साहिब स्वामी दया कमाईआ। अन्तर आत्म उपजे ब्रह्म मत, पारब्रह्म निरअक्खर धार समझाईआ। नाड़ बहत्तर तन वजूद काया माटी ना उबले रत्त, रतन अमोलक नाम पदार्थ वस्त अमोलक झोली पाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्ह के सच, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुन दए उपजाईआ। नाम जैकारा बोल अलख, प्रगट हो आप प्रतख, साख्यात स्वच्छ सरूपी आपणा परदा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म सांझा दस्स के जस, हकीकत विचों प्रगटाए हक, हुक्म नाल हुक्म दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साहिब समरथ, दाता हो के दया कमाईआ। जन भगतां प्रभ देवणहारा दात, दयावान अख्वाईआ। जुग चौकड़ी बदलणहारा समाज, दीनां मज़्हबां लेखा दए मुकाईआ। सति धर्म चलावणहारा रिवाज, ऊँचां नीचां इक्को रंग रंगाईआ। नाम भण्डारा बख्शणहारा दाद, दौलत धुर दी आप वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान दस्से गाथ, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी सुणा आवाज़, सोई सुरत आप उठाईआ। जन भगतां प्रभ खोले सुरती, सति सति नाल मिलाईआ। धार दस्से अगम्मी धुर दी, धर्म दवारा इक जणाईआ। खेल वखाए पूरे सतिगुर दी, जो आदि जुग चौकड़ी नित नवित आपणा खेल वखाईआ। लोड़ रहे ना देवत सुर दी, पैगम्बर पीर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवणहारा साचा वर, साची दात इक वरताईआ। जन भगतां प्रभ देवे नाम अमोलक, अनमुलड़ा झोली पाईआ। आप टिकाऐ काया गोलक, गोला मन लए बणाईआ। करे खेल साहिब अनडोलत, अडुल दए जणाईआ। नाम जणाए बिन रसना जेहवा अनबोलत, धार धार विचों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। जन भगतां प्रभ खोले परदा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुलावे आपणे घर दा, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। रूप वखाए नरायण नर दा, नर हरि आपणी कार कमाईआ। इश्नान कराए साचे सर दा, दुरमति मैल धवाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़दा, चारे खाणी चारे बाणी लेखा जाए मुकाईआ। साची मंज़ल बिन पौड़ी डण्डे चढ़दा, मुकामे हक मिल के आपणा रंग रंगाईआ। बिन नैण बिन नेत्र बिन अक्ख प्रतख प्रभ दा दर्शन करदा, जोती जोत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले सचखण्ड दवारे खड़दा, दरगाह साची लए टिकाईआ। जन भगतां प्रभ देवे घर अगम्म, महल अटल इक सुहाईआ। जित्थे ना जन्मे ना जाए मर, मरन जम्मण विच कदे ना आईआ। ना कोए पवण स्वास लैणा पए दम, तत्तां दा लेखा दए चुकाईआ। ना कोई कूड़ कुड़यार होवे भरम, मनसा मन ना कोए वधाईआ। ना कोई दीन मज़्हब ज़ात पात धर्म, इष्ट तत्तां वाला ना कोए वखाईआ। करे खेल आप निहकर्मी साचा कर्म, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां साचे सन्तां चरण कँवल देवे साची सरन, सरनगति इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा मुका के वरन बरन, आत्म ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। जन भगतां दस्से अन्तर आत्म सति, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धीरज सन्तोख दे के यति, यथार्थ आपणा भेव खुलाईआ। नाम निधाना दे के वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। लख चुरासी विचों लभ्भ, परदा ओहला दए उठाईआ। जन्म कर्म दा लेखा मुका के सब, लख चुरासी गेड़ा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अमृत झिरना झिराए कँवल नभ, बूंद स्वांती मुख पवाईआ। जन भगतां देवे बूंद सवांत, अमृत रस इक चखाईआ। नज़री आए इक इकांत, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जो वेस वटाए जुग चौकड़ी बहु बिध भांत, भावना वेखे जगत लोकाईआ। कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी रात, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। चार वरन

८६४
१६

अठारां बरन नौं खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को दस्से ज़ात, धुर दी करे सच पढ़ाईआ। सब दा लहिणा देणा कर्म धर्म लए वाच, वाचक कोई बचन ना सके अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाल आपणा करे इतफ़ाक, वफ़ात अंदरों दए कढाहीआ। जन भगतां देवे इतमीनान, तसल्ली नाल समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। साची सिख्या देवे इक भगवान, परम पुरख आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन मंत्र धुर दा इक्को गाण, गावत गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साजण देवे साचा दान, दाता हो के आप वरताईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुरैण सिँघ दे गृह जंडयाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मेरा मालक पारब्रह्म, आदि जुगादी एकँकारा इक अखवाइंदा। जिस दवारे होवे मेरा जरम, जन्म मरन गेड़ ना कोए रखाइंदा। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बख्शे इक्को सरन, दूजी ओट ना कोए तकाइंदा। थिर घर दवारे मेरा उपजे कर्म, कांडा विच हिस्सा ना कोए जणाइंदा। खेल कराए करनी करन, करता पुरख हुक्म वरताइंदा। झगड़ा मुकावां वरन बरन, ज़ात पात दीन मज़्हब विच कदे ना आइंदा। तन वजूद मेरा जाणे कोए ना माटी चर्म, हड्ड मास नाड़ी रंग ना कोए रंगाइंदा। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार रखां सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। सति कहे मेरा जाणे ना कोए सरूप, जग नैणां नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी अन्धेरा अन्ध कूप, कलयुग त्रेता द्वापर आप हंढाहीआ। झगड़ा मुकावां जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया माया ममता मोह चुकाईआ। डंका वजावां चारों कूट, नाम निधाना कर शनवाईआ। लख चुरासी विचों सन्त सुहेले लभ्भण धुर दे पूत, सपूत आपणा परदा लाहीआ। महल अटल वखा के उच्च अरूज, फर्श अर्श तों परे करां रुशनाईआ। मालक हक वेख महबूब, मुहब्बत विच मिलाईआ। लेखा मुका के एका दूज, एका घर दयां समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म आवे साची सूझ, मन वासना चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति कहे सच इक दृढ़ाईआ। सति कहे सच महल्ला, प्रभ चरण मिले सरनाईआ। जुग चौकड़ी फिरां इक अकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पावां सार जलां थलां, डूंग्घे सागर खेज खुजाईआ। वेख वखावां चोटी पर्बत टिल्ला, पहाड़ उजाड़ वेख वखाईआ। जन भगत फड़ा के अन्तर आत्म पल्ला, पाब्रह्म ब्रह्म मेला मेलां सहिज सुभाईआ। धाम वखावां इक निहचल अटला, घर विच घर वज्जदी

रहे वधाईआ। साची धार अंदर रला, बाहरों नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सच आप वरताईआ। सति कहे प्रीतम एकँकार, पुरख अकाला नज़री आईआ। मेरा नाता नाल परवरदिगार, जलवागर नूर रुशनाईआ। मुकामे हक मेरा सिक्दार, मालक बैठा धुर दरगाहीआ। जो जुग चौकड़ी हुक्म देवे वारो वार, गुर अवतार पैगम्बरां कर पढ़ाईआ। जिस दा चारे खाणी चारे बाणी सिफ्तां नाल करे इज़हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी निक्के निक्के ढोले गाईआ। सरगुण हो के पावे कोई ना सार, बेअन्त कह के पल्लू सर्ब छुडाईआ। नंन्हे नंन्हे बच्चे विच संसार, शब्दी गुर हुक्म नचाईआ। लख चुरासी वेखे विगसे वेखणहार, घट घट बैठा सोभा पाईआ। सो नाता जोड़ मेरा संसार, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम वेख दुष्ट दुराचार, मन विकार खोज खुजाईआ। दृष्टी अंदर सृष्टी हाहाकार, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। अठसठ तीर्थ रोंदे धाहां मार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर, सति कहे मेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। मैं दरवेश दर ठांडे मंगां भिखार, सचखण्ड निवासी अगे झोली डाहीआ। कर किरपा मेरे करतार, कुदरत दे मालक कलयुग अन्त ना कर बेवफ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब साचा मिले ना किसे प्यार, मुहब्बत विच जगत ना कोए बणाईआ।
८६६ १९ काग़ज़ कलम शाही जो तेरा लिख लिख थक्की ब्यान, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। शरअ मेटे ना कोए शैतान, शरीअत विच लड़े लोकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, मार्ग आपणा दे दृढ़ाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। भविख्तां विच बणाउँदे गए एतबार, सलाहकार बण के प्रभ दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। सति कहे मैनूं अन्तिम होया दुःख, कलयुग कूड़ वज्जी वधाईआ। साचा दिसे ना कोए मनुख, मन ममता ना कोए मिटाईआ। जनणी सफ़ल ना होवे कुक्ख, लख चुरासी जण जण थक्की माईआ। गेड़ा चुक्के ना उलटा रुक्ख, आवण जावण पन्ध ना कोए मुकाईआ। दीन दुनी बदले कोई ना रुख़, सति धर्म ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए लुक, सनमुख हो के दरस ना कोए दिखाईआ। कर किरपा अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। दीन दुनी दा बदल दे रुख़, करवट लै के दृष्टी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहंञणी कर रुत्त, मौला हो के आप महकाईआ। सति कहे मैं आउँदा रिहा जुग चार, नित नवित वेस वटाईआ। खेल वेखदा रिहा विष्न ब्रह्मा शिव विच संसार, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। लहिणा देणा जाणदा रिहा गुरू अवतार, पैगम्बरां नाल मिल के सुअम्बर जगत रचाईआ। भगतां नाल मिल के हुन्दा रिहा

खुआर, जगत समाज धक्का रिहा लगाईआ। बिन अक्खां नेत्र रोंदा रिहा ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। साची भिच्छया मंगदा रिहा अगम्म अपार, अलख अगोचर अगे झोली डाहीआ। किरपा कर किरपा निध सिरजणहार, सिर सिर रिजक सबाईआ। मेरा नाता जोड़ सच दवार, दर दरबार मिले वड्याईआ। डंका वज्जदा रहे सदा जुग चार, चौकड़ी सके ना कोई बदलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा विछोड़ा होवे ना विच संसार दूजी वार, वारता पहली दे दुहराईआ। कागद कलम ना लिखणहार, शाही चले ना कोए चतुराईआ। बिना सति दे सति पुरख तेरी चले कोई ना कार, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। बिना धर्म दे धरनी धौल ना होवे पार, धरनी धरत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दे वड्याईआ। सति कहे मैं प्रभू लोकमात तेरा बणया सुता, कलयुग अन्तिम लवां अंगड़ाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुता, पति परमेश्वर इक अख्वाईआ। उज्जल कर मात मुखा, दुरमति मैल धवाईआ। तेरे चरण कँवलां सीस जगदीश झुका, इष्ट देव इक्को ल्या मनाईआ। मेरा कूड़ी क्रिया नालों पैंडा मुका, मुकम्मल आपणा रंग चढ़ाईआ। मैं रहिण ना देवां कोई दुक्खा, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। इक दिसावां तेरी ओटा, ओड़क तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सति कहे प्रभू मेरे सतिवन्त, सति सतिवादी तेरी धार नज़री आईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानां कन्त, कन्त कन्तूहल तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मोह कर दे अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। लख चुरासी दुखी होया जीव जंत, जागरत जोत करे ना कोए रुशनाईआ। गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। बोध अगाधा बणया कोई ना पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरानां दी करदे सर्ब पढ़ाईआ। बिन तेरी किरपा पारब्रह्म पति परमेश्वर कोई बणया ना धुर दा सन्त, सतिगुर लोकमात नज़र ना आईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, गुर अवतार पैगम्बर कह के अन्त कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, वारस हो के होणा अन्त सहाईआ। सति कहे मेरे सति सतिवादी श्री भगवान, भगवन मेहर नज़र उठाईआ तेरे नाम दा झुलावां निशान, निशाने सारे दयां गवाईआ। लख चुरासी दा इक्को जणावां काहन, गिणती वालीआं गोपीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। सब घट रम्यां दस्सां राम, बनवास वाला राम जिस नूं सीस झुकाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद करदे सलाम, पैग़ाम सुण के ख़ुशी मनाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द करदे प्रणाम, सतिनाम गा के फ़तिह डंका इक वजाईआ। जो सचखण्ड निवासी मालक दो जहान जहालत कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। साचा दिसे ना किसे मकान, काया मन्दिर अंदर चढ़ के प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ।

बाहरों तत्तां वाले दिसदे सर्ब इन्सान, अंदर भरया कूड़ शैतान, शरअ दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती सति धर्म सतिजुग सति पुरख सति सतिवाद दे दे सच्चा दान, दानशमंद लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुलज़ार सिँघ दे गृह जंडयाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मेरी अरदास, मांगत हो के मंग मंगाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरी इक सरनाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साची मिली किसे ना दात, तेरा नाम ना कोए वरताईआ। चार जुग दी पढ़ पढ़ थक्के गाथ, गहर गम्भीर मिले ना कोए सरनाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए आख, भविख्तां विच समझाईआ। सो निरगुण नूर होया प्रकाश, परदा ओहला दए चुकाईआ। सच दवारे दे निवास, मिले माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कर घात, शब्द खण्डा इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा दे जणाईआ। सति कहे प्रभ बख्श दे सन्तोख, सृष्टी दृष्टी दे बदलाईआ। साचे नाम दी दे मोख, मुफ्त झोली आप भराईआ। चरण कँवल बख्श ओट, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। नाम निधान ला चोट, सुत्यां लै उठाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढ खोट, कुकर्म दे बदलाईआ। नाम खुमारी दे मदहोश, मधुर धुन इक उपजाईआ। निज नैण खोल्ह लोच, लोचा पूर कराईआ। कूड़ी मेट दे अंदरों सोच, सुच संजम आप प्रगटाईआ। शब्द ज्ञान दे बोध, बुध बिबेक दे बणाईआ। हउमे रहे कोई ना रोग, चिन्ता देणी चुकाईआ। आत्म परमात्म मिलण दा दस्सणा इक्को जोग, जुगती अवर कम्म किसे ना आईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर कर मोहत, मोह इक्को इक रखाईआ। सति कहे साची दे दे धीर, धर्म इक दृढ़ाईआ। कलयुग मेट लकीर, कूड़ी नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना सन्त फ़कीर, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। भगत होए ना कोए दिलगीर, सांतक सति दे कराईआ। शरअ कट कूड़ ज़ंजीर, चीर अंदरों दे बदलाईआ। तेरी समझ ना सके कोए तदबीर, तकदीर लेखा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड्ड दाते गहर गम्भीर, ग़रज़ सब दी वेख वखाईआ। सति कहे मेरे धुर दे काहन, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच दवारे आ महिमान, मेहरवान फेरा पाईआ। इक्को नाम दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। तूं सब घट जाणी जाण, लख चुरासी रिहा समाईआ। तेरा हुक्म सच्चा फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार तेरा ढोला गाण, पैगम्बर

कलमा कह के कामल मुर्शद अख्वाईआ। तूं ना हिन्दू ना मुस्लिमान, जलवागर नूर रुशनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचे मन्दिर वस मकान, काया काअबे सोभा पाईआ। जित्थे मिले इक्को आण, श्री भगवान नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भाग लगा के काया गढ़ बंक, राउ रंक इक्को देणा वखाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सन्तोख सिँघ दे गृह जंडयाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मैं आया मंगण, सति दवारे सीस निवाईआ। सति सतिवादी चाढ़ रंगण, हरि करते दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी ला अंगण, श्री भगवान दे वड्याईआ। सच प्रकाश कर नूरी चन्दन, कलयुग अन्ध अन्धेर गवाईआ। चार वरनां अठारां बरनां दस्स इक्को बन्दन, इक्को नाम दे समझाईआ। निज आत्म रस दे अगम्मी परमानंदन, निजानंद वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया कट बन्धन, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। सति कहे मैं होया मंगता, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अबिनाशी सति सतिवादी गढ़ तोड़ हउमें हंगता, द्वैती अंदरों बाहर कढाहीआ। झगड़ा मुका दे भुक्ख नंग दा, ओढण सब दे सीस टिकाईआ। नगारा वजा दे आपणे मृदंग दा, मर्द मर्दाने आपणा हुक्म वरताईआ। वेख खेल विच वरभण्ड दा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के वेख वखाईआ। सति कहे मैं होया दरवेश, दर घर साचे अलख जगाईआ। तूं आदि जुगादि परम पुरख रहें सदा हमेश, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। मंगते वेखे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर सीस झुकाईआ। गुर अवतार करन आदेस, पैगम्बर सजदयां विच सीस रहे झुकाईआ। कलयुग अन्तिम बदल दे रेख, कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। अंदर वड़ के दे साचा भेत, परदा ओहला रहे ना राईआ। जन भगतां कर साचा हेत, परम पुरख तेरी इक सरनाईआ। नज़र आवें नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी जगत पित जगदीशर जागरत जोत कर रुशनाईआ। सति कहे मैं आया दर दरबार, नाता कूड़ा जगत तुड़ाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, निरगुण आसा पूर कराईआ। वस्त अमोलक झोली डार, डर भउ रहे ना राईआ। मार्ग लावां इक संसार, संसा रोग दे चुकाईआ। चार वरनां दस्सां इक प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लड़े कोए ना राईआ। साचा मन्दिर इक वखाल, जित्थे वसण शाह कंगाल, राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं दाता दीन दयाल, दया निध अख्वाईआ। साचा धर्म सची धर्मसाल, काअबा इक्को दे प्रगटाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत दे बाल, बुढे बाले इक्को नज़री आईआ।

आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद वेस वटाईआ। जगत क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक समझाईआ। सति कहे सदा धर्म मेरे नाल, बिना सति तों धर्म धरनी उत्ते सोभा कदी ना पाईआ।

६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर

सति कहे प्रभ किरपा धार, सो पुरख निरँजण तेरी आस रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होया अंध्यार, हरि पुरख निरँजण तेरा भय ना कोए मनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर हाहाकार, आदि निरँजण तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। ऊँच नीच राउ रंक करन पुकार, अबिनाशी करते तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। दीन दुनी हुंदी दिसे खुआर, श्री भगवान तेरा सच निशान ना कोए झुलाईआ। आत्म परमात्म मंज़ल दिसे महा दुष्वार, मन वासना चढ़ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा दे दरसाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरी ओट, कलयुग अन्त अन्त रखाईआ। बिन तेरी किरपा प्रकाश होवे ना निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। झगड़ा प्या वरन गोत, दीन मज़ब करे लड़ाईआ। तेरे नाम दी करे कोई ना सोच, जगत विद्या होई हल्काईआ। साची मंज़ल सके कोई ना पहुंच, कोटन कोटि साध सन्त भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा नाम निधाना श्री भगवाना कोई ना सके घोख, रसना जेहवा बत्ती दन्दां पढ़ पढ़ भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दे दरसाईआ। सति कहे प्रभ किरपा कर, पुरख अकाल तेरी आस रखाईआ। कलयुग भरमे भुल्ले नारी नर, नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। मन वासना भाउँदे दर दर, दरगाह साची बण दरवेश अलख ना कोए जगाईआ। अमृत आत्म नहाए कोई ना सर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ भज्जण चाँईं चाँईंआ। काया तोड़े ना कोई गढ़, माया ममता मोह ना कोए मिटाईआ। साचा दर्शन सके कोई ना कर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सारे रहे पढ़, बोध अगाध नाम निधान धुन आत्म राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक दे साचे घर, काया मन्दिर अंदर वजदी रहे वधाईआ। सति धर्म कहे मैं वेख्या दीन दुनी, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। साचा दिसे ना कोए ऋषी मुनी, सति रूप ना कोए बदलाईआ। साची उपजे ना किसे अगम्मी नाद धुनी, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। सच दवारे बणे ना कोए वड्डा गुणी, नाम निधाना झोली कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा चारे खाणी लख चुरासी सृष्टी छाणी पुणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म बदली किसे ना कूणी, हँ ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग धरनी धर, धवल रही कुरलाईआ। सति कहे प्रभ मेरे परम पुरख आदि, नमों कह के सीस झुकाईआ। तूं वेखें खेल जुगादि, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। तेरे नाम दा वज्जे कोए ना नाद, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। तेरे प्रेम अंदर होए ना कोए विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा आप ना कोए मिटाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द तैनूं करे कोई ना याद, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। काया खेड़ा सब दा हुंदा वेख्या बरबाद, महल अटल घर विच घर नूर करे ना कोए रुशनाईआ। साची वस्त अमोलक नाम निधान देवे कोए ना दाद, दास्तान पिछली सारे रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम दी अगम्मी दे आवाज, जगत सरवणां दी लोड़ रहे ना राईआ। सति कहे मेरे साहिब सुल्तान, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया मेट निशान, सति निशाना इक झुलाईआ। जिस नूं लभ्भण सर्ब इन्सान, हैवान भेत कोए ना पाईआ। बुद्धी अंदर दे ज्ञान, मनमति कूड़ी बाहर कढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सिख्या दे जहान, जहालत कूड़ रहे ना राईआ। मन कामना मेट अभिमान, चरण ध्यान इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट वस्या नज़री आ सब नूं राम, रहमत विच रैहम कर रहमत आप कमाईआ। सति कहे प्रभू मिटा दे चिन्ता सोग, हरख दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्मा परमात्मा मिलण दा सच्चा दस्स दे जोग, तन भबूती ख़ाक ना कोए रमाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर डगमगाईआ। सुहंञणा कर काया बंक साचा कोट, कोटी जन्म दा लेखा दे चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरी गोत, दूजा वरन ना कोए रखाईआ। जित्थे बुद्धी दी कोई ना पुज्जे सोच, बिना सोच समझ तों आपणा नाम दे दृढ़ाईआ। सृष्टी दा दृष्टी अंदर कट दे रोग, हरि सज्जण लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दे दरस अमोघ, अग्नी तत ना लागे राईआ। सति कहे मेरे साहिब स्वामी, सर्ब गुणवन्त तेरी बेपरवाहीआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तेरी महिमा तेरी बाणी, तेरा ढोला गाईआ। आवण जावण तेरी खेल महानी, जुग चौकड़ी आपणा वेस वटाईआ। तेरे चरण कँवल दो जहानां सच निशानी, दूजा निशाना नज़र कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा पारब्रह्म ब्रह्म मिल के बणया ना कोए ज्ञानी, अलिफ़ ये कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी कर मेहरवानी, महव आपणा भेव खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सोहणा चाढ़ दे रंग, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। आपणे नाम दा वजा इक मृदंग, मर्द मर्दाना हो के कर शनवाईआ। आत्म सेजा सुहा सुहञ्जणा पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। बिन पौड़ी डण्डे जाणा लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। तेरा शब्द अगम्मी इक

तुरंग, तुरीआ पद तों अगे देणा पुचाईआ। जित्थे लेखा रहे ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म इक्को नज़री आईआ। निहकर्मी हो के करना आपणा कम्म, कर्म कांड दा लेखा देणा चुकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित गुर अवतार पैगम्बर सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर तेरा मन्नदे गए इक्को सच्चा धर्म, बिना सति धर्म स्वार्थ ना कोए बणाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुरैण सिँघ दे गृह पिण्ड जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ वेला कर सुहञ्जणा, सतिजुग साची बणत बणाईआ। चरण धूढ़ करा आपणा मजना, कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धवाईआ। नाम निधान नेत्र पा अंजणा, नेत्र लोचन होवे रुशनाईआ। साक सैण नज़री आ धुर दा सज्जणा, सगला संग निभाईआ। भेव अभेद खुल्हा अगला, परदा रहे ना राईआ। कलयुग जीव वेख जग बप्पड़ा बगला, माया ममता मोह हल्काईआ। हउमे कीता पगला, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दे समझाईआ। सति कहे प्रभ सृष्टी दे आपणी मत, कलयुग मति रहे ना राईआ। नाड़ी नाड़ ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। घट घट अंदर वसा दे सच, जूठ झूठ बाहर कढाहीआ। वस्त अमोलक दे दे हत्थ, नाम भण्डारा इक वरताईआ। बोध अगाध कथा कहाणी सुणा अगम्मी गाथ, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणा दे सगला साथ, दो जहानां वज्जदी रहे वधाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग मेट रैण अन्धेरी रात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सौग़ात इक वरताईआ। सति कहे मैं मंगा सच दवार, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिजुग साची दस्स धार, सति सतिवादी परदा दे उठाईआ। भगत वछल बण गिरधार, सन्त सुहेले आप जगाईआ। गुरमुख गुर गुर कर ख़बरदार, आलस निंद्रा रहे ना राईआ। सिख़ साजण कर प्यार, साहिब स्वामी मेला मेल सहिज सुभाईआ। राह तक्कदयां बीते जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त गया विहाईआ। भविख्तां विच गाउँदे गए सुणाउँदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर कलमयां विच शनवाईआ। सति धर्म दा साचा कर विवहार, विवहारी हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग देणा रंगाईआ। सति कहे प्रभू ज़ात पात रहे ना दीन मज़्हब, धर्म इक्को दे जणाईआ। तेरी आत्म परमात्म तेरे विच होवे जज़ब, वक्खरी दए ना कोए वड्याईआ। सच दवारे देणा साचा अदब, बख्शणा माण धुर सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर झुकदे तेरे कदम, कदीम तों रीती तेरी चली आईआ। तेरे नाम दा ढोला सोहला गीत गाउँदे नज़म, मंत्रां विच तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देणा प्रगटाईआ। सति कहे प्रभ साचा मार्ग देणा ला, चार कुण्ट इक्को नाम ध्याईआ। पुरख अकाल दीन दुनी दा बण मलाह, मालक हो के वेख वखाईआ। आत्म नाल परमात्म हो के कर सलाह, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। गुरू अवतार पैगम्बर चार जुग दे पिछले बणा गवाह, शहादत तेरी देणी भुगताईआ। सच दवारा हरि निरँकारा इक वखा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ जिस दी याद रहे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ चौथे युग दे दे साची सिख्या, सृष्टी विच इष्टी दे बदलाईआ। सतिजुग पूरी कर इच्छया, इच्छत हो के मंग मंगाईआ। तूं आदि जुगादि देवणहारा भिच्छया, भिक्खकां झोली देणी भराईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर तेरा भविख्तां विच लेखा लिख्या, सो पूरा देणा कराईआ। तूं मालक प्रितपालक पारब्रह्म ब्रह्म मिल के कदे ना जावें भिटया, वरन गोत नज़र कोए ना आईआ। बिन ज्ञान नेत्र जगत अक्खां नाल किसे ना दिस्या, लभ्भदी वेखी कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा देणा सुहाईआ। सति कहे प्रभ लेखा मुका दे चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म हो के परमात्म सारे आवण तेरी सरन, सरनगति इक्को दे जणाईआ। चरण कँवल तेरे लख चुरासी जीव जंत तरन, जम की फाँसी देणी तुड़ाईआ। जन भगत हो के तेरे नाम दा ढोला पढ़न, चौदां विद्या झगड़ा देणा मुकाईआ। घर विच घर गृह विच गृह हरि के मन्दिर साचे चढ़न, ईड़ा पिंगल सुखमन जगत वासना नौ दुआर अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देणा प्रगटाईआ। सति कहे प्रभ लख चुरासी समझा दे दीन दुनी, दाअवे नाल जणाईआ। बिन प्रभ किरपा कोए ना बणया वड्डा गुणी, बिन गहर गम्भीर बेनज़ीर दरस कोए ना पाईआ। तुध बिन जगत पुकार किसे ना सुणी, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साची उपजे ना किसे धुनी, धुन आत्मक राग ना कोए शनवाईआ। ख़ाली दिसी काया कुंनी, कमलापति धरनापत धरनी धरत धौल धवल उपर तेरी वज्जे ना कोए वधाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त सब कुछ तेरे हथ्थ, तूं साहिब स्वामी समरथ, गुर अवतार पैगम्बर गा के गए तेरी गथ, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल काया सची धर्मसाल आ के वस्स, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के सदा वज्जदी रहे वधाईआ।

६०३
१६

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सौदागर सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मेरी अरज़ोई, आजज़ हो के सीस निवाईआ। तेरे नाम दी दरोही, बौहड़ी बौहड़ी हाल दुहाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई, कूक कूक सुणाईआ। प्रभू बिन तेरे दर भगतां मिले किते ना ढोई, सहारा अवर ना कोए वखाईआ। अमृत रस आपणा चोईं, निझर धार वहाईआ। सृष्ट उठावीं सुती सोई, शब्दी शब्द जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तकाईआ। सति कहे मेरी अरज़, आजज़ हो के रिहा जणाईआ। जन भगतां पूरी करनी ग़रज, ग़ज़ल आपणा नाम सुणाईआ। पूरब लहिणा देणा कर्ज़, पिछला लेखा हथ्थ फड़ाईआ। दीनां दुखियां वण्डाउणा दर्द, नाता दुनी तुड़ाईआ। तेरा खेल तक्कां असचरज, अचरज देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विछोड़ा मेटणी मर्ज़, गुरमुख मरीज़ां बण तबीब तबा देणी बदलाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ किशन सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ सदा समरथ, सर्ब व्यापी नज़री आईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स, दर्शन तेरा करे लोकाईआ। अमृत अगम्मा दे रस, झिरना धुर दा आप झिराईआ। आत्म गावे तेरा जस, परमात्म वज्जे वधाईआ। सदा खुल्ही रख अक्ख, नेत्र नैण रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति कहे प्रभू आपणे नाम दा दे स्वाद, अनरस इक्को इक प्रगटाईआ। सच स्वाल दा दे जवाब, धुर दी मंग मंगाईआ। बिन अक्खरां तेरी किताब, चार युग ना किसे सुणाईआ। पढ़या कोई ना बण अहिबाब, बाब हिस्सा ना कोए दृढ़ाईआ। सब करदे गए अदाब, सर सिर झुकाईआ। किरपा कर आप महाराज, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। सतिजुग धारा सच धर्म बदल दे रिवाज, रवादार विच नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सति कहे मैं वेखणा समां, सच ध्यान लगाईआ। किस बिध हुक्म मिले नवां, नव नौ वज्जे वधाईआ। मैं भगतां संग रवां, सगला संग बणाईआ। नाम दृढ़ावां सच दमां, दामनगीर हो के ज़ामन दयां वखाईआ। भाग लग्गे काया माटी चम्मां, चमन गुलशन इक महकाईआं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा करना आपणा कम्मा, कामल मुर्शद करनी आप कमाईआ।

सति कहे प्रभ मार्ग ला दे सच, कलयुग कूड़ा दे मिटाईआ। हर घट अन्तर उपजे ब्रह्म मत, शब्दी धुन वज्जे शनवाईआ। मन वासना रहे ना तत्व तत, लोभ हँकार ना कोए वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स साची गथ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन कर पढ़ाईआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्ह अक्ख प्रतख, मिल साहिब गुसांईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर पीर गए दस्स, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शब्द भविक्ख दृढ़ाईआ। सो खेल कर हो प्रगट, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक समझाईआ। सति कहे प्रभ चार वरन दे ज्ञान, सृष्ट सबाई तेरा ढोला इक्को गाईआ। इक्को पुरख अकाल चरण कँवल होवे प्रणाम, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक्को सजदा होवे सलाम, अदब नाल इक्को सीस झुकाईआ। इक्को कलमा दस्स कलाम, कायनात हक पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे सिफ्ती कोटन नाम, महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गाईआ। तूं आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक भगवान, पतिपरमेश्वर बेपरवाह अख्वाईआ। सति धर्म दा दो जहान झुला निशान, दीन मज़्ह्ब दा झगड़ा रहे ना राईआ। साची मंज़ल हकीकत वाली दस्स मुकाम, असल परदा आप उठाईआ। अनहद शब्द वजा सची धुनकान, अनादी धुन आप उपजाईआ। नूरी जोत जगे महान, घट भीतर होए रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आएं नौजुआन, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। सति धर्म लगा विच जहान, जहालत कूड़ी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सति कहे प्रभ मेरे गहर गम्भीर, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दे धीर, सति सन्तोख इक समझाईआ। हउमे हंगता माया ममता कूड़ी अंदरों कढ्ढ पीड़, जगत विकार ना कोए सताईआ। अमृत रस निझर धार बख्श आपणा सीर, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़ के बैठा कबीर, कबरां दा लेखा दयां मुकाईआ। सो बेनज़ीर लाशरीक आपणी दस्स हक तस्वीर, रूप रंग रेख नज़र कोए ना पाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, राउ रंक ना कोए वड्याईआ। नज़र ना आए शाह हकीर, दर दरबारा इक दरसाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मंज़ल चढ़ अख़ीर, महबूब मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सांतक सति बख्श साची धीर, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। सति धर्म कहे लोकमात दिसे अन्धेरा, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। जीव जंत करदे मेरा मेरा, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कोई नाउँ ना लए तेरा, सचखण्ड दवारे बह के खुशी ना कोए मनाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी

जीवां जंतां प्या गेड़ा, झेड़ा चारे खाणी विच पवाईआ। करे हक ना कोए नबेड़ा, गुर अवतार पैगम्बर जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अबिनाशी घट निवासी क्यों लाई देरा, निरगुण हो के निरवैर निराकार कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच चला धुर दा बेड़ा, बन्धन कूड़ रहे ना राईआ। सति कहे प्रभ मंगां इक्को मंग, धुर दरबारे आस रखाईआ। तेरा नाउँ मेरे होवे संग, सगला संग निभाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन गगनंतरां आवां लँघ, ज़िमीं असमानां चरणां हेठ दबाईआ। चार कुण्ट इक्को पुरख अकाल वजावां मृदंग, दूजा डंका ना कोए शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर के मंग, जो भविख्तां विच गए लिखाईआ। योद्धे सूरबीर मर्दाने सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले गुरू गुर चेले ला आपणे अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। सति कहे मेरे प्रभू पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी ओट रखाईआ। सचखण्ड दवारा तेरी सच्ची धर्मसाल, थिर घर बैठा सोभा पाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए चतुराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणे ना कोए दलाल, त्रै पंज नाता जोड़ ना कोए वखाईआ। सच सपूत बिन रंग रूप शब्दी धार तेरे लाल, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा देणा मुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति धर्म कहे मेरा मन्न स्वाल, स्वाली हो के तेरे अगे झोली डाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया साचे सन्तां कीता कंगाल, वस्त अमोलक हथ्थ किसे ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा टिल्ले पर्बत समुंद सागर तैनूं रहे भाल, खोजत खोजत भज्जण वाहो दाहीआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर बिन तेरे मुरीदां कोई ना पुच्छे हाल, हालत बिगड़ी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, दर दवारे सीस निवाईआ। सति कहे प्रभू वेख कलयुग कूड़ कुड़यार, सच नज़र कोए ना आईआ। जूठ झूठ डंका रिहा मार, धर्म दवारे पए दुहाईआ। मन्दिर शिवदवाले मठ्ठ करन पुकार रोवण धाईं मार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ कोई ना पावे सार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती खुल्ही मेंढी भज्जी वाहो दाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान पढ़ पढ़ थक्का सर्ब संसार, शब्द सार सुरती सुरत ना कोए उठाईआ। सचखण्ड दवारा किसे नज़र ना आया विच जहान, शब्द चढ़या ना कोए बबान, मंज़ल मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। बोध अगाधा किसे हथ्थ ना आया ज्ञान, निरअक्खर करे ना कोए परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म कहे मेरे पुरख अबिनाशी, मेरी आसा इक तेरे अगे रखाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण जोत करें प्रकाशी, प्रकाशवान हो के वेखें सर्ब लोकाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर तेरे दासण दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। मण्डल मण्डप पाउँदे रासी, गोपी काहन खेल खिलाईआ। तेरी समझ ना सक्या कोई वरन बरन वाली ज़ाती, रूप रंग रेख ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि पुरख अबिनाशी करते परवरदिगार सांझे यार धुर दी दे अगम्मी दाती, दातार हो के दयावान आप वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ वेख मार के झाती, परदा ओहला आप उठाईआ। सच दुआर दा दिसे कोई ना साथी, अधवाटे बैठी जगत लोकाईआ। कोटन कोटि रसना जेहवा बणे पाठी, काया पाठशाला अंदर तेरा हरि नाम ना कोए टिकाईआ। भाग ना लग्गा किसे माटी काची, कंचन गढ़ रूप ना कोए बदलाईआ। मनुआ मन सब दा होया आकी, ख़ाकी तन पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। बिन तेरे धुर दा बणया कोए ना साकी, नाम प्याला दीन दयाला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे पूरी कर आसी, सति सति कह के तैनूं सीस निवाईआ। सति कहे मेरा नाउँ रख सतिजुग, सति धर्म दयां समझाईआ। भगत सुहेला मात चुग, चुग़ली निदिंआ विच्चों बाहर कढाहीआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के भेव खुल्हावां गुझ, परदा दयां उठाईआ। साहिब समरथ तेरी धार जावण बुज्झ, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुक्के चौदां लोक, चौदां तबक लेखा रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावण सच सलोक, सोहँ ढोला इक समझाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सन्त मिल के साची जोत, निरगुण सरगुण भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआर तेरे बन्दन करां कोट, कोटी कोटन वार सीस निवाईआ। सति धर्म कहे मेरे साहिब महबूब, मुहब्बत विच तेरी बेपरवाहीआ। अर्श फर्श तों उपर तेरा अरूज, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। मंज़ल दस्स हक हदूद, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा सति धर्म देणा खुल्हाईआ। सति धर्म कहे मेरी प्रभू इक्को अर्ज़ी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। दुनिया तैनूं मन्नदी फर्ज़ी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बिना दकुखां तों कोई ना बणदा दर्दी, दीदा दानिस्ता दरस कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम वेखां अन्धेर गर्दी, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत रसना जेहवा अक्खरां वाला गीत पढ़दी, निरअक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सार पा जीव जंत साध सन्त घर घर दी, गृह गृह परदा दे उठाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ बलकार सिंघ दे गृह पिण्ड ठठीआं ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ खोल् परदा, पढ़न लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्ध अन्धेर मिटे कूड़ कुड़यार गर्दा, गर्दश माया दे मिटाईआ। कोटां विच्चों जन भगत पल्लू तेरा फड़दा, गुरमुख धुर दा नज़री आईआ। कलयुग जीव जंत जन जाए रुढ़दा, शौह दरया बेड़ा पार ना कोए लँघाईआ। साक सज्जण सैण कोई साथ ना मिले धुर दा, सचखण्ड दुआर ना कोए बहाईआ। लेखा जाणे ना कोई अनन्दपुर दा, पुरी अनन्द क्यों होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सति कहे प्रभ तेरा वसे पुर अनन्द, आनंद आनंद विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा नाम दस्स छन्द, संसा रोग दए गवाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दना इक्को दे समझाईआ। जन्म कर्म दा मिटे पन्ध, आवण जावण लख चुरासी गेड़ा दे कटाईआ। तेरा चरण सरोवर मिले साची गंग, अठसठ पन्ध देणा मुकाईआ। आत्म सेज सुहाउणी सुहञ्जणी पलँघ, घर विच घर डेरा लाईआ। अन्त काल जम ना देवे दंड, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। तेरा वेखां इक्को परमानंद, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल साहिब बख्शंद, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ पसारा, पासा सके ना कोए बदलाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अंध्यारा, तेरा नाम ना कोए रुशनाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गवारा, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साचा दिसे ना कोए दरबारा, नौ दवारे पन्ध ना कोए चुकाईआ। अनहद शब्द सुणे ना कोई सच्ची धुन्कारा, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। निर्मल दीआ बाती जोत ना होवे उज्यारा, घर ठांडे ना कोए रुशनाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले ना किसे निरँकारा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत खोजण जगत राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दस्स इक दवारा, जित्थे वज्जे हक वधाईआ। सति कहे मेरे परम पुरख परमात्म, पीआ प्रीतम तेरी ओट तकाईआ। खेल वेख अगम्मी आपणा बातन, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। परवरदिगार पति परमेश्वर पुरख अकाल तैनूं आखण, गुर अवतार पैगम्बर जुग जुग तेरा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर देणा दृढ़ाईआ। सति कहे मैं पैगम्बर वेखे गुर अवतार, लोकमात ध्यान लगाईआ। खेल वेख्या सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। खाणी बाणी करदी वेखी पुकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरा ढोला गाईआ। तूं आदि जुगादी इक इकल्ला एकँकार, अकल कलधारी तेरी सरनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म बणया रिहा मीत मुरार, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त मेट

६०६
१६

धूआँधार, धरनी धरत धवल धौल कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुरमुख भगत भगवन्त दे उठाल, सुरती शब्दी आप जगाईआ। झगड़ा मुका शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा एका वर, वाहवा तेरे नाम वड वड्याईआ। सति कहे प्रभ साचा नाम दे चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को करन पढ़ाईआ। दूजा रहे ना कोई बरन, भरम कूड़ा देणा भन्नाईआ। भाग लगा काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी विच्चों बाहर कढाहीआ। मानव मानुख मानस इक्को धर्म, धर्म दा परमारथ स्वार्थ विच देणा संग बणाईआ। नित नवित जो करदा रिहा प्रन, कौल इकरार पूरा देणा कराईआ। जन भगतां बख्श दे आपणी सरन, जगत नाता देणा तुड़ाईआ। गुरमुख तेरा ढोला पढ़न, तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी साची मंगे सरन, सति सतिवादी हो के सीस निवाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ तेजा सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

लाईचे मिशे चशे चैन नाशी वशू चीपे चाँई चीचे कमिन चैतच चनु कीरेमा वनिओलीअम उपमा चिपी माशी चवली उला अंचेलाई चानते लाई तांतेवाई कमिओनन कुमा चिफी शुशो बौलीअम बलाई बिसे बसू बेसीन मिमम मुकोनेममम निकसचा चवाने चाउ जौबले जो कविस्ते कवा चमीमी चा हुक्मे खुदा बन्दगी दवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नचनन्हे नवानवै नौ कमी ज़ी ज़ायलो ज़ोले ज़ीम ज़ाहरे ज़हूर सुल्ताने नूर विनने विनअम निरँकार बेपरवाहीआ। सति कहे कुछ दे हुक्म, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। दीन दुनी दा बदल दे तुख्म, तासीर आपणी मात प्रगटाईआ। तेरा लेखा अगम्म अथाह कुसम, कुछ कहिणा कहिण ना पाईआ। तन माटी वेख जिस्म, चुरासी आपणी फोल फुलाईआ। दरे दरबार दस्स इस्म, इशारयां दी लोड़ रहे ना राईआ। आपणे नाम दी दस्स किस्म, किस्मत लोकमात बदलाईआ। खेल वेखां साची चशम, परदा ओहला रहे ना राईआ। जिस कारन खाधी कसम, वेला वक्त दए बदलाईआ। किसे कम्म ना आउणी माटी भस्म, तन खाकी दए दुहाईआ। सच धार चला रसम, रस्ता इक प्रगटाईआ। दो जहान वेखण तेरा जशन, खुशीआं रंग चढ़ाईआ। चार वरनां सांझा कर मशन, मिशन बणे जगत लोकाईआ। कुछ लेखा लिख्या तेहवें ध्याए विच कृष्न, किशत आपणी नाल रखाईआ। कुछ गोबिन्द आया लिखण, लिख के गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा जणाईआ। सति कहे दे फ़रमान, फ़ुरनयां दा लेखा दे मुकाईआ। धर्म बणा इक विधान, विद्या

दा झगड़ा रहे ना राईआ। शब्द दे ज्ञान, सुरती सुरत खुल्हाईआ। भरम चुक्के जीव जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तेरा संदेसा इक्को काहन, लख चुरासी सुण के सीस निवाईआ। तूं मालक दो जहान श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट कूड़ी वेख दुकान, दूई द्वैत घर घर डेरा लाईआ। शरअ शरायत होई शैतान, शरक्त विच लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहबर हो के हो सहाईआ। सति कहे प्रभ मेरे चाँईक, चलूह वेख जगत लोकाईआ। दो जहानां किल वलायक, वैचनी भेव अभेद खुल्हाईआ। तेरा लेखा जैमन जबलायक, ननी चे कहिण कोए ना पाईआ। तूं ठाकर स्वामी कोमने इखलायक, ख़ालक मख़लूक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दे वरताईआ। सति कहे नविचने चवैकींअम, जाणकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर खेल साचे हरि, तेरा घेरा ख़लक खुदाईआ। सति कहे सनोनीअम सनिन साइलो सवाईआ। चमैनी चविनकी चाँईई, चार युग तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हुक्में अंदर हुक्म वरता, कामल कामन कमिनची काइदा कानून आप चलाईआ।

६१० १६ ६१० १६

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

बिअफ़ते वलीकूम कविले जाहते ज़ोबा ज़रा दविस्ताने गुलिसताने बलसताने चवकीम सग़मे जग़ीर सायते नवा फ़तवाले ज़मीं कुर्शाए अर्ज़ी लिवालजहि जकीउले रमा नफिवज़े कवीज़ नविगम नलईत विज़ीअम वज़ने अदा कोहीअम कविस्त दीवाने अमिशट रैहमे नुमा कुलीउल कुमिद वज़ीले अलललनशिद पाके रसूल हमदे अल्ला ख़राज़ीन ख़ानाए करूह नीज़ायरे ज़बीबब मुबाह ज़करे ज़वा चुकलम्मे यज़राह नग़माए हजराह बसूदद बसले बीसे मुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कुदरते कादर कादरे कुदरत कुदरते खुदा आलमूने नुमा नोशे खुदा ज़ज़ुनो रुबा वलीने जुदा शायरे शुआ कायरे रुवा ज़ीने हवा मदीने मवा मुहम्मदे लवा हसीने नवा अली आलीजाह इक्को नज़री आईआ। ज़वील जाफ़र तामीले काफ़र समीले साफ़र मुसाफ़रे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुकीदे मुका कबीले कुरा महिज़ीने नमूज़ू ज़ार ज़ीदे नज़री आईआ। फलके फलां तख्ते तुरां वक्ते हिज़ां हाज़र हज़ूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुदाए ख़दूश महिदराए दरूश दिशा कौण कीशे किशा सोभा पाईआ। अलूज अलूने हक आफे ग़रूब, ताबे तनाहलतक हज़रते सबूत कुकाइने वाहिदे ख़त मविशरे महबूब, लाइशरे अरूज शीउल सुजा सुबान अल्ला कह के सारे शुकर मनाईआ।

किविरी विरसा वनोसत मबूह, इतमीनाने दोस्त दस्ते दराज़ नवास्ते नवाब इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हज़रते हजू, हाफ़जे बेनाई अंदर करे हक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दे कासब ख़लके मुकासद कदीम कुदरत विच समाईआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड टांगरा ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मेरी करे ना कोए विआख्या, विख भरी जगत लोकाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला भाख्या, शब्दी धार विच जणाईआ। निरअक्खर संदेसा गोबिन्द आख्या, धुर फ़रमान दृढ़ाईआ। निरगुण निरवैर नूर जोत कर परकाश्या, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा दो जहान खेल तमाश्या, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां पूरी करे आस्या, तृखा तृष्नां विच्चों बाहर कढाहीआ। सच प्रीती समरथ भरवास्या, नाम अकथ कथ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद हुक्मे विच समाईआ। सति कहे सति रिहा किसे ना सबर, सवाब विच नज़र कोए ना आईआ।
६११ नूरी दरस पाए ना कोए उत्ते अम्बर, सुअम्बर आत्म परमात्म ना कोए रचाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना ममता मोह अडम्बर, ६११
१६ मार्ग सच पन्ध ना कोए वखाईआ। काया माटी अन्धेरी होई खण्डर, गृह दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत १६
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्में अंदर हुक्म चलाईआ। सति कहे सुरती मिले कोए ना शब्द, शब्द शरअ ना कोए बदलाईआ। सतिगुर परसे कोई ना कदम, मुकद्दर सके ना कोए बदलाईआ। झगड़ा प्या तन माटी ख़ाक बदन, माबदौलत देवे ना कोए वड्याईआ। साची क्रिया खेल भेव जाणे ना कोए तमद्दन, तमस्सुका तरफ़ ना कोए रखाईआ। जगत वासना सारे वधण, वाहिद सीस ना कोए झुकाईआ। सच दवारयों होए बेवतन, वतन डेरा कोए ना लाईआ। बिन हरि किरपा साचा दिसे कोई ना पत्तन, जगत नौका नईआ पार ना कोए कराईआ। जन भगत सुहेले प्रभ सरनाई वसण, वसीह आपणा घर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण हुसैन हसन, मसीह मुहब्बत विच प्रगटाईआ। सति कहे मसीह मुहब्बत मबीन कुआनख़वातीनीन ख़ातून ख़तूते ख़िता ना कोए दुरकाईआ। नवाज़शे आमीन, तुरकाए तलकीन मुफलसे यकीं, यावलहि लीउलिल लिव वाईआ। कुशते मुर्दा बिस्ताए ज़ुरदा दोज़ख़े दिरदाह दिवाले जाह ज़नूमम ज़िमामे मिज़ार प्रगटाईआ। कुलिविकश शमामे भविश मसीउल तालिश, तुशरे तामीर बदने मुदीर मुदईं मुदा इक्को नज़री आईआ। कुलायले तरक ज़रीफ़उल मुशरक ज़िआरते ज़वाहिद ज़ीदे ज़मांह अख्वाईआ। मतलअके तुआरफ़ सूफ़ी नहारफ़ हरीफ़उल उमां मजूज़ल

कुमां मशताके मशैयर बेपरवाहीआ। शगोने सतू दविलज़े चीं अज़ बरू रूहे रिकशा कफ़ने मुतशा मुर्दा मुरीद नज़री आईआ। ज़ईकुल ज़रगाह वाहिवज़े हवा बा आदमे दवा कुलीने नवा नवाज़शे अरमां मेहरवान महबूब बेपरवाहीआ। महाराजे मलजूह शेरे कलनूह सिँघ वाहिदे वजूह विष्नूं गुमाशता कवनाने नूह भगवन भालिंचच चीमे चकशा दरवेशे भिखशा फ़ाका फ़कीर नज़री आईआ। जोती जालोने सारूपे सालोने किरपाए किवओने कलंकी एं कलाम नज़री एं अमाम महिज़ूले अवाम फ़ज़ले रहमान बेपरवाहीआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ ज्ञान सिँघ दे गृह पिण्ड भोरसी ज़िला अमृतसर ✪

वलू हुल लुज आए वज़ी, जिमामम पेशानी रवीं तमीज़े कुनात वाहदे महबूब नज़री आईआ। दाविलचे दज़ी नाकोसे कसीं विज़ीअम विज़ा तउज़े ज़मों नूर अलाहीआ। मुहम्मदे गुनिंच नवीदे कज़ो कफ़ाए कमिश कुशतो कशा कारदे कुदीआर इक अख्वाईआ। हज़ीने नमरोह ज़ीने शमो शवीउल श्या खुआबे शबाब शबेरोज़ डगमगाईआ। बेनज़ीरे नुकाह गुलज़हीरे ज़रगाह वाहदहू अल्ला आलमीन वड वड्याईआ। जवाज़े जज़ीं कुइशतम तहिराने कमू नमू फ़लके ज़हू ख़लके खुरारा ख़ाविंदे खुआतीन इक अख्वाईआ। कहोज़ज़ ज़विज मसीउल तमां करिसचीअन कुनहां पाकीज़ा पाचिशट पोशाके ख़ाक दर बदलाईआ। मसीउल अहिद नशरे नज़मे नग़मे चैंज़वीदे वुज़ेलाइश लाशरीक सच वड्याईआ। दिविज़ने वकूलुल ज़ुआ ज़ईफे ना बाला नूरे खुदा ख़ानका कनोश दीवाने दीआह स्याबे स्याह सीकाज़ून शहिनशाहीआ। कुतलन कविस्त नज़ूदे बहिश्त बहिबूदे इष्ट इशारे शीव नज़ीने ज़वाहिक मन चिनचिते असलमाए इस्म चशा सर्ब जणाईआ। हज़रते ज़वित पैगम्बरे रविद रसूले नज़होक नूरे नवज़ीं फ़िकरे तसवीं खुनाशे सूफ़ी चशमे चराग़ बेदाग़ नज़री आईआ। हैविष्नन मज़ूज़ल ज़मां मुहब्बते महबूब मुख़ातबे खुदा बज़र्रे ज़म्बीं ग़ोशे कुनां कायनात अज़ीम कदीम सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पैगम्बरे पाकिश अमामे नोज़ा कलिच चामाए ज़ुहिक आफ्तबे तलूह शरकने शायर शरअ शमां इक अख्वाईआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड भोरसी ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे मेरे पुरख अकाल, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले वेख आपणे लाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जो दिवस रैण तेरे नाम दी घालदे रहे घाल, अन्तर आत्म निरगुण सरगुण हो ध्याईआ। साचा मन्दिर वेख काया बंक सच्ची धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ अंदर वज्जे वधाईआ। शब्द अगम्मी नाम दे धुनकान, अनरागी राग सुणाईआ।

निर्मल जोत जगा महान, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी वेख मार ध्यान, चार वरन अठारां बरन करे लड़ाईआ। साची सिख्या समझे ना कोई तेरा ज्ञान, मन मति रही कुरलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा दे के गए ब्यान, खाणी बाणी रागां नादां विच सुणाईआ। परम पुरख तेरी करे ना कोए पहिचाण, निज नेत्र लोचन नैण दरस कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी होई वैरान, पंच विकारा घर घर डेरा लाईआ। जगत शरअ होई शैतान, सच सन्तोख धीरज जत रहिण कोए ना पाईआ। नाम संदेसा नर नरेशा धुर दा दे इक फ़रमान, हुक्में अंदर हुकम मनाईआ। जूठ झूठ मेट निशान, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म परदा दे उठाईआ। तूं आदि जुगादी दाता (देवणहारा) दान, वस्त अमोलक काया गोलक दे टिकाईआ। सचखण्ड दवारे एकँकारे जन भगत सुहेले सीस झुकाउण, नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कर किरपा मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण देवे वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ वेख कलयुग काती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मिले मेल ना कमलापाती, पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। मन वासना होई अन्धेरी राती, बुध बिबेक ना कोए बणाईआ। साची मंजल चढ़े कोई ना घाटी, अंदर वड़ के जगत दवारे पार कर के घर विच घर मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। अमृत बूंद पीवे ना कोए स्वांती, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। साचा जाम मिले ना किसे साकी, साख्यात सतिगुर मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा लहिणा देणा दे बाकी, अगला लेखा आप समझाईआ। गुरमुख वेख तन वजूद माटी खाकी, ख़ालस ख़ालस ख़ालसा आप प्रगटाईआ। तेरा नाम भण्डार धुर दी हाटी, जुग चौकड़ी भगतां रिहा वरताईआ। आत्म परमात्म बण साथी, सगला संग निभाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द गुरसिख बणा आपणा पाठी, अजपा जाप दे दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मिटे वाटी, लख चुरासी गेड़ा रहे ना राईआ। तेरा नूर तेरा ज़हूर तेरी आत्म तेरी ज़ाती, परमात्म तेरे विच समाईआ। तूं करें खेल आदि जुगादि सदा बहु भांती, नित नवित आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा झोली डाहीआ। सति कहे प्रभ कलयुग अन्तिम वेख मार झात, परदा आप उठाईआ। फिरी दरोही विच कायनात, कलमयां वाले रहे कुरलाईआ। साची नज़र ना आए कोई जमात, जुमला हक ना कोए पढ़ाईआ। गुरमुखां विच प्रेम प्यार दा कर इतफ़ाक, निफ़ाक अंदरों दे कढाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर बणा सच्चा साक, सज्जण हो के वेख वखाईआ। बन्द कवाड़ी खोल्ह ताक, बजर कपाटी कुंडा लाहीआ। शब्द अगम्मी वजा नाद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा रहे ना राहीआ।

धुर दा मार्ग दस्स साच, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सन्त सुहेला लए वाच, वाचक हो के खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दीन दयाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ लोकमात वेख आ, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा तक्कदे गए राह, भविख्तां विच तेरा ढोला गाईआ। तूं आदि जुगादी दो जहानां बणे मलाह, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वरभण्ड तेरी ओट तकाईआ। शब्दी गुर सतिगुर साचे सच दे सलाह, बिन सतिगुर शब्द समझ किसे ना आईआ। कलयुग जीव काया कपड़ बाहर पलीत अंदरों करे गुनाह, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मेहरवान मुहब्बत विच हो सहा, सहायक नायक इक अख्वाईआ। तूं दाता दानी बेपरवाह, गहर गम्भीर तेरी वड वड्याईआ। कलयुग रैण अन्धेरी चारों कुण्ट दिसे छाह, निर्मल जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। कोटन कोटि साध सन्त बैठे धूंणीआँ ता, तन भबूती ख़ाक रमाईआ। कोटन कोटि भज्जण वाहो दाह, टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूंग्घी खाई आपणा आप छुपाईआ। कोटन कोटि जल धारा रहे वहा, तन माटी अग्नी नाल जलाईआ। बिन तेरी किरपा पुरख अकाल दीन दयाल सच्चा मिल्या किसे ना राह, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सति धर्म कहे पुरख अबिनाशी घट निवासी सतिजुग साचा मार्ग ला, सन्त सुहेले मेरे नाल रलाईआ। निरगुण हो के पकड़ बांह, सरगुण दे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे दो जहानां कर न्याँ, अदल अदालत इक कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कर अदल, इन्साफ़ तेरे हथ्थ नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे बदल, बदला चुके कूड़ी जगत लोकाईआ। तेरा नाउं कदे ना होवे कतल, मकतूल मिले ना कोए वड्याईआ। तेरी किरपा पूरे होवण सब दे यतन, यथार्थ आपणा घर दे समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत तैथों विछड़ होए बेवतन, सचखण्ड दुआर एकँकार निराकार इक्को दे वखाईआ। दूजा नज़र ना आए कोई पत्तन, बिना पुरख अकाल सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां पैज आवें रखण, पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। कलयुग अन्त यकीन दे हकन, हकीकत आपणी इक समझाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हुक्में नाल कर मुअत्तल, गृह मन्दिर अंदर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। सति धर्म कहे आपणी वेख कायनात, परवरदिगार खोज खुजाईआ। अंदर वड़ के मार झात, परदा ओहला दे चुकाईआ। सृष्टी इक दूजे दा करे घात, घायल वेखी सर्ब लोकाईआ। विद्या पढ़दे विच्चों लुग़ात, तेरे नाम दी समझ किसे ना आईआ। सच दवारे बणया कोई ना दास, सेवक रूप ना कोए बदलाईआ। पवणां विच सारे लैंदे स्वास, बिन साह तों मलाह बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। कुछ लेखा लिख के गया चम्यार रविदास, हुक्में अंदर हुक्म

६१५
१६

दृढ़ाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग दे प्रगटाईआ। सच कहे प्रभ कलयुग अन्तिम कर किरपा, किरपा निधान तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया कट बिप्पता, बिप्परीत प्रीत विच बदलाईआ। गुरसिखां रूप दे दे साचे सिख दा, जो सिख्या तेरी विच समाईआ। जिन्हां दा लेखा भविख्तां विच गोबिन्द गया लिखदा, फ़तिह डंका नाल वजाईआ। नाता जोड़ दे पिता पुत्त दा, सुरती शब्दी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां सुहा दे आपणी रुत्त दा, कलयुग रुतड़ी दे महकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ परम पुरख प्रीतम सच्चे, सच तेरी सरनाईआ। कलयुग जीव भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ बह के खुशी ना कोए वखाईआ। मन वासना करदे मते, गुरमति हिरदे ना कोए धराईआ। कूड़ी क्रिया विकदे हट्टे, सच वणजारा सोभा कोए ना पाईआ। हरि का नाम लाहा कोई ना खटे, ठग ठगौरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जीव कर अच्छे, मन मति बुध नाल समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साहिब मेरे निरँकार, निरँकार तेरी बेपरवाहीआ। मैं खेल वेख्या जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। मैं रोंदे वेखे तेई अवतार, हुक्में अंदर फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गुलशन वेखे विच बहार, महबूब तेरी मुहब्बत विच महकाईआ। नानक निरगुण वेख्या खेल अपार, नाम सति सति समझाईआ। गोबिन्द सुत दुलारा तेरी धार, आपा वार वारता सारी गया बदलाईआ। संदेसा दे के गया (आवे) कल कल्की अवतार, निहकलंक अख्वाईआ। जिस नूं जन्मे माई कोए ना विच संसार, पिता गोद ना कोए उठाईआ। जोती जोत करे उज्यार, नूर नुराना शहिनशाहीआ। शब्दी शब्द करे वरतार, हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। जिस दी महिमा बोध अगाध, कागद कलम शाही ना लिखणहार, लेखा लिख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख आपणा घर, लोकमात दया कमाईआ। सति धर्म कहे चार वरन दिसे अन्धेरा, अठारां बरन, समझ कोए ना आईआ। मनुआ मन करे मेरा मेरा, ममता मोह होई हल्काईआ। पुरख अकाल दे दे आपणे शब्दी हुक्म दा गेड़ा, सृष्टी इष्टी दृष्टी दे बदलाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां सूफ़ी सन्त फ़कीरां नज़री आएं नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग कहे मन चाउ होए घनेरा, घर खुशीआं नाल   गाईआ। प्रभ दर्शन पावां तेरा, बिन तेरे चले ना कोए चतुराईआ। लोकमात बन्नीं बेड़ा, सति धर्म इक उपजाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप वसाउणा इक खेड़ा, चार कुण्ट दहि दिशा आप खुल्हाईआ। तेरे हथ्थ हकीकत वाला नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, दयावान दातार दीन दुनी तेरी नज़री आईआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिँघ दे गृह पिण्ड रामपुर ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म दी ला जड़्, सतिजुग साचा मंग मंगाईआ। सर्ब सृष्ट तेरा नाउँ प्रभ एका जाए पढ़, चार वरन इक्को ढोला गाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरी मंज़ल जायण चढ़, हक दवारे महबूब मिल के खुशी मनाईआ। चरण धूढ़ नहावण सर, जन्म कर्म दी दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। सति कहे प्रभ खोल्ह् धर्म दवार, चार वरन अठारां बरन इक्को ओट तकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे चरण कँवल होवे निमस्कार, इष्टां दा इष्ट सृष्टी दा मालक इक्को सर्ब तकाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ह्ब झगड़ा रहे ना कोए विच संसार, आत्म परमात्म एका नूर देणा समझाईआ। खुशीआं विच होवे तेरा चारों कुण्ट मंगलाचार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वज्जदी रहे वधाईआ। भगत सुहेले करन अगम्म प्यार, प्रीती रीती नीती तेरे नाल रखाईआ। धुर दा नूर होवे चमत्कार, कलयुग अन्धेरा देणा गवाईआ। तेरे दरस दे होवण सारे ख़ासतगार, ख़ाहिश इक्को देणी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रस्ता देणा वखाईआ। सति कहे प्रभ सच दवारा एको खोल्ह्, एकँकार तेरी सरनाईआ। एका डंका तेरे नाम दा वज्जे ढोल, दूसर करे ना कोए पढ़ाईआ। पूरब लेखा लहिणा देणा जन भगतां कर कौल, इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। निरगुण हो के प्रगट दिसें उपर धौल, धरनी धरत धवल सुहाईआ। स्वामी साबर हो के जावें मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक सुहाईआ। सति कहे प्रभ धुर दा दे सति सतिवाद, लोकमात दया कमाईआ। जन भगतां पूरन कर काज, करनी दे करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रिवाज, सच सुच्च सृष्टी दी झोली पाईआ। मन मारया रहे ना कोए अभाज, सुरती सवाधान कराईआ। नवां साजण देणा साज, सज्जण हो के दरस दिखाईआ। जिस स्वाल दा हल ना होया जवाब, अंकड़े ओस दे देणे समझाईआ। किरपा कर आप महाराज, माज़ी दा झगड़ा देणा मुकाईआ। तेरे कदमां उपर पदमां पढ़न निमाज, मसला हल देणा कराईआ। दीन दुनी करे अदाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। सति कहे प्रभ वेख सृष्ट सबाई डूंघा सागर, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। किसे अमृत ना मिले काया गागर, गृह गृह कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। बिन भगतां सूरबीर बणे ना कोए बहादर, मन वासना मन ना कोए घाईआ। घर सुहेला लभ्भे कोई ना साजण, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। हुक्म सुणे ना कोए शाहो भूप राज राजन, सुल्तान मेहरवान सीस ना कोए निवाईआ। साची निंद्रा विच्चों मूल ना जागण, माया ममता कारन भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा

रस्ता इक समझाईआ। सति कहे प्रभ निरगुण धार वेख प्रतख, पारब्रह्म दया कमाईआ। कलयुग मिले कोई ना सच, सति नज़र कोए ना आईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले होए भठ्ठ, खेड़ा सत्थर यार ना कोए हंढाहीआ। भाग लग्गे ना तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध मिले ना कोए वड्याईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द सारे रहे रट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग कूड़ कुड़यार शौह दरयाए घत्त, सतिजुग साचा राह वखाईआ। नाड़ नाड़ उबले किसे ना रत्त, रतन अमोलक गुरमुख लै बणाईआ। घर दरस दे स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर आपणा परदा लाहीआ। तूं सर्ब कला समरथ, आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहार सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच दवारा वखा इक्को हट्ट, हटवाणा हो के नाम निधाना श्री भगवाना आप वरताईआ।

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ उत्तम सिंघ दे गृह पिण्ड वेरोवाल ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ गुरुआं अवतारां वेख भविक्ख, चार जुग दी बाणी खाणी शब्द जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब ने दस्सया सांझा इष्ट, दूजा अवर नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म नाता जोड़ सर्ब सृष्ट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वरन गोत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सचखण्ड दवारा सच जणा झगड़ा मुके स्वर्ग बहिश्त, मंज़ल हक हक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। सति कहे गुर अवतार पैगम्बर पुरख अकाल करदे गए अरज़ोई, शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी ताल वजाईआ। बिन पुरख अकाल परवरदिगार सांझे यार कलयुग अन्त रहे ना कोई, काया कपड़ कूड़ जगत हंढाए लोकाईआ। बिन भगतां सतिगुर शब्द सुरत उठाए ना कोए सोई, नाद तूरत तुरीआ पद ना कोए वजाईआ। अमृत मेघ निझर रस साची धार सके ना कोए चोई, बूंद स्वांती ठांडी ठार जाम हक ना कोए प्याईआ। चार वरनां अठारां बरनां ब्रह्मण्ड खण्ड पूरी लोअ आकाश पताल पीर फ़कीर मुल्ला शेख़ मुसायक तेरे नाम दी करन दरोही, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहिंद साहिब बख्शिंद तेरे अगे कर के गए अरज़ोई, अरज़ आरज़ू ख़ाहिश वाहद इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, सति सति सतिजुग साचा सति सतिवादी एका मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ लेखा वेख शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। जिन्हां विच सिफ्ती तेरा ज्ञान, जुग चौकड़ी वण्डदे गए लोकाईआ। बिन हरि किरपा सतिगुर शब्द मिले

ना आण, आनन फानन लहिणा देणा ना कोए चुकाईआ। सृष्ट सबाई जगत धुन सुणदी कान, आत्म धुन राग ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नाद धुन कर शनवाईआ। सति कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए बेनन्ती, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल गढ़ तोड़े ना कोए हउमे हंगती, हँ ब्रह्म लेखा ना कोए दृढ़ाईआ। दीन दुनी दरवेश दर ठांडे होई मंगती, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ सारे सीस निवाईआ। साहिब सुल्तान मेहरवान तेरे आदि अन्त दी जाणी किसे ना पंगती, हुक्में अंदर हुक्म मन्न के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी जग जीवण दाते लोकमात वेख वखाईआ। सति कहे गुर अवतार पैगम्बर सुणदे गए संदेसा, लोकमात इक जणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे नर नरेशा, नर नरायण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्दी धार उठा के गोबिन्द दस दस्मेशा, दहि दिशा आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दा नित नवित जोती शब्दी धार अवल्लड़ा वेसा, रूप रंग समझ कोए ना पाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशवा हो के पेशतर शब्दी हुक्म करे शनवाईआ। जो लेखा जाणे दो जहान पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल देस परदेसा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तत वजूद काया माटी अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध खेल खेला, रजो तमो सतो सति आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग कहे कलयुग पूरा कर लेखा, कूड़ी क्रिया लोकमात रहिण ना पाईआ। सति कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर मारदे गए नाअरा, हक हक जणाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान वसें बाहरा, अक्खरां विच पत्थरां विच सथरां विच डेरा कदे ना लाईआ। जन भगतां हित आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल अवतारा, निरगुण हो के सरगुण देवें माण वड्याईआ। कलम शाही कागद तेरा लिख ना सके अन्त पारावारा, गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कह के तैथों पल्लू गए छुडाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक सृष्ट सबाई एकँकारा, अकल कलधारी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख रैण अंध्यारा, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे मेरा अन्त अख़ीरी हौका हा, हा कर के दयां जणाईआ। पार लँघे किसे ना नौका जगत मलाह, वञ्झ मुहाणे बैठे रुढ़ाईआ। साचा दिसे ना कोई मलाह, रहबर हो के पल्लू ना कोए फड़ाईआ। चार जुग तेरीआं पाउँदे गए वण्डां राम वाहिगुरू अल्ला कह कह ख़ुदा, ख़ुदी अंदरों बाहर ना कोए कढाहीआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक झगड़ा

दिता पा, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। तूं सर्ब व्यापी वड प्रतापी, शाहो भूप वड इखलाकी अदल अदालत इक्को दे लगाईआ। रूह बुत्त परवरदिगार लाशरीक सांझे यार कर पाक पाकी, पवित पुनीत आपणा रंग रंगाईआ। तूं बेनज़ीर गहर गम्भीर धुर दरबार धुर दा साकी, साख्यात हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार मार झाती, चार वरन अठारां बरन साचा धर्म ना कोए समझाईआ। सति धर्म कहे गुर अवतारां पैगम्बरां जिस नूं मन्नया धर्म, धरती उत्ते नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी उत्ते प्या भरम, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। अबिनाशी करते पतिपरमेश्वर श्री भगवान आदि निरँजण जोत सरूप तेरी लए कोई ना सरन, तत्तां वाला इष्ट दृष्ट मन्न के खुशी मनाईआ। ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी सस्सा हाहा अलिफ़ ये वाला ढोला पढ़न, निरअक्खर धार मिल के बिन अक्खरां तेरा शब्द सुणे ना कोए शनवाईआ। आवण जावण लख चुरासी झगड़ा प्या जीवण मरन, मरजीवत रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा राह बण मलाह धुर दरगाह देणा वखाईआ। सति कहे गुर अवतार पैगम्बर कर के गए इच्छया, आसा तेरे नाल रखाईआ। कलयुग अन्त हक महबूब पूरा करे लिख्ती लिख्या, लिख्त भविख्त आपणी कार कमाईआ। वस्त अमोलक पावे धुरदरगाही भिच्छया, दर्दीआं आपणा दर्द वण्डाईआ। माण वड्याई देवे वड्डयां निक्कयां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दवारा इक्को इक देणा खुल्हाईआ। सति कहे प्रभ सच दवारा इक्को खोल्ह, ख़ालक ख़लक दे समझाईआ। तेरे नाम दा वज्जे इक्को ढोल, दूजा मृदंग हथ्थ ना कोए उठाईआ। जोती धार शब्द सरूपी सब अन्तर मौल, मौला हो के नज़री आईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सदा सुहेला हो के वस कोल, आत्म सेजा सोभा पाईआ। सति सतिवादी हो के धर्म कन्डे तोल आपणा तोल, सच तराज़ू हथ्थ उठाईआ। सृष्ट सबाई कलयुग अन्तिम सर्ब रही डोल, धीरज धीर नज़र कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा चुक्के ना परदा ओहल, सति सरूपी रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम जैकारा चार वरन अठारां बरन इक्को बोल, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ।

६१६
१६

✪ ७ सावण शहिनशाही सम्मत २ बूटा सिँघ दे गृह पिण्ड एकलगडा ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ कलयुग मिटा चिन्ता सोग, कूड़ी हिरस रहे ना राईआ। साचा नाम दस्स अगम्मी जोग, जिस दी खोज बिना तेरे हथ्थ किसे ना आईआ। माया ममता हउमे हंगता रहे ना रोग, सच सुच मिल के वज्जे वधाईआ। नाम भण्डारा अमृत रस दे धुर दी चोग, चुग़ली निदिंआ झगड़ा दे मुकाईआ। होवे प्रकाश काया माटी साचे कोट, काअबा दो दोआबा नूर ज़हूर रुशनाईआ। मन वासना दुरमति रहे कोई ना खोट, बुध बिबेक तेरी टेक इक सरनाईआ। सच कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती ज़ाते डगमगाईआ। बिन नेत्र लोचन नैण अक्खां तेरा दर्शन होवे अमोघ, घर स्वामी ठाकर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला देणा उठाईआ। सति कहे मेरे पुरख अकाल सज्जण, मीत प्यारे तेरी बेपरवाहीआ। चरण धूढ़ी करा धुर दा मजन, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ लोड़ रहे ना राईआ। नाम निधान नगारे तेरे वज्जण, साचा शब्द कर शनवाईआ। त्रैगुण अग्नी तत रहे ना अग्न, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सुरती शब्द लग्गे साची लग्न, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेट दे कलयुग कूड़ा दुःख, दर्दी हो के दर्दीआं वण्ड वण्डाईआ। ममता मोह विकार मेटदे भुक्ख, सांतक सति सति कराईआ। जन भगत सुहेले बणा आपणे सुत, सुत्तयां लोकमात उठाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। तेरा भाणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना जावे रुक, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। शब्द निशाना दो जहानां श्री भगवाना कदे जाए ना रुक, तीर अणयाला आपणा इक चलाईआ। गुरमुखां उज्जल कर मुख, जो दिवस रैण तेरा नाम ध्याईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती जाम दे घुट, जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म निज घर दे साचा सुख, निजानंद परमानंद विच समाईआ। सति धर्म कहे प्रभ दीनां नाथ, दीनन हो के दयां दुहाईआ। तेरे नाम दी गावे कोई ना गाथ, गुर अवतारां पैगम्बरां दे ढोले सर्ब सुणाईआ। चरण प्रीती सोहे ना कोए मस्तक माथ, टिक्का नाम भबूती हक ख़ाक ना कोए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ वज्जदा डंका, सच नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा प्या राउ रंका, जगत शाह ना कोए सहाईआ। पवित्र दिसे कोई ना बंका, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ रहे कुरलाईआ। मनुआ मन मिटे कोई ना शंका, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। नाम भण्डारा देवे कोई ना किनका, कनक कामनी सब नूं रही सताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां लहिणा देणा दे जन जन का, जन आपणे रंग

रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेला वक्त दे बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरा बिन अक्खां वगे नीर, रो रो दयां दुहाईआ। साची मंज़ल चोटी चढ़े ना कोए अख़ीर, काया काअबा तेरा दरस कोए ना पाईआ। दीन मज़्ब दी शरअ टुट्टे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत विच्चों असलीअत ना कोए बदलाईआ। जगत वासना बदले ना कोए तकदीर, नाम तदबीर ना कोए दृढ़ाईआ। माया ममता विच फसे सन्त फ़कीर, सूफ़ी रूप ना कोए दरसाईआ। तेरा नूर नज़र ना आवे बेनज़ीर, हुजरा हक ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग लेखा देणा मुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरा नीर वहाए नैण, नैण मुँधारी दयां जणाईआ। मैं कलयुग अन्तिम आया कहिण, हुक्में अंदर सीस निवाईआ। कलयुग माया ममता होई डैण, शाह सुल्तानां रही खाईआ। नाता तुट्टा भाई भैण, धर्म प्रेम ना कोए हंढाहीआ। कलयुग वेख अन्धेरी रैण, रो रो मारां धाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल घर ठाकर स्वामी मिले ना सज्जण सैण, आत्म परमात्म मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। किसे कम्म ना आई शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ी रमायण, धुर दा राम सच पैग़ाम ना कोए सुणाईआ। एथे ओथे दो जहानां साचा बणया कोए ना साक सज्जण सैण, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेरा दे दे देण, सतिजुग सच्चा झोली डाहीआ। सति कहे मेरे सतिगुर शब्द मलाह, बेड़ा तेरे कंध टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे गवाह, शहादत सारे दयां भुगताईआ। जो भविक्खतां विच लेखा गए लिखा, नाता जोड़ के कागद कलम शाहीआ। शब्दी डंका गए वजा, रागां नादां विच कर शनवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार जोती जामा लए पा, कल कल्की वेस वटाईआ। परवरदिगार बणे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जलवागर नूर खुदा, खुदी सब दी दए गवाईआ। कल काती कूड़ कुड़यारा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म मनाईआ। सो वेला वक्त गया आ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे अंदर पल्लू गए छुडा, कन्नी गंढु ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी घट निवासी जोती जोत कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कर किरपा किरपा निधान, निमाणा हो के सीस झुकाईआ। सृष्ट सबाई एका दे ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप समझाईआ। झगड़ा रहे ना विच इन्सान, मन मति बुध एका रंग रंगाईआ। तेरी प्रीती साची रीती धुर दी नीती करन सर्ब परवान, परवाना आपणा नाम सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को उपजे ध्यान, सृष्ट दृष्ट इक्को रंग रंगाईआ। तूं आदि जुगादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सब दा वाली दो जहान, जहालत सच अदालत ला के दे कढाहीआ। तेरे चरण कँवल विटहों कुरबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, कलयुग कूड़ कुटम्ब दे खपाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे सति सतिवन्त, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। आत्म परमात्म जगत विहूणी नार विछड़यां कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाईआ। काया चोली रंग चढ़े ना कोए बसन्त, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। बोध अगाधा मिले कोई ना पंडत, जो निरअक्खर दए समझाईआ। मेल मिलाए साची संगत, जो हरि हिरदे विच वसाईआ। लहिणा देणा मुक्के तन माटी ख़ाक अन्त, लख चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची बणा बणत, कलयुग कूड़ी रेखा दे मिटाईआ। सति धर्म कहे मेरे नाल दे सहयोग, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। तेरा नाम नगारा वज्जे चौदां लोक, परलोक होवे शनवाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा पढ़न सलोक, ढोला इक्को इक गाईआ। तेरा नूर नज़री आए निर्मल जोत, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। मन मति बुध दी रहे कोई ना सोच, सच संजम अंदर देणा प्रगटाईआ। जन भगत सुहेले तेरा दर्शन कर के माणण मौज, मजलस तेरे नाल रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लख चुरासी जीव जंत साध सन्त जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर तेरी करदे खोज, खोजयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया हउमे कट दे रोग सोग, चिन्ता ग़म जन भगतां अंदरों दे मिटाईआ। सति कहे प्रभ हुक्म दे फ़रमान, भय भउ इक जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे निशान, साचे नाम दी वज्जे वधाईआ। चार वरन करन परवान, अठारां बरन सीस झुकाईआ। शब्दी होवे ज्ञान, मज़्ब़ी गढ़ तुड़ाईआ। साचा दिसे श्री भगवान, इष्ट स्वामी बेपरवाहीआ। जन भगतां दे माण, अभिमान मोह मिटाईआ। अमृत रस मिले पीण खाण, तृष्ना अग्न ना लागे राईआ। आवण जावण चुक्के काण, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। साचे मन्दिर मिलणा आण, काया काअबे खुशी मनाईआ। तूं दाता दानी गुण निधान, गहर गम्भीर अख्वाईआ। बिन तेरी किरपा होवे ना किसे कल्याण, कलमे ते कायम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ बदल दे आपणा पक्ख, करवट विच लै अंगड़ाईआ। सतिजुग मार्ग दस्स, क्रिया कूड़ खपाईआ। हिरदे अंदर वस, प्रेम रंग चढ़ाईआ। निज नैण खोल्ह अक्ख, प्रतख मिल गुसाँईंआ। तूं आदि जुगादी श्री भगवान सच, सच तेरी सरनाईआ। दे वड्याई माटी कच्च, कंचन गढ़ सुहाईआ। लोकमात उपजा धीरज सति, सन्तोख मिले लोकाईआ। जन भगतां जाण मित गत, निरगुण हो के खोज खुजाईआ। कलयुग काया खेड़ा कर भठ्ठ, अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म कर प्रगट, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ वेख हाहाकार, जीव जंत रिहा कुरलाईआ।

घर घर दिसे सर्ब विभचार, कुकर्म दए दुहाईआ। ममता मोह ना चुक्के संसार, सतिगुर सरन ना कोए रखाईआ। कूड़ डंका वज्जे अपार, आपा दीन तेरा दरस कोए ना पाईआ। मन वासना होई बहार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल हल्काईआ। तुध बिन करे ना कोई सच प्यार, प्रीतम प्रीती तोड़ ना कोए निभाईआ। तेरे भगत होए दुख्यार, दुखियां दर्द लैणा वण्डाईआ। निरगुण हो के पा सार, महासार्थी आपणी सेव कमाईआ। भगत वछल जुग चौकड़ी तैनूं कहिण पुकार, सिफ्तां विच तेरे ढोले गाईआ। कलयुग वेख अन्तिम वार, वारस रहिण कोए ना पाईआ। जगत दुनी होए खुआर, ऋषी मुनी बैठे मुख छुपाईआ। तेरी मंजल चढ़े ना कोए दुष्वार, अंदरों दूती दुश्मण बाहर ना कोए कढाहीआ। किरपा कर आप निरँकार, निरवैर तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग साचा मार्ग ला अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दस्स हक गुफ़तार, गुफ़त शनीद कर पढ़ाईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे सति धर्म दी पा गंढु, डोरी आपणा नाम रखाईआ। जन भगतां नंगी होवे कदे ना कंड, मेहरवान मेहर नज़र पार कराईआ। आत्म होवे किसे ना रंड, जगत दुहागण रूप ना कोए वटाईआ। खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी दस्स के बन्दीख़ाना देणा तुड़ाईआ। साचा नूरी चाढ़ के चन्द, चन्द गुरमुख लैणे प्रगटाईआ। सच प्रेम दा दे के आनंद, पुर अनन्द दए बहाईआ। सच दवारे मंगी मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। परदा रहे ना ब्रह्म हँ, ओहला अंदरों देणा उठाईआ। झगड़ा मुक जाए माटी चम्म, आत्म परमात्म मेला लैणा मिलाईआ। सहिणा पए ना दंड जम, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। इक्को कहीए धन्न धन्न, तेरा नाम ध्याईआ। मनसा कूड़ रहे ना मन, ममता रहे ना राईआ। कलयुग अन्तिम बेड़ा बन्नू, खेवट खेटा हो के पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म कहे प्रभ दे दे साथ सगला, संगी हो के खुशी वखाईआ। प्रीतम बण अगम्मी रंगला, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। साचे नाम दी दस्स बन्दना, बांदी गुरमुख लै बणाईआ। दूजा दर पए ना मंगणा, भण्डारा इक्को देणा वरताईआ। निरगुण हो के ला अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। द्वैती ढाह कूड़ी कंधना, दुरमति मैल होवे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे आपे लँघणा, पिछला पन्ध मुकाईआ। सति कहे प्रभ साची दे दे बुद्धी, बुध लेखा गया लिखाईआ। जिस वेले कलयुग औध होवे बुढ्ढी, वड्डा छोटा ना कोए वड्याईआ।

झगड़ा आपे जाणे थित वदी सुदी, अमावस संगराँती मेल ना कोए कराईआ। ओस वेले पुरख अकाल सब दी धार बदले दूजी, पहला लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां रमज़ मार के गुज्झी, सोए आप उठाईआ। मेहर दी धार लोकमात रहे ना लुकी, लोक परलोक करे शनवाईआ। साचा मार्ग ला के पंज मुखी, मुख भगतां दे सलाहीआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना दुखी, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। भाग लगा के काया कुटी, कूड़ कुटम्ब दए मिटाईआ। आवण जावण चुरासी उहनां छुट्टी, छुटकारा मिल्या थाउँ थाँईंआ। भगत आत्म रहे ना सुती, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक सुहा के रुत्ती, रंग आपणे विच रंगाईआ। जिस दी कलधार कदे ना मुकी, मुकम्मल आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे सोभा पाईआ। सति कहे प्रभ वेख अन्धेरी शाम, शाम राम नज़र कोए ना आईआ। हकीकी हक मिले ना जाम, ज़ामन हो ना कोए छुडाईआ। पैगम्बरां सुणे ना कोए पैग़ाम, पैग़ाम आपणा देणा जणाईआ। तेरे नाम नूं करन सर्ब बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। नाम जप के सारे करन तेरे सिर एहसान, आपणी आशा ना कोए बणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घर साचे कर बिसराम, बिन बिस्तर आत्म सेज सुहाईआ। जन भगत सुहेले वेख गुलाम, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। तूं मालक सब दा बण अमाम, अमलां दा लेखा देणा मुकाईआ। सच दवारे करे ना कोए हराम, हिरदे वस के हरि आपणा मेल मिलाईआ। चार कुण्ट इक्को तेरी कलाम, कलमा कायनात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे सोभा पाईआ। सति कहे प्रभ दे दे साची समझ, हुक्मी हुक्म जणाईआ। शब्द इशारे मार रमज़, रस्ते अंदरों दे बदलाईआ। लेखा देणा पए ना वांग शमश, तबरेज़ खल्ल ना कोए लुहाईआ। मन वासना रहे कोई ना हवस, हसन हुसैन वांग बिन आब ना कोए तड़फाईआ। तेरा मेला होवे उपर अर्श, फर्श मिल के वज्जे वधाईआ। ठाकर हो के कर तरस, तसलीम कर के आपणे नाल मिलाईआ। सच दवारे दे दरस, दासां आसा पूर कराईआ। प्रेम प्यार अमृत दे बरस, वरखा आपणा नाम लगाईआ। जन भगत विछोड़े अंदर रहे भटक, भटकणा सब दी दे बुझाईआ। घर स्वामी आ परत, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। दे वड्याई उपर धरत, धवल खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां तेरे दरस दी ग़रज़, आसा अवर ना कोए वखाईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ शिव सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ भाग ला दे धरत मात दी झुग्गी, मन्दिर आपणा दे सुहाईआ। तेरा आउणा होवे नव नौ चार चौकड़ जुगी, जगत दे मालक दया कमाईआ। बिन तेरे नाम धार रहे कोए ना दूजी, एकँकार एका रंग देणा रंगाईआ। निर्मल बिबेक कर सर्ब बुद्धी, ज्ञान ध्यान इक्को देणा समझाईआ। सुरती धार कर उच्ची, महल अटल देणा वखाईआ। शब्द नाल लग्गे रुची, नाता कूड़ कुड़यार तुड़ाईआ। तेरी आत्म सदा सुच्ची, विकारां विच ना होए हल्काईआ। तेरे दरस दी रहे भुक्खी, प्यार इक्को मंग मंगाईआ। विछोड़े विच रहे ना दुखी, दरस दे के तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गृह देणा सुहाईआ। सति कहे प्रभ दे दे साची सिख्या, सिख तेरा रूप नज़री आईआ। तेरा आदि जुगादी लेख इक्को लिख्या, जिस नूं मेट सके कोए ना राईआ। जिस धारों गुर अवतार पीर पैगम्बर लै के आउँदे भिख्या, भाषा तेरे नाम दी सुण के जगत देण सुणाईआ। तिस दवारे एकँकारे जन भगतां पूरी करनी इच्छया, आसा विच भरवासा देणा बंधाईआ। जगत जहान आदि जुगादी दस्सदे मिथ्या, तेरी किरपा नाल जग जीवत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति कहे परम पुरख परमात्म दे दे सोझी, सज्जण
६२५ १६ धुर दे दया कमाईआ। तेरा भगत तेरे प्रेम दा होवे जोगी, जुगती इक्को देणी दृढ़ाईआ। मन हंगता रहे ना रोगी, संगता ६२५ १६
साची देणा मिलाईआ। पन्ध मुके लोक परलोकी, सलोक ढोला सोहणा गाईआ। मंज़ल रहे कोई ना औखी, औकड़ पिछली देणी चुकाईआ। पढ़नी पए कोए ना पोथी, पुस्तक सीस ना कोए टिकाईआ। बन्नृणी पए ना कोए लंगोटी, जंगलां विच ना कोए भवाईआ। पर्बतां चढ़ना पए ना चोटी, कुंदरां मुख ना कोए छुपाईआ। श्री भगवान सति दुआर जन भगतां इक प्रेम प्यार विहार दी खा के रोटी, रट्टा चुरासी देणा चुकाईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ किरपा सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभू पूरा कर काज, सतिजुग साचा राह बणाईआ। दीन दुनी बदल समाज, समग्री सब दी वेख वखाईआ। सति धर्म जणा राज, रईयत इक्को रंग रंगाईआ। दूसर रहे ना कोई मुहताज, आशा सब दी पूर कराईआ। नाम हलूणे नाल जावण जाग, कलयुग जीव सुत्ते दे उठाईआ। हँस बुद्धी होवे काग, मन मति ना कोए कुरलाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत बणाईआ। मेला मिले कन्त सुहाग, आत्म विछोड़ा रहे ना राईआ। दीपक जोत जगे चिराग, अन्ध

अन्धेर देणा चुकाईआ। आत्म परमात्म आपणे हथ्थ पकड़नी वाग, मार्ग साचे देणा चलाईआ। जन भगतां अगे देणा पए ना किसे जवाब, सिध्धे सचखण्ड दुआर देणे पुचाईआ। बिन तेरे नाम दी सुणन ना कोए आवाज़, रागां नादां दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे शब्द दी इक रबाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देणी वखाईआ। सति कहे प्रभ कर दे हुक्म अगम्म, लेखा समझ सके कोए ना राईआ। भेव खुल्हा दे पवण स्वास दम, (दामनगीर) हो के मेल मिलाईआ। प्रकाश नूर चाढ़दे चन्न, चन्द्रमा चन्द सीस झुकाईआ। जन भगतां मेट के चिन्ता ग़म, सोग अंदरों देणा कढाहीआ। नाम भण्डारा दे के धन, तृष्ना तम दी देणी मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणे विच समाईआ।

८ सावण शहिनशाही सम्मत २ बुढ्ढा सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर

सति कहे प्रभ आपणा मार्ग दे चंगा, चंगयाई बुरयाई विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतां बणा संगा, सगली चिन्त गवाईआ। जाणा पए किसे ना गंगा, अमृत अंदरों देणा वखाईआ। वजाउणा पए ना कोए मृदंगा, नाद धुंन कर शनवाईआ। करना पए ना कोई दंगा, मन वासना ना कोए लड़ाईआ। वेखणा पए ना कोई कन्ढा, पार किनारे देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाउणा आपणा बन्दा, बन्दगी इक्को इक सुणाईआ। सति कहे प्रभ वक्त सुहा दे वेला, थित वार समझ कोए ना पाईआ। आपणा धाम दस्स नवेला, निरगुण हो के आप समझाईआ। शब्दी धार तेरा चेला, सुरत सवाणी जोड़ जुड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया जंगल जूह उजाड़ बेला, धूआँधार नज़री आईआ। तेरा नाम निधान फिरे विच अकेला, बलधारी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गृह आपणा आप प्रगटाईआ। सति कहे प्रभ वेख आपणा घर घराना, घिरना अवर दे चुकाईआ। जित्थे भगतां लग्गे यराना, नाता जुड़े सहिज सुभाईआ। शब्दी उपजे इक तराना, सुर ताल ना कोए सुणाईआ। मिटे तेज रवि ससि भाना, जोती जोत डगमगाईआ। मन्दिर होए सुहाना, वज्जे सच वधाईआ। तेरा खेल श्री भगवाना, बिन तेरी किरपा समझ कोए ना पाईआ। दर दरवेश हो के मंगां दाना, दाते देणा आप वरताईआ। तूं लख चुरासी धुर दा कान्हा, गोपी करोपी विच ना कोए फसाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, मदद करनी थाउँ थाँईंआ। तेरे नाम प्यार मुहब्बत विच जन भगत होए दीवाना, मस्ती हस्ती विच्चों देणी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नज़री आवे इक निशाना, निशावर हो के तेरी सेव कमाईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ धरनी वेख हाल, हौली हौली दए दुहाईआ। साथी निभया कोए ना नाल, गुर अवतार पैगम्बर गए फेरीआं पाईआ। थिर रही ना कोई धर्मसाल, मन्दिर मठ शिवदवाले जुग जुग बदल के आपणा नाम वटाईआ। बचया रिहा ना कोई कोलों काल, काल जंजाल ना सक्या कोए तुड़ाईआ। जो आया सो दे के गया तेरे अहिवाल, नाम बाणी सिफ्त सालाहीआ। मुशकतां कर के घालदा गया घाल, सेवक सेवा सच कमाईआ। धर्म कर्म दा वजाउँदा गया ताल, जगत धुन नाल धमाईआ। अन्त निभया कोई ना तेरे नाल, नवें तों नवां वेस अनेक रूप वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बदलदी रही चाल, इष्ट दीन दुनी आपणा रंग वटाईआ। मेरा हल ना होया स्वाल, जवाब विच ना कोए शनवाईआ। सिफ्तां कोटन कोटि करदे गए कुआल, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। अन्तिम सब दा होया ज़वाल, ज़ेर ज़बर निशाना ना कोए वखाईआ। कर किरपा श्री भगवान, मेहरवान दया कमाईआ। चरण बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी ओट तकाईआ। तेरे नाम दा बणे इक विधान, विद्या दी धारा तोड़ ना कोए रखाईआ। जो आया सो दे के गया फ़रमान, बिन पुरख अकाल आदि अन्त ना कोए सहाईआ। तूं जुग चौकड़ी सदा नौजवान, बिरध बाल ना कोए रूप वटाईआ। भगतां उपर हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच दवारा एकँकारा इक्को दे मकान, मकबरयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। सति संदेसा दे के धुर फ़रमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन करे ना कोई पहचान, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी सन्तो दे गृह पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे करवट बदली बाशक तशक, विष्नूं ध्यान लगाईआ। साचा नज़र ना आया कोई इश्क, आशक माशूक शकूक विच लोकाईआ। धर्म प्रीती पूरा दिसे कोई ना सिदक, सबर सच ना कोए वखाईआ। दृष्टी दुनिया होई निन्दक, चुग़ली मुख वड्याईआ। मन वासना कीता भृष्ट, भृष्टाचार खेल खिलाईआ। बिन भगतां खुल्ही किसे ना दृष्ट, परदा ओहला ना कोए उठाईआ। साची धारों सारे गए ख़िसक, सम्भल कदम ना कोए टिकाईआ। नूरी लग्गा कोए ना तिलक, जोत नैण ना कोए रुशनाईआ। पेट कारन एह हुन्दी वेखी इल्लत, इलम नाल लड़ाईआ। जगत ख़ुआरी करे ज़िल्लत, जोरू ज़र दए दुहाईआ। भरम मिटे कोई ना चिन्त, चिखा रही जलाईआ। साची दिसे कोई ना हिम्मत, हौसले गुर अवतार

पैगम्बर बैठे ढाहीआ। तेरे दरस दी होई किल्लत, किला कोट काया बंक ना कोए सुहाईआ। पुरख अकाल तेरे अगे इक्को मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जन भगतां चुका पूरब जन्म दी कीमत, करमां दा लेखा दे मुकाईआ। धरनी कहे मेरा भाग होवे वड ग़नीमत, गुरमुख वेख खुशी मनाईआ। मैं कोई लिंगां वाला नहीं त्रीमत, सब दी मईआ इक अख्वाईआ। तेरी प्रभू समझे कोए ना शानो शौकत ज़ीनत, ज़ेब ऐब करे गुनाहीआ। कलयुग अन्त कटे ना कोए मुसीबत, मुबतला हो के ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रगटा आपणी असलीअत, धर्म जणा हक नसीअत, वसीअत सब दी पूर कराईआ।

८ सावण शहिनशाही सम्मत २ दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड शफी पूरा ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ी कालख, कलमा कायनात हक ना कोए गाईआ। अन्तर आत्म बणे कोई ना सालस, परमात्म मेल ना कोए ना मिलाईआ। गुरमुख लभ्भे कोई ना ख़ालस, मन मनसा दए दुहाईआ। चार वरन अठारां बरन करे ना कोई सच अदालत, धुर फ़रमाना ना कोए सुणाईआ। जीव जंत साध सन्त जगत क्रिया पई बग़ावत, झगड़ा अन्तशकरन ना कोए चुकाईआ। मैं तूं चुक्के ना कोए अदावत, भेव अभेद ना कोए खुल्लाईआ। साचा नाम भण्डार करे ना कोए सख़ावत, वस्त अमोलक काया गोलक ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेखा दे चुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ चार कुण्ट वेख अन्धेरा अन्ध, सच नूर ना कोए रुशनाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार तेरा गावे कोई ना छन्द, आत्म परमात्म मेला मेल ना कोए मिलाईआ। शब्द रुहानी मक्के किसे ना पन्ध, जसमानी परदा ना कोए उठाईआ। सच सरोवर मिले किसे ना धुर दी गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जगत वासना तारीआं लाईआ। सति प्यार एकँकार तेरा पावे कोई ना आनंद, निज़ानंद परमानंद विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल साहिब बख्शंद, सति सतिवादी तेरी आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ वेख कलयुग अन्त कलेश, चार कुण्ट दहि दिशा दए दुहाईआ। सहाई दिसे ना कोए विष्न ब्रह्मा महेष, सच संदेश ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए लेख, शब्द ढोला गीत प्रगटाईआ। लहिणा देणा दस दस्मेश, शब्द गुरू तेरे हथ्थ वड्याईआ। किरपा कर वासी सचखण्ड नर नरेश, शाह सुल्तान तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुन्दे गए केत, कोटन कोटि फेरीआं पाईआ। बिन तेरे आत्म परमात्म निरगुण सरगुण करे कोई ना हेत, पारब्रह्म

ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। अंदर वड़ दे मन्दिर चढ़ के सच दवारे खोल्ह भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा देस, दहि दिशा रही कुरलाईआ। सति धर्म कहे मैं होया अन्त हैरान, हैरानी मेरे उत्ते आईआ। चार कुण्ट शरअ होई शैतान, ढोला हक ना कोए सुणाईआ। लेखा मुकदा जाए अन्त अञ्जील कुरान, सदी चौधवीं पन्ध चुकाईआ। तेरा डंका वज्जे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल इक्को नाम कर शनवाईआ। तेरा धर्म होवे विच प्रधान, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साची आस रखाईआ। सति कहे पुरख अकाल उठ के वेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वध्या भेख, चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन होए हल्काईआ। तेरा किसे ना दिसे धुर दा वेस, महल अटल वेख खुशी कोए ना आईआ। कोटन कोटि तेरा लभ्भदे गए भेत, परदा ओहला सक्या ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया मेट खेड, ख़ालक ख़लक दे समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ बेनन्ती कर मन्ज़ूर, अरज़ इक्को इक सुणाईआ। प्रगट हो हाज़र हज़ूर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत उधारना तेरा दस्तूर, दस्त बदस्त आपणा लहिणा देणा चुकाईआ। जो भगती अंदर बणे तेरे मज़दूर, दिवस रैण तेरा नाम ध्याईआ। जन्म जन्म दा मुआफ़ कर कसूर, लख चुरासी पैंडा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्श अगम्मी धूढ़, बिन चरणां चरण कँवल दे समझाईआ। सति कहे मेरे साहिब श्री भगवान, भगवन तेरी ओट तकाईआ। पृथमी आकाश दे ज्ञान, पंजां तत्तां आप समझाईआ। बुद्धी रहे ना कोए नादान, मति चले ना कोए चतुराईआ। शब्द निराला मार बाण, अणयाला हथ्थ उठाईआ। लेखा चुक्के दो जहान, जहालत कूड़ बाहर कढाहीआ। धुर दा दे इक पैग़ाम, पैगम्बरां लै उठाईआ। तेई अवतार करन ध्यान, ईसा मूसा मुहम्मद करे शनवाईआ। नानक गोबिन्द कर परवान, परवाना धुर दा हथ्थ फड़ाईआ। भविख्तां विच दे के गए ब्यान, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कल कल्की खेल करे महान, जिस दी समझ किसे ना आईआ। वसे नगर सम्बल धाम, अस्थान भूमिका समझ कोए ना पाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, सिर सके ना कोए उठाईआ। जो आदि जुगादी जीव जंत लख चुरासी सब दा काहन, पुरख अबिनाशी नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धर्म दवारा धुर दा देणा वखाईआ। सति कहे कलयुग औध रही पुग, प्रभ बेनन्ती इक सुणाईआ। अन्तिम बदल दे आपणा जुग, जुगीशर रहे कुरलाईआ। आपणे नाम दी दे दे इक्को तुक, चार वरन सच पढ़ाईआ। आवण जावण लख

चुरासी भगतां पैंडा जाए मुक, इक्को जोत जोत विच मिलाईआ। जन्म मरन दा रहे कोई ना दु:ख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाता जोड़ पिता पुत्त, गोबिन्द गुर गुर दयां समझाईआ। मात गर्भ उलटा होणा पए ना रुक्ख, दस दस मास अग्नी ना कोए तपाईआ। कर प्रवेश सच सुच, सच संजम आपणा दे जणाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, साख्यात निरगुण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म कहे कलयुग कूड़ कुड़यार दा बूटा पुट्ट, धर्म इक्को इक प्रगटाईआ। सति कहे मेरा धर्म अनोखा, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस जन्म मिले मौका, बिना मानव हथ्थ किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगत वछल गिरवर गिरधार किसे नाल कदे करे ना धोखा, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज तत कोठा, गृह मन्दिर अंदर बह के खुशी वखाईआ। नाम निधान शब्द अगम्मी लाए चोटा, सोई सुरत आप जगाईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश प्रगट होवे जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सच दुआर चढ़ना दिसे सौखा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जन भगत सुहेला चौदां लोक देवे कोई ना धोखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभ किरपा कर मेरे ठाकर, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख डूँग्घा सागर, गहर गम्भीर आपणा फेरा पाईआ। योद्धा सूरबीर दिसे ना कोए बहादर, जो मन वासना दए खपाईआ। मेला मिले ना करते करीम कादर, तेरी कुदरत वेख हैरानी मेरे उत्ते आईआ। साचा वणज करे ना कोई बण सौदागर, सौदा हट्ट ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया कर तबादल, अदली बदली तेरे हथ्थ जुग चौकड़ी चली आईआ। सति कहे प्रभू मैं तेरा सतिजुग सच्चा, जुग जुग वेस वटाईआ। मैं आवां तेरा बच्चा, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। मेरा कोई तत्तां वाला भाण्डा नहीं कच्चा, मानस रूप ना कोए वटाईआ। मेरीआं कोई वेखण वालीआं नहीं अक्खां, तेरा नूर जोत रुशनाईआ। तेरे चरण कँवल सदा वसां, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। मैं कोई लहिणा देणा चुकाउणा नही नालं हथ्थां, तेरा धर्म सदा धर्मीआं दयां वखाईआ। मैं सड़या नहीं नाल कक्खां, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। मैं भगत सुहेला बणां सका, साजण हो के सेव कमाईआ। सदा तेरे नाम दा गावां जसा, वेद पुराण शास्त्र सिमरत खाणी बाणी तेरा रंग वखाईआ। मैं लेखा जाणा रसना जेहवा बत्ती दन्द भट्टा, सोहले ढोले विचोले बण गए जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान पुरख समर्था, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त लेखा पूरा करदे लहिणे देणे वाला पट्टा, हक हकूक मेरे हथ्थ फड़ाईआ। सति कहे पुरख

अकाल मैं तेरा नंन्हां पुत्त, पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। तूं साहिब स्वामी अबिनाशी अचुत, चातृक हो के रिहा बिल्लाईआ। किरपा निधान ठाकर आपणी गोदी चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पैंडा जावे मुक, माया ममता मोह कूड़ जगत ना कोए सताईआ। मैं तेरा नाम हरि हिरदे विच दस्सां सच सुच्च, सति करां पढ़ाईआ। परदा ओहला रहे ना किसे मनुक्ख, मानव ज़ाती दयां समझाईआ। सब दी सफ़ल होवे मात कुक्ख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्को देणा वखाईआ। सति कहे मेरे साहिब गहर गम्भीर, गवर ग़ौर नाल जणाईआ। तेरे हथ्थ सर्ब तकदीर, तदबीर दे जणाईआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, राउ रंक इक्को घर वसाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म दे सीर, निझर झिरना इक झिराईआ। जिस मंज़ल ते चढ़या कबीर, सन्त सुहेले ओथे देणे पुचाईआ। शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। गुरमुखां अंदरों बदल दे ज़मीर, ज़ामन हो के पार लँघाईआ। तेरी नज़र ना आवे किसे तस्वीर, मसव्वर सके ना कोए समझाईआ। अमृत आत्म दे साचा नीर, नर नरायण आप दया कमाईआ। कलयुग अन्त होई अख़ीर, आख़र लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग साचा धरनी उत्ते बन्न्हे धीर, धर्म पूत डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, सति दवारे इक्को आस रखाईआ। सति कहे प्रभू मेहर नज़र नाल झाक, दयावान दया कमाईआ। कूड़ कुड़यार दा लहिणा देणा कर बेबाक, बाकी अवर रहे ना राईआ। चार वरन दस्स इतफ़ाक, प्रेम प्रीती बन्धन पाईआ। आत्म परमात्म सच बणा साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुसताख़, बुद्धी बिबेक देणी कराईआ। गोबिन्द पूरा कर भविख्त वाक्, जो लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। पुरख अकाल सब नूं गाउणी पए गाथ, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को ढोला जै जैकार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, बिन तेरे निरगुण सरगुण दूजा कोए दिसे ना साथ, जगत साथी संगी कम्म कोए ना आईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड पिण्डोरी ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ सुण पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तेरा हुक्म वरते सदा जुग चार, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होए गिर्फ्तार, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। त्रै पंज तेरे पनिहार, नित नवित सेव कमाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, तख्त निवासी सोभा पाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार कर खेल विच

संसार, वड संसारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। नव नौ चार तेरी किसे ना पाई सार, खण्ड ब्रह्मण्ड लोकमात शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिख लिख लेखा गए हार, कलम शाही काग़ज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, दर दरबारे धुर दे मंग मंगाईआ। सति कहे पुरख अकाल ख़ाली झोली भर, श्री भगवान तेरी आस रखाईआ। निरभउ भय चुका डर, भयानक रेखा दे बदलाईआ। माण वड्याई दे उपर धरनी धर, धर्म धवल देणा बणाईआ। सचखण्ड निवासी किरपा निधान किरपा कर, किरपन हो के सीस झुकाईआ। साची मंज़ल तेरे हक दवारे जावां चढ़, हकीकत विच तेरा दर्शन पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादि नित नवित तेरा ढोला लवां पढ़, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हउमे हंगता तोड़ हँकारी गढ़, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभ खोल्ह दरवाज़ा, दरे दरबार नज़री आईआ। तेरा नाउँ ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणयां हो सहाईआ। सीस जगदीश इक्को सोहे तेरे ताजा, तख़्त निवासी पुरख अबिनाशी सखचण्ड दवारे सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण सरगुण रच काजा, कुदरत दे मालक ख़ालक हो के आपणा वेस वटाईआ। भूपन भूप सति सरूप राजन राजा, शाह शहाना इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धो दाग़ा, पतित पुनीत सृष्टी दृष्टी दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे एकँकारे निरगुण नूर कर रुशनाईआ।सति कहे प्रभ निर्मल प्रगट कर जोत, जोती जाते आपणा परदा दे उठाईआ। भाग लग्गे सच दवारे साचे कोट, कूड़ कुटम्ब देणा मुकाईआ। नाम निधाना दस्सणा आपणा गोत, वरन बरन ना कोए जणाईआ। जन भगतां दे के साची ओट, ओड़क आपणा रंग चढ़ाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया तन वजूद कढुणा खोट, अन्तर निरंतर मंत्र देणा समझाईआ। मन बुद्धी दी रहिण ना देणी सोच, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। नेत्र खोल्ह के अक्ख लोच, ज्ञान अंजन देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान बण दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। सति कहे प्रभ सचखण्ड निवासी, निवास अस्थान आपणा वेख वखाईआ। जन भगतां आत्म होई उदासी, संसा रोग ना कोए मिटाईआ। पंडत मिले कोए ना काशी, जगत विद्या होई हल्काईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना घाटी, दर दरवाज़ा ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को ज़ाती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राती, रुत्त आपणी दे बदलाईआ। जन भगतां दरस दे साख्याती, स्वच्छ सरूपी हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले

खेल सदा बहु बिध भाती, भावना सब दी वेख वखाईआ। सति कहे मेरे साहिब स्वामी सतिगुरू, गुरदेव बन्दना विच सीस निवाईआ। सति धर्म सति सतिवादी करदे शुरु, शरअ दा लेखा दे चुकाईआ। तेरे हुक्मे अंदर बन्दा बन्दगी वाला तुरू, तुरत आपणा रंग देणा रंगाईआ। सुरत शब्द नाल जुड़ू, अग्नी अग्ग ना लागे राईआ। इक्को मंत्र तेरा फुरू, फ़ुरने सारे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला देणा उठाईआ। सति कहे प्रभ वेखां तेरा धर्म दवार, दवारका वासी जित्थे बैठे सीस निवाईआ। कोटन कोटि राम अवतार, राम राम कह के शुकर मनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सजदे करन वारो वार, कलमा हक हक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। देवत सुर पावे कोई ना सार, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग धूढ़ी मंगण छार, मस्तक टिक्के नाम रमाईआ। जुग चौकड़ी खेल तेरा अपर अपार, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। पूरब लहिणा देणा लेखा लै विचार, विभचार कूड़ा देणा मुकाईआ। साचा मार्ग ला विच संसार, संसा रोग रहे ना राईआ। सति धर्म दा सतिगुर शब्द करे प्रचार, पर्चा भगतां अगे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक टिकाईआ। सति कहे मेरे धरना पति, धरनी धरत धवल दे वड्याईआ। तुध बिन रखे कोई ना पत, पतिपरमेश्वर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। निरगुण हो के लोकमात आ वत, वतन आपणा खोज खुजाईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी सांतक सति ना कोए कराईआ। निज नेत्र खोल्हे कोई ना अक्ख, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। मन वासना सृष्टी होई वस, वास्ता कूड़ जुड़ाईआ। जींविदयां जग खेड़ा करे कोई ना भठ्ठ, मरजीवत रूप ना कोए वटाईआ। मोह प्यार मुहब्बत विच रहे नठ, दिवस रैण बण के पाँधी राहीआ। झगड़ा किसे ना मुकया तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध कम्म किसे ना आईआ। अबिनाशी करते साचा मार्ग शब्दी धार सब नूं दस्स, एकँकार आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, तेरा खेल अलखणा अलख, लख सके कोए ना राईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ लगा आपणी कुल, जन भगत लोकमात वड्याईआ। जो तेरे नाम कंडे गए तुल, तराजू चढ़ के सोभा पाईआ। सच प्रीती अंदर गए घुल, आप आपणा भेंट कराईआ। उहनां दीपक कदे होवे ना गुल, जुग चौकड़ी कर रुशनाईआ। साची दरगाह पाउणा मुल, कीमत आपणा नाम रखाईआ। तूं मालक आदि जुगादी सुल्हकुल, राखा दो जहान अख्वाईआ।

ਤੇਰਾ ਸੰਤ ਸੁਹੇਲਾ

तेरा सन्त सुहेला कदे ना जावे रुल, निरगुण हो के सरगुण लैणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाह मेल मिलाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दे अगम्मी जुगती, जगत जीवण दे बदलाईआ। साचे नाम मिले सुरती, सुरत शब्द विच समाईआ। आवाज़ सुणनी अगम्मी धुर दी, धुन आत्मक राग दे जणाईआ। समझ आवे पूरे सतिगुर दी, बिना सतिगुर शब्द सीस ना किसे निवाईआ। धार दस्स आनंद पुर दी, जिस अनन्द विच गोबिन्द रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दर मन्दिर दे वखाईआ। सच कहे प्रभ साचा नाम दे नयामत, निश्अक्खर आप जणाईआ। भगतां आत्म कर सच अमानत, एथे ओथे हो सहाईआ। दो जहानां दे ज़मानत, अगे हो आप छुडाईआ। सचखण्ड दवारे जांदयां करे ना कोए ममानत, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। तेरा मेला होवे निरगुण निरवैर निरँकार सही सलामत, जोती जोत विच मिलाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया रहे ना कोए अलामत, इलम तों बाहर आपणा दरस देणा वखाईआ। झगड़ा रहे ना किसे क्यामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देणा समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे हक जगदीश, जगदीशर तेरा राह तकाईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, भगवन्त वारी अन्तिम आईआ।
६३४ जूठ झूठ दी बदल दे रीत, सतिजुग सच सुच प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा दे दरसाईआ। जित्थे ६३४
१६ बैठा रिहा अतीत, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जणा दे साचा गीत, राग आपणा इक प्रगटाईआ। १६
झगड़ा मुक जाए हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। जोती जाते तेरी होवे सच प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति कहे मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभ पूरी कर दे मनसा, मन दा मोह रहे ना राईआ। जन भगत गुरमुख बणा साचा हँसा, सोहँ धुर दा जाप जपाईआ। माणस जन्म बणे बणता, लख चुरासी गेड़ा दे कटाईआ। दे वड्याई साचे सन्ता, जो सति विच रह के तेरा ढोला गाईआ। तूं मालक आदि जुगादी अन्ता, भगवन्त बेपरवाहीआ। परमात्म आत्म कन्ता, गहर गम्भीर अख्वाईआ। साचा चाढ़ रंग बसन्ता, मजीठ अनडीठ आप रंगाईआ। बोध अगाधा बण पंडता, धुर दा नाम देणा दृढ़ाईआ। लेखा चुका विच्चों जीव जंता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा देणा प्रगटाईआ। सति धर्म कहे मेरी आसा कर पूरी, पूरन परमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणा दर्शन दे नूरी, नूर नुराना नज़री आईआ। जुग जन्म दी पिछली चुक्के मज़दूरी, लेखा पूरब झोली पाईआ। ममता रहे कोई ना कूड़ी, काया क्रिया होए सफ़ाईआ। इक्को तेरे चरण दी मस्तक लग्गे धूढ़ी, टिक्का तेरा नाम रमाईआ। चतुर सुघड़ होवे मूर्ख मूढ़ी, बुध बिबेक

देणी कराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म प्रीती लग्गे गूढ़ी, रंग इक्को नज़री आईआ। तेरा दरस मंगां हज़रत हाज़र हज़ूरी, हज़ूर मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा कर पूरी, अधूरी रहिण कोए ना पाईआ। सति कहे मैं धर्म दी धुझ, धर्म आत्म दयां जणाईआ। जन भगतां दे के सब कुझ, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। निर्मल कर के बुध मन मनसा दयां खपाईआ। साची बख़्शां सुध्ध, सिध्धा तेरे नाल मिलाईआ। परदा ओहला भेव रहे ना गुज्झ, अन्ध अन्धेरा दयां चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जन भगतां पूरी आवे सुझ, सूचना दे के सच दयां दृढ़ाईआ। परम पुरख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार दीन दयाल होणा खुश, खुशीआं विच वस्त दस्त हथ्थ देणी फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दी वखाउणी साची रुत्त, कलयुग रैण अन्धेरी देणी मिटाईआ।

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ दारा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभू सति धर्म कर अमन, अमल सब दा वेख वखाईआ। जूठ झूठ आपणे अन्तर कर दमन, दमां दा समां दे बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैथों कम्बण, दर ठांडे सीस निवाईआ। कूड़ कुड़यारे पकड़ बिना संमण, शब्दी हुक्म इक जणाईआ। सतिजुग फुलवाड़ी मौले चमन, बहार गुलशन इक महकाईआ। मूर्ख मुग्ध मूल ना जम्मण, तत तन ना कोए हंढाहीआ। साचा राग सुणा कन्नण, धुर दी धार प्रगटाईआ। इक्को इष्ट पुरख अकाल तेरा मन्नण, मानस मनता ना कोए वधाईआ। जन भगत सुहेले बेड़ा बन्नूण, बन्दना तेरे दर कर के खुशी प्रगटाईआ। निम वास विच्चों कढ्ढण चन्दन, सच सुगंधी देणी प्रगटाईआ। सन्त सुहेले तेरे अन्तर रलण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड दवारा इक्को मल्लण, पुरीआं लोआं डेरा ढाहीआ। मेहर नज़र अंदर पलण, परवरिश करनी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा देणा वरताईआ। सति कहे जन भगतां बण धिर, धीर इक्को दे दरसाईआ। झगड़ा मुके धड़ सीस सिर, सिदक भरोसा देणा बनूाईआ। तेरा दर्शन मंगण निरवैर निर, निरँकार ओट रखाईआ। तूं घर वखाउणा थिर, दर आपणा परदा लाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी बीतदयां कोई लग्गा नहीं चिर, तेरे हुक्में अंदर सारे गए पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं परत के आयों फिर, निरगुण हो के सरगुण वेस वटाईआ। सच मैदान वेख फिर, नव सत्त खोज खुजाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ा गेड़ा जावे गिड़, सति सुच पासा लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, धर्म दवारा दे जणाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दे दे दीद, दर तेरे अंदरों बाहर कढाहीआ। ग़फ्लत विच ना आवे नींद, सोई सुरती शब्द जगाईआ। निज लोचन करन दीद, दर्शन देणां थाउँ थाँईंआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, नीचां ऊँचां मिल के खुशी मनाईआ। साची दस्सणी इक प्रीत, जिस प्रीत विच्चों प्रीतम मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सच जगदीश, जगदीशर तेरे हथ्थ वड्याईआ। सति कहे प्रभ इक भरोसा तेरा सदका, सद सद ध्यान लगाईआ। मेरा लहिणा देणा कद का, पूरब वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना भगत भगवान दी यद्द का, यदपि आपणा रंग चढ़ाईआ। माण देणा ना झूठे पद का, दर घर साचे सोभा पाईआ। लेखा रहे ना कूड़ी हद का, हरि मन्दिर देणा सुहाईआ। वसणा चंगा नहीं अलग दा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा छड्ड दे ममता वाले जग दा, जगजीवण दाते आपणी दया कमाईआ। सड़ना मुक जाए अग्नी अग्ग दा, तृष्ना अग्ग ना कोए तपाईआ। पन्ध मुका दे शाह रग दा, घर विच घर देणा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह ला दे सतिजुग साचे जग दा, कलयुग कूड़ कुड़यार देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल सूरे सरबग दा, समरथ आपणी कल देणी वरताईआ।

६३६
१६

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे सब सृष्ट बणा आपणी नगरी, खेड़ा तेरा सोभा पाईआ। नाम भण्डारा दे सच समग्री, वस्त अनमुल्ल आप वरताईआ। चिन्ता मेट कूड़ कुड़यार सगली, हउमे रोग रहे ना राईआ। कर प्रकाश काया बदनी, बदला अंदरों दे चुकाईआ। धूढ़ करा चरण मजनी, अठ्ठ सठ्ठ डेरा देणा ढाहीआ। तैनूं लभ्भणा पए ना विच्चों जंगलीं, काया मन्दिर होवे रुशनाईआ। सड़ना पए ना तत अग्नी, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। आत्म बणाउणी आपणी पत्नी, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम लाज रखणी, डोर तेरे हथ्थ फड़ाईआ। भगतां आसा रहे ना सक्खणी, धुर दी दात देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे तेरी नगरी इक्को वसणी, विश्व देणा रंग रंगाईआ। सति कहे प्रभ वसा लै आपणा नगर, नौ खण्ड सत्त दीप मिले वड्याईआ। तख्त निवासी हो के कमा लै अदल, इन्साफ़ देणा प्रगटाईआ। जन भगतां पूरी होवे सधर, सदमा दुःख रहे ना राईआ। तेरे नाम दी होवे कदर, कुदरत दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। ममता मोह करे किसे ना कतल, कातिल कलयुग देणा खपाईआ। आपणे मिलण दा आपे दस्सणा यतन, परदा

ओहला जगत उठाईआ। तेरा परत के देखण सन्त सुहेले वतन, बेवतनां कट जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दे चुकाईआ। सति कहे प्रभ साची दे दलील, शब्दी हुक्म वरताईआ। तेरे अगे इक अपील, अपरम्पर स्वामी दिती सुणाईआ। जन भगतां लभ्भणा पए ना कोए वकील, सिध्धा मेला लैणा मिलाईआ। लोकमात ना होण ज़लील, जगत खुआरी नेड़ कोए ना आईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना छैल छबील, जोबनवन्ता इक अख्वाईआ। तेरा रंग सदा नवीन, नव नौ चार देणा चढ़ाईआ। तेरी धार सदा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख गुरसिख करने तसलीम, जो दर ठांडे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग विच कर तरमीम, सतिजुग साचा सच वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेट दे कूड़ी क्रिया किर्म कर्म रहिण ना पाईआ। मैं चार कुण्ट दहि दिशा फिरया, भज्जया वाहो दाहीआ। साध सन्त जीव जंत माया ममता विच घिरया, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। मंज़ल वेखे ना कोई घर थिरया, चरण कँवल सोभा कोए ना पाईआ। जगत वासना जगत जहान गिरया, मंज़ल चढ़ के तेरा नाम ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मिले सरनाईआ। सति कहे प्रभ मैं वेख्या जगत समूह, थाउँ थाँईं खोज खोजाईआ। तेरा रूप नज़र ना आया हू बहू, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। ममता विच्चों बाहर दिसी कोई ना रूह, मन वासना नाल लड़ाईआ। नाम सुणया नहीं तू ही तू, ढोले जगत वाले गाईआ। कर किरपा अबिनाशी करते परमात्म हो के आत्म नाल जाह छूह, शरअ दा लेखा दे मुकाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच्चा सतिगुरू, गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। जिस दा मंत्र नाम जगत जहान होणा शुरु, शहिनशाह हो के दे वरताईआ। सब दे अन्तर निरंतर नाम फुरू, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर देणी वड्याईआ। सति कहे मैं वेखे सत्त दीप, सति सति हो के फेरा पाईआ। प्रभ तेरे वस्या ना कोए करीब, दूर दुराडे बैठे डेरे लाईआ। जगत धार वेखी अजीब, कोटन कोटि इष्ट रहे मनाईआ। झगड़ा पा के माया वाला नसीब, किस्मत किस्मत नाल टकराईआ। खेल वेख के अमीर ग़रीब राउ रंक हैरानी विच आईआ। दीनां मज़्बां पाई लीक, ज़ात पात करे लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार इक्को तेरे विच तौफ़ीक, चार वरन अठारां बरन आपणी गोद उठाईआ। सति धर्म कहे मेरे जगदीश, जग जीवण दाते जग दी कला दे भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां तेरी भुल्ल ना जाए प्रीत, प्रती दिन पर्बत चढ़ के सच दवारे काया मन्दिर खड़ के स्वच्छ सरूपी तेरा दर्शन पाईआ।

६३७
१६

✪ ८ सावण शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे किरपा कर पुरख समरथ, जगत जुगत तेरी नज़री आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी सरनी रहे ढठ्ठ, डण्डावत विच आपणा आप भेंट कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर इक्ठ, मिल के बेनन्ती इक सुणाईआ। देवत सुर जोड़न हथ्थ, निव निव लागण पाईआ। चारे युग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्में अंदर रहे नच्च, भज्जण वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी खोल्ह अक्ख, प्रतख रूप वटाईआ। कलयुग खेड़ा कूड़ी क्रिया कर भठ्ठ, सति सच मात प्रगटाईआ। धर्म दवारा खोल्ह एको हट्ट, एकँकार दया कमाईआ। तेरा नाम सृष्ट सबाई लए रट्ट, इष्ट इक्को सब दा नज़री आईआ। माया ममता मोह विकार सारे जाण छड्ड, सहिंसा शक भरम ना कोए भुलाईआ। तेरी आत्म परमात्म रहे ना अड्ड, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। धर्म निशाना दो जहानां इक्को गड्ड, गॉड खुदा वाहिगुरू राम आपणा नाम समझाईआ। भगत सुहेले गुरमुख लभ्भ, मानव ज़ाती खोज खुजाईआ। संसा रोग मेट झब्ब, निरगुण हो के परदा लाहीआ। मन वासना बदी रहे ना कोई बद, बदकारी अंदरों देणी कढाहीआ। सच दुआर दा देणा पद, पदमां विच्चों गुरमुख आप तराईआ। तेरा दरस होवे सदा उपर शाहरग, शहिनशाह हो के जलवा नूर कर रुशनाईआ। सड़ना पए ना कलयुग अग्ग तत्ती वा ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सूरे सरबग, समरथ आपणा फेरा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्त कर पड़ताल, लख चुरासी जीव जंत वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, बिहबल हो के दए दुहाईआ। लेखे लग्गे किसे ना घाल, घायल हो के मारन धाहींआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलमा सके ना कोए बचाईआ। माया ममता प्या जंजाल, जम की फास ना कोए तुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां दा दिन्दे सर्ब अहिवाल, तेरा हुक्म ना कोए समझाईआ। काहन मन्नदे जेहड़ा खेलदा रिहा नाल गवाल, धुर दे काहन तैनूं सीस ना कोए झुकाईआ। अक्खरां वाला दिन्दे सर्ब पैग़ाम, सच तलाश वड अमाम ना कोए जणाईआ। शरअ विच करन तैनूं सर्ब बदनाम, माया ममता नाल रलाईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो श्री भगवान, भाग भगतां दे जणाईआ। मैनूं समझे कोई ना अवाम, आम कह सके कोए ना राईआ। गुरमुख बन्दीख़ाने विच्चों कढ्ढ गुलाम, लख चुरासी ज़ंजीर देणा तुड़ाईआ। आवण जावण झगड़ा मेट तमाम, तमअ दी लोड़ ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरी मेट शाम, शम्ह़ां नाम घर घर दीपक जोत कर रुशनाईआ। तेरे कदमां उत्ते प्रणाम, सजदयां विच दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा देणा सुहाईआ। सति धर्म कहे मेरे प्रीतम चोजी, चोज निराला दे वखाईआ। लख चुरासी अन्तर अन्तर आत्म बण खोजी, खोजत खोजत वेख वखाईआ।

६३८
१९

६३६ ६३६
१६ १६

तेरी धार जाणे कोई ना जोगी, ऋषीआं मुनीआं हथ्थ किसे ना आईआ। पावे भेव कोए ना बोधी, लख चुरासी सेजा रही हंढाहीआ। दीन दुनी जगत वासना होई रोगी, दुःख दारू ना कोए जणाईआ। झगड़ा प्या लोक परलोकी, सलोक सच ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी रख के गए ओटी, ओट अकाल इक जणाईआ। तूं काया मन्दिर सब दे अंदर वसें चढ़ के चोटी, चोट शब्द नगारा आप लगाईआ। गुरमुखां अंदर रहिण ना देणी वासना खोटी, खोटयां तों खरे लैणे बणाईआ। आत्म धार तेरी गोती, गोतम बुध दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी उठाईआ। सति कहे मेरे साहिब आदि जुगादी सदा हाज़र, हज़ूर तेरी वड वड्याईआ। सतिजुग साचा बण ताजर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर कातिल, नाम खण्डा इक चमकाईआ। जलवा नूर दे बातन, परदा ओहला आप उठाईआ। निज घर आत्म रख वासण, सच दवारे सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाशण, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। जन भगत सुहेला बणे तेरा दासी दासण, सेवक हो के सेव कमाईआ। मंज़ल रहे ना पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर चरणां हेठ दबाईआ। सचखण्ड दवारे देणा हक निवासण, निवास अस्थान इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान खुशी मनाईआ। सति कहे प्रभ सब दा वेख गृह, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी तेरा मन्ने भय, भाउ आपणा दे दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम कर खै, ख़ालस सतिजुग लै प्रगटाईआ। जो इक्को नाम तेरा लए, दीन दुनी दे समझाईआ। कूड़े वहण कदे ना वहे, धुर दी धार इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्तिम कर सौदा सच्चा, काची वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सतिजुग उठा आपणा बच्चा, धरती माई सोभा पाईआ। आपणा मार्ग दस्स अच्छा, अच्छी तरां दृढ़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मिटे मस्सा, नूरी चन्द दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब कुछ तेरे दिसे हथ्था, दूजा नजर कोए ना आईआ। सति धर्म कहे प्रभ उठ वेख आपणे भगत, कोटां विच्चों थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां नूं ताअने देवे जगत, मिहणयां विच लोकाईआ। उहनां तेरा भरोसा इक्को फ़कत, फ़िकरा आपणा दे समझाईआ। जिन्हां करके निरगुण सरगुण हो के आयों परत, पतिपरमेश्वर हो के रूप वटाईआ। उहनां दा ला लेखे जन्म बरथ, डे नाईट वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साचे प्रेम नाल कर अर्थ, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब पूरी कर शर्त, कौल इकरार तोड़ निभाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दे आपणा नाम निधान, अंदरे अंदर दे वरताईआ। मिले अगम्मी जाम, ज़ामन हो के लए छुडाईआ। पूरन होए

काम, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। साचे मन्दिर कर बिसराम, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। तूं घट निवासी श्री भगवान, अबिनाशी करता नाउँ धराईआ। तेरा झुलदा रिहा सदा निशान, जुग चौकड़ी हुक्में अंदर रिहा भवाईआ। जन भगत सुहेले साची दरगाह कर परवान, सचखण्ड दवारे दे वड्याईआ। जो तेरा नाउँ कलयुग अन्त श्री भगवन्त सतिजुग धार अंदर गाउँदे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विशेष आपणा रंग चढ़ाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत२ बीबी अजैब कौर दे गृह पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ वेख कलयुग कूड़ी रैण, अन्ध अज्ञान जगत लोकाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द तेरी सिफ्त सारे कहिण, अक्खरां वाले ढोले गाईआ। निरगुण धार तेरा सच सरूप पेखे कोई ना निज नैण, ज्ञान नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। माया ममता मोह विकार नाता जुड़या साक सज्जण भाई भैण, आत्म परमात्म मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। जगत वासना किसे ना चुकया लैण देण, तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। हउमें हंगता गढ़ विकारी सारे वहण, साची नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी नर नरायण, निरगुण सरगुण दे समझाईआ। सति धर्म कहे वेख प्रभ, पारब्रह्म आपणा ध्यान लगाईआ। अमृत झिरना झिरे ना किसे नभ, कँवल कँवल फुल्ल ना कोए महकाईआ। जगत विकारा सब नूं रिहा दब्ब, मन वासना विषयां विच हल्काईआ। साची मंज़ल चुके कोई ना पन्ध, चारे खाणी चुरासी विच भवाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर तेरा गावे कोई ना छन्द, गुर अवतारां पैगम्बरां ढोले गा के शुकर मनाईआ। सचखण्ड दवारे तेरा माणे कोई ना सच आनंद, रसना जेहवा चख चख रस दीन दुनी खुशी वखाईआ। सति जोत प्रकाश जलवा नूर तक्के कोई ना चन्द, जोती जोत ना डगमगाईआ। आवण जावण पतित पावन बिन तेरी किरपा मुके कोई ना पन्ध, गेड़े विच्चों गेड़ा बाहर ना कोए कढाहीआ। नाम निधान श्री भगवान काया मन्दिर अंदर वजाए ना कोई मृदंग, नाम तराना हक ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सूरे सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ा करदा आपणा ज़ोर, जोरू ज़र रिहा कुरलाईआ। लख चुरासी मिठ्ठा रस होया कौड़, अमृत विख सर्ब गया बदलाईआ। दृष्टी वासना सृष्टी रही दौड़, मन चंचल सब नूं रिहा भवाईआ। तेरा नूर हाज़र हज़ूर तक्के ना कोई कर के ग़ौर, गहर गम्भीर तेरा भेव कोए ना पाईआ। साचे मन्दिर मनार शब्द अगम्मी लाए कोई ना पौड़, मंज़ल चढ़ के हक हकीकत वाला नाअरा ना कोए सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरी सरन मिले सरनाईआ। सति कहे प्रभ वेख गुरमुख साचे सिख, लोकमात ध्यान लगाईआ। बिन तेरी किरपा नाम पाए कोए ना भिक्ख, भिखशू वेखी जगत लोकाईआ। जिन्हां दा गोबिन्द शब्दी धार लेखा गया लिख, जगत बुद्धी कम्म किसे ना आईआ। जगत लोचन किसे ना पए दिस, नज़र बेनज़ीर सब दी दए बदलाईआ। तूं आदि जुगादी ज़ामन मालक प्रितपालक इक्क, एकँकार परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ। नाम भण्डारा अमृत रस दे मिठ्ठ, अनडिठ्ठ अगम्मी धार आप वरताईआ। हर घट मौले स्वामी हो के वस चित, चितवित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। तेरा दर्शन होवे नित, निज नैण कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म कर साचा हित, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तूं भगत सुहेला अगम्मड़ा पित, पतिपरमेश्वर पुरख अकाल तेरे हथ्थ सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा झोली डाहीआ। सति कहे मैं तेरी किरपा लवां मात अंगड़ाई, सवाधान हो के दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटा शाही, दुरमति मैल रहे मात ना राईआ। जन भगतां अंदर तेरे प्रेम दी वज्जे वधाई, दिवस रैण खुशीआं अंदर ढोले गाईआ। साचा मंगलाचार होवे थाउँ थाँईं, थान थनंतर सर्ब निरंतर अन्तर मंत्र आपणा देणा समझाईआ। गुरमुखां निरगुण धार पकड़ीं बाहीं, शब्द विचोले आपणी दया कमाईआ। सन्त सुहेले तेरे पाँधी राही, दिवस रैण भज्जण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाई, बेनज़ीर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभू कूड़ कुड़यार मिटा दे सोच, सोच समझ आपणी दे बदलाईआ। तेरे दर्शन नूं नेत्र रहे लोच, लोचा सब दी पूर कराईआ। माया ममता मोह विकार वध गया बहुत, सदी चौधवीं चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। एका आपणा नाम सुणा दे सच सलोक, सोहले ढोले जिस दी सिफ्त सालाहीआ। तेरा भाणा कोई ना सके रोक, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रख के तेरी ओट, निउँ निउँ लागण पाईआ। तूं निरगुण धार एकँकार विच संसार प्रकाश कर निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते तेरा जलवा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम खुमारी दे मदहोश, सच प्याला मधुर जाम प्याईआ। सच धर्म कहे प्रभ नाम खुमारी दे दे मस्ती, मस्त मस्ताने दे बणाईआ। तूं आदि जुगादी मालक फ़र्शी अर्शी, अर्शे आज़म आपणा डेरा लाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर चलाउँदे रहे बण के दर्दी, दीनां अनाथां हो सहाईआ। सच दुआर एकँकार ठांडे दरबार इक्को अर्ज़ी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप मेट अन्धेर गर्दी, गर्दश आपणी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभू मैं रो रो दस्सां हाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारों कुण्ट होई बेहाल, राउ रंक रहे कुरलाईआ। साची वस्त नाम धन किसे ना दिसे नाल, मन दी नालिश सब नूं रही सताईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, दौलत दुनी चले ना कोए चतुराईआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। काया मन्दिर अंदर शब्द सरूपी वज्जे कोई ना ताल, ढोलक छैणे सर्ब रहे खड़काईआ। बिन तेरी किरपा अमृत आत्म निझर झिरना दए ना कोए प्याल, बूँद स्वांती सति सति ना कोए टपकाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल मुरीदां पुच्छे ना कोई हाल, मुर्शद हो के फेरा ना कोए पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्ट सबाई सिर ते कूके काल, कालख टिक्का मस्तक धोवे कोए ना शाहीआ। परवरदिगार सांझे यार तेरा जलवा नूर तक्के ना कोए जमाल, मुकामे हक लाशरीक तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब समरथ, तेरी महिमा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित अकथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पता मार्ग गए दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी नाम संदेसा देवे सच, भगत भगवान नौजवान मर्द मर्दान निरगुण धार खोल्ह अक्ख, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले कर आपणे वस, गुरमुख गुरसिख सज्जण नाम पदार्थ दे अगम्मी वथ, सूफ़ी सन्त फ़कीर तेरा गावण जस, ढोला सोहला राग नाद विच ब्रह्माद सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ मेट दे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा रहे ना राईआ। भगत सुहेले बणा आपणी बिन्द, बिन्दराबन जाण दा लेखा दे मुकाईआ। तूं दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिंद, पारब्रह्म बेअन्त अन्त तेरा कहिण कोए ना पाईआ। तूं अगम्म अथाह डूँग्घा सागर समुंद, जल थल तेरी खेल इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगा जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जदी रहे वधाईआ। सति धर्म कहे मेरे साहिब सर्ब कला भरपूर, स्वामी अन्तरजामी तेरी बेपरवाहीआ। आपणा जोती दे दे नूर, नूर नुराना कर रुशनाईआ। कलयुग मेट दे कूड़ो कूड़, कूड़ कुड़यार रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां बख़्शीं चरण धूढ़, टिक्का मस्तक नाम रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, नाम अमोलक वस्त देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा शब्दी हुक्म सच दस्तूर, हुक्में अंदर हुक्म दे बदलाईआ।

६४२
१६

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड माल चक्क ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ रोंदे कलयुग जीव जंत, धीरज धीर नज़र कोए ना आईआ। माया ममता गढ़ बणया हउमे हंगत, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा साचा दिसे कोई ना सन्त, सति सतिवाद शब्द अनाद ना कोए जणाईआ। बोध अगाध नज़र ना आए कोई पंडत, निरअक्खर नाम ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म मेला होए ना साचे कन्त, पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निन्दक, चुग़ली अंदरों दे कढाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ दीन दुनी लग्गा दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। ग़रीब निमाणयां मेटे कोए ना भुक्ख, तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाईआ। सचखण्ड निवासी सच दवारे क्यों बैठा लुक, निरगुण धार कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले तेरा दर्शन कर के होण खुश, गृह मन्दिर अंदर वज्जे नाम वधाईआ। शब्दी हुक्म दे फ़रमान क्यों होइउँ चुप, कलमा इक्को इक दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया झूठी धार बदल दे रुख़, सतिजुग साचा मातलोक कर रुशनाईआ। सफ़ल करा जनणी कुक्ख, जन भगत दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ वेख दुखी दीन, अनाथां हो सहाईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, रहबर हो के रस्ता इक प्रगटाईआ। झगड़ा रहे ना नर मदीन, मुद्दा मालक इक्को दे समझाईआ। तेरा हुक्म करन सर्ब तसलीम, सिर सके ना कोए उठाईआ। भगत उधारना तेरी आदत कदीम, कुदरत दे मालक करमां दा लेखा देणा चुकाईआ। तेरा महल अटल गृह घर शाने अज़ीम, निरगुण नूर तेरा रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दी दे इक तालीम, चार वरन अठारां बरन तुलबे दे पढ़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साचा दस्स दे सांझा नाउँ, नाउँ निरँकार आपणा भेव खुल्हाईआ। तेरा डंका वज्जे थाँईं थाउँ, ब्रह्मण्ड खण्ड कर शनवाईआ। हँस बुद्धी कर कलयुग जीव काउँ, काग रहिण कोए ना पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरे हथ्थ न्याउँ, सच अदालत दे लगाईआ। जन भगतां बण के मीत सिर रख ठंडी छाउँ, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। बेड़ा पार कर शौह दरयाउँ, दर दवारा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा बण के पिता माउँ, बालक अंञाणे हरिजन आपणी गोद बहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ दीन दुनी घत्ते वहीर, वाहो दाही जगत लोकाईआ। सति सरूपी सब दे लथ्थे चीर, ओढण नज़र कोए ना आईआ। मन वासना कीता दिलगीर, चिन्ता चिखा ना कोए बुझाईआ। साचा मन्दिर करे ना कोए तामीर, बुनयाद आदि समझ किसे ना आईआ। लेखा मुके ना अमीर ग़रीब, शाह सुल्तान राउ रंक इक्को रंग ना कोए

६४३
१६

रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग साचे सृष्टी अंदर दे साची तरतीब, तड़ा तड़ा नाल समझाईआ। कलयुग वेला अन्त दिसे करीब, नेरन नेरा हो के कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रत हो के हक कर पढ़ाईआ। सति धर्म कहे मेरे परम पुरख मेहरवान, महबूब तेरी ओट रखाईआ। धरनी धरत धवल मार के वेख ध्यान, धौल रो रो मारे धाईआ। सृष्टी अंदर दृष्टी दा दिसे ना कोए ज्ञान, विश्व विशेष नज़र कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा कलयुग काया करे ना कोए कल्याण, कपड़ कूड़ ना कोए धवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना भज्जे वांग सवान, दिवस रैण पन्ध ना कोए मुकाईआ। बिन तेरी किरपा तेरा करे ना कोए ध्यान, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख आण, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया वेख लेख, लेखा आपणा दे समझाईआ। मायाधारी वध्या भेख, भेखाधारी चारों कुण्ट रहे भरमाईआ। साचा दस्से ना कोई देस, जगत दिशा सारे वण्ड वण्डाईआ। तूं आदि जुगादि सदा रहें हमेश, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। दो जहानां नर नरेश, नर निरँकारा इक अख्वाईआ। शब्द सुनेहड़ा हुक्मी दूत अगम्मा भेज, चार कुण्ट करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना दे संदेश, कलयुग संधया दे बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग साचा दे नाम, नाम निधाना इक प्रगटाईआ। सति धर्म दा वखा निशान, निशाने सारे सीस निवाईआ। सच धर्म दा वखा अस्थान, भूमिका इक्को सोभा पाईआ। जित्थे तूं मेरा मैं तेरा ढोले जीव जंत साध सन्त बह के गाण, गावत गावत खुशी मनाईआ। हर घट वस्या नज़री आवे राम, काहन सब दा मालक बेपरवाहीआ। पैगम्बरां वाला दिन्दा रिहा पैग़ाम, हज़रतां वाली हरि जू करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्द हुक्म नाल बदल दे निज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आपणा हुक्म दे फ़रमान, दो जहानां कर शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणन कान, बिन कन्नां दे सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करो ध्यान, सचखण्ड बैठे अक्ख खुल्हाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल निउँ निउँ सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। लोकमात सतिगुर शब्द हो प्रधान, प्रधानगी इक्को दे वखाईआ। चार वरन अठारां बरन जिस दी मन्नण आण, आत्म परमात्म परदा देणा उठाईआ। सृष्टी दृष्टी दी रहे ना कोए दुकान, सच दवारा इक्को देणा समझाईआ। जिस गृह मन्दिर दिसे श्री भगवान, पुरख अबिनाशी धुर दा करता डेरा लाईआ। झगड़ा चुके ज़िमीं असमान, सूरज तारा चन्द रुशनाई ना कोए वखाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार पारब्रह्म पति परमेश्वर तेरा महल अटल नज़री आवे इक मकान,

मकबरयां दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरा दीन तेरी दुनी तेरा ऋषी तेरा मुनी सब दी पुकार जाए सुणी, अणसुणत रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे दे वर, वर दाते तेरी आस रखाईआ। सति कहे प्रभ बख्श दे आपणी दात, दाते दातार आपणी दया कमाईआ। तेरे नाम तों वड्डी नहीं कोई करामात, करमां दा लेखा दे मुकाईआ। आत्म परमात्म मिल के साची गावे गाथ, धुर दा ढोला इक्को गाईआ। तूं सदा सहाई अनाथां नाथ, दीनां दर्द लैणा वण्डाईआ। घट घट अंदर तेरा वास, निरगुण जोत तेरा प्रकाश, शब्द अगम्मी तेरा नाद, धुन आत्मक राग देणा सुणाईआ। कर किरपा पुरख समराथ, सचखण्ड निवासी सब कुछ तेरे हाथ, सति धर्म मंगे हो के दास, चरण कँवल कँवल चरण ढह प्या सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित तेरे साचे नाम दा होए मात प्रकाश, प्रकाश विच्चों प्रकाश सृष्टी विच दिखाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे पुरख अकाल साची बख्श सरन, सति पुरख निरँजण दया कमाईआ। सृष्ट सबाई एकँकार एका तेरा ढोला लग्गे पढ़न, नाम निधान श्री भगवान झोली पाईआ। झगड़ा रहे ना कोई ज़ात पात दीन मज़्हब वरन बरन, रंग इक्को देणा रंगाईआ। तूं आदि जुगादी करता पुरख करनी करन, कुदरत दा मालक ख़ालक इक अख्वाईआ। गुरमुख साचे सन्त तेरी मंजल अगम्मी चढ़न, जगत दवारा कूड़ पन्ध मुकाईआ। निज लोचण जोती धार दरस करन, शब्द धुन वज्जे वधाईआ। नैण खोल्ह हरन फरन, फ़ुरना मन दा बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साची दस्सदे आपणी (उसतत), सिख्या सृष्टी दृष्टी आप दृढ़ाईआ। तेरे शब्द दी वाचीए इक्को पुस्तक, नाम निधान तेरा सोहला ढोला गाईआ। सब दा मालक सांझा यार नज़री आ मुर्शद, मुरीदां दीद ईद चन्द कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कोलों करा फ़ुरसत, माया ममता मोह शरअ जंजीर कटाईआ। कूड़ी क्रिया हउमें हंगता रहे कोई ना गुरबत, गहर गम्भीर बेनज़ीर अमृत सीर जाम देणा प्याईआ। जन्म जन्म दी पापां मैल धो दुरमति, पतित पुनीत अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कर सफ़ाईआ। साची सिख्या दो जहान श्री भगवान शब्द सतिगुर दे गुरमति, मन मति लेखा दे मुकाईआ। तेरा परदा चुक्के काया माटी पंज तत, रूप अनूप सति सरूप दे समझाईआ। आदि जुगादि नित नवित धुर

सुल्तान सब कुछ तेरे हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक इकल्ला एकँकार पुरख समरथ, जुग चौकड़ी आपणे हुक्में अंदर भवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे मथ्थ, सतिगुर साचा लोकमात दे प्रगटाईआ। इक्को नाम इक्को भण्डारा खोल् हट्ट, इक्को वणजारा हो के वणज लै कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण धार प्रगट कर सच, सति सतिवाद आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ साचा दे दे धुर दा रस्ता, रहबर इक्को नज़री आईआ। बन्नृणा पए कोई ना पुस्तकां वाला बस्ता, सीस भार ना कोए उठाईआ। इक्को ढोला होवे तेरे जस दा, दिवस रैण सिफ्तां विच सालाहीआ। इक्को इशारा होवे तेरी अक्ख दा, आख़र तेरे विच मिलाईआ। झगड़ा रहे ना कूड़े जग दा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। पैंडा मुक जाए संसारी हज्ज दा, काया काअबा दे वखाईआ। जित्थे निरगुण निरवैर निराकार हो के वसदा, परवरदिगार हो के सोभा पाईआ। इक्को राग होवे अगम्मी अनहद नद दा, शब्दी शब्दी ढोला आप सुणाईआ। जोत प्रकाश होवे सच दा, सति जोत होवे रुशनाईआ। तेरा खेल वेखां अलखणा अलख दा, अलख अगोचर तेरी वड्डी वड वड्याईआ। कर स्वांग रूप प्रतख दा, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जन भगतां पैज आया रखदा, रखक हो के आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तूं हर घट अन्तर आपे वसदा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभू लोकमात कर वसेरा, विसरयां लै जगाईआ। जन भगतां अन्तर चाउ कर घनेरा, प्रेम प्रीती इक वधाईआ। साचा मंत्र दस दे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। मन वासना कूड़ रहे ना डेरा, झगड़ा झूठ देणा मिटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वसा आपणा खेड़ा, बन्द किवाड़ी खिड़की दे खुल्हाईआ। अंदर रहे ना कोए अन्धेरा, गुफ़ा भँवर अवर नज़र कोए ना आईआ। तूं ठाकर साहिब पारब्रह्म ब्रह्म तेरा दिसे चेरा, चेला गुर एका घर बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात धर्म बणा वेहड़ा, कूड़ी क्रिया कर्म मिटाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सति धर्म दी दे मत, मति मतवाली दूर कराईआ। जन भगतां रख पत, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। निझर झिरना दे दे रस, अमृत बूँद स्वांती आप टपकाईआ। सब कुछ तेरे हथ्थ, दाते दानी तेरी वड्डी वड वड्याईआ। निज नेत्र नैण खोल् अक्ख, प्रतख मिल गुसाँईआ। सति धर्म दा मार्ग ला दे सच, सति सतिवादी हो के सोभा पाईआ। भरम भुलेखा कढ्ढ काया माटी कूड़ी कच्च, कंचन गढ़ दे सुहाईआ। लूं लूं अंदर जा रच, साढे तिन्न करोड़ तेरा ढोला गाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया लँघ, कलयुग लेखा दे मुकाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म माण सुहञ्जणी सेज सदा वस्स संग, सगला संग निभाईआ। नाम शब्द दा वज्जे इक मृदंग, धुनी

धुन विच्चों प्रगटाईआ। साचे सन्तां साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल दुनी दे मालक इक अगम्मा दे आनंद, जिस आनंद दा रस रसना चख सके ना राईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ नरैण सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ शब्द अगम्मी नाद वजा आपणा डंका, कलयुग कूड़ मलेछ दे मिटाईआ। बोध अगाध शब्द जणा चार वरन अठारां बरन राउ रंका, ऊँचां नीचां ज़ातां पातां दीनां मज़्हबां भरम गढ़ दे तुड़ाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया हउमे हंगता तन वजूद रहे कोई ना शंका, शहिनशाह हो के शाह पातशाह आपणा परदा दे उठाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोकमात निरगुण सरगुण धार बार अनका, नित नवित अबिनाशी अचुत पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग साची पुरख अबिनाशी सति सच बणा बणता, घड़न भन्नृणहार समरथ स्वामी अन्तरजामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरा खेल नवेला जुग चौकड़ी सर्ब गुणवन्ता, गहर गम्भीर बेनज़ीर लातस्वीर हुक्में अंदर हुक्म दे बदलाईआ। नव सत्त लख चुरासी वेख जीव जंता, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी परदा ओहला आप चुकाईआ। बिन तेरी किरपा हरि महबूब साचा सूफ़ी सन्त फ़कीर मिले ना पंडता, बोध अगाध नाम निधान निष्अक्खर निरअक्खरां विच्चों बाहर ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पीर भगत सुहेले तेरे दर दरवेश हो के करदे मिन्नता, विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि बैठे सीस निवाईआ। सजदयां विच उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण झुकदे वेखे सिमता, पुरख अकाल दीन दयाल तेरा अन्त भगवन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ कुड़यार गढ़ हँकार माया ममता मोह विकार तोड़ कलयुग निन्दका, मानव मानुख मानुश आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा रूप नज़री आईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्तिम दे दे सति उपदेश, इक्को नाम तेरा सृष्टी दृष्टी अंदर नज़री आईआ। तूं शाह सुल्तान श्री भगवान सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची दा सच नरेश, नर नरायण बिन नैणां आपणा भेव अभेद दे खुल्हाईआ। तेरा नाम शब्द अपारा एकँकारा जिस दा सरगुण खेल होया तेई अवतारा, ईसा मूसा मुहम्मद बोल के गए तेरा नाअरा, नानक निरगुण सरगुण धर के रूप दस दस्मेश, दहि दिशा वण्डा के हिस्सा इक्को डंका फ़तिह तेरा गया वजाईआ। तूं आदि जुगादि नित नवित सदा रहें हमेश, कलयुग अन्त तेरे दवारे सारे होए पेश, पेशवा सारे बैठे सीस निवाईआ। सजदयांविच बन्दना विच डण्डौत विच नमस्ते विच करन आदेस, बिन सीस जगदीश सीस रहे झुकाईआ। तेरा आदि जुगादि नित नवित दो जहानां अवल्लड़ा वेस, जोती

ज़ाते पुरख बिधाते निरगुण धार लै अवतार पारब्रह्म प्रभ धुर फ़रमाना आपणा हुक्म दे चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहाउणा इक दवार, धुर दरबार वज्जदी रहे वधाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्तिम पा फेरी, निरगुण हो के वेस वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेख गुरू गुर चेरी, चेला गुर गुर चेला इक रंग ना कोए समाईआ। चार वरन अठारां बरन रैण होई अन्धेरी, बिन सतिगुर शब्द साचा चन्द अगम्मी नूर ज़ाहर ज़हूर करे ना कोए रुशनाईआ। रसना जेहवा गा गा थक्की बत्ती दन्द, तेरा हथ्थ ना आया किसे परमानंद, निजानंद अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के गृह भीतर निरंतर तेरा दरस कोए ना पाईआ। तूं आदि जुगादी इक, ब्रह्म ब्रह्माद तेरा सिख गुर अवतार पैगम्बर तेरा भविख, चौदां विद्या तेरा लेख ना सके लिख, कलम शाही काग़ज़ लोकमात मिले ना कोए वड्याईआ। बिन गोबिन्द धार किसे ना आवें दिस, खेल करें अगम्मी नित, निरवैर हो के निराकार आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म कहे इक्को देणा धुर दा वर, धर्म आत्मा परमात्मा आपणे रंग रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ निरगुण सरगुण हो के मार गेड़ा, लख चुरासी वेख वखाईआ। जीव जंत साध सन्त मन भेद विच पाया झेड़ा, अंदर वड़ के तेरा दरस कर के सति स्वामी अन्तरजामी ममता मोह ना कोए चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कैहिंदे नेरन नेरा, दूर दुराडा किसे हथ्थ क्यों ना आईआ। जन भगतां वसा दे साचा खेड़ा, जित्थे बिना मलाह बन्नें बेड़ा, खेवट खेटा आपणा रूप बदलाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म कर दे सच्ची मेहरा, मेहर वाली मुहब्बत महबूब आपणे घर दी देणी प्रगटाईआ। इक्को रंग नज़री आवे सञ्झ सवेरा, नित नवित दर्शन होवे तेरा, जोती जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग कहे लोकमात मोहे धरनी धरत उपर धर, धरत धौल हौला भार देणा कराईआ। सति कहे मेरे प्रभ अगम्मे मीत, मित्र प्यारे दया दे कमाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग सोहणी लग्गे रीत, रीतीवान साचा मार्ग दे वखाईआ। जन भगतां काया माटी करनी ठांडी सीत, अमृत मेघ निझर झिरना इक झिराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सांझा हो जाए गीत, अल्ला वाहिगुरू राम नाम गॉड ख़ुदा सारे तेरा नाम कह के तेरे विच समाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, नज़री आवें हर घट अन्तर भीत, लेखा चुके त्रैगुण माया पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेड़ा दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को रंग रंगा हस्त कीट, कूड़ कुटम्ब दे खपाईआ। सति धर्म कहे सतिजुग साचा मार्ग रख, रक्ख्या कर थाउँ थाँईंआ। सृष्ट सबाई निज नेत्र लोचन खोल्ह अक्ख, दो अक्खां बाहरों दृष्टी विच्चों अन्तर आपणे विच समाईआ। तेरा हुक्म संदेसा नाम धुर दा सतिगुर सच्चा, जगत

गुरू कम्म किसे ना आईआ। तेरा खेल दो जहानां सब दा बणे सखा, सखा सखाई हो के आपणी दया कमाईआ। बिन तेरे तेरयां भगतां दूसरे अगे कदे झुके ना मथ्था, मस्तक धूढ़ी ख़ाक अवर ना कोए रमाईआ। गुर गोबिन्द दस दस्मेश शब्दी हुक्म दे के आया सिक्खां, बिना पुरख अकाल दूजा कोए पिता ना मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारा एकँकारा लोकमात देणा प्रगटाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरी कोई ना रखे ओट, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। शब्दी किसे ना लग्गे चोट, सुरती सोई ना कोए उठाईआ। माया ममता हउमे हंगता लग्गा रोग, संसा विच्चों ना कोए चुकाईआ। तेरे प्रेम दा जाणे कोई ना जोग, बाहरों तन वजूद कपड़ सारे रहे रंगाईआ। तेरी सेजा दा जाणे कोई ना भोग, नारी कन्त मिल मिल आपणी खुशी मनाईआ। तेरे गृह दा कोई ना जाणे संजोग, आत्म परमात्म मिल के कवण दवारे सोभा पाईआ। घट अंदर गृह भीतर जगे कोई ना जोत, अन्ध अज्ञान नज़री आईआ। मन बुद्धी दी सारे करदे सोच, शब्दी हुक्म सुण के खुशी ना कोए वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी पढ़दे रोज़, रोज़े नमाज़ रख के तेरा नूर नूर विच्चों ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार एकँकार विच संसार हुक्में अंदर आपे पहुंच, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्त वेला वेख अख़ीर, आख़र सीस जगदीश झुकाईआ। पल्लू छड्ड गए पैगम्बर पीर, नाता तोड़ ना कोए निभाईआ। शरअ मार सर्ब ज़ंजीर, दीन दुनी गए बंधाईआ। तेरा भेव नज़र ना आए बेनज़ीर, नज़र सारे गए उठाईआ। तेरे हथ्थ वड्डी तदबीर, दो जहानां दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, उमराउ अमरापद दे वखाईआ। तेरा हुक्म निराला अजीब, शब्दी फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी इक्को नज़री आवे दीद, दाइरयां विच्चों लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद विच आ के अमलां दा लेखा वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सृष्ट सबाई वेख सगली, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। नाम रंगण चढ़े कोई ना रंगली, रंग रंगीला माधो नज़र किसे ना आईआ। तेरे हक प्यार दी करे कोई ना बन्दगी, ग़रज़ां कारन फ़र्ज़ां कारन अरज़ां कारन तेरा नाम रहे ध्याईआ। साची धार किसे ना मिले आनंद दी, अनन्दपुर वासी तेरी दासी भगत ना कोए बणाईआ। लहिणा देणा चुक्कया ना किसे पवण स्वासी, पवण पवणां विच्चों पारब्रह्म मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। कलयुग सन्तां अंदर आई उदासी, माया ममता मोह रही सताईआ। साचा शब्द धुर दा नाम किसे कोल नहीं अगम्मी रासी, पिछली विद्या पढ़ पढ़ सारे रहे सुणाईआ। तेरी चरण धूढ़ी मिले ना धुर दी

राखी, रख रक्ख्या वाली हथ्थ किसे ना आईआ। रूह बुत्त तन माटी ख़ाक होया ना पाक पाकी, पतित पुनीत पवित आपणा आप ना कोए कराईआ। साहिब समरथ तेरी महिमा अकथ जन भगतां दे आपणी वथ, नाम अनमुल्ला दे रस, आत्म परमात्म तेरे होवे वस, दूजा नाता नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को ला दे सच, भाग लग्गे काया माटी कच्च, लूं लूं अंदर जाणा रच, साढे तिन्न करोड़ तेरी गाथा गा गा शुकर मनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तूं आदि जुगादी इक्को पुरख अकाल बहु तेरे नाम, गिणती विच गणत क्यों दिती गिणाईआ। तेरा सुत दुलारा शब्द इक्को वाली दो जहान, गुर अवतार पैगम्बर बहु रूप क्यों आया बदलाईआ। तेरा इक्को आदि जुगादी सच्चा नाम, क्यों अल्ला वाहिगुरू राम कह के तैनूं रहे प्रगटाईआ। तेरा आदि जुगादी इक्को जाम, क्यों प्याले वक्ख वक्ख काया माटी अंदर दिते टिकाईआ। तूं सचखण्ड दवारे इक्को घर करें बिसराम, मुकामे हक डेरा लाईआ। की दीनां मज़्बां विच्चों तैनूं मिलदा आराम, सच सच दे समझाईआ। की प्यार आउँदा विच्चों इस्लाम, इस्म आज़म परदा दे उठाईआ। क्यों कह दिता कृष्न काहन, घनईआ हो के बंसरी जगत वखाईआ। क्यों प्रगट कीता सतिनाम, नानक निरगुण सरगुण ढोला गाईआ। क्यों फ़तहि डंक वजाया आण, वाहिगुरू दे जाप जपाईआ। तूं आदि जुगादी इक भगवान, क्यों वण्डां विच सृष्टी दिती पाईआ। एसे कर के शब्द गुरू तैनूं कर के अन्त प्रणाम, पुरख अकाल तेरे अगे मंग मंगाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त लेखा चुक्के विच्चों जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। ओस वेले परम पुरख सृष्ट सबाई देणा आपणा इक पैग़ाम, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर भगत सुहेले नाल मिलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरा मन्नण इक विधान, चौदां लोक चौदां तबक सिर सके ना कोए उठाईआ। सारयां कलमयां दा कलमा होवे तेरा नाम, उलम्यां दा इलम तैनूं करे प्रणाम, बुद्धी दा लेखा जाणे ना जीव अन्जाण, बुद्धी तों परे तेरी शुरु हुंदी शरअ, इक्को रूप नर हरे, दूजा नज़र किसे ना आईआ। जीव अंञाणा कलयुग मन ममता विच, संसारी धारां विच, जगत विचारां विच, दीनां मज़्बां दीआं खारां विच तेरे नाल लड़े, मंज़ल हक कोई ना चढ़े, सुरती शब्द किसे ना फड़े, आत्म परमात्म ढोले कोए ना पढ़े, सचखण्ड दुआर कोई ना वड़े, पुरख अकाल सरन कोई ना पड़े, जीव जंत जीवत जग ना मरे, भय भउ विच ना तैथों डरे, ओहदी वासना की करे जिन्हां दे अंदर भुल्लया बेपरवाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ कुछ मार्ग दस्स दे अगला, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। गोबिन्द शब्द मिला दे सतिगुर सगला, संगी धुर दा नज़री आईआ। कलयुग जीव बप्पड़ा बगला, माणक मोती चोग सच सरोवर विच्चों हथ्थ कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तैनूं लभ्भदे विच्चों जंगला, समुंद सागर

टिल्ले पर्बत डूँग्घे कंदर फोल फुलाईआ। शिवदवाले मठ्ठ मसीतां विच कर के बन्दना बन्दे आपणा बन्दीख़ाना रहे तुड़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार जन भगत सुहेले आपणे अंग ला, बिना अंगीकार तों बेड़ा पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर धुर दे ठाकर कलयुग कूड़ी क्रिया दीन दुनी वेख डूँग्घा सागर, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा आप बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सच ला दे उत्ते धरती, धर्म दुआर इक वखाईआ। सब दा बण जा निधपरती, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। तूं मालक दो जहानां अर्शी, फ़र्शी हो के दे वड्याईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां तेरे अगे पाई अर्ज़ी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। सब ने आसा मनसा रखी आपणी ग़रज़ी, ग़रज कह तेरी ओट तकाईआ। तेरी धार निहकलंक नरायण होवे नर दी, जोती जाता पुरख बिधाता फेरा पाईआ। तूं सार पावीं पुरख अकाल घर घर दी, गृह गृह आपणा परदा लाहीआ। तेरी आत्म तेरा ढोला होवे पढ़दी, धुर दा नाद करीं शनवाईआ। खेल जाणे चोटी जड़्दी, मध आपणा हुक्म वरताईआ। धार बख़्श अगम्मी सर दी, सरोवर इक्को दईं प्रगटाईआ। कला पुटीं कलयुग कल दी, कलमे वाले दईं खपाईआ। खेल बदल के दूई द्वैती सल दी, सुल्हकुल हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आशा सब दी पूरी कर प्रेम प्यार विच जन दी, जन भगत सज्जण गुरमुख गुरसिख आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल तेरी होवे निहचल धाम अटल दी, अछल छल रहिण कोए ना पाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरबख़्श सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ शब्दी शब्द वजा दमामा, डंका राउ रंक इक वजाईआ। तेरा परसिध होवे कल कल्की अन्तिम जामा, ज़ामन हो के दे समझाईआ। नज़री आ अगम्मी रामा, राम रमईआ सोभा पाईआ। बंसरी सुणा साचे कान्हा, नाम धुन कर शनवाईआ। साहिब सुल्तान बण मेहरवाना, पैगम्बर धार समझाईआ। साचा नाम दे गुण निधाना, गुरू गुर सेव कमाईआ। तेरा खेल होवे जगत महाना, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सब नूं मन्नणा पए भाणा, लागे हो ना कोए अटकाईआ। सति सच धर्म ला चतुर सुजाना, कूड़ कुड़यार देणा खपाईआ। आत्म दे सर्ब ज्ञाना, अज्ञान अन्धेर देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट हो विष्नूं भगवाना, विश्व वासना दे बदलाईआ। सति कहे प्रभ विश्व दे विचार, धार शब्दी इक दृढ़ाईआ। सारे मंगण तेरा दीदार, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। डंका शब्द वज्जे

अपार, परम पुरख परदा देणा उठाईआ। पूरब लहिणा देणा कर्ज लाह उधार, धुर दी भगती भगतां झोली पाईआ। सच धर्म दा दस्स विहार, विवहारी हो के कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा करदे गए इंतज़ार, उडीक विच तारीख गए बदलाईआ। तूं आदि पुरख अपरम्पर स्वामी कल्की इक अवतार, जिस दी कला वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पा सच दवारे सार, सार शब्द नाल सारथ सब दा पूर कराईआ।

६ सावण शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां लेखे ला रैण घाल, नाम निधान मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच बणा आपणे लाल, रंग अवल्लड़ा इक चढ़ाईआ। दीवा बाती कमलापाती जोती जोत दे बाल, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। त्रैगुण माया नाता तुट्टे जंजाल, पंच विकार ना कोए हल्काईआ। शब्द अगम्मी वजा ताल, अनहद रागी राग सुणाईआ। काया मन्दिर अंदर वखा सच्ची धर्मसाल, गुरू दुआर साचा सोभा पाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, जम डण्ड ना कोए लगाईआ। मालक हो के वसीं नाल, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, राउ रंक इक्को घर वसाईआ। तेरे विछोड़े विच जन भगत होए ना कोए बेहाल, विजोगी नज़र कोए ना आईआ। धुर संजोग मेलणा आण, आप आपणी दया कमाईआ। दर दवारे ठांडे देणा माण, सचखण्ड दवारे बख्शणी सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ देणा खपाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां पूरी करदे मनसा, आशा आशा विच्चों बदलाईआ। सोहँ रूप बणादे हँसा, नाम निधाना माणक मोती चोग चुगाईआ। मन विकारी हँकारी मेट दे कंसा, सुरती शब्द शब्द उठाईआ। आत्म परमात्म तेरी बण जाए अंसा, पूत सपूता साचा देणा वखाईआ। दे वड्याई विच्चों सहँसा, सन्त सुहेले आप तराईआ। धुर दरगाही बण कन्ता, मालक हो के खोज खुजाईआ। फिरी दरोही विच जीव जंता, साध सन्त देण दुहाईआ। गढ़ किसे ना टुट्टे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। तेरे दवारे पुजे कोई ना मंगता, पाँधी हो के पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश अगम्मी चन्द दा, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां तोड़ दे भरम, सहिँसा रोग रहे ना राईआ। भाग लगा दे काया माटी चर्म, चानण जोत नूर कर रुशनाईआ। सचखण्ड दवारे दे दे इक्को सरन, शरन आपणी दे समझाईआ। लेखा मुका दे जन्म मरन, गेड़ चुरासी देणा कटाईआ। तेरे नाम दा ढोला इक्को पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दिवस रैण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन भगत सुहेले तेरे ठांडे दरबारे तरन, तारनहार समरथ स्वामी पुरख अकाल निरगुण धार आपणी दया देणी कमाईआ।

६५३
१६

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सृष्ट सबाई इक्को कर दे पूजा, सतिजुग सति सति मात प्रगटाईआ। तुध बिन दूसर रहे कोए ना दूजा, इष्ट दृष्ट अंदर इक्को नज़री आईआ। अन्तर भेव खुल्हादे गूझा, ब्रह्म परदा आप उठाईआ। नाभी कँवल कर मूधा, झिरना अगम्म दे झिराईआ। तेरे सच दुआर दी आवे सूझा, समझ देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप दृढ़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आपणी करदे किरपा, किरपा निधान दे वड्याईआ। कलयुग माया ममता मोह मिट जाए बिप्पता, बिप्परीत दा लेखा दे चुकाईआ। जहान सेवक होवे इक दा, एकँकार इक्को नज़री आईआ। नाता जोड़दे साचे हित दा, हितकारी हो के वेख वखाईआ। झगड़ा मुका दे सदा नित दा, निरवैर हो के आपणा रंग चढ़ाईआ। पासा बदल दे आपणी पिठ्ठ दा, करवट विच लै अंगड़ाईआ। चार कुण्ट इक्को पुरख अकाल तूं ही दिसदा, तूं ही तूं ही ढोला सर्ब गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण दे धुर दे पित दा, पिता पूत गोद उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां सुणीं कूक, साह साह नाल कुरलाईआ। कलयुग ममता मोह रही फूक, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। परदा लाह दे काया अंदर पंज भूत, पंचम पंच शब्द कर जणाईआ। कर प्रकाश साची कूट, दिशा तेरी नज़री आईआ। लेखा रहे ना जूठ झूठ, झगड़ा कूड़ देणा मुकाईआ। दयावान होके जाणा तुठ, दीनां अनाथां हो सहाईआ। अमृत जाम दे घुट, प्याला दीन दयाला हथ्थ फड़ाईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ा जावे छुट्ट, छुटकारा मिले दीन दुनी लोकाईआ। इक्को तेरे नाम दी गाईए तुक, सोहँ ढोला सहिज सुभाईआ। अगला पैंडा जाए मुक, सचखण्ड बह के वज्जे वधाईआ। तेरे कदमां उत्ते सीस जाए झुक, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी धारों आपे उठ, मात पित जगत ना कोए बणाईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां कर उत्तम बुद्धी, सरीर विच्चों बेनज़ीर नज़री आईआ। पक्ख रहे ना कोए वदी सुदी, सदा सदा सद इक्को रंग वखाईआ। होवे प्रकाश काया माटी साची झुग्गी, साढे तिन्न हथ्थ दीपक जोत होवे रुशनाईआ। अगम्मी मंज़ल सब दी जाए मुक्की, चुरासी गेड़ा झेड़ा चारे खाणी देणा मुकाईआ। आपणा नाम समझाउणा आपणी धुर दी तुकी, गीत गा के तेरे विच समाईआ। पुरख अकाल तेरे विछोड़े दा भगत जन रहे कोए ना दुखी, सुरती शब्दी जोड़ा देणा जुड़ाईआ। तेरे नाम दी रमज़ रहे कोए ना लुकी, इशारा नर निरँकारा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां ओट उत्ते सुट्टी, सहारा तेरा रहे तकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां दे अगम्मी शक्ती, नाम निधान झोली पाईआ। सब दी पूरी होवे भगती, भगवन मिल के खुशी मनाईआ। दिवस रैण रहे मस्ती, खुमारी इक्को देणी चढ़ाईआ। साख्यात नज़र आवे तेरी हस्ती, हस्त कीटां विच परदा देणा उठाईआ। तूं मालक आदि जुगादि धुर दा अर्शी, प्रीतम हो के प्रेम देणा बणाईआ। कलयुग अन्त कर खेल उपर धरती, धरनी धौल तेरी आस रखाईआ। खेल जाण घर घर दी, गृह गृह परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धार तेरा प्यार इक्को मंगदी, मांगत हो के झोली डाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां बंधा आपणा नाता, बन्धन इक्को देणा पाईआ। जगत समाज विच्चों बाहर सुणा आपणी गाथा, गहर गम्भीर कर पढ़ाईआ। साचे नाम दी निम्रता विच दे दाता, सिमरन दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे हुक्म दा जो शब्दी मन्नण आखा, आख़र मंज़ल चढ़ के तेरा दर्शन पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे पासा, पाशा जगत उलटाईआ। सचखण्ड निवासी सतिजुग साची धर्म दवारे पा रासा, गोपी काहन आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार युग तेरी गाउँदे गए गाथा, खाणी बाणी तेरा नाम वड्याईआ।

✪ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे जन भगतां दे पूरन भरवासा, विषयां विच विसर कोए ना जाईआ। प्रेमीआं प्यारयां नाल कदे करीं ना रोसा, जुग जन्म दयां रुसयां लैणा मनाईआ। गुरमुख विछड़ ना जाए कोई निर्दोषा, दोषी चरण आए पार लँघाईआ। साचे नाम दा पैग़ाम दे दे विच होका, हुक्मां तों बाहर आपणा हुक्म मनाईआ। दवारा निरँकारा आपणा दस्सदे सौखा, मालक

सच देणा समझाईआ। जन भगतां बिरथा जाण ना देणा मानस जन्म दा मौका, मुकम्मल आपणा लेखा देणा चुकाईआ। बुध मलीन रहे कोए ना थोथा, पतित पुनीत देणा कराईआ। भाग लगा के काया माटी साढे तिन्न हथ्थ कोठा, हरि मन्दिर सोहणा देणा सुहाईआ। जित्थे निर्मल जगे जोता, जोती नूर होवे रुशनाईआ। धुन उपजे इक सलोका, सोहँ सो होवे शनवाईआ। मन कर्म देवे कोई ना धोखा, धर्म भरम ना कोए भुलाईआ। बुद्धी चले कोए ना सोचा, मति ममता ना कोए वधाईआ। चिन्ता हरख़ रहे ना सोगा, ग़म अंदरों दे कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां सच गृह बख़्श सच्ची सरनाईआ।

६ सावण शहिनशाही सम्मत २ कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां हो सहायक, सहायता तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। धुर दा नाम सच कर हदायत, सुरत शब्द ज्ञान समझाईआ। अनडिठड़ा ज्ञान कर इनायत, घर विच घर देणा टिकाईआ। तेरी एथे ओथे दो जहानां मंगदे सदा हमायत, हमसाजण बण के संग देणा निभाईआ। चरण प्रीती अंदर मेहर नज़र करनी रवायत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां दे दे आपणा नूर, निज नेत्र दे खुल्ह्राईआ। अमृत सर दा दे सरूर, सुरती शब्द विच समाईआ। भण्डारा नाम होवे भरपूर, तोट रहे ना राईआ। पैंडा चुक्के नेड़ा दूर, घर विच बैठा सोभा पाईआ। इक्को वार सब दी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, दूजी वार मिन्नता कढ्ढुण दी लोड़ रहे ना राईआ। दर्शन दे हाज़र हज़ूर, ज़रूर आपणा फेरा पाईआ। कूड़ा गढ़ ना रहे ग़रूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन देणी वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां कर सच मिलाप, मिल मिल आपणा भेव खुल्ह्राईआ। धुर दा दस्स अगम्मी जाप, सतिजुग साचा राह चलाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना पाप, दुरमति मैल धवाईआ। जिधर तक्कण नज़री आवें साख्यात, स्वच्छ सरूपी आपणा परदा देणा उठाईआ। दे वड्याई विच कायनात, दीन दुनी वज्जदी रहे वधाईआ। बहु सिफ्त लिखी पिच्छे विच काग़ज़ात, कलम शाही रंग चढ़ाईआ। हुक्में अंदर दे शाबाश, मेहरवान मेहर नज़र तकाईआ। सच दवारे सचखण्ड आपे कर आबाद, घर अंदर इक्को दे वखाईआ। जित्थे खेड़ा कदे ना होवे बरबाद, किला कंध ना कोए ढाहीआ। इक्को पुरख अकाल तेरी आवे याद, याददाशत सके ना कोए भुलाईआ। भगत भगवान प्रेम प्रीती अंदर खोल्ह राज़, राज़क रिज़क रहीम रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सब दा लेखे ला स्वास स्वास, जो जन तेरा नाम ध्याईआ।

६ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरदयाल सिँघ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां दे चरण निवास, सचखण्ड दवारे बह के खुशी मनाईआ। जिन्हां तेरा नाम जपया स्वास स्वास, स्वार्थ परमारथ आपणे नाल देणा बणाईआ। मानस जन्म करना रास, चुरासी वाला गेड़ ना कोए भवाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, प्रकाश प्रकाश विच मिलाईआ। सच दवारे तेरे होवे दासी दास, आत्म परमात्म तेरी सेव कमाईआ। पैंडा मुक जाए पृथ्मी आकाश, गगनां तों उपर तेरा दर्शन पाईआ। तेरा नूर मिले विच नुरान ज़ात, वक्खरा घर ना कोए वखाईआ। लेखा पूरा कर दे कलम दवात, शाही नाल शहिनशाही दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे उह स्वाद, जो स्वाद रसना चख ना सके राईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगत तेरा नाम रस लैण चख, बिन दन्दां दे वखाईआ। सृष्टी नालों दृष्टी हो जाए वक्ख, इष्टी इक्को नज़री आईआ। तेरे नाम दा ढोला गावण जस, शब्दी तेरा गीत अल्हाईआ। तूं मेहरवान महबूब हो के देणी साची वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। धर्म धार चलाउणा रथ, वड रथवाही तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग साची समझाउणी गथ, कहाणी कथ अकथ प्रगटाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, तेरे नाम दी वज्जे इक्को वधाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत सृष्ट सबाई जग, जगजीवण दाते जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अग्नी अग्ग, सांतक सति इक वरताईआ। जन भगतां आपणे मिलण दा आप दस्स सबब, सब दा लहिणा देणा पूरा दे कराईआ। जगत क्रिया नाता तुटे समाज सब, इक्को तेरा मेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों लभ्भ, लायक नालायक देणे बणाईआ। सति धर्म कहे तेरा भगत कदे ना होवे मूर्ख, मूर्ख मति ना कोए रखाईआ। तूं सब दी आसा मनसा पूरत, पूरन इच्छया देणी कराईआ। तेरे नाम दी सुण के साची तूरत, तुरीआ पद तों अगे चढ़ के मंज़ल खुशी मनाईआ। निरगुण धार निरगुण जोत आपणी दस्सणी अगम्मी सूरत, जिस दी रेखा जगत ना कोए वखाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़त, कूड़ कुटम्ब विच्चों बाहर कढाहीआ। जन भगतां श्री भगवान इक्को तेरी रखी ज़रूरत, ज़रूरी मज़दूरी एहनां दी झोली देणी पाईआ। सतिजुग साचे दी साची करनी भगतां नाल महूरत, दूजा साथी संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरत, भरम भय भउ सब दा देणा चुकाईआ।

६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुखदेव राज दे गृह
पिण्ड कला ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां नेड़ ना आवण पंजे, पंजे विच्चों गुरमुख देणे छुडाईआ। शब्दी धार फड़ने आपणे शकंजे, शिकायत दस्सण दी किसे नीती रहे ना राईआ। तेरी वड्याई सूरे सरबंगे, तेरे हथ्थ सोभा पाईआ। नौ दवारयां तों बाहर एह सहिजे रहिण टंगे, अंदर वड़ ना देण दुहाईआ। मन नाल मिल के करन ना दंगे, झगड़े विच छेड़ ना कोए छिड़ाईआ। डरदे रहिण तेरी धार तिक्खी खण्डे, खण्डर विच्चों सिर ना कोए उठाईआ। तेरे भगत आत्म प्यार होवण ना कदे रंडे, रंडेपा सब दा देणा मुकाईआ। सदा वसण तेरे संगे, घर स्वामी मिल के सोभा पाईआ। साचा देणा परमानंदे, परम पुरख रस चखाईआ। अमृत देणा धुर दी गंगे, झिरना आपणा इक झिराईआ। कूड़ क्रिया मेट कुटम्बे, साजण हो के लैणा उठाईआ। लेखे लाउणा पवण स्वास दमे, दमां दा दामन आप हो जाईआ। कूड़ा लालच रहे ना तम्हें, तामस अंदरों देणी बुझाईआ। जो सन्त सुहेले गुरमुख सतिगुर घर जम्मे, जन्म मरन दा लेखा दे मुकाईआ। मेहरवान हो के बेड़ा लोकमात बन्हे, वैहन्दी धार ना कोए वहाईआ। पंच विकार कदे ना डंने, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां नेड़ ना आवण पंज दूत, दूती दुष्ट देणे भजाईआ। सन्त सुहेले बणाउणे आपणे सपूत, पिता हो के गोद उठाईआ। भाग लगाउणा काया मन्दिर अंदर दस्म दवारी साची कूट, कुटीआ इक्को देणी वखाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना जूठ झूठ, सति सुच मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाउणा काया माटी पंज भूत, पंजां दा पंजा पंजे नाल उपर रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ पंच विकार ना आवण नेड़े, जिन्हां सतिगुर दया कमाईआ। भाग लग्गे साचे खेड़े, काया मन्दिर होवे रुशनाईआ। माया ममता रहिण ना झेड़े, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। पंजे वसदे सदा मनमुखां दे डेरे, गुरमुखां दवारे बहण कदे ना पाईआ। जगत विच जुगो जुग तत्तां वाले गुरू दिसण बथेरे, शब्द गुरू इक्को नज़री आईआ। जिस दा हुक्म चले चार कुण्ट चार चुफेरे, दहि दिशा करे शनवाईआ। लेखा हको हक हकीकत वाला नबेड़े, शरीकत विच ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां हो सहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जिन्हां गुरमुखां लई तेरी सरन, सरनगति इक रखाईआ। तिन्हां दे अंदरों पंच विकार आपे मरन, मर के फेर ना कोए जिवाईआ। निउँ निउँ के भगतां सरनाई पड़न, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शब्दी धार कोलों डरन, आपणा बल ना कोए प्रगटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा ढोला सति सतिवादी हो के पढ़न, तिन्नां दा लेखा पंजां विच रहे ना राईआ।

⊛ ६ सावण शहिनशाही सम्मत २ दर्शन सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ⊛

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां सहारा दे कँवल चरण, दूजा राह ना कोए तकाईआ। निज नैण खोल्ह हरन फरन, बिन अक्खां तेरा दर्शन पाईआ। आत्म परमात्म मिल के शब्द अगम्मी ढोला पढ़न, सच संदेसा देणा सुणाईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को तेरा भाणा जरन, सीस जगदीश सर्ब झुकाईआ। सति दवारे साचे वड़न, अगे हो ना कोए अटकाईआ। झगड़ा रहे ना जीवण मरन, मरजीवत तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लैणे तराईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगत सुहेले देणे तार, तारनहार तेरी सरनाईआ। जगत सागर विच्चों करने पार, पारब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। गृह वखाउणा एकँकार सच्चा घरबार, महल अटल अगम्म अथाह मन्दिर देणा वखाईआ। जित्थे निरगुण नूर जोत होवे उज्यार, दीवा बाती कमलापाती पुरख अबिनाशी इक्को इक डगमगाईआ। आदि जुगादि सदा सदा जुग चौकड़ी सदा रहे उज्यार, अन्ध अन्धेर रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक दुआर देणा वखाल, जिस घर बह के आपणा आसण लाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां दे सच टिकाणा, दरगाह साची मिले वड्याईआ। इक्को बख्श शब्द बिबाणा, पुरीआं लोआं पैंडा दए मुकाईआ। तूं शाहो भूप वड सुल्तान वाली दो जहानां, शहिनशाह अख्वाईआ। तेरा नाम अगम्मी सुणन इक तराना, साची धुन कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेला इक्को रखे चरण ध्याना, सरन सरन विच मिलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां वखा दे आपणा गृह, मन्दिर धुर दा सोभा पाईआ। जित्थे निरगुण धार निरवैर हो के रहे, निराकार आपणा डेरा लाईआ। जिस दी भूमिका कदे ना होवे लय, शंकर चले ना कोए चतुराईआ। जिस दवारयों गुर अवतारां पैगम्बरां वस्त दएं, सच भण्डारा सच वरताईआ। सो सिँघासण पुरख अबिनाशण तेरा सदा रहै, रहमत विच सहिमत हो के सन्त सुहेले लैणे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा चुका के माया गुण त्रै, पंज पंच परपंच देणा मुकाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ आपणे सन्त फ़कीर वेख सूफ़ी, जो सुपन सुखोपत तेरा दर्शन पाईआ। उहनां दा जन्म कर्म दा लहिणा कर मनसूख़ी, आसा विच भरवासा आपणा इक जणाईआ। दे वड्याई शब्द धार हरूफ़ी, नाता कलम शाही बणाईआ। तूं आदि जुगादी मालक हक महबूबी, मुहब्बत विच्चों मुहब्बत लैणी प्रगटाईआ। तेरी मंज़ल उच्च अथाह मकसूदी, मकसद सब दा हल कराईआ। तेरा अपर अपार अर्श अरूज़ी, सच दवारा नज़री आईआ। जित्थे धार अवर नहीं कोई दूजी, एकँकार इक अकल्ला इक्को हुक्म वरताईआ। समझ सके ना कोए बुद्धि, विद्या भेव ना कोए खुल्हाईआ। तेरी नाम रमज़ सदा इशारयां बाहर गुंझी, धुर फ़रमाने विच वड्याईआ। कलयुग अन्त वेख औध पुगी, वेला वक्त दए गवाहीआ। जन भगतां आत्मा रहिण ना दे भुक्खी, दरस नाल तृप्त दे कराईआ। विछोड़े विच रहिण ना कोए दुखी, दर्दी हो के दर्द लैणा वण्डाईआ। तेरी धार रहे कदे ना लुकी, पुरख अकाल कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आपणे वेख भगत फ़कीर, जो फ़िकरा ढोला तेरा गाईआ। अगम्म अथाह बेनज़ीर, तेरे विच समाईआ। मंज़ल चोटी चढ़न अख़ीर, दरस करन वड पीरन पीर, पैगम्बरां दे पैगम्बर तेरे चरण कँवल सरनाईआ। मन वासना होण ना देवीं दिलगीर, शरअ कटे ना कोए शमशीर, तकदीर तदबीर तेरे हत्थ नज़री आईआ। तूं कादर करता करीम, तेरा धाम अटल अज़ीम, कलयुग अन्तिम दे तरमीम, तरफ़ दो तरफ़ आपणी धार चलाईआ। जिन्हां तेरे उत्ते रख्या यकीन, उहनां लोकमात कहे आफ़रीन, साचे नाम दी कर तलकीन, मार्ग आपणा दस्स महीन, दलील अंदरों दे बदलाईआ। सजदयांविच कहिण आमीन, हिरदेउँ करन तसलीम, तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आदि अनादी कदीम, कुदरत तेरी कादर तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लैणे फड़, सूफ़ीआं सफ़ा देणी बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जेहड़े सूफ़ी सन्त फ़कीर तैनूं झुकदे, डण्डावत विच सीस निवाईआ। ओहनां दे पैंडे बिन तेरी किरपा कदे ना मुकदे, मंज़ल हक ना कोए चढ़ाईआ। संसारी काया माटी भाण्डे भरे शक दे, सहिंसा रोग ना कोए गवाईआ। जेहड़े इक्को ओट तेरी तक्कदे, तकवा आपणा बैठे बणाईआ। पुरख अकाल उहनां नाम भण्डारा धुर दी वथ दे, वस्त अमोलक आप वरताईआ। उह प्रेमी प्यारे सच दे, सच विच बह के ख़ुशी मनाईआ। बाहरों माटी भाण्डे कच्च दे, अन्तर तेरा कंचन गढ़ रहे सुहाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द शब्दी धार तेरा नाम रटदे, इष्ट देव इक्को इक मनाईआ। पतित पावण उहनां दा आवण जावण लख चुरासी गेड़ा कट दे, जन्म मरन दा दु:ख रहे ना राईआ। सच दवारे निरगुण धार आत्म रख

दे, परमात्म बेपरवाह सदा सुहञ्जणे घर रहिण वसदे, जिस दवारयों बाहर ना कोए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सिर सभनां हथ्थ दे, समरथ हो के बेड़ा पार कराईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिंघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे तेरे सूफ़ी पढ़न कोए ना अल्फ़, ये याद ना कोए रखाईआ। तेरी दीन दुनी नालों होए बेतरफ़, नाता जगत मोह तुड़ाईआ। विछोड़े अंदर रहे वैरागी बण के तड़प, सुरती सुरत सुरत भुलाईआ। दर्शन कारन रहे भटक, कूक कूक देण दुहाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के भरोसा सिदक, आसा तेरे वल वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे सूफ़ी पढ़दे तेरा ढोला, ढोल माही कर के तैनूं रहे गाईआ। उहनां अक्खरां वाला बणाया नहीं कदे विचोला, सिफ्तां वाला पीर ना कोए सालाहीआ। इक्को निरगुण धार तैनूं जाणदे मौला, तेरे अन्तर मौल के आपणी रुत्त बदलाईआ। तूं वड्याई दे उहनां उपर धौला, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। तेरा नाउँ नूर खुदाई अवल्ला, आदि जुगादि तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। पूरा कर शब्दी धार इकरार कौला, निरअक्खर हो के अक्खर देणा जणाईआ। जगत वासना सदी चौधवीं चार कुण्ट पावे रौला, रहबर हो के राह देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर देणी वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे फ़कीर उही याद दा कटदे फ़ाका, फ़िकरा फ़िकरे वाला गाईआ। निरगुण धार तैनूं मन्नण आका, मालक इक्को इक कह के खुशी मनाईआ। बन्द कवाड़ी उहनां खोल्ह ताका, परदा अंदरों दे चुकाईआ। जिन्हां दा तेरे नाल मिल के बणे सच्चा साका, लिख्त भविख्त दए गवाहीआ। पुरख अकाल परवरदिगार मन्न बेनन्ती सच्ची दे दाता, दातार हो के आप वरताईआ। कलयुग वेख अन्धेरी राता, रैण भिन्नड़ी रूप ना कोए बदलाईआ। तेरा सन्त फ़कीर सूफ़ी बण के दासी दासा, दास्तान तेरी रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वर दाते वारस हो के वेख वखाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ लाल सिंघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं मुका दे सबर, लहिणा देणा सिफ़रे नाल उडाईआ। तन माटी खल्ल वजूद चुका दे कफ्न, काइफ़ हो के दे सरनाईआ। आपणे मुहब्बत गोशे विच कर लै दफ़न, जिस दे उत्ते दफ़ा हुक्म ना कोए सुणाईआ। जोती

९९१
१९

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दिती माण वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे सूफ़ीआं दा बिना अक्खरां तों हजारा दरूद, दरोही दर ना कोए सुणाईआ। तेरा इशारा उहनां गृह मौजूद, सनमुख सोहणा नज़री आईआ। तेरी भेंटा कर के आपणा तन वजूद, मुफ़लिस हो के मुफ्त तेरा नाम मंग मंगाईआ। सदा सदा सद तैनूं देणा पए सबूत, निरगुण सरगुण हो के वेख वखाईआ। ओन्हां दा सिदक बड़ा मज़बूत, मजबूरी तैनूं देण वखाईआ। तैनूं वसणा पए काया कलबूत, काया दा काअबा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा पूरब दए चुकाईआ। सति धर्म कहे सूफ़ीआं रहे कोई ना फ़िकर, फिक्का रस ना कोए जणाईआ। इक्को तेरा करन ज़िकर, ज़करीए वांग तन ना कोए चिराईआ। उहनां दी धारों आपणी धार बण के आवें निकल, प्रगट हो परगणा देणा वसाईआ। अमृत धार बख्श के सीतल, आबे हयात मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देणा धुर दा वर, वाहिद इबादत इक समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं सिखणी नहीं कोई इबादत, पट्टी हथ्थ ना कोए उठाईआ। उहनां नूं तेरे मिलण दी आदत, दूजा दरस ना कोए पाईआ। मन दी वासना रहे ना कोई अदावत, इलम विच आलम ना कोए अख्वाईआ। सिदक सबूरी अंदर हो के साबत, साबत तेरा दर्शन नूरी पाईआ। उहनां करनी मेहर सख़ावत, वस्त अमोलक वरताईआ। आपणे दवारे देणी दावत, नाम भण्डारे विच महिमानी देणी खवाईआ। तेरे नाल मिल के सदा रहिण सही सलामत, समें दा समाज समझ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ तेरा काज, करनी दा करता इक अख्वाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ साधू सिंघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं अगे चाढ़ीं कदे ना सूली, सुलह नाल देवीं माण वड्याईआ। पार उतारना तेरी मेहर मामूली, दया नाल दीन लैणा तराईआ। प्रेमीआं नाल कदे ना करीं बेअसूली, बेमुखां देणी सज़ाईआ। फ़कीरां नूं बख्शदा रहीं आपणी चरण धूली, धूढ़ टिक्कयां वाली सरनाईआ। तूं सब तों वड्डा आदि जुगादी कानूनी, कानून अगे दे बदलाईआ। क्यों सज़ा देंदा रहें बैरूनी, बाहरों पंजां तत्तां खल्ल लुहाईआ। जिस तरां तेरा नूर अंदर अंदरूनी, बाहर एसे तरां दे माण वड्याईआ। प्यारयां दुःख देणा गल्ल निगुनी, गुणवन्त गुणवान श्री भगवान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा राह देणा लगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ी किसे ना लथ्थे खल्ल, अगे सभा देणी बदलाईआ। जिन्हां नूं

प्यार हुक्म अंदर देवें घल्ल, उह लोकमात आ के तेरे नाम दा ढोला गाईआ। उहनां नाल कदे करीं ना छल, फ़रेब विच ना कदे फसाईआ। क्यों तेरा विछोड़ा सहि ना सकण घड़ी पल, पलकां दे ओहले तेरा पलँघ रहे विछाईआ। परवरदिगार सदा उहनां तों जाया कर बलि बलि, जो बलवान हो के तेरे भाणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ प्रेमीआं कदे न देवीं फाँसी, फ़ैसला सच देणा सुणाईआ। जो बण जाए तेरी दासी, सेवक हो के सेव कमाईआ। हुक्में अंदर मन्नणी आखी, आख़र आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। उन्हां दा लहिणा देणा दुक्खां विच ना देवीं बाकी, सुख चरण प्रीत इक बणाईआ। आपणी मंज़ल चढ़ाउणा घाटी, पैंडा अगला पिछला देणा मुकाईआ। सुख विच होणा साथी, सगला संग धुर दा देणा निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित वाली नहीं आखी, सिम्मत वाली सीमां देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सति धर्म कहे मैं कोई करदा नहीं गुसताख़ी, भिक्खक हो के आपणी झोली डाहीआ।

६६२
१६

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ, हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं साचे दर कर कयाम, मुकाम आपणा इक समझाईआ। साचे नाम दा दे इनाम, इनामी हो के झोली पाईआ। धुर कलमे दा दे पैग़ाम, संदेसा इक सुणाईआ। हकीकत दा दे जाम, आबेहयात मुख चुआईआ। सहिंसा मिटे तमाम, तमअ देणी चुकाईआ। बरदा बणा के गुलाम, सेवा देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन इच्छा कर के काम, कामल मुर्शद हो के होणा आप सहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं दे सलाह, हिम्मत आपणे नाल रखाईआ। घर वखा सच्ची दरगाह, धुर दरबारे वज्जे वधाईआ। साचा मन्दिर दे वखा, बिन छप्पर छन्न सोभा पाईआ। तेरे नाम दी सदा मंगदे रहिण दुआ, निउँ निउँ सजदयां विच सीस झुकाईआ। तूं ही तूं ही गाउँदे रहिण ख़ुदा, ख़ुद आपणा आप तेरी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उन्हां तों होवीं ना कदे जुदा, जज़ब आपणे विच कर के अदब नाल देणी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, वाहवा देवणहार इक अख्वाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ नाजर सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं कदे ना देवें सज़ा, भाणे विच तेरा कलमा रहे गाईआ। उन्हां नेड़ ना आवे कदे कहर वाली कज़ा, गहर गम्भीर सदा तेरे विच समाईआ। साचे नाम रस दा देवीं अगम्मी मज़ा, उन्हां मज़ाक करे ना कोए लोकाईआ। मुहब्बत विच आपणे मिलण दी दस्स के वजह, वजूद विच्चों सबूत देणा कराईआ। चरण कँवल दे के साची जगह, जगदीश होणा आप सहाईआ। तेरे हुक्में अंदर रहे बध्धा, बन्दगी कर के खुशी मनाईआ। अगे करीं कदे ना दग़ा, फ़रेबां वाली फ़रद देणी गवाईआ। दरवेशां फेरीं ना घर घर (करन गजा), गदागर रूप ना कोए वटाईआ। जो तेरे चरण कँवल लग्गा, लागत उन्हां देणी मुकाईआ। तेरा सहारा तक्कदे सदा, सदा तेरा नाम ढोला गाईआ। लोकमात रखणी लज्जा, मेहर नज़र इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सूफ़ी सन्त फ़कीरां कदे ना देवीं दग़ा, दग़ेबाज़ी तों बाहर लैणा कढाहीआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं सुण आवाज़, जो बिन रसना जेहवा रहे गाईआ। अन्तर परदा खोल्ह राज़, सफा कूड़ी दे उठाईआ। इक्को वार लेखे ला नमाज़, वुज़ूआं दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी बैठण सच जमात, धुर दा अक्खर देणा समझाईआ। मेहर मुहब्बत कर इनायत, इलम दे आलम आलम दे उल्मा देणे बणाईआ। इक्को मंगदे तेरी हमायत, हिम्मत हौसला देणा वधाईआ। तेरे हुक्म दी मन्नण हदायत, हदूद अंदर रह के सीस निवाईआ। चरण कँवल बख्शीं सच रिहाइश, दर दवारा इक्को इक वखाईआ। वेखीं कलयुग अन्त करीं ना कोए अज़माइश, अज़माइश विच पूरा बिना तेरी किरपा रहिण कोए ना पाईआ। मेहर नज़र नाल करने लायक, ल्याकत अंदरों देणी प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा साचा वर, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे सूफ़ीआं नाल करीं कदे ना दग़ा, धोखे वाला ईमान ना कोए बणाईआ। एहनां नाल मिल के तेरा वधदा अग्गा, मातलोक वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण तैनूं दिन्दे रैहन्दे सदा, धरनी धरत धवल उपर तेरा राह तकाईआ।

तेरा दीपक जोत प्रकाश दीआ इन्हां अंदर जगा, तेरा नाम करन रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर देणा वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं नाल रहे तेरा मिलाप, धुर दा कलमा आपणा नाम दृढ़ाईआ। तेरा गाउँदे रहिण अगम्मी सदा जाप, मुर्शद तैनूं मन्न के खुशी मनाईआ। रूह बुत्त कर के पाक, पाकीज़ा हो के तेरी सेव कमाईआ। उन्हां बख्शीं आपणी दात, वस्त अगम्म अथाह झोली पाईआ। तेरी सच्ची गाउँदे रहिण गाथ, गा गा खुशी मनाईआ। जन्म कर्म दा लेखा शब्दी हुक्म लिख देणा नाल कलम दवात, कलयुग दा कालख टिक्का मस्तक देणा लाहीआ। चरण प्रीती धुर दा नाता सच बणाउणा साक, सज्जण हो के वेख वखाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर इक्को जेही रखणी प्रभात, संधया नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पैगम्बरां दे पूरे करने भविख्त वाक, सूफ़ीआं दा सफ़र देणा मुकाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिंघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण प्रभ साचे नाम दी अगम्मी दस्स कलाम, कलमा कायनात जणाईआ। सूफ़ीआं मिल बण के वड इमाम, कामल मुर्शद हो के फेरा पाईआ। शरअ ज़ंजीर रहे ना कोए ग़ुलाम, मज़्हबां दा मज़मून देणा मिटाईआ। दरगाह साची तेरा तक्कण हक मुकाम, सचखण्ड दुआर इक्को नज़री आईआ। जित्थे भगत सुहेले निरगुण धार करदे बिसराम, सुखआसण बैठे सोभा पाईआ। तेरे चरण कँवल होवे कयाम, क्यामत दा डर रहे ना राईआ। पैगम्बर जिस दा दे दे गए ब्यान, भविख्त विच भेख गए समझाईआ। सो खेल करे हो के मेहरवान, महव महबूब भगतां देवे वड्याईआ। कलयुग अन्त मंज़ल चढ़नी दस्से आसान, गुण निधान दया कमाईआ। सच प्रीती चरण कँवल दुआर सच दस्से ईमान, अमलां दा लेखा आपे दए समझाईआ। सच दवारे कोई ना दिसे बे इमान, बेवा रूप नज़र कोए ना आईआ। सूफ़ीआं नाल सन्तां नाल भगतां नाल प्रभ दा ख़ालस बणना ख़ानदान, ख़ालस ख़ालस आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं करनहारा सवाधान, शब्दी हुक्म नाल उठाईआ। सति पुरख निरँजण प्रभ तेरा आदि जुगादी अहिद, इकरार पिछला नज़री आईआ। जन भगतां धार बख्श सफ़ैद, चिट्टी धारी विच समाईआ। साचा नाम कर राइज, राज रईयत इक्को इक बणाईआ। तेरा नाम खुदाई वाहिद, वाहिद कलमा देणा पढ़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तैनूं फेर ना मिले आउणा शायद, गुर अवतार पैगम्बर तेरे हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। बाले नन्न्हे नढ्ढे फ़रमांबरदार होवण नाइब, नसीहत विच वसीअत कर के असलीअत

दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच कानून इक कवाइद, काइदा बकायदा हुक्म रिहा जणाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण प्रभ सूफ़ी सन्त फ़कीर तेरे नन्हे बालक, बचपन बच्चयां वाला नज़री आईआ। तूं धुर दा मालक सृष्टी दा ख़ालक, खलक तेरा नूर रुशनाईआ। सदा सुहेला हो के बणना सालस, सति सच इक समझाईआ। सच दवारे तेरी अगम्म अदालत, अदल इन्साफ़ आपणा लैणा कमाईआ। जुग जन्म दा लहिणा देणा चुकाउणा अमानत, नाम दा राम भण्डार झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिदक देणा बंधाईआ। सति पुरख निरँजण प्रभ सूफ़ी फ़कीर तेरा अदना, आहला देणी माण वड्याईआ। भाग लगाउणा काया माटी बदना, बदला अंदरों देणा चुकाईआ। तैनूं लभ्भणा पए ना विच्चों जंगलां, काया काअबे करनी आप रुशनाईआ। रिशवतां नाल ना पए सद्दणा, वढ्ढीआं नाल ना वण्ड वण्डाईआ। वासना अंदर ना पए भज्जणा कलयुग बण के पाँधी राहीआ। तूं पुरख अकाल हो के बणना सज्जणा, परवरदिगार सांझा यार अख्वाईआ। तेरा सतिजुग मार्ग लगणा, कलयुग कूड़ा डेरा ढाहीआ। नाम नगारा इक्को वज्जणा, डंका धुर दा देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रकाश दीपक इक्को जगणा, जग्ग जग्ग करे रुशनाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ बुकण सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण प्रभ सब दी मनसा करनी पूर, चिन्ता जगत गवाईआ। नाम खुमारी दे सरूर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। साची प्रीती बख्श चरण धूढ़, पापां मैल देणी धवाईआ। दर्शन देणा हाजर हज़ूर, सनमुख हो के सोभा पाईआ। लेखा मुकाउणा कलयुग क्रिया कूड़, सति धर्म देणी माण वड्याईआ। जन भगतां बेड़ा भर के आपणा पूर, पारब्रह्म पार किनारे देणा लगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा दस्तूर, ग़रीब निमाणयां होएं सहाईआ। सच बेनन्ती करनी कबूल, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दा दस्स के आप मजमून, मज़े वाली सिख्या देणी समझाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति पुरख निरँजण प्रभ तेरा भगत रहे ना अकल्ला, सगला संग देणा बणाईआ। साचा वसदा रहे तेरे नाम दा महल्ला, गली कूचे वज्जदी रहे वधाईआ। तेरे शब्द दा हुन्दा रहे हल्ला, जगत विकार ठहर सके ना राईआ। गुरमुखां फड़ाउँदा रहीं सदा पल्ला, शब्द डोरी आपणी गंढु पवाईआ। होवीं सहाई सदा जला थला, समुंद सागर वेख वखाईआ। जिस कारन लोकमात घल्ला, पंज तत काया माटी जन्म दिवाईआ। ओस दा देणा साचा फला, फलीभूत देणा कराईआ। तेरा वेखण नेहचल धाम अटला, सचखण्ड दवारे चढ़ के खुशी मनाईआ। जित्थे दीपक जोती इक्को बला, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल साचे धाम सोहवें इक इकल्ला, इकल्लयां दी कला देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां जोड़ जुड़ाईआ। सति पुरख निरँजण प्रभ जन भगतां कदे ना होवे विछोड़ा, विछड़यां मेल मिलाईआ। सुरत शब्द दा रहे जोड़ा, धुर संजोगी नाम पल्लू देणा फड़ाईआ। तेरे नाम दा सदा गाउँदे रहे दोहरा, निरगुण सरगुण मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। भय रहे ना काया मन्दिर अंदर पंज चोरा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा मिटाईआ। अमृत रस निझर धार प्रेम प्रीती अंदर देणा भोरा, भरम गढ़ु रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म मिल के भेव रहे ना तोरा मोरा, मैं ममता विच्चों देणी कढाहीआ। सदा सदा सद जन भगतां तेरी लोड़ा, आसा मनसा सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा साचा वर, सन्त सुहेले अंग लगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां हुन्दा रहे मेल, मिल मिल खुशी मनाईआ। होवे प्रकाश बिन बाती तेल, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी सज्जण बणे सुहेल, संगी सगला इक अख्वाईआ। धाम जणावे हक नवेल, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे अचरज पारब्रह्म दा खेल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणना सज्जण सुहेल, सही सलामत बिना अलामत निरगुण जोत मेला लैणा मिलाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ अरूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं माणस जन्म करदे सुफ़ल, सफ़रीआं सफ़र दे मुकाईआ। काया मन्दिर अंदर खोलृ के कुफल, काअबा आपणा दे जणाईआ। सच सरोवर अंदर करा गुसल, मैल पापां आप धवाईआ। खुशीआं विच पुच्छ अनन्द कुशल,

प्रेम विच प्रेम दे बदलाईआ। तेरी धार अंदर उठण, भज्जण वाहो दाहीआ। चरण सरनाई तेरी पुज्जण, पिछला पन्ध रहे ना राईआ। चुरासी जून विच कदे ना दुक्खण, जम की फाँसी देणी तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच होणा आप सहाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सूफ़ीआं कूड़ी क्रिया मेटदे सफा, सफ़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम निधाना दे गफ्फा, बेअन्त आप वरताईआ। कलयुग कूड़ा कर्म करदे रफ़ा, ममता मोह रहे ना राईआ। दुरमति मैल धो धब्बा, पतित पुनीत दे बणाईआ। सच्चा मालक नज़र आ अब्बा, पिता हो के गोद उठाईआ। आपणे नाम दा दस्स छन्दा, ढोला इक सुणाईआ। मनुआ मन रहे ना गंदा, अंदरों होए सफ़ाईआ। लेखे ला लै आपणा बन्दा, बन्दगी आपणी इक जणाईआ। सच जोत दा नूरी चाढ़दे चन्दा, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि सद बख्शिंदा, बख्शिश विच वस्त अमोलक नाम झोली देणा पाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड मुग़ल चक्क ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ अन्धेरा गया छा, चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दवारे इक्ठे हो के करन सलाह, दरगाह साची मिल मिल आपणा मता पकाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों भुल्लया हरि का नाँ, नाउँ निरँकार परवरदिगार सांझा यार इष्ट ना कोए मनाईआ। सच भूमिका सति सरूप रिहा कोए ना थाँ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सिर देवे कोई ना ठंडी छाँ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन तेरी किरपा कूड़ी क्रिया परदा कोए ना लाहीआ। मन वासना सृष्टी बुद्धी होई काँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां झगड़ा प्या सूर गाँ, ग़रीब निवाज तेरी हक नमाज़ शब्द अनाद धुन काया मन्दिर अंदर सुणन कोए ना पाईआ। सदी चौधवी गहर गम्भीर बेनज़ीर साचे भगतां सूफ़ी सन्तां पकड़े कोए ना बांह, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी बिन तेरे मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम धरत धवल वेख आपणा घर, निरगुण हो के आपणा फेरा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सचखण्ड दवारे गुर अवतार पैगम्बर मिल के करन सलाह, मश्वरा आपणे नाल रखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सति दीप बिन पुरख अकाल साचा दिसे ना कोए मलाह, खेवट खेटा बेड़ा पार ना कोए लँघाईआ। सिफ्तां अंदर ढोलयां अंदर रागां नादां अंदर सारे करदे वाह वा, सतिगुर शब्द विच ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन

वासना ममता विच दीन दुनी लाया दाअ, चक्र विच फ़क्कर सारे दिते भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख आपणा घर, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा फेरा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पैगम्बर रहे बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट वज्जा ढोल, नाम शब्द डंका सच ना कोए सुणाईआ। सच वस्त दिसे ना कोल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। निरगुण धार साचे कंडे तोले कोई ना तोल, जगत तराजू तक्कड़ साध सन्त कोटन कोटि हथ्थ उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म जाए कोए ना मौल, सुरती शब्द मेला मेल ना कोए कराईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत धवल धौल, खुल्हड़े केस अगे दस दस्मेश वास्ता दरोही कह के रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग बदल दे कूड़ी क्रिया रेख, भेख जूठ झूठ रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे बैठे रहे तक्क, लोकमात ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ली दरस पुरख समरथ, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे होए वस, भाण्डा भरम भउ ना कोए भन्नाईआ। चार युग दी पिछली कथा कहाणी पढ़ पढ़ सारे रहे दस्स, बोध अगाध शब्द अनाद धुर दा शब्द सनमुख हो ना कोए समझाईआ। साची जोत निर्मल नूर करे ना कोए प्रकाश, दीवा बाती कमलापाती तेरा नूर ज़हूर करे ना कोए रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन सब दे अंदर होई अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावे कोई ना गाथ, सोहले ढोले पढ़ के सारे शुकर मनाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, प्रगट हो सर्ब गुणतास, दीनां अनाथां दे साथ, सगला आपणा संग बणाईआ। खेल वेख पृथ्वी आकाश, मण्डल मण्डप झूठी पैंदी रास, गोपी काहन पूरी करे कोए ना आस, तृष्ना जगत ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे धुर दा वर, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद बण विचोला लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दे समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार वेखण उठ के पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी परे निगाह लगाईआ। बिन तेरे चार वरन अठारां बरन देवे कोए ना धीर, सृष्टी दृष्टी अंदर होई हल्काईआ। साचा वस्त्र नाम निधान लभ्भे किसे ना चीर, पाटे चीथड़ तन माटी ख़ाक रहे लाईआ। शब्द निराला अणयाला मारे कोए ना तीर, तुरीआ पद तों परे बजर कपाटी चीर साचा दरस कोए ना पाईआ। शरअ कटे ना कोए ज़ंजीर, अंदरों शरक्त लाशरीक बाहर ना कोए कढाहीआ। झगड़ा प्या ग़रीब अमीर, साचा अमृत मिले किसे ना सीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे हथ्थ आदि जुगादि जुग चौकड़ी सची तदबीर, सच तरीका नीकन नीका एका दे समझाईआ।

कलयुग अन्त कर अख़ीर, वड दाते गहर गम्भीर, बेनज़ीर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पैगम्बर इक्ट्ठे हो मुकामे हक, हक हकीकत ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म संदेसे दे दे आए थक्क, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बोध अगाध शब्द गीत जणाईआ। दीन दुनी अंदर लभ्भे कोई ना सच, सति विच जीव जंत ना कोए समाईआ। शब्दी नाता सारे गए छड्ड, सिफ्ती ढोले बाहरों रहे गाईआ। आत्म परमात्म नालों होई अड्ड, मन वासना घेरा ल्या पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवामी पुरख अबिनाशी तेरी आस तकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पैगम्बर तेरे दर मौजूद, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। किसे दस्सया हजारा दरूद, कोई कलमे गया पढ़ाईआ। तेरे नाम दा दे के सबूत, सोहला रागां नादां विच गाईआ। डंका वजा के तेरी कूट, दिशा आपणी रहे वखाईआ। अन्तिम सारे कर के गए कूच, पंज तत नाता जगत तुड़ाईआ। उच्ची पुकार गए कूक, बिन पुरख अकाल आदि अन्त ना कोए सहाईआ। जिस दा शब्द अगम्मी दूत, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश, पातालां गगन गगनंतरां आपणा हुक्म सुणाईआ। सदा वसे अर्श फर्श उत्ते अरूज, सच दवारे निरगुण धार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच दुआर एकँकार इक्को देणा खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साचा मार्ग दे अनोखा, गुर अवतार पीर पैगम्बर मंग मंगाईआ। जिस विच दीन मज़्हब ज़ात पात दा होए कोई ना धोखा, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। मन वासना बुद्धी विच करे कोए ना सोचा, गहर गम्भीर आपणा परदा देणा लाहीआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्ह पूरी कर लोचा, आसा मनसा मनसा विच समाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरा दरस करना होया औखा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भाग लगा साढे तिन्न हथ्थ हरि मन्दिर काया कोठा, घर विच घर परदा दे उठाईआ। तेरा प्रकाश होवे निर्मल धार जोती जोता, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर अमृत बख्श ठंडी ठार, रस निझर झिरना देणा झिराईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे मंग, ख़ाली झोलीआं अगे रहे डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। तेरे नाम दा चार वरन वज्जे इक मृदंग, मदद अवर ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विच्चों कढ्ढ भुक्ख नंग, समें दी धार समां देणा बदलाईआ। सति प्रेम दा दे इक अनन्द, अनन्दपुर वासी जोत प्रकाशी, प्रकाशवान कर सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी करपा कर, खुशी कर बन्द बन्द, बन्दना इक्को दे

दृढ़ाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पैगम्बर वखावण आपणा भविख्त, चार युग दा लेखा पिछला नाल मिलाईआ। जिस विच लिख्या सब नूं मन्नणा पए इक्को इष्ट, पुरख अकाल परवरदिगार धुरदरगाहीआ। जिस दे कोल आदि अन्त जुगा जुगन्त सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ीआं दी लिस्ट, बिन हरफ़ हरूफ़ां दिती लिखाईआ। उन्हां नित नवित कर के हित अबिनाशी अचुत अन्तर आत्म परमात्म खोले दृष्ट, दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया मोह विकार उहनां कर ना सके भृष्ट, भाण्डा भरम निहकर्मी हो के आप भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे देवणहार वड्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ, गुर अवतार पैगम्बर वखावण आपणा लेख, जिस दा लेखा समझ कोए ना पाईआ। किस कारन पुरख अकाल कलयुग धरे भेख, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। जिस दी आसा रखी गोबिन्द दस दस्मेश, शब्दी शब्द जणाईआ। सो आदि जुगादि रहे सदा हमेश, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। कलयुग अन्त जोती जाता पुरख बिधाता कोए ना लए पेख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे रूप रंग रेख, जिस नूं लभ्भदे गए केती केत, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी, जन भगतां अन्तर पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खेले खेड, जगत खिलारी आपणी धार प्रगटाईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा एकँकार निराकार निरँकार आपणा देवे भेज, भजन बन्दगी बिना मुशंदगी इक्को दए समझाईआ। जोती जलवा कर के तेज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग देवे अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वसणहारा सचखण्ड दवारे साचे देस, दिशा दीन दुनी आपणे, विचो आप प्रगटाईआ।

१० सावण शहिनशाही सम्मत २ केशो राम दे गृह पिण्ड सरहाली जंडो के ज़िला अमृतसर

सति धर्म कहे प्रभ, अगली धार दे समझाईआ। किउं सृष्टी पापां थल्ले दिती दब्ब, जगत विकार विच फसाईआ। कोई पार ना करे संसारी हद्द, पैंडा कूड़ ना कोए मुकाईआ। तेरे नालों हो के अड्ड, विषयां विच विश्व हल्काईआ। सति धर्म निशाना लोकमात गड्ड, दो जहानां दे वखाईआ। तेरा कोई ना भुल्ले नाउं विच जग, थाउं थाँई तेरा ध्यान लगाईआ। सन्त सुहेले सज्जण सच दवारे सद, सधने नालों अदने पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ क्यों कलयुग पाया भरम, भुलेखे विच लोकाईआ। कोई कीमत ना पाए मानस जन्म, जरम ऐवें रहे गवाईआ। चल आए ना तेरी सरन, ओट इक ना कोए वखाईआ। तूं आदि जुगादी हार भन्नूण घड़न, समरथ पुरख इक अख्वाईआ। तेरे मन्दिर मूल ना वड़न, सचखण्ड दवारे दरस कोए ना पाईआ। तेरा नाम अगम्मी

कलमा कोए ना पढ़न, जगत सोहले रहे गाईआ। कोई ना परसे तेरे चरण, जग तीर्थां नहा नहा ख़ुशी मनाईआ। तेरे कोलों मूल ना डरन, भय शस्त्रां सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुच दे प्रगटाईआ। सति धर्म कहे प्रभ अन्त आपणी कर दया, दयाल कल्की रूप वटाईआ। साचा नाम चार वरन जणा नईआ, नौका इक वखाईआ। गुरमुख सखियां बण घनईआ, शाम हो के सोभा पाईआ। मेला मेल धुर दा बण रमईआ, सीता सुरती आप प्रनाईआ। दो जहानां बण सज्जण सईआ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट लेखा देणा मुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग अन्तिम दे दे ढोई, ढोर ढोण वाला नाल मिलाईआ। तेरा लेखा बिन रविदास लिखे ना कोई, बिन कलम शाही कटाकश ना कोए लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन अरज़ोई, अरज़ां विच सीस निवाईआ। सोई सुरत उठे नवीं नरोई, नर नरायण दे अंगड़ाईआ। तेरे नाम दी चार कुण्ट होए दरोही, तोबा तोबा करे ख़लक ख़ुदाईआ। दूजा रहे ना कोई विदरोही, इक्को रंग देणा रंगाईआ। सब दी आत्म जाए मोही, मुहब्बत विच प्यार लैणा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ, खेल दस्स वड इमाम, निरगुण दाते दया कमाईआ। चौथे युग पूरन कर काम, जुगती आपणी आप प्रगटाईआ। सब दा सजदा कबूल कर सलाम, कलाम आपणी दे दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, नौजवान हो के हुक्म वरताईआ। लख चुरासी सखियां आत्म परमात्म बण काहन, गोप गोपाला आपणा आप प्रगटाईआ। नाम भण्डारा अमोलक दे दान, दयावान दो जहान वरताईआ। जन भगतां मलेछां विच्चों कर आसान, दरवेशां आपणे दर बहाईआ। नज़रे कर्म कर कल्याण, फ़ज़ल रहमत आप कमाईआ। घर सज्जण मेल बण के धुर दा राम, रमईआ हो के सोभा पाईआ। हज़रत हो के दे पैग़ाम, पैगम्बर हो के कर पढ़ाईआ। सतिगुर हो के धुर दा मंत्र दस्स सतिनाम, गुण निधान आप समझाईआ। कलयुग मिटे रैण अन्धेरी शाम, शाम हो के शमां साची दे जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचा दे जाम, रस इक्को इक वखाईआ।

✪ १० सावण शहिशाही सम्मत २ उत्तम सिँघ दे गृह पिण्ड शहाबप्पुर ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ, सतिजुग रखदे नींह, न्याँ निरँकार आप कराईआ। सन्त सुहेले बणा पुत्तर धी, पिता पूत पतिपरमेश्वर आप अख्वाईआ। शब्दी धार निर्मल कर सब दा जीअ, जीवण जुगत इक समझाईआ। अमृत बरस अगम्मा मींह, तृष्ना तृखा

दे गवाईआ। लेखा मुके साढे तिन्न हथ्थ काया सीं, सचखण्ड दवारा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति सति आप उपजाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग उपजा सच गुरमुख, जो मुख रसना तेरा नाम ध्याईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर माणण सुख, जगत विकारां विच ना कोए फसाईआ। आत्म परमात्म साची पढ़न तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। ममता तृष्ना मेट भुक्ख, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। लख चुरासी विच्चों गोदी चुक, बाहों पकड़ आप उठाईआ। उन्हां आवण जावण चुरासी गेड़ा जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, शाह सुल्तान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची भिख्या देणी झोली पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ, सतिजुग वक्त कर सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। दीनां दु:ख वण्ड बण के दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर विच्चों पार कराईआ। नेत्र नाम निधान दे अगम्मी अंजणा, आंच कलयुग ना कोए सताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दवारे बण सजणा, सैण हो के निज नैण देणा खुल्हाईआ। तेरा नाम मृदंगा शब्दी ताल भगतां अन्तर वज्जणा, गृह गृह मन्दिर अंदर देणा सुणाईआ। जन भगत सुहेला कोई रहे ना सक्खणा, सच भण्डारा एकँकारा देणा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग अग्नी अग्ग देणी बुझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग दे सच निशानी, निशाना आपणा नाम जणाईआ। मुहब्बत विच कर मेहरवानी, मेहरवान हो सहाईआ। तूं आदि जुगादी धुर दा दानी, दातार हो के दात दे वरताईआ। तेरे बिना तेरी मंज़ल चढ़नी ना होए असानी, असल वसल यार देणा वखाईआ। किसे देणी पए ना कुरबानी, सीस धड़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धुर दा बख्श पद निरबाणी, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे नुरानी, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, रेखा विच्चों रेखा देणी बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सच प्रीती दे सहारा, सतिजुग साचा राह चलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। जीव जंत जिस ने कीता दुख्यारा, दुखियां भुखयां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। चार कुण्ट चार वरनां हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साचा मिले ना किसे मीत मुरारा, पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई होया धुंधूकारा, धूंआधार दिसे जगत लोकाईआ। साचा नूर ज़हूर कर उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। धुर दा खेल दस्स कल्की अवतारा, कलमा कायनात समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा चार वरन अठारां बरन इक्को दिसे सच दरबारा, जिस दरबारे बह के दो जहानां हुक्म चलाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ बिधावा सिँघ दे गृह पिण्ड शहाबप्पुर ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां घाल लेखे ला सेवा, स्वामी साहिब आपणी दया कमाईआ। अमृत रस अगम्मी दे मेवा, बदला नाम वाला चुकाईआ। कौस्तक मनी मस्तक ला थेवा, थिर घर साचा दे वखाईआ। महल अटल सुहा निहचल धाम निहकेवा, निरगुण निरवैर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां भगती सेवा कर परवान, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। मानस जामा लेखे ला जगत इन्सान, निशाना आपणा दे चुकाईआ। एथे ओथे रख ध्यान, दो जहानां वेख वखाईआ। लख चुरासी छुटे आवण जावण कान, जन्म मरन रहिण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दवारा दे सच मकान, चरण कँवल मिले सरनाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भाग सब दा दे बणाईआ। लेखे ला गृह गृह पकवान, पक्के नाते लै जुड़ाईआ। जन भगतां लोकमात मुड़ के फेर ना होवे पीण खाण, पी खा के उहनां दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत उधारना तेरा कम्म आसान, कीमत कोए ना लागे राईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ अर्जन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ, तेरा सतिजुग उपजे एका नाम, नाउँ निरँकार जप के सारे खुशी मनाईआ। मस्त खुमारी अमृत मिले धुर दा जाम, जगत नश्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। भाग लग्गे काया माटी तत चाम, चम दृष्टी सृष्टी अंदरों देणी बदलाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, दीनां मज़्बां दा लेखा देणा मुकाईआ। सच धर्म चलाउणा इक निशान, नौ खण्ड सत्त दीप इक्को धार देणी बंधाईआ। धुर शब्द नाल लख चुरासी जीव जंत साध सन्त मानव ज़ाती करनी कल्याण, कलमा बोध अगाध समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मन्नण तेरी आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरण कँवल सीस झुकाण, सजदयां विच डण्डौत करके सोभा पाईआ। तेरा हुक्म संदेसा नर नरेशा चले विच दो जहान, निरगुण सरगुण सके ना कोए उलटाईआ। पारब्रह्म पतिपरसेश्वर कलयुग अन्त होणा मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच आपणा हुक्म वरताईआ। कागज़ कलम शाही जिस दा भविख्तां विच कर के गए ब्यान, रागां नादां विच सिफ्ती ढोले गाईआ। सो खेल करना महान, जिस नूं जाणे जीव ना कोए जहान, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा वरताईआ। सति धर्म कहे प्रभ हुक्म दे दे एका वार, एकँकार तेरी वड्याईआ।

६७४
१९

तैनूं झुकदे सदा जुग चार, सतिजुग (त्रेता द्वापर कलयुग) सीस सके ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरे दर दी पनिहार, सेवक हो के नित नवित सेव कमाईआ। लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बणया रिहा ठठयार, काची माटी वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया दे निवार, माया ममता मोह विभचार रहिण कोए ना पाईआ। तेरे भगत सन्त गुरू गुर चेले गुरमुख गुरसिख होए लाचार, सूफ़ी रो रो देण दुहाईआ। साची मंज़ल किसे ना मिले दर्शन होए ना दीद दीदार, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। पढ़ पढ़ थक्के रसना जेहवा बत्ती दन्द वारो वार, तेरी वारता बिन अक्खरां ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे हुक्म अंदर गुर अवतार पैगम्बर, बैठे सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, रैण अन्धेरी रहिण कोए ना पाईआ। तूं सर्ब कला भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। लेखा जाणें लख चुरासी घट भीतर अंदर, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। तेरा सच दुआर एकँकार इक्को सोहे धुर दा मन्दिर, जित्थे दीन मज़्ज़ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मन वासना दहि दिशा भवे कोए ना बन्दर, ममता मोह ना कोए सताईआ। त्रैगुण माया वज्जे कोए ना जंदर, बन्द ताकी कुंडा इक्को वार देणा खुल्हाईआ। सति सरूप शाहो भूप परम पुरख परमात्म आत्म आपणा दे सच अनन्दन, निरगुण अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। ठांडे दरबार एकँकार तेरे दर होवे बन्दन, दूजे सीस ना केइ झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे दर तों मंगण, जुग चौकड़ी भिच्छया लै के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, कलयुग अन्त अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाम दा दस्सदे गए सलोक, सोहला ढोला जगत सुणाईआ। अन्तिम रख के गए ओट, आसा इक्को इक बणाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त अख़ीर बीस इकीसा हरि जगदीसा प्रगट होवे निर्मल जोत, निहकलंक आपणा नाउं प्रगटाईआ। जिस नूं समझ ना सकण कोटन कोटि, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत समुंद सागर खोजयां हत्थ किसे ना आईआ। तिस दा रूप रंग रेख ना कोई वरन गोत, ज़ात पात विच डेरा कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा वखाउणा इक घर, गृह मन्दिर आप वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे करदे गए इशारे, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर लए अवतारे, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा वेस वटाईआ। साचे धाम वसे सम्बल थारे, थिर घर निवासी आपणा फेरा आपे पाईआ। चार वरन अठारां बरन सोहण इक दवारे, दूजा दर रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार

उतारे, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। सन्त भगत सुहेले शब्दी हुक्म नाल उठाले, सोया कोए रहिण ना पाईआ। भेव मुका के शाह कंगाले, राज राजानां इक्को रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अंदर सच वखाए सची धर्मसाले, बाहरों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। साढे तिन्न हथ्थ वण्ड वखाए सची धर्मसाले, शिवदवाले शिव शंकर दी पूजा विष्न ब्रह्मा पूजण दी आसा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दे वर, धुर दरबारी आपणी दया कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाम दस्सदे गए सच्चा धर्म, धर्म दूजा नजर कोए ना आईआ। तेरे प्रेम दा करदे गए कर्म, कर्म कांड दा डेरा गए ढाहीआ। सब नूं तेरी दस्सदे गए साची सरन, गुरदेव स्वामी अन्त इक्को नज़री आईआ। दीन दुनी कलयुग अन्त श्री भगवन्त माया ममता मोह मन मनसा पाया भरम, भाण्डा गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। सति सतिवादी तेरा परसे कोई ना चरण, सचखण्ड दवारे चढ़ के नूरी नूर जोत दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां खोलू हरन फरन, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कोई ना पूजे पाहन पत्थर, सिल सीस ना कोए निवाईआ। तेरे यार प्यार अंदर गोबिन्द विछाया सत्थर, यारड़ा सेज इक हंढाहीआ। जगत मोह विच ना वहाया अथ्थर, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। अन्तिम चोटी चढ़ के सिखर, सचखण्ड दवारे बह के सोभा पाईआ। जिस नूं गुरमुखां दा नित नवित सदा फ़िकर, फ़िकरयां विच ज़िकर आपणा नाम सुणाईआ। निरगुण धार हो के जोती उज्यार हो के शब्दी जैकार हो के आया उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दिशा वेख वखाईआ। भगत सुहेले सन्त सज्जण शब्दी धार बणाए आपणे पुत्तर, पिता पूत हो के गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात रहिण ना पाईआ। सति धर्म कहे गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन अक्खां लाई बैठे ध्यान, दो जहानां वेख वखाईआ। की खेल करे भगवान, कलयुग अन्त बेपरवाहीआ। जिस दा नाम सच्चा निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। जिस नूं बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह के सारे गाण, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। सो प्रगट हो के निहकलंक बली बलवान, बल आपणा आप जणाईआ। जिस नूं समझ ना सके शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान परदा ना सकी उठाईआ। जुग चौकड़ी सारे करदे ध्यान, निउं निउं बैठे सीस निवाईआ। सो साहिब मेहरवान अन्तरजामी कलयुग अन्त खेल करे महान, महिमा अकथ कथ जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विच्चों जहान, जहालत पिछली दए गवाईआ। मानस बुद्धी बुध बिबेक कर चरण प्रीती देवे साचा दान, धुर दी रीती नीती आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी धुर

दा ढोला अगम्मी राग देणा जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम इक्को होवे ढोला, गीत गोबिन्द गया जणाईआ। शब्द सतिगुर सब दा होया विचोला, आत्म परमात्म मेला लए मिलाईआ। मन वासना जगत बुद्धी रहे कोए ना रौला, विद्या विचार कम्म किसे ना आईआ। काया मन्दिर डूंघी कंदर साचे अंदर चुक्के परदा ओहला, दूई द्वैती दर नज़र कोए ना आईआ। नाम रंगला खेले अगम्मी आपणा होला, रंग गुलाला इक चढ़ाईआ। भाग लग्गे काया माटी साचे चोला, जीवण विच्चों जीवण ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी हयात विच्चों हयाती धार देणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्सणा सब नूं सच्चा बोला, अनबोलत राग सुणाईआ। सति धर्म कहे, सतिजुग साचा पुरख अबिनाशी दे उपजा, कलयुग कर्म रहिण ना पाईआ। भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख लोकमात प्रगटा, सुरती शब्द शब्द मिलाईआ। नाद धुन आत्मक राग सुणा, सरवणां दी लोड़ रहे ना राईआ। निर्मल जोत दीवा बाती कमलपाती इक जगा, सूर्या चन्द बैठण मुख छुपाईआ। काया मन्दिर बंक दवारा सच सुहा, परमात्म हो के आत्म सेजा डेरा लाईआ। धुर दा मेला गुरू गुर चेला दर साचे लै मिला, मिलयां विछड़ फेर कदे ना जाईआ। साचे धाम देणा बहा, जित्थे निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को दे सुहा, दरस होवे परवरदिगार हक खुदा, खुदी तकब्बर रहे कोई ना, सबर प्याला जाम देणा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे नाम दी सुणा हक सदा, सदीआं दे विछड़े सदीआं विच्चों कदमां विच टिकाईआ।

६७६ १६

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड उसमा ज़िला अंमित्सर ✪

सति धर्म कहे प्रभ सृष्ट सवाई दस्स दे आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा परदा उठाईआ। ज़ात पात रहे कोई ना भरम, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मानस मानुख ज़ाती वेख कर्म, निहकर्मी हो के फेरा पाईआ। तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को सच्चा धर्म, धर्म दी धार आपणा नाउं दे प्रगटाईआ। जिस दी सिफ्त करदे जुग चार सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराणां विच अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक्को दे वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा धर्म दवारा होवे इक, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ नज़र कोए ना आईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तेरा प्रेमी होवे पित, पारब्रह्म पतिपरसेश्वर वाहिगुरू अल्ला गॉड कह के सारे शुकर मनाईआ। साचे नाम धुर दे कलमे दी पा भिख, वस्त अमोलक आप वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हर घट अंदर

आवें दिस, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। माया ममता कूड़ी अंदरों कढु विख, अमृत रस गृह गृह देणा चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सति धर्म कहे प्रभ वड्डा छोटा रहे कोई ना नीच, ऊँचो ऊँच ना कोए अख्वाईआ। तूं हर घट वस्या बीच, आत्म परमात्म रूप प्रगटाईआ। तेरी चार वरनां नाल सांझी प्रीत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दूर ना कोए रखाईआ। तेरा इक्को रंग हस्त कीट, राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां इक्को घर दे वखाईआ। कलयुग अन्त आपणी दीन दुनी कायनात सृष्टी दस्स आपणी प्रीत, प्रीतम हो के आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं नज़री आवें ठाकर ठीक, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ ज़ात पाती कलयुग अन्त कर नबेड़ा, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सतिगुर शब्द भेव खुल्ह दे तेरा मेरा, परदा ओहला रहे ना आईआ। चार वरनां मन होवे चाउ घनेरा, दुखियां दुःख ना कोए सताईआ। तेरे चरण कँवल सब दा होवे डेरा, डण्डावत वक्खरी ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म निरगुण धार सरगुण बन्नृ बेड़ा, कलयुग अन्त देणा मुकाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर दीदार सिंघ दे गृह ✪

६७७ १६

सति धर्म कहे प्रभ नेत्र रोंदे समुंद सागर, गहर गम्भीर गवर तेरा ध्यान लगाईआ। जगत दवारे मिले ना कोई आदर, आदर्श तेरा नज़र कोए ना आईआ। निर्मल कर्म ना होवे उजागर, जल विच जल निर्मल नीर ना कोए बणाईआ। साचा वणज करे ना कोई बण सौदागर, लख चुरासी सार कोए ना आईआ। तेरी खेल वेख करते करीम कादर, कुदरत दा हाल दयां जणाईआ। जिंनां चिर भाग ना लगावें साढे तिन्न हथ्थ माटी गागर, पंज तत ना रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लहिणा देणा बणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भाग लगा दे काया माटी चम्म, चारों कुण्ट तेरा नाम वज्जे वधाईआ। धार बदल दे पवण स्वासी दम, दामनगीर हो के आपणा रंग रंगाईआ। हरख सोग चिन्ता रहे कोई ना ग़म, सति विच्चों सति देणा समझाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डा देणा भन्न, माया ममता मोह डेरा ढाहीआ। नाम पदार्थ वस्त अमोलक देणा धुर दा धन, धन्न धन्न धन्न कहे लोकाईआ। झगड़ा रहे ना कोई वासना मन, मन का मणका देणा भवाईआ। आपणा नाम निधान श्री भगवान सुणाउणा बिना कन्न, अनादी धुन कर शनवाईआ। सच प्रकाश नूरी चाढ़ना चन्न, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा देणा इक वर, वारता अगली

देणी समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साचा दे के शब्द ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे मिटाईआ। तूं दाता दानी श्री भगवान भगवन हो के हो सहाईआ। दर दरवेश महेष सीस झुकाण, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर किरपन उते हो के मेहरवान, महबूब सच अरूज परदा देणा चुकाईआ। बिन तेरी किरपा करे ना कोए कल्याण, बिप्पता जग ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा नर नरेशा निरगुण धार एकँकार साचा दे धर्म फ़रमान, हुक्म हाकम इक्को इक समझाईआ। सति धर्म कहे तख्त निवासी हुक्मरान, परवरदिगार तेरी शरनाईआ। सतिजुग साचे दर दवारे दे माण, अभिमाण रहिण कोए ना पाईआ। लोकमात तेरी किरपा नाल होवे प्रधान, प्रधानगी इक्को हथ्थ फड़ाईआ। सब नूं मन्नणी पए आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन सीस जगदीस झुकाण, निउं निउं लागण पाईआ। लेखा रहे ना अञ्जील कुरान, काया काअबा देणा प्रगटाईआ। जित्थे महीना होवे ना कोए रमज़ान, किशना शुक्ला पक्ख सूर्या चन्द ना कोए बदलाईआ। इक्को जोती नूर दीपक जगे महान, जलवागर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म वरते दो जहान, एका दूआ दूआ एका एकँकार इक्को रंग रंगाईआ।

६७८
१६

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ भगवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म सुण अगम्मी फ़रमान, अगम्म दयां जणाईआ। सचखण्ड निवासी हो श्री भगवान, तख्त निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां पावां आण, हुक्में अंदर हुक्म बंधाईआ। साचा नाम करां प्रधान, सच दवारयों आप प्रगटाईआ। जीव जंत सारे मिल के ढोला गाण, देवत सुर खुशी मनाईआ। चार कुण्ट करे परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति धर्म सुण, प्रभ दस्से नर नरेश, नर हरि आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द संदेसा भेजां देस परदेस, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाईआ। सब नूं मन्नणा पए पुरख अकाल एक, एकँकार ओट तकाईआ। चरण प्रीती देवां धुर दी टेक, टकयां वाला गुरू ना कोए मनाईआ। परमात्म हो के आत्म करां हेत, घर मेला मेलां सहिज सुभाईआ। सतिजुग साची रुत बसन्त मौले चेत, चेतन सुरती सब दी दयां कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होवे खेत, खेह माटी ख़ाक उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दए खुल्हाईआ। सति धर्म सुण धर्म दी बात, नाम शब्द जणाईआ। शब्द अगम्मी दस्सां गाथ, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। सतिजुग सच

चलावां राथ, रथवाही आपणा हुक्म जणाईआ। लहिणा देणा सब दा देवां मस्तक माथ, पूरब लेखा रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां सिख्या देवां धुर दी दात, नाम निधान आप समझाईआ। झगड़ा रहे ना कोए दीन मज़्ब ज़ात पात, पतन इक्को दयां वखाईआ। सृष्ट सबाई नज़री आवे परम पुरख सच्चा बाप, पिता पूत भगत भगवान मिल के वजे वधाईआ। सति धर्म दी थापणा देवां थाप, कूड़ कुड़यार लेखा दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाईआ। सति धर्म सुण अनोखी गल्ल, धुर फ़रमाने विच्चों जणाईआ। कलयुग कूड़ कपट रहे ना छल, अछल छल्लधारी हो के दयां मिटाईआ। माण वड्याई रहे ना किसे तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ जल, अमृत रस इक्को दयां प्रगटाईआ। साचा धाम इक अटल, प्रभ चरण दरगाह साची इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा इक वखाईआ। सति धर्म कर ध्यान, रीती नीती दयां बदलाईआ। सृष्ट सबाई उपजे इक ज्ञान, गहर गम्भीर हो के दयां समझाईआ। इक्को इष्ट मन्ने सर्ब जहान, दूजा राह ना कोए तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोले सोहले गावण गान, गा गा खुशी मनाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां इच्छया करां परवान, परवाने दीवाने आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग धुर दा राह बण मलाह, लोकमात दए लगाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म सतिजुग बणावां साची बणत, पुरख अकाल दीन दयाल आप समझाईआ। गुरमुख प्रगटावां साचे सन्त, भगत वछल आप हो जाईआ। आत्म गुर परमात्म मेला मेलां नार कन्त, घर सुहञ्जणी सेजा आप सुहाईआ। काया चोली चाढ़ां रंग बसन्त, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मन ममता कूड़ी क्रिया लाहवां चिन्त, हरख़ ग़म ना कोए सताईआ। गढ़ तोड़ां हउमे हंगत, ब्रह्म परदा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाईआ। सति धर्म साचा दस्सां राह, अबिनाशी करता आप जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मन्न सलाह, भगतां सन्तां लवां उठाईआ। शब्द गुरू बणा मलाह, बेड़ा सब दा पार लँघाईआ। चार वरन अठारां बरन इक जपा नाँ, नाम निधाना दयां समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेटां थाउँ थाँ, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप खोज खुजाईआ। झगड़ा रहे ना सूर गाँ, जीव बध ना कोए कराईआ। सारे परम पुरख दी गावण उपमा, उपदेश इक्को सुणे लोकाईआ। जगत कुड़यार पैंडा मुकणा, वेला

वक्त दए गवाहीआ। साहिब सुल्तान पुरख अकाल इक्को उठणा, जिस दा हुक्म मन्नण सारे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दवारा इक खुल्हाईआ। सति धर्म साचा वज्जे नाम नगारा, नव नौ चार दयां सुणाईआ। ग़फ्लत रहे ना विच संसारा, बेदार सब नूं दयां कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म लावण दृष्टी अंदर नाअरा, सृष्टी ढोला इक्को गाईआ। साचा मन्दिर धुर दा दिसे इक्को गुरूदवारा, जिस गृह बैठा पुरख अकाल सोभा पाईआ। नमों नमों नमस्ते डण्डावत करन निमस्कारा, सीस जगदीश सर्ब झुकाईआ। महल अटल सोहे सच मुनारा, दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग साचा लोकमात लए अवतारा, पुरख अकाल होए सहाईआ। जिस दा वरते सति वरतारा, नाता भगतां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। सति धर्म किरपा करे पतित पुनीत, दुरमति मैल दए धवाईआ। सतिजुग साची चले रीत, रीतीवान इक्को नज़री आईआ। लेखा मुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक साची सिख्या करे पढ़ाईआ। सति सतिवादी चले सतिजुग रीत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। आशा रहे ना मन्दिर मसीत, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे वस्से हरि अनडीठ, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मिल के गाउँदे गीत, तूंही तूंही राग अल्हाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा बणे सांझा मीत, ऊँच नीच इक्को घर वसाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ निरँजण सिँघ, करतार सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग साचा मात लग्गेगा। पुरख अबिनाशी साचे तख्त सजेगा। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, दीपक इक्को जगेगा। विष्न ब्रह्मा शिव होवण दास, गुर अवतार पैगम्बर कोल सजेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड साचे नाम दी पवे रास, गोपी काहन इक्को घर नच्चेगा। हुक्म चले पृथ्मी आकाश, दो जहान सीस जगदीश कदमां उत्ते सुटेगा। लख चुरासी अंदर करे वास, घट निवासी हर हिरदे अंदर वसेगा। सब दी मंज़ल पूरी करे वाट, महल अटल चढ़ के आत्म मल्ल के हस्सेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारे आपे वसेगा। सति धर्म सतिजुग सच मात प्रगटावांगा। कलयुग कूड़ा अन्त मुकावांगा। निरगुण नूर जोत रुशनावांगा। शब्दी डंका इक वजावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड आप उठावांगा। लोआं पुरीआं हुक्म मनावांगा। धरत धवल सोभा पावांगा। कीता कौल इकरार तोड़ निभावांगा। हर घट अंदर जावां मौल, मौला आपणा नाम रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा।

साची करनी कार करेगा। श्री भगवान आत्म सब दी वरेगा। काया मन्दिर अंदर निरगुण धार हो के वड़ेगा। सच दस्म दवारी कर के पार, महल अटल आपे खड़ेगा। सेज सुहञ्जणी कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार करेगा। साची करनी कार कमावांगा। निरगुण निरवैर रूप वटावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे कहर, सतिजुग साचा चन्द चमकावांगा। चार वरन अठारां बरन इक्को नाम दी दे के लहर, ज़हिर कूड़ा अंदरों बाहर कढावांगा। मन वासना कोई करे ना ग़ैर, ग़ैरत सब दी आपणे विच समावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरतावांगा। साचा हुक्म इक वरताएगा। सो पुरख निरँजण खेल खिलाएगा। हरि पुरख निरँजण वेख वखाएगा। एकँकारा परदा लाहेगा। आदि निरँजण जोत रुशनाएगा। अबिनाशी करता फेरा पाएगा। श्री भगवान हुक्म वरताएगा। पारब्रह्म ब्रह्म समझाएगा। शब्द अनादी सुत उठाएगा। विष्नूं आपणी अक्ख खुल्हाएगा। ब्रह्मा पारब्रह्म ध्याएगा। शंकर निउँ निउँ सीस निवाएगा। त्रैगुण डेरा आपे ढाएगा। पंज तत पकड़ हिलाएगा। निरगुण सरगुण खेल खिलाएगा। माया ममता मोह चुकाएगा। गढ़ हंगता तोड़ तुड़ाएगा। साची संगता मेल मिलाएगा। गुरमुख दूजे दर ना होवे मंगता, इक्को शब्द अमोलक झोली पाएगा। लेखा रहे ना भुक्खा नंगता, मानव ज़ाती इक्को रंग रंगाएगा। सतिजुग जन भगतां साची सिख्या इक समझाएगा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत सूफ़ीआं रूप बणा के सोहँ हँसा, हस्ती हस्ती विच आपणे समाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कंसा, नाम बंसरी इक सुणाएगा। नाम बंसरी इक वजाएगा। दीन दयाल वेख वखाएगा। काल महाकाल हुक्में अंदर फिराएगा। चार कुण्ट दिसे बेहाल, सृष्टी धीर ना कोए धराएगा। सन्त सुहेले लभ्भे लाल, लख चुरासी खोज खुजाएगा। दीपक जोती बाल के बेमिसाल, मिसल अगली आपणे नाल रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा नाम, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाएगा। नाउँ निरँकारा इक दृढ़ावेगा। एकँकारा खेल खिलावेगा। दूजा समझ कोए ना पावेगा। दो जहान सीस निवावेगा। जगदीस हुक्म वरतावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया जाए पीस, सति धर्म आप प्रगटावेगा। पारब्रह्म अबिनाशी करता सब दे वस्से चीत, चितवित ठगौरी ना कोए रखावेगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बणावे प्रीत, प्रीतम हो के हर घट नज़री आवेगा। सति धर्म, जन भगतां काया कर के ठंडी सीत, अमृत मेघ बरसावेगा। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा सदा गीत, पारब्रह्म ब्रह्म घर बह के खुशी मनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त सतिजुग सच चलावे रीत, मन्दिर मसीत लेखा पन्ध मुकावेगा।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग चले सच मरयादा, मरयादा परशोतम आप जणाईआ। जिस दा गोबिन्द शब्द होवे पिता पुरख अकाल होवे दादा, दातार हो के दया कमाईआ। जन भगतां होवे वाधा, सति सति ढोला सारे गाईआ। नाम अगम्मी वज्जे नादा, नौ खण्ड करे शनवाईआ। हँस बुद्धी होवे कागा, कूड़ विष्टा ना कोए फुलाईआ। मिले वड्याई सच साधा, जो साधनां कर के प्रभ नूं रहे ध्याईआ। परवरदिगार नज़री आए सब नूं आका, अकलां तों परे मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी लए कमाईआ। सति धर्म साचा नाम चले अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सब कुछ पुरख अकाल रखे आपणे हथ्थ, मंगते दो जहान अख्वाईआ। भगतां दस्स के धुर दा जस, साचा नाम दए समझाईआ। निज मिलण दी खोल्ह के अक्ख, अक्खरां तों परे मेला लए मिलाईआ। भेद खुल्हा के सति सच, सच धर्म दए दृढ़ाईआ। चार वरनां दे के ब्रह्म मति, विद्या इक्को इक वखाईआ। नाम निधान सब ने लैणा रट, परमात्म आत्म राग अलाईआ। जो वसणहारा घट घट, लख चुरासी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं करे आपणे वस, बस्तीआं दा वास्ता रहिण कोए ना पाईआ।

९८२
१६

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग सच्चा मात सुहावेगा। जीव जंत सर्ब समझावेगा। मणीआ मंत नाम दृढ़ावेगा। साध सन्त आप प्रगटावेगा। बोध अगाध पंडत अख्वावेगा। हँ ब्रह्म भेव चुकावेगा। साचा धर्म इक दरसवेगा। निहकर्मी कर्म कमावेगा। वरनी बरनी डेरा ढावेगा। साचे चरणी सीस सर्ब निवावेगा। धवल धरनी मात उठावेगा। प्रभ करनी कार कमावेगा। सति सच दा कर प्रचार, पर्चा सब दे अगे पावेगा। मानस जन्म ना होवे कोए खुआर, खुआरी सब दी मेट मिटावेगा। इक्को इष्ट दस्स पुरख अकाल, अकल कलधारी नाल जुड़ावेगा। लेखे लाए सब दी घाल, मज़दूरी सब दी झोली पावेगा। चार वरनां इक्को धर्मसाल, धर्म दवारा इक प्रगटावेगा। भगत सुहेले गुरमुख बणा के लाल, रंग गुलाला आप चढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी विच्चों लए भाल, भरम दा गढ़ आप तुड़ावेगा।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ कुलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अर्म्मतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग ज़रूर मात आवेगा। सर्ब कला भरपूर, समरथ खेल खिलावेगा। नाता कलयुग तोड़ के कूड़, कुड़यारां डेरा ढावेगा। जो प्रभ भगती दे होए मज़दूर, तिन्हां दी मज़दूरी सबूरी विच लेखे लावेगा। मनुआ पावे ना कोए फ़तूर, फ़तिह डंका इक वजावेगा। शाह सुल्तानां तोड़ के गढ़ ग़रूर, पल्लू आपणा नाम फड़ावेगा। लेखा मुका के नेड़ दूर, दर घर साचा इक वसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम खुमारी दे सरूर, सर्ब दी चिन्ता दूर करावेगा। सति धर्म, सतिजुग होवे लोकमात प्रकाश, प्रकाशत करे सर्ब लोकाईआ। हुक्में अंदर पुरख अबिनाश, धुर दा शब्द दए समझाईआ। जन भगतां बण के दास, सेवक सेवा विच समाईआ। पूरा कर के घाट, लहिणा दए मुकाईआ। मेट अन्धेरी रात, रतन नूर करे रुशनाईआ। चुरासी विच्चों कर आज़ाद, फाँसी विच्चों फ़ैसला दए सुणाईआ। बणा के धुर दे साध, सदा चरणां विच टिकाईआ। सुणा के सच्चा नाद, अनादी धुन दए उपजाईआ। खुल्हा के नेत्र जाग, निंद्रा दए मिटाईआ। बुझा के अग्नी आग, सांतक सति दए वरताईआ। जगा के जोत चिराग, नूर करे रुशनाईआ। जिस रचना रची आदि, अन्त ओहो वेखे बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ कर बरबाद, सतिजुग साचा दए वसाईआ। पूरब लेखा सब दा रखे याद, गुर अवतार पैगम्बरां कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे नाम दी दए इक आवाज़, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। सति धर्म सतिजुग सच्चा दस्से इक्को नाअरा, नर नरायण आप लगाईआ। जन भगतां लग्गे प्यारा, प्रेमी हो के ढोला गाईआ। धुर दा शब्द साची सेवा करे बण के सेवादारा, सेवक हो के आपणी कार कमाईआ। गुरमुख आत्म नूं रहिण ना देवे कँवारा, परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। घर मन्दिर ठाकर वखाए गुरूदवारा, घर विच घर परदा दए उठाईआ। इक्को मिले मीत मुरारा, मित्रां दा मित्र धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सतिजुग साची बन्न्हे धारा, धरनी धवल उपर देवे माण वड्याईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म सतिजुग साचा मात जाए लग्ग, जगत विकार लग्गा बध्धा रहिण कोए ना पाईआ। मोह विकार तृष्ना बुझे अग्ग, सांतक सति दए कराईआ। सन्त सुहेले सज्जण साध सद्द, मिल के खुशी मनाईआ। सब नूं काया काअबे करना

पए हज्ज, मन्दिर धर्म दवारा दए वखाईआ। झगड़ा रहे ना अठ्ठ सठ्ठ, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। इक्को ढोला सारे गावण छन्द, सोहँ सो राग अलाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दना कर के मिले वड्याईआ। अन्तर आत्म मिले अनन्द, दु:ख रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पूरा करे पन्ध, सफ़रीआं सफ़र दए खपाईआ। सति धर्म, सतिजुग धरनी उत्ते जावे आ, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। भाग लगावे थल अस्गाह, टिल्ले चोटी वज्जे वधाईआ। सारे गावण परम पुरख दा नाँ, नाउँ निरँकारा इक ध्याईआ। याद रखण साह साह, स्वास स्वास ना कोए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए प्रगटाईआ। साचा मार्ग लग्गे मात धरनी, धवल सतिजुग नाल सुहाईआ। पुरख अकाल दी इक्को मिले सब नूं सरन सरनी, सरनागत इक वखाईआ। मेहरवान मेहर करे तारन तरनी, हरिजन तारे थाउँ थाँईंआ। लेखा मुकाए वरनी बरनी, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई दस्से इक्को सरनी, सरनागत सब नूं आप समझाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ रतन सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, किरपा करे विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे दए माण वड्याईआ। नाम भण्डारा दे के दान, पदार्थ आपणा इक वरताईआ। डंका वजा के दो जहान, जहालत कूड़ी दए कढाहीआ। धुर संदेसा दे पैग़ाम, कायनात दए समझाईआ। प्रभ नूं मिलणा होए आसान, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। इक्को चरण करनी पए प्रणाम, सजदा इक्को इक दरसाईआ। इक्को लभ्भणा पए राम, जो हर घट बैठा डेरा लाईआ। इक्को खोजणा पए काहन, जो नाम बंसरी धुन आत्मक राग सुणाईआ। इक्को लभ्भणा पए इमाम, जो मालक ख़लक खुदा नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्चा होवे प्रगट, पारब्रह्म दए वड्याईआ। होए प्यार हर घट, लख चुरासी खुशी मनाईआ। फिरे दरोही तीर्थ तट, अठ्ठ सठ्ठ नीर वहाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मठ्ठ, शिवदवाले पैंडा दर दर मुकाईआ। इक्को नाम प्रभ दा सारे लैण रट, रट्टा दीन मज़्हब चुकाईआ। साचा लाहा सति दरबार सति सतिवादी पुरुष लैण खट्ट, मूर्ख मुग्धां हथ्थ किछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम तेरी वार, करे खेल निरगुण धार, स्वांगी हो के स्वांग वरताईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म सतिजुग साची मिले दात, हरि दाता आप वरताईआ। चार वरनां बणे इक जमात, इक्को होवे सच पढ़ाईआ। इक्को मिले सच ख़ताब, रुतबा इक्को दए वखाईआ। इक्को नज़री आए सच जनाब, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। साचे नाउँ दा होवे प्रताप, पुरख अकाल ढोला सारे गाईआ। इक्को पूजा इक्को रह जाए पाठ, इक्को शब्द होए शनवाईआ। इक्को नज़री आवे तीर्थ ताट, तट किनारा इक्को दए समझाईआ। इक्को मंज़ल मुके वाट, पाँधी इक दवारे बह के सोभा पाईआ। इक्को दिसे सांझी सब दी ज़ात, आत्म रूप नजरी आईआ। नाम निधान गावण गाथ, सोहँ ढोला सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्ची मिले वस्त, वस्तूआं दए वरताईआ। जिस दे नाल खुमारी करे मस्त, साचे नाम दी वज्जदी रहे वधाईआ। लेखा मुकावे फर्श अर्श, अर्शी प्रीतम दए मिलाईआ। सच दवारे हुन्दा रहे दरस, दरस दीदार विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के करे तरस, रहमत आपणी नाल तराईआ। सति धर्म सतिजुग दा साचा होवे रुतबा, मिले माण वड्याईआ। जिस नूं सीस झुकावे दुर्गा, सो साहिब धुर फ़रमान सुणाईआ। जिस दा हुक्म कदे ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर इक्को होवे धुर दा, सचखण्ड दवारे बह के सोभा पाईआ। शब्द संदेसा देवे आपणी सुर दा, सुरती सुत्ती लए जगाईआ। लहिणा देणा देणा आनंद पुर दा, लोआं पुरीआं तों बाहर लेखा आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग आदि खेल करे हुक्में अंदर शुरु दा, शरअ दा शायर शमॢां आपणी ना कोए रुशनाईआ।

६८५
१६

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, पुरख अकाल सतिजुग एका दस्से नाम सलोक, सोलां कलाधारी जिस दा ढोला गाईआ। खुश होवण चौदां लोक, चौदां तबक कदमां विच सजदा करके खुशी मनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा रखे साची ओट, ओड़क पारब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। भेव अभेद खोलॢ के चार वरनां दस्से इक्को गोत, पंज तत काया माटी वजदी रहे वधाईआ। सच दुआर एकँकार निर्मल धार करे प्रगट जोत, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। शब्द अनादी सतिगुर लावे चोट, चोटी चढ़ के चोर यार

अंदरों दए भजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा मात प्रगटाईआ। सति धर्म सतिजुग साचा मात जाए जम्म, जमां दा डर रहे ना राईआ। सतिवादी हो के करे आपणा कम्म, निहकर्मी बण के खुशी मनाईआ। जन भगतां लेखा जाणे दमो दम, ज़ामन हो के दामन लए फड़ाईआ। हरख सोग रहे ना कोई ग़म, खुशी अंदर खुशी रुची अंदर रुची सच्ची दए वखाईआ। मिले वड्याई वजूद तन, तामस तृष्ना रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी सुणाए बिना कन्न, धुन धुन विच धुन आपणी दए प्रगटाईआ। सति धर्म, कलयुग सतिजुग करे बदली, बदला परम पुरख चुकाईआ। सचखण्ड निवासी सदा अदली, इन्साफ़ करे नाल लोकाईआ। रहिण ना देवे अन्धेर गर्दी सारयां दे घर घर दी, गृह गृह खोज खुजाईआ। धार चले इक्को नरायण नर दी, नर निरँकार हुक्म धुर दा दए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल जाणे चोटी जड़ दी, परदा ओहला दए उठाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे इक्को गावण गाथ, गहर गम्भीर दए समझाईआ। सब दा उदे होवे भाग मस्तक माथ, पूरब जन्म लेखा वेख वखाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीन दयाल दीनां आपणे गले लगाईआ। सच दुआर

९८६ मंज़ल पौड़ी चाढ़े घाट, घाटा पिछला देण कोए ना पाईआ। जिस दा लेखा चार जुग लिखदे रहे नाल कलम दवात, कलमां ९८६

१९ दा मालक ख़ालक आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नूर ज़हूर चमके इक्को आफ्ताब, मशरक मग़रब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। १९

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मार्ग दए समझाईआ। सति धर्म सतिजुग लोकमात आवे भज्जा, भजन बन्दगी आपणे नाल ल्याईआ। जन भगतां दस्त मिला के सज्जा, सज्जण हो के जोड़ जुड़ाईआ। सब ने चलणा परम पुरख दी रज़ा, मन वासना ना कोए हल्काईआ। लख चुरासी विच फेर देवे ना कोई सज़ा, मात गर्भ अग्नी तत ना कोए तपाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड दुआर चरण कँवल देवे साची जग्ा, भूमिका इक्को इक सुहाईआ। जिस दवारे नाउँ निरँकारा अगम्मी नाद वज्जा, बाकी धुन सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा देवे साचा वर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। सति धर्म सतिजुग सच होवे प्रधान, प्रधानगी प्रभ इक्को हथ्थ रखाईआ। माण रहिणा नहीं सीता राम, कृष्न काहन ना कोए वड्याईआ। जगत रहिणा नहीं अञ्जील कुरान, ईसा मूसा करे ना कोए पढ़ाईआ। लेखा जाणे नानक गोबिन्द साहिब सुल्तान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो सच दवारे होवे हुक्मरान, हाकम हो के आपणा हुक्म मनाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया मेटे विच्चों जहान, जहालत सच अदालत विच रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे गुण निधान, सच झुलाए इक निशान, निशाने

कूड़े दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे होवे आप मेहरवान, मेहरवान मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ हीरा नंद दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग साचा नाम सोहँ सो, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, हरि पुरख निरँजण हो के आपे सेव कमाईआ। अवरी धार रहे ना दो, एकँकारा हो के दयां समझाईआ। सच प्रकाश करां लो, आदि निरँजण हो के जोती नूर करां रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो के कूड़ा तोड़ां मोह, मुहब्बत इक्को नाल बंधाईआ। श्री भगवान हो के किसे नाल ना करां धरोह, ध्रू प्रहलाद वांग भगत लवां प्रगटाईआ। पारब्रह्म हो के प्रेम नाल जावां छोह, अंदर ओहला परदा ना कोए रखाईआ। शब्दी धार संसार विच्चों करां निर्मोह, मुहब्बत इक्को घर बणाईआ। पंच विकारा गुरमुखां अंदर रहिण ना देवां गरोह, हुक्में अंदर बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवां माण वड्याईआ।
६८७ सति धर्म, सतिजुग बख्शां साची धीर, धर्म इक्को इक वखाईआ। शक्त रहे ना किसे पीर फ़कीर, फिकरा ना कोए दृढ़ाईआ। ६८७
१६ माण दिसे ना किसे शीर, शीर आपणा नाम समझाईआ। सब दी बदल जाए तकदीर, तकरीर इक्को दयां सुणाईआ। दरस १६
वखा के बेनज़ीर, नज़र दयां बदलाईआ। घर वखावां अगम्म अख़ीर, मन्दिर धुर दा इक प्रगटाईआ। जित्थे हउमे हंगता रहे कोए ना पीड़, दुःख दर्द नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दए वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्चा खुशीआं नाल आवे हस्सदा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ देवत सुर गण गंधर्ब इक्को ढोला गावे जस दा, सोहँ सो साची करे पढ़ाईआ। इशारा करदा आवे आपणी अगम्मी अक्ख दा, पलक विच्चों पलक पलक बदलाईआ। गीत गाओ सारे पुरख अकाल दे जस दा, वेद पुराणां तों परे जिस दी पढ़ाईआ। जो मालक ख़ालक प्रितपालक होवे सब दा, लख चुरासी मन्दिर वड़ के डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल कमलापति दा, पतिपरसेश्वर हो के आपणी दया कमाईआ। सति धर्म, सतिजुग दी सुहञ्जणी होवे रुत्त, रुतड़ी प्रभ आपणे नाल महकाईआ। सन्त सुहेले बणा के आपणे सुत, सुत्यां लए उठाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। जन्म कर्म दी तृष्ना मिटा के भुक्ख, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। सफ़ल कराए जननी कुक्ख, दए वड्याई जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा वखाए आपणे

नाम दी सुच, संजम सच वाला समझाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा श्री भगवान आपणी हथ्थीं लावे बूटा, बटवारा करन कोए ना पाईआ। साचे प्रेम दा देवे झूटा, दो जहान झूला इक वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मूधा करके ठूठा, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। सतिजुग साचे अमृत नाम देवे अनूठा, अनरस आपणा दए चखाईआ। जन भगत बणा के साचा पूता, सपूत आपणे रंग रंगाईआ। वज्जे डंका चारे कूटा, एका नाम होवे शनवाईआ। जन भगत साचा सन्त गुरमुख गुरसिख माया ममता मोह रहे कोई ना लूठा, विकार विच हँकार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा घर घर गली कूचा, जगत चिक्कड़ विच्चों गुरमुख गुर गुर बाहर कढाहीआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ पिण्ड सरहाली कलां ज़िला अमृतसर फ़ौजा सिँघ दे गृह ✪

सति धर्म, सतिजुग ऊँचां नीचां चढ़े इक्को रंग, पुरख अकाल दील दयाल आप चढ़ाईआ। चार वरन सांझा वज्जे नाम मृदंग, हरि हरि नाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अमृत आत्म साची पावे ठंड, धुर दा झिरना आप झिराईआ। आत्म परमात्म वसे सदा संग, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। साची जोती नूर चढ़े चन्द, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। भरमां रहिण ना देवे कंध, सहिँसा रोग चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे मंग, आसा सब दी आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धार बंधाईआ। सतिजुग साचे मिले सच्चा जाम, अमृत रस प्रभ आप प्याईआ। मानुख ज़ाती इक्को मिले सच्चा राम, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक वखाए धुर दा धाम, दरगाह साची सोभा पाईआ। इक्को नगर खेड़ा ग्राम, हरिजन साचे मिले माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना विच जहान, माया ममता मोह मिटाईआ। मन वासना मिले ना कोए शैतान, शरअ शरीअत लेखा दए मुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा एका ढोला गावण श्री भगवान, सच जैकारा इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, लोकमात मिले वड्याईआ। सति धर्म, सतिजुग लाए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। सृष्ट सबाई लेख लिखावे कमलापात, साहिब स्वामी होए सहाईआ। जन भगतां मेला मेले धुर दा बण के साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्से के गाथ, सोहँ ढोला दए समझाईआ। अंदरों मेट अन्धेरी रात, सतिजुग चन्द होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया तोड़े नात, घर मन्दिर इक वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग

साचा होवे नवेला, सति सतिवादी आप कराईआ। किरपा करे सज्जण सुहेला, शाह पातशाह सच्चा शहिशाहीआ। जो आदि जुगादि वसे रंग नवेला, सच मन्दिर बैठा सोभा पाईआ। कलयुग अन्त लहिणा देणा चुकाए गुरू गुर चेला, चेला गुर जोती शब्दी धार खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद मात प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग मिले वड्याई चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहिण कोए ना पाईआ। परम पुरख प्रभ देवे साची सरन, चरण दवारा इक सरनाईआ। जित्थे मर के फेर ना होवे मरन, जन्म विच जन्म ना कोए रखाईआ। झगड़ा रहे कोई ना कर्म, नाता कूड़ दए तुड़ाईआ। पुरख अकाल दील दयाल साची बख्शे इक्को सरन, सरनगति इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा रखे इक्को आत्म परमात्म वरन, बरन दा झगड़ा दए मुकाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड चोला कला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग प्रभ साची देवे टेक, घट निवासी पुरख अबिनाशी पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। मन वासना सब दी बुद्धी करे बिबेक, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नाद सुणाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार हँकार बदल के रेख, सच सुच आत्म परमात्म नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। नाम संदेसा नर निरँकारा इके घल्ले सत्त दीप नौं खण्ड देस परदेस, दो जहानां मर्द मर्दाना इक्को हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी राह वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा लोकमात जावे आ, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता सब दा बणे मलाह, परवरदिगार सांझा यार जलवागर इक्को नज़री आईआ। नाम संदेसा नर नरेशा धुर दी धार दए समझा, बोध अगाध अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन इक अकल्ला बणे मात मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सति दवारा आत्म परमात्म इक्को दए वखा, काया माटी हाटी साचे मन्दिर अंदर कर रुशनाईआ। धुर दा रस अमृत जाम निझर दए प्या, बूंद स्वांती अमिओं रस आप बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धीर बंधाईआ। सति धर्म, सतिजुग लोकमात आवे ज़रूर, समरथ पुरख दए वड्याईआ। जन भगतां आसा मनसा करे पूर, पूरब इच्छया वेख वखाईआ। निरगुण धार प्रगट होए हज़ूर, हाज़र हो के आपणा परदा दए उठाईआ। नाता तोड़ के कुड़ो कूड़, सच सुच दए समझाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़,

नाम धन्दे दए लगाईआ। पन्ध रहे ना नेड़ दूर, काया काअबा साचा मन्दिर इक्को दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब कला भरपूर, जुग चौकड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे पुरख अकाला देवे माण, मेहर नज़र इक उठाईआ। साचा देवे धुर फ़रमान, संदेसा बेपरवाहीआ। जिस नूं जाणे ना जीव जहान, अकल बुद्धी विद्या करे ना कोए लड़ाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले गुरमुख विरले कर परवान, मेहरवान आपणा नाउं दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के धर्म इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। साचा नाम सुणाए बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द कान, आत्मक धुन कर शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। सति धर्म सतिजुग लोकमात जग आउणा, आवण जावण प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। सृष्ट सबाई दृष्टी अंदर इष्टी अंदर इक्को ढोला गाउणा, इक्को नाम मिले वड्याईआ। सति सरूप सति दवारे सब ने दर्शन पाउणा, निज नेत्र लोचन नैण होवे हक रुशनाईआ। सच दवारा एकँकारा सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी इक्को इक सुहाउणा, दूजा दर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मिल के तूंही तूंही राग अलाउणा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। अन्त अख़ीर बेनजीर लाशरीक झोली पाउणा, पिछला लेखा रहे ना राईआ। अगला लेखा धुर दरगाही आप वरताउणा, जिस दे अगे विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाउणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सति धर्म, सतिजुग प्रभ बख्शे इक ज्ञान, इक्को नाम दए समझाईआ। इक्को वखाए धर्म निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। इक्को शब्द गुरू सब नूं करना पए परवान, जो हर घट डेरा लाईआ। इक्को मन्दिर दस्से विच जहान, जिस विच जहालत कदे ना आईआ। जिस नूं बणाए ढाए ना कोए इन्सान, बाडी दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दे अंदर अठ्ठे पहर दिवस रैण शब्द आवे धुनकान, रागां नादां तों बाहर करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारा खोल्हे विच जहान, चार वरनां एका हुक्म मनाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा चले कर्म, पुरख अकाल आप बणाईआ। सृष्ट सबाई इक्को होवे धर्म, ज़ात पात दीन मज़्हब रहिण कोए ना पाईआ। भेव अभेदा खोल्हे सुरती शब्दी ब्रह्म, परदा ओहला दए चुकाईआ। लेखा जाणे काया माटी लख चुरासी चर्म, मानव ज़ाती आपणा रंग रंगाईआ। सच दवारा एकँकारा इक्को बख्शे साची सरन, सरनगति आपणी आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा सोभा पाईआ। सतिजुग साचे आए उत्ते धरनी धरत धवल, धौल हौला भार कराईआ। हर घट अंदर जाए मवल, मौला मिल के खुशी मनाईआ। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवल, अमृत झिरना इक झिराईआ। नूर

अलाही दस्से अवल, आलमीन सर्ब खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे सरनगति इक्को इक सुहाईआ। सति धर्म, सतिजुग सचे मिले वस्त अनमोल, साहिब सतिगुर झोली पाईआ। जिस नूं जगत कंडा सके ना तोल, तराजू विच ना कोए टिकाईआ। विद्या वाला दस्से कोई ना बोल, बिन सतिजुग शब्द समझ कोए ना आईआ। सच दवारा देवे एका खोलू, एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ शब्द सो स्वामी वजाए ढोल, ढोलक छैणे दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। पंडत पांधा रौल पुजारी, रेखा सके ना कोए समझाईआ। सतिजुग ज़रूर आवे वारी, वारता पिछली दए मुकाईआ। कलयुग कूड़ होवे खुआरी, नेत्र रोवे मारे धाईंआ। सदा रहे ना मुहम्मदी यारी, ईसा मूसा लेखा दए मुकाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ी, माया ममता रही साड़ी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। करे खेल अगम्म अपारी, निरगुण दाता शहिनशाहीआ। जगे जोत इक निरँकारी, जोती जोत होवे रुशनाईआ। जो देवणहारा वस्त थारी, नाम अनमोला झोली पाईआ। कागद कलम ना लिखणहारी, शाही चले ना कोए चतुराईआ। जुग चौकड़ी खेल हुंदा रिहा वारो वारी, वाहवा प्रभ दी वज्जदी रहे वधाईआ। सेवा कर गए तेई अवतारी, ईसा मूसा मुहम्मद जोत कर उज्यारी, नानक गोबिन्द एका हुक्म वरताईआ। निहकलंक भेव समझे ना कोए जीव संसारी, सम्बल प्रभ दे मिले मेल हरि बनवारी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूंग्घे सागर हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारी, अलख अगोचर आपणा हुक्म आप वरताईआ। सति धर्म, सतिजुग लहिणा देणा देणा लहिणा लेखा, लेखा प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मिटे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। निरगुण नूर जोत परम पुरख आपणा करे वेसा, दर दरवेशा समझ किसे ना आईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, सन्त सुहेले लए जगाईआ। दो जहानां नज़री आवे नेता, निज नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ। चौधवीं सदी पूरा होवे ठेका, अगे पटा ना कोए बणाईआ। जिस गोबिन्द कीता बंस सरबंस भेंटा, कलयुग उमर गया खपाईआ। चार लख बत्ती हज़ार किसे पूरा होण नहीं देणा नेंदा, नींह सब दी रिहा उखड़ाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार इक अकल्ला परवरदिगार मुकामे हक लाशरीक सब नूं वेंहदा, बिन अक्खां प्रतख रूप गुसाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां पैगम्बरां भगतां सन्तां पूरा दिता नहीं किसे भेता, शब्दी हुक्म अंदर लोकमात निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सेवा गए कमाईआ।

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी गुरनाम कौर दे गृह पिण्ड चोला खुरद ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग साचा चढ़े रंग, सो पुरख निरँजण आप चढ़ाईआ। सति सुहञ्जणी सेज होए पलँघ, हरि पुरख निरँजण आप सुहाईआ। नाउँ निरँकारा वज्जे मृदंग, एकँकारा करे शनवाईआ। सति प्रकाश चढ़े चन्द, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। साचा ढोला उपजे छन्द, श्री भगवान करे जणाईआ। दूई द्वैती कूड़ी क्रिया भरमां ढाहे कंध, अबिनाशी करता हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म मिले सच्चा आनंद, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप उठाईआ। शब्द अगम्मी नाद वज्जे मृदंग, दो जहान हुक्म सुणाईआ। वज्जे वधाई सचखण्ड, मुकामे हक खुशी प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मानण अनन्द, करोड़ तेतीस निउँ निउँ सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खेल वेखण सूरा सरबंग, थिर घर निवासी की की कार वरताईआ। भगत भगवान दा मिल के गावण छन्द, सन्त सुहेले इक्को नाम ध्याईआ। गुरमुख गुर दर्शन मंगण मंग, गुरसिख गुर चरण प्रीत वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता होवे भंग, मोह विकार रहिण ना पाईआ। तृष्ना मिटे कूड़ पखण्ड, गढ़ हँकार दए तुड़ाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को ढोला गावण बत्ती दन्द, सोहला रसना नाल गाईआ। दीन दयाल कृपाल होवे बख्शंद, पुरख अकाल आपणी दया कमाईआ। जन भगतां खुशी करे बन्द बन्द, बन्दगी वाले बन्दे दए प्रगटाईआ। आवण जावण मिटे पन्ध, लख चुरासी नाता दए तुड़ाईआ। सति सतिवादी हो के देवे संग, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा देवे धुर दा वर, बख्शे नाम सच्ची वड्याईआ। सति धर्म, सतिजुग प्रभ बख्शे चरण प्रीत, प्रीतम हो के लवे प्रनाईआ। चार वरनां चले इक्को रीत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पुरख अकाल सीस झुकाईआ। दहि दिशा ढोला गावण इक्को गीत, गोबिन्द गोबिन्द सिफ्त सालाहीआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, सच दवारा इक्को नज़री आईआ। भरम रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच प्रभ दे विच समाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां परखे सब दी नीत, नीतीवान आप हो जाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना बुद्धी रहिण ना देवे पलीत, पतित उधारी पतित पुनीत दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म इक वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग दए वड्याई सति, पुरख पुरखोतम दया कमाईआ। चिन्ता सोग रहे ना हरख, हवस जगत ना कोए वधाईआ। मेहरवान महबूब हो के करे तरस, रहमत विच आपणा रैहम कमाईआ। निरगुण धार हो के सरगुण देवे दरस, जोती जाता डगमगाईआ। धरनी उत्ते चल के आवे मालक अर्श, अर्श फर्श आपणा हुक्म वरताईआ। अमृत मेघ दो जहानां देवे बरस, अग्नी अग्ग रहे ना राईआ। जन भगतां पूरब जन्म दी मेटे भटक, जन्म

विच्चों जन्म आपणे लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी सद सद वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग प्रभ देवे वस्त अगम्म, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जिस नूं जाणे कोई ना जन, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। लेखा रखे वजूद बाहर तन, तत्तां विच बन्द ना कोए कराईआ। भरम ना पाए बुद्धी मन, मनसा ना कोए वखाईआ। करे खेल श्री भगवन, पारब्रह्म आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। साचा देवे धुर दरगाही आपणा धन, नाम ख़ज़ाना इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सन्तोख झोली पाईआ। सति धर्म, सतिजुग प्रभ बख्शे वस्त अथाह, अनगिणत झोली पाईआ। जिस दा लेखा कोई जाणे ना, कलम शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पावे सार थल अस्गाह, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। टिल्ले पर्बत वेखे जा, उजाड़ पहाड़ परदा लाहीआ। समुंद सागर वरोले आ, नाम मधाणा हथ्थ उठाईआ। करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाही कूड़ी देवे बदलाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर रोवे मारे धाह, हाहाकार कर के दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे लोकमात धराए नाँ, धरनी धरत धौल उपर लहिणा दए बणाईआ। सति धर्म सतिजुग आवण होवे जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी तृष्ना मेटे अग्ग, माया ममता ना कोए सताईआ। बिना काअब्यों कराए हज्ज, परदा अंदरों दए उठाईआ। जन भगत सुहेले आपणे दवारे सद्द, सदा आपणा नाम जणाईआ। धुन उपजाए अनहद, अनाहत आपणा राग अलाईआ। कूड़ विकारा अंदरों जावे भज्ज, भजन बन्दगी इक्को दए समझाईआ। मन विकार जाए तज, बुद्धी बिबेक दए बणाईआ। आत्म परमात्म मिल के गावे छन्द, सोहँ ढोला जगत विचोला पुरख अकाल दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा देवे इक आनंद, आनंद आनंद विच्चों प्रगटाईआ।

९९३
१९

✪ ११ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिंघ दे गृह पिण्ड रतो के ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग किरपा करे पुरख अबिनाशा, सो पुरख निरँजण दीन दयाल दया कमाईआ। गुर अवतारां पीरां पैगम्बरां पूरीआं करे आसा, हरि पुरख निरँजण मेहरवान महबूब मुहब्बत विच खेल खिलाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, एकँकार इक अकल्ला निरगुण धार आपणा वेस वटाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म चला के साची गाथा, आदि निरँजण जोती जाता पुरख बिधाता एका नूर डगमगाईआ। सति धर्म लोकमात चलाए साचा, श्री भगवान सच निशान दो जहान इक झुलाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी नाद वजाए आपणा वाजा, अबिनाशी करता करता पुरख धरनी माता आप

दृढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेखे खेल तमाशा, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी फोल फुलाईआ। कूड़ी क्रिया चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मिटे अन्धेरी राता, धुर दा चन्द खण्ड ब्रह्मण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आप करे रुशनाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद चलाए सच्ची गाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द उठे बलवान, पुरख अकाल आप उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे करन ध्यान, नेत्र लोचन नैण अक्ख इक्को ओट रखाईआ। धुर संदेसा देवे दो जहान, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द करे पढ़ाईआ। धरनी धरत धवल वेखे आण, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा फेरा पाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी परदा लाहे जीव जहान, माया ममता कूड़ विकार रहिण ना पाईआ। साचा लेखा देवे आत्म परमात्म ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्मवेता आत्म नेता इक्को नाम दए दृढ़ाईआ। चरण प्रीती बख्शे धुर दा ध्यान, मालक ख़ालक परवरदिगार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धार दए प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द उठे सूरा, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। जोती जलवा देवे नूरा, अन्ध अन्धेरा नज़र कोए ना आईआ। सर्ब कला होवे भरपूरा, पारब्रह्म ब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, काया माटी हाटी अंदर करे सफ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मड़ा, नाम निधाना इक समझाईआ। नाम अगम्मी रंग चाढ़े गूढ़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। साचे सन्तां लथ्थे सगल वसूरा, विख अमृत दए बणाईआ। गुरमुखां नाद देवे अनादी तूरा, तुरीआ पद विच्चों बाहर कढाहीआ। गुरसिखां दरस दिखाए हाज़र हज़ूरा, हज़रत हो के हर हिरदे परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग सच्चा मार्ग लोकमात प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग लोकमात आउणा, पुरख अकाल हुक्म सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने ढोला गाउणा, दो जहानां वज्जदी रहे वधाईआ। देवे सुनेहड़ा पवणां, पवण पवणां विच समाईआ। चौदां लोक चौदां तबक इक ध्यान लगाउणा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जामा पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार पाउणा, पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, कल आपणी आप प्रगटाईआ। सति धर्म, शब्द गुरू उठे इक इकल्ला, अकल कलधारी आप उठाईआ। दो जहान पूरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश पाताल धरनी धरत धवल वेखे आपणा इक महल्ला, चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण सरगुण धार बचया रहिण कोए ना पाईआ। करे खेल आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी अछल अछल्ला, वल छल धारी आपणी कार कमाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर आपणे हुक्म अंदर घल्ला, नाम संदेशा नर नरेशा धुर दी बांग सब नूं रिहा सुणाईआ।

सो अन्त कन्त भगवन्त लख चुरासी दीन दुनी पकड़े पल्ला, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज चारे खाणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम दूई द्वैती मेटे सल्ला, सच सुच लोकमात दए प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, आदि जुगादी इक अखवाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहारा दान, नित नवित झोली सर्ब भराइंदा। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे गाण, रागां नादां विच आपणा नाम समझाइंदा। सो खेले खेल दो जहान, जीव जंत साध सन्त घट निवासी पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे विच जहान, सतिजुग साचा सति करे प्रधान, इक्को नाम चार वरन गाण, गा गा ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा हक मुकाम, सचखण्ड दुआर इक्को इक समझाइंदा। सति धर्म, सतिगुर शब्द वेखे चार कुण्ट, दहि दिशा फोल फुलाईआ। देवे हुक्म वासी बैकुण्ठ, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा अगणत, कलम शाही चले ना कोए चतुराईआ। सो स्वामी सतिजुग साची बणाए बणत, घड़न भन्नणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। भगत सुहेले प्रगटावे उपजावे साचे सन्त, सतिगुर हो के अन्तरगत आपणी इक समझाईआ। इक्को देवे नाम निधाना निरंतर अन्तर मंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग सच्चा नाम इक वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे शब्द सतिगुर दस्से साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाईआ। जो वसे हर घट थाउँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। जिस दा ना कोई पिता ना कोई माउँ, जण जणेंदी नज़र कोए ना आईआ। सो खेले खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त सच अदालत शब्दी करे न्याउँ, हाकम हो के हुक्म इक सुणाईआ। दरगाह साची सच दवारे जन भगतां ठांडा देवें थाउँ, धर्म दवारा इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सति दए प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द आवे स्वामी, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। हर घट हो के अन्तरजामी, परदा ओहला दए चुकाईआ। धुर दा शब्द गावे अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। हुक्म वरते चारे खाणी, चारे कुण्ट करे शनवाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम करे आप मेहरवानी, मेहरवान हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द सब दा दिसे रफ़ीक, प्यार मुहब्बत विच समाईआ। जगत वासना मन बणे ना कोए फ़रीक, फ़िकरा जगत ना कोए बणाईआ। सदी चौधवीं अन्त करे तस्दीक, शहादत गोबिन्द नाम इक भुगताईआ। जिस नूं पैगम्बर अवतार रहे उडीक, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण

रख के बैठे उडीक, आसा विच आसा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग सच्चा राह वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच शब्द सतिगुर जावे आ, आमद विच आपणा हुक्म फिराईआ। सृष्ट सबाई सोई सुरती दए जगा, धुन आत्मक राग इक्को इक सुणाईआ। अमृत आत्म निझर झिरना जाम दए प्या, बूँद स्वांती सच टपकाईआ। निरगुण जोती जोत करे रुशना, काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया दए चुका, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। आत्म सेज सुहञ्जणी दए सुहा, परमात्म हो के डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारा आप प्रगटाईआ। सति धर्म सतिगुर चले साची धारा, धरनी वज्जे सच वधाईआ। किरपा करे एकँकारा, अकल कलधारी वेख वखाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, परम पुरख बेपरवाहीआ। सो खेले खेल विच संसारा, वड संसारी फेरा पाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम ना लिखणहारा, गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा लोकमात लए प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा आवे लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। कूड़ी मेट अन्धेरी रात, रैण भिन्नड़ी दए बदलाईआ।
६६६ भगत सुहेले लभ्भे सज्जण साक, गुरमुख मिल मिल खुशी वखाईआ। सतिजुग साचे सन्तां खोल्हे बन्द ताक, बजर कपाटी ६६६
१९ कुण्डा लाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करे भविक्ख वाक, झगड़ा मुके ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। ईसा १९
मूसा मुहम्मद लहिणा देणा करे बेबाक, सदी चौधवीं झोली पाईआ। सच दवारे सब दा कर इतफ़ाक, नाम संदेसा इक समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मन्नण धुर दी बात, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म मिल के गाओ साची गाथ, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन ऊँच नीच राउ रंक ज़ात पात राज राजान शाह सुल्तान बणो इक जमात, सच दवारे बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, वारता अगली दए समझाईआ। सति धर्म, सतिजुग शब्द सतिगुर देणा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। भय भउ चकाउणा डर, भयानक विच ना कोए रखाईआ। इक वखाउणा साचा घर, सचखण्ड वजदी रहे वधाईआ। जित्थे वसे नरायण नर, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। दीपक जोत दिता धर, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। भगत सुहेले लए फड़, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत जो बन्न्हे लड़, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सो पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग साचा लोकमात देवे धर, धर्म दवारा इक्को दए सुहाईआ। इक्को इष्ट मन्ने नारी नर, नर नरायण सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जावे हर, हिरदे सब दे करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

कलयुग विच सतिजुग वसे घर, थिर घर बैठा थिर दरबारा दए वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग नाल कौल इकरार, त्रेता द्वापर कलयुग समझ किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लए अवतार, कल कल्की फेरा पाईआ। जगे जोत अगम्म अपार, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, जिस दी दिशा वण्ड ना कोए समझाईआ। शब्द डंका वजावे विच संसार, राउ रंकां दीनां अनाथां आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे पार, पारब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दए सिखाल, सिख्या देवे थाउँ थाँईंआ। झगड़ा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। चार वरनां अठारां बरनां क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को होवे धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ, दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी प्रीती रखे आपणे नाल, मन नालिश दी आदत दए बदलाईआ। सति धर्म, सतिगुर शब्द सदा होवे खुशहाल, खुशीआं विच समां दए बदलाईआ। पहलों कलयुग पासों पुछे अहिवाल, प्रेम प्यार नाल संग रलाईआ। उठ मेरे लाडले लाल, मैनूं दे समझाईआ। दीन दुनी दा की हाल, परदा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सति धर्म, कलयुग श्री भगवान दा छोटा सुत, चौथा युग नाउं धराईआ। कुछ ओस कोलें पुछ, तैनूं सच दए समझाईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जिस आपणी मौली रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म देवे फ़रमान, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। कलयुग नेड़े आ बाल नादान, दयां माण वड्याईआ। कुछ लेखा दस्स जीव जहान, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग प्रभ चरण कर ध्यान, खुशीआं विच ढोले गाईआ। प्रभू मैनूं तेरे उत्ते माण, तूं मेरा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे मेरे भगवन्त, मैं सच दयां दृढ़ाईआ। मैं साबत रहिण नहीं दिता कोई कलयुग सन्त, माया विच सारे दिते फसाईआ। सुहागण रहिण नहीं दिती साची नार कोई कन्त, कन्त कन्तूहल सेज ना कोए हंढाहीआ। वैरागी बैरागी त्यागी वसण नहीं दिता तेरा मणीआं मंत, मन वासना सारी सृष्टी कीती हल्काईआ। झगड़ा पा के जीव जंत, साध सन्त दिते लड़ाईआ। गढ़ बणा के हउमे हंगत, ब्रह्म पारब्रह्म दिता भुलाईआ। कोई रहिण नहीं दिता बोध अगाधा पंडत, माया ममता विच होए हल्काईआ। साचा मेला रहिण नहीं दिता विच संगत, गुरमुख गुरमुख मिल के प्रभ दा शुकर ना कोए मनाईआ। झगड़ा पा के अंदर जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज तेरे दर तों दिती भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं दे माण वड्याईआ। कलयुग कहे प्रभ मैं तेरा नन्हां बच्चा बाल नादान, चौथा युग नज़री आईआ। मैं शरअ कर

शैतान, शरीअत विच सारे दिते भुलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए हैरान, अञ्जील कुरान नेत्र नीर वहावे मारे धाईंआ। साचा रिहा ना किसे धर्म ईमान, कामल मुर्शद नजर कोए ना आईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर बैठे पंज चोर रहे सताईआ। तेरा नाम संदेसा सुणे ना कोए फ़रमान, एहो मेरी वड्डी वड्याईआ। जूठ झूठ चला के दुकान, ज्ञानी ध्यानी विद्वानी विच दिते फसाईआ। कुछ प्रभू मैनूं दे इनाम, थोड़े समें विच बहुती सेवा कर वखाईआ। काम क्रोध दे बणा के सारे गुलाम, नौ दवारयां विच चक्र दिते लगाईआ। तेरा दरस मूल ना पाण, सनमुख हो के सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर कर परवान, धुर दरबारी तेरी साची सेव कमाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग शाबास, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। तूं आपणी पूरी कीती आस, जगत आसा आपणे नाल मिलाईआ। एह कारज तेरा ख़ास, जो सदी चौधवीं पूरा देणा कराईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, नूरी चन्द देणा छुपाईआ। अगे लेखा जाणे पुरख अबिनाश, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। तैनूं दे के सच प्रेम दी दात, भण्डारा ख़ाली दए भराईआ। तेरा गोबिन्द नाल नात, रिश्ता फ़रिश्तयां तों दए तुड़ाईआ। ओस दी रखणी याद, जो याददाशत विच रखे लोकाईआ। जिस ने सतिजुग साचा करना आबाद, आबादी भगतां दी नाल वधाईआ। जिस नूं समझे ना कोए दिमाग़, बुद्धी विचार ना कोए

वखाईआ। जन्म मरन वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब तों करना आज़ाद, पुरख अकाल इक्को इष्ट देणा वखाईआ। जेहड़ा फ़रमान बिना इस्लाम नानक निरबाण, दस्सया विच बग़दाद, जिस नूं लेखा लिख के दस्से ना कोई कलम दवात, उह आउणी अगम्मी आवाज़, जिस अंदरों खोल्ह्णा राज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। कलयुग तेरा अन्त, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। सतिजुग साचे साचा मिलणा मंत, मंत्र आपणा नाम देणा जणाईआ। आत्म परमात्म नाता जुड़ना नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख थोड़े लभ्भणे सन्त, सति सतिवादी मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची धार दए उपजाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम चुकणा लहिणा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे देणा देणा, जुग चौकड़ी प्रभ दी रीती चली आईआ। तूं वाहवा सोहणा मन्नया कहिणा, सेवा सच कमाईआ। तिन्न युग प्रभ चरणां विच बहणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। कलयुग, पुरख अकाल आदि जुगादि दा अदली, अदालत सच लगाईआ। शब्दी हुक्म करे बदली, बदला चुक्के जगत लोकाईआ। पन्ध मुकाया मंज़लो मंज़ली, वेला अन्तिम गया आईआ। जिस दी धार विच लोकमात संसार ओसे ने सद लई, सद्दा दे

के ल्या बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म प्रभ दा हुक्म चले जुग चार, चौकड़ी मेट ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम लए अवतार, जोती जाता फेरा पाईआ। शब्दी डंका वज्जे विच संसार, चारों कुण्ट लए उठाईआ। सति धर्म दा इक विहार, विहार अंदर दए दरसाईआ। इक्को नाम शब्द जैकार, ढोला इक्को इक सुणाईआ। एका नाम वणज कराए वापार, वस्त इक्को हट्ट खुल्हाईआ। भगत भगवान दा मार्ग दस्स सुखाल, शाह कंगाल दए वड्याईआ। जिन्हां होए सहाई दीनां बंधप दीन दयाल, दीनन आपणी गोद बहाईआ। समरथ स्वामी बण रखवाल, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सति धर्म करे बहाल, बिहबल करे सर्ब लोकाईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ बली सिँघ दे गृह पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग दा मालक होवे प्रभ आप, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ। चार कुण्ट इक्को दस्से जाप, जगजीवण दाता आपणा नाउँ प्रगटाईआ। आत्म परमात्म देवे धुर दा साथ, निरगुण निरगुण सगला संग निभाईआ। शब्द अगम्मी घर घर वजाए नाद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दवारा इक प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग दा मालक होवे इक, एकँकार नज़री आईआ। वस्त अमोलक पावे भिक्ख, नाम भण्डारा इक वरताईआ। भगत सुहेले सज्जण बणा के धुर दे सिख, सिख्या साख्यात समझाईआ। अगला मार्ग देवे लिख, भविख्त दे दृढ़ाईआ। साचे सन्तां दर्शन देवे नित नवित, आपणा फेरा पाईआ। ठाकर हो के वसे चित, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वसाईआ। सति धर्म, सतिजुग दा मालक होवे पुरख समरथ, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। चार वरन अठारां बरन दस्से इक्को गथ, सोहला ढोला सतिगुर आप सुणाईआ। नाम प्रीती धुर दा जोड़े नत्त, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। धीरज देवे सन्तोख सति, धर्म दया आप कमाईआ। घर घर उपजे ब्रह्म मत, मन वासना होए ना कोए हल्काईआ। निज नेत्र लोचन खोल्हे अक्ख, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। अमृत अमिउँ दे के रस, रस्ता धुर दा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान दा सांझा कर के जस, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। सति धर्म, सतिजुग दा मालक होवे इक इकल्ला,

आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणाए इक महल्ला, गली कूचा वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पावे सार जलां थलां, डूँग्घे सागर फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म सब नूं फड़ाए शब्दी पल्ला, जगत तन्द ना कोए बंधाईआ। धाम वखाए निहचल इक अटल्ला, सच महल्ला सोभा पाईआ। जित्थे आदि जुगादी दीपक बला, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्दी धार आपे रला, रूप रंग रेख वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लोकमात लए प्रगटाईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग सति सतिवादी लग्गे जड़, करनी दा करता आप लगाईआ। इक्को नाउँ सृष्टी जाए पढ़, इष्ट ध्यान इक्को इक लगाईआ। इक्को मंज़ल जावण चढ़, पुरख अकाल मिले सरनाईआ। इक्को प्रकाश होवे घर घर, हर हिरदे वज्जे नाम वधाईआ। इक्को नहाउण सरोवर सर, सतिगुर चरण धूढ़ दुरमति मैल धवाईआ। इक्को कन्त सुहागी लैणा वर, आत्म परमात्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्को सुहञ्जणा होवे दर, हरि भगत दवारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप
1000 १६ हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचे सोहे इक दरबार, दीन दयाल आप सुहाईआ। 1000 १६
वड्याई मिले वरन चार, अठारां बरन खुशी मनाईआ। रसना जेहवा गावे इक जैकार, ढोला धुर दा राग अलाईआ। वस्त अमोलक सर्ब मिले भण्डार, दर ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। ऊँच नीच दा रहे ना कोए विचार, ज़ात पात दी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख अकाल दा सांझा होवे प्यार, परवरदिगार हकीकत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति बख्शे इक सरनाईआ। सतिजुग साचा बणे इक धाम, धर्म दवारा सोभा पाईआ। नज़री आए धुर दा राम, रमईआ हर घट डेरा लाईआ। सोभा पाए अगम्मी शाम, लख चुरासी गोपी काहन हंढाहीआ। संदेसा देवे धुर पैग़ाम, पैगम्बरां दा मालक नूर खुदाईआ। नाम दृढ़ाए सतिनाम, निरगुण सरगुण परदा आप उठाईआ। सच गृह दस्से प्रणाम, बिन कदमां सीस झुकाईआ। शरअ दा रहे ना कोए ग़ुलाम, मज़्बां बन्धन ना कोए पाईआ। मंज़ल चढ़ना होवे आसान, टिल्ले पर्बत खोजण कोए ना जाईआ। काया माटी अंदर साचे मन्दिर मिले श्री भगवान, आत्म सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। बिन नूर करे बिसराम, आसण सिँघासण इक्को रिहा सुहाईआ। जन भगतां मेले मेला विच जहान, जहां तहां लए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम दस्स के सच निशान, निशाना धर्म दए जणाईआ। किरपा करे हो मेहरवान, मेहर

नज़र इक उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख ठांडे दर करे परवान, जन्म कर्म दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे इक्को रखे आण, हुक्मे अंदर चले सृष्ट सबाईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी बीरो दे गृह पिण्ड कैरों ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग साची खेल करे अभिओ, अभेव अगम्म अगम्म अगम्म बेपरवाहीआ। परवरदिगार नज़री आए सब दा मालक दयो, देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव सीस सर्ब निवाईआ। आत्म परमात्म जणाए सच्चा नेंहु, नाता सुरती शब्द आप जुड़ाईआ। अमृत रस बरखे सच्चा मेंहु, बूँद स्वांती प्रेम बरसाईआ। भगत वछल साचे सन्तां बणे पिउ, गुरमुख गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। बिख्या रस अंदर रहिण ना देवे विहुं, कूड़ कुड़यारा बाहर कराईआ। भय अंदर दो जहान विच कोई कह ना सके क्यों, प्रभ ने सतिजुग मार्ग दिता लाईआ। पुरख अकाल आपणी बिध करे इउँ, जो गुर अवतार पीर
१००१ पैगम्बर गए लिखाईआ। जन भगतां झगड़ा मुका के साढे तिन्न हथ्थ सीउँ, सनमुख हो के आपणा भेव खुल्हाईआ। आदि १००१
जुगादि जुग चौकड़ी पुरख अकाल एका रिहों, रहबर बण के जुग जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग होवे सति सतिवाद, विद्या धुर दी आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म सब दी सांझी होवे याद, इक्को नाम जीव आत्मा ढोला गाईआ। मनुआ करे ना कोए फ़साद, घर पंच परपंच ना कोए लड़ाईआ। नाद धुन सुणाए साची आवाज़, सुन्न समाध विच्चों बोध अगाध दृढ़ाईआ। सति धर्म दा खुल्ले सच्चा राज़, कूड़ी क्रिया परदा रहे ना राईआ। धरनी धरत धवल दा खेड़ा होवे आबाद, गुरमुख बूटे लोकमात लहराईआ। सोई सुरती सन्तां जावे जाग, आलस निंद्रा दए गवाईआ। हँस बुद्धी होवे काग, सोहँ ढोला सृष्टी दृष्टी अंदर गाईआ। प्रभ मिलण दा उपजे सर्ब वैराग, वैरी दूत दुष्ट ना कोए सताईआ। जगत तृष्ना ममता बुझे आग, हउमे रोग ना कोए उपजाईआ। घट दीपक जगे चिराग़, सतिगुर जोत होवे रुशनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन बणे इक समाज, ऊँच नीच इक मिले वड्याईआ। सति धर्म दा बेड़ा चले जहाज़, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जुगादि आदि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी कंसो दे गृह पिण्ड ठकर कौड़ा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा धर्म चलाए निरँकारा, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। इक्को इष्ट मन्ने सर्ब संसारा, वरन बरन एका नाम ध्याईआ। एका नाम डंका वज्जे जैकारा, चार कुण्ट दहि दिशा करे शनवाईआ। निर्मल दीपक जोत होवे उज्यारा, कलयुग अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी दया कमाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा इक्को होवे इष्ट, पुरख अकाल सीस सर्ब झुकाईआ। दीन दुनी दी सांझी होवे दृष्ट, आत्म परमात्म प्रभ परदा दए उठाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सांत सति करे तृप्त, पंज तत अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर किसे दी करनी पए ना मिन्नत, पाहन पूजण कोए ना जाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पतिपरमेश्वर पूरा करे भविख्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद इक चलाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्चे चले एका नाउँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल गावण थाँईं थाउँ, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ढोला सोहला धुर दा गाईआ। सचखण्ड अबिनाशी करे सच न्याउँ, हक अदालत परवरदिगार सांझा यार मुकामे हक इक लगाईआ। भगत सुहेले सन्त सज्जण निरगुण निरगुण पकड़े बाहों, आत्म परमात्म मेला धुर दा लए मिलाईआ। हँस बुद्धी गुरमुख करे कलयुग कूड़ ना रहे काउँ, सच सुच आपणा नाम दए समझाईआ। मानुख मानव मानस भाग लगावे साढे तिन्न हथ्थ गाउँ, गृह मन्दिर अंदर निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धर्म एकँकार इक अकल्ला दए प्रगटाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्चा पुरख अकाल देवे जाप, अजपा जाप आप दृढ़ाईआ। किरपा करे हर घट वस्या आप, आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म बन्द कवाड़ी परदा खोल्ह देवे ताक, नौ दवारे लेखा दए चुकाईआ। निझर झिरना अमृत बूँद देवे सवांत, अमिउँ रस आपणी धार वहाईआ। अनहद शब्द वजाए अनादी नाद, धुन आत्मक राग करे शनवाईआ। निर्मल नूर जोत करे प्रकाश, आदि निरँजण जोती जाता डगमगाईआ। कूड़ी क्रिया अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर मेटे अन्धेरी रात, साहिब सतिगुर नूरी चन्द शब्द चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोध अगाध दस्से आपणी गाथ, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा दए खुल्हाईआ। सति धर्म, सच दवारा सचखण्ड दिसे आप रघुनाथ, रघुपत हो के रमईआ सईआ परदा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ।सति धर्म, सतिजुग साचे पुरख अकाल एका वज्जे डंका, चार कुण्ट दहि दिशा सिर ना कोए उठाईआ।

हुक्म सुणाए धुर फ़रमाना राउ रंका, शाह सुल्ताना जीव जहाना भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। करे खेल अबिनाशी करता धुर दा कन्ता श्री भगवन्ता, दो जहान एको कार कमाईआ। वेस वटाए आदि अन्ता जुगा जुगन्ता, गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण आपणा खेल खिलाईआ। देवे माण पंज तत काया माटी सरीर साचे सन्ता, शब्द धार एकँकार आपणा नाउँ प्रगटाईआ। मन मनसा रहिण ना देवे गढ़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बिन सतिगुर शब्द दूजा नज़र ना आवे कोई पंडता, चौदां विद्या कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बार अनका, अनक कलधारी आपणी कल वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा परम पुरख देवे उपदेश, दो जहानां आप जणाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर दर बैठा सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन आदेस, सजदयां विच निउँ निउँ सीस निवाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक सचखण्ड निवासी इक नरेश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्त सति सति देवे इक संदेश, सुनेहड़ा आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करे लेख, लिख्त भविख्त आपणे विच रखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा चले राह, रहबर इक्को परम पुरख अख्वाईआ। नाम निधान श्री भगवान सब दी झोली देवे पा, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द गहर गम्भीर बेनज़ीर धुर दा बणे मलाह, बेड़ा मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा जन भगतां दए वखा, निर्मल जोती कमलापाती इक्को डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे हक न्याँ, हकीकत विच्चों असलीअत वेख वखाईआ। सति धर्म, अबिनाशी करता साची दस्से इक कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। प्रगट हो के नज़री आवे इक अमाम, अमामां दा अमाम जलवागर नूर खुदाईआ। जो ईसा मूसा मुहम्मद दिन्दा रिहा पैग़ाम, हज़रतां करदा रिहा पढ़ाईआ। वसणहारा हक मुकाम, लाशरीक आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्से आप आसान, एहसान सिर ना सके उठाईआ। इक्को इष्ट दस्से जीव जहान, जागरत जोत होए रुशनाईआ। चौदां तबक निउँ निउँ सीस झुकाण, सिर सर ना कोए उठाईआ। जिस दी सिफ्त करे अञ्जील कुरान, अलिफ़ ये नाल जगत पढ़ाईआ। सो खेल करे वाली दो जहान, हुक्में अंदर दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी धुर दी धार आपणे हथ्थ रखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे एका उपजे ज्ञान, अज्ञान रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी बख्शे धुर दा चरण ध्यान, पंजां तत्तां वाला गुरू ना कोए मनाईआ। शब्द गुरू होवे प्रधान, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म जणाईआ। जिस दी शाह सुल्तानां राज राजानां जीव जहाना

मन्नणी पए आण, देवत सुर बचया रहिण कोए ना पाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले सन्त जन जन भगत गुरमुख गुरसिख करे पहिचाण, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे इक्को देवे आपणा दान, नाम निधाना श्री भगवाना झोली पाईआ। सति धर्म सतिजुग साचा इक्को होवे रस्ता, पगडण्डी रहिण कोए ना पाईआ। परम पुरख दे नाम दा काया मन्दिर अंदर सब नूं खोलणा पए बस्ता, बाहर पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। सच प्रेम धुर दे नेम नाल करे सस्ता, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ लभ्भण कोए ना जाईआ। आत्म रस नाम खुमारी नाल करे मस्ता, शब्द दीवाना श्री भगवाना आप बणाईआ। लहिणा देणा चुकाए अर्शा फ़र्शा, अर्शां तों परे निरगुण धार आपणी दए समझाईआ। देवे दरस जन भगतां, जन्म जन्म दी मेटे हरसा, हवस अगे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे साची धार इक वखाईआ। सति धर्म, सतिजुग साची दे इक प्रीत, प्रीतम हो के दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को चले रीत, रीतीवान आपणा हुक्म चलाईआ। झगड़ा पए ना मन्दिर मसीत, पंडत पांधा मुल्ला शेख़ कम्म किसे ना आईआ। सब दा मार्ग इक्को होवे ठीक, ठाकर नूरी करता नज़री आईआ। आत्म परमात्म परब्रह्म ब्रह्म मिल के गावण सारे गीत, गोबिन्द शब्द ढोला वज्जे नाम वधाईआ। काया माटी होवे सब दी ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा मुकाए ऊँच नीच, राउ रंक ज़ात पात दीन मज़्हब लेखा दए गवाईआ। सति धर्म, सतिजुग सच्चे इक्को होवे धार, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। लेखा रहे ना मुहम्मदी चार यार, चारों कुण्ट इक्को खेल प्रभ दा नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अंदर होवे प्यार, विषयां वाला गुरू मन्नण कोए ना जाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक होवे पुरख अकाल, दीन दुनी आपणे हुक्में अंदर चलाईआ। सतिजुग सतिगुर शब्द सब दा होवे सालस, ख़ालस ख़ालसा लए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निंद्रा आलस, गफ्लत रहिण कोए ना पाईआ। मेहरवान हो के महबूब मुहब्बत विच जगत जिज्ञासूआं बदले आदत, अमीर ग़रीब ज़मीर आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे नाम दी बख्शिश कर सखावत, झोली सब दी दए भराईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड बरनाला ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म, सतिजुग किरपा करे गहर गम्भीर वड गुण सागर, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। नाम

वणज कराए पुरख अकाल दीन दयाल बण के धुर सौदागर, चार कुण्ट दहि दिशा वस्त अमोलक काया गोलक इक्को पाईआ। साचे सन्तां भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दीन दुनी दा मालक वड अकालण दुरमति मैल अन्तर अन्तर धवाईआ। हुक्मरान दो जहान होवे करीम करता कादर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता आपणा हुक्म वरताईआ। योद्धा सूरबीर होवे वड बहादर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी करे करतार, करता पुरख बेपरवाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी हुक्में अंदर रिहा भवाईआ। नाम संदेसा मन्नदे रहे गुर अवतार, पैगम्बर सजदयां विच सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आवण जावण वारो वार, थिर रहिण कोए ना पाईआ। देवत सुर सदा पनिहार, खाणी बाणी मिल के ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारा इक प्रगटाईआ। सति दवारा खोल्हे एक, एकँकार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी बख्शे धुर दी टेक, टिक्के मस्तक नाम धूढ़ी दए लगाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत रहे ना भेख, माया ममता मोह हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। झगड़ा रहे ना मुल्ला शेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद शब्द अनाद इक्को दए सुणाईआ। शब्द अनाद उपजे जग, लोकमात वज्जे वधाईआ। जन भगतां मेला होवे उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध दए मुकाईआ। जगत वासना रहे कोई ना हद्द, ममता मोह ना कोए रखाईआ। धुर दी धार साचा शब्द जणाए अनहद, आत्म दरसी आपणी दया कमाईआ। सच दुआर एकँकार गृह मन्दिर अंदर जावे लँघ, ईड़ा पिंगल सुखमन सके ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां बख्शे साचा परमानंद, निजानंद वज्जदी रहे वधाईआ। सति धर्म जन भगतां प्रभ होए सुहेला, सज्जण इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म कर के मेला, मिलणी जगदीश आपणे नाल कराईआ। भेव रहे ना गुरू चेला, चेला गुर सुरती शब्द आपणा परदा लाहीआ। वसणहारा सचखण्ड दवारे धाम नवेला, निरगुण नूर जोत प्रकाश सरगुण साचे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक सुहाईआ। सच दुआर होवे सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। थिर घर बणाए अगम्मी बणत, घड़न भन्नूण समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्दी धार जणाए हुक्म अगम्मी मणीआं मंत, संदेसा नरेशा इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी मालक ख़ालक प्रितपालक बण के धुर दा कन्त, सेज सुहञ्जणी अन्तर आपणा परदा दए उठाईआ। झगड़ा मुका के जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह गृह वेखे थाउँ थाँईंआ।

वेखणहारा थान थनंतर, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जिस दा आदि जुगादि शब्द फ़रमाना मंत्र, रसना जेहवा पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। बिन भगतां भेव ना पाया किसे निरंतर, अन्तर ब्रह्म विच्चों पार ना कोए कराईआ। लहिणा देणा चुकावे गुरमुख साचे सन्तन, सत्ता आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे नव तन, नव नौ चार झगड़ा रहे ना राईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे मिले वस्त अनमोल, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। धुर दे कंडे देवे तोल, जगत तराजू नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार विच वरभण्ड ब्रह्मण्ड खण्ड देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक आपणी वस्त आप वरताईआ। भाग लगाए दया कमाए धरनी धरत धवल उपर धौल, दया दूत सच सपूत आपणा हुक्म मनाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पूरा करे कीता कौल, सदी चौधवीं वेला वक्त दए गवाहीआ। प्रभ का भेव कोए ना जाणे पंडत पांधा रौल, हिन्दसयां अक्खरां अंकां विच सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे साची धारा जाए मौल, मौला हो के आपणा हुक्म वरताईआ। सति धर्म, सतिजुग साचा देवे प्रभ भरोसा, अबिनाशी करता दया कमाईआ। इक्को नाम दो जहान चले होका, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ठाकर स्वामी आत्म परमात्म सच सलोका, सो साहिब जीवां जंतां आप दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस देही प्रभ मिलण दा मौका, विछड़यां फेर मेल ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को एका ओटा, जो ओड़क जोती जोत विच रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना गृह मन्दिर कढ्ढ खोटा, सति सति दए समझाईआ। सति धर्म सति सतिवादी देवे धुर दी दात, दाता दानी आप वरताईआ। सतिगुर शब्द बिना वड्डी ना कोई करामात, मूर्ख मुग्ध समझ किसे ना आईआ। जिस सिमरत कोट जन्म दा उतरे पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। मिले वड्याई माटी ख़ाक, पंज तत वज्जे वधाईआ। सज्जण बणे धुर दा साक, पुरख अकाला आपणा जोड़ जुड़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण देवे साथ, जगत विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। बाल अंञाणे गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत बहावे चुक्के गोदी आप, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच्चे तेरे विच बख्शे इक इतफ़ाक, निफ़ाक दा झगड़ा दए गवाईआ। सति धर्म, सतिजुग साचे साचा होवे मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। सति धर्म दा वधे प्रताप, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। करता पुरख करे इन्साफ़, अदली हो के अदल कमाईआ। रूह बुत्त दोवें करे पाक, भगतां अंदर वजदी रहे वधाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, चारों तरफ़ करे रुशनाईआ। नाम निधाना सुणाए नाद, अनहद रागी राग सुणाईआ। सति जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ।

सचखण्ड दवारे कर निवास, धर्म दवारा इक वखाईआ। जित्थे नज़र ना आए कोई माई बाप, भाई भैण साक सज्जण सैण नार कन्त सेज ना कोए सुहाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाश, तख्त निवासी नजरी आए आप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा मात धर, धरनी धरत धवल धर्म दुआर इक बणाईआ। सति धर्म, धरनी उत्ते होवे धर्म दवार, चार वरन मिले वड्याईआ। इक्को नाम होवे जैकार, डंका वज्जे थाउँ थाँईंआ। खुशी मनावण गुर अवतार, पैगम्बर ढोले गा गा रंग रंगाईआ। करे खेल आप करतार, करनी दा करता कुदरत आपणी वेख वखाईआ। चौथा जुग करे पार, पारब्रह्म प्रभ लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई दा एको एक करे आहार, रसना रस जगत स्वाद ना कोए वखाईआ।

१००७ ✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ लक्षमण सिँघ दे गृह पिण्ड भूरे ज़िला अमृतसर ✪ १००७

१६ सतिजुग साचे किरपा करे प्रभ दीन दयाल, दीनां अनाथां वेख वखाईआ। भगत वछल हो कृपाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख वेखे आपणे लाल, वरनां बरनां विच्चों बाहर कढाहीआ। साची सिख्या देवे नाम सिखाल, जगत विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। अमृत जाम प्याला दए प्याल, रस अगम्मी आप चखाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे शाह कंगाल, ऊँचां नीचां इक्को घर वसाईआ। सति धर्म वखाए आपणी धर्मसाल, गुर दर मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए सरनाईआ। सच दुआर श्री भगवान चरण, दो जहानां सोभा पाईआ। जित्थे मुक्के मरन डरन, जन्म गेड़ ना कोए भवाईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, निज नेत्र लोचन होए रुशनाईआ। पुरख अकाल मिले करनी करन, कुदरत दा कादर मेल मिलाईआ। सन्त सुहेले साची मंज़ल चढ़न, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठांडा दर दए वखाईआ। ठांडा दर पुरख अबिनाश, सचखण्ड दवारा इक वखाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि होए ना कदे विनास, छप्पर छन्न रूप ना कोए बदलाईआ। सो इक्को निर्मल जोत रहे प्रकाश, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। भगत भगवान मिल के पैंदी रहे रास, आत्म परमात्म मिल के गोपी काहन रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म मिल के गावे गाथ, शब्दी शब्द होवे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दात, नाम भण्डारा सच वरताईआ। नाम भण्डारा धुर दी दात, जन भगतां आप वरताइंदा।

अन्ध अन्धेर मेटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। शब्दी सुरती नाता जोड़े पुरख बिधात, आत्म परमात्म मेला आप मिलाइंदा। सोहँ शब्द आदि जुगादी गाथ, गुर अवतारां पैगम्बरां आप समझाइंदा। चार वरन अठारां बरन दस्से इक जमात, वरन बरन राह ना कोए चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे इक इकांत, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। इक इकल्ला एकँकार, आदि जुगादि अख्वाईआ। कलयुग कूड़ा धरती उत्तों कढ्ढे बाहर, सतिजुग साचा मात धराईआ। माया ममता मोह विकार ना रहे हँकार, आशा तृष्ना ना जगत सताईआ। साचा बख्शे इक प्यार, पिता पूत करे ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म मिल के ढोला गावे अगम्म अपार, सोहला साचा राग अलाईआ। सति सतिवादी सतिजुग साची उपजे धार, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। ऊँच नीच रहे ना कोए विचार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश शरअ ना कोए बणाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा करे प्यार, जगत विभचार दुराचार विरोध विकार अंदरों दए कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म धरे विच संसार, संसा कूड़ा जगत रोग दए मिटाईआ। जगत रोग मिटे जग, ममता मोह ना कोए सताईआ। कूड़ी तृष्ना रहे ना अग्ग, तत्व तत ना कोए तपाईआ। मेहर करे पुरख समरथ, दयावान दया कमाईआ। साचे नाम दी दे के वथ, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। अंदर खोल्ह के निरगुण अक्ख, सरगुण करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म कदे रहिण ना देवे वक्ख, मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया देवे मथ्थ, सति धर्म, सतिजुग लोकमात करे प्रगट, प्रगट हो के साचा हट्ट खुल्हाईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ गोपाल कौर दे गृह पिण्ड भूरे ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां आत्म परमात्म प्रभ देवे साचा सुख, त्रैगुण अग्नी तत ना कोए तपाईआ। लोभ विकार माया ममता व्यापे कोए ना दुःख, कूड़ कुड़यार विभचार ना कोए सताईआ। जगत तृष्ना रहे कोई ना भुक्ख, सांतक सति दए वरताईआ। लेखे लावे मानस देही पंज तत मनुक्ख, आवण जावण गेड़ा दए कटाईआ। सफ़ल कराए जननी कुक्ख, मेहरवान मेहर नज़र नाल पार कराईआ। शब्दी धार गोदी लए चुक्क, गोबिन्द शब्द हथ्थ वड्याईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ा जाए मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वड्याईआ। जन भगतां कदे ना होवे चिन्ता रोग, संसा ग़म ना कोए सताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देवे दरस अमोघ, जोती

नूर कर रुशनाईआ। चरण प्रीती साची नीती बख्शे साचा जोग, जुगीशर तपीशर मुनीशर लेखा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म बह के सच दुआर दी दस्से मौज, ममता मोह विकार मिटाईआ। सुरती शब्द करा के खोज, परदा अंदरों दए उठाईआ। आत्म सेजा करे चोज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतां कोई ना रहे संताप, संसा जगत ना कोए सताईआ। कर किरपा मेटे तीनो ताप, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के साची ज़ात, दूई परदा दए उठाईआ। शब्द अगम्मी जपा के जाप, अनहद नादी नाद सुणाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। अमृत दे के बूँद सवांत, निझर झिरना दए वखाईआ। कोट जन्म दे पूरब लाह के पाप, दुतर मैल दुरमति आप धवाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, पतित पुनीत बख्शे सच शरनाईआ। जन भगतां उपर तुठ्ठे परम पुरख प्रभ आप, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला साथी पुरख अबिनाशी इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सर्ब गुणतास, भगतन मीता गहर गम्भीर गुसाँईंआ। जन भगतां मन मनसा रहे कोई ना झेड़ा, जगत दर्द ना कोए दुखाईआ।
१००६ पुरख अकाल दीन दयाल सतिगुर सच्चा बन्न्हे बेड़ा, समुंद सागर संसार विच्चों पार कराईआ। काया माटी साढे तिन्न हथ्थ १००६
१६ घर मन्दिर वसे खेड़ा, महल अटल होवे रुशनाईआ। पंच विकार रहे ना अंदर डेरा, शब्द डंके नाल बाहर कढाहीआ। शब्द १६
जणाए दया कमाए भेव खुल्हाए आत्म ब्रह्म समझाए तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर ठांडे साढे तिन्न हथ्थ होवे चाउ घनेरा, सतिगुर शब्द वज्जे वधाईआ। मिले मेल गुरू गुर चेरा, चेला गुरू एका घर बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे धुर दा मेला, बण विचोला सेव कमाईआ। जन भगतां कूड़ कुड़यार कोई ना सके मोह, जगत ममता विच ना कोए फसाईआ। कलयुग कर सके ना धरोह, जगत जंज़ाल कोए ना पाईआ। उन्हां दे अन्तर वस्या परम पुरख सो, जो हँ ब्रह्म रिहा समझाईआ। जिस दा भेव जगत बुद्धी ना जाणे को, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण जावे हो, सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। सच प्रकाश नूरी जोत अगम्मी करे लो, दीवा बाती कमलापाती हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जिस आत्म नाल परमात्म हो के जावे छोह, परदा ओहला अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रहिण कोए ना पाईआ। लेखा चुक्क जाए इक दो, दूआ एका इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखावणहारा आपणा सच्चा घर, गृह सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को इक रखाईआ। जन भगतां प्रभ धाम दस्से सदा अनडिठ्ठ, जग नेत्र नज़र

किसे ना आईआ। मेहरवान करवट लै बदले पिठ, दीन दयाल दीन दुनी दए बदलाईआ। आत्म अन्तर करे साचा हित, प्रीतम हो के प्रेम वखाईआ। शब्दी धार वसे चित, मन चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। दयावान दीन दयाल ठाकर स्वामी जन भगतां दर्शन देवे नित, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दा मालक सदा प्रितपालक वड्डा वड ख़ालक बणे अगम्मी पित, पिता पूत गुरमुख गुर गुर आपणी गोद उठाईआ। शब्दी धार एकँकार विच संसार धुर दा लेखा देवे लिख, जिस दी रेख ना कोए बदलाईआ। सदा सदा सद वड्याई दिन्दा आया गुरमुख साचे सिख, जिन्हां सतिगुर सिख्या अन्तर लई वसाईआ। नाम भण्डार दिन्दा आया वस्त अनडिठ्ठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्तर आत्म सदा करे हित, हितकारी हो के निरँकारी हो के जगत विकारी कर किरपा पार लँघाईआ।

✪ १२ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड डिबी पुरा ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द सदा दयाल, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित दया कमाईआ। भगत सुहेले गुरमुख वेखे आपणे

लाल, लख चुरासी जीव जंत विच्चों आप उठाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक रुशनाईआ। शब्द अगम्मी अनहद वजाए ताल, धुन आत्मक भेव खुल्हाईआ। पूरब जन्म दी लेखे लाए घाल, लहिणा देणा धुर दी दात वरताईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, सचखण्ड दुआर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लए वर, मेहरवान महबूब आपणे रंग विच रंगाईआ। जन भगतां पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बख्शे चरण धूढ़, नाम निधाना धुर दी दात झोली पाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सति धर्म सति सति इष्ट देव स्वामी पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। मेहरवान मुहब्बत विच दीन दयाल दया कर के चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, नाम रस अन्तर जप अजपा जाप इक आप जपाईआ। जोती जलवा सति प्रकाश देवे अगम्मी नूर, अन्ध अज्ञान जीव जहान रहिण कोए ना पाईआ। आसा मनसा दर ठांडे पूर, पूरन ब्रह्म ज्ञान दए समझाईआ। दरस वखाए हाज़र हज़ूर, निज घर वासी स्वच्छ सरूप रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेला इक अकेला एकँकार आपणा घर वखाईआ। जन भगतां प्रभ घर वखाए आदि निरँजणा, निरगुण निरवैर आपणी दया कमाईआ। मेहरवान हो के दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, कलयुग भव सागर पार लँघाईआ। आत्म परमात्म साचे घर गृह निजानंद देवे साचा परमानंदना, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धुन आत्मक राग अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। बिन सीस जगदीश दोए कर

१०१०
१६

दस्से बन्दना, बन्दगी मुशसंदगी इक्को दए समझाईआ। भगत सुहेला दो जहान चाढ़े साचा चन्दना, बिन सूरज चन्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले लाए आपणे अंगणा, अंगीकार आप अख्वाईआ। जन भगतां जुगो जुग प्रभ लाए आपणे अंग, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। देवे वड्याई सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाम निधान वजाए मृदंग, राग अनादी आप प्रगटाईआ। नौ दवारे पार लँघ, अंदर मंज़ल दए वखाईआ। सच जोत चाढ़ के चन्द, नूर नुराना डगमगाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दीख़ाने दए तुड़ाईआ। झगड़ा मुकाए चौदां लोक चौदां तबक पुरी लोअ ब्रह्मण्ड, सचखण्ड दवारा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्तां वाला ढोला गाए कोई ना छन्द, राग नाद समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां देवे इक घर, सच घराना श्री भगवाना सच दुआर एकँकार आपणा इक वखाईआ। भगत सुहेला वसे घर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे ना जन्मे ना जाए मर, मर जीवत रूप ना कोए बदलाईआ। अन्त अख़ीरी मंज़ल जाए चढ़, पौड़ी डण्डे दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सरनगति सरनाई जाए पड़, सीस जगदीश इक झुकाईआ। सो स्वामी साहिब सुल्तान हो मेहरवान किरपा देवे कर, जोती जाता पुरख बिधाता जोती जोत विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दवारे सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपे चढ़, चार कुण्ट दहि दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ।

१२ सावण शहिनशाही सम्मत २ मक्खण सिँघ, बख्शीश सिँघ दे गृह पिण्ड भगवान पुरा ज़िला अमृतसर

सतिजुग साचे तेरा साचा जाप, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवे आप, हरि पुरख निरँजण दया कमाईआ। दीन दुनी मेटे रोग संताप, एकँकारा मेहर नज़र उठाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, आदि निरँजण नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द अगम्मी वजाए नाद, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले साध, श्री भगवान सच निशान हो मेहरवान इक वखाईआ। सति दवारे परदा खोल्हे राज़, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक समझाईआ। सतिजुग साचे साचा शब्द चले अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना मरे ना पए जम्म, जीवण मरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जिस नूं जणे ना कोई जननी तत तन, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल ना कोए खिलाईआ। जिस नूं एथे ओथे दो जहानां सके कोए

ना भन्न, ठठयार हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं चार युग होवे कदे ना ग़म, चिन्ता चिखा जगत तमअ ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप दृढ़ाईआ। सतिजुग साचा नाउँ धरे करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। जिस दी आसा रखदे गए गुरू अवतार, पैगम्बर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो लेखा जाणे सर्ब संसार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म सदा चले जुग चार, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। कागद कलम ना लिखणहार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सतिजुग शब्द चले अथाह, हरि करता आप जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत निरगुण सरगुण बणे मलाह, खेवट खेटा इक्को दो जहानां आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के सब दी पकड़े बांह, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को इक समझाईआ। जन भगत सुहेले गुरू गुर चेले बहाए साची थाँ, सच मुकाम इक्को इक दृढ़ाईआ। कर किरपा कोट जन्म दे मेटे बेअन्त गुनाह, पतित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक दृढ़ाईआ। सतिजुग, शब्द चले गुर शब्दी धार, जिस दी समझ किसे ना आईआ।
१०१२ सुनेहड़ा देवे गुर अवतार, लोक परलोक आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खुआर, सतिजुग साचा लोकमात दए १०१२
१६ धराईआ। चार वरन अठारां बरन ख़ालस ख़ालसा कर त्यार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता इक्को रंग दए रंगाईआ। सालस १६
बण के आप निरँकार, निरवैर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची बह के खुशी मनाईआ। सतिजुग साचा नाउँ जणाए आदि निरँजण, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। जीवां जंतां होवे दर्द दु:ख भय भंजन, दीनां अनाथां लए उठाईआ। सर्ब जीआं दा होवे सज्जण, ज़ात पात दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सच दवारे सच सरोवर कराए इक्को मजन, अठ्ठ सठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। लख चुरासी विच्चों आवे कढ्ढण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक्को इक वखाईआ। सतिजुग साचे नाउँ चलाए श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। शब्द गुरू गुरदेव सब दा स्वामी होवे कन्त, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, अन्तश्करन सब दा फोल फुलाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म परदा दए उठाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा धुर दा बणे पंडत, कलमा हक नाम सच सच दवारे इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप जणाईआ। सतिजुग साचा नाउँ देवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते हथ्थ वड्याईआ। जो मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी

काहन सर्ब नचाईआ। लेखा जाणे सीता राम विच बनबास, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पूरी करे ख़ाहिश, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। नानक निरगुण सरगुण वसे पास, गोबिन्द डंका शब्द सुणाईआ। सब दी पूरी करे आस, तृष्ना ब्रह्मा विष्न दए बुझाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। सतिगुर सच्चा सतिजुग होवे शब्द अगम्मी सुत, पुरख अकाल दए वड्याईआ। सति धर्म दी मौले रुत, लोकमात वज्जे वधाईआ। जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ चमकाईआ। चार वरनां अठारां बरनां देवे सच सुच, कूड़ विकार रहिण ना पाईआ। जन भगतां उज्जल करे मुख, दुरमति मैल धवाईआ। साचे सन्तां होवे सुख, सुख आत्म विच्चों प्रगटाईआ। गुरमुख गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। गुरसिखां तृष्ना मेटे भुक्ख, वस्त अमोलक नाम आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग सच्चे देवे चरण सरन सच्ची सरनाईआ। सतिजुग सच्चा नाउँ चले चौदां लोक, परलोक वज्जे वधाईआ। गावण सारे हक सलोक, ढोला इक्को शहिनशाहीआ। भाग लग्गे काया कोट, वज्जे नाम वधाईआ। प्रकाश होवे निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर चुकाईआ। मन बुद्धी दी रहे कोई ना सोच, अनुभव परदा दए उठाईआ। लेखा मुका के हरख़ सोग, चिन्ता ग़म बाहर दए कढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल साची दस्स के इक्को ओट, ओड़क आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम खुमारी अंदर करे मदहोश, सति प्याला जाम इक प्याईआ।

१०१३
१६

१३ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रताप सिँघ दे गृह पिण्ड सुगा ज़िला अमृतसर

सतिजुग साचे पुरख अकाल दस्सणी गाथ, गा गा सारे शुकर मनाईआ। सहारा दीनां अनाथां नाथ, ग़रीबां माण वड्याईआ। भगतां जोड़ना साचा नात, सगला संग बणाईआ। नाम भण्डारा खोल्ह्णा डूँग्घा खात, अतोट अतुट वरताईआ। सच दर प्रभ दी सोहणी ज़ात, आत्म परदा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे नाम दए वड्याईआ। सतिजुग साचे सब नूं देणी धीर, धीरज धीर इक रखाईआ। अमृत ठांडा बख़्शणा सीर, रस सतिगुर नाम जाम प्याईआ। हउमें हंगता कढ्ढणी पीड़, दर्दीआं दर्द दुखियां दुख देणा वण्डाईआ। साचा वस्त्र देणा चीर, शब्द ओढण सोभा पाईआ। सच समझाउणा धुर दा पीर, पैगम्बर नूर खुदाईआ। माण देणा ग़रीब अमीर, जो चल आवण सरनाईआ। साचा खण्डा

नाम कटार सति खड़ग खिच्ची रखणी शमशीर, मन शरारत करन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग सच्चे सच्चा देणा संदेश, हर घट सच जणाईआ। वसो प्रभ दे देस, सचखण्ड कह के सारे गाईआ। जिस दा मालक इक नरेश, दूजा हुक्म ना कोए बदलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दवारे दरवेश, दो जहानां मालक बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म मिल के खोल्ह्रे भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। दर्शन करो नेतन नेत, नित नवित खुशी मनाईआ। मानस जन्म बणाओ आपणा लेख, लेखा लेखे विच समाईआ। परत के जाओ आपणे देस, जिस घर विच्चों होई जुदाईआ। सदा ज़िंदा रहो हमेश, मर के मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल अवल्लड़ा वेस, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस नूं लभ्भदे केती केत, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। सो खेले खेल आपणी खेड, शब्द खिलाड़ी वेस वटाईआ। जिस ने मात पंज तत दिते भेज, आत्म परमात्म आपणी धार प्रगटाईआ। ओस प्रभू दी माणो साची सेज, जिथ्थों सुत्यां ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच्चे बख्शणहार सरनाईआ। सतिजुग जन भगतां नाम अगम्मी लिख्ती देणा ख़त, तकरीर तहिरीर विच बदलाईआ। तुहाडा मालक कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। लहिणा देणा ओस दे हथ्थ, जुग चौकड़ी रिहा चुकाईआ। देवणहारा नाम वथ, भण्डारा धुर दा आप वरताईआ। सर्ब कला समरथ, ओट इक्को इक जणाईआ। सच्चा मार्ग देवे दस्स, रहबर हो के आप समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा जस, ढोला सोहला धुर दा आप प्रगटाईआ। सगल वसूरे जाण लथ्थ, जो दर ठांडे दर्शन पाईआ। सदा खुल्ह्री रहे अक्ख, लोचन बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा धर्म लगावे सच, भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए बणाईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ गंडा सिँघ दे गृह पिण्ड दराजके ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुख साचा उधरे पार, उदर विच कदे ना आईआ। लेखा मुके काया माटी विच संसार, तन वजूद मिले वड्याईआ। गुर शब्द करे प्यार, प्रेमी प्यारा बह के वेख वखाईआ। आवण जावण देवे गेड़ निवार, चुरासी फाँसी दए कटाईआ। साचा दस्से धाम न्यार, दवारा इक्को इक समझाईआ। जित्थे वसे हरि निरँकार, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। मेला होवे अन्तिम वार, जोती जोत जोत समाईआ। तिन्नां गुरमुखां सद बलिहार, जो सतिगुर हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पार उतारनहार बेपरवाहीआ। गुरमुख सच्चा आवण जावण लए कट, कटक कूड़ रहे ना

राईआ। साचा लाहा मानस जन्म लए खट, मिले शब्द नाम वड्याईआ। करे वणज साचे हट्ट, गुर चरण प्रीती सेव कमाईआ। दुरमति मैल जावे लथ्थ, पापां रोग रहे ना राईआ। किरपा करे पुरख अकाल समरथ, बख्शणहार सच्ची शरनाईआ। लख चुरासी विच्चों लए रख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाड़ी नाड़ उबलण ना देवे रत्त, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां होए सहाईआ। गुरमुख सच्चा पार जाए लँघ, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मिले मेल साहिब सूरे सरबंग, शब्दी गुर दया कमाईआ। नाम सुणाए अगम्मी मृदंग, नादी नाद वजाईआ। जोती नूर चाढ़ चन्द, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। निज घर दे निजानंद, परमानंद सुख वखाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी नजर उठाईआ। राए धर्म ना देवे दंड, चित्रगुप्त लेखा मंगण कोए ना आईआ। अन्तकाल पुरख अकाल होवे संग, आत्म आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे माण वड्याई सूरा सरबंग, सुरती शब्द शब्द सुरत जागत सोवत इक्को रंग रंगाईआ।

१०१५ १६

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड बासरके ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे दीन दुनी सांझा होवे इष्ट, चार वरन अठारां बरन सोहला ढोला इक्को इक ध्याईआ। सुरत शब्द खुल्ही रहे ब्रह्म धार सदा नित, कूड़ कुड़यार मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश प्रेम प्यार मुहब्बत होवे सृष्ट, ज़ात पात दीन मज़्हब झगड़ा रहे ना राईआ। सति उपदेश पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पूरा होवे रामा वशिष्ट, जगत वासना विशेष लए बदलाईआ। जन भगतां प्यार रहे ना स्वर्ग बहिश्त, पुरख अकाल दीन दयाल इक्को चरण ध्यान लगाईआ। लेखा मुके ईसा मूसा मुहम्मद करिसत, सदी चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति धर्म धरनी धरत धवल उपर दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे देवे सति, सति सतिवादी रूप वटाईआ। सांतक सांत करे पंज तत, त्रैगुण अग्नी ना कोए तपाईआ। नाड़ नाड़ ना उबले रत्त, अमृत मेघ दए बरसाईआ। मन वासना दहि दिशा ना जाए भज्ज, कूड़ी क्रिया अंदरों दए कढाहीआ। काया मन्दिर अंदर प्रगट कर सुच सच, सच संजम इक्को दए समझाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अंदर नौ खण्ड सत्त दीप जाण वस, झगड़ा जगत ना रहे लोकाईआ। जन भगतां निज लोचन नैण परम पुरख खोल्हे अक्ख, ज्ञान अंजण नाम निधान इक्को पाईआ। निरगुण

नूर जोत प्रकाश करे घट घट, गृह गृह करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, सोई सुरत अकाल मूर्त दए जगाईआ। सर सरोवर साढे तिन्न हथ्थ अंदर वखाए सरोवर अठ्ठ सठ्ठ, अमृत जल निझर धार दए वहाईआ। दुरमति मैल परम पुरख परमात्म आत्म देवे कट, पतित पुनीत दए कराईआ। साचा मार्ग सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी दो जहान, श्री भगवान देवे दस्स, सृष्ट सबाई इक्को नाम ध्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे आपणे वस, सच दवारे मेला हस्स हस्स, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध अठ्ठ तत आपणा हुक्म मनाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्च, लूं लूं अंदर जाए रच, रचना अन्तर निरंतर निरवैर आपणी दए वखाईआ। हर हिरदे अंदर जाए वस, करे प्रकाश आपणी अक्ख, नज़र आए गुसाँईं प्रतख, जोती जाता डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा नाम देवे दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची धार आप समझाईआ। सतिजुग साचा देवे बोध, परदा ओहला रहे ना राईआ। मन वासना सब दी देवे सोध, कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। काया मन्दिर अंदर भेव दस्से गोझ, नौ दुआर पैंडा दए मुकाईआ। धुन आत्मक शब्द लगा के साची चोट, चोटी चढ़के निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी साचे कोट, गढ़ बंक इक सुहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जलवा नूर डगमगाईआ। मन बुद्धी दी रहिण ना देवे कोई सोच, धुर शब्दी हुक्म आप समझाईआ। एका कलमा एका नाम एका नाद वज्जे चौदां लोक, चौदां तबक इक्को दुआर सीस निवाईआ। जन भगतां अंदर रहिण ना देवे चिन्ता ग़म हरख़ सोग, अमृत आत्म साचा जाम प्याईआ। बिन अक्खां जग नेत्रां देवे दरस अमोघ, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी बिना रंग रूपी आपणा भेव खुल्हाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ऊँच नीच ज़ात पात राज राजान शाह सुल्तान देवे इक्को सच्चा जोग, जो पीर पैगम्बर मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत इक्को ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन माटी ख़ाकी रहिण ना देवे कोई रोग, हँ ब्रह्म पारब्रह्म अछल अछल्ल भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सुरत शब्द बिन दीन मज़्हब करे धुर संजोग, जुग जन्म विछड़े आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सच दुआर एकँकार दे के धुर दी ओट, दवारा निरँकारा इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचे पुरख अकाल देवे माण, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। मालक बण के वाली दो जहान, लख चुरासी दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर ध्यान, करोड़ तेतीसा अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मन्नण आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सिर झुकाण, ज़िमीं असमान रवि ससि भज्जण वाहो दाहीआ। धुर संदेसा नर नरेशा

नाउँ निरँकारा एकँकारा एका दस्से विच जीव जहान, मानव मानस मानुख परदा ओहला दए चुकाईआ। सच धर्म सत्त दीप होवे प्रधान, जूठ झूठ कूड़ी क्रिया चार कुण्ट रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म निरगुण सरगुण होवे ज्ञान, अक्खरां तों बाहर शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। सच दवारा सच भूमिका दस्से इक अस्थान, मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ गुरू दुआर इक्को इक वखाईआ। जिस गृह मिले श्री भगवान, अबिनाशी करता बैठा सोभा पाईआ। दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत जगाए महान, आदि जुगादी डगमगाईआ। खेले खेल ख़ालक ख़लक विच जहान, परवरदिगार सांझा यार लाशरीक मुकामे हक सच तौफीक आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा भेव जीव बुद्धी समझे ना कोए इन्सान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण बेअन्त कह के खुशी मनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी आपणा खेल खिलाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित दिन्दा रिहा दान, वस्त अमोलक काया गोलक नाम निधाना आप टिकाईआ। सो पुरख निरँजण खेल करे महान, हरि पुरख निरँजण आपणी कल वरताईआ। एकँकारा होए आप आपणा जाणी जाण, आदि निरँजण आदि पुरख आपणा नूर कर रुशनाईआ। अबिनाशी करता झुलाए सच निशान, श्री भगवान दो जहानां आपणा हुक्म सुणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे परवान, चरण प्रीती बख्शे चरण ध्यान, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा देवे वर, लोकमात आउणा चल, धरनी धरत धवल बैठी राह तकाईआ। सतिजुग साचा हुक्म देवे फ़रमान, फुरना मन दा बन्द कराईआ। जीव जंत रहे ना कोए निधान, आलस निंद्रा सब दी दए खुलाईआ। सति उपदेश देवे नाम निधान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे हक पढ़ाईआ। झगड़ा मुकाए शरअ शरअ दीन ईमान, ज़ात पात कमलापाती लेखा दए चुकाईआ। हर घट अंदर बाहर नज़री आए श्री भगवान, ब्रह्म निरंतर वज्जे सच वधाईआ। जगत बसन्तर रहे ना कोए निशान, गुर मंत्र इक्को इक दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी धार चलाईआ। सतिजुग साचा हुक्म मन्ने जगदीश, जगदीशर निउँ निउँ लागे पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावे गीत, ढोला पारब्रह्म ब्रह्म दए समझाईआ। काया काअबा दिसे हक मसीत, मन्दिर धुर दा इक्को नज़री आईआ। जित्थे झगड़ा नहीं कोई ऊँच नीच, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पतिपरमेश्वर पुरख अकाल परवरदिगार सांझी होवे प्रीत, पत्तीआं वाले हिस्से रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म साची चले रीत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को ध्यान लगाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशी त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। माण वड्याई देवे हस्त कीट, राउ रंकां राज राजानां

शाह सुल्तानां इक्को घर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सति धर्म करे बख्शीश, रैहम करके रहमत आप कमाईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी जीतो दे गृह पिण्ड बासर के ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग तेरा हुक्म होवे सच्चा, प्रभ हुक्म सच समझाईआ। गुरमुख कदी ना होवे कच्चा, मनमति ना कोए हल्काईआ। साचे नाम अंदर जाए रत्ता, रतन अमोलक हीरा आपणा नाउँ बदलाईआ। शब्दी धार अंदर फिरे नठ्ठा, सतिगुरू दवारे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दए प्रगटाईआ। सतिजुग तेरे विच प्रगट होवे साचा भगत, साची भगती प्रभ दी सेव कमाईआ। नाता कूड़ा तोड़े सृष्टी जगत, प्रीत परम पुरख नाल वधाईआ। नाम निधान मिले अगम्मी शक्त, संसा रोग दए चुकाईआ। दर्शन कर के वाली अर्श, फर्श उत्ते सोभा पाईआ। जन्म जन्म दी मेटे भटक, कूड़ी तृष्ना दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। सति धर्म सतिजुग
१०१८ तेरे विच उपजण साचे सन्त, सतिगुर इक्को इक मनाईआ। परमात्म मन्न के धुर दा कन्त, बण सवाणी सेव कमाईआ। १०१८
१९ चरण दवारे करदे रहिण मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जगत माया मोह ना व्यापे चिन्त, हरस हवस ना कोए वधाईआ। १९
मिले मेल ना किसे निन्दक, दुष्ट दुराचार संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मिलण दी देणी साची हिम्मत, हिरदे वस्स के लैणा उठाईआ। सतिजुग तेरी आसा मनसा पूरी होवे श्रद्धा, सदा सद कृपालू दया कमाईआ। परदा चुक्के साचे घर दा, हरि हरि नाम वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ा जाए डरदा, लोकमात रहिण ना पाईआ। अमृत सरोवर खुल्ले साचे सर दा, हरि चरण मिले सरनाईआ। जन भगत मंज़ल अगम्मी जाए चढ़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म ढोला जाए पढ़दा, परदयां विच्चों सड़दा लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत साध सन्त घर घर दा, गृह माटी हाटी काया तत फोल फुलाईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नारला ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग नाउँ होए पतित उधारन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाईआ। जन भगतां होवे पैज संवारन,

साह साह लेखे दए लगाईआ। साचे सन्तां होवे पार उतारन, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दिशा वेख वखाईआ। गुरमुखां होवे पैज संवारन, जन्म मरन दा गेड़ा दए चुकाईआ। गुरमुखां होए हँकारन मारन, कूड़ी क्रिया अंदरों बाहर कढाहीआ। चारे खाणी पावे सारन, महासार्थी हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाउँ इक समझाईआ। सतिजुग साचा नाउँ होए भगतां संग, सगला संग निभाईआ। मानस जन्म ना होवे भंग, लहिणा आपणे हथ्थ वखाईआ। सति सरूप चाढ़ रंग, कूड़ी रंगत दए बदलाईआ। आसा मनसा पूरी करे मंग, ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दए दृढ़ाईआ। सतिजुग साचा नाउँ जन भगतां लावे पार, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। दुःख निवारन होवे विच संसार, डूँग्घा सागर खोजे थाउँ थाँईंआ। अनहद नाद वज्जे सच्ची धुन्कार, सोहला धुर दा इक सुणाईआ। अमृत आत्म सिंचे ठंडा ठार, झिरना निझर इक झिराईआ। निर्मल दीपक जोत करे आकार, निराकार साकार खेल खिलाईआ। चार वरन अठारां बरन शब्द सरूपी देवे सच अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मंत्र इक समझाईआ। सतिजुग साचा साचे सन्तां देवे माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नाता तुटे जीव जहान, माया ममता अंदरों दए कढाहीआ। सति धर्म वखाए इक निशान, चारों कुण्ट आप झुलाईआ।

१०१६ १६ तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द सच ज्ञान, आदि जुगादी प्रभ दी धार चलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर एहो ढोला गाण, बिन अक्खरां १०१६ १६

निरअक्खर जाप विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचा खेल करे भगवाना, भगवन आपणी कार कमाइंदा। साचा मंत्र कर प्रधाना, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण आणा, गुर अवतार पैगम्बर सीस ना कोए उठाइंदा। साचा देवे अगम्म तराना, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। लेखा जाणे जीव जहाना, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। परदा लाहे शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, अञ्जील कुराना भरम ना कोए भुलाइंदा। हुक्म देवे शाह सुल्ताना, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एका हुक्म मनाइंदा। सतिजुग साचा लोकमात होवे बलवाना, बलधारी आपणा बल प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद आपणा हुक्म मनाइंदा। सतिजुग साचा साची भगती देवे गहर गम्भीर, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। इक्को रंग रंगाए हस्त कीट, शाह फ़कीर ऊँचां नीचां इक्को दर दए जणाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बदले ज़मीर, मन वासना कूड़ी क्रिया नौ दुआर ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे अमृत आत्म

१०२०
१६

देवे धुर दा सीर, बाहरों रस ना कोए चुआईआ। सतिजुग सच्चा प्रभ देवे हुक्म आप, आपणी दया कमाईआ। सोहँ सो चार वरन अठारां बरन दस्से जाप, आदि जुगादी धार प्रभ दी चली आईआ। जिस सिमरत कोट जन्म दे उतरन पाप, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तन माटी ख़ाक होए पवित पाक, वजूद सबूत आपणा दए समझाईआ। सुरती शब्दी बन्ने नात, नाता बिधाता आपणे नाल जुड़ाईआ। इक इकल्ला एकँकारा नज़रीं आए इक इकांत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दरगाह साची सोभा पाईआ। शब्द अगम्मी दो जहानां देवे दात, मनमति बुद्धी तों परे दस्से गाथ, सोहला आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आबेहयात, हयाती दीन दुनी दए बदलाईआ। सतिजुग सच्चा देवे चरण प्यार, प्रीती इक्को इक सिखाईआ। तेरा खुल्ले बन्द किवाड़, बजर कपाटी परदा रहे ना राईआ। अग्नी तत ना लग्गे हाढ़, मेघ अमृत आप बरसाईआ। वेखे काया माटी जगत उजाड़, तन खेड़ा दए वसाईआ। पंच विकारा अंदरों कढ्ढे कूड़ी धाड़, धर्म दवारा इक्को इक जणाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल साचा लाड़, लख चुरासी आत्म परमात्म हो के लाड़ी लए बणाईआ।सतिजुग सच्चा होवे धर्म, धर्म दी बाण आप जणाइंदा। कर्मी करे आपणा कर्म, करमकांड लोकमात रहिण ना पाइंदा। झगड़ा चुक्के वरन बरन, दीन मज़्हब ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। पुरख अबिनाशी घट निवासी ढोला सारे इक्को पढ़न, शब्द राग नाद गृह मन्दिर आप सुणाइंदा। साची मंज़ल सच दवारे वड़न, चार कुण्ट अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। सचखण्ड दुआर प्रभ भगतां आपे आए खड़न, लख चुरासी विच्चों वेख आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित दो जहानां पृथ्मी आकाश करनी दा करता कुदरत दा मालक कादर करीम इक्को नज़री आईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ समुंद सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी मेघा ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म तेरा नेड़े समां जग, नेरन नेरा नज़री आईआ। जो जन पुरख अकाल सरन सरनाई गया लग्ग, माया ममता मोह चुकाईआ। जगत तृष्ना बुझा अग्ग, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। दर्शन करे चढ़ उपर शाहरग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। नाद सुणे अगम्मी अनहद, धुन आत्मक राग बेपरवाहीआ। अमृत आत्म पीए रस, निझर झिरना अगम्म झिराईआ। जोती नूर होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आत्म परमात्म मिल जाए साथ, विछोड़ा रहे ना राईआ। साचे मण्डल वेखे रास,

सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, जगत समाज समझ किसे ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवे दात, नाम भण्डारा इक वरताईआ। उन्हां गुरमुखां अंदरों निकल गई कलयुग अन्धेरी रात, अज्ज दी रात सुहञ्जणी भगतां दा रूप लए बदलाईआ। प्रभ चरण वसण पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़न घाट, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। जन भगतां मंज़ल पूरी होई वाट, पाँधी पन्ध ना कोए भवाईआ। जिन्हां दे अन्तर आत्म परमात्म वस्या साथ, सगला संग निभाईआ। खुशीआं विच करे हास बलास, रंग अनोखा दए चढ़ाईआ। उन्हां दी सतिजुग सदा इक्को जही रखे प्रभात, अन्ध अन्धेर नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखो अंदर वेखो मार झात, परदा ओहला आप उठाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हो ताक, त्रैगुण अतीता लहिणा दए मुकाईआ। आपणा आप आपे लभ्भो ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म रूप दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा सति सति दए समझाईआ। सतिजुग साचा सदा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध ना कोए वखाईआ। जो गुरमुख सतिगुर दे वस गए खेड़े, नाता कूड़ कूड़ तुड़ाईआ। मन वासना मुक गए झेड़े, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। ओन्हां दे परम पुरख परमात्म आपे आ जाए वेहड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलयुग सतिजुग दोहां दा फ़ैसला हकीकत हक विच्चों नबेड़े, अदल इन्साफ़ आपणा आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे घर दए समझाईआ। सतिजुग सच्चा नहीं कोई दूर, मंज़ल मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिन्हां दे अन्तर पुरख अकाल हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के बैठा डेरा लाईआ। जोती जलवा देवे नूर, शब्द अनाद करे शनवाईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, सच सुच दए वरताईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, नाम धन्दे दए लगाईआ। आसा तृष्ना करे पूर, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति दवारा इक वखाईआ। सतिजुग कदे ना होवे दुराडा, दूरन दूर नज़र कोए ना पाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर पतिपरमेश्वर मन्नया आखा, आख़र मंज़ल चढ़ के बैठे डेरा लाईआ। ओन्हां दवारे सतिजुग सदा दासी दासा, सेवक हो के सेवा आप कमाईआ। जिन्हां दा मार्ग आत्म परमात्म साचा, सच सुच संजम इक्को इक बणाईआ। भाग लग्गे काया माटी काचा, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। वेला वक्त सो सुहञ्जणा भागा, जिस वेले आदि निरँजण करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया दुरमति मैल रहे ना दाग़ा, पतित पुनीत ठांडा सीत दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर सतिजुग साचा सदा सदा रखे धर्म दा समाजा, कूड़ कुड़यारा गुरमुखां नेड़ कदे ना आईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ मिलखा सिँघ दे गृह पिण्ड माढ़ी मेघा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग सच्चा प्रभ चरण कँवल प्यार, बिन सतिगुर किरपा सतिजुग कम्म किसे ना आईआ। जित्थे अमृत बरखे सदा ठंडी धार, अमिउँ रस अमृत दए बरसाईआ। काया हट्ट अग्नी तत करे ठंडी ठार, माया ममता मोह ना कोए तपाईआ। जन्म कर्म दा लेखा दए नवार, लख चुरासी फंद कटाईआ। साचे गृह करे धुर दरबार, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को दए वखाईआ। जित्थे दीवा बाती कमलापाती इक्को करे उज्यार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सदा भगत भगवन्त लग्गी रहे बहार, गुलशन धुर दा आप महकाईआ। खेड़ा उजड़े ना कदे जुग चार, कोटन कोटि जुग इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ठांडे दरबार दए माण वड्याईआ। नाता तोड़ के कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। धुर दा बख्श अगम्मी नूर, नूर नुराना चन्द चमकाईआ। जगत दलिद्र दुःख कर के दूर, दुरमति मैल साफ़ कराईआ। नज़री आवे हाज़र हज़ूर, धुर दरबारी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्को दए प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारा सतिजुग साची ओट, पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाईआ। भाग लग्गे काया माटी साचे कोट, बंक दुआर साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। जित्थे मन वासना ना रहे कोई रोग, जगत तृष्ना ना कोए सताईआ। इक्को मिले दरस अमोघ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मेला होवे निरगुण जोत, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच गृह दए वखाईआ। सतिजुग माणण दा जिन्हां गुरसिखां चाअ, आसा मनसा विच्चों प्रगटाईआ। सो दिवस रैण घड़ी पल अठ्ठे पहर पुरख अकाल दा जप्यो नाँ, माया ममता मोह चुकाईआ। काया मन्दिर अंदर सुहाओ सच्चा थाँ, भगत दवारा सोभा पाईआ। रसना लाओ ना सूर गाँ, अमृत रस पी के नाम खुमारी लैणी चढ़ाईआ। हँस बुद्धी रहे ना काँ, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। देवे वड्याई परम पुरख सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह आपणा रंग रंगाणीआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगत वछल कृपाल कोट जन्म दो बख्श गुनांह, पतित पुनीत पवित दए कराईआ। जो जन सरन सरनाई डिग्गे आ, मन का मोह अभिमान मिटाईआ। तिस साहिब सतिगुर बाहों पकड़ लए उठा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। खेवट खेटा दो जहानां बणे हक मलाह, नईआ नौका आपणा नाम उठाईआ। लै के जावे दरगाह साची सचखण्ड साचे थाँ, जित्थे ना कोई पिता ना कोई माईआ। जित्थे ना कोई भैण ना कोई भ्रा, साक सज्जण सैण नज़र कोए ना अन्तिम आईआ। जोती जोत लए समा, करे खेल बेपरवाहीआ। देवे वड्याई अगम्म अथाह, जो जन चरणी लग्गे आ, सतिजुग साचा दए वखा, जित्थे कलयुग रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धर्म दवारा इक्को इक सुहाईआ। जिस जन सतिजुग होवे बहणा सति धर्म दा ध्यान लगाईआ। वसणा होवे साचे देसा, नाता कूड़ जगत तुड़ाईआ। ओस सुणना इक नाम धुर संदेसा, जो संधया सरघी इक्को रंग रंगाईआ। मातलोक विच आत्म हो के आए परदेसा, बेवतनां वतन दए वखाईआ। जित्थे कलम शाही दा नहीं कोई लेखा, कागद काग़ज़ शाही वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को परम पुरख परमात्म वाहिद बैठा नर नरेशा, नर नरायण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित साध सन्त भगत भगवन्त आत्म परमात्म देवे साचा वर, वर दाता पुरख बिधाता, कलयुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा सच करे प्रकाशा, जो जन शब्द सतिगुर उत्ते रखे भरवासा, संसा रोग ग़म चिन्ता हिंसा अंदर बाहर रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ मनी सिंघ दे गृह पिण्ड सिधवा ज़िला अमृतसर ✪

साची शरन श्री भगवान, जुग चौकड़ी जन भगतां देवे माण वड्याईआ। शब्द निधाना देवे दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे विच्चों जहान, माया ममता मोह चुकाईआ। सुरती देवे शब्द ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ।

१०२३ १९ नेत्र लोचन नैण खोल्हे अक्ख महान, परदा ओहला आप उठाईआ। साचा मन्दिर दस्से वाली दो जहान, सचखण्ड दुआर १०२३ १९

एकँकार इक्को इक सुहाईआ। सन्त सुहेला इक अकेला गुणवन्त होवे मेहरवान, महबूब मुहब्बत इक समझाईआ। लख चुरासी आवण जावण चुक्के काण, जम की फाँसी रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दए वड्याईआ। साची सरन पुरख अबिनाश, देवणहार सच्ची वड्याईआ। मानस जन्म करे रास, दुरमति मैल धवाईआ। साची जोत करे प्रकाश, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया करे घात, मन विकार काया मन्दिर रहिण ना पाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द आपणा नाम करे रुशनाईआ। जन भगतां देवे आत्म परमात्म हो के साथ, सगला संगी इक्को अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दवारे आपणी मंज़ल घाट, अद्धविचकार सके ना कोए अटकाईआ। साची ओट पुरख समरथ, नित नित आपणी दया कमाईआ। जन भगतां हिरदे जाए वस, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। नाम अणयाला तीर मारे कस, तिक्खी मुखी धार आप चलाईआ। कूड़ कुड़यार तन विकार देवे मथ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। वस्त अमोलक साची धार अंदर देवे रख, रखक हो के सेव आप कमाईआ। आपणे मिलण दी साचे सन्तां खोल्हे अक्ख, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। अमृत नाम निझर रस देवे हस्स हस्स, हस्ती

विच मस्ती नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम जैकारा दस्से इक अलख, अलख अगोचर भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। साची सरन पुरख अबिनाशी, एथे ओथे दो जहान दे वड्याईआ। साचे मन्दिर अगम्म अथाह वखाए रासी, गोपी काहन सुरती शब्दी इक्को रंग रंगाईआ। करे खेल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कमलापाती, बेअन्त बेपरवाह परदा ओहला दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दो जहानां बणे सगला साथी, आवण जावण पतित पावन लेखे दए लगाईआ। जन भगतां नाम निधान सुणाए धुर दी साखी, साख्यात हो के आपणा दरस दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम संदेसा देवे धुर दी पाती, पत्रका इक्को हथ्थ फड़ाईआ। साची ओट पुरख अकाल, अकल कलधारी दया कमाईआ। जिस दवारे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। त्रैगुण माया ना रहे जंजाल, पंज विकार ना कोए लड़ाईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। लोकमात करे संभाल, सम्बल निरगुण जोत कर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकावे शाह कंगाल, राउ रंक वेखे थाउँ थाँईंआ। भगत सुहेले सन्त सज्जण लए भाल, गुरमुख गुरसिख खोज खुजाईआ। लख चुरासी विच्चों बणा के आपणे लाल, लाल गुलाला दीन दयाला इक्को
१०२४ रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अंदर साचा मन्दिर दस्से धुर दी धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक प्रगटाईआ। शब्द नाद धुन १०२४
१६ अगम्मी वजाए ताल, जगत तलवाड़े दी लोड़ रहे ना राईआ। साचा दीपक जोत जगे बेमिसाल, जिस दी मिसल जगत १६
ना कोए समझाईआ। जन भगतां सच दुआर एकँकार इक इकल्ला मिले आण, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी सति पुरख सति धर्म लोकमात बिन वरन जोत ज़ात पात भगत भगवन्त मेला कर के साचे सन्त, अनन्त कल आपणी दए समझाईआ।

✪ १३ सावण शहिनशाही सम्मत २ मोता सिंघ, दलीप सिंघ दे गृह पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग धारा प्रभ बदले वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर खुशी सर्ब मनाण, सचखण्ड दवारे वज्जे सर्ब वधाईआ। करे खेल योद्धा सूरबीर वड बलवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म मनाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं पाए इक्को आण, चार कुण्ट दहि दिशा सिर सके ना कोए उठाईआ। साचा नाम मंत्र निरंतर दस्से इक ज्ञान, बोध अगाध शब्द अनाद ब्रह्म पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर करे परवान, सोहला

ढोला नाम विचोला इक्को राग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दा गावे इक्को ढोला, ढोआ लोकमात जणाईआ। शब्द गुरू होवे विचोला, विचला भेव देवे खुल्हाईआ। आत्म परमात्म सांझा होवे बोला, निरगुण मिल के निरगुण खुशी वखाईआ। मनुआ मन ना पावे रौला, हाहाकार ना कोए लोकाईआ। मिले वड्याई उपर धरनी धरत धौला, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा सति सतिवादी आप समझाईआ। सतिजुग साचा दस्से नाम अगम्मी एक, एकँकार करे पढ़ाईआ। वरन बरन दस्से साची टेक, टिक्के मस्तक दए रमाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे रेख, जूठ झूठ जगत अपराध साध रहिण कोए ना पाईआ। लेखा रहे ना किसे मुल्ला शेख़, मुसायक पीर रोवण मारन धाईंआ। पंडत पांधा लए कोई ना भेंट, बारां रासी विच पुरख अबिनाशी ना कोए फसाईआ। सब दी सुरती करे चेतन चेत, चित वित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक इकल्ला आत्म परमात्म करे साचा हेतन हेत, सच प्यार एकँकार शब्दी धार आप समझाईआ।
१०२५ सति धर्म सतिजुग साची देवे शांत, धीरज धीर सर्ब बंधाईआ। जन भगत उपजाए खेल करे बहु बिध भांत, निरगुण सरगुण १०२५
१६ सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। साचे सन्तां लख चुरासी विच्चों पुच्छे बात, वातावरन वरन बरन खोजे थाउँ थाँईंआ। १६
लेखा जाणे ब्रह्मण्ड खण्ड पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन अठारां बरन बणाए धुर दी सच जमात, ज़ामन हो के रामन हो के कामन कामनी दए खपाईआ। सतिजुग साचे प्रभ साचा देवे आप सबूत, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज तत कलबूत, कलमा धुर दए पढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हक वखाए अर्श अरूज, ज़िमीं असमानां डेरा ढाहीआ। सच चढ़ाए मंज़ले मकसूद, मसला इक्को दए दृढ़ाईआ। कलमा दृढ़ाए हजारा दरूद, दर होर ना कोए फिराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दिसे हाजर मौजूद, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। लहिणा देणा झगड़ा मुकाए तन वजूद, वुज़ू बांग रोज़ा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक प्रगटाईआ। सति धर्म सब दे अंदरों खोल्हे राज़, रहमत आपणी आप कमाईआ। धुर दा कलमा लेखा जाणे कायनात, काइदा कानून अंदरों दए बदलाईआ। नाम अगम्मी वजाए रबाब, अहिबाब हो के करे आप शनवाईआ। जुग चौकड़ी पूरब रखे याद, अभुल भुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा खेड़ा करे आबाद,

आबादी भगतां विच सहिजे सहिजे दए टिकाईआ। साचा सतिजुग सब दा नूर, नूर नुराना आप चमकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दे मज़दूर, नित नवित सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बदल के आपणा दस्तूर, दस्त बदस्त लेखा सब दा दए मुकाईआ। सतिजुग साचा लोकमात धर्म दी धार धरे ज़रूर, ज़रूरत भगतां वेख वखाईआ। सच प्रेम प्यार मुहब्बत विच करे मजबूर, मुश्कल विच्चों मुसीबत मुसीबत विच्चों ग़नीमत आपणा नाम दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा सति सतिवाद आपणा नाम समझाईआ। सतिजुग साचा मातलोक देवे इशारा, ऐशो इशर्त कूड़ा रहिण कोए ना पाईआ। माया ममता मोह दूर होवे किनारा, तट किनारा ख़ाली दए कराईआ। साचा नाम शब्द बोध अगाध बोल जैकारा, जै जैकारा सृष्ट सबाई दए समझाईआ। निर्मल दीआ जोत कर उज्यारा, चार कुण्ट दहि दिशा करे शनवाईआ। सतिजुग साचा सच वरते वरतारा, जिस दा वारस विरसे दा मालक श्री भगवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहान हुक्में अंदर बणे सच सिक्दारा, नाम फ़रमान श्री भगवान गुण निधान नौजवान मर्द मर्दान इक इकल्ला नव सत महल्ला जलां थलां पहाड़ टिल्ले पर्बत चोटी समुंद सागर आप जणाईआ। सतिगुर शब्द करे सच किरपा, किरपा निधान दया कमाईआ।

मानस जन्म दी कटे बिप्पता, प्रीतम प्रीती विच समाईआ। तीजी वारा जन्म विच्चों जन्म बदले फेर सिख दा, सिख्या विच साख्यात दए समझाईआ। अन्त वेला जेहड़ा किसे नहीं दिसदा, सतिगुर शब्द दए दृढ़ाईआ। जो प्रभ चरण दवारे विकदा, हरि करता आपे कीमत देवे पाईआ। जन भगतो एह लहिणा नहीं कोई इन्द्र सिँघ इक दा, सारयां उत्ते रैहम कर के मौत दा सहिम अंदरों दए कढाहीआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे प्यार होवे सच्चे हित दा, हितकारी हो के निरँकारी हो के निराकार साकार दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नेत्रां नाल जगत जीवां नहीं दिसदा, जन भगतां अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के आत्म परमात्म फड़ के घर घर मेला रिहा मिलाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिखां जुग जुग सार संभालदा, महासार्थी परमारथी दया कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत विच्चों भालदा, अनखोजत खोज खोज खोज लए उठाईआ। झगड़ा मुकावे कूड़ क्रिया जंजाल दा, परदा ओहला आप उठाईआ। सच दवारा इक

वखालदा, जिस गृह मिले माण वड्याईआ। जन भगतां सदा संगी होवे नाल दा, नालायक लायक लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस जन्म लेखे लाईआ। गुरमुखां सदा पैज संवारे, प्रितपालक दया कमाईआ। देवे वस्त नाम हरि थारे, थिर घर दवारा इक्को दए समझाईआ। अमृत बख्श अमिउँ रस ठंडी धारे, धरनापत धरनी धरत उत्ते सोभा पाईआ। साचा दस्से सच घर इक दवारे, धाम अवल्लड़े दए बहाईआ। जित्थे काल महाकाल चले ना कोए चारे, चारे खाणी लेखा दए मुकाईआ। गुरमुखां सार सदा समाले, समें दा मालक समें विच दए वड्याईआ। जो नाम प्रीती घाल रहे घाले, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सिक्खां सार समालण योग, जगत मालक इक अख्वाईआ। कर्म कर्म दा कट रोग, सति धर्म दा बन्धन पाईआ। दरस विखा नेत्र अमोघ, निज नैण करे रुशनाईआ। रसना रस देवे अमृत चोग, चुग़ली निंदया कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर रखाईआ। करे प्रकाश निरगुण साची जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतां समाले सार, साह साह वेख वखाईआ। बख्शे सच प्यार, चरण प्रीती विच वड्याईआ। मानम जन्म जाए संवार, स्वार्थ जगत ना कोए रखाईआ। साची मंज़ल जावे चाढ़, ठांडे दरबार दए वड्याईआ। जित्थे वसण गुर अवतार, पैगम्बर सोभा पाईआ। जन भगत सोहण ओसे घर बार, जिस दा मालक इक्को नज़री आईआ। चुरासी विच ना आवण दूजी वार, जूनीआ विच ना कोए भवाईआ। विछोड़े विच होणा ना पए खुआर, ग़मी दी चोट ना कोए लगाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, मुश्कल घाटी दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सदा बेड़ा करे पार, पारब्रह्म हो के आपणी सेव कमाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी सुरजीत कौर दे गृह पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां सार समाल सदा प्रभ वेखे, वेखणयोग इक अख्वाईआ। जन्म कर्म दी बदल देवे रेखे, ऋषीआं मुनीआं नूं अगला घर दए वखाईआ। जित्थे मिलदे नाम शब्द संदेशे, सुत्यां सतिगुर आप उठाईआ। हुक्म फ़रमान अगम्मा भेजे, भजन बन्दगी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, कूड़ कुड़यार मेट के रेखे, रकशक बणे आप गुसाँईंआ। सार समाल समाले सुरत, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। नाम निधाना देवे तुरत, तुरीआ पद दा परदा लाहीआ। नूर उपाए अकाल मूर्त, अकल कलधारी वेस वटाईआ। स्वच्छ सरूप दस्से आपणी सूरत, रूप रंग रेख ना कोए दिसाईआ।

नाड़ा तोड़ के कूड़ो कूड़त, कूड़ कुटम्ब दए छुडाईआ। माण वड्याई बख्श के मूर्ख मूढ़त, मुढ दा भेव दए खुल्हाईआ। आसा मनसा सब दी करे पूरत, पूरन इच्छया कर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, खेल करे सदा आपणी आप ज़रूरत, ज़रूरत दा कारन आपणे हथ्थ रखाईआ। सार समाल सदा प्रितपाले, प्रितपाले हथ्थ वड्याईआ। जो साचे नाम दी घालण रहे घाले, घायल होण तों लए बचाईआ। अंदर बाहर चले नाले, नालिश मन दी दए मिटाईआ। साचा मार्ग दस्से सुखाले, सुलहा नाल समझाईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाले, कोझे कमले जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड वखाए दरगाह सच्ची धर्मसाले, धर्म दवारा इक्को इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, दूसर देवे ना कोए हवाले, हुक्म आपणा इक मनाईआ। सार समाले सदा हज़ूर, हाज़र हो के दया कमाईआ। सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब थाँईंआ। भगतां देवे नाम सरूर, सोई सुरती आप उठाईआ। पन्ध मुका के अग्गे पिच्छे नेड़े दूर, घर ठांडे डेरा लाईआ। भगत उधारना प्रभ दा आदि जुगादि दस्तूर, एसे कारन मशहूर हो के लोकमात लए माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूर, पूरी इच्छया पा के नाम भिच्छया पूर दए कराईआ।

१०२८
१६

१०२८
१६

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी बीरो दे गृह पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुख उधरे हरि सतिगुर चरणां, चरणामत पी के खुशी मनाईआ। साची मिले धुर दरगाह दी सरना, साहिब समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जीवत जीअ पए मरना, मर के आपणा जीवण करे रुशनाईआ। धुर दा हुक्म पए पढ़ना, पंडयां वाली ना कोए पढ़ाईआ। साचे घर पए चढ़ना, कूड़ी ममता मोह मिटाईआ। हरि सतिगुर दर्शन पए करना, निज लोचन अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे इक सुहाईआ। जन भगतां पुरख अकाल सदा सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। दीन दुनी दा पार करे किनारा, नईआ सईआ आपणे कंध उठाईआ। सच प्रीती बख्शे चरण दवारा, निरँकारा एकँकारा होए सहाईआ। धुर दा दस्से नाम जैकारा, जै जैकार अंदर आपणा आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। साचे सन्तां प्रभ देवे नाम अमुल्ल, अनमुल्ल कीमत कोए ना लाईआ। साचे कंडे तोले तोल, दूजा तक्कड़ हथ्थ ना कोए उठाईआ। नाम भण्डारा देवे अभुल्ल, भुल्लयां दए समझाईआ। भाग लगा के साची कुल, गुरमुख गुरसिख लए प्रगटाईआ। हीरा माणक मोती गुरसिख ना जाए

रुल, जगत क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जन भगतां देवे धुर दी गाथ, गहर गम्भीर समझाईआ। पूरब लहिणा चुके मस्तक माथ, जन्म जन्म दा लेखा झोली पाईआ। स्वामी हो के निज घर करे वास, वसल असल दस्से हरि साचे नूर खुदाईआ। साचा नूर करे प्रकाश, कदम कदम मंज़ल पन्ध मुकाईआ। मानस जन्म करे रहिरास, रस्ते विच ना कोए अटकाईआ। आवण जावण होवे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। सदा सदा सद बख्शे चरण कँवल निवास, सचखण्ड दवारे देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पूरी करे आस स्वास स्वास लेखा आपणे नाल रखाईआ।

१४ सावण शहिनशाही सम्मत २ शाम सिँघ दे गहि पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर

जन भगत बणे सच्चा बरदा, बन्दीख़ाना बन्द तुड़ाईआ। दर्शन करे सचे सतिगुर दा, सोई सुरत आप उठाईआ। लेखा
१०२६ मिले सचखण्ड साचे आनंदपुर दा, जित्थे दूजा रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, १०२६
१६ आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल करे आपणी लोड़ दा, धुर दा हुक्म आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां सदा मनसा करे १६
पूर, आसा तृखा बुझाईआ। सर्ब गुणां भरपूर, दयावान दया कमाईआ। देवे दरस ज़रूर, पड़दे ओहले अंदरों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, साचे नाम दी दे के तूर, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जन भगतां रंग चाढ़े धुर दा सच्चा, रंगणहारा इक अख्वाईआ। गुरमुख बणाए आपणा बच्चा, बचपन आपणी गोदी चरण कँवल दए दरसाईआ। अगला मार्ग दस्से सच्चा, कूड़ी क्रिया छड्ड पढ़ाईआ। सच दुआर दर देवे पता, पतिपरमेश्वर परदा ओहला आप उठाईआ। आपणे मिलण दी दे के अक्खा, आख़र आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे दा ना बणया सका, रिश्ता इक्को इक आत्म परमात्म लए बणाईआ।

१४ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रताप सिँघ फुंमण सिँघ दे गृह पिण्ड कलसयां ज़िला अमृतसर

जन भगतां सदा जन्म मरन कटदा, काया विच्चों बाहर कढाहीआ। भण्डारा देवे नाम अगम्मे हट्ट दा, वस्त अमोलक

वरते बेपरवाहीआ। झगड़ा मुकावे तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ दा, सरोवर साचे दए नुहाईआ। इशारा दस्से अगम्मी अक्ख दा, निज लोचन कर रुशनाईआ। जैकारा दस्से आपणे नाम सच दा, ढोला इक्को इक उपजाईआ। झगड़ा रहे ना मन मति दा, गुरमति आपणे रस्ते लाईआ। होवे मेल कमलापति दा, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेला करे आपणे संग दा, संगी साथी कूड़े मूर्ख मूढ़े सारे दिते भुलाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुलाब कौर गृह पिण्ड डल ज़िला अमृतसर ✪

बिन सतिगुर पूरे कोई ना उतरे पार, लख चुरासी आवण जावण जम की फाँसी ना कोए तुड़ाईआ। दु:ख रोग चिन्ता ग़म सके ना कोई निवार, माया ममता मोह विकार ना कोए तजाईआ। साचा नाम शब्द सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। अमृत बूँद ना मिले ठंडी ठार, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। सृष्ट सबाई रोवे धाहां मार, कलयुग अन्त रहे कुरलाईआ। साचा मिले ना धुर दा मीत मुरार, सन्त सुहेला धुर दा संग ना कोए निभाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करन हाहाकार, उच्ची कूक देण दुहाईआ। घर घर गृह गृह पसारा होया कूड़ विभचार, लोभ मोह हँकार तृष्ना जगत ना कोए बुझाईआ। पिता पूत ना करे कोए प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। बिन सतिगुर किरपा कोए ना उतरे पार, सचखण्ड दवारा वेखण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कोटन कोटि रहे भाल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ आपणा मन रहे परचाईआ। साचा मार्ग सच दुआर सके ना कोए वखाल, आत्म परमात्म मेला मेल खुशी ना कोए कराईआ। जगत वासना दीन दुनी होई बेहाल, ज़ात पात दीन मज़्हब ऊँच नीच राउ रंक करे लड़ाईआ। साचा कलमा धुर दा नाम बेपरवाह अगम्म अथाह ना देवे किसे सिखाल, सिख्या हक हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्त वेखे जगत लोकाईआ। बिन सतिगुर किरपा बेड़ा करे कोई ना पार, कलयुग कह के दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई जगत विकारे होई नार विभचार, कन्त सुहागी पुरख अकाल ना कोए हंढाहीआ। घर घर दिसे धूआँधार, निरगुण जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। जूठ झूठ माया मोह करे सर्ब प्यार, सतिगुर शब्द गा बेड़ा बन्ने कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थल अस्गाह, दो जहानां श्री भगवाना परदा

रिहा उठाईआ। बिना हरि किरपा जगत सागर कोई पार ना जावे लँघ, वञ्झ मुहाणा कोए ना आईआ। साची सेजा ब्रह्म पारब्रह्म चढ़े कोए ना हक पलँघ, सिँघासण आसण मिले ना कोए वड्याईआ। नाम निधान सच दवारे सुणे ना कोए मृदंग, ढोलक छैणे जीव जंत सारे रहे खड़काईआ। निज आत्म निज रस निज गृह निज मन्दिर कोई ना माणे अनन्द, हस्स हस्स हस्ती विच मस्ती नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। सनमुख दरस करे ना कोए पुरख समरथ, महिमा अकथ सुण के शब्दी परदा ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंदर जाए वस, वसल यार नूर करे खुदाईआ। बिन सतिगुर किरपा कोई उतरे ना साचे घाट, नईआ नौका जगत पार ना कोए लँघाईआ। लख चुरासी पैंडा ना मुके वाट, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पैंडा सके ना कोए छुडाईआ। कलयुग मिटे ना अन्धेरी रात, हरि का नाउं चन्द ना कोए रुशनाईआ। साची पट्टी पढ़े ना कोए जमात, निरअक्खर धार समझ किसे ना आईआ। पुरख अकाल घट निवासी बैठा इक इकांत, इक अकल्ला सच महल्ला साढे तिन्न हथ्थ बैठा सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जोड़ के धुर दा नात, रिश्ता आपणे नाल रखाईआ। सति धर्म दर दे विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। कलयुग
१०३१ रैण अन्धरी मेट के वाट, सतिजुग साचा नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां देवे अगम्मी दात, दयावान हो के आप वरताईआ। १०३१
१६ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दवारा इक्को इक सुहाईआ। बिन सतिगुर १६
संसा चुक्के ना रोग, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। धुर दा मिले ना आत्म परमात्म जोग, साची रंगण रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता पतिपरमेश्वर हर घट वेख वखाईआ। बिना सतिगुर किरपा कोई ना दिसे सहारा, सहायक नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत पसारा, कालख टिक्का धोवे कोए ना शाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना जगत होया वणजारा, जूठ झूठ ख़रीदे चाँईं चाँईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होया धुंदूकारा, हाहाकार करे लोकाईआ। जन भगतां दे के इक सहारा, चरण प्रीती साची रीती दए दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा कागद कलम ना लिखणहारा, शाही शान ना कोए वधाईआ। सो आदि जुगादी एकँकारा, इक इकल्ला हुरम वरताईआ। सदा वसे जला थला, समुंद सागर रड़े डूंघर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दर देवे आदर, धाम वखाए जित्थे नूर जोत तेग़ बहादर, गोबिन्द धार शब्द जोत विच समाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी पारो देवी दे गृह पिण्ड खालड़ा ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां सेवा होवे पूरी, सतिगुर पूरा पूर कराईआ। सदा बख्शे चरण हज़ूरी, हज़ूर हाज़र हो के वेख वखाईआ। पन्ध कर्म रहे ना दूरी, निहकर्मी लेखा दए चुकाईआ। लख चुरासी जन्म मरन दी कट मजबूरी, सबूरी सिदक प्रेम प्रीती दए समझाईआ। देवे दर्शन जोत प्रकाश नूरी, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया करे सर्ब कला भरपूरी, भय भउ आपणा इक रखाईआ। जन भगतां लेखे लाए प्रभ मज़दूरी, जो चाकर हो के सेव कमाईआ। अगे विछाउणीं ना पए कोए फूड़ी, अभ्यास जोग ना कोए कराईआ। अंदरों कढ्ढ वासना कूड़ी, कुटम्ब कूड़ा दए तजाईआ। कर प्रकाश आपणा नूरी, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम दी देवे मज़दूरी, नाम निधाना झोली पाईआ। जन भगतां पैज लए राख, रक्ख्या करे थाउं थाँईंआ। सृष्टी नाल कर मज़ाक, मजलस मूर्खां वाली जणाईआ। गुरमुखां आत्म परमात्म कर इतफ़ाक, नफ़ाक अंदरों दए कढाहीआ। मनुआ रहिण ना देवे गुस्ताख़, गुस्सा ग़म ना कोए सताईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा करे बिबाक, बाकी हरि जू हथ्थ फड़ाईआ। साचे सन्तां बण के साचा बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। कलयुग अन्त हरि किरपा दया कर के आप, आपणा मार्ग दिता लगाईआ। सोहँ दस्स के धुर दा जाप, सति सच विच लए समाईआ। सब दी पूरी कर के आस, तृष्ना तृखा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सेवा कदे ना जाए बिरथा, मानुख जन्म ना कोए रुलाईआ। लहिणा देणा देवे सद सिर दा, घर घर खोज खुजाईआ। ठिकाणा देवे घर थिर दा, वड्डा छोटा इक्को रंग वखाईआ। करे खेल प्रभ जो विछिड़या चिर दा, जगत विछड़े लए मिलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां लख चुरासी अंदर फिरदा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां नाल मुहब्बत विच निबड़दा, नबेड़ा अगला दए कराईआ। एह खेल नहीं कोई सिल पूज पत्थर दा, साख्यात होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जन भगतां कदे ना तुट्टे मिलाप, हरि जू मिल मिल खुशी मनाईआ। साचा नाता जोड़के साक, निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। शब्द अनादी दे आवाज़, राज़ अंदरों दए खुलाईआ। जन भगतां मानस जन्म देवे साध, साधना आपणी इक दृढ़ाईआ। जित्थे रहे ना कोए विवाद, दु:ख सति रूप वटाईआ। सति धर्म दा खेड़ा कर आबाद, आबादी भगतां दए वसाईआ। धर्म दी धार दा होवे राज, रईयत इक्को इक समझाईआ। जन भगतां

१०३२
१६

दे के दात, दयावान झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त जन भगतां दे सौग़ात, सगली चिन्दा दए गवाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुरजन सिँघ दे गृह पिण्ड भुच्चर ख़ुरद ज़िला अमृतसर ✪

भगतां घाल लग्गे लेखा, घाली घाल थाएँ पाईआ। संसा भरम ना रहे कोई भुलेखा, भरम विच ना कोए भुलाईआ। किरपा करे नर नरेशा, नर नरायण नैण आपणा इक खुल्ह्राईआ। जोती जामा धार के भेसा, भस्म माटी ख़ाक दए वड्याईआ। जग अवल्लड़ी खेले खेडा, जुग चौकड़ी हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां मिले साची भूम, भूमीं धरनी सोभा पाईआ। जिस नूं समझे ना कोए नजूम, नजूमीआं परदा ना कोए उठाईआ। बन्द करे ना कोई विच कानून, कानून काइदा नेड़ कोए ना आईआ। जिस साहिब दा बिन अक्खरां सदा चले मज़मून, बिन नुकते नुकता दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण

१०३३ नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे बाल मासूम, मासूमां महिरूमां ख़ाली भाण्डे दए भराईआ। १०३३

१६ १६

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द सदा समरथ, आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहार सच्ची वड्याईआ। नाम अमोलक अगम्मी लोकमात देवे वथ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। बोध अगाध महिमा जणाई अकथ, भेद अभेदा अछल अछेदा आप खुल्ह्राईआ। सदा सदा सद चलावणहारा रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के आपणा हक, हकीकत वाला सदा बेपरवाह आप समझाईआ। साचे भगतां सन्तां निज लोचन खोल्ह के अक्ख, प्रतख निरगुण धार नज़र किसे ना आईआ। सच जैकारा एकँकारा बोल अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह दो जहान करे शनवाईआ। सति धर्म नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खोल्ह के आपणा हट्ट, वस्त अमोलक काया गोलक जीवां जंतां आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। जोती धार वसे सच मकान, ऊँच अगम्म अथाह बेपरवाह सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। जिस दा जलवा नूर होवे महान, जोती जाता पुरख बिधाता नूर नूर कर रुशनाईआ। जिस दा योद्धा

सूरबीर शब्दी सुत बलवान, आदि अन्त इक्को रंग वखाईआ। जो विष्न ब्रह्मा शिव करे प्रधान, हुक्में अंदर हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जो त्रै पंज लेखा जाणे विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाह, सतिगुर शब्द सच्चा शहिनशाह, वाली वारस इक अख्वाईआ। जिस नूं ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश रहे सीस झुका, रवि ससि मण्डल मण्डप सिर ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अंदर भज्जे वाहो दाह, चार कुण्ट दहि दिशा सिर ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सेवा रहे कमा, भाणे अंदर सीस निवाईआ। भगत सुहेले मात प्रगटा, नाम निधाना इक जणाईआ। जोती जाता वेस वटा, कलयुग अन्तिम खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर साहिब शब्द सुल्तान, इक्को इक नज़री आईआ। सतिगुर शब्द सर्ब कला भरपूर, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जन भगतां वस्त अमोलक देवे इक ज़रूर, परमात्म आत्म आत्म परमात्म रंग दए चढ़ाईआ। सदा सुहेला इक इकेला नज़री आए हाज़र हज़ूर, दर घर ठांडे सोभा पाईआ। सति जोत करे नूर, ज़हूर आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। साहिब सतिगुर जन भगतां गुरमुखां आसा मनसा सदा पूरे, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। नाता तोड़ के कूड़ कूड़े, कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। नाम रंगण रंग चाढ़ के गूढ़े, अमोलक हीरे लए बणाईआ। चरण प्रीती बख्शे साची धूढ़े, दुरमति मैल दए धवाईआ। प्रेम प्यार अंदर उतारे सगल वसूरे, विख अमृत सर्ब बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। साचे सन्तां प्रभ देवणहारा माण, मन का मणका आप भवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म अन्तर दे के ब्रह्म ज्ञान, साची विद्या दए समझाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की चुक्के काण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साचा मन्दिर महल अटल अगम्म अथाह दिसे इक मकान, मकबरयां दा खैहड़ा दए छुडाईआ। पन्ध मुका के ज़िमी असमान, चरण कँवल दे के इक ध्यान, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी दा करता कुदरत दा मालक सतिगुर सच्चा इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा दीन दयाल, सति पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। जिस दी आदि जुगादि इक्को धर्मसाल, दूजा दर ना कोए वखाईआ। पोह सके ना कोई काल, महाकाल ना कोए सताईआ। जन भगतां पूरा करे स्वाल, आसा मनसा वेख वखाईआ। शब्द गुरू गुर चेला धुर दी धार विच्चों बणे आण, ढोला आपणा नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां गुरमुखां दर कीता परवान, उहनां गुर अवतार पैगम्बर देण माण, सचखण्ड दवारे साचे मिल के इक्को वज्जे हक वधाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर चरण कँवल सच बन्धन, बन्दगी मुशंदगी दी लोड़ रहे ना राईआ। निज आत्म देवे परमानंदन, रस रसीआ इक चखाईआ। साची डण्डावत मन्ज़ूर करे साहिब बख़्शंदन, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। ढोला गाउणा पवे ना कोए बत्ती दन्दन, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। सच प्रकाश चाढ़े नूरी चन्दन, जोती जोत डगमगाईआ। निम वास महका के वांग चन्दन, कूड़ी क्रिया अंदरों बाहर कढाहीआ। जगत दवारा गुरमुख पार लँघण, अगे हो ना कोए अटकाईआ। आत्म सेजा सुहाउणी सेज पलँघण, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। नाम निधान वज्जे मृदंगण, सुर ताल करे शनवाईआ। करे खेल सूरा सरबंगण, घट भीतर परदा ओहला दए उठाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्द मृदंगण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक सुहाईआ। सतिगुर चरण सदा सुख जुग जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। माया ममता मोह विकार तृष्ना रहे ना अग्ग, हउमे हंगता हँकार ना कोए जणाईआ। कूड़ी क्रिया झूठा नाता जावण छड्ड, आत्म परमात्म मिल के वज्जे सच वधाईआ। झगड़ा मुके तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, निझर मिले अमृत रस, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दी लोड़ रहे ना राईआ। सुरती शब्दी होवे वस, मनुआ दहि दिशा ना जाए नस्स, भय भउ इक वखाईआ। निज नेत्र खुल्ले अक्ख, सतिगुर नज़री आईआ। जोती जाता पुरख बिधाता वस्त अमोलक देवे वथ, जलवा नूर करे रुशनाईआ। किरपा करे पुरख समरथ, दीन दयाल दयानिध ठाकर मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मिलाईआ। मालक दिसे इक्को सच्चो सच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा एकँकारा इक इकल्ला दए वखाईआ। सतिगुर शब्द देवे सच संदेसा, सोई सुरती आप उठाईआ। हुक्में अंदर खेल करे नर नरेशा, नर नरायण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ देस परदेसा, गगन गगनंतर ज़िमीं असमान खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त मंगणहारा लेखा, चार कुण्ट दहि दिशा बचया रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणा आप जिस नूं कर के गए भेंटा, तन माटी ख़ाक लोकमात नाता गए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया दा अन्त कन्त भगवन्त कढ्ढे भुलेखा, वड विभचारी कूड़ संसार रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा धारे भेखा, रूप रंग रेख जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ, हरी सिँघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल रखो सहारा, चार वरन अठारां बरन दीन मज़्हब इक ध्यान लगाईआ। जो आत्म परमात्म करे सच प्यारा, प्रीतम हो के परवरदिगार आपणी दया कमाईआ। वस्त अमोलक अगम्मी नाम देवे थारा, सचखण्ड निवासी थिर घर देवे माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया पंज तत लहिणा देणा चुकाए विच संसारा, लख चुरासी जम की फाँसी पतित पावन आवण जावण दए कटाईआ। दरगाह साची ऊँच महल अटल बख़्शे सच दवारा, धाम अवल्लड़ा इक इकल्लड़ा इक्को इक वखाईआ। जित्थे दीवा बाती कमलापाती निरगुण जोत करे उज्यारा, रवि ससि सूरज चन्न नज़र कोए ना आईआ। कागद कलम शाही लेख लिखे ना कोई बण लिखारा, चौदां विद्या जगत बुद्धी सोभा कोए ना पाईआ। करे खेल आप निरँकारा, निरगुण निरवैर निराकार ख़ुशी वखाईआ। जन भगतां एथे ओथे दो जहान निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे प्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ओट इक्को इक जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल रखो इक्को आस, बाल बिरध जवानां साचे घर दए वड्याईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी कर किरपा मेटे प्यास, कूड़ी तृष्ना मन वासना मोह विकार दए गवाईआ। वस्त अमोलक नाम भण्डारा अगम्मी देवे दात, दयावान हो के दातार स्वामी आप वरताईआ। कलयुग अन्ध अन्धेरी जूठ झूठ जगत दुहागण मेटे रात, भिन्नड़ी रैण लोकमात करे रुशनाईआ। झगड़ा मुकाए दीन मज़्हब ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक दुआर बंक इक्को इक वखाईआ। करे खेल मेहरवान महबूब हरि कमलापात, पतिपरमेश्वर दीन दुनी खोजे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां साचे सन्तां सच दवारे आप पुछे बात, मित्र प्यारा हो के परदा ओहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दरस दिखाए साख्यात, सिख़र चोटी चाढ़ के मंज़ल आपणी दए वखाईआ। जन भगतां सिख़र चाढ़े चोटी, चोट शब्द नगारे लाईआ। नाम किरपा अंदरों वासना कढ्ढे खोटी, तृष्ना तमअ ना कोए ताईआ। आत्मा परमात्मा धार दस्से इक्को गोती, वरन बरन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कर प्रकाश अगम्म अथाह बेपरवाह निर्मल जोती, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जिस दुआर बुद्धी सोच कदे ना सोची, उह मन्दिर घर दुआर दए वखाईआ। जिस स्वामी अन्तरजामी नूं लभ्भदे कोटन कोटी, उह परम पुरख परमात्म काया मन्दिर अंदर विच्चों नज़री आईआ। जिस दी वेखण विच धार बारीक सब तों छोटी, वर्तमान विच दूर दूर दूर शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आत्म रहिण ना देवे सोती, जग सुत्यां लए जगाईआ। जन भगतां कर किरपा लाहे आलस निंद्रा, ग़फ़लत विच्चों बाहर कढाहीआ। जाण देवे ना किसे बण बिन्दरा, मथुरा गोकुल फोलण

१०३६
१६

१०३७
१९

दी लोड़ दए गवाईआ। सहारा लैणा ना पए किसे सुरप्त इन्द्रा, सिँघासण सारे दए तजाईआ। कर किरपा जिन्हां दे अंदरों आपे खोल्हे निंद्रा, ज़िंदगी दी बन्दगी बन्दगी दा बन्दा बन्दे दा चन्दा चन्द दा नूर नूर विच्चों ज़हूर सर्ब कलां भरपूर आप वखाईआ। गहर गम्भीर गुणी गहिंदा, दीन दयाल सदा बख़्शंदा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा देणा सब दा दिन्दा, देवणहार समरथ स्वामी इक्को इक एकँकार जन भगत उपजाए आपणी बिन्दा, मूर्ख मूढ़ लगाए आपणी निन्दा, गुरमुख सार पावे जीउ पिण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड काया मन्दिर अंदर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण धार सरगुण सदा वस्त अमोलक दिन्दा, देवणहार बेपरवाह आपणी दया कमाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरदीप कौर दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर शब्द सदा सच संग, दो जहानां सदा सहाईआ। सच प्रीती चाढ़े धुर दा रंग, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। शब्द नाम निधान वजाए मृदंग, अगम्मी राग सुणाईआ। परदा लाह के ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म परदा दए चुकाईआ। कूड़ी मेट के तृष्ना तम, आशा इक्को दए वधाईआ। सतिगुर सरनाई लग्गे मन, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। राए धर्म ना देवे डंन डंका मौत ना कोए वजाईआ। अन्तिम मेला मिले श्री भगवन, जोती जोत विच समाईआ। जन भगत सच दवारे चढ़े साचा चन्न, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। काया माटी ठीकर जावे भन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। जन भगत होवे कदे ना मुर्दा, मुरीद मुर्शद दया कमाईआ। एहो खेल आदि जुगादी शब्दी सतिगुर दा, जो सुत्यां लोकमात उठाईआ। लहिणा देणा दए जन्म कर्म पूरब धुर दा, मस्तक रेखा दए बदलाईआ। जगत जहान गुरमुख बेड़ा कदे ना रुढ़दा, पुरख अकाल दीन दयाल दया कर के पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहार इक सरनाईआ। जन भगतां होणा ना पए ज़लील, ख़ुआरी जगत ना कोए रखाईआ। दरगाह साची इक्को वार सुणी जाए अपील, अपरम्पर स्वामी होए आप सहाईआ। शब्दी हुक्म कर तामील, तुरत आपणे नाल मिलाईआ। जगत वासना विच बदलण ना देवे दलील, मन का मणका देवे भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां दी बन्दगी करे तसलीम, जगत तामील दा लेखा दए चुकाईआ।

✪ १४ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ सति धर्म दा खोलू मेरा हट्ट, कलयुग हट्टीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी वस्त अगम्मी विच रख, नाउँ निरँकारा आप टिकाईआ। साचा मार्ग दो जहान सहिज सुभाओ दस्स, चार कुण्ट दहि दिशा कर पढ़ाईआ। सुरती अंदर तेरे शब्द दा होवे जस, सतिगुर आपणी धार खोलू अक्ख, प्रतख रूप नज़री आवीं गुसाँईंआ। क्यों पड़दे अंदर रिहों ढक, साची धार बाहर कढ्ढ, सिख्या दे मास नाड़ी हड्ड, धुर फ़रमान श्री भगवान आप समझाईआ। पिछली रीती करते छड्ड, अगे परमात्म हो के वध, भगत सुहेले दवारे सद्द, सदा आपणा नाम सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अग्ग, दया कर सूरे सरबग, भगतां चढ़ जा उपर शाहरग, रघुपत हो के रग रग कर रुशनाईआ। जगत बुद्धी रहे ना कग्ग, तेरा नाम सुणन अनहद, ढोला गीत इक्को गावण छन्द, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। नाम खुमारी दे मध, मंज़ल दे दे पहली वार चौथा पद, अगे मिल पुरख समरथ, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। बिन मक्के काअब्यों करा दे एका हज्ज, साचे कलमे नाल कायनात जावे बज्झ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, वरदाते दया कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कबूल कर लै अन्त सलाम, सलामालैकम कह के सीस निवाईआ। शाह सुल्ताने वड अमाम, नूर नुराने बेपरवाहीआ। हकीकी हकीकत वाला दे जाम, ज़ामन हो के आप प्याईआ। सिध्धा आपणे कोलों भेज पैग़ाम, आज़ाद होण गुलाम, ज़ंजीर शरअ देणी कटाईआ। नाम खंजर नाल कर कतलाम, काया माटी अंदर ना रहे हराम, झगड़ा मुका कूड़ तमाम, तमअ दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग बदलणा तेरा काम, सतिजुग लाउणा जगत आसान, लख चुरासी अंदर बणना जगत किसान, अमृत जल देणा बीआबान, गुरमुख बूटा लाउणा सुघड़ सुजान, सन्त फ़कीर पल के होवे जवान, शाह हकीर इक्को रूप नज़री आण, दो जहान तेरा हुक्म होवे फ़रमान फ़रमांबरदार आपणे आपणे विच्चों लै प्रगटाईआ।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पंज तत मिले वड्याईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, त्रैगुण माया लेखे लाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना दए गवाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सति सतिवादी होए ना कोए लड़ाईआ।

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बुध बिबेक दए बणाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नौ दवारे पार कराईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, कूड़ी क्रिया जूझ झूठ हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुखमन टेडी बंक पार लँघाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द अनादी धुन दए उपजाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत रस जाम प्याईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म सेजा पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुरती शब्दी मिल के दस्म दवारी इक्को वज्जे वधाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेहरवान महबूब दस्म दवारी विच्चों बाहर कढाहीआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उच्च अरूज अगम्म अथाह आपणा खेल वखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुन्न समाध रहिण ना पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, थिर घर दवारा बिन अक्खां दए जणाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, साचे कँवल चरण दए सरनाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बैकुण्ठ निवासी साचे धाम दए टिकाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत जोत मिलाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी आपणी रासी रस्ते आपणे विच्चों पार कराईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बख्शे चरण ध्यान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेटे माण अभिमान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम भण्डारा देवे दान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द सुणाए बिन रसना कान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, भाग लगाए काया माटी सच मकान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर ठाकर स्वामी मिले आण। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दीपक जोत जगदा रहे महान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सच भूमिका मिले सच अस्थान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, एथे ओथे मेला मिल्या रहे श्री भगवान। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति पुरख निरँजण धुर दा काहन। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चिन्ता ग़म रहे ना हरख़ सोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, माटी चम्म अंदरों बाहर कढ्ढे ममता रोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम निधाना चुगाए साची चोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चरण प्रीती दस्से अगम्मी जोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म सेज सुहञ्जणी जणाए इक्को भोग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, वज्जे वधाई साचे काया कोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्द अगम्मी लग्गे चोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना रहे ना खोट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर साचे मिले धुर दी

जोत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अन्तकाल कल पोह ना सके मौत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जुग चौकड़ी कदे ना जावे औंत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सचखण्ड दवारे बिन डण्डे पौड़ी जाए पहुंच। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अकाल दीन दयान परवरदिवार हंढाए इक्को खौंत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मन्दिर आप सुहाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिटे दु:ख रोग संताप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, कोट जन्म दे उतरे पाप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्याई लोकमात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाता तुट्टे कूड़ सज्जण साक। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बन्द किवाड़ी खुल्ले ताक। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नाम निधान सुणाए सच्ची गाथ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, वस्त अमोलक मिले दात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मेटे रैण अन्धेरी रात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अबिनाशी पुछे बात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दुरमति मैल देवे काढ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, साचा वणज कराए आपणे हाट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, झगड़ा मुकाए तीर्थ ताट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जन्म कर्म दी पूरी होवे वाट। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्दी शब्द सुणाए बात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, नज़री आवे साख्यात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, सदा सुहेला देवे आपणा साथ।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जगत संताप ना व्यापे दुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जन्म कर्म दी तृष्ना मिटे भुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उज्जल होवे मात मुख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्याई जनणी कुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, गुर शब्दी धार बणाए आपणा सुत। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आवण जावण पैंडा जाए मुक। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म मिल के होए खुश। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जगत वासना विकार विच्चों हो जाए चुप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, होए प्रकाश अन्धेरे घुप। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उलटा गर्भ ना होवे रुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आवे जावे सदा जामा पाए मनुक्ख। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, गलों टुट्टे जम की फाँसी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन ममता ना रहे उदासी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, शब्दी गुरू बणे

धुर दा साथी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सुरत सवाणी मन्ने अंदरों आखी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बन्द किवाड़ी खुल्ही रहे ताकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत जाम प्याए धुर दा साकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, भाग लग्गे तन माटी ख़ाकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मनुआ मन रहे ना आकी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, प्रेम प्रीती अन्तर आत्म परमात्म इक्को जाणे ज़ाती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर हरि मन्दिर मिले कमलापाती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अमृत बूँद देवे स्वांती। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मंज़ल औखी चाढ़े घाटी। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बंक दवारा मिले दरगाह साची। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले जोत जोत अबिनाशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लहिणा चुकाए जन्म जन्म जन्म दा बाकी।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ उत्तम सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाता तुट्टे जगत कूड़ो कूड़। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, चतुर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, काया चोली चढ़े रंग गूढ़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शब्द अनादी उपजे अन्तर तूर। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, निर्मल जोती प्रगट होवे नूर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आसा मनसा प्रभ करे पूर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अबिनाशी दरस वखाए हाज़र हज़ूर। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वड्याई सर्ब कला भरपूर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण मुके पन्ध। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जन्म कर्म धर्म आसा मनसा पूरी होवे मंग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लख चुरासी जम की फाँसी कटे फंद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, तूं मेरा मैं तेरा आत्म ढोला सुणे छन्द। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे गंद। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, सच प्रकाश निर्मल जोत होवे चन्द। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, दीन दयाल होवे बख्शंद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साहिब सूरा सरबंग। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले वड्याई लोकमात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, पुरख अबिनाशी सच प्रीती चरण बख्शे दात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, बिन रसना जेहवा अन्तर अन्तर उपजे साची गाथ।

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अन्तर मिटे अन्धेरी रात। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, घर स्वामी ठाकर मिले आप। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कोट जन्म दे उतरन पाप। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस देवे स्वच्छ सरूपी साख्यात।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण रहिण ना पाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पतित पावन दए वड्याईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लख चुरासी जम की फाँसी फंद कटाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भेव खुल्हाए मण्डल रासी, परदा ओहला आप उठाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, वस्त अमोलक देवे नाम दाती, अतोट अतुट आप वरताईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, अठ्ठे पहर रहे प्रभाती, संधया रंग ना कोए वखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, तूं मेरा मैं तेरा इक्को दस्से ज़ाती, पारब्रह्म ब्रह्म परदा आप चुकाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरस वखाए इक इकांती, काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सदा सुहेला बणे कमलापाती, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, इक ध्यान लगाईआ। दरगाह साची देवे थाउँ, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। सच अदालत करे हक न्याउँ, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। बिन हथ्थां पकड़े बाहों, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। घर वखाए निहचल अटल अथाहो, बेपरवाह बेपवराहीआ। जित्थे ना कोई पिता ना कोई माउँ, साक सज्जण सैण नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, चरण कँवल मिले सरनाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, धरत धवल उपर सोभा पाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, उलटा कर नाभ कँवल, अमृत रस विच टपकाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, आत्म परमात्म जावे मवल, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, हरि मेला मेले गहर गम्भीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शांत करे सरीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अमृत जल देवे ठांडा नीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मुख लगाए धुर दरगाही आपणा सीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाला बदल देवे तकदीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, माण वड्याई देवे नाल कबीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, एका रंग रंगाए

शाह फ़कीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी कटे भीड़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, हउमे हंगता कढ्ढे पीड़। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शरअ कटे जंजीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, साची मंज़ल चोटी चढ़े अख़ीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेल मिलावा धुरदरगाही पीरन पीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेला मिले बेनज़ीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कोह ना सके खड़ग खण्डा शमशीर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची धीर। जो जन सिमरे प्रभ का नाउँ, मिले मातलोक वड्याईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अन्तर आत्म वजदी रहे वधाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सुरत शब्द होवे कुड़माईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अगली मंज़ल पैंडा दए चुकाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाल होवे सहाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दीन दयाल दया कमाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, महल अटल काया काअबे होवे रुशनाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लहिणा देणा चुकाए जल थल, समुंद सागर पार कराईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लेखा रहे ना घड़ी पल, पूरब लहिणा दए मुकाईआ।
१०४३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप १०४३
१६ दीपक हो के गृह गृह जाए बल, बलदी अग्न विच्चों गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत बाहर कढाहीआ। १६

१५ सावण शहिनशाही सम्मत २ माई ईश्र कौर दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, उत्तम होवे सृष्टी जग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल सूरा सरबग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, देवे दरस उपर शाहरग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जन्म कर्म दी मेटे अग्ग। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, काया काअबे करावे सच्चा हज्ज। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मोह विकार अंदरों जाए भज्ज। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शब्द अगम्मी वज्जे नाद अनहद। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निझर धार अमृत मिले रस। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निरगुण जोत होवे प्रकाश। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरगाह साची बणे दासी दास। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे देवे सच निवास। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पाए परम पुरख पारब्रह्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच जणाए इक्को धर्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, झगड़ा रहे ना माटी चर्म। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच सरनाई देवे

इक्को सरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आवण जावण चुकाए डरन मरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नेत्र खुल्ले हरन फरन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, बिन अक्खरां ढोले गीत अगम्मी पढ़न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, काया माटी मंज़ल आपणी चढ़न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच दवारे अंदर निरगुण दर्शन करन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण आवे फड़न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, निउँ निउँ लागे पाउँ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अबिनाशी पकड़े बाहों। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दरगाह साची देवे थाउँ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेला मिले अगम्म अथाहो। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा एका सोभा पाउँ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दीपक जगे घट अन्तर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, शब्द नाद सुणाए गुर मंत्र। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, परदा चुक्के ब्रह्म निरंतर। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले वड्याई विच साध सन्तन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, नाता जोड़े परमात्म नार कन्तन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लहिणा देणा चुक्के काया माटी नव तन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेहरवान वासना बदले जगत मन। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भाण्डा भरम भउ देवे भन्न। जो जन सिमरे हरि
१०४४ १६ का नाउँ, आपणा राग सुणावे कन्न। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सच दुआर वखाए बिन छप्पर छन्न। जो जन सिमरे १०४४ १६
हरि का नाउँ, गुरमुख गुरसिख सतिगुर चढ़ाए दरगाह साची चन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा भगतां देवे आपणा नाम धन।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ चन्नण सिँघ दे गृह पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✪

जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मन बुद्धी चुक्के सोच। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, झगड़ा रहे ना वरन गोत। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कूड़ी क्रिया रहे ना खोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सतिगुर आलणयों डिग्गे उठावे बोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, भाग लग्गे साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, सतिगुर शब्द लगाए अगम्मी चोट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, गृह प्रकाश जगावे निर्मल जोत। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पैंडा मुके चौदां लोक। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, आत्म परमात्म गावे इक सलोक। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, चिन्ता रहे ना हरख दोख। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, पुरख अकाल बख्शे एका ओट। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम भण्डारा बहुत। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मन बुद्धी ना कोए विचार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर मन्दिर होवे उज्यार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठाकर प्रीतम करे प्यार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, अमृत रस मिले ठंडा ठार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लेखा चुक्के कूड़ नौ दवार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठांडे मिले कन्त भतार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, माया ममता मोह देवे निवार। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मिले मेल पुरख पुरखोतम अकाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, कूड़ी क्रिया तोड़े जगत जंजाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, लख चुरासी विच्चों लए भाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, फड़ बाहों उठाए गुरमुख लाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, दिवस रैण करे प्रितपाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, घर ठांडा वखाए सच्ची धर्मसाल। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, मेल मिलाए आप कृपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेले कर कर मेले सदा सदा सद रखे आपणे नाल।

१०४५
१६

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड नूर पुर ज़िला अमृतसर ✪

जो जन जपे हरि का नाउँ, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। शब्दी धार पकड़े बाहों, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। सच दुआर वस्से थाउँ, एकँकार अकल कल आप वरताईआ। दो जहानां करे सच न्याउँ, नर निरँकार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जन भगतां अंदर देवे साचा चाउ, अबिनाशी करता मेहर नज़र इक उठाईआ। सदा सुहेला इक अकेला दो जहानां बख्शे ठंडी छाउँ, अबिनाशी करता आपणे हथ्थ रखाईआ। सच दुआर सचखण्ड दरगाह साची वस्से बेपरवाहो, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि देणा वर, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप बंधाईआ। जो जन जपे एका नर निरँकार, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। शब्दी शब्द दे अधार, जोती जाता बेपरवाहीआ। चारे खाणी विच्चों करे बाहर, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भे गुरमुख आपणा लाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। धर्म वखाए धुर निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ ज़िमीं असमानां श्री भगवाना आप झुलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म देवे इक ज्ञान, जगत अक्खर करे ना कोए पढ़ाईआ। चरण कँवल उपर धवल देवे माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र

इक उठाईआ। जो जन जपे हरि का नाउँ, सतिजुग साचे सच दए वड्याईआ। हँस बुद्धी फड़ के बणाए काउँ, सोहँ हँसा आपणा जाप जपाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण बणे पिता माउँ, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी शब्द अनादी बोध अगाधी आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा हुक्म देवे धुर फ़रमान, नाम नगारा इक जणाईआ। जिस नूं समझे ना बुद्धी जीव इन्सान, अक्खरां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरअक्खर शब्दी धार चलाए श्री भगवान, भगत संदेसा इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर दे के गए ब्यान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर होवे जाणी जाण, चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दहि दिशा बचया कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब दा मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, परवरदिगार सांझा यार जलवागर वाहिद लाशरीक इक्को नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव अभेदा खोल्हे मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच आपणा नाम दृढ़ाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ, धुर दवारा दए वखाईआ। जित्थे वसे बेपरवाहो, दूजा नज़र कोए ना आईआ।
१०४६ तख़्त निवासी पुरख अबिनाशी सचखण्ड दवारे हकीकत वाला करे हक न्याउँ, अदल अदालत शाह हकीर इक्को इक वखाईआ। १०४६
१६ सच भण्डारा धुर दा कलमा नाम नयामत, निरगुण सरगुण झोली दए भराईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त सदा रहे सही सलामत, १६
साहिब सुल्तान शाह पातशाह इक्को इक अख्वाईआ। जो कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान महबूब हो के कूड़ी क्रिया मेटे बग़ावत, मानुख मानव मानस अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। सच प्रीती धुर दी रीती करे आप सख़ावत, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। माया ममता मोह कूड़ मिटाए लालच, हँकार विकार विभचार अंदरों दए कढाहीआ। सतिजुग कलयुग अंदरों दोहां दा बणे सालस, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया करे पार जहालत, सति धर्म सति सतिवादी आपणा इक प्रगटाईआ। जो जन सिमरे हरि का नाउँ निरँकारा, निरवैर निरगुण दया कमाईआ। वेखे विगसे पावे सारा, परदा ओहला दए चुकाईआ। साचा देवे इक जैकारा, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं गा के शुकर मनाईआ। सचखण्ड दवारा दर दरवेश निउँ निउँ करन निमस्कारा सजदयां विच बरदे बण के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जो जन जपे नर निरँकार नाउँ अगम्म अथाह, हरि वड्डा वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण फेरा पा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रोवे मारे धाह, सदी चौधवीं

रही कुरलाईआ। वड अमाम फेरा पा, सही सलामत तेरी ओट तकाईआ। खुदी तकब्बर उम्मत उम्मती गया समा, हकीकी जाम आबेहयात प्याला मुख ना कोए लगाईआ। कदम कदम ते करन गुनाह, रूह बुत्त पवित ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म देणा सुणाईआ। धुर दा हुक्म दे फ़रमान, सच धर्म मंग मंगाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे निशान, वरन बरन रहिण कोए ना पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को ढोला तेरा गाण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक हर घट वसें राम, काहन हो के लख चुरासी गोपी रिहा प्रनाईआ। गुर सतिगुर हो के देवें शब्दी ज्ञान, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। भाग लगावें काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मकान, मन्दिर शिवदवाला मठ्ठ इक्को घर देणा वखाईआ। जिस गृह निज आत्म परमात्म वसें श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवाद ठांडे दर इक्को मंग मंगाईआ। जो जन जपे हरि का नाउँ एक, एकँकारा दए मात वड्याईआ। चरण धूढ़ी देवे टेक, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। बुद्धी करे बिबेक, मन वासना ना कोए हल्काईआ। सुरती करे चेतन चेत, शब्दी शब्द लए जगाईआ। तूं मेरा
१०४७ १६ मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साचा हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा १०४७ १६
कर, इक वखाए सचखण्ड साचा देस, जिस गृह आपणा हुक्म वरताईआ। सचखण्ड वसे करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। जित्थे सन्त सुहेले भगत गुर अवतार, बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखार, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। इक्को जोत होवे उज्यार, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। इक्को नाम होवे जैकार, बिन रसना जेहवा ढोला रिहा सुणाईआ। इक्को दस्से साचा घरबार, जिस दी छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जित्थे सूरज चन्न करे ना कोए पसार, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। कागद कलम शाही लिखे ना कोए लिखार, खाणी बाणी रूप ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे श्री भगवन्त, पारब्रह्म आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। परदा लाहे गुरमुख साचे सन्त, सोई सुरती आप उठाईआ। आत्म परमात्म मेला मेल के नार कन्त, सेज सुहञ्जणी दए सुहाईआ। इक्को नाम मणीआं मंत, मन वासना कूड़ी बाहर कढाहीआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, निवण सु अक्खर बिन अक्खरां आप वखाईआ। झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नत, जन भगतां चरण कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत मेला होणा अन्त, अन्तश्करन दा लेखा रहे ना राईआ। इक्को रूप होणा भगत भगवन्त, सचखण्ड साचे मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि मध अन्त, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ करतार सिँघ दे गृह पिण्ड भोजीआं ज़िला अमृतसर ✪

हरि संगत दीर्घ रोग जाए दरभ, दुःख दर्द रहिण ना पाईआ। देवे वड्याई मालक सरब, साहिब सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। मेल मिलाए विच्चों अरब खरब, कोटन कोटां विच्चों पार लँघाईआ। तपणा पए ना मात गर्भ, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। कूड़ी क्रिया लावे ख़रब, जगत चोट ना कोए वखाईआ। पुत्री कदे ना होवे नरद, मानस जन्म ना कोए गवाईआ। कर किरपा प्रभ जिन्हां भगतां दी सुणे अरज़, अर्श कुर्श लेखा दहे मुकाईआ। आपणी सांझी रख के ग़रज़, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। शरअ कटे ना कोए करद, कतलगाह ना कोए वखाईआ। मनुआ मन करे फ़र्क, विशा विकार ना कोए रुढ़ाईआ। साची जणाए शब्द तरज़, नाम निधाना आप उपजाईआ। वखाए खेल हरि असचरज, अचरज लीला दए जणाईआ। दया करे मर्दाना मर्द, मदद आपणी इक समझाईआ। हरि सिमरत दुःख रोग ना व्यापे, व्यापक हो के वेख वखाईआ। सगल वसूरे वेख संतापे, सति असति परदा दए उठाईआ। निज नेत्र खुल्ले आखे, अक्ख प्रतख मिले गुसाँईआ। सतिगुर शब्द सुणे साके, जगत विद्या लोड़ रहे ना राईआ। सुरती शब्द वेखे तमाशे, बाज़ीगर डंक ना कोए वजाईआ। साचा करे भोग बिलासे, आत्म परमात्म मिल के धुर संजोग जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआर होवे वासे, निवास अस्थान इक्को दरसाईआ। जित्थे निरगुण नूर जोत प्रकासे, पुरख अकाल सोभा पाईआ। भगत भगवान इक दूजे दी पूरी होवे आसे, निराशे रहिण कोए ना पाईआ। बिन रसना जेहवा शब्दी बचन होण खुलासे, अनबोलत बोलत आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे के इक भरवासे, भावना आपणे नाल रखाईआ। हरि का नाउं जो सिमरे सच धार, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। पढ़ने पैण ना वेद चार, चार कुण्ट ना भज्जे वाहो दाहीआ। शास्त्र सिमरत फोलणे पैण ना विच संसार, वरका वरका ना कोए उलटाईआ। गीता ज्ञान ना करना पए विचार, अठ्ठ दस्स पुछण कोए ना पाईआ। अञ्जील कुरानां शब्द दस्से ना कोए मीआं यार, मुहब्बत इके नाल लगाईआ। कलमा हक करे उज्यार, नौबत हक हक ना कोए वजाईआ। सति सति करना ना पए जैकार, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जिन्हां अन्तर आत्म परम पुरख मिल्या आण, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। भाग लगा के काया माटी सच मकान, मक्का काअबा अंदरों दए वखाईआ।

नाम संदेसा दे के धुर फ़रमान, धर्म दवारा दए समझाईआ। जन भगतां बख्श के इक ध्यान, सरन देवे चरण कँवल सरनाईआ। एथे ओथे दो जहानां बख्शे माण, सचखण्ड निवासी दरगाह साची दर घर साचे दए वड्याईआ। जित्थे दीवा बाती कमलापाती जगाए आण, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां सहिज सुभाओ मिल्या आण, खोजण दी लोड़ किसे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे दर तों आपणा देवे आप दान, भगती वाली भावना भय विच पूर कराईआ।

✪ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रताप कौर दे गृह पिण्ड भोजीआं ज़िला अमृतसर ✪

हरि सिमरत उपजे साचा धर्म, सच दवारा नज़री आईआ। जूठा झूठा मिटे भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भाग लग्गे काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। लेखे लग्गे मानस जन्म, जन्म मरन दा पैंडा दए चुकाईआ। निहकर्मी आपणा पूरा करे कर्म, कांडां दा लेखा दए गवाईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। पुरख
१०४६ अकाल देवे साची सरन, भगत वछल हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,साचा मंत्र नाम समझाईआ। १०४६
१६ हरि सिमरत हउमे जाए रोग, जगत संताप ना कोए सताईआ। शब्द प्रीती मिले जोग, जुगत पुरख अकाल दए समझाईआ। १६
भाग लग्गे काया माटी कोट, बंक दवारा सोभा पाईआ। नाम अगम्मी लाए चोट, सोई सुरती शब्द जगाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। सच सुणाए नाम सलोक, सोहला इक्को इक उपजाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक वखाईआ। हरि सिमरत सर्ब दूख विनास, अबिनाशी करता दया कमाईआ। वस्त अमोलक देवे रास, नाम निधाना झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया करे फाश, माया ममता मोह मिटाईआ। चरण प्रीती दे के दात, दातार हो के वेख वखाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। आत्म परमात्म दस्स के धुर दी गाथ, साचा ढोला दए पढ़ाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ा के घाट, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सदा सुहेला इक अकेला एकँकारा सदा होवे साथ, दो जहानां संग निभाईआ। सचखण्ड दवारे करे निवास, भूमिका इक्को इक वखाईआ। जित्थे दीपक जोत होवे प्रकाश, अबिनाशी करता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हरि सिमरत मिले शब्द गुण निधान, गुणवन्ता झोली पाईआ। साचा दिसे धर्म निशान, दो जहानां इक लहराईआ। सुहाए इक्को बंक मकान, बेपरवाह आपणा भेव खुल्हाईआ।

जित्थे गुर अवतार पैगम्बर मंगण दान, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, सच दवारा इक प्रगटाईआ। हरि सिमरत वेखे हरि का दवार, हरि हरि विच समाईआ। झगड़ा रहे ना कोए विभचार, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। लख चुरासी उतरे पार, जम की फाँसी लए कटाईआ। साची दासी बण के सेवादार, सेवक हो के निउं निउँ सीस झुकाईआ। महल अटल उच्च मनार, दर घर साचे चढ़ के दर्शन पाईआ। जित्थे पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए वड्याईआ। सच दुआर इक्को धर्मसाल, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। त्रैगुण माया दिसे ना कोए जंजाल, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। जन भगतां सन्तां अंदर सुत्ता दिसे सदा नाल, विछोड़ा रहिण कदे ना पाईआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी लेखे लावे कीती घाल, जो घायल हो के आपणा आप गए मिटाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख सज्जण लभ्भे लाल, माणक मोती हीरे लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे देवे माण, जिस घर वसे श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

★ १५ सावण शहिनशाही सम्मत २ सोहण सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ★

सति धर्म कहे किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। लोकमात धरतमात मौले अगम्मी रुत्त, चार कुण्ट दहि दिशा बहार इक्को नज़री आईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले सच दुआर बणा आपणे सुत, जगत अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ विकारालोभ हँकारा अंदरों कढ्ढे कुट्ट। नाम खण्डा साचा चमकाईआ। शरअ शरायती दूई द्वैती जगत वासना रहे कोई ना लुट, एका रंग सूरे सरबंग देणा रंगाईआ। अमृत जाम सच प्याला निझर धार अमिओं रस देणा घुट, जगत रसना दी लोड़ रहे ना राईआ। आदि जुगादि आवण जावण पतित पावन लख चुरासी जन्म मरन दा रहे कोई ना दुःख, दर्दी हो के दर्द लैणा वण्डाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण इक्को तुक, तुखम तासीर देणी बदलाईआ। तेरे घर ठाकर स्वामी आत्म परमात्म दा साचा सुख, बिन सतिगुर बाहरों आसा पूर ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगत वछल कृपाल सचखण्ड निवासी क्यों बैठा चुप्प, शब्द अनाद बोध अगाध श्री भगवान दे जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख अन्धेरा घुप्प, साचा नूर करे ना कोए रुशनाईआ। पिता पूत जगत नाता गया टुट्ट, सगला संग संगी हो के तोड़ ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत तृष्ना कूड़ी मेट भुक्ख, अमृत

मेघ इक्को इक बरसाईआ। सति धर्म कहे मेरे भगवन्त, पारब्रह्म तेरी आस तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पाए बेअन्त, हउंमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। मंज़ल चढ़या दिसे कोई ना सन्त, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नाद ना कोए सुणाईआ। तेरे दवारे नर निरँकारे सति करे इक्को मिन्नत, निउं निउं सीस झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब रखवाल शब्दी धार जाण आपणी हिम्मत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे मेरे पुरख अबिनाश, परवरदिगार तेरा ध्यान लगाईआ। मण्डल मण्डप पृथ्मी आकाश कूड़ी क्रिया वेख पखण्डी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। तेरी आत्म तेरा रूप कोई ना जाणे तेरी ज़ात, भरमां विच भुल्ली सर्ब लोकाईआ। तेरी खोज करदे अलिफ़ ये विच्चों लुग़ात, निरअक्खर धार तेरा गृह वेखण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के वेख आपणी कायनात, दीन दुनी फोल फुलाईआ। सति धर्म कहे मेरे पारब्रह्म, प्रभ तेरी ओट इक तकाईआ। सतिजुग साचा वखा इक धर्म, दवारा इक्को इक खुल्हाईआ। झगड़ा रहे ना वरन बरन, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां नेत्र खुल्ले हरन फरन, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। बिन पौड़े डण्डे तेरी मंज़ल चढ़न, सच दवारे हक महबूब तेरा दर्शन पाईआ। तूं पुरख समरथ तरनी तरन,
१०५१ १९ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, एकँकार इक्को मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे मेरे १०५१ १९
आदि जुगादी आदि निरंजन, जोती जोत तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दीनां अनथां दर्द दुख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान दे अंजण, अज्ञान अन्धेर रहे ना राईआ। तूं एथे ओथे दो जहानां निरगुण धार सरगुण धार सज्जण, साचा मीत इक अख्वाईआ। चरण कवल उपर धवल सच करा मजन, अठ्सठ तीर्थ लहिणा देणा दे मुकाईआ। तेरे नाम दे ढोले नाद धुन शब्द अगम्मी ताल वज्जण, जगत तलवाड़ा वेखण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अगम्म अथाह बेपरवाह अगम्मी चाढ़ रंगण, जगत ललारी दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी अंदरों बुझा अग्न, अमृत मेघ आपणा आप चुआईआ।

सच सरोता जो होवे जग, सरवण मिले वड्याईआ। सरवणां राहीं अंदर आवे गुरमति, गुर शब्द सुरत उठाईआ। दर्शन होवे उपर शाहरग, नौ दवारे पन्ध मुकाईआ। जगत तृष्ना कूड़ी क्रिया बुझे अग्ग, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। बिन

मक्के काअबिउं घर विच हो जाए हज्ज, हक महबूब मिल के खुशी मनाईआ। सच दुआर कर प्यार बिन पंजां तत्तां जावे सज, जित्थे सज्जण मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सरोतयां देवे उह वथ, जेहड़ी वस्त जगत हटवाणयां कोलों हथ्थ कदे ना आईआ। सरोता होवे सतिगुर प्यार, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। काया मन्दिर अंदर देवे शब्द सची धुन्कार, आत्मक राग अलाईआ। कूड़ी क्रिया जगत दुखड़ा सहिजे दए निवार, जगत तबीब लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन पौड़ी डण्डे आपणी मेहर नाल मंज़ल पौड़े देवे चाढ़, जित्थे निरगुण निरगुण दर्शन पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा हो जावे दवार, भगत भगवान मिल के वज्जदी रहे वधाईआ। सो सरोता जिस अन्तर अन्तर वड़ के किरपा करे आप निरँकार, निरंतर मंत्र एका दए जणाईआ। तिस दा सुणया लेखे लग्गे जो सतिगुर शब्द धरे प्यार, बिन सतिगुर शब्द लेखा सके ना कोए चुकाईआ। सुणन वालयां सरोतयां तों साहिब सतिगुर सदा बलिहार, जो उस दा नाम सुण के आपणे अंदर खुशी रहे प्रगटाईआ। सरोतयां दा प्रभ सदा मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। बिना सरोतयां तों प्रभ दे नाम दा सुणे कोए ना गीत, जगत विकारी भज्जण थाउँ थाईआं। एह परम पुरख दी आदि जुगादी
१०५२ रीत, गुरमुखां आपणा नाम सहिजे अंदर दए टिकाईआ। ओनां नूं नज़री आउण डहि पए मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ्ठ १०५२
१६ मसीत, जित्थे मसला हक हक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दूर दुराडा दस्से घर मन्दिर नज़दीक, गुरूदवारा इक्को १६
दए वखाईआ। जित्थे सरोतयां दी सुरत शब्दी लग्गी रहे प्रीत, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरोतयां दी ख़ाहिश पूरी करे ठीक, ठाकर हो के ठोकर नाम अंदर दए लगाईआ।

✪ १६ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड तरन तारन ज़िला अमृतसर ✪

सोहँ महाराज शेर विष्नूं भगवान आदि जुगादी नाम सति, चार युग समझ किसे ना आईआ। जिस दी धारों विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी होई उत्पत, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी खेल खिलाईआ। काज रचाया त्रैगुण पंज तत, हड्ड मास नाड़ी बूंद रक्त जोड़ जुड़ाईआ। प्यार विकार खोल के काया हट्ट, नव नौ चार नौ दुआर रंग रंगाईआ। मन मति बुध अंदर रख, जगत वासना नाल कुड़माईआ। कर खेल पुरख समरथ, घट भीतर सोभा पाईआ। अमृत अगम्मा प्रगटा के रस, शब्द अनादी नाद शनवाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, घर विच घर करे रुशनाईआ। आत्म सच्चा भोग बिलास, परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा खेल तमाश, लख चुरासी जीव जंत सोभा पाईआ। गुर

अवतार पैगम्बर पावणहारा आपणी रास, मार्ग धुर दा आप वखाईआ। परदा ओहला चुकावणहारा पवण स्वास, साह साह आपणी धार वखाईआ। निरगुण सरगुण खोल्हण वाला हाट, सच दवारा काया माटी दए बणाईआ। सो खेल करे करनी दा करता पुरख अबिनाश, पारब्रह्म आपणा वेस वटाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, राती रुत्ती थिती वार चरणां हेठ दबाईआ। करे खेल सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर आप सुणाईआ। सब नूं जपणा पए एका जाप, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। भगत वछल बण के आप, लेखा करे थाउँ थाँईंआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, साचा मेला रिहा मिलाईआ। सन्त सुहेला बण के बाप, पिता पूत गुरमुख गोद उठाईआ। कोट जन्म दे मेट के पाप, मानस जन्म लेखे लाईआ। सच सरनाई रहे ना कोए निराश, आसा मनसा सब दी पूर कराईआ। झगड़ा मुका के जंगल जूह उजाड़ प्रभास, चरण कँवल देवे सच सरनाईआ। साची मंज़ल चाढ़े आपणे घाट, घर मन्दिर दए वखाईआ। इक्को नूर जोत कर प्रकाश, प्रकृती कूड़ी बाहर कढाहीआ। पन्ध मुका के पृथ्मी आकाश, सच दवारे दए टिकाईआ। जन भगतां सुहेला हो के आप, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख दा आदि जुगादी आपणा जाप, गुर अवतार पैगम्बर हथ्थ ना कदे फड़ाईआ।

१०५३
१६

✪ १६ सावण शहिनशाही सम्मत २ बसन्त कौर दे गृह पिण्ड तरन तारन ज़िला अमृतसर ✪

जै जै जैकार सुणन गण गंधर्ब देवत सुर जन, जाणकारी सब नूं रिहा कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण धन्न धन्न धन्न प्रभू धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। तेरे नाम दा लोकमात चढ़या चन्न, चन्दन बास निम दे महकाईआ। कूड़ कुड़यारा हँकारी भाण्डा देवें भन्न, जन भगतां भरम दा कर्म दईं बणाईआ। करे प्रकाश अज्ञान नेत्र अन्न्ह, अन्धकार अंदर दीपक जोत करे रुशनाईआ। साचा नाम निधान सुणाए जगत कन्न, सरवणां दे अंदर काया मन्दिर विच टिकाईआ। भेव रहे ना कोए ब्रह्म हँ, हम साजण हो के वेख वखाईआ। लेखा मुका के दृष्टी चम्म, इष्ट इक्को इक समझाईआ। ममता मोह गवा के तम, सच सच सच विच समाईआ। हरख सोग मिटा के ग़म, खुशी धुर दी दए वखाईआ। भटकणा रहे ना कोई मन, शब्द नाद करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच गृह देवे इक सरनाईआ। जै जैकार सुणन ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश, गगन मण्डल खुशी मनाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश, पतिपरमेश्वर ब्रह्म करे रुशनाईआ। तेरा शब्द नाम विकास, चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आईआ। तेरा फ़रमान हुक्म सर्ब गुणतास, दो जहानां

रिहा जणाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा निरगुण सरगुण साथ, जोती शब्दी मेल मिलाईआ। तेरा नाम निधाना अगम्मी गाथ, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। तेरा रूप अगम्मा पुरख अबिनाश, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बण के दासी दास, जन भगतां साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार करा हर घट स्वास, रास आपणी इक वरताईआ।

१०५४
१६

✪ १६ सावण शहिनशाही सम्मत २ अर्जन सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ✪

जै जैकार करो रसना जेहवा, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। देवे वड्याई अलख अभेवा, दरस अमोघ गृह गृह आप दरसाईआ। लेखे लावे जन्म जन्म दी सेवा, सेवक सतिगुर आपणे रंग रंगाईआ। नाम पदार्थ देवे आपणा मेवा, मेहरवान हो के मेहर अक्ख उठाईआ। बख्शे धाम सच दवारे निहचल निहकेवा, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जै जैकार करे जन भगत, भगती पूरन दए कराईआ। मानस जन्म सुहञ्जणा होवे वक्त, बेवक्त औखी घड़ी ना कोए रखाईआ। रहमत विच आ के करे तरस, जन्म जन्म दी तृखा दए बुझाईआ। देवे वड्याई उपर फर्श अर्श, अर्शी प्रीतम हो सहाईआ। पूरब रहिण ना देवे कोई स्वासां दा कर्ज़, रास पूंजी सारी हत्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म मरन दी मेट के हरस, दु:ख जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जै जैकार जो जन रहे करदा, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। सच दवारे बणाए बरदा, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। परदा ओहला लाहे आपणे घर दा, घर विच घर करे रुशनाईआ। कलयुग दर सुहाए नरायण नर दा, नर नरायण दया कमाईआ। साचे मन्दिर आपे चढ़दा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। गुरमुख शब्दी धार पढ़दा, सुरती शब्द डोर बंधाईआ। सच दवारे आपे वरदा, नार कन्त खेल खिलाईआ। जो जन ढोला पढ़दा, बण विचोला बेड़ा पार दए लगाईआ।

✪ १६ सावण शहिनशाही सम्मत २ धर्मवीर दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरँजण देवे एका नाम, नाउुं निरँकारा आप दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरंजन पूरा करे काम, दूसर संग ना कोए रलाईआ। एकँकारा देवे हकीक जाम, बेपरवाह आप उठाईआ। आदि निरँजण निरगुण नूर करे महान, जोती जाता

शहिनशाहीआ। अबिनाशी करता देवे धुर दा दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। श्री भगवान झुलाए नाम निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक ज्ञान, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्द शब्दी शब्द खेल होवे महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी योद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे इक्को कार कमाईआ। एका हुक्म वरताए एक, एकँकार दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ देवे धुर दी टेक, सिर सके ना कोए उठाईआ। लोकमात आत्म परमात्म सब दी बुद्धी करे बिबेक, कूड़ी क्रिया दए कढाहीआ। जन्म कर्म दी बदल देवे रेख, मस्तक टिक्का लाए धुर दी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरवैर निराकार निरँकार बदले आपणा भेख, सच सति पंचम तत तत्व आपणा खेल खिलाईआ। आपणा खेल करे करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। प्रगट हो सांझा यार, जलवा नूर करे रुशनाईआ। लहिणा देणा चुकाए मुहम्मद यार, चार यारी फोल फुलाईआ। लेखा जाणे जीव जहान, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लख चुरासी जीव जंत घट भीतर
१०५५ अंदर वेख वखाईआ। सति धर्म तेरा दिसे नाम अगम्म, अलख अगोचर दए वड्याईआ। भाग लगाए काया माटी चम्म, १०५५
१९ चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। कर प्रकाश तन ख़ाकी वजूद संसा मेटे मन, ममता मोह मिटाईआ। सच भण्डारा देवे धुर दा १९
धन, ख़ज़ाना ख़ज़ीना देवे आप भराईआ। एका राग सुणा बिना कन्न, शब्द अनादी नाद जणाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार जलवागर नूरो नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया मेट तृष्ना तम, तामस अंदरों देवे गवाईआ। सति धर्म प्रभ देवे साची दात, दीन दयाल दया कमाईआ। रथवाही हो के चलाए अगम्मा राथ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। प्रगट हो के लोकमात, धरनी धरत धवल लहिणा देणा दए चुकाईआ। चार वरन बणा के इक जमात, निरअक्खर अक्खरां सिफ्त दए समझाईआ। दीन दयाल हो के वेखे वाक्यात, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेला इक अकेला सदा वसणहारा साथ, समरथ अकथ महिमा आपणी दए जणाईआ।

✪ १६ सावण शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभू सतिजुग तेरे चरणां करे निमस्कार, नमो नमो नमस्ते कह के सीस झुकाईआ। दोए जोड़ मंगण दरवेश दर भिखार, भिख्या धुर दी मंग मंगाईआ। नाम अगम्म अथाह वस्त अमोलक झोली डार, डर भय भउ भयानक रहे ना राईआ। साची सिख्या देवां विच संसार, वड संसारी जोत निरँकारी निरगुण तेरी सेव कमाईआ। तेरा हुक्म अपर अपार, पारब्रह्म ब्रह्म सके ना कोए उलटाईआ। साची करनी करते आपणी दस्स सिरजणहार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मैं तेरा नंन्हां नढ्ढा निक्का बरखुरदार, खुदी तकब्बर माण अभिमान ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग तेरे चरणां रिहा ढठ्ठ, बिन सीस जगदीश झुकाईआ। सति दवारा प्रभू खोल्ह हट्ट, वणज साचा सच वखाईआ। झगड़ा रहे ना तीर्थ तट, किनारा इक्को देणा वखाईआ। जित्थे मिले पुरख समरथ, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। मनुआ होवे वस, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। अमृत मिले रस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। नेत्र खुल्ले अक्ख, लोइन करे रुशनाईआ। नज़री आईं प्रतख, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। सांझा होवे जस, वेद पुराणां ओट ना कोए तकाईआ। धीरज होवे यति, सति सन्तोख वधाईआ। इक्को देवे ब्रह्म मत, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। प्रगट कर के सुच सच, साजण हो के वेख वखाईआ। जन भगतां लेखे ला के काया माटी कच्च, कोट कंचन दए सुहाईआ। लूं लूं अंदर जाए रच, रचना आपणी वेख वखाईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, दस्म दवारी दए खुल्हाईआ। जित्थे आत्म परमात्म सांझा घर बणा के रहे वस, वास्ता असल नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सतिजुग साचा साचा तेरा नाम ध्याईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग तेरा होवे सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे गुफ़तार, तेरे नाम अंदर बन्न्हे थाउँ थाँईंआ। सच दी सच दर होवे जैकार, चार कुण्ट खुशी मनाईआ। शब्द होवे सिक्दार, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस झुकाईआ। जन भगतां बेड़ा करे पार, लोकमात ना कोए रुढ़ाईआ। साचा दे के महल अटल मनार, दरगाह साची दए बहाईआ। जित्थे वसे आप निरँकार, निरगुण हो के सोभा पाईआ। दीवा बाती जगे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी डगमगाईआ। सो थान सुहावा करे आप करतार, कुदरत दा मालक दया कमाईआ। जन भगतां दे के सच सहार, चरण प्रीती इक प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धर्म सति सति तेरी साची सेव कमाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुलज़ार सिंघ दे गृह पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे पुरख अकाल मेरा सहारा, समें समें समझ दए समझाईआ। देवे वड्याई विच संसारा, सर्ब थाँईं होए सहाईआ। आपणा बख्शे नाम प्यारा, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। धवल होए सिक्दारा, हुक्म फ़रमान मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवा सच समझाईआ। सति कहे मेरा नाता इक अकाल, अकल कला अख्वाईआ। सचखण्ड वस्से सच्ची धर्मसाल, तख्त निवासी सोभा पाईआ। थिर घर सुहावे भगत सुहेले लाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। नाम भण्डारा देवे दान, दाता बेपरवाहीआ। चरण धूढ़ी बख्श इश्नान, पवित पुनीत बणाईआ। खुमारी दे के जाम, जमां तों लए छुडाईआ। मंज़ल चाढ़ के आसान, असल घर दए वखाईआ। जित्थे होणा पए ना कदे ग़ुलाम, बन्दीखाने ना कोए पाईआ। मन्नणा पए ना कोए इस्लाम मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नज़र आए इक भगवान, अबिनाशी करता धुर दरगाहीआ। जिस दा झुल्ले सच निशान, निशाना इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सति कहे मेरा प्रीतम इक अकाल, एकँकार हथ्थ वड्याईआ। जो सदा चले नाल नाल, जुग
१०५७ चौकड़ी होए सहाईआ। सतिगुर शब्द बणाए दलाल, दो जहानां वणज कराईआ। भगतां लेखे लाए घाल, थाउँ थाँईं खोज १०५७
१६ खुजाईआ। मुरीदां पुछे हाल, मुर्शद हो के वेस वटाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सति १६
धर्म वजाए ताल, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। नाम भण्डारा देवे धुर दा माल, ख़ज़ाना इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सति कहे मेरा साहिब इक अकाल, आदि जुगादी सद अख्वाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, भेव अभेदा समझ कोए ना पाईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। बण बण वेखे सईआ राम, सति सतिवादी वेस वटाईआ। खेल खला घनईआ शाम, नाम बंसरी इक सुणाईआ। पैगम्बर हो के दए पैग़ाम, कायनात करे पढ़ाईआ। मंत्र दस्स के सतिनाम, सुत्यां दए जगाईआ। जन भगतां बख्श चरण ध्यान, ओट इक्को इक वखाईआ। अन्तिम हो के मेहरवान, महबूब हो के मेल मिलाईआ। नाता तोड़ कूड़ जहान, जहालत अंदरों दए कढाहीआ। काया काअबे वस सच मकान, मन्दिर अंदर इक सुहाईआ। किरपा कर श्री भगवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर ठांडे कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए सुहाईआ। सति धर्म कहे मेरा समरथ पुरख अकाल, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। जिस दा कदे होए ना ज़वाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वजा के ताल, सोवत जागत इक्को रंग रंगाईआ। सचखण्ड दवारा

दस्से सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारे सोभा पाईआ। दीवा बाती कमलापाती आपणा आपे बाल, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सति कहे मेरा मीता पुरख अकाल, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस ने लख चुरासी विच्चों करना बहाल, फाँसी जम दी दए कटाईआ। पूरब जन्म दा हल्ल करे स्वाल, लहिणा देणा झोली पाईआ। पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक सुहाईआ। सति धर्म कहे मेरा आसरा इक अकाल, नयासरा हो के ओट रखाईआ। आदि जुगादि करे प्रितपाल, नित नवित सेव कमाईआ। लेखा लिख के बेमिसाल, मिसल जग दी दए बणाईआ। कोटां विच्चों भाल, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सति कहे साचा सज्जण पुरख अकाल, साजण हो के वेख वखाईआ। जिस नूं गुर सुणाउँदे आपणा हाल, कूक कूक देण दुहाईआ। भगत सुहेला हो के अंदर बाहर फिरे नाल, जगत जुदाई ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल कर कमाल, भगत वछल दीन दयाल दीनन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा विच हो कृपाल, किरत कर्म विछड़े बिछरत आप मिलाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ डा० पाल सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ तेरा सतिजुग सति सुहञ्जणा जग, रसना जेहवा बत्ती दन्द दए वड्याईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म दे उतरने कोटन पप्प, पतित पुनीत ठांडे सीत गुरमुख दए बणाईआ। नेड़ ना आए ममता मोह विकार डसनी सप्प, तृष्ना तृखा हँकार ना कोए हल्काईआ। परदा खुल्ले नज़री आए आपणा अप, हँ ब्रह्म नूर जोत होवे रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण नज़री आए सथ, सगला संगी बहुरंगी वेस वटाईआ। चार जुग तों वक्खरी तेरी अक्खरी गथ, गुर अवतार पैगम्बर सुण के जिस नूं खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे हस्स, हस्ती विच मस्ती अर्शी प्रीतम दिती चढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण धन्न वड्याई जिस भगत भगवान दा सांझा कीता जस, वक्खरी धार रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण निरवैर निराकार हो के दिता आपणा अमिउँ रस, रसीआ रहबर हो के स्वांती बूँद आप टपकाईआ। गुण निधान दीन दयाल हो के भगतां खोल्ही अक्ख, प्रतख हो के मिल्या साहिब गुसाँईंआ। स्वामी अन्तरजामी निहकर्मी हो के सिर रख्या हथ्थ, नाम बाणी धुर दी करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना विच्चों कर के वक्ख, सच संदेसा नर नरेशा दिता सुणाईआ। पूरब

जन्म दा लहिणा देणा झोली पा के हक, हकीकत लाशरीक आपणी दिती समझाईआ। मंज़ल पौड़े चढ़ के आप नस्स, नसीब दी निसबत छड्ड, तकदीर तदबीर नाल दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम जैकारा बोल अलख, अलख अगोचर बोध अगाध करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भण्डारा दे के सच, सति अंदर दिता टिकाईआ। सति कहे प्रभ तेरा नाम सदा सति, सतिजुग सति सति दए वड्याईआ। साची दे के ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या दए समझाईआ। परमेश्वर हो के पारब्रह्म भगतां रखीं पत, पति पत्नी आपणी धार चलाईआ। सिदक भरोसा देवीं चरण कँवल हठ्ठ, जप तप आपणा आप जणाईआ। झगड़ा मुका के गहर गम्भीर बेनज़ीर अठ्ठ सठ्ठ, सच सरोवर अमृत दई नुहाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण धार खोल्ह के हट्ट, भगत वणजारा विच संसारा आपणा लै बणाईआ। आदि जुगादी वसणहारा घट, घट भीतर हो के गृह मन्दिर अंदर भगतां करीं रुशनाईआ। तेरा नाम निधान हरि सन्त सुजान लैण रट्ट, रट्टा झगड़ा दीन दुनी मुकाईआ। शब्द अगम्मी सच दवारे लावीं सट्ट, सोई सुरती आप उठाईआ। कूड़ी क्रिया भेखी देवीं कट, कटाखश आपणा इक जणाईआ। जगत संसारी खेल खलावीं बाज़ीगर नटुआ नट, स्वांगी हो के आपणा स्वांग वरताईआ। कलयुग अन्त

१०५६ श्री भगवन्त निरगुण धार हो प्रगट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगत सुहेले गुरू गुर चेले निरगुण १०५६

१६ धार कर इक्ठ्ठ, परदा ओहला काया चोला दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे जाणा १६

वस, वास्ता भगतां नाल रखाईआ। सति कहे प्रभ तेरे भगतां इक्को नाम, नर निरँकारा नज़री आईआ। जिस दवारयों मिले हकीकी जाम, जमां दा झगड़ा दए मुकाईआ। संसा रोग मिटे तमाम, तमअ तृष्ना ना कोए हल्काईआ। माया ममता मोह चुक्के माटी चाम, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। भाग लगाए काया नगर ग्राम, खेड़ा इक्को दए वसाईआ। जित्थे वसे धुर दा राम, रहमत दा मालक बेपरवाहीआ। नाम संदेसा देवे पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। मन वासना कोई ला ना सके इलजाम, लाअनत कूड़ ना कोए जणाईआ। सुरती शब्द करे ग़ुलाम, ज़ंजीरी प्रेम प्रीती पाईआ। दीन दुनी कर ना सके कोए बदनाम, बदी दा लेखा साचा नाम दए वरताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे खेल श्री भगवान, भगतां मीता ठांडा सीता आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म चढ़ाए इक निशान, निशाने निशावर कर के सारे दए वखाईआ। जिस दा खेल समझ सके ना कोए इन्सान, बुद्धी तों परे नर हरे निरवैर आपणी कार कमाईआ। जन भगतां सन्तां दे के इक ज्ञान, दृष्टी विच दिशा आपणी दए समझाईआ। जित्थे सुणे धुर फ़रमान, दमां दमां दी लोड़ रहे ना राईआ। ज़ामन हो जाए इक्को काहन, कामना पूरी दए कराईआ। नज़री आवे इक इमाम, अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। सतिगुर

साचा दिसे निगाहबान, बिन अक्खां वेख वखाईआ। जो वसे सचखण्ड साचे मकान, हकीकत दा मालक नज़री आईआ। जिस नूं सजदे करन तमाम, गुर अवतार पैगम्बर बन्दना विच सीस झुकाईआ। सो स्वामी खेल करे महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो विच जहान, जगत जहालत कूड़ी दे कढाहीआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दस्स के सांझा नाम, नाम नामा दए दृढ़ाईआ। जिस तों वक्ख नहीं मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। जिस नूं झुकदे जिमीं असमान, दो जहान लागण पाईआ। सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म मेले आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे जुग दी सच जैकार, जै जै विच आपणी धार रखाईआ।

१७ सावण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर

सति कहे प्रभ तेरा नाम शब्द गोबिन्द, गुणवन्त गुण निधान नज़री आईआ। जिस जी भगत सुहेले सज्जण साची बिन्द, आदि जुगादी सति अख्वाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द, इन्द्रासण सिँघासण सीस ना कोए उठाईआ। दीन दयाल सदा होवे बख्शिंद, बख्शिश विच रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। मन वासना कूड़ी क्रिया सगली मेटे चिन्द, अन्तर आत्म सांतक सति दए कराईआ। भाग लगाए काया माटी जीउ पिण्ड, साढे तिन्न हथ्थ देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शब्दी धार हो के सिँघ, भय भउ देणा दृढ़ाईआ। सति कहे तेरे नाम दा आदि जुगादी इक सहारा, साहिब सुल्तान नज़री आईआ। कलयुग वेख अन्त किनारा, नईआ डोले थाउँ थाँईंआ। इक्को मिले ना मीत मुरारा, सज्जण सैण ना कोए अख्वाईआ। झगड़ा प्या वरन चारा, चार कुण्ट करे लड़ाईआ। तेरा नाम ना किसे प्यारा, प्रीतम प्रेम ना कोए वधाईआ। सृष्ट सबाई धुँदूकारा, ज्ञान नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। चारे दिशा रोवे ज़ारो ज़ारा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण नैणां नीर वहाईआ। साची रुत्त मौले कोई ना बहारा, खिज़ां पत्तझड़ आपणा रंग बदलाईआ। मन वासना कलयुग जीव होया गवारा, गहर गम्भीर तेरी सार किसे ना पाईआ। तूं हर घट वसणहारा निरँकारा, निरगुण हो के डेरा लाईआ। साचे भगतां खोल्ह बन्द किवाड़ा, काया काअबा दे वखाईआ। जित्थे तेरा नूर होवे उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होवे पनिहारा, करोड़ तेतीसा झोली डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर दिसे सेवादारा, याचक हो के तेरी सेव कमाईआ। तूं सब तों वसें न्यारा, सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। तेरा शब्द गुरू

१०६०
१९

आदि जुगादी इक्को नज़री आए अवतारा, दूजा सतिगुरू वेस ना कोए वटाईआ। तूं बेअन्त बेपरवाह परवरदिगारा, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। सति धर्म दा सुण के तेरा सच जैकारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्श चरण प्यारा, वस्त इक्को मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ तेरे नाम दा अगम्मा रस, रस्ते भगतां मार्ग लाईआ। मनुआ होवे वस, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। निरगुण तेरी खुल्ले अक्ख, निज लोचन होए रुशनाईआ। रसना गाए जस, तूंही तूं राग अलाईआ। वस्त अमोलक आवे हथ्थ, भण्डारा तेरा बेपरवाहीआ। काया खेड़ा ना होवे भठ्ठ, चुरासी गेड़ा ना कोए भवाईआ। भाग लग्गे तत अठ्ठ, तार सितार अंदरों दे हिलाईआ। तेरे नाम दा ढोला सारे इक्को लैण रट्ट, आत्म परमात्म मिल के खुशी मनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म रहे कदे ना अड्ड, वक्खरा घर ना कोए वसाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग विच्चों कढ्ढ, कामना काम ना कोए सताईआ। पवित्र कर हड्ड हड्ड, मास नाड़ी अंदर कर सफ़ाईआ। तेरे भगतां दी चले तेरी यद, विष्नूं डंका देणा वजाईआ। बिना मक्के काअब्यों कराउणा हज्ज, हज़रत हो के नज़री आईआ। तेरी भगतां दे अंदर सच्ची हद, बाहरों वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सर्ब कला समरथ, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। सच प्रीती बख्शीं विच जग, जग जीवण दाते तेरी वड वड्याईआ। जगत तृष्ना बुझे अग्ग, अग्नी मोह ना कोए तपाईआ। सच दवारे जावण सज्ज, गुरमुख गुर गुर खुशी मनाईआ। तेरे नाम दा गा के छन्द, सोहँ धुर दा राग अलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, निहकलंक नरायण नर, तेरा नाम तेरी सिफ्त सालाहीआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ तेरे नाम दा अगम्मा रस सौग़ात, रसना जेहवा बत्ती दन्द जगत विच ना कोए वड्याईआ। कर किरपा दिती अमोलक दात, वस्त आपणी आप वरताईआ। सति सच उपजे इक नाद, अनादी धुन शनवाईआ। संदेसा देवे ब्रह्म ब्रह्माद, करे सच सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे वाद विवाद, विख अमृत दए बणाईआ। निरगुण धार खोल्ले राज़, माया ममता मोह परदा उठाईआ। सति धर्म दा दिसे रिवाज, समाज इक्को इक जणाईआ। सोई सुरती खोल्ले जाग, नेत्र अक्ख खुलाईआ। उपजे मन वैराग, अंदर वैरी मुख छुपाईआ। हँस होए काग, बुद्धी काग ना कोए कुरलाईआ। माया ममता करे त्याग, ध्यान इक्को विच लगाईआ। गुरमुख सज्जण बण जाए साध, सिध्धा तेरा राह तकाईआ। तेरा नाम बोध अगाध, करे सच पढ़ाईआ। पूरब लेखा आवे याद, पिछला देणा झोली पाईआ। साचा खेड़ा कर आबाद, दीपक जोत करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होणा सहाई जुगादि आदि, आदि अन्त अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। सति कहे प्रभ तेरे नाम दी सच्ची सांझ, आत्म परमात्म नज़री आईआ। सुरती रहे ना कोई बांझ, जो तेरी ओट तकाईआ। भरमां रहे ना कोई कंध, कंचन गढ़ मिले वड्याईआ। तेरा नूर चमके चन्द, अन्ध अन्धेर छुपाईआ। सोहणा उपजे छन्द, मेरा तेरा ढोला गाईआ। मिले अगम्मी अनन्द, रसना ना सके समझाईआ। तृष्ना चुके चिन्द, गहर गम्भीर दया कमाईआ। बख्शे परमानंद, निजानंद होवे रसाईआ। झगड़ा चुक्के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज ना कोए भवाईआ। खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। मनुआ कदे करे ना रंज, ग़म चिन्ता ना कोए सताईआ। तेरे कोल आदि जुगादी सच्चा ढंग, तरीके नाल दएं वड्याईआ। तेरा वेस अनेक वेख्या बहुरंग, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। दवारे तेरे मंगां मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं साहिब सूरा सरबंग, देवणहार अख्वाईआ। सति कहे मेरी आसा मनसा पूरी कर मंग, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन तेरे मनसा पूर ना कोए कराईआ। तूं आपणे नाम दा आप दस्सया छन्द, गुर अवतारां पैगम्बरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। दाते दानी सूरे सरबंग, सर्ब कला समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दा इक तरंग, तुरत अकाल मूर्त तेरे नाल मिलाईआ।

१०६२
१९

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरा शब्द दो जहानां दिसे राठ, हुक्मरान इक अख्वाईआ। जिस दी दो जहान श्री भगवान मन्नण बात, दातार मालक नज़री आईआ। दूजी रहे ना किसे ठाठ, ठौर पए कोए ना थाँईंआ। योद्धा सूरबीर होवे समराठ, सभना लेखा दए मुकाईआ। मेहरवान होवे आनवाट, (अलप) बुद्धी पार कराईआ। दीनां नाथ दया करे करवाठ, कूड़ी क्रिया कूड़ कुटम्ब खपाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत निरलाठ, नारी नर वेख वखाईआ। कलयुग अन्त सब दा अन्त अन्तर वेखे कुरलाहठ, कुलघाती खोज खुजाईआ। गोबिन्द अंक समझावे उनाहठ, पंज नौ भेव खुल्हाईआ। परदा चुकावे साखी बाहठ, बहिश्त दोज़ख़ दोवें पन्ध मुकाईआ। हुक्म सुणाए अठाहठ, अठ्ठ सठ्ठ लेखा रहे ना राईआ। नाम धर्म चलाए राहट, हलट इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम लग्गे चंगा, चंगयाईआं बुरयाईआं विच्चों प्रगटाईआ। सदा सुहेला बणे संगा, सधना सैण तराईआ। प्यार दे अणमंगा, प्रीती झोली पाईआ। खेल करे बहुरंगा, अनभउ प्रकाश वखाईआ। सच वजाए मृदंगा, तलवाड़ा इक शनवाईआ।

देवे अगम्म अनन्दा, निजानंद रमाईआ। भाग रहे ना मंदा, कूड़ वासना बाहर कढाहीआ। नहाउणा पए ना किसे गंगा, चरण सरोवर इश्नान कराईआ। चढ़ना पएना कोई डण्डा, इक्को डण्डावत विच मंज़ल पार कराईआ। लभ्भणा पए कोई ना कन्ढा, तट किनारे लेखा दए मुकाईआ। फेरना पए ना कोई खण्डा, नाम चण्ड प्रचण्ड आप चमकाईआ। पूजणा पए ना कोई जंडा, निरगुण नूर नज़री आईआ। अन्तर आत्म करे ठंडा, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। सच दुआर जावे लँघा, अंदर वड़ के सोभा पाईआ। सेज सुहाए प्यार पलँघा, विछोड़ा पलक ना कोए रखाईआ। नाम वजाए हक सुरंगा, सुर ताल दी लोड़ रहे ना राईआ। मनुआ मन ना रहे नौरंगा, गोबिन्द आपणी खुशी प्रगटाईआ। सच दवारे बणा के बन्दा, बन्दगी इक्को इक दृढ़ाईआ। लख चुरासी रहे ना फंदा, जम की फाँसी ना कोए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा लाहवे हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। सति कहे प्रभ तेरा नाम सदा समरथ, समें समें सुहाईआ। महिमा सदा अकथ, रसना जेहवा ना कोए वड्याईआ। हिरदे अंदर जावे वस, विश्व रंग चढ़ाईआ। बोल जैकारा अलख, लिख्या लेख मिटाईआ। सृष्टी नालों कर के वक्ख, दृष्टी परदा दए चुकाईआ। सांझा बणा के जस, सोहँ ढोला दए पढ़ाईआ। नेत्र खोल् के अक्ख, आख़र मंज़ल इक वखाईआ। लज पति लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चरण कँवल हिरदे अंदर लए ढक, ओढण आपणा नाम दिसाईआ। जन भगतां अंदर सच्चा दे के रस, रसीआ हो के करे रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा मार्ग लावे सच, सच करनी कार कमाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ शृंगारा सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम वड्डा उज्जल, निर्मल निर्मल नज़री आईआ। मन वासना रहिण ना देवे कोई गुंझल, कूड़ी क्रिया गढ़ तुड़ाईआ। निंदया विच ना रहे चुग़ल, कूड़ कुड़यारा बाहर कढाहीआ। मन वासना रहे ना मुग़ल, मूर्ख मुग्ध दए समझाईआ। इशारे वाली झूठी करे कोई ना उंगल, पंजा तेरा नाम नज़री आईआ। जेबां वाला रहे ना कुण्डल, घुंडी अपराध ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी वासना आवे सुंघण, गंदगी विच्चों सुगंधी आप प्रगटाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम सब दा स्वामी, समां समां समझाईआ। तेरी सिफ्त दी गावे बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। तेरे प्रेम दी दस्से कहाणी, गा गा खुशी मनाईआ। तेरे रस दा देवे अमृत पाणी, पी पी शांत

कराईआ। तेरी जोत दा बख्शे नूर नुरानी, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। तेरी मंज़ल दा दिसे पद निरबाणी, निरबाण पद समझाईआ। तेरे गृह दा दस्से सच मकानी, मुकाम इक्को सोभा पाईआ। जित्थे वसे ना कोए दुरानी, दूई द्वैत नज़र कोए ना आईआ। मण्डल दिसे ना कोए असमानी, जिस्मानी धार ना कोए प्रगटाईआ। शरअ करे ना कोए बेईमानी, बेवा रूप बदलाईआ। तेरी होवे ना कोए बदनामी, बदीआं दा बदला ना कोए वखाईआ। सच दवारे तेरा जलवा नूर नुरानी, ज़हूर विच तेरी बेपरवाहीआ। तूं कामल मुर्शद दो जहानी, मुरीदां वेख खुशी मनाईआ। तेरी मुहब्बत आख़र तों आख़र मंज़ल रुहानी, रूह बुत्त वज्जे वधाईआ। जित्थे मिले कलमा हक पैग़ामी, पैगम्बरां वाली पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोई दीवानी, दाअवा पूरबले जन्म दा लेखे लए लगाईआ। एहो तेरी वड्डी मेहरवानी, जुग जुग भगतां पैज रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, महाराज शेर सिँघ दी दे के निशानी, नश्यां विषयां विच्चों बाहर दिता कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, तेरे कदमां तों कुरबानी, जिस पदमां विच्चों गुरमुख लए उठाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

१०६४
१६

सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम अनरस मीठ, रसना रस ना कोए समझाईआ। सद वसे धाम अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, दुरमति मैल धवाईआ। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठ, विख अमृत दए बदलाईआ। कदे ना बदले पीठ, जन भगतां मुख सालाहीआ। जुग चौकड़ी बदलण वाला रीत, रीतवान इक हो जाईआ। बणावणहारा मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ दए समझाईआ। उपजावणहारा साचा गीत, नाम निधान दृढ़ाईआ। वखावणहारा हस्त कीट, ऊँचां नीचां भेव खुल्हाईआ। धर्म दवारे बन्नूणहारा रीत, सज्जण बेपरवाहीआ। सब दे वसणहारा चीत, मन मनुआ ठगौरी ना पाईआ। परखणहारा नीत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सर्ब नूं जाए जीत, दरभ विच ना कोए भरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाम सदा अतीत, त्रैगुण विच ना कोए भरमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम निराला, निराकार तेरी सिफ्त सालाहीआ। भेव खोल्हे पुरख अकाला, अकल कलधारी दे समझाईआ। परदा लाहे दीन दयाला, दयानिध दस्से तेरी बेपरवाहीआ। सच वखाए सच्ची धर्मसाला, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। जन भगतां लेखे लाए कीती घाला, घायल हो के मायल हो के आयल हो के मुसायल विच जो तेरा नाम ध्याईआ। गुरमुख हल करे स्वाला, मुश्कल पैंडा दए मुकाईआ। तेरे गृह दा दस्स अहिवाला, ठांडे दर दए पुचाईआ। जित्थे मिले ना कोए ख्याला,

जागरत जोत होवे रुशनाईआ। तेरे प्यार दी बण के माला, मन का मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम दस्स सुखाला, सुख सागर विच सुख रूप जाए समाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाम मेरा सच्चा सज्जण, समझ तों परे करे पढ़ाईआ। जन भगतां जुग जुग आवे पड़दे कज्जण, मेहरवान हो के दया कमाईआ। सति प्रकाश हो के आवे जगण, जागरत जोत अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन भगतां मुख लगावण आवे सगण आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों आवे कढ्ढण, होका हक नाम सुणाईआ। सन्त सुहेले आवे लभ्भण, मानव ज़ाती फोल फुलाईआ। जगत विकारा आवे दब्बण, धुर दा परदा एका पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़्ह आवे वढ्ढण, साची कल आप धराईआ। धुर दा धर्म लोकमात आवे छड्डण, धरनी धरत धवल नाल मिलाईआ। भाग लगावे काया माटी बदन, बदला चुकावे थाउँ थाँईंआ। गुरमुख गुर गुर आवे सद्दण, सुनेहड़ा लोकमात पुचाईआ। गुरसिख चलो आपणे वतन, बेवतनां दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नाउँ भेव खुल्हाए जग ईश्‍र, जुगीशर सिफ्तां विच सालाहीआ। तेरी वड्याई कराए कोलों मुनीश्‍र, तामस दए गवाईआ। ढोले गायन रखीशर, ऋषी मुनी ध्यान लगाईआ। तेरा भेव खुल्हाए गोरख ब्रह्मा दस्स के ईश्‍र, ईश जीव नाल वड्याईआ। जन भगतां माण वड्याई देवे शीघर, शहिनशाह हो के दया कमाईआ। त्रैगुण माया अग्नी सड़न ना देवे ईंधन, धूआँधार ना कोए वखाईआ। ग़फ्लत सौण ना देवे नींदर, आलस कूड़ा दए चुकाईआ। स्वामी हो के वसे चीतन, चेतन सुरती आप कराईआ। दरगाह साची बणे मीतन, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। धुर दी दस्से सच प्रीतण, प्रीतम हो के प्रेम वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीतण, गीत गोबिन्द दए समझाईआ। झगड़ा मुकाए ऊँच नीचण, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। साचा कलमा दए हदीसण, हाज़र हो के दए समझाईआ। जन भगतां दे के धुर दी भीखण, भिच्छया इक्को झोली पाईआ। वैराग त्याग जाग विच्चों मूल ना देवे चीकण, साचा नूर करे रुशनाईआ। बिरहों विच ना मूल उडीकण, सनमुख हो के दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका छत्र झुलण तेरे सीसण, सिर सिर होवीं आप सहाईआ।

✪ १७ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजमेर सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे प्रभ आपणा सच्चा नाम दस्स गाउणा, जन भगतां दे समझाईआ। हिरदे हरि जू आ जाए वसाउणा, जगत विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। घर स्वामी दर्शन आ जाए पाउणा, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। विछड़े सतिगुर आ जाए मनाउणा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचे मन्दिर आ जाए वसाउणा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। तेरे चरण धूढ़ आ जाए नहाउणा, दुरमति मैल धवाईआ। तेरी सेजा साची आ जाए सौणा, जगत तृष्ना अग्ग ना कोए तपाईआ। तेरे दर्शन बिन लोचन नैणां आ जाए पाउणा, निज अक्ख दे खुल्हाईआ। लख चुरासी फंद आ जाए कटाउणा, जम की फाँसी ना कोए लटकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरे अगे वास्ता पाउणा, गल पल्लू सीस झुकाईआ। तूं छड्ड दे भगतां नूं तरसाउणा, मेहर नज़र नाल लेखा दे चुकाईआ। बिन भगतां तेरा नाम नहीं किसे ध्याउणा, लोकमात मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच वर, सतिजुग साचा सति आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ आपणा नाम दस्स दे कहिणा, कह कह शुकर मनाईआ। चरणगत सच सरनाई दस्सदे बहणा, बह बह ओट तकाईआ। साचे नेत्र दर्शन करना दस्स दे नैणां, निराकार निरँकार सोभा पाईआ। तेरा भाणा आ जाए सहिणा, रोग सोग चिन्ता दुःख नेड़ कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां लहिणा देणा, दे दे के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, ठाकर हो के जन भगत ना कोए ठुकराईआ। सति कहे प्रभू भगत उधारना तेरा कम्म मामूली, मेहर नज़र इक उठाईआ। तूं साहिब सुल्तान जगत पित असूली, असल सिख्या दे दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना पैगम्बर किसे रसूली, रसम किस्म आपणी नाल मिलाईआ। अगे तेरयां भगतां तों करे ना कोए वसूली, लेखा मंगण वाला रहिण कोए ना पाईआ। तेरी आत्म परमात्म रहे ना भूली, अभुल्ल दे समझाईआ। तूं आदि जुगादी वड्ड कानूनी, काइदे गुर अवतार पैगम्बरां रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त साचे सन्तां कोलों करा लवीं ना हुक्म अदूली, भाणे अंदर लैणा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा रहे ना कोए बैरूनी, अंदरूनी लेखा आपणे नाल रखाईआ।

✪ २१ सावण शहिनशाही सम्मत २ माधा सिँघ जथेदार दे गृह पिण्ड चीमा ज़िला अमृतसर ✪

इक्की सावण कहे प्रभ तेरी प्रेम प्यार दी बरखा, कोटन कोटि कोट बरखां पिच्छो रही बरसाईआ। पीवे रस जो भगत

सुहेला गया परखा, अगे परख दी लोड़ रहे ना राईआ। रहमत विच आ के मेहरवान कीता तरसा, तरस विच हरस देणी मिटाईआ। सच दवारे सचखण्ड निवासी हो के देणा दरसा, दर्शन विच दीद देणा कराईआ। चिन्ता सोग ग़म रहे कोई ना हरखा, हवस कलयुग कूड़ी देणी मिटाईआ। अमर धार तेरी याद करावे सरसा, सदीआं दा सद्दा सहिजे रही जणाईआ। गुरमुखां दा पूरब लाह कर्ज़ा, मकरूज़ लेखा देणा मुकाईआ। आपणे मिलण दी पूरी कर ग़रज़ा, ख़ाहिश गुरमुखां नाल मिलाईआ। पुरख अकाल हो के पूरा कर फ़र्ज़ा, अदल इन्साफ़ आपणे नाल कराईआ। किसे दा होवे मूल ना हर्जा, हाज़र हो के लेखा देणा चुकाईआ। अबिनाशी करते गुरमुखां दा इक्को जिहा रखणा दरजा, वड्डा छोटा ना कोए बणाईआ। गुरसिखां आपणे हुक्म दा पावीं कदे ना पर्चा, मेहर नज़र नाल जगत पार कराईआ। दयावान हो के आपणे नाम दा सब दी कन्नी बन्न्हदे खर्चा, एथे ओथे तोट रहे ना राईआ। जन भगतां अंदर तेरे प्रेम दा रहे चर्चा, चर्च गिरजा लेखा जाण मुकाईआ। साहिब सतिगुर हो के साचा देणा निसचा, निहचल धाम देणी वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां नाल लाईं ना कोए दाओ पेचा, सिर आपणा समरथ हथ्थ रखाईआ। तेरा नाम निधान दो जहान तिक्खा नेजा, नेत्र नैण देणा विनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तूं भगतां कारन आयों उच्चेचा, उच्च पदवी दे मालक ख़ालक फर्श ख़ाकी उपर सोभा पाईआ। कुछ याद कर माछूवाड़े दी सेजा, जिस कारन गोबिन्द भेजा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। समरथ स्वामी तेरी ख़ाली होए कदे ना जेबा, सब दा मालक भईआ बण बेबा, सईआ साहिब सुल्तान अख्वाईआ। श्री भगवान बिन तेरी किरपा जन भगतां लोकमात नहीं वसेबा, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। किरपा कर खोल्ह दे भेता, भजन बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल तेरे वरगा अवर ना जेडा, उच्च अथाह अगम्म ना कोए वखाईआ। तेरे हथ्थ समरथ दीन दुनी दी रेखा, ऋषीआं मुनीआं समझ कोए ना आईआ। धन्न वड्याई जे वसिउँ भगतां देसा, भगत दवारे सोभा पाईआ। आपणी झोली पा लै पूरब लेखा, अगे मंगे कोए ना राईआ। वसणा दूर नहीं परदेसा, पृथ्मी आकाश देणा तजाईआ। रहिणा सदा जन भगतां तेरे चरण हमेशा, हम साजण इक बणाईआ। तूं मालक बण के धुर नरेशा, नर नरायण होणा सहाईआ। आदि जुगादी एकँकार एका, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोटां विच्चों थोड़यां रखी तेरी टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी देणे लगाईआ। जिन्हां कारन पैज संवारन गोबिन्द बाल चढ़ाए भेंटा, भिटयां गले लगाईआ। पुरख अकाल दा बण के बेटा, पिता इक्को इक समझाईआ। ओसे गोबिन्द दा रख लै चेता, जो चितावनी विच दृढ़ाईआ। ओस वड किरसाणे दा वड्डा खेता, जिस विच लख चुरासी बूटा रिहा महकाईआ। सब दे नाल सांझा कर दे हेता, दूसर धार ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त इक्को बण सर्ब दा नेता, नित

दा मालक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां उपर घर घर तेरा अमृत बरसे मेघा, जो नौवां गुर तेग़ बहादर मंग के गया तेग़ा त्रै त्रै त्रै तेरी आस रखाईआ।

✪ २३ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

इकी सावण कहे प्रभ दा खेल दो जहान जग लई, जग़ा जग़ा दए वड्याईआ। जिस पंच धार रिषीआं वाली सद लई, बल बावन मूल चुकाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश आप आपणी विच्चों कढ्ढ लई, अकल कला कलयुग आप वरताईआ। मेहर कर उपर शाहरग लई, रिग यजुर अथर्बण शाम लेखा गए मुकाईआ। प्रगट हो के भगत भगवान सरहद लई, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। खेल करा के अज्ज लई, अज़ल मज़ल तों दिता बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१०६८
१६
कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। इक्की सावण कहे मेरा समां नहीं होया समाप्त, राह अगला वेख वखाईआ। पुरख अकाल खेल खेलणा सही सलामत, सति धर्म दी साची कार कमाईआ। जन भगतां अंदरों कढणी कूड़ी अलामत, बेइलमां तों आलम देणा बणाईआ। ज़ामन हो के देणी ज़मानत, जमां तों लैणा छुडाईआ। बल दी सांभ के रखी अमानत, बावन आपणा पूरा फर्ज कराईआ। रिषीआं अंदर नाम नयामत, निरगुण सरगुण देणा टिकाईआ। सच दवारे रहे ना कोए ममानत, महिमानख़ाना प्रभू दवारा देणा जणाईआ। जगत बुद्धी रहे ना कोए स्याणप, चरण सरन वड्डी वड्याईआ। मूर्ख मुग्ध ना रहे अन्जाणत, सूझ समझ इक दृढ़ाईआ। मनुआ मन ना करे बग़ावत, कूड़ी क्रिया ना कोए लड़ाईआ। इक्की सावण कहे मेरी मन्ज़ूर होई दावत, रिषी पिछले गए आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेख वेख वखाईआ। इक्की सावण कहे आए रिषी महा रखीशर, रिख मुन सार कोए ना आईआ। प्रभ चरणां दे वड तपीशर, तपी तपदयां तों परे दयां हटाईआ। महा सुणदे सदा मुनीशर, हिरदे हरि हरि ध्यान रखाईआ। मेला कर जगत पित ईश्र, जगदीशर सेव कमाईआ। मुलम्मा रहे कोई ना पीतल, सोना कंचन रूप वटाईआ। स्वामी सदा सुहेला मीतल, मित्र इक्को इक मनाईआ। आत्म परमात्म कर के कीर्तन, किरत आपणी रहे कमाईआ। एथे ओथे कदे ना विलकण, ग़मी चिन्ता ना कोए सताईआ। गुरमुखो तुहाडी सेवा जेहड़ी विच कराई तिलकण, तिलकण बाज़ी तों ल्या बचाईआ। भगती दा लेखा छिन विच आवे परखण,

प्रीख्या हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। सेवा नाल भाव होया दर्शन, सच चन्द रुशनाईआ। जिस कारन जुग चौकड़ी तरसण, कोटल कोट रिख मुन साध सन्त ध्यान लगाईआ। वैरागी बैरागी त्यागी हो के तड़फण, रो रो देण दुहाईआ। जगत विकार रहे अटकण, पन्ध पार ना कोए कराईआ। सो साहिब स्वामी तुहाडे उत्ते कर के तरसण, तृखा जन्म जन्म बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो सहाईआ। इक्की सावण कहे मेरा लेखा लिख्या नहीं बाकी, बकाया आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दा बण के आप साकी, प्याला सहिज सहिज प्याईआ। कलयुग वेख अन्धेरी राती, रुतड़ी आपणे विच छुपाईआ। याद आई बावन वाली पाती, बल हथ्थ विच्चों । जिस दा कुछ लेखा प्रभ दी भांती, समझे कोए ना राईआ। कलयुग अन्तिम बणनी साखी, साख्यात दए वड्याईआ। इक कन्यां दी मन्नणी आखी, भोग घर घर लगाईआ। पंजां दी रिषीआं विच्चों होणी उत्तम ज़ाती, तेरां सौ सतासी मिले वड्याईआ। पुरख अकाल बणना साथी, सगला संग बणाईआ। बल दी याद आउणी गाथी, पिछला हाल सुणाईआ। जिस नूं बावन पुछया, मिल्या पुरख अबिनाशी, रिषी सच दे समझाईआ। ओस दे अंदरों आई हासी, हस्स के दिता सुणाईआ। विछोड़े विच होई उदासी, बल दुआरे मिल्या ना बेपरवाहीआ। मंज़ल पूरी होई ना घाटी, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। बावन किहा बचन दस्सां साची, सति सति दृढ़ाईआ। तूं मन्नी मेरी आखी, बिन अक्खरां दयां पढ़ाईआ। खेल होवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। तेरी बदल के फेर हयाती, जीवण जीवण विच्चों वखाईआ। गोबिन्द तेरा साथी, सगला संग निभाईआ। प्रेम धार मिले प्रभाती, संधया रूप ना कोए बदलाईआ। फेर होवे मात नजाती, पुरख अकाल देवे वड्याईआ। तेरी सेवा बहु बिध भांती, भावना आपणे नाल मिलाईआ। अमृत मेघ बरसे बूँद स्वांती, हरि संगत मुख चुआईआ। तेरे हथ्थ फड़ा के दाती, दातार ख़ुशीआं नाल आपणी कार लगाईआ। पिछले होणे तेरे जमाती, सोहणा संग बणाईआ। एह खेल बहु बिध भांती, बुद्धी समझ किसे ना आईआ। लेखा लिख्या ना जाए विच किताबी, कुतबख़ान्यां विच ना कोए छुपाईआ। लहिणा देणा नहीं कोई हिसाबी, अंकड़यां विच ना कोए गिणाईआ। सिफ्तां विच गाए ना कोए रबाबी, तन्द सितार ना कोए शनवाईआ। बंक सुहाए ना कोए महिराबी, मजलस हक ना कोए बणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त मूढ़ मुग्धां दी वधी आबादी, सृष्टी भुल्ले बेपरवाहीआ। ओस लहिणे दी होवे शादी, जिस दा शादयाना वज्जे चाँईं चाँईंआ। रविदास देवे प्रेम दी दादी, दाद इक्को नज़री आईआ। सुरती होवे जागी, शब्द होवे शनवाईआ। लाउणी पए ना कोए समाधी, मन का मणका ना कोए भवाईआ। दुरमति मैल रहे ना दाग़ी, पतित पुनीत कराईआ। किरपा करे मोहण माधव माधी, मधर बैन सहिज सुखदाईआ। निरगुण निरवैर बदल

स्वांगी, स्वांग आपणा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। इक्की सावण कहे रिषीओ तुहाडी सेवा धन्न, रिश्ता मिल्या बेपरवाहीआ। जननी वड्याई धन्न, जिस जण के सेव कमाईआ। तृष्ना मिटी तन, अग्नी तत बुझाईआ। नाम सुणाए कन्न, करमां दा रोग कटाईआ। जन्म दा बेड़ा बन्नु, प्रभ आपणे कंध उठाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म दिता दृढ़ाईआ। तुहाडा सुफ़ल होया जन्म, लेखा अगे मंगे कोए ना राईआ। पूरा होया प्रन, परमात्म आत्म विच समाईआ। मन का रहे ना भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। कम्म काज सेवा करदयां नहीं कोई शरम, शरअ तों बाहर लेखा दिता कराईआ। सांझा करके धर्म, धर्मातमा बणा के देवे माण वड्याईआ। अगे आपणी करनी आया करन, करता पुरख दए समझाईआ। पंजां ने पंझी, सावण तों मंगणी सरन, हथ्थ मस्तक उत्ते टिकाईआ। रसना ढोला सच पढ़न, नाअरा सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्की सावण कहे इक्की इक्की इक्की लेख, बिन लिख्त लिख्त लिख्त समझाईआ। जिस दी याद रहे हमेश, लोकमात ना कोए मिटाईआ। जिस दा विचोला दस दस्मेश, दो जहानां जोड़ जुड़ाईआ। अन्तिम कर के दूए दा एक, एका दूआ गंढु पवाईआ। भगतां सांझी कर के टेक, टिक्के मस्तक दए लगाईआ। कलम शाही वाला लेख, कोई मेट ना सके औलीआं शेख़, पैगम्बर वेख खुशी मनाईआ। तुहाडा सुहञ्जणा करके देस, दिशा आपणी दए जणाईआ। जित्थे झुकदे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुन्दे भेंट, तन माटी वजूद सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच लए रखाईआ। इक्की सावण कहे मेरा लिख्या ना कोए लेखा, वक्त वेला गया विहाईआ। हुक्म देवे नर नरेशा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैगम्बरां नाल लोकमात ठेका, हिस्से नाम वाले पाईआ। सो खेले आपणी अगम्मी खेडा, ख़लक समझ किसे ना आईआ। आपणे जिहा बण के आपणे जेडा, दूजा संग ना कोए मिलाईआ। अक्खरां विच दस्से किसे ना भेदा, बाणीआं विच भरम ना कोए तुड़ाईआ। अकल कलधारी बण के अछल अछेदा, अकल कल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। पूरब लेखा बुढ्ढे नढ्ढे बाल, जोबन जवान इक्को रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती अंदर वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर दिता सुहाईआ। गुरमुख सोहणे प्रगटा के लाल, अनमुलड़े हीरे रिहा जणाईआ। सेवा विच कमाल, कमाला कबीर दा निउँ निउँ लागे पाईआ। धुर दा खेल बेमिसाल, मिसल विच ना कोए समझाईआ। हिरदा जाणे ना कोए विशाल, बुद्धी बोध ना कोए दृढ़ाईआ। जिन्हां घाली सच्ची घाल, लेखे धुर दे लए लगाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध आप

हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी निहकलंक नरायण नर, नर हरि दर आपणा रंग रंगाईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त कौर दे गृह अमृतसर ✪

सतिजुग श्री भगवान पुरख अकाल दी इक्को होवे पूजा, कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार रहिण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्ट सबाई मार्ग रहे कोई ना दूजा, इष्ट देव स्वामी अन्तरजामी इक्को इक मनाईआ। जन भगतां गुरमुख साचे सन्तां निज लोचन खुल्ले नैण तीजा, परदा ओहला काया मन्दिर अंदर दए उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म मेल होवे साचे मीता, साक सज्जण सैण खोल्ह नैण इक्को इक नज़री आईआ। सति धर्म नौ खण्ड सत्त दीप चले साची रीता, दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच रहे ना कोए लड़ाईआ। परवरदिगार सांझा यार कर के खेल अगम्म अथाह अनडीठा, जगत नेत्र दीन दुनी नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सुहेला इक अकेला एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग तेरा चार कुण्ट दहि दिशा इक्को होवे पाठ, सिमरन जोग अभ्यास प्रभ आपणा नाम जपाईआ। काया मन्दिर अंदर सच सरोवर वखाए लेखा चुक्के आठ साठ, नीर सीर अमृत धार अगम्मी मुख चुआईआ। अनहद शब्द अनादी धुन आत्मक वजाए साचा नाद, जगत साज लेखा दए मुकाईआ। निर्मल नूर ज़ाहर ज़हूर जोत करे प्रकाश, अन्ध अज्ञान श्री भगवान काया माटी दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साची गाथ, मानव मानुख मानस करे इक पढ़ाईआ। मेहरवान ठाकर स्वामी परम पुरख रघुनाथ, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्को नाद वजाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले कलयुग अन्त कूड़ी माया विच्चों जाण जाग, आलस निंद्रा रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ मिलण दा मन बुद्धी तों परे उपजे वैराग, जगत वासना विच ना कोए हल्काईआ। सतिगुर प्रेम करे कूड़ काया कपड़ हँस काग, माणक मोती आपणा नाम चोग चुगाईआ। दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर रहिण ना देवे दाग़, पतित पुनीत पतित पावन दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी साजण देवे साज, कलयुग कूड़ कुटम्ब लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग तेरा सच्चा इक्को उपजे नाम, नाउँ निरँकार आप दृढ़ाईआ। लख चुरासी इक्को नज़री आए राम, जो हर घट रमिआ सोभा पाईआ। नाम संदेसा अगम्मी देवे हक पैग़ाम, पीर पैगम्बर गुर अवतार आपणा हुक्म मनाईआ। जिस नूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदे गए सलाम, नमों नमों कह

के सारे सीस झुकाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दा ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म चले ज़िमी असमान, गगन गगनंतर इक्को मंत्र निरंतर आपणा आप समझाईआ। सति धर्म सति सतिवाद झुलाए सच निशान, जगत निशाने कूड़ दए मिटाईआ। एथे ओथे दो जहानां लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां बण के हुक्मरान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर भविख्तां विच करदे गए ब्यान, सो साहिब सुल्तान धुर दा मालक आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, लोकमात साची दात तेरी झोली पाईआ। सतिजुग साचे तेरा इक्को होवे सच दवार, दवारका निवासी जित्थे सीस निवाईआ। जित्थे आदि जुगादि जुग चौकड़ी नाम सति दा भरया रहे भण्डार, अतोट अतुट अगम्म अथाह आपणे विच छुपाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देंदा रहे सदा जुग चार, सति सतिवादी आप वरताईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर करे खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्द अगम्मी धुर फ़रमाने करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। सृष्टी दृष्टी दए हुलार, काया काअबा कायनात हक मुकाम भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी
१०७२ १६ घट निवासी आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मिले सच्चा यार, मीत मुरारा विच संसारा इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार १०७२ १६
करे खुआर, सतिजुग साचे तेरा सुहाए बंक दवार, दर दरवाज़ा इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणी खेल रचाईआ। सतिजुग तेरा होवे इक्को जाप, रसना जेहवा बत्ती दन्द ढोले सर्ब गाईआ। जन्म जन्म दा रहिण ना देवे किसे पाप, कोट जन्म दे पापी लए तराईआ। रूह बुत्त दोवें करे पाक, पतित पुनीत लए बणाईआ। शब्दी शब्द होवे इतफ़ाक, मन चंचल ना कोए चतुराईआ। मन विकारा करे घात, शब्द खण्डा इक रखाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचे साचा चन्द चमकाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, दूजा संग ना कोए मिलाईआ। निज घर वासी हर घट अन्तर रखे वास, निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, एका एक करे रुशनाईआ। धुन आत्मक सुणाए आपणा राग, माया ममता मेट जगत विवाद, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भण्डारा दे के बोध अगाध, सतिजुग तेरा साचा मार्ग दए लगाईआ। सतिजुग तेरा नाम होवे एका एक, एकँकार दए वड्याईआ। जन भगतां बख़्शे साची टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक नाम रमाईआ। अन्तर अन्तर करे बुध बिबेक, बाहरों विद्या पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के साढे तिन्न हथ्थ खोल्हे भेत, नौ दवारे पैंडा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सच्चा कर के हेत, हितकारी हो के वेख

वखाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, निज लोचण नैण करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कलयुग भेख, पाखण्ड विभचार दए गवाईआ। त्रैगुण माया मूल ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल बख्शे साची टेक, धरनी धरत धवल उपर देवे माण वड्याईआ। सतिजुग तेरा साचा धर्म, सति सतिवादी आप लगाईआ। झगड़ा मुके चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लेखा रहे ना अठारां बरन, बरन आत्मक एका राग धुन करे शनवाईआ। जन भगतां नेत्र खोल्ह के हरन फरन, निज लोचन परदा दए उठाईआ। किरपा करे करता पुरख करनी करन, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। सच दवारा दस्से के धुर दी सरन, सरनागत इक्को दए दृढ़ाईआ। आवण जावण पैंडा मुके डरन मरन, लख चुरासी गेड़ा दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा राह सतिगुर शब्द बणे मलाह, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग तेरा इक्को नाम होवे धुर दा शब्द, अगम्मी राग सुणाईआ। जिस नूं मन्नण दीन दुनी सारे मज़्हब ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एथे ओथे दो जहानां मिले अदब, आदाब नाल सारे बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर साचे दर झुक

१०७३ १६ झुक मस्तक लाउँदे कदम, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। झगड़ा मुके तन माटी ख़ाकी वजूद बदन, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची चाढ़े इक्को रंगण, रंगणहारा आपणा नाम रंगाईआ। १०७३ १६

सतिजुग तेरा सति सतिवादी चले राह, रहबर इक्को इक नज़री आईआ। जिस नूं कैहिंदे जलवागर खुदा, मुकामे हक सोभा पाईआ। पतिपरमेश्वर कर के सीस रहे झुका, अबिनाशी करता कह के ढोले रहे गाईआ। सो पुरख निरँजण कह के मस्तक धूढ़ी लाउँदे छाह, हरि पुरख निरँजण कह के आपणा आप भेंट कराईआ। श्री भगवान कह के सारे हुन्दे फ़िदा, फ़ितरत आपणी रहे गवाईआ। अबिनाशी करता कर के सारे करन दुआ, खाली झोली अगे डाहीआ। पारब्रह्म मन्न के वास्ता रहे पा, निउँ निउँ लागण पाईआ। ब्रह्म रूप नज़री आए सृष्ट सबा, दूजा वेस ना कोए वटाईआ। पंज तत अंदर सारे रहे सुहा, अप तेज वाए पृथमी आकाश धुर दी बणत बणाईआ। रजो तमो सतो साचा संग रही निभा, आदि जुगादि जुग चौकड़ी साची सेव रही कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बणे तेरा मलाह, पतिपरमेश्वर सेवा आप कमाईआ। गुरमुखां गुरसिखां जन भगतां सूफ़ी फ़कीरां कोट कोट जन्म दे बख्श के गुनाह, मेहर नज़र नाल पार तराईआ। निरगुण हो के सरगुण पकड़े बांह, पार किनारा हरि निरँकारा इक्को दए वखाईआ। मेहरवान महबूब हो के सिर देवे ठंडी छाँ, शाह पातशाह सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग तेरा सच दवारा सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दए सुहा, सति सतिवादी आपणा निरगुण नूर

जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण आपणा खेल रिहा रचा, खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान नाम संदेसा सिफ्तां सिफ्त सिफ्त सालाहीआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड आंडलू ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग सचखण्ड दवारे मिले सच ओट, पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार होवे सहाईआ। शब्द अगम्मी सतिगुर साचा लाए एका चोट, चोटी चढ़ के सच दवारे खड़ के भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वासना मन ममता कढ्ढे खोट, हउमे हंगता कूड़ विकार लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकावे दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत, आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म भेव दए चुकाईआ। लेखा मुकाए जगत विद्या मन बुद्धी सोच, अनुभव धार आपणा लेखा दए दृढ़ाईआ। दीन दयाल सद कृपाल आसा मनसा पूरी करे गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं रहे लोच, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी जिस दा ध्यान लगाईआ। एका नाम निधान दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल बहुत, सिफ्ती नाम लेखा दए चुकाईआ। इक्को डंका वज्जे चौदां लोक चौदां तबक परलोक, इक्को हुक्म करे शनवाईआ। जन भगतां साचे सन्तां चिन्ता ग़म रहिण ना देवे कोई ना रोग, माया ममता हउमें हंगता दूर कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरगुण दे के साचा जोग, सरगुण साची सिख्या दए समझाईआ। घर प्रकाश काया मन्दिर अंदर करे निरगुण जोत, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी दया कमाईआ। नाम रस निझर झिरना अमृत देवे धुर दी चोग, जगत तृष्ना कूड़ी अग्नी अग्ग बुझाईआ। एथे ओथे दो जहानां होण ना देवे कदी विजोग, धुर संजोगी आपणा मेल मिलाईआ। सतिजुग तेरे अंदर लेखा रहिण ना देवे कूड़ काम क्रोध, लोभ मोह हँकार आपणे अंदर भस्म कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा एकँकारा इक्को इक वखाईआ। सतिजुग साचे बख्शे एका ओट अकाल, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दवारा वखा इक्को सच्ची धर्मसाल, जगत मन्दिरां दा लेखा दए मुकाईआ। निरगुण दीपक जोत अगम्मी दीवा देवे बाल, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जित्थे बैठण शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ राज राजान वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जगत विचोला लभ्भणा ना पए कोई दलाल, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। नाम अनमोला मिले धुर दा लाल, जिस दी कीमत जुग चौकड़ी सके ना कोए चुकाईआ। जित्थे

गुर अवतार पैगम्बर जलवा नूर तक्कण जमाल, सचखण्ड दवारा मुकामे हक नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना ज़िमीं असमान, नाद धुन सुणना ना पए कोई पैग़ाम, पैगम्बरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। गुरू गुरदेव देवे ना कोई दान, तत्तां वाली वस्त ना कोए वरताईआ। इक अकल्ला खेले खेल श्री भगवान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी ठांडे दर सोभा पाईआ। जिस दी महिमा आदि जुगादि जुग चौकड़ी महान, कलम शाही लिख ना सके राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी कलयुग वेखणहारा मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भविक्खतां विच करदे गए ब्यान, नाम इशारयां विच गुर अवतार पैगम्बर गए दृढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला तख्त निवासी पुरख अबिनाशी शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, धुर संदेसा नर नरेशा एका एकँकार इक अकल्ला आप सुणाईआ। जिस दी चार वरन अठारां बरन जीव जंत साध सन्त मन्नण आण, हुक्में अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इक्को इक वड्याईआ। सचखण्ड साची ओट पुरख समरथ, दूजा नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग साचे देवे तेरी

१०७५ १९ दात तैनूं वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल उपर देवे रख, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। जिस १०७५ १९

दा चार युग गाउँदे गए जस, अक्खर हो के सत्थर गए विछाईआ। सो देवणहारा सब दा हक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। सुत दुलारा धर्म वणजारा खोल्हे आपणा हट्ट, नाम निधान श्री भगवान विच टिकाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों देवे कढ्ढ, कलयुग अन्त जीव जंत विच रहिण कोए ना पाईआ। भगत भगवान चार वरन बणाए आपणी यद, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। नाम निधान श्री भगवान सुणाए धुर दा छद, छन्द अक्खरां विच लिखाईआ। नव नौ चार पार करा के हद्द, हदूद महिदूद अर्श आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साची ओट एका एकँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा दवारा सचखण्ड अपर अपार, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। थिर घर वेखे वेखणहार, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सेवा ला गुर अवतार, पैगम्बर जुगो जुग जुगती इक समझाईआ। भगत वछल बण गिरधार, गृह आपणा वेख वखाईआ। जित्थे सदा सदा सद एका धार, बिन गोपी काहन साची रास रिहा रचाईआ। बिन दीवा बाती कमलापाती कर उज्यार, गहर गम्भीर आपणा नूर करे रुशनाईआ। सो साहिब सुहेला इक इकेला लोकमात नित नवित आवे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाहीआ। कुदरत दा कादर करनी दा करता सर्ब

आलम करे प्यार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। सतिजुग साचा मार्ग सति सतिवादी दस्से विच संसार, अकल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लख चुरासी विच्चों लए उबार, भगत भगवान आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्दिर इक्को दए सुहाईआ। सतिजुग साची ओट सति स्वामी आदि निरँजण, आदि जुगादी इक्को नज़री आईआ। दीनां नाथ सदा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नाम निधान नेत्र देवे अंजण, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। आत्म परमात्म बणा के साचा सज्जण, मन वासना परे दए कराईआ। कूड़ी क्रिया जगत तृष्ना मेटे अग्न, अमृत मेघ इक वरसाईआ। सच दवारा आवे लँघण, घर विच घर चढ़ के सोभा पाईआ। सच प्रीती आवे मंगण, जन भगतां अन्तर आप उपजाईआ। काया चोली चाढ़े अगम्मी रंगण, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। निज आत्म परमात्म गृह निजानंद देवे सच्चा इक अनन्दन, रस आपणा आप प्रगटाईआ। सच दवारे धुर दी डण्डावत दस्से अगम्मी बन्दन, जिस बन्दगी विच्चों बन्दा बन्दीख़ाना जाए तुड़ाईआ। किसे दा बणना ना पए मसंदन, मुशंदगी विच सीस ना किसे झुकाईआ। सुरती शब्दी डोरी बज्झे तन्दन, एथे ओथे जगत जहान तोड़ सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंगण, समरथ स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। साची ओट पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता देवणहार वड्याईआ। जन भगतां मानस जन्म करे रहिरासी, रस्ता मार्ग आपणा इक वखाईआ। मन चिंदया कूड़ी लाहे उदासी, संसा रोग दए गवाईआ। जीवण विच्चों बदल देवे हयाती, ज़िंदगी आपणे नाम रंग रंगाईआ। धुर संदेसा दे के सच सुणावे साखी, साख्यात हो के परदा दए उठाईआ। भाग लगा के माटी ख़ाकी, ख़ाक विच रुलदे सचखण्ड दवारे दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हो के दास दासी, सेवक हो के सेवा सच कमाईआ। सतिजुग साची ओट पारब्रह्म, ब्रह्म देवे माण वड्याईआ। जिस दा आदि जुगादि सदा इक्को धर्म, रीती नीती समझ कोए ना पाईआ। भगत उधारना जिस दा कर्म, निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। साचे सन्तां बख्शे सरन, सरनागत इक्को इक दृढ़ाईआ। गुरमुखां खोल्ह के हरन फरन, निज नेत्र दए मिलाईआ। गुरसिखां लख चुरासी लेखा चुकाके जन्म मरन, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। कोटन कोटां विच्चों आवे फड़न, परदयां विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सहारा इक्को चरण, अमृत जाम मुख चुआईआ। सतिजुग साची ओट इक्को इक श्री भगवान, बख्शणहार शरनाईआ। जित्थे झुल्ले धर्म निशान, निशाना कूड़ ना कोए वखाईआ। बिना अक्खरां तों होवे ज्ञान, बिना विद्या तों करे पढ़ाईआ। बिना

१०७६
१६

मंज़ल चढ़न तों मिले मुकाम, मुकामे हक डेरा दए लगाईआ। जन भगतां दे चरणां हेठ दबा के ज़िमीं असमान, सूरज चन्द दा लेखा दए चुकाईआ। जगत वासना ना रहे ध्यान, गुण निधान देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी ओट इक जणाईआ। सतिजुग साची ओट एका एक दस्से अन्तरजामी, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण बण के भगत वछल स्वामी, दयानिध दीनां अनाथां दया आप कमाईआ। नाम सिफ्त सोहला ढोला गा अगम्मी बाणी, बाण निराला अणयाला तीर दए चलाईआ। सुरती शब्दी मेला होवे घर सज्जण साचे हाणी, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। निझर झिरना अमृत रस देवे ठंडा पाणी, बूंद स्वांती आप टपकाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लेखा दए मुकाईआ। दे के इक्को पद निरबानी, लख चुरासी विच्चों नाता दए तुड़ाईआ। किरपा कर शाह पातशाह सच्चा सुल्तानी, सच दवारे देवे माण वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां दे के सच्चा नाम इक्को धर्म निशानी, ओट आपणी आप समझाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे मेहरवानी, मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ। जन भगतां मंज़ल दस्स के इक आसानी, असल वसल यार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चार युग दी करन आया नज़रे सानी, लेखा सब दा वेख वखाईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरनाम सिंघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे साची ओट सति पुरख, सहारा इक्को इक जणाईआ। चिन्ता रहे ना सोग हरख, हवस कूड़ी दए मिटाईआ। भगत सुहेले गुरमुख लए परख, लख चुरासी जीव जंत खोज खुजाईआ। साचे सन्तां जन्म जन्म दी मेटे तड़प, विजोग विछोड़ा दए कटाईआ। धुर संजोगी दे के दरस, आत्म परमात्म मेला मेल मिलाईआ। मेहरवान हो के करे तरस, दीनां अनाथां गले लगाईआ। आपणा खेल करे असचरज, लीला मात वरताईआ। जन भगतां धुर दरगाह नाम कर के दरज, दर्द पिछला दए मिटाईआ। शरअ छुरी कोहे ना करद, कतलगाह ना कोए वखाईआ। बेनन्ती पूर करे अरज़, आसा मनसा वेख वखाईआ। पंजां होवण ना देवे हर्ज, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची शरनाईआ। सतिजुग साचे साची ओट पुरख अगम्म, देवणहार सच्ची वड्याईआ। कूड़ी तृष्ना मेटे तम, तामस राजस ना कोए चतुराईआ। हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। लेखे लावे पवण स्वास दम,

दामन हो के आप आपणी गंढु बंधाईआ। भेव खुल्हा के आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म दए समझाईआ। सफ़ल करा के मानस जन्म, जन साचे लए बणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। दे के वड्याई खाकी चर्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बख्श के साची सरन समें दा समाज दए बदलाईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साची ओट परम पुरख हक सुल्तान, हकीकत साची दए समझाईआ। जिस नूं सजदे करदे ज़िमीं असमान, शरकण गरबण सीस निवाईआ। कलमे पढ़दे दो जहान, साचा नाम ध्याईआ। सजदयां विच सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। पैगम्बर मन्नण इमाम, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा बनी नौ इन्सान, मेहरवान दया कमाईआ। सो कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया वेखे अनवान, अवाम परदा फोल फुलाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्द मर्दान, हुक्म आपणा इक वरताईआ। सच संदेसा दे फ़रमान, फरमांबरदार गुरमुख लए उठाईआ। चरण प्रीती बख्श के इक ध्यान, साचा इष्ट दए वखाईआ। सोहँ सति सरूपी दे के शब्द ज्ञान, बीआबान विच्चों बाहर कढाहीआ। सचखण्ड दवारे दस्स के धुर आराम, धाम इक्को इक वखाईआ। साचे सन्तां उपर होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुखां होण ना देवे कदे नुकसान, जुग जुग होए सहाईआ। गुरसिखां भाग लगा के काया खेड़ा नगर ग्राम, गृह अंदरों फोल फुलाईआ। सच प्रेम दा खा के तुआम, तमअ तामस दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी विच रहिण ना देवे किसे गुलाम, जो जन साची इक्को ओट तकाईआ।

१०७८
१६

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे साची ओट श्री भगवन्त, जन भगतां सद देवणहार वड्याईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म होवे धुर दा कन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। नाम निधान शब्द अगम्मी देवे मंत, कलमा कायनात इक दृढ़ाईआ। बोध अगाधा दो जहान श्री भगवान बण के धुर दा पंडत, साची विद्या गुण निधान इक समझाईआ। भेव खुल्हाए परदा लाहे गढ़ु तोड़े हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्को

इक जणाईआ। गुरमुख गुरसिख पकड़ उठाए साचे सन्त, सज्जण हो के निज नेत्र अंजण इक्को पाईआ। नाम बाणी आपणी महिमा दस्से अगणत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील कुरान अन्त कोए ना पाईआ। सच दवारे गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव करदे मिन्नत, ठांडे दरबार बैठे सीस झुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नज़र आवे ना कोए निन्दक, दुष्ट दुराचार विभचार ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साची दस्से इक्को सिम्मत, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। हरख सोग ग़म रहे ना चिन्त, ममता मोह ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे धुर दा वर, वारस हो के वेख वखाईआ। सतिजुग साचे साची ओट साहिब स्वामी सति सतिवाद, साजण राजण इक्को नजरी आईआ। जो लेखा जाणे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी हुक्में विच भवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर देवे दाद, वस्त अमोलक आपणी आप वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण धारों काढ, सरगुण पंज तत करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी आपणा वजा के नाद, धुर संदेसा नर नरेशा इक्को दए समझाईआ। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द दस्स के अगम्मी स्वाद, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। आलस निंद्रा विच्चों लाह के जाग, जगजीवण दाता

१०७६ जागरत जोत करे रुशनाईआ। परदा लाह के ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म आपणा रूप स्वच्छ सरूप दए दरसाईआ। धुन आत्मक १०७६

१६ उपजे धुर दा राग, जगत रागां दी लोड़ रहे ना राईआ। सुरती शब्द होवे विस्माद, बिस्मिल हो के आपणा आप मिटाईआ। १६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा बदल के सच समाज, चार वरन अठारां बरन, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे तेरी ओट अगम्म अथाह, रहबर इक्को नज़री आईआ। जिस नूं कैहिंदे जलवागर खुदा, बेनज़ीर नूर रुशनाईआ। मुकामे हक डेरा रिहा ला, लाशरीक वाहिद बेपरवाहीआ। सो खेल करे दो जहां, जहालत कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे थाउँ थाँ, ज़िमीं असमानां फोल फुलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मानव खेड़ा वेखे गराँ, काया माटी परदा ओहला रहे ना राईआ। मन वासना जगत जीव होए कलयुग काँ, काग हँस रूप ना कोए बदलाईआ। सच सुहेला बण के सिर देवे ना कोई ठंडी छाँ, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू सारे गए छुडाईआ। झगड़ा पा के सूर गाँ, दीन मज़्हब दी करन लड़ाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म तैनूं मिलण दा रखे कोए ना चाउ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। किरपा निधान ठाकर स्वामी सचखण्ड निवासी शहिनशाह, शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। जन भगतां नाम संदेसा नर नरेशा दए सुणा, अनबोलत आपणा राग अल्हाईआ। धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक बण पिता माँ, गोद सुहञ्जणी लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तरा, तारनहार स्वामी तेरी

ओट तकाईआ। सतिजुग साचे साची ओट साहिब सतिगुर दीन दयाल, दयानिध इक अख्वाईआ। सचखण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, बंक दवारा एकँकारा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे मिसाल, जिस दी मिसल जगत ना कोए समझाईआ। जन भगत सुहेले आपणे वेखे लाल, लाल गुलाला इक्को रंग चढ़ाईआ। ओथे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना कोए प्रनाईआ। जन भगतां लेखे लाए जन्म जन्म दी कीती घाल, धर्म मुशकत झोली पाईआ। ज़िंदगी दा बन्दगी दा अगे रहे ना कोए स्वाल, अनन्द आपणे विच मिलाईआ। दीनां बंधप हो कृपाल, किरपण आपणी गोद उठाईआ। त्रैगुण माया मेट जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म हो के वसे सदा नाल, नालिश मन दी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची ओट दस्से इक्को पुरख अकाल, अकल कलधारी जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी रिहा दृढ़ाईआ।

✪ २५ सावण शहिनशाही सम्मत २ नरैण सिंघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

धर्म रिषीओ तुहाडी निमस्कार, डण्डावत बन्दना दो जहान नज़री आईआ। किरपा करे आप निरँकार, मेहरवान महबूब होवे सहाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा देवणहार विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। भगत सुहेला निरगुण धार मेले मेलणहार, सरगुण दए माण वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति सरूपी कर प्यार, शाहो भूपी मेहर नज़र उठाईआ। लहिणा देणा चुकावे वारो वार, अगे रहे ना कोए उधार, लेखा लेखे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धर्म रिषीओ तुहाडा रिश्ता नाल गोबिन्द, गहर गम्भीर देवे वड्याईआ। शब्द अनादी बणा के बिन्द, बन्दना इक्को दए समझाईआ। जन्म कर्म दी मेट के चिन्द, साचे चन्द कीते रुशनाईआ। देवे वड्याई गहर गम्भीर गुणी गहिंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होवे आप सहाईआ। अमृत धार वहाए अगम्मी सागर सिन्ध, जगत सागर दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए वखाईआ। पूरब लेखा देवणहारा आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी निभावणहारा साथ, सगला संग निभाईआ। जिस बावन बल मिल के दस्सी गाथ, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। सो वेखणहारा खेल तमाश, धुर दा मालक नज़री आईआ। प्रगट हो के साख्यात, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दा लेखा लिख्या ना जावे कलम दवात, काग़ज़ात

ना कोए वड्याईआ। राग गाया ना जाए किसे नाल रबाब, धुंनां विच ना कोए शनवाईआ। समझया जाए ना मित्र अहिबाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। साचा लेखा वेखणहार एका एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सतिजुग विछड़े कलयुग अन्तिम दिती टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। धर्म दवारे कर के बुध बिबेक, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। अंदर वड़ के पारब्रह्म ब्रह्म खोल्हे आपणा भेद, परदा अगे रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल दस्से निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जोती जाता हो के लोकमात उज्यार, परदा ओहला दए चुकाईआ। रिषीआं लहिणा देणा चुकाए उधार, पूरब लहिणा झोली पाईआ। साचा मार्ग दस्स के सचखण्ड दवार, कूड़ा नाता तोड़ संसार, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे गहर गम्भीर, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, नूर नुराना आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे चरण कँवलां झुकदा कबीर, काअब्यां दा सजदा इक्को इक समझाईआ। सो सति सतिवादी सतिजुग साची कर ताअमीर, लोकमात दए वड्याईआ। कलयुग लहिणा देणा मुका अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म समझाईआ। सति धर्म दी सच बणा तदबीर, तकदीर सब दी दए बदलाईआ। शरअ तोड़ जगत ज़ंजीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नाम खण्डा हथ्थ शमशीर, दो जहानां दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दरगाहीआ। धुर दरगाही इक्को नानक, पारब्रह्म आप अखवाइंदा। कलयुग अन्तिम बण के सालस, सतिजुग विछड़े मेल मिलाइंदा। रहे ना कोए दलिद्री दालद, सोई सुरती आप उठाइंदा। मनुआ मन ना रखे कालख, दुरमति मैल धवाइंदा। सिदक सबूरी दे के साबत, सही सलामत आपणे विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप चुकाइंदा। साचा लेखा चुक्के ऋषी, मुन मुनीशर मिले वड्याईआ। जिन्हां तों उपजे धर्म दी सिक्खी, सिख सतिगुर विच समाईआ। सतिजुग धार चले इक्की, एकँकार वेख वखाईआ। जिस दी लेखणी गोबिन्द लिखी, बिन कलम शाही दिती वड्याईआ। ओस दी पूरी हो गई मिती, मित्र प्यारा वेखे चाँईं चाँईंआ। बल वाली खोल्ह के चिठ्ठी, बावन सुणदा चाँईं चाँईंआ। जिस दी धार अगली अनडिठ्ठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए मुकाईआ। लेखा कहे मैं कदे ना आया विच लिख्त, कलमबन्द ना कोए कराईआ। मेरा शब्दी विहार भविख्त, बिना अक्खरां तों करां पढ़ाईआ। सब नूं दस्सां पुरख अकाल सांझा इष्ट, राम वशिष्ट ना कोए वड्याईआ। जन भगतां खोल्ह के दृष्ट, गृह मन्दिर परदा दयां उठाईआ। झगड़ा मुका

१०८१
१६

के स्वर्ग बहिश्त, सच दवारा दयां जणाईआ। आत्म परमात्म उपजा के साचा इश्क, तन वजूद दा लेखा दयां गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर इक्को दए वखाईआ। दर घर कहे मैं होया सुहञ्जणा, सोभावन्त दिती वड्याईआ। चरण धूढ़ करा के धुर दा मजना, मजलस भगतां दिती वखाईआ। घर सद्द के साचे सज्जणा, गुरमुख मेला ल्या मिलाईआ। जिन्हां गृह दर्शन करके रज्जणा, नेत्र नैण तृप्त तृष्ना रहे ना राईआ। झगड़ा रहे ना आहला अदना, अदल इन्साफ़ इक्को इक वखाईआ। बल बावन चुकाउणा बदला, पूरब लहिणा रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल दस्से भगवान, अबिनाशी करता दया कमाईआ। बावन वेखणा नाल ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। बल करना परवान, परवाना धुर दा हथ्थ फड़ाईआ। रिषीआं दा दिता दान, दातार हो के झोली रिहा भराईआ। कलयुग वक्त पहुंचयां आण, वेला पिछला गया विहाईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, दीन दयाल देवणहार सच्ची सरनाईआ। पूरब लेखा चुका के कान, महिमा महान रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला रिहा उठाईआ। परदा ओहला कहे मैं रहिण नहीं देणी उदासी,
१०८२ चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। मैनूं याद रिषी मुनी तेरां सौ सतासी, बल दवारे सोभा पाईआ। जिन्हां दे गल विच जम १०८२
१६ ना पाए फाँसी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जुग जुग पूरी होवे आसी, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। सब तों उँतम १६
पंजां दी साथी, सगला संग संग बणाईआ। जिन्हां दा लहिणा देणा नाल बाली नढ्ढी काकी, अवस्था तेरां साल जणाईआ। सुनेहड़ा शब्द वाली पाती, पत्रका अक्खरां वाली ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। बावन कहे मेरा पूरबला उँधार, लहिणा रिषीआं दयां वखाईआ। कलयुग अन्त हो त्यार, कल कल्की वेस वटाईआ। निरगुण सरगुण कर विवहार, विवहारी हो के दयां जणाईआ। पिछला कर्ज़ा लाहवां उँधार, अगे लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं जाणे ना कोए संसार, सृष्टी बुद्धी विच ना आईआ। लेखा लिखे ना कोए लिखार, कलम शाही ना वण्ड वण्डाईआ। ओस दा करां इज़हार, जिस दी इबारत ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। बावन कहे खेल मेरा असचरज, अन्तिम कल समझ किसे ना आईआ। जिस गृह मेरा भोजन दरज, बल नगरी सोभा पाईआ। छोटी कन्यां कीती अरज़, निउँ के सीस निवाईआ। प्रेम दा वन्डया दर्द, दुखियां होया सहाईआ। मन्ज़ूर करके अरज़, मेहर नजर उठाईआ। नरैण सिँघ ओस कन्या दा पिछला पिता ते मनुष जामा मर्द, मुदत तों नाता जुड़या चलया आईआ। पंजां दी जिस दे नाल फ़रद, बेनन्ती

सुण के खुशी मनाईआ। सांझी सब दी पूरी कर के ग़रज़, आसा मनसा आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल करे असचरज, अचरज भेव कोए ना पाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड गुमान पुरा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग तेरी साची होवे बन्दगी, बन्दीख़ाना बन्धन दए कटाईआ। महिमा होवे शब्दी सुत नंद दी, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। करनी पए ना किसे दी मुशंदगी, मुश्कल नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे गंदगी, गवार बुद्धी लेखा दए गवाईआ। लो होवे गुरमुख साचे चन्द दी, मातलोक वज्जे वधाईआ। वस्त मिले सोहँ धुर दे छन्द दी, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। मंज़ल मुके अगले पिछले पन्ध दी, रसत्यां विच ना कोए भवाईआ। रंगण चढ़े अगम्मी रंग दी, हरि करता आप रंगाईआ। अमृत धार वहे धुर दी गंग दी, अमृत रस जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१०८३ १६ आपणी किरपा कर, धार दृढ़ा के हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म आपणे विच समाईआ। सतिजुग साचे धुर दा शब्द करे तेरा जोड़, १०८३ १६
जोड़ी निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। दो जहानां वेखे दौड़, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां उत्ते करे ग़ौर, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। सज़ा देवे ठग्ग चोर, कूड़ कुड़यार बचया रहिण कोए ना पाईआ। दो जहान वखाए शब्दी ज़ोर, जोरू ज़र ना कोए वड्याईआ। मनुआ मन ना पावे शोर, शौहर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग साचे तेरा होवे साचा मंगल, गीत हरि गोबिन्द गाईआ। लभ्भणा पए किसे ना जंगल, टिल्लयां उत्ते ना कोए भवाईआ। शरअ रहे कोए ना संगल, मज़्हब दीन ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल रखे आपणे अंगण, गोदी इक्को इक सुहाईआ। दूजे दर जाणा पए ना मंगण, भिखारी हो के झोली कोए ना डाहीआ। सच दवारयों मिले धुर दा अदल, अदला बदली कलयुग कूड़े दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। सतिजुग साचे तेरा सुहञ्जणा होवे रंग, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सुहञ्जणी होवे सेज पलँघ, पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ। सुहावणा वजदा रहे मृदंग, बिन तन्द सितार करे शनवाईआ। मिलण दा अनोखा बणया रहे ढंग, जगत विद्या सके ना कोए समझाईआ। लहिणा देणा बणया रहे विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड नाता सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सतिवादी तेरा छन्द, सन्त साजण मेल मिलाईआ। भरम रहे ना द्वैती कंध,

करमां दा लेखा दए मुकाईआ। भगत सुहेले दे के संग, धुर दा साथ बणाईआ। आसा मनसा पूरी कर उमंग, संसा रोग चुकाईआ। सच प्रेम दा दे के अनन्द, निजानंद खुशी प्रगटाईआ। नाम भण्डारा अगम्मी वण्ड, वस्त अमोलक झोली पाईआ। किरपा कर सूरा सरबंग, सतिगुर होवे आप सहाईआ। कूड़ी क्रिया मेट भेख पखण्ड, सति सच दए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दे के परमानंद, सुख सागर इक्को दए वखाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड काउुंके ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा मार्ग मिले सुखाला, सुख सागर नज़री आईआ। कलयुग क्रिया कूड़ मिटे जंजाला, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। किरपा करे दीन दयाला, भगत वछल बेपरवाहीआ। चार वरनां वखा के इक्को धर्मसाला, धर्म दुआर दए वड्याईआ। रंग रंगा के शाह कंगाला, प्रीत धुर दी आप बंधाईआ। पिछला देणा पए ना कोए अहिवाला, भेव अगला दए खुल्लाईआ। फल लगा के काया डाला, पत्त टहणी आप महकाईआ। जगत समाज दी बदल देवे चाला, चार वरन इक्को दर वखाईआ। मार्ग इक्को लगाए अल्ला ताअला, तअलक आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर हल्ल करे स्वाला, सालस हो के वेख वखाईआ। सतिजुग, तेरे अन्तर नाम होवे सौखा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। मंज़ल चढ़ना रहे ना औखा, पन्ध अंदरों दए मुकाईआ। मानस जन्म दा साचा मौका, प्रभ मिलण दा सहिजे दए समझाईआ। भगतां नाल होवे कदे ना धोखा, धूआँधार विच्चों बाहर कढाहीआ। पढ़ना पए ना अक्खरी पोथा, नाम इक्को इक समझाईआ। सब दा पाप जाए धोता, दुरमति मैल दूर कराईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना रोसा, रस्ता धुर दा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्स के सच सलोका, सुलह नाल सहिजे मेल मिलाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड काउँके ज़िला अंर्मिसर ✪

सतिजुग तेरा धर्म दुआर होए सुहञ्जणा, भगत दुआर मिले वड्याईआ। सति प्रकाश करे आदि निरँजणा, आदी बुनयादी इमदादी बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े बण के धुर दा सजणा, सगला संगी बहुरंगी आपणी खेल वखाईआ। सच

सरोवर इक्को कराए अगम्मी मजना, जन्म कर्म दा रोग रहे ना राईआ। हरि सरनाई साचा सजदा दस्से आपणी बन्दना, बन्दगी विच मुशंदगी दए मुकाईआ। निज घर निजानंद विच्चों प्रगटाए परमानंदना, जगत तृष्ना अग्ग रहे ना राईआ। पार कराए जगत दुआर कूड़ कुड़यार हद्दना, हदूद महिदूद आपणी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा वखा के सच परगणा, ठांडे दर सोभा पाईआ। सतिजुग तेरा सुहेला होए वक्त, वाकिफ़कार मिले बेपरवाहीआ। माण वड्याई देवे विच जगत, जगदी जोत जगा जगा कर रुशनाईआ। साचे नाम दी दे के अगम्मी शक्त, शख्सीअत असलीअत सब दी दए बदलाईआ। मनुआ करे ना कोए हसद, हस्ती मस्ती नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। लेखा जाण के उपर अर्श, शरअ फर्श दए रखाईआ। मेहरवान हो के उपर भगत, भाग भगवान आपणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हो के सदा देवे दरस, जगदीशर ईश्र आपणा रूप बदलाईआ। सतिजुग तेरा साचे धर्म नाल मिलाप, मिल मिल वज्जे वधाईआ। आत्मा दा परमात्मा नाल जाप, सिफ्तां वाली ना कोए पढ़ाईआ। सच दुआर दा खुल्ा रहे ताक, खिड़की बन्द ना कोए कराईआ। पूरा करे भविख्तां वाला वाक्, वाक्य कलयुग वेखे चाँईं चाँईंआ। जगत दृष्टी विच्चों कढ्ढ नफ़ाक, इतफ़ाक झोली दए भराईआ। भगत सुहेले बणा के जोती शब्दी साक, साख्यात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दे के नाम दात, दाअवेदार अगला दए बणाईआ। सतिजुग तेरा सच्चा होवे मेला, मिल मिल प्रभ खुशी मनाईआ। रंग चढ़या रहे गुरू गुर चेला, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। प्रभ मिलदा रहे सज्जण सुहेला, साहिब स्वामी नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी जूह रहे ना बेला, जंगल विच आपणा नाम मंगल दए वखाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेला, जगत सृष्टी भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणे इक अकेला, दूजा संग ना कोए रखाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड महावा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे सृष्ट सबाई होवे एका इष्ट, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खोल् सर्ब दृष्ट, दीन दुनी दयाल हो के आपणे मार्ग लाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया कलयुग ममता ना रहे भृष्ट, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धारा दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे

सृष्ट सबाई मन्ने पुरख अकाल, चार कुण्ट दहि दिशा दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दवारा साची दिसे धर्मसाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जित्थे मिल के सोभा पाईआ। झगड़ा रहे ना कोई शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म होवे आप कृपाल, ब्रह्मवेता भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द एथे ओथे दो जहानां बण दलाल, धुर विचोला परदा ओहला दए उठाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सदा वसे नाल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण विछड़ कदे ना जाईआ। मेहरवान महबूब हो के तोड़नहारा जगत जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले जन भगत जो घालण रहे घाल, तिन्हां लहिणा देणा नाम भण्डारा अमोलक झोली पाईआ। जन्म मरन दा हल करे स्वाल, लख चुरासी जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरी साची धार बंधाईआ। सतिजुग तेरा दो जहानां चले साचा राह, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल इक्को ध्यान लगाईआ। अबिनाशी करता परवरदिगार बणे सच मलाह, खेवट खेटा बण के धुर दा नेता हुक्मरान इक्को हुक्म चलाईआ। सुरती शब्दी देवे सच सलाह, अक्खरां तों बाहर निरअक्खर करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त साध सन्त आत्म परमात्म मेला लए मिला, परदा ओहला अंदरों दए चुकाईआ। मेहरवान हो के महबूब साचे गुरमुखां बख्शे कोट जन्म गुनाह, पतित पापी पुनीत दए बणाईआ। आदिन अन्ता श्री भगवन्ता हो के पकड़े बांह, लख चुरासी विच्चों पार कराईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारा देवे थाँ, जित्थे बिना हरि किरपा चरण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा साचा मार्ग सति सति दए उपजाईआ। सतिजुग सच तेरा अगम्मी होवे नाम, नाउँ निरँकारा निरगुण धार आप जणाईआ। अमृत रस बण के साकी देवे धुर दा जाम, सति खुमारी इक्को इक रखाईआ। भाग लगा के काया माटी नगर ग्राम, दीवा बाती कमलापाती करे रुशनाईआ। आत्म धुन उपजाए सच्ची धुनकान, अनहद नादी आप करे शनवाईआ। सच दवारा एकँकारा जन भगतां देवे माण, अभिमान अज्ञान रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप वरन बरन एका दस्से सच निशान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान, सतिजुग तेरी भावना भाव विच पूर कराईआ। सतिजुग साचे तेरा इक्को होवे काहन, जो लख चुरासी गोपी रिहा प्रनाईआ। जिस दा तत्तां वाला नहीं कोई निशान, जोती जोत डगमगाईआ। सद वसे सचखण्ड धुर मकान, मुकामे हक डेरा लाईआ। नाम निधाना देंदा रहे फ़रमान, फ़ुरनयां विच्चों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस नूं बुद्धी वाला समझे ना कोए इन्सान, अनुभव आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मंगदे

गए दान, भिक्खक हो के झोली अगे डाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा करन महान, जुग चौकड़ी भज्जण वाहो दाहीआ। सो करनी दा करता पारब्रह्म हो के मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग तेरी सति नीती बिन अक्खरां करे परवान, परम पुरख परवाना नाम निधाना आपणा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरे सच धर्म दा बणाए इक विधान, चार वरन अठारां बरन इक्को हुक्म हुक्में अंदर आप मनाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुमां सिँघ दे गृह पिण्ड मोदे ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे तेरे साथी सच्चे गुरसिख, जिन्हां सिख्या प्रभ जणाईआ। जन्म मरन तों बाहर जिन्हां दा भविष, भविख्त नाल मिल के वज्जे वधाईआ। मनसा पूरी होई इच्छ, ईश्वर जगदीश्वर मेहर नज़र उठाईआ। नाम निधान पाए भिच्छ, भिखारी झोली आप भराईआ। मानस जन्म जग जावण जित्त, जींवदयां जग मिले सच्ची सरनाईआ। सदा परम पुरख दा रहे हित,
१०८७
१९
आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जिन्हां कारन आया नवित, निरगुण हो के वेस वटाईआ। उहनां नंगी होण ना देवे पिठ्ठ, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। सच दवारे बण के पित, गोद सुहञ्जणी इक सुहाईआ। सद वसणहारा चित, मन चिन्ता दए गवाईआ। किरपा कीती उपर जिस, दरगाह साची दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे गुरमुख गुरसिख, सिख्या तों बाहर कर पढ़ाईआ। सतिजुग साचे तेरा सच्चा संगी गुरमुख, मुखीआ चुरासी विच्चों नज़री आईआ। जिस दा जन्म मरन दा रहे कोई ना दुःख, मात गर्भ ना मिले सज़ाईआ। पुरख अकाल रखे ओट, ओड़क आपणे विच समाईआ। निर्मल नूर मिले जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना लोक परलोक, सचखण्ड दवारा इक वखाईआ। जित्थे आत्म परमात्म दा सांझा सलोक, अक्खरां वाला लेख ना कोए बणाईआ। मन बुद्धी दी रहे कोई ना सोच, जगत विद्या परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मुका के हरख सोग, जोग सति धर्म दए दृढ़ाईआ। सतिजुग तेरा साथी सच्चा सन्त, साहिब सतिगुर जिस देवे वड्याईआ। जिन्हां दे आत्म अन्तर नाम इक्को सुणाया मंत, लग मातर दी लोड़ ना कोए रखाईआ। सुरती शब्दी मेला मिल्या रहे नार कन्त, सेज सहंजणी इक्को नज़री आईआ। नाता तोड़ के विच्चों जीव जंत, जगह बजगह होवे आप सहाईआ। सति दवारे बणाए

साची बणत, घड़न भन्नणहार समरथ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सन्तां महिमा गणे अगणत, जिन्नां आपा मेल बिन बाती तेल काया मन्दिर अंदर करे रुशनाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी छिन्दो दे गृह पिण्ड धनोए ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे तेरा साचा होवे धर्म, सो पुरख निरँजण देवे माण वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी दा साचा होवे कर्म, हरि पुरख निरँजण भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। दीन दुनी झगड़ा रहे ना वरन बरन, एकँकार इक अकल्ला मेहर नज़र उठाईआ। दो जहानां मिले साची सरन, आदि निरँजण जोती जाता इक्को नूर करे रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल इक्को ढोला पढ़न, अबिनाशी करता शब्द अनादी नाद करे शनवाईआ। साची मंजल बिन पौड़े डण्डे सन्त सुहेले चढ़न, श्री भगवान सच निशान सचखण्ड दवारे इक वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव खुल्ले आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर
१०८८ १९ परदा ओहला दए उठाईआ। करे खेल करनी दा करता कुदरत दा मालक उपर धवल, धरनी धरत धौल लहिणा देणा झोली पाईआ। पूरा करे गुर अवतार पैगम्बरां भविख्तां वाला कौल, इकरार बेइकरार शाह सुल्तानां हो सहाईआ। हर घट निवासी १०८८ १९
जोत प्रकाशी लख चुरासी जीव जंत अन्तर रिहा मौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा वज्जे इक्को डंका, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द बैठण सीस निवाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा सुहाए धुर दा बंका, बंक दवारा एकँकार इक्को इक वखाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे कोई राउ रंका, राज राजान शाह सुल्तान जीव जहान आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। भेव खुल्लाए बोध अगाधा बण अगम्मी पडंता, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाम निधाना इक्को इक दरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हरि हिरदे अंदर वस के रैण अन्धेरी मस्या दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सति दवारा लोकमात आप प्रगटाईआ। सतिजुग साचे तेरा सच्चा सच होवे उपदेश, परम पुरख परमात्म आत्म इक्को इक बूझ बुझाईआ। करे खेल सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी नर नरेश, तख्त निवासी धुर दरगाही इक्को हुक्म सुणाईआ। जिस दे दर कोटन कोटि झुकदे विष्न ब्रह्मा महेष, शंकर निउँ निउँ लागण पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच करन आदेस, नमों नमों कह के चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का ख़ाक

रमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण निरवैर निराकार एका धार अगम्म देस, जोती जाता पुरख बिधाता लख चुरासी जीव जंत फोल फुलाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सच दवारे करनहारा हेत, नित नवित नर नरायण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे तेरा लहिणा देणा तेरी झोली पाईआ। सतिजुग कहे मेरे परम पुरख कृपाल, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्ट सबाई होणा बेहाल, चार कुण्ट दहि दिशा सांतक सति ना कोए वरताईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारा मिले ना कोए दलाल, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू सारे गए छुडाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डौरू डंका एका रिहा वजाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी मिल के करे ना कोए पहिचाण, आत्म परमात्म मेला मेल ना कोए मिलाईआ। मन वासना दीन दुनी होई कंगाल, बुध बिबेक रूप ना कोए वटाईआ। माया कारन शाह सुल्तानां वज्जे ताल, धुन अनादी नाद आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख आपणा घर, निरगुण हो के फेरा पाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग कूड़ कुड़यारा तक्क, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कोई ना जाणे हकीकत हक, हकूमत सच ना कोए कमाईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी रही नठ, इष्टी तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। सति सतिवाद खेड़ा होया भठ्ठ, माया ममता मोह करे हल्काईआ। सति प्रकाश तेरा नूर ब्रह्म जोत जगे ना लट लट, नौ दवारे पन्ध ना कोए चुकाईआ। साचा लाहा साहिब स्वामी सच दवारयों सके कोई ना खट, नाम निधान श्री भगवान हथ्थ किसे ना आईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत पई वट्ट, अगली वाट पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग स्वांगी स्वांग करे खेल नटुआ नट, मण्डल रासी सुरती शब्दी गोपी काहन रास ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सति धर्म लोकमात खोल्ह आपणा हट्ट, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुरमुख गुरसिख भगत वणजारे लै बणाईआ। सदी चौधवीं लहिणा देणा मुका पुरख समरथ, ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र रो रो देण दुहाईआ। गोबिन्द यारड़े दा सत्थर गया घत्त, जगत सूलां सेज हंढाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार निरवैर हो के लोकमात आ वत्त, बेवतनां नूं वतन दे वखाईआ। साचा धर्म सन्तोख धीरज दे जत, अग्नी तत ना लागे राईआ। मानव जाती सब दी सांझी होवे मत, ब्रह्म पारब्रह्म परदा दे चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा रसना जेहवा बत्ती दन्द गावे तेरा जस, सिफ्तां विच तेरा ढोला गाईआ। निज नेत्र ज्ञान लोचन खोल्ह अक्ख, प्रतख रूप होवे गुसाँईंआ। तेरी आत्म परमात्म तेरे नालों रहे ना वक्ख, कर किरपा आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, सतिजुग साचा झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग वेख कूड़ कुड़यार,

चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा दिसे ना कोए मित्र मुरार, विभचारी होई लोकाईआ। भविख्तां विच पैगम्बरां कीता तेरा इज़हार, लेखा लिख के कलम शाहीआ। गुर अवतार करदे गए पुकार, होका शब्दी नाम सुणाईआ। कल कल्की इक अवतार, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। जिस नूं जन्मे कोई ना माई विच संसार, नाता तत ना कोए बणाईआ। अन्तरजामी घट भीतर देवणहार होवे जीव अधार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेखे थाउँ थाँईंआ। निरगुण नूर जोत करे उज्यार, शब्दी डंक वजाए अपार, दो जहानां इक तराना दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कार, ब्रह्मण्ड खण्ड रवि ससि ज़िमीं असमान फिरन चरण दवार, हुक्में अंदर भज्जण वाहो दाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कढ्ढ बाहर, धरनी धरत धवल उपर रहिण कोए ना पाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे नाम दा होवे इक जैकार, इक्को तेरा इष्ट दीन दुनी सर्ब मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी तेरी सच सच्ची सरकार, जिस दा तख्ता आदि अन्त जुगा जुगन्त ना कोए उलटाईआ। श्री भगवान कहे सुण सतिजुग मीता, धुर संदेसा दयां दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल के अन्तर रीता, मन्दिर मसीत लहिणा दयां मुकाईआ। इक नाम जणावां दो जहान अनडीठा, जिस नूं शास्त्र सिमरत
१०६० वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दी सति चलावां रीता, आत्म परमात्म बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। साचा कलमा इक्को दस्सां हदीसा, हज़रत पैगम्बर जिस नूं पढ़ के खुशी मनाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को होवे नसीहता, नसल असल ब्रह्म पारब्रह्म दयां दृढ़ाईआ। मिले माण वड्याई हस्त कीटा, ऊँचां नीचां राउ रंकां इक्को दर वखाईआ। सच दुआर विच संसार दिसे ठांडा सीता, दूई द्वैत शरअ शरायत अग्नी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा खोल्हे दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा इक्को इक वखाईआ। सतिजुग सच गुर अवतार पैगम्बर करदे गए उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। निरअक्खर अक्खर धार बण के करदे गए तारीफ़, सिफ्तां विच धुर दे ढोले गाईआ। जोती शब्द करदे गए प्रीत, प्रीतम परम पुरख इक्को इक मनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी बदलदा आया तवारीख, आपणी तारीख ना किसे दृढ़ाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त लेखा मुकावे ऊँच नीच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, समरथ स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह मन्दिर काया माटी खोज खुजाईआ। सतिजुग साचे तेरा पुरख अकाल देवे साथ, सगला संग बणाईआ। नाम अगम्मा दस्से के पाठ, पाठशाला इक्को दए वखाईआ। जित्थे झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन दुनी ना कोए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरगुण बणे साक, सरगुण

वज्जे तन वधाईआ। त्रैगुण माया पोह ना सके अग्नी आंच, पंज विकार ना कोए हल्काईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग तेरी रुतड़ी सति सतिवादी आप सुहाईआ। पूरा करे गुर अवतारां पैगम्बरां भविख्त वाक, वाक्य वेखे थाउँ थाँईंआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों कढ्ढ नफ़ाक, इतफ़ाकया इतफ़ाक धुर दा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब गुणां गुणतास, गुणवन्ता गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार इक्को नज़री आईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड सारंगड़ा ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे सो पुरख निरँजण देवे साची टेक, आदि जुगादी मेहरवान महबूब दया कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्तर आत्म बुद्धी करे बिबेक, मन वासना कूड़ी क्रिया हउमे हंगता रहिण कोए ना पाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के सच दवारे खोल्हे आपणा भेत, अछल अछेदा आपणा परदा दए उठाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा निरगुण
1061 निरवैर दस्से आपणा देस, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचा मेला आप मिलाईआ। जिस गृह रूप रंग ना कोए रेख, 1061
19 अनभउ प्रकाश इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग 19
साचे दीन दयाल दीनां बंधप दयानिध ठाकर स्वामी, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग साचे सच संदेसा देवे इक इकल्ला, आदिन अन्ता श्री भगवन्ता हुक्म वरताईआ। दो जहान बणाए सच महल्ला, चार कुण्ट इक्को हुक्म दए वरताईआ। पावे सार समुंद सागर डूँघी ग़ार जला थला, पर्बत टिल्ले चोटी पहाड़ वेखे चाँईं चाँईंआ। दूई द्वैती चार वरन अठारां बरन मेटे सल्ला, सुल्हकुल अमुल आपणा नाम वरताईआ। साचा मन्दिर गृह वखाए उच्च अटला, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, दयावान आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचे तेरा सच दवारा होवे उच्च अरूज, अर्श फर्श मिले माण वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दया करे आप हक महबूब, परवरदिगार सांझा यार वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दे के इक्को मंज़ल मकसूद, सच दवारे हक मुकामे दए पुचाईआ। जित्थे पढ़ना पए ना कोए हज़ारा दरूद, अक्खरां वाला लेख ना कोए वखाईआ। दिशा रहे ना कोई कूट, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। वण्ड रहे ना हद्द हदूद, बेअन्त बेपरवाह इक्को नज़री आईआ। सच दवारे हो मौजूद, मजलस धुर दी दए वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया कर के नेसतो नाबूद, सति धर्म तेरा बूटा दए लगाईआ। लोकमात

धरनी धरत धवल उपर बिन तत्तां तेरा प्रगट करे वजूद, वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। सच संदेसा नर नरेशा देवे पंज तत काया कलबूत, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर चार युग सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे के गए सबूत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी शहादत आपणी भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति धर्म तेरा सच दवारा इक्को इक खुल्हाईआ। सतिजुग साचे पुरख अकाल एका नाउँ करे प्रसिद्ध, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सिर सके ना कोए उठाईआ। झगड़ा रहे ना कोए नौ निद्ध अठारां सिद्ध, रिद्धि सिद्धि कम्म किसे ना आईआ। आत्म परमात्म साची दस्से आपणी बिध, बिधना दा लेखा दए मिटाईआ। सर्ब आत्मा दा परमात्म नज़र आए इक्क, एकँकार बेपरवाहीआ। जन भगतां रस देवे निझ, निझर झिरना आप झिराईआ। अगला लेखा देवे लिख, पूरब लहिणा झोली पाईआ। भेव खुल्हा के परम पुरख आपणे भविख, परदयां विच्चों परदा दए उठाईआ। देवे वड्याई गुरमुख साचे सिख, जो सतिगुर शब्द मिल के इक्को इष्ट मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल करे नित नवित, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म जणाईआ। सतिजुग साचे तेरा नज़री आवे धर्म दवार, धुर दरगाही आप सुहाईआ। जित्थे इक्को एक होवे जैकार, नाअरा हक हक सुणाईआ। दूसर दिसे ना मीत मुरार, धुर दा मालक सोभा पाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख उठाईआ। सो खेल करे आपणी धार, जोती जाता वेस वटाईआ। जिस नूं माता जन्मे ना कोए विच संसार, सीर नीर मुख ना कोए लगाईआ। सो खेल करे एकँकार, इक अकल्ला आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए निवार, नविरती प्रकृती दए बदलाईआ। सति धर्म दा कर सच प्रचार, पर्चा सब दे अगे पाईआ। लख चुरासी कर के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सोई सुरती दए उठाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नाम अगम्मी वजाए ताल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा सति धर्म, सरन आपणी विच रखाईआ। सतिजुग तेरा धर्म होवे अनोखा, पुरख अकाल दीन दयाल देवणहार वड्याईआ। चौथे युग पिच्छो आया मौका, मुकम्मल हुक्म दए सुणाईआ। जन भगतां नाल करे ना कदे धोखा, ममता मोह ना कोए वधाईआ। साचा मार्ग दस्स सौखा, मंज़ल आपणी देणा चढ़ाईआ। पैंडा मुका के चौदां लोका, चौदां तबक खेहड़ा देणा छुडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गा के सच सलोका, सो स्वामी अन्तरजामी मिल के दर घर साचे सोभा पाईआ। जिस दा भाणा सदा सदा सद विच जहान किसे ना रोका, अगे हो ना कोए अटकाईआ। सो साहिब सुल्तान हो मेहरवान सतिजुग तेरी पूरी करे लोचा, जन भगतां लोचन नैण

निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी अंदर साचा इष्ट दस्से इक्को ओटा, ओड़क पुरख अकाल दीन दयाल दयानिध सागर गहर गम्भीर बेनज़ीर लातस्वीर, दीन दुनी बदल ज़मीर शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड लेलीआं ज़िला अर्मितसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरा सेवक बड़ा चाक, चाकरी चार कुण्ट कमाईआ। धर्म दवारे दा खोल्ह के ताक, ताकतवर तेरे नाल दयां मिलाईआ। निरगुण निरगुण मेला करावां सज्जण साक, सरगुण मिले माण वड्याईआ। जगत वासना विच कदे ना होवां गुसताख़, जूठ झूठ ना नाल रलाईआ। सच प्रेम दी सानूं दस्स जाच, याचक हो के सेव कमाईआ। तामस अग्नी रहे ना कोए आंच, सांतक सति तेरा नाम दरसाईआ। इक्को अक्खर सृष्ट सबाई लए वाच, सोहँ ढोला धुर दरगाहीआ। सुनेहड़ा देवां पाती पात, पत्रका तेरी दयां वखाईआ। सहायता करां अनाथां नाथ, दिवस रैण भज्जां वाहो दाहीआ। साचे
१०६३ भगतां दे के साथ, तेरा संग बणाईआ। शब्दी हुक्म अंदर जो देवें आख, आखर मन्न के ओसे सीस निवाईआ। जोती १०६३
१९ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सेवक हो के तेरी साची सेव कमाईआ। सतिजुग कहे १९
प्रभ तेरा होवां दास, दासतां तेरी दयां जणाईआ। बिन साचे नाम ख़ाली रहे ना कोए स्वास , साह साह नाल सब तेरा ढोला गाईआ। सच दवारे होवे सच प्रकाश, जोती नूर तेरा नज़री आईआ। अन्ध अन्धेरी रहे कोए ना रात, साची रुतड़ी तेरे रंग रंगाईआ। जन भगतां वस के सदा पास, पासा अंदरों दयां बदलाईआ। इक्को पुरख अकाल उत्ते होवे धरवास, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। तेरा खेल वेख पुरख अबिनाश, साचे घर वज्जे वधाईआ। धुरों देणी आपणी दात, दाते दानी दया कमाईआ। बिन तेरे नाम वड्डी नहीं कोई करामात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मानस जन्म कर रास, रसीआ हो के आपणा रस चुआईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी जागीर कौर दे गृह पिण्ड लेलीआं ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैं होवां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। तेरी ख़लकत करां प्यार, ख़िल्लत तेरा नाम वखाईआ। सही सलामत वेखां सर्ब संसार, दुखीआ नज़र कोए ना आईआ। सांझा दस्स के इक प्यार, मुहब्बत तेरे नाल

जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग देणा बणाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरा होवां ख़ादम, ख़िदमत करां जगत लोकाईआ। पावां सार बनी नौ आदम, आदत कलयुग दयां बदलाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां मातम, मित्र प्यारा इक्को दयां वखाईआ। साचा मेला मेल परमात्म, नूर नूर विच समाईआ। तेरा दरस करां ज़ाहर बातन, घर विच घर करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच बेनन्ती इक्को आया आखण, आख़र मेरा माण देणा रखाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड लेलीआं ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ बणां तेरा मज़दूर, मज़दूरी धुर दी झोली पाईआ। सदा दरस मंगां हाज़र हज़ूर, नेरन नेरा हो के होणा सहाईआ। सच भण्डारा नाम करना भरपूर, जगत अन्ता रहे कोए ना राईआ। मध खुमारी नाम देणा सरूर, रंग इक्को देणा रंगाईआ। सहायता सच करनी ज़रूर, ज़रूरत आपणी रिहा प्रगटाईआ। किरपा कर के बख्शणा नूर, करनी घर घर रुशनाईआ। साचे भगतां बख्शणे पूरब कुसूर, अगला लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। पैंडा रहे ना कोए दूर, वाट
१०८४ दुराडी नेड़े नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ १०८४
१६ १६
विष्नूं भगवान, मेरी आसा मनसा पूर, आशा आपणे नाल रखाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड लोपोके ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ मैं होवां तेरा मस्कीन, निरमाणता ग़रीबी झोली देणी पाईआ। लख चुरासी जीव जंत जंत पुरख अकाल तेरा करावां यकीन, भरोसे विच बन्न्हां सर्ब लोकाईआ। सचखण्ड दवारा महल अटल दस्सां उच्च अज़ीम, आलीशान शान तेरी दयां जणाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात ऊँच नीच रहे ना कोए तकसीम, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म परदा दयां उठाईआ। सब नूं दस्सां परम पुरख मालक कदीम, कुदरत दा कादर इक अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान दी दे तालीम, तुलबे तालब इलम सारे दयां बणाईआ। तेरा मार्ग साचा दस्स महीन, निज नेत्र दयां वखाईआ। सांझा प्यार होवे नर मदीन, पुरख नार इक्को रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द दे होण सर्ब अधीन, देवत सुर पूजण कोए ना जाईआ। हक फ़ैसला तेरा

मन्नण कोरट सुपरीम, सच अदालत दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सदा तेरा बणया रहां बरदा, ग़ुलाम हो के नौबत दीन दुनी अंदरों दयां कढाहीआ। भेव खुल्हावां काया माटी तन वजूद घर घर दा, गृह गृह परदा दयां उठाईआ। इश्नान दस्सां आत्म सरोवर सच्चे सर दा, अठ्ठ सठ्ठ नहावण दा लेखा दयां मुकाईआ। धुर फ़रमान संदेसा देवां नरायण नर दा, नर निरँकार तेरी करां सच पढ़ाईआ। लहिणा देणा मूल मुकावां चोटी जड़्ह दा, चेतन सुरती सुत्यां दयां उठाईआ। जीव जंत तेरे नाउँ दा ढोला होवे पढ़दा, पाठशाला दीन दयाला इक्को दयां वखाईआ। सच दवारा तेरा होवे वसदा, जित्थे वसल असल मिले जलवागर नूर खुदाईआ। सच इशारा होवे अगम्मी अक्ख दा, जगत नेत्र नैण ना कोए मिलाईआ। नाम जैकारा सुणे हकीकत हक दा, सति सच वज्जे वधाईआ। जन भगतां होवां लभ्भदा, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। भगत दवारे अंदर होवां फबदा, चरण कँवल निव निव सीस निवाईआ। नाता तुड़ावां कलयुग कूड़ी क्रिया अग्ग दा, अगला परदा दयां उठाईआ। दर्द वण्डां दीन दुनी सृष्टी जग दा, जग्ग जग्ग वेख वखाईआ। जो सन्त सुहेला गुरमुख तेरे विछोड़े अंदर होवे तपदा, सांतक सति दयां कराईआ। तूं

१०६५ मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला होवे जपदा, जगजीवण दाते तेरे विच दयां मिलाईआ। सेवा करदा मैं कदे ना थकदा, थकावट १०६५

१६ विच कदे ना आईआ। त्रेता द्वापर कलयुग राह रिहा तक्कदा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कवण वेला आए पुरख समरथ १६

दा, जो समां दए बदलाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैगम्बरां भगतां पैज आया रखदा, रखिअक हो के रक्ख्या करें थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तेरा आसरा नयासरा हो के इक तक्कदा, सहारा किनारा सच दवारा आपणा देणा वखाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ सुविंदर सिँघ दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरा सच्चा बणां मुरीद, धुर दे मुर्शद तेरी सेव कमाईआ। तेरे भगतां करावां तेरी दीद, दाइरयां विच्चों बाहर कढाहीआ। तेरे नूरी चन्द दी पीड़, जोती जोत डगमगाईआ। सांझी दस्सां प्रीत, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सुहावणा होवे गीत, ढोला शहिनशाहीआ। गुरमुख बणावां तेरे अज़ीज़, प्यारे मुहब्बत विच रखाईआ। तेरी पहिचाण दी दस्स तमीज़, तमअ अंदरों दयां कढाहीआ। सच दवारे बहण दी साची दस्सां रीझ, दवारा इक्को इक्को इक वखाईआ। जित्थे सोहणा अमीर ग़रीब, ग़ैरत वेख ना कोए मनाईआ। तेरा खेल तक्कण अजीब, अजब निराले देणा वखाईआ। दूर दुराडा

नेड़े आए करीब, करमां दा गेड़ा दए चुकाईआ। संसा रहे ना कोई किस्मत नसीब, निशाना इक्को दयां लगाईआ। मेरी आशा मनशा पूरी कर उम्मीद, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्में अंदर सृष्ट सबाई देवां सच तरतीब, तरीके नाल तारीख दयां बदलाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ अनूप कौर दे गृह पिण्ड भुल्लर ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ तेरे दर होवां दरवेश, भिखारी हो के झोली डाहीआ। तूं आदि जुगादि दिन्दा रहीं हमेश, जुग चौकड़ी झोलीआं नाम भराईआ। कलयुग कूड़ी बदल दे लोकमात रेख, भेख रहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दा सच्चा सुणावां इक संदेश, संधया अमृत इक्को ढोला गाईआ। जिस दा भेव पा ना सके सहँसर मुख शेष, विष्न ब्रह्मा शिव कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सतिजुग साचा सच दवारे सच साची मंग मंगाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ दलीप सिँघ दे गृह पिण्ड मानां वाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ मैं तेरे दर दा होवां बरदा, नीकण नीका नज़री आईआ। सेवक बणां जन भगत सुहेले घर घर दा, गृह गृह काया मन्दिर अंदर वेख वखाईआ। भेव खुल्लावां पारब्रह्म ब्रह्म नरायण नर दा, नारी नर दयां समझाईआ। इक्को तेरा ढोला रहवां पढ़दा, दो जहानां वज्जे हक वधाईआ। सच दवारे निउँ निउँ चरण कँवलां सीस रहां धरदा, धरनी धरत धवल उपर सोभा पाईआ। बन्दगी विच बन्दना रहां करदा, डण्डावत विच डर भय भउ भुलाईआ। इश्नान वेखां सरोवर साचे सर दा, तीर्थ तट किनारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे दर दा होवां भिखारी, भिख्या मंग के ख़ुशी मनाईआ। तेरे हुक्म दी वेखां सिक्दारी, दो जहानां सीस निवाईआ। निरगुण नूर जोत वेखां उज्यारी, ब्रह्मण्ड खण्ड होवे रुशनाईआ। नाम शब्द धुन सुणा धुनकारी, अगम्म अगम्मड़ा भेव देणा खुल्लाईआ। आत्म परमात्म लग्गदी वेखां यारी, पंचम नाता कूड़ रहिण ना पाईआ। घर ठांडे दर्शन करां दरबारी, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। जिस घर वस्या नर नरायण निरँकारी, निरगुण

आपणा नूर डगमगाईआ। सो वेखां महल अटल उच्च मनारी, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साची कर दारी, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वण्डाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ गुरदित सिँघ दे गृह पिण्ड माना वाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरे दर दा होवां मंगता, मांगत हो के झोली डाहीआ। नाम निधाना दे दे बोध अगाधा पंडता, जगत विद्या तों बाहर आपणी बूझ देणी बुझाईआ। आत्म परमात्म मेला मिले धुर दरगाही साचे कन्ता, कन्त कन्तूहल तेरी इक सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे जणाईआ। दर तेरे निमाणा हो के करां मिन्नता, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फिरे दरोही तेरे नाम दी चारे सिमतां, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण बचया कोए रहिण ना पाईआ। साची सिख्या दे दे प्रभ कूड़ कुड़यारयां निन्दकां, प्रीती अंदर तेरा ढोला सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१०६७ किरपा कर, मेरा सगला संग बणाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ मेरी मन्जूर कर अर्ज़ी, आरज़ू ख़ाहिश तेरे अगे रखाईआ। १०६७
१६ तेरी धार आदि जुगादि नरायण नर दी, निरँकार तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तूं सार पावीं लख चुरासी जीव जंत घर घर १६
दी, गृह गृह काया माटी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को पूजा होवे पुरख अकाल साचे हरि दी, हिरदे अंदर हरि जू हरि हरि नज़री आईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ मेरी मन्न अरज़ोई अरदास, दास हो के रिहा सुणाईआ। मानव ज़ाती जन्म कर रास, कर्म कुकर्म दे बदलाईआ। ख़ाली जाए ना कोए स्वास, साह साह सद तेरा नाम ध्याईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा अंदरों दे कढाहीआ। प्रीतम हो के पारब्रह्म ब्रह्म वस पास, निज घर बह के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे हुक्म दी पैंदी वेखां रास, मण्डल मण्डप खुशीआं विच तेरा ढोला गाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ तारा सिँघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ वस्त दे नाम अनमुल्ल, अनमुलड़ी दौलत झोली पाईआ। सच्चे तराजू उत्ते जाए तुल, जगत वट्टयां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। भाग लगाउणा भगवन भगतां कुल, कुलवन्ते कुलमालक तेरी आस रखाईआ। गुरमुख गुरसिख

कोई ना जाए भुल्ल, अभुल्ल आपणे रस्ते लैणा चलाईआ। कूड़ी माया विच ना जाए रुल, संसार सागर विच्चों बाहर कढाहीआ। मानस जन्म साचा बूटा कदे ना जाए हुल्ल, पत्त टहणी फुल्ल आप महकाईआ। साची चरण प्रीती जावण घुल, आपणा आप घोल घुमाईआ। गुरसिख दीपक कदे ना होवे गुल्ल, सच चिराग करनी रुशनाईआ। धुर दे चरणां दी दे के धूल, धूढ़ मस्तक ख़ाक देणी रमाईआ। पूरब लेखा चुका के मूल, मुलम्मे दा कंचन देणा कराईआ। जन भगत उधारना तेरा असूल, असल तों असल देणा प्रगटाईआ। भगती अंदर लाउणा ना कोए मसूल, कीमत जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा तेरे दर तों होवे वसूल, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ।

१०९८ ✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ लाभ सिँघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪ १०९८

१९ सतिजुग साचा कहे प्रभ सच्चा बख्श चरण सहारा, सिर कदमां उपर टिकाईआ। तेरे नाम दा सुणां इक्को नाअरा, दूजी आवाज़ कोए ना आईआ। तेरा नूर होवे उज्यारा, चमक चमक विच्चों प्रगटाईआ। तेरा गृह वसे घर बाहरा, भगत दवारा सोभा पाईआ। मिले वड्याई पुरख नारा, नर नरायण होणा सहाईआ। तूं निरगुण निरवैर निराकार निरँकार चौवीआं अवतारा, अवतरा तेरी कार कमाईआ। तेरा निखुट्ट ना जाए भण्डारा, गुर अवतार पैगम्बर मंग मंग झोलीआं सर्ब भराईआ। तेरा होवे इक वरतारा, शब्द गुरू वड्डी वड्याईआ। जिस दा रूप रंग नज़र ना आवे विच संसारा, रेख भेख समझ कोए ना पाईआ। जो भगतां बणया मीत मुरारा, मित्र हो के दया कमाईआ। सगला संग बणया रहे नर निरँकारा, निरगुण विछड़ कदे ना जाईआ। तूं पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादी देवणहारा, दाता धुर दा शहिनशाहीआ। दर दरवेश मनुक्ख फिरे भिखारा, सतिजुग निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेअन्त तेरा लेखा सारे गए सुणाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ भगवान कौर दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे मैं तेरी सच्ची करां सेवा, प्रेम तेरे भगतां नाल रखाईआ। तेरे नाम दा अमृत रस देवां मेवा, बिन रसना दयां चखाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी सदा निहकेवा, निहचल तेरा धाम दयां दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी

अलख अगोचर अगम्म अथाह अभेवा, बिन तेरी किरपा भेत कोए ना पाईआ। तेरी सिफ्त गा ना सके कोई जिह्वा, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। जन भगतां मालक हो के मिल वड देवी देवा, देव आत्मा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दा लग्गे मस्तक साचा थेवा, निरगुण नूर जोत ललाटी होवे रुशनाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ चरण सिँघ दे गृह पिण्ड मानांवाला ज़िला अर्म्मतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ बख्श चरण धूढ़, सो पुरख निरँजण दर ठांडे मंग मंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नाता तुट्टे कूड़, सति धर्म मिले वड्याईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, नाम निधाना इक्को इक समझाईआ। आत्म उपजे तेरा नूर, अन्धेरा अन्ध रहे ना राईआ। सिफ्तां विच होवे तेरा, ज़हूर, रागां विच तेरा नाम ध्याईआ। भगतां सन्तां मिल ज़रूर, निरगुण हो के वेख वखाईआ। हर घट अन्तर जलवा दे सच्चा कोहतूर, परदा ओहला आप उठाईआ। तेरे दर दे सन्त सुहेले सच मज़दूर, दिवस रैण सेव कमाईआ। प्रगट हो हाज़र हज़ूर, हर हिरदे कर रुशनाईआ। गुरमुखां होणा ना पए मजबूर, मुश्कल अगली दे चुकाईआ। तेरे नाद दी उपजे तूर, तुरीआ तों परे शुरु होवे तेरी पढ़ाईआ। सच बेनन्ती कर मन्ज़ूर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा कहे जुग चौकड़ी बदलणा तेरा दस्तूर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्में अंदर गेड़ा रिहा भवाईआ।

✪ २७ सावण शहिनशाही सम्मत २ हजारा सिँघ दे गृह पिण्ड छीना ज़िला अमृतसर ✪

एक एक टेक उपजे कोटी कोट, कोटन कोटि कोट बेअन्त बणत बणाईआ। एक अनेक प्रगट कर निरगुण जोत, कोटी कोट दीआ बाती कर रुशनाईआ। एक भेख धरे कोटी कोट कोट, शब्दी नाद धुन करे शनवाईआ। एक टेक बख्शे कोटी कोट, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल लख चुरासी जीव जंत भेव अभेद आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि मध रूप अनूप शाहो भूप वेख वखाईआ। कोटन कोटि होवण रोम, साढे तिन्न करोड़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोटी कोट कोट होवण ओम, जिस ओम विच्चों विष्न ब्रह्मा शिव निकल

के ढोले गाईआ। कोटन कोटी कोट निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे कौम, कयाम बेआम बेपनाह आपणे विच छुपाईआ। कोटन कोटी कोट होवण लोम, लोयण लोचन अक्ख नेत्र देवां, समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सति सति आपणी कार कमाईआ। कोटी कोट गिणदयां ना होवे गणत, अंकां वाला रूप ना कोए बदलाईआ। जिस दी समझे कोई ना बणी बणत, अन्त कह ना कोए दृढ़ाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर कहिण बेअन्त, बेपरवाह नूर इलाहीआ। मस्ती विच ढोले गाउँदे सन्त, भगत भगवान कह के सीस झुकाईआ। सरगुण कोटन कोटी कोट कोट प्रगट कीते जीव जंत, घट निवासी पुरख अबिनाशी जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे विच छुपाईआ। जिस दा कोई ना जाणे परदा ओहला भेद, वारता विच ना कोए लिखाईआ। निरअक्खर दी धारों जिस ने अक्खरां वाले कढ्ढे वेद, विद्या तों बाहर गुप्त ज़ाहर समझ किसे ना आईआ। जिस दा बिन कलम शाही बिन अक्खरां होवे लेख, जुग चौकड़ी कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड लोकमात दे दे दात आपणी रचन रचाईआ। सो वेखणहारा खेल तमाश, जिस दा आपणे विच आप प्रकाश, आदि अन्त ना होवे विनास,
१९०० १९ अबिनाशी हो के आपणी कार कमाईआ। कोटन कोटि नेत्र नैण कर रास, कोटन कोटि चला पवण स्वास, कोटन कोटि १९०० १९
जेहवा सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार बिन गोपी काहन पावे आपणी रास, रस्ता मार्ग आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे तेरा सच भण्डारा, नाम अगम्मा हरि वरताईआ। खुशी मनाण गुर अवतारा, पैगम्बर कलमयां विच सिफ्त सालाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे इक नगारा, नौबत नाम करे शनवाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार मिटे विकारा, माया ममता मोह रहिण कोए ना पाईआ। साचा दिसे सर्ब निवासी इक दवारा, दूई द्वैती डेरा अंदरों देवे ढाहीआ। त्रैगुण अग्नी लग्गे ना तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ दए बरसाईआ। जन भगतां सन्तां गुरमुखां लग्गा रहे अखाड़ा, गुरसिख मिल के इक्को सोहला गाईआ। नाड़ बहत्तर तन रबाब वज्जदा रहे ताड़ा, जगत सारंगे दी लोड़ ना कोए रखाईआ। किरपा करे भगत वछल आप गिरधारा, निरवैर हो के वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बख्श के चरण दवारा, सच चरणोदक बिन रसना जाम प्याईआ। हुक्में करे खेल ख़लक दा ख़ालक परवरदिगारा, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दरगाही दयावान दीनां अनाथां होए आप सहाईआ। सतिजुग साचे तेरा उपजे खेड़ा, नगर दवारा इक्को सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी बन्ने बेड़ा, खेवट खेटा हो के आपणे कंध उठाईआ।

कलयुग कूड़ कुड़यार जगत वासना डोबे बेड़ा, नईआ नौका पार ना कोए लँघाईआ। धुर दा नाम साचा मंत्र अंदर वड़ के दस्से नेरन नेरा, आत्म परमात्म परदा दए चुकाईआ। साचा ढोला गीत सुणाए तूं मेरा मैं तेरा, सो पुरख निरँजण हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना रहे ना कोए अन्धेरा, निरगुण नूरी जोत करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन होवे हक नबेड़ा, हकीकत दा मालक मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग साचे थोड़ा समां रख आपणा जेरा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी दए समझाईआ। पुरख अकाल देवणहारा आपणा गेड़ा, गेड़े विच उलटी लट्ठ भवाईआ। सति धर्म लोकमात धरनी धरत धवल उत्ते करे वसेरा, सच दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी अगम्मी पाए घेरा, घिरना मेटे कूड़ लोकाईआ।

✪ २८ सावण शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड बोपाराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे प्रभ मेरे अन्तर बड़ा चा, चाउ घनेरा नज़री आईआ। दो जहानां उपजे तेरा साचा नाँ, नाउं निरँकार
१११०१ सारे ढोला गाईआ। ग़रीब निमाणयां तेरे चरण मिले सच्चा थाँ, सच दवारे बह के खुशी मनाईआ। जन भगत फड़ावां तेरी बांह, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। कूड़ी बुद्धी रहे कोई ना कॉँ, हँस गुरमुख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा बणाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ मेरे अन्तर आउँदी खुशी, खुशी विच जणाईआ। सर्ब जीव आत्मा दी तेरे नाल लग्ग जाए रुची, आत्म परमात्म मिले वड्याईआ। तन माटी ख़ाकी होवे सुच्ची, संजम इक्को देणा समझाईआ। मन वासना रहे ना तृष्ना भुक्खी, ममता मोह देणा चुकाईआ। भगत सुहेला दिसे कोई ना दुखी, दलिद्रीआं दलिद्र देणा गवाईआ। भाग लगाउणा जणनी कुक्खी, गुरमुख साचे लैणे उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दी दस्स के इक्को तुक्की, तुरत आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे अंदर वड्डी ख़ाहिश, ख़सूसीअत तेरे हथ्थ फड़ाईआ। सद वसां तेरे पास, चरण कँवल मिले सरनाईआ। हुक्में अंदर तेरे भगतां करां तलाश, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म दे के हास बलास, दीन दुनी दर्द दु:ख मिटाईआ। जगत विकारा पार करके घाट, हाढ़ा तेरा दयां जणाईआ। जिस गृह मिले पुरख समराथ, समरथ स्वामी सोभा पाईआ। सच बेनन्ती तेरे अगे रघुनाथ, रघुपत तेरी ओट तकाईआ। स्वामी हो के देणा साथ, सतिगुर हो के शहिनशाहीआ। परम पुरख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी मन्ज़ूर करनी अरदास, सतिजुग साचा सति सतिवादी तेरे अगे भिखक हो के मंग मंगाईआ।

✪ २८ सावण शहिनाशाही सम्मत २ जगमोहण सिँघ दे गृह पिण्ड बोपाराए ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ मैं भगतां करां सिफ़ारश, सति सच सति नाल मिलाईआ। जिन्हां दे अंदर तेरे नाम दी इक इबादत, इक्को नूर तक्क खुशी मनाईआ। तेरे प्रेम दी सच्ची इबारत, बिन अक्खरां सोभा पाईआ। तन वजूद वसी अमारत, मकतब पाठशाला नज़री आईआ। जिस नूं समझे ना कोई आरफ़, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। ओथे तेरा होवे तुआरफ़, तोहफ़ा नाम देवे धुरदरगहीआ। सदा सदा तेरी हुन्दी रहे सच जयारत, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा दिती लगाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरे भगतां दी करां सिफ्त, शब्दी ढोले नाल सालाहीआ। जिन्हां दे अंदर हकीकी लग्गा इश्क, जगत आशक माशूकां दी मंज़ल गए तजाईआ। समझ के धुर दरगाही इष्ट, ऐशो इशर्त कूड़ गए मुकाईआ। नाता छड्डके स्वर्ग बहिश्त, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म समझ के धुर दा गृहस्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। कोटां वरि्आं विच्चों थोड़यां दी फ़िहरिसत , निरगुण निरवैर नज़री आईआ। साची माण वड्याई दे नाम खिल्लत, मुख़ातब हो के रहया सुणाईआ। खुआरी रहे कोई ना ज़िल्लत, साचे दर मिले सरनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दरवेश दी मन्न मिन्नत, निउं निउं रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे भगतां विच वेखी अगम्मी हिम्मत, हौसले नाल दीन दुनी जगत रहे तजाईआ।

✪ २८ सावण शहिनाशाही सम्मत २ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरा दर मिले अगम्म, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड दवारा नज़री आईआ। जित्थे ना कोई सूर्या होवे चन्न, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। माया ममता मोह ना होवे तृष्ना तम, कूड़ कुड़यार जगत विकार ना कोए हल्काईआ। हरख सोग चिन्ता रहे ना कोए ग़म, मनुआ मन ना कोए भरमाईआ। अगम्मी नाद सुणा बिना कन्न, शब्दी ढोला बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल भाग लगा वजूद माटी तन, बन्दे ख़ाकी साकी जाम इक प्याईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्ह हँ, ब्रह्म पारब्रह्म परदा ओहला रहे ना राईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक दीन दुनी दे आपणा धन, जगत माया विच्चों बाहर कढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जीव जंत गावण तेरा छन्द, सोहला इक्को इक अल्ल्हाईआ। साधां सन्तां जन भगतां खुशी कर बन्द बन्द, धुर दी बन्दगी इक समझाईआ। निज घर निज गृह निज आत्म दे अनन्द,

रसना रस दा लेखा दे मुकाईआ। ठाकर हो के बख्श परमानंद, परम पुरख प्रभ आपणी मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जूठ जूठ सृष्टी विच्चों कढ्ढ, गंदी तृष्ना रहिण कोए ना पाईआ। वरनां बरनां दस्स कवण साची सरना इक समझाईआ। रसना जेहवा बती दन्द मानव ज़ाती तेरे करे धन्न धन्न, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सतिजुग साचा ग़रीब निवाजा दर तेरे झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दा होवे इक प्यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीआ बाती कमलापाती हुंदा रहे जोत उज्यार, चार कुण्ट दहि दिशा करे रुशनाईआ। साचा नाम शब्द धुन आत्मक दे धुन्कार, अनुरागी हो के आपणा राग सुणाईआ। अमृत रस निझर झिरना झिरे अगम्म अपार, बूंद स्वांती कमलापाती आपणी आप टपकाईआ। परदा ओहला खुल्ले बन्द किवाड़, दूई द्वैती माया ममता रहिण कोए ना पाईआ। अग्नी तत ना सके साड़, सांतक सति जणाईआ। इक्को तेरा जलवा नूर होवे दीदार, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। बोध अगाध शब्द अनाद देणा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कढ्ढ बाहर, धरनी उपर रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले गुरू गुर चेले खिच आपणे
११०३ दवार, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को दे वसाईआ। जिस गृह ना कोई पुरख ना कोई नार, ना कोई कूड़ क्रिया करे ११०३
१६ विभचार, जै जैकार तेरा नाम करे शनवाईआ। पुरख अकाल स्वामी तूं आदि जुगादि सदा सदा (दातार), गुर अवतार पैगम्बर तेरे हुक्में अंदर लोकमात सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दो जहानां पा सार, निरगुण हो के आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग साचा सति दवारे बेनन्ती विच करे निमस्कार, डण्डावत विच आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ भगवान, निरगुण सरगुण बण सिक्दार, धुर फ़रमाना दो जहानां इक्को इक जणाईआ। १६

२८ सावण शहिनशाही सम्मत २ हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर

वशिष्ट सिख्या सदा रहिणा विच रज़ा, भाणे विच गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। परम पुरख दी धार दा लैणा मज़ा, मज़ाक वेखणा जगत लोकाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा देणा कर्म दी नहीं सज़ा, दुक्खां विच दुःख ना कोए रखाईआ। जिस तों सच्चा जीवण मिलणा नवां, नाता तत्तां वाला तुड़ाईआ। लेखे लग्गणा दम दमां, साह साह प्रभ आपणे विच समाईआ। जन भगत कदे ना होवे निकम्मा, बेअर्थ जन्म ना कोए गवाईआ। भाग लग्गे जिस काया माटी चम्मां, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ।

चिन्ता सोग हरख ना करना ग़मा, करे खेल बेपरवाहीआ। ज़िंदगी मानस देही नहीं कोई तमअ, लालच विच बरस ना कोए लँघाईआ। जिस दे हुक्में अंदर बदलदा रैहन्दा समां, समाप्त हुंदी रहे लोकाईआ। उस दा हुक्म हुंदा रहे रवां, दो जहानां ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। वशिष्ट मुनी बिता के पैंहठ साल, तेरी मिलत विच खुशी मनाईआ। खेल वेखदा रिहा पुरख अकाल, ओट इक्को इक तकाईआ। बणदा रिहा विचे विच दलाल, विचोला ओहला हो के डेरा लाईआ। अन्तिम बोलया बोल कमाल, जिस नूं लिखे लेख ना कलम शाहीआ। जिस दा विचे स्वाल जवाब, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। शरारत विच तेरा वजदा रिहा ताल, हथेली हथ्थ नाल मिलाईआ। तेरा माता पिता कंगाल, निर्धन नज़री आईआ। जिन्हां दा पूरब दा रुस्सया बाल, बाली ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पैंहठ साल दा वक्त बहु थोड़ा, थोड़िउं थोड़ा नज़री आईआ। जित्थे राम वशिष्ट दा होवे जोड़ा, दो जहानां वज्जे वधाईआ। वशिष्ट कोल सी काग़ज़ कोरा, अक्खर रूप ना कोए वखाईआ। राम ने गाया धुर दा दोहरा, तूं मेरा मैं तेरा वज्जे सच वधाईआ। तूं मार के दूरों रोड़ा, चोट

११०४ १६ वशिष्ट दे बाज़ू दिती लगाईआ। मुस्कराहट विच हस्स के थोड़ा, अक्खीआं लईआं बदलाईआ। राम ने किहा ओए दया ११०४ १६

चोरा, क्यों चोटां रिहा लगाईआ। वशिष्ट ने किहा एस दीआं ओस दे हथ्थ डोरां, जो सब दा पिता माईआ। तूं नेड़े आया दौड़ा, निउँ के सीस दिता झुकाईआ। उस बाहों फड़ के किहा आह वेख अगम्मी पौड़ा, तैनूं दयां चढ़ाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग राह सौड़ा, हुक्म देवे धुर दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दए वखाईआ। पूरब लहिणा कर याद, याददासत पिछली नज़री आईआ। वशिष्ट मार के इक आवाज़, हुक्म दिता सुणाईआ। राम ने किहा इस दे अंदर कोई राज़, परदा दे उठाईआ। अगम्मी आवाज़ आई वज्जया शब्द नाद, धुनी राग अल्हाईआ। एस दा तत होणा बरबाद, माटी तन रहिण ना पाईआ। कलयुग खेड़ा फेर होवे आबाद, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वशिष्ट किहा ऐ मेरे पुरख अगम्म, अगम्म तेरी वड्याईआ। इस दा लेखा चुके पवण स्वास दम, दामन पकड़ ना कोए छुडाईआ। तेरी धारों कोटन निकले राम, राम राम विच आपणा आप मिलाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरी शाम, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा नज़र ना आवे नाम, मिले मेल ना बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द ना आवे पहचान, सुरती सोई ना कोए उठाईआ। मिले मेल श्री भगवान, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। भगत सुहेले कर प्रधान, लोकमात विच वड्याईआ। बिन अक्खरां देवे ज्ञान,

११०५
१६

बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण जोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार इक भुगताईआ। राम किहा वशिष्ट एह बुढ्ढा वेख बिरध, शरअ दा शरारती नज़री आईआ। वशशट किहा एह आवे फेर परत, लोकमात वेस वटाईआ। एस दी खुल्ले सुरत निरत, नर नरायण दए वड्याईआ। जन्म जन्म दी मेटे हिरस, हवस लए मिटाईआ। पुरख अकाल करे तरस, रहमत विच तराईआ। राम किहा निधड़क, बेनन्ती गुरदेव दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा वखाईआ। राम किहा वशिष्ट स्वामी, तेरे अगे मेरी अरज़ोईआ। इस वड्डी कीती खुनामी, पत्थर तेरी बांह लगाईआ। एहदी की रहे निशानी, सच देणा समझाईआ। ओस बोलया नाल आसानी, मुख वाक् दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले इस दी देह पैंठ साल दी होई पुराणी, चोला चोले नालों बदलाईआ। इस नूं मालक मिले उपर असमानी, आसानी आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। पूरब लहिणा आदि जुगादि, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। वशिष्ट दिती दात, शहादत आपणी आप भुगताईआ। उस दा लहिणा देणा देणा प्या तत्तां वाला साथ, सगला संग बणाईआ। राम वशिष्ट दी कोई गुस्से वाली नहीं बात, जुग चौकड़ी प्रभ दी खेल चली आईआ। एह त्रेते दी सौगात, कलयुग बध्धा नात, पुरख अकाल पुछे बात, वारस हो के दया कमाईआ। अगे जन्म मरन लख चुरासी आवण जावण विच्चों मिले नजात, जम की फाँसी रहे ना राईआ। चित्रगुप्त खोल्हे कोई ना ताक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सचखण्ड दवारे तेरा सहिजे होवे निवास, निवास अस्थान इक्को नज़री आईआ। जित्थे वशिष्ट राम दोवें मिल के चरण कँवल प्रभ करन हास बिलास, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द खुशी मनाईआ। अन्त वसणा उन्हां पास, वास्ता धुर दा दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लिखा के शब्दी नाल कलम दवात, हालात अगला दए बदलाईआ।

✪ २८ सावण शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ जन भगतां कोट जन्म दे मेट पाप, पतित पापी पार लँघाईआ। सहिँसा रोग रहे ना कोई संताप, जगत कल्पणा विच्चों पार लँघाईआ। रूह बत्त दोवें कर दे पाक, पतित पुनीत पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। परमात्म हो के आत्म दे साथ, निरगुण मेला मेल सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सच स्वामी दस्स आपणी गाथ, ढोला अन्तर अन्तर इक्को इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर तेरा रुशनाईआ। बोध अगाधा स्वच्छ सरूप शाहो भूप दर्शन दे

साख्यात, निरगुण निरवैर निरँकार आपणा फेरा पाईआ। साचा खेड़ा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ भगत वछल कर आबाद, नाम निधान आपणा विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सति सतिवाद तेरे दर ठांडे मंग मंगाईआ। सति कहे प्रभ जन भगत मेट दुःख, तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। आपणे प्रेम दी अन्तर आत्म उपजा भुक्ख, दिवस रैण तेरा नाम मंगण चाँई चाँईआ। उज्जल करन आपणा सरगुण मुख, तत्व तत दे वड्याईआ। परदा ओहला भेव अभेद दे चुक, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा आप दे समझाईआ। लख चुरासी जून अजूनी सड़ना पए ना कुक्ख, गर्भवास जमफास देणा कटाईआ। सन्त सुहेले अपराधी दुष्ट दुराचार बणा आपणे सुत, दुलारे निरँकार आपणे घर लै उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्श इक सरनाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां एका रंग वखा खुशी ग़मी, अन्तर अन्तर आपणी बूझ बुझाईआ। अन्तर धार एकँकार दस्स आपणी नवीं, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सच भण्डार अमोलक वस्त शब्द अगम्मी देवीं, जगत वणजारयां कोलों हथ्थ किसे ना आईआ। काया मन्दिर अंदर साचे घर बहवीं, नौ दवारे उपर देणा डेरा लाईआ। सच सिँघासण आत्म सेज सुहञ्जणी सवीं, सोभावन्त आपणा डेरा लाईआ। धुर फ़रमाना श्री भगवाना धुन आत्मक राग कहवीं, बाहरों विद्या पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होणा सहाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां वस्त अगम्मी पावीं भिक्ख, भिखारी धुर दे लैण आईआ। बिन कलम शाही लेख दे लिख, नयक्खर विच्चों वस्त अमोलक दे वरताईआ। तेरे हुक्म दी साची सिख्या लैण सिख, चौदां विद्या डेरा ढाहीआ। तूं आदि जुगादी करता पुरख इक, आत्म परमात्म मित्र प्यारा यारड़ा धुर दा नज़री आईआ। तेरा खेल सदा सदा जुग चार नित नवित, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करवट लै बदल पिठ, दीन दुनी पासा दे उलटाईआ। साचे भगतां धुर दे सन्तां कर हित, हितकारी हो के नेतन नेत आपणा दरस दे कराईआ। महबूब मुहब्बत विच साची पा खिच्च, सुरती शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति सतिवादी धुर दी आस रखाईआ। सति कहे प्रभू आपणे भगतां पा दे आपणे नाम दी भिच्छया, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर दे इच्छया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान गए लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंज़ील कुरान खाणी बाणी अंदर तेरा भविख्त भेख्या, परदा ओहला बण विचोला अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर दे उठाईआ। तेरा नूर ज़हूर नेत्र नर नरायण किसे ना वेख्या, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब कला समरथिआ, समरथ पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ।

११०६
१६

कलू काल कलयुग अन्तिम दिसे मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। अबिनाशी करते परवरदिगार सांझे यार, चार वरन अठारां बरन जीव जंत साध सन्त ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान मन वासना विच कोए ना जावे भिटया, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म सृष्टी दृष्टी इष्टी अंदर सब नूं दे समझाईआ।

✪ २८ सावण शहिनशाही सम्मत २ बेला सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

सति कहे प्रभ जन भगतां दस्स आपणा धर्म, सति सच सुच घर घर नज़री आईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब ऊँच नीच राउ रंक रहे ना कोए भरम, शाह सुल्तान मेहरवान इक्को घर दे वखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना मन होवे कोई ना कर्म, सति सतिवाद शब्द अनाद इक्को देणा सुणाईआ। वण्डी रहे ना काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी काया अंदरों साचे मन्दिरों देणी कढाहीआ। सुफ़ल करना लख चुरासी विच्चों मानस जन्म, आवण जावण पतित पावण जम की फाँसी दे कटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी बख्शणी धुर दी सरन, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को देणा वखाईआ। जित्थे मिल के झगड़ा रहे ना जन्म मरन, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक
११०७ १६ वर, तेरे नाम दी वज्जदी रहे वधाईआ। सति कहे प्रभू जन भगतां दे दे इक्को जाम, जगत नश्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। ११०७ १६
बिन अक्खां निज नेत्र नज़री आए अगम्मा राम, बिन तत्तां वाले राम तों अगली मंज़ल दे चढ़ाईआ। नाम हकीकी वाहिद आपणा दे जाम, आबेहयात हयाती दे बदलाईआ। जगत मंज़ल साहिब स्वामी कर आसान, बिन पौड़ी डण्डे चढ़ के तेरा दर्शन पाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जन भगत करे ना कोए हराम, इष्टी दृष्टी तेरा नूर ज़हूर नज़री आईआ। गुरमुख गुरसिख शब्दी धार तेरा होवे ग़ुलाम, बरदा बण के धुर दी सेव कमाईआ। सुरत सवाणी नाम हाणी मिल के पावे घर बिसराम, काया मन्दिर अंदर तेरी वज्जे सच वधाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा अगम्मी दे पैग़ाम, कलमयां तों बाहर आपणी सिफ्तां वाली कर पढ़ाईआ। तत विकार विच संसार दीन दुनी दा बदल निज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहेले दे उठाईआ। सति कहे प्रभ लख चुरासी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सारे खोज, चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। सतिजुग साचा धुर दा दस्स आपणा जोग, जुगीशर तपीशर मुनीशर रखीशर जिसदा ध्यान लगाईआ। तेरा विछोड़ा रहे ना कोए विजोग, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण कर धुर संजोग, सचखण्ड दुआर एकँकार तेरे नाल मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां

लोक, चौदां तबक पैंडा देणा मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादी साचा होवे सलोक, आत्म ब्रह्म भुलेखा भरम देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भगत सुहेले भगवन हो के आपणे रंग रंगाईआ। सति कहे प्रभ जन भगतां दे आपणा दीदार, बिन दीद ईद चन्द कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादी परवरदिगार, ख़ालक ख़लक नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। वाहिद लाशरीक सांझे यार, मुकामे हक डेरा लाईआ। सो पुरख निरँजण तेरी बेपरवाही हरि पुरख निरँजण आपणी किरपा धार, आदि निरँजण नूर जोत कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। श्री भगवान आपणा झुला धर्म निशान, दो जहान मन्नण आण, ब्रह्मा शिव सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतां साचे सन्तां कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा नाम अगम्मा मिले वड्याई विच जीव जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत काया मन्दिर साचे गृह नूर नूर कर रुशनाईआ।

✪ २६ सावण शहिनशाही सम्मत २ ठाकर सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✪

सति धर्म कहे जो प्रभ तैथों विछड़े साधू, साध जगत वाले अख्वाईआ। धर्म राए दे हवाले कर दे वाधू, बचया कोए रहिण ना पाईआ। हुक्में अंदर होवण काबू, सिर सके ना कोए उठाईआ। याद कर लै लेखा गोबिन्द नाल दादू, दोहरे गा के गया सुणाईआ। पुरख अकाल जन भगतां इक्को रहे आगू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मेहरवान हो के पकड़े बाज़ू, बाज़ीगर डंक ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सति कहे प्रभू तैथों विछड़या रहे कोई ना साध, सब नूं सज़ा दे सुणाईआ। तेरयां भगतां करे ना कोए बरबाद, बरबादी उन्हां दे कराईआ। सरीर विच दे ना सकण आवाज, आपणी मंग ना कोए मंगाईआ। हुक्में अंदर देणे काढ, कूड़ कुड़यार देणे भजाईआ। आपणे नाम दा देणा रस स्वाद, सुख सागर विच समाईआ। गुरमुखां संवारना काज, कर्म दा लहिणा देणा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाता तुड़ा कूड़े साध आपणे हथ्थ पकड़ के वाग, सहारा किनारा दवारा आपणा देणा वखाईआ।

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत २ सन्त कृपाल सिँघ दे डेरे रुहानी सतिसंग सावण आशर्म ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर किरपा मन होवे वस, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जगत वासना रहे ना रस, नौ दर डेरा देवे ढाहीआ।

शब्दी नाद सुणाए अगम्मी अलख, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया नालों करके वक्ख, साचा नाता लए मिलाईआ। भेव अभेद आपणा खुल्हा के सच, परदा ओहला दए चुकाईआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी डोरी बन्ह वखाईआ। सतिगुर पूरा शब्दी बन्हे डोर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। उठ उठ ना भज्जे दहि दिश चोर, ठग्गी अंदर ना कोए कमाईआ। लेखा रहे ना अन्धेरे घोर, परदा ओहला दए उठाईआ। हुक्में अंदर देवे तोर, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा देवणहार सरनाईआ। सतिगुर साचा करे वस मन, मनसा मोह रहिण ना पाईआ। भेव खुल्हा के अंदर वड़ के तन, जगत दवारे पार कराईआ। कर प्रकाश बिन सूरज चन्न, नूरो नूर करे रुशनाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न, गढ़ हँकारी आप तुड़ाईआ। परदा लाह के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म दए समझाईआ। नौ रस नौ दुआर रहे ना तृष्ना तम, सांतक सति दए वरताईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ह, निज नेत्र लोचन दए खुल्हाईआ। राग सुणा आपणा कन्न, अनादी धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी काया मन्दिर अंदर मन ममता रहिण ना देवे राईआ। सतिगुर पूरा सदा समरथ, शब्दी शब्द शब्द इक्को इक अखवाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित मनुआ करनहारा वस, धुर फ़रमाना धुर दा राणा इक जणाइंदा। घट भीतर खोल्हणहारा अक्ख, गृह मन्दिर अंदर वेख वखाइंदा। भेव खुल्हा के साचो सच, कूड़ कुड़यारा नाता मात तुड़ाइंदा। वस्त अमोलक काया गोलक सच दवारे दे के नाम वथ, ख़ाली भण्डारा आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निझर झिरना दे के रस, बिन रसना आप चखाइंदा। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। जिन्हां गुरमुखां देवे प्रेम प्रीती दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। घर सहिजे मिले आण, घर विच घर मेला लए मिलाईआ। साची सुरती मेले धुर दा काहन, साचा राम नज़री आईआ। जिस दा रूप अगम्म अथाह बेपरवाह शब्दी इक महान, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। जित्थे मन दी वासना करे ना कोए ध्यान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। तख़्त निवासी शाहो भूप पुरख अबिनाशी इक सुल्तान, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। साचे सन्त सुहेले काया मन्दिर अंदर सच दवारे वेखे आण, बाहरों खोजण दी लोड़ रहे राईआ। जो सतिगुर साचे चरण कँवल धरे ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख बिधाता दर घर साचे करे परवान, परवाना आपणा नाम बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाईआ। ओथे शरअ चले ना कोए मन शैतान, नव नौ चार ना कोए भवाईआ। बिन अक्खां तों दे के ज्ञान, निरअक्खर दए दरसाईआ। सच भूमिका

दस्स अस्थान, बिन पौड़ी डण्डे दए चढ़ाईआ। जित्थे बिन दीपक जोती जोत जगे महान, दीए बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका सतिगुरू, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुरू साचा शब्द, आदि जुगादी इक अखवाइंदा। जिस दा लहिणा देणा दीन मज़्हब, ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाइंदा। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां सूफ़ीआं दर ठांडे करे अदब, मनुआ मन ना कोए भरमाइंदा। सतिगुर आपणी धार विच मन मन करे जज़ब, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रंग दिसाइंदा। जो सच सरनाई सतिगुर पूरे लग्गे कदम, कदीम दे विछड़े मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल काया माटी वखाए साचे बदन, अंदरे अंदर साचे मन्दिर भेव अभेदा अछल अछेदा बाहर चार वेदां आप खुल्हाइंदा। सतिगुर पूरा जिस देवे नाम दात, दाता हो के आप वरताईआ। उस नूं निउँ निउँ मनुआ टेके माथ, टिक्का धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को नाम अगम्मी गाथ, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। साचे मन्दिर साहिब सतिगुर जोती नूरा ज़ाहर ज़हूरा बिन अक्खां तक्कण साख्यात, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जिस दा लहिणा देणा लिख्या ना जावे नाल कलम दवात, शास्त्र
१११० सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण किछ ना पाईआ। तिस दे अगे मनुआ कदे ना सके झाक, १११०
१६ आपणी वासना ना कोए प्रगटाईआ। धन्न वड्याई जिन्हां साहिब सतिगुर पूरे दा मिल जाए साथ, सगला संग निभाईआ। १६
एथे ओथे दो जहानां पत लए राख, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा सतिगुर सदा कटणहारा जमफास, फ़ैसला हको हक सुणाईआ। सतिगुर किरपा मन होवे दीन, दीन दुनी तजाईआ। नाता तोड़ के त्रैगुण तीन, त्रै त्रै लेखा दए मुकाईआ। सच दुआर हो अधीन, निउँ निउँ लागे पाईआ। जिन्हां आत्म परमात्म रस ल्या चीन, चिन्ता अंदरों रहे गवाईआ। जिन्हां सतिगुर पूरा मिल गया सो गुरमुख क्यों होवे ग़मगीन, ग़मां दा डेरा साहिब आपे देवे ढाहीआ। बेशक मार्ग मंज़ल वाला महीन, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के घर स्वामी अन्तरजामी निज नेत्र दर्शन कोए ना पाईआ। बत्ती दन्द पढ़न कलामी जगत कहाणी, शब्दी सुरत मिले ना सच सवाणी, हाणी बण के सेज ना कोए हंढाहीआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सर्ब कुरलाणी, काया कुरह धुर दा काअबा मुकामे हक हक महबूब सच ना कोए मिलाईआ। सतिगुर किरपा नाल मन वस होवे आसानी, असल अंदरों नज़री आईआ। गुरमुखो सतिगुर चरण प्रेम दी देणी पए कुरबानी, दूजी कीमत ना कोए रखाईआ। एह खेल सति संगत दा नौ दवारयां तों बाहर सदा रुहानी, मन बेईमानी ना कोए कमाईआ। जिन्हां दा लेखा सतिगुर आप चुकाए विच्चों पेशानी, पुश्त

पनाह हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी जुग जुग दा झगड़ा सब नूं प्या दीवानी, फ़ैसला हक ना कोए दृढ़ाईआ। जिन्हां उपर सतिगुर शब्द करे मेहरवानी, महबूब हो के आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन दी मनसा दए मिटाईआ। सतिगुर पूरा मेटे मन दी मनसा, माया मोह विकार पंज तत अन्तर रहिण ना पाईआ। काग बणाए फड़ फड़ हँसा, नाम माणक मोती चोग चुगाईआ। फड़ सँघारे मन हँकारी जिउँ कान्हा कंसा, सिर सके ना कोए उठाईआ। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख साचा सतिगुर साचे दी बणे अंसा, दर घर साचे मिले वड्याईआ। मानस जन्म बणे बणता, घड़न भन्नणहार समरथ वेख वखाईआ। साची सुरती मिले घर विच कन्ता, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। शब्दी हुक्म सतिगुर पूरा गढ़ तोड़े हउमे हंगता, निवण सु धार इक जणाईआ। गुरमुखां मन दी करनी पए ना कदे मन्नता, जिन्हां सतिगुर साचे ओट तकाईआ। सतिगुर पूरा झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नता, स्वर्गां लेखा दए मुकाईआ। जोती मेला आत्म अन्ता, परमात्म आपणे विच समाईआ। सद दए वड्याई साचे सन्ता, सति सतिवादी भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। मन वासना होई सृष्ट, चार वरन हल्काईआ। जिन्हां गुरमुखां सतिगुर दा मिल्या इक्को इष्ट, देव आत्मा रहे मनाईआ। उन्हां नूं कथा कहाणी याद रामा वशिष्ट, विषयां वाले गुरू दा लेखा जाण मुकाईआ। आत्म परमात्म मिल के साची सच्ची भोगण गृहस्त, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। साहिब सतिगुर प्रेम प्रीती वाला दस्स के अगम्मी इश्क, मुहब्बत महबूब आपणे नाल रखाईआ। मनुआ ओथे कदे ना ठहरे आपे जावे ख़िसक, भज्जे वाहो दाहीआ। सतिगुर उपर भरोसा जिन्हां होया सिदक, सदके वारी घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद भगतां दए वड्याईआ। सतिगुर किरपा मन होए ढेरी, बलहीण नज़री आईआ। बुध ना बणे मन दी चेरी, सतिगुर देवे माण वड्याईआ। इन्द्रिआं वस ना करन जिन्हां नूं मिल गई चरण धूढ़ी, टिक्के ख़ाक गए रमाईआ। उन्हां दा मालक ख़ालक इक्को साहिब सुहञ्जणा नूरी, जिस दा इस्म जिस्म किस्म ना कोए बदलाईआ। गुरमुखां मन कदे ना करे मजबूरी, जिन्हां दा मालक शहिनशाहीआ। जगत वासना चुक्के कूड़ी, कूड़ कपट ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन दे बन्धन दए तुड़ाईआ। सतिगुर साचे साचे दी लग्गे सरन, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज लोचन नैण होवे रुशनाईआ। सुरती मन बुद्धी तों परे सतिगुर शब्द विच मिल के आपणी मंज़ल चढ़न, चढ़ चढ़ पन्ध मुकाईआ। जित्थे आत्म परमात्म एका धार तूं मेरा मैं तेरा बिन अक्खरां ढोला पढ़न, रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। झगड़ा रहे ना जन्म मरन,

लख चुरासी ना कोए भवाईआ। इक्को इक एक दी सरन, सरनगति इक्को नज़री आईआ। मन वासना विच गुरमुख साचे कदे ना सड़न, जिन्हां दे सिर ते सतिगुर पूरा आपणा हथ्थ रखाईआ। बिन सतिगुर पूरे संसार सागर जीव जंत मूल ना तरन, पार किनारा ना कोए वखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल दयानिध ठाकर सर्ब स्वामी अन्तरजामी धुर दा वरन, दयावान मेहरवान परवरदिगार सांझा यार लाशरीक हक महबूब वसे अर्श फर्श उच्च अरूज, दूज विच कदे ना आईआ। जिन्हां गुरमुखां सतिगुर सरन लै के आपणी आप पाई सूझ, उन्हां दा मन उन्हां अंदर आपे गया झूज, पंचम मिल के पंच परपंच करे ना कोए लड़ाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो साचे सन्तो सतिगुर मंजल प्रेम हदूद, जगत वण्ड ना कोए वण्डाईआ।

११९२
१६

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत २ मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरा सुत धर्मी, सदा सद साची सेव कमाईआ। देहु वड्याई माण उपर धरनी, धरत धवल बह के तेरी सेव कमाईआ। चार वरन अठारां बरन आवण तेरी सरनी, इष्ट दृष्ट इक्को इक समझाईआ। पुरख अकाल कर आपणी करनी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। आत्म परमात्म साची तुक सब नूं दस्स पढ़नी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। हक दुआर आपणी मंज़ल दस्स चढ़नी, पंच विकार अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। मेहरवान महबूब साची दस्स तरनी, तारनहार इक्को इक तूं ही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देणा आपणा वर, वास्ता तेरे अगे पाईआ। सतिजुग कहे प्रभ साचे नाम दा दे भण्डार, लोकमात दयां वरताईआ। कलयुग जीव बिल्लायण विच संसार, चार कुण्ट दहि दिशा धीरज धीर ना कोए धराईआ। जो लेखा लिख के गए पैगम्बर गुर अवतार, इबारत अक्खरां वाली बणाईआ। तिस दा लहिणा देणा निरगुण सरगुण आप विचार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी ध्यान लगाईआ। जिस दी कोई ना पावे सार, परदा ओहला भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गए हार, कलयुग वेला अन्त दए दुहाईआ। मन वासना सृष्टी दृष्टी अंदर होया हँकार, विभचार विच लोकाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेल ना कोए मिलाईआ। सब दे अंदरों निरगुण धार विसरया करतार, निरवैर मिल के खुशी ना कोए वखाईआ। किरपा कर एकँकार, इक इकल्ले तेरी आस रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी विच्चों कढ्ढ बाहर, धर्म दवारा इक्को दे वखाईआ। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां चार वरनां अठारां बरनां ब्रह्मण क्षत्री शूद्र वैश तेरा इक्को आए नज़री दरबार, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

११९२
१६

किरपा कर, एका दे साचा वर, सतिजुग साची आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरा इक्को नाम आवे चित, चेतन सुरती दे कराईआ। तेरा खेल आदि जुगादी नित नवित, नर नरायण तेरी वड्याईआ। प्रेम प्रीती प्यार अंदर कर हित, महबूब मुहब्बत हक दे समझाईआ। जिस दा लेखा कोई ना सक्या लिख, गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कह के खुशी मनाईआ। तूं अन्त कन्त भगवन्त साची भिच्छया पा भिक्ख, भिक्खक हो के तेरे अगे झोली डाहीआ। आसा मनसा पूरी कर इच्छ, तृष्ना तेरी लई रखाईआ। तूं साहिब सुल्तान वाली दो जहान धुर दा पित, पति पतवन्ता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सति धर्म दी ला दे जड़, कूड़ी क्रिया जड़ उखड़ाईआ। तेरा नाम निधाना इक्को अक्खर दीन दुनी जाए पढ़, दीन मज़्हब झगड़ा रहे ना राईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार आपणा वखा अगम्मा घर, बिन दीवा बाती इक्को नूर जोत करे रुशनाईआ। कोटन कोटि वार सृष्टी कीती लै, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्में अंदर भवाईआ। इक इकल्ला एकँकार निरगुण धार तूं ही रहें, सरगुण लेखा दएं मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठाडे सीस निवाईआ। सतिजुग कहे प्रभ वेख धरनी धरत होई बेहाल, कूक कूक जणाईआ। साची दिसे ना कोई धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ रहे कुरलाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ सुहावे ना कोई ताल, गंगा गोदावरी जमना बिन अक्खां नीर वहाईआ। साचा नज़र ना आए किसे धुर दा काहन, गोपी रूप ना कोए बणाईआ। सीता सुरती मिले ना शब्दी राम, काया बनबास विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। मंज़ल मिले ना हक अमाम, हज़रत हज़ूर नज़र किसे ना आईआ। साचा मंत्र जाणे ना कोई सतिनाम, डंका फ़तिह ना कोए वजाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा होई वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जूठ झूठ चढ़या तुफ़ान, सांतक सति सति ना कोए कराईआ। मन वासना शाह सुल्तान होए गुलाम, जगत सन्त पल्लू ना कोए छुडाईआ। जगत दवारयां दिसे हराम, हरी ओम हर हिरदे ना कोए वसाईआ। तेरी सेजा चढ़ के आत्म परमात्म करे ना कोई बिसराम, बिस्मिल हो के आपणा आप ना कोए मिटाईआ। भठ्ठ खेड़ा साढे तिन्न हथ्थ नगर होया ग्राम, मंज़ल चढ़ के दवारे खड़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणे नाम दा दे सच पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे कर पढ़ाईआ। वाहिद लाशरीक हकीकी सच सुल्तान दस्स मुकाम, परदा ओहला आप उठाईआ। सचखण्ड दवारा एकँकारा जित्थे दीपक जोत जगे महान, दीवा बाती कमलापाती नज़र किसे ना आईआ। किरपा कर श्री भगवान, सतिजुग साचे दे दान, दर भिखारी डिग्गा आण, चौथे युग अन्तिम आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

१११३
१६

देणा साचा वर, साहिब समरथ तेरी महिमा अकथ, जुग जुग चलावें रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सतिजुग कहे प्रभ धरनी धरत धवल उपर वेख हालत, हाल बेहाल होई लोकाईआ। मन वासना घर घर दिसे जहालत, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप साची दिसे ना कोए अदालत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। माया कारन पई बग़ावत, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम दी साची देवे ना कोए ज़मानत, ज़िमनी हक ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग मेट रैण अन्धेरी शामत, शमां आपणा नूर कर रुशनाईआ। तूं आदि जुगादी साहिब सुल्तान सचखण्ड निवासी सही सलामत, हुक्मे हक डेरा लाईआ। वस्त अमोलक नाम निधाना दीन दुनी दे नयामत, तोहफ़ा इक्को वार वरताईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा मेट हुक्में वाली क्यामत, कलम शाही सार ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दुआर सतिजुग साचा ढह प्या सरनाईआ।

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत २ उमराउ सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

११९४ सतिजुग साचा कहे मेहरवान हो के कर तरस, बेनज़ीर नज़र उठाईआ। सृष्ट सबाई रही तड़फ, आबेहयात अमृत जाम ना कोए प्याईआ। मन वासना मिटे किसे ना हरस, माया हवस ना कोए गवाईआ। नूरी जलवा मिले किसे ना दरस, आत्म जोत ना कोए रुशनाईआ। अमृत आत्म बूँद स्वांती निझर धार बरस, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण धार सरगुण धार आ परत, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। शरअ छुरी कतल करे कोई ना करद, कतलगाह ना कोए वखाईआ। दीनां अनाथां ग़रीब लिमाणयां दीनां नाथ वण्ड दर्द, दुखियां दुःख दे गवाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, अचरज लीला तेरी बेपरवाहीआ। साहिब सुल्तान योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द, मदद तेरी मंग मंगाईआ। कोटन कोटां विच्चों कलयुग अन्त तेरे भगत थोड़े अदद, बहु गिणती बैठी मुख भवाईआ। जूठ झूठ जगत अपराध करे तशदद्, सच सुच ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के वेख वखाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ धरनी नेत्र वहाए नीर, बिन हन्झूआं धार वहाईआ। नजरी आए ना कोई पीर, पैगम्बर बैठे मुख छुपाईआ। नाता बन्ने ना कोए दस्तगीर, दस्त दस्त ना कोए मिलाईआ। झगड़ा प्या शाह हकीर, शहिनशाह सारे रहे कुरलाईआ। नाम दा रिहा ना कोए अमीर, जगत माया कीता हल्काईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। सदी चौधवीं वेख अख़ीर, आख़र मसला हक दे दृढ़ाईआ। दरोही दरोही करन जगत ग़रीब, सांतक सति ना कोए वरताईआ। तेरा खेल सदा अजीब,

हुक्में अंदर हुक्म भवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदा आयों तरतीब, कलयुग अन्तिम लेखा दे चुकाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, सतिजुग साचा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ वेख अक्खीं दीन दुनी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कोई दिसे ना ऋषी मुनी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत ख़ाली देण दुहाईआ। सच पुकार किसे ना जावे सुणी, अनसुणत होई लोकाईआ। विद्या वाले बहुते बण गए गुणी, अनुभव परदा ना कोए उठाईआ। सुर ताल नाल तेरा नाम सारे रहे सुणी, धुन आत्मक नाद ना कोए वजाईआ। रसना जेहवा सब दी बदल गई कूणी, कूक कूक देवे ना कोए दुहाईआ। तेरे नाम तों सृष्टी दी दृष्टी होई ऊणी, सच भण्डारा ना कोए भराईआ। की वड्याई जे द्वापर ख़त्म कीती अठारां खूणी, अठाई लख वण्ड वण्डाईआ। कलयुग अन्त ओस तों गिणती हो गई बहु दूणी, चौगुणी समझे कोए ना राईआ। बुद्धी पढ़ पढ़ थक्की मजमूनी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान ढोले गाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कलयुग अग्नी बलदी दिसे धूणी, धूंणीआँ वाले साधू करवट सके ना कोए बदलाईआ। सब दे अंदर विद्या होई बैरूनी, तेरा संदेसा नाम सुणन कोए ना पाईआ। कलम शाही नाल बणे कानूनी, कानून कलमा हक ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार अन्त वेख बेअसूली, असल वसल सच ना कोए जणाईआ। जगत बदलणा परम पुरख परमात्मा तेरे वास्ते खेल मामूली, गुर अवतार पैगम्बर सारे बैठे सीस निवाईआ। कौल इकरार धुर दे करतार कुदरत दे मालक ना भूलीं, जो निरगुण सरगुण रुके भविख्तां विच गया दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, तूं आदि जुगादी लख चुरासी जीव जंत सब दा कन्त कन्तूहली, मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां श्री भगवाना नज़री आईआ।

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड बल ज़िला गुरदास पुर ✪

किरपा करे पुरख अकाल, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ। दयावान दीन दयाल, दयानिध होए सहाईआ। परम पुरख बण कृपाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच दुआर प्रगटा के इक्को धर्मसाल, वरन बरन बह के खुशी मनाईआ। सन्त सुहेले सोहण लाल, गुरमुख गुर गुर रंग रंगाईआ। शब्द अनादी वज्जे ताल, मन चले ना कोए चतुराईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को दर सोभा पाईआ। धुर दा नाम होवे दलाल, विचोला, इक्को इक रखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपे पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे देवणहारा निध, नाम अमोलक झोली पाईआ। सति धर्म दी दस्स के बिध, साचा मार्ग दए समझाईआ। इक्को रंग रंगा के मुन रिख, जीव आत्मा परदा दए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को सिख्या लैण सिख, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म करे साचा हित, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। सच स्वामी जन भगतां आए दिस, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा अगला लेखा देवे लिख, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। पूरा करे भविख, लेखा पूरब दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सतिजुग साचे, तेरा मालक आवे मात, मता आपणे नाल पकाईआ। वस्त अमोलक देवे दात, नाम अगम्मा झोली पाईआ। शब्दी शब्द वड करामात, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। कलयुग कूड़ी अन्धेरी मिटे रात, भिन्नड़ी रैण करे रुशनाईआ। जन भगतां दे के सच सौग़ात, अमृत जाम मुख चुआईआ। जन्म जन्म दा पूरा कर के घाट, लाहा इक्को दए समझाईआ। लख चुरासी टुट्टे फास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। घर जोत होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ साचा होवे पाठ, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा साचा होवे साथ, सगला संगी बहुरंगी इक्को नज़री आईआ।

✪ ३० सावण शहिनशाही सम्मत २ बख्शीश सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे, सच नाम दा होवे जैकारा, वस्त अमोलक धुर दी झोली पाईआ। दीन दुनी लावे साचा नाअरा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा ढोला गाईआ। जीवां जंतां करे उधारा, साचे सन्तां प्रभ दे नाल मिलाईआ। घर मन्दिर वखाए ठांडा दरबारा, उच्च अटल सोभा पाईआ। भेव अभेद खुल्हाए अगम्म अपारा, अलख अगोचर धुर दा शहिनशाहीआ। गुरसिखां दे के हक हुलारा, असलीअत आपणी दए जणाईआ। काया काअबा खोल्ह किवाड़ा, हरि मन्दिर इक्को इक दए प्रगटाईआ। जित्थे वसे अगम्मी लाड़ा, पुरख अकाला डेरा लाईआ। अग्नी अग्ग ना तपे हाढ़ा, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। एका नाद सुणे धुन्कारा, अनहद अगम्मी आप वजाईआ। जगत जहान करे पार किनारा, नईआ नौका मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। साचा सईआ बण के एकँकारा, अकल कलधारी आपणी कल वखाईआ। हुक्में अंदर हुक्म वरतारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साचे भगतां मिले भण्डारा, अतोट अतुट आप वरताईआ। सच दुआर सोहे घर बारा, हरिजन बह

के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरी मनसा पूर कराईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा होवे बोल, दो जहानां ढोला गाईआ। सच दुआर देवे खोल्ह, चार वरन मिले शरनाईआ। साचे कंडे देवे तोल, तराज़ू आपणा आप प्रगटाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत लेखा दए चुकाईआ। पूरब पूरा करे कौल, गुर अवतार पैगम्बर मता सब दे नाल पकाईआ। अमृत आत्म रस निझर देवे पाहुल, झिरना आपणा आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी साची धार दए बदलाईआ। सतिजुग साचे इक्को नाम दा होवे जोर, जोरू ज़र सीस ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल बिन नजर ना आए कोई होर, होका इक्को इक जणाईआ। समरथ स्वामी सब नूं तक्के नाल ग़ौर, गहर गंभीर लख चुरासी खोज खुजाईआ। जन भगतां साचे सन्तां जाए बौहड़, दूर दुराडा नेरन नेरा हो के वेख वखाईआ। रस रहिण ना देवे मिठ्ठा कौड़, इक्को रस दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अवर की और, अर्श फर्श आपणा हुक्म मनाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा होवे बोला, अनबोलत आप जणाईआ। करे खेल काया चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। रहिण देवे ना परदा ओहला, भेव
१११७ अभेद दए खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के धुर दा ढोला, ढोआ धुर दा झोली पाईआ। जन भगतां बणाउणा पए ना १११७
१६ कोए विचोला, तत्तां दी खोज करन कोए ना जाईआ। घर ठाकर स्वामी मिले मौला, मालक हो के वेख वखाईआ। मनुआ १६
मन ना पाए रौला, गुर शब्द वज्जे वधाईआ। सब दा भार कर के हौला, जन भगतां करमां गठड़ी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साची तेरी धार बंधाईआ। सतिजुग साचे इक्को बोला होवे नाम अलख, अलख अलखना सारे गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल हो प्रतख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रूप वखाईआ। आत्म परमात्म इक दूजे दा सांझा होवे जस, वेद पुराणां दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां खुल्ही रहे अन्तर अक्ख, बाहरों खोज के जंगल जूह फेरा कोए ना पाईआ। मन विकारा कर के सति, सत्थर यारड़ा दए जणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह के सच, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। साचे सन्तां गुरमुखां लूं लूं अंदर जावे रच, रचना आपणी दए वखाईआ। धुर दा मालक बण के परमेश्वर पति, पत्रका धुर दी दए जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दा पूरब लेखा सब दी झोली घत, अगला आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, इक्को साचा नाम कराए जस, जिस्म इस्म किस्म इक्को इक दृढ़ाईआ।

✪ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ बीबी पूरन कौर दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे, पंज तत किरपा करां जिस्म जिस्मानी, जशन आपणा इक वखाईआ। मस्ती नाम खुमारी दे के रुहानी, रूह बुत्त आपणा रंग रंगाईआ। मालक दरसावां उपर असमानी, ज़मीने ज़मां नज़री आईआ। साचे प्रेम दी देणी पए कुरबानी, करबलयां वाली ना कोए लड़ाईआ। रहमत करे रहीम रहमानी, राहज़नी अंदरों दए कढाहीआ। साचे नाम दी देवे निशानी, निशाना, इक्को दए वखाईआ। जित्थे भगतां भगवान देवे महिमानी, वस्त अमोलक बिन रसना जिह्वा मुख लगाईआ। ओथे मन करे ना कोई बेईमानी, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। तत वजूद ना आवे हानी, महबूब मिले बेपरवाहीआ। जिस नूं समझे ना कोए विद्वानी, इलम आलम अलूम ना कोए चतुराईआ। जन भगतां होए ना परेशानी, हैरानी हैरान ना कोए कराईआ। साचे मित्र प्रेम दी मार अगम्मी कानी, कायनात कुनबा दए उलटाईआ। गुरमुखां झल्लणी ना पए बदनामी, बदन विच बद रूह कोए ना आईआ। जूह रहे ना कोए बेगानी, गृह मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। सब दा लेखा लेख जाणे बिन कलम शाही कानी, आदि जुगादी वड वड्याईआ। देवणहारा पद निरबाणी, निरवैर निराकार निरँकार होए सहाईआ। जुग चौकड़ी झगड़ा रहिण ना देवे दीवानी, फ़ैसला हक हक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे दए वड्याईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा इक नमूना, जिस दा नकश नकश्यां विच कदे ना आईआ। समझ सके ना कोए मज़मूना, ताअरीफां विच ना कोए लिखाईआ। जिस दा खेल अगम्म अथाह अजूना, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। मुकामे हक खेल कसेलूना, कवाइदे कानून ना किसे जणाईआ। हुक्मे अंदर चाएमूना, मंज़ल मंज़ल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। सतिजुग साचे, साचा हुक्मे होए नाज़ूले, ज़िवीउल ज़लाह वड्डी वड्याईआ। धुर फ़रमाना इक माअकूले, मीऊज़ल मुज़ाह मुज़क्कर मुअन्नस वण्ड ना कोए वण्डाईआ। समझ सके ना कोई अरज़ तूले, तुआले उलज़बाह ज़रा ज़बीबे ना कोए शनवाईआ। कुदरते कादर कनीज़े कूले, किवीउल उलबाह लबेरेज़ लबूब लविशक विशाल विशीने बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेज़ीने ज़ीना ज़दाह ज़वाइउल अज़ीज़ाने ज़ावे ज़ूर नूरे खुदाईआ।

३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ करनैल सिंघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर

सतिजुग साचे, साचा नाम कोई ना करे ग़बन, ओहले वाले पड़दे दयां उठाईआ। पूरब नामां उत्ते पा के कफ़न, चरण दवारे आपणे दयां दफ़नाईआ। सिफ्ती नावां विच मूल ना खपण, बहुती वण्ड ना कोए वण्डाईआ। इक्को नाम मेरा जपण, जाप धुर दा दयां सुणाईआ। माया ममता विच मूल ना तपण, तपदे हिरदे शांत कराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छो साचा नाम वरोल के मक्खण, जन भगतां दयां चखाईआ। डंका वज्जे उत्तर पूरख पच्छिम दक्खण, चार वरन ढोला गाईआ। खुशीआं नाल सन्त सुहेले वसण, विशा विकार ना कोए वधाईआ। पुरख अकाल दा इक्को दिसे पत्तण, जिस दवारे बह के सुहञ्जणी रुत सुहाईआ। अबिनाशी करता सब दी पत आया रखण, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। सच दवारा दस्स के धुर दा वतन, बेवतनां घर पुचाईआ। जित्थे एका होवे जशन, दूजी खुशी ना कोए बणाईआ। दीनां मज़्बां वाला नहीं कोई मिशन, मशवरयां विच सलाह ना कोए सुणाईआ। सिर झुकाउँदे शिव ब्रह्मा विष्न, राम किशन लागण पाईंआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच दिसण, सिर सके ना उठाईआ। सब दा लेखा कलयुग अन्तिम आया लिखण, लेख भेख रेख देस आपणे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग साचे साचा नाम देवे इक गुणी, गुणवन्त दया कमाईआ। सब दी पुकार जाए सुणी, अनसुणत रहिण कोए ना पाईआ। बिना साजां तों दे के धुनी, नाद अनादी दए शनवाईआ। लख चुरासी जाए छाणी पुणी, लेखा मुकावे थाउं थाँईंआ। जन भगतां अन्तर आशा रहे ना ऊणी, पूरब घाटा पूर कराईआ। सब दी रसना जिह्वा बदल देवे कूणी, कूक इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिखे धुर दे सच मज़मूनी, मुश्कल अगली हल्ल कराईआ। सतिजुग साचे, सच होवे अगम्मी नाअरा, नर नरायण इक सुणाईआ। भगत भगवान दा होए मुज़ाहरा, ढोला सुणे जगत लोकाईआ। सच धर्म दा लग्गे अखाड़ा, गोपी काहन मिल के वज्जे वधाईआ। मालक बणे सब दा धुर दा लाड़ा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। आपणे नाँ दी जणाए अगम्मी वारा, वारता पिछली दए लिखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा होवे प्यारा, प्रेमी प्रीतम प्रीती इक्को इक समझाईआ। साचा बख्श के चरण दवारा, धर्म दवारा दए खुल्हाईआ। जित्थे मिले नर नरायण अवतारा, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सदा सदा सदा सद सच सिक्दारा, हुक्म आपणा आपणे हुक्म नाल चलाईआ।

✪ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन सिँघ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे मेरा आदि अनादी खेल कदीम, कुदरत दा मालक बण के हुक्म वरताईआ। महल अटल सुहा के अज़ीम, आलीशान आहला तों आहला आप अख्वाईआ। जुग चौकड़ी खेल करां धार विच महीन, जगत विच जुगत ना किसे समझाईआ। आपणे हथ्थ रख के तक्सीम, हिसे धुर दे दिते बणाईआ। साचे नाम दी दे तामील, तुलबिआं करां पढ़ाईआ। प्रेम दा दे यकीन, भरोसा चरण कँवल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर घल्ल के मात मनीम, हिसाब किताब थोड़ा थोड़ा हथ्थ फड़ाईआ। हुक्मे अंदर कर तरमीम, अदला बदली विच दयां भवाईआ। इशारे वाला दस्स के सीन, सुनेहड़ा कलमयां विच सुणाईआ। जोती नूर नज़र जणा हसीन, जलवा जलौ कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सतिजुग साचे साचा होवे इक मुकाम, कयामगाह इक्को इक वखाईआ। धुर दा मिले नाम, श्री भगवान करे पढ़ाईआ। धर्म दा होए निशान, सति सच झुलाईआ। सारे दिसण गुलाम, दर बरदे सेव कमाईआ। हुक्में अंदर धुर दा काम, शहिनशाह करवाईआ। निरगुण सरगुण दे पैग़ाम, करे हक पढ़ाईआ। कलयुग अन्त

११२० १६ आ के विच मैदान, मुद्दा आपणा दए समझाईआ। मन बुद्धी दा कम्म ना आए किते दीवान, सिफ्तां वाला तीर घायल ना कोए कराईआ। सतिगुर शब्द होया बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। लेखा जाण जीव जहान, कुरह कुरान खोज खुजाईआ। हुक्म सुण हुक्मरान, हुक्मे अंदर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा खेल करे महान, महिमा आपणी अकथ पुरख समरथ आप दृढ़ाईआ। ११२० १६

✪ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे सतिगुर खेल होवे गहरा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। प्रेम प्यार दा साचे भगतां मिले लहरा, लहिलहांदी कायनात नज़रीं आईआ। सन्त सुहेला कोई ना रहे बहिरा, धुर दा डंका इक वजाईआ। साचे घर कराए आपणी सैरा, सैरगाह काया प्रभास आप बणाईआ। गुरमुखां उपर कर के मेहरा, मेहर मेघ इक बरसाईआ। दीन मज़्हब दा तोड़ के दायरा, दामन आपणा दए पकड़ाईआ। दरस वखाए समरथ ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जगत इष्टां चुक्के खैहड़ा, ख़ालस पुरख अकाल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कहरा, हुक्म धुर दा इक वरताईआ।

✪ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत २ सवरन कौर दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग साचे तेरा लेखा हथ्थ समम, सलल सुल्ह़ाकुल अख्वाईआ। भेव अभेद खुल्ह़ाए ममम, मुहब्बते महबूब शीर निज़ां दया कमाईआ। काइदाए कुदरते तममम, दास्ताने ज़ुईली ज़ाह ज़वानेज़ार नज़रीं आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदी उल स्याद नबीउल नयाद, इमामे पिसदाद, पिसरे पितर पोलीलुल ज़िज़ाह, ज़ावीआ ज़ेर ज़बर ना कोए बणाईआ।

✪ पहली भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे ऐलान, अल्ला राम वाहिगुरू कृष्न ओम मिल के खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दा होवे इक ध्यान, गुर अवतार पैगम्बर ढोला गाईआ। जिस नाल दो जहानां होवे कल्याण, कलमयां दा कलमा दए प्रगटाईआ। योद्धा सूरबीर शब्दी सुत बलवान, बलधारी इक वखाईआ। जिस नूं झुकण दो जहान, सिर सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी चारे खाणी चारे बाणी देवे माण, अभिमान मेटे थाउँ थाँईंआ। बुद्धी तों परे करे ज्ञान, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेले आण, आनन फ़ानन भेव चुकाईआ। सर्ब व्यापी प्रगट करे भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। झगड़ा रहे ना जीव जहान, दीन मज़्ह़ब ना कोए लड़ाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, ज़ंजीर बन्धन ना कोए ना पवाईआ। करना पए ना कोए इश्नान, तीर्थ तट ना कोए वड्याईआ। रागां विच गाउणा पए ना कोई गाण, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। करे खेल आप मेहरवान, महबूब महिव आपणी मुहब्बत दए समझाईआ। जिस दा फुरनयां तों बाहर फ़रमान, फरमांबरदार सारे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप वखाईआ। सतिजुग साचे, साचा होवे फ़रमान, फ़रमांबरदार सारे लए बणाईआ। दूसर रहे ना कोए जहान, जाअली गुरू ना कोए अख्वाईआ। पिछला देवे कोई ना नाम, अगला हुक्म दए वरताईआ। जिस नूं मन्नण गोपी काहन, सीता राम देण दुहाईआ। पैगम्बर सुणन पैग़ाम, कलमा बेपरवाहीआ। गुरू धार करे परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। डंका वज्जे ज़िमीं असमान, लोक परलोक होवे शनवाईआ। जिस दा लेखा लिख्या नहीं विच ब्यान, बेवा करे सर्ब लोकाईआ। इक्को मालक पतिपरमेश्वर ख़ावंद मन्नणा पए श्री भगवान, आमद विच वज्जे हक वधाईआ। जिस दी बोलण वाली नहीं ज़बान, देवणहारा सर्ब ज्ञान, परदा परदयां विच्चों चुकाईआ। अन्त सीस जगदीश इक्को इक झुकाण, दूजा दिसे ना कोए निशान, निशाने पूरब दए मिटाईआ।

सच धर्म दा सच दवारे ला के नाम दीबान, सिख्या देवे जीव जहान, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। जिस दा लेखा समझे ना कोए इन्सान, सो खेल करे मर्द मर्दान, मुद्दे सारे आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहान जाण हल, सम्भल सके ना कोए राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे कल, कलमे वाले देण दुहाईआ। इक्को हुक्म इक्को तुख्म दिसे जल थल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार भगतां वल वलवले सारे दए गवाईआ। धाम वखा के निहचल इक अटल, धुर घराने दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे धुर दा हुक्म होवे एक, इक इकल्ला आप सुणाईआ। सब नूं रखणी पए टेक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ कुड़यारा रहे कोई ना भेख, इक्को डंका राउ रंकां दए सुणाईआ। सब नूं दस्स के सचखण्ड दवारा धुर दा देश, मकान इक्को दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के रेख, लेखा आपणा दए समझाईआ। मालक बण के धुर नरेश, नारी नर दए समझाईआ। पुरख अकाल एका तक्को जो रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। जिस दा दूल्हा शब्दी गुर दस्मेश, धुर

११२२
१६

दा लाड़ा सोभा पाईआ। आप आपा कर के भेंट, सेज सुहञ्जणी सत्थर लेट, लटाका छड्ड के जगत लोकाईआ। अन्तिम बण के खेवट खेट, सच दवारे दा दस्से भेत, भेव अगला रिहा खुल्हाईआ। जोती शब्दी धार के वेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरी सति सलाह साची सिख्या नाल मिलाईआ। सतिजुग साचे धुर दा नाम चले अवल्ला, अवल्लड़ी कार कमाईआ। जिस कारन गुर अवतार पैगम्बर घल्ला, घरयां विच टिकाईआ। सब नूं फड़ा के आपणा पल्ला, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। सरगुण निरगुण हो के रल्ला, रलमिल आपणा झट लँघाईआ। इशारयां नाल दस्स के निहचल धाम अटला, उपर आपणा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा वल छला, आपणा भेव ना किसे समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सच दुआर एकँकार निरगुण धार आपणा मल्ला, महल्ला वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सतिजुग साचे तेरी करे कराए करनी दा करता कुदरत दा मालक आप तसल्ला, तसल्ली तरतीब नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रकाश हो के आपणे नूर बला, बलधारी चार जुग दे आपणे विच मिलाईआ।

✪ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरबचन सिँघ दे गृह नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिजुग साचे सुण, जो होवण प्रभ दे गुरमुख, मुखीए दो जहान अख्वाईआ। जिन्हां जन्म मरन दा रहे कोई ना दुःख, आवण जावण गेड़ ना कोए भवाईआ। लेखे लग्गे मानस जामा मनुक्ख, तन वजूद मिले वड्याईआ। फिर मात गर्भ उलटा होणा ना पए रुख़, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म मिल के होवे साचा सुख, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जगत वारस हो के लए पुछ, परदा ओहला बण विचोला आप चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दी दस्स अगम्मी तुक, नाम इक्को इक जणाईआ। जिन्हां सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी नाता बणा के पिता पुत, गोदी धुर दी लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे मेरा गुरमुख होवे साचे रंग, कसुंभड़ा रूप ना कोए वटाईआ। आत्म परमात्म माणे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। साचा गा के धुर दा छन्द, संसे रोग दए मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नंगी होण ना देवे कंड, मेहरवान महबूब सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुरत सवाणी रहे मात ना रंड, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। नाता तोड़ के बन्दीख़ाना बन्द, बन्दना आपणी दए समझाईआ। परदा ओहला रहे ना हँ, ब्रह्म पारब्रह्म मेला लए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के तृष्ना तम, अग्नी तत बुझाईआ। हरख़ सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। धुर दा राग सुणा के बिन कन्न, करमां दा लेखा दए मुकाईआ। जगत जहान श्री भगवान बेड़ा देवे बन्न्ह, पार किनारे दए कराईआ। जित्थे ना कोई सूरज ना कोई चन्न, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। गुरमुख गुर सतिगुर मिल के कहिण धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां नाल प्रकाश कर आपणा अगम्मी चन्न, लोक परलोक करे रुशनाईआ।

✪ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा डंका वज्जे चारे कूट, कुटीआ ब्रह्मण्ड खण्ड दए हिलाईआ। नाम संदेसा लख चुरासी पुज्जे काया पंज भूत, भविख अगला दए समझाईआ। नाम निधाना मिले सच सूच, सति इक्को इक समझाईआ। जूठ झूठ कलयुग क्रिया करे कूच, कूचा गली होवे सफ़ाईआ। जन भगत सुहेले वेखे आपणे पूत, सपूत आपणे नाल मिलाईआ। सच स्वामी घर साजण देवे सूख, दर ठांडा इक प्रगटाईआ। जगत तृष्ना माया ममता रहे ना भूख, अग्नी अग्ग दए बुझाईआ।

मन वासना कूड़ी क्रिया चुक्के चूक, चार कुण्ट इक्को रंग रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर सुत्ती ना रहे घूक, आलस निंद्रा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुहञ्जणी करे रुत, रुतड़ी आपणे विच महकाईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दा लग्गे चक्र, चक्रवर्ती रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा साचा कलमा बणे फकर, फिकरा इक्को दए दृढ़ाईआ। दो जहानां बलधारी ला के टक्कर, टकयां वाले गुरू दए मिटाईआ। कूड़ी क्रिया करे सत्थर, सत्थर यारड़ा इक वखाईआ। जिस दा पढ़ना पए इक्को अक्खर, बहु विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। चोटी मंज़ल चढ़ावे सिखर, दीन दुनी पन्ध मुकाईआ। जन भगतां जन्म कर्म दा लेखा आवे लिखण, लिख्त भविख्त आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्त सुहेले धुर दे गुरमुख दिसण, दहि दिशा करे रुशनाईआ। मानस जन्म कर्म कांड दा लेखा आवे नजिठ्ठण, निज घर बह के आपणा हुक्म सुणाईआ। मन वासना सब दी आवे जित्तण, जोरू ज़र चले ना कोए चतुराईआ। वेखणहारा जगत मुलम्मा पितल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम होवे रंगीला, रंग रतड़ा आप रंगाईआ। चार

११२४ वरनां बणे वसीला, वसल यार दए कराईआ। चार वरन बणा के कबीला, वरन बरन डेरा ढाहीआ। साची इक प्रगटाए ११२४

१६ दलीला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। बिन सतिगुर शब्द दूजा करे ना कोए वकीला, जगत वकालत कम्म किसे ना आईआ। १६

साहिब सुल्तान श्री भगवान धुर दा मालक बणे छैल छबीला, जोबनवन्ता हरि हरि कन्ता नर नरायण इक्को नज़री आईआ। सब नूं कहिणा पए यामबीना, आमीन कह के सारे सीस निवाईआ। जिस ने दीन मज़्हब ज़ात पात जगत कीती तक्सीमा, अन्तिम तरमीम कर के सब दी करे सफ़ाईआ। हक दुआर मंजल वखाए आलीशान अज़ीमा, बेनज़ीर नज़र दए बदलाईआ। सब दे अन्तर खुशीआं वाला रमज़ान रखे महीना, महिमान गुरमुख वेख वखाईआ। झगड़ा चुका के नर मदीना, मुद्दा इक्को दए समझाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां लेखे ला के मरना जीणा, चरण कँवल दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा खेल करे जुग चौकड़ी नव नवीना, रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ।

✪ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड नया शाला ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिजुग साचे, प्रभ दा नाउँ चार युग दा लेखा आपणे विच करे दमन, दमामा आपणा नाम वजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड

पुरी लोअ आकाश पाताल कम्बण, नेत्र नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरण धूढ़ करन मजन, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। सर्ब दा मालक इक्को स्वामी नज़री आए सज्जण, सगला संग बणाईआ। कूड़ विकारे भाण्डे भज्जण, भरमीआं भरम गढ़ तुड़ाईआ। जगत तृष्ना मेटे अग्न, अमृत मेघ इक बरसाईआ। भगत भगवान दा आत्म परमात्म पवे सगन, रिश्ता फ़रिश्तयां तों बाहर लए बणाईआ। सच प्रीती विच कर के मग्न, मगरला लेखा दए समझाईआ। सन्त सुहेला रहिण ना देवे कोई नग्न, ओढन सीस जगदीश आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा वज्जे दमामा, दायरा जगत रहिण ना पाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। संदेसा देवे धुर दा रामा, राम ठाकर सारे सीस निवाईआ। करे खेल अगम्मी कान्हा, काहन बंसरीआं वाले निउँ निउँ लागण पाईआ। संदेसा देवे वड अमामा, पीर पैगम्बर हज़रत रसूल सिफ्तां विच सालाहीआ। करे खेल कल्की बलवाना, गुरू गुर वेख वेख ख़ुशी मनाईआ। हुक्में अंदर हुक्म कर प्रधाना, दो जहानां दए जणाईआ। सति धर्म दा सति निशाना, सति पुरख निरँजण सत्त दीप दए झुलाईआ। सति सच दा दे पैग़ामा, सति सति करे पढ़ाईआ। सतिजुग साचे तेरा मार्ग लग्गे विच ज़िमीं असमानां, समें दी समाप्ती कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। धुर दे नाम दा उपजे इक तराना, तुरीआ तों बाहर करे शनवाईआ। दूजा रहे ना कोए बेगाना, वैरी शत्रु मीत नज़री आईआ। पुरख अकाल हुक्म रहिण ना देवे कोई विच दरम्याना, फ़रमाबरदार सारे लए बणाईआ। सिर सके ना उठा कोई नादाना, चार युग ग़ुलामी अंदर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दा दे के दाना, दाता दातार दर झोली दे भराईआ।

✪ ४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ लाभ सिँघ दे गृह चक्क फतहि सिँघ ज़िला बठिंडा ✪

सतिजुग साचे, तेरा साचा सोहवे इक्को हुजरा, हज़रत पीर बेनज़ीर नज़री आईआ। तवाइफ़ां दा रहे कोए ना मुजरा, तबला हथ्थ ना कोए वजाईआ। सूफ़ीआं पूरब लेख उग्घड़ा, सच तौफ़ीक दए ख़ुदाईआ। उज्जल होवे मात मुखड़ा, दुरमति मैल धवाईआ। विछोड़े दा मेटे दुखड़ा, दर्दीआं दर्द वण्डाईआ। सति धर्म करे शुकरा, शकरीए विच ख़ुशी मनाईआ। मिले माण वड्याई सतिजुग साचे पुत्तरा, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। कीता कौल इकरार मूल ना मुकरा, वाअदा पूर रिहा कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार अगम्मी धार विच्चों उतरा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण भेव किसे ना आईआ। जगत जीव जहान

ग़फ्लत नींद अंदर रिहा सुतड़ा, निज नेत्र लोचण अक्ख ना किसे खुल्हाईआ। नाता तुटे ना किसे गर्भवास उलटे रुखड़ा, चुरासी फाँसी ना कोए कटाईआ। चारे खाणी सहिणा पए दुखड़ा, दर्दीआं दर्द ना कोए वण्डाईआ। जीव जहान जगत रुठड़ा, अगे हो ना कोए मनाईआ। सतिजुग साचे, तेरी सति धर्म दी मौले रुतड़ा, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ा रहे ना मात विच सुथरा, डण्डे कूड़ ना कोए खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां उज्जल करे मुखड़ा, मुखीयां दे मुक्खीए गुरमुख साचे लए बणाईआ।

११२६
१६

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड फ़तेह गढ़ ज़िला बठिंडा ✪

सतिजुग साचे, तेरा साचा होवे रूप, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देवणहार वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दो जहानां दिसे इक्को भूप, राजन राज शाह सुल्तान निरगुण निरवैर नज़री आईआ। सति धर्म डंका वजे दहि दिशा चारे कूट, चार वरन अठारां बरन इक्को एक मिले सरनाईआ। लोकमात नाता रहे ना जूठ झूठ, सच सुच आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म देवे आप जणाईआ। धरनी धरत धवल उपर सुहञ्जणी होवे रुत्त, करे खेल अबिनाशी अचुत, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा रंग रंगाईआ। मन हँकारी जगत विकारी करे कोई ना लुट्ट, बुध बिबेक एका एक एकँकार दए कराईआ। कर प्रकाश अन्ध अन्धेर मिटाए निर्मल जोत, बिन वरन गोत सृष्टी दृष्टी अंदर एका रंग दए रंगाईआ। मन बुध लेखा मुक्के समझ सोच, सतिगुर शब्द अनुभव परदा दए खुल्हाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार कुण्ट दहि दिशा मिल के माणण मौज, भगत सुहेला इक इकेला मजलस सच्ची आपणी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची धार बंधाईआ। सतिजुग साचे, तेरा वक्त होए सुहञ्जणा, रुत रुतड़ी पुरख अकाल आप महकाईआ। नाथ अनाथां दया करे दीन दर्द दुःख भंजना, जगत सागर कूड़ी क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। सति सच सरोवर कराए इक्को मजना, दुरमति मैल अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर बाहर कढाहीआ। नाम निधान निज नेत्र पाए धुर दा अंजना, इक्को लोचण नैण अक्ख होवे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठाकर स्वामी आत्म परमात्म बणे साचा सज्जणा, मीत मुरार एकँकार परवरदिगार सांझा यार नज़री आईआ। सच दुआर बिन मंज़ल पौड़े जन भगतां लँघणा, घट निवासी पुरख अबिनाशी मिल के खुशी मनाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश करे अगम्मी चन्दना, सूरज चन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा सच दवारे दस्से इक्को बन्दना, बन्दगी नाल बन्धन सारे दए तुड़ाईआ। निज घर स्वामी देवे आपणा परमानंदना, परम पुरख पारब्रह्म ब्रह्म परदा

आप उठाईआ। नाम खुमारी सच प्रीती तन माटी तत वजूद चाढ़े रंगणा, काया कलबूत वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे सति धर्म इक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे पुरख अकाल दीन दयाल साचे नाम दा देवे रस, रस्ता रहबर हो के इक्को दए जणाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पन्ध मुकावे नस्स नस्स, निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोध अगाध आपणा नाम दस्स, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी सब दा देवणहारा हक, हक हकीकत लाशरीक फोले थाउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों जाए नठ्ठ, धरनी धरत धवल उपर रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म सच दुआर खुल्ले धुर दा हट्ट, बण हटवाणा श्री भगवाना इक्को नाम दए वरताईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द सन्त सुहेले गुरमुख जन भगत हरि का नाम लैण रट, हर हिरदे अंदर हरिजू आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे तेरा सच दवारा इक्को इक वखाईआ। सतिजुग साचे तेरा दुआर उपजे सति, सति सतिवादी आप खुल्हाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी अंदर देवे ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या

११२७ पारब्रह्म इक्को दए दरसाईआ। नाड़ बहत्तर उबले ना किसे रत, मनमति चले ना कोए चतुराईआ। साचा देवे सन्तोख धीरज ११२७

१६ जत, यथार्थ परमारथ आपणा दए समझाईआ। जन भगतां साचे सन्तां पूरी करे आस, आसा विच निरासा रहिण कोए ना १६

पाईआ। निरगुण नूर जोती जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा दए चुकाईआ। सच दुआर अगम्म अथाह बेपरवाह दस्स के आपणा घाट, जगत वाट लहिणा देणा देवे पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा रहे ना नटुआ नाट, पंच विकारा मन हँकारा देवे गढ़ तुड़ाईआ। सति सच सुच वरते काया माटी काच, कंचन गढ़ बंक दवारा धुर दा दए सुहाईआ। हरि का शब्द गुर की धार सारे लैण वाच, वाचक विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे सति धर्म तेरा होवे दास, दासन दासी हो के सेव कमाईआ। सतिजुग साचे तेरा अन्तर अन्तर पूरा होवे कौल, गुर अवतार पीर पैगम्बर चार युग दे देण गवाहीआ। सच सुच प्रगट होवे प्रसिद्ध उपर धरनी धरत धौल, धर्म दुआर एकँकार इक्को दए वखाईआ। निरगुण धार आत्म परमात्म घट निवासी पुरख अबिनाशी लख चुरासी जाए मौल, मौला हो के आपणी कार कमाईआ। रहिण ना देवे अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कोई परदा ओहल, सच दवारा इक्को इक दए सुहाईआ। जिस दा लेखा समझ ना सके कोई मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत रौल, थितां वारां विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी सच नाम वजाए अगम्मा इक ढोल, साचा डंका राउ रंकां दीन दुनी जगत दए सुणाईआ। जन भगत

सुहेले कर कर मेले परमात्म हो के आत्म वसे कोल, अन्तर अन्तर बज़र कपाटी परदा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत देवे वड्याई उपर धौल, तन माटी ख़ाकी लेखा अन्त रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १० भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हज़ूरा सिँघ दे गृह पिण्ड गोराया ज़िला जलन्धर ✪

सतिजुग साचे, तेरा दवारा होए रमनीक, राम रमिआ हर घट नज़री आईआ। गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख बणे ना कोए शरीक, भगत सन्त शरक्त विच कदे ना आईआ। साचे नाम दी प्रगट होवे इक तौफीक, तोहफ़ा गुण निधान देवे थाउँ थाँईंआ। सति धर्म दी पूरी होवे आस उम्मीद, तृष्ना जुग जन्म दी पूर कराईआ। साची सिख्या चार वरन अठारां बरन देवे इक नसीहत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। आत्म परमात्म परदा लाह के दस्से हक असलीअत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला दए मिलाईआ। नाम खुमारी अंदर खुशी रखे सदा तबीअत, मन चंचल चले ना कोए चतुराईआ। सच चरण कँवल दी दस्से इक अहिमीअत, हाज़र हज़ूर बेनज़ीर आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी सतिजुग तेरा सति धर्म दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी होवे इक ताअरीफ़, इष्टी दृष्टी कायनात इक्को ढोला गाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां ऊँचां नीचां राउ रंकां देवे हक तरतीब, तरां तरां दीन दुनी लए समझाईआ। दूर दुराडा शाह सुल्ताना श्री भगवाना दिसे नज़दीक, नेरन नेरा हो के आपणा परदा दए चुकाईआ। साचे हुक्म दी करे इक तमहीद, तमअ तृष्ना कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी कर के गए ताकीद, रागां नादां वेदां ढोलयां विच गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा मार्ग दए उपजाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम उपजे इक निरँकार, निरवैर हो के सब नूं दए जणाईआ। आत्म परमात्म होवे सच प्यार, प्रेम प्रीती काया मन्दिर अंदर दए वखाईआ। जगत वासना मेट कूड़ कुड़यार, सच सुच नाता दए जुड़ाईआ। घर ठाकर स्वामी करता मिले आण, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा सचखण्ड निवासी सुणाए इक फ़रमान, फुरनयां तों बाहर आपणा मंत्र दए जणाईआ। जिस नाल चार वरन अठारां बरन होवे कल्याण, कलमा कायनात इक्को इक सिखाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म करे आप पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ। साची करनी धुर दी धूढ़ दे इश्नान, आशा मनशा आपणे नाल प्रनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दे के गए ब्यान, वसीअत

११२८
१६

विच लेखा लोकमात लिखाईआ। सो करनी दा करता खेल करे श्री भगवान, जन भगत सुहेले आप उठाईआ। दयावान दातार हो के देवे दान, वस्त अमोलक अगम्मी घर घर झोली पाईआ। सतिजुग साचे, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण होवे आप मेहरवान, मुहब्बत दा मालक महबूब आपणी दया कमाईआ। साचे मार्ग चलणा होवे आसान, असल दा असूल दए समझाईआ। मनुआ झगड़ा ना रहे शैतान, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। मूर्ख बुद्धी ना रहे अंजाण, सुघड़ सुचज्जे दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे के धुर दा दान, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा रस्ता दए समझाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम होवे प्रगट, प्रकृती सब दी वेख वखाईआ। डंका वजावे लख चुरासी जीव जंत हर घट, सोई सुरती रहिण कोए ना पाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती जगत वासना मेटे फट्ट, पाटा चीथड़ तन कपड़ दए बदलाईआ। नाम निधान श्री भगवान शब्द अगम्मी मारे सट्ट, जगत सिट्टे दा लेखा दए मुकाईआ। कर प्रकाश तत अठ्ठ, अन्ध अन्धेर सञ्झ सवेर इक्को रंग रंगाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, समें विच्चों समां दए बदलाईआ। जन भगतां दे आपणी अक्ख, अक्खरां
११२६ तों परे आपणा सत्थर दए वखाईआ। जिस गृह स्वामी सज्जण मीत मुरारा रिहा वस, सुहेला साहिब सोभा पाईआ। सो ११२६
१६ गृह मन्दिर देवे दरस, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, १६
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा मार्ग लोकमात लावे वत, वतन तेरा धरनी धरत धवल दए वखाईआ।

✪ १० सावण शहिनशाही सम्मत २ लाल सिँघ दे गृह पिण्ड डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✪

सतिजुग साचे, पुरख अकाल देवे दलासा, दीन दयाल दयानिध ठाकर आपणी दया कमाईआ। अबिनाशी करता पुरख अकाल वेखणहारा आदि जुगादि तमाशा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सुरती शब्दी पावे रासा, गोपी काहन श्री भगवान आपणी कार कमाईआ। साचा नाम गुण निधान लोकमात खोले खुलासा, ख़ालक ख़लक मख़लूक वाहद कलमा इक्को दए जणाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाशा, चार कुण्ट दहि दिशा नव सत्त इक्को इक करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा सच चन्द करे रुशनाईआ। नाम निधान श्री भगवान घट निवासी पुरख अबिनाशी वजाए आपणा नादा, धुन अगम्म सुन्न समाध विच्चों पार लँघाईआ। दीन दुनी जगत जागरत जोत बिन वरन गोत बदल देवे समाजा, मार्ग

राह पन्ध सूरा सरबंग इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद सिर रखे दे कर हाथा, समरथ स्वामी अन्तरजामी मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा चले इक रवाज, रवादार रहिण कोए ना पाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हर घट सुणाए अगम्मी आवाज़, जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अंजील कुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना पाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के काया काअबे खोल्हे आप राज़, राजक रिज़क रहीम बेइलम आलम दए बणाईआ। सच दवारे साचा कलमा हक हकीकी दस्से इक नमाज़, नवाज़श विच वेखे जगत लोकाईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी नाम निधाना देवे धुर दी दाद, दौलत माल ख़ज़ीना इक्को इक वखाईआ। जन भगतां निज नेत्र साचे लोचन खोल्हे जाग, आलस निंद्रा कूड़ी क्रिया रहिण कोए ना पाईआ। हँस बणाए मूर्ख मुग्ध अंजाणे काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग इक्को नाम चुगाईआ। कलयुग कुड़ी क्रिया मन वासना कर बरबाद, धरत धवल धौल विच्चों बाहर कढाहीआ। सतिजुग तेरा साचा खेड़ा कर आबाद, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले गुरमुख गुर गुर आपणे रंग रंगाईआ। रूह बुत्त तन माटी ख़ाकी वजूद पवित कर पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। दो जहान श्री भगवान सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करे इन्साफ़, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा देवत सुर गुर अवतार पैगम्बर सिर सके ना कोए उठाईआ। साचे सन्तां सरन सरनाई जन्म कर्म दा लहिणा देणा करे मुआफ़, मुश्कल विच्चों मुश्कल हल्ल दए कराईआ। सति धर्म दा होवे मात प्रताप, प्रतीनिध परमात्मा इक्को सब नूं नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी दा सांझा होवे जाप, जगजीवण दाता देवे माण वड्याईआ। कूड़ कुड़यार रैण अन्ध अन्धेर रहे ना रात, रुतड़ी रुत अबिनाशी अचुत आपणे नाल महकाईआ। सतिजुग साची सुहञ्जणी होए प्रभात, प्रभू मिल के सारे खुशी लैण मनाईआ। झगड़ा रहे ना भरम भरांत, गढ़ हँकारी दए तुड़ाईआ। जन भगतां पढ़नी पए ना कोए किताब, कुतबख़ान्यां दा लेखा दए मुकाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के काया माटी साची हाटी वजाए रबाब, सुर ताल बाहरों समझ कोए ना पाईआ। मीत मुरारा सज्जण सुहेला पुरख अकाला दीन दयाला बणे आप अहिबाब, अहिमक रहिण कोए ना पाईआ। साचा सजदा करना दस्से आदाब, नमस्ते नमो नमो इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा साचे नाम दा दे स्वाद, अनरस फीके सारे दए बणाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। इक्को रंग रंगया जाए गुरू चेला, चेला गुरू समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आत्म परमात्म बण के सज्जण सुहेला, धुर दा संगी आपणा संग निभाईआ। धाम अनडिठड़ा दस्स नवेला, सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को दए वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे सति सति इक दृढ़ाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे इक उपदेश, उपमा अबिनाशी करते नज़री आईआ। हुक्म देवे नर नरेश, नरां दा नरायण दया कमाईआ। दो जहानां सुणे इक संदेश, सोया रहिण कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चले कोए ना पेश, पेशवा अक्ख ना कोए उठाईआ। अन्तिम लहिणा देणा होवे नाल दस्मेश, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। जिस ने पुरख अकाल दी दस्सी साची टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी इक्को ख़ाक रमाईआ। भविख्तां विच लिख के सच संदेश, सुनेहड़ा जगत गया सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर धारे भेस, भेखाधारी आपणा वेस वटाईआ। जिस दा लहिणा देणा दो जहान होवे देस परदेस, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल भज्जे वाहो दाहीआ। नाम सुनेहड़ा दे के एक, एकँकार परदा दए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त धुर दरगाही दस्स के टेक, टकयां वाले गुरुआं तों खैहड़ा दए छुडाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख करे रुशनाईआ। वड्याई चले ना कोए सहँसर मुख शेष, साह साह सीस जगदीश झुकाईआ। साचे भगतां धुर दयां सन्तां कलयुग अन्त श्री भगवन्त अन्तर खोल्ह के आपणा भेत, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। दो जहानां श्री भगवाना निरगुण सरगुण बण के खेवट खेट, सच मलाह बेपरवाह इक्को एक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे तेरा मालक होवे इक नरेश, नर निरँकार नज़री आईआ। सतिजुग साचे साचा नाम होवे बुलंद, जिस दी बुलंदी समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाल आत्म परमात्म दस्स के आपणा छन्द, संसे सारे दए चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भरमां ढाह के कंध, कलमा कायनात नाल इतफ़ाक दीन दुनी दए समझाईआ। लेखा जाण के सूरया चन्द, चौदां तबक चौदां लोक सच सलोक इक्को नाम पढ़ाईआ। जगत नेत्रहीण रहे कोए ना अन्ध, ज्ञान नेत्र इक्को नूर डगमगाईआ। जन भगतां साचे सन्तां मंज़ल मुका के पिछला पन्ध, सच दवारे आप बहाईआ। जित्थे मन वासना बुद्धी झगड़ा रहे कोई ना जग, खण्डा खड़ग तलवार हथ्थ ना कोए उठाईआ। निजानंद विच्चों बख़्श के परमानंद, सच प्रीती परम पुरख आत्म पमातम इक समझाईआ। ख़ुशी करा के बन्दगी वाला बन्द बन्द, बन्धन सारे दए तुड़ाईआ। भेव खुल्हा के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जन भगत सुहेला सतिगुर साचे घर पए जम्म, जननी दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ी तृष्ना रहे ना तम, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। झगड़ा रहे ना पवण स्वामी दम, साह साह ना कोए वड्याईआ। जिन्हां पुरख अकाल दीन दयाल मिल्या श्री भगवन, भागां दा लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग साचे साचा

नाम भण्डारा अगम्मी अबिनाशी करता देवे धन, धनाढ तैनूं दए बणाईआ। कर वसेरा बिन छप्पर छन्न, लोकमात शब्दी शब्द जन्म दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण जीव जन, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग साचे तेरे नाम दी होवे सिफ्त सलाह, सफा कूड़ मलेछ उठाईआ। सब नूं मन्नणा पए राम वाहिगुरू इक खुदा, गॉड कह के सारे शुकर मनाईआ। वरन बरन ना रहे कोई जुदा, जुज़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सृष्टी दा मार्ग करके सिध्धा, सिदक सबूरी सब दी झोली पाईआ। आपणे मिलण दी दस्स के अगम्मी बिधा, रस्ता इक्को इक दए वखाईआ। सतिजुग साचे पुरख अकाल दीन दयाल बण के पिता, पतिपरमेश्र देवे माण वड्याईआ। साचे भगतां करना हिता, हितकारी हो के आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो भविख्त लेखा लिखा, लहिणा देणा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त श्री भगवन्त करवट लै बदल आपणी पिठ्ठा, सतिजुग साचे सनमुख हो के समें नाल समां दए बदलाईआ।

✪ ११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह नवां पिण्ड ज़िला जलन्धर ✪

११३२
१६

सतिजुग साचे तेरी धार लोकमात आवे उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वज्जे नाम वधाईआ। सृष्ट सबाई दीन दुनी करे शुकर, खुशीआं विच गहर गम्भीर ढोले गाईआ। जन भगत सुहेले प्रभ दे प्रगट होवण साचे पुत्तर, पतिपरमेश्वर देवे आप माण वड्याईआ। सन्त सुहेला लुक्कया रहे ना कोई किसे नुक्कर, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। जीव जंत भुक्खा रहे ना कोई टुक्कर, आसा तृष्ना मनसा सब दी पूर कराईआ। जगत वासना विच कौल इकरार कोई ना जाए मुक्कर, हर हिरदे प्रभ आपणा नाम रखाईआ। भाउ रहे ना कोई दुतीआ दुत्तर, एका रंग रंगे सृष्ट सबाईआ। गुरमुखां गुरसिखां साहिब स्वामी चुक्के आपणे अगम्मे कुच्छड़, धुर दी गोदी आप टिकाईआ। ज़ात पात दीन मज़्ब कोई ना रहे भिट्टड़, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। प्रभ विछड़ जगत दुहागण नार रहे कोई ना छुट्टड़, कन्त मिलावा घर स्वामी होवे सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे लोकमात दए वड्याईआ। सतिजुग साचे तेरा प्रकाश होवे नूर इलाही (रब्बी), इलाही कलमा मिले इक वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावण सभी, शाह पातशाह शहिनशाह हुक्म इक मनाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया धुर दे नाम नाल जाए दब्बी, पंज विकारा मन हँकारा सिर ना कोए उठाईआ। सृष्टी दृष्टी साचे नाम अंदर जाए बद्धी, बन्दना डण्डौत सजदा इक्को दए समझाईआ। पुरख

अकाल दीन दयाल सति धर्म दी चलावे इक्को गद्दी, दीन मज़्ब ज़ात पात लेखा दए मुकाईआ। मानव ज़ाती कोई ना खावे हड्डी, रस आत्म परमात्म दए चखाईआ। साची धार हक प्रीती प्रभ दे नाल जाए लग्गी, जगत बग़ावत मेटे थाउँ थाँईंआ। त्रैगुण माया अग्नी तत मूल रहे ना लग्गी, सांत सति दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सति सति उपजाईआ। सतिजुग साचे तेरा सच धर्म होवे प्रकाश, परम पुरख परमात्म दए माण वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्ध अन्धेर हो जाए विनास, चार वरन अठारां बरन होए रुशनाईआ। किरपा करे गहर गम्भीर सर्ब गुणतास, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां सच धर्म दी पवे रास, निरगुण सरगुण गोपी काहन नज़री आईआ। हर हिरदे अंदर परम पुरख दा इक्को होवे जाप, जगजीवण दाता साची सिख्या करे पढ़ाईआ। पिता पूत करे कोई ना घात, मात पित ना कोए लड़ाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़्ब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा सति धर्म इक्को चन्द नज़री आईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दिसण इक जमात, इक्को नाम पट्टी पढ़ के प्रभ दा शुकर मनाईआ। सब दा सांझा इष्ट लिख्या जाए नाल कलम दवात, कायनात हुक्म इक्को इक दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे, देवे सच्ची दात, नाम पदार्थ वस्त इक्को इक वरताईआ। सतिजुग साचे, साचा मिले नाम अनमुल्ल, करता कीमत कोए ना लाईआ। भाग लग्गे धरनी धरत धवल साची कुल, कुल मालक ख़ालक प्रितपालक देवे माण वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जगत वासना जाए कोई ना भुल्ल, अभुल आपणा मार्ग इक्को दए वखाईआ। कूड़ी क्रिया मानव ज़ाती मूल ना जाए रुल, बुध बिबेक सतिजुग टेक रंग एका दए रंगाईआ। सच सुहञ्जणी रुत्त मौले ख़ुशी होवे पत्त फुल्ल, फुलवाड़ी साची सच दए लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे सति सतिवाद बख़्शे साचे गुण, गुणवन्ता मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम प्रभ देवे लोकमात अन्तिम जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई रसना जिह्वा गाए सब, सफा कूड़ दए उठाईआ। बिन काअब्यों काया मन्दिर अंदर कराए हज्ज, हज़रत हो के हज़ूर मिले चाँई चाँईंआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, कूड़ दवारे पैंडा दए मुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा हुक्में अंदर करे परबंध, लख चुरासी जीव जंत सिर सके ना कोए उठाईआ। भगत सुहेला नेत्र लोचण नैण रहे कोई ना अन्ध, अज्ञान अन्धेरा अंदरों दए कढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के पन्ध, सतिजुग साचे माण दिवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। दीन दयाल ठाकर हो बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आपणी आप कमाईआ। साचे नाम दा दे अनन्द, परमानंद

११३३ १६

विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे, कलयुग कूड़ी क्रिया दूई द्वैती ढाह के कंध, तेरा मार्ग लोकमात दए लगाईआ। आ वणजारन सच दवार, सचखण्ड दवारा इक्को नज़री आईआ। जिस गृह वस्या आप निराकार निरँकार, निरवैर निराधार सोभा पाईआ। जागरत जोत जगे अगम्म अपार, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। मुकामे हक बैठा परवरदिगार, लाशरीक दरगाह साची डेरा लाईआ। जिस दवारे मंगदे गुरू अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भिखार, दर ठांडे अलख जगाईआ। सो दाता दानी देवणहार, आदि जुगादि वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल करदा रिहा अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जगत वणजारन वेखे विच संसार, लख चुरासी सृष्टी दृष्टी अंदर फोल फुलाईआ। जिन्हां सखियां शौह मिलण दी अंदर वज्जे सतार, सोई सुरती आप उठाईआ। अनहद शब्द दए सच्ची धुन्कार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। बेख़बरां कर के ख़बरदार, आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। वस्त अमोलक काया गोलक साची झोली देवे डार, करता कीमत ना कोए लगाईआ। जो वणजारन बण के करे हरि का नाम वपार, एथे ओथे घाटा रहे ना राईआ। लेखा चुकावे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत दा खैहड़ा दए छुडाईआ। वड़ना पए ना डूँग्घी ग़ार, जल मीन दा लेखा रहे ना राईआ। दर दर मंगणा ना पए बण के दुख्यार, दर्दीआं दा दर्द लए वण्डाईआ। जिस सिख्या विच इच्छया पूरी करे करतार, कुदरत दा मालक आपणी दया कमाईआ। सो नानक निरगुण सरगुण कर के गया विहार, बिवहारी हो के आपणी खेल खिलाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां दे के इक हुलार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वणजारन लोकमात वेख वखाईआ। उठ वणजारन बण मंगती, सतिगुर शब्द दए समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमें हंगती, हँ ब्रह्म मिले वड्याईआ। जेहड़ी तुक नानक निरगुण सरगुण हो के पढ़ी पंगती, पान्धआं दी लोड़ रही ना राईआ। वेख खेल ओस प्रभ दे अनन्द दी, जिस अनन्द विच्चों चन्द सितारे गुरमुख लए प्रगटाईआ। एह वस्त अमोलक जन भगतां दे पसंद दी, दूजे हथ्थ कदे ना आईआ। जिन्हां दा तन मन काया चोली अंदर बाहर रंगदी, बिन ललारी आपणा रंग दए चढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहानां कन्त सुहागण हो के कन्त कन्तूहल नाल हंढदी, जगत रंडेपे दा लेखा दए मुकाईआ। एह धार ओस सूरे सरबंग दी, जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां विच लेखा रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सवाणी साचा मीता इक समझाईआ। बण वणजारे अगम्मे राम, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो शब्द अगम्मी मारे बाण, अणयाला

११३४ १६

तीर चलाईआ। सोई सुरती ना रहे अंञाण, नाम हुलारे विच उठाईआ। अमृत आत्म दे के पीण खाण, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। आत्म सेजा करे परवान, जित्थे पावे चूल दी लोड़ ना कोए रखाईआ। तेरे घर तेरे गृह तेरा दीपक जोत जगे महान, सतिगुर पूरा निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सो सवाणी धुर दी राणी हरि कन्त होवे परवान, जो हुक्मे अंदर चल के हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वणजारन नाम उधारन पैज स्वारन एका एक आप अख्वाईआ। वणजारन बण गुरमुख सखी, सखावत सतिगुर हथ्थ नज़री आईआ। आपणा कमलापती वेख ओस अक्खी, जिस नूं निज नेत्र कह के सारे रहे गाईआ। जिस दी यारी आदि जुगादि जुग चौकड़ी पक्की, याराना एथे ओथे दो जहान ना कदे तुड़ाईआ। जिस दा सिर ते हथ्थ आयां वा ना लग्गे तत्ती, अग्नी पोह ना सके राईआ। ओथे चलदी नहीं कोई मन मती, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी सच वणजारन तेरी आपे पत रिहा रखी, रखक हो के रच्छया करे थाउँ थाँईंआ। साची धार निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नानक दस्सी, जो जीव जंत
सब नूं कर के गया पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वणज इक्को
११३५ इक कराईआ। सच वणजारन कुछ लै मंग, मांगत इक्को दवारा वेख वखाईआ। मिले साहिब सूरा सरबंग, शाह पातशाह ११३५
१९ शहिनशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा नाम निधान वज्जे मृदंग, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दो जहान रिहा १९
उठाईआ। सदा सुहेला इक इकेला देवणहारा धुर दा संग, विछोड़े वाला जोड़ा आपणे नाल ना कदे रलाईआ। मेहरवान महबूब हो के मुहब्बत विच आसा मनसा पूरी करे उमंग, साची तृष्ना आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। वणजारन कहे मैं वजदा वेख्या वाजा, आवाज़ धुर दी रिहा सुणाईआ। सब दा मालक ग़रीब निवाजा, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। जिस दवारे सब नूं होणा पए मुहताजा, लोड़वंद जगत लोकाईआ। सो वणजारने तेरा पूरा करे काजा, कुदरत दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी रिवाजा, जन भगत सुहेले सन्त गुरमुख पार कराईआ। अंदरों कूड़ कुड़यार कढु के वाद विवादा, नाम रंगण दए रंगाईआ। बिस्मिल धार आपणे विच कर विस्मादा, परदा ओहला दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वणजारन वेख वखाईआ। सच वणजारने उठ बिन अक्खां कर ध्यान, साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर खेल कराईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा देवे इक ज्ञान, नाम निधान श्री भगवान झोली दए भराईआ। लेखा चुका के आवण जाण, लख चुरासी पैंडा मिटे जहान, नारी हरि जू कन्त लए पहचान, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। शब्द

अगम्मी चढ़ाए बबाण, लै के जाए ओस मकान, जित्थे सूरज चन्द करे ना कोए रुशनाईआ। इक स्वामी पुरख अकाला दीन दयाला धुर दा कन्त मिले आण, दूजे यारड़े दी लोड़ रहे ना राईआ। घर ठाकर स्वामी साहिब सुहेला करे परवान, परवानगी आपणा नाम दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच वणजारन सच दवारे वेखे चाँईं चाँईंआ। प्रेम वणजारन जे प्रेम करन दा चा, चाउ घनेरा दयां जणाईआ। इक्को कन्त लैणा हंढा, साची सेजा सोभा पाईआ। जो बिन सद्दयां मेहरवान हो के जावे आ, महबूब मालक नूर खुदाईआ। जिस नूं नानक गोबिन्द ल्या प्रना, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। ओस नाल नाता लओ जुड़ा, जिस दा जुड़या जोड़ ना कोए तुड़ाईआ। भावें कलमयां वाला कहो खुदा, भावें अल्ला राम वाहिगुरू नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वणजारन तेरा पल्लू दए फड़ाईआ। सच वणजारन उठ के नाता जोड़, सोयां रैण ना अन्त विहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी कर ना कोए कुरलाईआ। तेरा करे अन्धेरा दूर घोर, सच नूर इक रुशनाईआ। झगड़ा मुका के पंज चोर, दूतां कोलों लए छुडाईआ। शब्दी सतिगुर लेखा मुका के तोर मोर, एका रंग दए रंगाईआ। तूं सुहञ्जणी बांकी जोबनवन्ती नज़री आवें छोहर, जिस दा शौहर ख़ावंद कन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। ओस प्रभू तों बिना दूजा नहीं कोई होर, अवर संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वणजारन तेरा नाता पुरख बिधाता शब्दी धार लवे जोड़, जगत वासना संग ना कोए रखाईआ।

११ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ लक्ष्मण सिंघ दे गृह पिण्ड धनौरी ज़िला अम्बाला

सतिजुग साचे, किरपा करे श्री भगवाना, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल चार कुण्ट दहि दिशा देवे इक ज्ञाना, आत्म परमात्म बोध अगाध करे पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी दिसे इक्को हक निशाना, एका दूआ दूआ एका इक्को रंग समाईआ। आत्म परमात्म जीव जंत साध सन्त नज़री आए धुर दा कान्हा, घनईआ नईआ इक्को दए वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी खेल करे धुर दा रामा, रमईआ हो के सईआ हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोत सरूपी जागरत जोत पहरे आपणा बाणा, खाणी बाणी चौथे जुग वेखे चाँईं चाँईंआ। घट निवासी साहो भूप प्रगट हो के धुर दा राणा, राम रहीम करीम कुदरत दा मालक ख़लक दा ख़ालक परवरदिगार जलवा नूर करे रुशनाईआ। चार युग दा झगड़ा मेटे जो दीन मज़्ब होया तकसीम, तरमीम कर के अज़ीम आपणा घर वखाईआ। पुरख अकाल दीन

११३६
१६

दयाल सतिजुग साचे तेरे विच रखे ना कोए मनीम, धुर फ़रमाना इक्को इक आपणा हुक्म निरगुण सरगुण दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग बदलणा आपणा खेल दस्से कदीम, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे, साचा हुक्म होवे फ़रमान, दो जहानां ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण शरमाण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल सिर ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदयां विच करन प्रणाम, नमो नमो कह के सीस झुकाईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी गुरू होवे बलवान, योद्धा सूरबीर इक्को इक नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा धर्म झुलाए हक निशान, हकीकत दा मालक आपणा परदा दए उठाईआ। सति सच करे परवान, कूड़ कुड़यार लेखा दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा मार्ग इक वखाईआ। सतिजुग साचे साचा नाम होवे एकँकार, इक इकल्ला दया कमाईआ। ढोला गीत कलमा गाए सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी अंदर वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे सच प्यार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग दए रंगाईआ। जिस दा लेखा चार युग कलम शाही लेख ना लिखणहार, कातब मिले ना कोए वड्याईआ। सो खेले खेल
११३७ अगम्म अपार, अगम्म अथाह आपणा हुक्म वरताईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पावणहारा धुर दी सार, जोती जोत सरूप हरि, ११३७
१६ आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी सतिजुग साचे सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग १६
साचे तेरा होवे लोकमात माण, अभिमान कूड़ रहिण ना पाईआ। धुर दा कलमा दस्स इक कलाम, कोझे कमले लए तराईआ। सदी चौधवीं दा प्रगट हो के इक अमाम, आलमां दा आलम लेखा जाणे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां मुश्कल कर आसान, मसला हक दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निशान, माया ममता मोह विकार रहिण ना पाईआ। साचे भगतां दे के आपणा आप ज्ञान, ध्यान इक्को इक वखाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। सन्त सुहेला गुरमुख गुरसिख चरण कँवल कर परवान, परम पुरख प्रभ देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचे साहिब सतिगुर सति वस्त देवे दान, दाता हो के दातार आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकर्मी हो के करे खेल महान, मिहबान बीदो बी खैर या अलाह जलवागर नूर इलाहीआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड हरबंस पुरा ✪

सति धर्म कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया कर गरक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोत सरूप चार कुण्ट दहि दिशा वेख आपणी धरत, नव सत्त परदा ओहला आप उठाईआ। अन्तरजामी धुर स्वामी सतिगुर शब्द आ परत, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर हज़रतां पूरी कर शर्त, शरअ विच्चों शरीअत दे बदलाईआ। दीन दुनी आपणा खेल वेख फर्श अर्श, वाली दो जहान श्री भगवान निरगुण हो के सरगुण खोज खुजाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, नाम डंका राउ रंका चार वरन अठारां बरन दे सुणाईआ। दीनां अनाथां दीन दयाल वण्ड दर्द, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणे गल लगाईआ। दीन मज़्हब दी छुरी हलाल किसे ना करे करद, कलयुग कतलगाह विच्चों जीव जंत बाहर कढाहीआ। अन्त अख़ीर दर दरवेश सति धर्म तेरे अगे करे अरज़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर तेरे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ कलयुग वेख अन्त अख़ीर, आख़र ध्यान लगाईआ। मंज़ल हक चोटी चढ़े ना कोए अख़ीर, मुरीद मुर्शद मिल के ख़ुशी ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया जगत वासना मन विकारी घत्ती जाए वहीर, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी जो दस्स के गई तदबीर, मार्ग पन्थ चलण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तर दीन दुनी दी बदल दिती ज़मीर, अन्तर ज़ामन हो के धुर दा राम मेल ना कोए मिलाईआ। जन भगत उधारना तेरा लहिणा देणा आदि जुगादी कदीम, कुदरत दे मालक ख़लक दे ख़ालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। साचे हुक्म दी धुर फ़रमाने कर तनज़ीम, तालीम इक्को दे पढ़ाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान रहे ना कोए तकसीम, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म एका नूर सब नूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे गिरवर गिरधारे गहर गम्भीर बेनज़ीर इक्को आस रखाईआ। सति धर्म कहे मेरे प्रभ माधव रंग रंगीले, रंगत आपणा नाम दे चढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरे मिलण दे फ़ेल होए सारे वसीले, फड़ बाहों तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। दीन मज़्हब वक्ख वक्ख हँकारी बण गए कबीले, काया काअबे हक महबूब मिल के तेरा दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या फ़र्शे ख़ाकी ज़मीने, जामन हो के ज़मीर अंदरों ना कोए बदलाईआ। हुक्में अंदर शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कर तरमीमे, तरमीम अंदर कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। जन भगतां सांतक सति ठंड वरता सीने, सीना बसीना निरअक्खर धार

आपणी धुर दी कर पढ़ाईआ। मन वासना जगत जीव बुद्धी रहिण ना कमीने, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूड़ी क्रिया अंदरों बाहर कढाहीआ। झगड़ा मुके पंज तत माया त्रैगुण तीने, अठ्ठ नौ दस इक्को तेरे नाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे सति सति इक्को आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ लोकमात निरगुण धार तक्क, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मानव ज़ाती कोई ना जाणे हकीकत हक, असलीअत विच्चों असल ना कोए दृढ़ाईआ। मन मनुआ सब नूं पा के शक, झगड़ा घर घर रिहा कराईआ। तेरे मिलण दी निज खुल्ही किसे ना अक्ख, ज्ञान नेत्र परदा ना कोए उठाईआ। तेरी आत्म तैथों हो के वक्ख, माया ममता मोह विकार अंदर बैठी मुख छुपाईआ। किसे दवारयों मिले ना तेरा नाम सच, वणजारा धुर दा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचे प्रेम दी वस्त दे वथ, अमोलक अमुल अतुल आपणे घर तों झोली पाईआ। तूं दीन दयाल पुरख समरथ, दयानिध ठाकर तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्तिम खेड़ा कर भठ्ठ, माया ममता मोह अग्नी विच जलाईआ। सतिजुग साचा राह चार कुण्ट दहि दिशा इक्को दस्स, आत्म परमात्म मिल के वज्जे हक वधाईआ। निझर झिरना अमृत अगम्मी दे रस, जिस नूं रसना रस ना चक्खे राईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म कर आपणे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चलाए रथ, गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर ईश जीव जगदीश जगदीशर आपणी दया कमाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं ज़िला अम्बाला ✪

सतिजुग कहे प्रभू भगत जगा मेरे चराग़, चार कुण्ट चरागाहां विच होए रुशनाईआ। साचे नाम दा उपजा इक राग, राग रागनी जिस नूं सीस निवाईआ। शब्द अगम्मी मार आवाज़, सोए सुत्ते लोकमात उठाईआ। प्रेम हकीकी बख्श वैराग, वैरी मित्र शत्रु इक्को नज़री आईआ। तेरी मुहब्बत विच होण विस्माद, विषयां वाला विशा देणा तजाईआ। जगत तृष्ना बुझा आग, सांतक सति दे वड्याईआ। दुरमति मैल धो दाग़, सन्त सुहेले पतित पुनीत लै बणाईआ। कूड़ बुद्धी रहे ना कोई काग, हँस गुरमुख नज़री आईआ। गुरसिख तेरा होवे उॅतम साध, सिदक सबूरी दे समझाईआ। मन वासना रहे ना कोए विवाद, विख अमृत दे बणाईआ। तेरा खेल सदा जुगादि आदि, मध आपणी कल वरताईआ। जगत वासना कर बरबाद,

आबाद आपणा नाम जणाईआ। झगड़ा रहे ना दूई फ़साद, एका रंग दे रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले लै वर, दर अन्त वार एका मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ भगतां दी वेख भगती, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तैनूं मालक मन्न के अर्शी, प्रीतम इक्को रहे मनाईआ। साहिब स्वामी सहायता कर उपर धरती, धवल उपर देणी माण वड्याईआ। सार पा जन भगतां घर दी, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। जिस मन्दिर तेरी जोत होवे बलदी, नूरो नूर नूर कर रुशनाईआ। कला चले ना कोए कलयुग कल दी, अकल कलधारी आपणी कल दे वखाईआ। भावना रहे ना द्वैती सल दी, सलल हो के साहिब आपणा रंग रंगाईआ। धार वेख जल थल दी, महीअल आपणा परदा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां मिल के खुशी मनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां तोड़ पाबन्दी, जगत शरअ ना कोए वड्याईआ। साचे नाम दी दे सुगंधी, महक इक्को दे महकाईआ। कलयुग कूड़ी वासना अंदर रहे ना गंदी, क्रिया कर्म तों लैणा बचाईआ। साचे नाम दा ढोला दस्स छन्दी, शहिनशाह हो के आप समझाईआ। वस्त अमोलक दे अनमंगी, असुते अबिनाशी अचुत आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नेत्र अक्ख रहिण ना देणी अन्धी, अज्ञान अन्धेरा अंदरों देणा कढाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां बख्श चरण प्यार, प्यार विच्चों प्रीतम नज़री आईआ। जुग जन्म दे विछड़यां पैज संवार, स्वार्थ परमारथ आपणा नाम दे दृढ़ाईआ। सति सच दस्स जैकार, नाअरा निरँकारा इक्को इक गाईआ। धुर दरबार दी दस्स बहार, सुहञ्जणी रुत मौले बेपरवाहीआ। गुरमुख तेरी खिले गुलज़ार, गुलशन सोहणा नज़री आईआ। किरपा कर विच संसार, जगत सागर विच्चों पार कराईआ। पंज तत काया माटी कर उज्यार, काची गगरीआ होए रुशनाईआ। साचा मन्दिर तेरा दर दिसे दरबार, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा दे खुल्हाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बीते तेरा किसे ना पाया अन्त पारावार, बेअन्त कह के सारे सीस निवाईआ। कलयुग अन्त किरपा कर आप निरँकार, सच्ची सरकार दया कमाईआ। भगत सुहेले शब्दी धार लै तार, पार किनार आपणे लै लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन तेरे चरण कँवल करी निमस्कार, तिस निमख निमख ना कोए कटाईआ।

१२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं ज़िला अम्बाला

सति धर्म कहे प्रभ जन भगतां अंदर कर लो, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पैंडा दे मुकाईआ। पुरख अकाल दीन

११४० १६

दयाल सच स्वामी आपणी दस्स सो, सोई सुरत अकाल मूर्त आप जगाईआ। हँ ब्रह्म निरगुण धार आपे हो, होका दे के आलस निंद्रा दे गवाईआ। अमृत रस निझर धारा चो, बूँद स्वांती कमलापाती इक टपकाईआ। मन विकारा कूड़ कुड़यारा लै खोह, जगत तृष्ना झगड़ा दे चुकाईआ। पंच विकारा पोह ना सके गरोह, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख माणक मोती नाम धागे लै परो, पारब्रह्म ब्रह्म लड़ी आपणे नाल बंधाईआ। साचे सन्तां नाल होवे ना कोए धरोह, धू प्रहलाद रो के देण दुहाईआ। लख चुरासी जीव जंत लै जोह, काया माटी हाटी फोल फुलाईआ। गुरमुखां अंदर नाम अगम्मा बीज बो, बोहिथा हो के सतिगुर दे वड्याईआ। तेरा लेखा जाणे ना को, कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म हो के जा छोह, शाह पातशाह आपणा मेला लैणा मिलाईआ। माया ममता नालों कर निर्मोह, प्रेम प्रीती चरण कँवल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दवारे कोई ना जावो रो, हसदयां हस्ती आपणे विच मिलाईआ।

११४१ १६ ✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बीबी सुखजिंदर कौर दे गृह पिण्ड घड़ूआं ज़िला अम्बाला ✪ ११४१ १६

सति धर्म कहे प्रभ साचे भगतां अंदर ला नाम चोट, चोटी चढ़ के सुरती सवाधान कराईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढु खोट, निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। हउमें हंगता दूई द्वैती कट रोग, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दे समझाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते कर रुशनाईआ। मन बुद्धी दी लेखे ला सोच, समझ विच आपणी रमज़ दे रलाईआ। चरण कँवल प्रीती धुर दरगाह दी दे अगम्मी मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के साची दस्स खोज, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिरन दी लोड़ रहे ना राईआ। चिन्ता ग़म रहे ना हरख सोग, संसा कूड़ देणा मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे नाम दी दे साची चोग, चुग़ली निंदया विच्चों बाहर कढाहीआ। सदा सुहेला इक इकेला दे दरस अमोघ, अमिउं रस अमृत आपणा नाम चुआईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दस्स साचा जोग, जुगती धुर दी आप दृढ़ाईआ। तेरा नाम अनमोला सदा सदा अगाध बोध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अंदर तेरा दर्शन होवे रोज़, रोज़ा नमाज़ दी लोड़ रहे ना राईआ। कर्म कांड दा रहे कोई ना बोझ, सीस जगदीस आपणा हथ्थ देणा टिकाईआ। भेव अभेदा दस्सणा गोझ, परदा ओहला आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे शब्दी शब्द निराले चोज, चार कुण्ट दहि दिशा एका रंग दे वखाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड माणक पुर कल्लर ✪

सतिजुग साचा कहे किरपा कर प्रभू मेहरवान, सति धर्म दुआर एकँकार इक्को दे वखाईआ। शब्द संदेसा दे दो जहान, निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। तेरा हुक्म गृह गृह होवे परवान, परम पुरख परमात्म आत्म परदा दे उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कढु विच्चों जगत जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुरमति साची दे अगम्मी दान, चार वरन अठारां बरन इक्को मिले सरनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा नाम इक्को गाण, कलमा कायनात हक हकीकात दे पढ़ाईआ। सति धर्म चार कुण्ट दहि दिशा तेरा झुले इक निशान, राज राजान शाह सुल्तान सिर सके ना कोए उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख हरि भगत दर दवारे कर परवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, सतिजुग साचा आस रखाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ मेरे परम पुरख दीना बन्धन, गुण निधान तेरी वड वड्याईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट भीतर गृह दे अनंदन, परमानंद विच गुरमुख गुरसिख लै मिलाईआ। सच दुआर एकँकार निरगुण दस्स बन्दगी बन्दन, बन्दीख़ाना लख चुरासी जम की फाँसी दे तुड़ाईआ।
११४२ तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साचा ढोला गीत दस्स छन्दन, कलमा कायनात हक महबूब इक पढ़ाईआ। तन माटी ख़ाकी ११४२
१६ वजूद पंज तत चाढ़ आपणी रंगण, दुरमति मैल अंदरों बाहरों दे धवाईआ। सन्त सुहेला कोई ना होवे भागां मंदन, निरगुण १६
नूर जोत चन्द कर रुशनाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा नाम आवें वण्डण, दातार हो के वस्त अमोलक काया गोलक झोली पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दीन दुनी वेख विच वरभण्डन, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सतिजुग साचा तेरे दर दुआर भिखारी हो के झोली डाहीआ। सतिजुग कहे परम पुरख परमात्म आत्म पूर कर वाइदा, कौल इकरार आपणा तोड़ निभाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चार युग तेरा भविक्ख लिख के गए बाकायदा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी देवे जगत गवाहीआ। कूड़ी क्रिया कलयुग मातलोक विच्चों कर अलैहिदा, सतिजुग सच धरनी धरत धवल धौल दे टिकाईआ। शब्दी धार जोत निरँकार सच दुआर होया मुआहिदा, मेहरवान महबूब पूरब लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लख चुरासी आत्म अन्तर वड़ के तन माटी लै जाइज़ा, नाम खुमारी जगत सच नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचा कहे श्री भगवान मेरा पूरा कर दे इरादा, इबादत इक्को दे दृढ़ाईआ। सृष्ट सबाई दीन दुनी शब्दी गोबिन्द दस्स पिता पुरख अकाल वाहद दावादार इक्को घर घर दे जणाईआ। त्रैगुण माया पंज

तत विकार बुझा आगा, अमृत मेघ बूंद स्वांती निझर धार आप चुआईआ। धरती कहे पतित पापियां धो दाग़ा, पुनीत पवित दे कराईआ। शब्द अगम्मी धुन आत्मक बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द सुणा अनुरागा, अनहद नादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी नाद वजाईआ। तेरा खेल नित नवित पुरी लोअ आकाश पाताल ब्रह्म ब्रह्मादा, जीउ पिण्ड तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना जगत बदल दे समाजा, साचा मार्ग एकँकार इक्को इक दे समझाईआ। शाहो भूप वड सुल्तान दो जहान राजन राजा, हक मुकामे परवरदिगार सांझा यार इक्को नज़री आईआ। इक्को सीस जगदीस तेरे सीस सोहे ताजा, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी सृष्टी दृष्टी अंदर आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग जीव जंत हँस बणा फड़ फड़ कागा, सोहँ माणक मेती चोग इक्को नाम चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा साची ओट रखाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ अन्त मेट कूड़ कुड़यार, कलयुग धरनी धवल रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचे सति धर्म दे इखत्यार, इख़तलाफ़ पिछले दए गवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सुणावे इक जैकार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा ढोला गाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे प्यार, ऊँच नीच राउ रंक दीन मज़ूब ज़ात पात वण्ड ना कोए वण्डाईआ।
११४३ सचखण्ड दवारा सब दा दस्से सांझा घर बार, जित्थे आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, ११४३
१६ सच उजाला हरि गोपाला दे वखाईआ। तेरी महिमा आदि जुगादि अगम्म अपार, कथनी कथ सके कोए ना राईआ। सतिजुग १६
कहे प्रभू मैं ढह प्या तेरे दवार, दर ठांडे सीस निवाईआ। सति धर्म दी साची ला बहार, गुरमुख गुरसिख बूटे तेरे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर तेरा निरगुण सरगुण खेल अपार, नित नवित कर कर हित, भगत सुहेले बणा के मित, गुरमुख गुर गुर हरि सज्जण आपणी गोद उठाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माणक पुर कल्लर ✪

सतिजुग कहे प्रभ निरगुण जोत बख्श नूर, नव सत्त इक्को रंग रंगाईआ। समरथ स्वामी आदि जुगादि सदा भरपूर, बेपरवाह तेरी वड वड्याईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां बेनन्ती कर मन्ज़ूर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो तेरे अगे गए सुणाईआ। शब्द अगम्मी दो जहानां उपजा आपणी तूर, तुरत चार कुण्ट दिशा इक्को हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ममता लोकमात विच्चों कर दूर, नेरन नेरा हो के वेख वखाईआ। सति धर्म दा प्रगट कर इक असूल, नियम काइदा कानून धुर दा दे

जणाईआ। तेरे नाम दा इक्को होवे मज़मून, बहु विद्या दा लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दवारे सतिजुग साचा आसा इक रखाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ लोकमात वेख अगम्मी धार, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर माया ममता करे हाहाकार, लोभ विकार धीरज धीर ना कोए धराईआ। मन वासना मानव ज़ाती होई खुआर, ख़ालस तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले गाउँदे वारो वार, तेरे नाम दी वारता वारस हो के ना कोए समझाईआ। दीन दुनी होवे ज़ारो ज़ार, जगत नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अमृत रस निझर झिरना किसे मिले ना ठंडी ठार, बूंद स्वांती कमलापाती नाभी कँवल ना कोए चुआईआ। दीआ बाती कमलापाती कायां मन्दिर अंदर होए ना कोए उज्यार, कूड़ अन्धेरा साढे तिन्न हथ्थ ना कोए मिटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गए हार, कलम शाही काग़ज़ चले ना कोए चतुराईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल दो जहान श्री भगवान पावे कोए ना सार, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी किरपा धार, परवरदिगार सांझे यार वाहद तेरी आसा इक रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन दीन मज़्ह़ब ज़ात पात ऊँच नीच दे इक अधार, शरअ शरीअत झगड़ा रहे ना राईआ। कुदरत दे कादर करनी दे करते परम पुरख करतार, निहकर्मी हो के आपणा कर्म कमाईआ। वस्त अमोलक साचा नाम बखशिश कर अपर अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तेरा करदे गए इज़हार, ढोले सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कढ्ढ बाहर, सतिजुग सच्चा सच धर्म धरनी धवल उपर निरवैर हो के देणा टिकाईआ।

✪ १२ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ वीर सिँघ दे गृह पिण्ड बठलाणा ✪

सतिजुग साची खेल वेख अकल कल दी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता मोह विकार अग्नी बलदी, तत्व तत रही जलाईआ। कूड़ी क्रिया खेल अछल अछल्ल दी, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। किसे सार ना आई घड़ी पल दी, भेव अभेदा परदा ओहला सके ना कोए उठाईआ। धाड़ वेख पंज विकारे दल दी, दलिद्री दिसे जगत लोकाईआ। अन्त जवानी जाए ढलदी, बुढेपा अख़ीरी नज़री आईआ। धार चले पुरख अकाल प्रबल दी, पारब्रह्म पति परमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल दी, टिल्ले पर्बत

समुंद सागर खोजे थाउं थाँईंआ। हुक्मे वाली तदबीर तकदीर कोलों कदे ना टल्दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। सतिजुग साचे बिन अक्खां वेख कलयुग कूड़ी क्रिया काती, कतलगाह बणी लोकाईआ। सच प्रकाश दिसे ना विच अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना साथी, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोए निभाईआ। जगत वासना मंज़ल दूर दिसे घाटी, हरि के पौड़े चढ़ के प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। अक्खरां वाली संदेश्यां वाली सिफ्तां वाली पढ़दे पाती, पतित पावन मिल के आपणा आप ना कोए बदलाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी दीन दयाला आपणा खेल करे बहु भाती, भावना इष्टी दृष्टी सृष्टी वेखे थाउं थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा सच दवारा, सदा सुहावणा इक्को इक वखाईआ। सतिजुग साचे कलयुग कूड़ा वेख जगत अन्धेरा, अन्त अख़ीरी दयां जणाईआ। किसे ना दिसे सञ्झ सवेरा, सच प्रभाती रूप ना कोए बदलाईआ। मन वासना दीन दुनी प्या झेड़ा, झगड़े विच्चों पल्लू ना कोए छुडाईआ। धरनी धरत धवल उजड़न वाला खेड़ा, बेड़ा बन्नू पार ना कोए लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे अंदर मार के गए फेरा, नाम संदेसा नर नरेशा इक जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अकाल अगम्मी धार करे आपणी मेहरा, महबूब महव परवरदिगार सांझा यार जलवागर नूर खुदाईआ। लेखा जाणे चार कुण्ट गुरू चेला, वक्त सुहेला दुहेला सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। सतिजुग साचे कलयुग कूड़ कुड़यारी वेख अग्नी, आज्ञा विच दिसे ना कोए लोकाईआ। मन वासना हलकाई होई बदनी, ज़मीर तामीर ना कोए कराईआ। जगत ख़ाहिश होई पग़ली, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। किसे सार ना आई अगली, पढ़ पढ़ थक्की बुद्धी दए दुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करनी दा करता लेखा जाणे सृष्टी सगली, कायनात कलमयां वाली वेख वखाईआ। धुर दरगाही बण के सचखण्ड निवासी अदली, इन्साफ़ इक्को इक कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सतिजुग तेरे नाल करे बदली, बदी दा बदला नेकी विच चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल करे बहु रंगली, रंग रंगीला मोहण माधव आपणी कार कमाईआ।

११४५
१६

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जेठा सिँघ दे गृह पिण्ड बठलाणा ✪

सतिजुग साचे तेरा होवे वक्त सुहावणा, सोभावन्त श्री भगवान दए वड्याईआ। सृष्ट सबाई एका एका नाम ध्यावणा, अक्खरां वाली वण्ड ना कोए वण्डाईआ। सोहला ढोला सच्चा धुर दा गावणा, सिफ्तां नाल सिफ्त सालाहीआ। कन्त सुहागी पतिपरमेश्वर इक्को रावणा, दूजा अंग ना लागे राईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इष्ट सब ने इक मनावणा, चार कुण्ट दहि दिशा हरि जगदीश सीस झुकाईआ। सच सरोवर धुर दे निरगुण सरगुण नहावणा, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी आत्म सेजा सच बहावणा, दूसर धाम ना कोए वड्याईआ। काया माटी अंदर गृह भीतर दीपक इक जगावणा, निरगुण नूर जोत होए रुशनाईआ। शब्दी सतिगुर आत्म पकड़े दामना, सुरत सवाणी आपणी गंढु पवाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना माया ममता मोह चुकावणा, चारे खाणी बख्शे इक सरनाईआ। सति धर्म सच्चा मार्ग सति सतिवादी सति पुरख आप चलावणा, चौथे युग दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सति साची कार कमावणा। सतिजुग साचे प्रभ साची कार कमावेगा। सो पुरख निरँजण मेहरवान महबूब आपणा
११४६ रंग रंगावेगा। हरि पुरख निरँजण जगत कूड़ी क्रिया कट हदूद, दर साचा इक सुहावेगा। एकँकार आपणा अर्श तों उपर ११४६
१६ दस्स अरूज, फर्श उपर आपणा हुक्म मनावेगा। आदि निरँजण मंज़ल हक दस्स मकसूद, मुफ़लिस आपणे घर बहावेगा। १६
अबिनाशी करता हर घट हो मौजूद, सृष्टी दृष्टी आप बदलावेगा। श्री भगवान झगड़ा मुका के चारे कूट, दहि दिशा हुक्म वरतावेगा। पारब्रह्म आपणी सुहाए रुत्त, रुतड़ी आपणे रंग रंगावेगा। ब्रह्म बणा के आपणा सुत, कूड़ अपराध डेरा ढाहवेगा। जन भगत सुहेले लोकमात विच्चों चुक्क, धर्म दी गोदी इक टिकावेगा। उज्जल करे मुख, दुरमति मैल धवावेगा। घर ठांडा दे के सुख, सुखसागर विच समावेगा। जगत तृष्ना मेट के दुःख, जन्म जन्म दा रोग मिटावेगा। मात गर्भ होण ना देवे उलटा रुक्ख, लख चुरासी जम दी फाँसी आप कटावेगा। निरगुण धारों निरवैर निरँकार आपे उठ, दो जहानां वेख वखावेगा। गुरमुखां उपर तुठ, मेहर नज़र इक उठावेगा। नाम भण्डार दे अतुट्ट अमृत मेघ बरसावेगा। जाम अगम्मी प्या के घुट, नाम खुमारी इक चढ़ावेगा। दूई द्वैती अंदरों कढ्ढे फुट, सच प्रीती इक समझावेगा। लेखा जाण मानस मानुक्ख, मानव आपणे रंग रंगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा साचा राह चलावेगा। सतिजुग साचे तेरा साचा राह चलेगा। पुरख अबिनाशी शब्द सुनेहड़ा इक्को घल्लेगा। सच सिँघासण आत्म परमात्म सुहञ्जणी सेजा इक्को मल्लेगा। करे खेल पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां निरगुण धार जोती रलेगा।

लख चुरासी अंदर कर के वासन, खेल अगम्मी आपणी आपे करेगा। निरगुण नूर जोत कर प्रकाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे सच दुआर इक्को मल्लेगा। सच दवारा धर्म सुहावेगा। पुरख अबिनाशी दया कमावेगा। घट निवासी वेख वखावेगा। जोत प्रकाशी नूर चमकावेगा। शब्द अनादी नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख वखावेगा। विस्मादी खेल करावेगा। धुर दा रागी आपणा राग अलावेगा। जन भगत सुहेले कर वडभागी, भाग हिस्सा ओनां झोली पावेगा। सृष्टी सोई जाए जागी, जागरत जोत इक चमकावेगा। दुरमति मैल रहे ना दाग़ी, दग़िआं दे विच्चों बाहर कढावेगा। झगड़ा रहे ना किसे समाजी, समाज धर्म दा इक बणावेगा। अरबां दी रहे ना कोए आबादी, भगत सुहेले गुरमुख सन्त बहु थोड़े संग रखावेगा। जिस दा खेल आदि जुगादी, कलयुग जुग अन्त उलटावेगा। दीन दुनी दी कर बरबादी, कूड़ी क्रिया जगत गवावेगा। जन भगतां आत्म परमात्म कर के सच्ची शादी, शादिआने घर घर आप वजावेगा। करे खेल वड बहु स्वांगी, स्वांग आपणा आप रचावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा सच्चा राह चलावेगा।

११४७
१६

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ नथ्था सिँघ दे गृह पिण्ड बडहेड़ी ज़िला अम्बाला ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ इक्को साचा नाम दस्स अगम्मी बन्दगी, बन्दीख़ाने वाले बन्धन जगत तुड़ाईआ। सन्तां भगतां गुरमुखां गुरसिखां किसे दी रहे ना मूल मुशंदगी, बिन जगदीश सीस ना किसे झुकाईआ। धार बख्श आपणे अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। इक्को ओट रहे सूरे सरबंग दी, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे मात ना गंदगी, पतित पुनीत जीव जंत दे बणाईआ। औध मुका दे सदी चौधवीं पन्ध दी, थक्की मांदी दिसे लोकाईआ। धार प्रगटा दे हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म परदा ओहला दे चुकाईआ। सीतल धार प्रकाश कर नूरी चन्द दी, चार वरन अठारां बरन अग्नी तत दए गवाईआ। ओट बख्श पुरख अकाल दीन दयाल आपणी सरन दी, सरनागत इक्को इक समझाईआ। जन भगतां बिधी दस्स निहकर्मी हो के तरन दी, जगत सागर विच्चों पार कराईआ। साची खेल दस्स हरि दवारे मरन दी, मर के जीवत रूप वटाईआ। मंज़ल अगम्मी दस्स चढ़न दी, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड राह विच ना कोए अटकाईआ। सुरती शब्दी डोर दस्स फड़न दी, जगत विचोला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, सतिजुग साचा ढह प्या सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ बख्श दे आपणी दात, दातार

दानी दयावान अख्वाईआ। तेरे नाम दी दो जहानां इक्को दिसे करामात, करमां दा डेरा निहकर्मी हो के देणा ढाहीआ। तेरी सिफ्त दी लभ्भणी पए ना कोए लुग़ात, अक्खरां तों बाहर आपणा भेव देणा खुल्हाईआ। शब्द अगम्मी धुन अनादी दे आवाज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए शनवाईआ। घर विच घर परदा ओहला खोल्ह राज़, राज़क रिज़क रहीम तेरे अगे मंग मंगाईआ। गुरमुख वेख पूरब जन्म दे साध, सज्जण हरिजन लै बणाईआ। जो अन्तर अन्तश्करन तेरा नाम रहे आराध, मन दी ममता ना कोए रखाईआ। भेव अभेदा खोल्ह बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना स्वाल जवाब, इक्को हुक्म दे समझाईआ। सतिजुग साचा खेड़ा कर आबाद, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर इक्को पुरख अकाल करे याद, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। बिन रसना जिह्वा अमृत रस दे स्वाद, फीके रस लोड़ रहे ना राईआ। निझर झिरना अमृत दे हयाते आब, आप आपणी मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे प्यार विच दूसरी पढ़नी ना पए कोए किताब, कुतबखानयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। घर ठाकर स्वामी सज्जण मिल अहिबाब, मित्र प्यारे आपणा फेरा पाईआ। तूं आदि जुगादी परम पुरख परमात्म अबिनाशी करता वाहिद, लाशरीक जलवागर अख्वाईआ। सन्त सुहेले तैनूं निरगुण रहे
११४८ लाध, सरगुण हो के बूझ देणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सचखण्ड ११४८
१६ निवासी सतिजुग साचा झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ दुनिया दा कूड़ा वेख धन्दा, धर्म दया नज़र कोए ना आईआ। १६
तेरी बन्दगी विच दिसे कोए ना बन्दा, बन्दीख़ाने सारे रहे कुरलाईआ। मन वासना जगत विकारी होया गंदा, पुनीत पवित नज़र कोए ना आईआ। साची मंज़ल पौड़े चढ़े कोई ना डण्डा, अधवाटी बैठी जगत लोकाईआ। बिन हरि शब्द जगत जिज्ञासू फिरे नंगा, ओढन सीस जगदीश ना कोए टिकाईआ। किरपा कर पुरख अकाल साचा बख्श आपणा संगा, सगला सगला संग आपणे नाल रखाईआ। कलयुग कूड़ा रहिण ना पावे दंगा, दग़ेबाज़ी दा लेखा देणा मुकाईआ। तेरे नाम दा वज्जे इक मृदंगा, डंका राउ रंकां करे शनवाईआ। सतिजुग कहे श्री भगवान इक्को दर दवारा तेरा मंगा, दरवेश हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूरी कर उमंगा, तृष्ना अगली देणी मिटाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बन्ना सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर ✪

सतिजुग साचे, जन भगतां दस्सां अगम्मी बोल, अनबोलत आपणा नाम दृढ़ाईआ। सति सच वजावां धुर दा ढोल,

नाद अनादी इक्को दयां समझाईआ। स्वामी ठाकर हो के वसां कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। निज नेत्र लोचण नैण अक्ख देवां खोल्ह, भेव अभेदा आपणा आप समझाईआ। अमृत आत्म साची धुर दी देवां पहुल, रस इक्को इक वखाईआ। मिले वड्याई उपर धरनी धरत धौल, धर्म दवारे बह के सोभा पाईआ। पूरब लहिणा देणा पूरा करां कौल, इकरारनामा पिछला तोड़ निभाईआ। जिस लेखे नूं समझ ना सके कोई पंडत पांधा रौल, अंकड़यां विच हिसाब ना कोए लगाईआ। सच वस्त जन भगतां देवां नाम अनमोल, अनमुलड़ी झोली पाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले वरोल, कोटां विच्चों थोड़े बहुते बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे लए उपजाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां देवां नाम वस्त अगम्मी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लहिणा मुका के पवण स्वास दमी, दमां दे अंदर दमन दयां कराईआ। गुरमुख सुरती रहे ना कदे निकम्मी, निहकर्मी हो के आपणा रंग रंगाईआ। भाग लग्गे काया माटी चम्मी, चम्म दृष्टी दयां बदलाईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अन्न्ही, लोचण नेत्र निज खुल्हाईआ। सच पदार्थ दा कर के धनी, धनाढ धुर दा दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। सतिजुग साचे जन भगतां देवां नाम वक्खर, चार युग दा लेख ना कोए बणाईआ। निरगुण निरगुण मेला मेले दो अक्खर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण अंग बणाईआ। मंज़ल चोटी चाढ़ां आख़र, अख़ीर बेनज़ीर आपणा नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे साचा नाम इक्को होवे भाशन, भाषा सब दी दए बदलाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां शब्द अनोखी पावां भिक्ख, भिख्या आपणे दर वरताईआ। जन्म कर्म दा लेखा देवां लिख, लिख्या लेख ना कोए बदलाईआ। धुर दी किरपा अंदर आवां दिक्ख, जग नेत्र चले ना कोए चतुराईआ। कर्म कर्म दी पूरी करां इच्छ, जन्म जन्म दा गेड़ मिटाईआ। वड्याई दे के गुरमुख साचे सिख, साख्यात आपणा रंग वखाईआ। आत्म परमात्म कर के साचा हित, हितकारी बण के लेखा दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे, तेरा मार्ग लावे इत, जिस दा भेव शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ कोए ना पाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ अमर चन्द दे गृह पिण्ड पंज कोहा ज़िला अम्बाला ✪

सदा भाग लग्गे भगतां झुग्गी, जुग चौकड़ी देवणहार वड्याईआ। जिस दा नाम निशाना रहे चौह जुगीं, चार कुण्ट

११४६
१६

दहि दिशा सिफ्ती ढोले गाईआ। गुरमुखां निर्मल कर के बुद्धी, बिबेकी आपणी धार जणाईआ। मंज़ल चाढ़ के उच्ची, सच दुआर दए वखाईआ। जिस गृह आत्म होवे सुच्ची, प्रीतम मिल के खुशी मनाईआ। साचे नाम दी दे के रुची, नाता धुर दा लए जुड़ाईआ। हक प्रीत कदे ना रहे गुज्झी, चार कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। सदा लग्गे भाग जन भगत घर, दवारा धुर दा नज़री आईआ। जित्थे मानस जन्म मिले वर, वरन बरन डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल किरपा जाए कर, करनी दा करता होए आप सहाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लाए लड़, सुरती शब्दी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। जगत विकार वहण ना जाए हड़, बाहों फड़ फड़ पार कराईआ। जो आत्म परमात्म सोहँ ढोला गए पढ़, परमात्म आत्म मिल के वज्जे वधाईआ। साची मंज़ल बिन पौड़ी डण्डे गए चढ़, सच दवारे बह के खुशी मनाईआ। किरपा करे नरायण नर, हरि करता बख्शणहार चरण सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण धूढ़ नुहाए सरोवर साचे सर, तीर्थ मजन इक्को इक कराईआ।

१३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ रौणक सिँघ, सेवा सिँघ दे गृह पिण्ड रुढ़की

सतिजुग साचे, तेरी आसा मनसा होवे पूरी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल चार कुण्ट दहि दिशा एका जोत करे नूरी, शाह सुल्ताना श्री भगवाना बेपरवाह आपणी खेल खिलाईआ। मन वासना दीन दुनी अंदरों क्रिया कढ्ढे कूड़ी, कूड़ कुटम्ब काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए खपाईआ। जन भगतां साचे सन्तां साहिब स्वामी अन्तरजामी नाम शब्द दी पूरी करे मज़दूरी, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। नाम रंगण तन माटी ख़ाकी वजूद आपणी चाढ़े गूढ़ी, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक आपणा भेव खुल्हाईआ। दो जहान श्री भगवान झगड़ा मुका के दूर दूरी, नेरन नेरा हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा राह, शब्दी सतिगुर बण मलाह, एकँकार इक इकल्ला नव सत्त दए वखाईआ। सतिजुग साचे, किरपा करे श्री भगवन्त, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ के हउमें हंगत, हँ ब्रह्म सृष्टी दृष्टी अंदर दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के दो जहानां पंडत, निरगुण निरवैर निरअक्खर निराकार साकार दए समझाईआ। लेखा जाणे कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम, अन्तश्करन दीन दुनी वेखे थाउँ थाँईंआ। साहिब सुहेला इक इकेला नाम निधाना

आपणा चलाए धुर दा मंत्र, मंतव सब दे हल्ल कराईआ। त्रैगुण माया घट भीतर बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत मेघ इक्को इक बरसाईआ। परदा लाहे भेव खुल्हाए ब्रह्म निरंतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा राह, सति सतिवादी बण मलाह, धरनी धरत धवल दए वखाईआ। सतिजुग साचे, किरपा करे साहिब सतिगुर स्वामी, साजण मीत आपणा खेल खिलाईआ। चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म दस्स के धुर दी बाणी, बाण निराला अणयाला तीर लगाईआ। झगड़ा चुका के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दए समझाईआ। जन भगतां साचे सन्तां इक्को दस्स के पद निरबाणी, सच दवारा हरि निरँकारा इक्को दए वखाईआ। निरगुण नूर जोत जगे सच दुआर महानी, दीवा बाती कमलापाती पतिपरमेश्वर अवर ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म बख्शे सच निशानी, जगत निशाना कूड़ कुड़यार जग नेत्र नैण नज़र कोए ना आईआ। सच दवारे सोहे शाह पातशाह सच्चा शहिनशाह सुल्तानी, पातशाह परवरदिगार इक्को नज़री आईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित दो जहानी, लोक परलोक नाम सलोक सोहला ढोला इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सतिजुग वर, सति
१९५१ सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पारब्रह्म इक इकल्ला एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे, साचा प्रभ बख्शे धुर दी धार १९५१
१६ अगम्मी धर्म, धर्म आत्मा परमात्मा दए जणाईआ। निहकर्मी हो के करे आपणा कर्म, कूड़ी क्रिया कर्म कांड दा लेखा दए १६
मुकाईआ। एका रंग रंगाए चार वरन, चार कुण्ट दहि दिशा एका हुक्म दए समझाईआ। सो पुरख निरँजण दस्स के धुर दी इक्को सरन, सरनगति दर दवारे साचे दए दृढ़ाईआ। नेत्र खोल्ह के हरन फरन, निज लोचन करे रुशनाईआ। जन भगतां भय चुका के मरन डरन, लख चुरासी पैंडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण खेल आए करन, करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। सतिजुग साचे साचा प्रभ होए दयाल, दीनां अनाथां दए वड्याईआ। कृपानिध हो कृपाल, किरपन वेखे थाउँ थाँईंआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी सच दुआर इक वखाए धुर दी धर्मसाल, जित्थे क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एका रंग रंगे शाह कंगाल, ऊँच नीच झगड़ा दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वज्जे शब्द अगम्मी ताल, जगत तलवाड़यां दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां साचे सन्तां मार्ग दस्स आप सुखाल, जगत दवारे पार दए कराईआ। निरगुण जोती दीआ बाती कमलापाती आपे बाल, गृह मन्दिर काया भीतर साचे घर करे रुशनाईआ। सतिजुग साचे, तेरा हल्ल होवे स्वाल, कलयुग कूड़ी क्रिया चुक्के विच जहान, बेईमान शैतान रहिण कोए ना

पाईआ। प्रगट होवे धुर दा नाम, अमृत मिले सब नूं जाम, भाग लग्गे काया माटी खेड़ा तन ग्राम, महल अटल सोहणा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी शब्द देवे हक पैग़ाम, पीर पैगम्बर जिस नूं करन सलाम, सजदयां विच बैठे सीस निवाईआ।

✪ १३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मेहर सिँघ दे गृह पिण्ड शेख़ पुरा ✪

सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरा नाम उपजे एक, एकँकार दे वड्याईआ। शब्द स्वामी बख्श साची टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी धुर दी ख़ाक रमाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर कर बुध बिबेक, अद्वैती आपणी धार समझाईआ। सच सुनेहड़ा दे अगम्मी देस, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वज्जे इक वधाईआ। निउँ निउँ सीस झुकावण विष्न ब्रह्मा शिव महेष, पैगम्बर सजदयां विच सिर ना कोए उठाईआ। सच दवारे सारे करन इक आदेस, नमो नमस्ते विच शुकर मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट भेख, पखण्डी कूड़े दे गवाईआ। सच धर्म दी ला रेख, ऋषी मुनी दे समझाईआ। लोकमात जगत परदेस, देसी गुरमुख लै उठाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के दस्स भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। नज़री आवें पुरख अकाल नेतन नेत, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले तेरा दर्शन लैण पेख, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी घर घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण हो के निरगुण कर हेत, हितकारी हो के आपणा मेल मिलाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरा नाम होवे निरँकार, लोक परलोक वज्जे वधाईआ। गुरमुख सखीआं होवे मंगालाचार, दर घर साचे सोभा पाईआ। शब्द नाद होवे धुन्कार, अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। निर्मल दीवा बाती जोत होवे उज्यार, कमलापाती सोभा पाईआ। भगत सुहेले कर प्यार, गुर चेले मेल मिलाईआ। गुरमुख रहे ना कोई दुख्यार, दुखियां दर्द दे गवाईआ। कुदरत दे कादर तेरे तों बलिहार, सतिजुग कहे निउँ निउँ लागां पाईआ। दर भिक्खक बणां भिखार, दर दरवेश हो के अलख सुणाईआ। किरपा कर सिरजणहार, सजदयां विच मंग मंगाईआ। दीन दुनी तों कढु बाहर, गुप्त ज़ाहर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बख्श इक भण्डार, वस्त अमोलक झोली देणी टिकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सुण अगम्मी अरदास, आरज़ू अरज़ विच्चों प्रगटाईआ। खेल वेख्या तेरा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। लख चुरासी पैंदी वेखी रास, मनुआ आपणा स्वांग वरताईआ। सच स्वामी किसे ना दिस्या पास, पासा उलटया जगत लोकाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसे स्वास, साह साह तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। मन हँकारी

सब दा करे घात, घाउ डूँग्घा आपणा लाईआ। सच प्रीती शब्दी सुरती जुड़या कोए ना नात, नाता बिधाता ना कोए जुड़ाईआ। चार कुण्ट दिसे अन्धेरी रात, अन्ध अज्ञान दूर ना कोए कराईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, पारब्रह्म तेरी इक्को ओट रखाईआ। तूं स्वामी साहिब सर्ब गुणतास, गुणवन्ता शहिनशाहीआ। जन भगतां पूरी कर आस, आसा मेरे नाल मिलाईआ। मैं सेवक तेरा बणां दासी दास, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग कहे मेरी पूरी करनी आस, आसावंद तेरे दर ते नजरी आईआ। सतिजुग कहे मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, निम्रता विच जणाईआ। किरपा कर आप करतार, बेअन्त बेपरवाह मेहर नज़र उठाईआ। साचा मार्ग दे संसार, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। भगत सुहेले लै उठाल, शब्द हुलारा इक लगाईआ। अगला खोल्ह के दस्स अहिवाल, हालत पिछली दे बदलाईआ। सृष्ट सबाई सिर ते कूके काल, महाकाल दए दुहाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख वेख आपणे लाल, लाल गुलाला रंग देणा चढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। झगड़ा मुका शाह कंगाल, इक वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा तेरा सचखण्ड सच्चा सोभा पाईआ।
११५३ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीनां बंधप ११५३
१६ दीन दयाल दयावान दयानिध सागर साचा मार्ग आपणा इक प्रगटाईआ। १६

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह पिण्ड शेखपुरा ज़िला रोपड़ ✪

सतिजुग कहे प्रभ तेरे रूप नज़री आवण धुर दे बच्चे, बचपन इन्हां दा लेखे लाईआ। तेरे प्रेम प्यार अंदर वेखे रते, रतन अमोलक हीरे दे बणाईआ। खुशीआं विच फिरन हस्से, पाँधी बण के भज्जण वाहो दाहीआ। तेरी मुहब्बत विच सच्चे, नाते सारे गए तुड़ाईआ। लख चुरासी नालों अच्छे, जो तेरा ढोला गाईआ। काया माटी भाण्डे रहिण ना देवीं कच्चे, कंचन गढ़ देणा सुहाईआ। लूं लूं अंदर तेरा नूर रचे, रचना आपणी देणी वखाईआ। दरस वखा के अगम्मी अक्खे, आख़र परदा देणा उठाईआ। सज्जण सुहेले बणा के सखे, सगला संग देणा निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। सतिजुग कहे प्रभ भगत सुहेले तेरे पूत, पिता पुत्त इक्को नज़री आईआ। भाग लगाउणा काया पंज तत भूत, भविख आपणा देणा समझाईआ। हुक्म संदेसा देणा नाल शब्दी दूत, निरगुण सरगुण हो के हुक्म वरताईआ। मेल मिलाउणा चारे कूट, दिशा अंदर बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुका के जूठ झूठ, कूड़ कुड़यारां लेखा देणा

मुकाईआ। परमात्म हो के जाणा तुट्ठ, रुठयां लैणा मनाईआ। अमृत जाम प्याला दे के घुट, रस आपणा देणा चखाईआ। आवण जावण सब दा पैंडा जाए मुक, जूनी विच ना कोए भवाईआ। सच दवारे करनी पुछ, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। भगत उधारने तेरे अगे तुछ, मेहर नज़र नाल पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहावणी करनी रुत, नाम रुतड़ी इक महकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जन भगत तेरे दुलारे, दूले धुर दे नज़री आईआ। इक्को नाम बणा वणजारे, वणज साचा देणा वखाईआ। तेरे प्रेम दे लग्गण जैकारे, जै जैकार कर के खुशी मनाईआ। नज़र आउणा निरगुण रूप जोत निरँकारे, निरगुण आपणा खेल वरताईआ। सन्त सुहेले तेरे सहारे, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। कलयुग नईआ लाउणी पार किनारे, वैहन्दी धार ना कोए रुढ़ाईआ। तुध बिन पैज ना कोए संवारे, समरथ सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। शब्दी महिमा अपर अपारे, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। तेरे भगत ना होण खुआरे, जगत खुआरी देणी गवाईआ। मनुआ करे ना कोए हँकारे, निवण सु अक्खर देणा पढ़ाईआ। सदा वसण तेरे दवारे, चरण कँवल मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच महल अटल सुहा आपणे दवारे, जिस गृह दीवा बाती कमलापाती एका जोत करे रुशनाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड गोसलां ज़िला रोपड़ ✪

सतिजुग साचे सच दुआर होवे सोभावन्त, सति सतिवादी दीन दयाला आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल धुर दा दिसे अगम्मी नत, नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त नज़री आवे इक्को कन्त, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा खेल खिलाईआ। पावे सार दीन दुनी जीव जंत, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा धुर दा बण के पंडत, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करे हक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म आपणा भेव दए खुल्हाईआ। लहिणा देणा मुका के बहिश्त जन्नत, सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को दए वखाईआ। माण रखाए गुरमुख गुरसिख साचे सन्त, सति सतिवादी दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे, साचा दर इक्को इक खुल्हाईआ। सतिजुग साचे, अबिनाशी करता होवे मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। नाम संदेसा दे के धुर पैग़ाम, दीन दुनी करे हक पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दे के गए ब्यान, सो लहिणा

देणा जुग चौकड़ी अन्तिम पूर कराईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कोए विच जहान, कातब चले ना कोए चतुराईआ। सो करनी दा करता हो के निरगुण निरवैर आप प्रधान, शब्द संदेसा हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे हक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट भीतर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त खोज खुजाईआ। सतिजुग साचे, किरपा करे बेपरवाह, अलख अगोचर देवणहार सच्ची सरनाईआ। सति सतिवादी धुर दा मार्ग दीन दयाला देवे ला, धरनी धरत धवल धौल खुशीआं विच ढोला गाईआ। सति सतिवादी साहिब स्वामी बण के दो जहानां जगत मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण संसार सागर विच्चों लए तरा, तारनहार एकँकार आपणी सेव कमाईआ। साची मंज़ल पौड़े लए चढ़ा, सच दवारा इक्को इक सुहाईआ। करे खेल मालक प्रितपालक ख़ालक धुर दा शहिनशाह, हुक्में अंदर हुक्म बदलाईआ। लेखा जाणे दो जहां, जहां तहां वेखे थाउँ थाँईंआ। निरगुण दाता पुरख बिधाता निरगुण नूर जोत करे रुशना, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी खेल वखाईआ। सतिजुग साचे, सति सतिवादी साहिब स्वामी हो मेहरवान सति दवारे तेरी पकड़े बांह, चरण कँवल देवे अगम्मी थाँ, दर दवारा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी अदल इन्साफ़ विच करे सच न्याँ, नाम नयामत सही सलामत तेरी झोली देवे पाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला रोपड़ ✪

सतिजुग साचे, पिछला लेखा रहे ना माज़ी, जगत झगड़ा दए मुकाईआ। शरअ दीन लड़े कोए ना काज़ी, क्यामत सब नूं दए वखाईआ। हँकारीआं रहे ना कोए मनुआ ग़ाज़ी, गहर गम्भीर आपणा हुक्म वरताईआ। मूर्ख मुग्ध दिसे कोए ना पाजी, मुरीद मुर्शद लए उठाईआ। तन माटी ख़ाकी वजूद हकूक वाली रहिण ना देवे अराज़ी, मलकीअत सब दी दए गवाईआ। दीन दुनी इस्म करे लाजवाबी, वाजब आपणा हुक्म सुणाईआ। जगत सृष्टी कर इंतखाबी, मुख़ातब हो के वेखे थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछला लेखा दे मुकाईआ। सतिजुग साचे, जगत रहे ना कोई किसे विरसा, वारस नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया मिटे जगत हिरसा, हवस अगली दए गवाईआ। जन भगतां जन्म जाण ना देवां बिरथा, बिछरत हो के आप मिलाईआ। भेव खुल्हा के घर थिर दा, गृह मन्दिर

इक सुहाईआ। कर प्रकाश निरगुण निरवैर जोत निर दा, निर्धन सरधन खोज खुजाईआ। जो सन्त सुहेला विछड़या जुग चौकड़ी चिर दा, फड़ बाहों लए मिलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सदा फिरदा, जगत लोचन नज़र किसे ना आईआ। सदा प्यार करे गुरमुखां रूप धार अगम्मी पिर दा, पीआ प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के धड़ सिर दा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म करे आपणी मेहर दा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग साचे पुरख अकाल दीन दयाल लेखा जाणे पिछला कीता, कलयुग कर्म भुल्ल कोए ना जाईआ। पश्चाताप सब नूं रहे बीता, बीती कहाणी फिर ना कोए सुणाईआ। अबिनाशी करता बदल देवे तेरी रीता, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। दर वखावे इक्को ठांडा सीता, अग्नी तत ना लागे राईआ। दीन दुनी बदल देवे रीता, नीतीवान इक्को इक अख्वाईआ। एका रंग रंगा के हस्त कीटा, कूड़ कपट दए मुकाईआ। जन भगतां बणा के सच्चा मीता, सज्जण हो के जोड़ जुड़ाईआ। जिस दीआं करदे रहे सदा उडीकां, सो पुरख निरँजण आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कोलों करवा के तस्दीकां, भविख्तां दा लिख्त लेख भविश विच पूरा दए कराईआ। तेरीआं आसा मनसा पूरीआं करे उम्मीदां, आप आपणा रंग रंगाईआ। अगे राज़ रहिण ना देवे पोशीदा, परदा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार युग दीआं पिछलीआं वेखे लिख्ती शब्द रसीदां, धुर दी फ़ाईल अगम्मी विच्चों बाहर कढाहीआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सरजीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला रोपड़ ✪

सतिजुग साचे, पुरख अकाल चढ़ अगम्मे राकी, दो जहानां वेख वखाईआ। लहिणा देणा वेखे पंज तत बन्दा ख़ाकी, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। मनुआ रहिण ना देवे कोए आकी, हुक्म आपणा इक जणाईआ। कलयुग लहिणा देणा चुकावे बाकी, लेखा अगे रहे ना राईआ। सच दवारा खोल्हे धुर दी ताकी, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। नाम संदेसा दे के साची पाती, दीन दुनी दए पढ़ाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां पूरी करे आखी, आख़र आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राती, सतिजुग साचा नूर करे रुशनाईआ। सतिजुग साचे प्रभ सब दा लेखा करे पूर, पूरब पच्छिम उत्तर दक्खण लेखा दए मुकाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, झगड़ा कूड़ा दए चुकाईआ। लोकमात रहिण ना देवे गुरबत ग़रूर, गहर गम्भीर बाहर कढाहीआ। नाम भण्डारा कर भरपूर, भगत सुहेले

लए उठाईआ। शब्दी नाद सुणा तूर, तुरत आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जलवा दे नूर, अज्ञान अन्धेरा दए खपाईआ। सच खुमारी दे सरूर, जाम हकीकी दए प्याईआ। आत्म परमात्म मेला कर ज़रूर, आसा तृष्ना दए बुझाईआ। नज़री आवे हाजर हजूर, सच स्वामी अन्तरजामी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी विच अधूरी रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जरनैल कौर दे गृह पिण्ड राजो माजरा ✪

सतिजुग साचे, साचा मिले अमृत आब, ज़िंदगी हयाती विच्चों बदलाईआ। सतिगुर शब्द बण अहिबाब, मित्र प्यारा वेख वखाईआ। नाम निधान वजाए रबाब, तन्द सतार अगम्म हिलाईआ। साची पढ़नी दस्से आपणी किताब, कुतबख़ान्यां दा लेखा दए मुकाईआ। जिस दा तूं मेरा मैं तेरा पहला बाब, सोहणा हिस्सा वण्ड वण्डाईआ। लेखा मुक जाए पुन्न सवाब, दर घर साचा नज़री आईआ। मानस जन्म दा होवे लाभ, सूफ़ी सन्त फ़कीर देवां तराईआ। सच महल्ल दस्स महिराब,
११५७ महबूब इक्को नज़री आईआ। मेला मेल एका वाहद, वाहवा ढोला धुर दरगाहीआ। तेरे नाल कर के अहिद, इकरार आपणा ११५७
१९ तोड़ निभाईआ। कलयुग आपणा खेल कर ना सके शायद, हुक्म वरते बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द दा होणा पए तैनूं नाइब, १९
हुक्मे अंदर हुक्म कमाईआ। वेखणा खेल अजीब अजाइब, अजब निराला दयां वखाईआ। एका फ़रमान होवे राइज, राज राजान शाह सुल्तान सीस निवाईआ। भगत सुहेले वेखां लायक, गुरमुख गुर गुर आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा पूरा करे फ़राइज़, फ़र्ज तेरा तैनूं दए समझाईआ।

✪ १४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड रंगील पुर ज़िला रोपड़ ✪

सतिजुग कहे प्रभ आत्म परमात्म रख वास्ता, वास्तक आपणा खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दा रहे ना कोए बरास्ता, धुर दा मेला मेल सहिज सुभाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल हुन्दा रिहा आहिस्ता आहिस्ता, त्रेता द्वापर कलयुग बैठा पन्ध मुकाईआ। किसे भेव ना पाया अगम्मी धार पृथ्मी आकाश दा, अकल कलधारी आपणी कल दे वरताईआ। तेरा रूप पुरख अबिनाश दा, अबिनाशी करते वेख वखाईआ। कारज पूरा कर सेवक दास दा, दर ठांडे मंग मंगाईआ। झगड़ा

मुका अन्ध विश्वास दा, धीरज धर्म इक उपजाईआ। लेखा मुका तत्तां वाली रास दा, सुरती शब्दी मेला लै मिलाईआ। विचोला बण दर्द दुःख विनास दा, तन माटी रहिण कोए ना पाईआ। सदा मेला होवे धुर दे साथ दा, सगला संग बणाईआ। नाम प्रगट कर दे आपणी गाथ दा, साचा कलमा इक जणाईआ। लेखा रहे ना कूड़ अन्धेरी रात दा, सति नूर दे चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। सतिजुग कहे प्रभ हुक्मे अंदर दे ज़ोर, ज़बर रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग मेटां अन्धेरा घोर, घर घर करां आप रुशनाईआ। झगड़ा मुका के पंज चोर, जगत भय दयां खपाईआ। आत्म परमात्म बन्नृ के शब्दी डोर, तन्द एको दयां वखाईआ। सब नूं दस्सां तेरी लोड़, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सन्त सुहेले शब्द अनादी चाढ़ घोड़, जगत क्रिया विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन मनसा मिटा शोर, छोहरा बांका शब्द इक्को इक नज़री आईआ। सतिजुग कहे प्रभ किरपा कर रूप असमानी, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ। लोकमात जूह ना समझ बेगानी, निरगुण हो के सरगुण मेल मिलाईआ। तेरी मंज़ल इक्को नज़र आवे रुहानी, रूह बुत्त मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना वण्ड जिस्मानी, ज़मीर अंदरों दे बदलाईआ। तेरे भगतां देणी पए ना कोए कुरबानी, कतलगाह सीस ना कोए कटाईआ। आपणे नाम दी सुणा अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। मंज़ल दस्स पद निरबाणी, सच दुआर इक वखाईआ। जित्थे मेला होवे जोत नुरानी, नूर नूर विच समाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी दस्सण निशानी, सच दवारे सोभा पाईआ। किरपा कर शाह पातशाह सच्चे सुल्तानी, सुत आपणे वेख वखाईआ। जन भगतां दवारयों खा धुर दी महिमानी, चार युग जेहड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं समझे ना कोए विद्वानी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग ढह प्या सरनाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ कर दे आपणी मेहर, मेहरवान महबूब दया कमाईआ। शब्द सुत तेरा अगम्मी केहर, भय विच रखे जगत लोकाईआ। निरगुण निरवैर अन्त ना ला देर, निरगुण हो के हो सहाईआ। कूड़ी क्रिया कर ढेर, गढ़ हँकार दे तुड़ाईआ। जन भगतां काया मन्दिर अंदर तेरा वसे सोहणा शहर, लहर आपणा नाम वहाईआ। जिस नूं जाणे कोई ना ग़ैर, परदा ओहला ना कोए चुकाईआ। आपणे नाम दा अगम्मा राग सुणा बहिर, तर्ज़ ताल दा लेखा दे मुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लख चुरासी दिसे ज़हिर, ज़ाहरा हो के दे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग सच्चा साची आसा रिहा वखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैं ग़रीब निमाणा नाचीज़, हिम्मत विच हिम्मत ना कोए बणाईआ। डरदा डरदा आया तेरे दहिलीज़, दवारे बह के सीस झुकाईआ।

आसा मनसा रख के आया उम्मीद, आमद विच खुशामद देणी बणाईआ। लोकमात सति धर्म दी आपणे कोलों दस्स तरतीब, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं तारां जा के निमाणे कोझे कमले ग़रीब, शदीद तेरा हुक्म मनाईआ। खेल दस्सां इक अजीब, जगत निराला राह चलाईआ। तेरा घर दरसावां नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। शरअ दा रहे कोए फ़रीक, रफ़ीक सारे दयां वखाईआ। जीवां जंतां बदल के अंदरों नीत, नीतीवान गुरमुख लवां प्रगटाईआ। साचे चरण कँवल दस्स के इक प्रीत, प्रीतम धुर दा दयां मिलाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, अग्नी तत दयां बुझाईआ। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, नीचों ऊँच तेरा घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा आसा विच्चों आसा रिहा वधाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरे नाम दा होवे इक्को नग़मा, दीन दुनी खुशी नाल गाईआ। दूई द्वैत रहे कोई ना सदमा, दकुखां वाला रोग ना कोए सताईआ। सब दा सिर सर झुके तेरे कदमां, कुदरत दे मालक इक्को नूर तेरा नज़री आईआ। साचा मार्ग इक्को लगणा, लग मातर पिछली देणी मिटाईआ। नाम नगारा इक्को वज्जणा, चार कुण्ट होवे शनवाईआ। तेरा दीपक इक्को जगणा, चार वरन होवे रुशनाईआ। जन भगतां बख्श आपणी मज़ला, मंज़ल चढ़ के तेरा दर्शन पाईआ। उन्नां छोह ना सके अज़ला, क्यामत रूप ना कोए बदलाईआ। तेरे प्रेम दी गावण ग़ज़ला, ढोला सोहला राग इलाहीआ। लख चुरासी विच्चों कढु ला, जन्म जन्म ना कोए भवाईआ। सच दवारे सद ला, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। नाम रंगण अंदर रंग ला, मोहण माधव तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दी साची इक्को होवे बन्दना, बन्दगी विच मुशंदगी अवर रहिण कोए ना पाईआ।

११५६
१६

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बचन सिँघ दे गृह पिण्ड ध्यानपुर ✪

सतिजुग जन भगतां नाम दे के गहर गम्भीर, सोहँ सो आत्म परमात्म परमात्म आत्म दिता समझाईआ। पंज तत काया माटी दे के धुर दी धीर, धर्म दवारा एकँकारा इक्को दिता वखाईआ। अमृत आत्म बख्श के ठांडा नीर, अग्नी तत जगत विकार दिता मिटाईआ। हउमें हंगता कूड़ी क्रिया कढु के पीड़, पारब्रह्म ब्रह्म मेला रिहा मिलाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब शरअ ना रही ज़ंजीर, शरीअत विच्चों असलीअत दिती समझाईआ। माणस जन्म लख चुरासी विच्चों बदल तकदीर, तदबीर आपणी दिती दृढ़ाईआ। बाहों फड़ मंज़ल चोटी चाढ़ अख़ीर, सच दवारा इक्को दिता सुहाईआ। साचा भगत सन्त होए

ना कोए दिलगीर, राए धर्म दए ना कोए सजाईआ। सचखण्ड दवारे घत्ती जाए वहीर, अगे हो ना कोए अटकाईआ। पारब्रह्म पति परमेश्वर मिले वड पीरन पीर, अबिनाशी करता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची धीर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां खोल्ह आ आत्म दृष्टी, दिशा पुरख अकाल इक्को दिती वखाईआ। नाता तोड़ के माया ममता मोह जगत सृष्टी, सृष्ट आपणा नाम दिता समझाईआ। धुर दा राम करनी दा करता नज़री आवे इक्को इष्टी, इष्ट आत्मा परमात्मा वेख खुशी मनाईआ। जिस दी मंज़ल अगम्म अथाह इक्को दिसदी, सचखण्ड दवारा सोभा पाईआ। एह खेल आदि जुगादी अगम्मी पित दी, पिता पूत आपणी गोद उठाईआ। आवण जावण जन भगतां खेल मुका के नित दी, लख चुरासी विच्चों बाहर कढाहीआ। रीती दस्स दिती पुरख अकाल हित दी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला ल्या मिलाईआ। जेहड़ी मंज़ल नहीं किसे मुन रिख दी, गुरसिख साचे साची दरगाह दिती माण वड्याईआ। जिस दी महिमा कलम शाही नहीं कोई लिखदी, सो मेहर नज़र नाल पार कराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धार करे खेल इक दी, एकँकार आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ।
११६० सतिजुग साचे जन भगतां दिता धुर दा हक, हकीकत विच्चों हकीकत दिती समझाईआ। मनुआ रहे ना विच शक, शिकवे ११६०
१६ पिछले दिते गवाईआ। प्रेम प्यार दी खोल्ह के अक्ख, आपणा परदा दिता उठाईआ। दीन दुनी नालों कर के वक्ख, मार्ग १६
धुर दे दिता लगाईआ। सोहँ सो जो नाम रहे जप, लख चुरासी विच जगत वासना ना कोए भवाईआ। मानस जन्म गए जित्त, हरि हिरदे अंदर वसाईआ। अगे प्रभ दा दर्शन होवे नित, सच दवारे मिल के वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता वस्या चित, मन ठगौरी रहे ना राईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को आवे दिस, दिशां दा मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे विच मिलाईआ। सतिजुग जन भगतां दिता अगम्मा जाप, जगजीवण दाता हो दिती वड्याईआ। जन्म कर्म दा मेट संताप, कर्म कर्म दे दुखड़े दिते गवाईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, अग्नी अग्ग दिती बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के साक, नाता धुर दा ल्या जुड़ाईआ। बज़र कपाटी खोल्ह के ताक, अंदरों परदा दिता उठाईआ। लेखा मुका के ज़ात पात, पतित पुनीत दिता बणाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा नूर कर रुशनाईआ। चार युग तों वखरी दस्स के गाथ, धुर दा मंत्र दिता समझाईआ। मेला कर पुरख अबिनाश, जगत विनाश दा खैहड़ा दिता छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां हो के दासी दास, सेवा साची सच कमाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां नाम दिता अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे

ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी महिमा गए लिख, सो विद्या तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दा सब तों उत्तम स्रेष्ट निराला भविख, भविश आपणा दए जणाईआ। माण वड्याई उत्ते धरनी देवे तिस, जिस पूरब जन्म लेखा बाकी रिहा वखाईआ। सर्ब दा स्वामी अन्तरजामी मालक हो के वेखे इक, एकँकार आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां नाम दिता अगम्म अथाह, अलख अगोचर देवणहार सच्ची सरनाईआ। सतिजुग सच्चा दस्स के राह, मार्ग इक्को दिता वखाईआ। लख चुरासी विच्चों थोड़े बाहर कढा, कोटां विच्चों नाम चोट लगाईआ। धुर दा मंत्र इक दृढ़ा, दृढ़ विश्वास दिता बंधाईआ। पवण स्वास साह लेखे ला, मेहरवान मेहर नज़र नाल पार कराईआ। हर घट वस्या नज़री आए खुदा, खुद मालक आपणा खेल खिलाईआ। जन भगत सुहेले तत वजूद रहिण ना देवे जुदा, आत्म परमात्म नाता जोड़े थाउँ थाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ममता मोह मिटा के वबा, प्रेम प्रीती साची नीती इक्को इक समझाईआ। गुरमुख गुरसिख वरनां बरनां विच्चों आप उठा, बाले नढ्ढे बिरध जवान आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे तेरा मार्ग ला के नवां, नव नौ चार दा लेखा रिहा मुकाईआ। सतिजुग साचे, जन भगत नाम अगम्मी कहिण, कह कह शुकर मनाईआ। साहिब सतिगुर दरस करन आपणे नैण, जगत नेत्र नाता कूड़ तुड़ाईआ। सच दुआर इक्ट्ठे बहण, भूमिका इक्को सोभा पाईआ। पुरख अकाल देवे लहिण देण, मकरूज़ हो के पिछला कर्ज़ चुकाईआ। लेखा जाणे बण के साक सज्जण सैण, सइया नईआ नौका नाम आपणा दए वखाईआ। गुरमुख गुरसिख कूड़े वहण कदे ना वहण, वाहवा करदयां आपणे घर वसाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी कलयुग अन्त श्री भगवन्त, निरगुण निरवैर हो के आया कहिण, सरगुण अन्तर आत्म परमात्म हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जसवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड मुरिंडा ज़िला अम्बाला ✪

सतिजुग साचे, हरि का नाम होवे एका अनमोला, वस्त अमोलक तेरी झोली पाईआ। दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां बणे साचा तोला, सच तराज़ू अगम्मी आप उठाईआ। आत्म परमात्म धुर दा बोला, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चार वरन अठारां बरन होवे इक्को ढोला, गीत गोबिन्द गहर गम्भीर बेनज़ीर दए समझाईआ। सतिगुर शब्द जीव जंत निरगुण सरगुण बणे विचोला, चार कुण्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी

चोला, चोजी प्रीतम आपणा रंग दए रंगाईआ। भेव अभेदा खोल्हे परदा ओहला, घर विच्चों घर गृह मन्दिर दए वखाईआ। मनुआ जगत वासना पाए ना रौला, विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल चार कुण्ट दहि दिशा इक्को गावे सोहला, कलमा कायनात आप समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया धरनी धरत धवल भार करे हौला, सतिजुग साचे सति धर्म दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी पूरा करे कीता इकरार कौला, गुर अवतार पैगम्बरां भविश आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सति साची कार कमाईआ। सतिजुग साचे, हरि का नाम एका मिले जीव जंत, लख चुरासी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। एको सिमरन करे साध सन्त, पूजा पाठ इक्को दए समझाईआ। सृष्ट सबाई नार इक्को मिले धुर दा कन्त, पुरख अबिनाशी घट निवासी नज़री आईआ। गढ़ तोड़े माया ममता हउमे हंगत, हँ ब्रह्म चार वरन दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। महिमा दस्स के आपणी अगणत, भेव अभेदा अगला दए खुल्हाईआ। मन वासना कूड़ी रहे ना चिन्त, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी दे के हिम्मत, मार्ग साचे दए चढ़ाईआ। जित्थे दिसे कोए ना निन्दक, रसना जिह्वा बत्ती दन्द

ना कोए हिलाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार इक वखाए आपणी सिम्मत, चार कुण्ट दहि दिशा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम एका राम काया नगर खेड़ा ग्राम, वजूद अंदर महबूब दए वखाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम एकँकार एका करे परचलत, सृष्ट सबाई साची सिख्या दए समझाईआ। जो होए सहाई हलत पलत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। मनुआ कूड़ करे कोई ना इल्लत, शरअ शरारत विच ना कोए हल्काईआ। जन भगतां बख्शे साची हिम्मत, हौसला आपणे नाम वड्याईआ। साचे प्रेम दी दे के खिल्लत, ख़ातब इक्को इक दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दूजे दर करन ना देवे मिन्नत, नाम भण्डारा एकँकारा बण वरतारा, शब्दी धार कर प्यार एका वार झोली दए भराईआ।
११६२
१९

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ दरबारा सिँघ दे गृह पिण्ड बाठ खुरद ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा डंका वज्जे विच ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर इक्को करे शनवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्ड, धरनी धरत धवल उपर रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पुरख अकाल

तूं मेरा मैं तेरा गावे छन्द, चार वरन अठारां बरन इक्को नाम ध्याईआ। किरपा करे दीन दयाल साहिब बख्शंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परदा ओहला दए उठाईआ। काया माटी तन वजूद साढे तिन्न हथ्थ चाढ़े रंग, नाम अनमुल्ला इक्को इक समझाईआ। दूई द्वैती हउमे हंगता ढाहे अंदरों कंध, सच सुच एका एक दए समझाईआ। घर विच्चों घर गृह मन्दिर देवे इक अनन्द, नौ दवारे नौ रस लेखा दए मुकाईआ। सुरती शब्दी डोरी बन्ने आपणे तन्द, धुर दरगाही बेपरवाही आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां साचे सन्तां खुशी करे बन्द बन्द, नाम भण्डारा एकँकारा इक्को झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी साची करनी आप कमाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा वज्जे इक्को डंका, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वज्जे वधाईआ। श्री भगवान दा सोहे इक्को बंका, पुरख अकाल सृष्टी दृष्टी अंदर नाम ध्याईआ। इक्को मन्दिर दिसे राउ रंका, चार वरनां अठारां बरनां इक्को घर दए समझाईआ। इक्को सतिगुर शब्द होवे बोध अगाधा पंडता, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया गढ़ रहे ना हउमे हंगता, निरगुण निरवैर निराकार निवण सु अक्खर इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे, तेरा राह पुरख अकाल चलावे बेपरवाह धरनी धरत धवल देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचे,
११६३
१६
साचे नाम दा वज्जे इक्को नगारा, नौबत धुर दी आप वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खुशीआं विच लावण धुर दा नाअरा, वाहवा प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। भगत सुहेले गावण साची वारा, वारता विच सिफ्ती ढोले जगत सुणाईआ। करनी दे करते तेरा अन्त ना पारावारा, बेअन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। निरगुण निरवैर कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की इक अवतारा, जिस दा रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ। जिस नूं माता जन्मे ना कोए विच संसारा, हड्ड मास नाड़ी नाता जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिस दा लेखा कागद कलम शाही ना लिखणहारा, वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी हुक्में अंदर सिफ्त सालाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी सचखण्ड निवासी परवरदिगारा, जलवागर नूर अलाहीआ। सतिजुग साचे साचा सच खोल्हे इक दवारा, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को घर वखाईआ। जिस मन्दिर गृह तूं मेरा मैं तेरा सुणावे इक जैकारा, दूजा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे तेरी वखाए इक्को धर्मसाला, जिस दुआर क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को इष्ट मनाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा इक्को होवे होका, हुक्म धुर दा आप जणाईआ। मन्नणा पए चौदां लोका, चौदां तबक सीस ना कोए उठाईआ। प्रभ दा भाणा किसे ना रोका, गुर अवतार पैगम्बर भाणे विच सेव कमाईआ। जन भगतां धर्म दा मार्ग दस्से सौखा, कलयुग कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहीआ। श्री भगवान हो मेहरवान

११६४
१९

आपणे मिलण दा देवे मौका, निरगुण हो के सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। साचे सन्तां नाल कदे करे ना धोखा, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। साची मंज़ल चढ़ावे चोटा, अन्त अख़ीर इक्को घर वखाईआ। जिस गृह निर्मल प्रकाश होवे नूरी जोता, जागरत जोत डगमगाईआ। सचखण्ड दवारा बिन छप्पर छन्न कोठा, सूरज चन्द नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे तेरी आसा मनसा पूरी करे सोचा, समझ रमज़ आपणी विच मिलाईआ। सतिजुग साचे, हरि का नाम प्रगट होवे जगत, चार वरनां अठारां बरनां करे इक पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला के बणाए धुर दे भगत, भगवन हो के आपणा संग निभाईआ। घर स्वामी अन्तरजामी उपर शाह रग देवे दरस, नौ दवारा कूड़ विकारा डेरा ढाहीआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी मेटे हरस, पिछली हवस रहे ना राईआ। मेहरवान महबूब परमात्म करे तरस, अबिनाशी करता होए सहाईआ। सन्त सुहेला साची मंज़ल चढ़दयां कोई ना जावे अटक, दस्म दवारी जोत निरँकारी निरगुण दर्शन पाईआ। झगड़ा रहे ना बूँद रक्त, आत्म शक्त मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ कुड़यारी मेटे भटक, भावना सतिजुग तेरी वेख वखाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा चले परवाह, पारब्रह्म हर हिरदे दए वसाईआ। गुर गोबिन्द शब्द बणे गवाह, जन भगतां शहादत दए भुगताईआ। जो लेखा जाणे साह साह, स्वास स्वास आपणी झोली पाईआ। अन्तर आत्म परमात्म निराकार नाम दृढ़ा, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। वाहद नूर नज़री आवे इक खुदा, खुद मालक आपणा परदा दए उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साची मंज़ल पौड़ी दए चढ़ा, दर दवारा एकँकारा इक्को इक वखाईआ। जिस गृह निर्मल जोत होवे रुशना, दीवा बाती कमलापाती नूरो नूर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत कर किरपा लए बहा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अबिनाशी करता कूड़ी क्रिया जगत नाता दए तुड़ा, सतिजुग साचा सति धर्म बिन गोत वरन एका एक दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां नेत्र खोल्ले हरन फरन झगड़ा चुकावे मरन डरन, मार्ग दसाए तरनी तरन, तारनहारा एकँकारा इक इकल्ला आपणे चरण कँवल बख्शे हक सरनाईआ।

१५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मुखत्यार सिँघ दे गृह पिण्ड मुंडीआं खुरद ज़िला लुधियाणा

सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे बल, बलधारी कलयुग कूड़े दए खपाईआ। पावे सार समुंद सागर जल थल, टिल्ले

पर्बत डेरा ढाहीआ। दूई द्वैती मन वासना मेटे सल, साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को बूझ दए बुझाईआ। जूठ झूठ ममता मोह रहे ना कल, कलकाती झगड़ा अगला दए चुकाईआ। साचा धाम निहचल वखाए अटल, जन भगतां साचे सन्तां दए माण वड्याईआ। जिस गृह इक्को दीपक रिहा बल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे साचा नाम इक समझाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे साचा मेल, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मिले सज्जण सुहेल, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। करे प्रकाश साचे गृह बिन बाती तेल, निरगुण नूर जोत डगमगाईआ। अचरज दस्से अगम्म अथाह आपणा खेल, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड, सतिजुग साचे, तेरा धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, किरपा करे आप कृपाल, कृपानिध दया कमाईआ। एका नाम शब्द होए विशाल, विषयां वाला विशा दए गवाईआ। आ के वेखे मुरीदां मुर्शद हाल, दो जहान कायनात दीन दुनी वेख वखाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया तोड़ जगत जंजाल, निज आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। सच दवारा इक वखाए धुर दी धर्मसाल, जिस घर एकँकारा इक्को सोभा पाईआ। जित्थे गुर अवतारां पैगम्बरां पूरा करे स्वाल, विष्न ब्रह्मा शिव झोली आं रिहा भराईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्दी खेल करे कमाल, जगत सृष्टी दृष्टी समझ कोए ना आईआ। भगत सुहेले सज्जण गुरमुख आप उठाल, नाम निधान श्री भगवान रिहा दृढ़ाईआ। धर्म दुआर बणा आपणे लाल, गुर गुर गोद इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले कर परवान, मेहरवान मेहर नज़र इक तकाईआ।

११६५
१६

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड रामपुर सरदारा ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, धुर दा नाम सब नूं करना पए मन्ज़ूर, चार वरन अठारां बरन मानव ज़ाती इक्को ढोला गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हाज़र हज़ूर, हज़रत शाह सुल्तान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग माया ममता कूड़ी क्रिया करे दूर, लोकमात चार कुण्ट दहि दिशा रहिण ना पाईआ। नाम खुमारी आत्म परमात्म देवे सच सरूर, शब्द अनादी धुर दा राग सुणाईआ। निरगुण नूर जोती जोत प्रकाश करे ज़ाहर ज़हूर, गहर गम्भीर आपणा खेल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे, तेरा साचा राह, पुरख अकाल चलावे शब्दी बण मलाह,

दूजा संग ना कोए रलाईआ। सतिजुग साचे, सच सुच दा होवे इक प्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल ज़िमीं असमान, इक्को ध्यान लगाईआ। सिफ्तां विच गावे रसना जेहवा बत्ती दन्द ज़बां, नाउँ निरँकारा एकँकारा इक्को इक ध्याईआ। परवरदिगार सांझा यार मुहब्बत विच होवे मेहरवां, महबूब मालक ख़ालक प्रितपालक बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दस्से साचा राह, रहबर हो के रस्ता इक वखाईआ। काया माटी मन्दिर परदा दए उठा, निज लोचन नैण अक्ख कर रुशनाईआ। साचे नाम दी धुन अगम्मी दए सुणा, नाद अनादी इक्को इक वजाईआ। जगत दवारे पैंडा दए मुका, मन वासना कूड़ी दए खपाईआ। सुरत सवाणी लए उठा, शब्द हलूणा इक लगाईआ। साची मंज़ल पौड़े लए चढ़ा, घर विच घर मेला मेले सहिज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दए समझा, भेव अभेदा आपणा आप खुल्हाईआ। सेज सुहञ्जणी सच दुआर सच सिंघासण सोभा पा, सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा, तेरा बणे मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सतिजुग साचे, सच नाम दी सब नूं होवे ख़ाहिश, ख़ालस ख़ालस विच्चों बाहर कढाहीआ। भगत सुहेले सन्त गुरमुख गुरसिख कर
११६६ तलाश, सूफ़ी आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। बिन गोपी काहन वखा ११६६
१९ के रास, सुरती शब्दी आपणा राग अल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वसे साथ, सदा सुहेला इक अकेला एकँकार १९
आपणा संग निभाईआ। जगत वासना माया ममता मोह कर के नास, शब्द नाद धुन करे शनवाईआ। साची सिख्या दे सर्ब गुणतास, दीन दुनी दए समझाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, धर्म दवारा एकँकार धरनी धरत धवल उपर इक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा इक होवे हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पार कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, करोड़ तेतीसा सिर ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बोलण हक जैकारा, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जलवागर तेरा नूर इलाही कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, सच सहारा इक्को इक समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम दा वजा इक नगारा, नौबत हक हक सुणाईआ। सतिजुग साचे, सच नाम दा होवे प्रकाश, प्रकाश्त होवे सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे आस, अबिनाशी करता दीन दुनी वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो लेखा लिख के गए भविख्त वाक्, कलम शाही नाता काग़ज़ नाल जुड़ाईआ। तिस दा लहिणा देणा पुरख अकाल चुकावे आप, निरगुण निरवैर आपणा हुक्म आप वरताईआ।

लोकमात धरनी धरत धवल उपर जोती जाता करे वड प्रताप, बेपरवाह आप आपणा खेल वखाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द मानव ज़ाती करे एको जाप, एका नाम सृष्टी दृष्टी अंदर दए दिसाईआ। जन भगतां कोट जन्म दे मेट के पाप, पतित पुनीत गुरमुख गुरसिख लए बणाईआ। रूह बुत्त दोवें कर के पाक, माटी ख़ाक देवे माण वड्याईआ। सुरती शब्दी कर इतफ़ाक, घर मेला मेले सहिज सुभाईआ। काया मन्दिर अंदर रहे ना अन्धेरी रात, निरगुण साची जोत जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा साचा राह, सति सति दवारा इक वखाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम दए एकँकारा धुर दा भूप, भूपत भूप करे पढ़ाईआ। संदेसा देवे चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण बचया रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले उठा के आपणे सुत, सति दवारे लए जगाईआ। सच सुहञ्जणी मौले रुत, पत्त टहणी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चार युग दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे, तेरे अंदर कोई ना पूजा होवे किसे बुत्त, बुत्तख़ाना रहिण कोए ना पाईआ। हरि का नाम मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ कदे जावे ना लुक, भगतां अंदर प्रगट हो के ढोला सोहला आप जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सतिजुग साचे नाम दी दस्से इक्को तुक, बहु विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के होवे सुख, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत बणा के आपणे सुत, सति धर्म इक्को मार्ग दए दृढ़ाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरनेक सिँघ दे गृह पिण्ड अजनौद ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे साचा नाम होवे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, जै जै जैकार इक्को इक कराईआ। जन भगतां खुल्ला मिले सच भण्डारा, भण्डारी हो के आप वरताईआ। नज़री आवे सचखण्ड दवारा, धुर दरबारा इक वखाईआ। ख़ुशीआं होवे मंगलाचारा, सोहला ढोला बेपरवाहीआ। साचा नूर होवे उज्यारा, उज्जल आपणा गृह वखाईआ। भगतां होवे प्यारा, भगवन दया कमाईआ। सांझा होवे घर बारा, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। बख़्शे चरण प्यारा, चरण चरणोदक मुख चुआईआ। किरपा करे परवरदिगारा, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दस्से एका ठांडा दरबारा, अमृत मेघ नाम बरसाईआ।

✪ १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरचरण सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दी होवे इक इबादत, कलमा कायनात पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप पढ़ाईआ। सच भण्डारा नाम निधान आत्म परमात्म जीव जंत देवे नयामत, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। चरण कँवल सच दवारे प्रेम प्रीती मुहब्बत विच देवे दावत, अबिनाशी करता दीन दुनी दा मालक सन्त सुहेले आप मिलाईआ। सच भण्डारा नाम निधान श्री भगवान देवे हक पदार्थ, चार कुण्ट ज़िमीं असमानां आप वरताईआ। सतिजुग साचे तेरा हकीकी होवे परमारथ, निजानंद इक्को रंग रंगाईआ। जगत ख़ाहिश पूरा करे सर्ब स्वार्थ, बुध बिबेक बख्श टेक, विवेकी आपणी कारे लाईआ। काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ सुहाए सच इमारत, सच दवारा एकँकारा इक्को इक वखाईआ। सिफ्तां विच धुर दे नाम दी लिखे अगम्मी इबारत, काग़ज़ कलम शाही देवे माण वड्याईआ। साचे सन्तां सतिगुर शब्द अगम्मी करे सफ़ारश, दीन दुनी विच्चों लेखा दए मुकाईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच बदल देवे आदत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ रखाईआ। मनुआ मन विकारी करे ना कोई बग़ावत, बग़लगीर चार वरन दए वखाईआ। सच महबूब हकीकी करे सख़ावत, सुखन गुर अवतार पैगम्बरां पूर कराईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना कोए अलामत, इलम दे आलम उल्मा गुरमुख दए बणाईआ। सच दवारे ऊँचां नीचां राउ रंकां होवे ना कोए ममानत, बंक दवारा इक्को इक दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड तेरा सच दवारा धरनी धरत धवल दए उसार, अवल आपणी सेव कमाईआ। सतिजुग साचे तेरा धर्म दा होवे राज, रईयत वेखे शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आत्म परमात्म बणावे सच समाज, समग्री जोत इक्मी इक्को इक वरताईआ। सतिगुर शब्द दुरमति मैल धोवे सब दा दाग़, पतित पापी पुनीत दए कराईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे वाद विवाद, जगत विकार विषयां लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों लभ्भे साध, साधना साचे नाम दी दए जणाईआ। काया खेड़ा जीव जंत कर आबाद, नाम निधाना श्री भगवाना गृह भीतर दए टिकाईआ। घट घट अन्तर तूं मेरा मैं तेरा करके प्रगट आवाज़, नाद धुन दर बिन तन्द सतार दए वजाईआ। सति सतिवादी शब्द अनादी दस्स के आपणा राग, छत्ती रागां दा लेखा दए मुकाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, माणक मोती सोहँ साची चोग चुगाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग तेरी साची लोकमात पावे रास, गोपी काहन आपणा नूर वखाईआ। दूजा रहे कोई ना पास, पासा दीन दुनी दए उलटाईआ। सब दी पूरी करे आस, आसा मनसा खोजे थाउँ थाँईंआ। गुर अवतार पैगम्बर सचखण्ड दवारे वेखण मार झाक, लोकमात ध्यान लगाईआ।

सब दा लहिणा देणा करे बेबाक, बाकी नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचे तेरा कारज करे रास, रस्ता आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होण ना देवे उदास, प्रभास विच्चों प्रभाती दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, तेरा मार्ग दवारा होवे रमनीक, सोभावन्त आप सुहाईआ। कुछ लेखा लिख के गया रिषी बाल्मीक, राम वशिष्ट देण गवाहीआ। जिस दी वेद व्यास कीती तस्दीक, कृष्न लेखा सुदामे नाल रखाईआ। ईसा मूसा हज़रत मुहम्मद कर उडीक, सदी चौधवीं रंग चढ़ाईआ। नानक गोबिन्द दस्स के गए तारीख, बीस इकीसा वज्जे हक वधाईआ। परवरदिगार सांझा यार प्रगट करे आपणी इक तौफ़ीक, तोहफ़ा देवे थाउँ थाँईंआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेले खेल लाशरीक, वाहद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे, सच दवारे बख्शे तेरी दीद, दीदा दानिस्ता इक्को नूर नज़री आईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम देवे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणी दया कमाईआ। जिस दी समझे कोए ना बारां रासी, अंकड़यां विच हिन्दसयां विच अक्खरां विच परदा सके ना कोए उठाईआ। सो साहिब समरथ आदि जुगादि जुग चौकड़ी सचखण्ड निवासी, सति दवारा एकँकारा इक्को दए प्रगटाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़न दस्से अगम्मी घाटी, रहबर हो के रस्ता आपणा दए वखाईआ। आत्म परमात्म निरगुण बणे साथी, धुर दा संगी ११६६ १६
बहुरंगी आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख हरिजन बणा के इक जमाती, अक्खर वक्खर आपणा नाम दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी रहिण ना देवे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल धुर दा वासी, वास्ता वास्तक आपणे नाल जुड़ाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरभजन सिँघ दे गृह बस्ती गुजरां लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साची किरपा करे सूरा सरबगा, सूरबीर योद्धा एका आपणा नाम प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात रहिण ना देवे दग़ा, झूठ फ़रेब ना कोए वड्याईआ। सृष्ट सबाई नाम संदेसा इक्को देवे सदा, हुक्में अंदर हुक्म आप समझाईआ। मानव ज़ाती धर्म दवारा इक्को वसे जग्ग, सच दवारा एकँकारा आप सुहाईआ। नाम खुमारी धुर दा जाम प्याए अगम्मी मधा, मधुर धुन आपणी इक जणाईआ। हुक्में अंदर दो जहान होवे बध्धा, बन्दगी विच सारे सीस झुकाईआ। प्रभ मिलण दा साचा होवे धन्दा, कर्म कांड इक्को इक वखाईआ। मन वासना रहे कोए ना गंदा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। अमृत सरोवर वखाए साची गंगा, झिरना धुर दा आप झिराईआ। करे खेल आप बहु रंगा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नाम निशाना

झुले इक्को सत्तरंगा, चार कुण्ट दहि दिशा नज़री आईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी दिसे कन्ढा, पार किनारा आपे दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां साचा देवे नाम अनन्दा, अनन्द हर हिरदे दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम होवे प्रसिद्ध, सिध साधक ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म साची दस्से मिलण दी बिध, नाता बिधाता लए जुड़ाईआ। झगड़ा मुका के नौ अठारां रिद्ध सिद्ध, साचा रस्ता दए वखाईआ। अमृत झिरना झिरा निझ, घर विच घर देवे वड्याईआ। जन्म मरन दा कारज करे सिध, सदीआं दे विछड़े लए मिलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बण के धुर दा पित, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। सदा सुहेला इक इकेला दर्शन देवे नित, निज नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। घड़ी सुहञ्जणी करे थित, वार आपणे रंग रंगाईआ। प्रेम प्यार दी गुरमुखां अंदर ला के खिच्च, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण हो के बहे काया मन्दिर विच, सच दवारे सोभा पाईआ। जिस दा बन्द कदे ना होया भित, भीतर आपणा खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी साचा मार्ग ला के लहिणा देणा देवे लिख, लेख लिख्त आपणा हुक्म वरताईआ। लेखे ला के गुरमुख सिख, सन्त सुहेले आपणे घर वसाईआ। सतिजुग साचे सब दा मालक प्रितपालक परमात्मा होवे इक, एकँकारा आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कदे ना देवे पिठ, करवट बदल सनमुख हो के नज़री आईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, एका नाम होवे माएज़ील, मीज़ो मज़ायल नज़री आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म चले तैवाज़ोईल, लीलेन ज़ुरा खेल खिलाईआ। शब्दी नाद वज्जे ज़ाएज़ील, चविस्ते ज़ू ज़ीआ जधा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे ताअमील ख़ुदाए अज़ील, अमीनउलनिज़ा ज़ीवे ज़ूहा नज़री आईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम होवे औज़ूबुज़ा, बज़ाते ख़ुद दए वड्याईआ। नूरे निज़ा होवे ग़िज़ा, मीज़ाने मिज़ो समझ कोए ना पाईआ। ज़वीले इज़ाह ज़मूने निज़ा, ज़ीऊकलज़वा ज़ाहरे ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ज़ीओनीअल अवां, सिहराए हवा, आबे नूर नूरे ख़ुदा, नज़रे नज़ीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बज़ाते ख़ुदा, इबादे रवां, शैहज़ादे सीआं, नादे आवाज़, बागे बेज़बां, ज़ाहर ज़हूर वड्डी वड्याईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरबंस कौर दे गृह लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा लावां टिक्का, इष्ट आत्मा परमात्मा इक्को दयां दृढ़ाईआ। साचे मार्ग ला के वड्डा निक्का, निरगुण सरगुण दयां समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के बणां धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा नाउँ उपजाईआ। सच प्यार दा दस्सां साचा हित्ता, मुहब्बत विच मेहर नज़र उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नूर दिशा, दूसर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जन भगतां साचे सन्तां कदे ना देवां पिच्छा, मेहरवान हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां जुग चौकड़ी करां रिछा, रछक हो के वेखां थाउँ थाँईआ। साचे नाम दी पावां अगम्मी भिच्छा, भुखयां झोली दयां भराईआ। लहिणा देणा वेख वखावां जो कलयुग कर्म कीता, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फुलाईआ। परदा ओहला चुकावां ठग्ग चोर सज्जण मीता, मित्र प्यारे आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी सति धर्म चलाए रीता, रीतीवान रुत्त आपणे नाल महकाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी दस्सां अगम्मी बोली, सोहँ ढोला शब्द बेपरवाहीआ। साचे कन्ढे सृष्टी जावां तोली, लख चुरासी जीव जंत बचया रहिण कोए ना पाईआ। भगत भण्डारा

११७१ जावां खोल्ही, भगवन हो के आपणा नाम वरताईआ। सन्त सुहेले बणाउँदा जावां साचे घर दी गोली, गुरमुख सेवक आपणे ११७१

१६ रंग रंगाईआ। निरगुण जोत आत्म परमात्म बणाउँदा जावां विचोली, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साचे प्रेम रंग दी खेलां १६

होली, लाल गुलाला आपणा नाम वखाईआ। सति धर्म दी जगत चढ़ावां साची डोली, बण कहार भार आपणे कंध उठाईआ। देवां वस्त इक अनमोली, करता कीमत ना कोए लगाईआ। सुरती रहे ना किसे भोली, भाउ आपणा दयां समझाईआ। वासना रहे ना मन दी गोली, काया गोलक अंदर साची वस्त दयां टिकाईआ। मुहब्बत विच अंदर बाहर रंगां चोली, पंज तत दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा सति सच सरूप समझाईआ। सतिजुग साचे, मेरे नाम दा अगम्मी नुकता, अक्खरां वाली ना बहु वड्याईआ। जिस दा पैंडा मंज़ल गयां कदे ना मुकदा, जगत पाँधी भज्जण वाहो दाहीआ। उह भेव खुल्हावे पड़दे ओहले लुक दा, स्वच्छ सरूप हो के नज़री आईआ। जन भगतां नाता जोड़ के पिता पुत्त दा, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। जिस दा भाणा कदे ना रुकदा, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। ओस दा शब्द निशाना कदे ना उकदा, दो जहानां अणयाला तीर चलाईआ। झगड़ा मुकावे कलयुग कूड़ कुड़यारे दुःख दा, सुख आत्म दए उपजाईआ। लेखे ला के जन्म गुरसिख मानस मनुक्ख दा, मोहण माधव बख्शे इक सरनाईआ। सतिजुग तेरा वक्त सुहञ्जणा लोकमात दिसे ढुकदा, घड़ी पल लए अंगड़ाईआ। सन्त सुहेला भगवन इक्को

झुकदा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। जिन्हां नाम गाया तेरी अगम्मी तुक दा, तुख्म ताअसीर गए बदलाईआ। ओन्हां अद्धविचकार राए धर्म मूल ना पुछ दा, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। इक्को घर मिले सच सुच दा, सचखण्ड दुआर साचा सोभा पाईआ। जिस मंज़ल ते अगला पैंडा मुकदा, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी बण के गुरमुखां गोदी चुक्कदा, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां ख़ातर जुग चौकड़ी नित नवित आपणी धारों उठदा, जननी कुक्ख विच कदे ना आईआ।

1172 / १९

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मदन लाल दे गृह लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा उपजे सच तराना, धार धुर दी दए समझाईआ। साचा मार्ग दस्से इक निशाना, नछावर होणा दए समझाईआ। चरण कँवल समझाए इक ध्याना, नेत्र नैण अक्ख बदलाईआ। साचा प्रेम करना समझाए श्री भगवाना, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे रंग रंगाईआ। मस्त खुमारी अंदर करे दीवाना, दर घर देवे माण वड्याईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अंदर करयाना, कर्म दे कर्म रोग बाहर कढाहीआ। मनुआ मन लाए ना कोए बहाना, दग़ा फ़रेब ना कोए कमाईआ। सज्जण रहे ना कोए बेगाना, मीत नज़री सारे आईआ। खेले खेल वाली दो जहानां, जहालत कूड़ी दए गवाईआ। जन भगतां दे के नाम निधाना, रिधां सिधां डेरा देवे ढाहीआ। चतुर सुघड़ बणा के बाल अंञाणा, बिबेक बुध दए कराईआ। शब्दी शब्द साचे चाढ़ बबाणा, सच दवारे लए पहुंचाईआ। जित्थे मिले एको परम पुरख सुल्ताना, सति सतिवादी डेरा लाईआ। जन भगतां साचे सन्तां ठांडे दर देवे माणा, अभिमान संग ना कोए निभाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत साचे गृह कर परवाना, परवानगी आपणा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे, सर्ब जीआं दा बण के धुर दा कान्हा, मालक हो के मेला लए मिलाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरदेव सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

गुर अवतार पैगम्बर कहिण अख़ीर, सचखण्ड दवारे मुकामे हक प्रभ अगे सीस निवाईआ। परवरदिगार सांझे यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शरअ कट ज़ंजीर, दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच लेखा दे मुकाईआ। कूड़ी क्रिया लोकमात कलयुग चार वरन

अठारां बरन मेट लकीर, साहिब स्वामी अन्तरजामी पूरन ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों बदल दे जमीर, ज़ामन हो के धुर दे राम एका नाम दे समझाईआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, मानव ज़ाती मिल के मानव वज्जे वधाईआ। मन वासना रहे ना कोए दिलगीर, जगत तृष्ना ममता मोह ना कोए सताईआ। किरपा कर शाह पातशाह बेनज़ीर, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दी दस्स के आए तदबीर, तरीका शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी समझाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ कर के आए ताअमीर, अठसठ तीर्थ तट जगत वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साफ़ पवित्र पाक रिहा ना कोए नीर, साचा सीर अमृत जाम मुख ना कोए चुआईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नेत्र रोवे शाह हकीर, सांतक सति धीरज धीर ना कोए धराईआ। जूठ झूठ दहि दिशा घत्ती जाए वहीर, सच सुच मेल ना कोए मिलाईआ। जीवां जंतां बदले ना कोए तकदीर, तरीका हक ना कोए समझाईआ। जुग बदलना पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा खेल कदीम, कुदरत दे मालक तेरी कार चली आईआ। सच महल अटल उच्च मीनार वखा अज़ीम, आलीशान बेमुकाम आपणा परदा दे उठाईआ। अगे रहे ना तेरे नाम दी कोए तक्सीम, साचा नाम इक्को दे
११७३ दृढ़ाईआ। आपणा मार्ग दस्स महीन, मात ज़मीन उत्ते आप प्रगटाईआ। हुक्मे अंदर कर तरमीम, तह्रा तह्रा दे समझाईआ। ११७३
१६ गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरे उत्ते सानूं यकीन, यके बाद दीगरे सारे सीस निवाईआ। चार युग तेरे सेवक बण के रहे अधीन, लोकमात भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया दे हर, सतिजुग साचा इक उपजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साडी चरण कँवल नमस्ते, सजदा कर के सीस झुकाईआ। खेल वेखीए पुरख समरथ दे, जुग चौकड़ी साडी आसा चली आईआ। साचा मार्ग साहिब स्वामी इक्को दस्स दे, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को इष्ट मनाईआ। चार वरन अठारां बरन खुशीआं विच वेखीए हस्स दे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दीर्घ रोग ना कोए सताईआ। पड़दे लाह आपणी अगम्मी अक्ख दे, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले भगत जन तैनूं लोकमात लभ्भदे, चार कुण्ट दहि दिशा वेखण थाउँ थाँईआ। बिना तेरी किरपा पुरख अकाल दीन दयाल तेरे दर मूल ना सजदे, साचा घर नज़र किसे ना आईआ। मेहरवान महबूब हो के कलयुग कूड़ी क्रिया मात विच्चों कढ्ढदे, धरनी धरत धवल उपर रहिण कोए ना पाईआ। लेखे मुका के रहिणे अड्ड दे, आत्म परमात्म मेला लै कराईआ। जगत विकार मुका दे जग दे, जागरत जोत कर रुशनाईआ। झगड़े रहिण ना त्रैगुण माया तृष्ना अग्ग दे, तृखा कूड़ी दे बुझाईआ। नाम प्याले प्या अगम्मी मध दे, सच खुमारी इक चढ़ाईआ। दरस करा काया काअबे वाले हज दे, हज़रत

पैगम्बर रसूल माकूल इक्को नज़री आईआ। राग सुणा आपणे अगम्मी नद दे, रसना जेहवा बत्ती दन्द बोलण दी लोड़ रहे ना राईआ। धर्म निशाने चार कुण्ट दहि दिशा गड्ड दे, वाहिद खुदा गॉड राम अल्ला वाहिगुरू तूं ही नज़री आईआ। लेखे रहिण ना दीनां मज़्हबां वाली हद दे, हदूद महिदूद इक्को इक वखाईआ। जित्थे आत्म परमात्म प्रेम प्रीती प्रीती नाते बज्झदे, भजन बन्दगी इक्को दे समझाईआ। नाम नगारे होवण वज्जदे, तुरीआ पद तों अगे कर पढ़ाईआ। जित्थे सन्त सुहेले निरगुण जोत विच मिल के सजदे, नाता तत्तां वाला तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ वेख दीन दुनी दा रस्ता, कलयुग भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। साचा खेड़ा तन मन्दिर दिसे किसे ना वसदा, वसल यार हक महबूब सच ना कोए कमाईआ। मन वासना जगत जहान फिरे नसदा, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। माया ममता मोह विकार विच तपदा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मानस जन्म होया कक्ख दा, अन्त कीमत ना कोए चुकाईआ। अबिनाशी करते इक्को मार्ग दस्स सच दा, सच साजण हो के दे समझाईआ। लेखा मुका दे उबलण वाली रत्त दा, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। झगड़ा रहे
११७४ ना माया डस्सणी सप्प दा, सति सरूप आपणा दे वखाईआ। हिस्सा रहे ना तेरे जप दा, नाम ढोला गीत कलमा इक्को ११७४
१६ इक सृष्ट सबाई देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल कर हकीकत हक दा, हाकम १६
हो के धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुरू अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साडी अन्तिम होई बस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी गीता ज्ञान अञ्जील कुरान बसतयां विच बन्ह बैठे मुख छुपाईआ। अक्खरां वाले नाम दा चले कोई ना वस, अल्ला राम वाहिगुरू कृष्न कह के सारे पाप रहे कमाईआ। काया मन्दिर अंदर दिसे कोई ना सच, जूठ झूठ भरम भुली जगत लोकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किरपा कर पुरख समरथ, परवरदिगार सांझे यार ठांडे दरबार तेरे अगे अरज़ सुणाईआ। सति सतिवाद शब्द अनाद ब्रह्म ब्रह्माद मार्ग दस्स हर हिरदे अंदर वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख हरिजन हरि भगत सन्त प्यारे कर इक्ठ, सूफ़ी फ़कीर आपणे अंग लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म नाता जोड़ सच, साचा मार्ग दीन दुनी इक्को दे वखाईआ। भाग लगा साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दे सुहाईआ। लूं लूं अंदर जा रच, साढे तिन्न करोड़ तेरा ढोला गाईआ। नाम भण्डारा वस्त अमोलक दे वथ, वास्ता पा के तेरे अगे मंग मंगाईआ। जिस नूं चार वरन अठारां बरन इक्को रस विच कहिण जप, अक्खर वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कोट जन्म दे उतारे पप, पतित पापी पुनीत दए कराईआ। सन्त सुहेले लोकमात लै रख, रखक हो के वेख वखाईआ।

तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख समरथ, वड वड्डा नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ जो जन तेरी सरनी जाए ढठ्ठ, मस्तक टिक्का धूढ़ी खाक रमाईआ। उह सिध्धा सचखण्ड दवारे तेरे चरण कँवलां जाए वस, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। निरगुण नूर करना जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेरा अंदरों बाहर कढाहीआ। परमात्म हो के आत्म देणा साथ, सगला संग वखाईआ। सो गुरमुख सज्जण मीत प्यारा अबिनाशी करते वसे तेरे पास, जगत विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। तूं दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्ता आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता नज़री आईआ। साचे मण्डल निरगुण निरगुण पारब्रह्म वेखे बिन गोपी काहन तेरी रास, सच दवारे बह के ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ हउँ सेवक तेरे दास, दासी दास रूप वटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी साडी बेनन्ती आरज़ू अरज़ मन्न अरदास, आजिज़ हो के सीस झुकाईआ। जन भगतां कर बन्द खुलास, बन्दीख़ाना जन्म मरन देणा मिटाईआ। जो जन गुरमुख बण के आ गए तेरे पास, तिन्हां दी पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दुआर खड़ने ख़ास, दरगाह साची मुकामे हक डेरा देणा लाईआ। क्यों प्रभू उन्हां तेरे उत्ते रख्या विस्वास, विषयां वाला गुरू ना कोए मनाईआ। उन्हां पूरी करनी आस, आसा मनसा आपणे विच समाईआ। मानस जन्म करना रहिरास, चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लहिणा देणा मुकाईआ। सच दवारा बख़्शणा जित्थे मेल कबीर रविदास, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साचा जोड़ना इक्को नात, जन भगतां देणा धुर दा साथ, पन्ध मुकाउणा पृथ्मी आकाश, निज दवारे करना वास, जित्थे निर्मल जोत होवे प्रकाश, सूर्या चन्द नज़र कोए ना आईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सुखवन्त कौर दे गृह लुधियाणा ✪

पुरख अकाल कहे सुणो पैगम्बर गुरू अवतार, निरगुण निरवैर निराकार दए दृढ़ाईआ। खेलां खेल अगम्म अपार, जोती शब्दी धार आपणा हुक्म वरताईआ। लहिणा देणा जाणा जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखां थाउँ थाँईंआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल देवां हुलार, चौदां लोक चौदां तबक सोया रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा धरनी धरत धवल पावां सार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण परदा चुक्कां चाँईं चाँईंआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच करके आए इज़हार, ज़ाहर ज़हूर करां रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हो उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कल प्रगटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप पावां सार, महासार्थी हो के आपणा रथ चलाईआ। जोती

११७५
१६

जोता सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पैगम्बर धीरज धीर दलासा रिहा दवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर, साची करनी कार कमावांगा। सो पुरख निरँजण हो के आपणी खेल रचावांगा। हरि पुरख निरँजण हो के आपणी धार प्रगटावांगा। एकँकार खेल कर करतार, कुदरत दा मालक हो के वेस वटावांगा। आदि निरंजन हो उज्यार, जोत निरंजन डगमगावांगा। अबिनाशी करता हो के खोल्हां किवाड़, भेव अभेदा आप चुकावांगा। श्री भगवान हो के लेखा जाणां जुग चौकड़ी चार, सृष्टी दृष्टी आपणा रंग रंगावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले विच संसार, दुनिया कायनात आपणा घर वसावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव दे हुलार, आलस निंद्रा सब दा बिन अक्खां अक्ख खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी कार कमावेगा। पुरख अबिनाशी खेल खिलावेगा। निरगुण सरगुण वेस वटावेगा। जोती जामा नज़र किसे ना आवेगा। शब्द अनादी नाद वजावेगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणावेगा। चार युग दा पिछला लेखा करके याद, परदा ओहला आप उठावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बरबाद, सतिजुग साचा राह चलावेगा। तूं मेरा मैं तेरा वज्जे इक्को नाद, धुंन आत्मक राग अलावेगा। साहिब हो के होए विस्माद, रूप अनूप आप प्रगटावेगा। सतिजुग साचे खोल्हे राज़, राज़क रहीम आपणी कार कमावेगा। लख चुरासी विच्चों परखे साध, सन्त गुरमुख गुरसिख आप उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल विच ब्रह्मांड, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेला आप मिलावेगा। हरि मेला मेल मिलावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। वरनां बरनां डेरा ढावेगा। साची सरना इक रखावेगा। जगत तरना इक दरसावेगा। हरनां फरनां आप खुल्हावेगा। साची पौड़ी चढ़ना आप सिखावेगा। बिन अक्खां दर्शन करना, सचखण्ड दवारे परदा लाहवेगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साचा ढोला सब ने पढ़ना, दीन दुनी आप समझावेगा। सतिजुग साचे तेरा घाड़न साचा घड़ना, रूप अनूप आप दरसावेगा। झगड़ा मुका के वरनां बरनां, इक्को आपणा रंग रंगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक वखावेगा। साचा मार्ग इक्को लग्गेगा। निरगुण दीपक जोत जगेगा। कलयुग अन्ध अन्धेर भज्जेगा। भगत भगवान एका दर सजेगा। शब्द अगम्मी नाद वज्जेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों मेहरवान हो महबूब बाहर कढ्ढेगा। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। शब्दी धार करां हक सुअम्बर, जीव जंत मन बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। सर्ब कला समरथ स्वामी हो परतंभर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कर प्रकाश उपर अम्बर, ज़िमीं ख़ाकी ख़ाके सारे वेख वखाईआ। जन भगतां दे के धुर दा इक अनन्दन,

अनन्द आत्मा दयां जुड़ाईआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी तोड़ के बन्धन, बन्दगी इक्को दयां समझाईआ। सच दुआर एकँकार जीव जंत साध सन्त सारे मंगण, इष्ट देव पारब्रह्म स्वामी पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी प्रीती नाता गंढुण, गहर गम्भीर बेनज़ीर धुर दा मेला लए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए साचा छन्दन, अक्खर वक्खर इक पढ़ाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी सर्ब जीआं हो बख्शंदन, बख्शिश रहमत रहीम सरगुण निरगुण आपणी मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग साचा नाम गुण निधान निरवैर हो के आए वण्डण, घट गृह भीतर मन्दिर अंदर अन्तर सब दे दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण धूढ़ी साचा टिक्का लाए धुर दा चन्दन, कलयुग कूड़ी विख रहिण कोए ना पाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ लाल सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

पुरख अकाल कहे मैं आपणा हुक्म वरतावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ, धरनी धरत धवल समझावांगा। जोत सरूपी आपे हो, लख चुरासी फोल फुलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया नालों कर निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ावांगा। मनुआ कर ना सके धरोह, गुरमुख गुरसिख आप जगावांगा। आत्म परमात्म निरगुण निरगुण जाए छोह, शाला आपणा रंग रंगावांगा। जिस खेल नूं जाणे ना को, सो करनी दा करता हो के आप करावांगा। सच प्रकाश कर के लो, लोक परलोक परदा लाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक उपजावांगा। साचा हुक्म इक प्रगटावेगा। परम पुरख परमात्म खेल खिलावेगा। भेव अभेदा ज़ाहर बातन आप चुकावेगा। कलयुग मेट अन्धेरी रातन, धुर दा साचा चन्द चमकावेगा। जन भगतां निज घर कर के वासन, गृह मन्दिर सोभा पावेगा। साचा नूर कर प्रकाशन, जोती जोत डगमगावेगा। चार वरन इक्को दस्स प्रभातन, प्रभाती आपणा खेल खिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बण के साचा साजण, सज्जण सुहेले पार करावेगा। सज्जण सुहेला पार लाएगा। दीनां बंधप खोज खुजाएगा। जन्म जन्म उतार के बोझ, समझ सूझ सोच आपणी इक समझाएगा। बालक अंञाणे चुक्क के गोद, धुर दी गोदी आप उठाएगा। मन वासना हिरदा सोध, सुधासर विच इश्नान इक कराएगा। नाम निधाना दे के बोध, बुद्धी दा परदा आप चुकाएगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के साचा जोग, जुगती आपणे हथ्थ रखाएगा। जन्म कर्म

११७७
१६

दा रहिण ना देवे रोग, चिन्ता सोग ग़म मिटाएगा। जन भगतां मेला कर के धुर संजोग, जोड़ा धुर दा आप जुड़ाएगा। जित्थे कोई ना सके पहुंच, गुरसिख सुहेले आप बहाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण कँवल दरस के साची मौज, मजलस महबूब हो के मुर्शद मुरीद आपणी इक वखाएगा।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ भजन सिँघ दे गृह उँचा पिण्ड सनेत ✪

सतिजुग साचे, साचा नाम होए प्रवेश, काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। जन भगतां कोलों छुडाए लोकमात प्रदेश, देस धुर दा दए वखाईआ। जिस घर सन्त सुहेले रैहन्दे हमेश, सच दवारे सोभा पाईआ। तिस गृह दस्से करनी हक आदेस, सीस जगदीश किव झुकाईआ। अगे रहे कोए ना लेख, पिछला लेखा दए बदलाईआ। नाम निधाना देंदा रहे संदेश, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। निरगुण हो के करदा रहे हेत, प्रेम प्रीत निरगुण आप वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
११७८ आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां नाम भण्डारा देवे अनगिणत, लेखा गणत ना ११७८
१६ कोए गणाईआ। दूसर अगे करनी पए ना मिन्नत, भिखारी हो के मंगण कोए ना जाईआ। झगड़ा करे कोई ना निन्दक, १६
दूत दुष्ट ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल बख्शे इक सरनाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम होवे बहु गुण, अनगिणत दए वड्याईआ। जन भगतां अंदर लगाए रुण झुण, बिन तन्द सितार हिलाईआ। सच पुकार काया मन्दिर अंदर लए सुण, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति साचा राह प्रगटाईआ। साचा राह दस्से हरि स्वामी, समरथ हथ्थ वड्याईआ। चार वरनां बख्श इक निशानी, निशाना धर्म दए वखाईआ। हरि पुरख निरँजण सुणाए आपणी बाणी, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। साचे सन्तां दे के पद निरबाणी, धर्म दुआर दए वखाईआ। अमृत आत्म बख्श के ठंडा पाणी, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आवण जावण मुका के चारे खाणी, ख़ालस रंग दए रंगाईआ। मंज़ल चाढ़ के हक रुहानी, आत्म परमात्म मेला मेले सहिज सुभाईआ। जन भगतां चरण प्रीती लेखे लावे सच्ची कुरबानी, कदमां दी धूढ़, कदीम दे विछड़े पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे ज़िमीं असमानी, आसान मुश्कल मुश्कल आसान आपणे हुक्म विच रखाईआ।

✪ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ निरँजण सिँघ दे गृह उच्ची अबादी लुधियाणा ✪

सतिजुग कहे प्रभ साचा नाम होवे की, करनी दे करते कुदरत दे मालक दे समझाईआ। किस बिध लहिणा देणा लेखा जाणें लख चुरासी जीअ, जीव जंत साध सन्त अन्तर अन्तर खोज खुजाईआ। किस बिध लोकमात सति धर्म दी रखावें नींह, भेव अभेदा अछल अछेदा दएं जणाईआ। कलयुग लहिणा देणा मुकावें साढे तिन्न हथ्थ सीं, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। सतिनाम दा बीजें अगम्मी बी, किस बिध अमृत बरखें मींह, मेघला तेरा नाम नज़री आईआ। सन्त सुहेले बणा के पुत्तर धी, नाता आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सच दवारा करें वसीह, वरन बरन वण्ड ना कोए ना वण्डाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले कर बरी, बन्दीख़ाना दएं तुड़ाईआ। सच्चे घर बाहर सुहंञणी करें घड़ी, सच घड़याल इक्को इक वजाईआ। तेरे प्रेम दी अगम्मी लग्गे झड़ी, बूँद स्वांती घर घर दएं चुआईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जाए फड़ी, कवण तरीके नीकण नीके आपणी कार कमाईआ। कूड़ी क्रिया जगत माया ममता जावे सड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, भेव अगला दें दरसाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दा सुहञ्जणा होवे किस बिध वक्त, चार युग दा लेखा किवें मुकाईआ। किस बिध मार्ग लावें दीन दुनी विच जगत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले उठावें किस बिध भगत, भगवन हो के दे समझाईआ। कवण धार नूरी जोत होवे तेरी शक्त, सतिजुग विच्चों असलीअत दएं वखाईआ। मानव ज़ाती विच रहिण ना देवें फ़र्क, फ़रीक रफ़ीक इक्को रंग रंगाईआ। तेरा हुक्म संदेसा सुणे चारों तरफ़, कुण्ट दिशा ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दी महिमा सिफ्त करे इक्को हरफ़, बहुत हरूफ़ वण्ड ना कोए वण्डाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त किस बिध लख चुरासी करें परख, घट निवासी घट घट वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उपर करें आपणा तरस, रहमत विच आपणा रैहम कमाईआ। जोती जामा धार लोकमात आवें परत, पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करें शर्त, शरअ दा शरीअत वाला लेखा दएं मुकाईआ। साचा खेल दो जहानां करें निधड़क, चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या सीस जगदीश इक झुकाईआ। भेव अभेदा किस बिध खुल्ह्वावें अर्श फर्श, जिमीं असमानां किस बिध परदा आप उठाईआ। किस बिध लहिणा देणा पूरब जन्मां सब दा पूरा करें कर्ज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा दर साचे मंग मंगाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ किस बिध मात होइउँ प्रगट, मैनूं सच दे दृढ़ाईआ। तेरा नाम वेखां हर घट, घट घट तेरा नूर होवे रुशनाईआ। सहिज सुभाउ समरथ स्वामी आपणा भेव दस्स, परदा ओहला दे उठाईआ। तेरी आत्म किस बिध होवे

तेरे वस, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। निज नेत्र सब दी खुल्ही रहे अक्ख, लोचन नैण पलक ना कोए बदलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार किस धारों आवें वत, बेवतन हो के वतन लोकमात दएं सुहाईआ। भेव अभेदा दस्स श्री भगवान धुर दे कमलापति, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा किस दवारे आत्म परमात्म मिल के इक दूजे दा करन जस, सिफ्तां विच सिफ्ती ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सर्ब कला समरथ सब कुछ तेरे हथ्थ, दाते दानी दातार हो के देणा जणाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ किस बिध मेरे नाम दा वज्जे डंका, नाल तेरी होवे शनवाईआ। परदा खुल्ले अंदरों जीवां जंता, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। गढ़ तुटे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। किस बिध निरगुण सरगुण बोध अगाधा बणें पंडता, विद्या तों बाहर करें पढ़ाईआ। चार कुण्ट होवे तेरी मनता, मिन्नतां विच वेखां सर्ब लोकाईआ। फिरे दरोही साची सिम्मता, सिमरन इक्को तूं ही तूं नज़री आईआ। सच दवारे एकँकारे किस बिध साची प्रगट होवे हिम्मता, जोरू ज़र लेखा दएं मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ किस बिध लख चुरासी हिरदे वसें, हर हिरदा फोल फुलाईआ। किस बिध नाम निधाना दस्सें, दहि दिशा करें पढ़ाईआ। किस बिध आत्म परमात्म हो के वसें, हस्ती विच्चों हस्ती दएं बदलाईआ। किस बिध साचा दरस कराएं निज अक्खें, आखर आपणा मेल मिलाईआ। किस बिध जन भगतां लोकमात पत रखें, पतिपरमेश्वर हो के होवें सहाईआ। किस बिध गुर अवतारां पैगम्बरां पूरे करें चार युग दे पटे, अगे लेखा ना कोए बणाईआ। किस बिध साचा नाम विकावें इक्को हट्टे, जन भगत वणजारे चारों कुण्ट लएं उठाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया मेटें रट्टे, झगड़ा रहे ना सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किस बिध सचखण्ड दवारे भगत वेखें सच्चे, सति सच आपणे नाल मिलाईआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मल सिँघ दे गृह पिण्ड रज्जीवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति कहे खेल वेखी सचखण्ड निहचल धाम अटल दी, निरगुण निरवैर निराकार सोभा पाईआ। दीपक जोत अगम्मी बलदी, परम पुरख परमात्म अबिनाशी करता डगमगाईआ। जिस दी आदि जुगादी खेल अछल अछल्ल दी, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण सरगुण नाम संदेसा शब्द घलदी, गुर अवतार पैगम्बर जीव जंत सर्ब पढ़ाईआ। आत्म धार हो के लख चुरासी अंदर रलदी, घट घट अंदर आपणा आसण लाईआ। धार चला के जल थल दी, टिल्ले पर्बत

समुंद सागर आपणा हुक्म वरताईआ। खेल जाणे कलयुग अन्तिम कल दी, कल काती फोले चाँईं चाँईंआ। धुर दे हुक्म अंदर भाणे वाली भावी कदे ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। सति कहे मैं वेख्या सच दवारे सति सन्तोख, दर ठांडा इक्को नज़री आईआ। जित्थे गुर अवतार पैगम्बर मंगे कोई ना मोख, माया ममता मोह ना कोए हल्काईआ। हउमे हंगता चिन्ता ग़म हरख़ कोए ना रोग, आलस निंद्रा रूप ना कोए वटाईआ। जगत वासना भोगे कोई ना भोग, तत वजूद सोभा कोए ना पाईआ। खेड़ा दिसे ना कोई चौदां लोक, चौदां तबक वण्ड ना कोए वण्डाईआ। अक्खरां वाला तत्तां वाला सिफ्तां वाला पढ़े ना कोए सलोक, रसना जेहवा बत्ती दन्द जगत विद्या ना कोए शनवाईआ। जगत दवारे छप्पर छन्न नज़र आए ना कोई कोट, किला गढ़ बंक दुआर ना कोए वड्याईआ। इक अकल्ला एकँकार करे प्रकाश निर्मल जोत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी डेरा लाईआ। जिस दी एथे ओथे दो जहानां ना कोई वरन गोत, दीन मज़्हब ज़ात पात शरअ शरीअत ना कोए जणाईआ। जिस नूं बुद्धी वाली समझ ना सके सोच, मानस मनुआ भेव कोए ना आईआ। सो स्वामी अन्तरजामी आपणा देवणहारा आदि

जुगादी जुग चौकड़ी हक सलोक, नाम नरेशा इक्को इक सुणाईआ। आत्म परमात्म धार हो के होवे मोहत, मुहब्बत विच महबूब आपणा मेल मिलाईआ। नाम खुमारी अंदर करे मदहोश, धुर दा जाम हकीकी आबेहयात इक वखाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण हो के सति दवारे जो रिहा ख़ामोश, सरगुण लोकमात हुक्म संदेशे जगत सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर जिस दी रख के गए ओट, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त श्री भगवन्त गया पहुंच, दूर दुराडा नेरन नेरा आपणा पन्ध वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा अगम्मी शब्द जणाईआ। सति कहे मैं सचखण्ड तक्कया एकँकार उह, जिस दी उसतत शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे सद गाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर देंदे गए सो, सो स्वामी सदा नेहकामी अन्तरजामी आपणी खेल खिलाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण हो, नाम होका सच सलोका रागां नादां शब्दां विच सुणाईआ। जिस नूं अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कोई ना सके जोह, बेअन्त कह के सारे गए गाईआ। जिस दा नूर उजाला ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं ज़िमीं असमानां करे लो, जोत प्रकाशी घट निवासी पारब्रह्म ब्रह्म आपणा खेल वखाईआ। सो दीन दयाला हो कृपाला कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां देवण आया धुर दा ढोआ ढोअ, नाम अगम्मा मात पित किसे ना जम्मां, वस्त अमोलक आप वरताईआ। हुक्में अंदर शब्दी धार दीन दुनी नालों कर निर्मोह, मुहब्बत

विच महबूब सच सबूत आपणा इक जणाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मन वासना अंदर रहिण ना देवे गरोह, गुरू गुरदेव गुर सतिगुर आपणा हुक्म समझाईआ। निरगुण हो के निरगुण आत्म नाल जाए छोह, शाह शहाना श्री भगवाना आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। सति कहे मैं सचखण्ड दवारे तक्कया गहर गम्भीर, गवर बिन अवर नज़र कोए ना आईआ। जो नज़रां तों परे बेनज़ीर, जिस दा नज़ाम दो जहान हुक्म मनाईआ। जगत नेत्रां विच रखी ना जाए किसे तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। जो मंज़ल चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जो शरअ दी तोड़नहारा ज़ंजीर, लाशरीक जलवागर नूर खुदाईआ। जिस दे अन्तर हक तौफ़ीक, तोबा तोबा करे लोकाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां आपणे नाम दी देवे रसीद, संदेशे हुक्मी सच सुणाईआ। जुग चौकड़ी सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जिस दी चार युग दे शास्त्र करन तमहीद, अक्खरां वाले इलम सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दा जलवा बिन अक्खां तों नज़री आए दीद, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा हुक्म सब नूं मन्नणा पए शदीद, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सति कहे मैं सचखण्ड दवारे तक्कया उह भगवान, जिस नूं भगवन कह के सारे गाईआ। जिस दा सति सति निशान, सति सतिवादी आपणा खेल खिलाईआ। जुग चौकड़ी सब नूं देवणहारा दान, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरण कँवल करन ध्यान, धूढ़ी मस्तक टिक्का ला के खुशी मनाईआ। नाम संदेशे शब्दी देंदा रहे पैग़ाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। नित नवित बदलदा रहे विधान, विद्या दा बल रहे ना राईआ। दस्सदा रहे आपणा प्रणाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। प्रगटाउँदा रहे धर्म ईमान, शरअ हिन्दसयां वाली वण्ड वण्डाईआ। अन्त कन्त भगवन्त करे खेल महान, जिस नूं समझ सके कोए ना राईआ। जिस दा इशारयां विच दे के गए निशान, भविख्तां विच ढोले गाईआ। सो पुरख अकाल हो के मेहरवान, धुर संदेसा इक जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे विच जहान, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को हुक्म दए सुणाईआ। सतिजुग साचा होवे प्रधान, प्रधानगी इक्को हथ्थ वखाईआ। सब नूं मन्नणा पए इक्को राम, इक्को काहन धुर दा नज़री आईआ। इक्को करनी पए प्रणाम, बन्दना इक्को इक समझाईआ। इक्को नगमा दस्से कलाम, कायनात इक्को करे पढ़ाईआ। इक्को मज़्ब दीन इस्लाम, इक्को इस्म दए जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं दए ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना अञ्जील कुरान, लेखा मुके वेद पुराण, खाणी बाणी हरि का नाम वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मानव ज़ाती अंदर इक्को दस्से सर्ब ज़बान, नाआरा

११८२
१९

इक्को हको हक सुणाईआ। इक्को रूप जगत इन्सान, पंज तत मिल के सोभा पाईआ। इक्को इष्ट देव श्री भगवान, सचखण्ड निवासी नज़री आईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद हक मुकाम, गुरूदवारा काया काअबा सोभा पाईआ। जित्थे दीपक जोत जगे महान, दिवस रैण होवे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे धुनकान, धुन आत्मक राग अलाहीआ। साचा झुले धर्म निशान, कूड़ कुड़यारा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, घर विच घर दए वड्याईआ। परमात्म आत्म मेला होवे विच जहान, जहालत कूड़ी दए मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म ढोला मिल के गाण, सच दुआर एकँकार इक्को नाअरा दए सुणाईआ। झगड़ा मुके ज़िमीं असमान, सचखण्ड दवारे मिले भगत भगवान, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। सो कलयुग अन्त देवण आया दान, दाता दानी हो के दया कमाईआ। सति दवारे गुरमुख साचे सन्त कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत सुहेले वेखे आण, जुग चौकड़ी विछड़े विच जहान, बिखड़े बिखड़े आपणे नाल मिलाईआ।

११८३
१६
✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ कपूर सिँघ बराड़ दे गृह मोगा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪
११८३
१६

शब्दी शब्द जो लोड़े दरस, बिन अक्खां ध्यान लगाईआ। मेहरवान महबूब करे तरस, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। नाम निधाना मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती कमलापाती मुख चुआईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, कर्म कर्म दा लेख मुकाईआ। मन मनसा रहे कोई ना भटक, तृष्ना तृखा दए गवाईआ। नज़री आवे निरगुण धार परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी याद विच बताली बीते बरस, चार दो अंक जोड़ (जुड़ाईआ)। सो स्वामी अन्तरजामी चार युग लहिणा देवे कर्ज़, मकरूज वेख वखाईआ। बिना हथ्थां समरथ मन्ने धुर दी अरज़, ख़्वाहिश बेनन्ती धुर दी आपणी झोली पाईआ। प्रेम प्यार साची धार वेखे दर्द, दीन दुनी नाता ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दरस, नूर नुराना नूर कर रुशनाईआ। साचे दरस दी जो रखे लोड़, लोड़ींदा साजण नज़री आईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए जोड़, जोड़ी आत्म परमात्म लए बणाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, काया मन्दिर अंदर निरगुण नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना पंज चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। सुरती शब्द बन्न्हे डोर, सच स्वामी अन्तरजामी परदा दए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लेखा रहे ना तोर मोर, अद्वैत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। निरगुण निरगुण सरगुण धार सदा रहे कोल, घर विच घर गृह विच गृह मन्दिर अंदर बैठा सोभा पाईआ। मनुआ ना पावे शोर, चार कुण्ट दहि

दिशा ना उठ उठ धाईआ। साचा दरस अकस बिना नहीं कोई होर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दरस, दास्तान पिछली वेख वखाईआ। साचा दरस जो जन मंगे, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी चोला रंगे, अनडिठड़ा रंग चढ़ाईआ। जन्म जन्म दा लेखा गंढ्ढे, टुट्टी जोड़ तोड़ निभाईआ। नाम भण्डारा काया मन्दिर अंदर चढ़ के सच दवारे वण्डे, जगत वासना नेड़ ना कोए रखाईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार देवे आत्म परमात्म परमानंदे, निजानंद रस आपणा इक दरसाईआ। सच पदार्थ सो मालक ख़ालक प्रितपालक हो के वण्डे, परवरदिगार सांझा यार आपणी दया कमाईआ। दरस अंदर कर दीवाने बन्दे, घर प्रकाश अगम्मी नूरी चन्दे, जलवा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस विच दरस दीदार मंगे, बिना दरस हरस जगत ना कोए मुकाईआ। सच दरस दी जिस रखी तांघ, मन वासना नाल ना कोए रखाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी स्वांगी आपणा बदल के सवाग, नटुआ आपणा खेल कराईआ। काया मन्दिर अंदर साचे काअबे वड़ के देवे अगम्मी बांग, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द दए सुणाईआ। पूरब जन्म दी आसा मनसा पूरी कर के तांघ, तृष्ना
११८४ तृखा जगत दए बुझाईआ। माया ममता पोह ना सके अग्नी आग, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। दरस अंदर सतिगुर गुरसिख ११८४
१६ सारे जावण जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को जिहा वैराग, वैरी विच ना कोए टिकाईआ। १६
साचा समां सुहावणा सम्बल विच सयाद, शब्द अगम्मी वज्जे नाद, धुन तुरीआ पद तों अगे दए सुणाईआ। सन्त सज्जण मिल के बिन दरस दरस अगम्मा खोल्ह्ण राज़, जिस विच जग नेत्र कम्म किसे ना आईआ। मंज़ल बमंज़ल मकसूदे हक मुकामे तारीफ़ उस वाहिद, खुदा नख़ासता हक ने मेला दिता मिलाईआ। सन्त सज्जण सूफ़ी सदा आज़ाद, शरअ दा बन्धन ना कोई रखाईआ। बिना हक तों हकीकी सुणे कोए ना आवाज़, बिना रमज़ तों जानण ना कोए राज़, सदा अदा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस विच दरस देवे स्वाद, जिस दरस दा रसना जप ना सके जाप, अजपा जाप तों परे जिस दा प्रताप, तपां बणां विच हथ्थ कदे ना आईआ। साचे दरस दी सदा प्यास, सन्त साजण इक्को इक आस रखाईआ। मिले मेल सर्ब गुणतास, मालक ख़ालक बेपरवाहीआ। साचे मण्डल वखावे रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। तन जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए राग, सोहणा सुहावणा समां मिल गया आज, मेघला आपणी खुशी रिहा वखाईआ। दर्शन अंदर दरस दा स्वाद, स्वाद अंदर सर्ब दा जवाब, जवाब अंदर स्वाल स्वाल अंदर हाल हाल अंदर दयाल अहिवाल सब दा वेख वखाईआ। जीउदयां मरयां सब दा वेखे परदा, पड़दे

ओहले रहिण कोए ना पाईआ। जो सतिगुर शब्द अंदर धार हो के चढ़दा, महल अटल फोले थाउँ थाँईंआ। सच दवारे हकीकी आप खड़दा, निरगुण सरगुण आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लहिणा देणा जाणे घर विच घर दा, घर विच बैठा बेपरवाहीआ। जिस दे बिना काज नहीं किसे दा सरदा, साध सन्त जीव जंत बैठे ध्यान लगाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित नाम शब्द संदेशे घलदा, गुर अवतार पैगम्बरां कर पढ़ाईआ। उह लेखा जाणे घड़ी घड़ी पल पल दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। धन्न भाग दिहाढ़ा अज्ज दा, जिस गृह एका एके नाल सजदा, नगारा नाम वाला वज्जदा ताल जगत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे सच दा, सच दवारे सोभा पाईआ।

✪ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ पिण्ड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर मालवा संगत ✪

सतिजुग साचे, उठ के वेख, पुरख अकाला दीन दयाला भेव अभेद दए खुलाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी आदि
११८५ जुगादी खेल अनेक, बहु भाती दिवस राती आपणा हुक्म वरताईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी बख्शणहारा साची टेक, ११८५
१६ धुर दा मालक सृष्टी दा ख़ालक आपणी दया कमाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी नाम निधाना धरे एक, एकँकारा हरि १६
निरँकारा देवे माण वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त लए पेख, पारब्रह्म पति परमेश्वर परदा ओहला आप चुकाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना दो जहानां देवे अगम्मा संदेश, सति सतिवादी धुर दा ढोला सोहला इक समझाईआ। निरगुण निरवैर निराकार हो के लिखे तेरा लेख, जगत कातब कायनात सके ना कोए समझाईआ। चरण कँवल दवारे दर ठांडे लए वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साहिब स्वामी सच आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे, उठ वेख तक्क, तकदीर तेरी दयां बदलाईआ। मुकामे हक खेल करां हको हक, हकीकत अगली दयां समझाईआ। वस्त अमोलक दे के नाम सच, सति सतिवादी हो के करां इक पढ़ाईआ। भाग लगाउणा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ साढे तिन्न हथ्थ दयां बणाईआ। प्रेम प्रीती अंदर लूं लूं अंदर जाणा रच, रचना तेरी देणी वखाईआ। प्रगट हो हर घट अन्तर उपजे इक्को ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या देणी समझाईआ। नाड़ नाड़ ना उबले रत्त, रतन अमोलक हीरे गुरमुख लैणे बणाईआ। तेरी लज्जया रखे पत, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म आप सुणाईआ। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला कोई रहिण नहीं देणा वक्ख, वक्खरा घर ना कोए वसाईआ। साचे भगतां निज खोल्ह के अक्ख, प्रतख मेरा रूप देणा दरसाईआ।

निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी पूरी करे मनसा आस, आशा आपणे विच समाईआ। सतिजुग साचे उठ के वेख नज़ारा, नईआ नौका इक्को रिहा दरसाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त धुर दा शब्द रिहा सुणाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर करन निमस्कारा, सजदयां विच बैठे सीस झुकाईआ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव खड़े भिखारा, दर दरवेश इक्को अलख जगाईआ। सो खेल करे विच संसारा, महासार्थी हो के आपणा फेरा पाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोए लिखारा, कातब मिले ना कोए वड्याईआ। सो वणज कराए बण वणजारा, साचा हट्ट रिहा चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के सच जैकारा, जै जै कार ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा सुणाईआ। करनी दा करता कुदरत दा मालक आपणा हुक्म वरते सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे, तेरा साचा बण सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे, उठ वेख खोल्ह अक्ख, आख़र दयां जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो प्रतख, पारब्रह्म आपणा फेरा पाईआ। सति दवारा खोल्ह के सच, इक्को नाम रिहा समझाईआ। मेहरवान महबूब हो के रखे पत, पतिपरमेश्वर देवे माण वड्याईआ। आत्म परमात्म मिल के गाउणा सांझा जस, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी नालों कर के वक्ख, इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समें दा मालक साची करनी कार कमाईआ। सतिजुग साचे, उठ वेख कर ख़िआल, बिन दलीलों दलील बणाईआ। प्रगट हो के पुरख अकाल, अकल कलधारी आपणी रचन आपे वेख वखाईआ। भगत सुहेले गुरमुख उठा के लाल, लाल गुलाला रंग रिहा चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया जगत तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, भरम भुलेखा रिहा मुकाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, इक्को घर रिहा दिसाईआ। सतिजुग तेरी सच धर्म दी सोहे सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हल्ल करे स्वाल, ख़ाली दर ना कोए दुरकाईआ। सतिजुग साचे, उठ वेख अगम्मी हस्ती, हरि हरि इक्को नज़री आईआ। जिस दी खेल अगम्मे जस दी, सिफ्तां विच सिफ्त वड्याईआ। खाणी बाणी ओसे दा नाम जपदी, रागां नादां विच करे शनवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर धार ओसे दी आसा तक्कदी, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। उह खेल जाणे आपणी सच दी, सति सच रिहा प्रगटाईआ। सार पा के गुरमुखां दी अक्ख दी, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जो आत्म परमात्म नाल प्रेम प्रीती अंदर वसदी, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। उह अन्त अख़ीर सचखण्ड दवारे जा के हस्सदी, हस्ती आपणी

११८६
१६

लए बदलाईआ। सतिजुग साचे, एह खेल पुरख समरथ दी, समें विच्चों समां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवाज़ लगा के इक्को अलख दी, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह परदा रिहा उठाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बीबी हरबंस कौर दे गृह पिण्ड सालब ✪

सतिजुग साचे, सुण अगम्मी रीत, चार युग तों अगली दयां समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जेहड़ा दस्सया नहीं गीत, सो स्वामी अन्तरजामी हो के दयां दृढ़ाईआ। निरगुण निरगुण बणा के धुर दा साचा मीत, सरगुण सरगुण लेखा दयां चुकाईआ। एका नाम निधाना शब्द अगम्मी दस्स संगीत, काया माटी हर हिरदे अंदर करां सफ़ाईआ। जन भगत सुहेले कर अतीत, त्रैगुण लेखा दयां मुकाईआ। झगड़ा होवे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को दयां वखाईआ। जिस घर बैठा रहां अनडीठ, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी कोटन गए बीत, खोजत खोजत थक्की सर्ब लोकाईआ।
११८७ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदे गए उम्मीद, आसा आपणी नाल रखाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर रखदे गए उडीक, वेला ११८७
१६ वक्त दए गवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिखदी रही तवारीख, तारीख सब दी दयां बदलाईआ। १६
इक्को नाम एका कलमा करां बख्शीश, बख्शिश धुर दी रहमत आप कमाईआ। सृष्ट सबाई मन वासना लवां जीत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भेव खुल्हा के हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। सतिजुग साची दे तरतीब, चार वरन अठारां बरन तरह्रा तरह्रा समझाईआ। प्रभ दा खेल आदि जुगादि सदा अजीब, अजब निराला समझ किसे ना आईआ। झगड़ा मुका के अमीर ग़रीब, ग़ुरबत कूड़ी बाहर कढाहीआ। दृष्टी अंदर बदल देवां सर्ब नसीब, लख चुरासी निसबत आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां वसां हो करीब, दूर दुराडा पन्ध ना कोए बणाईआ। शब्दी शब्द करां ताकीद, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। मन वासना रहे ना कोए ग़लीज, पतित पुनीत दयां बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सां हक तमीज़, जगत तमन्ना कूड़ गवाईआ। सच दवारे दा बणा के अज़ीज़, गुरमुख गुरसिख गोद उठाईआ। सन्त उधारना सदा रीझ, जुग चौकड़ी धुर दी कार चली आईआ। धर्म सति दा बीजणा बीज पत्त डाली फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। ग़फ़लत वाली रहिण नहीं देणी नींद, आलस निंद्रा विच्चों दीन दुनी बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सतिजुग साचे, गुरमुख सन्त सुहेले बणावां बाल सखाई सपुत्र, जगत वड्याईआं

लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण धार निरँकार हो के काया मन्दिर अंदर जावां उतर, असमानी रुहानी जिस्मानी खेल आपणा हुक्म वरताईआ। कौल इकरार कीता पूरब कदे ना जावां मुकर, गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा देणा झोली पाईआ। सन्त सुहेले सज्जण चुकां कुच्छड़, फड़ बाहों गोद उठाईआ। लेखा रहिण ना देवां चार कुण्ट दहि दिशा किसे नुकर, नव सत्त परदा दयां उठाईआ। शेर शब्दी हो के आया बुक्कण, नाम भबक इक लगाईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा आया पुछण, हिसाब किताब सब दा फोल फुलाईआ। जगत विकार कूड़ कुड़यार चण्डाल आया कुट्टण, कलंकी नार रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे एका नाम रंग रंगीला, रंगत आपणी दए वखाईआ। चार वरन बणे सच वसीला, उजड़े खेड़े दए वसाईआ। भगत भगवान दा बणे इक कबीला, कामल मुर्शद हो के देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सचखण्ड दवारा सुणे सच अपीला, हुक्मरान हो के हुक्में अंदर करे शनवाईआ। मन वासना बुद्धी विचार, साध सन्त दए ना कोए दलीला, जगत विद्या नाल ना कोए समझाईआ। अकल कलधारी जोत निरँकारी बण के छैल छबीला, मालक ख़ालक प्रितपालक हो के फेरा पाईआ।
११८८ सतिजुग कलयुग कलयुग सतिजुग दोहां करे तबदीला, तबादला आदल आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा चार युग लिख्या ११८८
१६ नहीं किसे ज़मीमा, सिफ्तां विच सिफ्त ना कोए वड्याईआ। सो हुक्में अंदर हुक्म करे तरमीमा, आलीशान अज़ीमा आपणी १६
कार कमाईआ। लेखा जाण के नर मदीना, परदा ओहला दए चुकाईआ। प्रगट हो उपर धरती ख़ाक ज़मीना, ज़ामन रामन आपणी कार कमाईआ। साचा नाम सचखण्ड दा सच नमूना, नवें युग दा नवां रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत रहिण ना देवे कोई नाम विहूणा, वहिम सहिम नाल दूर कराईआ। सतिजुग साचे सच्चे नाम दी रखणी तांघ, जगत स्याणप कम्म किसे ना आईआ। मेहरवान हो के चाढ़े अगम्मी कांग, कलयुग कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। निरगुण हो के स्वांगी आपणा करे स्वांग, अछल अछल्ल आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बुझा के अग्नी आग, अगला लेखा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणावणहारा आपणा राग, नाद अनादी आप सुणाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिजुग साचे, चार वरन अठारां बरन एका बख़्शां टेक, पुरख अकाल दीन दयाल इष्ट देव स्वामी सब दा नज़री

आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना बदल के भेख, सति सच धरनी धरत लोकमात दयां प्रगटाईआ। एका नाम निधाना श्री भगवाना दस्स विशेष, कूड़ विकार जगत विषयां विच्चों बाहर कढाहीआ। मानव ज़ाती कर के बुध बिबेक, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दयां उठाईआ। जगत वासना त्रैगुण माया ला ना सके सेक, कलयुग अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। काया मन्दिर अंदर धुर दे काअबे दे के हक संदेश, नाउँ निरँकारा अगम्म अपारा, इक्को दयां दृढ़ाईआ। जन भगत सन्त सुहेले खड़ के आपणे देस, सचखण्ड दवारे सहिजे दयां टिकाईआ। जित्थे आत्म परमात्म निरगुण निरगुण रहे कोई ना भेत, भेद भेव आपणा इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिजुग साचे साची देवां अगम्मी वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नाम निधान चला के रथ, चार वरन अठारां बरन दीन दुनी जगत समाज इक्को राह चलाईआ। बोध अगाध शब्द कहाणी दस्स अकथ, बुद्धी तों परे करां पढ़ाईआ। हकीकत विच्चों समझा के हक, हकूक सब दा झोली पाईआ। जन भगतां निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, लोचन आपणे नाल मिलाईआ। आत्मा परमात्मा सांझा कर के जस, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला दयां दृढ़ाईआ। सच जैकारा बोल के इक अलख, अलख
११८६ अगम्म अगोचर हो के परदा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे साची देवे ११८६
१६ मत, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी चढ़े रंगण, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को रूप नज़री आईआ। १६
गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेला, भगत दूजे दर जाए ना मंगण, ठांडा दरबारा एकँकारा आपणा इक वखाईआ। जिस गृह गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव करदे डण्डावत बन्दन, सजदयां विच बैठे सीस निवाईआ। प्रकाश दिसे ना कोए सूर्या चन्दन, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। लख चुरासी जम की फाँसी रहे कोई ना बन्धन, बन्दीख़ाना दयां तुड़ाईआ। साचा रस दे के परमानंदन, परमात्म हो के आत्म आपणे विच मिलाईआ। जुग चौकड़ी दीन दयाल ठाकर स्वामी परवरदिगार सांझा यार हो के आवे टुट्टी गंढुण, जुग जन्म दे विछड़े गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार जोत सरूप साजण मीत मुरारा हो के आवे नाल हंढण, जगत आयू आरज़ू लहिणा देणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंगण, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। सतिजुग साचे, मेरा मंत्र नाम शब्द चले रुहानी, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे पंज तत माटी ख़ाकी जिस्मानी, जिस्म वजूद परदा दए उठाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे मेहरवानी, महव आपणा कलमा धुर दा नग़मा दए सुणाईआ। सच प्रकाश धुर दा जलवा देवे उपर असमानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पिछला अगला पन्ध मुकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग

दा झगड़ा मेटे दीवानी, गुर अवतार पीर पैगम्बर शहादत हकीकी देणी भुगताईआ। जन भगत साचे सन्त देणी पए ना किसे कुरबानी, कायम मुकायम हो के आपणा हुक्म दए वरताईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा संदेसा जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां देवे ना कदे ज़बानी, कलम शाही लेखा कागज नाल वण्ड वण्डाईआ। सो पुरख समरथ आपणी महिमा दस्से अकथ कलयुग अन्त हो प्रगट, लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत घट घट, साध सन्त भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख गुर गुर गुर सतिगुर शब्दी लहिणा देणा सब दा दए चुकाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मेहर सिँघ दे गृह पिण्ड जग्राउँ ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा बख्शे ज़ोर, सो पुरख निरँजण आपणी दया कमाईआ। हरि बिन अवर ना दिसे कोई होर, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड बैठण सीस निवाईआ। करे प्रकाश अन्धेरे घोर, चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। मन वासना कलयुग कूड़. क्रिया मेटे चोर, तन माटी ख़ाकी वजूद रहिण कोए ना पाईआ। हँकार विकार पावे
1160 कोए ना शोर, शरअ दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच ना कोए लड़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार आत्म परमात्म पकड़े 1160
16 डोर, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। सति सतिवाद दी सब नूं दस्से सच्ची लोड़, लोड़ींदा सज्जण घर 16
घर मिल के ख़ुशी वखाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां सुरती शब्दी होवे जोड़, जगत विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जन भगतां भगवान हो के जाए बौहड़, बौहड़ी दरोही करे ना कोए लोकाईआ। अमृत मेघ सिंच बुझाए औड़, तृष्ना तृखा माया ममता मोह चुकाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर बेनज़ीर मानव ज़ाती विच्चों बाहर कढाहीआ। मुहब्बत विच महबूब बदल देवे तकदीर, तदबीर बेनज़ीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा धुर दा राह, रहबर हो के दए वखा, लोकमात धरनी धरत धवल उपर दए वड्याईआ। सतिजुग साचे साचा नाम इक्को होवे जबर, जाबर ज़ुल्म दए गवाईआ। दो जहानां भबक लगा के अगम्मी बब्बर, सिँघ शेर वज्जे वधाईआ। काया मन्दिर अंदर सब दी वेखे मढ़ी गोर कबर, माटी ख़ाकी फोले थाउं थाँईंआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी करे सध्धर, जगत निरासा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सति सतिवादी हो के करे अदल, इन्साफ़ आपणा दए समझाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार विच संसार लोकमात जाए बदल, बदला चुकावे बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया जगत शरअ होवे कतल, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां इक्को इक वखाईआ। चार

वरन अठारां बरन सच दवारा इक्को दस्से पत्तन, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा गृह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा सति दवारा चरण कँवल दए रखाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी अगम्मी तुक, मेरा तेरा भेव रहे ना राईआ। पढ़न नाल उज्जल होवे मुख, रसना जेहवा मिले वड्याईआ। जन्म मरन लख चुरासी आवण जावण रहे कोई ना दुःख, जूनी विच ना कोए भवाईआ। आत्म परमात्म मिल के उपजे साचा सुख, सुख सागर गहर गम्भीर लेखा दए वखाईआ। भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख बणा के आपणे सुत, अपराधी दुष्ट दुराचारी हँकारी विकारी पार लँघाईआ। लेखे ला के मानस जन्म मनुक्ख, दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। भगवन हो के जन भगतां गोदी लए चुक्क, चार कुण्ट दहि दिशा वेखे थाउँ थाँईंआ। परदा ओहला रहिण ना देवे कोई लुक, सनमुख हो के आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे तेरा मालक इक्क, खुदा खुदी नूं ख़ादम दए बणाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे होका हक, हकीकत इक्को इक जणाईआ। वरन बरन ज़ात पात रहिण देवे कोई ना शक, मज़्बां विच्चों बाहर कढाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा सेवा करे अणथक्क, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब नूं दस्से के मत, ब्रह्म विद्या दए समझाईआ।

जुग जन्म दे विछड़े रहे तप, कलयुग माया अग्नी रहे जलाईआ। तिन्नां मेला होवे पुरख समरथ, हरि स्वामी अन्तरजामी वेखे चाँईं चाँईंआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्ह के अक्ख, आखर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी दीन दुनी नालों कर के वक्ख, दर ठांडा दए जणाईआ। जिस गृह मन्दिर अंदर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा वस, धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक आपणा डेरा लाईआ। सुरती शब्दी सांझा होवे जस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी लेखा अवर ना कोए रखाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म अमृत दे के अगम्मी रस, रहबर हो के रस्ता दए वखाईआ। सच दवारा एकँकारा नाम भण्डारा खोल्ह के हट्ट, बण वणजारा विच संसारा एकँकारा भगतां झोली पाईआ। सतिजुग साचे तेरा साचा धर्म चलाए रथ, रथ रथवाही बेपरवाही नूर इलाही आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर हिरदे अंदर वस, कूड़ी क्रिया करे भख, गुरमुख वक्ख रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड गुड़े ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचे नाम दा चले इक परवाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गुर अवतार पैगम्बर करन वाह वाह, वाहवा सतिगुर तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण ढोले सारे लैण गा, नाद शब्द धुन अगम्मी वज्जे वधाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी पुरख बिधाता बणे मलाह, इक अकल्ला आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा खेल खिलाईआ। दृष्टी अंदर दस्स के सच्चा राह, रहमत विच सहमत करके आपणे नाल लए मिलाईआ। कायनात दस्स के जलवा नूरी खुदा, इस्म आज़म इक्को दए समझाईआ। लाशरीक वाहिगुरू कदे ना होवे जुदा, राम रमईआ हर घट सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वासना मानव ज़ाती अंदरों दए गवा, गवाह शहादत हरि का नाम दए भुगताईआ। अमृत मेघ निझर झिरना धुर दी धारों दए चुआ, बूंद स्वांती कमलापाती इक्को इक टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाह, शाह पातशाह हुक्में अंदर आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी चले एका धार, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। जिस दी नव नौ चार किसे ना पाई सार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। सो लेखा जाणे करनी दा करता अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दा राह तक्कदे गए सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चार, बिन अक्खां अक्ख नैण उठाईआ। सो इक इकल्ला दस्स सच महल्ला खेल करे आप निरँकार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। माया ममता कूड़ विकार सुट्टे डूंग्घी गार, गहर गम्भीर बेनज़ीर लातस्वीर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे तेरा लहिणा देणा पूरब तेरी झोली पाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी वज्जे इक रबाब, तन्द सितार नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मेला मिले हक अहिबाब, मुहब्बत विच महबूब आपणी खुशी मनाईआ। बिना सजदे सिर होवे आदाब, बिना चरण कँवल धूढ़ मस्तक ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। दरगाह साची सच मनारा दिसे इक महिराब, छप्पर छन्न अवर ना कोए छुहाईआ। सतिजुग तेरा लहिणा देणा लेखा लिख्या विच ओस किताब, जिस दा हरफ़ हरूफ़ अलिफ़ ये विच वण्ड ना कोए वण्डाईआ। परवरदिगार सांझा यार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करे आप इन्साफ़, अदल इक्को इक दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ा रहिण ना देवे मात गुसताख़, सति सच सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दुनी कर इतफ़ाक, पिछला लहिणा देणा करे बेबाक, अगला हिसाब आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा होवे नाअरा, नर नरायण तेरी वड्याईआ।

दीन मज़्ब ज़ात पात कोई ना रहे दायरा, दाअवे नाल खारज दाअवे सारे सब दे दए कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल प्रभ दा हुक्म चले ज़ाहरा, ज़ाहर बातन हाज़र नाम डंका राउ रंका इक्को करे शनवाईआ। जिस दा लेखा लिख ना सके कोई शायरा, मुशाइरयां विच सिफ्त ना कोए सालाहीआ। सो करनी दा करता करे कराए हक नबेड़ा, कलयुग कूड़ा झेड़ा दए चुकाईआ। सतिजुग तेरा सति धर्म वसाए इक्को खेड़ा, बन्द किवाड़ी कायां खिड़की अंदरों दए खुल्हाईआ। साची सिख्या सच भरवासा देवे तेरा मेरा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे हक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा साचा सच धर्म दा लाए डेरा, कलयुग गेड़ा अन्तिम दए गवाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ महिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड दाखे ज़िला लुधियाणा ✪

११६३
१९

सति धर्म भगतन ज़ात, सच मिले नाम वड्याईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिगुर प्रेम होवे रुशनाईआ। सति सतिवादी मिले अगम्मी गाथ, आत्म परमात्म हक पढ़ाईआ। सहायक हो के पुरख अबिनाशी नायक, करता शहिनशाहीआ। सच दुआर कराए निवास, भूमिका इक्को इक वड्याईआ। जोती नूर कर प्रकाश, प्रकृती लहिणा दए मुकाईआ। जन्म कर्म कर रास, रस्ता आपणा इक दरसाईआ। जिस गृह कदे ना होवे विनास, सो मन्दिर दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सची सरनाईआ। सति धर्म जन भगतां मूल, अमोलक वस्त आप वरताईआ। हरि प्रीत लोकमात ना जावण भूल, अनभुल दए समझाईआ। साचे नाम दा दस्स असूल, असल मालक दए प्रगटाईआ। मेला मेल के कन्त कन्तूहल, नर नरायण आपणे रंग रंगाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा कर वसूल, लेखा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बख्श के चरण धूल, धूढ़ी टिक्का दए लगाईआ। सति धर्म जन भगतां चाढ़े रंग, रंगत भगतां नज़री आईआ। दोहां विचोला सूरा सरबंग, समरथ सच्चा शहिनशाहीआ। सुरती शब्दी दे अनन्द, मंगल आपणा नाम सुणाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कर खण्ड खण्ड, खण्डा नाम शस्त्र इक वखाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, डोरी आपणी तन्द बंधाईआ। मेहरवान हो बख्शंद, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सोहँ ढोला दस्स के छन्द, सहिंसे पूरब दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवण जावण लख चुरासी मेट के पन्ध, जन भगतां भगत दवारे लए टिकाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ नाहर सिँघ दे गृह पिण्ड रकबा ज़िला लुधियाणा ✪

जन भगतां प्रभ देवे सति धर्म, नाम सच मिले वड्याईआ। उत्तम स्रेष्ट कर के मानस ज़ाती कर्म, निहकर्मी प्रभ आपणी दया कमाईआ। सच दवारा बख्श के आपणी सरन, मेहरवान हो सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लख चुरासी भय चुकाए जम्मण मरन, जम की फाँसी दए कटाईआ। साची तरनी संसार सागर दस्से तरन, तारनहार समरथ स्वामी आपणा भेव खुल्हाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात वरन बरन, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। निज नेत्र खोल्ह के हरन फरन, निज आत्म निजानंद परमानंद एका रंग रंगाईआ। साची मंज़ल दस्से चढ़न, काया मन्दिर अंदर नौ दवारे पार कराईआ। साचा नाम कलमा दस्से पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा सोहला इक्को राग अल्हाईआ। सचखण्ड दवारे दस्से वड़न, जगत वासना माया ममता मोह विच्चों बाहर कढाहीआ। करे खेल करनी दा करता आपणी करनी करन, दूजा संग ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए इक वर, सति सच झोली दए टिकाईआ। जन भगतां देवे सति सच पुरख अबिनाशा, दीन दयाल दया निध ठाकर आपणी दया कमाईआ। चरण प्रीती साची नीती एका धुर भरवासा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी बूझ बुझाईआ। सच दवारे वखाए अगम्मी खेल तमाशा, जिस नूं जगत नेत्र वेखण कोए ना

११६४ १६ पाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्द सुणाए अगम्मी नादा, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। ११६४ १६

मंत्र दस्स के बोध अगाधा, सतिगुर शब्द करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जगत जगदीश दो जहान संवारे काजा, करनी दा करता कुदरत दा मालक ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। शाहो भूप दरगाह साची बण नवाबा, धुर फ़रमाना एकँकारा इक्को इक प्रगटाईआ। लेखा जाणे चार वरन अठारां बरन सन्तन साधा, भगत सुहेले गुरू गुर चेले लए मिलाईआ। कीता कौल इकरार गुर अवतार पैगम्बर पूरा करे वहिदा, कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार आपणा वेस वटाईआ। हुक्में अंदर कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे बकायदा, सतिजुग काइदा कानून आपणा दए समझाईआ। जन भगत सुहेले गुरमुख गुरसिख हरिजन सूफ़ी सन्त फ़कीर कर अलाइदा, धुर दा इलम आलम अलूम आप पढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार मात गर्भ कदे ना होवे पैदा, जोती जोत जोत नाल मिलाईआ। सतिजुग साचे नाम भण्डार बख्शश करे अनायता, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां देवे इक वर, सति धर्म धुर दी धार आप समझाईआ। जन भगतां सति धर्म दा करे आप मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, रसना जेहवा बत्ती दन्द दस्से सिफ्त सालाहीआ। कोट

जन्म दे पूरब मेट देवे पाप, पतित पुनीत गुरमुख दए बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द करे रुशनाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच गए आख, सो साहिब समरथ महिमा अकथ बोध अगाध दए जणाईआ। पूरा करे शब्दी भविख्ती वाक्, वाकफ़िकार हो के खोजे थाउँ थाँईंआ। सतिजुग साचे चार वरन अठारां बरन कर इतफ़ाक, नाता धर्म सति आपणे नाल जुड़ाईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा करे कोई ना चाक, चाकरी कूड़ ना कोए वखाईआ। सब नूं एका एकँकारा पुरख अकाला गाउणी पए गाथ, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी अंदर वेखे मार झाक, परदा ओहला काया माटी रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ नाजर सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे मैं भगतां सेवादार, सेवा विच्चों चाकरी सच कमाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच बरखुरदार, बरख़लाफ़ी अंदरों दयां कढाहीआ। रीती नीती विच करां सच प्यार, प्रीती विच मुहब्बत दयां जणाईआ। भेव अभेदा खोल्हां नाल विसथार,
११६५ १६ सतिगुर शब्दी नाता जोड़ां सहिज सुभाईआ। मन विकारा मेट कूड़ विकार, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। गुरमुखां पा के ११६५ १६
साची सार, मनमुखां कोलों पल्लू दयां छुडाईआ। दकुखां विच दस्स के चरण प्यार, सुखां दा सागर पुरख अकाल दयां दृढ़ाईआ। मनमुखां विच कर उज्यार, गुरमुख गुरसिख नाम धराईआ। सच करा के वणज वपार, वणजारे धुर दे दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। सति धर्म कहे मैं भगतां चाकर, चक्रवर्ती समझ कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी घर विच मेलां ठाकर, ठग्गां चोरां कोलों खैहड़ा दयां छुडाईआ। अमृत नाम भण्डारा दस्सां डूँघा सागर, काया माटी अंदर सोभा पाईआ। भाग लगा के साढे तिन्न हथ्थ कंचन गढ़ गागर, गहर गम्भीर बेनज़ीर दयां वखाईआ। दर घर ठांडे बख़्शां एका आदर, अदरश इक्को इक समझाईआ। कुदरत दा मालक मेलां कादर, कदीम दा विछड़या जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर शब्द जणावां बहादर, सूरबीर वड वड्याईआ। जिस दी भगत उधारना आदत, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दस्से इबादत, सिख्या धुर दी करे पढ़ाईआ। बुद्धी दी बुद्धी विच्चों कढ्ढे ल्याकत, बेसमझां आप समझाईआ। आत्म परमात्म दस्स शनाखत, शरअ दा लेखा दए चुकाईआ। दीन दयाल हो के करे सख़ावत, बख़्शिश रहमत झोली पाईआ। मनसा मन ना रहे बग़ावत, गढ़ हँकारी डेरा ढाहीआ। जूठ झूठ मेट

अलामत, इलम आपणा दए जणाईआ। निरगुण हो के देवे ज़मानत, सही सलामत हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म बख्शे इक नयामत, वस्त अगम्मी झोली पाईआ। सति धर्म कहे मैं भगतां संगी, आदि जुगादि सेव कमाईआ। वस्त दवावां मूँहों मंगी, जो अन्तर अन्तर उपजाईआ। सदा भज्जा फिरां पैरीं नंगीं, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। आपणे दर आउण ना देवां कोई पखण्डी, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। साचे मार्ग दी दस्स के डण्डी, राह इक्को दयां वखाईआ। जित्थे वासना रहे मूल ना गंदी, सुगंधी नाम दयां भराईआ। नेत्र अक्ख रहे ना अन्धी, लोचन इक्को दयां खुल्हाईआ। मिले मालक सूरा सरबंगी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी नाम कटार अनोखी चण्डी, चण्डालां करे सफ़ाईआ। रहिण देवे ना कोए घमंडी, घाउ लाए बेपरवाहीआ। जन भगतां सुणा के धुर दा छन्दी, सहिंसा पिछला दए चुकाईआ। धुर दे नाम दी ला पाबन्दी, नाता आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लख चुरासी आवण जावण रहिण ना देवे तंगी, दर दर चार कुण्ट ना कोए भवाईआ। साची मंज़ल गुरमुख जाण लँघी, सतिगुर किरपा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपणे नाम जाए रंगी, रंगत आपणे नाम वखाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ मंगल सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ इक्को तेरी होवे पूजा, इष्ट सब दा नज़री आईआ। मानव ज़ाती भाव रहे ना दूजा, द्वैत विच ना कोए लोकाईआ। अन्तर भेव खोल्ह गूझा, गहर गम्भीर आपणा परदा आप उठाईआ। नाभी कँवल कर ऊधा, बूँद स्वांती अमृत झिरना दे झिराईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बण के बैठा रिहों गूंगा, आपणी आवाज़ ना कोए अल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आपणे नाम दा देंदा रिहों झूंगा, जुग चौकड़ी वस्त अमोलक थोड़ी थोड़ी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई दे समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ इक्को दिसे तेरा दवार, सचखण्ड दवारा नज़री आईआ। जित्थे झुकदे गुरू अवतार, पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भिखार, देवत सुर झोलीआं डाहीआ। रवि ससि सेवादार, मण्डल मण्डप चाकर नज़री आईआ। चार युग पनिहार, दर ठांडे सेव कमाईआ। शब्द नाद धुन्कार, अगम्मी राग अलाहीआ। लग्गी रहे बहार, अमृत बरखे बेपरवाहीआ। दीआ बाती कमलापाती जगे अपार, अपरम्पर स्वामी तेरा नूर होवे रुशनाईआ। सो मार्ग दे संसार, जो आपणे विच रिहा छुपाईआ। नव नौ चार दा पूरा कर उधार, जुग

चौकड़ी बैठे पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम पा सार, महासार्थी वेख वखाईआ। चार वरन अठारां बरन होए लाचार, दुखियां दर्द ना कोए वण्डाईआ। दहि दिशा हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद चार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण ढोले गाईआ। गीता ज्ञान कर इज़हार, अञ्जील कुरानां नाअरा हक सुणाईआ। सांझा मिले ना कोए यार, खाणी बाणी दए ना कोए दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जग माया विसरया करतार, कुदरत दे मालक तेरी कदर कोए ना पाईआ। अबिनाशी करते बल धार, बल बावन दए गवाहीआ। सारे तेरी करदे इंतजार, लोकमात बैठे राह तकाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर इक्को तेरा होवे जैकार, दूजा नाम ना कोए ध्याईआ। जिधर वेखण नज़री आए इक्को एकँकार, अकल कलधारी आपणा खेल खिलाईआ। तेरा नाम डंका वज्जे अपार, पारब्रह्म ब्रह्म देणा आप समझाईआ। कोई ना रहे मूर्ख मुग्ध गवार, कूड़ कुड़यार डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति धर्म कहे तेरा होवे प्यार, पृथ्मी आकाश प्रकाश इक्को नज़री आईआ।

११६७
१६

११६७
१६

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ पाखर सिँघ दे गृह पिण्ड मोही ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ मेट कूड़ा कर्म, कलयुग क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साची दस्स आपणी सरन, परवरदिगार सांझा यार जलवागर इक्को नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना दीन दुनी ज़ात पात वरन बरन, आत्म परमात्म बोध अगाध शब्द नाद दे सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जीव जंत साध सन्त सारे इक्को ढोला पढ़न, एका दूजा भेव रहे ना राईआ। साची मंज़ल हक हकीकत वाली तेरी चढ़न, मँझधार विच संसार अन्त ना कोए रुढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार तेरा जोती दर्शन करन, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा नूर देणा चमकाईआ। पुरख अबिनाशी करनी दा करता मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को वरन, दूजा कन्त सुहाग ना कोए हंढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा तेरी ओट तकाईआ। सति धर्म कहे पुरख अकाल दीन दयाल तेरे नाम दी होवे झलक, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नूर नज़री आईआ। सच प्रीती मालक महबूब देहु खलक, ख़ालक तेरी बेपरवाहीआ। निज नेत्र लोचन नैण खोल्ह अगम्मी पलक, नूर नुराना शाह सुल्ताना इक्को नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना रहे कोई ना चलत, हउमे हंगता गढ़ देणा तुड़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन बणा

धुर दी संगत, सगला संग सूरे सरबंग आपणा आप जणाईआ। बोध अगाध दीन दयाल बण अनादी पंडत, साचा कलमा कायनात आलमां दे समझाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान कदे ना होवे खण्डत, खण्ड ब्रह्मण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तेरा ढोला गाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा मेट अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। सतिजुग साची रुत मौले बसन्त, चार कुण्ट दहि दिशा परफ़ुलत दे कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं कह के गए बेअन्त, बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। भविख्तां विच तेरी लिख के गए सनद, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले बैठे राह तकाईआ। सति दुआर एकँकार करां मिन्नत, डण्डावत बन्दना कह के सीस निवाईआ। साचे धर्म दी बख्श आपणी हिम्मत, हौसला नाम देणा वधाईआ। मनुआ मन करे कोई ना इल्लत, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। कलयुग कूड़ खुआरी मेट ज़िल्लत, ज़ाहर ज़हूर दया कमाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी तेरा दिसे कोई ना निन्दक, हर घट अन्तर आपणा नाम देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, सतिजुग सच्चा ढह प्या सरनाईआ। सति धर्म कहे मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सेव कमाईआ। दर ठांडे बण भिखार, मांगत हो के झोली डाहीआ। शब्द अगम्मी भर भण्डार, जगत नेत्र नज़र किसे
११६८ ना आईआ। कलयुग अन्त वेखणा लख चुरासी संसार, जीव जंत रहे कुरलाईआ। नौ सत्त हाहाकार, नव नौ पन्ध ना ११६८
१६ कोए मुकाईआ। कागत कलम लिख लिख गए हार, शाही रो रो रही कुरलाईआ। हिरदे अंदर वस्या नज़र ना आवे करतार, १६
कुदरत दा मालक बैठा मुख छुपाईआ। पुरख समरथ हो उज्यार, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। तूं साहिब स्वामी सिरजणहार, इक अकेला वड वड्याईआ। साचा मार्ग सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स संसार, कूड़ कुटम्ब अंदरों देणा कढाहीआ। आपणे हुक्म अंदर मन वासना कर ग्रिफ़तार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुष्वार, दूती दुष्ट देणे मुकाईआ। सति धर्म कहे तेरे चरणां घोली इक्को होवे निमस्कार, दूजा देव ना कोए मनाईआ। साचा डंका वज्जे दो जहान, राउ रंका इक्को कर शनवाईआ। दुआर बंका सोहे श्री भगवान, भगत सुहेले नाल मिलाईआ। बार अनका नमस्ते कर प्रणाम, डण्डावत सजदा कर के सीस झुकाईआ। दीन दुनी बदल दे विधान, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मंगदे गए दान, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, सिर सके ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हो मेहरवान, महबूब मुहब्बत आपणी दे समझाईआ। साचा मन्दिर धुर दा दस्स मकान, काया काअबा इक सुहाईआ। अमृत आत्म बख्श पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दीपक जोती जगे महान, कमलापाती करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी दे धुनकान, जगत राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

सतिजुग साचा मंगे वर, चरण कँवल इक्को ध्यान लगाईआ। सति धर्म कहे प्रभू कर बख्शीश, बख्शिश रहमत तेरी नज़री आईआ। तूं आदि जुगादी नित नवित मालक जगदीश, जगदीशर तेरी ओट तकाईआ। लख चुरासी जीव जंत अन्तर बदल दे नीत, मन का मणका दे भवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म गाए साचा गीत, दूजा नाउँ ना कोए वड्याईआ। काया माटी तन वजूद पंज तत कर हेत, त्रैगुण अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग गए बीत, कलयुग वेला अन्तिम अन्त दए गवाहीआ। झगड़ा मुका हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को घर वसाईआ। गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी दस्स हक तमीज़, परम पुरख परमात्म आत्म मेला लैणा मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के गए वसीअत, लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को कर नसीहत, निसबत आपणे हथ्थ रखाईआ। तेरे नाम दी होवे वड अहिमीअत, मूर्ख मूढ़ मुग्ध चतुर सुघड़ सुजान दे बणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म भेव खुल्हा आपणा असल असलीअत, परदा ओहला रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां साचे सन्तां गुरमुखां गुरसिखां शब्दी गोबिन्द जणां धुर दी वलदीअत, वालदा वालिद अवर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचे
११६६ सचखण्ड दवारा एकँकारा दर ठांडे झोली डाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ इक्को तेरे चरण होवे निमस्कार, दूजा इष्ट ना कोए ११६६
१६ मनाईआ। साचे नाम होवे प्रचार, पर्चा कूड़ ना कोए वखाईआ। हर घट तेरा नूर नज़री आए हो उज्यार, बेनज़ीर आपणी १६
नज़र बदलाईआ। घट घट अन्तर निरंतर हो के पा सार, बसन्तर अग्नी देणी बुझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मंत्र दे के गए वारो वार, वारता तेरी बोध अगाध लिखाईआ। वारस बण आप करतार, कुदरत दे मालक वेख वखाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तेरी पा ना सके सार, बेअन्त बेपरवाह कह के तेरा शुकर मनाईआ। सचखण्ड निवासी जोत प्रकाशी सृष्ट सबाई दे आधार, निज घर आपणा डेरा लाईआ। प्रीती रीती नीती अंदर कर प्यार, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। खेल अनडीठी तेरी अपर अपार, जगत नेत्र दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या दे सिरजणहार, साख्यात कायनात आबेहयात अमृत आत्म मुख चुआईआ। सति धर्म कहे प्रभ दीन दुनी बदल दे रीत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट रखाईआ। आत्म परमात्म ढोला धुर दा दस्स गीत, गहर गम्भीर इक्को नाम देणा पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा देणा वखाईआ। जिस घर बैठा रहें अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लख चुरासी लैणी जीत, हर हिरदा फोल फुलाईआ। नाम भण्डारा दे अनडीठ, काया झोली देणी भराईआ। करवट लै बदल पीठ, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी

दया कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा निरगुण सरगुण तेरी करन उडीक, भगत सुहेले जन बैठे राह तकाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग बदल तारीक, तवारीख आपणी दे समझाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम रही बीत, मुहम्मद बैठा सीस निवाईआ। ईसा मूसा तक्कण ला के नीझ, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। नानक गोबिन्द वेखण हक तबीब, मरीज़ां दा मालक बेपरवाहीआ। जो हर घट वसे करीब, दूर नेड़ा पन्ध मुकाईआ। जुग बदलणा तेरा खेल अजीब, जगत विद्या समझ कोए ना आईआ। कलयुग अंदर सतिजुग दे तरतीब, तर्ा तरीका आपणा दे दृढ़ाईआ। दीन दुनी बदल दे नसीब, हुक्में अंदर हुक्म भवाईआ। लेखा मुका अमीर ग़रीब, गुरबत कूड़ी बाहर कढाहीआ। सच दवारा काया मन्दिर अंदर लँघ दहलीज़, नौ दवारे पैंडा दे मुकाईआ। जन भगत सुहेला वेख आपणा अज़ीज़, प्रेमी प्यारा मित्र बण के हो सहाईआ। साचे नाम दी दस्स तमीज़, तमअ अंदरों देणी कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा सच दवारे झोली डाहीआ। सति धर्म कहे प्रभ किरपा कर मेहरवान, मेहर नज़र पार कराईआ। समरथ पुरख आदि जुगादी दयावान, जुग चौकड़ी तेरी खेल नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच जहान, अन्तिम लहिणा देणा दे चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बोलण बिना ज़बान, सचखण्ड दुआर एकँकार रहे सुणाईआ। कूड़ी क्रिया जहालत रहे ना विच जहान, जीवां जंतां साधां सन्तां अंदरों कर सफ़ाईआ। साचे दर वखा इक निशान, धर्म निशाना दो जहानां नज़री आईआ। एको नाम सर्ब करन परवान, परवाने घर घर दे फड़ाईआ। मनुआ रहे ना कोए शैतान, शरअ दीन ना कोए लड़ाईआ। सिदक सबूरी साचा दस्स इक ईमान, इबादत इक्को दे जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नूरी होवे सर्ब ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। पुरख अकाल पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार सारे गाण, गावत गावत आपणी खुशी मनाईआ। बुद्धी रहे ना कोए अंञाण, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। घर नज़री आए गोपी काहन, रमईआ राम परदा देणा उठाईआ। हज़रतां वाला देणा पैग़ाम, ईसा मूसा मुहम्मद लहिणा देणा चुकाईआ। नानक गोबिन्द कर परवान, परम पुरख आपणा परदा देणा उठाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्स आसान, एहसान सिर ना कोए उठाईआ। तूं देवणहारा श्री भगवान, जुग चौकड़ी झोली रिहा भराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बण के धुर दा कन्त ग़रीब निमाणयां दे माण, माया ममता मोह आपणा नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल सदा महान, महिमा अकथ कथनी कथ ना सके राईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम सिंघ दे गृह पिण्ड बुढेल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे मेरे महबूब, मालक ख़ालक तेरी बेपरवाहीआ। गृह मन्दिर दस्स हक मंज़ले मकसूद, जूह इक्को दे वखाईआ। जित्थे लोड़ रहे ना हज़ारा दरूद, इस्म आज़म तेरा नूर नज़री आईआ। जोती ज़ाते हो के मिल महबूब, मुहब्बत तेरी भाईआ। लेखा रहे ना तन वजूद, वजह आपणी दे समझाईआ। झगड़ा मुका तन कलबूत, कलमा इक्को दे पढ़ाईआ। नज़री आवें चारे कूट, दहि दिशा होवे रुशनाईआ। लेखा शरअ ना रहे जूठ झूठ, सति सच देणा दृढ़ाईआ। प्यार मुहब्बत विच जाणा तुठ, बेनज़ीर अक्ख खुल्हाईआ। अमृत जाम देणा घुट, आबेहयात हयाती दे बदलाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर आपणी गोदी लै चुक्क चार कुण्ट वेख वखाईआ। दीन मज़्हब ऊँच नीच राउ रंक रहे कोई ना दु:ख, दुखियां दर्द देणे मिटाईआ। तेरे मिलण दी रूह बुत्त लग्गी रहे भुक्ख, प्यास आपणा कलमा देणा समझाईआ। लख चुरासी विच्चों वेख मानस मानव मानुख, भेव अभेदा आपणा दे खुल्हाईआ। सुफल करा जननी कुक्ख, लोकमात दे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका होवे तेरी ओट, दूसर सीस ना किसे झुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा होवे जैकारा, जै जै कार करे लोकाईआ। इक्को इष्ट होवे संसारा, दृष्टी अंदर तेरा ढोला गाईआ। तेरा नाम लग्गे प्यारा, प्रीतम प्रेम प्यार देणा वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच चले तेरी धारा, धरनी धरत धवल तेरी खुशी मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जाण बलिहारा, बलिहारी सतिगुर साचे ढोला गाईआ। वाहिद तेरा नूर होवे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सचखण्ड इक्को दस्स सर्ब दवारा, थिर घर गुरमुख लैणे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा दर दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा दो जहान वज्जे नगारा, निगाह सब दी दे बदलाईआ। अन्तर आत्म दे हुलारा, कलयुग जीव आलस निंद्रा विच्चों बाहर कढाहीआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हँकारा, हुक्म हाकम आपणा लैणा मनाईआ। सब दा बण मीत मुरारा, मित्र हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मेट अंध्यारा, साचा चन्द एकँकारा इक्को देणा चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी भिक्खक हो के मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा इक्को होवे ढोला, गीत गोबिन्द इक्को नज़री आईआ। तेरा शब्द सतिगुर होए विचोला, पंज तत दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं हर घट वस्या मौला, बिस्मिल हो के आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर कौला, इकरार आपणा देणा निभाईआ। लेखा मुका धरनी धौला, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। दीन दुनी बदल दे चोला, चोजी प्रीतम आपणा खेल

वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म गाए सब सोहला, राग नाद मिल के वज्जे वधाईआ। चार वरन अठारां बरन मानस ज़ाती इक्को होवे बोला, अनबोलत आपणा नाम देणा समझाईआ। जीव जंत साध सन्त तेरे दर दा होवे गोला, दूजी चाकरी ना कोए कमाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात पा सके कोई ना रौला, आत्म ब्रह्म सर्ब देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल निरगुण सरगुण बण तोला, नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां अनडिठा आपणा आप उठाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी साची होवे सिख्या, चौदां विद्या जगत पढ़ाईआ। बोध अगाध पा भिच्छया, भिक्खक दीन दुनी लै बणाईआ। आपणा भविख्त वेख लिख्या, जो गुर अवतार पैगम्बर गए लिखाईआ। तेरा हुक्म किसे ना मेटया, भाणे अंदर विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड सच सिँघासण सच स्वामी लेटया, बिन पावा चूल छप्पर छन्न सोभा पाईआ। कलयुग अन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बण खेवट खेटया, जगत मलाह हो के सेव कमाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा इक्को नज़री आवे नेतया, शाहो भूप शहिनशाह तेरा रूप अलाहीआ। अंदर वड़ मन्दिर चढ़ जीव जंत साध सन्त खोल् आपणा भेतया, भाण्डा भरम भउ देणा भन्नाईआ। तेरा प्रकाश पुरख अबिनाश जग नेत्र किसे ना वेख्या, दोए नैणां नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दवारे तेरी मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ हो कृपाल, कृपानिध आपणा परदा दे उठाईआ। दयानिध दीन दयाल, दीनां नाथा तेरी ओट तकाईआ। सच दवारा विच संसारा वखा इक्को धर्मसाल, धर्म दी धार दे समझाईआ। जिस गृह वसण शाह कंगाल, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। दीनां मज़्बां विच्चों कर बहाल, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल आपणे नाल, मन दी नालिश देणी चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आपणे लेखे पा घाल, जिस घायल कीती जगत लोकाईआ। सतिजुग साचा लोकमात भेज आपणा लाल, पूत सपूता हो के सेव कमाईआ। सति धर्म बणा दलाल, विचोला आपणा नाम प्रगटाईआ। सच बेनन्ती मन्न स्वाल, अरज़ आरज़ू तेरे अगे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा सच दवारे खुशी वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी इक्को लग्गे चोट, चोटी चढ़ के सब नूं दे जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मन वासना रहे कोई ना खोट, माया ममता मोह देणा

मिटाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाते इक्को तेरा नूर होवे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म साची तेरी गोत, दूजा वरन कम्म किसे ना आईआ। झगड़ा वेख चौदां लोक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। चौदां विद्या तेरा समझ ना सके सलोक, सोहला हक ना कोए दृढ़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक तेरे नाम दी लैंदे मोख, मुफ्त तेरा नाम ना कोए वरताईआ। मन वासना जगत क्रिया भरे किसे ना पोट, सांतक सति ना कोए कराईआ। तेरी मंज़ल धुर दे मालक सचखण्ड दवारे सके कोई ना पहुंच, जगत दवारे बैठे रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नेत्र लोचन अक्ख खोल्ह, जो तेरा दर्शन रहे लोच, मनसा विच्चों मनसा दे प्रगटाईआ। सति धर्म कहे आपणे नाम दा दे दे सद्दा, होका हक हक जणाईआ। दो जहान तेरे हुक्में अंदर बध्धा, सिर सके ना कोए उठाईआ। आपणे प्रेम दा दे दे मज़ा, मंज़ल आपणी दे प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार दे सज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सतिजुग साचा चला आपणी नाल रज़ा, राज़क रहीम परदा देणा उठाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेहरवान करीं कदे ना दग़ा, फरेब कलयुग देणा मिटाईआ। तूं सर्ब समरथ दीन दुनी दा अब्बा, पिता पुरख अकाल कह के सारे सीस निवाईआ। सचखण्ड दुआर
१२०३ तेरी अगम्मी जग्ह, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। बिन भगतां तेरा वधे कोई ना अग्गा, आगमन विच खुशी ना कोए १२०३
१६ मनाईआ। सतिजुग साचे लोकमात हुक्म दे दे सभा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १६
किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा दर दवारे आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ सतिजुग साचा बख्श दे राह, रहबर इक्को इक नज़री आईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लेखा गए लिखा, भविख्तां विच जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी गवाह, शहादत इक्को वार दए भुगताईआ। चार वरन अठारां बरन करन सलाह, सुल्हकुल तेरे अगे सीस निवाईआ। झगड़ा रहे ना किसे शेख़ मुला, मुसायक मसला ना कोए दृढ़ाईआ। पंडत पांधा रहे कोई ना भुल्ला, इक्को नाम देणा जणाईआ। भाग लगाउणा सब दे काया माटी कुला, मन्दिर अंदर इक्को देणा वखाईआ। जिस मार्ग विच्चों जगत जहान जीव भुल्ला, सो रस्ता देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग मंगे भण्डार अनमुल्ला, करता कीमत ना कोए लगाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड लील ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी बख्शिश होवे दात, दाता दानी इक्को नज़री आईआ। सतिजुग साची मौले प्रभात, प्रभू मिल के सब दे वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म वसें साथ, सगला संग बणाईआ। सोहँ शब्द नानक गोबिन्द वाली गाथ, पूरब लेखा देणा चुकाईआ। जिस दा ढोला गाया त्रैलोकी नाथ, राम राम विच मिल के खुशी मनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद हो के दास, दास्तान सुण के रहे जणाईआ। दो जहानां तेरा प्रकाश, प्रकाश्त होवे जगत लोकाईआ। सतिजुग साचा होवे धरवास, (धर्म) धरती उपर टिकाईआ। खुशी होवे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वज्जे वधाईआ। तेरा नाम उपजे सृष्टी स्वास, साह साह इक्को पुरख अकाल ध्याईआ। मन दी ममता होवे नास, हुक्में अंदर डेरा देणा ढाहीआ। सतिजुग साचा धर्म लाउणा ख़ास, ख़ाहिश सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर होवे ना कोए निरास, निरासा आशा विच बदलाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम इक्को होवे जप, जगजीवण दाते तेरे दर वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पप, पतित पुनीत बणाईआ। सन्त सुहेले सज्जण रख,
१२०४ रखक हो के वेख वखाईआ। निरगुण नूर जोत नज़र आ प्रतख, पारब्रह्म आपणा परदा लाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां १२०४
१६ दा सांझा होवे जस, वेद पुराण दा झगड़ा देणा चुकाईआ। तेरे मिलण दी निज नेत्र खुल्ही रहे अक्ख, निज घर वासी १६
पुरख अबिनाशी तेरा दर्शन पाईआ। अमृत धार निझर देणा रस, बूँद स्वांती कमलापाती मुख चुआईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप करने आपणे वस, शाहो भूप दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार साहिब स्वामी अन्तरजामी सब कुछ तेरे हथ्थ, नाथ अनाथां देणी माण वड्याईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ भाग सिँघ दे गृह पिण्ड बिसरावां ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा होवे नज़ारा, नज़र सब दी दे बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार किनारा, नईआ नौका आपणा नाम चढ़ाईआ। मार्ग रहे ना कोए दुष्वारा, दुश्मण दूती अंदरों देणे भजाईआ। साचे दर दा खोल्ह किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा देणा लाहीआ। शब्द अनाद धुन आत्मक सुणे सच्ची धुन्कारा, नाद अनादी नाद सुणाईआ। निर्मल दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ। अमृत आत्म बख्श ठंडी ठारा, बूँद स्वांती इक चुआईआ। चार

कुण्ट दहि दिशा तेरा रूप नज़र आए संसारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वण्ड ना कोए वण्डाईआ। तेरा महल अटल उच्च मुनारा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार सोभा पाईआ। जित्थे भगतां सन्तां गुर अवतार पैगम्बरां मंगलाचारा, गीत गोबिन्द गुणी गहिंद गहर गम्भीर तेरा ढोला गाईआ। दूजी कोई ना वारता वारा, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करते तेरा खेल अगम्म अपारा, दर घर ठांडा सोहणा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा आस रखाईआ। सति धर्म कहे तेरे नाम दा मिले इक्को सुख, सुख सागर विच समाईआ। जगत वासना रहे कोई ना दुःख, दुखियां दर्द लैणा वण्डाईआ। लेखे लाउणा जन्म मानस मनुक्ख, मानव आपणे घर वसाईआ। सन्त सुहेले लैणे चुक्क, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। कूड़ विकार अंदरों कढ्ढणा कुट्ट, नाम खण्डा इक चमकाईआ। पवित्र पुनीत पाक करनां काया माटी बुत्त, जगत विकार रहे ना राईआ। परदा ओहला रहे ना लुक, आपणा दरस देणा कराईआ। भगत सुहेला बणा के सुत, नादी धार लैणा मिलाईआ। उलटा गर्भ ना होवे रुक्ख, अग्नी अग्ग ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा सजदे विच सीस झुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरा नज़री आवे इक्को इस्म, नूर नूर रुशनाईआ। दूजी दिसे किसे ना किस्म, कासद कलमा लैणा बणाईआ। संदेसा देणा हर घट जिस्म, जिस्मानी असमानी रुहानी करनी पढ़ाईआ। तेरा नूर ज़हूर होवे दिसण, दहि दिशा डगमगाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीरां बणाउणा अगम्मी मिशन, मिसरा आपणा इक पढ़ाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सारे लिखण, ढोला धुर दा इक्को गाईआ। सच दवारे उत्ते विकण, कीमत करते तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सृष्ट सबाई सब नूं दस्स के मिथन, मिथ्या विच्चों सिख्या साचा नाम देणा समझाईआ। सति धर्म कहे प्रभ साचे नाम दी वज्जे इक रबाब, बिन तन्द सितार सुरती शब्दी सब दी दे उठाईआ। परवरदिगार नज़री आए इक अहिबाब, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। पढ़नी ना पए कोई अक्खरां वाली किताब, अलिफ़ ये वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मालक नज़री आए इक नवाब, नौबत हक आपणा नाम वजाईआ। जो लेखा लिख के आया नानक निरगुण सरगुण विच बग़दाद, बग़लगीर सब नूं लए बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरी इमदाद, दूजा संग ना कोए निभाईआ। साची ख़िदमत विच दस्सणी ख़िदमात, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। तेरा नूर इलाही वाहिद, वाहिगुरू अल्ला तेरा ढोला गाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार तत कर लाजवाब, जूठ झूठ परदा देणा उठाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह दो जहानां महाराज, पातशाह तेरी बेपवराहीआ। सति धर्म कलयुग बदल दे रिवाज, रवादारी पिछली

दे चुकाईआ। चार वरन अठारां बरन बणा इक समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। इक्को जगदीश तेरे सीस दिसे ताज, ताजां वाले देणे खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची साजण लए साज, क्रिया कूड़ दए खपाईआ।

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ आपणे नाम दा मार नेज़ा, निगाह विच्चों निगाह दे बदलाईआ। आत्म परमात्म साफ़ करदे सेजा, सुहञ्जणा आपणा नूर चमकाईआ। हुक्में अंदर जो संदेसा अगम्मी भेजा, भजन बन्दगी इक्को रूप सब नूं दे समझाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी कर निसचा, निहचल आपणा धाम इक वखाईआ। अछल छल दीन दुनी मार पेचा, गंढु इक्को देणी पवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल रेखा, ऋषी मुनी सब तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा कर लेखा, लिख्त भविख्त नाल मिलाईआ। सच वखा दुआर आपणा देसा, दहि दिशा परदा लाहीआ। तेरा नाउँ निरँकार सदा रहे हमेशा, गुर अवतार पैगम्बर आपणा जुग जुग रूप लैण बदलाईआ। ग़रीब उधारने तेरा पेशा, पेशीनगोई तेरी दए गवाहीआ। तूं मालक धुर नरेशा, नर नरायण अख्वाईआ। तेरा हुक्म गोबिन्द धारी केसा, साबत सूरत सारे* रब्ब दी लए बणाईआ। झगड़ा रहे ना ऋषी केशा, गवर्धन वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नाम निधाना मस्तक ला मेखा, सोई सुरती लै जगाईआ। दीन मज़्ब दा रहे कोई ना ठेका, ठाकर होके सब नूं नज़री आईआ। दो जहान तेरी साया हेठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतां अंदर वड़ के दे भेता, परदा ओहला आप चुकाईआ। तेरे हुक्म अंदर सिर पवा के गए तत्ती रेता, कलयुग अग्नी अग्ग तपाईआ। दीन दुनी दा कढु भुलेखा, भरमां विच्चों भरम गवाईआ। इक्को सब दा नज़री आवें नेता, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव नौ चार विसर ना जाए चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ।

१२०६
१६

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी इक्को होवे नौका, नईआ सईआ हो के देणी चलाईआ। भरम मिटे दूई द्वैती घाउ का, घायल आपणे नाम कराईआ। लेखा रहे ना जूठ झूठ दाउ का, दग़ा फ़रेब देणा गवाईआ। प्यार वधे परम पुरख

तेरे चाउ का, चाउ घनेरा देणा समझाईआ। विचार रहे ना कलयुग कूड़ कुड़यार काउँ का, हँस गुरमुख लैणे प्रगटाईआ। ढोला दस्सणा वाहो वाहो का, वाहवा गुर तेरी वड्याईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ना पिता माउँ का, पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रस्ता देणा वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा उपजे रस, रसीआ जग लैणा बणाईआ। शब्दी धार अंदर करना वस्स, विषयां तों लैणा छुडाईआ। नाम अणयाला तीर मारना कस, कूड़ कुटम्ब विच्चों बाहर देणा कराईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा हस्स हस्स, हस्ती विच्चों हस्ती देणी बदलाईआ। सांझा दस्स के धुर दा जस, ढोला धुर दा नाम देणा समझाईआ। धीरज सन्तोख दे के हठ, कूड़ कुड़यार देणा मिटाईआ। भाग लगा के तत अठ्ठ, नौ दवारे पैंडा देणा चुकाईआ। कर प्रकाश घर दस, दस्म गुर मेला मिलाउणा सहिज सुभाईआ। शब्द गोबिन्द सिख इक दवारे जाण वस, सोहणा मिल के झट लँघाईआ। प्रेम प्यार दा मजा लैण चख, रसना जेहवा स्वाद ना कोए बणाईआ। सृष्टी दृष्टी दिसे भक्ख, नाम नद इक सुणाईआ। वेखण वाली खुल्ही रहे अक्ख, आख़र मेला सहिज सुभाईआ। मेहरवान हो के लैणा रख, रखक हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब कुछ तेरे हथ्थ, लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ देणा मुकाईआ।

१२०७
१६

✪ २५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा इक्को होवे गाउणा, रागां नादां धुंनां विच वज्जे वधाईआ। मिले संदेसा पवण पवणां, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा हुक्म सुणाईआ। मन हँकारी रहे कोई ना राउणा, राम रामा हो के होणा सहाईआ। कलयुग कूड़ी नींद मिले किसे ना सौणा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दीन दुनी दा दुरमति मैल पाप धोणा, पतित पुनीत देणे बणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकार हर घट अंदर खोहणा, भय विच हुक्म देणा सुणाईआ। जन भगतां तेरे विछोड़े विच पए ना रोणा, आत्म परमात्म नाता लैणा जुड़ाईआ। जगत अभ्यास तन पए ना कोहणा, सहिज सुभाउ परदा देणा उठाईआ। एका धागे सृष्ट सबाई परोणा, परोहतां दी लोड़ रहे ना राईआ। नाम निधान बीज हर घट अंदर बोणा, बोध अगाध देणा समझाईआ। करना प्रकाश साचे लोयणा, लूं लूं अंदर तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। अमृत रस निझर धार चोणा, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाउणा, मेला मिले सहिज सुभाईआ। दूजा दर ना कोए वखाउणा, पुरख अकाल दीन दयाल इक्को

नज़री आईआ। साचा मन्दिर सचखण्ड दुआर सुहाउणा, दीवा बाती कमलापाती कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा राह तकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा अगम्मी होवे स्वाद, रसना चख ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करनी बरबाद, माया ममता मोह नाता देणा तुड़ाईआ। सतिजुग साचा करना लोकमात आबाद, धर्म दुआर एकँकार इक्को देणा वखाईआ। चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म इक्को तेरी रखण याद, दूजी वण्ड ना कोए वण्डाईआ। नाम निधान श्री भगवान शब्द अगम्मा दस्सणा बोध लगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। कायां मन्दिर अंदर तेरी शब्दी सुणे आवाज़, रसना जेहवा बत्ती दन्द दी लोड़ रहे ना राईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के भेव अभेदा खोल्हणा राज़, रहमत आपणी नाल पार कराईआ। मनुआ मन ना रहे कोई गुसताख़, झगड़ा मन देणा मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो भविख्तां विच गए आख, आखर सब दा लहिणा देणा देणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा सच दवारे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे तेरे नाम दी रहे कोई ना हद्द, दीन मज़्हब वण्ड ना कोए वण्डाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरे नाम दा इक्को होवे छद, छन्द सोहणा राग अलाहीआ। आत्म परमात्म हो के देणा अनन्द, रस अगम्मा देणा चखाईआ। खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को देणी दृढ़ाईआ। आवण जावण लख चुरासी तोड़ के पन्ध, मंज़ल इक्को इक एकँकार देणी चढ़ाईआ। दीन दयाल साहिब स्वामी हो बख़्शंद, नाम भण्डारा देणा वरताईआ। तैनूं गा गा थक्के बत्ती दन्द, रसना जेहवा सिफ्तां नाल सालाहीआ। सच प्रकाश नूरी चढ़या कोए ना चन्द, काया मन्दिर अंदर अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा ढह प्या सरनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तूं सदा सहाई नाथ अनाथां, दीनां दुखियां दर्द वण्डाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त ग़रीब निमाणयां मन्न आखा, निरगुण हो के वेख वखाईआ। सतिजुग साचा दर तेरे दासी दासा, सेवक आपणा रूप रिहा बदलाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत धवल माता, दुक्खां हाल जणदयां रही सुणाईआ। गुर पैगम्बर जो लिख के गए भविख्त वाक्, वाकिफ़कार हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा तेरा मन्ने कोई ना आखा, भरमें भुल्ली सर्ब लोकाईआ। साचे मन्दिर काया खोल्हे कोई ना ताका, निरगुण तेरा दरस कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या दीना मज़्हबां ज़ाता पाता, ऊँचां नीचां राउ रंका झगड़ा ना कोए मिटाईआ। साचा नाम साचे मण्डल पावे कोई ना रासा, कलयुग गोपी काहन नचाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अन्त अख़ीर सदी चौधवीं वेख तमाशा, निरवैर हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग

१२०८
१६

साचा बेनन्ती रिहा सुणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा जगत होवे सहारा, सहायक इक्को नज़री आईआ। दूजा दिसे ना कोए दवारा, दर दर अलख ना कोए जगाईआ। साचा मिले नाम भण्डारा, भगवन भगतां भगती देणी समझाईआ। तेरा धर्म दा होवे जैकारा, जै जै कार करे लोकाईआ। एका होवे वेखणहारा, एकँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति दवारे धुर दी आस रखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा लग्गे टिक्का, मस्तक नूर होवे रुशनाईआ। पार उत्तरे वड्डा निक्का, जो जन तेरा नाम ध्याईआ। तूं पुरख अकाल सब दा पिता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम करना हिता, भगत सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। करवट लै बदल दे पिठ्ठा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। बिन अक्खां वेख गोबिन्द वाला चिठ्ठा, बिन लिखयां सतरां गया लिखाईआ। जिस दा रूप सदा चिट्टा, रेख सके ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सति धर्म दा दे दे हिस्सा, हिस्सेदार धुर दा नज़री आईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ भगवान कौर दे गृह पिण्ड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

१२०६
१६

सति धर्म कहे प्रभ नाम निधाना अगम्मी वण्ड, दर दर गृह गृह घर घर आप वरताईआ। घट निवासी जीव आत्मा पा ठंड, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। भाण्डा भरम भउ ढाह कंध, दूई द्वैत दे मिटाईआ। साचा नाम सुणा छन्द, बन्द बन्द वज्जे वधाईआ। तेरे प्रेम दा आवे इक अनन्द, सुख सागर दे वखाईआ। साचा नूर चमके जोत चन्द, सूर्या चन्द बैठण मुख छुपाईआ। जन्म जन्म दा आवण जावण गेड़ा मुके पन्ध, चुरासी फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। हुक्में अंदर सारे होवण पाबन्द, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरे नाम दी होवे सुगंध, दूजा यारड़ा ना कोए हंढाहीआ। जगत मंज़ल सहिजे जावण लँघ, भगत सुहेले कदम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा आवे भय, भउ विच दिसे लोकाईआ। इक आदि जुगादी पुरख अकाल रहै, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दीन दुनी अंदरों कर लय, लायक नालायक दे बणाईआ। सन्त सुहेला भगत जन तेरा भाणा सहै, सीस जगदीश इक्को तेरे चरण झुकाईआ। झगड़ा रहे ना तूं मैं, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। तेरे नाम दी धारा इक्को वहै, वाहवा सतिगुर वज्जे सच वधाईआ। लेखा मुके शिव शक्ती शवै, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। चिन्ता हरख़ सोग दु:ख रहे

ना दवै, दानशमंद सारे देणे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा खुशीआं नाल मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी मिले बूँद स्वांती, सांतक दे कराईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राती, रुतड़ी रुत्त दे बदलाईआ। जन भगतां भगत बणा साथी, कूड़ कुड़यारां डेरा ढाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां मन्नदे नहीं आखी, तिन्नां दोज़ख़ दे सज़ाईआ। जो तेरे नाम दी गाउँदे साखी, साख्यात हो के दर्शन देणा थाउँ थाँईंआ। लहिणा देणा सब दा चुकाउणा बाकी, हिसाब किताब पिछला वेख वखाईआ। तेरा नाम सुनेहड़ा सब नूं मिले पाती, पत्रका धुर दी देणी सुणाईआ। बिना सतिगुर शब्द किसे कोलों ना जावे वाची, वाचक ज्ञानी कोई पढ़ ना सके राईआ। आपणा खेल दस्सणा आपणी बिध भांती, भावना भेव आपणे विच्चों कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल करनी धुर दी साची, साचे सज्जण धुर दे दया कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी वज्जे इक्को कूक, कोका पंडत रहिण कोए ना पाईआ। जगत विकार देणा फूक, माया ममता अग्नी तत जलाईआ। ज़ात पात रहिण ना देणा कोई सूत, सूतक इक्को आपणा नाम देणा समझाईआ। मानस मानुख रहे ना कोए कपूत, पुत्तर सपुत्र लैणे बणाईआ। भाग

१२१०
१६

लगा के काया माटी पंज भूत, भविख आपणा देणा समझाईआ। तेरा डंका वज्जे चारे कूट, काया कुटीआ देणा सुणाईआ। नाम निधान श्री भगवान शब्द अगम्मी भेज दूत, दो जहानां नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले तेरे प्रेम मुहब्बत अंदर जावण झूज, जगत तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। सच महल अटल वखाउणा अर्श अरूज, परदा हकीकत वाला खुल्हाईआ। ठाकर स्वामी हो के बण महबूब, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचे सन्तां भाग लगा के तन वजूद, वसल असल आपणा देणा कराईआ। मन वासना जगत दीवार रहे ना कोए हदूद, मन पाबन्दीआं देणीआं मिटाईआ। जिधर वेखण नज़री आवें मौजूद, घट घट अंदर सोभा पाईआ। आत्म परमात्म प्रेम प्यार विच करना सलूक, सुल्हकुल तेरी इक सरनाईआ। झगड़ा रहे ना मानव ज़ाती छूत, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाम तेरा देवे सबूत, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। सति धर्म कहे प्रभ इक्को तेरे नाम दी होवे गूंज, चार कुण्ट दहि दिशा गुंजाइश रहिण कोए ना पाईआ। एका दूआ रहे कोए ना दूज, घर घर अंदर नज़री आवे सब दा माहीआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दे बूझ, मानव ज़ाती बिबेक बुद्धी आप बणाईआ। तेरे विछोड़े अंदर आत्मा कुरलावे कूंज, दूर बिखड़े लैणे मिलाईआ। मंज़ल दस्सणी हक मकसूद, पैंडा पिछला देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे बैठा सीस झुकाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी होवे इक खुशी, खुशहाली विच दिसे सर्ब लोकाईआ।

सब दी काया माटी कर दे सुच्ची, सच संजम इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म प्रेम प्रीती अंदर दस्स रुची, रचना आपणी दे वखाईआ। तेरी मुहब्बत दर रहे कोए ना रुठ्ठी, दर घर मेला होवे चाँईं चाँईंआ। जगत वासना अंदर वड़ के कुठीं, कूड़ी क्रिया बाहर कढाहीआ। मेहरवान हो के पुरख अकाल दीन दयाल तुठीं, समरथ पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग लोकमात विच्चों कर छुट्टी, छुटकारा होवे सृष्ट सबाईआ। सतिजुग साची पौह जावे फुट्टी, घर घर अन्तर होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जंत साध सन्त चार खाणी चार बाणी चार वरन अठारां बरन चौथे युग सब दी बात पुच्छीं, बचया रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ धन्ना सिँघ दे गृह पिण्ड ढह पई ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा मिले अगम्मी सीर, शीरखार बच्चे गुरमुख खुशी मनाईआ। मन वासना जगत बुद्धी मिले धीर, धर्म दवारा एकँकारा इक्को देणा वखाईआ। शरअ रहे ना शरीअत वाली कोए ज़ंजीर, शाह पातशाह शहिनशाह कूड़ कुड़यारा लेखा देणा मुकाईआ। सतिजुग साची आपणे नाम दी दस्स तदबीर, तरीका नीकन नीका हो के देणा दृढ़ाईआ। जिस मंज़ल ते चढ़या जुलाहा कबीर, गुरमुख सन्त सुहेले ओसे दर दिते बहाईआ। तेरा जलवा तक्कण बेनज़ीर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद इक्को देणा वखाईआ। झगड़ा चुक्के शाह हकीर, हुक्म आपणा लैणा मनाईआ। दूर दुराडे नज़र आउणा करीब, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा नूर नुराना जलवा तक्कीए अजीब, ज़ाहर ज़हूर होवे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारे दे तातील, सतिजुग साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा राह वखाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे अमृत दा मिले अगम्मी आब, हयाती ज़िंदगी दे बदलाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा मुका दे हिसाब, पूरब लेखा रहे ना राईआ। सच दवारे करनी दस्स इक आदाब, नमस्ते डण्डावत बन्दना इक्को दे जणाईआ। तेरे हुक्म दी अगम्मी आवे आवाज़, धुन नाद करे शनवाईआ। अक्खरां वाली पढ़नी पए ना कोए किताब, ढोला सोहला धुर दा राग देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धोणा दाग़, पतित पुनीत दीन दुनी देणा बणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ इक्को चरण कँवल सृष्टी झुके सीस, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। आत्म परमात्म ढोला होवे गीत, शब्दी गोबिन्द मिल के वज्जे वधाईआ। धाम अनडिठड़े होवे प्रीत, प्रीतम परम पुरख परमात्म आत्म जोड़ लैणा जुड़ाईआ। ठांडा

दर दुआर एक एकँकार दिसे अतीत, त्रैगुण लेखा पंज तत देणा चुकाईआ। मुकामे हक साचा हुजरा दस्सणा हक मसीत, सदा बांग आवाज़ इक्को तेरा नाम नग़मा नज़री आईआ। बोध अगाध बण के खोल्हणा राज़, पंडत हो के जेरज अण्डज लेखा देणा मुकाईआ। सतिजुग साची साजण लैणी साज, ग़रीब निवाज आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सुट्टणी डूँग्घे खात, बाहों फड़ फेर ना कोए उठाईआ। चार वरनां अठारां बरनां इक्को दस्स रिवाज, समाज धर्म दा देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे इक्को देणा वर, वारता अगली देणी जणाईआ। सति धर्म कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रोड़्ह डूँग्घा सागर, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। सतिजुग साचे धरनी धरत धवल उपर दे आदर, मेहरवान हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम निधान शब्द सतिगुर नाल रला योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी आपणा वेस वटाईआ। खेल कर करनी दे करते कुदरत दे कादर, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा हुक्म वरताईआ। मन वासना किसे रहिण ना पाए जाबर, ज़बरदस्त आपणा नाम दे दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण वेख काबल, असलीअत विच नसीहत दे दृढ़ाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार बण धुर दा आदल,
१२१२ इन्साफ़ विच गुसताख़ दे मिटाईआ। सतिजुग कलयुग कलयुग सतिजुग धर्म दवारे कर तबादल, वेला वक्त दोहां वेख वखाईआ। १२१२
१९ पिता पूत रहे कोए ना कातिल, मकतूल झगड़ा दे मुकाईआ। परदा खोल्ह अन्तर बातन, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती १९
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सच दवारे आपणी आशा आया रखण, आसा मनसा तेरे अगे दिती टिकाईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड गुजरवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म कहे प्रभ नाम अगम्मा दे दान, दयावान दीन दयाल तेरी आस रखाईआ। धुर संदेसा तख़्त निवासी शब्द सुनेहड़ा दे हुक्मरान, शाहो भूप फ़रमाना इक्को इक उपजाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वेख मार ध्यान, चार कुण्ट दहि दिशा परदा आप चुकाईआ। आत्म परमात्म नर नरायण दे ज्ञान,साची सिख्या भिख्या अन्तर धुर दा लिख्या झोली पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वरन बरन तेरा ढोला गाण, रसना जेहवा बत्ती दन्द सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर ख़ुशी मनाण, भगत सुहेले गुरू गुर चेले आपणे रंग रंगाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बोल विधान, वेला वक्त लोकमात जगत दए गवाहीआ। किरपा कर योद्धे सूरबीर बली बलवान, परवरदिगार सांझे यार तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ।

दीन दुनी दर्दीआं दर्द कर परवान, दुःख भंजन साचे सज्जण मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया मेट शरअ शैतान, शबेरोज़ आपणा नूर कर रुशनाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दा इक्को होवे वैराग, वैरागण हो के सीस निवाईआ। तूं घर घर नज़री आएं पुरख अबिनाशी कन्त सुहाग, कन्त कन्तूहल धुर दा माहीआ। सोई सुरती काया मन्दिर अंदर सब दी जाए जाग, जगत स्वामी आलस निंद्रा विच रहिण कोए ना पाईआ। गृह मन्दिर दीपक जोत जगे चिराग़, घट भीतर तेरा नूर होवे रुशनाईआ। प्रेम प्रीती अंदर हर हिरदे अंदर उपजे वैराग, वैरी दूती दुश्मण अंदरों देणे कढाहीआ। मानस बुद्धी कलयुग जीव हँस बणाउणे काग, माणक मोती सोहँ हँसा इक्को जाप जपाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म उपजे हक वैराग, महबूब मुहब्बत विच परदा ओहला देणा उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी होवण वड वडभाग, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा एका रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा नाम अमोलक देणी दाद, दासन दास हो के सतिजुग सच दवारे मंग मंगाईआ। सति धर्म कहे प्रभ तेरे नाम दी चार कुण्ट होवे चर्चा, खुशीआं विच जीव जंत सोहला गाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सब दा हल्ल करे पर्चा,
१२१३ परचून वाली वण्ड तेरा नाम रहे ना राईआ। सर्ब जीआं दा सांझा होवे खर्चा, सति धर्म दुआर इक्को देणा वखाईआ। कलयुग १२१३
१९ अन्त श्री भगवन्त जीव जंत साध सन्त जावे परखा, बण पारखू नाम कसवटी लैणी लगाईआ। तेरी मेहर अंदर ना कोई १९
सोग रहे ना हरखा, चिन्ता ग़म देणा चुकाईआ। भेव पाउणा घर घर दा, गृह मन्दिर काया माटी खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी आदि जुगादि नित नवित पुरख अकाल दीन दयाल खेल अगम्मी करदा, कुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सतिजुग सच दवारे तेरा होवे बरदा, दरवेश नर नरेश इक्को अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग जीव जगत जहान वेख सड़दा कूड़ी क्रिया अग्नी मोह जगत विकार विभचार सृष्टी दृष्टी अंदरों बाहर देणा कढाहीआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ हरी सिँघ दे गृह पिण्ड महिमा सिँघ वाला ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म तेरा जन भगत होए मिलाप, अबिनाशी करता मेला दए मिलाईआ। दोहां विचोला बणे निरगुण आप, जोत सरूपी जोती जाता दया कमाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच दस्से अगम्मा जाप, सतिजुग सच्चा राह बण मलाह आप दए वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे जगत संताप, रोग सोग चिन्ता दुःख रहिण कोए ना पाईआ। भविख्तां वाला पूरा करे

वाक्, गुर अवतार पैगम्बर जो गए ढोले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे साख्यात, सति स्वामी अन्तरजामी लख चुरासी वेख वखाईआ। जन भगतां नाम भण्डारा देवे धुर दा आबेहयात, सति सरोवर चरण धूढ़ इश्नान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सति धर्म जन भगतां वेखे नेतन नेत, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिन्हां दा परम पुरख नाल हेत, इक्को दीन दयाल सीस झुकाईआ। तिन्हां दी आत्म सेजा रिहा लेट, पारब्रह्म ब्रह्म पतिपरमेश्वर डेरा लाईआ। दो जहानां बण के खेवट खेट, कलयुग तेरा अन्तिम पार कराईआ। सच दवारा आपणा वखा के अगम्मी देस, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परदा दए उठाईआ। दो जहानां मालक बण के नर नरेश, नर नरायण आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता हउमें हंगता करे खेत, जगत भूमी विच रहिण कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर जन भगतां करे सच्चा हेत, दर दर घर घर मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति धर्म तेरा नाता दए बंधाईआ। सति धर्म तेरा जन भगतां नाल होवे रिश्ता, नाता धुर दा आप जुड़ाईआ। प्रेम प्रीती अंदर पक्का कर निसचा, निहचल धाम दए वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए जिस जिस दा, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। जगत नेत्र अबिनाशी करता किसे ना दिसदा, गुरमुखां निज लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। करे प्यार लेखा देवे साचे पित दा, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग दस्स साचे सिख दा, सिख्या अंदर भिच्छया नाम दए वरताईआ। सति धर्म साचे सन्तां धर्म दवारे होवे इक इक्छ, दूजा दुआर नज़र कोए ना आईआ। बिन कदमां आवण नठ नठ, प्रेम प्रीती अंदर बणन पाँधी राहीआ। जलवा तक्कण नूर जोत प्रकाश लट लट, अन्ध अन्धेर देण मिटाईआ। साचा लाहा हरि दवारे लैण खट्ट, खटका अवर रहे ना राईआ। नाम पदार्थ वस्त अमोलक देवे झट, अगम्म अथाह देवे आप वरताईआ। लख चुरासी विच्चों लए रख, रखक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार हो प्रतख, भगत भगवान आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दवारा दिसे इक्को सच, सचखण्ड साचा सतिजुग साचे नज़री आईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड घुगराणा ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग कहे प्रभ साचे नाम दी बख्श इक्को चोग, चार कुण्ट दहि दिशा आपणा रस दे चखाईआ। माया ममता हउमे

हंगता कूड़ी क्रिया कढु रोग, जूठ झूठ अंदरों डेरा देणा ढाहीआ। चरण कँवल प्रीती धुर दी रीती दस्स अगम्मा जोग, नाउँ निरँकारा एकँकारा आपणा आप दृढ़ाईआ। मन वासना रहे ना कोई चिन्ता सोग, दूई द्वैत लेखा देणा मुकाईआ। निज आत्म परमात्म देणा दरस अमोघ, नैण लोचन आपणी अक्ख खुल्हाईआ। असल वसल यार अगम्मी भोगणा भोग, अंगीकार हो के आपणा मेल लैणा मिलाईआ। सति प्रकाश करना निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को घर देणा वखाईआ। नाम निधान श्री भगवान लगाउणी चोट, मन्दिर वड़ चोटी चढ़ परदा ओहला देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग साचा कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग साचा कहे प्रभ तेरे नाम दी इक्को होवे खुमारी, ग़मखार दीन दुनी लैणी बणाईआ। साचा मन्दिर महल अटल वसणा उच्च अटारी, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार आपणा परदा देणा उठाईआ। निर्मल नूर जोत होवे उज्यारी, गृह मन्दिर अंदर कमलापाती बिन तेल बाती तेरा ज़हूर बेपरवाहीआ। लहिणा देणा जुग चौकड़ी चुकाउणा विच संसारी, कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण आपणा फेरा पाईआ। राह तक्कण पैगम्बर गुर अवतारी, इकावन बावन आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित तेरा लेखा सदा जगत

१२१५ विद्या बाहरी, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। शब्दी हुक्म तेरी सच्ची सिक्दारी, दो जहान निगाहबान वेख वखाईआ। १२१५

१६ कलयुग हवस मेट कूड़ कुड़यारी, सति धर्म नाता देणा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका १६

देणा साचा वर, सतिजुग साचा सच दवारे ढह प्या सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दी इक्को होवे रहिरास, रहमत सब दे उत्ते दे कमाईआ। किरपा कर ग़रीब निवाज़, निवाज़श विच वेख सर्ब लोकाईआ। कूड़ कुड़यार किसे सीस दिसे ना ताज, तख्तां वाले देणे ख़ाक मिलाईआ। इक्को तेरे हुक्म दा होवे राज, रईयत चार वरन अठारां बरन लैणी बणाईआ। सति धर्म दा पूरा करना काज, करनी दे करते कुदरत दे मालक मेहरवान हो के अक्ख उठाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा गुर अवतार पैगम्बर दे गए सर्ब जवाब, तसबी माला पीर पैगम्बरां कम्म किसे ना आईआ। साचे मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा दस्सणा इक आदाब, अदब नाल सृष्टी दृष्टी देणी बदलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार परदा खोल्ह नकाब, स्वच्छ सरूप शाहो भूप आपणा नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देणा साचा वर, चरण कँवल उपर धवल बख्श माण वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ एका बख्श दे धुर फ़रमान, फुरना मन रहे ना राईआ। हुक्में अंदर कर कल्याण, कायनात दे समझाईआ। नाम निधाना तेरा होवे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा देणा चुकाईआ। सर्ब जीआं दा मालक घर घर नज़री आएं श्री भगवान, गृह गृह परदा देणा उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लख चुरासी जीव जंत ढोला

गाण, गावत गावत खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित मंगदे गए दान, दाते दानी गहर गम्भीर बेनज़ीर वस्त अमोलक देणी वरताईआ। हक बेनन्ती सच दुआर एकँकार करनी परवान, अरज़ आरज़ू ख़ाहिश तेरे अगे दिती टिकाईआ। मन वासना जगत शरअ रहे ना शैतान, शरीअत विच्चों असलीअत असल आपणा आप देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति धर्म तेरे दर कुरबान, निव निव तेरे चरण लागे पाईआ।

१२१६
१६

★ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ भजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीरख ज़िला लुध्याणा ★

सतिजुग कहे प्रभ किरपा करें लोकमात आवां उपर धरनी, धरत धवल लहिणा देणा लेखा दयां चुकाईआ। सृष्ट सबाई इक्को पूज करावां तेरे चरणी, बिन जगदीशर सीस ना कोए झुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन इक्को तुक दस्सां पड़नी, आत्म परमात्म ढोला गा के सारे खुशी वखाईआ। तेरे सचखण्ड दुआर दी मंज़ल दस्सां चढ़नी, नौ दवारे जगत वासना मन ना कोए हल्काईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात वरनी बरनी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल देणा धुर दा वर, दर्दी हो के दर्द लै वण्डाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दा दस्सां इक्को राह, रहीम रहमत विच मिलाईआ। मशवरयां विच करनी पए ना कोए सलाह, सिध्धा मार्ग दीन दुनी दयां समझाईआ। गुर गोबिन्द शब्दी बणे इक मलाह, शहादत पैगम्बरां नाल भुगताईआ। सब दा सांझा नज़री आए इक खुदा, वाहिगुरू राम रूप वटाईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी मानव मानस तैथों होवे ना कोए जुदा, गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले नाता दयां जुड़ाईआ। सच महल अटल उच्च मुनार अगम्म अथाह तेरा दयां वखा, सचखण्ड दवारा एकँकारा इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त सब दा लहिणा देणा लेखा देणा चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, सतिजुग साचा खुशीआं विच झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ साचा मार्ग सति चले रिवाज, राउ रंक इक्को रंग रंगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड शब्दी सतिगुर होवे राज, रईयत दो जहान लए बणाईआ। सृष्टी दा दृष्टी अंदर आत्म परमात्म करना काज, करनी दे करते आपणा हुक्म लैणा मनाईआ। सति धर्म दी नवीं साजणा लैणी साज, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर देणी कढाहीआ। तेरे नाम दा वज्जे इक्को अगम्मी नाद, सुन्न समाधी अंदर सुण सुण खुशी सर्ब मनाईआ। तेरे हकीकी कलमे दा होवे सच्चा वाअज़, वाज़्जया कर के सब नूं दे दृढ़ाईआ। धरनी धरत खेड़ा कर

आबाद, सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख भगत जन फ़कीर सूफ़ी मात प्रगटाईआ। बिन तेरी किरपा साचा दिसे कोई ना साध, साधना विच लग्गी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया कर बरबाद, लोकमात दीन दुनी अंदर रहिण मूल ना पाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दी चले इक्को लहर, दर दर घर घर वज्जे सच वधाईआ। कलयुग कुकर्म रहे कोई ना कहर, कूड़ कुड़यार देणा मिटाईआ। सच दुआर सचखण्ड साचे सन्तां कराउणी सैर, आरामगाह चरण कँवल दुआर देणा वखाईआ। जित्थे बिना भगती पुज्जे कोई ना गैर, बिना नाम धाम हथ्थ किसे ना आईआ। निरवैर हो के दीन दुनी मिटाउणा वैर, दीन मज़्हब ज़ात पात करे ना कोए लड़ाईआ। एको रंग रंगाउणा गुरमुखां अठ्ठे पहर, घड़ी पल थित वार वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देणा इक्को वर, वारस हो के मार्ग देणा लगाईआ। सतिजुग कहे मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक, सहायता विच तेरी आस रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दो जहानां बण सालस, शाह पातशाह शहिनशाह हो के आपणा हुक्म वरताईआ। गुरमुख सन्त सुहेले प्रगट कर ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा आपणे रंग रंगाईआ। सन्त सुहेला वेख बाला नड्ढा बालक, जो बाली बुद्धी तेरा ध्यान लगाईआ।
१२१७ किरपा कर साहिब सुल्तान सच्चे संचालक, सति सतिवादी आपणा परदा दे उठाईआ। तेरा निरगुण नूर जोत प्रकाश होवे १२१७
१६ अचानक, जगत बुद्धी भेव कोए ना पाईआ। जन भगतां नाम भण्डारा दे पूरब अमानत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो १६
तेरे पास रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर आदि जुगादि सदा सही सलामत, जन्म मरन विच कदे ना आईआ।

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ श्री राम दे गृह पिण्ड मकसूदड़ा ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, किरपा करे श्री भगवन्त, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीन दयाल परवरदिगार दया कमाईआ। मेहरवान महबूब नज़री आए इक धुर दा कन्त, सच स्वामी अन्तर परदा ओहला दए उठाईआ। नाम निधान नौजवान मर्द मर्दान दो जहान देवे इक्को मंत, मंत्र अन्तर निरंतर बसन्तर जगत दए बुझाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत साध सन्त, आत्म परमात्म भेव अभेदा अछल अछेदा परदा दए चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म सृष्टी दृष्टी अंदर दए जणाईआ। चार वरन अठारां बरन धरनी धरत धवल उपर बणाए साची संगत, सगला संग सूरा सरबंग पुरख अकाल आपणा आप रखाईआ। सतिजुग साचे, सच धर्म दे दे अगम्मी हिम्मत, मेहरवान गुण निधान सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। मनुआ मन कर सके कोए ना इल्लत, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। एका डंका चार कुण्ट वजाए साची सिम्मत, समें दा मालक ख़ालक प्रितपालक आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे लिख्त, भविख्त दा लहिणा देणा दए चुकाईआ। सृष्ट सबाई सांझा करे इष्ट, इष्ट देव आत्म परमात्म आपणा नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा धर्म दवारा खोल्हणहारा एकँकारा, इक अकल्ला आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे, तेरी साची होवे याद, यादगार भगतां दए बणाईआ। सति धर्म दा खेड़ा होवे आबाद, कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों बाहर कढाहीआ। दीन दुनी सदा सुणनहारा फ़रयाद, पुरख अकाला दीन दयाला घट निवासी पुरख अबिनाशी वेखे थाउँ थाँईंआ। सति सति सुणाए अगम्मा राग, नाउँ निरँकार एको एक दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी घर घर देवे दाद, दौलतमंद गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले लए बणाईआ।

१२१८
१६

✪ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ नछत्र सिँघ दे गृह दुराहा मंडी ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, जन भगतां अमृत देवां नाम रस प्याला, खुमारी धुर दी दयां चढ़ाईआ। मिले मेल एकँकार पुरख अकाला, कायनात दा मालक नज़री आईआ। पूजा करनी पए ना किसे ज्वाला, अष्टभुज ना कोए मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फेरनी पए ना किसे दी माला, तन भबूती ख़ाक ना कोए रमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान भरना पए ना किसे हाला, जगत वसूली ना कोए रखाईआ। इट्टां पत्थरां वाली लभ्भणी पए ना कोई धर्मसाला, काया मन्दिर धुर दा काअबा इक वखाईआ। माया ममता मोह तोड़ जंजाला, जागरत जोत करां रुशनाईआ। किसे वेद पुराण दा लैणा ना पए अहिवाला, इक्को ढोला धुर दा सोहला दयां दृढ़ाईआ। जो एथे ओथे दो जहान होवे रखवाला, सहायक हो के सेवा सच कमाईआ। साचा मार्ग दस्से इक सुखाला, जगत करनी विच्चों बाहर कढाहीआ। सच प्रेम दी पाए अगम्मी माला, मन का मणका बिन तसबी दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां बख्श के इक्को नाम, निम्रता आपणी दयां समझाईआ। दामनगीर हो के पकड़ां आत्म दाम, दमां दा लेखा आपणे नाल रखाईआ। भाग लगा के काया माटी चाम, चम्म दृष्टी अंदर आपणा इष्ट दयां वखाईआ। बरदा रहिण ना देवां किसे दा गुलाम, बन्दीख़ाने विच्चों बाहर कढाहीआ। सच संदेसा सुनेहड़ा दे के धुर पैग़ाम, कलमा इक्को इक जणाईआ। शब्दी

हुक्म अंदर करां इलहाम, राती सुत्यां लवां जगाईआ। घर घर दवारे जा बणां महिमान, प्रेम प्रीती अंदर फेरा पाईआ। बल बावन दा लेखे लावां पकवान, पूरब लहिणा देणा सर्ब मुकाईआ। प्रेम रस दा भोजन सारे खाण, लेज़् फेहज भख भोज इक्को रंग वखाईआ। जिस नाल भगतां होवे कल्याण, सो करनी कर के पार लँघाईआ। जिस नूं समझे ना कोए बुद्धी अणजाण, विद्या चले ना कोए चतुराईआ। किरपा कर श्री भगवान, भाग भगतां रिहा बणाईआ। मेहर अंदर देंदा जाए दान, दाअवे नाल दरगाह दे मालक दए बणाईआ। हरि हरि लेखा नहीं आम तमाम, ख़ाके शाम अन्धेरी दए गवाईआ। सच दवारे बख़्श के इक आराम, दुक्खां दा डेरा देवे ढाहीआ। चुरासी फाँसी कटे विच जहान, बन्दीख़ाना नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, जगत उदासी दए गवाईआ। जन भगत बणा धर्म विधान, विद्या तों परे करे पढ़ाईआ। सति धर्म झुला निशान, साचे रस्ते आप लगाईआ। मंज़ल चाढ़े नौजवान, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। सच दुआर वखा के अगम्म मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जिस गृह दीवा बाती बले महान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। भगत सुहेले वेख ख़ुशी मनाण, दुखियां दर्दां डेरा ढाहीआ। घर स्वामी ठाकर मिले आण, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना
१२१६ राईआ। किरपा करे हो मेहरवान, मेहर नज़र पार कराईआ। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ सुजान, सुचज्जे आपणे घर बणाईआ। १२१६
१६ सतिजुग साचे सच दवारे कर परवान, परवाने धुर दे दए वखाईआ। साचा ढोला मिल के गाण, रसना जेहवा वज्जे वधाईआ। १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे मेरा भगत कदे ना होवे मंगता, दूजे दर कदे ना जाईआ। घट घट अन्तर निरंतर हो के चोले रंगदा, रंग अनडीठा इक वखाईआ। मंज़ल आपणी हकीकी लँघदा, जगत दवारा ना कोए अटकाईआ। रस देवां धुर अनन्द दा, अनन्द आत्मा विच्चों प्रगटाईआ। भाउ दस्सां अगम्मी छन्द दा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दे विछड़े पार कराईआ। जो जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर दान रिहा मंगदा, सो भगतां रिहा वरताईआ। नाम डंका वजा आपणे मृदंग दा, मुरदे मुरीद रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां ख़ुशी वखाईआ। सतिजुग साचे साचा भगत तेरा सहारा, धुर दे हुक्म नाल जणाईआ। बिन भगतां तेरा सोहे ना कोए दवारा, सति धर्म ना कोए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी देवणहारा आप दातारा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जन भगतां नाल मिल के तूं लाउणा सच जैकारा, जो गुरमुखां दिता सिखाईआ। दोहां दा सांझा होवे प्यारा, प्रीती विच विछोड़ा कदे ना आईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण हो के होए सहाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अंध्यारा, अन्ध विश्वास दए गवाईआ। सतिजुग साचा नूर करे चमत्कारा,

चमक आपणी इक वखाईआ। जन भगतां मिले मेल धुर करतारा, करनी दा करता खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां ख़ातर निरगुण रूप प्रगट होवे चौवीवां अवतारा, जगत जहान लेखा दए चुकाईआ।

✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बीबी बसन्त कौर दे गृह पिण्ड दुराहा ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, साचा नाम होवे मेरा धुर देवा, देव आत्मा दए वड्याईआ। जन भगतां बिरथी जाण ना देवे सेवा, स्वामी हो के होए सहाईआ। सच प्रेम दा देवे मेवा, अमृत आपणा रस चखाईआ। धाम वखाए निहचल निहकेवा, महल अटल समझाईआ। खेले खेल अलख अभेवा, अगम्म अगोचर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी होवे इक्को ताकत, ताकतवर रहिण कोए ना पाईआ। ब्रह्म ज्ञान दी देवे ल्याकत, धुर दा मंत्र इक समझाईआ। अमृत रस देवे नयामत, अमोघ आपणी चोग चुगाईआ।
१२२० होए सहाई अन्त क्यामत, मेहर नज़र पार कराईआ। सच दवारे लै के जाए सही सलामत, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। १२२०
१६ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। सतिजुग साचे, साचे १६
नाम दी होवे अगम्मी बरखा, बूँद स्वांती घर घर आप चुआईआ। निज आत्म परमात्म कर के दरसा, दरस दीद दीदार अंदर यार धुर दा नज़री आईआ। जन्म कर्म दी पूरब मेटे हरसा, तृखा कूड़ी दए गवाईआ। अंदर वड़ के खोल्हे परदा, नकाब रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुल्हा काया माटी घर दा, घर घर विच जोड़ जुड़ाईआ। इश्नान करा अगम्मी सर दा, दुरमति मैल दए धवाईआ। भेव चुका नरायण नर दा, नर हरि मेला सहिज सुभाईआ। सच दुआर अन्तिम खड़दा, अगे हो ना कोए अटकाईआ। जिस गृह पुरख अकाल वसदा, तिस दवारे मिले वड्याईआ। ओथे प्रकाश नहीं रवि ससि दा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। इशारा, नहीं किसे अक्ख दा, शब्द अगम्मी नाद शनवाईआ। ढोला इक्को जस दा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। भट्ठ रहिणा दिसे अड्ड दा, दर इक्को डेरा लाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम जन भगतां पिच्छे कदे ना छड्डदा, जुग जुग मेरे नाल मिलाईआ। सन्त सुहेला हिस्सेदार अद्ध दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। सतिजुग साचे साचे नाम दी सदा ताअरीफ़, तोहफ़िआं विच गुर अवतार पैगम्बर गए वरताईआ। धर्म दुआर दी दस्से इक प्रीत, पैज संवार दए वड्याईआ। नाम खुमारी जणाए गीत,

जोत उज्यारी नाल मिलाईआ। अग्नी तत करे सीत, मेघ अगम्मा आप बरसाईआ। दीन दुनी बदले रीत, नीती वेखे जगत लोकाईआ। परदा लाहवे हस्त कीट, शाह सुल्तान सरन समझाईआ। छत्र वखा के इक्को सीस, तख्त ताज जगत मिटाईआ। धाम दस्स अगम्म अनडीठ, जन भगतां अंदर अक्ख खुल्हाईआ। करवट लै बदल के पीठ, पुश्त पनाह होए सहाईआ। सचखण्ड दवारे दे करे वसनीक, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। दूजा रहे ना कोए शरीक, शरक्त विच ना ख़लक खुदाईआ। साचे नाम दी वड तौफ़ीक, तुआरफ़ भगतां दए जणाईआ। इक्को नाम जगत वस्त नालों मुफ़ीद, जो मुफ़लिसां दए वरताईआ। जो इशारा कीता फ़रीद, नेत्र नैणां अक्ख उठाईआ। सो मनसा पूरी होवे उम्मीद, तृष्ना दए बुझाईआ। भेव अभेदा दस्स अजीब, अजब निराली कार कमाईआ। आपणा हुक्म वरते जदीद, शदीद विच वेखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचा नाम करे हुक्म ताकीद, काइदा बाकायदा आपणा दए समझाईआ।

१२२१ ✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गुरनाम कौर दे गृह पिण्ड दुराहा मंडी ज़िला लुधियाणा ✪ १२२१

१६ सतिजुग साचे, सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दी जै सच जैकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड नाम ध्याईआ। गुर अवतार १६

पैगम्बरां बणे सहारा, भगत सुहेला हो के संग रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे अधारा, करोड़ तेतीसा सुण सुण खुशी मनाईआ। दो जहानां देवे हुलारा, हर घट आपणा रंग रंगाईआ। त्रै पंज वेखे अखाड़ा, पच्चीस परदा दए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पावे सारा, अञ्जील कुरानां फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दा लहिणा देवे विच संसारा, पूरब सब दा झोली पाईआ। लख चुरासी नज़री आवे एका एकँकारा, मानव ज़ाती मन हँकार दए मिटाईआ। धुर दा मन्दिर वखावे इक दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। शब्द अगाध वजाए नगारा, नौबत इक्को इक सुणाईआ। कागत कलम करे निमस्कारा, शाही बन्दना विच खुशी मनाईआ। रसना जेहवा बत्ती दन्द मिले प्यारा, प्रीतम आपणा परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा नाम तेरी झोली पाईआ। सतिजुग साचे, जै जैकार करन लोक परलोक, पुरी लोअ इक्को राग अल्हाईआ। जुग चौकड़ी वखरा दस्स सलोक, सोए गुरमुख लए उठाईआ। भाग लगा के काया माटी कोट, कंचन गढ़ दए बणाईआ। नाम निधान लगा के चोट, चोटी चढ़ के लए जगाईआ। झगड़ा मुका के वरन गोत, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। मन बुद्धी दी रहे ना कोई सोच, सतिगुर मिल के

वज्जे वधाईआ। तड़पण रहे ना कोई लोच, लोचण लोचा पूर कराईआ। घर स्वामी बख्शे मौज, मेहरवानी विच दे वड्याईआ। चरण प्रीती दे के धुर दा जोग, गुरमुख जुगीशर दए बणाईआ। सोहँ दे के साची चोग, चार युग दा खैहड़ा दए छुडाईआ। आपणा दे के दरस अमोघ, अमरापद इक वखाईआ। मुहब्बत विच कर के मोहत, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। कोटां विच्चों थोड़यां दे के होश, हुश्यिारी नाल दीन दुनी विच्चों बाहर कढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा बणा के लोकमात, हिस्सेदार गुरमुख नाल रखाईआ।

✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ गज्जन सिँघ दे गृह पिण्ड दुराहा मंडी ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, जन भगतां नज़री आए हज़ूर, हज़ूरी विच मन्ज़ूरी, दर घर साचे दए जणाईआ। पन्ध रहे ना नेड़ा दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा फेरा पाईआ। दुःख विच रहिण ना देवे किसे मज़बूर, मजबूरी ज़रूरी दए कटाईआ। साची बख्श के चरण धूढ़, जन्म कर्म दे लेखे आपणे लेखे पाईआ। रंग चाढ़ अगम्म गूढ़, दमांदम होए सहाईआ। तृष्ना तपे ना वांग तन्दूर, सांतक सति दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। सतिजुग साचे साचा खेल होवे अजीब, निराली आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बदल देवे नसीब, कर्म किस्मत ना कोए लड़ाईआ। दुःख भुक्ख दा रहिण ना देवे कोए ग़रीब, ग़ैरां दी मुछन्दगी दए मिटाईआ। मेहरवान हो के देवे तरतीब, तरफ़ दो तरफ़ वेख वखाईआ। सज्जण बण के सच रफ़ीक, मित्र हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, अमन विच चमन दे वखाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां रहे ना अन्तर ग़म, ग़मगीन नज़र कोए ना आईआ। भगत वछल हो संवारे कम्म, कारज सब दे पूर कराईआ। भण्डारा दे धुर दा धन, धर्म दी कारे दए लगाईआ। सन्त सुहेले बणा के साचे जन, जाणनहार दए वड्याईआ। सब दी पुकार सुणे बिना कन्न, अठ्ठे पहर वेख वखाईआ। बेनन्ती कर परवान लए मन्न, मन्नणहार बेपरवाहीआ। दुखड़ा रोग ना रहे तन, तत्व तत करे सफ़ाईआ। लेखे लाए पवण स्वास दम, दामन दामनगीर दए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां अंदर रहिण ना देवे ग़मी, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। वस्त अमोलक दे के नवीं, जीवण नवां दए बदलाईआ। सड़ना पए ना ममता तवी, ताकत आपणी नाल उठाईआ। लहिणा देणा चुकावे

अवतार चवी, चौंह जुगां दा लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। सतिजुग साचे, भगतां अंदर वेखे डूँघा सागर, गोता आपणा नाम लगाईआ। परदा लाह के काया गागर, गहर गम्भीर दए वड्याईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, उजले मुख वखाईआ। साचे घर बणा सौदागर, सौदा आपणे हट्ट वखाईआ। देवणहारा करता कादर, कदीम तों रिहा वरताईआ। कुछ लहिणा देणा नानक दस्सया बाबर, बाबल कह के प्रभ दा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दी खेल आप खिलाईआ। सतिजुग साचे, जन भगत प्रीती जावण जुड़, जोड़ी धुर बणाईआ। जिस कारन निरगुण हो के आया मुड़, निरवैर हो के वेस वटाईआ। गुरमुखां रहिण ना देवां कोई थुड़, भण्डारा अपाणा देणा वरताईआ। कुछ लहिणा देणा लेखा अनन्दपुर, पूरब पिछला नज़री आईआ। उस लैणा नाल ज़ोर, बाकी आपणी कढ्ढ वखाईआ। जन भगतां उपर कर ग़ौर, पतिपरमेश्वर अक्ख खुल्हाईआ। जगत जन्म दी पिछली वेख दौड़, भज्जे आए वाहो दाहीआ। पुरख अकाल अन्तिम आपे बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी कर के रहे कुरलाईआ। साचे नाम दा चला दौर, दाअवे कूड़े दे मिटाईआ। बिध कर अवर की और, आपणा लेखा नाल मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां कारज जावण सौर, सौहरे पईए इक्को तेरे नाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होणा सहाईआ। सतिजुग साचे, जन भगतां लहिणा देणा बाकी, बकता हो के रिहा जणाईआ। कुछ थोड़ी जेही रविदास वाली साखी, सिफ्त नाल सालाहीआ। कुछ लेखा ओस दी निकी जेही काकी, अवस्सथा बाल रही वखाईआ। जिस ने सांभ के रखी पाती, पत्रका आपणे विच छुपाईआ। ओस दा नाता नाल कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। ओस दी मन्नणी साची आखी, दासी हो के रही दृढ़ाईआ। पुरख अकाल सचखण्ड निवासी, वास्ता इक्को वार पाईआ। जन भगतां जीवण जुगती कर रासी, दुखियां दर्द दे मिटाईआ। जिन्हां देणी नहीं जम की फाँसी, तिन्हां जामन हो के होणा आप सहाईआ। किसे रहे ताप सराप ना खांसी, ख़ालस आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरी मंज़ल सब तों औखी घाटी, बिन तेरे घाटा ना पूर कराईआ। जगत उडीकदयां मिटी वाटी, पिछला पन्ध रिहा ना राईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशी, दर तेरे आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेट कुड़यारी काती, कामल हो के हो सहाईआ।

✪ २७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ बग्गा सिंघ दे गृह पिण्ड नत्त ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग साचे, शब्द अगम्मी मन्नणा कहिणा, हुक्म अंदर हुक्म आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चुके लहिणा, निरगुण सरगुण रहिण कोए ना पाईआ। दो जहानां भाणा बणे सहिणा, सृष्टी दृशटी अंदर ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नाम निधान श्री भगवान निरअक्खर इक्को कहिणा, अक्खरां वाली विद्या ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी होवे साक सज्जण सैणा, मित्र प्यारा धुर दरगाहीआ। इक्को नजरी आए निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दरस दिखाए तीजे नैणा, लोचन अक्ख प्रतख गुसाँईं दए खुल्हाईआ। माया ममता मोह विकार कलयुग अन्त लहिणा देणा, परवरदिगार सांझा यार धक्का दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचा नाम दए इक रसैणा, रसीआ इक्को इक आत्म परमात्म दए वखाईआ। सतिजुग साचे, साचा होवे खेल अगम्म, अलख अगोचर देणा जणाईआ। सति धर्म तेरा बेड़ा देवे बन्न्ह, नईआ नौका आपणे कंध उठाईआ। धुर भण्डारा देवे नाम धन, सच ख़ज़ीना तेरी झोली पाईआ। निरगुण जोत नूरी चाढ़े चन्न, कलयुग कूड़ अन्धेरा दए मिटाईआ। वासना

१२२४ बन्न्हे चार वरन अठारां बरन, मनुआ मन ममता मोह ना कोए चुकाईआ। देवे वड्याई काया माटी ख़ाकी तन, तत्व तत १२२४

१६ आपणा दए समझाईआ। सच वसेरा दस्से बिन छप्परी छन्न, सचखण्ड दवारा एकँकारा आपणा घर दए बणाईआ। १६

जिसदा लेखा बोध अगाध जुग चौकड़ी आदि जुगादि ना लिखणहारा, गुर अवतार पैगम्बर निउँ निउँ बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर बणे भिखारा, भिक्खक हो के दर झोली रहे डाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण निरवैर कुदरत दा मालक करनी दा करता आपणी करे कारा, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेला इक अकेला सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आपणा ढोला दए सुणाईआ। सतिजुग साचे उठ वेख खोल्ह जाग, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी जन भगतां काया मन्दिर लाए भाग, निरगुण सरगुण मेला मेले सहिज सुभाईआ। दीपक जोत जगाए चराग़, दीवा बाती कमलापाती नाल ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना बुझाए आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। दुरमति मैल घर घर धोवे दाग़, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त परदा ओहला दए उठाईआ। साध सन्त श्री भगवन्त आपणे हथ्थ पकड़े वाग, चार कुण्ट दहि दिशा वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। सति धर्म तेरा खेड़ा कर आबाद, आबादी भगतां नाल रखाईआ। सब दे अन्तर निरंतर तेरी इक्को होवे आवाज़, तूं मेरा मैं तेरा ढोला सृष्टी दृष्टी अंदर दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दिर महल अटल उच्च मनार वखाए अगम्मी महिराब, जित्थे महबूब हो के आपणा खेल खिलाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा इक्को होवे प्रचार, चार कुण्ट दहि दिशा इक्को डंका दयां वजाईआ। खुशीआं मनावण पैगम्बर गुरू अवतार, सचखण्ड दवारे इक्को तेरे नाम वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले निउँ निउँ करन निमस्कार, सूफ़ी फ़कीर सजदयां विच सीस निवाईआ। कुदरत दे कादर तेरे चरण कँवल बलिहार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। हरि जगदीस नव नौ चार तेरी धार, धर्म दवारा इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दीन दुनी वेखे थाउँ थाँईंआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा वेखणा रंग, रंग अनडिठड़ा दए जणाईआ। घर घर वजाए अगम्मा मृदंग, बिन तन्द सितार हिलाईआ। आत्म परमात्म दे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से के छन्द, सहिंसा अंदरों दए कढाहीआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म आपणे घर वसाईआ। चले चतुराई ना मनुआ मन, मन का मणका दए भवाईआ। जगत विकार हँकार शब्द सतिगुर देवे डंन, डंका इक्को इक वजाईआ। सृष्ट सबाई दीन दुनी कायनात नाम भण्डारा देवे अगम्मी धन, धर्म दुआर एकँकार परवरदिगार सांझे यार लोकमात मार झात, इक इकल्ला सच महल्ला भगत दवारा दए वखाईआ।

१२२५
१६

★ २६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ प्रीतम सिँघ दे गृह गोबिन्द पुरा ज़िला जलन्धर ★

किरपा करे पुरख अकाल, दीन दयाल दया कमाईआ। लेखा जाणे दो जहान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हुक्म संदेसा देवे धुर फ़रमान, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। सतिजुग उठ दुलारे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। मेहरवान महबूब सच दुआर वखाए सची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती कमलापाती जोत जगाए बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी अन्तरजामी भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा आप खुल्हाईआ। सतिजुग साचे उठ बलधार, पुरख अकाल दए वड्याईआ। धरनी धरत वेख ग़रीबां हाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ा चार कुण्ट वज्जे ताल, सति धर्म दुआर मुहब्बत ना कोए दिसाईआ। सच मुरीदां पुछे कोए ना हाल, मुर्शद धुर दा नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया तोड़े ना कोए जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सिर ते कूके काल, अगे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर नरायण इक्को इक दृढ़ाईआ। सतिजुग साचे

१२२६
१६

उठ उठ वेख, हरि करता आप वखाईआ। करे खेल नर नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जाता धर वेस, देस परदेसा खोज खुजाईआ। जिस दा बोध अगाधा शब्द अनादा अगम्मी लेख, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव कोए ना पाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के शाह महबूब मुहब्बत विच दस्से भेद, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा दए वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दहि दिशा चार कुण्ट मेटणहारा रेख, माया ममता मोह विकार हँकार दए मिटाईआ। सब दी सुरती कर के चेतन चेत, चार वरन अठारां बरन आलस निंद्रा दए मिटाईआ। हर घट नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा आपणा पन्ध मुकाईआ। सुहावणहारा आत्म साची सेज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरी साची रुत्त, आप सुहाए अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म देवणहारा वड्याईआ। सतिजुग साचे उठ बाल निधान, नढ्ढे बाले चाँईं चाँईंआ। शब्द अगम्मी इक ज्ञान, निरअक्खर करां पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर प्रधान, विष्न ब्रह्मा शिव मिल के ढोला गाईआ। देवत सुर सीस झुकाण, रिख मुन खुशी मनाईआ। भगत जन जाण दरगाह कुरबान, निउं निउँ लागण पाईआ। लख चुरासी पुरख अबिनाशी घट निवासी देवे दान, दाता दानी होए आप सहाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर करना पए परवान, परम पुरख परमात्म आत्म मेला लए मिलाईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, शाह सुल्तान आपणा हुक्म दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा तेरा राह धुर दा आप चलाए अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा हुक्म मनाईआ। सतिजुग साचे उठ तक्क, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। करे खेल पुरख समरथ, पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म शब्दी डोर पाए नथ्थ, मन वासना कूड़ी क्रिया कपट दर रहिण कोए ना पाईआ। भगत सुहेला इक इकेला निज नेत्र खोले अक्ख, प्रतख नज़री आए सर्ब गुसाँईंआ। तूं मेरा मैं तेरा भेव अभेदा खोले सच, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। भाग लगाए काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी महिमा दस्स अकथ, रसना जेहवा बत्ती दन्द लहिणा दए मुकाईआ। सतिजुग साचे, उठ वेख अगम्म अथाह नज़ारा, बेनज़ीर दए वखाईआ। जिस दा हुक्म चले जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सो कल कल्की लए अवतारा, निहकलंक राउ रंक इक्को डंक दए सुणाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी करे इज़हारा, सिफ्तां अंदर सिफ्ती ढोले गाईआ। जिस दी आसा रख के गए गुरू अवतारा, पैगम्बर हो के सजदा सीस निवाईआ। सो लेखा जाणे धुर दरबारा, निरगुण सरगुण खेले खेल अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचा सच सलाह देवणहारा बेपरवाह, शब्दी सतिगुर इक मलाह, बेड़ा चार कुण्ट दहि दिशा आपणे कंध उठाईआ। सतिजुग साचे उठ नेत्र आपणा खोल्ह, ख़ालक ख़लक रिहा समझाईआ। शब्द अगम्मी कंडे तोल, जगत तराजू नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के बोल, आत्म परमात्म मेला रिहा कराईआ। शब्द अगम्मी वजा के ढोल, धुन आत्मक राग सुणाईआ। बजर कपाटी परदा खोल्ह, निज लोचन करे रुशनाईआ। सति सरूपी हो के जाए मौल, मौला आपणी कार कमाईआ। करे प्रकाश उपर धरनी धरत धौल, धवल धर्म दवारा इक सुहाईआ। गुर गोबिन्द लेखा पूरा करे कीता कौल, कौल आपणा तोड़ निभाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पांधा रौल, बुद्धिवान ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा लेखा दए समझाईआ। सतिजुग साचे, तेरा लेखा दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी देणा जाप, इष्टी इक्को नूर रुशनाईआ। रूह बुत्त दोवें करने पाक, पतित पुनीत आप बणाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह के ताक, परदा अदंरों देणा उठाईआ। शब्द अगम्मी सुणा के नाद, धुन अगम्म करे शनवाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। जन भगतां दे धरवास, भरम भुलेखा देणा मिटाईआ। साचे मन्दिर वखा आपणी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। अमृत धार बुझा के प्यास, निझर झिरना देणा झिराईआ। अंदर मेट अन्धरी रात, निरगुण जोत कर प्रकाश, दरस वखा के इक इकांत, इक महल्ला देणा वसाईआ। जित्थे रसना जेहवा कोई ना करे बात, उच्ची कूक ना कोए अलाईआ। रस माणे कोई ना राग, रागनी चले ना कोए चतुराईआ। दीन दुनी दा होवे त्याग, वासना विच ना कोए फ़साईआ। इक्को आत्म होवे वैराग, परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सति दवारे लग्गे भाग, भगवन मिले बेपरवाहीआ। दीपक जोत जगे चिराग़, चरागाहां दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत हो विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। सचखण्ड दवारे हो आबाद, नाता इक्को नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरा परदा ओहला, पुरख अकाल चुकाए बण विचोला, सोहला ढोला धुर दा आप सुणाईआ। सतिजुग साचे, तेरे नाम दा होवे इक जैकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड सिफ्त सालाहीआ। दो जहान वसे इक दवारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल सब दा होवे मीत मुरारा, मित्र धुर दा नूर खुदाईआ। जिस दा महल अटल उच्च मनारा, मुकामे हक डेरा लाईआ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव ख़िदमतगारा, गुर अवतार पैगम्बर जुग जुग सेव कमाईआ। जिस दा नाम सदा चले जुग चारा, जुग चौकड़ी आपणे हुक्म भवाईआ। सो कलयुग अन्तिम करे पार किनारा, कूड़ी क्रिया दए रुढ़ाईआ। सतिजुग साचे, तेरे

नाम दा होवे जगत पसारा, पसर पसारी वेख वखाईआ। धुर दे नाम दा डंका वज्जे अपारा, राउ रंका आप उठाईआ। सच लगा इक दरबारा, धुर दरबारी दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन बण सहारा, सहायता आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बख्शे इक्को नाम अधारा, आहला अदना इक्को रंग रंगाईआ।

✪ ३० भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ महल सिँघ दे गृह पिण्ड संगतपुरा ज़िला जलन्धर ✪

सतिजुग साचे, कूड़ी क्रिया रहे कोई ना सीमा, स्वामी अन्तरजामी दया कमाईआ। इक्को रूप दरसाए लोक तीनां, त्रैगुण लेखा त्रैभवण दए मुकाईआ। काया चोली अगम्मी चाढ़े रंग भीना, भिन्नड़ी रैण मिल के वज्जे वधाईआ। जन भगतां ठांडा करे सीना, सीना बसीना आपणा नाम जपाईआ। विछोड़ा रहे ना जल मीना, मिलणी जगदीश आत्म परमात्म दए कराईआ। धुर दा नाम गुर अवतार चीना, चौथे युग दए माण वड्याईआ। लेखा जाणे आकाश पाताल उत्ते ज़मीना, ज़ामन हो के ज़मीर दए बदलाईआ। गुरमुखां होणा पए ना किसे अधीना, अदल इन्साफ आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख रहे ना कोए कमीना, बुध बिबेक आपणे नाम कराईआ। सब दा लेखे लाए आपणा जीणा, जीवण जुगत देवे माण वड्याईआ। शरअ अंदर होणा पए ना नीवां, शरीअत असलीअत वाली दृढ़ाईआ। सन्त सुहेला बणा के अगम्मी नगीना, जिस दी कीमत सृष्ट ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग साचे साची वस्त देवां विशेष, विश्व आपणी धार चलाईआ। नाम अगम्मा दे संदेश, सहिंसयां विच्चों बाहर कढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर करन आदेस, सजदयां विच सीस निवाईआ। डण्डावत बन्दना करे विष्न ब्रह्मा शिव महेष, गणपति इक्को ओट तकाईआ। मालक नज़री आवे नर नरेश, नर नरायण धुर दरगाहीआ। आदि जुगादी सब दा लेखा जाणे लेख, लिख्त भविख्त आपणे विच्चों प्रगटाईआ। कौल इकरार पूरा करे गुर गुर दस्मेश, दहि दिशा वेखे थाउँ थाँईआ। गुरमुख सन्त सुहेले बाल जवानी तक्के अलूड़ वरेस, नौजवाना मर्द मर्दाना खोज खुजाईआ। सच दुआर एकँकार वखावे आपणा देस, दहि दिशा परदा ओहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर एकँकार अकल कलधारी एको एक प्रगटाईआ। सतिजुग साचे, नमो नमो करे शिव शक्ती, शवै आपणा रूप बदलाईआ। किरपा करे पुरख अकाल इक्को व्यक्ति, वेला वक्त दए गवाहीआ। नाम निधान दस्स के धुर दी भगती, भगवन भगत दए तराईआ।

१२२८
१६

तूं मेरा मैं तेरा दस्स के पंगती, पंजां विच्चों बाहर कढाहीआ। आत्म ब्रह्म दे के शक्ती, शख्सीअत आपणी दए दृढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों वक्खरी हस्ती, हरि करता आपणी दए समझाईआ। नाम खुमारी चाढ़ के मस्ती, मस्त मस्ताना दए बणाईआ। काया काअबा वखा के धुर दी बस्ती, हरि मन्दिर इक्को इक समझाईआ। धार निकले अंदरों आत्म परमात्म जिस दी, दूजा राग ना कोए अलाईआ। गुरमुख सवाणी हरि सतिगुर दवारे वसदी, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। जित्थे लोड़ नहीं इशारे वाली अक्ख दी, बिन अक्खां करे पढ़ाईआ। खेल वखा के निरगुण नूर जोत प्रतख दी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। भगत भगवान धार चलाए सच दी, सुच संचम आपणे विच्चों प्रगटाईआ। भाग लगावे काया माटी कच्च दी, कंचनगढ़ आप वखाईआ। मनुआ धार फिरे ना नच्चदी, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। खेल जाण हकीकत हक दी, असलीअत आपणी दए वखाईआ। धार चुआए अमृत निज रस दी, रस्ता धुर दा इक समझाईआ। मिलणी होवे पुरख अकाल समरथ दी, साहिब सतिगुर मिल के वज्जे वधाईआ। सतिजुग साचे जन भगतां आत्म सदा परमात्म दवारे वसदी, दूजे दर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, खेल जणाए आपणी धार प्रगट दी, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ।

३० भाद्रों शहिनशाही सम्मत २ साधू सिंघ दे गृह पिण्ड संगत पुरा ज़िला जलन्धर

सतिजुग साचे, साचा नाम देवे प्रभ पूरन, पूरन परमेश्वर एका एक दए वड्याईआ। आसा मनसा रहे ना कोए अधूरन, सगल वसूरे दए गवाईआ। कलयुग क्रिया मेटे कूड़ कूड़न, ममता मोह विकार गवाईआ। सच प्रीती बख्शे चरण धूढ़न, टिक्के मस्तक आप लगाईआ। नज़री आए हाज़र हज़ूरन, हज़रत इक्को शहिनशाहीआ। भगत बेनन्ती करे मन्ज़ूरन, सन्त सुहेले अंग लगाईआ। जो वस्या दूर दूरन, नेरन नेरा हो के परदा दए उठाईआ। सर्ब कला बण भरपूरन, प्रभ देवे माण वड्याईआ। शब्द अनुराग उपजा तूरन, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। विछोड़े विच ना रहे कोए मजबूरन, मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। निरगुण नूर बख्शे अगम्मी नूरन, जोती जोत डगमगाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़न, धन्दा इक्को नाम जणाईआ। रंग अगम्मी चाढ़े गूढ़न, दुरमति मैल धवाईआ। सोहला करे मशहूरन, मशवरयां नाल सलाह ना कोए पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक जणाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दा बख्शां सति, असति रहिण कोए ना पाईआ। सति ज्ञान दी बख्शां मत, मनमति रहे ना राईआ। निरगुण धार कर उत्पत, अन्ध अन्धेरा कूड़ा दयां

कढाहीआ। जोत सरूपी हो के वेखां वत, वतन काया मन्दिर खोज खुजाईआ। मेहरवान हो के देवां रस, रसीआ हो के बूँद अगम्म चुआईआ। धुरदरगाही दस्सां जस, जिस्म ज़मीर दयां बदलाईआ। मनुआ मन कर के वस, विशा आपणा दयां समझाईआ। जन भगतां खोल्ह के नेत्र अक्ख, अक्खीआं तों परे करां रुशनाईआ। शब्द अनादी सुणा के नद, अनहद आपणा ताल वजाईआ। सृष्टी कर के वक्खरी जग, जागरत जोत दयां डगमगाईआ। त्रैगुण माया साड़ ना सके अग्ग, अगला लेखा मंगे कोए ना राईआ। बिन मक्के काअब्यों करा के हज्ज, हज़रत धुर दा दयां मिलाईआ। जो हकीकत विच हक, असलीअत विच असल नज़र ना आईआ। सर्ब कला समरथ, दाता दानी बेपरवाहीआ। शब्द भण्डारा देवे वथ, वस्त अमोलक आप वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के आपणी गथ, गदागर गुरमुख रहिण कोए ना पाईआ। अन्त सुहेला हो के लए रख, रक्ख्या करे थाउँ थाँईंआ। निरगुण हो के सरगुण करे पक्ख, किशना शुक्ला पक्ख दी लोड़ रहे ना राईआ। सन्त सुहेले रहिण ना देवे वक्ख, वक्खरा घर ना कोए बणाईआ। दरगाह साची देवे रख, सचखण्ड दवारे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा लहिणा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम दी होवे इक रसोई, चार कुण्ट दिशा भण्डारा दए वरताईआ। परवरदिगारा तेरे नाम दी फिरे दरोही, तोबा तोबा करे लोकाईआ। पुरख अकाल सृष्ट उठाए सोई, आलस निंद्रा विच रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मन्न अरज़ोई, अरज़ आरज़ू सब दी आपणे लेखे पाईआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेला गुर चेला उठावे कोई कोई, कोटां विच्चों लए मिलाईआ। जिन्हां नाम दी देवे ढोई, ढोआ इक्को दए वखाईआ। जिस दी कीमत ना जाणे कोई, जगत जौहरी ना कोए चुकाईआ। अन्त खेल उसे दी होई, जिस दा होका देवे लोकाईआ। जिस दी धार आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा नवीं नरोई, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जिस दा खेल होणा नाल कबीर लोई, लोयणां तों परे दए वखाईआ। सो अमृत रस जन भगतां अंदर रिहा चोई, चोरां ठग्गां यारां तों लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक समझाईआ। सतिजुग साचे, साचा नाम कोमल होवे मलूक, मलकुलमौत नेड़ कोए ना आईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां फिरे वड दूत, दुतीआ भाउ दए चुकाईआ। डंका वजाए चारे कूट, दहि दिशा करे शनवाईआ। भाग लगाए पंज भूत, तत्व तत दए दृढ़ाईआ। झगड़ा मुकाए जूठ झूठ, सच सुच वण्ड वण्डाईआ। जन भगतां उपर जाए तुठ्ठ, मेहर नज़र उठाईआ। जाम निराला प्याए घुट, रस अगम्मी आप चुआईआ। सन्त सुहेले बणा के सुत, अपराधी अंदरों दए कढाहीआ। उज्जल कराए मुख, मुकतयां तों परे डेरा कराईआ। जित्थे आत्म परमात्म दा सुख, जोती जोत विच समाईआ। जनणी

जणे फेर ना कोई कुक्ख, कूड़ अग्न ना कोए तपाईआ। तृष्ना रहे ना कोई भुक्ख, ममता मोह दए मिटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के गोदी लए चुक्क, चार युग दा लहिणा देणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा राह चलाईआ। सतिजुग साचे, साचे नाम ना होवे इक्को मोह, मुहब्बत निरगुण निरगुण नाल रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवे आपणी सो, सो साहिब स्वामी अन्तर परदा दए उठाईआ। जिस दा भेव ना जाणे को, कोटां विच्चों गुरमुख लए मिलाईआ। दो जहानां रिहा जोह, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। सन्त सुहेले आपणे धागे लए परो, परोहतां दी लोड़ रहे ना राईआ। सब दा मालक आपे हो, होका दे के लए जगाईआ। आत्म परमात्म हो के जावे छोह, शहिनशाह आपणा रंग चढ़ाईआ। सच प्रकाश करे अगम्मी लो, लोयण नेत्र अक्ख दए बदलाईआ। जन भगतां जिहा आपे हो, हरि मन्दिर काया डेरा लाईआ। भगत भगवान धार कोई ना जाणे दो, दूआ एका धार बदलाईआ। हँ ब्रह्म धार बण सो, सो स्वामी नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया वोह, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर ढोलयां सोहलयां रागां नादां विच गाईआ।

१२३१
१६

✪ पहली अस्सू शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

अस्सू कहे खेल श्री भगवान, जिस दी भगौती भगवती दए गवाहीआ। झुकदे वेखे ज़िमीं असमान, बेज़बां गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। सजदे नमस्ते डण्डावत करन प्रणाम, निउँ निउँ चरण कँवल ध्यान लगाईआ। मालक परवरदिगार मन्नण धुर दा काहन, राम इक्को बेपरवाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच निज़ाम, नौबत आपणा नाम वजाईआ। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल आपणा हुक्म मनाईआ। सो दाता दानी हो के मेहरवान, महबूब हुक्में अंदर हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त वेखे मार ध्यान, चार कुण्ट दहि दिशा खोज खुजाईआ। भगत सुहेले उठा के चतुर सुजान, सुघड़ स्याणे आपणे नाल मिलाईआ। अन्तर रहिण ना देवे कोई अभिमान, माण निमाणयां दए समझाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखणहारा लेखा जाणे हर घट आण, अण्डज जेरज उत्भुज सेहतज फोल फुलाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी कलयुग जीवां देवणहारा आपणा ज्ञान, परदयां विच्चों परदा आप उठाईआ। जगत गुरू वेखे मार ध्यान, भारत खण्ड पहली वण्ड वण्डाईआ। जित्थे नौ सौ चुरानवे जुग दी मीज़ान, चार वरनां विच टिकाईआ। अन्तर मनुआ शरअ शैतान,

रसना जेहवा शब्द पढ़ाईआ। बत्ती दन्द करन कल्याण, कलमयां राग सुणाईआ। बिना मंज़लों मिलण भगवान, भाग अक्खरां वाला रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। अस्सू कहे जगत गुरू नौ सौ चुरानवे, शहिनशाही सम्मत दए गवाहीआ। जिन्हां ने आपणे कीते पाउणे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। ढोले आपणे नाम दे नाम वाले गाउणे, धुर दा नाम समझ कोए ना पाईआ। अन्तिम कर्म ना किसे बख्शाउणे, बख्शिश रहमत ना कोए कमाईआ। पड़दे ओहले ना किसे चुकाउणे, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। बाहों फड़ ना किसे उठाउणे, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म सर ना किसे नहाउणे, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। लख चुरासी आवण जावणे, खुशीआं वाला खेल भवाईआ। किसे कम्म ना आउणे पढ़े अक्खर बावने, बावन अक्खरी पार ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे नौ सौ चुरानवे वेखे गुरू कलकाती, कलमयां तों बाहर डेरा लाईआ। जिन्हां दी जगत वासना नाल होणी शादी, साचा कन्त ना कोए प्रनाईआ। राती नींद ना आवे प्रभाती, अमृत मेघ अमृत वेले ना कोए बरसाईआ। आपणी धार धार ना जाती, धर्म दुआर ना कोए वखाईआ। काया चोली कपड़ पाटी, ओढण सीस ना कोए टिकाईआ। सतिगुर शब्द चढ़े कोए ना घाटी, रसना वाले ढोले सारे गाईआ। जिधर वेखो अलिफ़ ये दी मुक्की ना किसे वाटी, निरअक्खर ना कोए समझाईआ। मिल्या मेल ना कमलापाती, कमले रोवण मारन धाईंआ। अन्तिम सदी चौधवीं सब ने रहिणा फाडी, मंज़ल हक ना कोए वखाईआ। बिना पुरख अकाल दे दूजा नज़र ना आवे गॉडी, गारडीअन सारे दए मिटाईआ। रसना वाला रहे कोए ना ढाडी, अन्तर बोध अगाध वेख वखाईआ। मसलयां वाली रहिण ना देवे वादी, वाहिद इबादत इक्को दए जणाईआ। जिस नूं समझे ना इश्क हकीकी मज़ाज़ी, मिसल तों परे मिसाल दए बणाईआ। तन्द सितार गावे ना कोए रबाबी, नानक मर्दाने गया समझाईआ। बिना पुरख अकाल दे किते होवे ना स्वाल जवाबी, मुख़ातब हो के ख़ताब ना कोए दवाईआ। लहिणा देणा दस्स आप बगदादी, बगलगीर इक्को गया समझाईआ। जिस दी भगत उधारना वादी, वाइदा पिछला पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। अस्सू कहे मैं नौ सौ चुरानवे तक्कां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। खुशीआं विच हस्सां, सौहरयां घर जगत सन्त गया ना कोए जवाईआ। मन वासना प्रेम प्यार दीआं नथ्थां, सुहाग कन्त ना कोए हंडाईआ। तिन्न अस्सू कहे मैं उन्हां नाल कदे ना वसां, अगे चंगी होवे जुदाईआ। जिन्हां दे अंदर दीन मज़्हब दीआं वट्टां, वटणा मल के मिल्या कोई ना धुर दे माहीआ। जिन्हां दा इष्ट पत्थर इट्टां, मन्दिरां सीस निवाईआ। तिन्हां दे कोलों जुग चौकड़ी नट्ठां, गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। उन्हां

दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के बिना नेत्र लोचन नैण अगम्मा नूर तक्कां, जिस दी ताकत ना कोए अज़माईआ। जित्थे ठग्गां चोरां यारां दीआं रहिण मूल ना ढक्कां, ढाह ढेरी ख़ाक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पहली अस्सू कहे मैं नव नौ चार दी वेखां उस्तादी, जगत गुरू मात अख्वाईआ। जिन्हां दा मालक अछल छल्ल दा वादी, वाइदे नाल सर्ब भुलाईआ। बुद्धी नाल सब नूं कर के बाग़ी, अक्खरां विच दिता फसाईआ। अंदर मिले ना कोए इमदादी, मंज़ल सच ना कोए पुचाईआ। नहावण धोवण दी बाहर दी रही हयाती, अंदर अन्धेरी राती ना कोए मिटाईआ। किसे ना मिल्या पुरख अकाल सफ़ाती, परवरदिगार नूर ना कोए रुशनाईआ। जगत विद्या बणे फ़सादी, रसना जेहवा नाल लड़ाईआ। ना उह पंडत मुल्ला काज़ी, ना उह ग्रन्थी ग्रन्थ वाच जणाईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, जागदे सुते नज़री आईआ। हिरदे उपजे ना हरि वैरागी, वैरी अंदरों ना कोए कढाहीआ। किसे ना समझया की खेल प्रभू दा माज़ी, जो सिध्धा भगतां मिल के आपणा नाम दए समझाईआ। उन्हां दे काया काअबे दा बण के हाजी, हुजरा हक दए सुहाईआ। प्रेम प्यार दा बण के नमाज़ी, नमस्ते इक्को दए दृढ़ाईआ। लेखे ला के साढे तिन्न हथ्थ दी अराज़ी, रज़ामंद आपणे नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। पहली अस्सू कहे
१२३३ १९ प्रभ नौ सौ गुरू दी चुरानवयां नाल हालत, हालां कि तैनूं दस्सण दी लोड़ ना राईआ। इन्हां दे अंदर आपणे आप मिलण १२३३ १९
दी अलामत, तेरा नाम ना कोए समझाईआ। बुद्धी वाली जगत दे ज़मानत, बरीख़ाना रहे वखाईआ। साचा नाम मिले ना किसे नयामत, तेरा अमृत मेघ ना किसे बरसाईआ। कलयुग अन्तिम सब नूं होई ममानत, दरगाह साची हक मुकाम चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे प्रभ तूं जुग जुग तारें पत्थर, पाहन पार कराईआ। कुछ याद कर गोबिन्द सत्थर, यारड़ा हो हंढाहीआ। वैराग विच ना केरया अथ्थर, नेत्र नैण ना कोए शनवाईआ। शब्द संदेशे दिता पत्र, पाती तेरा नाम बणाईआ। जिस वेले निरगुण धार आवें उत्तर, निरगुण नूर जोत प्रगटाईआ। बिना गोबिन्द तेरा दूजा रहे कोई ना मित्र, जगत कुटम्ब देणा गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को सांझा शुकर, शुकराने विच आपा भेंट कराईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी शब्दी धार ना जाईं मुकर, इकरार कौल इक्को तोड़ निभाईआ। मुड़ के मंगदा नहीं तैथों खाण वाला कोई टुक्कड़, टुकड़यां वाली ना आस रखाईआ। तेरी किरपा नाल गुरमुख प्रेमी आवां चुक्कण, लोकमात आपणी गोद उठाईआ। तेरे भगत सुहेले तेरे दर ते आवां सुट्टण, सचखण्ड दुआर टिकाईआ। कलयुग कूड़ी जड़ आवां पुट्टण, पटने पौंटे समझ कोए ना आईआ। गुरमुख साचयां आवां पुछण, पिछला लेखा

वेख वखाईआ। कूड़ कुड़यारयां कोलों आवां लुक्कण, सनमुख बैठा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अस्सू कहे मैं धुर दा आसावंद, आस अगम्मी दयां जणाईआ। प्रभ मिले इक ख़ावंद, ख़ातून सृष्ट लए हंढाहीआ। हुक्में अंदर कर पाबन्द, परदा नकाब दए चुकाईआ। प्रेम प्यार दा दे अनन्द, महबूब आपणा मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म दे के छन्द, सहिंसा रोग दए मिटाईआ। दे वड्याई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड पार कराईआ। दूजी रहे कोई ना डण्ड, डण्डावत इक्को दए समझाईआ। नौ सौ चुरानवे गुरू करे खण्ड खण्ड, खण्डा आपणा नाम उठाईआ। जन भगतां हो आप बख़्शंद, बख़्शिश रहमत आप वरताईआ। मानस जन्म होण ना देवे भंग, तत वजूद आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग कहिण, आपणी कामना नाल ल्याईआ। नौ सौ चुरानवे गुरू पावण वैण, नेत्र रोवण मारन धाईआ। तेरा नाम किसे ना मिले रसैण, रस्ते भुल्ले सारे देण दुहाईआ। नाम संदेसा सचखण्ड दवारयों कोई ना आया लैण, लायक बण के तेरा हुक्म ना कोए वरताईआ। अक्खरां नाल तेरे नालों होए तरफ़ैन, तफ़र्का तरफ़ दुहरफ़ ना कोए समझाईआ। रसना जेहवा जगत अलाइन, नैण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दे समझाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे, ख़ालक ख़लक जहान। शब्द अगम्मी कंडे तोल दे, तोलणहार श्री भगवान। खोटे खरे सर्ब वरोल दे, वेख ज़िमीं असमान। झगड़े मुका दे जगत विचोल दे, विचोला शब्द गुरू बण बलवान। लेखे मुक जाण कूड़ मख़ौल दे, मुक्खीए कर पंज प्रधान। भार हौले कर दे धौल दे, धर्म दी दस्स बान। वाहिदे पूरे कर दे कौल दे, गोबिन्द मिल के नौजवान। अमृत रस दे मेघ सौण दे, अग्नी अग्ग ना कोए तपाण। झगड़े मुका दे मन हँकारी राउण दे, राम रमईआ हो के निगाहबान। झकोले दे दे आपणी प्रेम प्रीती पाउण दे, स्वास भगतां सुखाले होण। झगड़े मुका दे अवण गाउण दे, गहर गम्भीर हो प्रधान। ढोले दस्स दे आपणे गाउण दे, दूजे अक्खरां रहे ना कोए पछाण। हुक्म दे दे कलयुग अन्तिम मिटाउण दे, सतिजुग साचा कर बलवान। बल वखा दे कूड़ कुड़यारा ढाउण दे, मर्द मर्दाने नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। भगवन, नौ सौ चुरानवे वेख, चार कुण्ट जगत नज़री आईआ। जिन्हां कलयुग क्रिया करया भेख, लेख तेरा ना कोए दृढ़ाईआ। सारे वस के काल दे देस, डंका तेरे काल दा रहे वजाईआ। आपा कर सक्या कोई ना भेंट, भेंटा लै लै जगत रहे सताईआ। तेरे नाम दी कीमत रख के रेट, रट्टा घर घर रहे पाईआ। अक्खरां वाला लिख के (लेख) देंदे उत्ते सलेट, शाही नाल पक्की गंढु पवाईआ। अंदरों आपणा साफ़ करे ना कोई पेट,

पटराणी रूप नज़र कोए ना आईआ। काया गली चिक्कड़ विच रहे लेट, सेज सुहञ्जणी चढ़ के तेरे अंग नाल अंग ना कोए लगाईआ। मैं हैरान होया वेख वेख, वेखी जगत लोकाईआ। चढ़ के वेख्या नहीं किसे अगम्म तेरा देस, सति पुरख मिल के खुशी ना कोए मनाईआ। सचखण्ड दा ऐवें मारन शेख़, शेख़ी विच जगत चतुराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जिस नूं तूं दिसाया आपणा देस, उस नूं आपणा नाम संदेसा दे के जगत घलाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों बाकी गुरू ठग्गां वाला भेस, अगांह वाली अग्ग ना कोए बुझाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक नरेश, नर नरायण इक्को नज़री आईआ। जिस ने दीन मज़्हब ज़ात पात राउ रंक जीव जहान करने खेत, बलधारी रहिण कोए ना पाईआ। आपणी किरपा अंदर जन भगतां करें हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जिस चाहें आपणे दर दा देवें भेत, दूजा समझ कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बिन तेरी किरपा तेरे चरण रहे ना किसे टेक, टिक्के वाले टकयां तों देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दुनी क्रिया दे छेक, छेकड़ आपणा रंग देणा रंगाईआ। अस्सू कहे मेरा सब तों वक्खरा नसीब, निसबत वण्ड ना कोए वण्डाईआ। मेरा लेखा लिख्या विच कुछ कुरान मजीद, जिस दा मजमूहा ना कोए समझाईआ। नवां पुराणा कीती तस्दीक, वेद व्यासा गया जणाईआ। गोबिन्द बहत्तरवीं साखी विच रखी उम्मीद,
१२३५ १९ परदा सके ना कोए खुल्हाईआ। अर्जन पंजवेंमहल्ले विच राग माझ विच लाई नीझ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। गोबिन्द अंगद कीती वसीअत, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। गोबिन्द सच्ची दस्स असलीअत, शब्दी शब्द आप पढ़ाईआ। जिस दी कोई ना जाणे तबीअत, रमज़ समझ कोए ना पाईआ। उस दी लभ्भ सके ना कोई वलदीअत, वलद वालदा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे विच दो जहानां उधारनां अहिमीअत, अमल विच वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान हुक्म वरताईआ।

हुक्म कहे मैं रहिण ना देवां झगड़ा, (झंजट) नव नौ चार मिटाईआ। सतिगुर शब्द होण ना देवां लंगड़ा, भार इक्को जिहा वखाईआ। किसे दा दूजे दवारे होण ना देवां मंगणा, विचोले गुरू देवां खपाईआ। इक्को नाम दी चढ़े रंगणा, रंगत इक्को नज़री आईआ। कुछ लहिणा देणा पंडत रविदास वाले कंगणा, कर्म कांड नाल जणाईआ। करे खेल विच वरभण्डणा, भंडी कूड़ी देणी गवाईआ। चार कुण्ट जिस ने दंडणा, डण्डावत इक्को दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। अस्सू कहे मेरी आसा तृष्ना, तृखावन्त दयां दुहाईआ। तेरे चरण कँवल झुकदे

वेखां ब्रह्मा विष्ना, शंकर सीस निवाईआ। नमसतयां विच राम सीता निवणा, डण्डावत गोपी काहन कर के खुशी मनाईआ। जगत जहान जाण के मिथना, मिथ्या वेखां सर्ब लोकाईआ। पीर पैगम्बरां सबक तैथों सिक्खणा, तेरी सिख्या वड वड्याईआ। गुरुआं तेरे नाम दा सिफ्ती सोहला लिखणा, लिख लिख मात वड्याईआ। तेरा नूर ज़हूर बिन तेरी किरपा किसे ना दिसणा, दीद जगत कम्म किसे ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त एका खेल आप बुझणा, दूजा संग ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक प्रगटाईआ। सच मार्ग धुर दा लावीं, आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया जगत मुकावीं, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अबिनाशी इक्को नाम जपावीं, बहुती सिफ्तां दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को सरोवर इश्नान करावीं, अठ्ठ सठ्ठ डेरा ढाहीआ। सच दुआर इक प्रगटावीं, शिवदवाला मठ मन्दिर मसीत दा लेखा दईं मुकाईआ। इक्को नाम अगम्मा सुणावीं, अणसुणत राग अल्हाईआ। साढे तिन्न हथ्थ भाग लगावीं, भाग आपणा नाल रलाईआ। अनहद नादी शब्द वजावीं, धुन आत्म बेपरवाहीआ। निरगुण जोती जोत जगावीं, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। परदा ओहला आप चुकावीं, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेजा सच सुहावीं, स्वामी हो के डेरा लाईआ।
१२३६ नार कन्त भतार हो के रावीं, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाईआ। महल अटल आप सुहावीं, सोभनीक खुशी वखाईआ। आपणा १२३६
१९ राह आप खुल्हावीं, मेहर नज़र इक उठाईआ। राह विच ना कदे अटकावीं, अगे हो ना कोए अटकाईआ। मंज़ल धुर दी १९
आप चढ़ावीं, जित्थे वसें बेपरवाहीआ। गुर अवतारां नाल मिलावीं, पैगम्बरां जोड़ जुड़ाईआ। मेरी आत्मा परमात्मा आपणे नाल रखीं सावीं, इक्को कंडे तोल तुलाईआ। कन्त कन्तूहल धुर दा मालक हो के आवीं, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी आ के कर, हरि करते वड वड्याईआ। निरभउ भय चुका डर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कूड़ी क्रिया जाए झड़, लोकमात रहिण ना पाईआ। कूड़ा गुरू देवे कोए ना वर, शब्दी गुरू वज्जे वधाईआ। शरअ विच शर्म ना कर, कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। तूं निरगुण निरवैर इक्को हरि, हर हिरदे जा समाईआ। सन्त सुहेले सज्जण फड़, गुरमुख गुरसिख लै उठाईआ। काया मन्दिर आपणे चढ़, सच दवारे सोभा पाईआ। महल अटल अगम्मे खड़, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला पढ़, चौदां विद्या डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा दे सुहाईआ। घर साचा आप सुहा दे, सोभावन्त सुल्तान। पुरख अबिनाशी जोत जगा दे, अन्ध अन्धेरे होए ज्ञान। अनहद नादी नाद वजा दे, धुर दी शब्द सुणे धुनकान। घर मन्दिर इक रुशना दे, जोती जोत हो प्रधान। अमृत अगम्मा जाम प्या दे, तीर्थ मुके जगत जहान।

इक्को आपणा नाम दृढ़ा दे, करनी पए ना अक्खरां वाली कल्याण। जजमान हो के मरासी डूंमा आपणी खैर पा दे, गुरमुख मंगण जाण ना किसे दुकान। जुग जन्म दे विछड़े आपणी गोद बिठा दे, निरगुण निरगुण कर परवान पिछले कर्म कुकर्म मिटा दे, आदि जुगादी बण मेहरवान। दु:ख भंजन भव सागर पार करा दे, कुदरत दे मालक हो के दयावान। डुब्बदे पत्थर पार लँघा दे, कलयुग हो के निगाहबान। जगत शरअ कूड़ ज़ंजीर तुड़ा दे, तेरा कर्म पवे नीसाण। माटी चमड़े लेखे ला दे, तेरे चरणी डिगे आण। लख चुरासी फंद कटा दे, झगड़ा रहे ना आवण जाण। सचखण्ड दुआर बहा दे, जिस घर वसण भगत सुजान। पूरब विछड़े मेल मला दे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त कर कल्याण। निरगुण जोती जोत मिला दे, पंज तत लेखा रहे ना विच जहान। आपणे दर सचखण्ड दुआर बहा दे, जित्थे पुज्जे ना कोए इन्सान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग गुरुआं कोलों खैहड़ा छुडा दे, गुरमुख इक्को वार करन ब्यान। गुरमुख कहिण साडे ब्यान कर लै कलमबन्द, दूजी शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को तेरे दर दे आसावंद, असमानां तों परे डेरा लाईआ। बहुते पढ़ पढ़ के साथों घसाए नहीं जांदे दन्द, दोधी दन्दीं पार कराईआ। इक्को पुरख अकाल

१२३७
१६

तेरा दवारा ल्या मंग, जिस तों परे नज़र कोए ना आईआ। पार उतारना तेरा निक्का जिहा ढंग, तरीका इक्को दे समझाईआ। तेरी मेहर नज़र निगाह नाल चढ़े रंग, रंगत अंदरों दे बदलाईआ। तेरे नाम दा वज्जे मृदंग, मरदन सारे दे कराईआ। जुग चौकड़ी जन्म जन्म दी पूरब एह उमंग, रीती पहली चली आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल देण लग्गा ना होवीं तंग, तंगदस्ती दे मिटाईआ। सृष्ट सबाई दए दुहाई हाए लोकाई बौहड़ी खुदा लग्गे जग, जंगलां अंदर मन्दिरां अंदर गुरमुख गुरसिख आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा अस्व घोड़ा शब्द अगम्मी तरंग, तुरीआ तों परे निरगुण हरे, लख चुरासी डरे, गुरमुखां वेखीं घरे, घर घर आपणा फेरा पाईआ। कच्चे गुरुआं नालों गुरमुख तेरे चंगे छड़े, इकल्ले रह के आपणा झट लँघाईआ। चार युग कैहिंदे गए अन्त श्री भगवन्त जन भगतां दे आउणा विच धड़े, नाता आपणे नाल रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दा कन्त मणीआं मंत किरपा करे, करमां दा झगड़ा दए मुकाईआ। अबिनाशी करता, दु:ख दर्द हरता, सब कुछ दस्सदा, जन भगतो बहुत्यां नालों थोड़े बड़े, जिन्हां दे अन्तर नाम निरंतर सतिगुर मंत्र इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। अस्सू कहे प्रभ की तेरी वड शक्ती, सच दे समझाईआ। क्यों ना भगतां लेखे लावें छिन भंगर प्रेम दी भगती, भाग आपणे नाल बणाईआ। धार कढु दे अंदरों मन दी, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। तेरी खेल काया माटी पंज तत तन दी, तत्व नाल तत्व रिहा

१२३७
१६

मिलाईआ। मंज़ल रहे ना सूरज चन्न दी, बारां वण्ड ना कोए वण्डाईआ। लोड़ रहे ना सरवण कन्न दी, धुन अगम्मी दे सुणाईआ। प्रकाश होवे जोत तेरे गुरमुख चन्न दी, धुर दी चांदनी दए चमकाईआ। लोड़ रहे ना झूठे धन दी, धन आपणा नाम भण्डारा इक वरताईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी बद्धी इक गल्ल दी, जिस गल्ल दा भेव गुर अवतार पैगम्बर सक्या ना कोए खुल्हाईआ। उह घड़ी सुहञ्जणी अज्ज कल्ल दी, कलमयां तों बाहर नज़री आईआ। तिन्न अस्सू तेरी धार सोहणी जल दी, जल होड़े दई समझाईआ। जित्थे लहर धार कोए ना ठल्लदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। अस्सू कहे मेरी असीस, असल ध्यान लगाईआ। जन भगतां होवे बख्शीश, बख्शिश आपणा नाम वरताईआ। जगत गुरू बण जगदीश, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। बाकी मंगते मंगदे भीख, थोड़ा थोड़ा सब नूं दे वरताईआ। जे कोई करे तेरी रीस, लख चुरासी विच दे भवाईआ। ना कोई कलमा याद रहे हदीस, आपणा नाम देणा भुलाईआ। जिस वेले चार युग अगले जाण बीत, फेर गोबिन्द नाल मिलाईआ। चुरासी चुरासी चुरासी जाणे जामे सब नूं देणे विच कीट, पतंगयां विच पर ना कोए लगाईआ। साफ बुद्धी रहे कोई ना अतीत, नेत्रहीण देणे जणाईआ। दुक्खां
१२३८ विच मारदे रहिण चीक, सांतक सति ना कोए कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे शब्द गुरू दी करदे रहिण उडीक, १२३८
१६ बिन गोबिन्द नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इक्को तेरे विच तौफ़ीक, तारीफ़ आपणी देणी समझाईआ। १६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, धुर दा हुक्म आप जणाईआ। धुर दा हुक्म कहे हुक्म अस्सू तिन्न, शब्दी शब्द जणाईआ। जन भगतां रंग भिन्न, कुठी जाए जगत लोकाईआ। कूड़ कुड़यारयां अंदरों बदलां चिन्न्ह, बाहरों जाण मुरझाईआ। ख़ाली होण वाग टिन, टिक्कयां वाली वस्त ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। अस्सू तिन्न कहे जन भगतां होवे भरवासा, सृष्टी अंदर दुखदाईआ। गुरमुखां खुशीआं हासा, नेत्र रोवे लोकाईआ। जगत गुरुआं पछताउणा पए खाधा, अंदरे अंदर भय वखाईआ। हुक्म देवे पुरख अकाल गोबिन्द दा पिता गुरमुखां दा दादा, जो दाअवेदार अख्वाईआ। जिस दे बिना आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई ना जागा, अक्खां वाले गुरू अन्तिम अक्खां गए बदलाईआ। बिना सतिगुर शब्द कोई ना होवे राखा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जन भगतो कलयुग अन्त तुहाडा रह जाए सब तों वक्खरा साका, साखीआं चार युग खुशीआं नाल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। हरिजन तेरा जन्म ज़रूर, मात पिता गृह नज़री आईआ। अन्त मालक इक हज़ूर, जो हज़रतां दा हज़रत बेपरवाहीआ। जिस ने बख्शे कोट जन्म दे कसूर, कसूर अशारीए

नाम नाल उडाईआ। सच भण्डारा कर भरपूर, अंदरों प्रण दए गवाईआ। आत्म परमात्म बख्श के नूर, काया नूर महल्ल दए वखाईआ। गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो साचे सन्तो तुहाडी करनी सच होवे मशहूर, मश्वरे गुर अवतार पैगम्बर गए बणाईआ। सति धर्म दा ला के दस्तूर, मार्ग एकँकारा इक्को देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करनी दा करता दु:ख दर्दां दा हरता, तुहाडे प्रेम दा होवे मशकूर, मसखरयां दा लेखा दए गवाईआ।

✪ २ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

सति कहे प्रभ मेला होवे गुरमुख सज्जण, साजण तेरा रूप नज़री आईआ। धुर दे प्रेम दा मिले अगम्मी मजन, धूढ़ी धर्म सीस छुहाईआ। मन विकारी भाण्डे भज्जण, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। तेरी धार तेरा प्यार लभ्भण, आत्म परमात्म राह तकाईआ। बिरहों वैराग विच सद्दण, अन्तर अन्तर कूक दुहाईआ। प्रेम रस देणा अनन्दन, निजानंद रस चखाईआ। साचा ढोआ धुर दा चन्दन, ओढण सीस देणा रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दर दवारे तेरे बन्दन, जगत बन्धन देणा तुड़ाईआ। गुरमुख गुरमुख गुर सतिगुर पार लँघण, विचोला शब्दी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची चाढ़नी इक्को रंगण, रंगत आपणा आप वखाईआ।

✪ ३ अस्सू शहिनशाही सम्मत २ राम धाम मन्दिर अमृतसर शहर ✪

भारत सन्त सर्ब समाज करो प्रण, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। ओट रख श्री भगवन चरण, नमस्ते डण्डावत बन्दना कर के सीस झुकाईआ। झगड़ा मुका दे दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन, सगंठन इक्को लैणा जणाईआ। गऊ माता नहीं देणी मरन, मरन वरत रख के लैणा बचाईआ। जिस दी सेवा विच सुफला होवे जन्म, जन्म कर्म मिले वड्याईआ। धेन रक्ख्या करनी सब दा धर्म, सति धर्म दए समझाईआ। प्रेम प्यार अंदर सन्त सज्जण अन्तर अन्तर इक दूजे दा सच्चा लड़ फड़न, वेले वक्त होवे ना कोए जुदाईआ। मंजल ओस अगम्मी चढ़न, जिस मार्ग दा दाता बेपरवाहीआ। जगत हकूमतां ओथे की करन, सन्त सुहेले जित्थे प्रभ दा बैठे ध्यान लगाईआ। आपणी करनी तों आपे हरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। जुगती भगती अंदर प्रभ दा भाणा जरन, शक्ती अंदर इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित पारब्रह्म

पतिपरमेश्वर करता करनी करन, मालक दाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए उठाईआ। गऊ माता रही रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मैनूं रहे कोह, शरअ छुरी जगत कसाई रहे उठाईआ। बिना कुसूर तों मेरे नाल करन धरोह, धरत धवल धौल थल्ले रोवे मारे धाईंआ। भगवन तेरे नाल मेरा सच्चा मोह, मुहब्बत बंसरी वाले घनईआ तेरे नाल रखाईआ। कलयुग दीन दुनी देवे ना कोई ढोअ, सहारा नज़र कोए ना आईआ। दृष्टी सृष्टी दी कीती निर्मोह, मुहब्बत हकीकत हक ना कोए दृढ़ाईआ। किरपा कर के साचे सन्तां अंदर तूं कीती लो, ज्ञान ध्यान दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे मुकाईआ। गऊ कहे मैनूं मारन लग्गा जग, वैरी घर घर नज़री आईआ। समरथ स्वामी अन्तरजामी जिस वेले छुरी रखदे मेरी उपर शाह रग, शाह पातशाह मैं तेरा ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण मन वासना लग्गी अग्ग, हँकार कूड़ डंका रिहा वजाईआ। पेट कारन मैनूं करदे बध्ध, मेरी सेवा संसारी समझ कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर मैं तेरी आदि जुगादि उह यद, जिस दा चरवाहा कृष्न रखवाला ग्वाला नज़री आईआ।
१२४० सदी चौधवीं मेरा वेख की होया हज, हाजत मेरी पूरी ना कोए कराईआ। धर्म दवारिजुं मैनूं सारयां दिता कढ्ढ, मालक हो १२४०
१६ के प्रेम सच ना कोए कमाईआ। मैं अंदर अंदर आत्म धार परमात्म तैनूं रही दस्स, निरगुण निरवैर तेरा ध्यान लगाईआ। १६
कूड़ जंजाल जगत जहान विच्चों मैनूं कढ्ढ, बिन तेरी किरपा होए ना कोए सहाईआ। अबिनाशी करता कहे मैं साचे सन्तां अंदर शब्द नाद हो के जावां वज्ज, सोई सुरती सब दी दयां जगाईआ। तिन्न असू याददाशत रह जाए विच दुनिया दे जग, जे सन्त सुहेले मिल के कदम लैण उठाईआ। अज्ज दा लेख पंज चेत पहलों लिखा के दिता दस्स, कलम शाही काग़ज़ नाल वण्ड वण्डाईआ। जिस दा सीर अमृत पीवो रस, माँ दी माँ गऊ नज़री आईआ। साचे सन्त उस दे अंदर रोण वाली तक्को अक्ख, जेहड़ी बाहर नेत्रां तों परे डेरा लाईआ। हकीकत विच्चों हक पछाणो सच, परदा ओहला इक उठाईआ। फिर एस सगंठन तों कोई ना रहिणा वक्ख, सारे मिल के चलण चाँईं चाँईंआ। सर्ब साधूआं नूं देणा दस्स, किसे दा नहीं कोई वस, वेले वक्त नाल पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीनां नाथा दीनन होए सहाईआ। सब दी पत जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार लए रख, सन्त सतिगुर लोकमात लए प्रगटाईआ। सदा धर्म दा रखदा आया पक्ख, ध्रू प्रहलाद देण गवाहीआ। साचे सन्तां धर्म गुणवन्तां जिन्हां आपणे हथ्थां नाल कीते दस्तख्त, दस्त नाल दस्त लैण मिलाईआ। कदम कदम नाल चलण हस्स हस्स, हस्ती विच्चों मस्ती नज़री आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा धर्म दा होवे साचा जस,

अधर्म दा बेड़ा देणा डुबाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार रैण अन्धेरी रहिण नहीं देणी मस, साचा चन्द सति धर्म दा नाम देणा चमकाईआ। सब दे अन्तर खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी विच गऊ माता दी मुशंदगी देणी कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले आपणे रंग रिहा रंगाईआ।

३ असू शहिनशाही सम्मत २ अमृतसर दुरज्ञाना मन्दिर
गऊ हत्या दे नवित समेलन स्वामी गंगेश्वर

सति धर्म कहे सब निर्मल कर लओ बुध, बिबेक आपणा आप बणाईआ। सच विचार दी करो सुध, सन्त सज्जण मिल के खुशी मनाईआ। जिस माता दा रसना जेहवा बत्ती दन्द सीर पीता दुद्ध, रस अमृत रही चुआईआ। उस दा परदा ओहला रहे ना लुक, भारत वासी वेखो नैण उठाईआ। सब दे साहमणे मेरी काया रही मुक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ज़िबह करन वालयां आवे कोई ना दुःख, दर्दी हो के दर्द ना कोए वण्डाईआ। जे श्री भगवान त्रिलोकी नाथ इक्को आ
१२४१ १६ जाए सनमुख, मेरा दुःख दर्द दए मिटाईआ। ग़रीब निमाणी कोझी कमली घर स्वामी आ के लए पुछ, वांग द्रोपत लज्जया १२४१ १६
लए रखाईआ। बेशक मैं तुहानूं होर नहीं देंदी कुछ, दुद्ध दहीं दे के सब दी सेव कमाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरे प्यार अंदर सारे इक वार बहो उठ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वण्ड ना कोए वण्डाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर हिरदे अंदर करे सफ़ाईआ। गऊ कहे मैं तक्कां इक्को गोबिन्द, जो प्रितपालक ख़ालक नज़री आईआ। जिस दी धार सागर सिन्ध, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा ओहला अंदरों दे उठाईआ। सन्त सुहेले सज्जण गुरमुख बणा आपणी ढिन्द, बन्दना इक्को दे जणाईआ। भारत वासीओ भरम मिटाओ कूड़ी चिन्द, भाण्डा भरम भन्नाईआ। मेरे जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी बिन साचे सन्तां लथ्थे कोई ना चिन्द, चिन्ता विच्चों बाहर ना कोए कढाहीआ। तुहाडे वरगी पंजां तत्तां वाली मेरी जिंद, माटी ख़ाकी सोहणी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ।